नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी, पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी ख़ुद फिर से देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में डॉक्टर बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सादी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रोशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط سے دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی رائے اور سجھاؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں ڈاکٹر بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار پیش لفظ آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائینگے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈیمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام [illegible]

[illegible]

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना र रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

कता फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों छापना.

घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में दाना.

जो

और

—: o :—

पं. प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; न्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल ाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; रलाल.

ाडी के और मेम्बर—

महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद नी, मि० मंजर अली सोख्ता, श्री बी० जी० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम , क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम लीवाल.

ो के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

ोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी फ़ीस एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" क मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—: o :—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का सच्चा तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

कोई तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के दौरान लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का आंखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को दूर करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और उन झगड़ों को हमेशा के लिए ख़तम करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

لیکھک — پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا سچا ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پورے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج. اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھیانک بربادی اور آپسی مار کاٹ کے دوران لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا ہولناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ان جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ —

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें खरीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मतलब क्या है.

महात्मा भगवानदीन [illegible] हाथ लिखा गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, [illegible] से आने.

मिलने का पता—

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شری کرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے۔

سندر جلد۔ اچھا کاغذ۔ دو سو صفحے۔ قیمت [illegible]

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے۔ [illegible]

विचार करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि दुनिया की शान्ति को जो आज एक खतरा है वह उस तानाशाही से ही है जिस के कर्ता धर्ता कम्यूनिस्ट देश हैं."

श्री निक्सन के इस भोलेपन पर हमें अचरज होता है कि या तो उन्होंने हिन्दुस्तान के लोगों को निपट अनपढ़ और राजनीति से नावाकिफ समझ लिया है या खुद अपनी निगाह पर एक ऐसा रंगीन चश्मा लगा रखा है कि सब हरा ही हरा उन्हें सूझता है. आज कौन मदद कर रहा है दक्खिन कोरिया के पिछलग्गू डाक्टर सिंगमनरी की ? कौन सहारा दिये हुए है चीन के गद्दार च्यांग काई शेक को ? कौन बना रहा है पाकिस्तान में फ़ौजी अड्डे ? कौन फ्रांस की फ़ौजों को हथियार व रसद पहुंचा रहा है वियतनाम में या मोरक्को में ? कौन अंदर ही अंदर बढ़ावा दे रहा है दक्खिन अफ़रीका की गोरा शाही को ? कौन केनिया में जड़ें मज़बूत कर रहा है विदेशी अंगरेज़ी राज की ? और कौन दबा रहा है ब्रिटिश गायना की जनता को जो आज़ाद होना चाहती है ? वग़ैरा वग़ैरा. इन सब सवालों का एक ही जवाब है—अमरीका. आज कौन हकूमत है जो आर्थिक इमदाद के नाम पर देश देश में अपना असर जमाने और जाल फैलाने की कोशिश कर रही है और जगह जगह की साहूकार बन कर वहां की आर्थिक नीति खुले और राजकाजी व फ़ौजी नीति छिप कर अपने क़बज़े में करना चाहती है ? वही जवाब है—अमरीका. इसलिये आज दुनिया की शान्ति के लिये सब से ज़ियादा ख़तरनाक, शान्ति के रास्ते में सब से बड़ी अड़चन और शान्ति का सब से गहरा दुश्मन अमरीका ही—यानी अमरीकी सरकार है. कम्यूनिस्ट देशों को दोष देना और खुद मनमानी करते रहना जिनायती है, नाइन्साफ़ी है, गुनाह है.

यह सच्चाई दुनिया के समझदार लोगों के दिमाग़ पर दिन दिन साफ़ होती जा रही है. इनसानियत या ईमान की तराज़ू में एक तरफ़ अमरीका को रखें, दूसरी तरफ़ रूस को तो अमरीका का पलड़ा हलका नज़र आता है और कहना पड़ता है कि आज दुनिया में जो अशान्ति, बेचैनी, घबराहट और ग़रीबी है उस के लिये अगर कोई एक हकूमत ज़िम्मेदार है तो वह अमरीका की हकूमत है. श्री निक्सन अपनी स्पीचों या सफ़ाइयों से किसी को धोखे में नहीं डाल सकते, कम से कम हिन्दुस्तान की जनता इन बातों को ख़ूब अच्छी तरह समझती है. हमें आशा है कि प्रधान मंत्री, पंडित जवाहरलाल ने जनता के जज़बात को श्री निक्सन तक पहुंचाया होगा और उन्हें बताया होगा कि जब तक अमरीकी सरकार अपनी राजकाजी प्रसार और आर्थिक नीति में असली तबदीली नहीं लाती तब तक कोई प्रोपेगन्डा, कोई प्रचार या कोई ताक़त भी जनता हिन्दुस्तान की, क्या दुनिया की आज़ाद जनता आज की तरह अपने इस ख़याल से नहीं हटा सकती.

21. 12. '58 —[illegible] राजपाल

وچار کرنے کے بعد ہم اس نتیجے پر پہنچے ہیں کہ دنیا کی شانتی کو جو آج ایک خطرہ ہے وہ اس تاناشاہی سے ہی ہے جس کے کرتا دھرتا کمیونسٹ دیش ہیں."

شری نکسن کے اس بھولے پن پر ہمیں اچرج ہوتا ہے کہ یا تو انہوں نے ہندستان کے لوگوں کو نپٹ انپڑھ اور راج نیتی سے ناواقف سمجھ لیا ہے یا خود اپنی نگاہ پر ایک ایسا رنگین چشمہ لگا رکھا ہے کہ سب ہرا ہی ہرا انہیں سوجھتا ہے. آج کون مدد کر رہا ہے دکھن کوریا کے پچھ لگو ڈاکٹر سنگ من ری کی ؟ کون سہارا دئے ہوئے ہے چین کے غدار چیانگ کائی شیک کو ؟ کون بنا رہا ہے پاکستان میں فوجی اڈے ؟ کون فرانس کی فوجوں کو ہتھیار و رسد پہنچا رہا ہے ویتنام میں یا مورکو میں ؟ کون اندر ہی اندر بڑھاوا دے رہا ہے دکھن افریقہ کی گورا شاہی کو ؟ کون کینیا میں جڑیں مضبوط کر رہا ہے ودیشی انگریزی راج کی ؟ اور کون دبا رہا ہے برٹش گائنا کی جنتا کو جو آزاد ہونا چاہتی ہے ؟ وغیرہ وغیرہ. ان سب سوالوں کا ایک ہی جواب ہے—امریکہ. آج کون حکومت ہے جو آرتھک امداد کے نام پر دیش دیش میں اپنا اثر جمانے اور جال پھیلانے کی کوشش کر رہی ہے اور جگہ جگہ کی ساہوکار بن کر وہاں کی آرتھک نیتی کھلے اور راج کاجی و فوجی نیتی چھپ کر اپنے قبضے میں کرنا چاہتی ہے ؟ وہی جواب ہے—امریکہ. اس لئے آج دنیا کی شانتی کے لئے سب سے زیادہ خطرناک' شانتی کے راستے میں سب سے بڑی اڑچن اور شانتی کا سب سے گہرا دشمن امریکہ ہی—یعنی امریکی سرکار ہے. کمیونسٹ دیشوں کو دوش دینا اور خود من مانی کرتے رہنا زیادتی ہے' ناانصافی ہے' گناہ ہے.

یہ سچائی دنیا کے سمجھدار لوگوں کے دماغ پر دن دن صاف ہوتی جا رہی ہے. انسانیت یا ایمان کی ترازو میں ایک طرف امریکہ کو رکھیں' دوسری طرف روس کو تو امریکہ کا پلا ہلکا نظر آتا ہے اور کہنا پڑتا ہے کہ آج دنیا میں جو اشانتی' بے چینی' گھبراہٹ اور غریبی ہے اس کے لئے اگر کوئی ایک حکومت ذمہ دار ہے تو وہ امریکہ کی حکومت ہے. شری نکسن اپنی اسپیچوں یا صفائیوں سے کسی کو دھوکے میں نہیں ڈال سکتے' کم سے کم ہندستان کی جنتا ان باتوں کو خوب اچھی طرح سمجھتی ہے. ہمیں آشا ہے کہ پردھان منتری' پنڈت جواہر لال نے جنتا کے جذبات کو شری نکسن تک پہنچایا ہوگا اور انہیں بتایا ہوگا کہ جب تک امریکی سرکار اپنی فلمی پرست اور آزادی نالف نیتی میں اصلی تبدیلی نہیں کرتی تب تک کوئی پروپیگنڈا' کوئی پرچار یا کوئی طاقت بھی کیا ہندستان کو' کیا دنیا کی آزاد خیال جنتا کو اس طرح کا ہم خیال نہیں بنا سکتی.

—سبھاش والیھٹی 21. 12. '58

कि वह लड़ाई जीत सकते हैं और फिर [illegible] जायेंगे." हिन्दुस्तान के बारे में उन्होंने कहा—"आप जिस दुनिया में यहां रहते हैं वह आजाद दुनिया है यहां धर्म की आजादी है, स्पीच की आजादी है, प्रेस की आजादी है, कानून में इन्साफ है और शान्ति के रास्ते के लिये सब की तैयारी है."

हमें नहीं मालूम कि नई दिल्ली के हाकिमों और पार्लियामेन्ट के मेम्बरों ने श्री निक्सन की इन स्पीचों का क्या असर लिया. हिन्द सरकार ने उनकी पोजीशन के मुताबिक उनकी खातिरदारी कर मेहमांनवाज़ी का फर्ज अच्छी तरह निभाया. श्री निक्सन यहां से पाकिस्तान गए, फिर एशिया अमरीका के दूसरे देश होते हुए अपने देश वापिस जायेंगे और अपने मालिक आइजन हावर को रिपोर्ट देंगे. हिन्दुस्तान की तारीफ में श्री निक्सन जो न कहते थोड़ा था. आम तौर से हर अमरीकी को हिन्दुस्तान में वही आजादी महसूस होती होगी जो उसे फिलिपाइन या जापान में महसूस होती है क्यों कि हमारी सरकार की तरफ से उसे पूरी छूट मिल गई है. इसी का नतीजा है कि आज आजाद हिन्दुस्तान में जितने अमरीकन हैं, जितना अमरीकी माल-सामान है, जितना अमरीकी पैसा लगा हुआ है उतना पहले कभी नहीं था और इन चीजों में दिन दिन इज़ाफ़ा भी हो रहा है जिसकी बदौलत अमरीका के हाथ में हिन्दुस्तान की आर्थिक बागडोर बड़ी तेजी से आ रही है और अपने हर आर्थिक काम में हिन्द सरकार को अमरीका का मुंह देखना पड़ता है. इस लिये हर अमरीकी भाई बहन का, खासकर अमरीकी हुक्काम का, हिन्दुस्तान की जो मौजूदा हालत है जिसमें अमरीका को अपने आर्थिक पंजे फैलाने का पूरा मौका मिल रहा है, उसकी दाद देना लाज़मी है. हिन्द सरकार के हुक्काम भी इस पर फूले नहीं समाते कि जब इस तरह अमरीकी वाइस प्रेसीडेन्ट हम से खुश है तो फिर अमरीका से पैसा भी और मिलेगा ही.

श्री निक्सन ने अपनी हर स्पीच में दुनिया को दो टुकड़ों में बंटा बताया—एक "आजाद राष्ट्रों" की दुनिया और दूसरी "कम्युनिस्ट राष्ट्रों" की दुनिया. जाहिर है कि "आजाद राष्ट्रों" में हैं—इंगलैंड, फ्रांस, जापान, टर्की, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान वगैरा जिनका सिर मौर अमरीका है—यानी वह राष्ट्र जो आर्थिक रूप से अमरीका के थोड़े बहुत ताबेदार हैं और कम्युनिस्ट राष्ट्रों में रूस, चीन वगैरा हैं. दूसरे शब्दों में, जो राष्ट्र अमरीका की सरपरस्ती कबूल करे वह 'आजाद' है और जो न करे वह 'कम्युनिस्ट' है चाहे वहां कम्युनिस्ट सरकार हो या न हो. श्री निक्सन ने एक जगह यह भी कहा कि अमरीका सब लोगों की तरह [illegible] है, और वह चाहता है कि "अपने को पुराने समय की साम्राज्यवादी से दूर रखना चाहते हैं." उन्होंने यह भी कहा कि—"हमारी पालिसी में कोई

گے وہ لڑائی جیت سکتے ہیں اور پھر [illegible] جائیں گے۔" ہندستان کے بارے میں انہوں نے کہا — "آپ جس دنیا میں یہاں رہتے ہیں وہ آزاد دنیا ہے۔ یہاں دھرم کی آزادی ہے، اسپیچ کی آزادی ہے، پریس کی آزادی ہے، قانون میں انصاف ہے اور شانتی کے راستے کے لئے سب کی تیاری ہے۔"

ہمیں نہیں معلوم کہ نئی دلی کے حاکموں اور پارلیمنٹ کے ممبروں نے شری نکسن کی ان اسپیچوں کا کیا اثر لیا۔ ہند سرکار نے ان کی پوزیشن کے مطابق ان کی خاطرداری کر مہمان نوازی کا فرض اچھی طرح نبھایا۔ شری نکسن یہاں سے پاکستان گئے، پھر ایشیا افریقہ کے دوسرے دیش ہوتے ہوئے اپنے دیش واپس جائیں گے اور اپنے مالک آئزن ہاور کو رپورٹ دیں گے۔ ہندستان کی تعریف میں شری نکسن جو نہ کہتے تھوڑا تھا۔ عام طور سے ہر امریکی کو ہندستان میں وہی آزادی محسوس ہوتی ہوگی جو اسے فلپائن یا جاپان میں محسوس ہوتی ہے کیونکہ ہماری سرکار کی طرف سے اسے پوری چھوٹ مل گئی ہے۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ آج آزاد ہندستان میں جتنے امریکن ہیں، جتنا امریکی مال سامان ہے، جتنا امریکی پیسہ لگا ہوا ہے اتنا پہلے کبھی نہیں تھا اور ان چیزوں میں دن دن اضافہ بھی ہو رہا ہے جس کی بدولت امریکہ کے ہاتھ میں ہندستان کی آرتھک باگ ڈور بڑی تیزی سے آ رہی ہے اور اپنے ہر آرتھک کام میں ہند سرکار کو امریکہ کا منہ دیکھنا پڑتا ہے۔ اس لئے ہر امریکی بھائی بہن کا، خاص کر امریکی حکام کا، ہندستان کی جو موجودہ حالت ہے جس میں امریکہ کو اپنے آرتھک چنگل پھیلانے کا پورا موقعہ مل رہا ہے، اسکی داد دینا ضروری ہے۔ ہند سرکار کے حکام بھی اس پر پھولے نہیں سماتے کہ جب اس طرح امریکی وائس پریسیڈنٹ ہم سے خوش ہے تو پھر امریکہ سے پیسہ بھی اور ملیگا ہی۔

شری نکسن نے اپنی ہر اسپیچ میں دنیا کو دو ٹکڑوں میں بٹا بتایا — ایک "آزاد راشٹروں" کی دنیا اور دوسری "کمیونسٹ راشٹروں" کی دنیا۔ ظاہر ہے کہ "آزاد راشٹروں" میں ہیں — انگلینڈ، فرانس، جاپان، ترکی، پاکستان، ہندستان وغیرہ جن کا سرمور امریکہ ہے — یعنی وہ راشٹر جو آرتھک روپ سے امریکہ کے تھوڑے بہت تابعدار ہیں اور کمیونسٹ راشٹروں میں روس، چین وغیرہ ہیں۔ دوسرے شبدوں میں، جو راشٹر امریکہ کی سرپرستی قبول کرے وہ 'آزاد' ہے اور جو نہ کرے وہ 'کمیونسٹ' ہے چاہے وہاں کمیونسٹ سرکار ہو یا نہ ہو۔ شری نکسن نے ایک جگہ یہ بھی کہا کہ امریکہ [illegible]

है. मिलें जो माल चाहें, जितना चाहें, जैसे चाहें पैदा करें, सरकार उनका बाल भी बांका नहीं कर सकती. मिल वालों के पास हजार बहाने हैं अपनी इच्छा सरकार से पूरी कराने के. हाल ही में उनके कई टैक्स माफ किये गए हैं. क्यों ? क्योंकि बाहर कपड़ा भेजना है और वह इन टैक्सों के कारन 'मंहगा' पड़ रहा था. हिन्दुस्तान के लोगों को कपड़ा न मिले, बुनकरों को सूत न मिले, लेकिन मिलें कपड़ा पर देश बाहर भेजेंगी और सरकार भिजवायेगी !

जाहिर है कि जनता या बुनकरों के हित के अलावा कोई दूसरे ही हितों को पूरा करने के लिये सरकार इस तरह की आर्थिक या व्योपारी नीति पर चल रही है. वह हित क्या हैं—इसकी तफसील में हम इस वक्त नहीं पड़ेंगे. लेकिन वह हित आम जनता के हित नहीं हैं, यह साफ है. वह हित देहाती कारीगर और मजदूरों के हित नहीं हैं, यह भी साफ है. आज हमारी सरकार इन हितों को नजर अन्दाज कर रही है. मगर यह हित जनता के करोड़ों के हित हैं जिन्हें अरसे तक नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता. चन्द बरस पहले हमारे देश में एक बड़ी ताक़तवर सरकार थी जो जनता के हितों के साथ लगभग इसी तरह पेश आती थी. वह सरकार ज़ियादा दिन न टिकी. मौजूदा सरकार से भी हमारी अपील है कि इतिहास से सबक़ ले और जनता के हितों की क़द्र करे. 'धोती बिल' सरकार के नाम पर कलंक है, मिल वालों को मन माना करने के लिये परवाना है और बुनकरों को बेमौत मारने का हथियार है.

20. 11. '53 —सुरेश रामभाई.

हमारे अमरीकी मेहमान

हिन्दुस्तान में आए दिन अमरीका से सलाहकार और मेहमान आते रहते हैं. हिन्द-अमरीकी "समझौते" के मुताबिक उन्हें यहां आने की हर इजाजत व सहूलियत है. दिसम्बर के पहले हफ्ते में अमरीका के वाइस प्रेसीडेन्ट श्री रिचर्ड निक्सन नई दिल्ली आए और राष्ट्रपति के मेहमान रहे. उन्होंने पार्लिमेन्ट के मेम्बरों के सामने स्पीच देने की इजाजत भी हिन्द सरकार से पाई. उन्होंने अमरीकी प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर के बारे में कहा कि—"इतिहास में वह अपने फौजी कारनामों के कारन उतने याद नहीं किये जायेंगे जितने इस बात के लिये कि मुसीबतज़दा दुनिया के जिन नेताओं ने अमन क़ायम करने की कोशिश की उनके साथ मिल कर उन्होंने जोरदार काम किया." अमरीकी फौजी नीति के बारे में उन्होंने कहा—"जो हमारा मक़सद है वही दुनिया के दूसरे आज़ाद राष्ट्रों का है. हम सब की यह जिम्मेदारी है कि अपनी फौजी ताक़त इतनी बढ़ायें कि कम्यूनिस्ट राष्ट्र यह सोच भी न सकें

ہے۔ ملیں جو مال چاہیں، جتنا چاہیں، جیسے چاہیں پیدا کریں، سرکار ان کا بال بھی بانکا نہیں کر سکتی۔ مل والوں کے پاس ہزار بہانے ہیں اپنی اچھا سرکار سے پوری کرانے کے۔ حال ہی میں ان کے کئی ٹیکس معاف کئے گئے ہیں۔ کیوں ؟ کیونکہ باہر کپڑا بھیجنا ہے اور وہ ان ٹیکسوں کے کارن 'مہنگا' پڑ رہا تھا۔ ہندستان کے لوگوں کو کپڑا نہ ملے، بنکروں کو سوت نہ ملے، لیکن ملیں کپڑا پردیس ضرور بھیجیں گی اور سرکار بھجوائے گی !

ظاہر ہے کہ جنتا یا بنکروں کے ہت کے علاوہ کوئی دوسرے ہی ہتوں کو پورا کرنے کے لئے سرکار اس طرح کی آرتھک یا بیوپاری نیتی پر چل رہی ہے۔ وہ ہت کیا ہیں—اس کی تفصیل میں ہم اس وقت نہیں پڑیں گے۔ لیکن وہ ہت عام جنتا کے ہت نہیں ہیں، یہ صاف ہے۔ وہ ہت دیہاتی کاریگر اور مزدوروں کے ہت نہیں ہیں، یہ بھی صاف ہے۔ آج ہماری سرکار ان ہتوں کو نظرانداز کر رہی ہے۔ مگر یہ ہت جنتا کے کروڑوں کے ہت ہیں جنہیں عرصے تک نظرانداز نہیں کیا جا سکتا۔ چند برس پہلے ہمارے دیش میں ایک بڑی طاقتور سرکار تھی جو جنتا کے ہتوں کے ساتھ لگ بھگ اسی طرح پیش آتی تھی، وہ سرکار زیادہ دن نہ ٹکی۔ موجودہ سرکار سے بھی ہماری اپیل ہے کہ اتہاس سے سبق لے اور جنتا کے ہتوں کی قدر کرے۔ 'دھوتی بل' سرکار کے نام پر کلنک ہے، مل والوں کو من مانا کرنے کے لئے پروانہ ہے اور بنکروں کو بے موت مارنے کا ہتھیار ہے۔

—سریش رام بھائی

ہمارے امریکی مہمان

ہندستان میں آئے دن امریکہ سے صلاحکار اور مہمان آتے رہتے ہیں۔ ہند امریکی "سمجھوتے" کے مطابق انہیں یہاں آنے کی ہر اجازت و سہولیت ہے۔ دسمبر کے پہلے ہفتے میں امریکہ کے وائس پریذیڈنٹ شری رچرڈ نکسن نئی دلی آئے اور راشٹرپتی کے مہمان رہے۔ انہوں نے پارلیمنٹ کے ممبروں کے سامنے اسپیچ دینے کی اجازت بھی ہند سرکار سے پائی۔ انہوں نے امریکی پریذیڈنٹ آئزن ہاور کے بارے میں کہا کہ—"اتہاس میں وہ اپنے فوجی کارناموں کے کارن اتنے یاد نہیں کئے جائیں گے جتنے اس بات کے لئے کہ مصیبت‌زدہ دنیا کے جن نیتاؤں نے امن قائم کرنے کی کوشش کی ان کے ساتھ مل کر انہوں نے زوردار کام کیا۔" امریکی فوجی نیتی کے بارے میں انہوں نے کہا—"جو ہمارا مقصد ہے وہی دنیا کے دوسرے آزاد راشٹروں کا ہے۔ ہم سب کی یہ ذمہ داری ہے کہ اپنی فوجی طاقت اتنی بڑھائیں کہ کمیونسٹ راشٹر یہ سوچ بھی نہ سکیں

सूबा सरकारों की हमदर्दी भी उन्हें हासिल थी. फिर, कौन नहीं जानता कि आजकल हमारे बहुत से मिल मालिक दो तरह के हिसाब किताब रखते हैं. हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और, उसी तरह एक हिसाब असली होता है, दूसरा सरकारी हाकिमों को दिखाने का होता है. साठ फ़ी सदी से ज़ियादा चोरियां बचा लेने पर भी हिसाब में साठ से कम दिखाई जा सकती हैं. और मान लिया जाय कि ठीक दिखा भी दी गईं, साठ से ज़ियादा, तब भी हिसाब देखने वाले सरकारी आदमी को हमारे मिल वालों जैसे वसीले वाले आसानी से इस पर राज़ी कर सकते हैं कि कोई बात क़ाबिले एतराज़ मिलों ने नहीं की. यह बात हमें बड़ी तकलीफ़ के साथ कहना पड़ती है क्योंकि हमारी सरकार का मिल वालों के आगे बस चलता मालूम नहीं पड़ता.

एक मिसाल हम लें. 24 नवम्बर को ही जब पार्लिमेन्ट में धोती बिल पर बहस चल रही थी—कौन्सिल आफ़ स्टेट में एक भाई ने सवाल पूछा कि 1947-48 में रेलवे के डिब्बों की चोरी के जो मामले पकड़े गए थे उनमें मोदी इन्डस्ट्रीज़ नाम की मिल वालों के ख़िलाफ़ कार्रवाई क्यों न की गई. डिप्टी रेलवे मिनिस्टर ने क़बूल किया कि मोदी इन्डस्ट्रीज़ के ख़िलाफ़ वाला मामला लगभग एक करोड़ रुपये का था (99,54,064 रुपया 9 आने) और इसे क़ानून मिनिस्ट्री के पास भेजा गया मगर सालीसिटर जनरल ने यह मशविरा दिया कि मुक़दमा न चलाया जाय. डिप्टी मिनिस्टर के जवाब से मेम्बरों को कोई तसल्ली नहीं हुई और कौन्सिल के सदर, हिन्दुस्तान के वाइस प्रेसीडेन्ट, डाक्टर राधा कृष्णन ने कहा—"मेम्बरों को जो सवाल परेशान कर रहा है वह यह कि छै मामलों में से पांच मामलों में मुक़दमा चलाया गया और एक मामले में न चलाया गया. डिप्टी मिनिस्टर (रेलवे) का कहना है कि यह तय करना था क़ानून और होम मिनिस्ट्रियों को. मेम्बर लोग कहते हैं कि इस व्यवहार में तरफ़दारी की गई."

"व्यवहार में तरफ़दारी" आज हमारी मिनिस्ट्रियों के कारिन्दों का मानो पेशा ही बन गया है जिसकी वजह से जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली बात क्या नई दिल्ली के सेक्रेटेरियट और क्या सूबों के सेक्रेटेरियट, सब जगह कम या ज़ियादा चल रही है. ऐसी सूरत में बेचारे बुनकरों का कहां ठिकाना है? हमारे इन्डस्ट्री मिनिस्टर उन्हें तो "वबाले जान" कहा ही करते हैं. सारे सरकारी निज़ाम में बुनकर हो या चमार या देहात का कोई और कारीगर, किसी की कोई गुंजाइश नहीं है. यही वजह है कि अंग्रेज़ी राज में जो चोट इन धन्धों को नहीं पहुंची उससे ज़ियादा ख़तरनाक चोट आज़ाद भारत में पहुंची है और पहुंच रही

صوبہ سرکاروں کی ہمدردی بھی انہیں حاصل تھی۔ پھر کون نہیں جانتا کہ آجکل ہمارے بہت سے مل مالک دو طرح کے حساب کتاب رکھتے ہیں۔ ہاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور، اسی طرح ایک حساب اصلی ہوتا ہے، دوسرا سرکاری حاکموں کو دکھانے کا ہوتا ہے۔ ساٹھ فیصدی سے زیادہ چوریاں بچا لینے پر بھی حساب میں ساٹھ سے کم دکھائی جا سکتی ہیں۔ اور مان لیا جائے کہ ٹھیک دکھا بھی دی گئیں ساٹھ سے زیادہ، تب بھی حساب دیکھنے والے سرکاری آدمی کو ہمارے مل والوں جیسے وسیلے والے آسانی سے اس پر راضی کر سکتے ہیں کہ کوئی بات قابل اعتراض ملوں نے نہیں کی۔ یہ بات ہمیں بڑی تکلیف کے ساتھ کہنا پڑتی ہے کیونکہ ہماری سرکار کا مل والوں کے آگے بس چلتا معلوم نہیں پڑتا۔

ایک مثال ہم لیں۔ 24 نومبر کو ہی—جب پارلیمنٹ میں دھوتی بل پر بحث چل رہی تھی کونسل آف اسٹیٹ میں ایک بھائی نے سوال پوچھا کہ 1947-48 میں ریلوے کے ڈبوں کی چوری کے جو معاملے پکڑے گئے تھے ان میں مودی انڈسٹریز نام کی مل والوں کے خلاف کاروائی کیوں نہ کی گئی۔ ڈپٹی ریلوے منسٹر نے قبول کیا کہ مودی انڈسٹریز کے خلاف والا معاملہ لگ بھگ ایک کروڑ روپیہ کا تھا۔ (99,54,064 روپیہ 9 آنے) اور اسے قانونی منسٹری کے پاس بھیجا گیا مگر سالیسٹر جنرل نے یہ مشورہ دیا کہ مقدمہ نہ چلایا جائے۔ ڈپٹی منسٹر کے جواب سے ممبروں کو کوئی تسلی نہیں ہوئی اور کونسل کے صدر، ہندوستان کے وائس پریزیڈنٹ ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا "ممبروں کو جو سوال پریشان کر رہا ہے وہ یہ کہ چھ معاملوں میں مقدمہ چلایا گیا اور ایک معاملے میں نہ چلایا گیا۔ ڈپٹی منسٹر (ریلوے) کہتا ہے کہ یہ طے کرنا تھا قانون اور ہوم منسٹریوں کو۔ ممبر لوگ کہتے ہیں کہ اس ویوہار میں طرفداری کی گئی۔"

"ویوہار میں طرفداری" آج ہماری منسٹریوں کے کارندوں کا مانو پیشہ ہی بن گیا ہے جس کی وجہ سے جسکی لاٹھی اسکی بھینس والی بات کیا نئی دلی کے سکریٹریٹ اور کیا صوبوں کے سکریٹریٹ، سب جگہ کم یا زیادہ چل رہی ہے۔ ایسی صورت میں بیچارے بنکروں کا کہاں ٹھکانا ہے؟ ہمارے انڈسٹریز منسٹر انہیں تو "وبال جان" کہا ہی کرتے ہیں۔ سارے سرکاری نظام میں بنکر ہو یا چمار یا دیہات کا کوئی اور کاریگر، کسی کی کوئی گنجائش نہیں ہے۔ یہی وجہ ہے کہ انگریزی راج میں جو چوٹ ان دھندوں کو نہیں پہنچی اس سے زیادہ [illegible] پہنچی ہے اور پہنچ رہی

यह कपड़े तैयार हों. नई दिल्ली सरकार को यह मंजूर न हुआ, लेकिन उसने यह हुक्म जारी किया कि अप्रैल 1951 से मार्च 1952 तक जितनी धोतियां मिलों ने बनाई हों उनमें सिर्फ साठ फी सदी ही बनाएं. नई दिल्ली सरकार की यह पाबन्दी बहुत हद तक कागजी रही. कपड़ा मिलों ने इसकी कोई परवाह न की और कई सूबा सरकारों ने भी इसकी तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया. नतीजा यह हुआ कि धोतियां मिलों में, मिलों की सुविधा के अनुसार, बनती चली गईं और बुनकरों की बेकारी और परेशानी में भी कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि आज भी क्या उत्तर प्रदेश, क्या बिहार, क्या मध्यप्रदेश और क्या मद्रास, हर जगह का बुनकर दुखी है और अपना काम छोड़ने पर मजबूर हो रहा है.

पार्लिमेण्ट में इस बिल पर जो बहस हुई वह बहुत दिलचस्प थी. एक भाई ने कहा कि नई चुंगी से धोतियां मंहगी हो जायेंगी और आम खरीदार को घाटा रहेगा! दूसरे ने कहा कि इस बिल से बुनकरों के हित को बड़ी चोट पहुंचेगी और सरकार उनको जो इमदाद पहुंचाना चाहती है वो न पहुंचा सकेगी! तीसरे ने कहा कि देश के अन्दर विदेश से कपड़ा आना बन्द किया जाय! चौथे ने कहा कि जब तक सरकार कपड़े की तमाम मिलों को अपने हाथ में ले कर खुद न चलायेगी तब तक वह न आम खरीदार का भला कर सकेगी न बुनकरों का! इण्डस्ट्री मिनिस्टर ने बहस का जवाब देते हुए अपने बयान में कहा कि "अगर मेम्बर लोग इस नये बिल का विरोध करेंगे तो मुझे मजबूर होकर साठ फी सदी पाबन्दी वाला पुराना हुक्म हटा देना पड़ेगा! और अगर बाहर से कपड़ा मंगाना हमने बन्द किया तो फिर हम भी अपनी मिलों का कपड़ा बाहर नहीं भेज सकेंगे!"

पार्लिमेण्ट में इस विषय पर जो चर्चा रही उससे और इण्डस्ट्री मिनिस्टर के बयान से कई बातों का साफ पता चल जाता है:

1. सरकार विदेशों से कपड़ा मंगा रही है और उसकी नीति में तब्दीली नहीं करना चाहती.

2. सरकार मिल वालों से अपनी बात मनवाने में असमर्थ है.

3. बुनकरों की बुनियादी मांगें—सूत [illegible] की [illegible] और तैयार माल बिक्री—आदि से सरकार इनकार [illegible]

[illegible] मिलों की [illegible] ही यह साबित करता है कि सरकार का [illegible] कागजी ही रहा [illegible] हमें याद है कि जब [illegible]

یہ کپڑے تیار ہوں۔ لیکن دلی سرکار کو یہ منظور نہ ہوا۔ لیکن اس نے یہ حکم جاری کیا کہ اپریل 1951 سے مارچ 1952 تک جتنی دھوتیاں ملوں نے بنائی ہوں آئندہ اس کی صرف ساٹھ فیصدی ہی بنائیں۔ نئی دلی سرکار کی یہ پابندی بہت حد تک کاغذی رہی۔ کپڑا ملوں نے اس کی کوئی پرواہ نہ کی اور کئی صوبہ سرکاروں نے بھی اس کی طرف کوئی خاص دھیان نہیں دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ دھوتیاں ملوں میں سہودھا کے انوسار بنتی چلی گئیں اور بنکروں کی بیکاری اور پریشانی میں بھی کوئی فرق نہیں پڑا کیونکہ آج بھی کیا اتر پردیش، کیا بہار، کیا مدھیہ پردیش اور کیا مدراس، ہر جگہ کا بنکر دکھی ہے اور اپنا کام چھوڑنے پر مجبور ہو رہا ہے۔

پارلیمنٹ میں اس بل پر جو بحث ہوئی وہ بہت دلچسپ تھی۔ ایک بھائی نے کہا کہ نئی چنگی سے دھوتیاں مہنگی ہو جائینگی اور عام خریدار کو گھاٹا رہے گا! دوسرے نے کہا کہ اس بل سے بنکروں کے ہت کو بڑی چوٹ پہونچیگی اور سرکار ان کو جو امداد پہونچانا چاہتی ہے سو نہ پہونچا سکے گی! تیسرے نے کہا کہ دیش کے اندر ودیش سے کپڑا آنا بند کیا جائے! چوتھے نے کہا کہ جب تک سرکار کپڑے کی تمام ملوں کو اپنے ہاتھ میں لے کر خود نہ چلائیگی تب تک وہ نہ عام خریدار کا بھلا کر سکے گی نہ بنکروں کا! انڈسٹری منسٹر نے بحث کا جواب دیتے ہوئے اپنے بیان میں کہا کہ "اگر ممبر لوگ اس نئے بل کا ورودھ کرینگے تو مجھے مجبور ہو کر ساٹھ فیصدی پابندی والا پرانا حکم ہٹا دینا پڑے گا! اور اگر باہر سے کپڑا منگانا ہم نے بند کیا تو پھر ہم بھی اپنی ملوں کا کپڑا باہر نہیں بھیج پائینگے!"

پارلیمنٹ میں اس وشے پر جو چرچا رہی اس سے اور انڈسٹری منسٹر کے بیان سے کئی باتوں کا صاف پتہ چل جاتا ہے:

1. سرکار ودیشوں سے کپڑا منگا رہی ہے اور اپنی نیتی میں تبدیلی نہیں کرنا چاہتی۔

2. سرکار مل والوں سے اپنی بات منوانے میں اسمرتھ ہے۔

3. بنکروں کی بنیادی مانگیں—سوت کی سپلائی اور تیار مال بکری—سے سرکار انکار [illegible] ہے۔

[illegible] بل کی ضرورت ہی یہ ثابت کرتی ہے کہ سرکار کا پرانا حکم کاغذی ہی رہا [illegible] نہیں ہے [illegible] ہمیں یاد ہے کہ جب ساٹھ فیصدی والی پابندی [illegible] کی [illegible] مالک [illegible] نے [illegible]

आन्दोलन को खत्म कुचला. इस में शक नहीं विद्यार्थियों से भी गलतियां हुई हैं. विद्यार्थियों से हमदर्दी दिखाने वाली जनता ने भी कुछ गलत हरकतें कीं. लेकिन इन सब के होते हुए हम यह पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकते हैं कि कुल मिला कर विद्यार्थियों के काम और उनका रुख अफसरों के कामों और उन के रुख के मुकाबिले में अहिंसात्मक और काबिल माफी रहा और मुकामी अफसरों के काम और उनका रुख के विद्यार्थियों के कामों और रुख के मुकाबिले में हिंसात्मक और नाकाबिल बर्दाश्त. सच यह है कि यह सारी मुसीबत और बदअमनी ही इसलिये पैदा हुई कि निहत्थे विद्यार्थियों के अहिंसात्मक आन्दोलन को जबरदस्ती हिंसा से दबाने की कोशिश की गई और यों उसके रूप को ही बदल दिया गया. इस सब की जिम्मेवारी हम मुकामी अफसरों या दूसरे बड़े हाकिमों पर नहीं रखते असली जिम्मेदारी चांसलर की हैसियत से श्री के. एम. मुन्शी की गलत ख्वाहिशों, गलत कोशिशों और गलत पालिसी पर है.

अन्त में हम विद्यार्थियों और शासकों सब से नम्रता के साथ यह कहना चाहते हैं कि जमाने की घड़ी की सुईयां हजार कोशिश करने पर भी पीछे को नहीं मोड़ी जा सकतीं. इस तरह की गलत कोशिशों से हम देश और देशवासियों के लिये मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, इतिहास के धारे को नहीं पलट सकते. विद्यार्थियों से हम यह खुले कहना चाहते हैं कि अगर वह अपने दिलों को साफ रखें, मन, वचन और कर्म में हिंसा से अपने को और अपने आन्दोलन को पाक रखें और अपने इरादे के पक्के रहें तो देश का भविष्य उन्हीं के साथ और उन्हीं के हाथों में है.

9. 12. 53. —सुंदर लाल

हमारे बुनकर, मिलें और सरकार

नवम्बर के आखरी हफ्ते में हिन्द सरकार के कामर्स और इन्डस्ट्री मिनिस्टर ने पार्लिमेन्ट में 'धोती बिल' नाम का एक बिल पेश किया. उसमें कहा गया कि किसी मिल को जितनी धोतियां तैयार करने की इजाजत है वह अगर उससे ज्यादा तैयार करेगी तो [illegible] तक की चुंगी उस पर लगा दी जायगी. यहां हम यह कह दें कि सन् 1952 में जब बुनकरों पर [illegible] सारे देश के, खास कर मद्रास [illegible] के बुनकर बहुत [illegible] हालत में थे [illegible] ने [illegible] बताई थी कि मिलों ने धोती और साड़ियों की [illegible]

[illegible] اس میں شک نہیں ودیارتھیوں سے بھی غلطیاں ہوئیں۔ ودیارتھیوں سے ہمدردی دکھانے والی جنتا نے بھی کچھ غلط حرکتیں کیں۔ لیکن ان سب کے ہوتے ہوئے ہم یہ پوری ذمہ داری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ کل ملا کر ودیارتھیوں کے کام اور ان کا رخ افسروں کے کاموں اور ان کے رخ کے مقابلے میں اہنساتمک اور قابل معافی رہا اور مقامی افسروں کے کام اور ان کا رخ ودیارتھیوں کے کاموں اور رخ کے مقابلے میں ہنساتمک اور ناقابل برداشت۔ سچ یہ ہے کہ یہ ساری مصیبت اور بدامنی ہی اس لئے پیدا ہوئی کہ نہتے ودیارتھیوں کے اہنساتمک اندولن کو زبردستی ہنسا سے دبانے کی کوشش کی گئی اور یوں اس کے روپ کو ہی بدل دیا گیا۔ اس سب کی ذمہ داری ہم مقامی افسروں یا دوسرے بڑے حاکموں پر نہیں رکھتے۔ اصلی ذمہ داری چانسلر کی حیثیت سے شری کے۔ ایم۔ منشی کی غلط خواہشوں، غلط کوششوں اور غلط پالیسی پر ہے۔

انت میں ہم ودیارتھیوں اور شاسکوں سب سے نمرتا کے ساتھ یہ کہنا چاہتے ہیں کہ زمانہ کی گھڑی کی سوئیاں ہزار کوشش کرنے پر بھی پیچھے کو نہیں موڑی جا سکتیں۔ اس طرح کی غلط کوششوں سے ہم دیش اور دیش واسیوں کے لئے مصیبتیں کھڑی کر سکتے ہیں، اتہاس کے دھارے کو نہیں پلٹ سکتے۔ ودیارتھیوں سے ہم یہ کھلے کہنا چاہتے ہیں کہ اگر وہ اپنے دلوں کو صاف رکھیں، من، بچن اور کرم میں ہنسا سے اپنے کو اور اپنے اندولن کو پاک رکھیں اور اپنے ارادے کے پکے رہیں تو دیش کا بھوشیہ انہیں کے ساتھ اور انہیں کے ہاتھوں میں ہے۔

—سندرلال 9.12.53

ہمارے بنکر، ملیں اور سرکار

نومبر کے آخری ہفتے میں ہند سرکار کے کامرس اور انڈسٹری منسٹر نے پارلیمنٹ میں 'دھوتی بل' نام کا ایک بل پیش کیا۔ اس میں کہا گیا کہ کسی مل کو جتنی دھوتیاں تیار کرنے کی اجازت ہے وہ اگر اس سے زیادہ تیار [illegible] 1952 [illegible]

नितान्त साम्प्रदायिक है. यूनिवर्सिटी के विद्वान लेखक श्री के. एम. मुन्शी को इतिहास में सनद कैसे मान सकते थे. बात यों ही चलती रही.

सुना जाता है कि श्री के. एम. मुन्शी ने इस बात की भी कोशिश की यूनीवर्सिटी के टीचरों में कम्यूनिज्म जैसी चीज़ों को बढ़ने से रोकने के लिये उनकी लगभग उसी तरह की सरविस बुक्स रखी जावें जिस तरह कि पुलिस या कुछ और मोहकमों में रखी जाती हैं. इस पर भी टीचर्स में काफी असंतोष हुआ.

इसी गरज़ के लिये श्री के. एम. मुन्शी और उनके हम ख्याल लोगों ने यूनिवर्सिटी यूनियनों के विधान को बदल कर लड़कों को क़ाबू में करना चाहा.

और भी कई छोटी-छोटी किन्तु भद्दी चीज़ें सुनने में आ रही हैं जो न किसी यूनीवर्सिटी की शान को बढ़ा सकती हैं और न किसी चांसलर या गवर्नर की.

नैनीताल में, सुना जाता है, ज़ियादातर एक ख्याल के लड़कों को ही बुलाया गया था और जिस तरह की हवा वहां पर थी उससे मालूम होता था कि श्री के. एम. मुन्शी को यह ध्यान ही नहीं कि हिन्दू लड़कों के साथ साथ मुस्लिम, ईसाई, पारसी और सिक्ख लड़के भी यूनिवर्सिटीयों में पढ़ते हैं और उनको यूनीवर्सिटीयों पर उतना ही और उसके बराबर का हक़ है जितना हिन्दू लड़कों को.

हमें यह सब लिखते हुए तकलीफ़ हो रही है. पर हम मजबूर हैं. यह सारा सवाल देश के लिये केवल उन्नति और अवनति का ही नहीं, खुशहाली और बरबादी, ज़िन्दगी और मौत का सवाल है.

यह सब असली जड़ें हैं उस सारे विद्यार्थी आंदोलन और उस से पैदा होने वाली उस बदअमनी की जिसने देश के बड़े बड़े सेवकों को चिन्ता में डाल दिया. लखनऊ की भयंकर घटनाएं आई गई हो चुकीं. ज़ाहिर है और कुदरती था कि आम जनता की हमदर्दी विद्यार्थियों के साथ थी इस लिये नहीं कि कम्यूनिज्म की फ़िलासफ़ी जनता को ज़्यादा अपील करती है या किसी और पार्टी की पालिसी. बल्कि केवल इसलिये कि देश की जनता को देश के विद्यार्थियों अच्छे या बुरे, मुल्क की आइन्दा की उम्मीदों को इस तरह कुचलने और क़ाबू में करने का ढंग हरगिज़ पसन्द नहीं आ सकता. हम भी कई यूनिवर्सिटियों में पढ़ चुके हैं. देश में यह एक पुराना पक्का रिवाज चला आता था कि यूनिवर्सिटी के अन्दर और यूनिवर्सिटी के मामलों में पुलिस को किसी तरह का दखल नहीं देने दिया जाता था. आज न केवल यह रिवाज ही तोड़ डाला गया बल्कि गवर्नर खुले आम में पुलिस को शाबाशी देता है कि पुलिस ने विद्यार्थी

نتانت سامپردائک ہے ۔ یونیورسٹی کے ودوان لیکھک شری کے ۔ ایم ۔ منشی کو اتہاس میں سند کیسے مان سکتے تھے ۔ بات یوں ہی چلتی رہی ۔

سنا جاتا ہے کہ شری کے ۔ ایم ۔ منشی نے اس بات کی بھی کوشش کی کہ یونیورسٹی کے ٹیچروں میں کمیونزم جیسی چیزوں کو بڑھنے سے روکنے کے لئے ان کی لگ بھگ اسی طرح کی سروس بکس رکھی جائیں جس طرح کہ پولیس یا کچھ اور محکموں میں رکھی جاتی ہیں ۔ اس پر بھی ٹیچرس میں کافی اسنتوش ہو ۔

اسی غرض کے لئے شری کے ۔ ایم ۔ منشی اور ان کے ہم خیال لوگوں نے یونیورسٹی یونینوں کے ودھان کو بدل کر لڑکوں کو قابو میں کرنا چاہا ۔

اور بھی کئی چھوٹی چھوٹی کنتو بھدی چیزیں سننے میں آ رہی ہیں جو نہ کسی یونیورسٹی کی شان کو بڑھا سکتی ہیں اور نہ کسی چانسلر یا گورنر کی ۔

نینی تال میں، سنا جاتا ہے، زیادہ تر ایک خیال کے لڑکوں کو ہی بلایا گیا تھا اور جس طرح کی ہوا وہاں پر تھی اس سے معلوم ہوتا تھا کہ شری کے ۔ ایم ۔ منشی کو یہ دھیان ہی نہیں کہ ہندو لڑکوں کے ساتھ ساتھ مسلم، عیسائی، پارسی اور سکھ لڑکے بھی یونیورسٹیوں میں پڑھتے ہیں اور ان کو یونیورسٹیوں پر اتنا ہی اور اس کے برابر کا حق ہے جتنا ہندو لڑکوں کو ۔

ہمیں یہ سب لکھتے ہوئے تکلیف ہو رہی ہے ۔ پر ہم مجبور ہیں ۔ یہ سارا سوال دیش کے لئے کیول اُنتی اور اَونتی کا ہی نہیں، خوشحالی اور بربادی، زندگی اور موت کا سوال ہے ۔

یہ سب اصلی جڑیں ہیں اس سارے ودیارتھی آندولن اور اس سے پیدا ہونے والی اس بدامنی کی جس نے دیش کے بڑے بڑے سیوکوں کو چنتا میں ڈال دیا ۔ لکھنؤ کی بھینکر گھٹنائیں آئی گئی ہو چکیں ۔ ظاہر ہے اور قدرتی تھا کہ عام جنتا کی ہمدردی ودیارتھیوں کے ساتھ تھی اس لئے نہیں کہ کمیونزم کی فلاسفی جنتا کو زیادہ اپیل کرتی ہے یا کسی اور پارٹی کی پالیسی ۔ بلکہ کیول اس لئے کہ دیش کی جنتا کو دیش کے ودیارتھیوں، اچھے یا برے، ملک کی آئندہ کی امیدوں کو اس طرح کچلنے اور قابو میں کرنے کا ڈھنگ ہرگز پسند نہیں آ سکتا ۔ ہم بھی کئی یونیورسٹیوں میں پڑھ چکے ہیں ۔ دیش میں یہ ایک پرانا پکا رواج چلا آتا تھا کہ یونیورسٹی کے اندر اور یونیورسٹی کے معاملوں میں پولیس کو کسی طرح کا دخل نہیں دینے دیا جاتا تھا ۔ آج نہ کیول یہ رواج ہی توڑ ڈالا گیا بلکہ گورنر کھلے عام میں پولیس کو شاباشی دیتا ہے کہ پولیس نے ودیارتھی

धर्म, राजनीति और अर्थ नीति सब में मानव समाज को पीछे घसीटने वाली सब ताक़तें आपस में मिल जाती हैं. इस लिये देश की फ़िरक़ा परस्त ताक़तें अधिकतर अमरीकी और अंगरेज़ी साम्राज्यवाद और देशी और विदेशी पूंजीवाद वालों के साथ मिल कर चलती हैं. यह भी एक कारन है कि श्री के. एम. मुंशी को कम्यूनिस्टों के साथ या उनसे मिलते जुलते विचार वालों से ख़ास डर और एक ख़ास नाराज़गी है.

अंगरेज़ी ज़माने से यूनीवर्सिटियों के विद्यार्थियों को अपनी यूनीवर्सिटी यूनियन बनाने और उनके ओहदेदार वग़ैरा चुनने के कुछ अधिकार मिले हुए थे. श्री के. एम. मुंशी ने विद्यार्थियों को अपने रास्ते पर लाने के लिये यह ज़रूरी समझा कि उनकी ताक़त को तोड़ा जाय. इस के लिये उन्होंने विद्यार्थियों के इन अधिकारों में दख़ल देना और उन्हें कम करना चाहा. तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं है. विद्यार्थियों में इससे असंतोष पैदा हुआ. जगह जगह यूनीवर्सिटी यूनियन के विधान को बदलने के ख़िलाफ़ शान्ति और अहिंसात्मक प्रदर्शन हुए.

एक और बात हुई जिस से श्री के. एम. मुंशी के अंदर के विचार और चमक उठे. देश के सब विचारवान लोग इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि हमारे उस समय के अंगरेज़ हाकिमों ने देश के अंदर हिन्दू और मुसलमानों के दिलों में एक दूसरे से नफ़रत पैदा करने के लिये जो जो तरीक़े बरते थे उनमें एक ख़ास तरीक़ा भारत के पिछले इतिहास को और ख़ासकर मुस्लिम और मुग़ल ज़माने के इतिहास को इस तरह रंग कर देश के सामने रखना था जिससे नफ़रतें बढ़ें. मुस्लिम बादशाहों की छोटी-मोटी ग़लतियों को चुन-चुन कर सामने लाना, उन्हें रंग देना और उन बादशाहों की नेकियों, उन के अहसानों और उस ज़माने के करोड़ों हिन्दू मुसलमानों के प्रेम भरे आपसी संबंधों को दबाना और छुपाना इन नापाक तरीक़ों में से एक ख़ास तरीक़ा था. हाल के ज़माने में कुछ समझदार हिंदुस्तानी इतिहास लेखकों का ध्यान इस तरफ़ गया. कुछ लिखने वालों ने जिनमें इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के कुछ प्रोफ़ेसर भी थे अपनी नई इतिहास की किताबों में इस दोष को कम करने की कोशिश की. श्री के.एम. मुन्शी ने यूनिवर्सिटी का चांसलर होने के बाद इस बात को गवारा करना ठीक न समझा. सुना जाता है कि नैनीताल में जो उन्होंने प्रदेश की यूनीवर्सिटियों के कुछ लोगों को जमा करके उन्हें सलाहें दीं, उनमें से एक ख़ास सलाह यह भी थी कि यूनिवर्सिटी की इतिहास की किताबों के लिखने वालों के इस रुझान को बदला जावे. हमें मालूम है कि ख़ुद श्री के. एम. मुन्शी की इतिहास की जानकारी अधकचरी और ग़लत है, और उनकी

دھرم، راجنیتی اور ارتھ نیتی سب میں مانو سماج کو پیچھے گھسیٹنے والی سب طاقتیں آپس میں مل جاتی ہیں۔ اس لئے دیش کی فرقہ پرست طاقتیں ادھکتر امریکی اور انگریزی سامراجواد اور دیشی اور ودیشی پونجی واد دیوں کے ساتھ مل کر چلتی ہیں۔ یہ بھی ایک کارن ہے کہ شری کے۔ ایم۔ منشی کو کمیونسٹوں کے ساتھ یا ان سے ملتے جلتے وچار والوں سے خاص ڈر اور ایک خاص ناراضگی ہے۔

انگریزی زمانے سے یونیورسٹیوں کے ودیارتھیوں کو اپنی یونیورسٹی یونین بنانے اور ان کے عہدیدار وغیرہ چننے کے کچھ ادھیکار ملے ہوئے تھے۔ شری کے۔ ایم۔ منشی نے ودیارتھیوں کو اپنے راستے پر لانے کے لئے یہ ضروری سمجھا کہ ان کی طاقت کو توڑا جائے۔ اس کے لئے انہوں نے ودیارتھیوں کے ان ادھیکاروں میں دخل دینا اور انہیں کم کرنا چاہا۔ تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ودیارتھیوں میں اس سے اسنتوش پیدا ہوا۔ جگہ جگہ یونیورسٹی یونین کے ودھان کو بدلنے کے خلاف شانتی اور اہنسایتمک پردرشن ہوئے۔

ایک اور بات ہوئی جس سے شری کے۔ ایم۔ منشی کے اندر کے وچار اور چمک اٹھے۔ دیش کے سب وچاروان لوگ اس بات کو اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ ہمارے اس سمے کے انگریز حاکموں نے دیش کے اندر ہندو اور مسلمانوں کے دلوں میں ایک دوسرے سے نفرت پیدا کرنے کے لئے جو جو طریقے برتے تھے ان میں ایک خاص طریقہ بھارت کے پچھلے اتہاس کو اور خاص کر مسلم اور مغل زمانہ کے اتہاس کو اس طرح رنگ کر دیش کے سامنے رکھنا تھا جس سے نفرتیں بڑھیں۔ مسلم بادشاہوں کی چھوٹی موٹی غلطیوں کو چن چن کر سامنے لانا، انہیں رنگ دینا اور ان بادشاہوں کی نیکیوں، ان کے احسانوں اور اس زمانہ کے کروڑوں ہندو مسلمانوں کے پریم بھرے آپسی سمبندھوں کو دبانا اور چھپانا ان ناپاک طریقوں میں سے ایک خاص طریقہ تھا۔ حال کے زمانہ میں کچھ سمجھدار ہندوستانی اتہاس لیکھکوں کا دھیان اس طرف گیا۔ کچھ لکھنے والوں نے جن میں الٰہ آباد یونیورسٹی کے کچھ پروفیسر بھی تھے اپنی نئی اتہاس کی کتابوں میں اس دوش کو کم کرنے کی کوشش کی۔ شری کے۔ ایم۔ منشی نے یونیورسٹی کا چانسلر ہونے کے بعد اس بات کو گوارا کرنا ٹھیک نہ سمجھا۔ سنا جاتا ہے کہ نینی تال میں جو انہوں نے پردیش کی یونیورسٹیوں کے کچھ لوگوں کو جمع کر کے انہیں صلاحیں دیں، ان میں سے ایک خاص صلاح یہ بھی تھی کہ یونیورسٹی کی اتہاس کی کتابوں کے لکھنے والوں کے اس رجحان کو بدلا جائے۔ ہمیں معلوم ہے کہ خود شری کے۔ ایم۔ منشی کی اتہاس کی جانکاری ایک ادھوری اور غلط ہے، اور ان کی

के साथ वे हिन्दू राज बनाना चाहते हैं और हुकूमत के कामों में कुछ हिन्दू रीत रिवाजों और पूजा पाठों को इस तरह शामिल कर लेना चाहते हैं कि जिससे दुनिया देख ले कि भारत की हुकूमत हिन्दू हुकूमत है. पाकिस्तान के मुस्लिम राज की कल्पना से इन लोगों को काफ़ी शह मिलती रही है और अब भी मिल रही है.

हम इस तरह के विचार रखने वालों की ईमानदारी में सन्देह नहीं करते. ईमानदार, नेक और चरित्रवान आदमी कम या ज़ियादा हर विचार के लोगों में मिलेंगे. पर इस तरह के विचारों को हम देश के लिये इस समय सबसे अधिक ख़तरे की चीज़ मानते हैं.

उत्तर प्रदेश के गवर्नर श्री कन्हैया लाल मुंशी शुरू से लगभग इन ही विचारों के हैं. श्री कन्हैया लाल मुंशी हमारे मित्रों में से हैं. हम एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हैं. सोमनाथ के पुनरुद्धार के मामले में उनका ज़बरदस्त हिस्सा लेना, सूबे के गवर्नर होते हुए मथुरा में उनका गोवर्धन पूजा करना, गवर्नर के महल में आए दिन उनका हिन्दू रिवाजों के अनुसार पूजा पाठ और अनुष्ठान कराना यह सब उनकी इसी मनोवृत्ति का सबूत है. हम इस बारे में उनका कोई क़सूर भी नहीं समझते. दुनिया के अधिकतर आदमी अपनी शिक्षा दीक्षा और संसकारों की पैदावार होते हैं. वही वह भी हैं. हो सकता है वह ही हम भी हों. पर इस समय हमारे सामने सवाल दूसरा है.

इस तरह श्री मुंशी गवर्नर होते हुए भी अगर वह केवल अपने निजी जीवन तक ही महदूद रखते तो शायद उनसे इतने बुरे नतीजे पैदा न होते जो हुए. उनकी और पिछली कार्रवाइयों की चर्चा न करते हुए हाल में लखनऊ, इलाहाबाद और आगरा यूनीवर्सिटियों के चांसलर की हैसियत से वह अपनी हद से बहुत ज़ियादा बढ़ गए.

यूनीवर्सिटियों में आम तौर पर—और यह एक क़ुदरती बात है—लड़के और लड़कियां धर्म, मज़हब जैसे मामलों में आज़ाद ख़याली की तरफ़ ज़ियादा जा रहे हैं. इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि यूनीवर्सिटियों के विद्यार्थी जाने या अनजाने कई तरह की बातों में कम्यूनिज़्म जैसे विचारों की तरफ़ झुक रहे हैं. यह भी आजकल के ज़माने में एक क़ुदरती बात है. पुराने ढंग के धार्मिक विचारों और रीत रिवाजों में अब पढ़े लिखे नौजवानों और विद्यार्थियों को [illegible] महसूस नहीं होती. हिन्दू राज और मुस्लिम राज की कल्पनाएं भी उनके दिलों को अपील नहीं करतीं. श्री मुंशी ने चांसलर की हैसियत से [illegible] धारा को पलटना चाहा.

کے ساتھ وہ ہندو راج بنانا چاہتے ہیں اور حکومت کے کاموں میں کچھ ہندو ریت رواجوں اور پوجا پاٹھوں کو اس طرح شامل کر لینا چاہتے ہیں کہ جس سے دنیا دیکھ لے کہ بھارت کی حکومت ہندو حکومت ہے۔ پاکستان کی مسلم راج کی کلپنا سے ان لوگوں کو کافی شہہ ملتی رہی ہے اور اب بھی مل رہی ہے۔

ہم اس طرح کے وچار رکھنے والوں کی ایمانداری میں سندیہہ نہیں کرتے۔ ایماندار، نیک اور چرتروان آدمی کم یا زیادہ ہر وچار کے لوگوں میں ملینگے۔ پر اس طرح کے وچاروں کو ہم دیش کے لئے اس سمے سب سے ادھک خطرے کی چیز مانتے ہیں۔

اتر پردیش کے گورنر شری کنھیا لال منشی شروع سے لگ بھگ ان ہی وچاروں کے ہیں۔ شری کنھیا لال منشی ہمارے متروں میں سے ہیں۔ ہم ایک دوسرے سے اچھی طرح پریچت ہیں۔ سومناتھ کے پنر ادھار کے معاملے میں ان کا زبردست حصہ لینا، صوبے کے گورنر ہوتے ہوئے متھرا میں ان کا گوبردھن پوجا کرنا، گورنر کے محل میں آئے دن ان کا ہندو رواجوں کے انوسار پوجا پاٹھ اور انشٹھان کرانا یہ سب ان کی اسی منوورتی کا ثبوت ہیں۔ ہم اس بارے میں ان کا کوئی قصور بھی نہیں سمجھتے۔ دنیا کے ادھکتر آدمی اپنی شکشا دیکشا اور سنسکاروں کی پیداوار ہوتے ہیں۔ وہی وہ بھی ہیں۔ ہوسکتا ہے وہی ہم بھی ہوں۔ پر اس سمے ہمارے سامنے سوال دوسرا ہے۔

اس طرح کی چیزیں گورنر ہوتے ہوئے بھی اگر وہ کیول اپنے نجی جیون تک ہی محدود رکھتے تو شاید ان سے اتنے برے نتیجے پیدا نہ ہوتے جو ہوئے۔ ان کی اور پچھلی کارروائیوں کی چرچا نہ کرتے ہوئے حال میں لکھنؤ، الہ آباد اور آگرہ یونیورسٹیوں کے چانسلر کی حیثیت سے وہ اپنی حد سے بہت زیادہ بڑھ گئے۔

یونیورسٹیوں میں عام طور پر—اور یہ ایک قدرتی بات ہے—لڑکے اور لڑکیاں دھرم مذہب جیسے معاملوں میں آزاد خیالی کی طرف زیادہ جا رہے ہیں۔ اس سے بھی انکار نہیں کیا جاسکتا کہ یونیورسٹیوں کے ودیارتھی جانے یا انجانے کئی طرح کی باتوں میں کمیونزم جیسے وچاروں کی طرف جھک رہے ہیں۔ یہ بھی آجکل کے زمانے میں ایک قدرتی بات ہے۔ پرانے ڈھنگ کے دھارمک وچاروں اور ریت رواجوں میں اب پڑھے لکھے نوجوانوں کو دلچسپی محسوس نہیں ہوتی۔ ہندو راج اور مسلم راج کی کلپنائیں بھی ان کے دلوں کو اپیل نہیں کرتیں۔ شری کے۔ ایم۔ منشی نے چانسلر کی حیثیت سے ان کی اس دھارا کو پلٹنا چاہا۔

हमारी राय / ہماری رائے

विद्यार्थी आन्दोलन और श्री के. एम. मुंशी

हर देश में कई तरह की विचार धाराओं का एक साथ चलना और उन में टक्करों का होना क़ुदरती है और एक दर्जे तक देश के अन्दर जागृति और जीवन की पहचान है. हमारे देश के अन्दर भी कई तरह की विचार धाराएं चल रही हैं और उनमें जब तब टक्करें भी होती रहती हैं. उनमें बहुत दिनों से दो धाराएं ख़ास हैं—एक संकीर्ण धार्मिक, फ़िरक़ा-परस्ती, कट्टरता और पुराने अंध विश्वासों की तरफ़ झुकने वाली धारा और दूसरी उदारता, रवादारी, तरक़्क़ी पसन्दी और बुद्धिवाद की तरफ़ ले जाने वाली धारा. इनमें पहली धारा देशवासी देशवासी में ग़ैरियत और नफ़रतों के बीज बो कर देश को फूट और बरबादी की तरफ़ ले जाने वाली है, और दूसरी आपसी प्रेम बढ़ा कर एकता और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाने वाली. डेढ़ सौ बरस तक अंगरेज़ों की ग़ुलामी क़ायम रखने में इस पहली धारा ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया. उस समय के हाकिमों ने इससे पूरा पूरा फ़ायदा उठाया. इसी धारा ने धर्म के आधार पर अलग अलग क़ौमों के सिद्धान्त की नींव डाली. इसी ने आख़िर में देश के दो टुकड़े कराए. महात्मा गांधी ने जीवन भर इन ग़लत और ज़हरीले विचारों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी और अंत में इसी लड़ाई में बहादुरी और शान्ति के साथ अपने प्राण दिये.

लेकिन महात्मा गांधी के बलिदान के बाद भी इस तरह के ग़लत और हानिकर विचार हमारे देश से मिटे नहीं हैं. अब भी काफ़ी लोग इस तरह के देश में हैं जो सेकुलर राज की कल्पना को—यानी उस कल्पना को कि मज़हब के मामले में राज बिलकुल ग़ैर जानिबदार हो, उसका किसी धर्म या सम्प्रदाय से कोई ख़ास संबन्ध न हो और वह सब धर्मों और धर्म वालों को एक बराबर की निगाह से देखे—ग़लत समझते हैं. यह लोग इस देश

ودیارتھی آندولن اور شری کے. ایم. منشی

ہر دیش میں کئی طرح کی وچار دھاراؤں کا ایک ساتھ چلنا اور ان میں ٹکروں کا ہونا قدرتی ہے اور ایک درجہ تک دیش کے اندر جاگرتی اور جیون کی پہچان ہے. ہمارے دیش کے اندر بھی کئی طرح کی وچار دھارائیں چل رہی ہیں اور ان میں جب تب ٹکریں بھی ہوتی رہتی ہیں. ان میں بہت دنوں سے دو دھارائیں خاص ہیں—ایک سنکیرن دھارمک وچاروں' فرقہ پرستی' کٹرتا اور پرانے اندھ وشواسوں کی طرف جھکنے والی دھارا اور دوسری 'ادارتا' رواداری' ترقی پسندی اور بدھی واد کی طرف لے جانے والی دھارا. ان میں پہلی دھارا دیش واسی دیش واسی میں غیریت اور نفرتوں کے بیج بو کر دیش کو پھوٹ اور بربادی کی طرف لے جانے والی ہے' اور دوسری آپسی پریم بڑھا کر ایکتا اور خوشحالی کی طرف لے جانے والی. ڈیڑھ سو برس تک انگریزوں کی غلامی قائم رکھنے میں اس پہلی دھارا نے بہت بڑا حصہ لیا. اس سمے کے حاکموں نے اس سے پورا پورا فائدہ اٹھایا. اسی دھارا نے دھرم کے آدھار پر الگ الگ قوموں کے سدھانت کی نیو ڈالی. اسی نے آخیر میں دیش کے دو ٹکڑے کرائے. مہاتما گاندھی نے جیون بھر ان غلط اور زہریلے وچاروں کے خلاف لڑائی لڑی اور انت میں اسی لڑائی میں بہادری اور شانتی کے ساتھ اپنے پران دئے.

لیکن مہاتما گاندھی کے بلیدان کے بعد بھی اس طرح کے غلط اور ہانیکر وچار ہمارے دیش سے مٹے نہیں ہیں. اب بھی کافی لوگ اس طرح کے دیش میں ہیں جو سیکولر راج کی کلپنا کو—یعنی اس کلپنا کو کہ مذہب کے معاملے میں راج بالکل غیر جانبدار ہو' اس کا کسی دھرم یا سمپردائے سے کوئی خاص سمبندھ نہ ہو اور وہ سب دھرموں اور دھرم والوں کو ایک برابر کی نگاہ سے دیکھے—غلط سمجھتے ہیں. یہ لوگ اس دیش

हैं गिरफ़्तार रह कर कभी नाउम्मीदी और मायूसी के शिकार हुए और कभी कम हिम्मत और पस्तहिम्मती की क़ुर्बानगाह (वेदी) पर जा कर पुराने फ़िरक़ावाराना तअस्सुब पैदा करें और फिर ख़ुद ही उनका शिकार बन जायें. इन तीन के सिवा और कोई तरीक़ा इनके सामने नहीं है.

इस कन्वेन्शन की सलाह यह है कि हिन्द के मुसलमानों को अपनी पुरानी मज़हबी लकीरों और राजकाजी ग़लत राहों को छोड़ कर नया रास्ता निकालना चाहिये. अब तक वह सीटपरस्ती और अपनी हवस को पूरा करने की राहों पर चलते रहे हैं, अब उन्हें इन राहों को छोड़ कर सच्ची रोशनी से मदद लेकर सच्ची जम्हूरियत यानी सच्ची लोकशाही या हुकूमते इलाही क़ायम करने को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाना चाहिये. उन्हें चाहिये कि अपनी माली, समाजी और रूहानी ज़िन्दगी को सुधारने के लिये क़ुरान के मुताबिक़ प्रोग्राम बनायें और उन प्रोग्रामों को ज़ोर शोर के साथ चलाने में लग जायें.

इस कन्वेन्शन की यह भी सलाह है कि मुसलमान इस तहरीक में शामिल होने की अपने हिन्दू भाइयों को भी दावत दें और उन्हें यह यक़ीन दिलायें कि कम हिम्मत और पस्तहिम्मत और तमाम फ़िरक़ावाराना भेद भावों और मज़हबी बिरादरियों की सच्ची जम्हूरियत या लोकराज में कोई जगह नहीं है. अगर हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर अपनी इन बीच की दीवारों को ढा दें तो इनके ढहे जाने के बाद हमारी समाज वह सूरत ले सकती है जिसे हम सच्ची जम्हूरियत या हुकूमते इलाही या रामराज कह सकते हैं. इस कन्वेन्शन को यह यक़ीन है कि अगर सच्ची जम्हूरियत हिन्दुस्तान में क़ायम हो जाये तो पाकिस्तान इसके असर से बाहर नहीं रह सकता. बस यही एक रास्ता है जिस से वह ज़ख़्म कि जो अंगरेज़ी हिकमते अमली ने लगाये हैं भर सकते हैं. जिस्म के दो टुकड़े जिन से आज भी ख़ून बह रहा है जुड़ सकते हैं और वह दो भाई जो आज एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंगी मोर्चे तैयार कर रहे हैं फिर से गले मिल सकते हैं.

इस कन्वेन्शन को पूरा यक़ीन है कि अगर इसकी सलाह मान ली जाय तो मुल्क की ज़िन्दगी में ज़बरदस्त इन्क़लाब पैदा हो सकता है. इस इन्क़लाब के पैदा करने के लिये मुनासिब यह होगा कि यह कन्वेन्शन अपने इस जलसे में कोई प्रोग्राम न बनाये बल्कि उन तजवीज़ों को जो इसके सामने आई हैं मुल्क के सामने रखे इस मक़सद के साथ कि मुल्की मीटिंगों और कान्फ्रेंसों में उन्हें पेश कर के आम राय हासिल की जाय. फिर एक मुद्दत के बाद उन सारी बहसों की रोशनी में यह कन्वेन्शन अपने दूसरे जलसे में आगे के काम के लिये प्रोग्राम तैयार करे.

میں گرفتار رہ کر کبھی خاموشی اور مایوسی کے شکار ہوں اور کبھی کم ہمتی اور پست ہمتی کی قربان گاہ (ویدی) پر جا کر پرانے فرقہ وارانہ طوفان پیدا کریں اور پھر خود ہی ان کا شکار بن جائیں۔ ان تین کے سوا اور کوئی طریقہ ان کے سامنے نہیں ہے۔

اس کنوینشن کی صلاح یہ ہے کہ ہند کے مسلمانوں کو اپنی پرانی مذہبی لکیروں اور راجکاجی غلط راہوں کو چھوڑ کر نیا راستہ نکالنا چاہئے۔ اب تک وہ سیٹ پرستی اور اپنی ہوس کو پورا کرنے کی راہوں پر چلتے رہے ہیں۔ اب انہیں ان راہوں کو چھوڑ کر سچی روشنی سے مدد لیکر سچی جمہوریت یعنی سچی لوک شاہی یا حکومت الٰہی قائم کرنے کو اپنی زندگی کا مقصد بنانا چاہئے۔ انہیں چاہئے کہ اپنی مالی، سماجی اور روحانی زندگی کو سدھارنے کے لئے قرآن کے مطابق پروگرام بنائیں اور ان پروگراموں کو زور شور کے ساتھ چلانے میں لگ جائیں۔

اس کنوینشن کی یہ بھی صلاح ہے کہ مسلمان اس تحریک میں شامل ہونے کی اپنے ہندو بھائیوں کو بھی دعوت دیں اور انہیں یہ یقین دلائیں کہ کم ہمتی اور پست ہمتی اور تمام فرقہ وارانہ بھید بھاؤ اور مذہبی برادریوں کی سچی جمہوریت یا لوک راج میں کوئی جگہ نہیں ہے۔ اگر ہندو اور مسلمان دونوں مل کر اپنی بیچ کی دیواروں کو ڈھا دیں تو ان کے ڈھے جانے کے بعد ہماری سماج وہ صورت لے سکتی ہے جسے ہم سچی جمہوریت یا حکومت الٰہی یا رام راج کہہ سکتے ہیں۔ اس کنوینشن کو یہ یقین ہے کہ اگر سچی جمہوریت ہندوستان میں قائم ہو جائے تو پاکستان اس کے اثر سے باہر نہیں رہ سکتا۔ بس یہی ایک راستہ ہے کہ جس سے وہ زخم کہ جو انگریزی حکمت عملی نے لگائے ہیں بھر سکتے ہیں۔ جسم کے دو ٹکڑے جن سے آج بھی خون بہہ رہا ہے جڑ سکتے ہیں اور وہ دو بھائی جو آج ایک دوسرے کے خلاف جنگی مورچے تیار کر رہے ہیں پھر سے گلے مل سکتے ہیں۔

اس کنوینشن کو پورا یقین ہے کہ اگر اس کی صلاح مان لی جائے تو ملک کی زندگی میں زبردست انقلاب پیدا ہو سکتا ہے۔ اس انقلاب کے پیدا کرنے کے لئے مناسب یہ ہوا کہ یہ کنوینشن اپنے اس جلسے میں کوئی پروگرام نہ بنائے بلکہ ان تجویزوں کو جو اس کے سامنے آئی ہیں ملک کے سامنے رکھے اس مقصد کے ساتھ کہ ملکی میٹنگوں اور کانفرنسوں میں انہیں پیش کر کے عام رائے حاصل کی جائے۔ پھر ایک مدت کے بعد ان ساری بحثوں کی روشنی میں یہ کنوینشن اپنے دوسرے جلسے میں آگے کے کام کے لئے پروگرام تیار کرے۔

है जिसको दूर करने के लिये कोई नैतिक या आत्मिक तरीक़ा बाक़ी नहीं रहता. तारीख़ बताती है कि ईश्वर की कल्पना ने इनसान की ज़िन्दगी से बिगाड़ को दूर करने और उसके हैवानी रुजहानों को महदूद करने और उसे इनसान बनाने में जो हिस्सा लिया है वह दुनिया के किसी दूसरे ख़्याल ने नहीं लिया. अगर हम केवल आख़िरी तीन चार सौ साल की तारीख़ को देखें तो हमें साफ़ नज़र आएगा कि जितनी नास्तिकता और मादियत की कल्पनाएं ईश्वर की एकता और इनसानी भाई चारे की कल्पनाओं को कमज़ोर करने और उनके बनाए हुए मार्गों को इनसान के दिल और दिमाग़ से मिटाने में कामयाब होती गईं उसी पैमाने पर इंसानी समाज में हैवानियत और बर्बादी की सूरतें बढ़ती गईं और इस सब के साथ साथ आपसी टक्करों के तूफ़ान ऐसे पैदा हो गये हैं कि जिन से इंसान की सभ्यता और जान माल सब ही ख़तरे में पड़ गए हैं. इस इल्हाद यानी नास्तिकता और मादियत के इस तूफ़ान ने मज़हब के मानने वालों के सामने ज़िन्दगी और मौत का सवाल पैदा कर दिया है. या तो वह ख़ामोश रह कर इस तूफ़ान के हाथों अपनी सारी सभ्यता और मज़हब का मिट जाना चुपचाप बर्दाश्त करें. या वह अपनी आर्थिक, समाजी और रूहानी ज़िन्दगी को पश्चिम की ग़ुलामी से आज़ाद करने के लिये कमर बांध लें. मगर इस तैयारी का पहला क़दम यह होगा कि वह दुनिया और दौलत की अंधी पूजा और ऐश आराम के सुनहरे जाल को तोड़ फेंकें जिस में पश्चिम की तहज़ीब ने उन्हें फंसा लिया है. दूसरा क़दम यह होगा कि वह अपने मज़हब के ऊंचे उसूलों और तालीम पर सच्चे दिल से अमल करना शुरू करें. अगर वह ऐसा करेंगे तो ख़ुदा उनका साथ देगा और फिर दुनिया की कोई शक्ति उनके रास्ते की रुकावट नहीं बन सकती. उन्हें यह जानना चाहिये कि अभी पश्चिमी तहज़ीब का ज़हर सिर्फ़ पूरबी मुल्कों के ऊंचे पढ़े लिखे लोगों तक ही महदूद है यह अभी छन कर आम लोगों तक नहीं पहुंचा, उनके दिलों पर ख़ुदा के वजूद और मज़हब के उसूलों के गहरे से गहरे नक़्श जमे हुए हैं. अगर एक बार पश्चिम की सभ्यता की हैवानी और डरावनी तस्वीर उनके सामने आजाए और इसे मिटाने के लिये उन्हें संगठित कर दिया जाए तो एक ख़ूबसूरत इनक़लाब [illegible] पैदा हो सकता है.

यह वर्तमान मज़हब के मानने वालों से मांग करता है कि वह इस तरफ़ ध्यान दें और अपने मज़हब और मुल्क को इन ख़तरों से बचाएं जो दिन दिन बढ़ते जा रहे हैं. और मज़हबों के सिवा इस वक़्त हिन्द के मुसलमानों की हालत भयानक हो रही है. उनके सामने इस वक़्त तीन सूरतें हैं. या तो वह इस्लाम को छोड़ कर कम्युनिज़्म के पैरो बन जाएं या [illegible] इंसानी भाई चारे और [illegible] के उसूलों पर [illegible] और ईमान के साथ चलने के लिये तैयार हो जाएं. तीसरा तरीक़ा यह है कि अपनी [illegible] की ख़ूबियों

ہے جس کے دور کرنے کے لئے کوئی اخلاقی یا آتمک طریقہ باقی نہیں رہتا۔ تاریخ بتاتی ہے کہ ایشور کی کلپنا نے انسان کی زندگی سے بگاڑ کو دور کرنے اور اس کے حیوانی رجحانوں کو محدود کرنے اور اسے انسان بنانے میں جو حصہ لیا ہے وہ دنیا کے کسی دوسرے خیال نے نہیں لیا۔ اگر ہم کیول آخری تین چار سو سال کی تاریخ کو دیکھیں تو ہمیں صاف نظر آئے گا کہ جتنی ناستکتا اور مادیت کی کلپنائیں ایشور کی ایکتا اور انسانی بھائی چارے کی کلپناؤں کو کمزور کرنے اور ان کے بنائے ہوئے نقشوں کو انسان کے دل اور دماغ سے مٹانے میں کامیاب ہوتی گئیں اسی پیمانے پر انسانی سماج میں حیوانیت اور بربادی کی صورتیں بڑھتی گئیں اور اس سب کے ساتھ ساتھ آپسی ٹکروں کے طوفان ایسے پیدا ہوگئے ہیں کہ جن سے انسان کی سبھیتا اور جان مال سب ہی خطرے میں پڑ گئے ہیں۔ اس الحاد یعنی ناستکتا اور مادیت کے اس طوفان نے مذہب کے ماننے والوں کے سامنے زندگی اور موت کا سوال پیدا کردیا ہے۔ یا تو وہ خاموش رہ کر اس طوفان کے ہاتھوں اپنی ساری سبھیتا اور مذہب کا مٹ جانا چپ چاپ برداشت کریں یا یہ اپنی آرتھک، سماجی اور روحانی زندگی کو پچھم کی غلامی سے آزاد کرنے کے لئے کمر باندھ لیں۔ مگر اس تیاری کا پہلا قدم یہ ہوگا کہ وہ دنیا اور دولت کی اندھی پوجا اور عیش آرام کے سنہرے جال کو توڑ پھینکیں جس میں پچھم کی تہذیب نے انہیں پھنسا لیا ہے۔ دوسرا قدم یہ ہوگا کہ وہ اپنے مذہب کے اونچے اصولوں اور تعلیم پر سچے دل سے عمل کرنا شروع کریں۔ اگر وہ ایسا کریں گے تو خدا ان کا ساتھ دیگا اور پھر دنیا کی کوئی شکتی ان کے راستے کی رکاوٹ نہیں بن سکتی۔ انہیں یہ جاننا چاہئے کہ ابھی پچھمی تہذیب کا زہر صرف پوربی ملکوں کے اونچے پڑھے لکھے لوگوں تک ہی محدود ہے۔ یہ ابھی چھن کر عام لوگوں تک نہیں پہنچا۔ ان کے دلوں پر خدا کے وجود اور مذہب کے اصولوں کے گہرے سے گہرے نقش جمے ہوئے ہیں۔ اگر ایک بار پچھم کی سبھیتا کی حیوانی اور ڈراونی تصویر ان کے سامنے آجائے اور اسے مٹانے کے لئے انہیں سنگٹھت کردیا جائے تو ایک خوبصورت انقلاب جلد سے جلد پیدا ہوسکتا ہے۔

یہ [illegible] مذہب کے ماننے والوں سے مطالبہ کرتا ہے کہ [illegible]

तारीख़ी माहौल यानी भूगोली और इतिहासी वातावरन ऐसा है कि जिसमें तलवार और हिंसा के इस्तेमाल को एक बारगी इन्सान के समाजी ज़िन्दगी से मिटाया नहीं जा सकता था. पर साथ ही हर मज़हब ने तलवार और हिंसा को बड़ी कड़ाई के साथ केवल बचाओ के दायरे तक महदूद कर दिया है और उनके बिलकुल छोड़ देने और ख़तम कर देने के लिये धीरे धीरे बढ़ती हुई राहें आदमी के सामने रखी हैं. लेकिन किसी मज़हब के मानने वाले भी कड़ी से कड़ी मज़हबी हिदायतों के होते हुये तलवार और हिंसा को केवल बचाव के दायरों तक महदूद न रख सके, चूंकि उन्होंने जहादे अकबर की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया. वह दुनिया और दौलत की हिरस से छुटकारा भी ना पा सके, इसलिये जहादे असग़र को उन्होंने जहादे अकबर की जगह दे दी और केवल बचाओ की हदों से बाहर निकल कर तलवार और हिंसा को दुनिया और दौलत हासिल करने और मुल्कों और क़ौमों को अपने अधीन करने का ज़रिया बना लिया. इस दर्दनाक ग़लतकारी ने उनकी सारी रूहानी और अख़लाक़ी ताक़तों को मिटा दिया. हुकूमत और शहनशाहियत के लोभ में फिर वह ऐसे फंसे कि उनके अन्दर रूहानी या इख़लाक़ी शक्तियां पैदा होने के सारे दरवाज़े बन्द हो गए. नतीजा यह हुआ कि वह दुनिया और आक़बत यानी यह लोक और पर लोक दोनों खो बैठे. दुनिया से उनकी शान और धाक मिट गई और आज पश्चिम की माद्दियत और नास्तिकता उन पर छाए हुए हैं और अपनी सारी ताक़त उनकी रही सही बुनियादों को खोद डालने में लगा रही है. अगर मज़हबी दुनिया अब भी नहीं जागती और उन रास्तों को नहीं अपनाती जो उसकी पाक किताबों और नबियों ने उसके लिये बता दिये हैं तो माद्दियत का तूफ़ान उसी का नहीं बल्कि पूरे मानव समाज का ख़ात्मा कर देगा.

यह कनवेन्शन मुसलमानों का ध्यान उनके मज़हब के सबसे बड़े पहलू की तरफ़ दिलाता है कि ईश्वर की एकता और इन्सानी भाई चारे और ख़िलाफ़त के असूल एक दूसरे के साथ ऐसे मिले जुले हैं कि अलग अलग नहीं किये जा सकते. इनमें ईश्वर की एकता सब में ऊंचा असूल है, मगर इन तीनों में वही सम्बन्ध है जो रूह का जिस्म से और जान का सांस से होता है. अगर हम ईश्वर की एकता से इन्कार करें तो भाई चारे और ख़िलाफ़त के असूल बिलकुल बेजान और बेमानी हो जाते हैं. अगर हम भाई चारे के असूल से इन्कार करें तो कोई रास्ता ऐसा बाक़ी नहीं रह जाता जो एक आदमी को दूसरे आदमी से प्रेम और उसे निस्वार्थ सेवा की ज़ंजीर में जकड़ सके. इस असूल से इन्कार कर देने से समाजी ज़िन्दगी इन्फ़रादी या व्यक्तिगत और इन्तज़ाई यानी एक दूसरे में फ़र्क़ पैदा करने वाली बन जाती है. और इसमें वह बिखराव और आपसी खींचातानी पैदा हो जाती

تاریخی ماحول یعنی بھوگولی اور اتہاسی واتاورن ایسا ہے کہ جس میں تلوار اور ہنسا کے استعمال کو ایک بارگی انسان کی سماجی زندگی سے مٹایا نہیں جا سکتا تھا۔ پر ساتھ ہی ہر مذہب نے تلوار اور ہنسا کو بڑی کڑائی کے ساتھ کیول بچاؤ کے دائرے تک محدود کر دیا ہے اور ان کے بالکل چھوڑ دینے اور ختم کر دینے کے لئے دھیرے دھیرے بڑھتی ہوئی راہیں آدمی کے سامنے رکھی ہیں۔ لیکن کسی مذہب کے ماننے والے بھی کڑی سے کڑی مذہبی ہدایتوں کے ہوتے ہوئے تلوار اور ہنسا کو کیول بچاؤ کے دائروں تک محدود نہ رکھ سکے، چونکہ انہوں نے جہاد اکبر کی طرف کوئی دھیان نہیں دیا۔ وہ دنیا اور دولت کی حرص سے چھٹکارا بھی نہ پا سکے اس لئے جہاد اصغر کو انہوں نے جہاد اکبر کی جگہ دے دی اور کیول بچاؤ کی حدوں سے باہر نکل کر تلوار اور ہنسا کو دنیا اور دولت حاصل کرنے اور ملکوں اور قوموں کو اپنے ادھین کرنے کا ذریعہ بنا لیا۔ اس دردناک غلط کاری نے ان کی ساری روحانی اور اخلاقی طاقتوں کو مٹا دیا۔ حکومت اور شہنشاہیت کے لوبھ میں پھر وہ ایسے پھنسے کہ ان کے اندر روحانی یا اخلاقی شکتیاں پیدا ہونے کے سارے دروازے بند ہو گئے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ وہ دنیا اور عقبیٰ یعنی یہ لوک اور پرلوک دونوں کھو بیٹھے۔ دنیا سے ان کی شان اور دھاک مٹ گئی اور آج پچھم کی مادیت اور ناستکتا ان پر چھائے ہوئے ہیں اور اپنی ساری طاقت ان کی رہی سہی بنیادوں کو کھود ڈالنے میں لگا رہی ہے۔ اگر مذہبی دنیا اب بھی نہیں جاگتی اور ان راستوں کو نہیں اپناتی جو اس کی پاک کتابوں اور نبیوں نے اس کے لئے بتا دئیے ہیں تو مادیت کا طوفان اسی کا نہیں بلکہ پورے مانو سماج کا خاتمہ کر دے گا۔

یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان ان کے مذہب کے سب سے بڑے پہلو کی طرف دلاتا ہے کہ ایشور کی ایکتا اور انسانی بھائی چارے اور خلافت کے اصول ایک دوسرے کے ساتھ ایسے ملے جلے ہیں کہ الگ الگ نہیں کئے جا سکتے۔ ان میں ایشور کی ایکتا سب میں اونچا اصول ہے۔ مگر ان تینوں میں وہی سمبندھ ہے جو روح کا جسم سے اور جان کا سانس سے ہوتا ہے۔ اگر ہم ایشور کی ایکتا سے انکار کریں تو بھائی چارے اور خلافت کے اصول بالکل بے جان اور بے معنی ہو جاتے ہیں۔ اگر ہم بھائی چارے کے اصول سے انکار کریں تو کوئی راستہ ایسا باقی نہیں رہ جاتا جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے پریم اور اسے نسوارتھ سیوا کی زنجیر میں جکڑ سکے۔ اس اصول سے انکار کر دینے سے سماجی زندگی انفرادی یا ویکتی گت اور انتزاعی یعنی ایک دوسرے میں فرق پیدا کرنے والی بن جاتی ہے۔ اور اس میں وہ بکھراؤ اور آپسی کھینچا تانی پیدا ہو جاتی

और भलाई के रास्ते पर कैसे चलावे. ज़ोर ज़बरदस्ती या हिंसा से अपने ख़ान्दान के अन्दर काम लेना इनसानियत को धक्का पहुंचाना है. इसलिये क़ुरान ने उसे अपने समाजी की संगठन बुनियाद नहीं बनाया. उसने ज़ोर ज़बरदस्ती की जगह निस्वार्थ सेवा, त्याग और मुहब्बत को दी है. क़ुरान का दावा है कि निस्वार्थ सेवा और त्याग एक आदमी को दूसरे आदमी का फ़रमांबरदार बना देता है. और यह फ़रमांबरदारी इतनी गहरी और पक्की होती है कि जिसका मुक़ाबला वह फ़रमांबरदारी जो ज़ोर ज़बरदस्ती और हिंसा से किसी को नुक़सान पहुंचा कर पैदा की जाये नहीं कर सकती. क़ुरान का कहना है कि ख़िदमत करने से आदमी मख़दूम हो जाता है यानी सेवा करने से सेव्य बन जाता है और यही आदमी की सबसे बड़ी शक्ति है. पर आदमी में यह शक्ति पैदा होना आसान नहीं है. इसलिये इस शक्ति के पैदा करने के तरीक़े को क़ुरान ने जिहादे अकबर यानी सबसे बड़ा जिहाद कहा है. जहादे अकबर के लिये अपने नफ़्स यानी अपनी आत्मा पर क़ाबू और अपने क़ल्ब यानी हृदय की शुद्धि दोनों ज़रूरी हैं क्योंकि जब तक आदमी अपने भाई की तरफ़ से ग़ुस्सा, नफ़रत, ईर्षा, द्वेष वग़ैरा से पाक नहीं कर लेता तब तक वह उसकी सच्ची सेवा नहीं कर सकता. जब तक आदमी अपने ऊपर क़ाबू हासिल नहीं करता तब तक वह इनसाफ़ के असूलों पर क़ायम नहीं रह सकता तब तक वह ऊंच नीच का भी शिकार रहेगा और उससे दूसरों को नुक़सान और तक़लीफ़ भी पहुंचती रहेगी. लेकिन सेवा की राह पर उसे इनसाफ़ के मुक़ाम से भी आगे बढ़ना होगा, उसे दूसरों की ज़रूरतों को पहले और अपनी ज़रूरतों को पीछे रखना होगा, उसे त्याग करना होगा. तब ही वह सच्चे मानी में ख़ादिमे ख़ल्क़ यानी दुनिया का सेवक बन कर मख़दूम यानी सेव्य के दर्जे तक पहुंच सकता है. इस तरह का ख़ादिम बनने की जद्दोजहद यानी कोशिश को ही क़ुरान जहादे अकबर यानी सबसे बड़ा जहाद बतलाता है. इसी को वह जहादे फ़ीसबीलिल्लाह यानी अल्लाह की राह में जहाद और सिराते मुस्तक़ीम यानी सीधी राह पर चलने का रास्ता बताता है.

इसमें शक नहीं कि क़ुरान ने आदमी को अपनी हिफ़ाज़त या बचाव के लिये हिन्सा की भी इजाज़त दी है और इसके लिये तलवार के इस्तेमाल को जायज़ बताया है. पर क़ुरान इसे जेहादे असग़र यानी छोटा जेहाद कहता है. राज काज में तलवार और हिंसा के इस्तेमाल की हर मज़हब ने इजाज़त दी है. आदमी का जुग़राफ़ई और

اور بھلائی کے راستے پر کیسے چلاوے۔ زور زبردستی یا ہنسا سے اپنے خاندان کے اندر کام لینا انسانیت کو دھکا پہونچانا ہے۔ اس لئے قرآن نے اسے اپنے سماجی سنگٹھن کی بنیاد نہیں بنایا۔ اس نے زور زبردستی کی جگہ نسوارتھ سیوا تیاگ اور محبت کو دی ہے۔ قرآن کا دعویٰ ہے کہ نسوارتھ سیوا اور تیاگ ایک آدمی کو دوسرے آدمی کا فرمانبردار بنا دیتا ہے۔ اور یہ فرمانبرداری اتنی گہری اور پکی ہوتی ہے کہ جس کا مقابلہ یہ فرمانبرداری جو زور زبردستی اور ہنسا سے کسی کو نقصان پہونچا کر پیدا کی جائے نہیں کر سکتی۔ قرآن کا کہنا ہے کہ خدمت کرنے سے آدمی مخدوم ہو جاتا ہے یعنی سیوا کرنے سے سیویہ بن جاتا ہے اور یہی آدمی کی سب سے بڑی شکتی ہے۔ پر آدمی میں یہ شکتی پیدا ہونا آسان نہیں ہے۔ اس لئے اس شکتی کے پیدا کرنے کے طریقے کو قرآن نے جہاد اکبر یعنی سب سے بڑا جہاد کہا ہے۔ جہاد اکبر کے لئے اپنے نفس یعنی اپنی آتما پر قابو اور اپنے قلب یعنی ہردے کی شدھی دونوں ضروری ہیں۔ کیونکہ جب تک آدمی اپنے دل کو اپنے بھائی کی طرف سے غصہ، نفرت، ایرشا، دویش وغیرہ سے پاک نہیں کر لیتا تب تک وہ اسکی سچی سیوا نہیں کر سکتا۔ جب تک آدمی اپنے اوپر قابو حاصل نہیں کرتا تب تک وہ انصاف کے اصولوں پر قائم نہیں رہ سکتا تب تک وہ اونچ نیچ کا بھی شکار رہے گا اور اس سے دوسروں کو نقصان اور تکلیف بھی پہونچتی رہے گی۔ لیکن سیوا کی راہ پر اسے انصاف کے مقام سے بھی آگے بڑھنا ہوگا، اسے دوسروں کی ضرورتوں کو پہلے اور اپنی ضرورتوں کو پیچھے رکھنا ہوگا، اسے تیاگ کرنا ہوگا۔ تبھی وہ سچے معنی میں خادم خلق یعنی دنیا کا سیوک بن کر مخدوم یعنی سیویہ کے رتبہ تک پہونچ سکتا ہے۔ اس طرح کا خادم بننے کی جدوجہد یعنی کوشش کو ہی قرآن جہاد اکبر یعنی سب سے بڑا جہاد بتلاتا ہے۔ اسی کو وہ جہاد فی سبیل اللہ یعنی اللہ کی راہ میں جہاد اور صراط مستقیم یعنی سیدھی راہ پر چلنے کا راستہ بتلاتا ہے۔

اس میں شک نہیں کہ قرآن نے آدمی کو اپنی حفاظت یا بچاؤ کے لئے ہنسا کی بھی اجازت دی ہے اور اس کے لئے تلوار کے استعمال کو جائز بتایا ہے۔ پر قرآن اسے جہاد اصغر یعنی چھوٹا جہاد کہتا ہے۔ راجکاج میں تلوار اور ہنسا کے استعمال کی ہر مذہب نے اجازت دی ہے۔ آدمی کا جغرافی اور

आज़ादी, उसकी इस आज़ादी में दखल देना, ज़ुल्म और [illegible] है. इस से बढ़ कर इख़लाक़ी और रूहानी उन्नति और आज़ादी का और उस आज़ादी में दखल देने से जो नुक़सान पैदा होते हैं उन से बचने का कोई दूसरा तरीक़ा नहीं हो सकता.

इस बुनियादी उसूल को क़ायम करने के बाद क़ुरान ने सच्चे भाई चारे या सच्ची लोकशाही या हुकूमते इलाही क़ायम करना हर आदमी का पहला फ़र्ज़ बताया है और इस फ़र्ज़ को पूरा करने के उसूल बताए हैं.

हुकूमते इलाही (रामराज) का पहला उसूल यह है कि उसमें ग़रीबों, लाचारों, दर्दमन्दों, दुखियों और मज़लूमों के दुख दूर करने की हद दरजे की कोशिश और उसका पूरा इन्तज़ाम होना चाहिये. इनसानी समाज के वह सब रीतरिवाज और उसकी वह सब बुराइयां जो ऊंच नीच और अमीर ग़रीब के फ़र्क़ पैदा करती हैं और उन्हें बनाए रखती हैं नेस्तनाबूद कर दी जायें क्योंकि इन ऊंच नीच और ग़रीब अमीर के फ़रक़ों से ज़ियादा बदइन्तज़ामी का सबूत नहीं मिल सकता. इन फ़रक़ों का होना अल्लाह के हुक्मों से इनकार और इनसानी क़ौम के लिये शर्म की चीज़ है. साफ़ ज़ाहिर है कि अगर इन नादार, लाचार और दुखियों का दुख दरद दूर हो गया तो फिर कोई दुखिया या नादार नहीं रह सकता. इसीलिये क़ुरान इस उसूल पर सबसे ज़ियादा ज़ोर देता है. इनसानी भाई चारे की यही सच्ची बुनियाद हो सकती है.

क़ुरान ने अपने संगठन में एक ख़ानदान के उस छोटे बड़े के फ़र्क़ को भी माना और रखा है जो क़ुदरती तौर पर हर ख़ानदान के लोगों में होता है. बड़े और छोटे, कमज़ोर और ताक़तवर, ज़हीन और कुंदज़हन, तन्दुरुस्त और बीमार, मां और बाप, पति और पत्नी, बेटा और बेटी जैसे फ़रक़ों को निगाह में रख कर क़ुरान फिर एक उसूल क़ायम करता है. ख़ानदान का हर मेम्बर न बराबर की मेहनत कर सकता है और न बराबर कमा सकता है, न हर एक पर बराबर ख़र्च हो सकता है. ज़ाहिर है कि हर मेम्बर अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार ही मेहनत करेगा और ख़ानदान उसकी तन्दुरुस्ती को निगाह में रख कर उस पर ख़र्च करेंगे. इसी उसूल को [illegible] ने आज अपना आर्थिक नारा बनाया है. पर उसने अभी यह महसूस नहीं किया कि इस उसूल पर तब तक ठीक ठीक अमल नहीं किया जा सकता जब तक कि एक ईश्वर और इनसानी भाई चारा दोनों में लोगों को पूरा विश्वास न हो.

रामराज में सबसे बड़ा सवाल यह है कि एक आदमी दूसरे आदमी को अपने अधीन कैसे करे और उसे नेकी

لیجاوے، اسکی اس آزادی میں دخل دینا ظلم اور [illegible] ہے۔ اس سے بڑھکر اخلاقی اور روحانی اُنتی اور آزادی کا اور اس آزادی میں دخل دینے سے جو نقصان پیدا ہوتے ہیں ان سے بچنے کا کوئی دوسرا طریقہ نہیں ہوسکتا۔

اس بنیادی اصول کو قائم کرنے کے بعد قرآن نے سچے بھائی چارے یا سچی لوک شاہی یا حکومت الٰہی قائم کرنا ہر آدمی کا پہلا فرض بتایا ہے اور اس فرض کو پورا کرنے کے اصول بتائے ہیں۔

حکومت الٰہی (رام راج) کا پہلا اصول یہ ہے کہ اس میں غریبوں، لاچاروں، دردمندوں، دکھیوں اور مظلوموں کے دکھ دور کرنے کی حد درجہ کی کوشش اور اس کا پورا انتظام ہونا چاہئے۔ انسانی سماج کے وہ سب ریت رواج اور اسکی وہ سب برائیاں جو اونچ نیچ اور امیر غریب کے فرق پیدا کرتی ہیں اور انہیں بنائے رکھتی ہیں نیست نابود کر دی جائیں کیونکہ ان اونچ نیچ اور غریب امیر کے فرقوں سے زیادہ بدانتظامی کا ثبوت نہیں مل سکتا۔ ان فرقوں کا ہونا اللہ کے حکموں سے انکار اور انسانی قوم کے لئے شرم کی چیز ہے۔ صاف ظاہر ہے کہ اگر ان نادار، لاچار اور دکھیوں کا دکھ درد دور ہو گیا تو پھر کوئی دکھیا یا نادار نہیں رہ سکتا۔ اسی لئے قرآن اس اصول پر سب سے زیادہ زور دیتا ہے۔ انسانی بھائی چارے کی یہی سچی بنیاد ہوسکتی ہے۔

قرآن نے اپنے سنگٹھن میں ایک خاندان کے اس چھوٹے بڑے کے فرق کو بھی مانا اور رکھا ہے جو قدرتی طور پر ہر خاندان کے لوگوں میں ہوتا ہے۔ بڑے اور چھوٹے، کمزور اور طاقتور، ذہین اور کندذہن، تندرست اور بیمار، ماں اور باپ، پتی اور پتنی، بیٹا اور بیٹی جیسے فرقوں کو نگاہ میں رکھ کر قرآن پھر ایک اصول قائم کرتا ہے۔ خاندان کا ہر ممبر نہ برابر کی محنت کر سکتا ہے اور نہ برابر کما سکتا ہے، نہ ہر ایک پر برابر خرچ ہوسکتا ہے۔ ظاہر ہے کہ ہر ممبر اپنی شکتی اور یوگتا کے انوسار ہی محنت کریگا اور خاندان اسکی تندرستی کو نگاہ میں رکھکر اس پر خرچ کرے گا۔ اسی اصول کو کمیونزم نے آج اپنا آرتھک نعرہ بنایا ہے۔ پر اس نے ابھی یہ محسوس نہیں کیا کہ اس اصول پر تب تک ٹھیک ٹھیک عمل نہیں کیا جا سکتا جب تک کہ ایک ایشور اور انسانی بھائی چارہ دونوں میں لوگوں کو پورا وشواس نہ ہو۔

رام راج میں سب سے بڑا سوال یہ ہے کہ ایک آدمی دوسرے آدمی کو اپنے ادھین کیسے کرے اور اسے نیکی

उसकी राजकाजी ज़िन्दगी को भी क़ुरान ने आदमी के अशरफ़ुलमख़लूक़ात होने के असूल पर ही चलाने की हिदायत दी है. इस राजकाजी ज़िन्दगी में भी क़ुरान ने इनसाफ़ को ही सबसे बड़ी चीज़ बताया है. क़ुरान की हिदायत है कि हर आदमी को हर वक़्त अपने कामों में यह ध्यान रखना चाहिये कि मैं एक मिले जुले ख़ानदान का मैम्बर हूं और मेरे सब काम, मेरे विचार और मेरे दिल के भाव सगे भाइयों की आपसी मोहब्बत और मिल कर काम करने का नमूना होने चाहिये. एक बार इस ख़याल को अपने दिल में जमा लेने के बाद क़ुरान के बताये हुए रास्ते पर चलना आसान हो जाता है और क़ुरान की सारी हिदायतों का मतलब अच्छी तरह समझ में आ जाता है. तब आदमी ज़ोरों के साथ यह देखने लगता है कि वह सारे भेद भाव और सारे संगठन जो आज इनसानी समाज को बड़े से बड़े नुक़सान पहुंचा रहे हैं और तरह तरह के आर्थिक और राजकाजी तूफ़ान को पैदा कर रहे हैं केवल इस एक सच्चाई को भुला देने का नतीजा हैं. भाई चारे की दुनिया में चाहे एक ख़ानदान का भाई चारा हो या किसी एक जमात का या तमाम इनसानी समाज का, किसी बादशाह या वज़ीर या प्यादे या हाकिम या महकूम या ओहदेदारों या पासबानों का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता. हर इनसान अल्लाह का ख़लीफ़ा यानी नायब है. हर इनसान का पैदायशी हक़ है कि वह ख़ुदमुख़तार हो, बेख़ौफ़ हो और किसी का मोहताज न हो. इस ख़याल के एक बार दिल में जम जाने के बाद फिर किसी भी तरह की ऊंच नीच को बर्दाश्त कर सकना आदमी के लिये नामुमकिन हो जाता है. फिर हर आदमी में अपने भाइयों के हक़ों की रक्षा करने और उन पर ज़ालिमों के ज़ुल्मों का मुक़ाबला करने की इख़लाक़ी और रूहानी शक्ति पैदा हो जायेगी. फिर कोई बाहर की ताक़त उसकी इस आज़ादी को और अपने ऊपर भरोसा करने की आदत को उससे छीन न सकेगी.

मज़हब और राजकाज के एक दूसरे से सम्बन्ध को क़ुरान ने लाइक्राह फ़िद्दीन यानी दीन के मामले में किसी को किसी के साथ किसी तरह की भी ज़बर्दस्ती नहीं करनी चाहिये, के असूल पर क़ायम किया है. यह असूल हर आदमी को अपने धार्मिक धर्म को पूरा करने की पूरी आज़ादी देता है और उसमें दूसरों के किसी तरह भी दख़ल देने को हिंसा और ज़ुल्म ठहराता है जिस के ख़िलाफ़ जिहाद यानी कोशिश करना हर आदमी और हर जमाअत का फ़र्ज़ है. ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने की हैसियत से हर आदमी अपने अल्लाह से सीधा संबंध रखने का एक बराबर हक़ रखता है. उसे अख़्तियार है कि अपने बनाने वाले की बंदगी और [illegible] जो चाहे

آدمی کی راجکاجی زندگی کو بھی قرآن نے آدمی کے اشرف المخلوقات ہونے کے اصول پر ہی چلانے کی ہدایت دی ہے. اس راج کاجی زندگی میں بھی قرآن نے انصاف کو ہی سب سے بڑی چیز بتایا ہے . قرآن کی ہدایت ہے کہ ہر آدمی کو ہر وقت اپنے کاموں میں یہ دھیان رکھنا چاہئے کہ میں ایک ملے جلے خاندان کا ممبر ہوں اور میرے سب کام میرے وچار اور میرے دل کے بھاؤ سگے بھائیوں کی آپسی محبت اور ملکر کام کرنے کا نمونہ ہونے چاہئیں . ایک بار اس خیال کو اپنے دل میں جما لینے کے بعد قرآن کے بتائے ہوئے راستے پر چلنا آسان ہو جاتا ہے اور قرآن کی ساری ہدایتوں کا مطلب اچھی طرح سمجھ میں آجاتا ہے, تب آدمی زوروں کے ساتھ یہ دیکھنے لگتا ہے کہ وہ سارے بھید بھاؤ اور سارے سنگٹھن جو آج انسانی سماج کو بڑے سے بڑے نقصان پہنچا رہے ہیں اور طرح طرح کے آرتھک اور راج کاجی طوفان کو پیدا کر رہے ہیں کیول اس ایک سچائی کو بھلا دینے کا نتیجہ ہیں . بھائی چارے کی دنیا میں چاہے ایک خاندان کا بھائی چارہ ہو یا کسی ایک جماعت کا یا تمام انسانی سماج کا کسی بادشاہ یا وزیر یا پیادے یا حاکم یا محکوم یا عہدیداروں یا پاسبانوں کا سوال پیدا ہی نہیں ہوسکتا. ہر انسان اللہ کا خلیفہ یعنی نائب ہے . ہر انسان کا پیدائشی حق ہے کہ وہ خود مختار ہو، بےخوف ہو اور کسی کا محتاج نہ ہو. اس خیال کے ایک بار دل میں جم جانے کے بعد پھر کسی بھی طرح کی اونچ نیچ کو برداشت کرسکنا آدمی کے لئے ناممکن ہوجاتا ہے . پھر ہر آدمی میں اپنے بھائیوں کے حقوں کی رکشا کرنے اور ان پر ظالموں کے ظلموں کا مقابلہ کرنے کی اخلاقی اور روحانی شکتی پیدا ہو جائیگی . پھر کوئی باہر کی طاقت اسکی اس آزادی کو اور اپنے اوپر بھروسہ کرنے کی عادت کو اس سے چھین نہ سکیگی .

مذہب اور راج کاج کے ایک دوسرے سے سمبندھ کو قرآن نے لا اکراہ فی الدین یعنی دین کے معاملے میں کسی کو کسی کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی نہیں کرنی چاہئے' کے اصول پر قائم کیا ہے . یہ اصول ہر آدمی کو اپنے دھارمک فرض پورا کرنے کی پوری آزادی دیتا ہے اور اس میں دوسروں کے کسی طرح بھی دخل دینے کو ہنسا اور ظلم ٹھہراتا ہے جس کے خلاف جہاد یعنی کوشش کرنا ہر آدمی اور ہر جماعت کا فرض ہے . خدا کا خلیفہ ہونے کی حیثیت سے ہر آدمی اپنے اللہ سے سیدھا سمبندھ رکھنے کا ایک برابر حق رکھتا ہے. اسے اختیار ہے کہ [illegible] کی بندگی اور [illegible] جو چاہے

या जिससे दूसरों की मेहनत से नाजायज़ फ़ायदा उठाया जा सके या जिससे किसी तरह का भी नुक़सान इनसानी समाज को पहुंचता हो. इन बातों की गहराई में न जा कर यहां केवल इतना कहना काफ़ी है कि अगर हम इनसाफ़ के उसूलों को अपनी रोज़ की ज़िन्दगी में सामने रखें और उन पर अमल करें तो हम क़ुरान की हिदायतों को आसानी से पूरा कर सकते हैं.

यह कनवेनशन मुसलमानों का ध्यान क़ुरान की एक ख़ास हिदायत की तरफ़ दिलाना चाहता है जिसे क़ुरान ने "कसबेतैयब" बताया है. कसबेतैयब का मतलब पाक या सुथरा धन्धा है. हर पाक किताब और हर नबी ने कसबेतैयब की बड़ाई की है. कसबेतैयब का उसूल दुनिया के सब पेशों और धन्धों में से उन पेशों या धन्धों को ऊंचा और अच्छा बताता है जिन में आदमी ख़ुद अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमाये. मोहम्मद साहब शुरू के ख़लीफ़ा और 'सहाबा' यानी मोहम्मद साहब के साथी सब अपनी ज़िन्दगी में इसी उसूल पर अमल करते थे. मोहम्मद साहब ने एक जगह कहा है कि "अपने हाथ की मेहनत से, रोज़ी कमाने वाला ख़ुदा का प्यारा होता है."

यह कनवेनशन मुसलमानों का ध्यान इस ख़ास पहलू की तरफ़ दिलाता है कि दुनिया के मज़हबों और ख़ास कर इसलाम की कसबेतैयब की तालीम और लाखों मुसलमानों के इस पर अमल करने ने आज इस उसूल को दुनिया की आर्थिक ज़िन्दगी का सब से पक्का और प्यारा उसूल बना दिया है. हर हुकूमत ज़ोरों के साथ इसे अपनी मुल्की ज़िन्दगी में चलाने की कोशिश कर रही है और रूस और चीन की हुकूमतों ने इस उसूल को अपनी मुल्की ज़िन्दगी के क़ायदे क़ानून में सबसे बड़ी जगह दी है.

यह कनवेनशन मुसलमानों का यह पाक फ़र्ज़ समझता है कि वह किसी क़ौम या मुल्क के इस मैदान में अपने मुल्क से आगे निकल जाने को अपने लिये शर्म की चीज़ समझें. उन्हें जल्दी से जल्दी ऐसे प्रोग्राम बनाने चाहिये जिन से हर मुसलमान और हर इनसान को कसबेतैयब के उसूल को सामने रख कर रोज़ी कमाने का मौक़ा मिले. अगर केवल एक यही बात तय कर पूरी कर ली जाये तो उस मुल्क की सारी आर्थिक ज़िन्दगी नये सिरे से तामीर हो सकती है और हमारा मुल्क दूसरे मुल्कों की आर्थिक लूट मार से हमेशा के लिये बच सकता है.

इसलाम के राजकाजी उसूल

आदमी की समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी की तरह

یا جس میں دوسروں کی محنت سے ناجائز فائدہ اٹھایا جاسکے یا جس سے کسی طرح کا بھی نقصان انسانی سماج کو پہونچتا ہو. ان باتوں کی گہرائی میں نہ جاکر یہاں کیول اتنا کہنا کافی ہے کہ اگر ہم انصاف کے اصولوں کو اپنی روز کی زندگی میں سامنے رکھیں اور ان پر عمل کریں تو ہم قرآن کی ہدایتوں کو آسانی سے پورا کرسکتے ہیں .

یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان قرآن کی ایک خاص ہدایت کی طرف دلانا چاہتا ہے جسے قرآن نے "کسب طیب" بتایا ہے . کسب طیب کا مطلب پاک یا ستھرا دھندا ہے . ہر پاک کتاب اور ہر نبی نے کسب طیب کی بڑائی کی ہے . کسب طیب کا اصول دنیا کے سب پیشوں اور دھندوں میں سے ان پیشوں یا دھندوں کو اونچا اور اچھا بتاتا ہے جن میں آدمی خود اپنے ہاتھ کی محنت سے روزی کماوے. محمد صاحب شروع کے خلیفہ اور صحابہ یعنی محمد صاحب کے ساتھی سب اپنی زندگی میں اسی اصول پر عمل کرتے تھے . محمد صاحب نے ایک جگہ کہا ہے کہ "اپنے ہاتھ کی محنت سے روزی کمانے والا خدا کا پیارا ہوتا ہے ."

یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان اس خاص پہلو کی طرف دلاتا ہے کہ دنیا کے مذہبوں اور خاصکر اسلام کی کسب طیب کی تعلیم اور لاکھوں مسلمانوں کے اس پر عمل کرنے نے آج اس اصول کو دنیا کی آرتھک زندگی کا سب سے پکا اور پیارا اصول بنا دیا ہے . ہر حکومت زوروں کے ساتھ اسے اپنی ملکی زندگی میں چلانے کی کوشش کر رہی ہے اور روس اور چین کی حکومتوں نے اس اصول کو اپنی ملکی زندگی کے قاعدے قانون میں سب سے بڑی جگہ دی ہے .

یہ کنوینشن مسلمانوں کا یہ پاک فرض سمجھتا ہے کہ وہ کسی قوم یا ملک کے اس میدان میں اپنے ملک سے آگے نکل جانے کو اپنے لئے شرم کی چیز سمجھیں . انہیں جلدی سے جلدی ایسے پروگرام بنانے چاہئیں جن سے ہر مسلمان اور ہر انسان کو کسب طیب کے اصول کو سامنے رکھکر روزی کمانے کا موقع ملے. اگر کیول ایک یہی بات طے کر پوری کرلی جائے تو اس ملک کی ساری آرتھک زندگی نئے سرے سے تعمیر ہوسکتی ہے اور ہمارا ملک دوسرے ملکوں کی آرتھک لوٹ مار سے ہمیشہ کے لئے بچ سکتا ہے .

اسلام کے راج کاجی اصول

آدمی کی سماجی اور آرتھک زندگی کی طرح

उन्हें दोनों की ख़ाहिश पैदा कर देगा, अल्लाह की कृपा प्राप्त होगी, उनके दुख दर्द दूर हो जायेंगे, और दुनिया में सच्चा इंसानी भाई चारा और सच्ची जम्हूरियत का दौर सही क़ायम करने का रास्ता उन्हीं के दर खोलेगा.

इस्लाम के आर्थिक असूल—

क़ुरान ने इस आधार पर कि आदमी में अक़्ल और समझ है और उस में रूहानी और इख़लाक़ी बातों को समझने की शक्ति भी है अशरफ़ुलमख़लूक़ात यानी सब प्राणियों में श्रेष्ठ कहा है और उसे यह इजाज़त दी है कि वह ख़ुदा की दी हुई नेमतों से ज़रूरत के मुताबिक़ आप फ़ायदा उठाये और दूसरों को फ़ायदा पहुंचाये. इसी के साथ उन नेमतों को बरतने में भी इंसाफ़ की तराज़ू उसके हाथ में दे दी है. उसके बाद क़ुरान ने हर इंसान को यह ख़ुशख़बरी दी है कि वह ख़ुद ख़ुदा का ख़लीफ़ा है, उसका फ़र्ज़ है कि ख़ुदा की नेमतों का ठीक ठीक बटवारा करे और कराये. इसी असूल को क़ुरान की "ख़िलाफ़त" कहते हैं. इस ख़िलाफ़त का सारा मतलब इंसानी भाई चारा है. जब सब आदमी भाई भाई हैं तो क़ुदरती तौर पर दुनिया की सब नेमतों में सब का बराबर का हक़ है. इसलिये क़ुरानी ज़िन्दगी में ग़रीबी और अमीरी जैसी सूरतें रह ही नहीं सकतीं.

जो आर्थिक ऊंच नीच या छोटाई बड़ाई आज दुनिया में फैली हुई है पच्छिमी तहज़ीब के कुछ प्रेमी इसकी सारी ज़िम्मेदारी ख़ुदा और मज़हबों के प्रचार पर डालते हैं. इस ऊंच नीच का कारन मज़हबों के असूल नहीं हैं बल्कि आदमी की दुनियापरस्ती, दौलतपरस्ती और उसकी वह हवस यानी तृष्णा है जो कभी पूरी नहीं हो सकती. यह वह चीज़ें हैं जिन्हें मज़हब के मानने वाले कोशिश करने पर भी न मिटा सके और जिन्हें पच्छिमी तहज़ीब आज जान बूझ कर अपने नाजाइज़ फ़ायदे के लिये बढ़ा रही है और काम में ला रही है.

क़ुरान ने हुक्म दिया है कि हर आदमी अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हर बातों की किफ़ायतशआरी से काम ले और कहा है कि किसी आदमी को अपने ऊपर हद से ज़्यादा ख़र्च नहीं करना चाहिये जितना तंदुरुस्त रहने के लिये ज़रूरी है. फ़िज़ूल ख़र्ची करने वालों को क़ुरान "इख़वानुश्शयातीन" यानी शैतान के साथी बताता है. इस से ज़्यादा खुला सबूत और क्या हो सकता है कि क़ुरान सरमायादारियत या बादशाहत के शानोशौकत के जलसों को ही नहीं बल्कि छोटी से छोटी फ़िज़ूल ख़र्ची को भी अल्लाह की निगाह में गुनाह और सज़ा देने की चीज़ बताता है.

क़ुरान हर ऐसे पेशे को नाजाइज़ क़रार देता है जिस में बग़ैर मेहनत किये दूसरे का धन ले सके.

کے ذریعہ ان کے دلوں میں خلافت پیدا کر دے گا. اللہ کی کرپا ان کے ساتھ ہوگی، ان کے دکھ درد دور ہو جائیں گے، اور دنیا میں سچا انسانی بھائی چارا اور سچی جمہوریت یا لوک شاہی قائم کرنے کا سیدھا راستہ انہی کے در کھلے گا۔

اسلام کے آرتھک اصول

قرآن نے اس آدھار پر کہ آدمی میں عقل اور سمجھ ہے اور اس میں روحانی اور اخلاقی باتوں کو سمجھنے کی شکتی بھی ہے اشرف المخلوقات یعنی سب پرانیوں میں شریشٹھ کہا ہے اور اسے یہ اجازت دی ہے کہ وہ خدا کی دی ہوئی نعمتوں سے ضرورت کے مطابق آپ فائدہ اٹھائے اور دوسروں کو فائدہ پہنچائے۔ اسی کے ساتھ ان نعمتوں کو برتنے میں بھی انصاف کی ترازو اس کے ہاتھ میں دے دی ہے۔ اس کے بعد قرآن نے ہر انسان کو یہ خوش خبری دی ہے کہ وہ خود خدا کا خلیفہ ہے، اس کا فرض ہے کہ خدا کی نعمتوں کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ کرے اور کرائے۔ اسی اصول کو ہم دین کی "خلافت" کہتے ہیں۔ اس خلافت کا سارا مطلب انسانی بھائی چارہ ہے۔ جب سب آدمی بھائی بھائی ہیں تو قدرتی طور پر دنیا کی سب نعمتوں میں سب کا برابر کا حق ہے۔ اس لئے قرآنی زندگی میں غریبی اور امیری جیسی صورتیں رہ ہی نہیں سکتیں۔

جو آرتھک اونچ نیچ یا چھوٹائی بڑائی آج دنیا میں پھیلی ہوئی ہے، پچھمی تہذیب کے کچھ پریمی اس کی ساری ذمہ داری خدا اور مذہبوں کے پرچار پر ڈالتے ہیں۔ اس اونچ نیچ کا کارن مذہبوں کے اصول نہیں ہیں بلکہ آدمی کی دنیا پرستی، دولت پرستی اور اس کی وہ ہوس یعنی ترشنا ہے جو کبھی پوری نہیں ہو سکتی۔ یہ وہ چیزیں ہیں جنہیں مذہب کے ماننے والے کوشش کرنے پر بھی نہ مٹا سکے اور جنہیں پچھمی تہذیب آج جان بوجھ کر اپنے ناجائز فائدے کے لئے بڑھا رہی ہے اور کام میں لا رہی ہے۔

قرآن نے حکم دیا ہے کہ ہر آدمی اپنی روزمرہ کی زندگی میں ہر بات کی کفایت شعاری سے کام لے اور کہا ہے کہ کسی آدمی کو اپنے اوپر اس سے زیادہ خرچ نہیں کرنا چاہئے جتنا تندرست رہنے کے لئے ضروری ہے۔ فضول خرچی کرنے والوں کو قرآن "اخوان الشیاطین" یعنی شیطان کے ساتھی بتاتا ہے۔ اس سے زیادہ کھلا ثبوت اور کیا ہو سکتا ہے کہ قرآن سرمایہ داری یا بادشاہت کے جلسوں کو ہی نہیں بلکہ چھوٹی سے چھوٹی فضول خرچی کو بھی اللہ کی نگاہ میں گناہ اور سزا دینے کی چیز بتاتا ہے۔

قرآن ہر ایسے پیشے کو ناجائز قرار دیتا ہے جس میں بغیر محنت کئے دوسرے کا مال لیا جا سکے۔

साफ़ ज़ाहिर है कि पूंजीवाद या सरमायादारी का इससे ज़ियादा बड़ा विरोध नहीं सकता. क़ुरान ने सूद लेना, जुआ, शराबख़ोरी और शराब बनाने को हराम बता कर आदमी की समाजी ज़िंदगी से ख़त्म कर दिया. अगर आज दुनिया में इस्लाम के इन सुनहरे उसूलों पर अमल हुआ होता तो सरमायादारी हर सूरत और हर शक्ल में दुनिया से मिट चुकी होती. और वह पच्छिमी शहनशाहियत जो आज नाम की जम्हूरियत की शक्ल में दुनिया पर राज कर रही है कभी वजूद में भी न आ सकती. इस सिलसिले में एक बात जो मुसलमान अकसर भूल जाते हैं यह है कि क़ुरान के यह सारे उसूल सिर्फ़ मोमनीन, सालहीन और सादक़ीन यानी सिर्फ़ ऊंचे दर्जे के दीनदारों के लिये ही नहीं हैं. उनके लिये तो ईसार यानी त्याग और ज़ुहद व तक़वा यानी परहेज़गारी और कड़ी से कड़ी रियाज़तें यानी तपस्यायें अलग बताई गई हैं. इंसाफ़ का यह उसूल और हक़ूक़ुलइबाद के यह फ़र्ज़ तो हर आदमी के लिये ज़रूरी हैं. उनका पूरा न करना ईश्वर की आज्ञा के ख़िलाफ़ अमल करना है.

आज जो हम 90 फ़ीसदी मुसलमानों की ज़िन्दगी बिल्कुल इन उसूलों के ख़िलाफ़ देखते हैं इसका सबब यह है कि हमारी ज़िंदगियां क़ुरान के बताए हुए उसूलों पर क़ायम नहीं हैं बल्कि उन फ़क़ीहों यानी पंडे पुरोहितों के बताये हुए उसूलों पर क़ायम हैं जिन्होंने अपने अपने ढंग से क़ुरान के मानी किये हैं. क़ुरान में ख़ुदा ने अपने बंदों को यह इजाज़त दी है कि वह दुनिया की ज़ीनतों यानी शोभा की चीज़ों और हलाल खाने की चीज़ों से फ़ायदा उठायें और कहा है कि हमने तुम पर इन चीज़ों को हराम नहीं किया. इस आयत से लोग दुनिया परस्ती और ऐश व आराम के सब सामान को जाइज़ समझ बैठे. यह लोग यह नहीं देखते कि किसी चीज़ की इजाज़त होना उन उसूलों को रद्द नहीं कर देता जो इस चीज़ के इस्तेमाल के लिये बता दिये गये हैं, और न उन उसूलों की जगह कोई नये उसूल क़ायम कर देता है. इसलिये वह उसूल चाहे वह किसी ने भी बनाये हों जो इंसाफ़ के उसूल के और क़ुरान की हिदायतों के ख़िलाफ़ हैं या जो तौहीद और इंसानी भाई चारे के उसूलों के ख़िलाफ़ जाते हैं, बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद हैं.

यह कमीशन मुसलमानों से अपील करता है कि वह अपने इंसानी फ़र्ज़ों को पूरा करने में क़ुरान की हिदायतों के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी को ढालें और उन फ़र्ज़ों में से वह पहलू निकाल दें जो उन्हें इस लोक और परलोक दोनों से महरूम करने वाले हैं. यह कमीशन मुसलमानों को यक़ीन दिलाता है कि क़ुरान की हिदायतों पर चलना उन्हें ख़ुद्दारी, अपने ऊपर भरोसा और अपने पैरों पर

صاف ظاہر ہے کہ پونجی واد یا سرمایہ داری کا اس سے زیادہ بڑا ورودھ نہیں ہو سکتا۔ قرآن نے سود لینا، جوا، شراب خوری اور شراب بنانے کو حرام بتا کر آدمی کی سماجی زندگی سے ختم کر دیا۔ اگر آج دنیا میں اسلام کے ان سنہرے اصولوں پر عمل ہوا ہوتا تو سرمایہ داری ہر صورت اور ہر شکل میں دنیا سے مٹ چکی ہوتی۔ اور وہ پچھمی شہنشاہیت جو آج نام کی جمہوریت کی شکل میں دنیا پر راج کر رہی ہے کبھی وجود میں بھی نہ آ سکتی۔ اس سلسلے میں ایک بات جو مسلمان اکثر بھول جاتے ہیں یہ ہے کہ قرآن کے یہ سارے اصول صرف مومنین، صالحین اور صادقین یعنی صرف اونچے درجہ کے دینداروں کے لئے ہی نہیں ہیں۔ ان کے لئے تو ایثار یعنی تیاگ اور زہد و تقویٰ یعنی پرہیزگاری اور کڑی سے کڑی ریاضتیں یعنی تپسیائیں الگ بتائی گئی ہیں۔ انصاف کا یہ اصول اور حقوق العباد کے یہ فرض تو ہر آدمی کے لئے ضروری ہیں۔ ان کا پورا نہ کرنا ایشور کی آگیا کے خلاف عمل کرنا ہے۔

آج جو ہم 90 فیصدی مسلمانوں کی زندگی بالکل ان اصولوں کے خلاف دیکھتے ہیں اس کا سبب یہ ہے کہ ہماری زندگیاں قرآن کے بتائے ہوئے اصولوں پر قائم نہیں ہیں بلکہ ان فقیہوں یعنی پنڈے پروہتوں کے بتائے ہوئے اصولوں پر قائم ہیں جنہوں نے اپنے اپنے ڈھنگ سے قرآن کے معنی کئے ہیں۔ قرآن میں خدا نے اپنے بندوں کو یہ اجازت دی ہے کہ وہ دنیا کی زینتوں یعنی شوبھا کی چیزوں اور حلال کھانے کی چیزوں سے فائدہ اٹھائیں اور کہا ہے کہ ہم نے تم پر ان چیزوں کو حرام نہیں کیا۔ اس آیت سے لوگ دنیا پرستی اور عیش و آرام کے سب سامان کو جائز سمجھ بیٹھے۔ یہ لوگ یہ نہیں دیکھتے کہ کسی چیز کی اجازت ہونا ان اصولوں کو رد نہیں کر دیتا جو اس چیز کے استعمال کے لئے بتا دیئے گئے ہیں، اور نہ ان اصولوں کی جگہ کوئی نئے اصول قائم کر دیتا ہے۔ اس لئے وہ اصول چاہے وہ کسی نے بھی بنائے ہوں جو انصاف کے اصول کے اور قرآن کی ہدایتوں کے خلاف ہیں یا جو توحید اور انسانی بھائی چارے کے اصولوں کے خلاف جاتے ہیں، بالکل غلط اور بے بنیاد ہیں۔

یہ کمیشن مسلمانوں سے اپیل کرتا ہے کہ وہ اپنے انسانی فرضوں کو پورا کرنے میں قرآن کی ہدایتوں کے مطابق اپنی زندگی کو ڈھالیں اور ان فرضوں میں سے وہ پہلو نکال دیں جو انہیں اس لوک اور پرلوک دونوں سے محروم کرنے والے ہیں۔ یہ کمیشن مسلمانوں کو یقین دلاتا ہے کہ قرآن کی ہدایتوں پر چلنا انہیں خودداری، اپنے اوپر بھروسہ اور اپنے پیروں پر

इस्लामी भाई चारा कहते हैं. आये दिन की समाजी ज़िन्दगी में उन्होंने इस भाई चारे की ऐसी रिवाजी और रस्मी शक्लें पैदा कर दी हैं, जिन को मिटाना क़ुरान और रसूल का ख़ास मक़सद था.

यह कनवैनशन मुसलमानों से प्रार्थना करता है कि वह अपने मज़हब के इन ज़रूरी पहलुओं की तरफ़ ध्यान दें और क़ुरान की तालीम और रसूल के उपदेश सामने रख कर उन सारे समाजी तफ़रक़ों को जो भाई भाई में फ़र्क़ करते हैं और उनमें दर्दनाक झगड़े और आपसी खींचातानी पैदा करते हैं क़ुरान की आज्ञा के ख़िलाफ़ समझ कर एक दम मिटाने की कोशिश करें.

आदमी की आये दिन की समाजी ज़िन्दगी में एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ जिस तरह का बर्ताव करना चाहिये और उस बर्ताव में जिस असूल को सामने रखना चाहिये उसे क़ुरान ने अद्ल यानी इंसाफ़ का नाम दिया है. अद्ल और इनसाफ़ से बढ़ कर आपसी संबंधों में बराबरी लाने वाला कोई दूसरा असूल नहीं हो सकता. भाई चारे और एक ख़ानदान के विचार को सामने रखते हुए इंसाफ़ के इस असूल के सिवा कोई दूसरा असूल क़ायम हो ही नहीं सकता. इंसाफ़ की व्याख्या करते हुए क़ुरान ने हर आदमी के लिये हर ग़ैर ज़रूरी चीज़ का रखना ग़लत ठहराया है और उसे मना किया है. कोई ग़ैर ज़रूरी चीज़ अपने क़ब्ज़े में नहीं रखी जा सकती और अगर रखी जाय तो केवल अमानत के तौर पर रखी जा सकती है और फिर उसे जल्दी से जल्दी उसके हक़दार के पास पहुंचा देना चाहिये. ख़ास कर क़ुरान ने ग़ैर ज़रूरी सोने और चांदी को आदमी के लिये एक अज़ाब यानी मुसीबत बताया है और कहा है कि जो कोई ग़ैर ज़रूरी सोना और चांदी अपने पास रखता है बदला मिलने के दिन उसकी छाती और हड्डियां उस सोने और चांदी से दाग़ी जाती हैं. इस तरह की चीज़ों को रखना जो मना किया गया है उसकी बुनियाद रहबानियत यानी वैराग्य या दुनिया को छोड़ने पर नहीं है, बल्कि अपने पड़ोसी और दूसरे इंसानों की ज़रूरतों और उनके हक़ पर है. सब एक ख़ुदा के बन्दे हैं. सब की ज़रूरतें एक सी पूरी होनी चाहियें. इसलिये जो अपनी ज़रूरत से ज़ियादा काम में लाता है या जमा रखता है वह दूसरों को उनके हक़ से महरूम कर देता है. वह ख़ुदा की उन नैमतों को जो सब के लिये एक सी हैं बेजा तौर पर हथिया लेता है. ऐसा करना खुला ज़ुल्म है और इंसाफ़ के असूल के बिल्कुल ख़िलाफ़ है. इन असूलों की बुनियाद इस बात पर है कि सब की माद्दी और संसारी ज़िन्दगी अच्छी से अच्छी हो. उनकी बुनियाद उख़ुव्वत यानी भाई चारे और जमहूरियत यानी लोकशाही पर है, और उनके पीछे बिनाएँ रूहानी और इख़लाक़ी हैं.

اسلامی بھائی چارہ کہتے ہیں ۔ آئے دن کی سماجی زندگی میں انہوں نے اس بھائی چارہ کی ایسی رواجی اور رسمی شکلیں پیدا کر دی ہیں جن کو مٹانا قرآن اور رسول کا خاص مقصد تھا ۔

یہ کنوینشن مسلمانوں سے پرارتھنا کرتا ہے کہ وہ اپنے مذہب کے ان ضروری پہلوؤں کی طرف دھیان دیں اور قرآن کی تعلیم اور رسول کے اپدیش سامنے رکھکر ان سارے سماجی تفرقوں کو جو بھائی بھائی میں فرق کرتے ہیں اور ان میں درد ناک جھگڑے اور آپسی کھینچاتانی پیدا کرتے ہیں قرآن کی آگیاں کے خلاف سمجھکر ایک دم مٹانے کی کوشش کریں ۔

آدمی کی آئے دن کی سماجی زندگی میں ایک آدمی کو دوسرے آدمی کے ساتھ جس طرح کا برتاؤ کرنا چاہئے اور اس برتاؤ میں جس اصول کو سامنے رکھنا چاہئے اسے قرآن نے عدل یعنی انصاف کا نام دیا ہے ۔ عدل اور انصاف سے بڑھکر آپسی سمبندھوں میں برابری لانے والا کوئی دوسرا اصول نہیں ہو سکتا ۔ بھائی چارے اور ایک خاندان کے وچار کو سامنے رکھتے ہوئے انصاف کے اس اصول کے سوا کوئی دوسرا اصول قائم ہو ہی نہیں سکتا ۔ انصاف کی ویاکھیا کرتے ہوئے قرآن نے ہر آدمی کے لئے ہر غیرضروری چیز کا رکھنا غلط ٹھہرایا ہے اور اسے منع کیا ہے ۔ کوئی غیرضروری چیز اپنے قبضہ میں نہیں رکھی جا سکتی اور اگر رکھی جائے تو کیول امانت کے طور پر رکھی جا سکتی ہے اور پھر اسے جلدی سے جلدی اس کے حقدار کے پاس پہونچا دینا چاہئے ۔ خاص کر قرآن نے غیرضروری سونے اور چاندی کو آدمی کے لئے ایک عذاب یعنی مصیبت بتایا ہے اور کہا ہے کہ جو کوئی غیرضروری سونا اور چاندی اپنے پاس رکھتا ہے بدلا ملنے کے دن اس کی چھاتی اور ہڈیاں اس سونے اور چاندی سے داغی جاتی ہیں ۔ اس طرح کی چیزوں کو رکھنا جو منع کیا گیا ہے اس کی بنیاد رہبانیت یعنی ویراگ یا دنیا کو چھوڑنے پر نہیں ہے بلکہ اپنے پڑوسی اور دوسرے انسانوں کی ضرورتوں اور ان کے حق پر ہے ۔ سب ایک خدا کے بندے ہیں ۔ سب کی ضرورتیں ایک سی پوری ہونی چاہئیں ۔ اس لئے جو اپنی ضرورت سے زیادہ کام میں لاتا ہے یا جمع رکھتا ہے وہ دوسروں کو ان کے حق سے محروم کر دیتا ہے ۔ وہ خدا کی ان نعمتوں کو جو سب کے لئے ایک سی ہیں بیجا طور پر ہتھیا لیتا ہے ۔ ایسا کرنا کھلا ظلم ہے اور انصاف کے اصول کے بالکل خلاف ہے ۔ ان اصولوں کی بنیاد اس بات پر ہے کہ سب کی مادی اور سنساری زندگی اچھی سے اچھی ہو ۔ ان کی بنیاد اخوت یعنی بھائی چارہ اور جمہوریت یعنی لوک شاہی پر ہے اور ان کے پیچھے بنائیں روحانی اور اخلاقی ہیں ۔

यानी ईश्वर की तरफ आदमी के फर्ज़ और हुक़ूक़ुलइबाद यानी दूसरे आदमियों की तरफ आदमी के फर्ज़ में फर्क़ किया है और यह बताया है कि रोज़ा, नमाज़, ज़कात और कुर्बानी वगैरा जो हक़्क़ुल्लाह में शामिल हैं उनके न पूरा करने को अल्लाह माफ कर सकता है लेकिन हुक़ूक़ुलइबाद यानी दूसरे इनसानों की तरफ फर्ज़ के पूरा न करने को यानी उन में कमी या भूल को अल्लाह हरगिज़ माफ नहीं करता. उसकी सज़ा इस लोक में या परलोक में ज़रूर मिलती है.

जो हुक़ूक़ुलइबाद क़ुरान में समाजी, आर्थिक और राजकाजी ज़िन्दगी के लिये क़ायम किये हैं उनमें से ख़ास ख़ास नीचे दिये जाते हैं.

इस्लाम के समाजी उसूल—

क़ुरान में इनसान की समाजी ज़िन्दगी का पहला फर्ज़ ग़रीबों, दुखियों, लाचारों और मज़लूमों के साथ हमदर्दी करना और उनकी मदद करना है. क़ुरान ने समाजी ज़िन्दगी की बुनियाद एक ईश्वर में विश्वास और इनसानी भाई-चारे के उसूलों पर रखी है और इस भाई चारे के अंदर कुल मानव समाज को शामिल किया है और बताया है कि आदमी के हर काम का मक़सद कुल इनसानों की बेहतरी और भलाई होना चाहिये. क़ुरान सारी इनसानी क़ौम को एक कुटुम्ब बताता है. मोहम्मद साहब अपनी पांचों वक़्त की नमाज़ में कहा करते थे :—"मैं शहादत देता हूं कि सब आदमी आपस में भाई-भाई हैं." इस से ज़ियादा खुले और ज़ोरदार शब्दों में इनसानी भाई चारे को और सब इनसानों के एक कुटुम्ब होने को बयान नहीं किया जा सकता. यह भी ज़ाहिर है कि क़ुरान की यह तालीम और रसूले करीम की यह तसदीक़ उन सारे रीत, रिवाजों, क़ानूनों और तरह तरह के क़ौमी, मुल्की, नस्ली या मज़हबी फ़िर्क़ों और अलग-अलग संगठनों को एक साथ ख़त्म कर देती है जो एक आदमी को दूसरे आदमी से अलहदा करते हैं और इनसान की समाजी ज़िन्दगी में भेद भाव और झगड़े पैदा करते हैं.

इसके साथ साथ यह भी साफ़ हो जाता है कि जो भेद भाव आज इस दुनिया में मालिक और नौकर, छूत और अछूत, शरीफ़ रज़ील, ऊंच नीच, हिन्दू मुसलमान, शेख सैयद, शीया सुन्नी, ब्राह्मन शूद्र, खत्री कायस्थ वगैरा के दिखाई देते हैं, चाहे वह किसी भी रंग रूप में हों, खुले तौर पर इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं. इस तरह के भेदों को मानना क़ुरान की तालीम को झुठलाना है.

और बहुत से दूसरे धर्मों की तरह इस्लाम के मानने वालों ने भी अपने आप को धर्म के एक पिंजरे में बंद कर लिया है. उस पिंजरे को वह 'मुकम्मल इस्लामी' यानी

یعنی ایشور کی طرف آدمی کے فرض اور حق العباد یعنی دوسرے آدمیوں کی طرف آدمی کے فرض میں فرق کیا ہے اور یہ بتایا ہے کہ روزہ، نماز، زکاۃ اور قربانی وغیرہ جو حق اللہ میں شامل ہیں ان کے نہ پورا کرنے کو اللہ معاف کر سکتا ہے لیکن حق العباد یعنی دوسرے انسانوں کی طرف فرض کے پورا نہ کرنے کو یعنی ان میں کمی یا بھول کو اللہ ہرگز معاف نہیں کرتا۔ اسکی سزا اس لوک میں یا پرلوک میں ضرور ملتی ہے۔

جو حق العباد قرآن میں سماجی، آرتھک اور راجکاجی زندگی کے لئے قائم کئے ہیں ان میں سے خاص خاص نیچے دیئے جاتے ہیں۔

اسلام کے سماجی اصول

قرآن میں انسان کی سماجی زندگی کا پہلا فرض غریبوں، دکھیوں، لاچاروں اور مظلوموں کے ساتھ ہمدردی کرنا اور ان کی مدد کرنا ہے۔ قرآن نے سماجی زندگی کی بنیاد ایک ایشور میں وشواس اور انسانی بھائی چارہ کے اصولوں پر رکھی ہے اور اس بھائی چارہ کے اندر کل مانو سماج کو شامل کیا ہے اور بتایا ہے کہ آدمی کے ہر کام کا مقصد کل انسانوں کی بہتری اور بھلائی ہونا چاہئے۔ قرآن ساری انسانی قوم کو ایک کٹمب بتلاتا ہے۔ محمد صاحب اپنی پانچوں وقت کی نماز میں کہا کرتے تھے:— "میں شہادت دیتا ہوں کہ سب آدمی آپس میں بھائی بھائی ہیں۔" اس سے زیادہ کھلے اور زوردار شبدوں میں انسانی بھائی چارے کو اور سب انسانوں کے ایک کٹمب ہونے کو بیان نہیں کیا جا سکتا۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ قرآن کی یہ تعلیم اور رسول کریم کی یہ تصدیق ان سارے ریت، رواجوں، قانونوں اور طرح طرح کے قومی، ملکی، نسلی یا مذہبی فرقوں اور الگ الگ سنگٹھنوں کو ایک ساتھ ختم کر دیتی ہے جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے علیحدہ کرتے ہیں اور انسان کی سماجی زندگی میں بھید بھاؤ اور جھگڑے پیدا کرتے ہیں۔

اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ جو بھید بھاؤ آج ہم دنیا میں مالک اور نوکر، چھوت اور اچھوت، شریف رذیل، اونچ نیچ، ہندو مسلمان، شیخ سید، شیعہ سنی، برہمن شودر، کھتری کائستھ وغیرہ کے دیکھتے ہیں، چاہے وہ کسی بھی رنگ روپ میں ہوں، کھلے طور پر اسلام کے خلاف ہیں۔ اس طرح کے بھیدوں کو ماننا قرآن کی تعلیم کو جھٹلانا ہے۔

اور بہت سے دھرم والوں کی طرح اسلام کے ماننے والوں نے بھی اپنے آپ کو دھرم کے ایک پنجرے میں بند کر لیا ہے۔ اس پنجرے کو وہ لکھت اسلامی یعنی

वे इस सचाई को समझने की योग्यता रखती है. इसलिये आदमी का पहला फ़र्ज़ यह है कि इस सचाई को अपने ईमान की बुनियाद बनाए और उस मालिक के सामने जिसने उसे पैदा किया है और दुनिया की नेमतें दी हैं दीनता और शुक्र गुज़ारी के साथ अपना सर झुकाए. इसलाम की रूहानियत का यही पहला उसूल है.

दूसरा उसूल यह है कि उन सब फ़र्ज़ों को जो आदमी की रूहानी और इख़लाक़ी तालीम से सम्बन्ध रखते हैं आदमी दीनता, निस्वार्थता, हृदय की शुद्धता और ईमान और विश्वास के साथ पूरा करे. इसका मतलब यह है कि आदमी अपने हर धार्मिक फ़र्ज़ को अपने हर निजी नफ़े नुक़सान से बिलकुल अलग रख कर पूरा करे. यहां तक कि बहिश्त या जन्नत की इच्छा का भी फ़र्ज़ के साथ लगाव न हो.

रोज़ा और नमाज़ का मतलब अल्लाह की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को पूरा करना है. यह फ़र्ज़ अपनी निजी ज़रूरतों या ग़रज़ों को सामने रख कर पूरा नहीं हो सकता. इस फ़र्ज़ का पूरा करना शुक्रगुज़ारी, दीनता और ईश्वर निष्ठा पर निर्भर है. इसके साथ साथ 'सिरातेमुस्तक़ीम' यानी दीन की सीधी राह पर चलने का पक्का इरादा करना और ईश्वर से इसके लिये शक्ति और सफलता मांगना बिलकुल ज़रूरी है. तीसरा उसूल यह है कि अल्लाह की तरफ़ अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करने से आदमी को जो रूहानी और इख़लाक़ी शक्ति हासिल हो उसे सारे मानव समाज की सेवा और भलाई में ख़र्च करे. उसे एक अमानत समझे जो अल्लाह ने उसे दुनिया की सेवा और भलाई करने के लिये प्रदान की है.

रूहानी ज़िन्दगी के यही तीन ख़ास उसूल हैं. यह कलमेजनाम इन उसूलों की तरफ़ मुसलमानों का ध्यान दिलाता है और उन्हें आगाह करता है कि क़ब्रों और पीरों की पूजा और तरह तरह के अंध विश्वास क़ुरान की आज्ञाओं के ख़िलाफ़ हैं. मुसलमानों को इनसे बचना और दूर रहना चाहिये. इससे भी ज़ियादा ज़रूरी यह है कि वह रोज़ा नमाज़ और दूसरे फ़र्ज़ों के पूरा करते वक़्त उनके असली मतलब और उनकी ग़रज़ को अपने सामने रखें और अपनी रोज़ की ज़िन्दगी में उस असल ग़रज़ को पूरा करने की कोशिश करें. जो रोज़ा, नमाज़, ज़कात (ख़ैरात) वग़ैरा जन्नत प्राप्त करने के लिये या किसी भी निजी फ़ायदे को सामने रख कर की जायेगी वह दीन या दुनिया में कहीं भी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती.

यह कलमेजनाम मुसलमानों का ध्यान ख़ास तौर से इस बात की तरफ़ दिलाना चाहता है कि इसलाम ने हक़-अल्ला

سے اس سچائی کو سمجھنے کی یوگتا رکھتی ہے ۔ اس لئے آدمی کا پہلا فرض یہ ہے کہ اس سچائی کو اپنے ایمان کی بنیاد بنائے اور اس مالک کے سامنے جس نے اسے پیدا کیا ہے اور دنیا کی نعمتیں دی ہیں دینتا اور شکر گذاری کے ساتھ اپنا سر جھکائے۔ اسلام کی روحانیت کا یہی پہلا اصول ہے ۔

دوسرا اصول یہ ہے کہ ان سب فرضوں کو جو آدمی کی روحانی اور اخلاقی تعلیم سے سمبندھ رکھتے ہیں آدمی دینتا، نسوارتھتا، ہردے کی شدھتا اور ایمان اور وشواس کے ساتھ پورا کرے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ آدمی اپنے ہر دھارمک فرض کو اپنے ہر نجی نفع نقصان سے بالکل الگ رکھکر پورا کرے ۔ یہاں تک کہ بہشت یا جنت کی اچھا کا بھی فرض کے ساتھ لگاؤ نہ ہو ۔

روزہ اور نماز کا مطلب اللہ کی طرف اپنے فرض کو پورا کرنا ہے ۔ یہ فرض اپنی نجی ضرورتوں یا غرضوں کو سامنے رکھکر پورا نہیں ہوسکتا ۔ اس فرض کا پورا کرنا شکر گذاری، دینتا اور ایشور نشٹھا پر نربھر ہے ۔ اس کے ساتھ ساتھ صراط مستقیم یعنی دین کی سیدھی راہ پر چلنے کا پکا ارادہ کرنا اور ایشور سے اس کے لئے شکتی اور سپھلتا مانگنا بالکل ضروری ہے۔ تیسرا اصول یہ ہے کہ اللہ کی طرف اپنے اس فرض کو پورا کرنے سے آدمی کو جو روحانی اور اخلاقی شکتی حاصل ہو اسے سارے مانو سماج کی سیوا اور بھلائی میں خرچ کرے ۔ اسے ایک امانت سمجھے جو اللہ نے اسے دنیا کی سیوا اور بھلائی کرنے کے لئے پردان کی ہے ۔

روحانی زندگی کے یہی تین خاص اصول ہیں۔ یہ کلیمیشن ان اصولوں کی طرف مسلمانوں کا دھیان دلاتا ہے اور انہیں آگاہ کرتا ہے کہ قبروں اور پیروں کی پوجا اور طرح طرح کے اندھ وشواس قرآن کی آگیاؤں کے خلاف ہیں ۔ مسلمانوں کو ان سے بچنا اور دور رہنا چاہئے ۔ اس سے بھی زیادہ ضروری یہ ہے کہ وہ روزہ نماز اور دوسرے فرضوں کے پورا کرتے وقت ان کے اصلی مطلب اور ان کی غرض کو اپنے سامنے رکھیں اور اپنی روز کی زندگی میں اس اصل غرض کو پورا کرنے کی کوشش کریں ۔ جو روزہ، نماز، زکاۃ (خیرات) وغیرہ جنت پراپت کرنے کے لئے یا کسی بھی نجی فائدہ کو سامنے رکھکر کی جائیگی وہ دین یا دنیا میں کہیں بھی فائدہ نہیں پہنچا سکتی ۔

یہ کلیمیشن مسلمانوں کا دھیان خاص طور سے اس بات کی طرف دلانا چاہتا ہے کہ اسلام نے حق اللہ

...नी नैतिक ताक़तों की जगह उसने हैवानी और शैतानी ताक़तों को दे दी है, परलोक की जगह इस लोक को. इस इतने बड़े इन्क़लाब के साथ साथ इसकी यह तालीम है कि अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को बढ़ाओ और उनको पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा दो. इसी को यह सभ्यता तरक़्क़ी कहती है और यही इसके लिये ज़िन्दगी का मक़सद है. यह तहज़ीब कुल मानव समाज की भलाई का लक्ष अपने सामने नहीं रखती और न निस्वार्थ सेवा, त्याग और क़ुरबानी में उसे विश्वास है. उसका कहना है कि हर आदमी के लिये अपनी निजी या क़ौमी या मुल्की या नसली फ़ायदे को ही देखना इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद है और इस मक़सद तक पहुंचने का ज़रिया केवल तलवार और हिंसा है.

इस कन्वैन्शन की यह राय है कि ईश्वर का जो कोप इस वक़्त दुनिया पर उतर रहा है उसका केवल एक यह कारन है कि दुनिया वालों ने अपनी मज़हबी राहें छोड़ कर पच्छिमी सभ्यता का रास्ता पकड़ लिया है. यह कन्वैन्शन मुसलमानों को ख़ास कर और मज़हब के मानने वालों को आम तौर पर चेतावनी देता है कि जब तक वह हक़ यानी सच्चाई पर क़ायम रहने और नेक काम करने की सीधी राह अख़्तियार न करेंगे ईश्वर का कोप उन पर उतरता रहेगा और हम उन क़ौमों की तरह मिट जायेंगे जिनके अविश्वास और बुरे कामों ने उन्हें बरबाद कर दिया. यह कन्वैन्शन मुसलमानों का ध्यान उन उसूलों की तरफ़ दिलाता है जिन पर क़ुरान में आदमी की ज़िन्दगी के रूहानी, समाजी, आर्थिक और राजकाजी पहलुओं को क़ायम किया है. यह कन्वैन्शन उन उसूलों में से कुछ को ज़रा विस्तार के साथ बताना चाहता है क्योंकि आम जनता इस समय उनसे बेख़बर है और लोगों को यह भी पता नहीं है कि इन उसूलों में जम्हूरियत यानी लोकशाही को कितना महत्व दिया गया है और किस पैमाने पर इनसान इनसान की बराबरी, भाई चारे और उसकी आज़ादी को जो लोकशाही के बुनियादी उसूल हैं, इस्लामी ज़िन्दगी की बुनियाद बताया गया है.

इस्लाम के रूहानी उसूल

क़ुरान ईश्वर के एक होने को दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई बताता है और आदमी की ज़िन्दगी के हर पहलू की बुनियाद इसी सच्चाई पर क़ायम करता है. क़ुरान का कहना है कि जब कुल सृष्टि का ईश्वर यानी रब एक है तो ज़रूरी है कि यह सृष्टि अपने बनाने वाले की एकता का आइना हो. मानव जाति अपनी अक़्ल और समझ [illegible] रूहानी और इख़लाक़ी तजरबों की मदद

...یتک طاقتوں کی جگہ اس نے حیوانی اور شیطانی طاقتوں کو دے دی ہے، پرلوک کی جگہ اس لوک کو. اس اتنے بڑے انقلاب کے ساتھ ساتھ اس کی یہ تعلیم ہے کہ اپنی زندگی کی ضرورتوں کو بڑھاؤ اور ان کو پورا کرنے میں اپنی ساری شکتی لگا دو. اسی کو یہ سبھیتا ترقی کہتی ہے اور یہی اس کے لئے زندگی کا مقصد ہے. یہ تہذیب کل مانو سماج کی بھلائی کا لکش اپنے سامنے نہیں رکھتی اور نہ نسوارتھ سیوا، تیاگ اور قربانی میں اسے وشواس ہے. اس کا کہنا ہے کہ ہر آدمی کے لئے اپنی نجی یا قومی یا ملکی یا نسلی فائدے کو ہی دیکھنا انسان کی زندگی کا مقصد ہے اور اس مقصد تک پہونچنے کا ذریعہ کیول تلوار اور ہنسا ہے.

اس کنوینشن کی یہ رائے ہے کہ ایشور کا جو کوپ اس وقت دنیا پر اتر رہا ہے اس کا کیول ایک یہ کارن ہے کہ دنیا والوں نے اپنی مذہبی راہیں چھوڑ کر پچھمی سبھیتا کا راستہ پکڑ لیا ہے. یہ کنوینشن مسلمانوں کو خاص کر اور مذہب کے ماننے والوں کو عام طور پر چیتاونی دیتا ہے کہ جب تک وہ حق یعنی سچائی پر قائم رہنے اور نیک کام کرنے کی سیدھی راہ اختیار نہ کرینگے ایشور کا کوپ ان پر اترتا رہیگا اور ہم ان قوموں کی طرح مٹ جائینگے جن کے اوشواس اور برے کاموں نے انہیں برباد کر دیا. یہ کنوینشن مسلمانوں کا دھیان ان اصولوں کی طرف دلاتا ہے جن پر قرآن میں آدمی کی زندگی کے 'روحانی' سماجی' آرتھک اور راجکاجی پہلوؤں کو قائم کیا ہے. یہ کنوینشن ان اصولوں میں سے کچھ کو ذرا وستار کے ساتھ بتانا چاہتا ہے کیونکہ عام جنتا اس سمے ان سے بے خبر ہے. اور لوگوں کو یہ بھی پتہ نہیں ہے کہ ان اصولوں میں جمہوریت یعنی لوک شاہی کو کتنا مہتو دیا گیا ہے اور کس پیمانے پر انسان انسان کی برابری' بھائی چارہ اور سب کی آزادی کو جو لوک شاہی کے بنیادی اصول ہیں' اسلامی زندگی کی بنیاد بتایا گیا ہے.

اسلام کے روحانی اصول

قرآن ایشور کے ایک ہونے کو دنیا کی سب سے بڑی سچائی بتاتا ہے اور آدمی کی زندگی کے ہر پہلو کی بنیاد اسی سچائی پر قائم کرتا ہے. قرآن کا کہنا ہے کہ جب کل سرشٹی کا ایشور یعنی رب ایک ہے تو ضروری ہے کہ یہ سرشٹی اپنے بنانے والے کی ایکتا کا عکس ہو. مانو جاتی اپنی عقل، سمجھ اور روحانی اور اخلاقی تجربوں کی مدد

नाना : सहदेव की अम्मां, मैं सच्चे जी से उसका भला चाहता हूं आशीर्वाद दे सकता हूं पर सच्चे जी से नहीं.

नानी : यह क्यों ?

नाना : यह यों कि उस भली राह में मुझे सचमुच इतनी भलाई दिखाई नही देती जो सहदेव की भलाई कर सके.

नानी : अच्छा, आप आशीर्वाद ही दीजिये.

नाना : बेटा सहदेव ! तुम सच्चाई की राह पर व्योपार में चल रहे हो. तुम उस पर सच्चे जी से चल रहे हो. परमात्मा तुम्हें सुखी रखे, तुम्हारे व्यापार में बढ़ती हो, और तुम दुनिया में नाम कमाओ.

—भगवानदीन

نانا : سہدیو کی اماں، میں سچے جی سے اس کا بھلا چاہتا ہوں۔ آشیرواد دے سکتا ہوں پر سچے جی سے نہیں ;

نانی : یہ کیوں ؟

نانا : یہ یوں کہ اس بھلی راہ میں مجھے سچ مچ اتنی بھلائی دکھائی نہیں دیتی جو سہدیو کی بھلائی کرسکے .

نانی : اچھا، آپ آشیرواد ہی دیجئے .

نانا : بیٹا، سہدیو ! تم سچائی کی راہ پر ویاپار میں چل رہے ہو. تم اس پر سچے جی سے چل رہے ہو . پرماتما تمہیں سکھی رکھے تمہارے بیوپار میں بڑھتی ہو، اور تم دنیا میں نام کماؤ .

—بھگوان دین

क़ुरान और सच्ची लोकशाही

(मंज़र अली सोख़्ता)

[अलीगढ़ में 31 अक्तूबर सन '53 से 2 नवम्बर '53 तक एक आल इंडिया मुसलिम कन्वैन्शन हुआ था. श्री मंज़र अली सोख़्ता ने उस कन्वैन्शन में एक तजवीज़ पेश करना चाहा था जो किसी कारन न कर सके. वह तजवीज़ उन्होंने 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजी है. उसे हम नीचे दे रहे हैं

—ऐडीटर]

यह कन्वैन्शन हिन्दुस्तान के मुसलमानों का ध्यान उन नाज़ुक और ख़तरनाक हालतों की तरफ़ दिलाता है जो आजकल की पच्छिमी सभ्यता अपने साथ लाई है और जो इनसानी दुनिया पर अपने गहरे असर डाल रही हैं. इस पच्छिमी सभ्यता की एक ख़ास बात यह है कि इसने उस मेल और समतोल को उलट दिया है जो मज़हब ने आदमी की रूहानी और माद्दी ज़िन्दगियों में क़ायम किया था. इसने तौहीद यानी एक ईश्वर में विश्वास की जगह नास्तिकता को और क़ुदरत के क़ानूनों को दी है. रूहानियत की जगह उसने दुनिया और दौलत परस्ती को दी है. इख़लाक़ यानी सदाचार की जगह पालिसी यानी हिकमतेअमली और अवसरवाद, राजकाजी ठाठ बाट और ऐश व इशरत को. रूहानी और इख़लाक़ी

قرآن اور سچی لوک شاہی

(منظر علی سوختہ)

[علی گڑھ میں 31 اکتوبر سن '53 سے 2 نومبر سن '53 تک ایک آل انڈیا مسلم کنوینشن ہوا تھا. شری منظر علی سوختہ نے اس کنوینشن میں ایک تجویز پیش کرنا چاہا تھا جو کسی کارن نہ کر سکے . وہ تجویز انہوں نے 'نیا ہند' میں چھپنے کے لئے بھیجی ہے. اسے نیچے دے رہے ہیں

—ایڈیٹر]

یہ کنوینشن ہندستان کے مسلمانوں کا دھیان ان نازک اور خطرناک حالتوں کی طرف دلاتا ہے جو آجکل کی پچھمی سبھیتا اپنے ساتھ لائی ہے اور جو انسانی دنیا پر اپنے گہرے اثر ڈال رہی ہیں . اس پچھمی سبھیتا کی ایک خاص بات یہ ہے کہ اس نے اس میل اور سنتول کو الٹ دیا ہے جو مذہب نے آدمی کی روحانی اور مادی زندگیوں میں قائم کیا تھا . اس نے توحید یعنی ایک ایشور میں وشواس کی جگہ ناستکتا کو اور قدرت کے قانونوں کو دی ہے. روحانیت کی جگہ اس نے دنیا اور دولت پرستی کو دی ہے . اخلاق یعنی سداچار کی جگہ پالیسی یعنی حکمت عملی اور اوسرواد، راجکاجی ٹھاٹھ باٹھ اور عیش و عشرت کو. روحانی اور اخلاقی

सहदेव : (प्रवेश कर) पिता जी, प्रणाम.

नानी : लो, आप मुझ से बहस होती नहीं, अब आप इसी से झगड़ो.

सहदेव : हां ! क्या बात है ?

नानी : तेरे पिता जी का मत है कि गाहक के साथ सच्चाई का बर्ताव नहीं किया जा सकता.

सहदेव : पिता जी ! जब आपकी दुकान में कोई चीज़ नहीं होती और उसको आप पड़ोसी की दुकान से मंगाते हैं तो क्या वह भी आप के साथ इसी तरह सौदा करता है जिस तरह आप गाहक से ?

नाना : अरे आपस में कहीं मोल तोल चलता है ?

सहदेव : तो आपस में आप सच्चे व्यवहार को मानते हैं ?

नाना : बेशक.

सहदेव : और अगर कोई गाहक को आपस का समझे तो ?

नाना : बिल्ली चूहे को आपस का समझे तो भूखी मर जाए.

सहदेव : आदमी गाय को माता मान कर दूध भी खूब खाता है, टोटे में नहीं रहता.

नाना : उससे दूध जो मिलता है.

सहदेव : गाहक से भी नफ़ा मिलता है.

नाना : गाय खूंटे से बंधी रहती है, गाहक क्या खूंटे से बंधा रहता है ? वह एक दुकानदार से क्यों बंधे ?

सहदेव : क्या सच्चाई ऐसा खूंटा नहीं हो सकती जिससे गाहक अपने आप बंधना पसन्द करें.

नाना : क्या तुम समझते हो कि सच्चाई ऐसा खूंटा हो सकती है ?

सहदेव : मैं तो ऐसा ही समझता हूं.

नाना : देखो बेटा ! मैं बूढ़ा हो चला हूं. दुकान तुम्हारी है, तुम को ही संभालना है, तुम्ही को गृहस्थी पालना है. अपना भला बुरा सोच लो. मेरी राय में तुम गलत राह अपनाना चाहते हो. बूढ़े की सलाह न मानो, तुम जानो.

नानी : जब आप हर तरह इसी को दुकान सौंप रहे हैं और इसे अपनी राह चलने के लिये आज़ाद छोड़ते हैं तो क्यों घबराते हैं, सच्चे जी से आशीर्वाद दीजिये.

سہدیو : (پرویش کر) پتا جی پرنام ۔

نانی : لو، آپ مجھ سے بحث ہوتی نہیں، اب آپ اسی سے جھگڑو ۔

سہدیو : ہاں کیا بات ہے ؟

نانی : تیرے پتا جی کا مت ہے کہ گاہک کے ساتھ سچائی کا برتاؤ نہیں کیا جاسکتا ۔

سہدیو : پتا جی! جب آپکی دوکان میں کوئی چیز نہیں ہوتا اور اس کو آپ پڑوسی کی دوکان سے منگاتے ہیں تو کیا وہ بھی آپ کے ساتھ اسی طرح سودا کرتا ہے جس طرح آپ گاہک سے ؟

نانا : ارے آپس میں کہیں مول تول چلتا ہے ؟

سہدیو : تو آپس میں آپ سچے ویوہار کو مانتے ہیں؟

نانا : بیشک ۔

سہدیو : اور اگر کوئی گاہک کو آپس کا سمجھے تو؟

نانا : بلی چوہے کو آپس کا سمجھے تو بھوکی مر جائے ۔

سہدیو : آدمی گائے کو ماتا مانکر خوب بھی دودھ کھاتا ہے، ٹوٹے میں نہیں رہتا ۔

نانا : اس سے دودھ جو ملتا ہے ۔

سہدیو : گاہک سے بھی نفع ملتا ہے ۔

نانا : گائے کھونٹے سے بندھی رہتی ہے، گاہک کیا کھونٹے سے بندھا رہتا ہے ؟ وہ ایک دوکاندار سے کیوں بندھے ؟

سہدیو : کیا سچائی ایسا کھونٹا نہیں ہوسکتی جس سے گاہک اپنے آپ بندھنا پسند کریں ۔

نانا : کیا تم سمجھتے ہو کہ سچائی ایسا کھونٹا ہوسکتی ہے ؟

سہدیو : میں تو ایسا ہی سمجھتا ہوں ۔

نانا : دیکھو بیٹا ! میں بوڑھا ہو چلا ہوں۔ دوکان تمہاری ہے، تم کو ہی سنبھالنا ہے، تمہیں کو گرہستی پالنا ہے ۔ اپنا بھلا برا سوچ لو ۔ میری رائے میں تم غلط راہ پکڑنا چاہتے ہو۔ بوڑھے کی صلح نہ مانو، تم جانو ۔

نانی : جب آپ ہر طرح اسی کو دوکان سونپ رہے ہیں اور اسے اپنی راہ چلنے کے لئے آزاد چھوڑتے ہیں تو اسے گھبرائیے نہیں۔ سچے جی سے آشیرواد دیجئے ۔

वह जमीन बुरी थी जहां सचाई का बीज बोया गया.

नानी : और अगर यों कहा जाए कि वह जगह बुरी थी जहां से सच्चाई की बात कही गई ?

नाना : क्या मतलब ?

नानी : मतलब यही कि जिस दूकान से गाहक रोज दुगुने तिगुने दाम सुनता रहा हो उस दूकान से आज ठीक ठीक दाम सुन कर सहसा कैसे एतबार कर ले ?

नाना : तो यह कह कर आप यह साबित करना चाहती हैं कि गाहक को सचाई की परख नहीं है.

नानी : सच्चाई की परख गाहक को होती है. हां, कपड़े की परख उसे नहीं होती. इसीलिये वह दूकानदार की बात को हमेशा झूठ सच्चा समझता है.

नाना : तो क्या तुम्हारा ख्याल है कि सच बोलने से और एक दाम कहने से दूकान चल जायगी.

नानी : यह मुझे नहीं मालूम. मैं तो इतना जानती हूं कि सच्चाई आग की तरह चमकती है और उसे परखने में दिक्कत नहीं होती. अगर आपका यह तजुरबा है कि सच बोल कर दूकान नहीं चल सकती तो नहीं चलेगी.

नाना : बड़ी साफ बात है, मैंने तो सच बोल कर दूकान को चला कर देखा नहीं. पर हां, यह जरूर जानता हूं कि झूठ बोल कर दूकान चलती है और चला रहा हूं और अच्छी चला रहा हूं.

नानी : तो जरा एक बार सच्चाई के साथ भी दूकान चला कर देख लीजिये.

नाना : अब बुढ़ापे में ?

नानी : भला तो लोग बुढ़ापे में ही चेतते हैं.

नाना : हां, मगर दूकान छोड़ कर.

नानी : दूकान पर बैठ कर क्यों नहीं ?

नाना : यह नहीं हो सकता.

नानी : तो क्या आपकी समझ में सच्चाई और व्योपार में बैर है ?

नाना : अकेला मैं ही दूकानदार नहीं हूं. इस कस्बे में और बहुत से दूकानदार हैं. जैसा और सब करते हैं वैसा ही मैं भी करता हूं.

یہ زمین بری تھی جہاں سچائی کا بیج بویا گیا ۔

نانی : اور اگر یوں کہا جائے کہ یہ جگہ بری تھی جہاں سے سچائی کی بات کہی گئی ؟

نانا : کیا مطلب ؟

نانی : مطلب یہ کہ جس دوکان سے گاہک روز دگنے تگنے دام سنتا رہا ہو اس دوکان سے آج ٹھیک ٹھیک دام سنکر سہسا کیسے اعتبار کرلے ؟

نانا : تو یہ کہکر آپ یہ ثابت کرنا چاہتی ہیں کہ گاہک کو سچائی کی پرکھ نہیں ہے ۔

نانی : سچائی کی پرکھ گاہک کو ہوتی ہے ۔ ہاں، کپڑے کی پرکھ اسے نہیں ہوتی ۔ اسی لئے وہ دوکاندار کی بات کو ہمیشہ جھوٹا سچا سمجھتا ہے ۔

نانا : تو کیا تمہارا خیال ہے کہ سچ بولنے سے اور ایک دام کہنے سے دوکان چل جائیگی؟

نانی : یہ مجھے نہیں معلوم ۔ میں اتنا جانتی ہوں کہ سچائی آگ کی طرح چمکتی ہے اور اسے پرکھنے میں دقت نہیں ہوتی ۔ اگر آپکا یہ تجربہ ہے کہ سچ بولکر دوکان نہیں چل سکتی تو نہیں چلے گی ۔

نانا : بڑی صاف بات ہے، میں نے تو سچ بولکر دوکان کو چلاکر دیکھا نہیں، پر ہاں، یہ ضرور جانتا ہوں کہ جھوٹ بولکر دوکان چلتی ہے اور چلا رہا ہوں، اور اچھی چلا رہا ہوں ۔

نانی : تو ذرا ایک بار سچائی کے ساتھ بھی دوکان چلاکر دیکھ لیجئے ۔

نانا : اب بڑھاپے میں ؟

نانی : بھلا تو لوگ بڑھاپے میں ہی سدھرتے ہیں ۔

نانا : ہاں، مگر دوکان چھوڑکر ۔

نانی : دوکان پر بیٹھکر کیوں نہیں ؟

نانا : یہ نہیں ہوسکتا ۔

نانی : تو کیا آپکی سمجھ میں سچائی اور بیوپار میں بیر ہے ؟

نانا : اکیلا میں ہی دوکاندار نہیں ہوں ۔ اس قصبے میں اور بہت سے دوکاندار ہیں ۔ جیسا اور سب کرتے ہیں ویسا ہی میں بھی کرتا ہوں ۔

बहू, [illegible], सहदेव बड़ा हो गया और अपने पिता [illegible] की दुकान पर ही काम करने लगा.

नानी : बेटा सहदेव......बेटा सहदेव......सहदेव ......अरे बेटा, तू यहां बैठा क्या कर रहा है ? मैं कब से खाना खाने के लिये बुला रही हूं.

सहदेव : हां, मां ठीक कहती हैं, मैंने सुना ही नहीं.

नानी : क्यों, क्या बात है ?

सहदेव : मां, आज दुकान पर बैठा ग्राहकों को कपड़ा दिखा रहा था. ग्राहक ने दाम पूछे, मुझे कपड़े के असली दाम मालूम थे. मैंने ग्राहक को वही बता दिये. ग्राहक से सौदा न पटा. वह चल दिया. इस पर पिता जी बहुत बिगड़े और कहने लगे कि तुम क्या खाक दुकानदारी करोगे. तब से मैं इसी सोच में पड़ा हूं कि मैंने क्या गलती की जो पिता जी इतनी बड़ी बात कह गये.

नानी : बेटा, तुमने जो किया, ठीक ही किया. परन्तु आजकल दुकानदारी का यह रिवाज है कि ग्राहक को किसी चीज का ठीक ठीक पता नहीं देते.

सहदेव : ऐसा क्यों ?

नानी : बस रिवाज है, रिवाज में क्यों कैसा ?

सहदेव : और अगर मैं यह रिवाज तोड़ दूं तो ?

नानी : तो कुछ को भला मालूम होगा, कुछ को बुरा लगेगा. पर मेरा ख्याल है कि भला मानने वाले अधिक होंगे और बुरा मानने वाले कम.

सहदेव : तब तो मैं इस रिवाज को तोड़ दूंगा.

नानी : अच्छा बेटा, चल अब खाना खा ले.

नाना : (घबराये हुए) देखा सहदेव की अम्मा, देखा ?

नानी : क्यों, क्या हो गया ?

नाना : अभी तुम्हारे लाड़ले आज ग्राहक के सामने दिल खोल कर रखने लगे, और फिर सौदा [illegible] था. ऐसा ही रहा तो चार दिन में दुकान चौपट हो जायेगी.

नानी : तो क्या सचाई इतनी बुरी चीज है ?

नाना : मैं सचाई को कब बुरा कहता हूं.

नानी : तो फिर आप क्या कह रहे हैं ?

नाना : मैं तो यह कह रहा हूं कि [illegible] ऐसा [illegible] सचाई से काम लिया जाय.

لگی جس بیٹھتا چلا' سہدیو بڑا ہوگیا اور اپنے نانا کے ہمراہ داس کی دوکان پر ہی کام کرنے لگا)

نانی : بیٹا سہدیو...بیٹا سہدیو... سہدیو... ارے بیٹا! تو یہاں بیٹھا کیا کر رہا ہے؟ میں سب سے کھانا کھانے کے لئے پکار رہی ہوں۔

سہدیو : ماں، آپ ٹھیک کہتی ہیں، میں نے سنا ہی نہیں۔

نانی : کیوں، کیا بات ہے؟

سہدیو : ماں! آج دوکان پر بیٹھا گاہکوں کو کپڑا دکھا رہا تھا۔ گاہک نے دام پوچھے، مجھے کپڑے کے اصلی دام معلوم تھے میں نے گاہک کو وہی بتا دئے۔ گاہک سے سودا نہ پٹا۔ وہ چل دیا۔ اس پر پتا جی بہت بگڑے اور کہنے لگے کہ تم کیا خاک دوکانداری کرو گے۔ تب سے میں اسی سوچ میں پڑا ہوں کہ میں نے کیا غلطی کی جو پتا جی اتنی بڑی بات کہہ گئے۔

نانی : بیٹا، تم نے جو کیا، ٹھیک ہی کیا۔ پرنتو آجکل دوکانداروں کا یہ رواج ہے کہ گاہک کو کسی چیز کا ٹھیک پتا نہیں دیتے۔

سہدیو : ایسا کیوں؟

نانی : بس رواج ہے، رواج میں کیوں کیسا؟

سہدیو : اگر میں یہ رواج توڑ دوں تو؟

نانی : تو کچھ کو بھلا معلوم ہوگا، کچھ کو برا لگے گا۔ پر میرا خیال ہے کہ بھلا ماننے والے ادھک ہونگے اور برا ماننے والے کم۔

سہدیو : تب تو میں اس رواج کو توڑ دونگا۔

نانی : اچھا بیٹا، چل اب کھانا کھالے۔

نانا : (گھبرائے ہوئے) دیکھا سہدیو کی اماں، دیکھا؟

نانی : کیوں، کیا ہوگیا؟

نانا : یہی تمہارے لاڈلے آج گاہک کے سامنے دل کھولکر رکھنے لگے، اور پھر سودا کیا پٹنا تھا۔ ایسا ہی رہا تو چار دن میں دوکان چوپٹ ہوجائیگی۔

نانی : تو کیا سچائی اتنی بری چیز ہے؟

نانا : میں سچائی کو کب برا کہتا ہوں۔

نانی : تو پھر آپ کیا کہہ رہے ہیں؟

نانا : میں تو یہ کہہ رہا ہوں کہ [illegible] ایسا [illegible] سچائی سے کام لیا جائے۔

हैं : नहीं बाबू ! एक आशीर्वाद की है बच्चे की [illegible] इसके [illegible] है !

रानी : वह कुलवंती, जिसे समय कल पहले डाकू उठा ले गए थे, जब अपने मां बाप से मिलने गई तो मां ने तो एक निगाह में पहचान लिया. उन लोगों के कोई और औलाद न थी. डाकुओं से तय हुआ कि वह बच्चे को गोद दे दें. मां भी राजी हो गई. लड़के का नाम सहदेव रखा गया और उसे स्कूल में भरती करा दिया गया.

❁ ❁ ❁

मास्टर : (क्रोध में) बताओ किस किस ने इस बाग से आम तोड़े ?

कुछ लड़के : हमने नहीं तोड़े मास्टरजी !

मास्टर : ठीक ठीक बताओ, नहीं तो अभी सब की पीठ पर कमचियां पड़ती हैं.

बाकी लड़के : हम तो बाग में गए तक नहीं मास्टरजी !

सहदेव : (कुछ सहमा हुआ) मास्टर साहब !

मास्टर : हां, कहो क्या बात है सहदेव ?

सहदेव : मैं बाग में गया था, मैंने आम तोड़े थे. यह सजा मुझे दीजिये.

मास्टर : (चकित हो कर) अच्छा बेटा ! बताओ तो और कौन कौन बाग में गया था ? किस किस ने आम तोड़े थे ?

सहदेव : इन्हीं से पूछिये मास्टर साहब !

मास्टर : (फिर क्रोध से) यह तो अब कमचियां पड़ने पर बतायेंगे. (चिल्ला कर) चलो सब इधर आओ और कतार बांध कर खड़े हो जाओ.

(एक कमची की आवाज, फिर एक कमची फिर और कमचियां...... फेड आउट)

❁ ❁ ❁

एक लड़का : क्यों बे सहदेव शर्म नहीं आती, मास्टर जी से सच्ची बात कह कर हम सब को पिटवाया.

दूसरा लड़का : और इसलिए आप साफ बच गये.

तीसरा लड़का : ऐसों से मिलना खतरनाक है.

चौथा लड़का : अच्छा बच्चू, देख लेंगे फिर कभी.

सहदेव : (चकित हो कर) क्या [illegible] में झूठ बोलते हैं ? क्या सच्चों से सब छिपाते हैं ? सच्चों की [illegible] झूठ न [illegible]. तब [illegible] चले [illegible]

ممی : [illegible]

رانی : [illegible] ماں باپ سے ملنے [illegible] پہچان لیا [illegible] سہدیو رکھا گیا اور اسے اسکول میں بھرتی کرا دیا گیا ۔

❁ ❁ ❁

ماسٹر : (غصے میں) بتاؤ کس کس نے اس باغ سے آم توڑے ہیں ؟

کچھ لڑکے : ہم نے نہیں توڑے ماسٹر صاحب !

ماسٹر : ٹھیک ٹھیک بتاؤ' نہیں تو ابھی سب کی پیٹھ پر کھپچیاں پڑتی ہیں ۔

باقی لڑکے : ہم تو باغ میں گئے تک نہیں ماسٹر صاحب !

سہدیو : (کچھ سہما ہوا) ماسٹر صاحب !

ماسٹر : ہاں' کہو کیا بات ہے سہدیو ؟

سہدیو : میں باغ میں گیا تھا' میں نے آم توڑے تھے ۔ یہ سزا مجھے دیجئے ۔

ماسٹر : (چکت ہو کر) اچھا بیٹا ! بتاؤ تو اور کون کون باغ میں گیا تھا ؟ کس کس نے آم توڑے تھے ؟

سہدیو : انہیں سے پوچھئے ماسٹر صاحب !

ماسٹر : (پھر غصے سے) یہ تو اب کھپچیاں پڑنے پر بتائیں گے ۔ (چلا کر) چلو سب ادھر آؤ اور قطار باندھ کر کھڑے ہو جاؤ ۔

(ایک کھپچی کی آواز پھر ایک کھپچی پھر اور کھپچیاں.....فیڈ آؤٹ)

❁ ❁ ❁

ایک لڑکا : [illegible] سہدیو شرم نہیں آتی' ماسٹر جی سے سچی بات کہکر ہم سب کو پٹوایا ۔

دوسرا لڑکا : [illegible] آپ صاف بچ گئے ۔

تیسرا لڑکا : [illegible] خطرناک ہے ۔

چوتھا لڑکا : [illegible] دیکھ لیں گے پھر کبھی ۔

سہدیو : [illegible]

[illegible] है. (आहिस्ता से) मैं एक न एक दिन
मैं ज़रूर इसके मां बाप से मिलने जाऊंगी.
(कुछ सोच कर, पर वह क्या पहचानेंगे
मुझे!

मैं : किस मुहल्ले में रहते हैं वह लोग? क्या नाम है? मुझे बताइये, मैं उनको ख़बर दे दूंगा.

मां : (स्त्री सुलभ चंचलता से) आपको नहीं बताऊंगी. देखूंगी सत्रह बरस के बाद पहचानते हैं या नहीं.

मैं : (एकाएक) तो शायद नहीं पहचानेंगे. मगर थोड़ी देर में ज़रूर पहचान जायेंगे.

मां : देखूंगी. (सहसा सामने देख कर) लो वह इस लड़के के पिता आ रहे हैं.

पिता : कहो बेटा, यह तुम्हारे गाल लाल क्यों हैं?

लड़का : लाला मुंशाले ने मारा था.

पिता : क्यों?

लड़का : कहता था तूने दूकानदार के तीन पैसे उठाए हैं.

पिता : फिर?

लड़का : मैंने कह दिया मैंने नहीं उठाए, बस फिर उसने ख़ूब मारा.

पिता : तुम ने पैसे उठाए थे.

लड़का : हां उठाए थे. यह रहे तीन पैसे.

राही : मैं दंग रह गया, मेरी समझ में कुछ न आया, मेरे चेहरे को शायद बच्चे की मां ने भांप लिया.

मां : इस की सच्चाई पर आप को अचरज होता है क्या?

पिता : यह क़स्बे वाले मामूली बातों को भी बड़ी गहरी निगाह से देखते हैं.

मैं : सचमुच यह बात तो हम क़स्बे वालों की समझ से परे है. इस लड़के ने इतनी मार खा कर भी जिस बात को नहीं क़बूला उसे बाबू के पूछने पर झट बता दिया. इसका क्या भेद है?

मां : इसी से पूछिये.

मैं : इस बच्चे से!

मां : हां, इस बच्चे से.

मैं : क्यों बेटा, वहां तो तुम इतना पिटने पर न क़बूले पर बाबा के पूछने पर झट सच सच बता दी, यह क्या!

लड़का : झूठों से कोई छिपाता है! सच्चों से कोई झूठ बोलता है!

آیا ہے۔ (آہستہ سے) میں ایک نہ ایک دن ضرور اس کے ماں باپ سے ملنے جاؤں گی۔ (کچھ سوچ کر) پر وہ کیا پہچانیں گے مجھے!

میں : کس محلے میں رہتے ہیں وہ لوگ؟ کیا نام ہے؟ مجھے بتائیے' میں اُن کو خبر دے دونگا۔

ماں : (استری سلبھ چنچلتا سے) آپ کو نہیں بتاؤں گی۔ دیکھونگی سترہ برس کے بعد پہچانتے ہیں یا نہیں۔

میں : (یکایک) تو شاید نہیں پہچانینگے۔ مگر تھوڑی دیر میں ضرور پہچان جائینگے۔

ماں : دیکھونگی۔ (سہسا سامنے دیکھکر) لو وہ اس لڑکے کے پتا آ رہے ہیں۔

پتا : کہو بیٹا' یہ تمہارے گال لال کیوں ہیں؟

لڑکا : لال منشا سے نے مارا تھا۔

پتا : کیوں؟

لڑکا : کہتا تھا تونے دوکاندار کے تین پیسے اُٹھائے ہیں۔

پتا : پھر۔

لڑکا : میں نے کہ دیا میں نے نہیں اُٹھائے' بس پھر اس نے خوب مارا۔

پتا : تم نے پیسے اُٹھائے تھے؟

لڑکا : ہاں اُٹھائے تھے۔ یہ رہے تین پیسے۔

راہی : میں دنگ رہ گیا' میری سمجھ میں کچھ نہ آیا' میرے چہرے کو شاید بچے کی ماں نے بھانپ لیا۔

ماں : اس کی سچائی پر آپ کو اچرج ہوتا ہے کیا؟

پتا : یہ قصبے والے معمولی باتوں کو بھی بڑی گہری نگاہ سے دیکھتے ہیں۔

میں : سچ مچ یہ بات تو ہم قصبے والوں کی سمجھ سے پرے ہے۔ اس لڑکے نے اتنی مار کھا کر بھی جس بات کو نہیں قبولا اسے آپ کے پوچھنے پر جھٹ بتا دیا۔ اس کا کیا بھید ہے؟

ماں : اسی سے پوچھئے۔

میں : اس بچے سے!

ماں : ہاں' اس بچے سے۔

میں : کیوں بیٹا' وہاں تو تم اتنا پٹنے پر نہ قبولے پر بابا کے پوچھنے پر جھٹ سچ سچ بتا دی' یہ کیا!

لڑکا : جھوٹوں سے کوئی چھپاتا ہے! سچوں سے کوئی جھوٹ بولتا ہے!

सिपाही : (मां को धकियाते हुए अपर बच्ची से) इसने हलवाई के तीन पैसे चुराए हैं और हलवाई कहता है इसके पास हैं. और मैं भी समझता हूं कि इसके पास हैं, मगर यह कबूलता ही नहीं !

हलवाई : (मां को देख कर तरस आ जाता है) जाने दीजिये दरोगा जी, तीन पैसे के बदले तीन आने की तो इस पर मार पड़ चुकी है. छोड़िये, मैंने छोड़े अपने पैसे.

सिपाही : ये सांप के बच्चे हैं छोड़ना कैसा !

हलवाई : (उसी तरह) चलिये, अब तो रहम खाइये इस पर ! लो, मैं ही कहे देता हूं, नहीं लिये इसने मेरे पैसे.

मां : (प्यार से) आ बेटा, चल.

राबी : मैंने लड़के की मां को जो देखा तो मन में कुछ शंका पैदा हुई. उनके पीछे पीछे चल दिया और कुछ दूर जा कर उनसे मिल गया.

❀ ❀ ❀

मैं : इन पुलीस वालों के दिल तो होता ही नहीं.

मां : हां जी, बिल्कुल नहीं होता. देखो न, छोटे से बच्चे को कितना मारा है. दोनों गालों पर खून झलक रहा है.

मैं : बड़े अफ़सोस की बात है. हां, आप लोग हाबूड़े हैं न ! आपका पड़ाव कहां है ?

मां : यहीं सोमवारी के पास, डाक बंगले से लगा हुआ.

मैं : 'सोमवारी'. यह शब्द तो हाबूड़े नहीं बोलते. माफ़ करिये, एक बात पूछ सकता हूं ?

मां : हूं हूं.

मैं : आपकी बोली और लहजा हाबूड़ों से नहीं मिलती.

मां : ठीक है, क्योंकि न मेरी मां हाबूड़ी है, न मेरा बाप !

मैं : क्या मतलब ?

मां : जब मैं दस ग्यारह बरस की थी, अपने मां बाप के साथ रामघाट गंगा नहाने जा रही थी. रास्ते में हाबूड़े मुझे उठा ले गए. अब मैं उन्हीं के साथ हूं. मैं असल में इसी क़स्बे की रहने वाली हूं. आज आपकी बात-चीत से मेरा जी उमड़

سپاہی : (ماں کو دھکیاتے ہوئے اُسکی بچی سے) اس نے حلوائی کے تین پیسے اُٹھائے ہیں اور حلوائی کہتا ہے اس کے پاس ہیں۔ اور میں بھی سمجھتا ہوں کہ اس کے پاس ہیں، مگر یہ لوٹتا ہی نہیں !

حلوائی : (ماں کو دیکھ کر ترس کھا جاتا ہے) جانے دیجئے، دروغہ جی، تین پیسے کے بدلے تین آنے کی تو اس پر مار پڑ چکی ہے۔ چھوڑئے میں نے چھوڑے اپنے پیسے۔

سپاہی : یہ سانپ کے بچے ہیں چھوڑنا کیسا۔

حلوائی : (اسی طرح) چلئے، اب تو رحم کھا جائے اس پر ! لو، میں ہی کہے دیتا ہوں، نہیں لئے اس نے میرے پیسے۔

ماں : (پیار سے) آ بیٹا، چل۔

راوی : میں نے لڑکے کی ماں کو جو دیکھا تو من میں کچھ شنکا پیدا ہوئی—ان کے پیچھے پیچھے چل دیا اور کچھ دور جا کر ان سے مل گیا۔

❀ ❀ ❀

میں : ان پولیس والوں کے دل تو ہوتا ہی نہیں۔

ماں : ہاں جی، بالکل نہیں ہوتا۔ دیکھو نہ، چھوٹے سے بچے کو کتنا مارا ہے۔ دونوں گالوں پر خون جھلک رہا ہے۔

میں : بڑے افسوس کی بات ہے۔ ہاں، آپ لوگ ہابوڑے ہیں نہ ! آپ کا پڑاؤ کہاں ہے ؟

ماں : یہیں، سوموارى کے پاس، ڈاک بنگلے سے لگا ہوا۔

میں : 'سوموارى'۔ یہ شبد تو ہابوڑے نہیں بولتے۔ معاف کرئے، ایک بات پوچھ سکتا ہوں۔

ماں : ہوں ہوں۔

میں : آپ کی بولی اور لہجہ ہابوڑوں سے نہیں ملتی۔

ماں : ٹھیک ہے، کیونکہ نہ میری ماں ہابوڑی ہے، نہ میرا باپ۔

میں : کیا مطلب؟

ماں : جب میں دس گیارہ برس کی تھی اپنے ماں باپ کے ساتھ رام گھاٹ گنگا نہانے جا رہی تھی۔ راستے میں ہابوڑے مجھے اُٹھا لے گئے۔ اب میں انہیں کے ساتھ ہوں۔ میں اسی قصبہ کی رہنے والی ہوں۔ آج آپ کی بات چیت سے میرا جی اُمڈ

वाचक : आज सहदेव हाबूड़ा की दुकान शहर में सबसे मशहूर मानी जाती है, उसकी दुकान पर ग्राहकों की इतनी भीड़ रहती है कि पांच पांच, सात सात नौकर उस भीड़ को नहीं संभाल सकते. परंतु यह बात हमेशा से न थी. दुकान की साख तभी से बनी है जब से लाला हरनाम दास ने दुकान सहदेव को सौंप कर खुद विश्राम ग्रहण किया. यह सहदेव हाबूड़ा कौन था, कहां से आया......यह भी एक बड़ी दिलचस्प कहानी है. कई साल पहले की बात है, मैं बाजार में चला जा रहा था कि एक जगह कुछ झगड़ा होते देख रुक गया.

सिपाही : (गरज कर) तुमने इस हलवाई के पैसे उठाए ?

लड़का : (मज़बूती से) नहीं दरोगा जी.

सिपाही : (धमकी से) ठीक बोलो, नहीं पड़ती है थप्पड़.

लड़का : (उसी तरह) नहीं उठाए.

सिपाही : (तेजी से) नहीं बताओगे ?

लड़का : मैंने नहीं उठाये.

सिपाही : (लड़के को पीटता हुआ) अच्छा, नहीं उठाए तो ले (थप्पड़) और ले (थप्पड़) बता पैसे लिये कि नहीं (थप्पड़) झूठ बोला तो ज़मीन में गाड़ दूंगा.

लड़का : (कुछ रुआंसा हो कर मगर उसी दृढ़ता से) मैंने नहीं लिये, नहीं लिये, नहीं लिये !

सिपाही : (हार कर) बड़ा पक्का है. बांधो तो इसके दोनों हाथ और थाने ले चलो.

(भीड़ का कुछ शोर गुल, उसमें से उभरती हुई लड़के की मां की आवाज़.)

[illegible]

راوی : آج سہدیو ہابوڑا کی دوکان شہر میں سب سے بڑھ جانتا ہے، اس کی دوکان پر گاہکوں کی اتنی بھیڑ رہتی ہے کہ پانچ پانچ، سات سات، نوکر اس بھیڑ کو نہیں سنبھال سکتے. پرنتو یہ بات ہمیشہ سے نہ تھی. دوکان کی ساکھ تبھی سے بنی ہے جب سے لالہ ہرنام داس نے دوکان سہدیو کو سونپ کر خود وشرام گرہن کیا— یہ سہدیو ہابوڑا کون تھا، کہاں سے آیا......یہ بھی ایک بڑی دلچسپ کہانی ہے. کئی سال پہلے کی بات ہے، میں بازار میں چلا جا رہا تھا کہ ایک جگہ کچھ جھگڑا ہوتے دیکھ رک گیا.

سپاہی : (گرج کر) تم نے اس حلوائی کے پیسے اٹھائے ؟

لڑکا : (مضبوطی سے) نہیں داروغہ جی.

سپاہی : (دھمکی سے) ٹھیک بولو، نہیں پڑتی ہے چپت.

لڑکا : (اسی طرح) نہیں اٹھائے.

سپاہی : (تیزی سے) نہیں بتاؤ گے ؟

لڑکا : میں نے نہیں اٹھائے.

سپاہی : (لڑکے کو پیٹتا ہوا) اچھا، نہیں اٹھائے تو لے (تھپڑ) اور لے (تھپڑ) بتا پیسے لئے کہ نہیں (تھپڑ) جھوٹ بولا تو زمین میں گاڑ دوں گا.

لڑکا : (کچھ روانسا ہو کر مگر اسی دردھتا سے) میں نے نہیں لئے، نہیں لئے، نہیں لئے !

سپاہی : (ہار کر) بڑا پکا ہے. باندھو تو اس کے دونوں ہاتھ اور لے چلو.

(بھیڑ کا کچھ شور غل، اس میں سے ابھرتی ہوئی لڑکے کی ماں کی آواز.)

ماں : (سہما [illegible] چھوڑے بیٹا) ارے چھوڑ دو اسے کہیں میرے بچے کو بے قصور مارتے ہو.

سپاہی : یہ تمہارا بچہ ہے ؟

ماں : ہاں !

मुल्क में भी बहुत बड़ी पैदा करनेकी क्षमता मानी जाती है. इसलिये पीछे कितनी ही बड़ी मिसाल क्यों न हो मुझे नहीं लगता कि इससे कोई फायदा हो सकेगा क्योंकि वह एक छोर पर है और हम दूसरे पर. इस छोटे से लेख में उन सब तरीक़ों को नहीं बताया जा सकता कि जिनका इस्तेमाल करके अमरीका वालों ने अपने देश को बनाया है. किस तरह से उन्होंने जंगल जलाए हैं और सड़कें बनाई हैं, कम समय में खेती उगाने के खेती के तरीके इस्तेमाल में लाए गए और बाद में उन्हें जगह जगह चरागाहों के लिये भटकना पड़ा. यह हमारे लिये बिलकुल ठीक नहीं कि हम लोग ऐसे लोगों को अपना पथप्रदर्शक बनाएं और सफलता की आशा रखें. इन विकास योजनाओं में अमरीकी सलाह लेना हमारी सबसे बड़ी भूल होगी. इस तरह हमें जो भी तजुरबे हुए हैं वह इस राय को और भी पक्का करते हैं. हिन्दुस्तान अपने दिमाग से सोचना जितनी जल्दी शुरू करेगा और अपने तरीक़ों को अपनाएगा उतनी ही जल्दी उसका सही मानों में विकास होगा और वह दुनिया को अमनचैन का संदेश दे सकेगा.

مالک ہے جس میں بہت بڑی پیدا کرنے کی صلاحیت سمجھی جاتی ہے۔ اس کے پیچھے کتنی ہی بڑی مثال کیوں نہ ہو مجھے نہیں لگتا کہ اس سے کوئی فائدہ ہو سکے گا کیونکہ وہ ایک چھور پر ہے اور ہم دوسرے پر۔ اس چھوٹے سے لیکھ میں ان سب طریقوں کو نہیں بتایا جا سکتا کہ جن کا استعمال کرکے امریکہ والوں نے اپنے دیش کو بنایا ہے۔ کس طرح سے انہوں نے جنگل جلائے ہیں اور سڑکیں بنائی ہیں، کم سمے میں کھیتی اگانے کے کھیتی کے طریقے استعمال میں لائے گئے اور بعد میں انہیں جگہ جگہ چراگاہوں کے لئے بھٹکنا پڑا۔ یہ ہمارے لئے بالکل ٹھیک نہیں کہ ہم لوگ ایسے لوگوں کو اپنا رہنما بنائیں اور سپھلتا کی آشا رکھیں۔ ان وکاس یوجناؤں میں امریکی صلاح لینا ہماری سب سے بڑی بھول ہوگی۔ اس طرح ہمیں جو بھی تجربے ہوئے ہیں وہ اس رائے کو اور بھی پکا کرتے ہیں۔ ہندوستان اپنے دماغ سے سوچنا جتنی جلدی شروع کرے گا اور اپنے طریقوں کو اپنائے گا اتنی ہی جلدی اس کا صحیح معنوں میں وکاس ہوگا اور وہ دنیا کو امن چین کا سندیش دے سکے گا۔

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की अर्थ व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उस में बिना खाने और कपड़े के कोई भी रहने न पाए. दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुज़र बसर के लायक काफी काम मिलना ही चाहिये. यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जब कि जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा.

—महात्मा गांधी

میری رائے میں ہندوستان کی اور سارے سنسار کی ارتھ ویوستھا ایسی ہونی چاہئے کہ اس میں بنا کھانے اور کپڑے کے کوئی بھی رہنے نہ پائے۔ دوسرے شبدوں میں ہر ایک کو اپنی گذر بسر کے لائق کافی کام ملنا ہی چاہئے۔ یہ آدرش تبھی سدھ ہوگا جبکہ جیون کی بنیادی ضرورتوں کو پورا کرنے کے سادھنوں پر جنتا کا ادھیکار رہے گا۔

—مہاتما گاندھی

बिल्कुल नहीं है. उसके वातावरण के हिसाब से अमरीका हिन्दुस्तान के वातावरण से बिल्कुल मुख्तलिफ़ है. इसलिये वहां की तहज़ीब, रीत रिवाज और तौर तरीके, रहन-सहन कुछ ऐसे बन गए हैं जो हमारी ज़रूरतों को पूरी नहीं करते और उनमें रुकावट ही पैदा करते हैं. हमें जबकि किफ़ायतशिआरी की ज़रूरत है अमरीका फ़ज़ूलख़र्ची पर ज़ोर देता है. हमें जबकि आपस में मेल जोल बढ़ाने वाले तरीके चाहिये अमरीका पैवन्दशाही है. अमरीका खेती बाड़ी को एक उद्योग मानता है और उसके ज़रिये धरती के धन को लूटना चाहता है. वह मशीनी ट्रैक्टर इस्तेमाल करे, बनावटी रसायनिक खाद काम में लावे वगैरह, क्योंकि उन्हें तुरत नफ़ा कमाना है. उनके लिये खेती बाड़ी भी एक धन्धा है जिसका ख़ास मक़सद धन कमाना है. उसके लिये उन्हें बाहरी मंडियों की ज़रूरत है जहां से विदेशी तिजारत के नाम से मनमानी लूट की जा सके. ऐसे लोगों को अपने देश में बुला कर उनके हाथ में इस काम की बाग डोर सौंप देना, जिससे वह वाक़िफ़ ही नहीं हैं, न उनकी क़ाबलियत के लिये ठीक है और न हमारे हक़ में ठीक है. उनके दिमाग़ ग़रीबों की बातें सोच ही नहीं सकते. फ्रांस की रानी एन्टोनिटी की तरह वह लोग उन लोगों को रसगुल्ले खाने के लिये कहेंगे जिन्हें रोटी भी मयस्सर नहीं होती. यहां तक कि डाक्टर ए. ई. मोरगन अमरीका मशहूर तजुरबेकार बुनियादी कार्यकर्ता जो कि अमरीकी विशाल योजना (टी. वी. ए.) का चेयरमैन है हमें यह सलाह देता है कि एक गांव से दूसरे गांव में जाने के लिये बजाय इसके कि हम बैलगाड़ियों से जायें हम हवाई जहाज़ इस्तेमाल करें. हम हिन्दुस्तान और अमरीका की तहज़ीब को एक साथ नहीं ला सकते जब तक कि किसी एक को चोट न पहुंचायें. अमरीका को अपना सीखदाता बनाने का मतलब यही होगा कि आख़िरकार हम लोग नाअहल रहेंगे. किसी मालदार के सपूत के साथ ग़रीब के नौनिहाल को साथ रख कर हम दोनों को बरबाद कर देंगे. हिन्दुस्तान को उन तरीक़ों की ज़रूरत है जिसमें संयम हो, त्याग हो, सादगी हो जब कि अमरीकी तरीक़े [illegible], फ़िज़ूलख़र्च, ज़रूरतों को बढ़ाने वाले और ख़ुदग़र्ज़ी से भरे हैं. इन अमरीकी योजनाओं में यह बुराइयां बहुत साफ़ दिखाई देती हैं.

अमरीकी क़दम

इस तरह के अमरीकी सीखदाता बड़ी शान से अमीराना तौर पर रहते हैं और अपनी सारी ज़रूरत की चीज़ें, यहां तक कि अपना खाना तक, अमरीका से मंगवाते हैं. वह लोग एयर कन्डीशन्ड घरों (Air conditioned) में रहते हैं जो कि अमरीका जैसे देश [illegible]

واقف نہیں ہیں. ان واتاورن کے لحاظ سے امریکہ ہندستان کے واتاورن سے بالکل مختلف ہے. اس لئے وہاں کی تہذیب' رسم رواج' اور طور طریقے' رہن سہن کچھ ایسے بن گئے ہیں جو ہماری ضرورتوں کی پورتی نہیں کرتے اور ان میں رکاوٹ ہی پیدا کرتے ہیں. ہمیں جبکہ کفایت شعاری کی ضرورت ہے امریکہ فضول خرچی پر زور دیتا ہے. ہمیں جبکہ آپس میں میل جول کو بڑھانے والے طریقے چاہئے امریکہ پیوند شاہی ہے. امریکہ کھیتی باڑی کو ایک اُدیوگ مانتا ہے اور اس کے ذریعہ دھرتی کے دھن کو لوٹنا چاہتا ہے. وہ مشینی ٹریکٹر استعمال کرے' بناوٹی رسائنک کھاد کام میں لوے وغیرہ' کیونکہ انہیں ترت نفع کمانا ہے. ان کے لئے کھیتی باڑی بھی ایک دھندا ہے جس کا خاص مقصد دھن کمانا ہے. اس کے لئے انہیں باہری منڈیوں کی ضرورت ہے جہاں سے ودیشی تجارت کے نام سے من مانی لوٹ کی جاسکے. ایسے لوگوں کو اپنے دیش میں بلا کر ان کے ہاتھ میں اس کام کی باگ ڈور سونپ دینا جس سے وہ واقف ہی نہیں ہیں نہ ان کی قابلیت کے لئے ٹھیک ہے اور نہ ہمارے حق میں ٹھیک ہے. ان کے دماغ غریبوں کی باتیں سوچ ہی نہیں سکتے. فرانس کی رانی اینٹونٹی کی طرح وہ لوگ ان لوگوں کو رس گلے کھانے کے لئے کہیں گے جنہیں روٹی بھی میسر نہیں ہوتی. یہاں تک کہ ڈاکٹر اے. ای. مورگن امریکہ مشہور تجربہ کار بنیادی کاریہ کرتا جو کہ امریکی وشال یوجنا (ٹی. وی. اے.) کا چیرمین ہے ہمیں یہ صلاح دیتا ہے کہ ایک گاؤں سے دوسرے گاؤں میں جانے کے لئے بجائے اس کے کہ ہم بیل گاڑیوں سے جائیں ہم ہوائی جہاز استعمال کریں. ہم ہندستان اور امریکہ کی تہذیب کو ایک ساتھ نہیں لا سکتے جب تک کہ کسی ایک کو چوٹ نہ پہنچائیں. امریکہ کو اپنا سیکھ داتا بنانے کا مطلب یہی ہوگا کہ آخرکار ہم لوگ نااہل رہیں گے. کسی مالدار کے سپوت کے ساتھ غریب کے نونہال کو ساتھ رکھ کر ہم دونوں کو برباد کر دیں گے. ہندستان کو ان طریقوں کی ضرورت ہے جس میں سنیم ہو' تیاگ ہو' سادگی ہو جب کہ امریکی طریقے [illegible]' فضول خرچ' ضرورتوں کو بڑھانے والے اور خودغرضی سے بھرے ہیں. ان امریکی یوجناؤں میں یہ برائیاں بہت صاف دکھائی دیتی ہیں.

امریکی قدم

اس طرح کے امریکی سیکھ داتا بڑی شان سے امیرانہ طور پر رہتے ہیں اور اپنی ساری ضرورت کی چیزیں' یہاں تک کہ اپنا کھانا تک' امریکہ سے منگواتے ہیں. وہ لوگ ائیر کنڈیشنڈ گھروں (Air-conditioned) میں رہتے ہیں جو کہ امریکہ جیسے ملک [illegible]

हर काम हम करें मैं मिला जाय और हर काम, में जो भी कोशिश हम करें उससे लाभ हो.

हमारी संस्कृति और तहजीब और रीत यही रही है. हमारी कुदरत की जरूरत यह है कि सिंचाई के लिए छोटे तालाब और कुएं हों. पानी को रोकने, घर घर पहुंचाने और आवश्यकता के लिए छोटी छोटी नहरें हों क्योंकि हमारे विशाल देश में यह संभव नहीं है कि दूर आने जाने के लिए पेट्रोल की ताकत से, जोकि हमारे देश की पैदावार नहीं है काम लिया जाय. इसीलिए हिन्दुस्तान ने अपने बीते हुए जमाने में इस बात पर जोर दिया है कि वह किसी का मोहताज न रहे और अपने बूते पर सुख चैन की जिन्दगी की राहें कुबूल करे. जनता के पालन पोषण के लिए हिन्दुस्तान में खेती बाड़ी होती रही और इसका विकास जीवन मार्ग के तौर पर नहीं तो पेशे के तौर पर तो हुआ ही है.

हमारे तरीके

हमारा तरीका यह रहा है कि धरती, ढोर, और मनुष्य के आपस का मेल, प्रेम इस खूबी से चलता रहे कि हमारी जरूरतें उन्हीं तरीकों और कामों से पूरी हों जो इन तीनों के मिलाते जुलाते हों और इन्हीं के जरिए जरूरत की चीजें बनाएं. मिसाल के तौर पर धरती से जब अनाज पैदावार से होता है तो इस अनाज को हम खाते हैं, ढोरों को चारा मिलता है और फिर वही खाद के रूप में धरती की ओर आता है और यह चक्कर चलता रहता है. अगर हम कोई आम रास्ता बनाते हैं तो इसके साथ कुआं बावली भी बनाते हैं ताकि रास्ते की जरूरतें पूरी हों. इसी तरह हमारी सब योजनाओं में आपसी एकता है. इसकी बजाय जब कच्चे तेल (Crude oil) से चलाने वाले ट्रेक्टर काम में लाते हैं तो इस तरह की आपसी एकता नहीं रहती. खारिज गैस बेकार जाती है और हवा को खराब करती है. ट्रेक्टर धरती और आदमी की दुनिया का एक अंग नहीं है. उसकी अलहदगी साफ जाहिर होती है. वह सिर्फ एक पैबंद है पैबंद. इसी तरह धरम की भावना भी हमें पशु, वनस्पति और धरती से एक करती है. इस तरह हमारे रोजमर्रा के कामों में नैतिकता आती है. बिना ऐसे सम्बन्ध के नैतिकता से अलग हो कर और भौतिकवाद को ही आधार बना कर चलने वाले अमरीका में हर आदमी अपने दूसरे साथी को तंग करता रहता है. इसलिये हमारी विकास योजनाओं को हमारी पुरानी रीत पर चलना होगा और यह जरूरी भी है.

हमारे नीतिकार

बदकिस्मती से हमने ऐसे लोगों को अपना नीतिकार बनाया है जो हमारी अपनी बनाई हुई जरूरतों से बिलकुल

ہر کام کو سمجھ میں لیا جائے اور ہر کام میں جو بھی کوشش ہم کریں اس سے لابھ ہو۔

ہماری سنسکرتی اور تہذیب اور ریت یہی رہی ہے۔ ہماری قدرت کی ضرورت یہ ہے کہ سینچائی کے لئے چھوٹے تالاب اور کنوئیں ہوں۔ پانی کو روکنے، گھر گھر پہنچانے اور آوشیکتا کے لئے چھوٹی چھوٹی نہریں ہوں کیونکہ ہمارے وشال دیش میں یہ سمبھو نہیں ہے کہ دور آنے جانے کے لئے پٹرول کی طاقت سے، جو کہ ہمارے دیش کی پیداوار نہیں ہے کام لیا جائے۔ اس لئے ہندستان نے اپنے بیتے ہوئے زمانے میں اس بات پر زور دیا ہے کہ وہ کسی کا محتاج نہ رہے اور اپنے بوتے پر سکھ چین کی زندگی کی راہیں قبول کرے۔ جنتا کے پالن پوشن کے لئے ہندستان میں کھیتی باڑی ہوتی رہی اور اس کا وکاس جیون مارگ کے طور پر نہیں تو پیشے کے طور پر تو ہوا ہی ہے۔

ہمارے طریقے

ہمارا طریقہ یہ رہا ہے کہ دھرتی، ڈھور اور منش میں آپس کا میل اس خوبی سے چلتا رہا ہے کہ ہماری ضرورتیں انہیں طریقوں اور کاموں سے پوری ہوں جو ان تینوں سے ملتے جلتے ہوں اور انہیں کے ذریعے ضرورت کی چیزیں بنائیں۔ مثال کے طور پر دھرتی سے جب اناج پیداوار سے ہوتا ہے تو اس اناج کو ہم کھاتے ہیں، ڈھوروں کو چارا ملتا ہے اور پھر وہی کھاد کے روپ میں دھرتی کو لوٹ جاتا ہے اور یہ چکر چلتا رہتا ہے۔ اگر ہم کوئی عام راستہ بناتے ہیں تو اس کے ساتھ کنواں باؤلی بھی بناتے ہیں تاکہ راستے کی ضرورتیں پوری ہوں۔ اسی طرح ہماری سب یوجناؤں میں آپسی ایکتا ہے۔ اس کی بجائے جب کچے تیل (crude oil) سے چلنے والے ٹریکٹر کام میں لاتے ہیں تو اس طرح کی آپسی ایکتا نہیں رہتی۔ خارج گیس بیکار جاتی ہے اور ہوا کو خراب کرتی ہے۔ ٹریکٹر دھرتی اور آدمی کی دنیا کا ایک انگ نہیں ہے۔ اس کی علیحدگی صاف ظاہر ہوتی ہے۔ یہ صرف ایک پیوند ہے پیوند۔ اسی طرح دھرم کی بھاؤنا بھی ہمیں پشو، بنسپتی اور دھرتی سے ایک کرتی ہے۔ اس طرح ہمارے روزمرہ کے کاموں میں نیتکتا آتی ہے۔ بنا ایسے سمبندھ کے نیتکتا سے الگ ہو کر اور بھوتک واد کو ہی آدھار بنا کر چلنے والے امریکہ میں ہر آدمی اپنے دوسرے ساتھی کو تنگ کرتا رہتا ہے۔ اس لئے ہماری وکاس یوجناؤں کو ہماری پرانی ریت پر چلنا ہوگا اور یہ ضروری بھی ہے۔

[illegible]

بدقسمتی سے ہم نے ایسے لوگوں کو اپنا [illegible] بنایا ہے جو ہماری اپنی بنائی ہوئی ضرورتوں سے بالکل

हमारे सीखदाता

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

साल भर से ज़ियादा हो गया जब से नई विकास योजनाएं और सामूहिक योजनाएं (Community Projects , चल रही हैं. बार बार लोगों ने इनके बारे में मेरी राय जाननी चाही है. मेरे दोस्त जानते हैं कि मैं शुरू से ही इन योजनाओं का राजकाजी और माली कारनों से विरोधी हूं. अब मैं अपने अनुभव को लोगों के सामने रखना चाहता हूं.

विकास क्या है ?

हम इन्हें "विकास योजनाएं" कहते हैं जब कि हम यह भी नहीं जानते कि विकास किसे कहते हैं. लिपस्टिक लगा लेने से औरतों की ऊपरी सुन्दरता जो निखरती है क्या वह औरतों का विकास है ? क्या तम्बाकू पीने की आदत मर्द का विकास है ? अगर हम विकास का मतलब यही बाहरी और ऊपरी दिखावा ही समझते हैं तब तो इन मानों में ये योजनाएं ज़रूर विकास की योजनाएं हैं. लेकिन हम में से कुछ लोग विकास का मतलब बहुत ही गहरा लेते हैं और जिस की मंज़िल कभी ख़तम नहीं होती. आज की दुनिया की हालत देखते हुए विकास की योजना ऐसी होनी चाहिए जो दुनिया के सुख चैन को बढ़ाए. गांधी जी के रचनात्मक प्रोग्राम इसी नज़र से बनाए गए थे कि एक अहिंसात्मक समाज बन सके जिस में समाज के सब प्राणी सुख शान्ति से रह सकें. लेकिन आजकल के ज़माने में ज़िन्दगी बिताना और ख़ास कर के दिल्ली जैसे शहर में बक़ौल जवाहरलाल जी के जंगली ज़िन्दगी है. इसका मतलब यह है कि हम लोग बिना सोचे समझे, बिना आपसी सहयोग के बेकार की ज़िन्दगी बिता रहे हैं. और यही हाल हमारी आज की योजनाओं की है.

हमारी ज़रूरतें

साइंसी होने का मतलब यह है कि हमारी जनता की ज़रूरतों और हमारे साधनों का एक सम्बन्ध होना चाहिये और उन रुकावटों को भी ध्यान में रखना चाहिये जो प्रकृति ने हमारे ऊपर डाल रखी हैं. अगर हम चाहते हैं कि हमारा विकास उन परिस्थितियों के अनुसार हो जो भारत में मौजूद हैं तो ज़रूरी है कि हम अपनी योजनाओं के हर पहलू पर विचार करें. हमारी विकास योजनाओं को देश की जनता की माली के मुआफ़िक़ बनाना होगा. आज की जो हालत है उस में हिन्दुस्तान की ज़रूरत इस बात की है कि

ہمارے سیکھ داتا

(ڈاکٹر جے. سی. کمارپا)

سال بھر سے زیادہ ہو گیا جب سے نئی وکاس یوجنائیں اور ساموہک یوجنائیں (Community Projects) چل رہی ہیں. بار بار لوگوں نے اس کے بارے میں میری رائے جاننی چاہی ہے. میرے دوست جانتے ہیں کہ میں شروع سے ہی ان یوجناؤں کا راج کاجی اور مالی کارنوں سے ورودھی ہوں. اب میں اپنے انوبھو کو لوگوں کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں.

وکاس کیا ہے ؟

ہم انہیں "وکاس یوجنائیں" کہتے ہیں جب کہ ہم یہ بھی نہیں جانتے کہ وکاس کسے کہتے ہیں. لپ اسٹک لگا لینے سے عورتوں کی اوپری سندرتا جو نکھرتی ہے کیا وہ عورتوں کا وکاس ہے ؟ کیا تمباکو پینے کی عادت مرد کا وکاس ہے ؟ اگر ہم وکاس کا مطلب یہی باہری اور اوپری دکھاوا ہی سمجھتے ہیں تب تو ان معنوں میں یہ یوجنائیں ضرور وکاس کی یوجنائیں ہیں. لیکن ہم میں سے کچھ لوگ وکاس مطلب بہت ہی گہرا لیتے ہیں اور جس کی منزل کبھی ختم نہیں ہوتی. آج کی دنیا کی حالت دیکھتے ہوئے وکاس کی یوجنا ایسی ہونی چاہئے جو دنیا کے سکھ چین کو بڑھائے. گاندھی جی کے رچناتمک پروگرام اسی نظر سے بنائے گئے تھے کہ ایک اہنساتمک سماج بن سکے جس میں سماج کے سب پرانی سکھ شانتی سے رہ سکیں. لیکن آجکل کے زمانے میں زندگی بتانا اور خاصکر کے دلی ایسے شہر میں بقول جواہر لال جی کے دلی کی زندگی جنگل کی زندگی ہے. اس کا مطلب یہ ہے کہ ہم لوگ بنا سوچے سمجھے بنا آپسی سہیوگ کے بیکار کی زندگی بتا رہے ہیں اور یہی حال ہماری آج کی یوجناؤں کا ہے.

ہماری ضرورتیں

سائنسی ہونے کا مطلب یہ ہے کہ ہماری جنتا کی ضرورتوں اور ہمارے سادھنوں کا ایک سمبندھ ہونا چاہئے اور ان رکاوٹوں کو بھی دھیان میں رکھنا چاہئے جو پرکرتی نے ہمارے اوپر ڈال رکھی ہیں. اگر ہم چاہتے ہیں کہ ہمارا وکاس ان پرستھتیوں کے انوسار ہو جو بھارت میں موجود ہیں تو ضروری ہے کہ ہم اپنی یوجناؤں کے ہر پہلو پر وچار کریں. ہماری وکاس یوجناؤں کو دیش کی جنتا کی مالی کے موافق بنانا ہوگا. آج کی جو حالت ہے اس میں ہندستان کو ضرورت اس بات کی ہے کہ

"यही ठीक है."

वर्दियां बदलने के बाद ह्वीको ने कहा "जाओ चिची, तुम उत्तरी कोरिया में जा कर कहो कि हम आपस में नहीं लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं. हम सब एक हैं, हम एक हैं. और यही प्रचार मैं दक्खिनी कोरिया में जा कर करूंगा."

दोनों बड़े यत्न से खन्दक से निकले और उत्साह से चिल्ला उठे, "हम एक हैं." एक तेज रोशनी उन पर पड़ी और दो सैकिंड बाद ही मित्र राष्ट्रीय सैनिकों से भरी हुई एक जीप उन के पास आ कर रुक गई. उस में से एक अमेरिकन कैप्टन और मित्र राष्ट्रों के कुछ सैनिक उतरे. जीप की रोशनी में कैप्टन ने देखा कि एक दक्खिनी कोरिया का सैनिक उत्तरी कोरिया के सैनिक के पास खड़ा है. उसने समझा दक्खिनी सैनिक को बन्दी बना कर ले जाया जा रहा है. उत्तरी कोरियन वर्दी वाले ह्वीको की ओर संकेत करते हुए, उसने आज्ञा दी—"शूट !" इस से पहले की ह्वीको कुछ बोलता, पांच सैनिकों ने गोली चला कर उसे मौत के घाट उतार दिया.

पल भर में ही समाप्त हो गया सब कुछ. चिची ने देखा ह्वीको मारा गया है, वह चिल्ला उठा "ओ नारकीय कुत्तों ! तुमने अपने एक शत्रु को, एक उत्तरी कोरिया के सैनिक को गोली नहीं मारी है, बल्कि अपने ही एक मित्र दक्खिनी कोरिया के सैनिक को गोली मारी है. मैं उत्तरी कोरिया का सैनिक हूं और वह दक्खिनी कोरिया का. हम ने कहा हम देशवासी आपस में नहीं लड़ेंगे. हम सब एक हैं और हमने वर्दियां बदल डाली थीं. तुम हमारा देश छोड़ कर चले जाओ. हम तुम्हारा हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकते. हमें अपना झगड़ा खुद निपट लेगें. हम आपस में नहीं लड़ेंगे. हम सब भाई भाई हैं. हम सब एक हैं. हम एक हैं" वह और भी जोर जोर से चिल्लाने लगा.

"शूट हिम आलसो" (Shoot him also)—अमेरिकन कैप्टन अपनी हार पर खिन्न था.

शान्ति का झंडा फहराने वाले मित्र राष्ट्रों के सैनिकों ने चिची को "ट्रेटर" कह कर गोलियों से छेद दिया और चिची गिर पड़ा ह्वीको के ऊपर—जैसे दो भाई आपस में गले लगे हों.

जीप "शान्ति के सैनिकों" को लेकर दूर जा रही थी, "शान्ति का स्मारक" वहीं छोड़ !

"یہی ٹھیک ہے۔"

وردیاں بدلنے کے بعد ھیکو نے کہا "جاؤ وچی، تم اُتری کوریا میں جاکر کہو کہ ہم آپس میں نہیں لڑینگے، ہم سب بھائی بھائی ہیں۔ ہم سب ایک ہیں، ہم ایک ہیں۔ اور یہی پرچار میں دکھنی کوریا میں جاکر کرونگا۔"

دونوں بڑے یتن سے خندق سے نکلے اور اُتساہ سے چلا اُٹھے "ہم ایک ہیں۔" ایک تیز روشنی اُن پر پڑی اور دو سیکنڈ بعد ہی متر راشٹریہ سینکوں سے بھری ہوئی ایک جیپ اُن کے پاس آکر رک گئی۔ اُس میں سے ایک امریکن کپتان اور متر راشٹروں کے کچھ سینک اُترے۔ جیپ کی روشنی میں کپتان نے دیکھا کہ ایک دکھنی کوریا کا سینک اُتری کوریا کے سینک کے پاس کھڑا ہے۔ اُس نے سمجھا دکھنی سینک کو بندی بناکر لے جایا جا رہا ہے۔ اُتری کوریئن وردی والے ھیکو کی اور سنکیت کرتے ہوئے اُس نے آگیاں دی—"شوٹ!" اِس سے پہلے کہ ھیکو کچھ بولتا، پانچ سینکوں نے گولی چلاکر اُسے موت کے گھاٹ اُتار دیا۔

پل بھر میں ہی سماپت ہوگیا سب کچھ۔ وچی نے دیکھا ھیکو مارا گیا ہے، وہ چلا اُٹھا "او نارکیہ کتو! تم نے اپنے ایک شترو کو، ایک اُتری کوریا کے سینک کو گولی نہیں ماری ہے، بلکہ اپنے ہی ایک متر دکھنی کوریا کے سینک کو گولی ماری ہے۔ میں اُتری کوریا کا سینک ہوں اور وہ دکھنی کوریا کا۔ ہم نے کہا ہم دیش واسی آپس میں نہیں لڑینگے۔ ہم سب ایک ہیں اور ہم نے وردیاں بدل ڈالیں تھیں۔ تم ہمارا دیش چھوڑکر چلے جاؤ۔ ہم تمہارا ہستکشیپ سہن نہیں کرسکتے۔ ہم اپنا جھگڑا سویم نپٹ لینگے۔ ہم آپس میں نہیں لڑینگے۔ ہم سب بھائی بھائی ہیں۔ ہم سب ایک ہیں۔ ہم ایک ہیں" اور وہ اور بھی زور زور سے چلانے لگا۔

"شوٹ ہم آلسو (Shoot him also)"—امریکن کپتان اپنی ہار پر کھن تھا۔

شانتی کا جھنڈا پھہرانے والے متر راشٹروں کے سینکوں نے وچی کو "ٹریٹر" کہہ کے گولیوں سے چھید دیا اور وچی گر پڑا ھیکو کے اوپر—جیسے دو بھائی آپس میں گلے لگے ہوں۔

جیپ "شانتی کے سینکوں" کو لےکر دور جارہی تھی، "شانتی کا اسمارک" وہیں چھوڑ!

अंधेरे में कुछ अच्छी तरह देख न सका. न जाने क्यों शीको पागल की भांति घायल सैनिक का मुंह थपथपाते हुए विशी ! विशी !! चिल्लाने लगा.

कुछ देर बाद घायल सैनिक ने आंखें खोल दीं और फुसफुसाया "मेरा नाम किसने पुकारा है ? मैं कहां हूं ?"

"घबराओ नहीं" शीको ने ढाढ़स बंधाया, "मैं शीको हूं, तुम्हारा बड़ा भाई. आह ! कैसी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है ! धन्यवाद है भगवान को, हम दोनों भाई मिले तो—मौत के मुंह में ही सही."

"क्या तुम सच कह रहे हो ? क्या तुम शीको वाकी ही हो." घायल सैनिक ने भरे गले से पूछा.

हां, हां, मैं सच ही कह रहा हूं ! मैं ही शीको वाकी हूं, विशी वान का बड़ा भाई," आनन्द और उत्साह से शीको ने कहा.

थोड़ी देर के लिये युद्ध और अपनी अपनी मंजिल को भू दोनों भाई एक दूसरे से लिपटे हुए थे ! दोनों की आंखों से प्रेम के आंसू बह रहे थे ! उन्हें पहली ही बार आभास हुआ—पवित्र प्रेम के आलिंगन का आनन्द.

और तभी विशी शीको से अलग हो गया. बोला "पर इस समय तुम दक्षिणी कोरिया के सैनिक हो और मैं उत्तरी कोरिया का. हम एक दूसरे के शत्रु पहले हैं और भाई बाद में. आओ मेरे साथ द्वंद युद्ध करो."

"कैसा युद्ध पगले ?" शीको ने डांट कर कहा, "क्या अब भी तुम्हारा बचपन नहीं गया ?"

"मैं नफरत करता हूं तुम से ! तुम मेरे भाई नहीं हो. आओ मेरे साथ लड़ो" विशी बिगड़ा.

"कैसा लड़ना पगले ?" शीको बोला "तुम मेरे भाई हो. क्या कभी भाई भाई से भी लड़ता है ? हम दक्षिणी और उत्तरी कोरिया निवासी आपस में भाई भाई हैं. क्यों किसी और के बहकाने पर हम आपस में लड़ें ? कोरिया निवासी, कोरिया निवासियों के विरुद्ध नहीं लड़ेंगे, हम आपस में नहीं लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं, हम सब एक हैं, हम एक हैं" वह पागलों की तरह चिल्लाता रहा.

विशी का हृदय भर आया, बोला "हां, भाई तुम ठीक ही कहते हो. दक्षिणी और उत्तरी कोरिया वाले सब भाई भाई हैं. भाई भाई के विरुद्ध, हथियार नहीं उठायेगा. अगर हमारा झगड़ा है तो उसे हम खुद ही निपट लेंगे. हम किसी दूसरे का हस्तक्षेप सहन नहीं करेंगे, हम आपस में नहीं लड़ेंगे, हम सब भाई भाई हैं, हम सब एक हैं, हम एक हैं." वह फिर एक बार शीको के गले से लिपट गया.

"हम जल्दी ही सीधे रास्ते पर आ गये हैं. आओ, इस अवसर पर हम अपनी वर्दियां बदल लें" शीको ने कहा.

اندھیرے میں کچھ اچھی طرح دیکھ نہ سکا۔ نہ جانے کیوں شیکو پاگل کی بھانت گھایل سینک کا منہ تھپتھپاتے ہوئے "وشی! وشی!!" چلانے لگا۔

کچھ دیر بعد گھایل سینک نے آنکھیں کھول دیں اور پھسپھسایا "میرا نام کس نے پکارا ہے؟ میں کہاں ہوں؟"

"گھبراؤ نہیں" شیکو نے ڈھارس بندھایا "میں شیکو ہوں، تمہارا بڑا بھائی۔ آہ! کیسی کڑاکے کی سردی پڑ رہی ہے! دھنیہ واد ہے بھگوان کو، ہم دونوں بھائی ملے تو— موت کے منہ میں ہی سہی۔"

"کیا تم سچ کہہ رہے ہو؟ کیا تم شیکو واکی ہی ہو؟" گھایل سینک نے بھرے گلے سے پوچھا!

"ہاں، ہاں، میں سچ ہی کہہ رہا ہوں۔ میں ہی شیکو واکی ہوں، وشی ٹیان کا بڑا بھائی" آنند اور اتساہ سے شیکو نے کہا۔

تھوڑی دیر کے لئے یدھ اور اپنی اپنی منزل کو بھول دونوں بھائی ایک دوسرے سے لپٹے ہوئے تھے! دونوں کی آنکھوں سے پریم کے آنسو بہہ رہے تھے! انہیں پہلی ہی بار آبھاس ہوا— پوتر پریم کے آلنگن کا آنند۔

اور تبھی وشی شیکو سے الگ ہو گیا۔ بولا "پر اس سمے تم دکھشنی کوریا کے سینک ہو اور میں اتری کوریا کا۔ ہم ایک دوسرے کے شترو پہلے ہیں اور بھائی بعد میں۔ آؤ میرے ساتھ دوند یدھ کرو۔"

"کیسا یدھ پگلے؟" شیکو نے ڈانٹ کر کہا "کیا اب بھی تمہارا بچپن نہیں گیا؟"

"میں نفرت کرتا ہوں تم سے! تم میرے بھائی نہیں ہو۔ آؤ میرے ساتھ لڑو" وشی بگڑا۔

"کیسا لڑنا پگلے؟" شیکو بولا "تم میرے بھائی ہو۔ کیا کبھی بھائی بھائی سے لڑتا ہے؟ ہم دکھشنی اور اتری کوریا نواسی آپس میں بھائی بھائی ہیں۔ کیوں کسی اور کے اکسانے پر ہم آپس میں لڑیں؟ کوریا نواسی، کوریا نواسیوں کے ورودھ نہیں لڑیں گے، ہم آپس میں نہیں لڑیں گے، ہم سب بھائی بھائی ہیں، ہم سب ایک ہیں" وہ پاگلوں کی طرح چلاتا رہا۔

وشی کا ہردے بھر آیا، بولا "ہاں، بھائی تم ٹھیک ہی کہتے ہو۔ دکھشنی اور اتری کوریا والے سب بھائی بھائی ہیں۔ بھائی بھائی کے ورودھ ہتھیار نہیں اٹھائے گا۔ اگر ہمارا جھگڑا ہے تو اسے ہم خود ہی نپٹ لیں گے۔ ہم کسی دوسرے کا ہستکشیپ سہن نہیں کریں گے، ہم آپس میں نہیں لڑیں گے۔ ہم سب بھائی بھائی ہیں، ہم سب ایک ہیں، ہم ایک ہیں"۔ وہ پھر ایک بار شیکو کے گلے سے لپٹ گیا۔

"ہم جلدی ہی سیدھے راستے پر آگئے ہیں۔ آؤ اس اوسر پر ہم اپنی وردیاں بدل لیں" شیکو نے کہا۔

ही प्रश्न करता "किसके लिये वह अपने देशवासियों से लड़े ? किसके लिये वह अपने भाई पर गोली चलाए ?" और मन का उत्तर होता "उनके लिये जिन्हें दूसरे देशों को हड़पने की लालसा है ! जिन्हें यह देख कर प्रसन्नता होती हो कि भाई भाई पर गोली चलाए, भाई भाई को मारे. देशवासी अपनी ही मातृभूमि पर बम बरसायें. उसे ऊसर और बंजर बनाए." वह यही सोचता रहता जब तक उत्तरी कोरिया के वायुयान आक्रमण कर वापस न लौट जाते.

उसके मानस पट पर वह दिन भी खिंच गया जब युद्ध में उत्तरी कोरिया का वायुयान शीको के निकट ही आ कर गिरा. उसके गिरते ही वह पागलों की भांति उस ओर भागा. जलते वायुयान में कूद, अपने प्राणों पर खेल, उसने चालक को बाहर निकाला. चालक के कपड़े बुरी तरह जल गए थे और उसका शरीर कई स्थानों पर झुलस गया था. शीको ने घायल चालक का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसके मुंह को धीरे से थपथपाया. चालक की आंखें, जो बन्द थीं, कर-स्पर्श से खुल गईं. शीको को लगा जैसे घायल चालक विशी ही है. शंका निवारण के लिये उसने धीरे से कहा "विशी !" अधमृत चालक ने बहुत धीरे से उत्तर दिया 'मित्र ! मैं विशी नहीं हूं. मैं तो निमा हूं" और कराह कर उसने सांस छोड़ दिया—अपना अन्तिम सांस. मृत चालक को देख कर एक भयानक शंका शीको के मन में उभर आई. "कहीं उसका विशी भी इसी प्रकार..." शव की ओर देख कर शीको जोर से चीख उठा था.

घोर रात्रि में उस घटना की याद आते ही शीको एक बार फिर जोर से चीख उठा.

रह रह कर उसे यही विचार तंग करने लगा कि वह अपने विशी से कभी मिल भी सकेगा या नहीं. घोर अन्धकार में जब हाथ को हाथ नहीं दीख रहा था, शीको की आंखें कहीं दूर देखने का असफल प्रयास कर रही थीं और उसका मन कहीं और ही छटपटा रहा था. धप्प ! अरे, ! यह क्या हुआ ? शीको एक खन्दक में गिर गया था. उसके पांव में कुछ चोट आई. वह वहीं बैठ गया. अचानक पास ही से उसे कराहने की आवाज सुनाई दी. उसने ध्यान से देखा. पास ही एक सैनिक पड़ा धीरे-धीरे कराह रहा था. शीको ने घायल सैनिक का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसे आहिस्ता से सहलाने लगा ! उसे प्रतीत हुआ जैसे विशी का ही सिर उसने अपनी गोद में रख लिया है. अपनी शंका का समाधान करने के लिये शीको ने घायल सैनिक के वस्त्रों को हाथ लगा कर जांचा. वह उत्तरी कोरियन वायुयान चालक के वस्त्र थे. उसने घायल सैनिक का चेहरा देखने का प्रयत्न किया, परन्तु

ہی پوچھا کرتا "کس کے لئے وہ اپنے دیش واسیوں سے لڑے ؟ کس کے لئے وہ اپنے بھائی پر گولی چلائے ؟" پر من کا اُتر ہوتا "اُن کے لئے جنہیں دوسرے دیشوں کو ہڑپنے کی لالسا ہے ! جنہیں یہ دیکھکر پرسنتا ہوتی ہے کہ بھائی بھائی پر گولی چلائے' بھائی بھائی کو مارے ۔ دیش واسی اپنی ہی ماتربھومی پر بم برسائیں، اسے دھوسر اور بنجر بنائیں ۔" وہ یہی سوچتا رہتا جب تک اتری کوریا کے وایویان آکرمن کر واپس نہ لوٹ جاتے ۔

اُس کے مانس پٹ پر وہ دن بھی کھنچ گیا جب یدھ میں اتری کوریا کا وایویان شیکو کے نکٹ ہی آکر گرا ۔ اس کے گرتے ہی وہ پاگلوں کی بھانت اس اور بھاگا ۔ جلتے وایویان میں کود' اپنے پرانوں پر کھیل' اس نے چالک کو باہر نکالا ۔ چالک کے کپڑے بری طرح جل گئے تھے اور اس کا شریر کئی استھانوں پر جھلس گیا تھا ۔ شیکو نے گھایل چالک کا سر اپنی گود میں رکھ لیا اور اس کے مکھ کو دھیرے سے تھپتھپایا ۔ چالک کی آنکھیں' جو بند تھیں' کراسپرش سے کھل گئیں ۔ شیکو کو لگا جیسے گھایل چالک وشی ہی ہے ۔ شنکا نوارن کے لئے اس نے دھیرے سے کہا "وشی !" اردھ مرت چالک نے بہت دھیرے سے اُتر دیا "مترا ! میں وشی نہیں ہوں ۔ میں تو نیما ہوں" اور کراہ کر اس نے سانس چھوڑ دیا— اپنا انتم سانس ۔ مرت چالک کو دیکھکر ایک بھیانک شنکا شیکو کے من میں اُبھر آئی ۔ "کہیں اس کا وشی بھی اسی پرکار......" شو کی اور دیکھکر شیکو زور سے چیخ اٹھا تھا ۔

گھور راتری میں اُس گھٹنا کی یاد آتے ہی شیکو ایک بار پھر زور سے چیخ اٹھا ۔

رہ رہ کر اسے یہی وچار تنگ کرنے لگا کہ وہ اپنے وشی سے کبھی مل بھی سکے گا یا نہیں ۔ گھور اندھکار میں جب ہاتھ کو ہاتھ نہیں دیکھ رہا تھا' شیکو کی آنکھیں کہیں دور دیکھنے کا اسپھل پریاس کر رہی تھیں اور اس کا من کہیں اور ہی چھٹپٹا رہا تھا ۔ دھپ ! ارے ! یہ کیا ہوا ؟ شیکو ایک خندق میں گر گیا تھا ۔ اس کے پاؤں میں کچھ چوٹ آئی ۔ وہ وہیں بیٹھ گیا ۔ اچانک پاس ہی سے اسے کراہنے کی آواز سنائی دی ۔ اسنے دھیان سے دیکھا ۔ پاس ہی ایک سینک پڑا دھیرے دھیرے کراہ رہا تھا ۔ شیکو نے گھایل سینک کا سر اپنی گود میں رکھ لیا اور اسے آہستہ سے سہلانے لگا ۔ اسے پرتیت ہوا جیسے وشی کا ہی سر اس نے اپنی گود میں رکھ لیا ہے ۔ اپنی شنکا کا سمادھان کرنے کے لئے شیکو نے گھایل سینک کے وستروں کو ہاتھ لگا کر جانچا ۔ وہ اتری کورین وایویان چالک کے وستر تھے ۔ اس نے گھایل سینک کا چہرہ دیکھنے کا پریتن کیا' پرنتو

पेड़ और मधुमक्खियों की अच्छी अच्छी बातों को क्यों न ले लें. धर्म के नाम के इन झगड़ों को बुरा कौन कह सकता है? उससे बढ़कर मानव धर्म की परिभाषा और हो भी क्या सकती है? हम हर पेड़ में से कांटों को छोड़ कर फूल क्यों न चुन लें, और फिर हर फूल में से शहद की मक्खी की तरह थोड़ा थोड़ा कर शहद जमा कर लेना क्यों न सीखें.

इसी तरह भाषा के बारे में संस्कृत भाषा हमें प्यारी है. संस्कृत में लिखे हुए उपनिषद, गीता और योग सूत्र सारी दुनिया की क़ीमती पूंजी हैं. साथ ही जब हम अपनी प्यारी बोलचाल की भाषा से संस्कृत की तुलना करते हैं तो हमें कबीर साहब का यह पद बिलकुल ठीक मालूम होता है :—

संस्किरत है कूप जल, भाखा बहता नीर.

याद रहे कबीर साहब ने 'संस्कृत' नहीं लिखा 'सन्सकिरत' लिखा है और ठीक लिखा है. ऐसे ही संस्कृत भारत की दूसरी उन्नत भाषाओं जैसे बंगला, तमिल, मराठी, गुजराती वग़ैरा की जगह नहीं ले सकती. न हिन्दी उनकी जगह ले सकती है. हमें याद रखना चाहिये कि इन में से अनेक भाषाएं हिन्दी से कहीं अधिक उन्नत हैं. हिन्दी भी सारे भारत के लिये सूबे सूबे के बीच के व्यवहार की भाषा तभी हो सकती है जब वह बोलचाल की भाषा के अधिक से अधिक निकट हो उसमें किसी तरह की तंगनज़री न हो, वह जहां तक हो सके भारत की सब भाषाओं का संगम दिखाई दे, और देश की किसी भी दूसरी भाषा को मिटा कर उसकी जगह लेने का न दावा करे और न इरादा. हिन्दी को यदि पनपना और चमकना है तो उसे प्रान्त प्रान्त के बीच के डाकिया, हरकारे और सेवक का काम करना होगा, देवी या रानी बन कर पुजने का चाव मन में नहीं लाना होगा. जो लोग संस्कृत को इस देश की राष्ट्र भाषा बनाने के फेर में हैं वह संस्कृत का मान नहीं बढ़ा रहे हैं, जाने या अनजाने उसे कीचड़ में घसीट रहे हैं, और अपनी आंखों पर धर्मान्धता की पट्टी बांध कर एक निकम्मा सपना देख रहे हैं. हमें इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि पिछले तीस बरस के अन्दर हिन्दी को इतना नुक़सान उसके विरोधियों से नहीं पहुंचा जितना उसके नासमझ और अदूर 'नादान दोस्तों' से.

'मदरसे' को फ़ारसी बता कर 'स्कूल' कहने वाले, रेल, टिकट और कुली को अंगरेज़ी बता कर वाष्पयान, प्रवेश पत्र, और भारवाहक कहने कहलाने वाले, और कुली की जगह [illegible] लिखने वाले लड़कों के इस्तेमाल में [illegible] करने वाले लोग हिन्दी के सच्चे

چھوڑ کر مدھو مکھی کی اچھی اچھی باتوں کو کیوں نہ لے لیں. مذہب کے نام کے ان جھگڑوں کو برا کون کہہ سکتا ہے؟ اس سے بڑھ کر مانو دھرم کی پریبھاشا اور ہو بھی کیا سکتی ہے؟ ہم ہر پیڑ میں سے کانٹوں کو چھوڑ کر پھول کیوں نہ چن لیں، اور پھر ہر پھول میں سے شہد کی مکھی کی طرح تھوڑا تھوڑا کر شہد جمع کر لینا کیوں نہ سیکھیں.

اسی طرح بھاشا کے بارے میں سنسکرت بھاشا ہمیں پیاری ہے. سنسکرت میں لکھے ہوئے اپنشد، گیتا اور یوگ سوتر ساری دنیا کی قیمتی پونجی ہیں. ساتھ ہی جب ہم اپنی پیاری بول چال کی بھاشا سے سنسکرت کی تلنا کرتے ہیں تو ہمیں کبیر صاحب کا یہ پد بالکل ٹھیک معلوم ہوتا ہے:—

سنسکرت ہے کوپ جل، بھاشا بہتا نیر.

یاد رہے کبیر صاحب نے سنسکرت نہیں لکھا 'سنس کرت' لکھا ہے اور ٹھیک لکھا ہے. ایسے ہی سنسکرت بھارت کی دوسری انت بھاشاؤں جیسے بنگلہ، تمل، مراٹھی، گجراتی وغیرہ کی جگہ نہیں لے سکتی. نہ ہندی ان کی جگہ لے سکتی ہے. ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ ان میں سے انیک بھاشائیں ہندی سے کہیں ادھک انت ہیں. ہندی بھی سارے بھارت کے لئے صوبے صوبے کے بیچ کے بیوہار کی بھاشا تبھی ہو سکتی ہے جب وہ بول چال کی بھاشا کے ادھک سے ادھک نکٹ ہو، اس میں کسی طرح کی تنگ نظری نہ ہو، وہ جہاں تک ہو سکے بھارت کی سب بھاشاؤں کا سنگم دکھائی دے، اور دیش کی کسی بھی دوسری بھاشا کو مٹا کر اس کی جگہ لینے کا نہ دعوی اور نہ ارادہ. ہندی کو یہ پنپنا اور چمکنا ہے تو اسے پرانت پرانت کے بیچ کے ڈاکیا، ہرکارے اور سیوک کا کام کرنا ہوگا، دیوی یا رانی بن کر پوجنے کا چاؤ من میں نہیں لانا ہوگا. جو لوگ سنسکرت کو راشٹر بھاشا بنانے کے پھیر میں ہیں وہ سنسکرت کا مان نہیں بڑھا رہے ہیں، جانے یا انجانے اسے کیچڑ میں گھسیٹ رہے ہیں اور اپنی آنکھوں پر دھرماندھتا کی پٹی باندھ کر ایک نکما سپنا دیکھ رہے ہیں. ہمیں اس میں ذرا بھی سندیہ نہیں کہ پچھلے تیس برس کے اندر ہندی کو اتنا نقصان اس کے ورودھیوں سے نہیں پہنچا جتنا اس کے نا سمجھ اور کٹر نادان دوستوں سے.

'مدرسہ' کو فارسی بتا کر 'اسکول' کہنے والے، ریل، ٹکٹ اور قلی کو انگریزی بتا کر واشپیان، پرویش پتر اور بھارواہک کہنے کہلانے والے، اور پرانوں کی جگہ [illegible] لکھنے والے لوگوں کے استعمال میں [illegible] والے لوگ ہندی کے اصلی

भी इसमें शक नहीं कि रावण जिस देश का राजा था वहां की सभ्यता उस समय की आर्य की सभ्यता से ऊंची थी. डाक्टर भगवान दास ने इन दोनों सभ्यताओं की तुलना करते हुए रावण की सभ्यता को 'मिकेनिकल' यानी मशीनी और उस समय के आर्यों की सभ्यता को 'पैस्टोरल' यानी चरवाहों की सभ्यता बताया है. यह भी ज़ाहिर है कि यह सारी कहानी अगर इधर के किसी विद्वान की जगह लंका के किसी विद्वान की लिखी हुई होती तो कहानी बिल्कुल दूसरी ही होती. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि लंका के दरबार में बड़े बड़े विद्वानों और पंडितों की कमी नहीं थी. रावण खुद बहुत बड़ा पंडित था. किसी कम सभ्य लोगों का अपने से अधिक सभ्य लोगों को लड़ाई में हरा देना या मिटा डालना भी इतिहास में कोई अनोखी बात नहीं है. नीम जंगली रोम वालों ने अपने समय की सब से सभ्य क़ौम यूनानियों को मिटा डाला. अ[illegible], गाथ और वेन्डाल जातियों ने अपने से कहीं सभ्य रोम वालों को ख़त्म कर दिया. इतिहास में मिसालें भरी पड़ी हैं. जो लोग बीसवीं सदी में भी यह मानते हैं कि पवनसुत हनुमान जी के दुम थी और वह बन्दर थे उनकी अक़्ल को हम क्या करें ! इनसानों की किसी जाति को बन्दर कह देना भी कहने वाले की ऊंची संस्कृति की पहचान नहीं है और फिर उन्हें देवता मान कर पूजने लगना भी एक ऐसा अंधविश्वास है जो किसी राष्ट्र को ऊपर उठाने में मदद नहीं दे सकता न किसी स्त्री की नाक काट देना या कटवा देना या साल के साल अपने या अपने पुरखों के किसी समय के शत्रु का पुतला बना कर उसे फूंकना या किसी नगर या देश की नक़ल बना कर उसे आग लगाना संस्कृति या सुरुचि का लक्षण है. विभीषण को कट्टर अंधविश्वासी लोग चाहे कुछ भी मानें दुनिया उसे विश्वासघातक स्वदेश द्रोही कह कर ही याद करेगी. फिर भी हम कह चुके हैं कि वाल्मीकी रामायण और तुलसी रामायण दोनों दुनिया के साहित्य में बड़ा ऊंचा स्थान रखती हैं. दोनों से हमें बड़ी क़ीमती शिक्षा मिल सकती है. दोनों दुनिया के अमर ग्रन्थों में से हैं. इस तरह के किसी ग्रन्थ को कोई निर्भ्रान्त मान बैठे, या ईश्वर वाक्य मान बैठे, या इतिहास मान बैठे तो इस में क़सूर मानने वाले का है, उन पुस्तकों के लिखने वालों का नहीं. हम यह सब केवल इस लिये कह रहे हैं कि इन बातों में हमें कट्टरता, तंगी घृणा, साम्प्रदायिकता, और अन्ध-विश्वासों से ऊपर उठ कर बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिये नहीं तो नुक़सान हमारा ही है दुनिया का नहीं.

ऐसे ही मनुस्मृति में यदि जन्म से जाति का सम्बन्ध बताया है तो—और डाक्टर भगवान दास का कहना है कि नहीं बताया—तो हम उसे या ऐसी ही और बातों को

اس میں بھی شک نہیں کہ راون جس دیش کا راجہ تھا وہاں کی سبھیتا اُس سمے کی آریہ کی سبھیتا سے اونچی تھی۔ ڈاکٹر بھگوان داس نے ان دونوں سبھیتاؤں کی تُلنا کرتے ہوئے راون کی سبھیتا کو "مکینیکل" یعنی مشینی اور اُس سمے کے آریوں کی سبھیتا کو "پیسٹورل" یعنی چرواہوں کی سبھیتا بتایا ہے۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ یہ ساری کہانی اگر اِدھر کے کسی ودوان کی جگہ لنکا کے کسی ودوان کی لکھی ہوئی ہوتی تو کہانی بالکل دوسری ہی ہوتی۔ ہمیں یہ بھی نہیں بھولنا چاہئے کہ لنکا کے دربار میں بڑے بڑے ودوانوں اور پنڈتوں کی کمی نہیں تھی۔ راون خود بہت بڑا پنڈت تھا۔ کسی کم سبھیہ لوگوں کا اپنے سے ادھک سبھیہ لوگوں کو لڑائی میں ہرا دینا یا مٹا ڈالنا بھی اتہاس میں کوئی انوکھی بات نہیں ہے۔ نیم جنگلی روم والوں نے اپنے سمے کی سب سے سبھیہ قوم یونانیوں کو مٹا ڈالا۔ [illegible] اور وینڈال جاتیوں نے اپنے سے کہیں سبھیہ روم والوں کو ختم کر دیا۔ اتہاس میں مثالیں بھری پڑی ہیں۔ جو لوگ بیسویں صدی میں بھی یہ مانتے ہیں کہ پون سُت ہنومان جی کے دُم تھی اور وہ بندر تھے اُن کی عقل کو ہم کیا کہیں؟ انسانوں کی کسی جاتی کو بندر کہہ دینا بھی کہنے والے کی اونچی سنسکرتی کی پہچان نہیں ہے اور پھر انہیں دیوتا مان کر پوجنے لگنا بھی ایک ایسا اندھ وشواس ہے جو کسی راشٹر کو اوپر اٹھانے میں مدد نہیں دے سکتا نہ کسی استری کی ناک کاٹ دینا یا کٹوا دینا یا سال کے سال اپنے یا اپنے پرکھوں کے کسی سمے کے شترو کا پتلا بنا کر اسے پھونکنا یا کسی نگر یا دیش کی نقل بنا کر اسے آگ لگانا سنسکرتی یا سوروچی کا لکشن ہے۔ وبھیشن کو کٹر اندھ وشواسی لوگ چاہے کچھ بھی مانیں دنیا اسے وشواس گھاتک سودیش دروہی کہہ کر ہی یاد کرے گی۔ پھر بھی ہم کہہ چکے ہیں کہ والمیکی رامائن اور تلسی رامائن دونوں دنیا کے ساہتیہ میں بڑا اونچا استھان رکھتی ہیں۔ دونوں سے ہمیں بڑی قیمتی شکشا مل سکتی ہے۔ دونوں دنیا کے امر گرنتھوں میں سے ہیں۔ اِس طرح کے کسی گرنتھ کو کوئی نربھرانت مان بیٹھے یا ایشور واکیہ مان بیٹھے یا اتہاس مان بیٹھے تو اس میں قصور ماننے والے کا ہے اُن پستکوں کے لکھنے والوں کا نہیں۔ ہم یہ سب کیول اس لئے کہہ رہے ہیں کہ اِن باتوں میں ہمیں کٹرتا، تنگی، گھرنا، سمپردائکتا اور اندھ وشواسوں سے اوپر اٹھ کر بدھی اور وویک سے کام لینا چاہئے نہیں تو نقصان ہمارا ہی ہے دنیا کا نہیں۔

[ऊपर का लेख इंग्लैंड के एक हिन्दी हिन्दुस्तानी प्रेमी और भारत की एकता के हामी इंग्लिस्तानी भाई का लिखा हुआ है. इसको हमने ज्यों का त्यों उन्हीं की भाषा में दिया है. इससे इंग्लिस्तान भारत के आजकल के हालात पर और वहां की विचार धाराओं पर अच्छी रोशनी पड़ती है. हम से हर एक को शान्ति और संजीदगी के साथ सोचने और अपनी कमजोरियों को जानने की भी सामग्री मिलती है. इसीलिये हम इसे खुशी से 'नया हिन्द' में जगह दे रहे हैं—ऐडीटर]

हम प्राविंडस्तान या इस तरह के कोई भी और अलग-अलग 'स्थान' बना कर देश के और अधिक टुकड़े करने के खिलाफ हैं. दुनिया इस समय यदि हो सके तो, एक 'जगराज' 'विश्व राज', या 'वर्ल्ड स्टेट' की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रही है. वैसे भी आजकल की दुनिया में बहुत छोटी-छोटी इकाइयां न अन्तर्राष्ट्रीय हालत पर कोई असर डाल सकती हैं और न देर तक इज्जत के साथ अपनी हस्ती और आजादी क़ायम रख सकती हैं. मिसालें हमारे घर के पास मौजूद हैं. हम उन मिसालों में जाना नहीं चाहते. यह एक अकाट्य सच्चाई है कि देश का भला इस बात मिल कर चलने में है, टुकड़े-टुकड़े होने में नहीं.

दूसरी तरफ हम इस से भी इनकार नहीं कर सकते कि जो दलीलें अखंड हिन्दुस्तान चाहने वाले भाइयों की तरफ से इस खत में दी गई हैं. उनमें बहुत कुछ सच्चाई है. इस तरह की मांग और इस तरह के आन्दोलन की जिम्मेदारी जितनी आन्दोलन करने वालों पर है उस से कहीं ज्यादा उन लोगों पर है जो उस आन्दोलन को ग़लत कहते हैं. [illegible] तमिल प्रदेश में 'कल्लाकुडी' का नाम बदल कर 'डालमिया पुरम' कर देना पाप है. एक तरफ यह उस प्रदेश की भाषा और रहन-सहन पर ना जायज़ हमला है और दूसरी तरफ गरीब जनता के ऊपर पूंजीपतियों की ज़बरदस्ती [illegible] है. रामायण हो या महाभारत, मनुस्मृति हो या कोई और किताब, जो लोग इनमें से किसी को भी सिद्धान्त और हर देश, हर काल और हर बात के लिये प्रमाण मानते [illegible] [illegible] है जिसे [illegible] किसी किताब की [illegible] देख चाहते हैं.

[illegible] रामायण या महाभारत [illegible] दोनों तरफ है [illegible] से साहित्य में [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible]

اوپر کا خط

[اوپر کا لیکھ انگلینڈ کے ایک هندی هندستانی پریمی اور بھارت کی ایکتا کے حامی انگلستانی بھائی کا لکھا ہوا ہے. ہم نے اسے جیوں کا تیوں انہیں کی بھاشا میں دیا ہے. اس سے انگلستان بھارت کے آجکل کے حالات پر اور وہاں کی وچار دھاراؤں پر اچھی روشنی پڑتی ہے. اس سے ہم سب کو شانتی اور سنجیدگی کے ساتھ سوچنے اور اپنی کمزوریوں کو جاننے کی بھی سامگری ملتی ہے. اسی لئے ہم اسے خوشی سے 'نیا ہند' میں جگہ دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

ہم دراوڑستان یا اس طرح کے کوئی بھی اور الگ الگ 'استھان' بنا کر دیش کے اور ادھک ٹکڑے کرنے کے خلاف ہیں. دنیا اس سمے یہ ہوسکے تو ایک 'جگ راج' یا 'ورلڈ اسٹیٹ' کی طرف بڑھنے کی کوشش کر رہی ہے. ویسے بھی آجکل کی دنیا میں بہت چھوٹی چھوٹی اکائیاں نہ انتر راشٹریہ حالت پر کوئی اثر ڈال سکتی ہیں اور نہ دیر تک عزت کے ساتھ اپنی ہستی اور آزادی قائم رکھ سکتی ہیں. مثالیں ہمارے گھر کے پاس موجود ہیں. ہم ان مثالوں میں جانا نہیں چاہتے. یہ ایک اکاٹیہ سچائی ہے کہ دیش کا بھلا اس میں ملکر چلنے میں ہے، ٹکڑے ٹکڑے ہونے میں نہیں.

دوسری طرف ہم اس سے بھی انکار نہیں کرسکتے کہ جو دلیلیں دراوڑستان چاہنے والے بھائیوں کی طرف سے اس خط میں دی گئی ہیں ان میں بہت کچھ سچائی ہے. اس طرح کی مانگ اور اس طرح کے آندولن کی ذمہ داری جتنی آندولن کرنے والوں پر ہے اس سے کہیں زیادہ ان لوگوں پر ہے جو اس آندولن کو غلط کہتے ہیں. [illegible] بھاشا میں 'کل ککس' کا نام بدل کر 'ڈالمیاپورم' کردینا پاپ ہے. ایک طرف یہ اس پردیش کی بھاشا اور [illegible] پر ناجائز حملہ ہے اور دوسری طرف غریب [illegible] کے اوپر پونجی پتیوں کی زبردستی صاف جتانا [illegible] رامائن ہو یا مہابھارت، منوسمرتی ہو یا کوئی اور کتاب جو لوگ ان میں سے کسی کو بھی سدھانت اور ہر دیش، ہر کال اور ہر بات کے لئے پرمان مانتے ہیں وہ [illegible] بھی غلطی میں ہیں [illegible] کسی کتاب کی کسی [illegible] کو ٹھیک نہ ماننے کے کارن اسے [illegible] چاہتے ہیں.

[illegible] رامائن یا مہابھارت [illegible] دونوں طرف ہے [illegible] کی کتابوں میں [illegible] سنسار کے ساہتیہ میں [illegible] استھان ہے. اب بھی [illegible] [illegible] ہم [illegible] کو پڑھنا [illegible]

राजा जी की नई तालीम योजना के खिलाफ आन्दोलन करने वाले द्रविड़ एक हज़ार तीन गिरफ्तार हुए. उनमें द्राविड़ प्रोग्रेसिव संघ के लीडर सी. एन. अन्नादुराय भी हैं. राजा जी की तजवीज है कि अपनी-अपनी परम्परा का पेशा हर एक को अपनाना चाहिये. स्कूल में पांच घन्टे की पढ़ाई के बजाये तीन घन्टे की हो. उस में 'हिन्दू' का ढंग हो. शुरू की तालीम से पांचवें दर्जे तक के बच्चों को उनके मां बाप के पेशे सीख लेने चाहियें.

द्राविड़ संघ कहता है—"इस से ब्राह्मन आर्य जाति के बच्चे ही फायदा उठायेंगे. धोबी का बच्चा कपड़े धोयेगा, कुम्हार का बच्चा घड़ा बनायेगा, मछुवे का लड़का स्कूल में भी मछली पकड़ेगा. हज्जाम का लड़का हजामत करेगा, बढ़ई का लड़का बढ़ईगीरी करेगा, गड़रिये का लड़का गाय, बैल बकरी चरायेगा, सोनार लोहार के लड़के अपने अपने पेशे करेंगे या सीखेंगे. ब्राह्मन लड़का क्या करेगा? प्रोहित का काम सीखेगा? नहीं! राजा जी की आर्य जाति का लड़का शहर में पढ़ेगा और दूसरी जातियों पर राज करेगा. गांव में ऐसी पढ़ाई होगी तो द्राविड़ जाति के लोग आगे न बढ़ेंगे. वह तो निहायत गरीब हैं. इस आर्य तहज़ीब ने द्राविड़ जाति को इस हालते पस्ती तक पहुंचा दिया है." और एक बात! पिछले साल में तमिल नाड के तमाम रेलवे स्टेशनों पर के हिन्दी साइन बोर्डों को तारकोल से पोता गया था. "आर्य देव नागरी लिपि हिन्दी ऊपर है. द्राविड़ भाषा की लिपि नीचे है. नागरी देवता की लिपि है और द्राविड़ लिपि शायद जंगली राक्षस लिपि हो!" यह कह कर आन्दोलन शुरू किया गया.

'भाषावारी प्रान्त' की तहरीक के सम्बन्ध में 'पंडित जवाहरलाल जी ने कहा था—"गाड़ियों को रोकना नानसेन्स" है. उसके खिलाफ रेलों को रोकने की तहरीक और जोरदार हुई. द्राविड़ों को 'नानसेन्स' कहने का चैलेंज नागवार लगा. तुतिकोरिन में इसके लिये दंगा हो गया. उसमें भी कुछ मारे गए.

इस साल आर्य हिन्दू धर्म की मूरतों के "गनेश" की तरह मिट्टी के पुतले बना कर उन्हें खुले मैदानों में तोड़ डाला गया. इसके लीडर 75 साल के ई० वी० रामस्वामी थे. चिट्ठी एक लेख बन गई है. माफ करें! मैं इन पुरानी तहज़ीबों में न पड़ कर एक नई तहज़ीब का 'सपना' देखता हूँ जो मार्क्स, लेनिन, एंजल्स और गांधी जी ने बताई है. यहां के गुमराहियों को ठीक रास्ता बताना हो तो विनोबा जी और सुन्दरलाल जैसे सज्जनों को आना चाहिये. द्राविड़ संघों की दलीलों को सुनना चाहिये. प्रेम के साथ हिन्दुस्तानी का प्रचार करें, देश की खातिर हिन्दी भाषा की सेवा है.

आपका भाई

'नया हिन्द' ग्राहक नं० 62 —[illegible]

راجا جی کی نئی تعلیم یوجنا کے خلاف اندولن کرنے والے دراوڑ ایک ہزار تین گرفتار ہوئے۔ ان میں دراوڑ پروگریسیو سنگھ کے لیڈر سی۔ این۔ انّا دورائی بھی ہیں۔ راجا جی کی تجویز ہے کہ اپنی اپنی پرمپرا کا پیشہ ہر ایک کو اپنانا چاہئیے۔ اسکول میں پانچ گھنٹے کی پڑھائی کے بجائے تین گھنٹے کی ہو۔ اس میں 'ہندو' کا ڈھنگ ہو۔ شروع کی تعلیم سے پانچویں درجے تک کے بچوں کو ان کے ماں باپ کے پیشے سیکھ لینے چاہئیں!

دراوڑ سنگھ کہتا ہے—"اس سے براہمن آریہ جاتی کے بچے ہی فائدہ اٹھائیں گے۔ دھوبی کا بچہ کپڑے دھوئے گا کمہار کا بچہ گھڑا بنائے گا مچھوے کا لڑکا اسکول میں بھی مچھلی پکڑیگا حجام کا لڑکا حجامت کریگا بڑھئی کا لڑکا بڑھئی گیری کریگا گڈریے کا لڑکا گائے بیل بکری چرائے گا سنار لوہار کے لڑکے اپنے اپنے پیشے کرینگے یا سیکھیں گے۔ براہمن لڑکا کیا کریگا؟ پروہت کا کام سیکھے گا؟ نہیں! راجا جی کی آریہ جاتی کا لڑکا شہر میں پڑھے گا اور دوسری جاتیوں پر راج کرے گا۔ گاؤں میں ایسی پڑھائی ہوگی تو دراوڑ جاتی کے لوگ آگے نہ بڑھینگے۔ وہ تو نہایت غریب ہیں۔ اس آریہ تہذیب نے دراوڑ جاتی کو اس حالت زوال تک پہونچا دیا ہے۔" اور ایک بات! پچھلے سال میں تمل ناڈ کے تمام ریلوے اسٹیشنوں پر کے ہندی سائن بورڈوں کو تارکول سے پوتا گیا تھا۔ "آریہ دیوناگری لپی ہندی اوپر ہے۔ دراوڑ بھاشا کی لپی نیچے ہے۔" ناگری دیوتا کی لپی ہے اور دراوڑ لپی شاید جنگلی راکشس لپی ہو!" یہ کہکر آندولن کھڑا کیا گیا۔

'بھاشا واری پرانت' کی تحریک کے سمبندھ میں پنڈت جواہر لال جی نے کہا تھا—"گاڑیوں کا روکنا نان سینس ہے"۔ اس کے خلاف ریلوں کو روکنے کی تحریک اور زوردار ہوئی۔ دراوڑوں کو نان سینس کہنے کا چیلنج ناگوار لگا۔ توتی کورن میں اس کے لئے دنگا ہوگیا۔ اس میں بھی کچھ مارے گئے۔

اس سال آریہ ہندو دھرم کی مورتوں کے "گنیش" کی طرح مٹی کے پتلے بنا کر انہیں کھلے میدانوں میں توڑ ڈالا گیا۔ اس کے صدر 75 سال کے ای۔ وی۔ رام سامی ہیں۔ چٹھی ایک لیکھ بن گئی ہے۔ معاف کریں۔ میں ان پرانی تہذیبوں میں نہ پڑ کر ایک نئی تہذیب کا 'سپنا' دیکھتا ہوں جو مارکس، لینن، اینجلس اور گاندھی جی نے بتائی ہے۔ یہاں کے گمراہوں کو ٹھیک راستہ بتانا ہو تو ونوبا جی اور سندر لال جیسے سجنوں کو آنا چاہئیے۔ دراوڑ سنگھوں کی دلیلوں کو سننا چاہئیے۔ پریم کے ساتھ ہندوستانی کا پرچار کریں، دیش کی خاطر ہندی بھاشا کی سیوا ہے۔

آپکا بھائی

'نیا ہند' گاہک نمبر 62 —[illegible]

[illegible] ... की युद्ध के बाद ... क्यों ? ... नहीं थी ! बदला लेने के लिये ले गया था ! रावण द्रविड़ वीर था, कायर नहीं था. वह शास्त्रों का पंडित भी था. उसमें [illegible] (Rationalism) का माद्दा था. द्रविड़ों में किसी भी नारी को अपने लायक पति चुनने का हक था. राज जाहिर कर के शादी कर सकती थी. मान लो रावण की बहन शूर्पणखा राम या उसके भाई लक्ष्मण दोनों में से किसी से शादी करना चाहती थी तो क्या उसकी सजा यह थी कि शूर्पणखा को बदसूरत करके नाक-कान काट दिया गया ! उसने भाई रावण से शिकायत की तो बहन के अपमान का बदला लेने के लिये सीता को ले गया था. रावण सीता से मोहित न हुआ, जब वह राम की चाल से, क्योंकि विभीषण ने राम से मिल कर भाई से राज हड़पने की साजिश की थी, मारा गया, तब रावण की स्त्री सती होने चली तब उसने कहा—'हाय पति देव ! कुल परम्परा की लाज के लिये तुम शहीद हुए, सीता मुझ से सुन्दर तो नहीं थी, सीता से तुम्हें मोह न होने पर भी तुम्हें बदनाम होना पड़ा. 'द्राविड़ संघवाले' आर्य शास्त्र व पुराण पढ़कर जनता को अज्ञान से जगाने के लिये 'शास्त्र व पुराणों की पोल' नामी किताबें छापा करते हैं और उनकी पोल खोलते हैं !" बाकी बातें जोर से प्रचार करते हैं !

महाभारत की कथा अमरीका में मशहूर है ! मिस मेयो की 'मदर इंडिया' पढ़कर उन्होंने सारी बातें जान ली हैं। "फिर भी भारत से विलायत जाने वाले सज्जन आर्य संस्कृति व संस्कृत भाषा की तारीफ करते नहीं थकते ! सिनेमा की तारिका श्रीमती...जब अमरिका गईं तो किसी ने उनसे पूछा कि "तुम्हारे बाकी चार पतिदेव कहाँ हैं और क्या करते हैं ? " द्रौपदी की कहानी का यह असर है ! द्राविड़ों की अलग परम्परा है, भाषायें हैं और आला क़दीम रिवायात के वारिस कहलाते हैं. इसलिये हमारी मांग सही है !"

द्रविड़ संघ वाले उत्तर के पूंजीपतियों के दक्षिण में पैर जमाने के सख्त खिलाफ हैं. यहां से दस मील की दूरी पर "डालमिया पुरम" रेलवे स्टेशन है. पहले इस स्टेशन का नाम "कल्लकुडी" था. द्राविड़ संघ वालों ने मीटिंगों में 'डालमिया पुरम' नाम हटाने के प्रस्ताव पास किये और सरकार से अपील की. दक्षिण के स्टेशन में एक उत्तर के पूंजीपति का नाम सुनकर वह चिढ़ते हैं. आखिर में पिकेटिंग शुरू हो गई. 'डालमिया पुरम' स्टेशन के बोर्ड पर 'कल्लकुडी' लिख कर चिटें लगाई. इंजन के आगे [illegible] ऐसा हो गया, गोलियां चलीं. [illegible] रेल के अंदर [illegible] भी मर गया. [illegible]

اور تتی پتنی میں اتل شلا کی تصویر صاف نظر آتی ہے۔ راون سیتا کو بھگا لے گیا یہ بھی کیوں؟ سیتا سے پریم نہیں تھا! بدلا لینے کے لئے لے گیا تھا! راون دراوڑ ویر تھا۔ کایر نہیں تھا۔ وہ شاستروں کا پنڈت بھی تھا۔ اس میں [illegible] (Rationalism) کا مادہ تھا۔ دراوڑوں میں کسی بھی ناری کو اپنے لائق پتی چننے کا حق تھا۔ راز ظاہر کر کے شادی کر سکتی تھی۔ مان لو راون کی بہن شورپ نکھا رام یا اس کے بھائی لکشمن دونوں میں سے کسی سے شادی کرنا چاہتی تھی تو کیا اس کی سزا یہ تھی کہ شورپ نکھا کو بدشکل کر کے ناک کان کاٹ دیا گیا! اس نے بھائی راون سے شکایت کی تو بہن کے اپمان کا بدلہ لینے کے لئے وہ سیتا کو لے گیا تھا۔ راون سیتا سے موہت نہ ہوا۔ جب وہ رام کی چال سے، کیونکہ وبھیشن نے رام سے مل کر بھائی سے راج ہڑپنے کی سازش کی تھی، مارا گیا، تب راون کی استری ستی ہونے چلی، تب اس نے کہا — 'ہائے پتی دیو! کل پرمپرا کی لاج کے لئے تم شہید ہوئے، سیتا مجھ سے سندر تو نہیں تھی، سیتا سے تمہیں موہ نہ ہونے پر بھی تمہیں بدنام ہونا پڑا۔ "دراوڑ سنگھ والے" آریہ شاستر و پران پڑھ کر جنتا کو جہالت سے جگانے کے لئے 'شاستر و پرانوں کی پول' نامی کتابیں شائع کرتے ہیں اور ان کی پول کھولتے ہیں!" باقی باتیں زور سے پرچار کرتے ہیں۔

مہا بھارت کی کتھا امریکہ میں مشہور ہے! مس میو کی 'مدر انڈیا' پڑھ کر انہوں نے ساری باتیں جان لی ہیں۔ "پھر بھی بھارت سے ولایت جانے والے سجن آریہ سنسکرتی و سنسکرت بھاشا کی تعریف کرتے نہیں تھکتے! سنیما کی تارکا شریمتی...... جب امریکہ گئیں تو کسی نے ان سے پوچھا کہ تمہارے باقی چار پتی دیو کہاں ہیں اور کیا کرتے ہیں؟" دروپدی کی کہانی کا یہ اثر ہے! دراوڑوں کی الگ پرمپرا ہے، بھاشائیں ہیں اور عالی قدیم روایات کے وارث کہلاتے ہیں۔ اس لئے ہماری مانگ صحیح ہے۔"

دراوڑ سنگھ والے اتر کے پونجی پتیوں کے دکھن میں پیر جمانے کے سخت خلاف ہیں۔ یہاں سے دس میل کی دوری پر "ڈالمیا پورم" ریلوے اسٹیشن ہے۔ پہلے اس اسٹیشن کا نام 'کل کڈی' تھا۔ دراوڑ سنگھ والوں نے میٹنگوں میں 'ڈالمیا پورم' نام ہٹانے کے پرستاو پاس کئے اور سرکار سے اپیل کی۔ دکھن کے اسٹیشن میں ایک اتر کے پونجی پتی کا نام سن کر وہ چڑھتے ہیں۔ آخر میں 'پکٹنگ' شروع ہو گئی۔ 'ڈالمیا پورم' اسٹیشن کے بورڈ پر 'کل کڈی' لکھ کر [illegible] انجن کے آگے لیٹنا [illegible] گولیاں چلیں۔ تین آدمی مارے گئے۔ وہاں کے لیڈر [illegible] ایک آدمی بھی مر گیا۔ [illegible]

[illegible] ... का चिन्ह है !

द्राविड़ पार्टी वाली केवल ऐसी बकवास पर बहस करते रहते हैं. उनका कहना है—"द्राविड़ सभ्यता बहुत पुरानी है, प्राकृतिक वस्तुओं को पूजने वाली है, एक समाज और एक ईश्वर को मानने वाली सभ्यता है. आर्य पुराणों के झूठे मनगढ़त क़िस्सों में द्राविड़ जाति को जंगली जाति, अनार्य जाति क़रार दिया गया है. रामायण में द्राविड़ जाति को 'बन्दर' कहा गया है ! द्राविड़ इतिहास में आने वाली नारियां पतिव्रता थीं, आर्य पुराणों की नारियों में ज़ियादातर इसका ज़िक्र ही नहीं कि 'पतिव्रत' किस चिड़िया का नाम है. अहल्या, द्रौपदी और तारा को ले लें, उनके चरित्र बहुत मशहूर हैं यहां तक कि अमरीका में भी ! द्रौपदी के पांच पति थे फिर भी वह पतिव्रता नारी है ! उसकी सास कुँती तो बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुबहान अल्ला ! साबित हुई. पांच व्यक्तियों के सम्मेलन से उसके पांच पुत्र हुए ! पांडु राजा तो नाम के लिये पति था ! यह आर्य सभ्यता का इतिहास है !......

राम लीला के समय उत्तर में रावन की मूरत को जलाते हैं ! द्राविड़ लोग उसे द्राविड़ जाति का वीर मानते हैं, इसलिये उनको बड़ा दुख होता है."

द्राविड़ पार्टी वाले मानते हैं कि—"राम अवध का राजा था, वह भगवान का अवतार नहीं था. वह ब्राह्मणों का कठपुतली था ! इन्साफ़-पसन्द नहीं था. छिप कर बाली को क़त्ल किया था. वह वीर नहीं था. धोके से रावन की बहन ताड़का को मार डाला !"

आगे चल कर कहते हैं—"द्राविड़ों में यज्ञ था. क़ुरबानी का अंधविश्वास नहीं था. आर्य ऋषियों के "यज्ञों" की रक्षा के लिये राम गया, 'यज्ञों' के ख़िलाफ़ रहने वाले द्राविड़ों को राक्षस या जंगली कहा गया. इसलिये हम रामायण को आग में जलाना चाहते हैं. 'द्राविड़िस्तान' मिलने पर मज़हब या ख़ुदा को मानने न मानने पर ज़ोर न डालेंगे. 'बुत-परस्ती' के सिवाय वह भी घरों में चाहे जिस तरह ख़ुदा की याद कर सकते हैं. 'आस्तिकता' को महत्व नहीं दिया जायगा. जाति और मज़हब के फ़र्क़ मिटा कर सबों के बीच ब्याह शादी होना चाहिये. विधवा विवाह का प्रचार होना चाहिये. जब दिल्ली वाले सियासतदान मुसलमानों को एक अलग क़ौम (नेशन) मान कर पाकिस्तान देने पर राज़ी हो गए तब हमें क्यों हिक़ारत की निगाह से देखते हैं ? हम भी एक नेशन हैं ! द्राविड़स्तान ले कर ही रहेंगे. दिल्ली पर जहाद करेंगे. सुखी और आज़ाद द्राविड़स्तान हमारा हक़ है. एक दिन बन कर रहेगा ......"

[illegible]

دراوڑ پارٹی والے ایسی لغو باتیں بکواس پر بحث کرتے رہتے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے—"دراوڑ سبھیتا بہت پرانی ہے، پراکرتک وستوؤں کو پوجنے والی ہے، ایک سماج اور ایک ایشور کو ماننے والی سبھیتا ہے۔ آریہ پرانوں کے جھوٹے منگھڑت قصوں میں دراوڑ جاتی کو جنگلی جاتی، اناریہ جاتی قرار دیا گیا ہے۔ رامائن میں دراوڑ جاتی کو 'بندر' کہا گیا ہے! دراوڑ اتہاس میں آنے والی ناریاں پتی ورتا تھیں۔ آریہ پرانوں کی ناریوں میں زیادہ تر اس کا ذکر ہی نہیں کہ 'پتی ورت' کس چڑیا کا نام ہے۔ 'اہلیا' دروپدی اور تارا کو لے لیں، اُن کے چرتر بہت مشہور ہیں یہاں تک کہ امریکہ میں بھی! دروپدی کے پانچ پتی تھے پھر بھی وہ پتی ورتا ناری ہے! اُسکی ساس کنتی تو بڑے میاں سو بڑے میاں چھوٹے میاں سبحان اللہ! ثابت ہوئی۔ پانچ ویکتیوں کے سمیلن سے اس کے پانچ پتر ہوئے! پانڈو راجا تو نام کے لئے پتی تھا! یہ آریہ سبھیتا کا اتہاس ہے!......

"رام لیلا کے سمے اُتر میں راون کی مورت کو جلاتے ہیں! دراوڑ لوگ اسے دراوڑ جاتی کا ویر مانتے ہیں! اس لئے ان کو بڑا دکھ ہوتا ہے۔"

"دراوڑ پارٹی والے مانتے ہیں کہ—"رام اودھ کا راجا تھا، وہ بھگوان کا اوتار نہیں تھا۔ وہ براہمنوں کا کٹھ پتلا تھا! انصاف پسند نہیں تھا۔ چھپ کر بالی کو قتل کیا تھا۔ وہ ویر نہیں تھا۔ دھوکے سے راون کی بہن تاڑکا کو مار ڈالا!"

آگے چل کر کہتے ہیں—"دراوڑوں میں یگ تھا۔ قربانی کا اندھ وشواس نہیں تھا۔ آریہ رشیوں کے "یگیوں" کی رکھشا کے لئے رام گیا، 'یگیوں' کے خلاف رہنے والے دراوڑوں کو راکھشس یا جنگلی کہا گیا۔ اس لئے ہم رامائن کو آگ میں جلانا چاہتے ہیں۔ 'دراوڑستان' ملنے پر مذہب یا خدا کو ماننے یا نہ ماننے پر ہم زور نہ ڈالیں گے۔ 'بت پرستی' کے سوائے وہ بھی گھروں میں چاہے جس طرح خدا کی یاد کر سکتے ہیں۔ 'آستکتا' کو مہتو نہیں دیا جائے گا۔ جاتی اور مذہب کے فرق مٹا کر سبھوں کے بیچ بیاہ شادی ہونا چاہئے۔ ودھوا وواہ کا پرچار ہونا چاہئے۔ جب دلی والے سیاست دان مسلمانوں کو ایک الگ قوم (نیشن) مان کر پاکستان دینے پر راضی ہوگئے تب ہمیں کیوں حقارت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں؟ ہم بھی ایک نیشن ہیں! 'دراوڑستان' لے کر رہیں گے۔ دلی پر جہاد کریں گے۔ سکھی اور آزاد دراوڑستان ہمارا حق ہے۔ ایک دن بن کر رہے گا......"

उत्तर के लेखकों की चीज़ों का अनुवाद करने वाला हूं. आप का लेख 'सोवियत रूस के रस्म रिवाज' का अनुवाद करूंगा.

पहले जो सवाल भेजे थे उन्हें मुख्तसिर में फिर देता हूं. सवाल मेरे दोस्तों के हैं. पर मैं उनसे आजकल ज़रा (विचारों में) दूर चला गया हूं. पंडित जी और आप लोग हमेशा दक्खिन की खूबियों की तारीफ करते हैं और सच्चे दिल से भलाई चाहते हैं. पर यहां उत्तर, दक्खिन का सवाल बुलन्द होता (बढ़ता) जाता है. 'हिन्द' के और कई 'पाकिस्तान' बनाना चाहते हैं! यहां 'द्राविड़ फैडरेशन' और 'द्राविड़ प्रोगरेसिव फेडरेशन' के बारे में सुना होगा. नहीं तो माननीय सुन्दरलाल जी से पूछ लीजिये. 'द्राविड़स्तान' वालों का कहना यह है :—

1. दक्खिन को उत्तर से अलग कर के 'द्राविड़स्तान' बनाना ज़रूरी है! क्योंकि उत्तर दक्खिन को चूस कर गुलाम बनाना चाहता है. पंचसाला स्कीम में दक्खिन के लिये कोई बड़ी गुंजाइश नहीं है.

2. द्राविड़ और आर्यों की तहज़ीबें जुदा जुदा हैं. इसलिये अलग होना चाहिये.

3. दक्खिन की तहज़ीबी ज़बानों पर हिन्दी साम्राजवाद का ज़ोर व दबाव होने वाला है. हिन्दी या संस्कृत आर्यों की संस्कृति के निशान हैं. आर्यों का धर्म हिन्दू धर्म है. द्राविड़ अपने को हिन्दू कहना छोड़ दें.

4. दक्खिन को 'सेंट्रल गवरमेन्ट' का मुंह ताकना पड़ता है. 'मुकम्मिल हिन्द' (अखंड भारत) कहने से या एक रहने से दक्खिन आगे नहीं बढ़ सकता."

ऊपर की दलीलें दोनों दलों की हैं. एक हद तक उनकी राय पहले ठीक जंचती थी. पर ठीक सोचने पर वह इनसानों में फूट डालने वाली चीज़ मालूम होती है. इन दोनों दलों में पहले के सदर ई. वी. रामसामी हैं और दूसरे के सी. एन. अन्नादुराई एम. ए. दोनों अपने को 'रेशनेलिस्ट' (बुद्धिवादी) मानते हैं, फ्रीथिन्कर (आज़ाद विचारक) मानते हैं. शास्त्र, पुरान जैसी किताबों में खास कर 'मनुस्मृति' में जाति भेद के भाव हैं. इसलिये उन सब को जला डालना चाहते हैं. यह मुझे ठीक जंचता है. इस से वहम और अंध-विश्वास दूर होंगे. कभी कभी धार्मिक कट्टरता वाले कांगरेसी नेताओं के मुंह से 'आर्य संस्कृति' 'भारतीय संस्कृति' और उसी को तमाम भारत के बाशिन्दों को चाहे वे किसी भी मज़हब या जाति के हों अपनाना चाहिये" जैसे शब्द उपदेश के रूप में फूटते हैं. "संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा हो, वही भारत की प्राचीन संपत्ति है" वाली ग़ैर ज़िम्मेदार बातें कहने वाले लोगों की वजह से उसका बुरा असर दक्खिन के दिलों पर ज़ोर से पड़ता है. श्री कैलाशनाथ काटजू 'संस्कृत' की तारीफ करते नहीं

اوپر کے لیکھکوں کی چیزوں کا انوواد کرنے والا ہوں. آپ کا لیکھ 'سوویت روس کے رسم رواج' کا انوواد کرونگا.

پہلے جو سوال بھیجے تھے اُنہیں مختصر میں پھر دیتا ہوں. سوال میرے دوستوں کے ہیں. پر میں ان سے آجکل ذرا (وچاروں میں) دور چلا گیا ہوں. پنڈت جی اور آپ لوگ ہمیشہ دکھن کی خوبیوں کی تعریف کرتے ہیں اور سچے دل سے بھلائی چاہتے ہیں. پر یہاں اُتر دکھن کا سوال بلند ہوتا (بڑھتا) جاتا ہے. 'ہند' کے اور کئی 'پاکستان' بنانا چاہتے ہیں! یہاں 'دراوڑ فیڈریشن' اور 'دراوڑ پروگریسو فیڈریشن' کے بارے میں سنا ہوگا. نہیں تو مانیئے پنڈت سندر لال جی سے پوچھ لیجئے. 'دراوڑستان' والوں کا کہنا یہ ہے :—

1. "دکھن کو اُتر سے الگ کرکے 'دراوڑستان' بنانا ضروری ہے! کیونکہ اُتر دکھن کو چوس کر غلام بنانا چاہتا ہے. پنچسالہ سکیم میں دکھن کے لئے کوئی بڑی گنجائش نہیں ہے.

2. دراوڑ اور آریوں کی تہذیبیں جدا جدا ہیں. اس لئے الگ ہونا چاہئے.

3. دکھن کی تہذیبی زبانوں پر ہندی سامراجواد کا زور و دباؤ ہونے والا ہے. ہندی یا سنسکرت آریوں کی سنسکرتی کے نشان ہیں. آریوں کا دھرم ہندو دھرم ہے. دراوڑ اپنے کو ہندو کہنا چھوڑ دیں.

4. دکھن کو 'سنٹرل گورنمنٹ' کا منھ تاکنا پڑتا ہے. 'مکمل ہند' (اکھنڈ بھارت) کہنے سے یا ایک رہنے سے دکھن آگے نہیں بڑھ سکتا."

اوپر کی دلیلیں دونوں دلوں کی ہیں. ایک حد تک ان کی رائے پہلے ٹھیک جنچتی تھی. پر ٹھیک سوچنے پر یہ انسانوں میں پھوٹ ڈالنے والی چیز معلوم ہوتی ہے. ان دونوں دلوں میں پہلے کے صدر ای. وی. رام سامی ہیں اور دوسرے کے سی. این. انادورائی ایم. اے. دونوں اپنے کو 'ریشنلسٹ' (بدھی وادی) مانتے ہیں' فری تھنکر (آزاد وچارک) مانتے ہیں. شاستر' پران جیسی کتابوں میں خاص کر 'منوسمرتی' میں جاتی بھید کے بھاؤ ہیں. اس لئے ان سب کو جلا ڈالنا چاہتے ہیں. یہ مجھے ٹھیک جنچتا ہے. اس سے وہم اور اندھ وشواس دور ہونگے. کبھی کبھی دھارمک کٹرتا والے کانگریسی نیتاؤں کے منھ سے 'آریہ سنسکرتی' 'بھارتی سنسکرتی' اور اسی کو تمام بھارت کے باشندوں کو چاہے وہ کسی بھی مذہب یا جاتی کے ہوں اپنانا چاہئے" جیسے شبد اپدیش کے روپ میں پھوٹتے ہیں. "سنسکرت بھارت کی راشٹر بھاشا ہو' وہی بھارت کی پراچین سمپتی ہے" والی غیر ذمہ دار باتیں کہنے والے لوگوں کی وجہ سے اس کا برا اثر دکھن کے دلوں پر زور سے پڑتا ہے. شری کیلاش ناتھ کاٹجو 'سنسکرت' کی تعریف کرتے نہیں

त्रिची.
4. 11. 53.

एक दक्खिनी भाई का खत

प्रिय भाई मुजीब,

तस्लीम ! आप की चिट्ठी मिली, बड़ी खुशी हुई. पहली चिट्ठी शायद बच्चों के हाथ पड़ गई हो इसलिये कहीं गुम हो गई होगी. मुझे यहां एक अच्छे घर की खोज थी.

यहां के तमिल रिसालों में ख्वाजा अब्बास, कृश्न चंदर और दूसरे तरक़्क़ी-पसंद लेखकों की कहानियां मेरी तरफ़ से अनुवाद हो कर छपती हैं. मैं यहां एक स्कूल में 'पार्ट टाइम वरकर' की हैसियत से काम कर रहा हूं इसलिये तनख्वाह कम मिलती है. "इक़्तसादी (आर्थिक) हालत" गिरी हुई है फिर भी किसी तरह 'नया हिन्द' लेता रहता हूं. दिल्ली के 'हिन्दुस्तान' (हिन्दी) में तमिल कहानियों के अनुवाद भेजने वाला हूं. मैं तो 'नया हिन्दी' परिवार का आदमी हूं इसलिये बराबर मेरी सेवाएं आप को मिलती रहेंगी. 'दौलत' कहानी के साथ ही तमिल के नामी लेखक श्री 'अखिलन' की तमिल कहानी का अनुवाद 'मंदिर का दीप' उर्दू हरूफ़ में लिख कर भेजा है. आशा है कि वह छापा होगा. बहुत जल्दी श्री अखिलन का लेख 'तीसरा रास्ता' अनुवाद कर के भेजूंगा. तमिल रिसालों के लिये लेख या अनुवाद भेजने से पन्द्रह या बीस रुपये मिलते हैं. उन से ज़ियादातर किताबें खरीदता हूं. कभी-कभी मेहनताना नहीं भी मिलता. खैर, बहुत दिन से मैं 'नया हिन्द' के 'मिशन' का खैरख्वाह हूं. इसलिये जब कभी मेरे लेख या कहानी का अनुवाद छपता है उसके लिये मुझे 'मेहनताना' देने की ज़रूरत नहीं है. पूंजीपति रिसालों से मेहनताना लेना ठीक है. लेकिन इतना ज़रूर करें कि जब मेरी कोई चीज़ 'नया हिन्द' में जगह पावे तो उस के लिये कम दाम वाली कुछ किताबें भेज दें. 'नया हिन्द' के लायक़ लेख भेजूंगा. इस बार मेहनताने के तौर पर तीन किताबें भेजें—

गीता और क़ुरान (नागरी लिखावट)
आज के शहीद „ „
झंकार „ „

एक और अर्ज़ है कि उत्तर के कुछ लेखकों के पते भी दें.

श्री राम वृक्ष शर्मा बेनीपुरी,
„ यशपाल,
„ राहुल सांकृत्यायन,
„ बेचन शर्मा (उग्र),
„ सुदर्शन,
„ रामानंद सागर,
„ रतनलाल बंसल.

ترچی۔
4. 11. '53.

ایک دکھنی بھائی کا خط

پریہ بھائی مجیب،

تسلیم ! آپکی چھٹی ملی۔ بڑی خوشی ہوئی۔ پہلی چھٹی شاید بچوں کے ہاتھ پڑ گئی ہو اسلئے کہیں گم ہوگئی ہوگی۔ مجھے یہاں ایک اچھے گھر کی کھوج تھی ۔

یہاں کے تمل رسالوں میں خواجہ عباس، کرشن چندر اور دوسرے ترقی پسند لیکھکوں کی کہانیاں میری طرف سے انوواد ہوکر چھپتی ہیں ۔ میں یہاں ایک اسکول میں پارٹ ٹائم ورکر کی حیثیت سے کام کر رہا ہوں اسلئے تنخواہ کم ملتی ہے۔ "اقتصادی (آرتھک) حالت" گری ہوئی ہے پھر بھی کسی طرح 'نیا ہند' لیتا رہتا ہوں ۔ دلی کے 'ہندستان' (ہندی) میں تمل کہانیوں کے انوواد بھیجنے والا ہوں۔ میں تو 'نیا ہند' پریوار کا آدمی ہوں اس لئے برابر میری سیوائیں آپ کو ملتی رہینگی۔ 'دولت' کہانی کے ساتھ ہی تمل کے نامی لیکھک شری 'اکھلن' کی تمل کہانی کا انوواد 'مندر کا دیپ' اردو حروف میں لکھکر بھیجا ہے۔ آشا ہے وہ شایع ہوگا ۔ بہت جلدی شری اکھلن کا لیکھ 'تیسرا راستہ' انوواد کرکے بھیجونگا ۔ تمل رسالوں کے لئے لیکھ یا انوواد بھیجنے سے پندرہ یا بیس روپئے ملتے ہیں ۔ اُن سے زیادہ‌تر کتابیں خریدتا ہوں ۔ کبھی کبھی محنتانہ نہیں بھی ملتا ۔ خیر، بہت دن سے میں 'نیا ہند' کے 'مشن' کا خیرخواہ ہوں ۔ اسلئے جب کبھی میرے لیکھ یا کہانی کا انوواد چھپتا ہے اُس کے لئے مجھے 'محنتانہ' دینے کی ضرورت نہیں ہے۔ پونجی‌پتی رسالوں سے محنتانہ لینا ٹھیک ہے۔ لیکن اتنا تو ضرور کریں کہ جب میری کوئی چیز 'نیا ہند' میں جگہ پاوے تو اس کے لئے کم دام والی کچھ کتابیں بھیج دیں۔ 'نیا ہند' کے لایق لیکھ بھیجونگا ۔ اِس بار محنتانہ کے طور پر تین کتابیں بھیجیں—

1. گیتا اور قرآن (ناگری لکھاوٹ)
2. آج کے شہید „
3. جھنکار „

ایک اور عرض ہے کہ اُتر کے کچھ لیکھکوں کے پتے بھی دیں ۔

شری رام برکش شرما بینی‌پوری،
„ یشپال،
„ راہل سانکرتیاین،
„ بیچن شرما (اُگر)،
„ سدرشن،
„ راماننّد ساگر،
„ رتن‌لال بنسل ۔

नेपाल में अमरीकी साजिश

ने आगे लिखा है कि विदेशी एजेन्ट महाराजा नेपाल के एक खास मित्र के जरिये, जो भारत में एक बड़े व्यापारी हैं, महाराजा पर दबाव डाल रहे हैं, नेपाल के गोरखा फौजी भरती अड्डे इन साजिशों की खास जगह हैं.

नेपाल में कुछ अमरीकियों की साजिशें इतनी बढ़ती जा रही हैं कि कई जगहों पर आम सभाओं में उनके खिलाफ खुली आवाजें उठाई गई हैं और राजधानी काठमांडू में भी उनके खिलाफ प्रदर्शन हुए हैं. कुछ दिन हुए नेपाल प्रजापरिषद के नेता श्री टंकप्रसाद आचार्य और नेपाली कांगरेस के नेता श्री बी० पी० कोइराला ने भी अपने बयानों में जो 'नया नेपाल' में प्रकाशित हुए थे अमरीकी खतरे पर गंभीर चिन्ता प्रकट की है. नेपाली कांगरेस के प्रमुख नेता श्री हृषीकेश शाह ने, जो पहले नेपाली राष्ट्रीय कांगरेस के (जीवराज शर्मा ग्रुप, जो अब नेपाली कांगरेस में मिल गया है) जनरल सेक्रेटरी थे, अपने एक भारती मित्र को साफ तौर पर बतलाया था कि अमरीकी एजेन्टों की साजिश बड़ी तेजी के साथ नेपाल में बढ़ती जा रही है और हालत काफी नाजुक हो गई है. लेकिन उन्होंने इसकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी भारत सरकार पर बतलाई जो इन अमरीकियों को प्रोत्साहन देती है. नेपाली राजनीति के एक विश्वस्त पत्रकार ने बताया था कि अमरीकी प्रचार विभाग (Osis) किस कुशलता के साथ नेपाली नेताओं और पदाधिकारियों और दूसरे खास-खास लोगों के बीच काम कर रहा है. कुछ नेपाल जन कांगरेस के एक प्रमुख नेता ने भी कई बार इस बात को स्वीकार किया कि डालरवाद का प्रचार जोरों से चल रहा है. नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी ने भी कुछ दिनों पहले एक लम्बा बयान निकाल कर अमरीकी साजिशों के कारनामों पर से परदा हटाया था. इस तरह नेपाल में अमरी हथकंडों के समाचार धीरे-धीरे प्रकाश में आते जा रहे हैं.

काठमांडू के म्युनिसिपलटी के चुनाव में कम्युनिस्टों को जो सफलता मिली है उससे नेपाल की राजनीति में काफी हलचल मच गई है. यह याद रखने की चीज है कि गोरखा परिषद को नेपाली कांगरेस के बराबर केवल तीन सीटें मिली हैं. कम्युनिस्टों से खतरा देख कर गोरखा परिषद कोई पैंतरा बदले तो अचरज नहीं. नेपाल और भारत दोनों ही सरकारों और दोनों जगह की जनता को सतर्क रहना जरूरी है.

نیپال میں امریکی سازش

نے آگے لکھا ہے کہ ودیشی ایجنٹ مہاراجہ نیپال کے ایک خاص متر کے ذریعہ' جو بھارت میں ایک بڑے ویاپاری ہیں' مہاراجہ پر دباؤ ڈال رہے ہیں' نیپال کے گورکھا فوجی بھرتی اڈے اِن سازشوں کی خاص جگہ ہیں ۔

نیپال میں کچھ امریکیوں کی سازشیں اتنی بڑھتی جا رہی ہیں کہ کئی جگہوں پر عام سبھاؤں میں اُن کے خلاف کھلی آوازیں اُٹھائی گئی ہیں اور راجدھانی کٹھمانڈو میں بھی اُن کے خلاف پردرشن ہوئے ہیں. کچھ دن ہوئے نیپال پرجاپریشد کے نیتا شری ٹنک پرساد آچاریہ اور نیپالی کانگریس کے نیتا شری وی. پی. کوئی‌رالا نے بھی اپنے بیانوں میں جو 'نیا نیپال' میں پرکاشت ہوئے تھے امریکی خطرے پر گمبھیر چنتا پرکٹ کی ہے ۔ نیپالی کانگریس کے پرمکھ نیتا شری ہرشی کیش شاہ نے' جو پہلے نیپالی راشٹریہ کانگریس کے (جیو راج شرما گروپ' جو اب نیپالی کانگریس میں مل گیا ہے) جنرل سکریٹری تھے' اپنے ایک بھارتی متر کو صاف طور پر بتلا دیا تھا کہ امریکی ایجنٹوں کی سازش بڑی تیزی کے ساتھ نیپال میں بڑھتی جا رہی ہے اور حالت کافی نازک ہوگئی ہے ۔ لیکن انہوں نے اس کی بہت بڑی ذمہ‌واری بھارت سرکار پر بتلائی جو اِن امریکیوں کو پروتساہن دیتی ہے. نیپالی راج نیتی کے ایک وشوست پترکار نے بتایا تھا کہ امریکی پرچار وبھاگ (Osis) کس کُشلتا کے ساتھ نیپالی نیتاؤں اور ادھیکاریوں اور دوسرے خاص خاص لوگوں کے بیچ کام کر رہا ہے. کل نیپال جن کانگریس کے ایک پرمکھ نیتا نے بھی کئی بار اِس بات کو سویکار کیا تھا کہ ڈالر واد کا پرچار زوروں سے چل رہا ہے ۔ نیپالی کمیونسٹ پارٹی نے بھی کچھ دنوں پہلے ایک لمبا بیان نکال کر امریکی سازشوں کے کارناموں پر سے پردہ ہٹایا تھا. اِس طرح نیپال میں امریکی ہتھکنڈوں کے سماچار دھیرے دھیرے پرکاش میں آتے جا رہے ہیں ۔

کٹھمانڈو کے میونسپلٹی کے چناؤ میں کمیونسٹوں کو جو سپھلتا ملی ہے اس سے نیپال کی راج نیت میں کافی ہلچل مچ گئی ہے. یہ یاد رکھنے کی چیز ہے کہ گورکھا پریشد کو نیپالی کانگریس کے برابر کیول تین سیٹیں ملی ہیں. کمیونسٹوں سے خطرہ دیکھکر گورکھا پریشد کوئی پینترا بدلے تو اچرج نہیں. نیپال اور بھارت دونوں ہی سرکاروں اور دونوں جگہ کی جنتا کو سترک رہنا ضروری ہے ۔

अमरीका के बीच बाक़ायदा सैनिक सन्धि की बातें भी सुनाई दे रही हैं. टरकी से भी फ़ौजी सुलह की बात चीत चल रही है. बरमा में अपने इरादों को पूरा करने के लिये अमरीका नहीं चाहता कि नैशनलिस्ट चीनी फ़ौजें यानी च्यांग काई शेक की फ़ौजें वहां से हटा ली जायं. बरमा हो कर चीन के यूनन प्रदेश पर आसानी से हमला किया जा सकता है. अब हम देखेंगे कि नेपाल में किस तरह उनके हथकंडे चल रहे हैं.

नेपाल में भी अमरीकी मिशनरियों, सैलानियों और तरह तरह की विकास योजनाओं के नाम पर अमरीकी ख़ानपांडों की बाढ़ आ रही है. नेपाल के साथ खुला राज दूती सम्बन्ध रहने के कारन उन्हें आसानी भी होती है. अमरीकी ख़ान पांडे सैलानी और फ़ौजी मिशनों वाले नेपाल के फ़ौजी महत्व के स्थानों का दौरा करते हैं और उनके चित्र लेते हैं. डालरों के लालच में नेपाली नेताओं और पदाधिकारियों को फंसाया जा रहा है. नेपाली मिशनरियों में भी पिछले फ़ौजी अफ़सरों और ख़ुफ़िया विभाग के लोगों को पादरियों की जगह नियुक्त किया जा रहा है. एक पुराने बदनाम फ़ौजी एक्सपर्ट को काठमांडू की मिशन लाइब्रेरी का लाइब्रेरियन बनाया गया. लेकिन कहते हैं भेद खुल जाने पर सरकार ने उसे निकाल दिया. नेपाल में मिशनरियों के ख़तरे के बारे में लखनऊ के 'पीपुल' (People) के संवाददाता ने लिखा था कि—"कुछ महीने हुए नैपाल में मिशनरियों की तादाद इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी थी कि नेपाल की सरकार भी उसमें ख़तरा देखने लगी. पर चूंकि महाराजा के कुछ बहुत पास के सलाहकार भी उस विदेशी शक्ति के ऐजन्ट हैं वह सारा मामला दबा दिया गया. (मॉडर्न रिव्यू, अगस्त 1953)

इन अमरीकी एजेन्टों ने रानाओं और उनकी गोरखा परिषद् से सांठ गांठ की. वह गोरखा परिषद् को कम्युनिस्टों की दिनोंदिन बढ़ती ताक़त के ख़िलाफ़ खड़ा करना चाहते हैं. लेकिन गोरखा परिषद इतनी साम्प्रदायिक बदनाम है कि उसे सत्ता हथियाने के लिये आगे बढ़ाने में इन्हें कठिनाई हो रही है. 'पीपुल' का संवाददाता फिर लिखता है कि—"वह विदेशी एजेन्ट चाहते हैं कि नेपाल में लगातार अराजकता रहे. ताकि कुछ दिनों बाद आगे चल कर वह उसे एक और कोरिया या काश्मीर बना सकें और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय साज़िशें वहां ख़ूब चल सकें."

कहा जाता है कि इसी कारन वह कोइराला भाइयों में एकता नहीं होने देना चाहते. शायद अभी अभी जो कोइराला भाइयों में एकता सी हुई है वह केवल कम्युनिस्टों की जीत से घबराहट के कारन हुई है. 'पीपुल' के संवाददाता

امریکہ کے بیچ باقاعدہ سینک سندھی کی باتیں بھی سنائی دے رہی ہیں . ترکی سے بھی فوجی صلح کی بات چیت چل رہی ہے . برما میں اپنے ارادوں کو پورا کرنے لئے کے امریکہ نہیں چاہتا کہ نیشنلسٹ چینی فوجیں یعنی چیانگ کائی شیک کی فوجیں وہاں سے ہٹالی جائیں . برما ہو کر چین کے یونن پردیش پر آسانی سے حملہ کیا جا سکتا ہے . اب ہم دیکھیں گے کہ نیپال میں کس طرح ان کے ہتھکنڈے چل رہے ہیں .

نیپال میں بھی امریکی مشنریوں' سیلانیوں اور طرح طرح کی وکاس یوجناؤں کے نام پر امریکی کھان پانڈوں کی باڑھ آ رہی ہے . نیپال کے ساتھ کھلا راج دوتی سمبندھ رہنے کے کارن انہیں آسانی بھی ہوتی ہے . امریکی کھان پانڈے' سیلانی اور فوجی مشنوں والے نیپال کے فوجی مہتو کے استھانوں کا دورا کرتے ہیں اور ان کے چتر لیتے ہیں . ڈالروں کے لالچ میں نیپالی نیتاؤں اور پدادھکاریوں کو پھنسایا جا رہا ہے . نیپالی مشنریوں میں بھی پچھلے فوجی افسروں اور خفیہ وبھاگ کے لوگوں کو پادریوں کی جگہ نیوکت کیا جا رہا ہے. ایک پرانے بدنام فوجی ایکسپرٹ کو کاٹھمانڈو کی مشن لائبریری کا لائبریرین بنایا گیا . لیکن کہتے ہیں بھید کھل جانے پر سرکار نے اسے نکال دیا. نیپال میں مشنریوں کے خطرے کے بارے میں لکھنؤ کے 'پیپل' (People) کے سمواددانا نے لکھا تھا کہ—"کچھ مہینے ہوئے نیپال میں مشنریوں کی تعداد اتنی تیزی سے بڑھنے لگی تھی کہ نیپال کی سرکار بھی اس میں خطرہ دیکھنے لگی . پر چونکہ مہاراجہ کے کچھ بہت پاس کے صلاحکار بھی اس ودیشی شکتی کے ایجنٹ ہیں وہ سارا معاملہ دبا دیا گیا . (ماڈرن ریویو اگست 1953)

ان امریکی ایجنٹوں نے راناؤں اور انکی گورکھا پریشد سے سانٹھ گانٹھ کی . وہ گورکھا پریشد کو کمیونسٹوں کی دنوں دن بڑھتی طاقت کے خلاف کھڑا کرنا چاہتے ہیں . لیکن گورکھا پریشد اتنی سامپردائک بدنام ہے کہ اسے ستا ہتھیانے کے لئے آگے بڑھانے میں انہیں کٹھنائی ہو رہی ہے. 'پیپل' کا سمواددانا پھر لکھتا ہے کہ—"وہ ودیشی ایجنٹ چاہتے ہیں کہ نیپال میں لگاتار اراجکتا رہے تاکہ کچھ دنوں بعد آگے چل کر وہ اسے ایک اور کوریا یا کاشمیر بنا سکیں اور ان کی انترراشٹریہ سازشیں وہاں خوب چل سکیں ."

کہا جاتا ہے کہ اسی کارن یہ کوئرالا بھائیوں میں ایکتا نہیں ہونے دینا چاہتے . شاید ابھی ابھی جو کوئرالا بھائیوں میں ایکتا سی ہوئی ہے وہ کیول کمیونسٹوں کی جیت سے گھبراہٹ کے کارن ہوئی ہے. پیپل کے سمواددانا

नेपाल में अमरीकी साज़िश

(परमानन्द सिंह 'मदन')

आज़ाद काश्मीर और आज़ाद नागा देश के आन्दोलन के पीछे अमरीकी हाथ भी था यह आम तौर पर ज़ाहिर हो चुका है. हम सुन चुके हैं कि किस तरह अमरीकी मिशनरियों, नेताओं, सैलानियों, और राष्ट्र संघ के अमरीकी निगहबानों ने उस समय के प्रधान मंत्री शेख़ अब्दुल्ला को आज़ाद काश्मीर का सब्ज़बाग़ दिखला कर भारत पाकिस्तान और काश्मीर तीनों को मुश्किल में डाल दिया था. काश्मीर की तरह आसाम का फ़ौजी महत्व भी कम नहीं है. यह भी जनवादी चीन की सीमा पर है. आसाम के चाय बगानों और उसके आस पास के इलाक़ों में अंगरेज़ पूंजीपतियों और विदेशी मिशनरियों का अब भी साम्राज्य क़ायम है. प्रधान मंत्री नेहरू और घर मंत्री काटजू ने भी विदेशी मिशनरियों को आसाम के नागा देश में उनकी साज़िशों के लिये कड़ी चेतावनी दी थी. अभी भी उनकी साज़िश इन इलाक़ों में बन्द नहीं हुई है.

हमारा पड़ोसी देश नेपाल भी अमरीकी साज़िशों से बचा नहीं. काश्मीर और नागा प्रदेश की तरह नेपाल की सीमा भी जनवादी तिब्बत से मिलती है. फ़ौजी और सामराजी निगाह से इस का महत्व भी आसानी से आंका जा सकता है. काश्मीर, नागा प्रदेश और नेपाल की यह साज़िशें उस सामराजी प्रोग्राम के अंग हैं जिस से अमरीका सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट देशों के चारों तरफ़ फ़ौजी अड्डों का जाल बिछाना चाहता है. नार्वे, डेनमार्क, जर्मनी, फ़्रांस, इटली, ग्रीस और टर्की के फ़ौजी अड्डों से वह यूरोप में समाजवादी इलाक़े के चारों ओर लोहे का तौक़ पहना चुका है. एशिया में अलास्का, अल्यूशियन, जापान, कोरिया, ओकीनावा, फ़ारमोसा, फ़िलिपाइन, हिन्दचीन और थाईलैंड में अमरीकी अड्डों की दीवाल खड़ी हो चुकी है. यूरोप और एशिया की इस फ़ौजी दीवाल को मिलाने के लिये बरमा, आसाम, भूटान, सिक्कम, नेपाल, हिमांचल प्रदेश और काश्मीर में और पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में फ़ौजी अड्डों की ज़रूरत है. ईरान में अमरीका दोस्त ज़ाहिदी सरकार क़ायम हो चुकी है. वहां पहले से भी अमरीकी अड्डे बने हुए हैं. अफ़ग़ानिस्तान में 'विकास योजनाओं' द्वारा अमरीकी डाक्टरों और ज्ञान पंडों का प्रवेश शुरू हो गया है. पाकिस्तान शुरू से ही अमरीका और इंगलैंड का साथी है ही. कहते हैं चित्राल, गिलगित और स्कार्दू में बड़े बड़े हवाई अड्डे बन चुके हैं. पाकिस्तान और

نیپال میں امریکی سازش

(پرمانند سنگھ ' مدن ')

آزاد کاشمیر اور آزاد ناگا دیش کے آندولن کے پیچھے امریکی ہاتھ بھی تھا یہ عام طور پر ظاہر ہو چکا ہے . ہم سن چکے ہیں کہ کس طرح امریکی مشنریوں' نیتاؤں' سیلانیوں اور راشٹرسنگھ کے امریکی نگہبانوں نے اس سمے کے پردھان منتری شیخ عبداللہ کو آزاد کاشمیر کا سبز باغ دکھلا کر بھارت' پاکستان اور کاشمیر تینوں کو مشکل میں ڈال دیا تھا . کاشمیر کی طرح آسام کا فوجی مہتو بھی کم نہیں ہے . وہ بھی جن وادی چین کی سیما پر ہے . آسام کے چائے بگانوں اور اس کے آس پاس کے علاقوں میں انگریز پونجی پتیوں اور ودیشی مشنریوں کا اب بھی سامراج قایم ہے . پردھان منتری نہرو اور گھر منتری کاٹجو نے بھی ودیشی مشنریوں کو آسام کے ناگا دیش میں اُن کی سازشوں کے لئے کڑی چیتاونی دی تھی. ابھی بھی اُن کی سازش اِن علاقوں میں بند نہیں ہوئی ہے .

ہمارا پڑوسی دیش نیپال بھی امریکی سازشوں سے بچا نہیں' کاشمیر اور ناگا پردیش کی طرح نیپال کی سیما بھی جن وادی تبت سے ملتی ہے . فوجی اور سامراجی نگاہ سے اس کا مہتو بھی آسانی سے آنکا جاسکتا ہے . کاشمیر' ناگا پردیش اور نیپال کی یہ سازشیں اس سامراجی پروگرام کے انگ ہیں جس سے امریکہ سوشلسٹ یا کمیونسٹ دیشوں کے چاروں طرف فوجی اڈوں کا جال بچھانا چاہتا ہے . ناروے' ڈینمارک' جرمنی' فرانس' اٹلی' گریس اور ترکی کے فوجی اڈوں سے وہ یورپ میں سماج وادی علاقے کے چاروں اور لوہے کا طوق پہنا چکا ہے . ایشیا میں الاسکا' الیوشین' جاپان' کوریا' اوکی ناوا' فارموسا' فلی پائن' ہندچین اور تھائی لینڈ میں امریکی اڈوں کی دیوال کھڑی ہو چکی ہے . یورپ اور ایشیا کی اس فوجی دیوال کو ملانے کے لئے برما' آسام' بھوٹان' سکم' نیپال' ہماچل پردیش اور کاشمیر میں اور پاکستان' افغانستان اور ایران میں فوجی اڈوں کی ضرورت ہے . ایران میں امریکہ دوست زاہدی سرکار قایم ہو چکی ہے . وہاں پہلے سے بھی امریکی اڈے بنے ہوئے ہیں۔ افغانستان میں 'وکاس یوجناؤں' دوارا امریکی ڈاکٹروں اور گیان پنڈتوں کا پرویش شروع ہوگیا ہے . پاکستان شروع سے ہی امریکہ اور انگلینڈ کا ساتھی ہے ہی. کہتے ہیں چترال' گلگت اور اسکاردو میں بڑے بڑے ہوائی اڈے بن چکے ہیں۔ پاکستان اور

के साथ निकल जायं, उन्हें चाहिये कि लगातार कोशिश करके और अभ्यास कर के सबके अन्दर एक ही आत्मा को देखें और अपनी छोटी सी खुदी को मार कर सब के साथ अपनी एकता को अनुभव करें और सबके लिये अपने दिल में प्रेम पैदा करें.

वेद में लिखा है :—

"मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि पश्येयम्"

यानी ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि :—"हम सब प्रानियों को मित्र यानी दोस्त की आंख से ही देखें."

फ़ारसी की मशहूर किताब माक़ुक़िमां का सूफ़ी लेखक अपनी किताब में बार बार नीचे के शेर को दोहराता है :—

ऐ बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
हर कि बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त

यानी ऐ भाई ! अपने दिल की आंखों से किसी को सिवाय दोस्त के और कुछ मत देख, क्योंकि जो कुछ तू देखता है जान ले कि वह सब उसी एक अल्लाह का ज़हूर है.

हिन्दुस्तान के मशहूर संत कवि सूरदास ने कहा है :—

अब हों कासों बैर करौं
कहत पुकारत प्रभु निज मुख ते
घट घट हौं बिहरौं

विष्णु पुरान में लिखा है :—

"बुद्धिमान लोगों से यह जान कर कि ईश्वर सब प्रानियों के रूप में है, सब प्रानियों से दिल से प्यार और सबकी सेवा करनी चाहिये."

उपनिषद् में लिखा है :—

"जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर सब प्रानियों को देखता है और अपनी आत्मा को सब प्रानियों के अन्दर देखता है वह फिर कभी धोका नहीं खा सकता, कभी किसी से द्वेष नहीं कर सकता."

'हमा ओस्त' (सब वही है) के ठीक वही मानी हैं जो 'सर्वम् खलु इदं ब्रह्म' (यह सब ब्रह्म है) के हैं. 'हमा ओस्त' से ही क़ुदरती नतीजा निकलता है 'हमा दोस्त' यानी सब दोस्त ही दोस्त हैं.

यही असली भक्ति का मार्ग है. सूफ़ी इसे 'तसफ़ीयए दिल' यानी दिल को पाक साफ़ करना कहते हैं. इसी से लफ़्ज़ 'सूफ़ी' और 'तसव्वुफ़' बने हैं. योग शास्त्र में इसे 'चित्त प्रसादनम्' और 'चित्त परिकर्म' कहा गया है. दोनों के वही मानी हैं जो 'तसफ़ीयए दिल' के सूफ़ी किताबों में और योग शास्त्र में दोनों ने इस दरजे तक पहुंचने के लिये तरह तरह के अभ्यास, मश्क़, यम, नियम, व्रत, रोज़े और मजाहिदे बताए गए हैं. आहिस्ता आहिस्ता इस रास्ते पर चल कर आदमी खुदी से पाक साफ़ हो कर पूर्ण पुरुष यानी मर्दे कामिल बनता है. खुदी का मिटना ही अन्दर के खुदा का जागना है.

کے ساتھ نکل جائیں' انہیں چاہئے کہ لگاتار کوشش کرکے اور ابھیاس کرکے سب کے اندر ایک ہی آتما کو دیکھیں اور اپنی چھوٹی سی خودی کو مار کر سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو انوبھو کریں اور سب کے لئے اپنے دل میں پریم پیدا کریں۔

وید میں لکھا ہے :—

" متر سیہ چکشوشا سروانی بھوتانی پشییم" یعنی ایشور سے پرارتھنا کی گئی ہے کہ :—" ہم سب پرانیوں کو متر یعنی دوست کی آنکھ سے ہی دیکھیں۔"

فارسی کی مشہور کتاب ماسوقیما کا صوفی لیکھک اپنی کتاب میں بار بار نیچے کے شعر کو دہراتا ہے :—

اے بچشمان دل مبیں جز دوست
ہرکہ بینی بدان کہ مظہر اوست

یعنی اے بھائی ! اپنے دل کی آنکھوں سے کسی کو سوائے دوست کے اور کچھ مت دیکھ کیونکہ جو کچھ دیکھتا ہے جان لے کہ وہ سب اسی ایک اللہ کا ظہور ہے۔

ہندستان کے مشہور سنت کوی سورداس نے کہا ہے :—

اب ہوں کاسوں بیر کروں
کہت پکارت پربھو نج مکھ تے
گھٹ گھٹ ہوں بہروں

وشنو پران میں لکھا ہے :—

" بدھمان لوگوں سے یہ جان کر کہ ایشور سب پرانیوں کے روپ میں ہے' سب پرانیوں سے دل سے پیار اور سب کی سیوا کرنی چاہئے۔"

اپنشد میں لکھا ہے :—

" جو کوئی اپنی آتما کے اندر سب پرانیوں کو دیکھتا ہے اور اپنی آتما کو سب پرانیوں کے اندر دیکھتا ہے وہ پھر کبھی دھوکا نہیں کھا سکتا' کبھی کسی سے دویش نہیں کر سکتا۔"

' ہما اوست ' (سب وہی ہے) کے ٹھیک وہی معنی ہیں جو سروم کھلو ادم برہم' (یہ سب برہم ہے) کے ہیں۔ 'ہما اوست' سے ہی قدرتی نتیجہ نکلتا ہے ' ہما دوست' یعنی سب دوست ہی دوست ہیں۔

یہی اصلی بھکتی کا مارگ ہے۔ صوفی اسے ' تصفیۂ دل ' یعنی دل کو پاک صاف کرنا کہتے ہیں۔ اسی سے لفظ ' صوفی ' اور ' تصوف ' بنے ہیں۔ یوگ شاستر میں اسے چت پرسادنم' اور ' چت پری کرم ' کہا گیا ہے۔ دونوں کے وہی معنی ہیں جو تصفیۂ دل' کے صوفی کتابوں میں اور یوگ شاستر میں۔ دونوں نے اس درجے تک پہنچنے کے لئے طرح طرح کے ابھیاس' مشق' یم' نیم' برت' روزے اور مجاہدے بتائے گئے ہیں۔ آہستہ آہستہ اس راستے پر چل کر آدمی خودی سے پاک صاف ہو کر پورن پرش یعنی مرد کامل بنتا ہے۔ خودی کا مٹنا ہی اندر کے خدا کا جاگنا ہے۔

देवियों—अदिति और दिति—से शादी की. अदिति रूहानी और नूरी है. दिति मादी और नारी है. पहली से उसके आदित्य और देवता पैदा हुए. दूसरी से दैत्य यानी शैतान पैदा हुए. दुनिया के अन्दर वह सौतेले भाई हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहते हैं. कभी जीत एक की होती है, कभी दूसरे की.

यहूदी, ईसाई और इस्लामी रिवायतों में खुदा ने फ़रिश्तों को बनाया. उनमें सब से बड़ा अज़ाज़ील एकदम खुदी, अहंकार यानी ग़रूर में आ कर बग़ावत कर बैठा और फिर शैतानों का सरदार बन गया. फिर अल्लाह ने जन्नत का बाग़ बनाया जिसे सतयुग कहा जा सकता है. उसमें आदम को बैठाया जो उस समय निष्कलंक था. उस में मर्द औरत का फ़र्क़ न था. फिर अल्लाह ने आदम की एक पसली निकाल कर उससे हव्वा को बनाया. इस तरह आदमी धीरे धीरे एक से दो यानी आदमी से मर्द और औरत हुआ. फिर अल्लाह ने उन दोनों से कह दिया कि ज्ञान के दरख़्त का फल न खाना. पर शैतान ने बाग़ में घुस कर उन्हें बहकाया. उन्होंने वह फल खा लिया. वह एक दूसरे को अपने से अलग समझने लगे. बाग़ से निकाल दिये गए. उन्होंने अपने जिस्मों को ढका. फिर नीचे नीचे मादी दुनिया में गिरते चले गए. यह शुरू का गुनाह ही अविद्या यानी माया थी. धीरे धीरे 'ईसा' यानी रूहानी ज्ञान आदमी में पैदा हुआ. वह फिर बच्चे की तरह मासूम और बेगुनाह बना. यह उसका दूसरा जन्म और दूसरा बचपन था. यूं वह अवनति से उन्नति की तरफ़ यानी तनज़्ज़ुल से तरक़्क़ी की तरफ़ मुड़ा और धीरे धीरे फिर से जन्नत यानी स्वर्ग का हक़दार हुआ.

योग शास्त्र में लिखा है कि अविद्या से ही अहंकार, राग, द्वेष और अभिनिवेष पैदा हुए. इसी से सुख दुख पैदा हुए. योग और वेदान्त के अनुसार सुख और दुख दोनों क्लेश हैं.

पारसी किताबों में भी यह गहरी रूहानी सचाई अपने ढंग से स्पैन्तमैन्यू और अंग्रमैन्यू की लगातार लड़ाइयों के पैराए में बयान की गई है.

दुनिया में कोई चीज़ भलाई या बुराई से बिलकुल खाली नहीं होती. दोनों साथ साथ चलती हैं.

महा भारत में लिखा है :—

"दुनिया में न कोई चीज़ ऐसी है जिसमें केवल गुन ही गुन यानी भलाई ही भलाई हो, और न कोई चीज़ ऐसी है जिसमें केवल दोष ही दोष यानी बुराई ही बुराई हो."

यही ज़िन्दगी का वह तंग रास्ता है जो बाल के बराबर चौड़ा है.

जो हमें यह बताती हैं कि इस बारीक रास्ते पर से, इस तलवार की धार के बराबर पैने रास्ते पर से सलामती

دیویوں — ادتی اور دتی — سے شادی کی ۔ ادتی روحانی اور نوری ہے ۔ دتی مادی اور ناری ہے ۔ پہلی سے اس کے آدتیہ اور دیوتا پیدا ہوئے ۔ دوسری سے دیتیہ یعنی شیطان پیدا ہوئے ۔ دنیا کے اندر یہ سوتیلے بھائی ہمیشہ ایک دوسرے سے لڑتے رہتے ہیں ۔ کبھی جیت ایک کی ہوتی ہے، کبھی دوسرے کی ۔

یہودی، عیسائی اور اسلامی روایتوں میں خدا نے فرشتوں کو بنایا ۔ ان میں سب سے بڑا عزازیل ایکدم خودی، اہنکار یعنی غرور میں آکر بغاوت کر بیٹھا اور پھر شیطانوں کا سردار بن گیا ۔ پھر اللہ نے جنت کا باغ بنایا جسے ست یگ کہا جا سکتا ہے ۔ اس میں آدم کو بٹھایا جو اس سمے نشکلنک تھا ۔ اس میں مرد عورت کا فرق نہ تھا ۔ پھر اللہ نے آدم کی ایک پسلی نکال کر اس سے حوا کو بنایا ۔ اس طرح آدمی دھیرے دھیرے ایک سے دو یعنی آدمی سے مرد اور عورت ہوا ۔ پھر اللہ نے ان دونوں سے کہہ دیا کہ گیان کے درخت کا پھل نہ کھانا ۔ پھر شیطان نے باغ میں گھس کر انہیں بہکایا ۔ انہوں نے وہ پھل کھا لیا ۔ وہ ایک دوسرے کو اپنے سے الگ سمجھنے لگے ۔ باغ سے نکال دیئے گئے ۔ انہوں اپنے جسموں کو ڈھکا ۔ پھر نیچے نیچے مادی دنیا میں گرتے چلے گئے ۔ یہ شروع کا گناہ ہی اودیا یعنی مایا تھی ۔ دھیرے دھیرے 'عیسیٰ' یعنی روحانی گیان آدمی میں پیدا ہوا ۔ وہ پھر بچے کی طرح معصوم اور بے گناہ بنا ۔ یہ اس کا دوسرا جنم اور دوسرا بچپن تھا ۔ یوں وہ اونتی سے انتی کی طرف یعنی تنزل سے ترقی کی طرف مڑا اور دھیرے دھیرے پھر سے جنت یعنی سورگ کا حقدار ہوا ۔

یوگ شاستر میں لکھا ہے کہ اودیا سے ہی اہنکار، راگ، دویش اور ابھی نویش پیدا ہوئے ۔ اسی سے سکھ دکھ پیدا ہوئے ۔ یوگ اور ویدانت کے انوسار سکھ اور دکھ دونوں کلیش ہیں ۔

پارسی کتابوں میں بھی یہ گہری روحانی سچائی اپنے ڈھنگ سے اسپینتمینیو اور انگرومینیو کی لگاتار لڑائیوں کے پیرائے میں بیان کی گئی ہے ۔

دنیا میں کوئی چیز بھلائی یا برائی سے بالکل خالی نہیں ہوتی — دونوں ساتھ ساتھ چلتی ہیں ۔

مہا بھارت میں لکھا ہے :—

"دنیا میں نہ کوئی چیز ایسی ہے جس میں کیول گن ہی گن یعنی بھلائی ہی بھلائی ہو، اور نہ کوئی چیز ایسی ہے جس میں کیول دوش ہی دوش یعنی برائی ہی برائی ہو ۔"

یہی زندگی کا وہ تنگ راستہ ہے جو بال کے برابر چوڑا ہے ۔

جو ہمیں یہ جتاتی ہیں کہ اس باریک راستے پر سے، اس تلوار کی دھار کے برابر پینے راستے پر سے سلامتی

के बीच केवल एक बाल की चौड़ाई के बराबर फ़ासला है. दोनों हर वक़्त हमारे अन्दर हैं. कभी एक हावी हो जाती है, कभी दूसरी. जब हम किसी को दुख से बचाना चाहते हैं तो हम स्वर्ग की तरफ़ बढ़ते हैं. जब हम अपने को बचाने वाला मान कर नेकनामी लेना चाहते हैं तो हम नरक की तरफ़ झुक जाते हैं.

क़ुरान में लिखा है :—

"जहन्नुम के ऊपर से एक पुल जाता है जो बाल की बराबर चौड़ा और तलवार की तरह पैना है. सब रूहों को इस पुल पर से जाना पड़ता है. केवल वह रूहें इसे पार कर सकती हैं जो नेक हैं."

उपनिषद में लिखा है :—

"बुद्धिमान लोगों ने हमें बताया है कि वह पुराना रास्ता छुरे की धार की तरह पैना है. इस पर चल सकना बहुत कठिन है."

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"'चिनवत' नाम के पुल को हम तभी पार कर सकते हैं जब हमारी अन्तरात्मा (ज़मीर), नेकी, और आत्म-संयम (अपनी नफ़्स पर क़ाबू) यह तीनों हमें उंगली पकड़ कर ले चलें. वह अभागी आत्माएं जिन के अन्दर से उन पर लानत होती रहती है, जब उस पुल पर आती हैं जो बुरे और भले को अलग अलग करता है, तो असत्य यानी नाइक़ के घर में ढकेल दी जाती हैं जहां उन्हें बहुत बहुत दिनों तक कष्ट भोगने पड़ते हैं."

एक और पारसी किताब विश्तास्प में लिखा है :—

"नेक आदमी की रूह, नेकी की ख़ुशी में, मशहूर, साफ़ और लम्बे 'चिनवत' पुल पर से, अपनी नेकी और सचाई की मदद से, साफ़ और सलामती के साथ पार निकल जाती है."

इंजील में लिखा है :—

"जो रास्ता सच्ची ज़िन्दगी तक जाता है वह बहुत तंग रास्ता है. उसका दरवाज़ा बहुत छोटा सा दरवाज़ा है. बहुत कम उसे पाते हैं. लेकिन ईश्वर का राज कहीं बाहर नहीं है, वह तुम्हारे ही अन्दर है."

यानी यह कि हमारा 'शुद्धम मनस' भी हमारे अन्दर है और 'अशुद्धम मनस' भी हमारे अन्दर है. नफ़्से रहमानी भी हमारे अन्दर है और नफ़्से अम्मारा भी हमारे अन्दर है. एक ऐसी बारीक रेखा जो दिखाई न दे इन दोनों को एक दूसरे से अलग करती है. इनमें से एक से हट कर दूसरे की तरफ़ जाना बहुत कठिन भी है और बहुत आसान भी.

वेदों और पुरानों में बार बार कथाएं आती हैं कि ब्रह्मा के एक मानसपुत्र कश्यप ने धरती माता की दो

کے بیچ کیول ایک بال کی چوڑائی کے برابر فاصلہ ہے. دونوں ہر وقت ہمارے اندر ہیں. کبھی ایک حاوی ہوجاتی ہے، کبھی دوسری. جب ہم کسی کو دکھ سے بچانا چاہتے ہیں تو ہم سورگ کی طرف بڑھتے ہیں. جب ہم اپنے کو بچانے والا مان کر نیک نامی لینا چاہتے ہیں تو ہم نرک کی طرف جھک جاتے ہیں.

قرآن میں لکھا ہے :—

"جہنم کے اوپر سے ایک پل جاتا ہے جو بال کے برابر چوڑا اور تلوار کی طرح پینا ہے. سب روحوں کو اس پل پر سے جانا پڑتا ہے. کیول وہ روحیں اسے پار کرسکتی ہیں جو نیک ہیں."

اپ نشد میں لکھا ہے :—

"بدھیمان لوگوں نے ہمیں بتایا ہے کہ وہ پرانا راستہ چھرے کی دھار کی طرح پینا ہے. اس پر چل سکنا بہت کٹھن ہے."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

"چنوت نام کے پل کو ہم تبھی پار کرسکتے ہیں جب ہماری انتراتما (ضمیر)، نیکی، اور آتم سنیم (اپنی نفس پر قابو) یہ تینوں ہمیں انگلی پکڑ کر لے چلیں. وہ ابھاگی آتمائیں جن کے اندر سے ان پر لعنت ہوتی رہتی ہے، جب اس پل پر آتی ہیں جو برے اور بھلے کو الگ الگ کرتا ہے، تو اسَت یعنی ناحق کے گھر میں ڈھکیل دی جاتی ہیں جہاں انہیں بہت بہت دنوں تک کشٹ بھوگنے پڑتے ہیں."

ایک اور پارسی کتاب وشتاسپ میں لکھا ہے :—

"نیک آدمی کی روح، نیکی کی خوشی میں، مشہور، صاف اور لمبے 'چنوت' پل پر سے، اپنی نیکی اور سچائی کی مدد سے، صاف اور سلامتی کے ساتھ پار نکل جاتی ہے."

انجیل میں لکھا ہے :—

"جو راستہ سچی زندگی تک جاتا ہے وہ بہت تنگ راستہ ہے. اس کا دروازہ بہت چھوٹا سا دروازہ ہے. بہت کم اسے پاتے ہیں. لیکن ایشور کا راج کہیں باہر نہیں ہے، وہ تمہارے ہی اندر ہے."

یعنی یہ کہ ہمارا 'شدھم منس' بھی ہمارے اندر ہے اور 'اشدھم منس' بھی ہمارے اندر ہے. نفس رحمانی بھی ہمارے اندر ہے اور نفس امارا بھی ہمارے اندر ہے. ایک ایسی باریک ریکھا جو دکھائی نہ دے ان دونوں کو ایک دوسرے سے الگ کرتی ہے. ان میں سے ایک سے ہٹ کر دوسرے کی طرف جانا بہت کٹھن بھی ہے اور بہت آسان بھی.

ویدوں اور پرانوں میں بار بار کتھائیں آتی ہیں کہ برہما کے ایک مانس پتر کشیپ نے دھرتی ماتا کی دو

खुदी को मिटाना खुदा को जानना है

(डाक्टर भगवान दास)

जिस तरह ज्ञान यानी मारफ़त की राह में इसी तरह भक्ति यानी इश्क़ की राह में भी एक बहुत बड़ा खतरा है. खतरा यह है कि आदमी अपने अन्दर के खुदा को खुदी से अलग नहीं कर पाता, यहां तक कि वह अक्सर खुदी को ही खुदा समझ बैठता है. किसी एक आदमी या देवी देवता के प्रेम को वह पूरी ईश्वर भक्ति समझ लेता है. इश्क़े मजाज़ी को वह इश्क़े हक़ीक़ी मान बैठता है. काम और राग एक तरह की चीज़ें हैं. प्रेम और भक्ति दूसरी तरह की. इनके फ़रक़ को ठीक ठीक समझ सकना कभी कभी बहुत कठिन हो जाता है. सूफ़ी लोग आदमी के अन्दर पांच तरह का नफ़्स यानी आपा मानते हैं. एक—'नफ़से लव्वामा' यानी आदमी के आपे का वह पहलू जो उसे बुराई से आगाह करता रहता है. दूसरे—'नफ़्से मुतमइन्ना' यानी वह नफ़्स जिसने इतमिनान, सकून यानी शान्ति हासिल कर ली है. तीसरे—'नफ़्से मुलहिमा' यानी वह नफ़्स जिसे ईश्वर से इलहाम यानी प्रतिभा हासिल होती है. चौथे—'नफ़्से रहमानी' यानी वह नफ़्स जिसमें अल्लाह की तरह रहम या दया भर जाती है. पांचवें—'नफ़्से अम्मारा' यानी वह नफ़्स जो इस दुनिया के खेल कूद, ऐश आराम में फंसा हुआ है.

संस्कृत में नफ़्स का तरजुमा 'चित्तम' भी किया जा सकता है. इस तरह नफ़्से लव्वामा हुआ निषेध चित्तम. नफ़्से मुतमइन्ना हुआ प्रशम चित्तम. नफ़्से मुलहिमा हुआ प्रतिभा चित्तम या योग चित्तम. नफ़्से रहमानी करुणा चित्तम और नफ़्से अम्मारा तृष्णा चित्तम.

इन में पहले चार 'शुद्धम मनस' में शामिल हैं और पांचवां 'अशुद्धम मनस' एक ऊपर का 'स्व' यानी आपा है दूसरा नीचे का 'स्व'. इन दोनों में फ़रक़ न कर सकने की वजह से ही 'स्वराज' 'शैतानी राज' हो जाता है.

उपनिषद में लिखा है :—

"इस जिस्मानी ज़िन्दगी रूपी दरख़्त के ऊपर दो पंछी दो तरह के बैठे हुए हैं. दोनों के पर बड़े सुन्दर हैं. दोनों साथ साथ पैदा हुए हैं और एक दूसरे के साथ साथ रहते हैं. इन में से एक दरख़्त के खट्टे मीठे फलों को खाता रहता है और उनका सुख दुख भोगता रहता है, और दूसरा बिना कुछ खाए दया और करुणा से भरा हुआ अपने साथी की तरफ़ देखता रहता है."

सचमुच अपने अन्दर के इस धोके से बच सकना बहुत ही कठिन है. स्वर्ग और नरक, जन्नत और दोज़ख़

خودی کو مٹانا خدا کو جاننا ہے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

جس طرح گیان یعنی معرفت کی راہ میں اسی طرح بھکتی یعنی عشق کی راہ میں بھی ایک بہت بڑا خطرہ ہے . خطرہ یہ ہے کہ آدمی اپنے اندر کے خدا کو خودی سے الگ نہیں کرپاتا' یہاں تک کہ وہ اکثر خودی کو ہی خدا سمجھ بیٹھتا ہے . کسی ایک آدمی یا دیوی دیوتا کے پریم کو وہ پوری ایشور بھکتی سمجھ لیتا ہے . عشق مجازی کو وہ عشق حقیقی مان بیٹھتا ہے . کام اور راگ ایک طرح کی چیزیں ہیں . پریم اور بھکتی دوسری طرح کی . ان کے فرق کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکنا کبھی کبھی بہت کٹھن ہو جاتا ہے . صوفی لوگ آدمی کے اندر پانچ طرح کا نفس یعنی آپا مانتے ہیں . ایک—'نفس لوامہ' یعنی آدمی کے آپے کا وہ پہلو جو اسے برائی سے آگاہ کرتا رہتا ہے . دوسرے—'نفس مطمئنہ' یعنی وہ نفس جس نے اطمینان' سکون یعنی شانتی حاصل کرلی ہے . تیسرے—'نفس ملہمہ' یعنی وہ نفس جسے ایشور سے الہام یعنی پرتبھا حاصل ہوتی ہے . چوتھے—'نفس رحمانی' یعنی وہ نفس جس میں اللہ کی طرح رحم یا دیا بھرجاتی ہے . پانچویں—'نفس امارہ' یعنی وہ نفس جو اس دنیا کے کھیل کود' عیش آرام میں پھنسا ہوا ہے .

سنسکرت میں نفس کا ترجمہ چتم بھی کیا جاسکتا ہے . اس طرح نفس لوامہ ہوا نشیدھ چتم. نفس مطمئنہ ہوا پرشم چتم. نفس ملہمہ ہوا پرتبھا چتم یا یوگ چتم. نفس رحمانی کرونا چتم اور نفس امارہ ترشنا چتم .

ان میں پہلے چار 'شدھم منس' میں شامل ہیں اور پانچواں 'اشدھم منس' ایک اوپر کا 'سوا' یعنی آپا ہے دوسرا نیچے کا 'سوا' ان دونوں میں فرق نہ کرنے کی وجہ سے ہی 'سوراج' 'شیطانی راج' ہوجاتا ہے .

اپنشد میں لکھا ہے :—

"اس جسمانی زندگی روپی درخت کے اوپر دو پنچھی دو طرح کے بیٹھے ہوئے ہیں . دونوں کے پر بڑے سندر ہیں . دونوں ساتھ ساتھ پیدا ہوئے ہیں اور ایک دوسرے کے ساتھ ساتھ رہتے ہیں. ان میں سے ایک درخت کے کھٹے میٹھے پھلوں کو کھاتا رہتا ہے اور انکا سکھ دکھ بھوگتا رہتا ہے' اور دوسرا بنا کچھ کھائے دیا اور کرونا سے بھرا ہوا اپنے ساتھی کی طرف دیکھتا رہتا ہے ."

سچ مچ اپنے اندر کے اس دھوکے سے بچ سکنا بہت ہی کٹھن ہے . سورگ اور نرک' جنت اور دوزخ

हर मजहब का तू मस्ताना
हर होठों पे तेरा तराना
प्यार समझता तू पैमाना
दसों दिशा का तू ही निशाना
हर दम...हर दिन...बढ़ती जाये तेरी मंद मुसकान
ओ बापू! भारत के अरमान
तेरा बेनमून है दान!—जय जय...

हिमालय का हृदय है तू
गंगा यमुना का संगम तू
भारत की हर धड़कन है तू
भारत की तड़पान
पल पल......हर पल......आहें भरते हम हर सुबह शाम
बता दे हम को अपना धाम
तड़पती राम नाम की तान!—जय जय...

दुबला पतला फिर भी तवाना
सीधा सादा और सयाना
हिन्दू मुसलमां तेरे नयना
हंसते नयना......रोते नयना
छम छम......छम छम......नीर बहाये आंखें हुई वीरान
मचायें दिल में बड़े तूफान
दिखायें राम की सजा अनजान!—जय जय...

बीत गई कैसी रात तूफ़ानी
चमक गई तेरी शक्ति रूहानी
भारती तुझ बिन हुई दीवानी
तुझ सा रहा न दूजा सुख खानी
झम झम......झम झम......लहरें नाचें नाव रुकी मंझधार
छाया नभ में घन अंध्यार
गंवाया हमने खेवनहार!—जय जय...

दर्दभरी तेरी जीवन कहानी
होगी एक दिन सब को ज़बानी
मृत्यु तेरी है मरदानी
जिन्दगी तेरी है जौवानी
जग मग......जग मग......चांद सितारे सूरज भी सुलतान
हंस हंस कर होते क़ुरबान
बढ़ायें निश दिन तेरी आन!—जय जय...

ہر مذہب کا تو مستانا
ہر ہونٹھوں پہ تیرا ترانا
پیار سمجھتا تو پیمانا
دسوں دشا کا تو ہی نشانا
ہر دم...ہر دن...بڑھتی جائے تیری مند مسکان
او باپو! بھارت کے ارمان
تیرا بے نمون ہے دان!—جے جے...

ہمالیہ کا ہردے ہے تو
گنگا جمنا کا سنگم تو
بھارت کی ہر دھڑکن ہے تو
بھارت کی تڑپان
پل پل...ہر پل...آہیں بھرتے ہم ہر صبح شام
بتادے ہم کو اپنا دھام
تڑپتی رام نام کی تان!—جے جے...

دبلا پتلا پھر بھی توانا
سیدھا سادا اور سیانا
ہندو مسلماں تیرے نینا
ہنستے نینا...روتے نینا
چھم چھم...چھم چھم...نیر بہائیں آنکھیں ہوئی ویران
مچائیں دل میں بڑے طوفان
دکھائیں رام کی سزا انجان!—جے جے...

بیت گئی کیسی رات طوفانی
چمک گئی تیری شکتی روحانی
بھارتی تجھ بن ہوئی دیوانی
تجھ سا رہا نہ دوجا سکھ کھانی
جھم جھم...جھم جھم...لہریں ناچیں ناؤ رکی منجدھار
چھایا نبھ میں گھن اندھیار
گنوایا ہم نے کھیون ہار!—جے جے...

درد بھری تیری جیون کہانی
ہوگی ایک دن سب کو زبانی
مرتیو تیری ہے مردانی
زندگی تیری ہے جوانی
جگ مگ...جگ مگ...چاند ستارے سورج بھی سلطان
ہنس ہنس کر ہوتے قربان
بڑھائیں نس دن تیری آن!—جے جے...

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 दिसम्बर, सन '53 नम्बर 6

نمبر 6 دسمبر، سن '53 جلد 15

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

बापू महान

(गुनवंत मेहता)

[यह छोटी सी कविता एक ऐसे होनहार कवि की है जिसकी मातृ भाषा हिन्दुस्तानी नहीं है. इस लिये हम इसे बड़े शौक़ से छाप रहे हैं—एडीटर]

जय जय प्यारे बापू महान !
बुद्ध, ईसा की सूरत, शान
भारत मुक्ती का तू गान !—जय जय...

आज़ादी का तू अफ़साना
दया देवी का गोद-खिलौना
सत्य, क्षमा का तू परवाना
बाला अहिंसा का नज़राना

झिल मिल...झिल मिल...गायें हम सब गुन तेरे ही महान
ओ बाला धरती के इनसान !
निराली कैसी तेरी शान !—जय जय...

मानवता का तू मतवाला
और सभ्यता के दिल वाला
भारत भूमि का रखवाला
सत्य जगत्; का तू उजियाला

झिलमिल...झिलमिल...झलमलता उठे तेरी दीप मीनार
हर कश्ती का तू पतवार !
तेरा मंगल रूप निशान !—जय जय...

باپو مہان

(گنونت مہتا)

[یہ چھوٹی سی کویتا ایک ایسے ہونہار کوی کی ہے جسکی ماتر بھاشا ہندستانی نہیں ہے۔ اس لئے ہم اسے بڑے شوق سے چھاپ رہے ہیں—ایڈیٹر]

جے جے پیارے باپو مہان !
بدھ، عیسیٰ کی صورت، شان
بھارت مکتی کا تو گان—جے جے...

آزادی کا تو افسانا
دیا دیوی کا گود کھلونا
ستیہ، شما کا تو پروانا
بالی اہنسا کا نظرانا

جھل مل...جھل مل...گائیں ہم سب گن تیرے ہی مہان
او بالی دھرتی کے انسان
نرالی تیری کیسی شان ! —جے جے...

مانوتا کا تو متوالا
اور سبھیتا کے دل والا
بھارت بھومی کا رکھوالا
ستیہ جگت کا تو اجیالا

جھل مل...جھل مل...جھلجھلا اٹھے تیری دیپ مینار
ہر کشتی کا تو پتوار
تیرا منگل روپ نشان ! —جے جے...

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

दिसम्बर 1953

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

دسمبر

क्या किससे — **सफ़ा**

کیا کس سے — **صفحہ**

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय

ہماری رائے

...तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

दिसम्बर 1953 دسمبر

Registered No. A—250

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुजुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اِس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا . دیش نے اُس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا . دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی . پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے .

اِس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں . بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاوؤں سے اِس میں فائدہ اُٹھایا گیا ہے . نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے .

اِس کتاب سے اِسلام کی اصلی تعلیم اور اُس کے بنیادی اُصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بےمثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے . اِس سے پتہ چلیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا .

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اُٹھائینگے .

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد .

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

श्य

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना र प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों रा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, क्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में पस का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; इस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल . गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; क्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद मान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० , पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल गफ़्फ़ार और श्री ओम श पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیںگے۔

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने ग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी वीज लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी सीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त मंजर अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत री है. 225 सफे की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की मत सिर्फ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंजर अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब ा जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की ई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख क्षण की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में नी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने नी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में ते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी . क़ीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

ने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 46, जीरो रोड, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت .

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنسانمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لیا جا سکتا ہے .

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے .

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ .

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—
منیجر ' نیا ہند ' 46 ' جیرو روڈ ' الٰہ آباد .

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک ۔ شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی ۔

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹریہ تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادّتیہ ہے..."

23-2-'52 ——روزآنہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ۔"

6-3-'52 ——'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ۔"

17-2-'52 ——'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے۔"

13-1-'52 ——'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں ۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے ۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ۔"

8-5-'52 ——'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ۔"——' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ سندر جلد' بڑھیا کاغذ ۔ عمدہ چھپائی ۔ دام صرف تین روپیہ ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن ۔

ملنے کا پتہ——

مینیجر ' نیا ہند ' 145 منٹی گنج الہ آباد ۔

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आँखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک — پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج. اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد

सामान कहाँ से आता है ?—पंडित नेहरू के मिनिस्टर ही इन्हें विदेशों से 'देश के हित में' (!) मंगाते हैं और मंगा रहे हैं! 'कनज़्यूमर गुड्स' (आए दिन बरतने की चीज़ों) के नाम से करोड़ों रुपये के टोप, टाई, कालर, तेल, साबुन, मंजन, इत्र, पालिश वग़ैरा वग़ैरा विदेशों से आ रहे हैं. जब आते हैं तो ख़र्च होने के लिये. जब साधारन आदमी के पास न तो पैसा और न शौक़ कि इन्हें ख़रीदे. इसलिये बेचारे अफ़सर को ही यह ख़रीदने पड़ते हैं क्योंकि बिने कालर के वह केक या क्रिकेट के रस्म में ठीक ठीक कैसे शरीक हो सकता है ?

प्रधान मंत्री की 28 सितम्बर की स्पीच से साफ़ पता चलता है कि आज के हाकिम या पढ़े लिखे के दिल और दिमाग़ में कैसी भयंकर टक्कर हो रही है. दिल कहता है पूरब को चलो तो दिमाग़ कहता है पच्छिम को. इसका नतीजा है दिल और दिमाग़ का एक दूसरे से कटते चला जाना. ऐसी हालत में अगर अफ़सर और जन साधारन के बीच 'खाई' बन जाए या एक 'नई जात' खड़ी हो जाए तो कौन ताज्जुब है. 'खाई' दिन दिन बढ़ेगी और 'नई जात' भी फैलेगी. अगर यही रूप कुछ अरसे तक क़ायम रहा तो हमारा बस भगवान ही मालिक है.

लेकिन इस अंधेरे में उजाले की एक किरन भी नज़र आती है. प्रधान मंत्री की टीम में विरोधी दल के नेता श्री ए. के. गोपालन भी थे जो कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर हैं. क्या हम यह विश्वास करें कि यह दोनों और इसी तरह दूसरे दल वाले भी सच्चे जन हित के, ठोस और स्थायी कामों के लिये एक साथ मिलकर इस देश की डूबती नाव को बचाने की कोशिश करेंगे ? हाल ही में जब भारत से सरकारी डेलीगेशन चीन गया था तो उसकी नेता, श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित से चीन के प्रधान, माओत्से तुंग ने कहा था, "रचना के लिये हम सब को मिल जाना चाहिये, शान्ति के लिये हम सब को मिल जाना चाहिये." सिरजनहार से हमारी विनती है कि वह हमें यह हिम्मत और ताक़त दे कि हम केक, क्रिकेट और कालर के माया जाल से निकलें और समझ के साथ तामीर करें एक सुखी भारत की, एक नये एशिया की और एक शान्तिमय दुनिया की.

12.11.53 —सुरेश रामभाई

سامان کہاں سے آتا ہے ؟—پنڈت نہرو کے منسٹر ہی انہیں ودیشوں سے 'دیش کے ہت میں' (!) منگاتے ہیں اور منگا رہے ہیں ! 'کنزیومرس گڈس' (آئے دن برتنے کی چیزوں) کے نام سے کروڑوں کے ٹوپ' ٹائی' کالر' تیل' صابن' منجن' عطر' پالش وغیرہ وغیرہ ودیشوں سے آ رہے ہیں . جب آتے ہیں تو خرچ ہونے کے لئے . اب سادھارن آدمی کے پاس نہ پیسہ اور نہ شوق کہ انہیں خریدے. اس لئے بیچارے افسر کو ہی یہ خریدنے پڑتے ہیں کیوں کہ بنا کالر کے وہ کیک یا کرکٹ کے رسم میں ٹھیک ٹھیک کیسے شریک ہوسکتا ہے ؟

پردھان منتری کے 28 ستمبر کی اسپیچ سے صاف صاف پتہ چلتا کہ آج کے حاکم یا پڑھے لکھے کے دل اور دماغ میں کیسی بھیانک ٹکر ہو رہی ہے . دل کہتا ہے پورب کو چلو تو دماغ کہتا ہے پچھم کو . اسی کا نتیجہ ہے دل اور دماغ کا ایک دوسرے سے کٹتے چلے جانا . ایسی حالت میں اگر افسر اور جن سادھارن کے بیچ کھائی' بن جائے یا ایک ' نئی جات ' کھڑی ہو جائے تو کون تعجب ہے . کھائی' دن دن بڑھے گی . اور نئی جات بھی پھیلے گی . اگر یہی روپ کچھ عرصے تک قائم رہا تو ہمارا بس بھگوان ہی مالک ہے .

لیکن اس اندھیرے میں اجالے کی ایک کرن بھی نظر آتی ہے ' پردھان منتری کی ٹیم میں ورودھی دل کے نیتا شری اے . کے . گوپالن بھی تھے جو کمیونسٹ کے ممبر ہیں . کیا ہم یہ وشواس کریں کہ یہ دونوں اور اسی طرح دوسرے دل کے والے بھی سچے جن ہت کے' ٹھوس اور استھائی کاموں کے لئے ایک ساتھ مل کر اس دیش کی ڈوبتی ناؤ کو بچانے کی کوشش کرینگے ؟ حال ہی میں جب بھارت سے سرکاری ڈیلیگیشن چین گیا تھا تو اسکی نیتا' شریمتی وجے لکشمی پنڈت سے چین کے پردھان' ماؤتسے تنگ نے کہا تھا " رچنا کے لئے ہم سب کو مل جانا چاہئے' شانتی کے لئے ہم سب کو مل جانا چاہئے ." یا جن ہار سے ہماری بنتی ہے کہ وہ ہمیں یہ ہمت اور طاقت دیں کہ ہم کیک' کرکٹ اور کالر کے مایا جال سے نکلیں اور سمجھ کے ساتھ تعمیر کریں ایک سکھی بھارت کی' ایک نئے ایشیا کی اور ایک شانتی مے دنیا کی .

—سریش رام بھائی 12 . 11 . '53

के जमाये सांचे में कोई तब्दीली नहीं होने दी. यही कारन है कि आज के भारत में राजकाज, ब्योपार, फ़ौज, कारख़ाने तालीम, क़ानून वग़ैरा का इन्तज़ाम वही है जो अंगरेज़ों ने क़ायम किया था. यही कारन है कि आज हमारे देश में विदेशी आर्थिक स्वार्थ कहीं ज़ियादा गहरे और चौड़े पैठ गए हैं. विदेशियों की पूंजी और उससे उन्हें मुनाफ़ा पहले से कहीं बढ़ गए हैं. कोई यह न समझे कि जवाहरलाल को जन साधारन से प्रेम नहीं है या देश की चाह नहीं है. लेकिन यह क़ुदरती बात है कि वह जो कुछ करेंगे सो अपने ही ढंग से करेंगे. और उनके ढंग का निचोड़ एक शब्द में आता है—अंगरेज़ियत. इसी का नतीजा है कि अंगरेज़ियत के नशे में चूर एक बिरादरी बन गई है जिसे टोप, टाई और कालर के बिना चैन नहीं पड़ता.

क्या दिन में, क्या रात में, जो कुछ देश में होता दीखता है उससे हमारी इस बात का समर्थन होता है. दूर की चर्चा छोड़िए, अभी हाल ही में, 15 अगस्त को नई दिल्ली में क्या हुआ ? पंडित जवाहर लाल ने तलवार से आज़ादी की केक को काटा. भला साधारन आदमी को सपने में भी आज़ादी इस ढंग से मनाने का ख़याल आ सकता है ? क्या कोई और बदतर विलायती तरीक़ा आज़ादी मनाने का हो सकता है ? दूसरी घटना—सितम्बर के महीने में एक क्रिकेट मैच खेला गया जिसमें एक तरफ़ प्रधान मंत्री की टीम थी और दूसरी तरफ़ वाइस प्रेसीडेन्ट की. सिवाय ब्रिटेन के और कहीं भी इस तरीक़े के स्वांग नहीं किये जाते. इसी वजह से इसकी दाद अगर दी तो संसार भर में केवल एक अख़बार, लन्दन के 'टाइम्स' ने. उसने लिखा :—

"यह बात सारी दुनिया की समझ में भले ही न आये लेकिन ब्रिटेन वासी और भारत वासी इस पर फूले न समाते होंगे."

हर ब्रिटेन वासी ज़रूर इसे समझेगा और ख़ुश होगा. लेकिन हर भारत वासी हरगिज़ नहीं, सिर्फ़ उन भारत वासियों को छोड़ कर जिन्होंने अपने को अंगरेज़ियत के सांचे में ढाल लिया है और जिनके ख़ास नमूने पंडित जवाहर लाल हैं. ऐसे भारत वासियों के लिये केक या क्रिकेट में ही ज़िन्दगी का मज़ा है और यह मज़ा बिना कालर के नहीं मिलता. नई दिल्ली की किसी दावत को देखिये—मालूम होगा इंगलैन्ड के साहब और मेमें शेरवानी और साड़ी पहन कर मौजूद हो गये हैं. उनका लहजा, उनकी अदा, उनके हाव भाव ठेठ विलायती. इसलिये जब देश में केक और क्रिकेट की तूती बोल रही हो तो अफ़सरों को टोप, टाई और कालर लगाने पर टोकना सख़्त ज़ियादती है, उनके साथ अन्याय है. आख़िर यह साज

کے جمائے سانچے میں کوئی تبدیلی نہیں ہونے دی .
یہی کارن ہے کہ آج کے بھارت میں راج کاج، بیوپار، فوج،
کارخانے، تعلیم، قانون وغیرہ کا انتظام وہی ہے جو انگریزوں
نے قائم کیا تھا. یہی کارن ہے کہ آج ہمارے دیش میں
ودیشی آرتھک سوارتھ کہیں زیادہ گہرے اور چوڑے پیٹھ
گئے ہیں. ودیشیوں کی پونجی اور اس سے انہیں منافع
پہلے سے کہیں بڑھ گئے ہیں. کوئی یہ نہ سمجھے کہ
جواہر لال کو جن سادھارن سے پریم نہیں ہے یا دیش کی
چاہ نہیں ہے . لیکن یہ قدرتی بات ہے کہ وہ جو کچھ
کریں گے سو اپنے ہی ڈھنگ سے کریں گے، اور ان کے ڈھنگ
کا نچوڑ ایک شبد میں آتا ہے—انگریزیت. اسی کا نتیجہ
ہے کہ انگریزیت کے نشے میں چور ایک برادری بن گئی
ہے جسے ٹوپ، ٹائی اور کالر کے بنا چین نہیں پڑتا .

کیا دن میں، کیا رات میں، جو کچھ دیش میں
ہوتا دکھتا ہے اس سے ہماری اس بات کا سمرتھن ہوتا
ہے. دور کی چرچا چھوڑیں، ابھی حال ہی میں، 15 اگست
کو نئی دلی میں کیا ہوا؟ پنڈت جواہر لال نے تلوار
سے آزادی کی کیک کو کاٹا . بھلا سادھارن آدمی کو سپنے
میں بھی آزادی اس ڈھنگ سے منانے کا خیال آ سکتا
ہے؟ کیا کوئی اور بدتر ولایتی طریقہ آزادی منانے کا ہو
سکتا ہے؟ دوسری گھٹنا—ستمبر کے مہینے میں ایک
کریکٹ میچ کھیلا گیا جس میں ایک طرف پردھان منتری
کی ٹیم تھی اور دوسری طرف وائس پریسیڈینٹ کی.
سوائے برٹین کے اور کہیں بھی اس طریقے کے سوانگ نہیں
کئے جاتے . اس وجہ سے اسکی داد اگر دی تو سنسار بھر
میں کیول ایک اخبار، لندن کے 'ٹائمس' نے . اس نے
لکھا :—

" یہ بات ساری دنیا کے سمجھ میں بھلے ہی نہ
آئے لیکن برٹین واسی اور بھارت واسی اس پر پھولے نہ
سماتے ہونگے ."

ہر برٹین واسی ضرور اسے سمجھے گا اور خوش ہوگا
لیکن ہر بھارت واسی ہرگز نہیں،—صرف ان بھارت
واسیوں کو چھوڑ کر جنہوں نے اپنے کو انگریزیت کے سانچے
میں ڈھال لیا ہے اور جن کے خاص نمونے پنڈت جواہر
لعل ہیں . ایسے بھارت واسیوں کے لئے کیک یا کریکٹ
میں ہی زندگی کا مزا ہے اور یہ مزا بنا کالر کے نہیں
ملتا . نئی دلی کی کسی دعوت کو دیکھئے معلوم ہوگا
انگلینڈ کے صاحب اور میمیں شیروانی اور ساڑی
پہن کر موجود ہوگئے ہیں . ان کا لہجہ، ان کی ادا، ان
کے ہاؤ بھاؤ ٹھیٹ ولایتی . اس لئے جب دیش میں
کیک اور کریکٹ کی طوطی بول رہی ہو
تو افسروں کو ٹوپ ٹائی اور کالر لگانے پر ٹوکنا سخت
زیادتی ہے، ان کے ساتھ انیائے ہے . آخر یہ ساز

ने अपने व्याख्यान में अपने दिल की कसक और देश की मौजूदा हालत को साफ साफ सामने रख दिया.

पंडित जी के भाषन के कुछ खास हिस्से यह हैं :—

1. मिनिस्ट्रों या अफसरों की तक़रीरों से देश की तरक्की नहीं नापी जा सकती.

2. इस तरह के सम्मेलन करके और परचे छाप कर यह कोशिश की जाती है कि किसान लोग खेती के ज़ियादा बेहतर तरीक़े सीख जाएं. लेकिन यह मज़ाक़ नहीं तो क्या है ? काम करने के इस ढंग पर मैं जितना ज़्यादा विचार करता हूं उतना ही दंग रह जाता हूं क्योंकि इस नक़्शे में आम आदमी—जिसका हित करना है—कहीं आता ही नहीं.

3. आज साधारन आदमी और अफसरों के बीच एक बहुत बड़ी खाई है. अफसर लोग साधारन आदमी की भाषा नहीं बोलते जिसके कारन अपनी खोजों और मेहनत के नतीजे वह आम आदमी तक नहीं पहुंचा पाते.

4. जात पात के कारन हिन्दुस्तान तबाह हो गया. पर आज हमारे मुल्क में एक 'नई जात' पैदा हो गई है जिसके लोग टोप, नैकटाई और कालर लगाते हैं.

हिन्दुस्तान में शायद ही कोई स्त्री पुरुष ऐसा होगा जो प्रधान मंत्री के इन अनमोल वचनों का समर्थन न करेगा. पंडित जवाहरलाल ने यह बातें कह कर गली या नगर के रास्ता चलते लोगों के दिल की आवाज़ को सामने रख दिया है. आज छै बरस से ऊपर हुए जब राष्ट्र की बाग-डोर पंडित जी के हाथों में आई. लेकिन ऐसा होने पर भी साधारन जन और अफसर के बीच एक चौड़ी 'खाई' खड़ी हो गई और आम जनता से अलग रहने वाली एक 'नई जात' पैदा हो गई. सचमुच यह बात दुख और चिन्ता की बात है देश की हालत में कहीं न कहीं ज़रूर कुछ दोष होना चाहिये जिस के कारन यह भयानक और खतरनाक सूरत पैदा हो गई है.

थोड़ा विचार करने पर इसकी जड़ तक पहुंचा जा सकता है. बहुत आदर से हमारा निवेदन है कि इस 'खाई' और 'नई जात' के लिये अगर कोई एक आदमी सब से ज़ियादा ज़िम्मेदार है तो वह हमारे प्रधान मंत्री हैं. उनका लालन पालन एक मालदार घराने में एक अंगरेज़ के ट्यूटर की देख रेख में हुआ. उनकी तालीम इंगलैंड के स्कूलों और वहां की एक यूनीवर्सिटी में हुई. इस कारन वह अंगरेज़ी रहन सहन और अंगरेज़ी जीवन के बेहतरीन प्रतिनिधि हैं. अंगरेज़ी राज के वह कट्टर दुश्मन रहे पर अंगरेज़ी परम्परा या कलचर की वेदी पर उन्होंने सदा उपासना की है. जन साधारन की भाषा में, जवाहरलाल अंगरेज़ी राज से नफ़रत करते थे मगर अंगरेज़ियत के सोलह आने भक्त हैं. यही कारन है के अपने प्रधानमंत्री राज के छै बरस में उन्होंने अंगरेज़ों

نے اپنے وکھیان میں اپنے دل کی کسک اور دیش کی موجودہ حالت کو صاف صاف سامنے رکھدیا ۔

پنڈت جی کے بھاشن کے کچھ خاص حصے یہ ہیں :—

1. منسٹروں یا افسروں کی تقریروں سے دیش کی ترقی نہیں ناپی جاسکتی ۔

2. اس طرح کے سمیلن کرکے اور پرچے چھاپ کر یہ کوشش کی جاتی ہے کہ کسان لوگ کھیتی کے زیادہ بہتر طریقے سیکھ جائیں ۔ لیکن یہ مذاق نہیں تو کیا ہے ؟ کام کرنے کے اس ڈھنگ پر میں جتنا زیادہ وچار کرتا ہوں اتنا ہی دنگ رہ جاتا ہوں، کیونکہ اس نقشے میں عام آدمی—جس کا ہت کرنا ہے ۔ کہیں آتا ہی نہیں ۔

3. آج سادھارن آدمی اور افسروں کے بیچ ایک بہت بڑی کھائی ہے ۔ افسر لوگ سادھارن آدمی کی بھاشا نہیں بولتے جس کے کارن اپنی کھوجوں اور محنت کے نتیجے عام آدمی تک نہیں پہونچا پاتے ۔

4. جات پات کے کارن ھندستان تباہ ہوگیا پر آج ہمارے ملک میں ایک 'نئی جات' پیدا ہوگئی ہے جس کے لوگ 'ٹوپ' نیکٹائی اور کالر لگاتے ہیں ۔

ھندستان میں شاید ہی کوئی استری پرش ایسا ہوگا جو پردھان منتری کے ان انمول وچنوں کا سمرتھن نہ کریگا ۔ پنڈت جواہر لال نے یہ باتیں کہکر گلی یا نگر کے راستہ چلتے لوگوں کے دل کی آواز کو سامنے رکھدیا ہے ۔ آج چھ برس سے اوپر ہوئے جب راشٹر کی باگ ڈور پنڈت جی کے ہاتھوں میں آئی ۔ لیکن ایسا ہونے پر بھی سادھارن جن اور افسر کے بیچ ایک چوڑی 'کھائی' کھڑی ہوگئی اور عام جنتا سے الگ رہنے والی ایک 'نئی جات' پیدا ہوگئی ۔ سچ مچ یہ بہت دکھ اور چنتا کی بات ہے، دیش کی حالت میں کہیں نہ کہیں ضرور کچھ دوش ہونا چاہئے جس کے کارن یہ بھیانک اور خطرناک حالت پیدا ہوگئی ہے ۔

تھوڑا وچار کرنے پر اس کی جڑ تک پہونچا جاسکتا ہے ۔ بہت آدر سے ہمارا نویدن ہے کہ اس 'کھائی' اور 'نئی جات' کے لئے اگر کوئی ایک آدمی سب سے زیادہ ذمہ دار ہے تو وہ ہمارے پردھان منتری ہیں ۔ ان کا لالن پالن ایک مالدار گھرانے میں ایک انگریز ٹیوٹر کی دیکھ ریکھ میں ہوا ۔ ان کی تعلیم انگلینڈ کے اسکولوں اور وہاں کی ایک یونیورسٹی میں ہوئی ۔ اس کارن وہ انگریزی رہن سہن اور انگریزی جیون کے بہترین پرتی ندھی ہیں ۔ انگریزی راج کے وہ کٹر دشمن رہے پر انگریزی پرمپرا یا کلچر کی ویدی پر انہوں نے سدا اپاسنا کی ہے ۔ جن سادھارن کی بھاشا میں، جواہر لال انگریزی راج سے نفرت کرتے تھے مگر انگریزیت کے سولہ آنے بھکت ہیں ۔ یہی کارن ہے کہ اپنے پردھان منتری راج کے چھ برس میں انہوں نے انگریزوں

दूसरे कहेंगे कि वह उसी परम्परा का नतीजा है जिसके द्वारा हिन्दुस्तान अपने बड़े बड़े आदमियों को अपनाकर अपनी मिट्टी का हिस्सा बना लेता है. इन लोगों की राय पर फ़ैसला देने का न हमें अधिकार है और न हममें लायक़ी. पर हमारे पास एक कसौटी ज़रूर है जिस पर सब चीज़ें परखी जा सकती हैं. वह यह है कि इस जैसी यादगार से ग़रीबों का भला होता है या नहीं. बिला किसी शक शुबहे के हम कह सकते हैं कि ऐसी यादगारें अपने इस लक्ष्य की तरफ़ हमें एक इंच भी आगे नहीं ले जातीं. इनसे उल्टा नुक़सान ही होगा, हमारा ध्यान बहकेगा और हम रास्ता भटक जायेंगे. इसके अलावा, इनसे कुछ ऐसी शक्तियों को बल मिलेगा जो सोलह आना पिछड़ी, हानि कारक और जान लेवा हैं. सचमुच वह रास्ते के रोड़े बन कर हमारी तरक़्क़ी रोक देंगी और उनसे कोई भी रोशनी मिलने की उम्मीद नहीं है.

वक़्त आ गया है कि हिन्दुस्तान का समझदार लोकमत अपनी ज़ोरदार आवाज़ इन बांझ और बंजर यादगारों के ख़िलाफ़ उठाये. अगर यादगारें और लम्बे बुद्ध और 'बुद्ध धर्म' को हिन्दुस्तान में नहीं ठहरा सके तो गांधी और 'गांधीवाद' को तो वह हरगिज़ नहीं बचा सकेंगी. बेहतर यह है कि यादगारों की बजाए हमारी रोज़ाना ज़िन्दगी ही ख़ुद बता दे कि हम क्या हैं. हम एक नौजवान, जानदार और आज़ाद हिन्दुस्तान की औलाद हैं, हमें चाहिये कि गांधी के शब्दों पर चिपके रहने के बजाय उनके मतलब पर जायें और गहराई, दूरंदेशी व बुलन्दी के साथ अपना काम करें और अपने प्यारे आदर्शों के मुताबिक़ इस देश की फिर से रचना करें. हम इतिहास को यह कहने का मौक़ा न दें कि गांधी को शरीर छोड़े छै साल भी न बीते थे कि हम इस कतर-ब्योंत में लग गए कि कैसे गांधी के आदर्श या उसकी आत्मा को झुलसा दें या नेस्त-नाबूद कर दें.

13. 11. 53 —सुरेश रामभाई

केक, क्रिकेट और कालर

आजकल नई दिल्ली में आए दिन प्रान्तों के मिनिस्ट्रों के सम्मेलन हुआ करते हैं जिनमें चाय पानी और व्याख्यानों की धूम रहती है. डेढ़ दो दिन के यह तमाशे आते और चले गए, जन साधारन या देहाती तक न यह पहुंचते हैं और न यह लोग इसकी चिन्ता ही करते हैं. लेकिन 24 सितम्बर को जो खेती मिनिस्ट्रों का सम्मेलन हुआ वह इस बारे में अनोखा था. उसका श्रीगणेश प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया. उन्होंने उसमें जो भाषण दिया वह बहुत ही जानदार और अनोखा था. पंडित जवाहरलाल

دوسرے کہیں گے کہ یہ اسی پرمپرا کا نتیجہ ہے جس کے دوارا ہندستان اپنے بڑے بڑے آدمیوں کو اپنا کر اپنی مٹی کا حصہ بنا لیتا ہے . ان لوگوں کی رائے پر فیصلہ دینے کا نہ ہمیں ادھیکار ہے اور نہ ہم میں لائقی . پر ہمارے پاس ایک کسوٹی ضرور ہے جس پر سب چیزیں پرکھی جا سکتی ہیں . وہ یہ ہے کہ اس جیسی یادگار سے غریبوں کا بھلا ہوتا ہے یا نہیں . بلا کسی شک شبہے کے ہم کہہ سکتے ہیں کہ ایسی یادگاریں اپنے اس لکشیہ کی طرف ہمیں ایک انچ بھی آگے نہیں لے جاتیں . ان سے الٹا نقصان ہی ہوگا . ہمارا دھیان بہکے گا اور ہم راستہ بھٹک جائیں گے . اس کے علاوہ ان سے کچھ ایسی شکتیوں کو بل ملے گا جو سولہ آنے پچھڑی، ہانی کارک اور جان لیوا ہیں . سچ مچ وہ راستے کے روڑے بن کر ہماری ترقی روک لیں گی اور ان سے کوئی بھی روشنی ملنے کی امید ہے .

وقت آگیا ہے کہ ہندستان کا سمجھدار لوک مت اپنی زوردار آواز ان بانجھ اور بنجر یادگاروں کے خلاف اٹھائے . اگر یادگاریں اور کھمبے بدھ اور 'بدھ دھرم' کو ہندستان میں نہیں ٹھہرا سکے تو گاندھی اور 'گاندھی واد' کو تو وہ ہرگز نہیں بچا سکیں گی . بہتر یہ ہے کہ یادگاروں کی بجائے ہماری روزانہ زندگی ہی خود بتا دے کہ ہم کیا ہیں . ہم ایک نوجوان' جاندار اور آزاد ہندستان کی اولاد ہیں' ہمیں چاہئے کہ گاندھی کے شبدوں پر چپکے رہنے کے بجائے ان کے مطلب پر جائیں اور گہرائی' دور اندیشی اور بلندی کے ساتھ اپنا کام کریں اور پیارے آدرشوں کے مطابق اس دیش کی پھر سے رچنا کریں . ہم اتہاس کو یہ کہنے کا موقعہ نہ دیں کہ گاندھی کو شریر چھوڑے چھ سال بھی نہ بیتے تھے کہ ہم اس کتر بیونت میں لگ گئے کہ کیسے گاندھی کے آدرش یا اس کی آتما کو جھلسا دیں یا نیست نابود کردیں .

18 . 11 . '53 —سریش رام بھائی

کیک' کرکیٹ اور کالر

'آجکل نئی دلی میں آئے پرانتوں کے منسٹروں کے سمیلن ہوا کرتے ہیں جن میں چائے پانی اور ویاکھیانوں کی دھوم رہتی ہے . ڈیڑھ دو دن کے یہ تماشے آئے اور چلے گئے' جن سادھارن یا دیہاتی تک نہ یہ پہونچتے ہیں اور نہ وہ لوگ اس کی چنتا ہی کرتے ہیں . لیکن 28 ستمبر کو جو کھیتی منسٹروں کا سمیلن ہوا وہ اس بارے میں انوکھا تھا . اس کا شری گنیش پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے کیا . انہوں نے اس میں جو بھاشن دیا وہ بہت ہی جاندار اور انوکھا تھا . پنڈت جواہر لال

कि सरकार जो कुछ करती है वह गांधी जी के उसूलों के अनुसार करती और गांधी मार्ग पर चलती है.

हमारे देश में जो कुछ आज हो रहा है उसकी एक सूरत यह है. इस के खिलाफ़ दूसरी सूरत यह है कि हमारे राष्ट्रपति क़बूल करते हैं कि सरकार गांधी जी के आदर्शों को अमली जामा नहीं पहना सकी और हमारे प्रधान मंत्री क़बूल करते हैं कि सरकारी अफ़सरों और आम जनता के बीच खाई चौड़ी होती जा रही है. दूसरे शब्दों में, गांधी जी की मूर्ति, नाम या तसवीर जगह जगह जमाने में सरकार को जितनी ज़ियादा कामयाबी होती है वह उनके आदर्शों से उतनी ही दूर चली जाती है और जनता से खिंची चली जाती है. यही हालत बनी रही तो एक दिन वह आने वाला है जब हर सरकारी और नीम सरकारी काम से गांधी का नाम इतना पेवस्त हो जायगा कि आने वाली पीढ़ियां अचरज करेंगी कि आया इस तरह का कोई हाड़ मांस का पुतला भी इस ज़मीन पर चलता था उस तरह का नहीं जिसकी तारीफ़ आइन्सटाइन ने की और जिसने अपने देश वासियों की ख़ातिर अपने को धूल में मिला दिया. बल्कि उस तरह का जिसका इज़हार देश भर में फैली यादगारों और मूर्तियों, तसवीरों से होता है और जिसने अपने को हुक्काम और स्वार्थी हितों में इतना घुला मिला दिया कि वह प्रतिक्रिया, शोषन और काहिली का निशान बन गया.

हम जानना चाहेंगे कि ग़रीब का पैसा बेकार की यादगारों में क्यों ख़र्च किया जा रहा है जबकि उस पैसे को कहीं ज़ियादा कारामद और कारगर दायरों में लगाया जा सकता है. क्या इन यादगारों के हिमायती यह सोचते हैं कि गांधी नाम की सट्टे वाली गद्दियां या पट खोल देंगे जहां गांधी ढंग के सेठ या पंडे रास्ता चलते या दर्शक को मन माना लूटा करेंगे? या क्या वह यह समझते हैं कि गांधी सिर्फ़ उनकी बपौती है जिनकी तोंद फूली है, जो ज़ोर से चीख सकते हैं या जिनके पास अन्तःकरन नाम की चीज़ रहती नहीं? या क्या वह यह समझते हैं कि समाधि पर फूल चढ़ाने से या यादगार में पूजा करने से गांधी को पटाया जा सकता है? या क्या वह यह असर जनता पर जमाना चाहते हैं कि सरकार जो कुछ भी करे, जो फ़रमान भी उसका हो वह 'गांधी-वादी' है और इसलिये हर हालत में ही उसकी ताबेदारी की जाए? आख़िर इस यादगार की मन्शा क्या है?

अठारह लाख की यादगार चाहने वाले शायद यह नहीं जानते कि वह कुछ हालतों का शिकार हैं जो टाले नहीं टलने वाली हैं. शायद उनमें से कुछ लोग यह कहेंगे कि यह यादगार भारतीय संस्कृति के अनुकूल है. शायद

کہ سرکار جو کچھ کرتی ہے گاندھی جی کے اصولوں کے انوسار کرتی اور گاندھی مارگ پر چلتی ہے ۔

ہمارے دیش میں جو کچھ آج ہو رہا ہے اسکی ایک صورت یہ ہے ۔ اس کے خلاف دوسری صورت یہ ہے کہ ہمارے راشٹرپتی قبول کرتے ہیں کہ سرکار گاندھی جی کے آدرشوں کو عملی جامہ نہیں پہنا سکی اور ہمارے پردھان منتری قبول کرتے ہیں کہ سرکاری افسروں اور عام جنتا کے بیچ کھائی چوڑی ہوتی جا رہی ہے ۔ دوسرے شبدوں میں، گاندھی جی کی مورتی، نام یا تصویر جگہ جگہ جمانے میں سرکار کو جتنی زیادہ کامیابی ہوتی ہے وہ اُن کے آدرشوں سے اُتنی ہی دور چلی جاتی ہے اور جنتا سے کھنچتی چلی جاتی ہے ۔ یہی حالت بنی رہی تو ایک دن وہ آنے والا ہے جب ہر سرکاری اور نیم سرکاری کام سے گاندھی کا نام اتنا پیوست ہو جائیگا کہ آنے والی پیڑھیاں اچرج کرینگی کہ آیا اس طرح کا کوئی ہاڑ ماس کا پتلا بھی اس زمین پر چلتا تھا ۔ اس طرح کا نہیں جس کی تعریف آئنسٹائن نے کی اور جس نے اپنے دیش واسیوں کے خاطر اپنے کو دھول میں ملا دیا ۔ بلکہ اس طرح جسکا اظہار دیش بھر میں پھیلی یادگاروں اور مورتیوں، تصویروں سے ہوتا ہے اور جس نے اپنے کو حکام اور سوارتھی ہتوں میں اتنا گھلا ملا دیا کہ وہ پرتی کریا، شوشن اور کاہلی کا نشان بن گیا ۔

ہم جاننا چاہیں گے کہ غریب کا پیسہ بیکار کی یادگاروں میں کیوں خرچ کیا جا رہا ہے جب کہ اس پیسے کو کہیں زیادہ کارآمد اور کارگر دائروں میں لگایا جا سکتا ہے ۔ کیا ان یادگاروں کے حمایتی یہ سوچتے ہیں کہ گاندھی نام کی سٹے والی گدیاں یا پٹ کھول دیں گے جہاں گاندھی ڈھنگ کے سیٹھ یا پنڈے راستہ چلتے یاتری کو من مانا لوٹا کرینگے ؟ یا کیا وہ یہ سمجھتے ہیں کہ گاندھی صرف ان کی بپوتی ہے جن کی توند پھولی ہے، جو زور سے چیخ سکتے ہیں یا جن کے پاس انتہ کرن نام کی چیز رہتی نہیں ؟ یا کیا وہ یہ مانتے ہیں کہ سمادھی پر پھول چڑھانے سے یا یادگار میں پوجا کرنے سے گاندھی کو پٹایا جا سکتا ہے ؟ یا کیا وہ یہ اثر جنتا پر جمانا چاہتے ہیں کہ سرکار جو کچھ بھی کرے، جو فرمان بھی اس کا ہو وہ ' گاندھی وادی ' ہے اور اس لئے ہر حالت میں ہی اس کی تابعداری کی جائے ؟ آخر اس یادگار کی منشا کیا ہے ؟

اٹھارہ لاکھ کی یادگار چاہنے والے شاید یہ نہیں جانتے کہ وہ کچھ حالتوں کا شکار ہیں جو ٹالے نہیں ٹلنے والی ہیں ۔ شاید ان میں سے کچھ لوگ یہ کہینگے کہ یہ یادگار بھارتی سنسکرتی کے انکول ہے ۔ شاید

सकते. एक—सर राजा महाराज सिंह जो ठीक इस समय भी इनसाफ़ और इनसानियत को फिर से क़ायम करने की कोशिशों में लगे हुए हैं और दूसरे-इलाहाबाद का डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जिसने बर्दाश्त और बुद्धिमत्ता के साथ विद्यार्थियों के जलूस के दिन सारी पुलिस को आम रास्तों या सड़कों पर से हटा लिया. अन्त में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान हम सब को सुमति दे.

5. 11. '53 —सुन्दरलाल

यह यादगार कैसी ?

किसी ने कहा है कि जब सिरजनहार की समझ में यह नहीं आया कि एक महापुरुश को उसकी महानता के लिये क्या सज़ा दी जाय तो उसने यह काम उसके चेलों के सुपुर्द किया. इन चेलों की आम तौर पर यह खूबी रही है कि उस के संदेश की आत्मा की बजाय उसके शब्दों से चिपके रहते हैं. अन्दर की गरी छोड़ कर वह बाहर के छिलके पर ही लट्टू हो जाते हैं. वह लोग अपने को अपने अन्दर के शैतान के हवाले कर अपनी वासनाओं के चक्कर में—अहंकार से भरी, हर दम रंग बदलने वाली ख़ासियत की वासनाएं—बेलगाम घूमा करते हैं. इस तरह यह चेले भोग विलास, आडम्बर और आत्मफ़रेबी की ज़िन्दगी बिताते हैं. लेकिन बनते हैं अपने गुरु के बताए यम नियम के पंडित और दुनिया के साथ ठेकेदार या पंडा की तरह पेश आते हैं. काफ़ी अरसे तक उन की यह सत्ता बिला रोक टोक चलती है. मगर आख़िरकार इसी पिसी और बेज़बान जनता में से कोई आदमी उठ खड़ा होता है जो अपनी शक्ति से चेलों की हुकूमत मानने से इन्कार करता है. उनको कामयाबी के साथ चुनौती देता है और आम लोगों के अन्दर नई जान और उमंग पैदा कर देता है.

जब से गांधी जी हमारे बीच से विदा हुए तभी से हम से कहा जाता रहा है कि वह अमर हैं, उनका संदेश हमेशा के लिये है हमारे इतिहास और गाथा में उनका अमिट स्थान है और ईंट पत्थर की निशानियों से परे होने के कारन उन्हें किसी यादगार की ज़रूरत नहीं है. लेकिन फिर भी अठारह लाख रुपये के ख़र्च पर एक यादगार बनने की चर्चा आज देश में चल रही है. हमारे दफ़्तरों और अदालतों में गांधी जी की तसवीर रहती है. अस्पताल, कालिज, संस्थायें, चबूतरे, सड़कें आदि को गांधी का नाम दे दिया गया है. इस काम में दिलचस्पी सिर्फ़ सरकारी लोगों की ही नहीं ऐसे समझदार सार्वजनिक कार्य कर्ताओं की भी है जिन्होंने गांधी जी के साथ काफ़ी समय बिताया और काम किया है. यह कार्यकर्ता सरकार से ज़ियादातर मामलों में इत्तफ़ाक़ करते हैं और उनका यह भी ख़याल है

سکتے. ایک—سر راجہ مہاراج سنگھ جو ٹھیک اِس سمے بھی انصاف اور انسانیت کو پھر سے قائم کرنے کی کوششوں میں لگے ہوئے ہیں اور دوسرے- الٰہ آباد کا ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ جس نے برداشت اور بدھی متا کے ساتھ ودیارتھیوں کے جلوس کے دن ساری پولس کو عام راستوں یا سڑکوں پر سے ہٹا لیا. انت میں ہم ایشور سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ ہے بھگوان ہم سب کو سمتی دے.

5. 11. '53 —سندر لال

یہ یادگار کیسی

کسی نے کہا ہے کہ جب سرجن ہار کی سمجھ میں یہ نہیں آیا کہ ایک مہاپرش کو اسکی مہانتا کے لئے کیا سزا دے جائی تو اُس نے یہ کام اُس کے چیلوں کے سپرد کیا. اِن چیلوں کی عام طور پر یہ خوبی رہی ہے کہ اُس کے سندیش کی آتما کے بجائے اُس کے شبدوں سے چپکے رہتے ہیں. اندر کی گری چھوڑ کر وہ باہر کے چھلکے پر ہی لٹو ہو جاتے ہیں. وہ لوگ اپنے کو اپنے اندر کے شیطان کے حوالے کر اپنی واسناؤں کے چکر میں—اہنکار سے بھری، ہر دم رنگ بدلنے والی خاصیت کی واسنائیں—بے لگام گھوما کرتے ہیں. اِس طرح یہ چیلے بھوگ بلاس، آڈمبر اور آتم فریبی کی زندگی بتاتے ہیں. لیکن بنتے ہیں اپنے گرو کے بتائے یم نیم کے پنڈت اور دنیا کے ساتھ ٹھیکیدار یا پنڈا کی طرح پیش آتے ہیں. کافی عرصے تک اُن کی یہ سَتا بلا روک ٹوک چلتی ہے. مگر آخرکار اِسی پسی اور بے زبان جنتا میں سے کوئی آدمی اُٹھ کھڑا ہوتا ہے جو اپنی شکتی سے چیلوں کی حکومت ماننے سے انکار کرتا ہے، اُن کو کامیابی کے ساتھ چنوتی دیتا ہے اور عام لوگوں کے اندر نئی جان اور اُمنگ پیدا کر دیتا ہے.

جب سے گاندھی جی ہمارے بیچ سے بدا ہوئے تب ہی سے ہم سے کہا جاتا رہا ہے کہ وہ امر ہیں، اُن کا سندیش ہمیشہ کے لئے ہے، ہمارے اتہاس اور گاتھا میں اُن کا اَمِٹ استھان ہے اور اینٹ پتھر کی نشانیوں سے پرے ہونے کے کارن انہیں کسی یادگار کی ضرورت نہیں ہے. لیکن پھر بھی اٹھارہ لاکھ روپئے کے خرچ پر ایک یادگار بننے کی چرچا آج دیش میں چل رہی ہے. ہمارے دفتروں اور عدالتوں میں گاندھی جی کی تصویر رہتی ہے. اسپتال، کالج، سنستھائیں، چبوترے، سڑکیں آدی کو گاندھی کا نام دے دیا گیا ہے. اِس کام میں دلچسپی صرف سرکاری لوگوں کی ہی نہیں ایسے سمجھدار سارو جنک کارکرتاؤں کی بھی ہے جنہوں نے گاندھی جی کے ساتھ کافی سمے بتایا اور کام کیا ہے. یہ کارکرتا سرکار سے زیادہ تر معاملوں میں اتفاق کرتے ہیں اور اُن کا یہ بھی خیال ہے

कहे बिना नहीं रह सकते कि सरकारी अधिकारियों ने जो कुछ किया उसके सामने विद्यार्थियों की सारी गलतियां फीकी पड़ जाती हैं. जिस समय हम यह पंक्तियां लिख रहे हैं उस समय हमारे दिल का भाव यही है कि लखनऊ या प्रान्त के विद्यार्थी इस सारी दुर्घटना में अन्यायी कम और अन्याय पीड़ित कहीं अधिक हैं. उनके साथ जो बाहर सलूक हुआ उसके बाद उन सबका जेलों में रखा जाना, क़ानून की निगाह से ठीक हो या न हो, हम यह अनुभव करते हैं कि जिस जगह से बैठ कर हम यह लिख रहे हैं उसके मुक़ाबले में जेलखानों की वह कोठरियां कहीं ज़ियादा पवित्र हैं जिनमें इस समय हमारे सैकड़ों उत्साही बच्चे बन्द हैं. हमारा दिल उनके साथ है.

आगे के लिये हम अपने विद्यार्थियों से केवल यह कहना चाहते हैं कि अगर वह अपने आन्दोलन या आन्दोलनों में—और हर देश का इतिहास साक्षी है कि इस तरह के आन्दोलन एक लहर के दब जाने से हमेशा के लिये नहीं मरा करते—मन, बचन और कर्म से पूरी तरह अहिंसात्मक रहें और वह लाठियां और गोलियां बरसाने वाले पुलिस वालों को भी अपना भाई समझें, उनसे लड़ने से इनकार करें, उन पर वार करना तो दूर रहा उनके लिये कोई बुरा विचार भी अपने मन में न आने दें तो विजय अन्त में उनके पैर चूमे बिना नहीं रह सकती. इस तरह देश के अन्दर वह उस शासन हीन समाज के क़ायम करने में बहुत बड़ी मदद देंगे जिसकी तरफ़ विनोबा जी ने इशारा किया है. यही वह 'नैतिक और आर्थिक स्वराज" होगा जिसके लिये महात्मा गांधी ने अन्त समय तक तड़पते हुए अपने प्रान दिये.

दूसरे पक्ष के ख़ास ख़ास भाईयों—श्री कन्हैया लाल मुंशी, पंडित गोविन्द बल्लभ पंत, श्री सम्पूर्णानन्द, श्री चन्द्र भान गुप्ता और श्री आचार्य जुगल किशोर से—जिन सबके साथ काम करने का हमें सौभाग्य मिल चुका है और जिनसे हमारे दिल में प्रेम है, हम बड़ी नम्रता के साथ केवल यह कहना चाहते हैं कि वह थोड़ी देर के लिये रुक कर ठंडे दिल से सोचें कि वह देश को किधर लेजा रहे हैं और किधर लेजाना चाहते हैं. कोई आदमी भी जो ख़ुद अपने देश की निहत्थी जनता पर और देश के लड़कों और लड़कियों पर बिना गोलियां बरसाए उन्हें क़ाबू में नहीं कर सकता वह न जन सत्ता या लोक सत्ता जैसे शब्द मुंह से निकालने का अधिकारी है और न देश पर शासन करने के क़ाबिल है.

प्रान्त के विद्यार्थियों के इस बार के आन्दोलन में दो आदमियों ने जिस तरह अपने को संभाला या जिस तरह का हिस्सा लिया उसकी भी हम तारीफ़ किये बिना नहीं रह

کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ سرکاری ادھکاریوں نے جو کچھ کیا اس کے سامنے ودیارتھیوں کی ساری غلطیاں پھیکی پڑ جاتی ہیں ۔ جس سمے ہم یہ پنکتیاں لکھ رہے ہیں اس سمے ہمارے دل کا بھاو یہی ہے کہ لکھنؤ یا پرانت کے ودیارتھی اس ساری درگھٹنا میں انیائی کم اور انیائے پیڑت کہیں ادھک ہیں ۔ ان کے ساتھ جو باہر سلوک ہوا اس کے بعد ان سب کا جیلوں میں رکھا جانا قانون کی نگاہ سے ٹھیک ہو یا نہو، ہم یہ انوبھو کرتے ہیں کہ جس جگہ سے بیٹھ کر ہم یہ لکھ رہے ہیں اس کے مقابلے میں جیل خانوں کی وہ کوٹھریاں کہیں زیادہ پوتر ہیں جن میں اس سمے ہمارے سیکڑوں اتساہی بچے بند ہیں۔ ہمارا دل ان کے ساتھ ہے ۔

آگے کے لئے ہم اپنے ودیارتھیوں سے کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ اگر وہ اپنے آندولن یا آندولنوں میں—اور ہر دیش کا اتہاس ساکشی ہے کہ اس طرح کے آندولن ایک لہر کے دب جانے سے ہمیشہ کے لئے نہیں مرا کرتے—من، بچن اور کرم سے پوری طرح اہنسا تمک رہیں اور وہ لاٹھیاں اور گولیاں برسانے والے پولس والوں کو بھی اپنا بھائی سمجھیں، ان سے لڑنے سے انکار کریں، ان پر وار کرنا تو دور رہا ان کے لئے کوئی برا وچار بھی اپنے من میں نہ آنے دیں تو وجے انت میں ان کے پیر چومے بنا نہیں رہ سکتی ۔ اس طرح دیش کے اندر وہ اس شاسن ہین سماج کے قائم کرنے میں بہت بڑی مدد دینگے جس کی طرف ونوبا جی نے اشارہ کیا ہے ۔ یہی وہ "نیتک اور آرتھک سوراج" ہوگا جس کے لئے مہاتما گاندھی نے انت سمے تک تڑپتے ہوئے اپنے پران دئے ۔

دوسرے پکش کے خاص خاص بھائیوں—شری کنھیا لال منشی، پنڈت گووند بلبھ پنت، شری سمپورنا نند، شری چندر بھان گپتا اور شری آچاریہ جگل کشور سے—جن سب کے ساتھ کام کرنے کا ہمیں سوبھاگیہ مل چکا ہے اور جن سے ہمارے دل میں پریم ہے، ہم بڑی نمرتا کے ساتھ کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ تھوڑی دیر کے لئے رک کر ٹھنڈے دل سے سوچیں کہ وہ دیش کو کدھر لے جا رہے ہیں اور کدھر لے جانا چاہتے ہیں ۔ کوئی آدمی بھی جو خود اپنے دیش کی نہتی جنتا پر اور دیش کے لڑکوں اور لڑکیوں پر بنا گولیاں برسائے انہیں قابو میں نہیں کر سکتا وہ نہ جن ستا یا لوک ستا جیسے شبد منہ سے نکالنے کا ادھکاری ہے، نہ دیش پر شاسن کرنے کے قابل ہے ۔

پرانت کے ودیارتھیوں کے اس بار کے آندولن میں دو آدمیوں نے جس طرح اپنے کو سنبھالا یا جس طرح کا حصہ لیا اس کی بھی ہم تعریف کئے بنا نہیں رہ

नामधारी लोक सत्ता हिंसा के सहारे ही चल सकती है. इससे दुनिया में फूट बढ़ी है और हिंसा की बुरी ताक़तें सौ गुना ज़ियादा मज़बूत हो गई हैं. अब जनता का ज़माना आ रहा है और आ गया है. अब दुनिया में एक आदमी की हकूमत, चाहे वह कितना भी अच्छा हो, नहीं चल सकती......लोक सत्ता का यह तमाशा जिसे एक आदमी की एक वोट के नाम पर चलाया जा रहा है बादशाहों और राजाओं की हकूमत से किसी तरह बेहतर नहीं है......यह क्या बात है कि प्लानिंग कमीशन की मंहगी योजनाओं और ढाई साल की लगातार कोशिशों के बाद भी बेकारी बढ़ती जा रही है.......हम करोड़ों आदमियों की ज़िन्दगी के साथ कब तक इस तरह खेलते रहेंगे? इसका इलाज यह है कि हम केवल शोषन हीन समाज ही नहीं बल्कि शासन हीन समाज क़ायम करें. यह तभी हो सकता है जब हम राज सत्ता को गांव गांव के अन्दर बांट दें......सच्ची लोक सत्ता तब तक क़ायम नहीं हो सकती जब तक लोक सत्ता के आजकल के ढांचे में क्रान्तिकारी तबदीलियां न की जाएं. लोगों के दिलों से डर निकालने, दुनिया में अमन क़ायम करने और सर्वोदय यानी सब के भले वाला समाज क़ायम करने का यही एक तरीक़ा है. सर्वोदय सच्ची लोक सत्ता का ही दूसरा नाम है. इस सच्ची लोक सत्ता में फिर बहुमत और अल्पमत का कोई सवाल ही न रह जायगा, क्योंकि इसमें कोई सरकार न होगी या यूं कहिये कि सरकार के हाथ में सत्ता नहीं के बराबर होगी."

हमने आचार्य विनोबा के भाषन का ज़रा लम्बा टुकड़ा केवल इसलिये दिया है क्योंकि इससे हमारे आज कल के रोग का ख़ासा पता चलता है.

लखनऊ के मामले में हम यह मानते हैं कि आम तौर पर विद्यार्थियों का आन्दोलन शान्तिमय और अहिंसात्मक रहा. इसके लिये वह बधाई के पात्र हैं. लेकिन उनसे ग़लतियां भी हुईं. कुछ विद्यार्थियों ने भी और कुछ दूसरे लोगों ने भी उनके नाम पर और उनसे हमदर्दी ज़ाहिर करने के लिये ग़लती से या शरारत से, हो सकता है कुछ ने जानकर उनके आन्दोलन को कलंकित करने के लिये, पुलिस पर पत्थर फेंके, पटाख़े फेंके. यह सब काम बुरे और हिंसा के काम थे. सरकारी माल को या इमारतों को जलाना और तार काटना भी बुरे काम हैं. अपने विरोधी नेताओं के पुतलों को निकाल कर उनका निरादर करना और जलाना यह सब हिंसात्मक न हों तो भी गन्दे और बुरे काम हैं. इस तरह के काम किसी आन्दोलन की सफलता में मदद नहीं दे सकते, न उस आन्दोलन को दुनिया की नज़रों में ऊंचा उठा सकते हैं. लेकिन हम यह

نام دھاری لوک سَتا ہنسا کے سہارے ہی چل سکتی ہے. اس سے دنیا میں پھوٹ بڑھی ہے اور ہنسا کی بری طاقتیں سو گنا زیادہ مضبوط ہوگئی ہیں. اب جنتا کا زمانہ آ رہا ہے اور آ گیا ہے . اب دنیا میں ایک آدمی کی حکومت، چاہے وہ کتنا ہی اچھا ہو نہیں چل سکتی......لوک سَتا کا یہ تماشہ جسے ایک آدمی کی ایک ووٹ کے نام پر چلایا جا رہا ہے بادشاہوں اور راجاؤں کی حکومت سے کسی طرح بہتر نہیں ہے......یہ کیا بات ہے کہ پلاننگ کمیشن کی مہنگی یوجناؤں اور ڈھائی سال کی لگاتار کوششوں کے بعد بھی بیکاری بڑھتی جا رہی ہے......ہم کروڑوں آدمیوں کی زندگی کے ساتھ کب تک اس طرح کھیلتے رہیں گے ؟ اس کا علاج یہ ہے کہ کیول شوشن ہین سماج ہی نہیں بلکہ شاسن ہین سماج قائم کریں . یہ تب ہی ہو سکتا ہے جب ہم راج سَتا کو گاؤں گاؤں کے اندر بانٹ دیں......سچی لوک سَتا تب تک قائم نہیں ہو سکتی جب تک لوک سَتا کے آجکل کے ڈھانچے میں کرانتکاری تبدیلیاں نہ کی جائیں . لوگوں کے دلوں سے ڈر نکالنے، دنیا میں امن قائم کرنے اور سروودے یعنی سب کے بھلے والا سماج قائم کرنے کا یہی ایک طریقہ ہے . سروودے سچی لوک سَتا کا ہی دوسرا نام ہے . اس سچی لوک سَتا میں پھر بہومت اور الپ مت کا کوئی سوال ہی نہ رہ جائے گا کیوں کہ اس میں کوئی سرکار نہ ہوگی یا یوں کہئے کہ سرکار کے ہاتھ میں سَتا نہیں کے برابر ہوگی."

ہم نے آچاریہ ونوبا کے بھاشن کا ذرا لمبا ٹکڑا کیول اس لئے دیا ہے کیوں کہ اس سے ہمارے آجکل کے روگ کا خاصا پتہ چلتا ہے .

لکھنؤ کے معاملے میں ہم یہ مانتے ہیں کہ عام طور پر ودیارتھیوں کا آندولن شانتی مے اور اہنساتمک رہا . اس کے لئے وہ بدھائی کے پاتر ہیں . لیکن ان سے غلطیاں بھی ہوئیں. کچھ ودیارتھیوں نے بھی اور کچھ دوسرے لوگوں نے بھی ان کے نام پر اور ان سے ہمدردی ظاہر کرنے کے لئے غلطی سے یا شرارت سے، ہو سکتا ہے کچھ نے جان کر ان کے آندولن کو کلنکت کرنے کے لئے، پولس پر پتھر پھینکے، پٹاخے پھینکے . یہ سب کام برے اور ہنسا کے کام تھے . سرکاری مال کو یا عمارتوں کو جلانا اور تار کاٹنا بھی برے کام ہیں . اپنے ورودھی نیتاؤں کے پتلوں کو نکال کر ان کا نرادر کرنا اور جلانا یہ سب ہنساتمک نہیں تو بھی گندے اور برے کام ہیں . اس طرح کے کام کسی آندولن کی سپھلتا میں مدد نہیں دے سکتے، نہ اس آندولن کو دنیا کی نظروں میں اونچا اٹھا سکتے ہیں. لیکن ہم یہ

कैन्टन का शहर माओ त्से तुंग और उनकी पार्टी के क़ब्ज़े में आ चुका था. एक बड़ा फ़ौजी अफ़सर वहां का एक कारख़ाना देखने के लिये गया. चौकीदार दरवाज़े पर खड़ा था. फ़ौजी अफ़सर के पास 'पास' नहीं था. चौकीदार ने बिना पास देखे अन्दर जाने देने से इनकार किया. फ़ौजी अफ़सर अपने घमंड में था. चौकीदार को हाथ से हटा कर वह ज़बरदस्ती अन्दर चला गया. यह देख कर लोगों ने काम बन्द कर दिया. अख़बारों में ख़ूब शोर मचा. सरकार को पता चला. उस फ़ौजी अफ़सर को हुक्म मिला कि वह जा कर चौकीदार से माफ़ी मांगे और फिर कोई ऐसी हरकत न करे. उस का माफ़ीनामा शहर के अख़बारों में छाप दिया गया.

दूसरी घटना पीकिंग यूनीवर्सिटी की है. डाक्टर मी वहां के प्रेसीडेन्ट हैं, बूढ़े और विद्वान हैं. यूनीवर्सिटी के साढ़े छे हज़ार लड़के उन्हें बड़े आदर और प्रेम की निगाह से देखते हैं. एक दिन एक लड़के को उसकी किसी ग़लती पर बुरा कहते हुए डाक्टर मी के मुंह से कोई ऐसा शब्द निकल गया जो पहले कभी बरता जाता था पर अब नए चीन में जिसका रिवाज बन्द हो गया है. लड़कों को मालूम हुआ तो उन्हें बुरा लगा. डाक्टर मी को पता चल गया. उन्होंने फ़ौरन सब लड़कों को जमा कर के सबके सामने अपनी ग़लती को माना, अपना शब्द वापस लिया और उस लड़के को प्रेम के साथ बुला कर थपथपाया. डाक्टर मी के लिये आदर और प्रेम यूनीवर्सिटी के लड़के लड़कियों में इस घटना से घटा नहीं, और बढ़ गया.

हमारे एक हिन्दुस्तानी मित्र, जो हाल में पीकिंग यूनीवर्सिटी में हिन्दी के प्रोफ़ेसर रह चुके हैं, कहते थे कि चीन की यूनीवर्सिटियों में आजकल राज विद्यार्थियों का ही माना जाता है और है. और इससे पढ़ाई में या यूनीवर्सिटी के दूसरे कामकाज में बाधा नहीं पड़ती, बेहद मदद मिलती है. हम तो इन बातों को सुनने से भी घबराते

सच यह है कि हमारा हकूमत का सारा ढांचा ही ग़लत और बिगड़ा हुआ है. 21 अक्तूबर को मुंगेर में व्याख्यान देते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कुछ पते की बातें कही हैं. हम उनके कुछ वाक्य अंगरेज़ी से अनुवाद करके नीचे देते हैं. उन्होंने कहा कि :—

"सच्ची डेमोक्रेसी यानी लोक सत्ता उस समय तक एक सपना रहेगी जब तक हम राज सत्ता को टुकड़े टुकड़े कर के उसे नीचे तक जनता में न बांट दें ..... पार्लीमेन्टरी हकूमत और किसी एक राजा का मन चाहा शासन दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं......यानी यह

کینٹن کا شہر ماؤ تسے تنگ اور اور اُن کی پارٹی کے قبضے میں آچکا تھا ۔ ایک بڑا فوجی افسر وہاں کا ایک کارخانہ دیکھنے کے لئے گیا ۔ چوکیدار دروازے پر کھڑا تھا ۔ فوجی افسر کے پاس 'پاس' نہیں تھا. چوکیدار نے بنا پاس دیکھے اندر جانے دینے سے اِنکار کیا ۔ فوجی افسر اپنے گھمنڈ میں تھا ۔ چوکیدار کو ہاتھ سے ہٹاکر وہ زبردستی اندر چلا گیا ۔ یہ دیکھکر لوگوں نے کام بند کردیا ۔ اخباروں میں خوب شور مچا ۔ سرکار کو پتہ چلا ۔ اُس فوجی افسر کو حکم ملا کہ وہ جا کر چوکیدار سے معافی مانگے اور پھر کوئی ایسی حرکت نہ کرے. اُس کا معافی نامہ شہر کے اخباروں میں چھاپ دیا گیا ۔

دوسری گھٹنا پیکنگ یونیورسٹی کی ہے ۔ ڈاکٹر چی وہاں کے پریسیڈینٹ ہیں، بوڑھے اور ودوان ہیں ۔ یونیورسٹی کے ساڑھے چھ ہزار لڑکے انہیں بڑے آدر اور پریم کی نگاہ سے دیکھتے ہیں ۔ ایک دن ایک لڑکے کو اُسکی کسی غلطی پر برا کہتے ہوئے ڈاکٹر چی کے منہ سے کوئی ایسا شبد نکل گیا جو پہلے کبھی برتا جاتا تھا پر اب نئے چین میں جس کا رواج بند ہوگیا ہے ۔ لڑکوں کو معلوم ہوا تو اُنہیں برا لگا ۔ ڈاکٹر چی کو پتہ چل گیا ۔ انہوں نے فوراً سب لڑکوں کو جمع کر کے سب کے سامنے اپنی غلطی کو مانا، اپنا شبد واپس لیا اور اُس لڑکے کو پریم کے ساتھ بلا کر تھپتھپایا ۔ ڈاکٹر چی کے لئے آدر اور پریم یونیورسٹی کے لڑکے لڑکیوں میں اِس گھٹنا سے گھٹا نہیں، اور بڑھ گیا.

ہمارے ایک ہندستانی مِتر، جو حال میں پیکنگ یونیورسٹی میں ہندی کے پروفیسر رہ چکے ہیں، کہتے تھے کہ چین کی یونیورسٹیوں میں آجکل راج ودیارتھیوں ہی کا مانا جاتا ہے اور ہے ۔ اور اُس سے پڑھائی میں یا یونیورسٹی کے دوسرے کام کاج میں بادھا نہیں پڑتی، بےحد مدد ملتی ہے. ہم تو اِن باتوں کو سننے سے بھی گھبراتے ہیں ۔

سچ یہ ہے کہ ہمارا حکومت کا سارا ڈھانچہ ہی غلط اور بگڑا ہوا ہے ۔ 21 اکتوبر کو مونگیر میں ویاکھیان دیتے ہوئے آچاریہ ونوبا بھاوے نے کچھ پتے کی باتیں کہی ہیں ۔ ہم اُن کے کچھ واکیہ انگریزی سے انواد کر کے نیچے دیتے ہیں. انہوں نے کہا کہ :—

" سچی ڈیموکریسی یعنی لوک ستا اُس سمے تک کیول ایک سپنا رہے گی جب تک ہم راج ستا کو ٹکڑے ٹکڑے کر کے اسے نیچے تک جنتا میں نہ بانٹ دیں...... یہ پارلیامنٹری حکومت اور کسی ایک راجا کا من چاہا شاسن دونوں ایک ہی تھیلی کے چٹے بٹے ہیں......یعنی یہ

और गोलियों से मरने वालों की तादाद का भी ठीक पता नहीं चलता. केवल पहले दिन के मरने वालों की तादाद 13 लड़कियां और 26 लड़के बताई जाती है. घोड़ों की टापों से लोगों, यहां तक कि लड़कियों का कुचल जाना भी लोगों ने अपनी आंखों से देखा.

इन सब खबरों को सुन कर यह सोचना पड़ता है कि आखिर हम देश को किधर ले जा रहे हैं. बहुत से लोगों को कांगरेस गवरमेन्टों से शिकायत थी कि इन्होंने हकूमत के पुराने अंगरेज़ी ढांचे को बदलने या सुधारने के बजाय उसे ज्यों का त्यों क़ायम रखा जिससे देश की हालत और ज़ियादा बिगड़ी. अब लखनऊ के समाचार सुन कर हमें 35 बरस पहले के दिन याद आ गए. मालूम होता है कि सार्वजनिक आन्दोलनों को दबाने के तरीक़े भी हमारे कुछ नये हाकिमों ने अपने पहले के अंगरेज़ मालिकों से पूरी तरह सीख लिये हैं. मशहूर जनरल डायर ने जलियानवाला हत्याकांड के बाद अपने एक बयान में कहा था कि "मैं लोगों के दिलों में डर बैठा देना (Strike terror) चाहता था." ज़ाहिर है कि लखनऊ के कुछ अधिकारियों के दिमाग़ भी ठीक इसी तरह काम कर रहे थे. उनके हाथ में ताक़त थी. गुनहगारों और बेगुनाहों में फ़रक़ किये बिना एक बार जिस तरह हो आम जनता के दिलों में डर और धाक बैठा देना उन्होंने अपनी हकूमत की सलामती और शान क़ायम रखने के लिये ज़रूरी समझा.

हम इस सारे मामले में लाठी चलाने वाले या गोलियां चलाने वाले ग़रीब पुलिस वालों को दोशी नहीं मानते. वह बेचारे हुकुम के पाबन्द, ज़ाहिर है, किसी दूसरे हाथों में लाठी का काम दे रहे थे. इस सारे मामले में पुलिस वालों या छोटे मोटे पुलिस अफ़सरों को सज़ा देना उनके साथ इनसाफ़ करना न होगा. दोश कहीं न कहीं हमारे सारे आर्थिक और राजकाजी ढांचे में है.

आचार्य विनोबा भावे ने अपनी सेवापुरी की एक तक़रीर में हमारी मौजूदगी में कहा था कि :—"जब हमारी आजकल की सरकार अहिंसा की बात करती है तो बिलकुल यह लगता है कि बग़ल में छुरी और मुंह में राम राम." इन तीन दिन के अन्दर लखनऊ में वह छुरी बग़ल में न रह कर खूब खुल कर खेली. हम अकसर 'नानवायलेंस' यानी अहिंसा और 'डेमोक्रेसी' यानी लोक सत्ता दोनों की डींग मारा करते हैं. लखनऊ में हमने जो कुछ किया वह न अहिंसा था और न लोक सत्ता.

अहिंसा और लोक सत्ता की डींग मारते हुए हममें से कोई कोई ज़िम्मेवार आदमी कभी कभी नये कम्युनिस्ट चीन से अपना मुक़ाबला करके अपने को ऊंचा दिखाते हुए भी नहीं शरमाते. हम यहां चीन की हाल की केवल दो घटनाएं नीचे देते हैं.

اور گولیوں سے مرنے والوں کی تعداد کا بھی ٹھیک پتہ نہیں چلتا. کیول پہلے دن کے مرنے والوں کی تعداد 13 لڑکیاں اور 26 لڑکے بتائی جاتی ہے. گھوڑوں کی ٹاپوں سے لوگوں، یہاں تک کہ لڑکیوں کا کچلا جانا بھی لوگوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا.

ان سب خبروں کو سنکر یہ سوچنا پڑتا ہے کہ آخر ہم دیش کو کدھر لے جا رہے ہیں. بہت سے لوگوں کو کانگریس گورنمنٹوں سے شکایت تھی کہ انہوں نے حکومت کے پرانے انگریزی ڈھانچے کو بدلنے یا سدھارنے کے بجائے اسے جوں کا توں قائم رکھا جس سے دیش کی حالت اور زیادہ بگڑی. اب لکھنؤ کے سماچار سنکر ہمیں 35 برس پہلے کے دن یاد آگئے. معلوم ہوتا ہے کہ سارو جنک اندولنوں کو دبانے کے طریقے بھی ہمارے کچھ نئے حاکموں نے اپنے پہلے کے انگریز مالکوں سے پوری طرح سیکھ لئے ہیں. مشہور جنرل ڈائر نے جلیانوالا ہتیاکانڈ کے بعد اپنے ایک بیان میں کہا تھا کہ "میں لوگوں کے دلوں میں ڈر بیٹھا دینا (Strike terror) چاہتا تھا." ظاہر ہے کہ لکھنؤ کے کچھ ادھیکاریوں کے دماغ بھی ٹھیک اسی طرح کام کر رہے تھے. ان کے ہاتھ میں طاقت تھی. گنہگاروں اور بےگناہوں میں فرق کئے بنا ایک بار جس طرح ہو عام جنتا کے دلوں میں ڈر اور دھاک بیٹھا دینا انہوں نے اپنی حکومت کی سلامتی اور شان قائم رکھنے کے لئے ضروری سمجھا.

ہم اس سارے معاملے میں لاٹھی چلانے والے یا گولیاں چلانے والے غریب پولس والوں کو دوشی نہیں مانتے. وہ بیچارے حکم کے پابند، ظاہر ہے، کسی دوسرے ہاتھوں میں لاٹھی کا کام دے رہے تھے. اس سارے معاملہ میں پولس والوں یا چھوٹے موٹے پولس افسروں کو سزا دینا ان کے ساتھ انصاف کرنا نہ ہوگا. دوش کہیں نہ کہیں ہمارے سارے آرتھک اور راج کاجی ڈھانچے میں ہے.

آچاریہ ونوبا بھاوے نے اپنی سیواپوری کی ایک تقریر میں ہماری موجودگی میں کہا تھا کہ :—"جب ہماری آجکل کی سرکار اہنسا کی بات کرتی ہے تو بالکل یہ لگتا ہے کہ بغل میں چھری اور منہ میں رام رام." ان تین دن کے اندر لکھنؤ میں وہ چھری بغل میں نہ رہ کر خوب کھل کر کھیلی. ہم اکثر 'نان وائلنس' یعنی اہنسا اور 'ڈیموکریسی' یعنی لوک ستا دونوں کی ڈینگ مارا کرتے ہیں. لکھنؤ میں ہم نے جو کچھ کیا وہ نہ اہنسا تھا اور نہ لوک ستا.

اہنسا اور لوک ستا کی ڈینگ مارتے ہوئے ہم میں سے کوئی کوئی ذمہ دار آدمی کبھی کبھی نئے کمیونسٹ چین سے اپنا مقابلہ کرکے اپنے کو اونچا دکھاتے ہوئے بھی نہیں شرماتے. ہم یہاں سے چین کی حال کی کیول دو گھٹنائیں نیچے دیتے ہیں.

जाता है कि कुछ विद्यार्थियों ने भी कहीं कहीं इस तरह की ग़लतियाँ कीं तब भी आन्दोलन को दबाने के लिये अधिकारियों ने जो तरीक़े इस्तेमाल किये उनसे सारे देश को एक बहुत बड़ा धक्का लगा.

अख़बारों की ख़बर है कि किसी टैकनिकल स्कूल के 80 विद्यार्थी अपने होस्टल के अन्दर थे. कहा जाता है कि इन में से कुछ विद्यार्थियों ने पास से जाती हुई एक पुलिस लारी पर कुछ पटाख़े फेंक दिये. इस पर पुलिस होस्टल के अन्दर घुस आई. बहुत से लड़कों ने डर के मारे अपने अपने कमरों में जा कर अन्दर से कमरों के दरवाज़े बन्द कर लिये. पुलिस ने ज़बरदस्ती दरवाज़े तोड़ डाले और एक एक कमरे में घुस कर सब लड़कों को लाठियों से 'बेदरदी से पीटा.' अख़बार में अंगरेज़ी शब्द हैं 'Merciless Beating'. इस के बाद अस्सी के अस्सी लड़के गिरफ़्तार कर के जेल पहुंचा दिये गए.

मामूली सवाल होता है कि क्या यह देख लिया गया था कि पटाख़े फेंकने में अस्सी के अस्सी लड़के शामिल थे ? और जिन लड़कों ने पटाख़े फेंकने का जुर्म किया था—अगर यह जुर्म भी—हो तो क्या उन्हें बिना पीटे गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता था ? जिन बच्चों ने डर के मारे अन्दर घुस कर दरवाज़े बन्द कर लिये थे क्या उन सब को भी गिरफ़्तार करना और गिरफ़्तारी से पहले बेदरदी के साथ पीटना ज़रूरी था ? क्या देश का क़ानून पुलिस को इसकी इजाज़त देता है ?

एक और ख़बर है कि क़ैसरबाग़ सब्ज़ीमंडी में जो खटिकों का मुहल्ला है, अचानक तीन बजे रात को पुलिस ने बहुत बड़ी तादाद में जाकर और एक एक घर में ज़बरदस्ती घुस कर सोते हुओं को जगाया और लगभग सब बालिग़ मरदों को जिनकी तादाद 129 थी गिरफ़्तार कर लिया. इन में कुछ तपेदिक़ के और दूसरी बीमारियों के मरीज़ और कुछ अपाहज भी थे. सब को जेल भेज दिया गया. इन लोगों ने ज़ाहिरा कम से कम उस समय कोई जुर्म नहीं किया था. वजह यह बताई जाती है कि एक दिन पहले उस जगह के आस पास कुछ टेलीफ़ोन के खम्बों और तारों को नुक़सान पहुंचा था और ख़याल यह था कि इस के लिये उसी मुहल्ले के लोग क़सूरवार हैं.

शहर में जगह जगह लोगों का लाठियों से पीटा जाना, दूकानों का लूटा जाना, बिना किसी फ़र्क़ के गुनहगारों और बेगुनाहों सब पर गोलियों की बौछार करना वग़ैरा मामूली बातें थीं. गिरफ़्तारियों की तादाद एक दिन में तीन सौ से ऊपर गई. कुल तादाद क्या थी नहीं मालूम. इलाहाबाद से आने वाले कुछ विद्यार्थी बिना कुछ किये ही लखनऊ स्टेशन पर गिरफ़्तार करके जेल भेज दिये गए. लाठियों

مانی لیں کہ کچھ ودیارتھیوں نے بھی کہیں کہیں اس طرح کی غلطیاں کیں تب بھی آندولن کو دبانے کے لئے ادھیکاریوں نے جو طریقے استعمال کئے اُن سے سارے دیش کو ایک بہت بڑا دھکا لگا ۔

اخباروں کی خبر ہے کہ کسی ٹیکنیکل اسکول کے 80 ودیارتھی اپنے ہوسٹل کے اندر تھے۔ کہا جاتا ہے کہ اِن میں سے کچھ ودیارتھیوں نے پاس سے جاتی ہوئی ایک پولس لاری پر کچھ پٹاخے پھینک دئے ۔ اِس پر پولس ہوسٹل کے اندر گھس آئی ۔ بہت سے لڑکوں نے ڈر کے مارے اپنے اپنے کمروں میں جاکر اندر سے کمروں کے دروازے بند کرلئے ۔ پولس نے زبردستی دروازے توڑ ڈالے اور ایک ایک کمرے گھس کر سب لڑکوں کو لاٹھیوں سے 'بےدردی سے پیٹا.' اخبار میں انگریزی شبد ہیں 'Merciless Beating' اس کے بعد اسی کے اسی لڑکے گرفتار کرکے جیل پہنچادئے گئے۔

معمولی سوال ہوتا ہے کہ کیا یہ دیکھ لیا گیا تھا کہ پٹاخے پھینکنے میں اسی کے اسی لڑکے شامل تھے ؟ اور جن لڑکوں نے پٹاخے پھینکنے کا جرم کیا تھا—اگر یہ جرم بھی ہو تو—کیا انہیں بنا پیٹے گرفتار نہیں کیا جاسکتا تھا ؟ جن بچوں نے ڈر کے مارے اندر گھس کر دروازے بند کرلئے تھے کیا اُن سب کو بھی گرفتار کرنا اور گرفتاری سے پہلے بےدردی کے ساتھ پیٹنا ضروری تھا؟ کیا دیش کا قانون پولس کو اِسکی اجازت دیتا ہے ؟

ایک اور خبر ہے کہ قیصر باغ سبزی منڈی میں جو کھٹکوں کا محلہ ہے اچانک تین بجے رات کو پولس نے بہت بڑی تعداد میں جاکر اور ایک ایک گھر میں زبردستی گھس کر سوتے ہوؤں کو جگایا اور لگ بھگ سب بالغ مردوں کو جن کی تعداد 129 تھی گرفتار کرلیا ۔ اِن میں کچھ تپدق کے اور دوسری بیماریوں کے مریض اور کچھ اپاہج بھی تھے ۔ سب کو جیل بھیجدیا گیا ۔ اِن لوگوں نے ظاہرا کم سے کم اُس سمے کوئی جرم نہیں کیا تھا. وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ ایک دن پہلے اس جگہ کے آس پاس کچھ ٹیلیفون کے کھمبوں اور تاروں کو نقصان پہنچا تھا اور خیال یہ تھا کہ اِس کے لئے اسی محلے کے لوگ قصوروار ہیں ۔

شہر میں جگہ جگہ لوگوں کا لاٹھیوں سے پیٹے جانا' دوکانوں کا لوٹا جانا' بنا کسی فرق کے گنہگاروں اور بےگناہوں سب پر گولیوں کی بوچھار کرنا وغیرہ معمولی باتیں تھیں ۔ گرفتاریوں کی تعداد ایک دن میں تین سو سے اُوپر گئی ۔ کل تعداد کیا تھی' نہیں معلوم ۔ الہ آباد سے جانے والے کچھ ودیارتھی بنا کچھ کئے ہی لکھنؤ اسٹیشن پر گرفتار کرکے جیل بھیجدئے گئے ۔ لاٹھیوں

को बरक़रार रखने के लिये तरह तरह से ज़ोर डाले और कोशिशें करे—डंडे से, क़ानून से, पैसे से, मैडिल से. विद्यार्थियों को और सबको इससे आगाह रहना चाहिये. जो भी मौक़ा हो शान्ति और सदाचार से काम लेना चाहिये. वह जितना जियादा ग़म खायेंगे, जितना गहराई से काम करेंगे उतना ही सफल होंगे. वह इस तरह संभल कर चलें तो देश उनका है, भविष्य उनका है.

—सुरेश रामभाई

लखनऊ का विद्यार्थी आन्दोलन

श्री सुरेश रामभाई का यह नोट 31 अक्तूबर और 1, 2, और 3 नवम्बर की लखनऊ की घटनाओं से पहले का लिखा हुआ है. लखनऊ का इस समय का विद्यार्थी आन्दोलन क़रीब क़रीब ख़तम हो चुका. हो सकता है कि 'नया हिन्द' के इस अंक के निकलने से पहले विद्यार्थियों और अधिकारियों में कुछ सुलह समझौता भी हो चुका हो पर लखनऊ की इन चार दिन की घटनाओं पर हम सब को ठंडे दिल से सोचने की ज़रूरत है.

विद्यार्थियों और अधिकारियों के बीच के झगड़े की तफ़सील में इस समय जाना बेकार है. मोटे तौर पर यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों को अपनी यूनीवर्सिटी यूनियन के संगठन, चुनाव वग़ैरा के बारे में अंगरेज़ी ज़माने से कुछ अधिकार हासिल थे. हाल में कुछ ऊंचे सरकारी अधिकारियों ने उन अधिकारों का ज्यों का त्यों जारी रखना ख़तरनाक समझा. उनमें उलट फेर की तजवीज़ें की गईं. विद्यार्थियों को यह बात अच्छी न लगी. आन्दोलन शुरू हो गया. पर लखनऊ के विद्यार्थी आन्दोलन और उसको दबाने के लिये सरकार की कोशिशों ने जो रूप धारन किया इस के सामने यह सब बातें अब अधिक महत्व की नहीं रहीं.

विद्यार्थी आन्दोलन ने कहा जाता है कि कुछ अनुचित रूप भी धारन कर लिया था. कहीं कहीं कुछ लोगों ने पुलिस पर पत्थर फेंके. कहीं कहीं कोई छोटी मोटी सरकारी इमारतें जला दी गईं. कहीं कहीं तार और टेलीफ़ोन काटे गए. पर लखनऊ के डिसट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने अपने बयान में स्वीकार किया है कि इस तरह के कामों में आम तौर पर विद्यार्थी शामिल नहीं थे. कहीं कहीं तो ऐसे कामों में विद्यार्थी दिखाई ही नहीं दिये. अधिकारियों की तरफ़ से माना गया है कि इस तरह के काम अधिकतर शहर के कुछ आवारा और फ़ालतू लोगों ने ही किये. यह भी सब मानते हैं कि विद्यार्थियों के जलूस और उनका सारा आन्दोलन आम तौर पर शान्तिमय था. अगर हम यह

کو برقرار رکھنے کے لئے طرح طرح سے زور ڈالے اور کوشش کرے ― ڈنڈے سے، قانون سے، پیسے سے، میڈل سے. ودیارتھیوں کو اور سب کو اس سے آگاہ رہنا چاہئے. جو بھی موقع ہو شانتی اور سداچار سے کام لینا چاہئے. وہ جتنا زیادہ غم کھائیں گے، جتنی گہرائی سے کام کریں گے اتنا ہی سپھل ہونگے. وہ اس طرح سنبھل کر چلیں تو دیش ان کا ہے، بھوشیہ ان کا ہے.

―سریش رام بھائی

لکھنؤ کا ودیارتھی آندولن

شری سریش بھائی کا یہ نوٹ 31 اکتوبر اور 2، 1 اور 3 نومبر کی لکھنؤ کی گھٹناؤں سے پہلے کا لکھا ہوا ہے. لکھنؤ کا اس سمے کا ودیارتھی آندولن قریب قریب ختم ہوچکا. ہوسکتا ہے کہ 'نیا ہند' کے اس انک کے نکلنے کے پہلے ودیارتھیوں اور ادھیکاریوں میں کچھ صلح سمجھوتہ بھی ہوچکا ہو. پر لکھنؤ کی ان چار دن کی گھٹناؤں پر ہم سب کو ٹھنڈے دل سے سوچنے کی ضرورت ہے.

ودیارتھیوں اور ادھیکاریوں کے بیچ کے جھگڑے کی تفصیل میں اس سمے جانا بیکار ہے. موٹے طور پر یونیورسٹی کے ودیارتھیوں کو اپنی یونیورسٹی یونین کے سنگٹھن 'چناؤ' وغیرہ کے بارے میں انگریزی زمانے سے کچھ ادھیکار حاصل تھے. حال میں کچھ اونچے سرکاری ادھیکاریوں نے ان ادھیکاروں کو جوں کا توں جاری رکھنا خطرناک سمجھا. ان میں الٹ پھیر کی تجویزیں کی گئیں. ودیارتھیوں کو یہ بات اچھی نہیں لگی. آندولن شروع ہوگیا. پر لکھنؤ کے ودیارتھی آندولن اور اس کو دبانے کے لئے سرکار کی کوششوں نے جو روپ دھارن کیا اس کے سامنے یہ سب باتیں اب ادھک مہتو کی نہیں رہیں.

ودیارتھی آندولن نے کہا جاتا ہے کہ کچھ انوچت روپ بھی دھارن کرلیا تھا. کہیں کہیں کچھ لوگوں نے پولس پر پتھر پھینکے. کہیں کہیں کوئی چھوٹی موٹی سرکاری عمارتیں جلا دی گئیں. کہیں کہیں تار اور ٹیلیفون کاٹے گئے. پر لکھنؤ کے ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ نے اپنے بیان میں سویکار کیا ہے کہ اس طرح کے کاموں میں عام طور پر ودیارتھی شامل نہیں تھے. کہیں کہیں تو ایسے کاموں میں ودیارتھی دکھائی ہی نہیں دئے. ادھیکاریوں کی طرف سے مانا گیا ہے کہ اس طرح کے کام شہر کے کچھ آوارہ اور فالتو لوگوں نے ہی کئے. یہ بھی سب مانتے ہیں کہ ودیارتھیوں کے جلوس اور ان کا سارا آندولن عام طور پر شانتی سے تھا. اگر ہم یہ

न की गई, बरसों पुराने रिवाज का कोई लिहाज़ न किया गया. मनमाने तौर पर यूनीवर्सिटी के अधिकारी पेश आ रहे हैं. हम बधाई देंगे विद्यार्थी भाई बहनों को कि उन्होंने बहुत शान्ति और ख़ामोशी से अपना फ़र्ज़ निभाया और जो घाव उनके यूनियन रूपी शरीर पर किया गया है उस पर नमक छिड़के जाने के बावजूद वह आपे से बाहर न हुए.

हमें सलाह देने का शौक़ नहीं है. लेकिन सुझाव के तौर पर यह ज़रूरी कहना चाहते हैं कि आज के विद्यार्थी में जो तकलीफ़देह हरकतें कुछ बुज़ुर्गों या हाकिमों को नज़र आती हैं, इसके लिये वह आर्थिक व राजनीतिक ढांचा ज़िम्मेदार है जिसके अन्दर यह सूबा और देश कसा जा रहा है. अधिक तफ़सील में न जा कर हम सिर्फ़ इतना अर्ज़ करेंगे कि विदेशी माल देश में जितना ज़ियादा आयेगा, विदेशी फ़िल्में जितनी ज़ियादा फैलेंगी, मिलों का माल जितना ज़ियादा बढ़ेगा उतना ही ज़ियादा हमारे घर सूने पड़ेंगे, हमारे घरों में नहूसतें आएंगी और शैतान का राज होगा और हमारे घर में बच्चों के संस्कार बिगड़ेंगे और उनका पांव बाज़ार में बना रहेगा. लेकिन सरकार को तो मिलों और विदेशी चीज़ों से, सिनेमा और शराब से, बाज़ार और हाट से आमदनी ही आमदनी होती है. लिहाज़ा उसे न बुनकरों की परवाह, न तेलियों की फ़िक्र, न बड़े बूढ़ों का लिहाज़, न नौजवानों का ख़याल. हमें यक़ीन है कि अगर आज गवर्नर श्री मुंशी राज भवन और मोटर छोड़ कर लखनऊ के किसी मोहल्ले में मकान ले कर मामूली इन्सान की तरह रहते हुए गवर्नर के फ़र्ज़ अदा करते रहें और उनकी देखा देखी हमारे सारे मिनिस्टर और वाइस चांसलर भी इसी तरह मोटरों को तिलांजलि दे कर जनता के बीच रह कर अपना ज़ियादा से ज़ियादा काम हाथ पैर की कमाई से करने लग जायें तो देखते देखते दुनिया बदल जायेगी और फिर न विद्यार्थी हड़ताल का नाम लेगा और न किसी को शिकायत या तकलीफ़ होगी. जब तक ऐसा नहीं होता और हुकूमत की कुर्सी से बैठ कर कांगरेस वाले विद्यार्थियों पर अपना बेजा दबाव डालने की कोशिश करते रहेंगे तो दूसरी पार्टियां इसका मुक़ाबला करेंगी, कशमकश होगी, हड़तालें होंगी और जो न हो थोड़ा है.

कांगरेस आज हाकिम है. किसी ने कहा है कि हुकूमत गिरा देती है और पूरी हुकूमत पूरे तौर से गिरा देती है. लेकिन गिरने वाला यही समझता है कि वह बदस्तूर क़ायम है. वह संभलने से इन्कार करता है और अपनी रफ़्तार नहीं बदलता, उल्टे और ज़ियादा तैश में आकर वार करता है. इसलिये यह क़ुदरती है कि कांगरेस अपने

نہیں کی گئی، برسوں پرانے رواج کا کوئی لحاظ نہیں کیا گیا۔ من مانے طور پر یونیورسٹی کے ادھیکاری پیش آرہے ہیں۔ ہم بدھائی دینگے ودیارتھی بھائی بہنوں کو کہ انہوں نے بہت شانتی اور خاموشی سے اپنا فرض نبھایا اور جو گھاؤ اُن کے یونین روپی شریر پر کیا گیا ہے اُس پر نمک چھڑکے جانے کے باوجود وہ آپے سے باہر نہ ہوئے۔

ہمیں صلاح دینے کا شوق نہیں ہے۔ لیکن سوجھاؤ کے طور پر یہ ضرور کہنا چاہتے ہیں کہ آج کے ودیارتھیوں میں جو تکلیف دہ حرکتیں کچھ بزرگوں یا حاکموں کو نظر آتی ہیں، اِس کے لئے وہ آرتھک و راجنیتک ڈھانچہ ذمہ دار ہے جس کے اندر یہ صوبہ اور دیش کسا جا رہا ہے۔ ادھک تفصیل میں نہ جاکر ہم صرف اِتنا عرض کرینگے کہ ودیشی مال دیش میں جتنا زیادہ آئیگا، ودیشی فلمیں جتنی زیادہ پھیلیں گی، ملوں کا مال جتنا زیادہ بڑھے گا اتنا ہی زیادہ ہمارے گھر سونے پڑیں گے، ہمارے گھروں میں نحوستیں آئیں گی اور شیطان کا راج ہوگا اور ہمارے گھر میں بچوں کے سنسکار بگڑیں گے اور اُن کا پاؤں بازار میں بنا رہے گا۔ لیکن سرکار کو تو ملوں اور ودیشی چیزوں سے، سنیما اور شراب سے، بازار اور ہاٹ سے آمدنی ہی آمدنی ہوتی ہے۔ لہذا نہ اُسے بنکروں کی پرواہ، نہ تیلیوں کی فکر، نہ بڑے بوڑھوں کا لحاظ، نہ نوجوانوں کا خیال۔ ہمیں یقین ہے کہ آج گورنر شری منشی راج بھون اور موٹر چھوڑ کر لکھنؤ کے کسی محلے میں مکان لے کر معمولی اِنسان کی طرح رہتے ہوئے گورنر کے فرض ادا کرتے رہیں اور اُن کی دیکھا دیکھی ہمارے سارے منسٹر اور وائس چانسلر بھی اِسی طرح موٹروں کو تلانجلی دے کر جنتا کے بیچ رہ کر اپنا زیادہ سے زیادہ کام ہاتھ پیر کی کمائی سے کرنے لگ جائیں تو دیکھتے دیکھتے دنیا بدل جائیگی اور پھر نہ ودیارتھی ہڑتال کا نام لیگا اور نہ کسی کو شکایت یا تکلیف ہوگی۔ جب تک ایسا نہیں ہوتا اور حکومت کی کرسی سے بیٹھ کر کانگریس والے ودیارتھیوں پر اپنا بیجا دباؤ ڈالنے کی کوشش کرتے رہینگے تو دوسری پارٹیاں اِس کا مقابلہ کرینگی، کشمکش ہوگی، ہڑتالیں ہونگی اور جو نہ ہو تھوڑا ہے۔

کانگریس آج حاکم ہے۔ کسی نے کہا ہے کہ حکومت گرادیتی ہے اور پوری حکومت پورے طور سے گرادیتی ہے۔ لیکن گرنے والا یہی سمجھتا ہے کہ وہ بدستور قائم ہے۔ وہ سنبھلنے سے انکار کرتا ہے اور اپنی رفتار نہیں بدلتا، الٹے اور زیادہ طیش میں آکر وار کرتا ہے۔ اِس لئے یہ قدرتی ہے کہ کانگریس اپنے

बुलाई थी तब तक विद्यार्थी सागर में कोई तूफ़ान या ज्वार भाटे का कोई निशान भी नहीं था. एक तरफ़ वह सभा ख़त्म हुई दूसरी तरफ़ यह सरगर्मियां और झगड़े. यों तो उस सभा में वाइस चांसलर लोग आज़ादी के साथ इस नतीजे पर पहुंचे थे कि यूनिवर्सिटी के मास्टरों की सर्विस-बुक रहा करे, "सर्व श्रेष्ठ" लड़कों को इनाम मिला करें और यूनिवर्सिटियों का इन्तज़ाम ढंग से चले. लेकिन कौन नहीं जानता कि आज के हमारे वाइस चांसलर लोग किस हद तक 'आज़ाद' है. हमें याद हो आती है रजवाड़ों की जो अंगरेज़ी राज के पाबन्द होते हुये भी अपने को 'आज़ाद' समझते थे. सच यह है कि अपने दायरे में उन्हें न वह अधिकार हैं जो एक ज़िला मजिस्ट्रेट को और न वह आज़ादी जो एक म्युनिसिपल चेयरमैन को. इसलिये उन्हें मजबूरन गवर्नर यानी चांसलर के इशारे पर चलना पड़ता है. अक्सर चांसलर लोग दख़ल नहीं देते और वाइस चांसलर लोग आज़ादी का दम भरे रहते हैं. बदक़िस्मती की बात है कि गवर्नर श्री मुंशी को चैन न पड़ी और वह अपनी चांसलरी को नुमायां शकल देने पर उतर आये.

हो सकता है कि इस में कुछ इशारा प्रदेश की शासक पार्टी का भी हो क्योंकि दिन-दिन हालत यह हो रही है कि आम जनता, पढ़ी लिखी हो या अनपढ़, सरकार की तरफ़ से खिंचकर दूसरी पार्टियों की तरफ़ मुख़ातिब होती जा रही है. कांगरेस में न ज़ियादा नौजवान आते हैं न विद्यार्थी या दूसरे लोग इसके लिये कोई भक्ति या श्रद्धा दिखलाते हैं. इसलिये यह ज़रूरी हो जाता है कि कांगरेस पार्टी कुछ ऐसे रास्ते अपनाये जिनके ज़रिये से वह विद्यार्थियों को थोड़ा बहुत अपने असर में ला सके. शायद इसी वजह से गवर्नर श्री मुंशी की बुलाई हुई सभा में यह तय किया गया कि 'सब से अच्छे' लड़कों को मेडेल दिये जाएंगे;—इम्तहान में सबसे ऊंचे नम्बर पाने के लिये नहीं, क्लास में सब से ज़ियादा हाज़िर रहने के लिये नहीं, मैदान में सबसे तेज़ दौड़ने के लिये नहीं, बल्कि किसी और बात के लिये, 'सब से अच्छे' होने के लिये! ज़ाहिर है कि यह कोई नई बला है जिसका सम्बन्ध है न पढ़ाई से, न क्लास से और न खेल के मैदान से, बल्कि राजनीति से और शासकों की राजनीति से है. शायद इसी वजह से इलाहाबाद और लखनऊ की यूनीवर्सिटियों के अधिकारियों ने वहां के यूनियन के विधान में दख़ल दिया और सब विद्यार्थियों के लिये यूनियन का मेम्बर होना ग़ैर ज़रूरी क़रार दे दिया. जो चाहे हो जो चाहे न हो. हालांकि राधा कृष्णन यूनिवर्सिटी इन्क्वायरी कमीशन ने साफ़-साफ़ कहा है कि यूनियनों में अधिकारी लोग हाथ न डालें. मगर इसकी कोई परवाह.

بلائی تھی تب تک ودیارتھی ساگر میں کوئی طوفان یا جوار بھاٹے کا کوئی نشان بھی نہیں تھا ۔ ایک طرف وہ سبھا ختم ہوئی دوسری طرف یہ سرگرمیاں اور جھگڑے۔ یوں تو اس سبھا میں وائس چانسلر لوگ آزادی کے ساتھ اس نتیجہ پر پہونچے تھے کہ یونیورسٹی کے ماسٹروں کی سروس بک رہا کرے ' سروسریشٹھ ' لڑکوں کو انعام ملا کریں اور یونیورسٹی کا انتظام ڈھنگ سے چلے۔ لیکن کون نہیں جانتا کہ آج کے ہمارے وائس چانسلر لوگ کس حد تک ' آزاد ' ہیں۔ ہمیں یاد ہو آتی ہے رجواڑوں کی جو انگریزی راج کے پابند ہوتے بھی اپنے کو ' آزاد ' سمجھتے تھے ۔ سچ یہ ہے کہ اپنے دائرے میں انہیں نہ وہ ادھیکار ہیں جو ایک ضلع مجسٹریٹ کو اور نہ وہ آزادی جو ایک میونسپل چیرمین کو ۔ اس لئے انہیں مجبوراً گورنر یعنی چانسلر کے اشارے پر چلنا پڑتا ہے ۔ اکثر چانسلر لوگ دخل نہیں دیتے اور وائس چانسلر لوگ آزادی کا دم بھرے رہتے ہیں ۔ بدقسمتی کی بات ہے کہ گورنر شری منشی کو چین نہ پڑی اور وہ اپنی چانسلری کو نمایاں شکل دینے پر اتر آئے۔

ہوسکتا ہے کہ اس میں کچھ اشارہ پردیش کی شاسک پارٹی کا بھی ہو کیوں کہ دن دن حالت یہ ہو رہی ہے کہ عام جنتا' پڑھی لکھی ہو یا ان پڑھ' سرکار کی طرف سے کھنچ کر دوسری پارٹیوں کی مخاطب ہوتی جا رہی ہے۔ کانگریس میں نہ زیادہ نوجوان آتے ہیں نہ ودیارتھی یا دوسرے لوگ اس کے لئے کوئی بھکتی یا شردھا دیکھاتے ہیں ۔ اس لئے یہ ضروری ہو جاتا ہے ۔ کہ کانگریس پارٹی نے کچھ ایسے راستے اپنائے جس کے ذریعے وہ ودیارتھیوں کو تھوڑا بہت اپنے اثر میں لا سکے ۔ شاید اسی وجہ سے گورنر منشی کی بلائی ہوئی سبھا میں یہ طے کیا گیا کہ ' سب سے اچھے ' لڑکوں کو میڈل دے جائینگے—امتحان میں سب سے اونچے نمبر پانے کے لئے نہیں' کلاس میں سب سے زیادہ حاضر رہنے کے لئے نہیں' میدان میں سب سے تیز دوڑنے کے لئے نہیں' بلکہ کسی اور بات کے لئے' سب سے اچھے' ہونے کے لئے! ظاہر ہے کہ یہ کوئی نئی بلا ہے جس کا سمبندھ نہ پڑھائی سے' نہ کلاس سے اور نہ کھیل کے میدان سے بلکہ راجنیتی سے اور شاسکوں کی راجنیتی سے ہے ۔ شاید اسی وجہ سے الہ آباد اور لکھنؤ کی یونیورسٹیوں کے ادھیکاریوں نے وہاں کے یونین کے ودھان میں دخل دیا اور سب ودیارتھیوں کے لئے یونین کا ممبر ہونا غیر ضروری قرار دے دیا۔ جو چاہے ہو جو چاہے نہ ہو ۔ حالانکہ رادھا کرشنن یونیورسٹی انکوائری کمیشن نے صاف صاف کہا ہے کہ یونینوں میں ادھیکاری لوگ ہاتھ نہ ڈالیں۔ مگر اسکی کوئی پرواہ

हमारी राय — ہماری رائے

विद्यार्थी और सरकार

इधर कुछ अरसे से हमारे प्रदेश के विद्यार्थियों और सरकार के बीच तनातनी चल रही है. इलाहाबाद और लखनऊ की यूनीवर्सिटियां कभी खुलती और कभी बन्द होती हैं, कभी उनमें हाफ़री हड़ताल होती है और कभी भूख हड़ताल, कभी अधिकारी लोग अपना जलसा करते हैं और कभी विद्यार्थियों या उनके मां-बाप को जमा करते हैं. हालत संगीन होती चली जा रही और विद्यार्थियों और अधिकारियों के बीच की खाई पटती नज़र नहीं आती.

विद्यार्थियों के ख़िलाफ़ शिकायत यह है कि न वह डिसिप्लिन मानते हैं न किसी के कहने पर चलते हैं, न पढ़ने में ध्यान लगाते हैं. हमने कई सरकारी हाकिमों को विद्यार्थी का नाम आते ही आग बगूला होते देखा सुना है. ऐसे मौक़े पर ठंडे दिल से सोचे बिना काम नहीं चल सकता. अगर हम मान भी लें कि हमारे विद्यार्थी भाई बहनों के ख़िलाफ़ यह शिकायतें सही हैं तो सवाल यह है कि इसकी जड़ कहां है? हमें यह भी ग़ौर करना पड़ेगा कि आज की राजनीति या सियासत में क्या गुल खिल रहे हैं और उनकी वजह से हुक्काम या नेताओं को किन मजबूरियों का सामना करना पड़ रहा है.

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि विद्यार्थी हमारा ही अंग है, हमारी ही जान और जिगर का टुकड़ा है और वह हमारा है, हम उसके हैं. आज हम किसी पार्टी के नेता हों या मिनिस्टर, सूबे के गवर्नर हों या मजिस्ट्रेट, एम. एल. ए. हों या यूनीवर्सिटी के टीचर—कल नहीं तो परसों हम सब विद्यार्थी थे और कल नहीं तो परसों आज का विद्यार्थी हमारी जगह पर होगा. हम जाएंगे क्योंकि हमें जाना है, वह जगह ख़ाली नहीं रहेगी और विद्यार्थी ही उसे आगे बढ़ कर भरेगा. इसलिये इस मामले में तेज़ी या तेवर दिखलाना अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसा होगा.

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अगर यू. पी. के गवर्नर श्री मुंशी ने अब तक वाइस चांसलरों की सभा नहीं

ودیارتھی اور سرکار

ادھر کچھ عرصہ سے ہمارے پردیش کے ودیارتھیوں اور سرکار کے بیچ تناتنی چل رہی ہے۔ الہ آباد اور لکھنؤ کی یونیورسٹیاں کبھی کھلتی اور کبھی بند ہوتی ہیں، کبھی ان میں حاضری ہڑتال ہوتی ہے اور کبھی بھوک ہڑتال، کبھی ادھیکاری لوگ اپنا جلسہ کرتے ہیں اور کبھی ودیارتھیوں یا اُن کے ماں باپ کو جمع کرتے ہیں۔ حالت سنگین ہوتی چلی جا رہی ہے اور ودیارتھیوں اور ادھکاریوں کے بیچ کی کھائی پٹتی نظر نہیں آتی۔

ودیارتھیوں کے خلاف شکایت یہ ہے کہ نہ وہ ڈسپلن مانتے ہیں نہ کسی کے کہنے پر چلتے ہیں، نہ پڑھنے میں دھیان لگاتے ہیں۔ ہم نے کئی سرکاری حاکموں کو ودیارتھی کا نام آتے ہی آگ بگولا ہوتے دیکھا سنا ہے۔ ایسے موقعے پر ٹھنڈے دل سے سوچے بنا کام نہیں چل سکتا۔ اگر ہم مان بھی لیں کہ ہمارے ودیارتھی بھائی بہنوں کے خلاف یہ شکایتیں صحیح ہیں تو سوال یہ ہے کہ اسکی جڑ کہاں ہے؟ ہمیں یہ بھی غور کرنا پڑے گا کہ آج کی راج نیتی یا سیاست میں کیا گل کھل رہے ہیں اور ان کی وجہ سے حکام یا نیتاؤں کو کن مجبوریوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے۔

ہمیں یہ نہیں بھولنا چاہئے کہ ودیارتھی ہمارا ہی انگ ہے، ہماری ہی جان اور جگر کا ٹکڑا ہے اور وہ ہمارا ہے ہم اس کے ہیں۔ آج ہم کسی پارٹی کے نیتا ہوں یا منسٹر، صوبے کے گورنر ہوں یا مجسٹریٹ، ایم. ایل. اے ہوں یا یونیورسٹی کے ٹیچر—کل نہیں تو پرسوں ہم سب ودیارتھی تھے اور کل نہیں تو پرسوں آج کا ودیارتھی ہماری جگہ پر ہوگا۔ ہم جائیں گے کیونکہ ہمیں جانا ہے، وہ جگہ خالی نہیں رہے گی اور وہ ودیارتھی ہی آگے بڑھ کر بھرے گا۔ اس لئے اس معاملے میں تیزی یا تیور دکھلانا اپنے پیر میں کلہاڑی مارنے جیسا ہوگا۔

یہ بات کسی سے چھپی نہیں ہے کہ اگر یو. پی. کے گورنر شری منشی نے جب تک وائس چانسلروں کی سبھا نہیں

रक़्से बिसमिल

लिखने वाली—सदीक़ा बेगम; निकालने वाले—आज़ाद किताबघर, देहली—लिखावट; उरदू; सफ़े—192; दाम—दो रुपया बारह आने.

रक़्स बिसमिल उरदू की मशहूर लेखिका सदीक़ा बेगम का नया कहानी संग्रह है. इसमें उनकी आठ कहानियां शामिल हैं.

सदीक़ा बेगम छोटी मोटी रोज़मर्रा होने वाली घटनाओं पर क़लम उठाती हैं और उनका सुन्दर चित्रन करती हैं. उनका क़लम सिर्फ़ चित्रन करके ही नहीं रुक जाता बल्कि उस समाजी तत्व पर भी रोशनी डालता है जो इस घटना के होने में मदद करता है. सदीक़ा बेगम ने ज़मींदारों के समाज में पली, बढ़ी, मुसलमान औरतों को बहुत अच्छी तरह समझा है. वह उनमें का अन्दर, बाहर सब कुछ जान गई हैं, इसीलिये जब भी इस वातावरन की किसी औरत पर आधारित करके वह कहानी लिखती हैं तो वह बहुत ही असरदार होती है. सदीक़ा बेगम अपनी उस नायका के हर हावभाव, चाल ढाल, बोल चाल, पहनाव उढ़ाव को अच्छी तरह जानती हैं और बहुत आसानी से पाठक के सामने पूरा नक़्शा खींच देती हैं. औरतों के इस समाज को समझना बहुत ही ज़रूरी है और उसी के साथ साथ इसे समझने के लिये सदीक़ा बेगम की कहानियों को भी पढ़ना ज़रूरी है.

सदीक़ा बेगम ज़मींदाराना माहौल में पले मर्दों का भी चित्रन करती हैं. पर वह कामयाब तभी होती हैं जब वह घर और घरेलू माहौल से इन मर्दों का सम्बन्ध जोड़ कर लिखती हैं. इस संग्रह में "शीशे का घर" नामी कहानी का आधार यही मर्द हैं और उनकी मनोवृत्ति का अच्छा चित्रन किया गया है.

—मुजीब रिज़वी

رقص بسمل

لکھنے والی—صدیقہ بیگم؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر، دہلی؛ لکھاوٹ—اردو؛ صفحے—192 دام دو روپیہ بارہ آنے ۔

رقص بسمل اردو کی مشہور لیکھکا صدیقہ بیگم کا نیا کہانی سنگرہ ہے. اس میں ان کی آٹھ کہانیاں شامل ہیں ۔

صدیقہ بیگم چھوٹی موٹی روزمرہ ہونے والی گھٹناؤں پر قلم اٹھاتی ہیں اور ان کا سندر چترن کرتی ہیں ۔ ان کا قلم صرف چترن کرکے ہی نہیں رک جاتا بلکہ اس سماجی تتو پر بھی روشنی ڈالتا ہے جو اس گھٹنا کے ہونے میں مدد کرتا ہے. صدیقہ بیگم نے زمینداروں کے سماج میں پلی، بڑھی، مسلمان عورتوں کو بہت اچھی طرح سمجھا ہے، وہ ان میں کا اندر، باہر سب کچھ جان گئی ہیں، اسی لئے جب بھی اس واتاورن کی کسی عورت پر آدھارت کرکے وہ کہانی لکھتی ہیں تو وہ بہت ہی اثردار ہوتی ہے ۔ صدیقہ بیگم اپنی اس نائکہ کے ہر ہاؤ بھاؤ، چال ڈھال، بول چال، پہناؤ اڑھاؤ کو اچھی طرح جانتی ہیں اور بہت آسانی سے پاٹھک کے سامنے پورا نقشہ کھینچ دیتی ہیں ۔ عورتوں کے اس سماج کو سمجھنا بہت ہی ضروری ہے اور اسی کے ساتھ ساتھ اسے سمجھنے کے لئے صدیقہ بیگم کی کہانیوں کو بھی پڑھنا ضروری ہے ۔

صدیقہ بیگم زمیندارانہ ماحول میں پلے مردوں کا بھی چترن کرتی ہیں ۔ پر وہ کامیاب تبھی ہوتی ہیں جب وہ گھر اور گھریلو ماحول سے ان مردوں کا سمبندھ جوڑ کر لکھتی ہیں ۔ اس سنگرہ میں "شیشے کا گھر" نامی کہانی کا آدھار یہی مرد ہیں اور ان کی منوورتی کا اچھا چترن کیا گیا ہے ۔

—مجیب رضوی

हुआ कि यह अमरीका के साथ "समझौता" नहीं बल्कि "गुलामी का पट्टा" है. देश के कोने कोने से इस तरह की आवाज़ें उठीं लेकिन भारत सरकार ने मानो कान ही बन्द कर लिये और दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से वह अमरीकी फंदे में फंसती गई और फंसती जा रही है.

लेकिन किस तेज़ी के साथ इस थोड़े से अरसे में अमरीकी पैसे ने हिन्दुस्तान को अपना गुलाम बना लिया है, इसकी पूरी जानकारी आम तौर से कम थी. इस बात पर रोशनी डालने वाली कोई किताब न अंगरेज़ी में थी न हिन्दी में. खुशी की बात है कि मेहनत और लगन से भाई एस. नटराजन ने अंगरेज़ी में इस तरह की एक अनमोल किताब तैयार की और बम्बई के प्रकाशक पीपिल्स पब्लिशिंग हाउस ने उसे देश को भेंट किया, अब उस किताब का यह हिन्दी अनुवाद भी हमारे सामने आ गया है.

यह किताब एक ज़बरदस्त ज़रूरत को पूरा करती है. प्रस्तावना में डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने कहा है "यह जानकारियों का एक ख़ज़ाना है." इसे देखने पर पता चलेगा कि किस तरह हिन्दुस्तान के साधनों और कच्चे माल को लूट कर अमरीका खुद मालामाल बन रहा है और हिन्दुस्तान के शहर शहर और गांव गांव में अपना जाल बिछा रहा है. इससे यह भी पता चलेगा कि अमरीकी हाकिमों और व्योपारियों की निगाह में ग़रीब हिन्दुस्तानियों की क्या क़ीमत है और वह हमें किस नीची निगाह से देखता है. हर देश प्रेमी, हर पबलिक कार्यकर्ता और राजनीति और अर्थशास्त्र के हर विद्यार्थी से हमारी अपील है कि इस आंख खोल देने वाली किताब को ज़रूर पढ़े. उसके बाद अपना दिल टटोल कर देखे कि अंगरेज़ी राज के ख़ात्मे के बाद इस नए अमरीकी राज से देश को छुड़ाने में वह क्या कर रहा है.

हिन्दी अनुवाद अच्छा है. भाषा सरल और सहज है. हिन्दी में यह किताब अपने ढंग की अनोखी है और हर हिन्दी जानने वाले भारतवासी को इसे पढ़ना चाहिये.

—सुरेश रामभाई

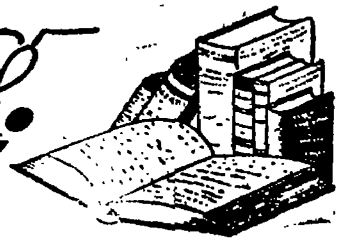
ہوا کہ یہ امریکہ کے ساتھ "سمجھوتہ" نہیں بلکہ "غلامی کا پٹہ" ہے. دیش کے کونے کونے سے اس طرح کی آوازیں اٹھیں لیکن بھارت سرکار نے مانوں کان ہی بند کر لئے اور دن دونی رات چوگنی رفتار سے وہ امریکی پھندے میں پھنستی گئی اور پھنستی جا رہی ہے.

لیکن کس تیزی کے ساتھ اس تھوڑے سے عرصہ میں امریکی پیسے نے ہندوستان کو اپنا غلام بنا لیا ہے' اسکی پوری جانکاری عام طور سے کم تھی . اس بات پر روشنی ڈالنے والی کوئی کتاب نہ انگریزی میں تھی نہ ہندی میں . خوشی کی بات ہے کہ محنت اور لگن سے بھائی ایس . نٹ راجن نے انگریزی میں اس طرح کی ایک انمول کتاب تیار کی اور بمبئی کے پرکاشک پیپلس پبلشنگ ہاؤس نے اسے دیش کو بھینٹ کیا . اب اس کتاب کا یہ ہندی انوواد بھی ہمارے سامنے آگیا ہے .

یہ کتاب ایک زبردست ضرورت کو پورا کرتی ہے . پرستاونا میں ڈاکٹر جے . سی . کمارپا نے کہا ہے " یہ جانکاریوں کا ایک خزانہ ہے ." اسے دیکھنے پر پتہ چلیگا کہ کس طرح ہندستان کے سادھنوں اور کچے مال کو لوٹ کر امریکہ خود مالا مال بن رہا ہے اور ہندستان کے شہر شہر اور گاؤں گاؤں میں اپنا جال بچھا رہا ہے . اس سے یہ بھی پتہ چلے گا کہ امریکی حاکموں اور بیوپاریوں کی نگاہ میں غریب ہندستانیوں کی کیا قیمت ہے اور وہ ہمیں کس نیچی نگاہ سے دیکھتا ہے . ہر دیش پریمی ہر پبلک کارکرتا اور راجنیتی اور ارتھ شاستر کے ہر ودیارتھی سے ہماری اپیل ہے کہ اس آنکھ کھول دینے والی کتاب کو ضرور پڑھے . اس کے بعد اپنا دل ٹٹول کر دیکھے کہ انگریزی راج کے خاتمہ کے بعد اس نئے امریکی راج سے دیش کو چھڑانے میں وہ کیا کر رہا ہے .

ہندی انواد اچھا ہے . بھاشا سرل اور سہج ہے . ہندی میں یہ کتاب اپنے ڈھنگ کی انوکھی ہے اور ہر ہندی جاننے والے بھارت واسی کو اسے پڑھنا چاہئے .

—سریش رام بھائی

नई किताबें  نئی کتابیں

भारत पर अमरीकी फन्दा

मूल अंगरेज़ी लेखक—एल. नटराजन; अनुवादक—ओम प्रकाश संगल; निकालने वाले—पीपिल्स पबलिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई-4; लिखावट-हिन्दी, सफ़े 256—दाम तीन रुपया.

हिन्दुओं में साकार पूजा और निराकार पूजा यानी सनातन धर्मियों की तरह भगवान की मूर्ति बना कर पूजना या आर्य समाजियों और ब्रह्म समाजियों की तरह एक निराकार सब जगह मौजूद ईश्वर में ध्यान लगाना दोनों हमारे देश की पुरानी परम्पराएं है. लेकिन कम लोग जानते होंगे कि गुलामी भी साकार और निराकार दोनों तरह की होती है. साकार गुलामी साफ़ साफ़ चमकती है—राजा का झंडा हर जगह लहराता दीखता है और उसके खास रंग ढंग के प्रतिनिध हर जगह रोब जमाए रहते हैं. लेकिन निराकार गुलामी में राजा का न झंडा रहता है न उसके प्रतिनिधि कोई खास रोब दाब जमाते दिखाई देते हैं. पर धीरे धीरे यह निराकार हाकिम जीवन के हर पहलू पर छा जाते हैं और जोंक बन कर देश का लहू चूसते रहते हैं.

जब दूसरी बड़ी लड़ाई खतम होने को हुई और यह आसार नज़र आने लगे कि अंगरेज़ हिन्दुस्तान में चंद दिन के मेहमान हैं तब अमरीका ने बहुत ही होशियारी और खूबसूरती के साथ अपने पांव हिन्दुस्तान में गाड़ने शुरू किये. अंगरेज़ी राज के हट जाने के बाद अमरीका को पूरा सुभीता हो गया और उसने कल कारखानों, ब्योपारी, बीमा और जहाज़ी कम्पनियों, सहायता और सलाह के नाम पर हिन्दुस्तान के अन्दर अपना जाल बिछाना शुरू कर दिया. अमरीका के माली फंदे में इस तरह फंसने की खबर देश को तब लगी जब 5 जनवरी 1952 को एक "समझौते" पर नई दिल्ली में हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल ने भारत सरकार की तरफ़ से दस्तखत किये. उसकी शर्तों को जब लोगों ने पढ़ा तो दंग रह गए और महसूस

بھارت پر امریکی پھندا

مول انگریزی لیکھک—ایل. نٹراجن؛ انوادک—اوم پرکاش سنگل؛ نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ، بمبئی-4؛ لکھاوٹ-ہندی؛ صفحے-256؛ دام-تین روپیہ.

ہندوؤں میں ساکار پوجا اور نراکار پوجا یعنی سناتن دھرمیوں کی طرح بھگوان کی مورتی بناکر پوجنا یا آریہ سماجیوں اور برہم سماجیوں کی طرح ایک نراکار سب جگہ موجود ایشور میں دھیان لگانا دونوں ہمارے دیش کی پرانی پرمپرائیں ہیں. لیکن کم لوگ جانتے ہونگے کہ غلامی بھی ساکار اور نراکار دونوں طرح کی ہوتی ہے. ساکار غلامی صاف صاف چمکتی ہے—راجا کا جھنڈا ہر جگہ لہراتا دیکھتا ہے اور اس کے خاص رنگ ڈھنگ کے پرتی ندھی ہر جگہ رعب جمائے رہتے ہیں. لیکن نراکار غلامی میں راجا کا نہ جھنڈا رہتا ہے نہ اس کے پرتی ندھی کوئی خاص رعب داب جماتے دکھائی دیتے ہیں پر دھیرے دھیرے یہ نراکار حاکم جیون کے ہر پہلو پر چھا جاتے ہیں اور جونک بنکر دیش کا لہو چوستے رہتے ہیں.

جب دوسری بڑی لڑائی ختم ہونے کو ہوئی اور یہ آثار نظر آنے لگے کہ انگریز ہندستان میں چند دن کے مہمان ہیں تب امریکہ نے بہت ہی ہوشیاری اور خوبصورتی کے ساتھ اپنے پاؤں ہندستان میں گاڑنے شروع کئے. انگریزی راج کے ہٹ جانے کے بعد امریکہ کو پورا سبھیتا ہوگیا اور اس نے کل کارخانوں، بیوپاری، بیما اور جہازی کمپنیوں، سہایتا اور صلاح کے نام پر ہندستان کے اندر اپنا جال بچھانا شروع کردیا. امریکہ کے مالی پھندے میں اس طرح پھنسنے کی خبر دیش کو تب لگی جب پانچ جنوری سن 1952 کو ایک "سمجھوتے" پر نئی دلی میں ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نے بھارت سرکار کی طرف سے دستخط کئے. اسکی شرطوں کو جب لوگوں نے پڑھا تو دنگ رہ گئے اور محسوس

तो इसमें शामिल है. जानदार माद्दावादी की निगाह में जगत की मार्के की विशेषताओं में से कुछ यह हैं :— जगत अनादि अनन्त है, मुख्की खासियत वाला है, नियम बद्ध, समझे जाने जोग, उलझा पर रहस्यमय नहीं, पूरा मानवी पर मानवी जैसा नहीं, अंधविश्वासी नहीं विश्वास के जोग, झिझक कर नहीं खुले दिल से अपनाने जोग, वचन देने वाला नहीं, अवसर देने वाला, हां, वह यह भी कहेगा कि अब तक जगत का जितना हाल जाना गया है उससे यह पता ज़रूर चलता है कि इसकी सबसे महत्व की एक सिफ़त और है जो अभी तक पहुंच से परे है. पहुंच से परे का यह अर्थ नहीं है कि समझ से परे है. अनुभव में वह भी आ चुकी है पर अभी उसका शब्दों में रूप नहीं दिया जा सकता.

—भगवानदीन

تو اس میں شامل ہے . جاندار مادی وادی کی نگاہ میں جگت کی معرکے کی وشیشتاؤں میں سے کچھ یہ ہیں :— جگت انادی انت ہے' ملجھی خاصیت والا ہے' نیم بدھ' سمجھے جانے جوگ' الجھا پر رہسیہ مے نہیں' پورا مانوی پر مانوی جیسا نہیں' اندھ وشواسی نہیں وشواس کے جوگ' جھجھک کر نہیں کھلے دل سے اپنانے جوگ' وچن دینے والا نہیں اوسر دینے والا' ہاں' وہ یہ بھی کہے گا کہ اب تک جگت کا جتنا حال جانا گیا ہے اس سے یہ پتہ ضرور چلتا ہے کہ اس کی سب سے مہتو کی ایک صفت اور ہے جو ابھی تک پہنچ سے پرے ہے . پہنچ سے پرے کا یہ ارتھ نہیں ہے کہ سمجھ سے پرے ہے . انوبھو میں وہ بھی آچکی ہے پر ابھی اسکا شبدوں میں روپ نہیں دیا جا سکتا .

—بھگوان دین

एक सवेरे जब सारा जगत तीसरे महा युद्ध के कारन मौत के मुंह में समा चुका था, एक बन्दर एक तहखाने से बाहर निकला. जब उसने अपनी नज़रें चारों तरफ़ दौड़ाईं तो हर तरफ़ बरबादी और तबाही का ही भयानक नज़ारा देख कर वह कांप उठा. दुखी हो कर वह सामने के ऊंचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और कूद कर जान देने ही वाला था कि पीछे एक आहट सुनाई पड़ी. घूम कर उसने देखा—एक दूसरे तहखाने से एक बंदरिया बाहर निकल कर उसकी तरफ़ देख रही थी. बन्दर मरने का विचार छोड़ कर उसके निकट पहुंच गया और बड़ी परेशानी के साथ बोला–"परमात्मा ही रक्षा करे! क्या हम लोगों को फिर से सृष्टि की रचना करनी होगी!"

नोबल प्राइज़ पाने वाले, विलियम फ़ाकनर

ایک سویرے جب سارا جگت تیسرے مہایدھ کے کارن موت کے منہ میں سما چکا تھا' ایک بندر ایک تہ خانے سے باہر نکلا . جب اس نے اپنی نظریں چاروں طرف دوڑائیں تو ہر طرف بربادی اور تباہی کا ہی بھیانک نظارہ دیکھکر وہ کانپ اٹھا . دکھی ہو کر وہ سامنے کے اونچے پہاڑ کے چوٹی پر چڑھ گیا اور کود کر جان دینے ہی والا تھا کہ پیچھے ایک آہٹ سنائی پڑی . گھوم کر اس نے دیکھا—ایک دوسرے تہ خانے سے ایک بندریا باہر نکل کر اسکی طرف دیکھ رہی تھی. بندر مرنے کا وچار چھوڑ کر اس کے نکٹ پہنچ گیا اور بڑی پریشانی کے ساتھ بولا—" پرماتما ہی رکشا کرے ! کیا ہم لوگوں کو پھر سے سرشٹی کی رچنا کرنی ہوگی !"

نوبل پرائز پانے والے' ولیم فاکنر

इतना महान है कि वह सिद्धान्त रूप से कभी न मानव विरोधी हो सकता है न मानव पक्षपाती. हां, वह उससे बेपरवाह भी नहीं हो सकता क्योंकि जगत उसका है, वह उसमें है और जो कुछ होता है सबका एक दूसरे से संबन्ध है. यह मान कर कि आदमी समझदार प्राणी है जानदार माटीवादी आदमी के भविष्य में विश्वास रखता है. वह मान कर विश्वास रखता है कि जगत सीधी सादी चीज़ नहीं. अगर जगत सीधा सादा होता तब तो मानव प्रकृति का बुरा हाल होता, फिर वह ज्ञान हासिल कर के भी क्या करता ? फिर तो ज्ञानी बनना पापी बनना हो जाता. अब जगत जैसा है उसीने हमारे सामने अनेकों ऐसी गुत्थियां डाल रखी हैं जिन्हें हम सुलझाते रहें, अनेकों ऐसी चीज़ें हैं जिनका हम विकास करते रहें. अभी मानवता है ही क्या ? आंसुओं से रोने वाली बच्ची है जिस का एक दिन में कई कई बार दिल टूटता है और रात भर में ठीक हो जाता है. इसलिये जानदार माटीवादी न इस जगत के गीत गाता मिलेगा और न इसको कोसता. वह जगत से जूझता ज़रूर है, अपने फ़ायदे के लिये नहीं, सबके लिये. वह निराशा से परे है. वह आशावादी है पर ऐसा आशावादी नहीं जैसा आध्यात्मिक या तत्वज्ञानी. वह तो यही समझता है कि जगत उसे अवसर भर देगा. बाक़ी सब उस पर छोड़ देगा, सब उसे ख़ुद करना होगा.

इस तरह जानदार माटीवादी जगत में घर की तरह रहता है. वह यह नहीं समझता कि जगत आदमी के लिये बनाया गया है. वह तो प्रकृति को प्रकृति की तरह मानता है. इससे ज़ियादा कुछ नहीं. वह पक्का प्रकृतिवादी है. वह किसी रूप में भी प्रकृत्युत्तर (Supernatural) शक्तियों को नहीं मानता. इस मामले में उसकी दलीलें सीधी सादी होती हैं. उनमें कोई नयापन नहीं होता. अगर जगत अनादि है तो कभी भी इसकी बुनियाद नहीं पड़ी. शक्ति का कभी नाश नहीं होता 'न कुछ' से 'कुछ' नहीं पाया जा सकता. 'कुछ' से 'न कुछ' नहीं निकल सकता. अगर जगत का आदि अंत नहीं है तो उसका बनाने वाला भी कोई नहीं. यह सवाल ही नहीं खड़ा होता कि जगत की कैसे बुनियाद पड़ी, इसका निकास कहां से है, इसको किसने बनाया ? तर्क के सामने यह सवाल बेकार है. जगत के मानी ही हैं सब कुछ, फिर इसके परे और इसके बाहर की बात क्या ? जगत के बाद हर चीज़ जगत से छोटी, क्योंकि हर चीज़ अनन्त पूरे से सान्त भाग वाली होगी. दो अनन्त नहीं रह सकते. ऐसे जगत को अपनी सिद्धि के लिये किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत नहीं जो प्रकृति से बढ़ कर हो यानी सुपरनेचुरल हो. जगत अपने आप में पूरा है और सब तरह काफ़ी है क्योंकि जो कुछ है सभी

اتنا مہان ھے کہ وہ سدھانت روپ سے کبھی نہ مانو ورودھی ہو سکتا ھے نہ مانو پکھپاتی. ہاں! وہ اس سے بے پرواہ بھی نہیں ہو سکتا کیونکہ جگت اسکا ھے' وہ اس میں ھے اور جو کچھ ہوتا ھے سب کا ایک دوسرے سے سمبندھ ھے . یہ مان کر کہ آدمی سمجھدار پرانی ھے جاندار ماٹی وادی آدمی کے بھوشیہ میں وشواس رکھتا ھے . یہ مان کر وشواس رکھتا ھے کہ جگت سیدھی سادی چیز نہیں . اگر جگت سیدھا سادا ہوتا تو تب مانو پراکرتی کا برا حال ہوتا' پھر وہ گیان حاصل کر کے بھی کیا کرتا ؟ پھر تو گیانی بننا پاپی بننا ہو جاتا . اب جگت جیسا ھے اسی نے ہمارے سامنے انیکوں ایسی گتھیاں ڈال رکھی ہیں جنہیں ہم سلجھاتے رہیں' انیکوں ایسی چیزیں ہیں جن کا ہم وکاس کرتے رہیں . ابھی مانوتا ھے ہی کیا ؟ آنسوؤں سے رونے والی بچی ھے جس کا ایک دن میں کئی کئی بار دل ٹوٹتا ھے اور رات بھر میں ٹھیک ہو جاتا ھے. اس لئے جاندار ماٹی وادی نہ اس جگت کے گیت گاتا ملے گا اور نہ اسکو کوستا . وہ جگت سے جوجھتا ضرور ھے اپنے فائدے کے لئے نہیں' سب کے لئے. وہ نراشا سے پرے ھے . وہ آشاوادی ھے پر ایسا آشاوادی نہیں جیسا آدھیاتمک یا تتو گیانی . وہ تو یہی سمجھتا ھے کہ جگت اسے اوسر بھر دے گا باقی سب اس پر چھوڑ دے گا سب اسے خود کرنا ہوگا .

اس طرح جاندار ماٹی وادی جگت میں گھر کی طرح رہتا ھے. وہ یہ نہیں سمجھتا کہ جگت آدمی کے لئے بنایا گیا ھے. وہ تو پرکرتی کو پرکرتی کی طرح مانتا ھے' اس سے زیادہ کچھ نہیں . وہ پکا پرکرتی وادی ھے . وہ کسی روپ میں بھی پرکرتی اتر (Supernatural) شکتیوں کو نہیں مانتا. اس معاملے میں اس کی دلیلیں سیدھی سادی ہوتی ہیں . ان میں کوئی نیا پن نہیں ہوتا . اگر جگت انادی ھے تو کبھی بھی اسکی بنیاد نہیں پڑی . شکتی کا کبھی ناش نہیں ہوتا ' نہ کچھ ' سے ' کچھ ' نہیں پایا جا سکتا . ' کچھ ' سے ' نہ کچھ ' نہیں نکل سکتا . اگر جگت کا آدی انت نہیں ھے تو اسکا بنانے والا بھی کوئی نہیں . یہ سوال ہی نہیں کھڑا ہوتا کہ جگت کی کیسے بنیاد پڑی' اس کا نکاس کہاں سے ھے' اسکو کس نے بنایا ؟ ترک کے سامنے یہ سوال بیکار ھے . جگت کے معنی ہی ہیں سب کچھ' پھر اس کے پرے اور اس کے باہر کی بات کیا ؟ جگت کے بعد ہر چیز جگت سے چھوٹی' کیونکہ ہر چیز اننت پورے سے سانت بھاگ والی ہوگی . دو اننت نہیں رہ سکتے . ایسے جگت کو اپنی سدھی کے لئے کسی ایسی چیز کی ضرورت نہیں جو پرکرتی سے بڑھ کر ہو یعنی سپرنیچرل ہو . جگت اپنے آپ میں پورا ھے سب طرح کافی ھے . کیونکہ جو کچھ ھے سبھی

वह अपनी आंखों देखता है कि रहस्यवाद की धार इन विचारों के फैलाने में मदद करती है कि विज्ञान चीज़ों के ग़ैर ज़रूरी पहलुओं पर ज़ोर देता है, यह कि असलियत उसके हाथ कभी नहीं आ सकती. आज का दर्शन खुद रहस्यवाद में डूबा हुआ है. आदमी के मस्तक को सीमित मानता है. विज्ञान के महत्व को जानने के लिये तैयार नहीं. ऐसी ऐसी चीज़ें गढ़ रखी हैं जिनके बारे में उसका कहना है कि वह समझ से परे हैं. उसकी यह सब बातें ऐसी हैं जो विज्ञानी ढंग को चुनौती देती हैं. अब अगर विज्ञान या विज्ञानी ढंग उस चुनौती के जवाब में कुछ कहे तो क्या बेजा करता है? रहस्यवाद के प्रचार से लोगों में एक डर सा बैठ गया है कि विज्ञान में लग कर वह बड़े टोटे में रहेंगे, मनोभावों की गहराई तक पहुंच ही न पायंगे, साहस के मैदान में कभी कूद ही न पायेंगे, उमगें उनके पास न फटकेंगी, आनन्द उनसे एक दम दूर रहेगा. वह यह भूल रहे हैं कि आदमी ने अब तक जो उड़ान ली थी और जो कुछ उसने सोचा था विज्ञान उसे बहुत पीछे छोड़ चुका है और आए दिन आगे आगे बढ़ता चला जा रहा है इतिहास की बोली में मानव उत्साह ने जो वीरतापूर्ण साहस की लम्बी छलांग ली है उसमें विज्ञान बड़े काम का साबित हुआ है. उसने आदमी के दुनियावी विचारों को हद से ज़ियादा मालामाल कर दिया है. जीवन की क्या क्या संभावनाएं हैं इन सब का एक दफ़्तर खोल कर रख दिया है.

دوسرے شبدوں میں' رهس میں اور وگیان میں بڑا فرق ہے اور وہ ایسا ہی ہے جیسا لاچاری اور آتم وشواس میں' جیسا ڈرپوک اور وچار شیل میں. جگت کو رهسمئی سمجھ بیٹھنا ہار مان کر بیٹھ جانا ہے . یہ تو ایسا ہے جیسے کوئی بنیادی سوال کو یہ سمجھ بیٹھے کہ یہ حل ہی نہیں ہو سکتا' اور ایسا سدھانت بنا بیٹھے .

दूसरे शब्दों में, रहस्य में और विज्ञान में बड़ा फ़र्क़ है और वह ऐसा ही है जैसा लाचारी और आत्म विश्वास में, जैसा डरपोक और विचार शील में. जगत को रहस्य-मयी समझ बैठना हार मान कर बैठ जाना है. यह तो ऐसा है जैसे कोई बुनियादी सवाल को यह समझ बैठे कि यह हल ही नहीं हो सकता, और ऐसा सिद्धान्त बना बैठे.

जानदार माटीवाद, और चाहे कुछ हो लेकिन हार कर बैठने वाला सिद्धान्त नहीं. यह ठीक है कि जीवन की राह जिधर गई है उधर दुख ही दुख है, मारधाड़ है और यह कि मानवता की पगडंडी ऐसे जंगल में हो कर गुज़री है जो आफ़तों से भरा है, पर क्या इससे जानदार माटीवादी यह कह बैठे कि दुनिया उसकी समझ से परे है? ऐसी दुनिया और ऐसे जीवन को देख कर वह यह भी ठीक नहीं समझता कि दुखों को अपने सिर मोल ले और बलिदान को अपने सिर चढ़ाय. वह तो बस यही समझता है कि यह जीवन और दुनिया दोनों उसे चुनौती दे रहे हैं कि वह कारनों को खोज निकाले और अपने लिये ऐसी जगह बनाले जहां वह अपनी हालत को सुधार सके. उसकी राय में दुख का कारन आध्यात्मिक नहीं है. जगत

مارکس واد کورا سماج درشن نہیں

وہ اپنی آنکھوں دیکھتا ہے کہ رهس واد کی دھار ان وچاروں کے پھیلانے میں مدد کرتی ہے کہ وگیان چیزوں کے غیر ضروری پہلوؤں پر زور دیتا ہے' یہ کہ اصلیت اُس کے ہاتھ کبھی نہیں آ سکتی . آج کا درشن خود رهس واد میں ڈوبا ہوا ہے . آدمی کے مستک کو سیمت مانتا ہے . وگیان کے مہتو کو جاننے کے لئے تیار نہیں . ایسی ایسی چیزیں گڑھ رکھی ہیں جن کے بارے میں اُس کا کہنا ہے کہ وہ سمجھ سے پرے ہیں . اُس کی یہ باتیں ایسی ہیں جو وگیانی ڈھنگ کو چنوتی دیتی ہیں . اب اگر وگیان یا وگیانی ڈھنگ اُس چنوتی کے جواب میں کچھ کہے تو کیا بیجا کرتا ہے ؟ رهس واد کے پرچار سے لوگوں میں ایک ڈر سا بیٹھ گیا ہے کہ وگیان میں لگ کر وہ بڑے ٹوٹے میں رہیں گے' منوبھاؤں کی گہرائی تک ہی نہ پاؤینگے' ساہس کے میدان میں کبھی کود ہی نہ پائیں گے' امنگیں اُن کے پاس نہ پھٹکیں گی' آنند اُن سے ایکدم دور رہے گا . وہ یہ بھول رہے ہیں کہ آدمی نے اب تک جو اڑان لی تھی اور جو کچھ اس نے سوچا تھا وگیان اُسے بہت پیچھے چھوڑ چکا ہے اور آئے دن آگے آگے بڑھتا چلا جا رہا ہے . اتہاس کی بولی میں مانو اُتساہ نے جو ویرتا پورن ساہس کی لمبی چھلانگ لی ہے اس میں وگیان بڑے کام کا ثابت ہوا ہے . اس نے آدمی کے دنیاوی وچاروں کو حد سے زیادہ مالامال کر دیا ہے . جیون کی کیا کیا سمبھاؤنائیں ہیں ان سب کا ایک دفتر کھول کر رکھ دیا ہے .

جاندار ماٹی واد' اور چاہے کچھ ہو لیکن ہار کر بیٹھنے والا سدھانت نہیں . یہ ٹھیک ہے کہ جیون کی راہ جدھر گئی ہے اُدھر دکھ ہی دکھ ہے' مار دھاڑ ہے اور یہ کہ مانوتا کی پگڈنڈی ایسے جنگل میں ہو کر گذری ہے جو آفتوں سے بھرا ہے' پر کیا اس سے جاندار ماٹی وادی یہ کہہ بیٹھے کہ دنیا اُس کی سمجھ سے پرے ہے ؟ ایسی دنیا اور ایسے جیون کو دیکھکر وہ یہ بھی ٹھیک نہیں سمجھتا کہ دکھوں کو اپنے سر مول لے اور بلیدان کو اپنے سر چڑھائے . وہ تو بس یہی سمجھتا ہے کہ یہ جیون اور دنیا دونوں اُسے چنوتی دے رہے ہیں کہ وہ کارنوں کو کھوج نکالے اور اپنے لئے ایسی جگہ بنا لے جہاں وہ اپنی حالت کو سدھار سکے . اُس کی رائے میں دکھ کا کارن آدھیاتمک نہیں ہے . جگت

रूसी दर्शनकार पीछे हटना नहीं चाहता. वह सबका मेल मिलाता हुआ आगे बढ़ना चाहता है. वह अब तक के दर्शनों को नीची निगाह से नहीं देखता. वह उन की तारीफ करता है, वह जानता है कि वह कितनी मेहनत से लिखे गये हैं. वह यह नहीं चाहता कि वह उन से होड़ ले. वह उन तक इसलिये पहुंचता है कि उन्हें जाने और यह देखे कि वह किस तरह सोचे गए हैं. वह उनसे सहमत या असहमत होने के झगड़े में नहीं पड़ता. वह जिधर भी चलता है इतिहासी निगाह लिये चलता है. वह हर दर्शन को समाज का एक रूप मानता है. सहमत असहमत होने का सवाल ही नहीं खड़ा होता. उसे अच्छी तरह मालूम है कि उसकी अपनी जड़ भी अब तक के सब दर्शनों में है. यही हाल उसके विरोधी का भी है. दर्शन जगत में आज तक जो जो आंदोलन हुए उनका संबंध उन आंदोलनों से ज़रूर है जो उस समय के समाज में हुए. रूसी विचारक ऐसा क्यों सोचता है—यह बात है तो काफ़ी साफ़ फिर भी आगे खोल कर बताए बग़ैर हर एक के दिल में नहीं बैठ सकती. उसे खोल कर बताना ही होगा.

माटीवादी दुनिया को किस तरह देखता है ?

आम तौर से रूसी दर्शनकार यही समझता है कि उसका दर्शन पूरा है, पर पूरा हो नहीं चुका. आगे वह बढ़ेगा, बढ़ कर भी अधूरा ही रहेगा, फिर भी पूरा न हो पायगा. उसने अपनी समझ में अपने दर्शन को बड़े अच्छे ढंग से पूरा कर दिया है, फिर भी उसे चारों तरफ़ से बंद नहीं किया. दरवाज़े खुले हैं. वह नये नये विचार लेकर और भी बढ़ सकता है. रूसी विचारक दर्शन (फ़िलासफ़ी) को विज्ञान (साइंस) मानता है और उसे विज्ञान जैसी ही आज़ादी देता है. जिस तरह विज्ञान, फूंक फूंक कर पांव रखता हुआ आगे बढ़ता है, रास्ता पाने पर छलांगें मारता है, वैसे ही रूसी दर्शन धीरे धीरे आगे बढ़ता और मौक़ा पाकर छलांगें मारता है. वह चाहता है कि उसका दर्शन हमेशा ठीक ढंग में बना रहे, उसी तरह बढ़ता रहे जैसे विज्ञान, उसमें उसी तरह बदलाव होते रहें, उन्नति होती रहे, जिस तरह विज्ञान में. यह ठीक है कि विज्ञान से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह जगत की सारी कहानी किसी एक वक़्त में हम से कह डाले और वह भी ऐसी कहानी जिसे वह अभी पूरी नहीं कर पाया. पर जितनी कहानी उसने हमसे अब तक कही है उस कहानी में और पूरे सत्य में बेमेलपना कहीं नहीं मिलता. वह कहानी जितनी है अपने आप में पूरी है. हां, न उसकी पहुंच इतनी लम्बी है, न इतनी गहरी है जितनी पूरे सत्य की.

अब कहिये जानदार माटीवादी (Dialectical-Materialist) कैसे रहस्यवाद (मिस्टीसिज़्म) की उस धार में बह जाय जो आज के दर्शनों ने बहा रखी है ?

روسی درشن‌کار پیچھے ہٹنا نہیں چاہتا ۔ وہ سب کا میل ملاتا ہوا آگے بڑھنا چاہتا ہے۔ وہ اب تک کے درشنوں کو نیچی نگاہ سے نہیں دیکھتا۔ وہ انکی تعریف کرتا ہے۔ وہ جانتا ہے کہ وہ کتنی محنت سے لکھے گئے ہیں ۔ وہ یہ نہیں چاہتا کہ وہ ان سے ہوڑ لے ۔ وہ اُن تک اسی لئے پہنچتا ہے کہ انہیں جانے اور یہ دیکھے کہ وہ کس طرح سوچے گئے ہیں ۔ وہ اُن سے سہمت یا اسہمت ہونے کے جھگڑے میں نہیں پڑتا ۔ وہ جدھر بھی چلتا ہے اتہاسی نگاہ لئے چلتا ہے ۔ وہ ہر درشن کو سماج کا ایک روپ مانتا ہے ۔ سہمت اسہمت ہونے کا سوال ہی نہیں کھڑا ہوتا ۔ اسے اچھی طرح معلوم ہے کہ اسکی اپنی جڑ بھی اب تک کے سب درشنوں میں ہے۔ یہی حال اس کے ورودھی کا بھی ہے۔ درشن جگت میں آج تک جو جو آندولن ہوئے ان کا سمبندھ اُن آندولنوں سے ضرور ہے جو اُس سمے کے سماج میں ہوئے ۔ روسی وچارک ایسا کیوں سوچتا ہے—یہ بات ہے تو کافی صاف پھر بھی آگے کھول کر بتائے بغیر ہر ایک کے دل میں نہیں بیٹھ سکتی۔ اسے کھول کر بتانا ہی ہوگا۔

ماٹی وادی دنیا کو کس طرح دیکھتا ہے؟

عام طور سے روسی درشن‌کار یہی سمجھتا ہے کہ اُس کا درشن پورا ہے، پر پورا ہو نہیں چکا ۔ آگے وہ بڑھے گا، بڑھکر بھی ادھورا رہیگا پھر بھی پورا نہ ہوپائے گا: اس نے اپنی سمجھ میں اپنے درشن کو بڑے اچھے ڈھنگ سے پورا کردیا ہے، پھر بھی اسے چاروں طرف سے بند نہیں کیا ۔ دروازے کھلے ہیں۔ وہ نئے نئے وچار لیکر اور بھی بڑھ سکتا ہے ۔ روسی وچارک درشن (فلاسفی) وگیان (سائنس) مانتا ہے اور اسے وگیان جیسی ہی آزادی دیتا ہے ۔ جس طرح وگیان، پھونک پھونک کر پاؤں رکھتا ہوا آگے بڑھتا ہے، راستہ پانے پر چھلانگیں مارتا ہے ویسے ہی روسی درشن دھیرے دھیرے آگے بڑھتا اور موقع پاکر چھلانگیں مارتا ہے۔ وہ چاہتا ہے کہ اُسکا درشن ہمیشہ ٹھیک ڈھنگ میں بنا رہے، اُسی طرح بڑھتا رہے جیسے وگیان، اُس میں اُسی طرح بدلاؤ ہوتے رہیں، اُنتی ہوتی رہے جس طرح وگیان میں۔ یہ ٹھیک ہے کہ وگیان سے یہ آشا نہیں کی جا سکتی کہ وہ جگت کی ساری کہانی کسی ایک وقت میں ہم سے کہہ ڈالے اور وہ بھی ایسی کہانی جسے وہ ابھی پوری نہیں کر پایا ۔ پر جتنی کہانی اُس نے ہم سے اب تک کہی ہے اس کہانی میں اور پورے ستیہ میں بےمیل‌پنا کہیں نہیں ملتا ۔ وہ کہانی جتنی ہے اپنے آپ میں پوری ہے ۔ ہاں، نہ اس کی پہنچ اتنی لمبی ہے، نہ اتنی گہری ہے جتنی پورے ستیہ کی ۔

اب کہئے جاندار ماٹی وادی (Dialectical Materialist) کیسے رہسیہ واد (مسٹی سزم) کی اس دھار میں بہہ جائے جو آج کے درشنوں نے بہا رکھی ہے ؟

बड़े दर्शनकारों का हाथ है, वह बड़वारी की इज्जत करता है, उन दर्शनकारों की क़दर करता है, पर वह यह नहीं मानता कि जिस दर्शनकार ने जो दर्शन दिया वह एक बिल्कुल अलग चीज़ थी, उसका दूसरी बातों से कोई संबंध ही न था. वह यह मानता है कि हर दर्शनकार ने सारे जगत को निगाह में रखकर अपने दर्शन की नींव डाली, जगत में समाज शामिल ही है. डेमोक्रीटस, अफ़लातून, अरस्तू, संत थामस ऐक्वीनस, फ्रांसिस बेकन, हॉब्स, स्पाईनोज़ा, कान्ट और हीगल इत्यादि सब को वह ऊंची नज़र से देखता है. यह ठीक है कि इन सब दर्शनकारों ने ऐसा नहीं किया कि सभी क्षेत्रों में प्रवेश किया हो. पर इससे क्या ? कोई क्षेत्र उनके प्रभाव से बचा नहीं. शायद ही ऐसा कोई दर्शनकार हो जो सब क्षेत्रों की ज़िम्मेदारी लेने से भागता हो. असल में दर्शन है ही ऐसी चीज़ कि वह सब क्षेत्रों से सम्बन्ध रखे बिना रह नहीं सकता. दर्शनकार का मतलब ही यह है कि वह सब तरफ़ निगाह डाले और उस चीज़ को खोजे जो सब में एक है, फिर वह इकतरफ़ा अधूरा कैसे हो सकता है ? उसे अधूरा रहने कौन देगा ? कोई एक आदमी अपने को एक बात में विशेषज्ञ कह सकता है पर वह कोरा वही हो, यह नहीं हो सकता, न आज तक कोई देखने को मिला. हां, अलग अलग दर्शनकार अपने अपने ढंग से अपनी अपनी बात कह गए. बात कहते समय उनके सामने जीवन का एक अंग नहीं था, सब का सब जीवन था. मामूली से मामूली आदमी बिना जाने बूझे सब चीज़ों को निगाह में रखकर ही कोई बात कहता है. जीवन है ही ऐसी चीज़. वह अपने आप मनुष्य को मजबूर करता है कि या तो वह सब को निगाह में रखकर सोचे या अलग अलग सोच कर सब को मिला ले.

मनुष्य स्वभाव से रूसी विचारक इन्कार भी कैसे कर सकता है ? कोई विशेषज्ञ बनना चाहे बने, समाज उसका उपयोग अपने ढंग से कर लेगा. जो समाज के लिये उपयोगी है उसके विशेषज्ञ होने का अर्थ क्या रह गया ? आंख का विशेषज्ञ क्या सारी देह का हाल नहीं जानता ? सब विशेषज्ञों का यही हाल है. इस बात पर ज़ियादा बहस करने की ज़रूरत नहीं कि जगत को एक मान कर या सारे जगत पर निगाह रख कर कोई भले ही विशेषज्ञ बने, उससे समाज को लाभ ही होगा, हानि नहीं. यह ठीक है कि जगत की एकता अपने आप दिखाई नहीं देती. उसको देखने की निगाह पैदा करनी होती है, वह हो भी जाती है. अगर दर्शनकार ही ऐसी निगाह पैदा न करे तो और कौन करेगा ? दर्शनकार की यही तो विशेषता है कि वह जान-बूझ कर, सोच समझ कर, जगत में एकता को देखता है.

بڑے درشن کاروں کا ہاتھ ہے، اس بڑوائی کی عزت کرتا ہے، اُن درشن کاروں کی قدر کرتا ہے، پر وہ یہ نہیں مانتا کہ جس درشن کار نے جو درشن دیا وہ ایک بالکل الگ چیز تھی، اس کا دوسری باتوں سے کوئی سمبندھ ہی نہ تھا ۔ وہ یہ مانتا ہے کہ ہر درشن کار نے سارے جگت کو نگاہ میں رکھکر اپنے درشن کی نیو ڈالی، جگت میں سماج شامل ہی ہے ۔ ڈیموکریٹس، افلاطون، ارسطو، سنت تھامس اے کوئی نس، فرانسس بیکن، ہابس، اسپائی نوزا، کانٹ اور ہیگل اتیادی سبکو وہ اونچی نظر سے دیکھتا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ اِن سب درشن کاروں نے ایسا نہیں کیا کہ سبھی چھیتروں میں پرویش کیا ہو۔ پر اِس سے کیا ؟ کوئی چھیتر اُن کے پربھاؤ سے بچا نہیں ۔ شاید ہی ایسا کوئی درشن کار ہو جو سب چھیتروں کی ذمہ داری لینے سے بھاگتا ہو ۔ اصل میں درشن ہے ہی ایسی چیز کہ وہ سب چھیتروں سے سمبندھ رکھے بنا رہ نہیں سکتا ۔ درشن کار کا مطلب ہی یہ ہے کہ وہ سب طرف نگاہ ڈالے اور اس چیز کو کھوجے جو سب میں ایک ہے، پھر وہ اِکطرفہ ادھورا کیسے ہوسکتا ہے ؟ اسے ادھورا رہنے کون دیگا ؟ کوئی بھی ایک آدمی اپنے کو ایک بات میں وشیشگ کہہ سکتا ہے پر وہ کورا وہی ہو، یہ نہیں ہو سکتا، نہ آج تک کوئی دیکھنے کو ملا۔ ہاں، الگ الگ درشن کار اپنے اپنے ڈھنگ سے اپنی اپنی بات کہہ گئے ۔ بات کہتے سمے اُن کے سامنے جیون کا ایک انگ نہیں تھا، سب کا سب جیون تھا۔ معمولی سے معمولی آدمی بنا جانے بوجھے سب چیزوں کو نگاہ میں رکھکر ہی کوئی بات کہتا ہے ۔ جیون ہے ہی ایسی چیز ۔ وہ اپنے آپ منش کو مجبور کرتا ہے کہ یا تو وہ سب کو نگاہ میں رکھکر سوچے یا الگ الگ سوچکر سب کو ملا لے ۔

منش سوبھاؤ سے روسی وچارک انکار بھی کیسے کر سکتا ہے ؟ کوئی وشیشگ بننا چاہے بنے، سماج اس کا اپیوگ اپنے ڈھنگ سے کرلیگا ۔ جو سماج کے لئے اپیوگی ہے اس کے وشیشگ ہونے کا ارتھ کیا رہ گیا؟ آنکھ کا وشیشگ کیا ساری دیہہ کا حال نہیں جانتا ؟ سب وشیشگوں کا یہی حال ہے ۔ اس بات پر زیادہ بحث کرنے کی ضرورت نہیں کہ جگت کو ایک مانکر یا سارے جگت پر نگاہ رکھکر کوئی بھلے ہی وشیشگ بنے، اس سے سماج کو لابھ ہی ہوگا ہانی نہیں۔ یہ ٹھیک ہے کہ جگت کی ایکتا اپنے آپ دکھائی نہیں دیتی۔ اسکو دیکھنے کی نگاہ پیدا کرنی ہوتی ہے، وہ ہو بھی جاتی ہے ۔ اگر درشن کار ہی ایسی نگاہ پیدا نہ کرے تو اور کون کریگا ؟ درشن کار کی یہی تو وشیشتا ہے کہ وہ جان بوجھکر، سوچ سمجھکر، جگت میں ایکتا کو دیکھتا ہے ۔

मार्क्सवाद कोरा समाज दर्शन नहीं

जो माटीवाद (मैटीरियलिज़्म) बदनाम है,—जिन माटीवादों पर लोग फबतियां कसते हैं—वह है "मरियल, माटीवाद", वह है भी इसी जोग. जो डाइलेक्टिकल मैटीरियलिज़्म नाम वाला माटीवाद है, वह है "जानदार माटीवाद." उसका काम सारे जगत पर निगाह डालना है. वह समाज-दर्शन के छोटे दायरे में घूम कर नहीं रह जाता. जानदार माटीवाद एक नया दर्शन है. उस की अगर इतनी छोटी निगाह होती जितनी लोग समझ बैठे हैं तो क्या वह एक क़दम आगे बढ़ सकता? सब सोवियत दार्शनिक जान बूझ कर, सोच समझकर उस बड़े सिद्धांत से अपना नाता जोड़े हैं जो 'जगत सिद्धांत' नाम से मशहूर है, जिसे तत्वज्ञान भी कहा जा सकता है, अंगरेज़ी में जिसे ऑन्टोलॉजी कहते हैं. रूसी दर्शनकार अपना तर्क रखता है, अपने नीति सिद्धांत रखता है, उसके अपने कला सिद्धांत हैं, उसके ठीक ठीक सोचने के तरीक़े हैं. जानदार माटीवाद पर यों ही उंगली उठा बैठना ठीक नहीं.

बेशक, उसकी यह राय है और पक्की राय है कि कोई कैसा भी सिद्धांत क्यों न हो कैसे ही असूल क्यों न हों, उन सिद्धांतों और उन असूलों को गढ़ने वाला कितनी ही यह कोशिश क्यों न करे कि वह सिद्धांत और वह असूल एक अपनी विशेषता लिये हो तो भी वह सब के सब सामाजी आधार पर ही टिके मिलेंगे. थोड़े शब्दों में समाज को निगाह में रख कर ही सारे सिद्धांत और नियम गढ़े जाते हैं. रूसी दर्शनकार किसी सिद्धांत को अलग मानने को तैयार नहीं. यही है जानदार माटीवाद (Dialectical materialism) का निचोड़. वह ऐसा क्यों न माने? हर सिद्धांत समाज पर अपना असर डालता ही है. हर नियम, हर असूल—फिर वह चाहे कितना ही इस लोक से परे परमात्मा या परलोक से सम्बन्ध रखता हो—समाज पर असर डाले बिना नहीं रहता. उसका यह भी विश्वास है कि सिद्धांत गढ़ने वाला चाहे जानबूझ कर ऐसा न सोचे तब भी उसके सिद्धांत का असर अपने आप समाज पर पड़ जाता है. मानव संस्कृति है ही ऐसी चीज़ कि वह किसी एक आदमी की नहीं कही जा सकती. उसका संबंध सारे समाज से है. हर आदमी का काम समाज भर पर असर डालता है, उसी तक महदूद नहीं रह सकता. समाज में अलग अलग ऐसी कोठरियां हैं ही नहीं जो एक दूसरे से संबंध न रखती हों.

रूसी विचारक, अपने ख्याल में, पच्छिम की जिस बढ़वारी की बात इतिहास में कही जाती है, जिस में बड़े

مارکس‌واد کورا سماج درشن نہیں

جو ماٹی‌واد (میٹیریلزم) بدنام ہے'—جن ماٹی‌وادوں پر لوگ پھبتیاں کستے ہیں—وہ ہے "مریل ماٹی‌واد" وہ ہے بھی اسی جوگ. جو ڈائیلیکٹیکل میٹیریلزم کے نام والا ماٹی‌واد ہے وہ ہے "جاندار ماٹی‌واد." اس کا کام سارے جگت پر نگاہ ڈالنا ہے. وہ سماج درشن کے چھوٹے دائرے میں گھوم کر نہیں رہ جاتا. جان‌دار ماٹی‌واد' ایک نیا درشن ہے. اسکی اگر اتنی چھوٹی نگاہ ہوتی جتنی لوگ سمجھ بیٹھے ہیں تو کیا وہ ایک قدم آگے بڑھ سکتا؟ سب سوویت دارشنک جان بوجھکر سوچ سمجھکر اس بڑے سدھانت سے اپنا ناتا جوڑے ہیں جو 'جگت سدھانت' نام سے مشہور ہے' جسے تتوگیان بھی کہا جاسکتا ہے' انگریزی میں جسے 'انٹولاجی' کہتے ہیں. روسی درشن‌کار اپنا ترک رکھتا ہے' اپنے نیتی سدھانت رکھتا ہے' اس کے اپنے کلا سدھانت ہیں' اس کے ٹھیک ٹھیک سوچنے کے طریقے ہیں. جان‌دار ماٹی‌واد پر یونہی انگلی اٹھا بیٹھنا ٹھیک نہیں.

بیشک' اسکی یہ رائے ہے اور پکی رائے ہے کہ کوئی کیسا بھی سدھانت کیوں نہ ہو' کیسے ہی اصول کیوں نہ ہوں' ان سدھانتوں اور ان اصولوں کو گڑھنے والا کتنی ہی یہ کوشش کیوں نہ کرے کہ وہ سدھانت اور وہ اصول ایک اپنی وشیشتا لئے ہوں تو بھی وہ سب کے سب سماجی آدھار پر ہی ٹکے ملیں گے. تھوڑے شبدوں میں سماج کو نگاہ میں رکھکر ہی سارے سدھانت اور نیم گڑھے جاتے ہیں. روسی درشن‌کار کسی سدھانت کو الگ ماننے کو تیار نہیں. یہی ہے 'جان‌دار ماٹی‌واد' (Dialectical Materialism) کا نچوڑ. وہ ایسا کیوں نہ مانے؟ ہر سدھانت سماج پر اپنا اثر ڈالتا ہی ہے. ہر نیم' ہر اصول—پھر وہ چاہے کتنا ہی اس لوک سے پرے پرماتما یا پرلوک سے سمبندھ رکھتا ہو—سماج پر اثر ڈالے بنا نہیں رہتا. اس کا یہ بھی وشواس ہے کہ سدھانت گڑھنے والا چاہے جان بوجھکر ایسا نہ سوچے تب بھی اس سدھانت کا اثر اپنے آپ سماج پر پڑ جاتا ہے. مانو سنسکرتی ہے ہی ایسی چیز کہ وہ کسی ایک آدمی کی نہیں کہی جاسکتی. اس کا سمبندھ سارے سماج سے ہے. ہر آدمی کا کام سماج بھر پر اثر ڈالتا ہے' اسی تک محدود نہیں رہ سکتا ہے. سماج میں الگ الگ ایسی کوٹھریاں ہیں ہی نہیں جو ایک دوسرے سے سمبندھ نہ رکھتی ہوں.

روسی وچارک' اپنے خیال میں پچھم کی جس بڑھواری کی بات اتہاس میں کہی جاتی ہے' جس میں بڑے

ौटते समय हम बड़वाहा भी कुछ देर के लिये भाई ली मनोहर के घर ठहरे और नीमाड़ के जीवन का परिचय लिया. नीमाड़ के लोक साहित्य के संग्रह का म भाई महेन्द्र मुरली चाव से कर रहे हैं.

आखिर में हम एक अफसोसनाक घटना की चर्चा के बग़ैर नहीं रह सकते. महात्मा भगवानदीन जब मध्य रत के मुख्य मंत्री से मिलने गये तो भाई काशीनाथ जी अलावा हम भी साथ थे. मुख्य मंत्री जी बड़े आदर त्कार से मिले. महात्मा जी की और उनकी बात-चीत हम नते रहे. लेकिन जब कमरे में इधर-उधर निगाह दौड़ी तो खा कि सामने जो मेज़, स्टूल रखे हैं उन पर मेज़-पोश ादी या हैन्डलूम के न होकर प्लास्टिक के हैं. कमरे में ामोद्योग की किसी चीज़ का नाम तक नहीं था. शायद ही नज़ारा हर राजधानी में होगा.

मध्य भारत के अपने आठ रोज़ के प्रवास में जो देखा, ना, समझा, सीखा उसके यह चित्र रह-रह कर याद आते —एक बुनकर परिवार को दिन भर की कमाई में सात ाने भी नहीं नसीब होते, रोज़ी का मारा कारीगर जबूर हो कर चोरी-डकैती पर उतर आता है और एक ुख्य मंत्री के घर में प्लास्टिक के मेज़ पोश! क्या इससे म इस नतीजे पर नहीं पहुंचते कि हमारे देश में बेरोज़- ारी बढ़ाने की एक बाक़ायदा योजना जारी है? क्या ससे आम जनता इस नतीजे पर नहीं पहुंच सकती कि श के मुट्ठी भर आदमी उसके शोषण व तबाही पर उतारू ? और फिर क्या इससे इस नतीजे पर कोई पहुंचे बिना ह सकता है कि हिन्दुस्तान में सिर्फ़ चंद आदमी ही आज़ाद हैं और बाक़ी करोड़ों अभी तक ग़ुलाम हैं? जनता ो अपनी असली आज़ादी हासिल करना होगी. इन्दौर हर की हर पार्टी-बैठक का इशारा है कि हम सब मिल र उसके लिये जिद्दो-जिहद और क़ुरबानियां करेंगे. माचला ांव के नए तजुरबे का इशारा यह है कि आगे के लिये मारे गांव खुशहाल होंगे, अपने पैरों पर खड़े होंगे, आज़ाद ोंगे यानी देश की राज शक्ति गांव गांव में बंटी होगी, श के सब रहने वाले हाथ की मेहनत की क़दर करेंगे और ब मेहनत करेंगे और देश के धन के बंटवारे में कम से म फ़रक़ रहेगा। तभी जनता की सच्ची आज़ादी का दिन ायेगा.

—सुरेश रामभाई

یہ لوٹتے سمیہ ہم بڑواہا بھی کچھ دیر کے لئے بھائی مرلی منوہر کے گھر ٹھہرے اور نیماڑ کے جیون کا کچھ پرچے لیا. نیماڑ کے لوک ساہتیہ کے سنگرہ کا کام بھائی مہیندر مرلی چاؤ سے کر رہے ہیں ۔

آخر میں ہم ایک افسوسناک گھٹنا کی چرچا کئے بغیر نہیں رہ سکتے ۔ مہاتما بھگوان دین جب مدھیہ بھارت کے مکھیہ منتری سے ملنے گئے تو بھائی کاشی ناتھ جی کے علاوہ ہم بھی ساتھ تھے. مکھیہ منتری جی بڑے آدر ستکار سے ملے ۔ مہاتما جی کی اور اُنکی بات چیت ہم سنتے رہے ۔ لیکن جب کمرے میں اِدھر اُدھر نگاہ دوڑی تو دیکھا کہ سامنے جو میز اِسٹول رکھے ہیں اُن پر میز پوش کھادی یا ہینڈلوم کے نہ ہوکر پلاسٹک کے ہیں ۔ کمرے میں گرام اُدیوگ کی کسی چیز کا نام تک نہیں تھا ۔ شاید یہی نظارہ ہر راجدھانی میں ہوگا ۔

مدھیہ بھارت کے اپنے آٹھ روز کے پرواس میں جو' دیکھا' سنا' سمجھا' سیکھا اُس کے یہ چتر رہ رہ کر یاد آتے ہیں— ایک بنکر پریوار کو دن بھر کی کمائی میں سات آنے بھی نہیں نصیب ہوتے' روزی کا مارا کاریگر مجبور ہوکر چوری ڈکیتی پر اُتر آتا ہے اور ایک مکھیہ منتری کے گھر میں پلاسٹک کے میز پوش! کیا اِس سے ہم اِس نتیجے پر نہیں پہونچتے کہ ہمارے دیش میں بیروزگاری بڑھانے کی ایک باقاعدہ یوجنا جاری ہے؟ کیا اِس سے عام جنتا اِس نتیجے پر نہیں پہونچ سکتی کہ دیش کے مٹھی بھر آدمی اُسکے شوشن و تباہی پر اُتارو ہیں؟ اور پھر کیا اِس سے اِس نتیجے پر کوئی پہونچے بنا رہ سکتا ہے کہ ہندستان میں صرف چند آدمی ہی آزاد ہیں اور باقی کروڑوں ابھی تک غلام ہیں؟ جنتا کو اپنی اصلی آزادی حاصل کرنا ہوگی. اِندور شہر کی ہر پارٹی بیٹھک اشارہ ہے کہ ہم سب ملکر اس کے لئے جدوجہد اور قربانیاں کرینگے ۔ ماچلہ گاؤں کے نئے تجربے کا اشارہ یہ ہے کہ آگے کے لئے ہمارے گاؤں خوشحال ہونگے' اپنے پیروں پر کھڑے ہونگے' آزاد ہونگے یعنی دیش کی راج شکتی گاؤں گاؤں میں بٹی ہوئی' دیش کے سب رہنے والے ہاتھ کی محنت کی قدر کرینگے. اور سب محنت کرینگے اور دیش کے دھن کے بٹوارے میں کم سے کم فرق رہیگا تبھی جنتا کی سچی آزادی کا دن آئے گا ۔

—سریش رام بھائی

दालें, ईख, मिर्च मसाले, तिलहन वग़ैरा की खेती होती है इस इलाक़े में पानी की अकसर शिकायत हो जाती है जिसकी वजह से खेती का कोई आसरा नहीं किया जा सकता. लेकिन इस बार पानी अच्छा पड़ा और उम्दा फ़स्ल की आशा है.

कस्तूरबा ग्राम में सभी इन्तज़ाम अच्छा नज़र आया. कमी है उससे फ़ायदा उठाने वालों की. यहां के अस्पताल में अभी मरीज़ कम ही आते हैं और विद्यालय में बहनों की तादाद सिर्फ़ 17 थी. लेकिन हमने इन बहनों के काम को रसोई-घर में, कताई-घर में, बुनाई-घर में, बाल-वाड़ी में, जगह-जगह देखा. उनके काम की फुर्ती, मन की लगन और हाथ की सफ़ाई तारीफ़ के क़ाबिल थी.

कस्तूरबा ट्रस्ट की तरफ़ से देश के लगभग हर प्रान्त में काम हो रहा है, सच्चा शान्त, और ख़ामोश.

माचला और गांव निर्मान

माचला के भाई देवेन्द्रनाथ गुप्त हमारे पुराने मित्र और साथी हैं. माचला में देवेन्द्र जी ने 20 बे-ज़मीन वाले किसानों की एक सहकारी सोसाइटी अभी हाल में बनाई है जो मिल कर 300 एकड़ ज़मीन का इन्तज़ाम कर रही है. उसमें मकई, ज्वार, चने वग़ैरा की काश्त की गई है. बीस जनों को लेकर सहकारी आधार पर तेल-घानी भी लगाई जा रही है. उधर ताड़ बहुत हैं. इस लिये ताड़ गुड़ बनाने की तैयारी है. देवेन्द्र जी की बातचीत, उनकी एक साल की रिपोर्ट, काम की हालत को देख कर हमारा यह अन्दाज़ा है कि अब से दो बरस के अन्दर देवेन्द्र जी व उनके साथी स्वावलम्बी हो जायेंगे यानी अपने खाने कपड़े का ख़र्च अपनी खेती-कताई से निकालने लग जायेंगे और गांव वालों को यह विश्वास हो जायेगा कि इस तरह अपनी हालत मज़बूत और ठोस बना कर चैन से रहा जा सकता है.

माचला की बहुत काफ़ी ज़मीन पर दूसरे लोग—जो न माचला में रहते हैं न कभी रहे हैं न उससे मतलब—क़ाबिज़ हैं. देवेन्द्र जी और उनके साथियों को इतमीनान है कि अगर क़स्बे की सब ज़मीन गांव वालों को मिल जाय तो गांव स्वावलम्बी बन सकता है.

हम उस दिन का इन्तज़ार है जब देवेन्द्र जी माचला वालों का दिल बदल कर भूदान में सारी ज़मीन लेकर इस गांव का ढांचा बदल देंगे. हम इस केन्द्र को स्वावलम्बी ग्राम रचना की एक बेहतरीन प्रयोग शाला मानते हैं.

हमारी इच्छा थी कि मध्य भारत के भील इलाक़ों का भी दर्शन करें. पर वह मुमकिन न हो सका. लेकिन उस जीवन की कुछ झलक हमें तब मिली जब हम महेश्वर से इन्दौर लौट रहे थे. इन्दौर मालवा प्रान्त में माना जाता है, महेश्वर नीमाड़ में नीमाड़ के अपने अनोखे लोक गीत है. महेश्वर

ں' ایکھ' مرچ' مصالحے' تلہن وغیرہ کی کھیتی ہوتی
اِس علاقے میں پانی کی اکثر شکایت ہو جاتی ہے
ی وجہ سے کھیتی کا کوئی آسرا نہیں کیا جاسکتا
اس بار پانی اچھا پڑا اور عمدہ فصل کی آشا ہے .
کستوربا گرام میں سبھی انتظام اچھا نظر آیا . کمی
ں سے فائدہ اُٹھانے والوں کی . یہاں کے اسپتال میں
مریض کم ہی آتے ہیں اور ودیالے میں بہنوں کی
صرف 17 تھی . لیکن ہم نے اِن بہنوں کے کام کو
گھر میں' کتائی گھر میں' بنائی گھر میں' بال
میں جگہ جگہ دیکھا . اُن کے کام کی پھرتی' من کی
اور ہاتھ کی صفائی تعریف کے قابل تھی .
کستوربا ٹرسٹ کی طرف سے دیش کے لگ بھگ ہر
میں کام ہو رہا ہے' سچا' شانت اور خاموش .

ماچلہ اور گاؤں نرمان

ماچلہ کے بھائی دیویندر ناتھ گپت ہمارے پرانے متر اور
ی ہیں . ماچلہ میں دیویندر جی نے 20 بےزمین والے
ں کی ایک سہکاری سوسائٹی ابھی حال میں بنائی
جو ملکر 300 ایکڑ زمین کا انتظام کر رہی ہے . اُس
مکئی' جوار' چنے وغیرہ کی کاشت کی گئی ہے .
جنوں کو لیکر سہکاری آدھار پر تیل گھانی بھی
جا رہی ہے . اُدھر تاڑ بہت ہیں . اِس لئے تاڑگڑ
کی تیاری ہے . دیویندر جی کی بات چیت' انکی
سال کی رپورٹ' کام کی حالت کو دیکھکر ہمارا یہ
ہے کہ اب سے دو برس کے اندر دیویندر جی و اُن کے
ی سواولمبی ہوجائینگے . یعنی اپنے کھانے کپڑے کا
اپنی کھیتی کتائی سے نکالنے لگ جائینگے اور گاؤں
کو یہ وشواس ہوجائیگا کہ اِس طرح اپنی حالت
ط اور ٹھوس بناکر چین سے رہا جاسکتا ہے .
ماچلہ کی بہت کافی زمین پر دوسرے لوگ—جو نہ
میں رہتے ہیں نہ کبھی رہے ہیں نہ اُس سے مطلب
بض ہیں. دیویندر جی اور اُن کے ساتھیوں کو اطمینان
اگر قصبے کی سب زمین گاؤں والوں کو مل جائے تو
سواولمبی بن سکتا ہے .
ہمیں اُس دن کا انتظار ہے جب دیویندر جی ماچلہ
کا دل بدل کر بھودان میں ساری زمین لیکر اُس
کا ڈھانچہ بدل دینگے. ہم اِس کیندر کو سواولمبی
رچنا کی ایک بہترین پریوگ شالا مانتے ہیں .
ہماری اِچھا تھی کہ مدھیہ بھارت کے بھیل علاقوں کا
درشن کریں. پر یہ ممکن نہ ہوسکا. لیکن اُس جیون
کچھ جھلک ہمیں تب ملی جب ہم مہیشور سے اِندور
رہے تھے. اِندور مالوا پرانت میں مانا جاتا ہے' مہیشور
ڑ میں . نیماڑ کے اپنے انوکھے لوک گیت ہیں . مہیشور

इंच चौड़ी 12 साड़ियों का पोत बिछा हुआ था. हिसाब लगा कर देखा कि पांच गज रोज़ बुनाई करने पर भी उसे मुश्किल से एक रुपये रोज़ मज़दूरी मिलती है जिसमें करघे का रख-रखाव या सरंजाम ख़र्च भी शामिल है.

बुनकरों की तबाही

हमारी मुलाक़ात एक और बुनकर से हुई. उसकी साठ बरस की उम्र थी, कान का कुछ बहरा था, आंख से कम दीखता था लेकिन बुनता था. उसका घर उसकी स्त्री चला रही थी, जिसमें तीन बच्चे और उनकी विधवा बुआ और नानी को लेकर सात प्राणी थे. बुड्ढा पगड़ी वाला कपड़ा बुन रहा था. तानी चालीस गज लम्बी और नौ इंच चौड़ी थी. उसमें दो रुपये दस आने का आधा सेर सूत और बारह आने का कलाबत्तू लगा हुआ था. यानी लागत तीन रुपए छः आने थी. बाज़ार भाव से दो आने गज के हिसाब से चालीस गज का दाम पांच रुपया. रोज़ाना दस गज बुनाई के हिसाब से एक दिन की आमदनी सात आने ! और सात जनों के एक कुटुम्ब को इसमें गुज़र करना है ! फिर भी बाज़ार की हाय-हाय और ख़रीदार का पता नहीं.

ऐसी हालत में यह करघे कब तक ज़िन्दा रहेंगे ? हम एक मास्टर बुनकर से भी मिले जिसके यहां पीढ़ी दर पीढ़ी यह काम होता चला आ रहा था. उन्होंने बताया कि साड़ी की खपत मिल के मुक़ाबले के कारन दिन-दिन घटती जा रही है और काम मंदा पड़ रहा है.

इन्दौर के आस-पास में ही दो जगहें ऐसी हैं जिन्हें देख कर कुछ तसल्ली होती है. एक है कस्तूरबा ग्राम जो इन्दौर से पांच मील पर है और दूसरा है माचला नाम का गांव जो कस्तूरबा ग्राम से चार मील पर है.

कस्तूरबा ग्राम

कस्तूरबा ग्राम, माता कस्तूरबा के नाम पर बसा हुआ है. सन 1944 में बा के देहान्त के बाद देश भर में कस्तूरबा गांधी स्मारक के नाम से कुछ पैसा जमा किया गया था. 2 अक्तूबर 1944 को यह निधि जब महात्मा गांधी को भेंट की गई तब उन्होंने इसका एक ट्रस्ट क़ायम कर दिया और देश के देहातियों की ख़ास कर बहनों की भलाई की ख़ातिर इसे ख़र्च करने को सौंप दिया. कस्तूरबा ग्राम जाने का हमें दो बार इत्तफ़ाक़ हुआ. हमारी मुलाक़ात भाई मानक चन्द कटारिया से हुई जो उस वक़्त दफ़्तर का काम देख रहे थे और जो ट्रस्ट के तिमाही अख़बार 'कस्तूरबा दर्शन' के सम्पादक हैं. विद्यालय के अलावा कस्तूरबा ग्राम में एक अस्पताल, जच्चा ख़ाना और बाल बाड़ी चलते हैं. विद्यालय में कताई-बुनाई वग़ैरा उद्योग भी सिखाये जाते हैं. कस्तूरबा ग्राम में क़रीब सौ एकड़ से ऊपर ज़मीन में ज्वार, धान, मूंगफली, कपास, साग, भाजी,

انچ چوڑی 12 ساڑیوں کا پوت بچھا ہوا تھا . حساب لگاکر دیکھا کہ پانچ گز روز بنائی کرنے پر بھی اسے مشکل سے ایک روپیہ روز مزدوری ملتی ہے جس میں کرگھے کا رکھ رکھاؤ یا سرانجام خرچ بھی شامل ہے .

بنکروں کی تباہی

ہماری ملاقات ایک اور بنکر سے ہوئی . اسکی ساٹھ برس کی عمر تھی' کان کا کچھ بہرا تھا' آنکھ سے کم دیکھتا تھا لیکن بنتا تھا . اس کا گھر اسکی استری چلا رہی تھی' جس میں تین بچے اور انکی ودھوا بوا اور نانی کو لیکر سات پرانی تھے . بڈھا پگڑی والا کپڑا بن رہا تھا . تانی چالیس گز لمبی اور نو انچ چوڑی تھی . اس میں دو روپئے دس آنے کا آدھا سیر سوت اور بارہ آنے کا کلابتو لگا ہوا تھا . یعنی لاگت تین روپیہ چھ آنے تھی. بازار بھاؤ سے دو آنے گز کے حساب سے چالیس گز کا دام پانچ روپیہ. روزانہ دس گز بنائی کے حساب سے' ایک دن کی آمدنی سات آنے ! اور سات جنوں کے ایک کٹمب کو اس میں گذر کرنا ہے ! پھر بھی بازار کی ہائے ہائے اور خریدار کا پتہ نہیں!

ایسی حالت میں کرگھے کب تک زندہ رہینگے ؟ ہم ایک ماسٹر بنکر سے بھی ملے جس کے یہاں پیڑھی در پیڑھی یہ کام ہوتا چلا آ رہا تھا. انہوں نے بتایا کہ ساڑی کی کھپت مل کے مقابلے کے کارن دن دن گھٹتی جا رہی ہے اور کام مندا پڑ رہا ہے .

اندور کے آس پاس میں ہی دو جگہیں ایسی ہیں جنہیں دیکھکر کچھ تسلی ہوتی ہے . ایک ہے کستوربا گرام جو اندور سے پانچ میل پر ہے اور دوسرا ہے ماچلہ نام کا گاؤں جو کستوربا گرام سے چار میل پر ہے .

کستوربا گرام

کستوربا گرام ماتا کستوربا کے نام پر بسا ہوا ہے . سن 1944 میں با کے دیہانت کے بعد دیش بھر میں ان کی یاد میں کستوربا گاندھی اسمارک کے نام سے کچھ پیسہ جمع کیا گیا تھا . 2 اکتوبر 1944 کو یہ ندھی جب مہاتما گاندھی کو بھینٹ کی گئی تب انہوں نے اس کا ایک ٹرسٹ قایم کردیا اور دیش کے دیہاتیوں کی خاصکر بہنوں کی بھلائی کے خاطر اسے خرچ کرنے کو سونپ دیا . کستوربا گرام جانے کا ہمیں دوبار اتفاق ہوا. ہماری ملاقات بھائی مانک چند کٹاریا سے ہوئی جو اس وقت دفتر کا کام دیکھ رہے تھے اور جو ٹرسٹ کے تماہی اخبار 'کستوربا درشن' کے سمپادک ہیں. ودیالے کے علاوہ کستوربا گرام میں ایک 'سپتال' زچہ خانہ اور بال باڑی چلتے ہیں . ودیالے میں کتائی بنائی وغیرہ ادیوگ بھی سکھائے جاتے ہیں. کستوربا گرام میں قریب سو ایکڑ سے اوپر زمین میں جوار' دھان' مونگ پھلی' کپاس' ساگ' بھاجی'

लेकिन इस बात की भी एहतियात चाहिये कि शहतूत की खेती एक सीमित दायरे तक रक्खी जाय और उसे ऐसा भयानक रूप न लेने दिया जाय जो ईख, चाय और रबड़ की खेती ने ले लिया है. पहली कोशिश हमारी यही होनी चाहिये कि हर ज़िले में कपास पैदा हो ताकि ज़रूरत का कपड़ा गांव गांव बनाने लगे और फिर नाज और कपास से जो फ़ालतू ज़मीन बचे वहां पर ज़ियादा ऐश आराम की चीज़ें तैयार की जायं.

जुर्म और बेरोज़गारी

यशवन्त सागर से आठ दस मील के फ़ासले पर देवपालपुर नाम का एक अच्छा क़सबा है जहां सहकारी ग्रामोद्योग विकास संघ लिमिटेड नाम से एक इन्डस्ट्रियल कोआपरेटिव सोसाइटी चल रही है. यहां पर हमने एक मार्के की चीज़ देखी थी जिसकी चर्चा हम सितम्बर के "नया हिन्द" में कर चुके हैं. इस संघ के रजिस्टरों में सब-इन्सपेक्टर पुलिस की जो चिट्ठी मिली थी उससे साफ़ पता चलता है कि हमारे देश में चोरी डकैती और जुर्म वग़ैरा के लिये हमारे यहां की बढ़ती हुई बेरोज़गारी और देहातों के धन्धों और रोज़गारों का चौपट होना कितनी दूर तक और किस गहराई तक ज़िम्मेदार है.

महेश्वर में बुनाई का काम

महेश्वर की आबादी लगभग सात हज़ार है. बुनाई के काम में मध्य भारत में यह बहुत ही सरनाम मुक़ाम है. यहां की बारीक सूती साड़ी दूर दूर तक मशहूर रही हैं. आजकल सरकार की तरफ़ से यहां पर एक सिखाई और उत्पत्ति केन्द्र चलता है. सरकारी फ़ैक्टरी के करघों में fly shuttle इस्तेमाल होता है. गांव के करघे ज़ियादातर throw shuttle से चलते हैं जिससे माल की औसत तैयारी कम बैठती है. सरकार की कोशिश है कि fly shuttle का इस्तेमाल बढ़े. अब तक 43 घरों में मदद के तौर पर सरकार की तरफ़ से fly shuttle दिया गया है जिसके आधे दाम (70 रुपये की बजाय 35 रुपये) बुनकरों से महीने महीने की क़िस्तों में छै दफ़ा कर के वसूल किया जाता है. काम को बढ़ावा देने के लिये सरकार की तरफ़ से सूत भी मिलता है जिसकी मज़दूरी जहां चार आने गज़ है वहां एक रुपये गज़ तक दे दी जाती है ताकि बुनकर जल्दी ही इसे अपना लें.

भारत के बीच के और दक्खिनी प्रान्तों में दो तरह के बुनकर होते हैं, मास्टर बुनकर और मामूली बुनकर. इनमें मास्टर बुनकर असरदार और मालदार होता है और खुद कुछ नहीं बुनाता. मामूली बुनकर ग़रीब मज़दूर की तरह बुनाई के सहारे ज़िन्दा रहता है. हमने एक मामूली बुनकर से मुलाक़ात की. उसके करघे पर पांच गज़ लम्बी और पचास

لیکن اس بات کی بھی احتیاط چاہئے کہ شہتوت کی کھیتی ایک سیمت دائرے تک رکھی جائے اور اُسے ایسا بھیانک روپ نہ لینے دیا جائے جو ایکھ، چائے اور ربر کی کھیتی نے لے لیا ہے ۔ پہلی کوشش ہماری یہی ہونی چاہئے کہ ہر ضلع میں کپاس پیدا ہو تاکہ ضرورت کا کپڑا گاؤں گاؤں بننے لگے اور پھر اناج اور کپاس سے جو فالتو زمین بچے وہاں پر زیادہ عیش آرام کی چیزیں تیار کی جائیں ۔

جرم اور بے روزگاری

یشونت ساگر سے آٹھ دس میل کے فاصلے پر دیو پال پور نام کا ایک اچھا قصبہ ہے جہاں سہکاری گرام اُدیوگ وکاس سنگھ لمیٹڈ نام سے ایک انڈسٹریل کوآپریٹو سوسائٹی چل رہی ہے۔ یہاں پر ہم نے ایک معرکے کی چیز دیکھی تھی جس کی چرچا ہم ستمبر کے " نیا ہند " میں کر چکے ہیں۔ اس سنگھ کے رجسٹروں میں سب انسپکٹر پولیس کی جو چٹھی ملی تھی اس سے صرف پتہ چلتا ہے کہ ہمارے دیش میں چوری ڈکیتی اور جرم وغیرہ کے لئے ہمارے یہاں کی بڑھتی ہوئی بے روزگاری اور دیہاتوں کے دھندوں اور روزگاروں کا چوپٹ ہونا کتنی دور تک اور کس گہرائی تک ذمہ دار ہے ۔

مہیشور میں بنائی کا کام

مہیشور کی آبادی لگ بھگ سات ہزار ہے ۔ بنائی کے کام میں مدھیہ بھارت میں یہ بہت ہی سرنام مقام ہے ۔ یہاں کی باریک سوتی ساڑی دور دور تک مشہور رہی ہیں۔ آجکل سرکار کی طرف سے یہاں پر ایک سکھائی اور اُتپتی کیندر چلتا ہے ۔ سرکاری فیکٹری کے کرگھوں میں fly-shuttle استعمال ہوتا ہے۔ گاؤں کے کرگھے زیادہ تر throw-shuttle سے چلتے ہیں جس سے مال کی اوسط تیاری کم بیٹھتی ہے ۔ سرکار کی کوشش ہے کہ fly-shuttle کا استعمال بڑھے ۔ اب تک 43 گھروں میں مدد کے طور پر سرکار کی طرف سے fly-shuttle دیا گیا ہے جس کے آدھے دام (70 روپے کی بجائے 35 روپے) بنکروں سے مہینے مہینے کی قسطوں میں چھ دفعہ کر کے وصول کیا جاتا ہے ۔ کام کو بڑھاوا دینے کے لئے سرکار کی طرف سے سوت بھی ملتا ہے جسکی مزدوری جہاں چار آنے گز ہے وہاں ایک روپیہ گز تک دے دی جاتی ہے تاکہ بنکر جلدی ہی اِسے اپنا لیں ۔

بھارت کے بیچ کے اور دکھنی پرانتوں میں دو طرح کے بنکر ہوتے ہیں، ماسٹر بنکر اور معمولی بنکر ۔ اِس میں ماسٹر بنکر اثردار اور مالدار ہوتا ہے اور خود کچھ نہیں بنتا ۔ معمولی بنکر غریب مزدور کی طرح بنائی کے سہارے زندہ رہتا ہے ۔ ہم نے ایک معمولی بنکر سے ملاقات کی ۔ اُس کے کرگھے پر پانچ گز لمبی اور پچاس

मिल बैठ कर, प्रेम के साथ हम हर मसला मज़े में तय कर सकते हैं.

मध्य भारत के ग्रामोद्योग

मध्य भारत या कम से कम इन्दौर के गांव के धन्धे देखने का शौक़ हमें शुरू से था. हमने इन्दौर पहुंच कर मध्य भारत के डायरेक्टर आफ़ इन्डस्ट्रीज़ श्री नारायन स्वामी से भेंट की. उन्होंने ख़ुद हमारे साथ जा कर अपने विभाग के कारख़ाने दिखलाये और बतलाया कि पढ़े लिखों में बेकारी का सामना करने के लिये वह क्या क्या उपाय कर रहे हैं, जैसे तेल पेरना, बटन बनाना, निवाड़ या फ़ीते बुनना, खिलौने बनाना वग़ैरा. श्री स्वामी ने बताया कि सरकार की ओर से यशवन्त सागर में—जो इन्दौर से 15 मील पर है—रेशम के कीड़े पालने का काम किया जा रहा है. उसी के आगे देवपालपुर नाम की एक जगह है जहां एक इन्डस्ट्रियल कोआपरेटिव सोसाइटी चलती है और इन्दौर से साठ पैंसठ मील दक्खन की तरफ़ महेश्वर नाम का मशहूर स्थान है जहां सरकार की तरफ़ से करघे के धन्धे को बढ़ाने की पूरी कोशिश की जा रही है.

शहतूत की खेती

यशवन्त सागर में रेशम के कीड़े पालने का काम सन 1949–50 में आधा एकड़ ज़मीन पर शुरू किया गया था. दूसरे साल सरकार ने इसे साढ़े चार एकड़ ज़मीन पर और बढ़ा दिया. तीसरे साल एक एकड़ और. इस तरह 1951–52 तक छै एकड़ ज़मीन पर सरकार की तरफ़ से शहतूत की खेती की जाने लगी. रेशम के कीड़े शहतूत के पत्तों पर पाले जाते हैं. धीरे धीरे आस पास के किसानों ने भी इसे अपनाया और 1951–52 में दो एकड़ ज़मीन, 1952–53 में ग्यारह एकड़ और 1953–54 में भी ग्यारह एकड़ पर उन्होंने शहतूत की काश्त की.

सरकारी फ़ारम से लगभग सात आठ दिन उम्र के रेशम के कीड़े किसानों को मुफ़्त दे दिये जाते हैं जिनकी मदद से पन्द्रह दिन में रेशम वाले कोकून तैयार हो जाते हैं. इन कोकूनों को सरकार दो रुपये पौंड के हिसाब से ख़रीद लेती है. एक पौंड में चार सौ पांच सौ कोकून होते हैं और पन्द्रह बीस पौंड कोकून से एक पौंड रेशम तैयार होता है. इस फ़ारम के सुपरेन्टेन्डेन्ट ने हमें बताया कि मामूली मेहनत और सिंचाई से किसान को एक एकड़ पर पहले साल में 80 रुपये की और आगे से 300 रुपये सालाना की बचत हो सकती है.

आजकल हमारे देश में लाखों रुपये का असली या नक़ली रेशम जापान, इटली और विदेशों से आता है. ज़रूरत इस बात की है कि रेशम यहीं का यहीं तैयार हो.

مل بیٹھکر پریم کے ساتھ ہم ہر مسئلہ مزے میں طے کر سکتے ہیں ۔

مدھیہ بھارت کے گرام ادیوگ

مدھیہ بھارت کے یا کم سے کم اندور کے گاؤں کے دھندے دیکھنے کا شوق ہمیں شروع سے تھا ۔ ہم نے اندور پہونچکر مدھیہ بھارت کے ڈائریکٹر آف انڈسٹریز شری نارائن سوامی سے بھینٹ کی ۔ انہوں نے خود ہمارے ساتھ جا کر اپنے وبھاگ کے کارخانے دکھلائے اور بتلایا کہ پڑھے لکھوں میں بیکاری کا سامنا کرنے کے لئے وہ کیا کیا اپائے کر رہے ہیں، جیسے تیل پیرنا، بٹن بنانا، نواڑ یا فیتے بننا، کھلونے بنانا وغیرہ ۔ شری سوامی نے بتایا کہ سرکار کی اور سے یشونت ساگر میں—جو اندور سے 15 میل پر ہے—ریشم کے کیڑے پالنے کا کام کیا جا رہا ہے ۔ اسی کے آگے دیو پال پور نام کی ایک جگہ ہے جہاں ایک انڈسٹریل کوآپریٹو سوسائٹی چلتی ہے اور اندور سے 65–60 میل دکھن کی طرف مہیشور نام کا مشہور استھان ہے جہاں سرکار کی طرف سے کرگھے کے دھندھے کو بڑھانے کی پوری کوشش کی جا رہی ہے ۔

شہتوت کی کھیتی

یشونت ساگر میں ریشم کے کیڑے پالنے کا کام سن 1949-50 میں آدھا ایکڑ زمین پر شروع کیا گیا تھا۔ دوسرے سال سرکار نے اسے ساڑھے چار ایکڑ زمین پر اور بڑھا دیا ۔ تیسرے سال ایک ایکڑ اور ۔ اس طرح 1951–52 تک چھ ایکڑ زمین پر سرکار کی طرف سے شہتوت کی کھیتی کی جانے لگی ۔ ریشم کے کیڑے شہتوت کے پتوں پر پالے جاتے ہیں ۔ دھیرے دھیرے آس پاس کے کسانوں نے بھی اسے اپنایا اور 1951–52 میں دو ایکڑ زمین، 1952–53 میں گیارہ ایکڑ اور 1953–54 میں بھی گیارہ ایکڑ پر انہوں نے شہتوت کی کاشت کی ۔

سرکاری فارم سے لگ بھگ سات آٹھ دن عمر کے ریشم کے کیڑے کسانوں کو مفت دے دئے جاتے ہیں جن کی مدد سے پندرہ دن میں ریشم والے کوکون تیار ہو جاتے ہیں ۔ ان کوکونوں کو سرکار دو روپیہ پونڈ کے حساب سے خرید لیتی ہے ۔ ایک پونڈ میں چار سو ۔ پانچ سو کوکون ہوتے ہیں اور پندرہ بیس پونڈ کوکون سے ایک پونڈ ریشم تیار ہوتا ہے ۔ اس فارم کے سپرنٹنڈنٹ نے ہمیں بتایا کہ معمولی محنت اور سنچائی سے کسان کو ایک ایکڑ پر پہلے سال میں 80 روپیہ کی، اور آگے سے 300 روپے سالانہ کی بچت ہو سکتی ہے ۔

آجکل ہمارے دیش میں لاکھوں روپے کا اصلی یا نقلی ریشم جاپان، اٹلی اور ودیشوں سے آتا ہے ۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ریشم یہیں کا یہیں تیار ہو

तैयार किया है. इस घड़ी का दाम उन्होंने सौ रुपये रखा है. यह कारखाना देखने महात्मा भगवानदीन गये थे, उन्होंने सौ रुपये देकर एक घड़ी 'नया हिन्द' के दफ़्तर के लिये ख़रीद ली और उम्मीद की कि इसकी मांग बढ़ेगी. इसी कारख़ाने की बनी एक घड़ी डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के पास वर्धा में है.

हमने तीन बरस की वह चिट्ठी पत्री भी देखी जो मध्य भारत सरकार और केन्द्री सरकार और उद्यम कारख़ाने वालों से हुई. सौ बातों की एक बात यह है कि सरकार से इस कारख़ाने को अब तक न एक पैसे की मदद मिली न एक घड़ी का आर्डर.

हमें नहीं मालूम कि मध्य भारत सरकार या केन्द्री सरकार कब व किस रूप में मदद कर पाएंगी. अगर कोई वसीले वाला विदेशी व्योपारी होता तो लाखों के आर्डर किसी भी सरकार से ले गया होता. श्री कस्तूरे मेहनती और अपनी धुन के पक्के हैं. वह न कभी व्योपार के चक्कर में पड़े हैं न इश्तहारबाज़ी के शौक़ में. क्या ही अच्छा हो कि हिन्दुस्तान के हर बड़े दफ़्तर में या हर रईस के घर में उनकी एक दीवार घड़ी हो. इसी तरह और कारीगरों की भी हिम्मत बढ़ सकती है और देश ऊंचा उठ सकता है.

एक कुल पार्टी मीटिंग

इन्दौर की ज़िला कम्यूनिस्ट पार्टी के सेक्रेट्री भाई सरमंडल जी ने पूछा कि क्या आप यहां की शान्ति कौंसिल की बुलाई हुई एक पबलिक मीटिंग में बोलना पसंद करेंगे. हमने जवाब दिया कि ज़ियादा अच्छा यह होगा कि आप यहां की सभी पार्टियों के कारकुनों को बुलायें और उनके साथ बैठ कर देश के आज के सवालों पर मिल कर विचार करें. मीटिंग हुई जिसमें लगभग 40–45 भाई बहन थे. उनमें कम्यूनिस्ट भी थे, कांगरेसी भी थे, प्रजापार्टी वाले भी थे. जन संघी भी थे, और रचनात्मक कार्यकर्ता भी थे. दो घंटे तक विश्व शान्ति, देश की आज की हालत, राजकाज और भूदान आन्दोलन पर चर्चा चली जिसमें सभी ने दिल खोल कर और ध्यान पूर्वक हिस्सा लिया. ऐसी मीटिंग का हमें और जगह भी इत्तफ़ाक़ हुआ है. हमारा विश्वास है कि आज पार्टियों के पचड़ों में पड़ कर हम लोग सही सही न देख पाते हैं न कुछ कर पाते हैं. महसूस होता है कि असली हित में यह पार्टियां अकसर रुकावट बन जाती हैं. ऐसी मीटिंगों से पता चलता है कि इस राजनीतिक जात पात या सियासी छुआ छूत से अलग रहने की तबियत हम में से बहुतों की होती है और इससे हटना उतना कठिन नहीं है जितना बाहर से दीखता है. अगर हम ज़रा जतन करें तो यह सहज ही हट जाए और फिर

تیار کیا ہے ۔ اِس گھڑی کا دام اُنہوں نے سو روپے رکھا ہے ۔ یہ کارخانہ دیکھنے مہاتما بھگوان دین گئے تھے' اُنہوں نے سو روپے دے کر ایک گھڑی 'نیا ہند' کے دفتر کے لئے خرید لی اور اُمید کی کہ اِس کی مانگ بڑھے گی ۔ اِسی کارخانے کی بنی ایک گھڑی ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کمارپا کے پاس وردھا میں ہے ۔

ہم نے تین برس کی وہ چٹھی پتری بھی دیکھی جو مدھیہ بھارت سرکار اور کیندری سرکار اور اُدیم کارخانے والوں سے ہوئی۔ سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ سرکار سے اِس کارخانے کو اب تک نہ ایک پیسے کی مدد ملی نہ ایک گھڑی کا آرڈر ۔

ہمیں نہیں معلوم کہ مدھیہ بھارت سرکار یا کیندری سرکار کب و کس روپ میں مدد کر پائیں گی۔ اگر کوئی وسیلے والا ودیشی بیوپاری ہوتا تو لاکھوں کے آرڈر کسی بھی سرکار سے لے گیا ہوتا ۔ شری کستورے محنتی اور اپنی دھن کے پکے ہیں ۔ وہ نہ کبھی بیوپار کے چکر میں پڑے ہیں نہ اشتہار بازی کے شوق میں ۔ کیا ہی اچھا ہو کہ ہندستان کے ہر بڑے دفتر میں یا ہر رئیس کے گھر میں اُن کی ایک دیوار گھڑی ہو۔ اِسی طرح اور کاریگروں کی بھی ہمت بڑھ سکتی ہے اور دیش اونچا اُٹھ سکتا ہے ۔

ایک کل پارٹی میٹنگ

اِندور کی ضلع کمیونسٹ پارٹی کے سکریٹری بھائی سرمنڈل جی نے پوچھا کہ کیا آپ یہاں کی شانتی کونسل کی بلائی ہوئی ایک پبلک میٹنگ میں بولنا پسند کریں گے ۔ ہم نے جواب دیا کہ زیادہ اچھا یہ ہوگا کہ آپ یہاں کی سبھی پارٹیوں کے کارکنوں کو بلائیں اور اُن کے ساتھ بیٹھ کر دیش کے آج کے سوالوں پر مل کر وچار کریں۔ میٹنگ ہوئی جس میں لگ بھگ 40–45 بھائی بہن تھے۔ اُن میں کمیونسٹ بھی تھے' کانگریسی بھی تھے' پرجا پارٹی والے بھی تھے' جن سنگھی بھی تھے' اور رچناتمک کاریہ کرتا بھی تھے ۔ دو گھنٹے تک وشو شانتی' دیش کی آج کی حالت' راج کاج اور بھودان آندولن پر چرچا چلی جس میں سبھی نے دل کھول کر اور دھیان پوروک حصہ لیا ۔ ایسی میٹنگ کا ہمیں اور جگہ بھی اتفاق ہوا ہے ۔ ہمارا وشواس ہے کہ آج پارٹیوں کے پچڑوں میں پڑ کر ہم لوگ صحیح صحیح نہ دیکھ پاتے ہیں نہ کچھ کر پاتے ہیں ۔ محسوس ہوتا ہے کہ اصلی ہت میں یہ پارٹیاں اکثر رکاوٹ بن جاتی ہیں۔ ایسی میٹنگوں سے پتہ چلتا ہے کہ اِس راجنیتک جات پات یا سیاسی چھوا چھوت سے الگ رہنے کی طبیعت ہم میں سے بہتوں کی ہوتی ہے اور اِس سے ہٹنا اُتنا کٹھن نہیں ہے جتنا باہر سے دیکھتا ہے ۔ اگر ہم ذرا جتن کریں تو یہ سہج ہی ہٹ جائے اور پھر

उन्होंने पूछा कि मिल का माल सस्ता होता है, हाथ का मंहगा होता है—तब फिर मिल का माल विशेष कर अब जब मिलें अपनी देशी हैं—हम क्यों न इस्तेमाल करें. थोड़े में इसने उन्हें बताने की कोशिश की कि 'सस्ता' 'मंहगा' यह शब्द देश की आर्थिक हालत के साथ बदलते हैं. आज मिल का तेल 'सस्ता' है क्योंकि मिल वालों को बिजली एक यूनिट डेढ़ आने में मिल जाती है लेकिन वही यूनिट तेली को सवा रुपये में बैठती है. अगर दोनों को एक से भाव पर मिले तो फिर तेली का माल सस्ता बैठेगा और वह भूखा न मरेगा. लेकिन मिल वालों को बिजली कम औरसस्ते दाम पर क्यों मिलती है ? क्योंकि: देश का सारा आर्थिक ढांचा पूंजी पतियों के हिसाब से ही बना है. झरिया और रानी गंज से कोयला और लोहा ढो-ढोकर, उस पर ढुलाई खर्च और इन्तजाम खर्च जोड़ कर एक यूनिट छै पैसे में देना वैसा ही है जैसे इन्दौर बैंक से सौ सेर सोना खान से निकालने की तदबीर में एक हजार रुपये खर्च होने पर (यानी दस रुपये सेर 'लागत' पड़ने पर) बाजार में बारह पंद्रह रुपये सेर सोना बेचना. हमारे देश की खानें जनता की धरोहर हैं. उनको केवल चन्द साधनदार या हैसियत वालों की खातिर खाली कर देना एक जबरदस्त नाइन्साफी है जो हमें अंगरेजों से विरासत में मिली है. उन खानों पर जितना हक़ मिल वालों का है उतना ही तेली का. पर आज की हालत में मिल वाला उसका फायदा उठा लेता है, तेली नहीं. यह ग़रीब जनता का खून चूस कर थोड़े से अमीरों को पालता है.

इनसाफ की मांग है कि देश के जितने सार्वजनिक साधन हैं या सम्पत्ति है उनका फायदा सब को बराबर मिले, वरना ग़रीब की ग़रीबी बढ़ती जायगी और अमीर की अमीरी. आगे चल कर हम यह भी कहेंगे कि सारी दुनिया के साधन व सम्पत्ति किसी खास इनसान या जमाअत या दल के हाथ में न रहनी चाहिये.

हाथ की बनी घड़ी

इन्दौर का उद्यम कारखाना तुकोगंज मुहल्ले में श्रीनाथ मन्दिर के पास है. इसके कर्ता धर्ता हैं भाई मोहिनी राज अमृतराव कस्तूरे जिन्होंने अपने हाथ से घड़ी बना लेने में कमाल हासिल किया है. 1947 की जून में जब बापू की घड़ी चोरी चली गई थी तो कस्तूरे जी ने ही अपने हाथ की बनी एक घड़ी बापू को भेंट की थी. घड़ी के बारीक बारीक पुर्जे, पहिये, पेच आदि सभी वह खुद बना लेते हैं. सिर्फ मेनस्प्रिंग और ज्वैल बाहर के रहते हैं.

अपनी पच्चीस बरस की मेहनत के बाद श्री कस्तूरे जी ने साबित कर दिखाया कि घड़ी भारत में बन सकती है. फिलहाल उन्होंने दीवार घड़ी (क्लाक) का एक नमूना

انہوں نے پوچھا کہ مل کا مال سستا ہوتا ہے' ہاتھ کا مہنگا ہوتا ہے—تب پھر مل کا مال وشیش کر اب جب ملیں اپنی دیشی ہیں—ہم کیوں نہ استعمال کریں ۔ تھوڑے میں ہم نے انہیں بتانے کی کوشش کی کہ 'سستا' 'مہنگا' یہ لفظ دیش کی آرتھک حالت کے ساتھ بدلتے ہیں۔ آج مل کا تیل سستا ہے کیونکہ مل والوں کو بجلی ایک یونٹ ڈیڑھ آنہ میں مل جاتی ہے ۔ لیکن وہی یونٹ تیلی کو سوا روپیہ میں بیٹھتی ہے ۔ اگر دونوں کو ایک سے بھاؤ پر ملے تو پھر تیلی کا مال سستا بیٹھے گا اور وہ بھوکا نہ مریگا. لیکن مل مالکوں کو بجلی کم اور سستے داموں پر کیوں ملتی ہے ؟ کیونکہ دیش کا سارا آرتھک ڈھانچہ پونجی پتیوں کے حساب سے ہی بنا ہے ۔ جھریا اور رانی گنج سے کوئلہ اور لوہا ڈھو ڈھو کر اس پر ڈھلائی خرچ اور انتظام خرچ جوڑ کر ایک یونٹ چھ پیسے میں دینا ویسا ہی ہے جیسے اندور بینک سے سو سیر سونا کھان سے نکالنے کی تدبیر میں ایک ہزار روپئے خرچ ہونے پر (یعنی دس روپئے سیر 'لاگت' پڑنے پر) بازار میں بارہ پندرہ روپئے سیر سونا بیچنا. ہمارے دیش کی کھانیں جنتا کی دھروہر ہیں۔ ان کو کیول چند سادھن دار یا حیثیت والوں کی خاطر خالی کر دینا ایک زبردست ناانصافی ہے جو ہمیں انگریزوں سے وراثت میں ملی ہے ۔ ان کھانوں پر جتنا حق مل والوں کا ہے اتنا ہی تیلی کا ۔ پر آج کی حالت میں مل والا اس کا فائدہ اٹھا لیتا ہے' تیلی نہیں ۔ یہ غریب جنتا کا خون چوس کر تھوڑے امیروں کو پالتا ہے ۔

انصاف کی مانگ ہے کہ دیش کے جتنے سارو جنک سادھن ہیں یا سمپتی ہے ان کا فائدہ سب کو برابر ملے' ورنہ غریب کی غریبی بڑھتی جائے گی اور امیر کی امیری۔ آگے چل کر ہم یہ بھی کہیں گے کہ ساری دنیا کے سادھن سمپتی کسی خاص انسان یا جماعت یا دل کے ہاتھ میں نہ رہنی چاہئے ۔

ہاتھ کی بنی گھڑی

اندور کا ادیم کارخانہ تکو گنج محلہ میں شری ناتھ مندر کے پاس ہے ۔ اس کے کرتا دھرتا ہیں بھائی موہنی راج امرت راؤ کستورے جنہوں نے اپنے ہاتھ سے گھڑی بنا لینے میں کمال حاصل کیا ہے ۔ 1947 کی جون میں جب باپو کی گھڑی چوری چلی گئی تھی تو کستورے جی نے ہی اپنے ہاتھ کی بنی ایک گھڑی باپو کو بھینٹ کی تھی ۔ گھڑی کے باریک باریک پرزے' پہئے' پیچ آدی سبھی وہ خود بنا لیتے ہیں ۔ صرف مین اسپرنگ اور جویل باہر کے رہتے ہیں ۔

اپنی پچیس برس کی محنت کے بعد شری کستورے جی نے ثابت کر دکھایا کہ گھڑی بھارت میں بن سکتی ہے ۔ فی الحال انہوں نے دیوار گھڑی (کلاک) کا ایک نمونہ

महात्मा भगवान दीन ने अपने प्रवचन में कहा कि अहल्या बाई ने अटल विश्वास के साथ संकटों का सामना किया और दुनिया को दिखला दिया कि एक स्त्री किस तरह राजकाज संभाल सकती है. महात्मा जी ने लोगों से अपील की कि आजकल के समय में हम तरक्क़ी करना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि जात पात तोड़ें और छुआ छूत खत्म करें. इससे भी ज़ियादा ज़रूरी यह है कि अहल्या बाई की तरह हम में भी यह कला आये कि अपने-पराये की तमीज़ कर सकें. महात्मा जी ने कहा कि इस उत्सव के मनाने वालों को चाहिये कि पहले विदेशी चीज़ों की होली करें चाहे वह लिपस्टिक हो चाहे फ़ाउन्टैन पेन.

महात्मा जी ने सुझाया कि जुलूस में हर जात बिरादरी के लोग शामिल होने चाहिये और एक भोज भी होना चाहिये जिसमें सब जातों और मज़हबों के लोग शामिल हों.

इन्दौर और आस पास की सैर में नीमाड़ के दो उत्साही नौजवान महेन्द्र कुमार जैन और मुरली मनोहर कामेर मेरे साथ रहे.

हरिजन सेवक संघ

इन्दौर नगर में यूं तो बीसियों संस्थायें हैं, कुछ नाम की, कुछ काम की. मैं यहां पर दो की चर्चा करूंगा— हरिजन सेवक संघ और उद्यम कारख़ाना.

हरिजन सेवक संघ की शाख़ें देश के हर प्रान्त में और बहुत से ज़िलों में हैं. लेकिन मध्य भारत की शाख़ को देख कर जी फड़क उठता है. इसकी वजह है उस शाख़ के बूढ़े मगर मुस्तैद और अनुभवी मंत्री श्री कृष्न राव वासदेव दाते. प्रान्त के हर ज़िले में संघ के कार्यकर्ता मुस्तैदी से अपने काम पर लगे हुए हैं. इन्दौर के मोती तबेला नाम के मुहल्ले में एक हरिजन बोरडिंग हाउस है जिसमें छटे दर्जे से बी. ए. तक के लगभग 30 हरिजन लड़के रहते हैं. बोरडिंग हाउस में कोल्हू घानी का काम भी चलता है. इस के अलावा इन्दौर शहर से तीन मील की दूरी पर एक चमड़ा शाला (टैनेरी) भी संघ की तरफ़ से चलती है.

इस टैनेरी के पास ही वह जगह है जहां इन्दौर भर का मैला और गन्दगी इकट्ठा होती है. बाक़ायदा नालियां और गड्ढे खुदे हुए हैं जहां मैले की खाद बना कर बेची जाती है. वहां का सारा इन्तज़ाम अच्छा मालूम पड़ा. दूसरे प्रान्तों के म्यूनिस्पिल बोर्ड भी उस से सबक़ ले सकते हैं.

ग्रामोद्योग का अर्थ शास्त्र

12-13 सितम्बर हमें हरिजन भाईयों का सतसंग करने का और उनके साथ चर्चा करने का सौभाग्य हासिल हुआ. विद्यार्थी ज़ियादातर जागरूक दिखाई पड़े. एक सवाल

مہاتما بھگوان دین نے اپنے پروچن میں کہا کہ اہلیابائی نے اٹل وشواس کے ساتھ سنکٹوں کا سامنا کیا اور دنیا کو دکھلا دیا کہ ایک استری کس طرح راج کاج سنبھال سکتی ہے. مہاتما جی نے لوگوں سے اپیل کی کہ آجکل کے سمے میں ہم ترقی کرنا چاہتے ہیں تو ہمیں چاہئیے کہ جات پات توڑیں اور چھوا چھوت ختم کریں. اس سے بھی زیادہ ضروری یہ ہے کہ اہلیابائی کی طرح ہم میں بھی یہ کلا آئے کہ اپنے پرائے کی تمیز کرسکیں. مہاتما جی نے کہا کہ اس اتسو کو منانے والوں کو چاہئیے کہ پہلے ودیشی چیزوں کی ہولی کریں چاہے وہ لپ اسٹک ہو چاہے فاؤنٹن پین.

مہاتما جی نے سمجھایا کہ جلوس میں ہر جات برادری کے لوگ شامل ہونے چاہئیے اور ایک بھوج بھی ہونا چاہئیے جس میں سب جاتوں اور مذہبوں کے لوگ شامل ہوں.

اِندور اور آس پاس کی سیر میں نیماڑ کے دو اُتساہی نوجوان مہیندر کمار جین اور مرلی منوہر کامیر میرے ساتھ رہے.

ہریجن سیوک سنگھ

اِندور نگر میں یوں تو بیسیوں سنستھائیں ہیں، کچھ نام کی کچھ کام کی. میں یہاں پر دو کی چرچا کرونگا—ہریجن سیوک سنگھ اور اُدیم کارخانہ.

ہریجن سیوک سنگھ کی شاخیں دیش کے ہر پرانت میں اور بہت سے ضلعوں میں ہیں. لیکن مدھیہ بھارت کی شاخ کو دیکھ کر جی پھڑک اٹھتا ہے. اسکی وجہ ہے اس شاخ کے بوڑھے مگر مستعد اور انبھوی منتری شری کرشن راؤ واسدیو داتے. پرانت کے ہر ضلع میں سنگھ کے کارکرتا مستعدی سے اپنے کام پر لگے ہوئے ہیں. اِندور کے موتی طبیلہ نام کے محلے میں ایک ہریجن بورڈنگ ہاؤس ہے جس میں چھٹے درجے سے بی. اے. تک کے لگ بھگ 30 ہریجن لڑکے رہتے ہیں. بورڈنگ ہاؤس میں کولھو گھانی کا کام بھی چلتا ہے. اس کے علاوہ اِندور شہر سے تین میل کی دوری پر ایک چمڑا شالا (ٹینری) بھی سنگھ کی طرف سے چلتی ہے.

اس ٹینری کے پاس ہی وہ جگہ ہے جہاں اِندور بھر کا میلا اور گندگی اکٹھا ہوتی ہے. باقاعدہ نالیاں گڑھے کھودے ہوئے ہیں جہاں میلے کی کھاد بناکر بیچی جاتی ہے. وہاں کا سارا انتظام اچھا معلوم ہوا. دوسرے پرانتوں کے میونسپل بورڈ بھی اس سے سبق لے سکتے ہیں.

گرام اُدیوگ کا ارتھ شاستر

12-13 ستمبر ہمیں ہریجن بھائیوں کے ساتھ ست سنگ کرنے کا اور ان کے ساتھ چرچا کرنے کا سوبھاگیہ حاصل ہوا. ودیارتھی زیادہ تر جاگروک دکھائی پڑے. ایک سوال

मध्य भारत की एक झांकी

पिछली 7 सितम्बर को इन्दौर में रानी अहल्या बाई ‍। पुन्य तिथि महात्मा भगवानदीन की सदारत में मनाई ‍. वह जलसा राज महल में शाम के समय हुआ और ‍का आयोजन इन्दौर की एक पुरानी पबलिक संस्था, ‍हल्या बाई स्मारक समिति' ने किया जिसके प्रधान ‍। काशीनाथ त्रिवेदी और सेक्रेट्री डाक्टर उदयभानु हैं. ‍र मौक़े पर मुझे मध्य भारत के, ख़ास कर इन्दौर के, ‍रकुनों से मिलनें का, और वहां की रचनात्मक संस्थाएं ‍खने का और उस इलाक़े के देहाती धन्धों को जानने ‍मझने का सौभाग्य हासिल हुआ.

मध्य भारत प्रान्त का जन्म 28 मई 1948 को हुआ था. ‍। प्रान्त में 20 रियासतें—ग्वालियर, इन्दौर, धार, ‍बुआ, रतलाम वग़ैरा शामिल हैं जिनका रक़बा 46.587 ‍। मील है. सालाना आमदनी दस करोड़ के लगभग ‍मध्य भारत में 16 ज़िले और 40 तहसीलें हैं. कुल गांव ‍.,094 हैं जिनमें 4,219 जागीरी गांव हैं. मध्य भारत ‍1,327 जागीरदार हैं जिनकी जागीरदारी अभी बदस्तूर ‍ती जा रही है. जल्द ही दूसरे प्रान्तों की तरह यहां भी ‍गीरदारी ख़ातमा क़ानून बनने की ख़बर है. सन 1951 ‍गिनती के अनुसार मध्य भारत की आबादी 79,42,778 ‍जिनमें आदिवासी 12 लाख के लगभग हैं और हरिजन ‍: लाख के.

अहल्या बाई उत्सव

महारानी अहल्या बाई ने 1795 में अपना शरीर ‍ड़ा. होलकर राज उनके ससुर मल्हार राव ने ही क़ायम ‍या था. महारानी ने इसे ठोस रूप दिया. उनकी राज- ‍नी महेश्वर में थी जो नर्बदा नदी के किनारे बसा हुआ ‍महेश्वर इन्दौर से 65 मील के लगभग है. महेश्वर ‍महारानी के रहने का महल, दरबार हाल, मन्दिर ‍रा सभी वैसे के वैसे मौजूद हैं. नर्बदा में महारानी ने ‍लम्बे-लम्बे, एक मील तक फैले हुए 50 घाट बनवाये वह ‍य भारत के लिये ही नहीं देश भर के लिये शान और ‍ख की चीज़ हैं..

अहल्या बाई की पुन्य तिथि को मध्य भारत का एक ‍ौहार कहना चाहिये. उस दिन सभी कामकाज बन्द ‍त है और जगह जगह उत्सव मनाया जाता है. इन्दौर ‍शाम के समय कई फ़र्लांग लम्बा जलूस सारे शहर ‍घूमता हुआ निकला. उसे देख कर दो सौ बरस पुराने ‍रत की तस्वीर सामने आ जाती थी.

مدھیہ بھارت کی ایک جھانکی

پچھلی 7 ستمبر کو اندور میں رانی اہلیا بائی کی پن تتھی مہاتما بھگوان دین کی صدارت میں منائی گئی. یہ جلسہ راج محل میں شام کے سمے ہوا اور اس کا آیوجن اندور کی ایک پرانی پبلک سنستھا ' اہلیابائی اسمارک سمتی ' نے کیا جس کے پردھان شری کاشی ناتھ ترویدی اور سکریٹری ڈاکٹر ادے بھان ہیں . اس موقع پر مجھے مدھیہ بھارت کے' خاص کر اندور کے' کارکنوں سے ملنے کا' اور وہاں کی رچناتمک سنستھائیں دیکھنے کا اور اس علاقے کے دیہاتی دھندوں کو جاننے سمجھنے کا سوبھاگیہ حاصل ہوا .

مدھیہ بھارت پرانت کا جنم 28 مئی 1948 کو ہوا تھا . اس پرانت میں 20 ریاستیں—گوالیر' اندور' دھار' جھابوا' رتلام وغیرہ شامل ہیں جن کا رقبہ 46‘587 مربع میل ہے . سالانہ آمدنی 10 کروڑ کے لگ بھگ ہے. مدھیہ بھارت میں 16 ضلعے اور 40 تحصیلیں ہیں. کل گاؤں 21‘094 ہیں جن میں 4‘219 جاگیری گاؤں ہیں . مدھیہ بھارت میں 1‘327 جاگیردار ہیں جن کی جاگیرداری ابھی بدستور چلی جا رہی ہے . جلد ہی دوسرے پرانتوں کی طرح یہاں بھی جاگیرداری خاتمہ قانون بننے کی خبر ہے . سن 1951 کی گنتی کے انوسار مدھیہ بھارت کی آبادی 79‘42‘778 ہے جن میں آدی واسی 12 لاکھ کے لگ بھگ ہیں اور ہریجن 14 لاکھ کے .

<u>اہلیابائی اتسو</u>

مہارانی اہلیابائی نے 1795 میں اپنا شریر چھوڑا . ہولکر راج ان کے سسر ملہار راؤ نے ہی قائم کیا تھا . مہارانی نے اسے ٹھوس روپ دیا . ان کی راجدھانی مہیشور میں تھی جو نربدا ندی کے کنارے بسا ہوا ہے . مہیشور اندور سے 65 میل کے لگ بھگ ہے . مہیشور میں مہارانی کے رہنے کا محل' دربار ہال' مندر وغیرہ سبھی ویسے کے ویسے موجود ہیں . نربدا میں مہارانی نے جو لمبے لمبے 50 میل تک پھیلے ہوئے' گھاٹ بنوائے وہ مدھیہ بھارت کے لئے ہی نہیں دیش بھر کے لئے شان اور گورو کی چیز ہیں .

اہلیابائی کی پن تتھی کو مدھیہ بھارت کا ایک تیوہار کہنا چاہئے . اس دن سبھی کام کاج بند رہتا ہے اور جگہ جگہ اتسو منایا جاتا ہے . اندور میں شام کے سمے کئی فرلانگ لمبا جلوس سارے شہر میں گھومتا ہوا نکلا . اسے دیکھکر دو سو برس پرانے بھارت کی تصویر سامنے آجاتی تھی .

बच्चा लड़की है या लड़का ? गोरा है या काला ? इस वक़्त मां की हालत क्या है ? हाय रे ! उस बुढ़िया को दिन में भी कुछ साफ़ नहीं दिखता. अन्धेरे में कहीं बच्चे को रौंद न डाले......

आठ बजे दोई मन्दिर का घन्टा ज़ोर से बजने लगा. मजीरा, मृदंग, झांझ, शंख शहनाई, तुरही सब की आवाज़ एक साथ मिल कर गूंज उठी. चकाचौंध करने वाली बिजली की सैकड़ों बत्तियां "अरूनापालम पिल्ले का दान" के इश्तहार के साथ मन्दिर में जगमगा रही थीं.

अरूनापालम की धरम पत्नी मन्दिर में मूरती के सामने कांसे के दिये में घी डाल रही थी.

घी के दिये और बिजली के बलब एक दूसरे से होड़ लगाये हुए थे. मन्दिर रोशनी का समुन्दर बन गया था. अरूनापालम पिल्ले मूरती के सामने मनौती कर रहे थे और कानों के हीरों को हिला-हिला कर मूरती उनकी प्रार्थना सुन रही थी. मन्दिर के अन्दर पूंजी की क़ैद में जो भगवान थे वह रोशनी की बाढ़ में गुमसुम बैठे थे और झोंपड़ों में जो भगवान थे वह अन्धेरे में छटपटा रहे थे, चिल्ला रहे थे......! यहां घन्टे बज रहे थे, गजर गूंज रहे थे. गजर की आवाज़ ने भगवान की आवाज़ को दबा दिया, पाताल में डाल दिया.

हिन्दी की नई किताब

गंगा से गोमती तक

मुजीब रिज़वी

इस किताब में मुजीब रिज़वी की तेरह कहानियां शामिल हैं. इन में से बहुत सी कहानियां 'नया हिन्द' के पाठक पढ़ चुके हैं और उन कहानियों के रस से अच्छी तरह परिचित हैं.

★ इन कहानियों में आजकल की समाजी उलझनों को बेनक़ाब किया गया है.

★ इन कहानियों में घटनाओं के साथ-साथ उस हाथ की झलक दिखाई गई है जो इन घटनाओं के पीछे काम करता है.

★ इन कहानियों में जीवन है, सत्य है, चेतना है, इसीलिये मन मोहक असर है.

★ इस संग्रह में किसान, मज़दूर, मध्यम वर्ग सब के जीवन को चित्रित करने वाली कहानियां शामिल हैं.

★ इस संग्रह पर हिन्दी के बड़े-बड़े लेखकों ने अपनी राय दी है. वह रायें भी इस संग्रह के साथ पढ़िये.

190 सफ़े की किताब, सुन्दर जिल्द, दाम केवल दो रुपया.

मिलने का पता— मैनेजर, 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

بچہ لوکی هے یا لوکا ؟ گورا هے یا کالا ؟ اِس وقت ماں کی حالت کیا هے ؟.. ...هائے رے ! اُس بڑھیا کو دن میں بھی کچھ صاف نہیں دیکھتا . اندھیرے میں کہیں بچے کو روند نہ ڈالے......

آٹھ بجے دوئی مندر کا گھنٹا زور سے بجنے لگا. مجیرا' مردنگ 'جھانجھ' شنکھ' شہنائی' ترهی سب کی آواز ایک ساتھ ملکر گونج اُٹھی . چکاچوندھ کرنے والی بجلی کی سیکڑوں بتیاں ''اروناپالم پلے کا دان'' کے اشتہار کے ساتھ مندر میں جگمگا رهی تھیں .

اروناپالم کی دھرم پتنی مندر میں مورتی کے سامنے کانسے کے دئے میں گھی ڈال رهی تھی .

گھی کے دئے اور بجلی کے بلب ایک دوسرے سے هوڑ لگائے هوئے تھے. مندر روشنی کا سمندر بن گیا تھا. اروناپالم لے مورتی کے سامنے منوتی کر رهے تھے . اور کانوں کے هیروں کو هلا هلاکر مورتی اُن کی پرارتھنا سن رهی تھی . مندر کے اندر پونجی کی قید میں جو بھگوان تھے وہ روشنی کی باڑھ میں گمسم بیٹھے تھے اور جھونپڑوں میں جو بھگوان تھے وہ اندھیرے میں چھٹپٹا رهے تھے' چلا رهے تھے......یہاں گھنٹے بج رهے تھے' گجر گونج رهے تھے. گجر کی آواز نے بھگوان کی آواز کو دبا دیا' پاتال میں ڈال دیا .

هندی کی نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

مجیب رضوی

اِس کتاب میں مجیب رضوی کی تیرہ کہانیاں شامل هیں . اِن میں سے بہت سی کہانیاں ' نیا هند ' کے پاٹھک پڑھ چکے هیں اور اُن کہانیوں کے رس سے اچھی طرح پریچت هیں .

★ اِن کہانیوں میں آج کل کی سماجی اُلجھنوں کو بےنقاب کیا گیا هے .

★ اِن کہانیوں میں گھٹناؤں کے ساتھ ساتھ اُس هاتھ کی جھلک دکھائی گئی هے جو اِن گھٹناؤں کے پیچھے کام کرتا هے .

★ اِن کہانیوں میں جیون هے' ستیہ هے' چیتنا هے' اِسی لئے من موهک اثر هے .

★ اِس سنگرہ میں کسان' مزدور' مدھیم ورگ سب کے جیون کو چترت کرنے والی کہانیاں شامل هیں.

★ اِس سنگرہ پر هندی کے بڑے بڑے لیکھکوں نے اپنی رائے دی هے. وہ رائیں بھی اِس سنگرہ کے ساتھ پڑھئے.

190 صفحے کی کتاب' سندر جلد' دام کیول دو روپیہ.

ملنے کا پتہ— منیجر' 'نیا هند'
145 مٹھی گنج' الہ آباد

"दया कीजिये सरकार! ऐसा ही समझये कि तेल दान में दिया......रात के लिये......सिर्फ चन्द घन्टों लिये......कृपा कीजिये हुजूर ...... वह बोलता गया.

"तुम से फिजूल बात करने के लिये मुझे फुर्सत नहीं. मुफ्त भी तेल नहीं मिलेगा और पैसे से भी नहीं मिलेगा. अभी मेरे कई काम पड़े हैं......जाओ" यह कह र पिल्ले चबूतरे से उठ कर चले गए.

शामीन वहीं खड़ा रहा. उसका यह पहला बच्चा था. वह अपनी बीबी को बहुत प्यार करता था. वह भी उसे बहुत चाहती थी. दोनों उसी झोंपड़ी में बैठे बैठे पैदा होने वाले बच्चे के बारे में न जाने कितनी बार चरचा कर चुके. इन दोनों से जियादा होने वाले बच्चे में शामीन की बूढ़ी मां को दिलचस्पी थी. सारी बातें उसके दिमाग़ में घूमने लगीं. लेकिन झट उसे याद पड़ गया कि वह मिट्टी का तेल लेने आया था. उसे पिल्ले का व्योहार और अपनी बेबसी भी याद आई. वह झुंझला उठा. लेकिन क्या करता? वह फिर सोचने लगा कि जिस तरह भी हो, हाथ जोड़ कर या पांव पड़ कर, वह थोड़ा सा तेल लेले.

पिल्ले घर के अन्दर गए, खा पी कर थोड़ी देर में बाहर आए. शामीन को वहीं खड़ा देख कर गुस्से में भर गए, उनका पारा चढ़ गया और बोले—

"अरे, तू ने हमको उधार तो नहीं दे रखा है. यहां से टलने का नाम भी नहीं लेता." पिल्ले ने उसे डांटा.

"आप की इजाज़त चाहिये सरकार, बस! मुनीम जी ने तेल देने का वायदा किया है......ज़रा...... दया......"

"उसकी दुकान नहीं है. वह दुकानदारी के नफ़ा नुक़सान को क्या जाने? सरकार मेरा कान पकड़ेगी तो उसका क्या जाएगा! कह दिया, तेल हरगिज़, हरगिज़ नहीं मिल सकता."

बेचारा शामीन और ज़ियादा गिड़गिड़ाने लगा, प्रार्थना करने लगा.

"यहीं खड़े रहो दिया जलने तक! मेरे पांव नहीं दुखते, समझे क्या."

अरुनापालम पिल्ले ने हाथ में पान लिया और वह चबाते एक तरफ़ चले गए. शामीन को गुस्सा भी आया और रोना भी! वह ख़ाली लालटेन लिये अपनी झोंपड़ी की तरफ़ लौट चला.

नज़दीक पड़े बिजली के 'खंभों' में से एक निकाल कर पिल्ले ने देखा उसमें लिखा था "अरुनापालम पिल्ले का दान." हरूफ़ सुन्दर थे और लाल रंग में लिखे थे.

" دیا کیجئے سرکار! ایسا ہی سمجھئے کہ تیل دان میں دیا......رات کے لئے......صرف چند گھنٹوں کے لئے ......کرپا کیجئے حضور......" وہ بولتا ہی گیا ۔

" تم سے فضول باتیں کرنے کے لئے مجھے فرصت نہیں ہے ۔ مفت بھی تیل نہیں ملے گا اور پیسے سے بھی نہیں ملے گا ۔ ابھی میرے کئی کام پڑے ہیں......جاؤ" یہ کہہ کر چبوترے سے اٹھ کر چلے گئے ۔

شامین وہیں کھڑا رہا ۔ اس کا یہ پہلا بچہ تھا ۔ وہ اپنی بیوی کو بہت پیار کرتا تھا ۔ وہ بھی اسے بہت چاہتی تھی ۔ دونوں اسی جھونپڑی میں بیٹھے بیٹھے پیدا ہونے والے بچے کے بارے میں نہ جانے کتنی بار چرچا کر چکے ہیں ۔ ان دونوں سے زیادہ ہونے والے بچے میں شامین کی بوڑھی ماں کو دلچسپی تھی ۔ ساری باتیں اس کے دماغ میں گونجنے لگیں ۔ لیکن جھٹ اسے یاد پڑ گیا کہ وہ مٹی کا تیل لینے آیا تھا ۔ اسے پلے کا بیوہار اور اپنی بےبسی بھی یاد آئی ۔ وہ جھنجھلا اٹھا ۔ لیکن کیا کرتا؟......وہ پھر سوچنے لگا کہ جس طرح بھی ہو، ہاتھ جوڑ کر یا پاؤں پڑ کر وہ تھوڑا سا تیل لے لے ۔

پلے گھر کے اندر گئے ۔ کھا پی کر تھوڑی دیر میں باہر آئے ۔

شامین کو وہیں کھڑا دیکھ کر غصے میں بھر گئے، ان کا پارہ چڑھ گیا اور بولے—

" ارے، تو نے ہم کو ادھار تو نہیں دے رکھا ہے ۔ یہاں سے ٹلنے کا نام ہی نہیں لیتا ۔ " پلے نے اسے ڈانٹا ۔

" آپ کی اجازت چاہئے سرکار، بس! منیم جی نے تیل دینے کا وعدہ کیا ہے......ذرا......دیا......"

" اس کی دوکان نہیں ہے ۔ وہ دوکانداری کے نفع نقصان کو کیا جانے؟ سرکار میرا کان پکڑے گی اس کا کیا جائے گا! کہہ دیا تیل ہرگز ہرگز نہیں مل سکتا ۔"

بےچارا شامین اور زیادہ گڑگڑانے لگا ۔ پرارتھنا کرنے لگا ۔

" یہیں کھڑے رہو دیا جلنے تک! میرے پاؤں نہیں دکھتے، سمجھے کیا ۔"

ارونا پالم پلے نے ہاتھ میں پان لیا اور وہ چباتے ایک طرف چلے گئے ۔ شامین کو غصہ بھی آیا اور رونا بھی! وہ خالی لالٹین لئے اپنی جھونپڑی کی طرف لوٹ چلا ۔

نزدیک پڑے بجلی کے 'کھمبوں' میں سے ایک نکال کر پلے نے دیکھا ۔ اس میں لکھا تھا "ارونا پالم پلے کا دان ۔" حروف سندر تھے اور لال رنگ میں لکھے تھے ۔

शामीन पिल्ले की दुकान पर गया. वह वहां पर नहीं थे. शामीन ने दुकान के मुनीम से अपनी राम कहानी सुनाई और थोड़ा सा तेल देने की प्रार्थना की. पर बेचारा मुनीम क्या करता ! उसने शामीन से हमदर्दी ज़ाहिर की पर अपने मालिक की इजाज़त के बग़ैर उसे तेल देने की हिम्मत नहीं हुई.

"मालिक के पास जा कर मांगो ! इजाज़त मिल जाए तो थोड़ा सा क्या एक बोतल तेल तुम्हें दे दूंगा." मुनीम ने कहा.

"पैसा दूंगा, मुफ़्त नहीं मांगता, फिर क्यों दौड़ाते हैं, एहसान जताते हैं, मैं भीक नहीं मांगता हूं" वह मन ही मन भुनभुनाता पिल्ले के घर की तरफ़ चल पड़ा.

दुकान पर कई लोग आए और चले गए. कुछ तो राशन कार्ड (Ration Card) भी लाए और कुछ वह भी नहीं. पर वह कौन थे ? बड़े घरों के नौकर, हाकिमों के चपरासी, पिल्ले के जाने पहचाने लोग, ज़ियादा पैसे दे कर ख़रीदने वाले ज़रूरतमंद. छोटी बड़ी 'टीनों' में तेल ले कर वह चले गए. लेकिन ज़रा से तेल के लिये शामीन खड़ा रहा, इन्तज़ार करता रहा, मिन्नत समाजत करता रहा.

अरुनापालम पिल्ले उस गांव के करोसिन तेल के ठेकेदार हैं. लड़ाई के ज़माने में भगवान ने चावल, लकड़ी कपड़ा, चीनी, लोहा, सिमेन्ट के रूप में अपने भगतों के यहां औतार लिया था और उन्हें अमीर बनाया था. उसी भगवान ने अरुनापालम पिल्ले के यहां करोसिन तेल के रूप में औतार लिया था. उस दिन पिल्ले के यहां कोई जश्न या त्योहार मनाया जा रहा था. इसीलिये ख़ास इन्तज़ाम किया गया था. वह दो मंज़िले मकान के बाहर चबूतरे पर बैठे नौकरों को हुक्म दे रहे थे. दूसरी तरफ़ बिजली के लट्टुओं पर लगने वाले कई सौ "शेड" पड़े हुए थे. हर शेड पर एक आदमी कुछ लिख रहा था. शामीन ने आ कर प्रनाम किया. उसने अपनी दर्दनाक दास्तान सुनानी शुरू की. पिल्ले ने एक तरफ़ मुंह फेर लिया.

"दर्द से मेरी घर वाली तड़प रही है. आज रात भर लालटेन जलाना है. मेहरबानी कीजिये, चार आने का तेल दे दीजिये. मैं उम्र भर आपका एहसान मानूंगा." उसने बहुत गिड़गिड़ा कर कहा और टेंट से पैसा निकाल कर पिल्ले की तरफ़ बढ़ाया.

"तुम्हारी चवन्नी किसे चाहिये ? यहां नाक में दम है......राशन कार्ड वालों के लिये कमी पड़ गई है. तुम को पाव बोतल तेल कहां से दे दूं. तेल की एक बूंद भी नहीं मिलेगी" अरुनापालम पिल्ले ने जवाब दिया.

شامین پلے کی دوکان پر گیا . وہ وہاں پر نہیں تھے . شامین نے دوکان کے منیم سے اپنی رام کہانی سنائی اور تھوڑا سا تیل دینے کی پرارتھنا کی . پر بے چارا منیم کیا کرتا . اُس نے شامین سے ہمدردی ظاہر کی اپنے مالک کی پر اجازت کے بغیر اُسے تیل دینے کی ہمت نہیں ہوئی .

" مالک کے پاس جا کر مانگو ! اجازت مل جائے تو تھوڑا سا کیا ایک بوتل تیل تمہیں دے دوں گا ." منیم نے کہا .

" پیسے دوں گا مفت نہیں مانگتا" پھر کیوں دوڑاتے ہیں' احسان جتاتے ہیں ' میں بھیک نہیں مانگتا ہوں ." وہ من ہی من بھنبھناتا پلے کے گھر کی طرف چل پڑا .

دوکان پر کئی لوگ آئے اور چلے گئے . کچھ تو کارڈ (Ration card) بھی لائے اور کچھ وہ بھی نہیں. پر وہ کون تھے ؟ بڑے گھروں کے نوکر' حاکموں کے چپراسی' پلے کے جانے پہچانے لوگ' زیادہ پیسے دیکر خریدنے والے ضرورت مند' چھوٹی بڑی ' ٹینوں ' میں تیل لے کر وہ چلے گئے. لیکن ذرا سے تیل کےلئے شامین کھڑا رہا' انتظار کرتا رہا' منت سماجت کرتا رہا .

ارونا پالم پلے اُس گاؤں کے کروسن تیل کے ٹھیکیدار ہیں . لڑائی کے زمانے میں بھگوان نے چاول' لکڑی' کپڑا' چینی' لوہا' سیمینٹ کے روپ میں اپنے بھگتوں کے یہاں اوتار لیا تھا اور اُنہیں امیر بنایا تھا . اُسی بھگوان نے ارونا پالم پلے کے یہاں کروسن تیل کے روپ میں اوتار لیا تھا . اُسی دن پلے کے یہاں کوئی جشن یا تیوہار منایا جا رہا تھا . اِسلئے خاص انتظام کیا گیا تھا . وہ دو منزلے مکان کے باہر چبوترے پر بیٹھے نوکروں کو حکم دے رہے تھے . دوسری طرف بجلی کے لٹوؤں پر لگنے والے کئی سو "شیڈ" پڑے ہوئے تھے . ہر شیڈ پر ایک آدمی کچھ لکھ رہا تھا . شامین نے آ کر پرنام کیا . اُس نے اپنی دردناک داستان سنانی شروع کی . پلے نے ایک طرف منہ پھیر لیا .

" درد سے میری گھر والی تڑپ رہی ہے . آج رات بھر لالٹین جلانا ہے . مہربانی کیجئے' چار آنے کا تیل دے دیجئے. میں عمر بھر آپ کا احسان مانوں گا." اُس نے بہت گڑگڑا کر کہا اور ٹینٹ سے پیسہ نکال کر پلے کی طرف بڑھایا .

" تمہاری چونی کسے چاہئے ؟ یہاں ناک میں دم ہے..... راشن کارڈ والوں کے لئے بھی کمی پڑ گئی ہے . تم کو پاؤ بوتل تیل کہاں سے دے دوں . تیل کی ایک بوند بھی نہیں ملے گی. " ارونا پالم پلے نے جواب دیا .

मंदिर का दीप

(श्री अखिलन)

नारियल के बाग के पास की झोंपड़ी में बाहर की तरफ़ शामीन खटिया पर बैठा था. खाट की रस्सी जर जर हो के इधर उधर लटक रही थी. उम्मीद और घबराहट की मिली जुली कैफ़ियत उसे तराज़ू के कांटे की तरह दोनों तरफ़ हिला डुला रही थी.

बुढ़िया बाहर आई. उसके सूखे बिखरे बाल हवा में लहरा रहे थे. वह बोली, "किसी न किसी तरह आज हो ही जायगा शामू, शाम होते होते बच्चा होगा, नहीं तो आज रात को ज़रूर......"

अन्दर से कभी कभी रुक रुक कर दर्द की आवाज़ सुनाई दे रही थी.

"किसी न किसी तरह थोड़ा सा मिट्टी का तेल ले आओ, रात भर दिया तो जले" बुढ़िया ने कहा.

"मिट्टी का तेल कहां से लाऊं?......रेंडी का तेल डाल कर दिया जलाओ, वह भी न हो......कहो कहीं से मूंगफली का तेल मांग लाऊं?" शामीन ने उत्तर दिया.

"ज़ोर की हवा चल रही है. दिया बुझ जाएगा. किसी के पास जाओ! घर की परिस्थिति बता कर इसी लालटेन में थोड़ा सा तेल भर लाओ. तेल देना उसके हाथ में है. घर वाली के दर्द की बात कहोगे तो वह ज़रूर आज रात भर के लिये तेल दे देगा, बुढ़िया ने सुझाव रखा.

लालटेन, जिस पर धूल जमी हुई थी बुढ़िया ने उसे साफ़ किया और टूटे कांच को किसी न किसी तरह पट्टी लगा कर लालटेन पर जोड़ा. फिर शामीन को उसे थमाया. शामीन उसे लेकर झोंपड़ी के अन्दर घुसा और मटके से कुछ पैसे लेकर गांठ में बांधता हुआ वह बाहर चला गया.

जब से मिट्टी के तेल का क़हत पड़ा था तब से शामीन की झोंपड़ी में रोशनी न होती थी. कहा जाता है कि पुराने ज़माने के जैन लोग अन्धेरा होने से पहले ही अपना सारा काम पूरा कर के लेट जाया करते थे. शामीन का घर इस मामले में जैन धर्म को अपना चुका था. ज़रूरत पड़ने पर ही मिट्टी का दिया और रेंडी का तेल काम में लाया जाता था. पर रेंडी का दिया चन्द मिनटों में ही ख़तम हो जाता था. नारियल के बाग की हवा जो आन्धी की तरह तेज़ थी छप्पर के छेदों से हो कर दीप के पास आ कर प्यार से पुचकारने लगती थी. इस भ्रम का नतीजा रात के अन्धकारी में निकलता था.

مندر کا دیپ

(شری اکهلن)

ناریل کے باغ کے پاس کی جھونپڑی میں باہر کی طرف شامین کھٹیا پر بیٹھا تھا ۔ کھاٹ کی رسی جر جر ہو کے اِدھر اُدھر لٹک رہی تھی۔ اُمید اور گھبراہٹ کی ملی جلی کیفیت اُسے ترازو کے کانٹے کی طرح دونوں طرف ہلا ڈلا رہی تھی۔

بڑھیا باہر آئی ۔ اُس کے سوکھے چھترے بال ہوا میں لہرا رہے تھے۔ وہ بولی—"کسی نہ کسی طرح آج ہو ہی جائے گا شامو، شام ہوتے ہوتے بچہ ہوگا، نہیں تو آج رات کو ضرور......"

اندر سے کبھی کبھی رک رک کر درد کی آواز سنائی دے رہی تھی۔ "کسی نہ کسی طرح تھوڑا سا مٹی کا تیل لے آؤ، رات بھر دیا تو جلے" بڑھیا نے کہا ۔

"مٹی کا تیل کہاں سے لاؤں؟......ریڑی کا تیل ڈال کے دیا جلاؤ، وہ بھی نہ ہو......کہو کہیں سے مونگ پھلی کا تیل مانگ لاؤں؟" شامین نے اُتر دیا ۔

"زور کی ہوا چل رہی ہے ۔ دیا بجھ جائے گا ۔ کسی کے پاس جاؤ! گھر کی پرستھتی بتا کر اِسی لالٹین میں تھوڑا سا تیل بھرا لو ۔ تیل دینا اُس کے ہاتھ میں ہے۔ گھر والی کے درد کی بات کہو گے تو وہ ضرور آج رات بھر کے لئے تیل دے دے گا" بڑھیا نے سجھاؤ رکھا ۔

لالٹین، جس پر دھول جمی ہوئی تھی بڑھیا نے اُسے صاف کیا اور ٹوٹے کانچ کو کسی نہ کسی طرح پٹی لگا کر جوڑا ۔ پھر شامین کو اُسے تھمایا ۔ شامین اُسے لے کر جھونپڑی کے اندر گھسا اور مٹکے سے کچھ پیسے لے کر گانٹھ میں باندھتا ہوا وہ باہر چلا گیا ۔

جب سے مٹی کے تیل کا قحط پڑا تھا تب سے شامین کی جھونپڑی میں روشنی نہ ہوتی تھی ۔ کہا جاتا ہے کہ پرانے زمانے کے جین لوگ اندھیرا ہونے کے پہلے ہی اپنا سارا کام پورا کرکے لیٹ جایا کرتے تھے ۔ شامین کا گھر اِس معاملے میں جین دھرم کو اپنا چکا تھا ۔ ضرورت پڑنے پر ہی مٹی کا دیا اور ریڑی کا تیل کام میں لیا جاتا تھا ۔ پر ریڑی کا دیا چند منٹوں میں ہی ختم ہو جاتا تھا ۔ ناریل کے باغ کی ہوا جو آندھی کی طرح تیز تھی چھپر کے چھیدوں سے ہو کر دیپ کے پاس آ کر پیار سے پچکارنے لگتی تھی ۔ اِس بھرم کا نتیجہ رات کی اندھیاری میں نکلتا تھا ۔

तुम से कहने के लिये सोचा था भूल गया. वह सारे गीत जो हरियाली वादियों और निखरी नदियों के तुम्हारे कानों को सुनाने के लिये सीखे थे मेरे होठों पर थम कर मुरदा हो गए. क्यों तुम्हारे आकांक्षा से भरे होंठ, प्रेम को जगाने वाली तुम्हारी आंखों ने इन से कहीं सुन्दर गीत, इनसे कहीं ज़ियादा दिल को खेंचने वाले राग अलापने शुरू कर दिये.

यह ठीक है कि उस रात नींद को मेरी आंखों से प्यार नहीं था. उस वक़्त से जब तुम से जुदा हुआ, उस वक़्त तक कि चांद अकेला पच्छिमी छितिज की राह पर घूमता था मेरी आंखों के पलक चलते रहे. मेरा बिस्तर मेरी अभिलाषाओं से भरे तड़पते दिल की आग से गरम था. लेकिन चारा क्या था? क्या इससे गहरे, इससे मीठे लम्बे सपने मेरी राह नहीं देख रहे थे?

इस रात मैं नहीं सोया और इस समय तक जब मुर्ग़ों की ऊंची बांग दूर से सुनाई दी और अलबुर्ज़ की चोटियां ऊषा की मुसकराहट से सफ़ेद हुईं तुम्हारे सोच में, तुम्हारे ध्यान में डूबा रहा. अमीर ख़ुसरो का शेर है :—

गर जमाले यार नबुवद बाखयालश हम खुशेम
खानए दरवेश रा शमए बह अज़ महताब नेस्त ॥

यार के दर्शन न सही मैं उसके ख़याल से ही ख़ुश हूं. फ़क़ीर के घर के लिये चांदनी से बढ़ कर किसी दीपक की रौशनी नहीं है.

आज जब नींद से आंख खुली और फिर उस गंदले मटियाले आसमान पर निगाह पड़ी देखा उसकी धुंधली रौशनी फ़ौलादी तलवार की तरह सूखी रस प्रेम हीन मेरे सर पर अपनी छाया डाल रही है. मुझे पछतावा भी नहीं है क्योंकि मुद्दत से इस आसमान को देख रहा हूं. मुझे वह एक रात याद है जो उम्मीद के तारों से चमक रही थी, जो रंगीले सपनों के रंग से रची हुई थी. वह रात जिसमें अभिलाषा और अकांक्षाओं की छाया फैली थी, वह एक रात थी जब मेरे भाग जागे थे जब भावों का बेग और तमन्नाओं का ताप मेरे हृदय को गरमा रहा था, वह रात थी जो इस बेअर्थ जीवन के फीके, बीते, सैकड़ों दिनों और रातों का बनाव सिंगार थी.

आज अगर मैं मुरदे के समान थका मांदा बिस्तर में पड़ा हूं, हरज क्या है? जीवन बिना रस के और है ही क्या. क्या वह एक घड़ी जो कल रात मैंने तुम्हारे साथ बिताई सैंकड़ों शताब्दियों से बढ़ कर न थी?

تم سے کہنے کے لئے سوچا تھا بھول گیا ۔ وہ سارے گیت جو ہریالی وادیوں اور نکھری ندیوں سے تمہارے کانوں کو سنانے کے لئے سیکھے تھے میرے ہونٹوں پر تھم کر مردہ ہو گئے ۔ کیوں تمہارے آکانکشا سے بھرے ہونٹ' پریم کو جگانے والی تمہاری آنکھوں نے ان سے کہیں سندر گیت' ان سے کہیں زیادہ دل کو کھینچنے والے راگ الاپنے شروع کر دئے ۔

یہ ٹھیک ہے کہ اس رات نیند کو میری آنکھوں سے پیار نہیں تھا ۔ اس وقت سے جب تم سے جدا ہوا' اس وقت تک کہ چاند اکیلا پچھمی چھتج کی راہ پر گھومتا تھا میری آنکھوں کے پلک چلتے رہے ۔ میرا بستر میری ابھیلاشاؤں سے بھرے تڑپتے دل کی آگ سے گرم تھا ۔ لیکن چارا کیا تھا ؟ کیا اس گہرے' اس سے میٹھے لمبے سپنے میری راہ نہیں دیکھ رہے تھے ؟

اس رات میں نہیں سویا اور اس سمے تک جب مرغوں کی اونچی بانگ دور سے سنائی دی اور البرز کی چوٹیاں اوشا کی مسکراہٹ سے سفید ہوئیں تمہارے سوچ میں' تمہارے دھیان میں ڈوبا رہا ۔ امیر خسرو کا شعر ہے :—

گر جمال یار نبودش خیالش هم خوشیم
خانۂ درویش را شمعی به از مهتاب نیست

یار کے درشن نہ سہی میں اس کے خیال سے ہی خوش ہوں ۔ فقیر کے گھر کے لئے چاندنی سے بڑھکر کسی دیپک کی روشنی نہیں ہے ۔

آج جب نیند سے آنکھ کھلی اور پھر اس گندلے مٹیالے آسمان پر نگاہ پڑی دیکھا اسکی دھندلی روشنی فولادی تلوار کی طرح سوکھی رس پریم ہین میرے سر پر اپنی چھایا ڈال رہی ہے ۔ مجھے پچھتاوا بھی نہیں ہے کیوں کہ مدت سے اس آسمان کو دیکھ رہا ہوں ۔ مجھے وہ ایک رات یاد ہے جو امید کے تاروں سے چمک رہی تھی' جو رنگیلے سپنوں کے رنگ سے رچی ہوئی تھی وہ رات جس میں ابھیلاشا اور آکانکشاؤں کی چھایا پھیلی تھی' وہ ایک رات تھی جب میرے بھاگ جاگے تھے جب بھاؤں کا ویگ اور تمناؤں کا تاپ میرے ہردے کو گرما رہا تھا' وہ رات تھی جو اس بے ارتھ جیون کے پھیکے' بیتے' سیکڑوں دنوں اور راتوں کا بناؤ سنگار تھی ۔

آج اگر میں مردے کے سمان تھکا ماندا بستر میں پڑا ہوں' حرج کیا ہے ؟ جیون بنا رس کے اور ہے ہی کیا ۔ کیا وہ ایک گھڑی جو کل رات میں نے تمہارے ساتھ بتائی سیکڑوں شتابدیوں سے بڑھکر نہ تھی ؟

है कौन भला चंगा आदमी जिसे अच्छी भूक लगती है ऐसे खाने को पसन्द करेगा. इस मामले में नये फिरंगी डाक्टर कुछ कम नहीं हैं. मैंने तो अपने ही को देखा है, जी यही चाहता है कि डाक्टर के हुकुम के ठीक खिलाफ़ काम करूं.

मेरी शिराओं को तो चाबुक की ज़रूरत है. मुझ से यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि बिलकुल सकून और शान्ति का ठंडा जीवन व्यतीत करूं. मुझे तो चैन जब पड़ता है और सुख का अनुभव उस समय होता है जब मेरी शिराओं में ज़ोर से उथल पुथल हो. नहीं तो एक मुरदा आदमी की तरह ज़िन्दगी निकम्मी और आशा हीन लगने लगती है.

कल रात ऐसी ही दशा थी. खाने को भूक नहीं थी. किताब पढ़ते पढ़ते थक गया था. इसलिये कि मेरे पास ऐसी किताब नहीं थी जो मेरी शिराओं को भड़का सकती और आदमी को उसकी फीकी ज़िन्दगी से छुटकारा दिलाती. सिनेमा या तो देखे हुए थे या मेरे लिये दिलचस्पी से खाली थे. उससे पहली रात जूए में बाज़ी लगाई थी और हारा भी खूब था और आज कुछ मन हटा सा था. सच्ची बात यह है कि फ़िज़ूल इधर उधर घूमने में मेरा जी नहीं लगता. प्रकृति के नज़ारे मुझे बहुत भले लगते हैं, लेकिन प्रकृति तो उस गोल थाली के समान है जिस का काम है आदमी की सारी भूकों की तालिका को घेरे में बन्द रखे. ग़रज़ यह है कि मुझे किसी चीज़ की ख्वाहिश नहीं थी, न कहीं जाना था और न कोई काम था. करने को कुछ होता तो शायद समय के बीतने का अनुभव न होता. आशाओं और इच्छाओं से शिराओं को सकून था. खुलासा यह कि हालत ऐसी ही थी जैसी डाक्टरों की फ़रमाइश है. निरार्थी, निर्जीव, हारा, थका, सुन्न, दुर्घटनाओं के हाथों बार बार चोटें खाते जीवन उदास और उजाड़ था.

रात का पहला पहर था, पूनो का चांद सोने के थाल के समान क्षितिज से ऊपर उठ चुका था. इसे देखते ही मेरे दिल में बेअख्तियार तुम्हारे दर्शन की अभिलाषा जागी. जैसे ही दिल में ख्याल आया तुम से मिलने चलूं सारी अकुलाहट, सारी पीड़ा और थकान दूर हो गई. तुम्हारे पास पहुंचा तो जीवन उल्लास और आनन्द से भरपूर था. जैसे मेरा दिल प्रेम से छलकता था वैसे ही तुम्हारा घर चांद के उजाले से जगमग था. तुम्हारे मुखड़े का निखार इच्छा और आशा से भरी रातों की तरह रौशन था. तुम्हारी आंखों में सुख का संदेश और मेरे दिल में अभिलाषा की तड़प लहरें लेती थी.

फिर साधारण इधर उधर की बातों में बह गया. वह सब बातें जिन्हें इच्छाओं की सुगन्ध से भरी रातों में

ہے. کون بھلا چنگا آدمی جسے اچھی بھوک لگتی ہے ایسے کھانے کو پسند کرے گا. اس معاملے میں نئے فرنگی ڈاکٹر کچھ کم نہیں ہیں. میں نے تو اپنے ہی کو دیکھا ہے، جی یہی چاہتا ہے کہ ڈاکٹر کے حکم کے ٹھیک خلاف کام کروں.

میری شراؤں کو تو چابک کی ضرورت ہے. مجھ سے یہ ہرگز نہیں ہو سکتا کہ بالکل سکون اور شانتی کا ٹھنڈا جیون ویتیت کروں. مجھے تو چین جب پڑتا ہے اور سکھ کا انوبھو اس سمے ہوتا ہے جب میری شراؤں میں زور سے اتھل پتھل ہو. نہیں تو ایک مردہ آدمی کی طرح زندگی نکمی اور آشاہین لگنے لگتی ہے.

کل رات ایسی ہی دشا تھی. کھانے کو بھوک نہیں تھی. کتاب پڑھتے پڑھتے تھک گیا تھا. اس لئے کہ میرے پاس ایسی کتاب نہیں تھی جو میری شراؤں کو بھڑکا سکتی اور آدمی کو اسکی پھیکی زندگی سے چھٹکارا دلاتی. سنیما یا تو دیکھے ہوئے تھے یا میرے لئے دلچسپی سے خالی تھے. اس سے پہلی رات خوب جوئے میں بازی لگائی تھی اور ہارا بھی خوب تھا اور آج کچھ من ہٹا سا تھا. سچی بات یہ ہے کہ فضول ادھر ادھر گھومنے میں میرا جی نہیں لگتا. پرکرتی کے نظارے مجھے بہت بھلے لگتے ہیں لیکن پرکرتی تو اس گول تھالی کے سمان ہے جس کا کام ہے آدمی کی ساری بھوکوں کی تالکا کو گھیرے میں بند رکھے. غرض یہ ہے کہ مجھے کسی چیز کی خواہش نہیں تھی، نہ کہیں جانا تھا اور نہ کوئی کام تھا. کرنے کو کچھ ہوتا تو شاید سمے کے بیتنے کا انوبھو نہ ہوتا. آشاؤں اور اچھاؤں سے شراؤں کو سکون تھا. خلاصہ یہ کہ حالت ایسی ہی تھی جیسی ڈاکٹروں کی فرمائش ہے. نرارتھی، نرجیو، ہارا، تھکا، سن، درگھٹناؤں کے ہاتھوں بار بار چوٹیں کھاتے جیون اداس اور اجاڑ تھا.

رات کا پہلا پہر تھا. پونو کا چاند سونے کے تھال کے سمان چھتج سے اوپر اٹھ چکا تھا. اسے دیکھتے ہی میرے دل میں بے اختیار تمہارے درشن کی ابھلاشا جاگی. جیسے ہی دل میں خیال آیا تم سے ملنے چلوں ساری اکلاہٹ، ساری پیڑا اور تھکن دور ہو گئی. تمہارے پاس پہنچا تو جیون اُلاس اور آنند سے بھرپور تھا. جیسے میرا دل پریم سے چھلکتا تھا ویسے ہی تمہارا گھر چاند کے اجالے سے جگمگ تھا. تمہارے مکھڑے کا نکھار اچھا اور آشا سے بھری راتوں کی طرح روشن تھا. تمہاری آنکھوں میں سکھ کا سندیس اور میرے دل میں ابھلاشا کی تڑپ لہریں لیتی تھیں.

پھر سادھارن ادھر ادھر کی باتوں میں بہہ گیا. وہ سب باتیں جنہیں اچھاؤں کی سگندھ سے بھری راتوں میں

पहेली है ? क्या झरनों के गिरते पानी की आवाज़ वातावरन को निराशा की फ़रयाद से आकुल नहीं करती ?

इनसान सिगार के धुंए न उड़ाए, शराब के प्याले न पिये, यानी सदा रूखी घटनाओं से जीवन के आतंकों का सामना करता जाए और इस नशे को जो कुछ घड़ियों के लिए दुनिया को भुला देता है और तबीयत को शांत कर देता है हाथों से खो दे ?

रात को जब दुनिया अंधेरे का मायावी भेस पहन कर जीवन की सुन्दरता को उजागर करती है आदमी को चाहिए कि पालतू मुर्ग़ी की तरह दरबे में जाकर सो जाए. क्यों ? इसलिये कि सवेरे तड़के जैसे ही आंख खुले इस बेसिर पैर के सूरज पर निगाह डाले जो हर रोज़ पूरब में छितिज के ऊपर उठ कर इस दो टांगों वाले जानवर को इस बात की इजाज़त देता है कि पिछले दिन के पापों और शरारतों के सिलसिले को फिर से जारी करे. सचमुच आदमी को बड़ी ही मेहनत की ज़रूरत है डाक्टर बनने के लिये और अक़्ल से हाथ धोने के लिये. बहुत ख़ूब! डाक्टर साहब का हुक्म है औरत ज़ात से जो दया और भाव, सरूप और करुना की निगाह से इस सृष्टि का हंसता खिलता फूल है मेल जोल मत करो. पर क्या ऐसा हो सकता है कि तुम्हें न देखूं और अगर न भी देखूं तो तुम्हारा ध्यान न करूं ? यत्न करूं की दिल में तुम्हारा चित्र ही न आए. पर फिर सपनों का क्या इलाज करूं ? जिस वक़्त तुम्हारी सुन्दर आंखें आसमान की दो खिड़कियों की तरह आदमी के सामने खुलें तो बताओ आदमी के अख़तियार में क्या रह जाता है ?

और अगर फ़र्ज़ कर लूं कि जीवन के आकाश में तुम्हारी आंखों का सितारा नहीं चमकता तो फिर यह क्यों ज़रूरी है कि ऐसे जीवन की रक्षा के लिये कष्ट और संकट उठा कर डाक्टर साहब का हुकम माना जाए ?

डाक्टर कहता है शिराओं के लिये सकून की हालत ज़रूरी है और उन सब चीज़ों से परहेज़ ज़रूरी है जो उथल पुथल और हलचल पैदा करती हैं. मगर मेरी समझ में नहीं आता कि जो चीज़ें हलचल पैदा करती हैं क्यों मुझे अच्छी लगती हैं और फिर क्या जीवन अच्छे लगने और सुख भोगने के अलावा और भी कुछ चीज़ है ?

डाक्टरों को भी क्या ज़िद है कि बीमार की तबियत के ख़िलाफ़ ही हुक्म देते हैं. मुझे अच्छी तरह याद है पुराने हकीम हमेशा बीमारों के खाने के लिये किशनीज़ (धनिया) का शोरबा और नख़ुद आब (चने का पानी) बताया करते थे और जो ज़ियादा मेहरबान हुए तो चावल और अंडे की आज्ञा दे देते थे. बीमार की बात ही क्या

پہیلی ہے ؟ کیا جھرنوں کے گرتے پانی کی آواز واتاورن کو نراشا کی فریاد سے آکول نہیں کرتی ؟

انسان سگار کے دھوئیں نہ اڑائے، شراب کے پیالے نہ پیئے، یعنی سدا روکھی گھٹناؤں سے جیون کے آتنکوں کا سامنا کرتا جائے اور اس نشہ کو جو کچھ گھڑیوں کے لئے دنیا کو بھلا دیتا ہے اور طبیعت کو شانت کردیتا ہے ہاتھوں سے کھودے ؟

رات کو جب دنیا اندھیرے کا مایاوی بھیس پہنکر جیون کی سندرتا کو اجاگر کرتی ہے آدمی کو چاہئے کہ پالتو مرغی کی طرح دربے میں جاکر سو جائے ۔ کیوں ؟ اس لئے کہ سویرے تڑکے جیسے ہی آنکھ کھلے اس بے سر پیر کے سورج پر نگاہ ڈالے جو ہر روز پورب میں چھتج کے اوپر اٹھکر اس دو ٹانگوں والے جانور کو اس بات کی اجازت دیتا ہے کہ پچھلے دن کے پاپوں اور شرارتوں کے سلسلے کو پھر سے جاری کرے ۔ سچ مچ آدمی کو بڑی ہی محنت کی ضرورت ہے، ڈاکٹر بننے کے لئے اور عقل سے ہاتھ دھونے کے لئے۔ بہت خوب! ڈاکٹر صاحب کا حکم ہے عورت ذات سے جو دیا اور بھاؤ، سروپ اور کرونا کی نگاہ سے اس سرشٹی کا ہنستا کھلتا پھول ہے میل جول مت کرو۔ پر کیا ایسا ہوسکتا ہے کہ تمہیں نہ دیکھوں اور اگر نہ بھی دیکھوں تو تمہارا دھیان نہ کروں؟ یتن کروں کہ دل میں تمہارا چترہی نہ آئے ۔ پر پھر سپنوں کا کیا علاج کروں؟ جس وقت تمہاری سندر آنکھیں آسمان کی دو کھڑکیوں کی طرح آدمی کے سامنے کھلیں تو بتاؤ آدمی کے اختیار میں کیا رہ جاتا ہے؟

اور اگر فرض کرلوں کہ جیون کے آکاش میں تمہاری آنکھوں کا ستارا نہیں چمکتا تو پھر یہ کیوں ضروری ہے کہ ایسے جیون کی رکشا کے لئے کشٹ اور سنکٹ اٹھا کر ڈاکٹر صاحب کا حکم مانا جائے ؟

ڈاکٹر کہتا ہے شراؤں کے لئے سکون کی حالت ضروری ہے اور ان سب چیزوں سے پرہیز ضروری ہے جو اتھل پتھل اور ہل چل پیدا کرتی ہیں ۔ مگر میری سمجھ میں نہیں آتا کہ جو چیزیں ہل چل پیدا کرتی ہیں کیوں مجھے اچھی لگتی ہیں اور پھر کیا جیون اچھے لگنے اور سکھ بھوگنے کے علاوہ اور بھی کچھ چیز ہے ؟

ڈاکٹروں کو بھی کیا ضد ہے کہ بیمار کی طبیعت کے خلاف ہی حکم دیتے ہیں ۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے پرانے حکیم ہمیشہ بیماروں کے کھانے کے لئے کشنیز (دھنیا) کا شوربہ اور نخود آب (چنے کا پانی) بتایا کرتے تھے اور جو زیادہ مہربان ہوئے تو چاول اور انڈے کی آگیاں دے دیتے تھے ۔ بیمار کی بات ہی کیا

ल में किसी तरह की कसमसाहट न हो, न लगाव पैदा
न आसक्ति, न दुख न शोक, न राग न द्वेष, तो ऐसी
दुरुस्ती से बीमारी क्या बुरी है ?

डाक्टर कहता है "अगर चाहते हो कि मिज़ाज तन्दु-
रुस्त रहे, तो ज़रूरी है कि शिराओं को आराम दो. अगर
शिराओं को आराम देना चाहते हो तो ऐसे काम मत करो
जिन से सोच विचार का बोझ उठाना पड़े. न तो ऐसे लेख
लिखो, न ऐसी किताबें पढ़ो जो भावों और जज़्बों को
भड़काने वाली हों, जिन से समझ पर ज़ोर पड़े. सच पूछो
तो फ़िकर करना ही नहीं चाहिये और सब ऐसी बातों से
जिन से क्लेश पैदा होता है दूर रहना चाहिये. चाहिये
क्या ? खूब खाओ, खूब सोओ, खुली हवा में घूमो,
कोशिश करो कि हंसी खुशी में दिन कटें. न ऐसे गाने
सुनो जिन में विलाप की धुन हो, न सिगरेट पियो न
शराब, औरतों से बहुत मिलो जुलो मत, न खेल खिलवाड़
करो, पहली रात सो जाओ, सवेरे तड़के उठो, दस बारह
मिनट वरज़िश करो, खाना खाने में किताब मत पढ़ो,
खाने के बाद आध घंटा आराम करो ...." खूब ! आपने
देखा डाक्टर के हुक्म से कैसे आदमी का सारा जीवन
ढोर डंगर का सा बन जाता है.

मान लिया हम जैसे रोगियों को इसी तरह रहना
चाहिये पर क्या यह मुमकिन है ?

कहां हो सकता है कि ऊंची अनुभवी किताबों को,
आत्मीयता और भाव से भरी कविता को, गहरे विचारों
और दर्शन के सिद्धांतों को आदमी न पढ़े और इन की
जगह यत्न करे चूहे बिल्ली की कहानियों, सिकन्दर-नामा,
अमीर अरसलान या हुसेन कुर्द फ़िरंगी के क़िस्सों और
मिशलज़वागो और पूलफ़वाल के नाविलों को पढ़े. लेकिन
कोई बताए तो सही कैसे हो सकता है कि आदमी बुद्धि के
पटों को बन्द कर के बैठा रहे.

आदमी चाहे भी कि साधारन मूर्खों की तरह अलहड़
हंसुआ जीवन बिताए पर वह कैसे भूल जाए कि ज़िन्दगी
दुख और कष्ट से भरी है. ज़िन्दगी की नींव खींचतान
और लड़ाई-झगड़े पर क़ायम है, जीवन का अंग अंग द्वेष,
लालसा, ज़ुल्म और अत्याचार से बना है. क्योंकर हंसते
खेलते ज़िन्दगी के दिन कटें ? माना बाज़ी लगाना अच्छा
नहीं पर यह तो कहो पहाड़ सा वक़्त कैसे कटे ? उम्र का
यह रास्ता क्योंकर तय हो ?

माना वह संगीत जिस में दुख की दास्तान भरी है
और जो आत्मा को झंझोड़ने वाले राग सुनाता है न सुना
जाए और कोशिश की जाए केवल चलते गाने, हिन्दी
ठुमरियां, फ़िल्मी फ़ौक्सट्रोट सुनें, लेकिन क्या बाजों के
परदों की थरथराहट नहीं बताती कि दुनिया दुख की

دل میں کسی طرح کی کسمساھٹ نہ ہو' نہ لگاؤ پیدا نہ
ہواونا' نہ دکھ نہ شوک' نہ راگ نہ دویش' تو ایسی
تندرستی سے بیماری کیا بری ہے ؟

ڈاکٹر کہتا ہے ''اگر چاہتے ہو کہ مزاج تندرست رہے
تو ضروری ہے کہ شراؤں کو آرام دو . اگر شراؤں کو آرام
دینا چاہتے ہو تو ایسے کام مت کرو جن سے سوچ وچار کا
بوجھ اٹھانا پڑے . نہ تو ایسے لیکھ لکھو نہ ایسی کتابیں
پڑھو جو بھاؤں اور جذبوں کو بھڑکانے والی ہوں' جن سے
سمجھ پر زور پڑے . سچ پوچھو تو فکر کرنا ہی نہیں
چاہئے اور سب ایسی باتوں سے جن سے کلیش پیدا ہوتا
ہے دور رہنا چاہئے . چاہئے کیا ؟ خوب کھاؤ' خوب سوؤ'
کھلی ہوا میں گھومو' کوشش کرو کہ ہنسی خوشی میں
دن کٹیں . نہ ایسے گانے سنو جس میں ولاپ کی دھن ہو'
نہ سگریٹ پیو نہ شراب' عورتوں سے بہت ملو جلو مت'
نہ کھیل کھلواڑ کرو' پہلی رات سو جاؤ' سویرے تڑکے اٹھو'
دس بارہ منٹ ورزش کرو' کھانا کھانے میں کتاب مت
پڑھو' کھانے کے بعد آدھ گھنٹہ آرام کرو......'' خوب ! آپ
نے دیکھا ڈاکٹر کے حکم سے کیسے آدمی کا سارا جیون ڈھور
ڈنگر کا سا بن جاتا ہے .

مان لیا ہم جیسے روگیوں کو اسی طرح رہنا چاہئے
پر کیا یہ ممکن ہے ؟

کہاں ہوسکتا ہے کہ اونچی انبھوی کتابوں کو' آتمیتا
اور بھاؤ سے بھری کویتا کو' گہرے وچاروں اور درشن کے
سدھانتوں کو آدمی نہ پڑھے اور ان کی جگہ یتن کرے چوہے
بلی کی کہانیوں' سکندرنامہ' امیرارسلان یا حسین کرد
فرنگی کے قصوں اور مشلو زواگو اور پول فوال کے ناولوں
کو پڑھے . لیکن کوئی بتائے تو سہی کیسے ہوسکتا ہے کہ
آدمی بدھی کے پٹوں کو بند کرکے بیٹھا رہے .

آدمی چاہے بھی کہ سادھارن موکھوں کی طرح الہڑ
ہنسوا جیون بتائے پر یہ کیسے بھول جائے کہ زندگی دکھ اور
کشٹ سے بھری ہے . زندگی کی نیو کھینچا تانی اور لڑائی
جھگڑے پر قائم ہے' جیون کا انگ انگ دویش' لالسا' ظلم
اور اتیاچار سے بنا ہے . کیونکر ہنستے کھیلتے زندگی کے
دن کٹیں ؟ مانا بازی لگانا اچھا نہیں پر یہ تو کہو پہاڑ
سا وقت کیسے کٹے ؟ عمر کا یہ راستہ کیونکر طے ہو ؟

مانا کہوا سنگیت جس میں دکھ کی داستان بھری
ہے اور جو آتما کو جھنجھوڑنے والے راگ سناتا ہے نہ سنا
جائے اور کوشش کی جائے کیول چلتے گانے' ہندی ٹھمریاں'
فلمی فاکس ٹراٹ سنیں' لیکن کیا باجوں کے
پردوں کی سرسراہٹ نہیں بتاتی کہ دنیا دکھ کی

शिराओं (नसों) का रोगी

एक प्रेम पत्र का अंश

[यहां मैं अली दश्ती के एक लेख के कुछ हिस्से का हिन्दी अनुवाद दे रहा हूं. यह 'फ़ितना' नाम के एक संग्रह से लिया गया है. लगभग दस साल पहले जब 'फ़ितना' पहली बार छापा हुआ था तो उस पर बहुत वाद विवाद खड़ा हो गया था. अब वह वाद-विवाद क़रीब क़रीब ख़तम हो रहा है.

इस में शक नहीं कि दश्ती आजकल की गद्य यानी नसर के ऊंचे से ऊंचे लेखकों में से हैं. उन्होंने बहुत चीज़ें लिखी हैं, जिन में से बहुत सी मशहूर रिसाले "शफ़क़े-सुर्ख़" में पहले पहले निकली थीं.

अली दश्ती की एक अलग शैली है जिस के वह उस्ताद माने जाते हैं. उनके कहने के ढंग में सादगी भी है और संगीत और लय भी हैं, बयान ऐसा जो आंखों के सामने तसवीर उतर आए और साथ ही ताज़ा ताज़ा उपमाएं यानी इस्तआरे भी. आजकल के दूसरे लेखकों की तरह उनकी आत्मा के अन्दर एक गहरा असन्तोष हिलोरें लेता है जिस से मजबूर हो कर वह अपने अन्दर देखने लगते हैं और मायूस हो जाते हैं.

आजकल की ईरानी ज़िन्दगी और ईरानी चरित्र को जिस सफ़ाई और लगभग निर्दय मंतिक़ के साथ उन्होंने दुनिया के सामने खोल कर रख दिया है उसकी वजह से लोगों ने उन पर बड़ी बड़ी टीका टिप्पनियां की हैं. लेकिन उनकी क़लम में इतनी शक्ति है कि दोस्त और दुशमन दोनों उनकी तारीफ़ और क़द्र करते हैं.—तारा चन्द]

डाक्टर साहब ठीक कहते हैं जब तक शिराओं में कसक है तब तक और सारे इलाजों से कुछ फ़ायदा नहीं. क्यों ! शिराएं ही तो बदन के सारे प्रधान अंगों को चलाती हैं.

पर इस वक़्त मेरे सामने यह सवाल कहां है कि शिराओं का इलाज करना चाहिये या नहीं. मैं मान भी लूं कि शिराओं का इलाज करना ही है तब भी यह बात तो रह ही जाती है कि हम जैसे शिराओं के रोगियों के लिये इलाज करना मुनासिब भी है या नहीं.

अगर शिराओं की तन्दुरुस्ती की यह कसौटी है कि आदमी को सब कुछ भला लगने लगे, किसी चीज़ से उलझन न हो, न किसी बात का असर हो और हो भी तो

شراؤں (نسوں) کا روگی

ایک پریم پتر کا انش

[یہاں میں علی دشتی کے ایک لیکھ کے کچھ حصے کا ہندی انوواد دے رہا ہوں . یہ 'فتنہ' نام کے ایک سنگرہ سے لیا گیا ہے . لگ بھگ دس سال پہلے جب 'فتنہ' پہلی بار شائع ہوا تھا تو اس پر بہت واد وواد کھڑا ہوگیا تھا. اب وہ واد وواد قریب قریب ختم ہو رہا ہے .

اس میں شک نہیں کہ دشتی آجکل کی گدیہ یعنی نثر کے اونچے سے اونچے لیکھکوں میں سے ہیں . انہوں نے بہت چیزیں لکھیں ہیں' جن میں سے بہت سی مشہور رسالے "شفق سرخ" میں پہلے پہلے نکلیں تھیں .

علی دشتی کی ایک الگ شیلی ہے جس کے وہ استاد مانے جاتے ہیں . ان کے کہنے کے ڈھنگ میں سادگی بھی ہے اور سنگیت اور لے بھی ہیں' بیان ایسا جو آنکھوں کے سامنے تصویر اتر آئے اور ساتھ ہی تازہ تازہ اپمائیں یعنی استعارے بھی. آجکل کے دوسرے لیکھکوں کی طرح ان کی آتما کے اندر ایک گہرا اسنتوش ہلوریں لیتا ہے جس سے مجبور ہوکر وہ اپنے اندر دیکھنے لگتے ہیں اور مایوس ہو جاتے ہیں .

آج کل کی ایرانی زندگی اور ایرانی چرتر کو جس صفائی اور لگ بھگ نردے منطق کے ساتھ انہوں نے دنیا کے سامنے کھول کر رکھدیا ہے اس کی وجہ سے لوگوں نے ان پر بڑی بڑی ٹیکا ٹپنیاں کی ہیں. لیکن ان کے قلم میں اتنی شکتی ہے کہ دوست اور دشمن دونوں ان کی تعریف اور قدر کرتے ہیں ـــــ تارا چند]

ڈاکٹر صاحب ٹھیک کہتے ہیں جب تک شراؤں میں کسک ہے تب تک اور سارے علاجوں سے کچھ فائدہ نہیں. کیوں ! شرائیں ہی تو بدن کے سارے پردھان انگوں کو چلاتی ہیں .

پر اس وقت میرے سامنے یہ سوال کہاں ہے کہ شراؤں کا علاج کرنا چاہئے یا نہیں . میں مان بھی لوں کہ شراؤں کا علاج کرنا ہی ہے تب بھی یہ بات تو رہ ہی جاتی ہے کہ ہم جیسے شراؤں کے روگیوں کے لئے علاج کرنا مناسب بھی ہے یا نہیں .

اگر شراؤں کی تندرستی کی کسوٹی ہے کہ آدمی کو سب کچھ بھلا لگنے لگے' کسی چیز سے الجھن نہ ہو' نہ کسی بات کا اثر ہو اور ہو بھی تو

ही नहीं सकता क्योंकि कांगरेस उसकी जितनी भक्त है उतनी प्रजा ही पार्टी. अगरप्रजा पार्टी वालों का भूदानछोड़ना बुरा है तो बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर का यह कहना कम बुरा नहीं कि पार्डी वालों को दूसरी जगह भूमि दे दी जाय और बम्बई की ख़ातिर पार्डी में घास उगाई जाय. इसलिये आचार्य कृपलानी का यह कहना कि 'तीन हज़ार परिवारों को घर द्वार छुड़ा कर दूसरी तहसील में भेजने के मुक़ाबले कुछ ज़मींदारों का दूसरी जगह घास पैदा करना ज़ियादा आसान है.' एकदम जायज़ और खरी बात है. कांगरेस सरकार का यह कहना कि पार्डी में तो घास पैदा की जायगी और अनाज बाहर से आयगा निहायत बेजा बात है. इसका मतलब है कि भारत में कभी ज़रूरत के लायक़ अनाज हो सकता है न वह कभी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है. दूसरे लफ़्ज़ों में, हमारे देहाती धन्दे या ग्रामोद्योग हमेशा के लिये ख़तम हो चुके और देश की आर्थिक रचना की कुंजी परदेशियों के हाथ में ही रहेगी.

पार्डी के सारे मामले पर ग़ौर करने के बाद हम इन नतीजों पर पहुंचे हैं :

(1) भारत में हाकिम और जनता के बीच भयानक खाई बढ़ती चली जा रही है.

(2) मुट्ठी भर रईसों की ख़ातिर लाखों करोड़ों का चूसना लगातार जारी है.

(3) हमारी सरकार अंगरेज़ों की खड़ी की हुई आर्थिक रचना को बदस्तूर बनाये रखना चाहती है जिसका नतीजा होगा हमारे गांवों और गांव वालों की तबाही और उन्हें विदेशी या देशी पूंजीपतियों का मोहताज बनाना.

(4) राज काजी पार्टियां जनता के हित के बजाय अपनी झूठी शान के फेर में ज़ियादा हैं.

(5) गांधी के नाम से सार्वजनिक कार्यकर्ता अभी तक लोगों को मूर्ख बनाते हैं.

(6) अपने सार्वजनिक कामों में हमें स्वार्थ घेरे रहता है और हम 'चुनीं दीगरे नेस्त' के नशे में चूर रहते हैं.

(7) हमारी जनता अन्दर से शुद्ध और साबित है और ऊंची से ऊंची क़ुर्बानी कर सकती है गोकि उसकी मौजूदा आर्थिक हालत बयान के बाहर है.

आख़िर में अपने देश के सभी पार्टी वालों से हम कहना चाहते हैं कि यह राजनीतिक छुआछूत हम कब तक जारी रखेंगे. क्या हम सब—कांगरेसी, प्रजा सोशलिस्ट, कम्यूनिस्ट, जनसंघी, 'गांधीवादी' और जो भी हों—मिल बैठ कर इस देश को बनाने की, अपने सपनों को धरती पर उतारने की सूरत नहीं पैदा कर सकते ? हमारा विश्वास है कि पैदा कर सकते हैं क्योंकि हमारे देश की जनता जानदार है और उसे ज़िन्दा रहना और बढ़ना है.

—सुरेश रामभाई

ہی نہیں اُٹھتا کیونکہ کانگریس اُسکی جتنی بھگت ہے اُتنی ہی پرجا پارٹی . اگر پرجا پارٹی والوں کا بھودان چھوڑنا برا ہے تو بمبئی کے چیف منسٹر کا یہ کہنا کم برا نہیں کہ پارڈی والوں کو دوسری جگہ بھومی دے دی جائے اور بمبئی کی خاطر پارڈی میں گھاس اُگائی جائے. اس لئے آچاریہ کرپلانی کا یہ کہنا ہے کہ 'تین ہزار پریواروں کو گھر دوار چھڑا کر دوسری تحصیل میں بھیجنے کے مقابلے کچھ زمینداروں کا دوسری جگہ گھاس پیدا کرنا زیادہ آسان ہے' ایک دم جائز اور کھری بات ہے . کانگریس سرکار کا یہ کہنا کہ پارڈی میں تو گھاس پیدا کی جائے گی اور اناج باہر سے آئے گا نہایت بیجا بات ہے . اس کا مطلب ہے کہ بھارت میں نہ کبھی ضرورت کے لائق اناج ہو سکتا ہے نہ وہ کبھی اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکتا ہے. دوسرے لفظوں میں' ہماری دیہاتی دھندھے یا گرام اُدیوگ ہمیشہ کے لئے ختم ہو چکے اور دیش کی آرتھک رچنا کی کُنجی پردیسیوں کے ہاتھ میں ہی رہے گی .

پارڈی کے سارے معاملے پر غور کرنے کے بعد ہم ان نتیجوں پر پہونچے ہیں :

(i) بھارت میں حاکم اور جنتا کے بیچ بھیانک کھائی بڑھتی چلی جا رہی ہے .

(ii) مٹھی بھر رئیسوں کی خاطر لاکھوں کروڑوں کا چوسنا لگاتار جاری ہے .

(iii) ہماری سرکار انگریزوں کی کھڑی کی ہوئی آرتھک رچنا کو بدستور بنائے رکھنا چاہتی ہے' جس کا نتیجہ ہوگا ہمارے گاؤں اور گاؤں والوں کی تباہی اور اُنہیں ودیسی یا دیسی پونجی پتیوں کا محتاج بنانا .

(iv) راج کاجی پارٹیاں جنتا کی ہت کے بجائے اپنی جھوٹی شان کے پھیر میں زیادہ ہیں .

(v) گاندھی کے نام سے سارووجنک کارکرتا ابھی تک لوگوں کو مورکھ بناتے ہیں .

(vi) اپنے سارووجنک کاموں میں ہمیں سوارتھ گھیرے رہتا ہے اور ہم ' چنیں دیگرے نیست ' کے نشے میں چور رہتے ہیں .

(vii) ہماری جنتا اندر سے شدھ اور ثابت ہے اور اونچی سے اونچی قربانی کر سکتی ہے گو کہ اسکی موجودہ آرتھک حالت بیان کے باہر ہے .

آخر میں اپنے دیش کے سب ہی پارٹی والوں سے ہم کہنا چاہتے ہیں کہ یہ راج نیتک چھواچھوت کب تک جاری رکھیں گے. کیا ہم سب—کانگریسی' پرجا سوشلسٹ' کمیونسٹ' جن سنگھی' گاندھی وادی' اور جو بھی ہوں—مل بیٹھ کر اس دیش کو بنانے کی' اپنے سپنوں کو دھرتی پر اُتارنے کی صورت نہیں پیدا کر سکتے ؟ ہمارا وشواس ہے کہ پیدا کر سکتے ہیں کیونکہ ہمارے دیش کی جنتا جاندار ہے اور اسے زندہ رہنا اور بڑھنا ہے .

—سریش رام بھائی

यह किसान की भाषा में 'सहकारी' माने चोरी या जाल-साजी. अगर प्रजापार्टी यह समझती है कि 'सहकारी' तौर पर खेती के लिये मजबूर करके वह किसानों का घाव भर देगी तो, हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि वह ग़लती पर है. इससे ज़ियादा बेहतर यह होगा, कि वह घाव खुला छोड़ दे और सूखने का मौक़ा दे. इसलिये 5,000 एकड़ की मांग ग़लत है क्योंकि यह किसान को उसकी अपनी असली ज़मीन नहीं दिलाती.

माना कि पार्टी में अनाज की कमी है. माना कि जहां घास होती है वहां ग़ल्ला हो सकता है. माना कि घास उगाई से बेरोज़गारी बढ़ी है. माना कि रईस ज़मींदारों ने ग़रीब किसानों को बेजा तौर पर दबाया है और बेदख़ल किया है, यह और इससे कहीं ज़ियादा बातें मानी जा सकती हैं. लेकिन अगर इस शैतानी चक्कर को तोड़ना था तो यह ठीक ठीक मालूम करना चाहिये था कि किस ज़मीन से कौन किसान बेदख़ल किया गया. यह जांच प्रजा पार्टी को चुपचाप ख़ुद करनी चाहिये थी. इस जानकारी के साथ, प्रजा पार्टी डंके की चोट पर किसी भी हकूमत से ललकार कर कह सकती थी कि जिसकी ज़मीन छीनी गई है उसे दे दो. हम 'हरिजन' सम्पादक की इस राय से इत्तफ़ाक़ करते हैं कि "सत्याग्रह किसी और ही ठोस चीज़ का बना होता है," पर इतना ज़रूर जोड़देंगे कि वह चीज़ नापैद नहीं है. पार्टी के लोगों में वह मौजूद है. हो सकता उसे ठीक सांचे में ढाला न जा सका हो.

पार्टी और भूदान

अब हम इस आन्दोलन को भूदान की रोशनी में देखें. आया यह आन्दोलन भूदान की आत्मा के अनुकूल है या नहीं, इसका सही जवाब विनोबा ही दे सकते हैं. हम सिर्फ़ इतना कहेंगे कि जिस तरह यह बात नामुमकिन है कि पैर भी लें और पानी में भी न जाना पड़े. उसी तरह यह बात नामुमकिन है कि भूदान की कल्पना पर एक तरफ़ से अमल हो और दूसरी तरफ़ से उसे धिक्कारा जाय. क्योंकि भूदान ख़ुद ही सत्याग्रह है. अगर भूदान सत्याग्रह नहीं है तो हमें इससे कोई सरोकार नहीं और अगर भूदान नाकामयाब होता है तो सत्याग्रह भी नाकामयाब. लेकिन सत्याग्रह की तरह भूदान भी नाकामयाब हो ही नहीं सकता. यह ज़रूर है कि उस पर अमल करने में हम ग़लती कर जायें.

लेकिन जैसा हमने ऊपर कहा है कि प्रजा पार्टी को कोई यह उपदेश नहीं दे सकता कि वह भूदान की राह पर चले. कम से कम कांगरेस वाले तो यह उपदेश नहीं दे सकते. प्रजा पार्टी को किसी भी आन्दोलन के उठाने और चलाने का पूरा अधिकार है. ऐसी हालत में भूदान का नाम लेने का सवाल

ایک کسان کی بھاشا میں " سہکاری " معنی چوری یا جعل سازی. اگر پرجا پارٹی یہ سمجھتی ہے کہ "سہکاری" طور پر کھیتی کے لئے مجبور کرکے وہ کسانوں کا گھاؤ بھر دے گی تو ہم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ غلطی پر ہے. اس سے زیادہ بہتر یہ ہوگا کہ وہ گھاؤ کو کھلا چھوڑ دے اور سوکھنے کا موقع دے. اس لئے 5'000 ایکڑ کی مانگ غلط ہے کیونکہ یہ کسان کو اسکی اپنی اصلی زمین نہیں دلاتی.

مانا کہ پارٹی اناج کی کمی ہے. مانا کہ جہاں گھاس ہوتی ہے وہاں غلہ ہو سکتا ہے. مانا کہ گھاس اگانے سے بیروزگاری بڑھی ہے. مانا کہ رئیس زمینداروں نے غریب کسانوں کو بیجا طور پر دبایا ہے اور بے دخل کیا ہے. یہ اور اس سے کہیں زیادہ باتیں مانی جا سکتی ہیں. لیکن اگر اس شیطانی چکر کو توڑنا تھا تو یہ ٹھیک ٹھیک معلوم کرنا چاہئے تھا کہ کس زمین سے کون کسان بے دخل کیا گیا. یہ جانچ پرجا پارٹی کو چپ چاپ خود کرنی چاہئے تھی. اس جانکاری کے ساتھ پرجا پارٹی ڈنکے کے چوٹ پر کسی بھی حکومت سے للکار کر کہہ سکتی تھی کہ جس کی زمین چھینی گئی ہے اسے دے دو. ہم 'ہریجن' سمپادک کی اس رائے سے اتفاق کرتے ہیں کہ "ستیہ گرہ کسی اور ہی ٹھوس چیز کا بنا ہوتا ہے." پر اتنا ضرور جوڑ دینگے کہ وہ چیز ناپید نہیں ہے. پارٹی کے لوگوں میں وہ موجود ہے. ہو سکتا ہے اسے ٹھیک سانچے میں ڈھالا نہ جا سکا ہو.

پارٹی اور بھودان.

اب ہم اس آندولن کو بھودان کی روشنی میں دیکھیں. آیا یہ آندولن بھودان کی آتما کے انکول ہے یا نہیں. اس کا صحیح جواب ونوبا ہی دے سکتے ہیں. ہم صرف اتنا کہیں گے کہ جس طرح یہ بات ناممکن ہے کہ پیر بھی لیں اور پانی میں بھی نہ جانا پڑے. اسی طرح یہ بات ناممکن ہے کہ بھودان کی کلپنا پر ایک طرف سے عمل ہو اور دوسری طرف سے اسے دھتکارا جائے. کیونکہ بھودان خود ہی ستیہ گرہ ہے. اگر بھودان ستیہ گرہ نہیں ہے تو ہمیں اس سے کوئی سروکار نہیں اور اگر بھودان ناکامیاب ہوتا ہے تو ستیہ گرہ بھی ناکامیاب. لیکن ستیہ گرہ کی طرح بھودان بھی ناکامیاب ہو ہی نہیں سکتا. یہ ضرور ہے کہ اس پر عمل کرنے میں ہم غلطی کر جائیں.

لیکن جیسا ہم نے اوپر کہا ہے کہ پرجا پارٹی کو کوئی یہ اپدیش نہیں دے سکتا کہ وہ بھودان کی راہ پر چلے. کم سے کم کانگریس والے تو یہ اپدیش نہیں دے سکتے. پرجا پارٹی کو کسی بھی آندولن کے اٹھانے اور چلانے کا پورا ادھیکار ہے. ایسی حالت میں بھودان کا نام لینے کا سوال

तादाद में ग़लत अगुवाई में या सही अगुवाई में अपने गुस्से को ज़ाहिर किया है उस पर सहज में विश्वास कोई मुश्किल से ही करेगा. लेकिन यह घटना हमें बताती है जनता की छिपी हुई शक्ति की सम्भावनाओं को. उसके आगे सर झुक जाता है. आज भले इस जनता को कोई राज सत्ता के बल से दबा ले या राजनीति के नाम पर बहका ले, लेकिन कल नहीं तो परसों यह जनता अपना हक़ हासिल करके रहेगी.

दोनों मांगें

अब हम दोनों मांगों पर विचार करेंगे. जहां तक पहली मांग—जांच के लिये कमीशन बैठे—का सवाल है वह ठीक और सच्ची है चाहे सरकार यह विश्वास करती हो कि इस इलाक़े में भूमिहीन मज़दूरों की जो हालत है उसे सरकार खूब जानती है, तब भी दोबारा जांच होने से कोई नुक़सान नहीं होने वाला है न मामला बिगड़ने का डर है. भले ही जांच-कमीशन दो रोज़ में रिपोर्ट दे दे कि 'हमें जानने के लायक़ कोई चीज़ नहीं मिली और सब चीज़ ठीक है, तो इस में न सरकार को कुछ घाटा होगा न उसकी शान पर बट्टा लगेगा. जब हज़ारों-लाखों रुपया सरकार तमाम कमीशनों पर खर्च करती है जिनकी रिपोर्टों को केवल दीमक चाटा करते हैं तो महज़ इस छोटी सी जांच को क्यों इनकार करती है? सिर्फ़ अधिकार का मोह दीखता है.

दूसरी मांग है कि पांच हज़ार एकड़ ज़मीन सरकार लेकर किसानों को दे. नम्रता के साथ हम कहेंगे कि यह हमें ग़लत मालूम पड़ती है. ज़रा देर को मान लें कि यह बात मंज़ूर कर ली जाती है तो हम पूछते हैं कि 54,000 एकड़ में से कौन से 5000 या 5 एकड़ दोबारा बंटना चाहिये, कौन बांटेगा और किसको? इन दो सूरतों को जाने दें जब ज़मींदार खुद ही राज़ी से ज़मीन दे दे या सरकार ज़बरदस्ती छीन ले. मामूली तौर से, 'क' की ज़मीन 'ख' को क्यों दी जाये? मान लीजिये 'क' उसका नाजायज़ मालिक है तब भी 'ख' को वह कैसे दी जाये जब तक यह न मालूम हो कि वह 'ख' की ही है? प्रजा-पार्टी ने यह तकलीफ़ नहीं की कि ज़मीन के किसी टुकड़े का—जिस पर अब ज़मींदार जम गया है—असली मालिक का पता चलाये. यूं ही किसी को दे देना कोई माने नहीं रखता. यह ज़रूर है कि ग़रीब 'ख' के पास जो अपनी ज़मीन थी वह जाती रही. लेकिन इस धकापेल में यह कोई नहीं जानता कि उसकी ज़मीन कहां है, कौन सी है. उसे या अपनी ही ज़मीन दिखाने की हामी कोई नहीं भरता.

यहां हम यह भी कहेंगे कि बिना देखे-समझे 'सहकारी' क़िस्म के ढंग पर ज़मीन बांटने के हम क़तई खिलाफ़ हैं.

تعداد میں غلط اگوائی میں یا صحیح اگوائی میں اپنے غصے کو ظاہر کیا ہے اس پر سہج میں وشواس کوئی مشکل سے ہی کرے گا. لیکن یہ گھٹنا ہمیں بتاتی ہے جنتا کی چھپی ہوئی شکتی کی سمبھاوناؤں کو. اس کے آگے سر جھک جاتا ہے. آج بھلے اس جنتا کو کوئی راج سَتّا کے بل سے دبا لے یا راجنیتی کے نام پر بہکا لے، لیکن کل نہیں تو پرسوں یہ جنتا اپنا حق حاصل کر کے رہے گی.

دونوں مانگیں

اب ہم دونوں مانگوں پر وچار کریں گے. جہاں تک پہلی—مانگ جانچ کے لئے کمیشن بیٹھے—کا سوال ہے وہ ٹھیک اور سچی ہے چاہے سرکار یہ وشواس کرتی ہو کہ اس علاقے میں بھوم ہین مزدوروں کی جو حالت ہے اسے سرکار خوب جانتی ہے، تب بھی دو بارہ جانچ ہونے سے بھی کوئی نقصان نہیں ہونے والا ہے، نہ معاملہ بگڑنے کا ڈر ہے. بھلے ہی جانچ کمیشن دو روز میں رپورٹ دے دے کہ ہمیں جاننے کے لائق کوئی چیز نہیں ملی اور سب چیز ٹھیک ہے، تو اس میں نہ سرکار کو کچھ گھاٹا ہوگا، نہ اس کی شان پر بٹا لگے گا. جب ہزاروں لاکھوں روپیہ سرکار تمام کمیشنوں پر خرچ کرتی ہے جن کی رپورٹوں کو کیول دیمک چاٹا کرتے ہیں تو اس محض چھوٹی سی جانچ کو کیوں انکار کرتی ہے؟ صرف ادھیکار کا موہ دکھتا ہے.

دوسری مانگ ہے کہ پانچ ہزار ایکڑ زمین سرکار لے کر کسانوں کو دے. نمرتا کے ساتھ ہم کہیں گے کہ یہ ہمیں غلط معلوم پڑتی ہے. ذرا دیر کو مان لیں کہ یہ بات منظور کر لی جاتی ہے تو ہم پوچھتے ہیں کہ 54‘000 ایکڑ میں سے کون سے 5‘000 یا پانچ ایکڑ دوبارہ بٹنا چاہئے، کون بانٹے گا اور کس کو. ان دو صورتوں کو جانے دیں جب زمیندار خود ہی راضی سے زمین دے دے یا سرکار زبردستی چھین لے. معمولی طور سے ’ک‘ کی زمین ’کھ‘ کو کیوں دی جائے؟ مان لیجئے ’ک‘ اس کا ناجائز مالک ہے تب بھی ’کھ‘ کو وہ کیسے دیا جائے جب تک یہ نہ معلوم ہو کہ وہ ’کھ‘ کی ہی ہے؟ پرجا پارٹی نے یہ تکلیف نہیں کی کہ زمین کے کسی ٹکڑے کے—جس پر اب زمیندار جم گیا ہے—اصلی مالک کا پتہ چلائے. یونہی کسی کو دے دینا کوئی معنی نہیں رکھتا. یہ ضرور ہے کہ غریب ’کھ‘ کے پاس جو اپنی زمین تھی وہ جاتی رہی. لیکن اس دھکا پیل میں یہ کوئی نہیں جانتا کہ اس کی زمین کہاں ہے، کون سی ہے. اسے اب اپنی ہی زمین دلانے کی حامی کوئی نہیں بھرتا.

یہاں ہم یہ بھی کہیں گے کہ بنا دیکھے سمجھے سہکاری قسم کے ڈھنگ پر زمین بانٹنے کے ہم قطعی خلاف ہیں

के लिये जगह नहीं है. इसलिये इस देश में हर सत्याग्रह दुराग्रह क़रार दे दिया जायगा. शायद यही मत बम्बई सरकार का भी है. हो सकता है कि जब कोई विनोबा जैसी हस्ती सत्याग्रह करे तो हमारी सरकारें शुरू में शायद उसे भी "दुराग्रह" कहें, लेकिन जब उसके पीछे लोक शक्ति का बल देखें तो मुमकिन है सोचने लग जायं. ऐसा लगता है कि "अहिंसा" की दुहाई देने पर भी हमारी सरकारें अहिंसक क़दम की क़द्र नहीं करतीं. मालूम होता है कि हिंसक क़दम का असर उन पर ज़ियादा पड़ता है.

दुख की बात है कि क़ानूनी, और अहिंसात्मक रास्तों की गुंजायश दिन पर दिन कम होती जा रही है. अपनी असेम्बलियों की कारवाइयों को देखें तो पता चलता है कि स्पीकर साहब हर टेढ़े मामले को 'Out of Order' (बहस बाहर) क़रार देकर गाड़ी चलना नामुमकिन कर देते हैं. जब तादाद के बल पर सब काम चलता है तो विरोधी की नेक से नेक बात भी निकम्मी मानी जाती है. हम हिंसक प्रदर्शनों या मार पीट के ढंग की ताईद नहीं कर रहे हैं, बल्कि सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि आम तौर से जनता की आवाज़ सरकार के कानों तक नहीं पहुंचती, ठीक उसी तरह जैसे कि विदेशी मोटर में बैठे विदेशी साहब को तो राष्ट्रपति भवन में जाना आसान है लेकिन एक देहाती को बैलगाड़ी में बैठ कर राष्ट्रपति भवन में घुसना मना है.

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की निगाह से देखें तो उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं. जीत हो गई तो सोने में सुहागा, जीत न हुई तो नेताओं को पुराने कांगरेस वालों की तरह वाह-वाही तो मिलेगी ही. जहां तक नैतिक सवाल है उस में मौजूदा कांगरेस और प्रजा पार्टी क़रीब क़रीब एक से हैं. दोनों को ही नैतिकता में दिखावे का विश्वास है, दोनों ही आजकल के ग़लत ढांचे को बनाये रखते हुए सत्ता चाहते हैं. पर आज शासक होने के नाते कांगरेस को धन-बल क़ानून-बल, फ़ौज-बल सभी हासिल हैं. प्रजापार्टी शासितों में से है जिससे उसे कुछ जन-बल हासिल है पूरा नहीं. पूरा इसलिये नहीं क्योंकि सब पार्टियों में से वह भी एक पारटी है. सत्य और अहिंसा की कसौटी पर हम प्रजा पार्टी को कसें तो कांगरेस की तरह वह भी पूरी नहीं उतरती लेकिन इस पर फिर भी राजनीतिक दल पार्टी को शिकायत नहीं हो सकती.

जनता की निगाह से देखें तो दिल पसीज उठता है. जब हमने अख़बार में पढ़ा कि आदिवासी औरतों को जुरमाने की सज़ाएं दी गईं और जुरमाने के एवज़ में उनका घर द्वार क़ुर्क़ करने की आज्ञा तो हम सोचने लगे कि हम सन 1953 में रह रहे हैं या सौ दो सौ बरस पहले के ज़माने में. जिस कमाल के साथ, जिस शक्ति के साथ, जिस निष्ठा के साथ, पार्टी वालों ने हज़ारों की

کے لئے جگہ نہیں ہے. اس لئے اس دیش میں ہر ستیہ گرہ دراگرہ قرار دے دیا جائے گا . شاید یہی مت بمبئی سرکار کا بھی ہے . ہو سکتا ہے کہ جب کوئی ونوبا جیسی ہستی ستیہ گرہ کرے تو ہماری سرکاریں شروع میں شاید اسے بھی " دراگرہ" کہیں' لیکن جب اس کے پیچھے لوک شکتی کا بل دیکھیں تو ممکن ہے سوچنے لگ جائیں . ایسا لگتا ہے کہ " اہنسا " کی دہائی دینے پر بھی ہماری سرکاریں اہنسک قدم کی قدر نہیں کرتیں. معلوم ہوتا ہے کہ ہنسک قدم کا اثر ان پر زیادہ پڑتا ہے .

دکھ کی بات ہے کہ قانونی اور اہنساتمک راستوں کی گنجائش دن پر دن کم ہوتی جا رہی ہے . اپنی اسمبلیوں کی کاروائیوں کو دیکھیں تو پتا چلتا ہے کہ اسپیکر صاحب ہر ٹیڑھے معاملے کو 'Out of order' (بحث کے باہر) قرار دیکر گاڑی چلنا ناممکن کر دیتے ہیں. جب تعداد کے بل پر سب کام چلتا ہے تو ورودھی کی نیک سے نیک بات بھی نکمی مانی جاتی ہے . ہم ہنسک پردرشنوں یا مار پیٹ کے ڈھنگ کی تائید نہیں کر رہے ہیں بلکہ صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ عام طور سے جنتا کی آواز سرکار کے کانوں تک نہیں پہنچتی' ٹھیک اسی طرح جیسے کہ ودیشی موٹر میں بیٹھے ودیشی صاحب کو تو راشٹرپتی بھون میں جانا آسان ہے لیکن ایک دیہاتی کو بیل گاڑی میں بیٹھکر راشٹر پتی بھون گھسنا منع ہے.

پرجا سوشلسٹ پارٹی کی نگاہ سے دیکھیں تو اس کے دونوں ہاتھوں میں لڈو ہیں . جیت ہو گئی تو سونے میں سہاگا" جیت نہ ہوئی تو نیتاؤں کو پرانے کانگریس والوں کی طرح واہ واہی تو ملے گی ہی. جہاں تک نیتک سوال ہے اس میں موجودہ کانگریس اور پرجا پارٹی قریب قریب ایک سے ہیں . دونوں کو ہی نیتکتا میں دکھاوے کا وشواس ہے' دونوں ہی آج کل کے غلط ڈھانچے کو بنائے رکھتے ہوئے ستا چاہتے ہیں . پر آج شاسک ہونے کے ناتے کانگریس دھن' بل' قانون بل' فوج بل سبھی حاصل ہیں. پرجا پارٹی شاستوں میں سے ہے جس سے اسے کچھ جن بل حاصل ہے پورا نہیں . پورا اسی لئے نہیں کیونکہ سب پارٹیوں میں سے وہ بھی ایک پارٹی ہے . ستیہ اور اہنسا کی کسوٹی پر ہم پرجا پارٹی کو کسیں تو کانگریس کی طرح وہ بھی پوری نہیں اترتی لیکن اس پر پھر بھی راج نیتک دل پارٹی کو شکایت نہیں ہوسکتی.

جنتا کی نگاہ سے دیکھیں تو دل پسیج اٹھتا ہے . جب ہم نے اخبار میں پڑھا کہ آدی واسی عورتوں کو جرمانے کی سزائیں دی گئیں اور جرمانے کے عوض میں انکا گھر دوار قرق کرنے کی آگیا تو ہم سوچنے لگے کہ ہم سن 1953 میں رہ رہے ہیں یا سو دو سو برس پہلے کے زمانے میں . جس کمال کے ساتھ' جس شکتی کے ساتھ جس نشٹھا کے ساتھ پارٹی والوں نے ہزاروں کی

दोनों पक्ष

आचार्य कृपलानी ने इस सत्याग्रह को सही और ठीक ठीक बताया है, उनका कहना है :—

"जहां तक मैंने इस आन्दोलन को देखा है मैं कहूंगा कि मांगें नरम और सच्ची हैं. इस बात की पूरी कोशिश की गई थी कि सत्याग्रह के बिना मामला तय हो जाय. मैं यह भी जानता हूं कि सत्याग्रह शुरू करने से पहले ज़मीदार और सरकार दोनों को काफ़ी नोटिस दे दिया गया था. यह सत्याग्रह अहिंसक ढंग से चल रहा है. बारदोली का सत्याग्रह इसके मुक़ाबले ज़ियादा अहिंसक नहीं था."

श्री अशोक मेहता और बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर के बीच बहुत चिट्ठी पत्री हुई जिस से सरकारी पक्ष सामने आ जाता है. चीफ़ मिनिस्टर ने इस आन्दोलन को "दुराग्रह" कहा है. वह दो बातें कहते हैं :—

(i) मुझे यह देख कर खुशी होगी कि पार्डी के बेज़मीन वाले किसान पार्डी छोड़ कर धर्मपुर की तहसील में चले जायं और वहां जो ज़मीन है उस पर बसें.

(ii) फ़सल बन्दी की कोई भी योजना क्यों न की जाय पार्डी को घास पैदा करने की जगह बनाए रखना ज़रूरी है और पार्डी में अनाज की जो कमी पड़े उसे जैसे अब तक होता रहा है, बाहर से मंगा कर पूरा किया जाय. पिछले पांच बरस में पार्डी में अनाज की जो कुछ कमी रही उसे दूसरे प्रान्तों या विदेशों से मंगा कर पूरा किया गया. पर बम्बई शहर में जो चारे या घास की ज़रूरत है उसे इस तरह से पूरा नहीं किया जा सकता ! बम्बई के जानवरों के लिये तो घास का इन्तज़ाम होना ही चाहिये.

'हरिजन' के सम्पादक श्री मगन भाई देसाई ने भी इस आन्दोलन को ग़लत कहा है. उन्हें हैरत है कि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता जो अब तक भूदान आन्दोलन में लगे थे वह इस तरफ़ क्यों बहक गए. मगन भाई का मानना है कि यह आन्दोलन भूदान से मेल नहीं खाता और सच्चे सत्याग्रह की ज़रूरी शर्तें भी पूरी नहीं करता. उनकी सिफ़ारिश है कि पार्डी के कार्यकर्ता विश्वास और श्रद्धा के साथ भूदान का काम ही करते रहें.

आन्दोलन पर निगाह

अब हम इस आन्दोलन को तीन तरह से देखने की कोशिश करेंगे :—

(i) सरकार यानी कांगरेस पार्टी की निगाह से,

(ii) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की निगाह से,

(iii) जनता की निगाह से.

सरकार की निगाह से देखें तो यू. पी. के चीफ़ मिनिस्टर पंडित पंत कह चुके हैं कि प्रजातंत्र में सत्याग्रह

دونوں پکش

آچاریہ کرپلانی نے اس ستیہ گرہ کو صحیح اور ٹھیک ٹھیک بتایا ہے ۔ ان کا کہنا ہے :—

"جہاں تک میں نے اس آندولن کو دیکھا ہے میں کہونگا کہ مانگیں نرم اور سچی ہیں۔ اس بات کی پوری کوشش کی گئی تھی کہ ستیہ گرہ کے بنا معاملہ طے ہو جائے۔ میں یہ بھی جانتا ہوں کہ ستیہ گرہ شروع کرنے سے پہلے زمیندار اور سرکار دونوں کو کافی نوٹس دے دیا گیا تھا ۔ یہ ستیہ گرہ اہنسک ڈھنگ سے چل رہا ہے۔ باردولی کا ستیہ گرہ اس کے مقابلے زیادہ اہنسک نہیں تھا ."

شری اشوک مہتا اور بمبئی کے چیف منسٹر کے بیچ بہت چٹھی پتری ہوئی جس سے سرکاری پکش سامنے آجاتا ہے۔ چیف منسٹر نے اس آندولن کو "دراگرہ" کہا ہے۔ وہ دو باتیں کہتے ہیں :—

(i) مجھے یہ دیکھکر خوشی ہوگی کہ پارڈی کے بےزمین والے کسان پارڈی چھوڑ کر دھرمپور کی تحصیل میں چلے جائیں اور وہاں جو زمین ہے اس پر بسیں ۔

(ii) فصل بندی کی کوئی بھی یوجنا کیوں نہ کی جائے پارڈی کو گھاس پیدا کرنے کی جگہ بنائے رکھنا ضروری ہے۔ اور پارڈی میں اناج کی جو کمی پڑے اسے جیسے اب تک ہوتا رہا ہے' باہر سے منگا کر پورا کیا جائے ۔ پچھلے پانچ برس میں پارڈی میں اناج کی جو کچھ کمی رہی اسے دوسرے پرانتوں یا ودیشوں سے منگاکر پورا کیا گیا۔ پر بمبئی شہر میں جو چارے یا گھاس کی ضرورت ہے اسے اس طرح سے پورا نہیں کیا جاسکتا ! بمبئی کے جانوروں کے لئے تو گھاس کا انتظام ہونا ہی چاہئے ۔

'ہریجن' کے سمپادک ۔ شری مگن بھائی دیسائی نے اس آندولن کو غلط کہا ہے۔ انہیں حیرت ہے کہ پرجاسوشلسٹ پارٹی کے کارکرتا جو اب تک بھودان آندولن میں لگے تھے وہ اس طرف کیوں بہک گئے۔ مگن بھائی کا ماننا ہے کہ یہ آندولن بھودان سے میل نہیں کھاتا اور سچے ستیہ گرہ کی ضروری شرطیں بھی پوری نہیں کرتا ۔ ان کی سفارش ہے کہ پارڈی کے کارکرتا وشواس اور شردھا کے ساتھ بھودان کا کام ہی کرتے رہیں ۔

آندولن پر نگاہ

اب ہم اس آندولن کو تین طرح سے دیکھنے کی کوشش کرینگے :—

(i) سرکار یعنی کانگریس پارٹی کی نگاہ سے ۔

(ii) پرجاسوشلسٹ پارٹی کی نگاہ سے ۔

(iii) جنتا کی نگاہ سے ۔

سرکار کی نگاہ سے دیکھیں تو یو ۔ پی. کے چیف منسٹر پنڈت پنتھ کہہ چکے ہیں کہ پرجاتنتر میں ستیہ گرہ

हैं उन्हें वापस मिल जायं.

(ii) कम से कम 5,000 एकड़ ज़मीन सरकार खुद ले ले और अनाज की फ़सल बोने के लिये इसी साल किसानों को दे दे.

जुलाई के महीने में एक कानफ़रेन्स में किसान पंचायत ने सरकार को सूचना दी कि अगर यह मांगें पूरी नहीं की गईं तो किसानों को मजबूर हो कर शांतिमय सत्याग्रह चलाना होगा. 21 अगस्त को एक चिट्ठी में श्री अशोक मेहता ने बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर श्री मोरार जी देसाई को इस फ़ैसले की सूचना दे दी. 31 अगस्त को इसके जवाब में चीफ़ मिनिस्टर ने उनको लिखा कि जांच कमीशन बिठाना न मैं ज़रूरी समझता हूं न मुनासिब और सरकार जहां तक हो सकता है कोशिश कर रही है कि आदिवासियों को ज़ियादा ज़मीन मिल जाय. उन्होंने यह भी कहा कि इस सत्याग्रह से मक़सद हासिल नहीं होगा और "इसे सत्याग्रह कह भी नहीं सकते."

जो होने वाला था सो हो कर रहा. सत्याग्रह छेड़ दिया गया. पहली सितम्बर को एक हज़ार से ज़ियादा लोगों ने सत्याग्रह शुरू किया. इनमें 990 स्वयं सेवकों के अलावा 11 नेता थे और बारहवें श्री अशोक मेहता. हाथ में हंसिया फावड़ा ले कर वह लोग एक ऐसे खेत की तरफ़ बढ़ते चले आए जिसे ज़मींदार ने ज़बरदस्ती किसान से छीन लिया था और जिसे यह लोग जोतना चाहते थे. उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया, गिरफ़्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया. इसके बाद आन्दोलन बराबर बढ़ता गया.

स्वंय सेवकों पर मुक़दमे चल रहे हैं और उन्हें सज़ाएं दी जा रही हैं. श्री अशोक मेहता पर भी मुक़दमा चलाया गया और उन्हें सोलह महीने की क़ैद का दन्ड दिया गया. अख़बार की ख़बर है कि 226 आदिवासी औरतों को पचीस पचीस रुपये जुर्माने की सज़ा दी गई. जुर्माना न देने पर कोई दूसरा दन्ड देने के बजाय यह कहा गया है कि जुर्माना वसूल करने के लिये उनका घर द्वार और माल सामान क़ुर्क कर दिया जाय.

पार्टी का यह आन्दोलन और तेज़ होता जा रहा है. क्या मर्द क्या औरतें, ज़ियादा से ज़ियादा तादाद में शामिल हो रहे हैं और शान्ति के साथ इस अहिंसात्मक आन्दोलन में हिस्सा ले रहे हैं. इस पूरी तहरीक में पार्टी के अनपढ़ किसान शुरू से शान्तिमय और अहिंसक रहे. पुलिस के किसी सिपाही या ज़मींदार या ज़मींदार के आदमी के ऊपर उंगली तक नहीं उठाई गई. हाल की रिपोर्ट है कि घास की ज़मीन में काम करने वाले मज़दूर भी हड़ताल यानी असहयोग करेंगे और इस आन्दोलन में हिस्सा लेंगे.

میں انہیں واپس مل جائیں۔

(ii) کم سے کم 5,000 ایکڑ زمین سرکار خود لے لے اور اناج کی فصل بونے کے لئے اسی سال کسانوں کو دیدے۔

جولائی کے مہینے میں ایک کانفرنس میں کسان پنچایت نے سرکار کو سوچنا دی کہ اگر یہ مانگیں پوری نہیں کی گئیں تو کسانوں کو مجبور ہوکر شانتی سے ستیاگرہ چلانا ہوگا۔ 21 اگست کو ایک چٹھی میں بھی اشوک مہتا نے بمبئی کے چیف منسٹر شری مورارجی دیسائی کو اس فیصلے کی سوچنا دیدی۔ 31 اگست کو اس کے جواب میں چیف منسٹر نے ان کو لکھا کہ جانچ کمیشن بٹھانا نہ میں ضروری سمجھتا ہوں نہ مناسب اور سرکار جہاں تک ہوسکتا ہے کوشش کر رہی ہے کہ آدیواسیوں کو زیادہ زمین مل جائے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ اس ستیہ گرہ سے مقصد حاصل نہیں ہوگا "اور اسے ستیہ گرہ کہہ بھی نہیں سکتے۔"

جو ہونے والا تھا سو ہوکر رہا۔ ستیہ گرہ چھیڑ دیا گیا۔ پہلی ستمبر کو ایک ہزار سے زیادہ لوگوں نے ستیہ گرہ شروع کیا۔ ان میں 990 سویم سیوکوں کے علاوہ 11 نیتا تھے اور بارھویں شری اشوک مہتا۔ ہاتھ میں ہنسیا پھاوڑا لیکر وہ لوگ ایک ایسے کھیت کی طرف بڑھتے چلے آئے جسے زمیندار نے زبردستی کسان سے چھین لیا تھا اور جسے یہ لوگ جوتنا چاہتے تھے۔ انہیں ایسا کرنے سے روک دیا گیا، گرفتار کر لیا گیا اور جیل بھیج دیا گیا۔ اس کے بعد آندولن برابر بڑھتا گیا۔

سویم سیوکوں پر مقدمے چل رہے ہیں اور انہیں سزائیں دی جا رہی ہیں۔ شری اشوک مہتا پر بھی مقدمہ چلایا گیا اور انہیں سولہ مہینے کی قید کا ڈنڈ دیا گیا۔ اخبار کی خبر ہے کہ 226 آدی واسی عورتوں کو پچیس پچیس روپئے جرمانے کی سزا دی گئی۔ جرمانہ نہ دینے پر کوئی دوسرا ڈنڈ دینے کے بجائے یہ کہا گیا ہے کہ جرمانہ وصول کرنے کے لئے ان کا گھربار اور مال سامان قرق کردیا جائے۔

پارٹی کا یہ آندولن اور تیز ہوتا جا رہا ہے۔ کیا مرد کیا عورتیں، زیادہ سے زیادہ تعداد میں شامل ہورہے ہیں اور شانتی کے ساتھ اس اہنساتمک آندولن میں حصہ لے رہے ہیں۔ اس پوری تحریک میں پارٹی کے ان پڑھ کسان شروع سے شانتی مے اور اہنسک رہے۔ پولیس کے کسی سپاہی یا زمیندار یا زمیندار کے آدمی کے اوپر انگلی تک نہیں اٹھائی گئی۔ حال کی رپورٹ ہے کہ گھاس کی زمین میں کام کرنے والے مزدور بھی ہڑتال یعنی اسہیوگ کرینگے اور اس آندولن میں حصہ لینگے۔

अभी जब कि पार्डी तहसील में आदमियों के लिये नाज की कमी है, वहां की 55 फ़ी सदी ज़मीन बम्बई के जानवरों के लिये घास पैदा करने के काम में लाई जा रही है!

श्री अशोक मेहता ने कहा है :—

"इस तहसील में कोई कारख़ाना नहीं है और यह लगभग सोलह आना खेती का इलाक़ा है. आबादी में साठ फ़ी सदी से ज़ियादा लोग आदिवासी हैं जो बहुत ही ग़रीबी की हालत में रहते हैं. तहसील की काफ़ी ज़मीन कुछ मुट्ठी भर बड़े ज़मींदारों के हाथ में है जो बिना किसी हिचकिचाहट के किसानों को बेदख़ल कर देते हैं और उस ज़मीन पर घास की बुआई कराते हैं जिससे उनको तो लम्बे चौड़े मुनाफ़े होते हैं पर ग़रीब और लाचार किसानों की रोज़ी मारी जाती है."

पिछले तीन बरस में 1,817 एकड़ ज़मीन किसानों के पास से छीन कर ज़मींदारों ने अपना ली. जो 36,000 एकड़ ज़मीन खेती में है इसमें से 23,000 बड़े ज़मींदारों के क़ब्ज़े में है. खेती करना यहां के लोगों का पुराना पेशा है. तालीम बहुत कम है. ज़ियादातर लोग रोज़ कुंआ खोदने और रोज़ पानी पीने वाली हालत में रहते हैं. बम्बई असेम्बली में इस इलाक़े से जो मेम्बर हैं वह एक प्रजा सोशलिस्ट भाई हैं.

आन्दोलन का इतिहास

पार्डी के लोगों के बीच किसान पंचायत नाम की संस्था जिसकी देख रेख सोशलिस्टों के हाथ में है, काम कर रही है. कई बरस से इस पंचायत ने सरकार का ध्यान उन बेदख़लियों की तरफ़ खींचा जो इस इलाक़े में हो रही हैं. एक साल से ज़ियादा अरसा हुआ जब तहसील में एक बड़ी भारी किसान कानफ़रेन्स इस पंचायत ने की और जनता की मुसीबतों व तकलीफ़ों को सरकार के सामने रखा. कम से कम तीन बार यह मामला बम्बई के माल मंत्री के ध्यान में लाया गया. भारत सरकार की तरफ़ से जो अकाल जांच कमेटी बनी थी उसके सामने भी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने सारी हालत रखी थी.

पिछले मार्च में एक सम्मेलन में सरकार से अपील की गई कि अगली बरसात तक किसानों की मांग पूरी कर दी जाय ताकि वह उस ज़मीन पर जुताई बुआई कर सकें और अपनी रोज़ी कमा सकें.

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का कहना है कि किसानों की मांगें दो हैं :—

(i) पिछली बेदख़लियों की जांच और गांव के काग़ज़ात सही करने के लिये एक कमेटी या कमीशन बैठाया जाय ताकि जिन किसानों की ज़मीनें ग़लत छीनी गई

ابھی جب کہ پارڈی تحصیل میں آدمیوں کے لئے اناج کی کمی ہے، وہاں کی 55 فیصدی زمین بمبئی کے جانوروں کے لئے گھاس پیدا کرنے کے کام میں لائی جا رہی ہے!

شری اشوک مہتا نے کہا ہے :—

"اس تحصیل میں کوئی کارخانہ نہیں ہے اور یہ لگ بھگ سولہ آنہ کھیتی کا علاقہ ہے . آبادی میں 60 فیصدی سے زیادہ لوگ آدی واسی ہیں جو بہت ہی غریبی کی حالت میں رہتے ہیں. تحصیل کی کافی زمین کچھ مٹھی بھر بڑے زمینداروں کے ہاتھ میں ہے جو بنا کسی ہچکچاہٹ کے کسانوں کو بیدخل کر دیتے ہیں اور اس زمین پر گھاس کی بوائی کراتے ہیں جس سے ان کو تو لمبے چوڑے منافع ہوتے ہیں پر غریب اور لاچار کسانوں کی روزی ماری جاتی ہے ."

پچھلے تین برس میں 1,817 ایکڑ زمین کسانوں کے پاس سے چھین کر زمینداروں نے اپنا لی. جو 36,000 ایکڑ زمین کھیتی میں ہے. اس میں سے 23,000 بڑے زمینداروں کے قبضے میں ہے. کھیتی کرنا یہاں کے لوگوں کا پرانا پیشہ ہے . تعلیم بہت کم ہے . زیادہ تر لوگ روز کنواں کھودنے اور روز پانی پینے والی حالت میں رہتے ہیں . بمبئی اسمبلی میں اس علاقے سے جو ممبر ہوئے ہیں وہ ایک پرجا سوشلسٹ بھائی ہیں .

آندولن کا اتہاس

پارڈی کے لوگوں کے بیچ کسان پنچایت نام کی ایک سنستھا جس کی دیکھ ریکھ سوشلسٹوں کے ہاتھ میں ہے، کام کر رہی ہے . کئی برس سے اس پنچایت نے سرکار کا دھیان ان بیدخلیوں کی طرف کھینچا جو اس علاقے میں ہو رہی ہیں . ایک سال سے زیادہ عرصہ ہوا جب تحصیل میں ایک بڑی بھاری کسان کانفرنس اس پنچایت نے کی اور جنتا کی مصیبتوں اور تکلیفوں کو سرکار کے آگے رکھا . کم سے کم تین بار یہ معاملہ بمبئی کے مال منتری کے دھیان میں لایا گیا . بھارت سرکار کی طرف سے جو اکال جانچ کمیٹی بنی تھی اس کے سامنے بھی پرجا سوشلسٹ پارٹی نے ساری حالت رکھی تھی .

پچھلے مارچ میں ایک سمیلن میں سرکار سے اپیل کی گئی کہ اگلی برسات تک کسانوں کی مانگ پوری کر دی جائے تاکہ وہ اس زمین پر جتائی بوائی کر سکیں اور اپنی روزی کما سکیں .

پرجا سوشلسٹ پارٹی کا کہنا ہے کہ کسانوں کی مانگیں دو ہیں :—

(i) پچھلی بیدخلیوں کی جانچ اور گاؤں کے کاغذات صحیح کرنے کے لئے ایک کمیٹی یا کمیشن بٹھایا جائے تاکہ جن کسانوں کی زمینیں غلط چھینی گئی

पार्डी का सत्याग्रह

हमेशा से हर देश की जनता का यह पैदाइशी हक़ माना गया है कि वह अपनी उचित और सही शिकायतों को सरकार या दुनिया के सामने पेश करे और उन्हें दूर करने के लिये क़दम उठाए. अगर वह इस क़दम को खुले आम, शांति और मान मर्यादा के साथ उठाती है तो इस पर जनता को सिर्फ़ खुशी और अभिमान ही नहीं होता, सवालों के सहज और ठीक हल निकलने में भी मदद मिलती है. साथ ही मुल्क के अन्दर का वातावरन संभलता और ऊपर उठता है. लेकिन अगर हवा के अन्दर पार्टी बाज़ी का धुंआ और खुद ग़रज़ी का ज़ोर हो तो बहादुर से बहादुर और बड़े से बड़ा प्रदर्शन भी बेकार साबित होगा और जनता की बेड़ियां और ज़ियादा मज़बूत हो जाएंगी. पर अगर जनता अपने रास्ते पर डटी रहे और बिना डर या मोह के, धीर और बेलाग हो कर अपनी राह पर चलती रहे तो जीत उसकी ज़रूर है. जब हम दो महीने पुराने उस आन्दोलन को देखते हैं जो पार्डी में श्री अशोक मेहता की अगुवाई में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी चला रही है तब कुछ इस तरह के विचार हमारे मन में आते हैं. इस आन्दोलन को अच्छी तरह और ठीक ठीक समझे बिना इस पर राय क़ायम करना मुश्किल है. इसमें एक तरफ़ से तो आचार्य कृपलानी और श्री जयप्रकाश नारायन की हमदर्दी है और दूसरी तरफ़ विरोध में बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर श्री मोरार जी देसाई और 'हरिजन' के सम्पादक श्री मगन भाई देसाई हैं.

पार्डी के आंकड़े

पार्डी सूरत ज़िले के एक ताल्लुक़ा या तहसील का नाम है. पार्डी ख़ास का स्टेशन बम्बई अहमदाबाद लाइन पर बम्बई से 114 मील की दूरी पर है. पार्डी तहसील में 82 गांव हैं. रक़्बा 162 वर्ग मील और आबादी 1,10,000 है. 162 वर्ग मील यानी 1,03,680 एकड़ में 98,000 एकड़ ज़मीन खेती के क़ाबिल है. इसका हिसाब इस तरह है :—

गिनती	ज़मीन किस चीज़ की खेती में	एकड़	फ़ी सैकड़ा
1.	अनाज	28,000	28·5
2.	दालें	12,000	12·5
3.	फल	4,000	4·0
4.	घास	54,000	55·0
	जोड़	98,0000	100

پارڈی کا ستیہ گرہ

ہمیشہ سے ہر دیش کی جنتا کا یہ پیدائشی حق مانا گیا ہے کہ وہ اپنی اُچت اور صحیح شکایتوں کو سرکار یا دنیا کے سامنے پیش کرے اور اُنہیں دور کرنے کے لئے قدم اُٹھائے۔ اگر وہ اِس قدم کو کھلے عام، شانتی اور مان مریادا کے ساتھ اُٹھاتی ہے تو اُس پر جنتا کو صرف خوشی اور ابھیمان ہی نہ ہوگا' سوالوں کے سہج اور ٹھیک حل نکلنے میں بھی مدد ملتی ہے۔ ساتھ ہی ملک کے اندر کا واتاورن سنبھلتا اور اوپر اُٹھتا ہے۔ لیکن اگر ہوا کے اندر پارٹی بازی کا دھواں اور خود غرضی کا زور ہو تو بہادر سے بہادر اور بڑے سے بڑا پردرشن بھی بیکار ثابت ہوگا اور جنتا کی بیڑیاں اور زیادہ مضبوط ہو جائیں گی۔ پر اگر جنتا اپنے راستے پر ڈٹی رہے اور بنا ڈر یا موہ کے' دھیر اور بےلاگ ہو کر اپنی راہ پر چلتی رہے تو جیت اُس کی ضرور ہے۔ جب ہم دو مہینے پرانے اُس آندولن کو دیکھتے ہیں جو پارڈی میں شری اشوک مہتا کی اگوائی میں پرجا سوشلسٹ پارٹی چلا رہی ہے تب کچھ اِس طرح کے وچار ہمارے من میں آتے ہیں۔ اِس آندولن کو اچھی طرح اور ٹھیک ٹھیک سمجھے بنا اِس پر رائے قائم کرنا مشکل ہے۔ اِس میں ایک طرف سے تو آچاریہ کرپلانی اور شری جے پرکاش نرائن کی ہمدردی ہے اور دوسری طرف وِرودھ میں بمبئی کے چیف منسٹر اور 'ہریجن' کے سمپادک شری مگن بھائی دیسائی ہیں۔

پارڈی کے آنکڑے

پارڈی سورت ضلع کے ایک تعلقہ یا تحصیل کا نام ہے۔ پارڈی خاص کا اسٹیشن بمبئی احمدآباد لائن پر بمبئی سے 114 میل کی دوری پر ہے۔ پارڈی تحصیل میں 82 گاؤں ہیں۔ رقبہ 162 ورگ میل اور آبادی 1,10,000 ہے۔ 162 ورگ میل یعنی 1,03,680 ایکڑ میں 98,000 ایکڑ زمین کھیتی کے قابل ہے۔ اُس کا حساب اِس طرح ہے۔

گنتی	زمین کس چیز کی کھیتی میں	ایکڑ	فی سیکڑہ
1	اناج	28,000	28·5
2	دالیں	12,000	12·5
3	پھل	4,000	4·0
4	گھاس	54,000	55·0
	جوڑ	98,000	100

ऐसी भाषा को बनाने, बढ़ाने, फैलाने और परवान चढ़ाने का एक ज़रिया यह भी है कि नये नये काम धन्धों और आज कल की ज़िन्दगी में इस्तेमाल हो सकने वाले हज़ारों नये नये शब्द बनाए जायं. ऐसे शब्द जो सिर्फ़ हिन्दी में नहीं, सिर्फ़ उरदू में नहीं बल्कि उरदू और हिन्दी दोनों में चल सकें. वही शब्द जो हिन्दी में भी चल सकें और उरदू में भी जो हिन्दी वालों के भी समझ में आ सकें और उरदू वालों के भी, जिसे हिन्दी प्रेमी भी बर्दाश्त कर सकें और उरदू के हामी भी. वही सच्ची हिन्दुस्तानी है; वही हिन्दुस्तानी जो बटवारे के बावजूद और राजकाजी फूट होने पर भी समाज, ब्योपार, अदब और सभ्यता में आपसी बन्धनों से पैदा होने वाली ज़रूरतों को पूरा कर रही है और आयन्दा इन बन्धनों को बढ़ाने का सब से ज़ियादा अहम ज़रिया बन सकती है. कुछ अजब नहीं कि राजकाजी मिलाप भी पैदा करे. इसमें शक नहीं कि जनता राज में सब से बड़ी ताक़त भाषा है. जब तक भाषा एक रहेगी, एक मुल्क और एक क़ौम की आस बाक़ी रहेगी. हर हालत में देश के मुख़्तलिफ़ प्रान्तों में रहने वाले भांत भांत के लोगों के बाहमी बन्धन एक भाषा के कारन बढ़ते और फैलते रहेंगे और मिली जुली भाषा की तरह मिली जुली तहज़ीब की रोशनी धीरे धीरे फैलती और बढ़ती जायगी.

ایسی بھاشا کو بنانے، بڑھانے، پھیلانے اور پروان چڑھانے کا ایک ذریعہ یہ بھی ہے کہ نئے نئے کام دھندوں اور آجکل کی زندگی میں استعمال ہو سکنے والے ہزاروں نئے نئے لفظ بنائے جائیں۔ ایسے لفظ جو صرف ہندی میں نہیں، صرف اردو میں نہیں بلکہ اردو اور ہندی دونوں میں چل سکیں۔ وہی لفظ جو ہندی میں بھی چل سکیں اور اردو میں بھی۔ جو ہندی والوں کے بھی سمجھ میں آ سکیں اور اردو والوں کے بھی۔ جسے ہندی پریمی بھی برداشت کر سکیں اور اردو کے حامی بھی۔ وہی سچی ہندستانی ہے؛ وہی ہندستانی جو بٹوارے کے باوجود اور راج کاجی پھوٹ ہونے پر بھی سماج، بیوپار، ادب اور سبھیتا میں آپسی بندھنوں سے پیدا ہونے والی ضرورتوں کو پورا کر رہی ہے اور آئندہ ان بندھنوں کو بڑھانے کا سب سے زیادہ اہم ذریعہ بن سکتی ہے۔ کچھ عجب نہیں کہ راج کاجی ملاپ بھی پیدا کرے۔ اس میں شک نہیں کہ جنتا راج میں سب سے بڑی طاقت بھاشا ہے۔ جب تک بھاشا ایک رہے گی، ایک ملک اور ایک قوم کی آس باقی رہے گی۔ ہر حالت میں دیس کے مختلف پرانتوں میں رہنے والے بھانت بھانت کے لوگوں کے باہمی بندھن ایک بھاشا کے کارن بڑھتے اور پھیلتے رہیں گے اور ملی جلی بھاشا کی طرح ملی جلی تہذیب کی روشنی دھیرے دھیرے پھیلتی اور بڑھتی جائے گی۔

"मैं शान्ति पसन्द आदमी हूं. शान्ति में मेरा विश्वास है. लेकिन मैं चाहे जो क़ीमत दे कर शान्ति नहीं ख़रीदना चाहता. आप पत्थर में जो शान्ति पाते हैं वह मुझे नहीं चाहिये. जिसे आप क़ब्र में देखते हैं वह शान्ति मैं नहीं चाहता. लेकिन मैं वह शान्ति अवश्य चाहता हूं जो मनुष्य के हृदय में छुपी हुई है, और सारी दुनिया के वार करने के लिये तैयार होते हुए भी सर्व शक्तिमान ईश्वर की शक्ति जिसकी रक्षा करती है."

—महात्मा गांधी

"میں شانتی پسند آدمی ہوں۔ شانتی میں میرا وشواس ہے۔ لیکن میں چاہے جو قیمت دے کر شانتی نہیں خریدنا چاہتا۔ آپ پتھر میں جو شانتی پاتے ہیں وہ مجھے نہیں چاہئے۔ جسے آپ قبر میں دیکھتے ہیں وہ شانتی میں نہیں چاہتا۔ لیکن میں وہ شانتی اوشیہ چاہتا ہوں جو منش کے ہردے میں چھپی ہوئی ہے، اور ساری دنیا کے وار کرنے کے لئے تیار ہوتے ہوئے بھی سرو شکتیمان ایشور کی شکتی جسکی رکشا کرتی ہے۔"

—مہاتما گاندھی

क़ौमी मुश्तरिक ज़बान" रहेगी जाय कर इसलिये कि उरदू को पाकिस्तान ने अपना लिया है.

हिन्दी वालों और उरदूवालों के एक दूसरे को तोड़ने वाले दावे अधूरी सपने हैं. भोले भाले इनसानों की कुछ ख़्यालियां या घमंडियों की सनतरानियां हैं. कठियल हिन्दी का समझना खुद हिन्दी प्रेमियों के लिये नामुमकिन होता जा रहा है. हज़ारों लोगों ने सरकारी हिन्दी में ब्राडकास्ट की जाने वाली ख़बरों, ऐलानों और भाशनों का सुनना ही छोड़ दिया और हज़ारों हिन्दी प्रेमी सुनने को सुनते हैं मगर अच्छी तरह समझ नहीं सकते क्योंकि हिन्दी भाशा बराबर मुशकिल होती जा रही है. उरदू वालों की मुशकिल पसन्दी से घबरा कर हज़ारों हिन्दुओं ने उरदू को छोड़ दिया है और यह एक अनइनकार सकनी हक़ीक़त है कि हिन्दी हिन्दुओं की और उरदू मुसलमानों की ज़बान हो चुकी या होती जा रही है. उरदू न जानने वाले मुसलमान बंगालियों, मलाबारियों, दक्खिनयों और सरहदियों के लिये उरदू का सीखना उरदू की मुशकिल पसन्दी की वजह से दूभर हो रहा है. उरदू जानने वाले हिन्दू उरदू को छोड़ते जा रहे हैं.

जिस बुज़ुर्ग ने सन 1934 के लगभग यह मक़ूला कहा था कि :—

"उरदू ज़बान हिन्दू मुसलमानों को अपने आबा व अजदाद से एक मुशतरका और मुक़द्दस तरके की हैसियत से मिली है जो क़तअन नाक़ाबिले तक़सीम है."

उसी ने सन 1943 में यह भी कहा था कि :—

"हिन्दू उरदू छोड़ते जा रहे हैं. अब तक मुझे यह तवक़्क़ो थी कि कायस्थ और कश्मीरी पंडित हमारा साथ देंगे लेकिन अफ़सोस ! वह भी हटते जा रहे हैं" ‡

ऐसा उरदू के विरसेदार और तरकेदार ही अपना हक़ ख़ुद ही ख़ुशी ख़ुशी छोड़ते जा रहे हैं. इन्हें अपने बाप दादा की जायदाद, विरासत, मालियत और पूंजी में से कुछ नहीं चाहिये. क्योंकि सारी मालियत अजनबियाना, डरावनी और बेकार है अलबत्ता इसका कुछ हिस्सा अच्छा है और शायद बचाया जा सकता है. यह क़ाबिले यक़ीन है कि इसको संभालने की कोशिश की जाय. इसलिये हिन्दुस्तानी के नामलेवा उठ खड़े हुए हैं कि जहां तक बन पड़े उरदू और हिन्दी को ग़लत रास्ते से बचाएं और सारी की सारी हिन्दी और पूरी की पूरी उरदू के संभालने के बजाय दोनों में से आधा आधा बचाएं ताकि उनके मेल जोल से सारे मुल्क की एक ही भाशा बन सके और आपसी ज़रूरतों को पूरा कर सके.

‡ यह सर तेज बहादुर सप्रू का क़ौल था. ("उरदू" 1943, सफ़ा 238)

قومی مشترکہ زبان" رہے گی خاص کر اس لئے کہ اردو کو پاکستان نے اپنا لیا ہے ۔

ہندی والوں اور اردو والوں کے ایک دوسرے کو توڑنے والے دعوے ادھورے سپنے ہیں ۔ بھولے بھالے انسانوں کی خوش خیالیاں یا گھمنڈیوں کی لن ترانیاں ہیں ۔ کٹھیل ہندی کا سمجھنا خود ہندی پریمیوں کے لئے ناممکن ہوتا جا رہا ہے ۔ ہزاروں لوگوں نے سرکاری ہندی میں براڈکاسٹ کی جانے والی خبروں' اعلانوں اور بھاشنوں کا سننا ہی چھوڑ دیا اور ہزاروں ہندی پریمی سننے کو سنتے ہیں مگر اچھی طرح سمجھ نہیں سکتے کیوں کہ ہندی بھاشا برابر مشکل ہوتی جا رہی ہے ۔ اردو والوں کی مشکل پسندی سے گھبرا کر ہزاروں ہندوؤں نے اردو کو چھوڑ دیا ہے اور یہ ایک اَن انکار سکنی حقیقت ہے کہ ہندی ہندوؤں کی اور اردو مسلمانوں کی زبان ہو چکی یا ہوتی جا رہی ہے ۔ اردو نہ جاننے والے مسلمان بنگالیوں' مالاباریوں' دکھنیوں اور سرحدیوں کے لئے اردو کا سیکھنا اردو کی مشکل پسندی کی وجہ سے دوبھر ہو رہا ہے ۔ اردو جاننے والے ہندو اردو کو چھوڑتے جا رہے ہیں ۔

جس بزرگ نے سن 1934 کے لگ بھگ یہ مقولہ کہا تھا کہ :—

" اردو زبان ہندو مسلمانوں کو اپنے آبا و اجداد سے ایک مشترکہ اور مقدس ترکے کی حیثیت سے ملی ہے جو قطعاً ناقابل تقسیم ہے ۔"

اسی نے سن 1943 میں یہ بھی کہا تھا کہ :—

" ہندو اردو چھوڑتے جا رہے ہیں ۔ اب تک مجھے یہ توقع تھی کہ کایستھ اور کشمیری پنڈت ہمارا ساتھ دیں گے لیکن افسوس ! وہ بھی ہٹتے جا رہے ہیں۔" ‡

ایسا اردو کے ورثے دار اور ترکے دار ہی اپنا حق خود ہی خوشی خوشی چھوڑتے جا رہے ہیں ۔ انہیں باپ دادا کی جائیداد' وراثت' مالیت اور پونجی میں سے کچھ نہیں چاہئے ۔ کیوں کہ ساری مالیت اجنبیانہ' ڈراونی اور بیکار ہے ۔ البتہ اس کا کچھ حصہ اچھا ہے اور شاید بچایا جا سکتا ہے ۔ یہ قابل یقین ہے کہ اس کو سنبھالنے کی کوشش کی جائے ۔ اسی لئے ہندستانی کے نام لیوا اٹھ کھڑے ہوئے ہیں کہ جہاں تک بن پڑے اردو اور ہندی کو غلط راستے سے بچائیں اور ساری کی ساری ہندی اور پوری کی پوری اردو کے سنبھالنے کی بجائے دونوں میں سے آدھا آدھا بچائیں تاکہ ان کے میل جول سے سارے ملک کی ایک ہی بھاشا بن سکے اور آپسی ضرورتوں کو پورا کر سکے ۔

‡ یہ سر تیج بہادر سپرو کا قول تھا ۔ (" اردو " سن 1943' صفحہ 238)

हिन्दुस्तानी का भविष्य

हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने के जो असूल बयान किए गए हैं, उनकी टीका से ज़ाहिर है कि हिन्दी प्रेमी और उर्दू के हामी दोनों एक दूसरे के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं, दोनों छुटवहम में मुब्तला हैं, दोनों जनताई भाशा, जनताई व्याकरन और भाशा के आम झुकाव के सख़्त ख़िलाफ़ हैं. इन ही वजहों से हिन्दी और उर्दू का फ़र्क़ बराबर बढ़ता जा रहा है. इनकी मिलवां शब्दावली कम होती जा रही है. उनकी अदबी और विद्याई भाशा इतनी अलग हो गई है कि ऊंची अदबी किताबें या विद्याई लेख हिन्दी और उर्दू में बिलकुल अलग अलग भाशाएं हो गई हैं. देखने में हालत इतनी निरासी है कि हिन्दुस्तानी का भविश बिलकुल काला दिखाई देता है. फिर भी हिन्दुस्तानी के मानने वालों की एक जमात पैदा हो रही है जो मिली जुली भाशा को बढ़ाने और परवान चढ़ाने की आशा रखती है.

हिन्दुस्तानी के भक्त पूरे विश्वास से नहीं कह सकते कि उनकी कोशिशें सफल होंगी. हो सकता है कि हिन्दुस्तानी के चन्द इने गिने लोग एक तमाशा बन जाएं मगर इतना तो मुझे यक़ीन है कि मौजूदा ज़माने की कठिन हिन्दी (जिसे ख़ास कर उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश के हिन्दी शत्रु हिन्दी प्रेमी चलाना चाहते हैं) या मुशकिल उर्दू (जिसे अब भी बाज़ नादान हिन्दुस्तान की "वाहिद क़ौमी और मुशतरिक ज़बान" ठहराते हैं और जिसे ख़ास कर भारत के पाकिस्तानी और पाकिस्तान वाले चलाने के आरज़ूमन्द हैं) कभी सारे मुल्क की ज़बान नहीं बन सकेगी.

इसी तरह मुझे पूरा यक़ीन है कि आजकल की कठिन हिन्दी या मुशकिल उर्दू भारत और पाकिस्तान के राजकाजी, व्योपारी, समाजी बन्धनों से पैदा होने वाली ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकती. चन्द अदबी रिसाले और तमाम सरकारी विभाग चाहे कठिन भाशा इस्तेमाल करने लगें मगर व्योपारी संस्थाएं, बाज़ार और फ़िल्म मिलवां भाशा का प्रचार करेंगे. गुजरात और बंगाल, मारवाड़ और उड़ीसा में शुद्ध हिन्दी का चलना मुशकिल है.

जो लोग यह ख़्याल करते हैं कि सिर्फ़ हकूमत के सहारे जनता की भाशा बदल सकती है या हकूमत की मुख़ालफ़त का कुछ भी असर नहीं होता, भूल कर रहे हैं. बाज़ संस्कृत प्रेमी विद्वान समझते हैं कि चन्द यूनीवर्सिटियों और अदबी संस्थाओं के कारन और सरकार के सहारे सारे देश की भाशा कठिन या शुद्ध हिन्दी हो जाएगी. बाज़ उर्दू के हामी समझते हैं कि उनकी कोशिशें बिलकुल बरबाद जाएंगी और उर्दू तमाम मुल्क की "वाहिद

هندستانی کا بهوشیه

هندستانی کو ترقی دینے کے جو اسول بیان کئے گئے هیں، ان کی ٹیکا سے ظاهر هے که هندی پریمی اور اردو کے حامی دونوں ایک دوسرے کے بلکل خلاف هیں ۔ دونوں بهوت وهم میں مبتلا هیں، دونو جنتائی بهاشا، جنتائی ویاکرن اور بهاشا کے آم جهکاو کے سخت خلاف هیں ۔ ان هی وجهوں سے هندی اور اردو کا فرق برابر بڑهتا جا رها هے ۔ ان کی ملواں شبداولی کم هوتی جا رهی هے ۔ ان کی ادبی اور ودیای بهاشا اتنی الگ هوگئی هے که اونچی ادبی کتابیں یا ودیای لیکه هندی ور اردو میں بلکل الگ الگ بهاشائیں هوگئی هیں ۔ دیکهنے میں حالت اتنی نراسی هے که هندستانی کا بهوشیه بلکل کالا دکهای دیتا هے ۔ پهر بهی هندستانی کے ماننے والوں کی ایک جماعت پیدا هو رهی هے جو ایک ملی‌جلی بهاشا کو بڑهانے اور پروان چڑهانے کی آشا رکهتی هے ۔

هندستانی کے بهکت پورے وشواس سے نهیں کہ سکتے که ان کی کوششیں سپهل هونگی۔ هوسکتا هے که هندستانی کے چلانے کے لوگ ایک تماشا بن جاییں مگر اتنا تو مجهے یقین هے که موجودا زمانے کی کٹهن هندی (جسے خاس کر اُترپردیش، بهار اور مدهیه پردیش کے هندی شترو هندی پریمی چلانا چاهتے هیں) یا مشکل اردو (جسے اب بهی باز نادان هندستان کی "واحد قومی اور مشترک زبان" ٹهہراتے هیں اور جسے خاس‌کر بهارت کے پاکستانی اور پاکستان والے چلانے کے آرزومند هیں) کبهی سارے ملک کی آم زبان نهیں بن سکیگی ۔

اسی‌ترہ مجهے پورا یقین هے که آجکل کی کٹهن هندی یا مشکل اردو بهارت اور پاکستان کے راجکاجی، بیوپاری، سماجی بندهنوں سے پیدا هونے والی ضرورتوں کو پورا نهیں کرسکتی ۔ چند ادبی رسالے اور تمام سرکاری وبهاگ چاهے کٹهن بهاشا استعمال کرنے لگیں مگر بیوپاری سنستهائیں، بازار اور فلم ملواں بهاشا کا پرچار کرینگے ۔ گجرات اور بنگال، مارواڑ اور اڑیسا میں شدھ هندی کا چلنا مشکل هے ۔

جو لوگ یه خیال کرتے هیں که سرف حکومت کے سہارے جنتا کی بهاشا بدل سکتی هے یا حکومت کی مخالفت کا کچھ بهی اسر نهیں هوتا بهول کر رهے هیں ۔ باز سنسکرت پریمی ودوان سمجهتے هیں که چند یونیورسٹیوں اور ادبی سنستهاؤں کے کارن اور سرکار کے سہارے سارے دیش کی بهاشا کٹهن یا شدھ هندی هو جائیگی۔ باز اردو کے حامی سمجهتے هیں که ان کی کوششیں بلکل برباد جاینگی اور اردو تمام ملک کی "واحد

हिन्दुस्तानी शब्दयात

(डाक्टर जाफ़र हसन)

अंगरेज़ी ग्रामर का असर

फ़ारसी की एक कहावत है : "पीरी व सद ऐब" यानी एक बुढ़ापे से सौ बुराइयां नमूदार होती हैं. इस कहावत को हम किसी क़दर बदल कर उर्दू और हिन्दी के हक़ में यूं कह सकते हैं कि "छूट वहम से सौ बुराइयां" होती हैं. चुनांचे यही देखिए कि फ़ारसी, अरबी और संस्कृत व्याकरन और उच्चारन की बलाएं थीं सो थीं चन्द दहाइयों से अंगरेज़ी व्याकरन की बला भी हम पर नाज़िल हो रही है.

अंगरेज़ों ने एशियाई ज़बानों से बीसियों लफ़्ज़ लिये मगर हर लफ़्ज़ को अपना लिया और जैसा कि होना चाहिए हर लफ़्ज़ पर अपना उच्चारन और अपना व्याकरन लागू किया. हैदराबाद को हैदराबैड कहा तो वहां के निज़ाम को "नईज़ीम" कहना शुरू किया. राजा का कईपन राजाज़ और रानी का रानीज़ बनाया. आमीरुलबहर का एडमिरल किया तो फिर इस्म बनाने के लिए एडमिरलटी बनाया. जो कुछ उन्होंने किया वह ठीक किया और वैसा ही होना चाहिए.

इसके बरक्स हिन्दुस्तानी अब भी आज़ादी हासिल करने के बाद भी अंगरेज़ों से इतना सहमे हुए हैं कि वह अंगरेज़ी लफ़्ज़ के उच्चारन अंगरेज़ी की तरह करते हैं और लफ़्ज़ों की जमा अंगरेज़ी क़ायदों के मुताबिक़ बनाते हैं. अंगरेज़ी की अन्धी तक़लीद और बे मौक़ा तक़लीद हिन्दी और उर्दू में यकसां आम है. इससे साबित होता है कि दोनों पर अंगरेज़ी का रोब छाया हुआ है और वह यकसां तौर पर छूट वहम में मुबतला हैं तब ही तो वह यूनीवरसिटी की जमा यूनीवर्सिटियां बनाने की बजाए यूनीवर्सिटीज़ लिखते हैं. ख़ालिस उर्दू क़ायदे या हिन्दी उसूल के मुताबिक़

"हमारे शहर में कई होटल हैं"

कहने की बजाए फ़रज़ गरज़ से कहेंगे.

"हमारे शहर में कई होटल्ज़ हैं"

हिन्दुस्तानी तरक़्क़ी के लिए यह उसूल अटल है और होना चाहिये कि लफ़्ज़ चाहे कहीं के हों हिन्दुस्तानी में दाख़िल होने के बाद उन पर हर सूरत में सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरन लागू होना चाहिये, कोई दूसरा व्याकरन नहीं.

هندستانی شبدیات

(ڈاکٹر جافر حسن)

انگریزی گرامر کا اثر

فارسی کی ایک کہاوت ہے : "پیری و صد عیب" یانے ایک بڑھاپے سے سو برائیاں نمودار ہوتی ہیں ۔ اس کہاوت کو ہم کسی قدر بدل کر اردو اور هندی کے حق میں یوں کہ سکتے ہیں کہ "چھوت وہم سے سو برائیاں" ہوتی ہیں۔ چنانچہ یہی دیکھئے کہ فارسی' اربی اور سنسکرت ویاکرن اور اچارن کی بلائیں تھیں سو تھیں چند دہائیوں سے انگریزی ویاکرن کی بلا بھی ہم پر نازل ہو رہی ہے ۔

انگریزوں نے ایشیائی زبانوں سے بیسیوں لفز لئے مگر ہر لفز کو اپنا لیا اور جیسا کہ ہونا چاہئے ہر لفز پر اپنا اچارن اور اپنا ویاکرن لاگو کیا ۔ حیدرآباد کو حیدرا بیڈ کہا تو وہاں کے نظام کو "نئی زیم" کہنا شرو کیا ۔ راجا کا کئی پن راجاز اور رانی کا رانیز بنایا ۔ امیرالبحر کا ایڈمرل کیا تو پھر اسم بنانے کے لئے ایڈمرلٹی بنایا ۔ جو کچھ انہوں نے کیا وہ ٹھیک کیا اور ویسا ہی ہونا چاہئے ۔

اس کے برعکس هندستانی اب بھی آزادی حاصل کرنے کے باد بھی انگریزوں سے اتنا سہمے ہوئے ہیں کہ وہ انگریزی لفز کے اچارن انگریزی کی ترہ کرتے ہیں اور لفزوں کی جمع انگریزی قایدوں کے مطابق بناتے ہیں ۔ انگریزی کی اندھی تقلید اور بے موقا تقلید هندی اور اردو میں یکساں آم ہے ۔ اس سے سابت ہوتا ہے کہ دونوں پر انگریزی کا روب چھایا ہوا ہے اور وہ یکساں تور پر چھوت وہم میں مبتلا ہیں تب ہی تو وہ یونی ورسٹی کی جمع یونیورسٹیاں بنانے کی بجائے یونیورسٹیز لکھتے ہیں ۔ خالص اردو قایدے یا هندی اصول کے مطابق

"ہمارے شہر میں کئی ہوٹل ہیں"

کہنے کی بجائے فرز غرز سے کہینگے ۔

"ہمارے شہر میں کئی ہوٹلز ہیں"

هندستانی کی ترقی کے لئے یہ اصول اٹل ہے اور ہونا چاہئے کہ لفز چاہے کہیں کے ہوں' هندستانی میں داخل ہونے کے باد' ان پر ہر صورت میں صرف هندستانی ویاکرن لاگو ہونا چاہئے' کوئی دوسرا ویاکرن نہیں ۔

एक दिन मैं साइकिल पर जा रही थी, शाम का वक्त था, सब अपने अपने घर लौट रहे थे. साइकिलों की कतार की कतार जा रही थी. इतने में मेरी साइकिल किसी से उलझ गई और मैं गिर पड़ी. कुछ फ़ासले पर सिपाही खड़ा था. मुझे देखते ही वह दौड़ कर आया. मेरे कपड़े झाड़े, साइकिल उठाई और फ़ुटपाथ पर ले गया. अब तक एक हिन्दुस्तानी को देख कर ख़ासी भीड़ जमा हो गई थी. सिपाही ने कई सवाल पूछे. पर चूंकि पीकिंग आये मुझे कम ही दिन हुए थे, मैं उसकी ज़बान नहीं समझ पाई. इतने में एक चीनी शख्स जो कि अंगरेज़ी जानता था, आगे आया और सिपाही के प्रश्न का अनुवाद करने लगा. मुझसे पूछा जा रहा था—"तुम्हें चोट तो नहीं आई? तुम्हारे कपड़े मैले हो गए हैं, चलो, मैं अस्पताल ले चलता हूं." जिसकी साइकिल से टक्कर हुई है उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहती हो?" मैंने सब बातों का 'नहीं' में जवाब दिया. फिर सिपाही ने दूसरे साइकिल वाले को बुलाया और पूछा—"साइकिल कैसे टकरा गई? इस लड़की के चोट लग जाती, साइकिल संभाल कर चलाया करो." लड़के ने अपनी ग़लती स्वीकार की, उसने कहा कि उसे अफ़सोस है. मैंने सिपाही को धन्यवाद दिया और साइकिल पर सवार हो कर आगे बढ़ गई.

ایک دن میں سائیکل پر جا رہی تھی، شام کا وقت تھا، سب اپنے اپنے گھر لوٹ رہے تھے۔ سائیکلوں کی قطار کی قطار جا رہی تھی۔ اتنے میں میری سائیکل کسی کے الجھ گئی اور میں گر پڑی۔ کچھ فاصلے پر سپاہی کھڑا تھا۔ مجھے دیکھتے ہی وہ دوڑ کر آیا۔ میرے کپڑے جھاڑے، سائیکل اٹھائی اور فٹ پاتھ پر لے گیا۔ اب تک ایک ہندستانی کو دیکھکر خاصی بھیڑ جمع ہو گئی تھی۔ سپاہی نے کئی سوال پوچھے۔ پر چونکہ پیکنگ آئے مجھے چند ہی دن ہوئے تھے، میں اسکی زبان سمجھ نہیں پائی۔ اتنے میں ایک چینی شخص جو کہ انگریزی جانتا تھا آگے آیا اور سپاہی کے پرشن کا انواد کرنے لگا۔ مجھ سے پوچھا جا رہا تھا—" تمہیں چوٹ تو نہیں آئی؟ تمہارے کپڑے میلے ہو گئے ہیں۔ چلو میں اسپتال لے چلتا ہوں۔ جسکی سائیکل سے ٹکر ہوئی ہے اس کے بارے میں تم کچھ کہنا چاہتی ہو؟" میں نے سب باتوں کا 'نہیں' میں جواب دیا۔ پھر سپاہی نے دوسرے سائیکل والے کو بلایا اور پوچھا—" سائیکل کیسے ٹکرا گئی؟ اس لڑکی کے چوٹ لگ جاتی، سائیکل سنبھال کر چلایا کرو۔" لڑکے نے اپنی غلطی سویکار کی، اس نے کہا کہ اسے افسوس ہے۔ میں نے سپاہی کو دھنیواد دیا اور سائیکل پر سوار ہو کر آگے بڑھ گئی۔

एक दिन मैं कुछ चीनी बच्चों के साथ बात कर रही थी. उन में से एक ने कहा कि हम तुम्हारे देश का नाच देखना चाहते हैं. मैंने उन्हें एक मनीपुरी नाच दिखाया. वे बड़े ख़ुश हुए और मुझे दोनों हाथों के अंगूठे दिखाने लगे. मैं चक्कर में पड़ गई और सोचने लगी कि यह लोग अंगूठे क्यों दिखा रहे हैं, शायद मेरे नाच की वजह से चिढ़ाते हैं. बाद में एक चीनी लड़के से मैंने इसका मतलब पूछा. उसने मुझे बताया—"जब हम लोगों को कोई चीज़ बहुत पसंद आती है तो हम अपनी ख़ुशी अंगूठे दिखा कर प्रकट करते हैं."

इसके बाद उन्होंने अपना चीनी नाच दिखाया. मुझे बहुत पसंद आया और मैंने भी दोनों हाथों के अंगूठे दिखाये और कहा "हाओ, हाओ" (अच्छा है, अच्छा है)

जब हम पहले पहल केन्टन (चीन) पहुंचे तो हमें, चापइस्टीकें खाना खाने की दो गोल पतली तीलियां का उपयोग नहीं आता था. हम केन्टन स्टेशन पर उतरे बड़ी भूख लग रही थी. हम चीनी भाषा नहीं जानते थे. खाना कैसे मांगें यह समस्या थी. किसी तरह मैंने होटल वाले से "छूशु" (शाकाहारी भोजन) कह दिया. वह समझ गया और दो बड़े बड़े बेलों में चावल और सब्ज़ी और साथ में दो जोड़ी "चापइस्टिक" उसने ला कर हमारे सामने रख दिया. पिता जी और मैं बड़े सोच में पड़ गये. अचम्भा भी नहीं, इन तीलियों से खाना कैसे खाते? धीरे धीरे हिम्मत कर के हमने चापस्टिक उठा लीं. बड़ी मुसीबत हुई, हमसे वह संभलती ही न थीं. मुश्किल से उन्हें संभाला, उंगलियों के बीच दबाया और खाना खाने लगे. इतने में बहुत से चीनी बच्चे इकट्ठे हो गये और हमारी तरफ़ देख कर हंसने लगे. हमने दूसरे चीनियों की ओर देखा और हंसी की वजह पूछी. मालूम हुआ की हमने तीलियां उलटी पकड़ रखी हैं.

पीकिंग में हमने कभी मार पीट नहीं देखी और न गाली गलौच ही सुनी. वहां के लोग अपने आपसी झगड़ों को वाद विवाद करके निपटा लेते हैं. यदि दो साइकिलों में टक्कर लग जाय तो पुलिस साइकिल वालों के पास आयेगी और उन्हें समझायेगी—"ध्यान से साइकिल चलाओ, नहीं तो टक्कर लग जायगी, चोट लगेगी और नुक़सान होगा." पुलिस वाले काफ़ी देर तक समझाते बुझाते रहेंगे. दोनों अपनी गलतियां समझ लेंगे और फिर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए साइकिल पर चल देंगे. रात के समय किसी की साइकिल में बत्ती या घंटी न हुई तो पुलिस उन्हें थाने नहीं ले जाती न घूस लेती है, न रोब जमाती है बल्कि ग़लती बता कर समझाती बुझाती है!

ایک دن میں کچھ چینی بچوں کے ساتھ بات کر رہی تھی۔ اُن میں سے ایک نے کہا کہ ہم تمہارے دیش کا ناچ دیکھنا چاہتے ہیں۔ میں نے انہیں ایک منی پوری ناچ دکھایا۔ وہ بڑے خوش ہوئے اور مجھے دونوں ہاتھوں کے انگوٹھے دکھانے لگے۔ میں چکر میں پڑ گئی اور سوچنے لگی کہ یہ لوگ انگوٹھے کیوں دکھا رہے ہیں، شاید میرے ناچ کی وجہ سے چڑھاتے ہیں۔ بعد میں ایک چینی لڑکے سے میں نے اِس کا مطلب پوچھا۔ اُس نے مجھ سے بتایا—"جب ہم لوگوں کو کوئی چیز بہت پسند آتی ہے، تو ہم اپنی خوشی انگوٹھے دکھا کر پرکٹ کرتے ہیں۔"

اِس کے بعد اُنہوں نے اپنا چینی ناچ دیکھایا۔ مجھے بہت پسند آیا اور میں نے بھی دونوں ہاتھوں کے انگوٹھے دیکھائے اور کہا "ہاؤ، ہاؤ" (اچھا ہے، اچھا ہے)

جب ہم پہلے پہل کینٹن (چین) پہنچے تو ہمیں چاپ اسٹکوں کا (کھانے کھانے کی دو گول پتلی تیلیاں) اُپیوگ نہیں آتا تھا۔ ہم کینٹن اسٹیشن پر اُترے۔ بڑی بھوک لگ رہی تھی۔ ہم چینی بھاشا نہیں جانتے تھے۔ کھانا کیسے مانگیں یہ سمسیا تھی۔ کسی طرح میں نے ہوٹل والے سے "چھوشو" (شاکاہاری بھوجن) کہ دیا۔ وہ سمجھ گیا اور دو بڑے بڑے پیالوں میں چاول اور سبزی اور ساتھ میں دو جوڑی "چاپ اسٹک" اُس نے لا کر ہمارے سامنے رکھ دیا۔ پتا جی اور میں بڑے سوچ میں پڑ گئے۔ چمچے بھی نہیں، اِن تیلیوں سے کھانا کیسے کھاتے؟ دھیرے دھیرے ہمت کر کے ہم نے چاپ اسٹک اُٹھا لیں۔ بڑی مصیبت ہوئی، ہم سے وہ سنبھلتی ہی نہ تھیں۔ مشکل سے اُنہیں سنبھالا، اُنگلیوں کے بیچ دبایا، اور کھانا کھانے لگے۔ اِتنے میں بہت سے چینی بچے اکٹھے ہو گئے اور ہماری طرف دیکھکر ہنسنے لگے۔ ہم نے دوسرے چینیوں کی اور دیکھا اور ہنسی کی وجہ پوچھی۔ معلوم ہوا کی ہم نے تیلیاں اُلٹی پکڑ رکھی ہیں۔

پیکنگ میں ہم نے کبھی مار پیٹ نہیں دیکھی اور نہ گالی گلوچ ہی سنی۔ وہاں کے لوگ اپنے آپسی جھگڑوں کو واد وواد کر کے نپٹا لیتے ہیں۔ یدی دو سائیکلوں میں ٹکر لگ جائے تو پولیس سائیکل والوں کے پاس آئے گی اور اُنہیں سمجھائے گی—"دھیان سے سائیکل چلاؤ، نہیں تو ٹکر لگ جائے گی، چوٹ لگے گی اور نقصان ہوگا۔" پولیس والے کافی دیر تک سمجھاتے بجھاتے رہیں گے۔ دونوں اپنی غلطیاں سمجھ لیں گے اور پھر افسوس ظاہر کرتے ہوئے سائیکل پر چل دیں گے۔ رات کے سمے کسی کی سائیکل میں بتی یا گھنٹی نہ ہوئی تو پولیس اُنہیں تھانے نہیں لے جاتی، نہ گھوس لیتی ہے، نہ رعب جماتی ہے، بلکہ غلطی بتا کر سمجھاتی بجھاتی ہے۔

सिद्ध, मुनि और तीर्थंकर कहते हैं. इसी तरह के नाम ईसाइयों में भी हैं. यह सब वह मंजिलें हैं जहां पहुंच कर हमारी इस धरती के मजहबों का कोई फरक नहीं रह जाता. वहां हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख, बौद्ध और जैन सब एक राह के राही दिखाई देते हैं. हमारे यहां के फरक फिर उन्हें गुजरे हुए बचपन के खेल मालूम होते हैं.

سدھ، منی اور تیرتھنکر کہتے ہیں ۔ اسی طرح کے نام عیسائیوں میں بھی ہیں۔ یہ سب وہ منزلیں ہیں جہاں پہونچ کر ہماری اِس دھرتی کے مذہبوں کا کوئی فرق نہیں رہ جاتا۔ وہاں ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی، سکھ، بودھ اور جین سب ایک راہ کے راہی دکھائی دیتے ہیں ۔ ہمارے یہاں کے فرق پھر اُنہیں گذرے ہوئے بچپن کے کھیل معلوم ہونے لگتے ہیں ۔

चीन में

(कुमारी चक्रेश जैन)

जब मैं चीन पहुंची तो मुझे चीनी भाषा नहीं आती थी और चीन में चीनी जाने बग़ैर रहना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि वहां अंगरेज़ी से काम नहीं चलता, सब काम चीनी में होते हैं.

एक दिन मैं बाज़ार गई. दूकान पर मैंने बहुत सी शीशियां देखीं. एक में कुछ लाल रंग की चीज़ रखी हुई थी. मैंने इशारे से दूकानदार से पूछा कि इसमें क्या है. दूकानदार ने "फंग मी" कहा. मैं कुछ समझ नहीं पाई और अपने सवाल को दुहराया. उससे फिर वही जवाब मिला. मैंने तीसरी बार प्रश्न किया. अब की बार उसने अपनी जीभ पर उंगली रखी, फिर अपने दोनों हाथ दोनों कंधों पर रखकर उड़ने का जतन करने लगा. मुझे बड़ी हंसी आई और समझ गई कि उसका मतलब मधुमक्खी से है. साथ ही अब समझ में आया की "फंग मी" का मतलब शहद होता है. वह हंसने लगा और मैं शहद खरीद कर चली आई.

जब भी हम पीकिंग में बाहर घूमने या कुछ खरीदने जाते तो पचास साठ चीनी बच्चे, बूढ़े, औरतें हमारे पीछे पीछे चलने लगते. चीनी लोग हिन्दुस्तानियों को बहुत प्यार करते हैं. वह भोलेपन से हमारी तरफ देखते और प्रश्नों की झड़ी लगा देते–तुम किस देश के रहने वाले हो? क्या खाते हो? तुम्हारे देश में बर्फ पड़ता है? तुम्हारे देश में बहुत गरमी होती है? (दुपट्टे को छू कर) यह क्या है? किस काम में आता है? तुम्हारे माथे पर यह लाल दाग क्या है? तुमने माथे से खून क्यों निकाला है? वगैरह वगैरह. बस, ट्राम, गाड़ी जहां कहीं भी हम जाते, हमसे वह कुछ न कुछ जरूर पूछते.

چین میں

(کماری چکریش جین)

جب میں چین پہونچی تو مجھے چینی بھاشا نہیں آتی تھی اور چین میں چینی جانے بغیر رہنا بڑا مشکل ہے، کیونکہ وہاں انگریزی سے کام نہیں چلتا، سب کام چینی میں ہوتے ہیں ۔

ایک دن میں بازار گئی ۔ دوکان پر میں نے بہت سی شیشیاں دیکھیں۔ ایک میں کچھ رنگ کی چیز رکھی ہوئی تھی ۔ میں نے اشارے سے دوکاندار سے پوچھا کہ اس میں کیا ہے ۔ دوکاندار نے "فنگ می" کہا ۔ میں کچھ نہیں سمجھ پائی اور اپنے سوال کو دہرایا۔ اس سے پھر وہی جواب ملا ۔ میں نے تیسری بار پرشن کیا ۔ اب کی بار اس نے اپنی جیبھ پر انگلی رکھی، پھر اپنے دونوں ہاتھ دونوں کندھوں پر رکھکر اڑنے کا جتن کرنے لگا۔ مجھے بڑی ہنسی آئی اور سمجھ گئی کہ اس کا مطلب مدھو مکھی سے ہے۔ ساتھ ہی اب سمجھ میں آیا کہ "فنگ می" کا مطلب شہد ہوتا ہے ۔ وہ ہنسنے لگا اور میں شہد خرید کر چلی آئی ۔

جب بھی ہم پیکنگ میں باہر گھومنے یا کچھ خریدنے جاتے تو پچاس ساٹھ چینی بچے، بوڑھے، عورتیں ہمارے پیچھے پیچھے چلنے لگتے۔ چینی لوگ ہندستانیوں کو بہت پیار کرتے ہیں ۔ وہ بھولے پن سے ہماری طرف دیکھتے اور پرشنوں کی جھڑی لگا دیتے–"تم کس دیش کے رہنے والے ہو؟ تم کیا کھاتے ہو؟ تمہارے دیش میں برف پڑتا ہے؟ "تمہارے دیش میں بہت گرمی ہوتی ہے؟ (دوپٹے کو چھوکر) یہ کیا ہے؟ کس کام میں آتا ہے؟ تمہارے ماتھے پر یہ لال لال کیا ہے؟ تم نے ماتھے سے خون کیوں نکالا ہے؟ وغیرہ وغیرہ ۔ بس، ٹرام، گاڑی جہاں کہیں بھی ہم جاتے، ہم سے وہ کچھ نہ کچھ ضرور پوچھتے ۔

संस्कृत शब्द नम: या नमस्कार के मानी होते हैं "मैं नहीं." वेद की बहुत सी प्रार्थनाओं के आखिर में आता है 'न मम यानी 'मेरा नहीं.' ईश्वर के सामने झुकने सिजदा करने या सलाम करने के भी यही मानी है,—'तेरी मरज़ी हो मेरी नहीं '

आदमी जो सोचता है वही हो जाता है, जिससे प्यार करता है वही बन जाता है जो मिट्टी से प्यार करता है मिट्टी बन जाता है. जो ईश्वर से प्यार करता है ईश्वर बन जाता है.

सूफ़ी कहता है :—

"जिस चीज़ की भी तू दिल से ख़ाहिश करता है वही तू हो जाता है. तेरे दिल में अगर गुलाब बसा होगा तो तू गुलाब हो जायगा और अगर बुलबुल बसा होगा तो तू बुलबुल हो जायगा. तू जुज़्व याना हिस्सा है. ईश्वर कुल है. अगर तू कुछ रोज़ कुल का ख़याल अपने सामने रखे तो तू कुल हो जायगा."

गीता में भी कहा गया है कि :—"जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वैसा ही वह ख़ुद हो जाता है."

इसीलिये हर धर्म वाले इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मरते समय आदमी के सामने आख़ीर वक़्त में सिवाय सत्य यानी ईश्वर के ख़याल के और कुछ नहीं होना चाहिये. वेद और क़ुरान का पढ़ना तक उस समय मना किया जाता है. इसीलिये बच्चों को सुलाते समय उन्हें अच्छी अच्छी प्यारी बातों की लोरियां दी जाती हैं. बड़े लोगों को भी सोते वक़्त इसका ध्यान रखना चाहिये. उस समय मन शान्त और सन्तुष्ट रहना चाहिये.

मरते हुए आदमी के सामने हमेशा बहुत धीरे से बोलना चाहिये. ज़ाहिरा तौर पर जान निकल जाने के बाद भी कभी कभी मस्तिष्क काम करता रहता है. सिनेमा की सी तसवीरें अधिकतर पिछली ज़िन्दगी की दिमाग़ के सामने से निकलती रहती हैं कभी कभी मरने वाला अपनी सारी ज़िन्दगी दोहरा जाता है. उस समय कमरे में सिवाय शान्ति, सन्तोष और सकून के और कोई चीज़ नहीं होनी चाहिये ताकि आगे की मंज़िलें तय करने में रूह को रुकावट न हो.

सूफ़ी ने कहा है :—

"ख़ासाने ख़ुदा यानी ईश्वर के सच्चे भक्त ख़ुदा नहीं होते, लेकिन ख़ुदा से जुदा भी नहीं होते."

इसके बाद दरजे और मंज़िलें हैं योग शास्त्र में जिन्हें सिद्ध कहा है. वेदान्त में उन्हें ऋषि कहा जाता है सूफ़ी उन्हें कामिल और अकमल कहते हैं बौद्ध उन्हें सोहन, ध्यान सोहन, बोधिसत्व और बुद्ध कहते हैं. जैनी उन्हें अरहत,

سنسکرت شبد نمہ یا نمسکار کے معنی ہوتے ہیں "میں نہیں." وید کی بہت سی پرارتھناؤں کے آخر میں آتا ہے 'نہ مم' یعنی 'میرا نہیں.' ایشور کے سامنے جھکنے، سجدہ کرنے یا سلام کرنے کے بھی یہی معنی ہیں'—' تیری مرضی ہو میری نہیں.'

آدمی جو سوچتا ہے وہی ہو جاتا ہے' جس سے پیار کرتا ہے وہی بن جاتا ہے. جو مٹی سے پیار کرتا ہے مٹی بن جاتا ہے. جو ایشور سے پیار کرتا ہے ایشور بن جاتا ہے.

صوفی کہتا ہے :—

" جس چیز کی بھی تو دل سے خواہش کرتا ہے وہی تو ہو جاتا ہے. تیرے دل میں اگر گلاب بسا ہوگا تو تو گلاب ہو جائے گا اور اگر بلبل بسا ہوگا تو تو بلبل ہو جائے گا.' تو جز یعنی حصہ ہے. ایشور کل ہے. اگر تو کچھ روز کل کا خیال اپنے سامنے رکھے تو تو کل ہو جائے گا"

گیتا میں بھی کہا گیا ہے کہ—" جسکی جیسی شردھا ہوتی ہے ویسا ہی وہ خود ہو جاتا ہے."

اسی لئے ہر دھرم والے اس بات پر زور دیتے ہیں کہ مرتے سمے آدمی کے سامنے آخیر وقت میں سوائے ستیہ یعنی ایشور کے خیال کے اور کچھ نہیں ہونا چاہئے. وید اور قرآن کا پڑھنا تک اس سمے منع کیا جاتا ہے. اسی لئے بچوں کو سلاتے سمے انہیں اچھی اچھی پیاری باتوں کی لوریاں دی جاتی ہیں بڑے لوگوں کو بھی سوتے وقت اس کا دھیان رکھنا چاہئے. اس سمے من شانت اور سنتشٹ رہنا چاہئے.

مرتے ہوئے آدمی کے سامنے ہمیشہ بہت دھیرے سے بولنا چاہئے. ظاہرا طور پر جان نکل جانے کے بعد بھی کبھی کبھی مستشک کام کرتا رہتا ہے. سنیما کی سی تصویریں ادھک تر پچھلی زندگی کی دماغ کے سامنے سے نکلتی رہتی ہیں. کبھی کبھی مرنے والا اپنی ساری زندگی دہرا جاتا ہے. اس سمے کمرے میں سوائے شانتی سنتوش اور سکون کے اور کوئی چیز نہیں ہونی چاہئے تاکہ آگے کی منزلیں طے کرنے میں روح کو رکاوٹ نہ ہو.

صوفی نے کہا ہے :—

" خاصانِ خدا یعنی ایشور کے سچے بھگت خدا نہیں ہوتے' لیکن خدا سے جدا بھی نہیں ہوتے."

اس کے بعد درجے اور منزلیں ہیں. یوگ شاستر میں جنہیں سدھ کہا ہے' ویدانت میں انہیں رشی کہا جاتا ہے. صوفی انہیں کامل اور اکمل کہتے ہیں. بدھ انہیں سوہن' دھیان سوہن' بودھی ستو اور بدھ کہتے ہیں. جینی انہیں ارہت'

कबीर साहब के इस पद में भी खुदी, अहंकार यानी अपने इस अलग आप को ही वह सिर कहा गया है जिसे उतारने या उतार देने की ज़रूरत है.

हज़रत ईसा ने कहा है :—

"क्या तुम इस बात पर विश्वास नहीं करते कि मैं अपने पिता ईश्वर के अन्दर हूं और मेरा पिता ईश्वर मेरे अन्दर है? जो शब्द मैं तुम से कहता हूं वह मैं अपने आप नहीं कहता, बल्कि वह पिता जो मेरे अन्दर रहता है वही सब कुछ करता रहता है."

सेन्ट पाल ने कहा है :—

"मैं ज़िन्दा हूं लेकिन मैं मैं नहीं हूं बल्कि मेरे अन्दर ईसा ज़िन्दा हैं"

इन्हीं मानों में एक सूफ़ी ने कहा है :—

"अगरचे क़ुरान पैग़म्बर मोहम्मद के होंटों से निकला फिर भी जो कोई यह कहे कि यह अल्लाह ने नहीं कहा वह काफ़िर यानी अविश्वासी है."

गीता में लिखा है कि "ईश्वर ही सब प्राणियों के दिल के अन्दर बैठा हुआ अपनी माया से सब को इस तरह चला रहा है जिस तरह कुम्हार अपने चाक पर चढ़े हुए बरतनों को घुमाता है"

उपनिषदों में यह बात बहुत अच्छी तरह तफ़सील से बयान की गई है. जो आत्मा या रूह सबके साथ प्रेम में डूब कर सबकी अन्तरात्म यानी ईश्वर के लिये अपने अन्दर के पटों को खोल देती है ईश्वर उसके अन्दर भर जाता है और फूल की तरह खिल पड़ता है. ईश्वर और ईश्वर का प्रेमी दोनों एक हैं.

गीता में लिखा है :—

"जो कोई भक्ति के साथ मेरा भजन करते हैं वह मुझमें रहते हैं और मैं उनमें रहता हूं."

भागवत में ईश्वर ने अपने को 'दासों का दास, यानी अपने सेवकों का सेवक कहा है.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"अल्लाह कहता है कि जो कोई एक बालिश्त मेरी तरफ़ बढ़ता है मैं एक हाथ उसकी तरफ़ बढ़ता हूं."

गीता में लिखा है :—

"जो कोई सबके अन्दर मुझे देखता है और सबको मेरे अन्दर देखता है वह न फिर कभी मुझे खो सकता है और न मैं उसे खो सकता हूं."

इश्क़ यानी प्रेम का मतलब ही मिलन है. यही भक्ति यानी इबादत का मक़सद है. जीव का ईश्वर में मिल जाना रूह का रूह-उल-अरवाह में मिल जाना यही निजात यानी मोक्ष है.

کبیر صاحب کے اِس پد میں بھی خودی' اہنکار یعنی اپنے اس الگ آپ کو ہی وہ سر کہا گیا ہے جسے کاٹنے یا اتار دینے کی ضرورت ہے .

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

" کیا تم اس بات پر وشواس نہیں کرتے کہ میں اپنے پتا ایشور کے اندر ہوں اور میرا پتا ایشور میرے اندر ہے؟ جو شبد میں تم سے کہتا ہوں وہ میں اپنے آپ نہیں کہتا' بلکہ وہ پتا جو میرے اندر رہتا ہے وہی سب کچھ کہتا رہتا ہے ."

سینٹ پال نے کہا ہے :—

" میں زندہ ہوں لیکن میں میں نہیں ہوں بلکہ میرے اندر عیسیٰ زندہ ہیں ."

انہیں معنی میں ایک صوفی نے کہا ہے :—

" اگرچہ قرآن پیغمبر محمد کے ہونٹوں سے نکلا پھر بھی جو کوئی یہ کہے کہ یہ اللہ نے نہیں کہا وہ کافر یعنی اوشواسی ہے ."

گیتا میں لکھا ہے کہ " ایشور ہی پرانیوں کے دل کے اندر بیٹھا ہوا اپنی مایا سے سب کو اس طرح چلا رہا ہے جس طرح کمہار اپنے چاک پر چڑھے ہوئے برتنوں کو گھماتا ہے ."

اپنشدوں نے یہ بات بہت اچھی طرح تفصیل سے بیان کی گئی ہے . جو آتما یا روح سب کے ساتھ پریم میں ڈوب کر سب کی انتر آتما یعنی ایشور کے لئے اپنے اندر کے پٹوں کو کھول دیتی ہے ایشور اس کے اندر بھر جاتا ہے اور پھول کی طرح کھل پڑتا ہے . ایشور اور ایشور کا پریمی دونوں ایک ہیں .

گیتا میں لکھا ہے :—

" جو کوئی بھکتی کے ساتھ میرا بھجن کرتے ہیں وہ مجھ میں رہتے ہیں اور میں اِن میں رہتا ہوں ."

بھاگوت میں ایشور نے اپنے کو 'داسوں کا داس' یعنی اپنے سیوکوں کا سیوک کہا ہے .

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

" اللہ کہتا ہے کہ جو کوئی ایک بالشت میری طرف بڑھتا ہے میں ایک ہاتھ اس کی طرف بڑھتا ہوں ."

گیتا میں لکھا ہے :

" جو کوئی سب کے اندر مجھے دیکھتا ہے اور سب کو میرے اندر دیکھتا ہے وہ نہ پھر کبھی مجھے کھو سکتا ہے اور نہ میں اُسے کھو سکتا ہوں ."

عشق یعنی پریم کا مطلب ہی ملن ہے . یہی بھکتی یعنی عبادت کا مقصد ہے . جیو کا ایشور میں مل جانا روح کا روح الارواح میں مل جانا یہی نجات یعنی موکش ہے .

एक ईसाई महात्मा ने इसे और भी अच्छी तरह से कहा है :—

"बैथलेहम (वह शहर जहां हज़रत ईसा पैदा हुए थे) में ईसा अगर हज़ार बार भी पैदा हों लेकिन तुम्हारे अपने अन्दर उनका जन्म न हो तो तुम्हारी आत्मा सूनी की सूनी ही रहेगी. तुम 'गालगोथा' (हज़रत ईसा के सूली चढ़ने की जगह) में क्रास को फ़जूल ढूंढते फिरते हो. क्रास गाड़ना है तो अपने अन्दर गाड़ो."

एक और सूफ़ी ने हज़रत नूह से नक़ल किया है :—

'ऐ अविश्वासी लोगो ! अब मैं मैं नहीं हूं मैं अपनी छोटी जान से मर चुका. अब मैं अपने प्रीतम, सब जानों की जान से ज़िन्दा हूं. अब मेरे अन्दर सारे इनसानी हवास यानी इन्द्रियां जो मुझे दूसरों से अलग करती थीं मर गईं तो हक़ यानी सत्य यानी ईश्वर मेरे अन्दर रहने लगा और वह ही मेरे लिये मेरी आंख, कान और मेरी समझ बन गया. जब मैं मैं नहीं हूं इसलिये मेरी ज़िन्दगी अब उसी हक़ से है इस से पहले जो कुछ मेरे अन्दर जी रहा था वह काफ़िर यानी अविश्वासी मैं था. वह अब ख़तम हो चुका."

महात्मा बुद्ध जिनका पहला नाम गौतम था कहा करते थे कि "मेरे अन्दर का गौतम मर चुका, जो मुझे वही गौतम समझते हैं वह अविश्वासी हैं. जिन्हें विश्वास है वह मुझे अब बुद्ध जानते हैं. इस जीवन के अन्दर मैं निर्वाण प्राप्त कर चुका."

इंजील में बार बार आता है :—

"जो कोई अपनी ज़िन्दगी को बचा कर रखेगा वह ज़िन्दगी खो देगा, और जो कोई ईश्वर के लिये यानी प्राणीमात्र के लिये अपनी ज़िन्दगी को मिटा देगा वह ज़िन्दगी हासिल कर लेगा."

"जो कोई इस ज़िन्दगी से प्यार करता है वह ज़िन्दगी खो देगा और जो इस दुनिया की ज़िन्दगी से नफ़रत करता है वह अनन्त ज़िन्दगी हासिल कर लेगा."

कबीर साहब ने कहा है :—

सिर राखे सिर जात है
सिर काटे सिर होय
जैसे बाती दीप की
कटि उजियारा होय
सीस उतारे भुईं धरे
ता पर राखै पांव
दास कबीरा यों कहे
ऐसा होय तो आओ

ایک عیسائی مہاتما نے اسے اور بھی اچھی طرح سے کہا ہے :—

"بیتھلیہم (وہ شہر جہاں حضرت عیسیٰ پیدا ہوئے تھے) میں عیسیٰ اگر ہزار بار بھی پیدا ہوں لیکن تمہارے اپنے اندر ان کا جنم نہ ہو تو تمہاری آتما سونی کی سونی ہی رہے گی. تم 'گال گوتھا' (حضرت عیسیٰ کے سولی چڑھنے کی جگہ) میں کراس کو فضول ڈھونڈتے پھرتے ہو. کراس گاڑنا ہے تو اپنے اندر گاڑو."

ایک اور صوفی نے حضرت نوح سے نقل کیا ہے :—

"اے اوشواسی لوگو! اب میں میں نہیں ہوں. میں اپنی چھوٹی جان سے مر چکا اب میں اپنے پریتم' سب جانوں کی جان سے زندہ ہوں. اب میرے اندر سارے انسانی حواس یعنی اندریاں جو مجھے دوسروں سے الگ کرتی تھیں مر گئیں تو حق یعنی ستیہ یعنی ایشور میرے اندر رہنے لگا اور وہی میرے لئے میری آنکھ' کان اور میری سمجھ بن گیا. جب میں میں نہیں ہوں اس لئے میری زندگی اب اسی حق سے ہے. اس سے پہلے جو کچھ میرے اندر جی رہا تھا وہ کافر یعنی اوشواسی میں تھا. وہ اب ختم ہو چکا."

مہاتما بدھ جی کا پہلا نام گوتم تھا کہا کرتے تھے کہ "میرے اندر کا گوتم مر چکا' جو مجھے وہی گوتم سمجھتے ہیں وہ اوشواسی ہیں. جنہیں وشواس ہے وہ مجھے اب بدھ جانتے ہیں. اس جیون کے اندر میں نروان پراپت کر چکا."

انجیل میں بار بار آتا ہے :—

"جو کوئی اپنی زندگی کو بچا کر رکھے گا وہ زندگی کھو دے گا اور جو کوئی ایشور کے لئے یعنی پرانی ماتر کے لئے اپنی زندگی کو مٹا دے گا وہ زندگی حاصل کر لے گا."

"جو کوئی اس زندگی سے پیار کرتا ہے وہ زندگی کھو دے گا اور جو اس دنیا کی زندگی سے نفرت کرتا ہے وہ اننت زندگی حاصل کر لے گا."

کبیر صاحب نے کہا ہے :—

سر راکھے سر جات ہے
سر کاٹے سر ہوئے
جیسے باتی دیپ کی
کٹی اجیارا ہوئے
سیس اتارے بھوئیں دھرے
تاپر راکھے پاؤں
داس کبیرا یوں کہے
ایسا ہوئے تو آؤ

यानी ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है, वही ब्रह्म मैं हूं, कोई ग़ैर है ही नहीं.

सूफ़ी ने कहा :—

"आरिफ़ो मारूफ़ बमानी यकस्त
आंकि ख़ुदारा बेशनासद ख़ुदास्त"

यानी जानने वाला और जो जाना जाये दोनों एक ही हैं, जिस किसी ने ख़ुदा को पहचान लिया वह ख़ुदा है.

पुरानों में लिखा है कि "अपनी बुरी वासनाओं के कांटे को अच्छी वासनाओं के कांटों से निकाल कर बाहर फेंक देना चाहिये और फिर उस अच्छी वासनाओं वाले हाथ के कांटे को भी फेंक देना चाहिये. आदमी मामूली ज़िन्दगी में भी जब एक कांटे से अपने पैर के कांटे को निकाल कर फेंक देता है तो फिर उस हाथ के कांटे को भी अपने से उतनी ही दूर फेंक देता है."

इसी ख़याल को सूफ़ी ने बड़ी अच्छी तरह ज़ाहिर किया है. वह कहता है :—

"सर बिरहना नेस्तम, दारम कुलाहे चार तर्क
तर्के दुनिया, तर्के उक़बा, तर्के मौला, तर्के तर्क"

यानी मेरा सिर नंगा नहीं है, चार तरह के त्याग की टोपी मेरे सिर पर है—पहले उस दुनिया के लिये इस दुनिया का त्याग, फिर मौला यानी अल्लाह के लिये उस दुनिया का त्याग, फिर त्याग के लिये मौला का भी त्याग यानी कोई ग़ैर रहे ही न और फिर आख़िर में इस त्याग का भी त्याग.

महाभारत में लिखा है :—

"अधर्म से अपने लगाव को हटा कर अधर्म को छोड़ देना चाहिये. उसके बाद अपने संकल्प यानी इच्छा मात्र को मिटा कर धर्म को भी छोड़ देना चाहिये. इसी तरह अपनी बुद्धि को चमका कर सच और झूट दोनों को छोड़ देना चाहिये और जब भगवान का निश्चय हो जावे तो बुद्धि को भी छोड़ देना चाहिये. इन सब से ऊपर उठ कर जिस त्याग भावना से इन सब को त्यागा है उसका भी दूर फेंक देना चाहिये."

जब आदमी इस हालत को पहुंच जाता है तब उसके लिये बन्धन और मोक्ष, सुख और दुख, पाप और पुन्य कोई चीज़ नहीं रह जाते. उपनिषदों ने इस हालत को तरह तरह से बयान किया है. यही असली मुक्ति यानी निजात है. सूफ़ियों ने भी इसे इसी तरह के शब्दों में बयान किया है. एक सूफ़ी का यह कहना बड़े महत्व का है :—

"जब तक नफ़्स यानी मन रूह यानी आत्मा के क़ाबू में नहीं होगी तब तक आदमी का ज़ख़्मी दिल न अच्छा हो सकता है और न आराम पा सकता है."

یعنی برہم کو جاننے والا برہم ہی ہو جاتا ہے، وہی برہم میں ہوں، کوئی غیر ہے ہی نہیں ۔

صوفی نے کہا ہے :—

"عارف و معروف بامعنی یک است
آنکہ خدا را بہ شناسد خدا ست"

یعنی جاننے والا اور جو جانا جائے دونوں ایک ہی ہیں، جس کسی نے خدا کو پہچان لیا وہ خدا ہے ۔

پرانوں میں لکھا ہے کہ "اپنی بری واسناؤں کے کانٹے کو اچھی واسناؤں کے کانٹوں سے نکال کر باہر پھینک دینا چاہئے اور پھر اس اچھی واسناؤں والے ہاتھ کے کانٹے کو بھی پھینک دینا چاہئے۔" آدمی معمولی زندگی میں بھی جب ایک کانٹے سے اپنے پیر کے کانٹے کو نکال کر پھینک دیتا ہے تو پھر اس ہاتھ کے کانٹے کو بھی اپنے سے اتنی دور پھینک دیتا ہے۔

اسی خیال کو صوفی نے بڑی اچھی طرح ظاہر کیا ہے۔ وہ کہتا ہے :—

"سر برہنہ نیستم، دارم کلاہ چار ترک
ترک دنیا، ترک عقبیٰ، ترک مولا، ترکِ ترک"

یعنی میرا سر ننگا نہیں ہے، چار طرح کے تیاگ کی ٹوپی میرے سر پر ہے—پہلے اس دنیا کے لئے اس دنیا کا تیاگ، پھر مولا یعنی اللہ کے لئے اس دنیا کا تیاگ، پھر تیاگ کے لئے مولا کا بھی تیاگ یعنی کوئی غیر رہے ہی نہ اور پھر آخر میں اس تیاگ کا بھی تیاگ ۔

مہابھارت میں لکھا ہے :—

"ادھرم سے اپنے لگاؤ کو ہٹا کر ادھرم کو چھوڑ دینا چاہئے۔ اس کے بعد اپنے سنکلپ یعنی اچھا ماتر کو مٹا کر دھرم کو بھی چھوڑ دینا چاہئے۔ اسی طرح اپنی بدھی کو چمکا کر سچ اور جھوٹ دونوں کو چھوڑ دینا چاہئے اور جب بھگوان کا نشچے ہو جائے تو بدھی کو بھی چھوڑ دینا چاہئے۔ ان سب سے اوپر اٹھ کر جس تیاگ بھاونا سے ان سب کو تیاگا ہے اس کو بھی دور پھینک دینا چاہئے۔"

جب آدمی اس حالت کو پہنچ جاتا ہے تب اس کے لئے بندھن اور موکش، سکھ اور دکھ، پاپ اور پن کوئی چیز نہیں رہ جاتے۔ اپنشدوں نے اس حالت کو طرح طرح سے بیان کیا ہے۔ یہی اصلی مکتی یعنی نجات ہے۔ صوفیوں نے بھی اسے اسی طرح کے شبدوں میں بیان کیا ہے۔ ایک صوفی کا یہ کہنا بڑے مہتو کا ہے :—

"جب تک نفس یعنی من روح یعنی آتما کے قابو میں نہیں ہوتی تب تک آدمی کا زخمی دل نہ اچھا ہو سکتا ہے اور نہ آرام پا سکتا ہے۔"

करना और उसी के अनुसार अमल करने की पूरी कोशिश करते रहना यही वह रास्ता है जिससे धीरे धीरे आदमी केवल दिमाग़ी ज्ञान से साक्षात्कार तक यानी शुनीदा से दीदा तक पहुंच जाता है.

चीन के कनफ़ूशियस मत में कहा गया है :—

"जेन" सब नेकियों की बुनियाद है. यही हमदर्दी है, यही दूसरों के साथ अपनी एकता अनुभव करना है, इसी से यह सुनहरा असूल निकला है कि दूसरों के साथ कोई ऐसा सलूक न करो जो तुम नहीं चाहते कि वह तुम्हारे साथ करें. इसी का नाम 'ताओ' है हर आदमी को इस रास्ते पर चलना पड़ता है. दूसरों के साथ अपनी एकता अनुभव करना ही 'ताओ' है और 'ताओ' ही यह एकता है. बिना इसके कोई सुनहरे असूल पर डट कर नहीं चल सकता. दुनिया की सब नेकियां 'जेन' से पैदा होती हैं, जैसे वफ़ादारी, मां बाप और बड़ों का आदर, बहादुरी, ठीक समझ, मुनासिब बरताव, वचन पूरा करना, नेकी और इन साफ़, बर्दाश्त, दया, प्रेम और परोपकार. दुनिया में नैतिक असूल दो ही हैं--एक हमदर्दी यानी सब का भला चेतना और दूसरा इसके ख़िलाफ़ ख़ुद ग़रज़ी यानी अहंकार. हमदर्दी ही 'जेन' है. यही असली मनुष्य है. इसी से प्रेम पैदा होता है. इसी से सच्ची ख़ुशहाली, दयालुता, उदारता, रवादारी, सच्चाई और आत्म त्याग जनम लेते हैं. जब आदमी अपने दिल की ऊंची आवाज़ पर चलता है लेकिन कभी इनसाफ़ या एतदाल से इधर उधर नहीं जाता तब वह अपने अन्दर एक सच्चा तवाज़ुन, एक सच्ची समता पैदा करता है. तब वह ख़ुद 'जेन' हो जाता है. तब उसे 'सेंग जेन' कहने लगते हैं जिसका अर्थ है 'पाक आदमी' या 'साधू'. तब वह इतनी आज़ादी और बे गुनाही के साथ चलने फिरने लगता है जिस तरह कल का पैदा हुआ बच्चा. फिर वह जो कुछ करता है वह कभी 'चुंगताओ' यानी मध्यम मार्ग से नहीं भटकता."

ऊपर के वाक्यों में वही बात कही गई है जो वेदान्त और तसव्वुफ़ में कही गई है. 'ताओ' ही असली दीन और धर्म है, और 'सेंग जेन' का वही मतलब है जो 'ब्रह्म भूत' या 'जीवन मुक्त, या 'इनसाने कामिल' का है.

सूफ़ी कहता है :—

"नेस्त अन्दर जुब्बा अम ग़ैर अज़ ख़ुदा"

यानी मेरे चोगे के अन्दर सिवाय ख़ुदा के और कोई है ही नहीं.

उपनिषद में लिखा है :—

"ब्रह्म वेद ब्रह्म व भवति
तद् ब्रह्मास्मि ब्रह्म अद्वयम्"

کرنا اور اسی کے انوسار عمل کرنے کی پوری کوشش کرتے رہنا یہی وہ راستہ ہے جس سے دھیرے دھیرے آدمی کیول دماغی گیان سے ساکشاتکار تک یعنی شنیدہ سے دیدہ تک پہنچ جاتا ہے۔

چین کے کنفیوشس مت میں کہا گیا ہے :—

"جین' سب نیکیوں کی بنیاد ہے۔ یہی ہمدردی ہے، یہی دوسروں کے ساتھ اپنی ایکتا انوبھو کرنا ہے، اسی سے یہ سنہرا اصول نکلا ہے کہ دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا سلوک نہ کرو جو تم نہیں چاہتے کہ وہ تمہارے ساتھ کریں۔ اسی کا نام 'تاؤ' ہے۔ ہر آدمی کو اس راستے پر چلنا پڑتا ہے۔ دوسروں کے ساتھ اپنی ایکتا انوبھو کرنا ہی 'تاؤ' ہے اور 'تاؤ' ہی یہ ایکتا ہے۔ بنا اس کے کوئی سنہرے اصول پر ڈٹ کر نہیں چل سکتا۔ دنیا کی سب نیکیاں 'جین' سے پیدا ہوتی ہیں، جیسے وفاداری، ماں باپ اور بڑوں کا آدر، بہادری، ٹھیک سمجھ، مناسب برتاؤ، بچن پورا کرنا، نیکی اور انصاف، برداشت، دیا، پریم اور پروپکار۔ دنیا میں نیتک اصول دو ہی ہیں—ایک ہمدردی یعنی سب کا بھلا چیتنا اور دوسرا اس کے خلاف خود غرضی یعنی اہنکار۔ ہمدردی ہی 'جین' ہے۔ یہی اصلی منش ہے۔ اسی سے پریم پیدا ہوتا ہے۔ اسی سے سچی خوشحالی، دیالوتا، اُدارتا، رواداری، سچائی اور آتم تیاگ جنم لیتے ہیں۔ جب آدمی اپنے دل کی اونچی آواز پر چلتا ہے لیکن کبھی انصاف یا اعتدال سے ادھر ادھر نہیں جاتا تب وہ اپنے اندر ایک سچا توازن، ایک سچی سمتا پیدا کرتا ہے۔ تب وہ خود 'جین' ہو جاتا ہے۔ تب اسے 'سینگ جین' کہنے لگتے ہیں جس کا ارتھ ہے 'پاک آدمی' یا 'سادھو'۔ تب وہ اتنی آزادی اور بےگناہی کے ساتھ چلنے پھرنے لگتا ہے جس طرح کل کا پیدا ہوا بچہ۔ پھر وہ جو کچھ کرتا ہے وہ کبھی 'چنگ تاؤ' یعنی مدھیم مارگ سے نہیں بھٹکتا۔"

اوپر کے واکیوں میں وہی بات کہی گئی ہے جو ویدانت اور تصوف میں کہی گئی ہے۔ تاؤ ہی اصلی دین اور دھرم ہے، اور 'سینگ جین' کا وہی مطلب ہے جو 'برہم بھوت' یا جیون مکت یا 'انسان کامل' کا ہے۔

صوفی کہتا ہے :—

"نیست اندر جبہ ام غیر از خدا۔"

یعنی میرے چغے کے اندر سوائے خدا کے اور کوئی ہے ہی نہیں۔

اپنشد میں لکھا ہے :—

"برہم وید برہمیو بھوتی
"تدبرہماسمی برہم ادویم"

हमारे अन्दर का परमात्मा

(डाक्टर भगवानदास)

दुनिया के सब धर्म इस बात पर ज़ोर देते हैं कि परमात्मा सब के अन्दर है. गीता में लिखा है :—"ऐ अर्जुन, ईश्वर सब प्राणियों के दिल के अन्दर रहते हैं." क़ुरान में लिखा है :—'इनसान का दिल रहमान का घर है" इससे साफ़ नतीजा निकलता है कि सब के अन्दर एक ही नूर है, एक ही जान है, एक ही आत्मा है. किसी भी हालत में अगर हम अपनी अन्तरात्मा यानी अपने अन्दर के उस ख़ुदा से सलाह लेते रहें, रास्ता पूछते रहें और उसी की सलाह पर उसी के बताए रास्ते पर चलते रहें तो हम कभी धोका नहीं खा सकते. कठिनाई यह है कि इनसान के अन्दर की ख़ुदी ख़ुदा की आवाज़ को दबा देने की कोशिश करती रहती है. यही खेंचातानी हर आदमी के अन्दर की खेंचातानी है. कम या ज़ियादा यह हर एक के अन्दर हर समय होती रहती है. आदमी का धर्म है कि हर समय अपनी ख़ुदी को दबाता और ख़ुदा की आवाज़ को उभारता रहे. इसी खेंचातानी को सूफ़ी लोग 'नफ़्से रहमानी' और 'नफ़्से अम्मारा' के बीच की खेंचातानी कहते हैं. नफ़्से रहमानी को वेदान्त में 'ब्रह्म भूत' और नफ़्से अम्मारा को 'अहंकार' कहा गया है। इन्हीं को 'शुभ वासना' और 'अशुभ वासना' 'एकता' और 'भेद बुद्धि' कहते हैं. इस 'भेद बुद्धि' को ही 'तफ़रक़ा' 'इनफ़िसाल' और 'ग़ैरियत' भी कहते हैं, यानी जुदाई का ख़याल. एकता को अभेद बुद्धि. वहदत इत्तिसाल और ऐनियत भी कहा जाता है. ग़ैरियत ही स्वार्थ है. एकता परार्थ और परमार्थ है. इन्हीं दोनों हालतों को ख़ुदग़रज़ी और बेग़रज़ी दोष और गुन, रज़ायल और फ़ज़ायल नाम भी दिये जाते हैं अंग्रेज़ी में इसी से होते होते एक तरफ़ कम्पिटीटिवनैस यानी प्रतिस्पर्धा और रक़ाबत है और दूसरी तरफ़ कोआपरेटिवनैस यानी सहयोग और मिल कर काम करने की भावना है. एक तरफ़ इनडिवीजुअलिज़्म यानी अपनी अपनी आपाधापी है और दूसरी तरफ़ अच्छे से अच्छे मानों में सोशलिज़्म और कम्युनिज़्म यानी समाजवाद और साम्यवाद हैं. कम्युनिज़्म यानी साम्यवाद का असली रूप यही है कि हम सब के अन्दर एक आत्मा को देखें. सच्ची मानव एकता इसी से पैदा हो सकती है. इसी से एक दरजे तक आर्थिक यानी माली बराबरी समाज में आ सकती है. यह सारी बात आदमी बराबर सोचने और उस पर अमल करते रहने से ही धीरे धीरे समझता है. दिमाग़ से समझना, दिल से अनुभव

ہمارے اندر کا پرماتما

(ڈاکٹر بھگوان داس)

دنیا کے سب دھرم اس بات پر زور دیتے ہیں کہ پرماتما سب کے اندر ہے. گیتا میں لکھا ہے :—"اے ارجن' ایشور سب پرانیوں کے دل کے اندر رہتے ہیں." قرآن میں لکھا ہے :—"انسان کا دل رحمان کا گھر ہے." اس سے صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ سب کے اندر ایک ہی نور ہے' ایک ہی جان ہے' ایک ہی آتما ہے. کسی بھی حالت میں اگر ہم اپنی انترآتما یعنی اپنے اندر کے اس خدا سے صلاح لیتے رہیں' راستہ پوچھتے رہیں اور' اسی کی صلاح پر اسی کے بتائے راستے پر چلتے رہیں تو ہم کبھی دھوکا نہیں کھا سکتے. کٹھنائی یہ ہے کہ انسان کے اندر کی خودی خدا کی آواز کو دبا دینے کی کوشش کرتی رہتی ہے. یہی کھینچا تانی ہر آدمی کے اندر کی کھینچا تانی ہے. کم یا زیادہ یہ ہر ایک کے اندر ہر سمے ہوتی رہتی ہے. آدمی کا دھرم ہے کہ ہر سمے اپنی خودی کو دباتا اور خدا کی آواز کو ابھارتا رہے. اسی کھینچا تانی کو صوفی لوگ 'نفس رحمانی' اور 'نفس امارا' کے بیچ کی کھینچا تانی کہتے ہیں. نفس رحمانی کو ویدانت میں 'برہم بھوت' اور نفس امارا کو 'اہنکار' کہا گیا ہے. انہیں کو 'شبھ واسنا' اور 'اشبھ واسنا' 'ایکتا' اور 'بھید بدھی' کہتے ہیں. اس 'بھید بدھی' کو ہی 'تفرقہ' 'انفصال' اور 'غیریت' بھی کہتے ہیں' یعنی جدائی کا خیال. ایکتا کو ابھید بدھی' وحدت' اتصال اور عینیت بھی کہا جاتا ہے. غیریت ہی سوارتھ ہے. ایکتا پرارتھ اور پرمارتھ ہے. انہیں دونوں حالتوں کو خودغرضی اور بےغرضی' دوش اور گن' رذایل اور فضایل نام بھی دئے جاتے ہیں. انگریزی میں اسی سے ہوتے ہوتے ایک طرف کمپیٹیٹونس یعنی پرتی اسپردھا اور رقابت ہے اور دوسری طرف 'کوآپریٹیونس' یعنی میل کر کام کرنے کی بھاونا ہے. ایک طرف انڈیویجولزم یعنی اپنی اپنی آپا دھاپی ہے اور دوسری طرف اچھے سے اچھے معنی میں سوشلزم اور کمیونزم یعنی سماجواد اور سامیہ واد ہیں. کمیونزم یعنی سامیہ واد کا اصلی روپ یہی ہے کہ ہم سب کے اندر ایک آتما کو دیکھیں. سچی مانو ایکتا اسی سے پیدا ہو سکتی ہے. اسی سے ایک درجے تک آرتھک یعنی مالی برابری سماج میں آسکتی ہے. یہ ساری بات آدمی برابر سوچنے اور اس پر عمل کرتے رہنے سے ہی دھیرے دھیرے سمجھتا ہے. دماغ سے سمجھنا' دل سے انوبھو

झपकी थीं चन्द लड़कियां बहकी क़तार में
कुछ दूर एक खेत की कंचन बहार में

दमकी सी कनपटी पे पसीने की धारियां
शाने से भी ढली हुई बेरंग सारियां

होंठों पे सावनी वह तराने कि बन हिले
सीनों का ज़ेरो बम कि कहीं दिल से दिल मिले

गीतों के बोल सुर में भरे सोग में रचे
ग़मज़े भी हुस्नो इश्क़ की ज़द से बचे बचे

पलकों पे शर्म जैसे संभाले किसी का राज़
गरदन का ख़म कि रूह से निकली हुई नमाज़

चेहरे पर फ़िक्र नानेजवीं, बालापन की सोच
मेहनत से सोगवार बदन में बला का लोच

मायूसियों की ख़ाक से मुखड़ा अटा हुआ
परदा दरे शबाब था आंचल फटा हुआ

आंखों में ख़ुवाहिशात की मद्धिम चमक दमक
नस नस में एक सहमी हुई उम्र की कसक

नागाह जोशे वहशते ख़ातिर सिवा हुआ
मैं चल दिया वहां से यही सोचता हुआ

कैफ़ियतों में हुस्न के इतना हिरास क्यों ?
क़ुदरत हरी भरी है तो फ़ितरत उदास क्यों ?

لچکی تھیں چند لڑکیاں بہکی قطار میں
کچھ دور ایک کھیت کی کنچن بہار میں

دمکی سی کنپٹی پہ پسینے کی دھاریاں
شانے سے بھی ڈھلی ہوئی بےرنگ ساریاں

ہونٹوں پہ ساونی وہ ترانے کہ بن ہلے
سینوں کا زیر و بم کہ کہیں دل سے دل ملے ۔

گیتوں کے بول سر میں بھرے سوگ میں رچے
غمزے بھی حسن و عشق کی زد سے بچے بچے

پلکوں پہ شرم جیسے سنبھالے کسی کا راز
گردن کا خم کہ روح سے نکلی ہوئی نماز

چہرے پہ فکر نانِ جویں بالاپن کی سوچ
مشقت سے سوگوار بدن میں بلا کا لوچ

مایوسیوں کی خاک سے مکھڑا اٹا ہوا
پردہ در شباب تھا آنچل پھٹا ہوا

آنکھوں میں خواہشات کی مدھم چمک دمک
نس نس میں ایک سہمی ہوئی عمر کی کسک

ناگاہ جوشِ وحشتِ خاطر سوا ہوا
میں چلدیا وہاں سے یہی سوچتا ہوا

کیفیتوں میں حسن کے اتنا ہراس کیوں ؟
قدرت ہری بھری ہے تو فطرت اداس کیوں ؟

फ़लक—आसमान; ख़ुन्क—ठंडी; शादाबियों—हरियाली; ज़ेरोबम—ऊपर नीचे; ग़मज़े—भाव भंगिमा; ख़म—झुकाव; नानेजवीं—खाना; दर—दरवाज़ा; शबाब—जवानी; नागाह—यकायक; वहशत—उलझन; कैफ़ियतों—आनन्द; फ़ितरत—प्रकृति;

فلک—آسماں؛ خنک—ٹھنڈی؛ شادابیوں—ہریالی؛ شانے—کندھے؛ زیر و بم—اوپر نیچے؛ غمزے—ناز بھنگما؛ خم—جھکاؤ؛ نانِ جویں—کھانا؛ در—دروازہ؛ شباب—جوانی؛ ناگاہ—یکایک؛ وحشت—الجھن؛ کیفیتوں—آنند؛ فطرت—پرکرتی؛

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 15 नवम्बर, सन '53 नम्बर 5

جلد 15 نومبر، سن '53 نمبر 5

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

वह घड़ियां !

(शहाब सरमदी)

[जिस वातावरन पर इस कविता का आधार है उसकी जानकारी के बिना कविता का रस आधा रह जाता है. कवि घोड़ा उड़ाता चला जा रहा है– घास की कोंपलों को रौंदता हुआ, खेतों की छाती को खोंदता हुआ. नीचे क्या हो रहा है इससे बेख़बर वह कहीं दूर फ़िज़ा में देख रहा है. यकायक दूर से कुछ सुन्दर गीतों के बोल सुनाई पड़ते हैं. रसिक आत्मा आनन्द से मस्त हो उठती है, वह उसी आनन्द में तल्लीन हो जाता है. अपना काम भूल जाता है. मंज़िल भूल जाता है. अपने को भूल जाता है लेकिन......बदक़िस्मती को क्या करे कोई! जब गीत के स्रोत पर पहुँचा तो सारा गीत ही ख़त्म हो गया. गाने वालों की मस्ती और चंचलता ग़ायब हो गई. घोड़े, अंगरेज़ी कपड़े बड़पन, अफ़सरी ठाट का भयानक डर उनकी आंखों में छलकने लगा. फ़ितरत का पुजारी शायर कुछ देर अचरज में खड़ा रहा और फिर एक ठन्डी सांस भर कर नीचे की पंक्तियां गुनगुनाता आगे बढ़ गया—ऐडीटर]

बरखा की रुत, घटाओं, में हलचल, पराया देश
हर सांस दे रही थी मुझे एक नया संदेश

रह रह के बन रही थी मेरे हक़ में दुशमनी
कोमल मगर कठोर हवाओं की सन सनी

उलझे फ़लक पे सुरमई बादल की सलवटें
बिखरी हुई फ़िज़ाओं में बरसात की लटें

रूहे ख़ुनक थी सबज़े के अन्दर रची हुई
शादाबियों की धूम भी हर सू मची हुई

وہ گھڑیاں!

(شہاب سرمدی)

[جس واتاورن پر اِس کویتا کا آدھار ہے اُس کی جانکاری کے بنا کویتا کا رس آدھا رہ جاتا ہے۔ کوی گھوڑا اُڑاتا چلا جا رہا ہے—گھاس کی کونپلوں کو روندتا ہوا، کھیتوں کی چھاتی کو کھوندتا ہوا۔ نیچے کیا ہو رہا ہے اس سے بےخبر وہ کہیں دور فضا میں دیکھ رہا ہے۔ یکایک دور سے کچھ سندر گیتوں کے بول سنائی پڑتے ہیں۔ رسک آتما آنند سے مست ہو جاتی ہے، وہ اُس آنند میں تلّین ہو جاتا ہے، اپنا کام بھول جاتا ہے، منزل بھول جاتا ہے، اپنے کو بھول جاتا ہے۔ لیکن بدقسمتی کو کیا کرے کوئی! جب گیت کے سروت پر پہونچا تو سارا گیت ہی ختم ہو گیا۔ گانے والوں کی مستی اور چنچلتا غائب ہو گئی۔ گھوڑے، انگریزی کپڑے، بڑپن، افسری ٹھاٹ کا بھیانک ڈر اُن کی آنکھوں میں چھلکنے لگا۔ فطرت کا پجاری شاعر کچھ دیر اچرج میں کھڑا رہا اور پھر ایک ٹھنڈی سانس بھر کر نیچے کی پنکتیاں گنگناتا آگے بڑھ گیا—ایڈیٹر]

برکھا کی رت، گھٹاؤں میں ہلچل، پرایا دیس
ہر سانس دے رہی تھی مجھے اک نیا سندیس

رہ رہ کے بن رہی تھی مرے حق میں دشمنی
کومل مگر کٹھور ہواؤں کی سن سنی

اُلجھے فلک پہ سرمئی بادل کی سلوٹیں
بکھری ہوئی فضاؤں میں برسات کی لٹیں

روحِ خنک تھی سبزہ کے اندر رچی ہوئی
شادابیوں کی دھوم بھی ہرسو مچی ہوئی

"नया हिन्द" | "نیا ہند"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी | هندستانی کلچر سوسائٹی

का | کا

माहवारी परचा | ماهواری پرچا

नवम्बर 1953 نومبر

क्या किससे	सफ़ा صفحہ		کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

قیمت—هندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द

एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

1 DEC

* * * * *

हमारी राय

ہماری رائے

नवम्बर 1953 نومبر

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़ियानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہو گیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہو سکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سمجھاوؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائینگے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और क़ाइम रखना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों वगैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, वगैरा से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम दे सकेंगे.

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور برقرار رکھنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں وغیرہ سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم دے سکینگے

हमारे यहाँ मिलने वाली [illegible] — [illegible]

नोट:—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ:—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	8	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलौना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हजरत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से वह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की खास तालीम क्या है और हजरत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

---

700 PAGES,
32 ILLUSTRATION
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE
Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. **—National Herald, Lucknow.**

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known. **—Leader, Allahabad.**

Encyclopaedic...characterised by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. **—Blitz, Bombay.**

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. **—Bharat Jyoti, Bombay.**

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. **—Indian Express, Madras**

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. **—Vigil, Delhi.**

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—
مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الٰہ آباد .

[ब]न रहा है, उसमें खादी और ग्रामोद्योग की तरक्क़ी या बढ़ाने पर उतना ज़ोर नहीं है जितना मिल के माल और बड़े बड़े देसी विदेशी कल कारख़ानों पर. यही कारन है कि 2 अक्तूबर 1952 को जब विकास योजनाएं खोली गईं तो मीरा बहन ने कहा कि "यह बापू के दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने के लिये काफ़ी हैं." विकास योजनाएं या सरकारी निज़ाम खादी से उतना ही दूर रहते हैं जितना कोई पुराने ज़माने का पंडा पुरोहित भंगी या चमार से.

इसलिये हमारा ख़याल है कि सरकार का खादी ख़रीदना या उसको बढ़ावा देना उसके असली मतलब से ध्यान हटाने का ही काम करेगा और खादी के सिसक सिसक कर मरने का ज़िम्मेदार होगा. अगर सरकार को खादी से सचमुच प्यार है तो उसके चाम ही से नहीं उसकी आत्मा से भी नाता जोड़ना चाहिये. यह नाता तभी जुड़ सकता है जब सरकार अपनी मौजूदा व्यापारी, खेती, तालीमी, माली, निज़ामी, फ़ौजी वग़ैरा यानी हर तरह की नीति में, ढंग में और आचार व्योहार में जड़ से परिवर्तन करे और उसकी कसौटी है—हिन्दुस्तान के गांव गांव का अपने पैरों पर खड़ा होना या खाने, कपड़े, मकान, तालीम और दवा दारू जैसी बुनियादी ज़रूरतों में किसी दूसरे या बाहर वाले का मोहताज न होना. ऐसा ग्राम राज क़ायम करना ही खादी का मक़सद है. —सुरेश रामभाई

जا رہا ہے اس میں کھادی اور گرام ادیوگ کی ترقی یا بڑھاوے پر اتنا زور نہیں ہے جتنا مل کے مال اور بڑے بڑے دیشی ودیشی کل کارخانوں پر. یہی کارن ہے کہ 2 اکتوبر 1952 جب وکاس یوجنائیں کھولی گئیں تو میرا بہن نے کہا کہ "یہ باپو کے دل کو ٹکڑے ٹکڑے کردینے کے لئے کافی ہیں." وکاس یوجنائیں یا سرکاری نظام کھادی سے اتنا ہی دور رہتے ہیں جتنا کوئی پرانے زمانہ کا پنڈا پروہت بھنگی یا چمار سے ۔

اس لئے ہمارا خیال ہے کہ سرکار کا کھادی خریدنا یا اس کو بڑھاوا دینا اس کے اصلی مطلب سے دھیان ہٹانے کا ہی کام کرے گا اور کھادی کے سسک سسک کر مرنے کا ذمہ دار ہوگا ۔ اگر سرکار کو کھادی سے سچ مچ پیار ہے تو اس کے چام ہی سے نہیں اس کی آتما سے بھی ناتا جوڑنا چاہئے. یہ ناتا تبھی جڑ سکتا ہے جب سرکار اپنی موجودہ بیوپاری، کھیتی، تعلیمی، مالی، نظامی، فوجی وغیرہ یعنی ہر طرح کی نیتی میں ڈھنگ میں اور آچار بیوہار میں جڑ سے پریورتن کرے اور اس کی کسوٹی ہے— ہندستان کے گاؤں گاؤں کا اپنے پیروں پر کھڑا ہونا یا کھانے، کپڑے، مکان، تعلیم اور دوا دارو جیسی بنیادی ضرورتوں میں کسی دوسرے یا باہر والے کا محتاج نہ ہونا ۔ ایسا گرام راج قائم کرنا ہی کھادی کا مقصد ہے ۔

—سریش رامبھائی

<u>हिन्दी की नई किताब</u>

गंगा से गोमती तक

(मुजीब रिज़वी)

इस किताब में मुजीब रिज़वी की तेरह कहानियां शामिल हैं. इन में से बहुत सी कहानियां 'नया हिन्द' के पाठक पढ़ चुके हैं और उन कहानियों के रस से अच्छी तरह परिचित हैं.

★ इन कहानियों में आजकल की समाजी उलझनों को बेनक़ाब किया गया है.

★ इन कहानियों में घटनाओं के साथ साथ उस हाथ की झलक दिखाई गई है जो इन घटनाओं के पीछे काम करता है.

★ इन कहानियों में जीवन है, सत्य है, चेतना है, इसीलिये मन मोहक असर है.

★ इस संग्रह में किसान, मज़दूर, मध्यम वर्ग सब के जीवन को चित्रित करने वाली कहानियां शामिल हैं.

★ इस संग्रह पर हिन्दी के बड़े बड़े लेखकों ने अपनी राय दी है. वह रायें भी इस संग्रह के साथ पढ़िये.

190 सफ़े की किताब, सुन्दर जिल्द, दाम केवल दो रुपया.

<u>ہندی کی نئی کتاب</u>

گنگا سے گومتی تک

(مجیب رضوی)

اس کتاب میں مجیب رضوی کی تیرہ کہانیاں شامل ہیں ۔ ان میں سے بہت سی کہانیاں 'نیا ہند' کے پاٹھک پڑھ چکے ہیں اور ان کہانیوں کے رس سے اچھی طرح پریچت ہیں ۔

★ ان کہانیوں میں آج کل کی سماجی الجھنوں کو بے نقاب کیا گیا ہے ۔

★ ان کہانیوں میں گھٹناؤں کے ساتھ ساتھ اس ہاتھ کی جھلک دکھائی گئی ہے جو ان گھٹناؤں کے پیچھے کام کرتا ہے ۔

★ ان کہانیوں میں جیون ہے، ستیہ ہے، چیتنا ہے، اسی لئے من موہک اثر ہے ۔

★ اس سنگرہ میں کسان، مزدور، مدھیم ورگ سب کے جیون کو چترت کرنے والی کہانیاں شامل ہیں ۔

★ اس سنگرہ پر ہندی کے بڑے بڑے لیکھکوں نے اپنی رائے دی ہے ۔ وہ رائیں بھی اس سنگرہ کے ساتھ پڑھئے ۔

190 صفحے کی کتاب، سندر جلد، دام کیول دو روپیہ ۔

एक बात हम यह भी साफ़ कर दें कि हम यह नहीं मानते कि जैसा राष्ट्रपति ने कहा है कि खादी फ़ौज और पुलिस की वरदियों के लिये काम नहीं दे सकती. कच्चापन हमारे दिलों में है, खादी में नहीं है. अगर हमारी सरकार अपनी फ़ौज और पुलिस में खादी का इस्तेमाल करने लगे तो खादी की तरक़्क़ी और बढ़ोती में इस से बेहद मदद मिल सकती है. हमने मज़बूत खादी देखी और बरती है. अगर हमारी सरकार अपनी फ़ौज और पुलिस के लिये मिल के सूत और हाथ करघों का तैयार किया हुआ एक ख़ास नमूने का कपड़ा भी काम में लाने लगे तो इस से हमारे लाखों भूके मरते हुए बुनकरों के बच्चे पल सकते हैं. पर हमारी आँखें दूसरी ही तरफ़ लगी हुई हैं. जवाहरलाल जी की बातें भी ख़ास कर यह कि हम गांधी जयन्ती पर तो खद्दर बरतें ही हमें बहुत संतोश देने वाली नहीं लगतीं.

अब रही खादी की आत्मा की बात. सन 1944 में जेल से छूटने के बाद गांधी जी ने कहा था :

"मैंने पहले खादी चलाई, पीछे उसका अभ्यास किया. इस तरह अपने को धोका देता रहा. मैंने लोगों को जो दिया सो दिया, असली चीज़—स्वावलम्बन लोगों को नहीं दे सका. मैंने मज़दूरी के रूप में पैसा दिया और लोगों को कहा कि इसमें स्वराज भरा है. लोगों ने मेरा भरोसा किया और मान लिया आज भी मानते हैं. लेकिन इस विशय में अब मुझे शंका पैदा हुई है कि अब यह कहां तक चल सकेगा. मुझे डर है कि अगर इसी तरीक़े से खादी चलाते रहेंगे तो वह चलने वाली चीज़ ही नहीं."

"अगर बिना सोचे काम चलते रहेंगे तो हम लोगों को भी धोका देंगे और ख़ुद को भी. आज हम उनको रोज़ी क्या देते हैं, एक तरह की भीक ही देते हैं, जैसे पत्थर तुड़वा कर या सड़क बनवा कर अकाल के समय दी जाती है. उसका कोई टिकाऊ मोल नहीं होता."

वह 'टिकाऊ मोल' क्या है? या खादी के पीछे असली मक़सद क्या है? महात्मा जी के शब्दों में :

"असल में जो दावा खादी की कल्पना के पीछे है वह तो गांवों के उठान का है और उसके ज़रिये अपने आप स्वराज की शक्ति जनता में पैदा करने का है."

ज़ाहिर है कि राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने जो चीज़ें कहीं उनसे खादी का 'भीक' वाला पहलू ही सामने आता है. वह खादी की आत्मा को ज़रा भी नहीं छूता. ऐसा होना क़ुदरती है, क्योंकि सरकार की निगाह में खादी गांव के उठान का ज़रिया नहीं है. यही वजह है कि देश में विकास योजनाओं पर जो करोड़ों रुपया ख़र्च किया

ایک بات ہم یہ بھی صاف کر دیں کہ ہم یہ نہیں مانتے کہ جیسا راشٹرپتی نے کہا ہے کہ کھادی فوج اور پولیس کی وردیوں کے لئے کام نہیں دے سکتی. کچاپن ہمارے دلوں میں ہے، کھادی میں نہیں. اگر ہماری سرکار اپنی فوج اور پولیس میں کھادی کا استعمال کرنے لگے تو کھادی کی ترقی اور بڑھوتی میں اس سے بے حد مدد مل سکتی ہے. ہم نے مضبوط کھادی دیکھی اور برتی ہے. اگر ہماری سرکار اپنی فوج اور پولیس کے لئے مل کے سوت اور ہاتھ کرگھوں کا تیار کیا ہوا ایک خاص نمونے کا کپڑا بھی کام میں لانے لگے تو اس سے ہمارے لاکھوں بھوکے مرتے ہوئے بنکروں کے بچے پل سکتے ہیں. پر ہماری آنکھیں دوسری ہی طرف لگی ہوئی ہیں. جواہر لال جی کی باتیں بھی خاص کر یہ کہ ہم گاندھی جینتی پر تو کھدر برتیں ہی ہمیں بہت سنتوش دینے والی نہیں لگتیں.

اب رہی کھادی کی آتما کی بات. سن 1944 میں جیل سے چھوٹنے کے بعد گاندھی جی نے کہا تھا :

"میں نے پہلے کھادی چلائی، پیچھے اس کا ابھیاس کیا. اس طرح اپنے کو دھوکہ دیتا رہا. میں نے لوگوں کو جو دیا سو دیا، اصلی چیز—سواولمبن—لوگوں کو نہیں دے سکا. میں نے مزدوری کے روپ میں پیسہ دیا اور لوگوں کو کہا کہ اس میں سوراج بھرا ہے. لوگوں نے میرا بھروسہ کیا اور مان لیا. آج بھی مانتے ہیں. لیکن اس وشے میں اب مجھے شنکا پیدا ہوئی ہے کہ اب یہ کہاں تک چل سکیگا. مجھے ڈر ہے کہ اگر اسی طریقے سے کھادی چلاتے رہینگے تو وہ چلنے والی چیز ہی نہیں."

"اگر بنا سوچے کام چلتے رہینگے تو ہم لوگوں کو بھی دھوکہ دینگے اور خود کو بھی. آج ہم ان کو روزی کیا دیتے ہیں، ایک طرح کی بھیک ہی دیتے ہیں، جیسے پتھر تڑوا کر یا سڑک بنواکر اکال کے سمے دی جاتی ہے. اس کا کوئی ٹکاؤ مول نہیں ہوتا."

وہ ٹکاؤ مول' کیا ہے؟ یا کھادی کے پیچھے اصلی مقصد کیا ہے؟ مہاتما جی کے شبدوں میں :

"اصل میں جو دعویٰ کھادی کی کلپنا کے پیچھے ہے، وہ تو گاؤں کے اتھان کا ہے اور اس کے ذریعے اپنے آپ سوراج کی شکتی جنتا میں پیدا کرنے کا ہے."

ظاہر ہے کہ راشٹرپتی اور پردھان منتری نے جو چیزیں کہیں ان سے کھادی کا بھیک والا پہلو ہی سامنے آتا ہے. وہ کھادی کی آتما کو ذرا بھی نہیں چھوتا. ایسا ہونا قدرتی ہے، کیونکہ سرکار کی نگاہ میں کھادی گاؤں کے اتھان کا ذریعہ نہیں ہے. یہی وجہ ہے کہ دیش میں وکاس یوجناؤں پر جو کروڑوں روپیہ خرچ کیا

रहे. वरना, सरकार तो आज एक है कल दूसरी, पर हमारे किसान को—देश की करोड़ों जनता को—बिला गुनाह वह चोट पहुंच जाएगी जो कई पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगी और जिसके इलाज करने में अथाह ताक़त और वक़्त खर्च होंगे.

—सुरेश रामभाई

सरकार और खादी

इधर चन्द महीनों से भारत सरकार का ध्यान खादी की तरफ़ गया है और एक 'कुल हिन्द खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड' भी बनाया गया है. पिछली 29 अगस्त को हमारे राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने नई दिल्ली सरकार के मिनिस्टरों और ऊंचे अफ़सरों को राष्ट्रपति भवन में बुला कर खादी के इस्तेमाल के लिये अपील की और कहा :

'मैं यह नहीं कहता कि फ़ौज में खादी का इस्तेमाल हो, न यही कहता हूं कि पुलिस की वर्दी खादी की हो...... लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि राष्ट्रपति भवन और दूसरे विभागों में खादी का इस्तेमाल क्यों न हो. इसलिये मेरा सुझाव है कि सरकार सारे विभागों को—केवल फ़ौज और पुलिस को छोड़ कर—हिदायत कर दे कि कपड़े की ज़रूरत का सामान खादी भंडारों से खरीदा जाय.''

उसी सभा में प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी खादी को "पेट्रोनाइज़"करने की सलाह दी. 11 सितम्बर को जवाहरलाल जी ने गांधी जयन्ती के लिये अपने संदेश के दौरान में कहा :

"खादी अपने करोड़ों भाई बहनों से हमारा नाता जोड़ देती है. इससे भाई चारे और साथ काम करने का वातावरन पैदा होता है......

"कुछ हद तक इस से बेकारी दूर करने में भी मदद मिलती है......

"खादी हमारा एक खास ग्रामद्योग है......

"इस लिये हम को चाहिये कि खादी पहनें, इसका इस्तेमाल करें और हर तरह से इस को बढ़ावा दें......

"खास तौर से, आज के दिन तो—गांधी जयन्ती के दिन—जब और बहुत सी यादें ताज़ी हो जाती हैं—हम यह करें ही."

हो सकता है कि राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री की इन अपीलों से इस गांधी जयन्ती के मौक़े पर खादी की बिक्री बढ़े. लेकिन हमें देखना यह है कि इससे खादी की आत्मा को कितना फ़ायदा पहुंचता है. खादी की आत्मा उस के बिक्री रूपी शरीर से जुदा चीज़ है. खादी की आत्मा से हमारा मतलब है वह खादी जो अहिंसा की निशानी है और ग़रीब से ग़रीब देहाती की बड़ी से बड़ी मदद है.

رہے ۔ ورنہ سرکار تو آج ایک ہے کل دوسری، پر ہمارے کسان کو—دیش کی کروڑوں جنتا کو—بلا گناہ وہ چوٹ پہنچ جائیگی جو کئی پیڑھیوں کو بھگتنا پڑیگی اور جس کے علاج کرنے میں اتھاہ طاقت اور وقت خرچ ہونگے ۔

—سریش رام بھائی

سرکار اور کھادی

اِدھر چند مہینوں سے بھارت سرکار کا دھیان کھادی کی طرف گیا ہے اور ایک 'کل ہند کھادی و گرام اُدیوگ بورڈ' بھی بنایا گیا ہے. پچھلی 29 اگست کو ہمارے راشٹر پتی ڈاکٹر راجیندر پرشاد نے نئی دلی سرکار کے منسٹروں اور اونچے افسروں کو راشٹر پتی بھون میں بلا کر کھادی کے اِستعمال کے لئے اپیل کی اور کہا :

" میں یہ نہیں کہتا کہ فوج میں کھادی کا اِستعمال ہو، نہ یہی کہتا ہوں کہ پولیس کی وردی کھادی کی ہو... لیکن میری سمجھ میں نہیں آتا کہ راشٹر پتی بھون اور دوسرے وبھاگوں میں کھادی کا اِستعمال کیوں نہ ہو...... اِس لئے میرا سجھاؤ ہے کہ سرکار سارے وبھاگوں کو—کیول فوج اور پولیس کو چھوڑ کر—ہدایت کر دے کہ کپڑے کی ضرورت کا سامان کھادی بھنڈاروں سے خریدا جائے ."

اُسی سبھا میں پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے بھی کھادی کو "پیٹرونائز" کرنے کی صلاح دی. 11 ستمبر کو جواہر لال جی نے گاندھی جینتی کے لئے اپنے سندیش کے دوران میں کہا :

" کھادی اپنے کروڑوں بھائی بہنوں سے ہمارا ناتہ جوڑ دیتی ہے . اِس سے بھائی چارے اور ساتھ کام کرنے کا واتاورن پیدا ہوتا ہے......

" کچھ حد تک اِس سے بیکاری دور کرنے میں بھی مدد ملتی ہے......

" کھادی ہمارا ایک خاص گرام اُدیوگ ہے......

" اِس لئے ہم کو چاہئے کہ کھادی پہنیں' اِس کا اِستعمال کریں اور ہر طرح سے اس کو بڑھاویں......

" خاص طور سے' آج کے دن تو—گاندھی جینتی کے دن—جب اور بہت سی یادیں تازی ہو جاتی ہیں—ہم یہ کریں ہی ."

ہو سکتا ہے کہ راشٹر پتی اور پردھان منتری کی اِن اپیلوں سے اس گاندھی جینتی کے موقع پر کھادی کی بکری بڑھے لیکن ہمیں دیکھنا یہ ہے کہ اس سے کھادی کی آتما کو کتنا فائدہ پہنچتا ہے . کھادی کی آتما اُس کے بکری روپی شریر سے جدا چیز ہے . کھادی کی آتما سے ہمارا مطلب ہے وہ کھادی جو اہنسا کی نشانی ہے اور غریب سے غریب دیہاتی کی بڑی سے بڑی مدد ہے .

जाता है और फिर पेशाब व गोबर के रास्ते उन जन्तुओं या कीड़ों को निकाल देता है जो मिट्टी के लिये ज़रूरी हैं और इस तरह क़ुदरत का यह चक्कर चलता रहता है.

ज़ाहिर है कि अगर जानवरों की जगह मशीनों से खेती की जायेगी तो मिट्टी को वह जन्तु नहीं मिलेंगे जो उसे चाहियें. यही नहीं, विलायती खाद की ख़ूबी यह है कि मिट्टी को जन्तु कीड़े देना तो दूर किनार वह उसके रहे सहे जन्तु कीड़े को भी मार देती है. दूसरे शब्दों में, चौथे जी छब्बेजी होने चले थे और रह गए दुबे ही. यही कारन है, जैसा हमने ऊपर कहा है, कि बाहर के देशों की वह ज़मीनें जिनमें यह विलायती खाद वग़ैरा डाली जा रही हैं बेकार होती चली जा रही हैं. इसके ख़िलाफ़ मिस्र वाले हज़ारों बरस से नील नदी की घाटी में खेती कर रहे हैं पर इनकी ज़मीन दुनिया की सबसे अधिक उपजाऊ ज़मीन बनी हुई है.

ज़मीन बरबाद करने के अलावा एक और भयानक नुक़सान इन खादों से हो रहा है. वह यह है कि इन खादों से मिट्टी को फ़ासफ़ोरस, नाइट्रोजन और पोटैशियम तो मिल जाते हैं, जिससे घास पत्ती पैदा हो जाती हैं, मगर जैसा कि अमरीकी साइन्सदां गेलार्ड हाउज़र ने अपनी किताब 'Look Younger' 'Live Longer' में कहा है—"वह सत्रह या ज़ियादा चीज़ें नहीं मिलतीं जो एक पौधे की सेहत के लिये ज़रूरी हैं. इसलिये पौधे रोगी रह जाते हैं, और इसी वजह से उनको खाने वाले जानवर या इनसानों में नई नई कमज़ोरियां आ जाती हैं और बीमारियां बढ़ती हैं. इसके ख़िलाफ़ अगर गोबर या देशी खाद दी जाती है तो पौधे तन्दुरुस्त रहते हैं और उनको इस्तेमाल करने वाले आदमी भी तन्दुरुस्त रहते हैं."

विलायती खाद के बारे में एक मशहूर अंगरेज़ खेतिहर का कहना है कि "इनसे बनावटी ख़ुराक मिलती है जिसे खा कर बनावटी जानवर और बनावटी मर्द औरत बनते हैं." एक दूसरे वैज्ञानिक आई नार्थ बोर्न का कहना है कि—"विलायती खाद और मशीनी खेती के कारन पिछले तीस बरस में जितनी ज़मीन की सत्यानास हुआ उतना दुनिया के पिछले कुल इतिहास में भी नहीं हुआ."

ज़ियादा कहने की ज़रूरत नहीं है. विलायती खाद से फ़ायदा अगर होगा—सो भी रुपये, पैसे में, तो केवल व्यापारियों को होगा—चाहे वह अमरीका के हों, इंगलैण्ड के हों या चाहे हिन्दुस्तान के—या सरकार को. लेकिन किसान को इससे हर दर्जे का नुक़सान है, खेती और धरती की आफ़त ही आफ़त है. भारत सरकार से हम प्रार्थना करेंगे कि वह सिन्दरी के कारख़ाने को बन्द कर दे, विलायती खाद का लेन देन रोका है और इससे आंखों दूर

کھاتا ہے اور پھر پیشاب و گوبر کے راستے اُن جنتوؤں یا کیڑوں کو نکال دیتا ہے جو مٹی کے لئے ضروری ہیں اور اس طرح قدرت کا یہ چکر چلتا رہتا ہے۔

ظاہر ہے کہ اگر جانوروں کی جگہ مشینوں سے کھیتی کی جائے گی تو مٹی کو وہ جنتو نہیں ملیں گے جو اسے چاہئیں یہ ہی نہیں، ولایتی کھاد کی خوبی یہ ہے کہ مٹی کو جنتو، کیڑے دینا تو درکنار وہ اس کے رہے سہے جنتو کیڑے کو بھی مار دیتی ہے۔ دوسرے شبدوں میں، چوبے جی چھبے جی ہونے چلے تھے اور رہ گئے دوبے ہی۔ یہی کارن ہے، جیسا ہم نے اوپر کہا ہے، کہ باہر کے دیشوں کی وہ زمینیں جن میں یہ ولایتی کھاد وغیرہ ڈالی جا رہی ہیں بیکار ہوتی چلی جا رہی ہیں۔ اس کے خلاف مصر والے ہزاروں برس سے نیل ندی کی گھاٹی میں کھیتی کر رہے ہیں پر ان کی زمین دنیا کی سب سے ادھک اُپجاؤ زمین بنی ہوئی ہے۔

زمین برباد کرنے کے علاوہ ایک اور بھیانک نقصان ان کھادوں سے ہو رہا ہے۔ وہ یہ ہے کہ ان کھادوں سے مٹی کو فاسفورس، نائٹروجن اور پوٹیشیم تو مل جاتے ہیں، جس سے گھاس پتی پیدا ہو جاتی ہیں مگر جیسا کی امریکی سائنسداں گیلارڈ ہاؤزر نے اپنی کتاب (Look younger live longer) میں کہا ہے—" وہ سترہ یا زیادہ چیزیں نہیں ملتیں جو ایک پودے کی صحت کے لئے ضروری ہیں۔ اس لئے پودے روگی رہ جاتے ہیں، اور اسی وجہ سے ان کو کھانے والے جانور یا انسانوں میں نئی نئی کمزوریاں آجاتی ہیں اور بیماریاں بڑھتی ہیں۔ اس کے خلاف اگر گوبر یا دیسی کھاد دی جاتی ہے تو پودے تندرست رہتے ہیں اور ان کو استعمال کرنے والے آدمی بھی تندرست رہتے ہیں۔"

ولایتی کھاد کے بارے میں ایک مشہور انگریزی کھیتہر کا کہنا ہے کہ "ان سے بناوٹی خوراک ملتی ہے جسے کھاکر بناوٹی جانور اور بناوٹی مرد عورت بنتے ہیں" ایک دوسرے ویگیانک، آئی نارتھ بورن کا کہنا ہے کہ—"ولایتی کھاد اور مشینی کھیتی کے کارن پچھلے تیس برس میں جتنی زمین کا ستیاناس ہوا اتنا دنیا کے پچھلے کل اتہاس میں بھی نہیں ہوا۔"

زیادہ کہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ ولایتی کھاد سے فائدہ اگر ہوگا سو بھی روپئے، پیسے میں، تو کیول بیوپاریوں کو ہوگا—چاہے وہ امریکہ کے ہوں، انگلینڈ کے ہوں یا چاہے ہندستان کے—یا سرکار کو۔ لیکن کسان کو اس سے ہر درجے کا نقصان ہے، کھیتی اور دھرتی کی آفت ہی آفت ہے۔ بھارت سرکار سے ہم پرارتھنا کریں گے کہ وہ سندری کے کارخانے کو بند کر دے، ولایتی کھاد کا لین دین اٹھا دے اور اس سے کوسوں دور

विलायती खाद से बचिये

हमारी खुद मुख्तार सरकार को जहां और बहुत से शौक़ हैं उनमें एक है विलायती खाद के इस्तेमाल से अनाज की पैदावार को बढ़ाना. पिछली 3 सितम्बर को पार्लियामेन्ट में बोलते हुए खेती मिनिस्टर डाक्टर पंजाब राव देश मुख ने कहा कि नई दिल्ली की सरकार ने सूबों की सरकारों को खाद खरीदने के लिये आठ करोड़ रुपये क़र्ज़ देना तय कर लिया है जिस में से लगभग पौने पांच करोड़ खर्च हो भी चुका है. यह खाद कुछ विदेशों से आती है, ज़ियादातर अमरीका से, और कुछ हिन्दुस्तान में एक सरकारी कारखाने में भी बनती है जो बिहार में सिन्दरी नाम के गांव में है. सिन्दरी फैक्ट्री में एमोनियम सलफेट नाम की खाद खास कर बनाई जाती है. पिछले साल सरकार इसे 365 रुपये टन के हिसाब से बेचती थी लेकिन अब दाम घटा कर 290 रुपया कर दिया गया है ताकि किसान को खरीदने में सहूलियत हो.

इटावे में और दूसरी जगहों पर जो सरकारी 'विकास योजनाएं' चल रही हैं वहां भी अधिकारी लोग विलायती खाद का लालच किसानों के बीच पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं. मगर हमारा देहाती स्वभाव से ही कुछ ऐसा पैदा हुआ है कि उसे विलायती खाद या बड़ी बड़ी मशीनें नहीं भाती. यह केवल स्वभाव ही नहीं इसके पीछे सूझ बूझ भी है और अब साइंस भी इस सूझ बूझ को ठीक बता रही है. आज विलायती केमिकल खाद और मशीनों के कारन जिस तेज़ी से अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और दक्खिन अफ्रीका में लाखों एकड़ ज़मीन बरबाद होती जा रही है उससे साफ़ पता चलता है कि इस मामले में हमारे किसान की क़ुदरती सूझ ग़लत नहीं है.

आखिर धरती या मिट्टी (Soil) क्या चीज़ है ? इस में ज़ियादातर चार चीज़ें हैं—कैल्शियम, फासफोरिक एसिड, नाइट्रोजन, और पोटैशियम. लेकिन लेबोरेटरी में बैठा हुआ वैज्ञानिक इन चारों चीज़ों को जैसे चाहें मिला ले, मिट्टी नहीं पैदा कर सकता. जिस तरह शरीर के 24 तत्वों को मिला कर कोई इन्सान को नहीं खड़ा कर सकता. मिट्टी की असली चीज़ "जान" है. जानदार मिट्टी में छोटे छोटे जन्तु (earth worm), केंचुए और नन्हें कीड़े होते हैं. बताया जाता है कि एक इन्च मिट्टी में इन जन्तुओं की तादाद कम से कम पचास लाख होती है. यही जन्तु चट्टानों को तोड़ते हैं, ऐसा बारीक तोड़ते हैं कि वही चूरन उनका भोजन बन जाता है. इसी मिट्टी पर जीते, इसी में मरते, सड़ते (decompose) और सड़ने पर ठीक वही चीज़ तैयार कर देते हैं जो हरे पौधों को चाहिये. पौधे को जानदार

ولایتی کھاد سے بچئیے

ہماری خود مختار سرکار کو جہاں اور بہت سے شوق ہیں اُن میں ایک ہے ولایتی کھاد کے استعمال سے اناج کی پیداوار کو بڑھانا ۔ پچھلی 3 ستمبر کو پارلیامنٹ میں بولتے ہوئے کھیتی منسٹر ڈاکٹر پنجاب راؤ دیش مکھ نے کہا کہ نئی دلی کی سرکار نے صوبوں کی سرکاروں کو کھاد خریدنے کے لئے 8 کروڑ روپئے قرض دینا طے کر لیا ہے جس میں سے لگ بھگ پونے پانچ کروڑ خرچ بھی ہو چکا ہے ۔ یہ کھاد کچھ ودیشوں سے آتی ہے ' زیادہ تر امریکہ سے ' اور کچھ ہندستان میں ایک سرکاری کارخانے میں بھی بنتی ہے جو بہار میں سندری نام کے گاؤں میں ہے ۔ سندری فیکٹری میں ایمونیم سلفیٹ نام کی کھاد خاصکر بنائی جاتی ہے ۔ پچھلے سال سرکار اسے 365 روپیہ ٹن کے حساب سے بیچتی تھی لیکن اب دام گھٹا کر 290 روپیہ کر دیا گیا ہے تاکہ کسان کو خریدنے میں سہولیت ہو ۔

اٹاوے میں اور دوسری جگہوں پر جو سرکاری وکاس یوجنائیں چل رہی ہیں وہاں بھی ادھکاری لوگ ولایتی کھاد کا لالچ کسانوں کے بیچ پیدا کرنے کی کوشش کر رہے ہیں ۔ مگر ہمارا دیہاتی سوبھاؤ سے ہی کچھ ایسا پیدا ہوا ہے کہ اُسے ولایتی کھاد یا بڑی بڑی مشینیں نہیں بھاتیں ۔ یہ کیول سوبھاؤ ہی نہیں اس کے پیچھے سوجھ بوجھ بھی ہے ۔ اور اب سائنس بھی اس سوجھ بوجھ کو ٹھیک بتا رہی ہے ۔ آج ولایتی کیمیکل کھاد اور مشینوں کے کارن جس تیزی سے امریکہ و آسٹریلیا و نیوزیلینڈ اور دکھنی افریقہ میں لاکھوں ایکڑ زمین برباد ہوتی جا رہی ہے اُس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اس معاملہ میں ہمارے کسان کی قدرتی سوجھ غلط نہیں ہے ۔

آخر دھرتی یا مٹی (Soil) کیا چیز ہے ؟ اس میں زیادہ تر چار چیزیں ہیں ۔ کیلشیم ' فاسفورک ایسڈ ' نائٹروجن ' اور پوٹیشیم ۔ لیکن لیبوریٹری میں بیٹھا ہوا ویگیانک اِن چاروں چیزوں کو جیسے چاہے ملا لے ' مٹی نہیں پیدا کر سکتا ۔ جس طرح شریر کے 24 تتوں کو ملا کر کوئی انسان کو نہیں کھڑا کر سکتا ۔ مٹی کی اصلی چیز "جان" ہے ۔ جان دار مٹی میں چھوٹے جنتو (earth worm) کینچوے اور ننھے کیڑے ہوتے ہیں ۔ بتایا جاتا ہے کہ ایک انچ مٹی میں ان جنتوؤں کی تعداد کم سے کم پچاس لاکھ ہوتی ہے ۔ یہی جنتو چٹانوں کو توڑتے ہیں ' ایسا باریک توڑتے ہیں کہ وہی چورن ان کا بھوجن بن جاتا ہے ۔ اسی مٹی پر جیتے ' اسی میں مرتے ' سڑتے (decompose) اور سڑنے پر ٹھیک وہی چیز تیار کر دیتے ہیں جو ہرے پودوں کو چاہئیے ۔ پودے کو جاندار

रिया के पूरे तौर सिंगमन री की जबर दी है वह कभी तोली जा तक महदूद है, नहीं वह अमरीकी सरकार क जाती है. वह आदमी निरा मूर्ख समझा जायगा जिस हाथ की लाठी को गालियां दी जा रही हों और वह ह समझे कि उसे कुछ नहीं कहा जा रहा है. सिंगमन री मरीका की हाथ की लाठी के सिवाय कुछ नहीं. अगर कुछ होता तो क्या उत्तरी कोरिया को छोड़ कर इतनी री तरह दुम दबा कर भागता कि दक्खिनी किनारे पूसान कर दम लेता और अपने पीछे जिसे छोड़ा था उसे ने देखा ? री जब भी भड़कता या कुछ कहता है मरीका की शह उसे मिली होती है, उसके बिना वह शब्द बोलने की हिम्मत नहीं कर सकता.

नेहरू जी ने यह बात कही कि दक्खिनी कोरिया के स आज हिन्दुस्तान से तिगुनी फ़ौज है और यह बताया दक्खिनी कोरिया उस फ़ौज को किसी तरह नहीं पाल कता जब तक कोई दूसरे उसकी मदद न करें. एक रह साफ़ साफ़ कह दिया है कि अमरीका दक्खिनी रिया को भड़का रहा है, बूते से बाहर फ़ौजें रखने के ये मजबूर कर रहा है. न वह उनको सम्भाल सकता है, उनकी उसे ज़रूरत है. अमरीका यह भले समझ ले कि ऊंचे दर्जे का दांव खेल रहा है, बड़ी गहरी चाल चल रहा है पर दुनिया के मुल्क खूब समझते हैं कि वह इतने ओछेपन पर उतर आया है. वह यह भी नहीं समझता लोग उसे सीधे ना सीधे, वक़्त बे वक़्त ओछा कहते ते हैं.

क्या अमरीका यह समझ बैठा है कि दुनिया यह भूल कि अमरीका ऐशिया के मुल्कों को आपस में लड़ाना हता है ? यदि हां तो वह बड़ी भूल में है. जब तक इज़न हावर साहब अमरीका की गद्दी पर मौजूद हैं तब आइज़नहावर के शब्द भी दुनिया के दिल पर पत्थर लकीर की तरह बने रहेंगे.

अमरीका ऐटम बम और हाइड्रोजन बम के थोम में सरी लड़ाई के लिये दुमदुमी भर सकता है, लड़ाई किसी ने छेड़ भी सकता है पर वह अपनी धाक और अपने को देश के मोल लुटा कर भी दुनिया की हमदर्दी अपने ये उस वक़्त तक हासिल नहीं कर सकता जब तक वह की चाल बाज़ी से बाज़ न आए.

अगर अमरीका को चाल बाज़ियां ही चलना है तो वह दुनिया को गुरू बनाये वह उसे सिखा सकती है कि चाल ज़ियां, किस तरह चलने पर चालबाज़ी नहीं मालूम नेकियां सी लगती हैं. भारत माता तो उसको साफ़ और साफ़ गोई सिखा सकती है.

—भगवानदीन

کوریا کے دکھن تک سنگمن ری کی خبر لی ہے وہ کوئی بولی اس تک محدود ہے، نہیں وہ امریکی سرکار تک جاتی ہے . وہ آدمی نرا مورکھ سمجھا جائے گا جس کے ہاتھ کی لاٹھی کو گالیاں دی جا رہی ہوں اور وہ یہ سمجھے کہ اسے کچھ نہیں کہا جا رہا ہے . سنگمن ری امریکہ کی ہاتھ کی لاٹھی کے سوائے کچھ نہیں . اگر وہ کچھ ہوتا تو کیا اتری کوریا کو چھوڑ کر اتنی بری طرح دم دبا کر بھاگتا کہ دکھنی کنارے پوسان آ کر دم لیتا اور اپنے پیچھے جسے چھوڑا تھا اسے آنے دیتا ؟ ری جب بھی بھڑکتا یا کچھ کہتا ہے امریکہ کی شہ اسے ملی ہوتی ہے، اس کے بنا وہ ایک شبد بولنے کی ہمت نہیں کر سکتا .

نہرو جی نے یہ بات کہی کہ دکھنی کوریا کے پاس آج ہندستان سے تگنی فوج ہے اور یہ بتایا کہ دکھنی کوریا اس فوج کو کسی طرح نہیں پال سکتا جب تک کوئی دوسرے اسکی مدد نہ کریں . ایک طرح صاف صاف کہہ دیا ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو بھڑکا رہا ہے، بوتے سے باہر فوجیں رکھنے کے لئے مجبور کر رہا ہے . نہ وہ ان کو سنبھال سکتا ہے، نہ ان کی اسے ضرورت ہے . امریکہ یہ بھلے سمجھ لے کہ وہ اونچے درجے کا داؤں کھیل رہا ہے، بڑی گہری چال چل رہا ہے پر دنیا کے ملک خوب سمجھتے ہیں کہ وہ اتنے اوچھے پن پر اتر آیا ہے . وہ یہ بھی نہیں سمجھتا کہ لوگ اسے سیدھے نہ سیدھے، وقت بے وقت اوچھا کہتے رہتے ہیں .

کیا امریکہ یہ سمجھ بیٹھا ہے کہ دنیا یہ بھول گئی کہ امریکہ ایشیا کے ملکوں کو آپس میں لڑانا چاہتا ہے ؟ یدی ہاں تو وہ بڑی بھول میں ہے . جب تک آئزن ہاور صاحب امریکہ کی گدی پر موجود ہیں تب تک آئزن ہاور کے شبد بھی دنیا کے دل پتھر پر کی لکیر کی طرح بنے رہینگے .

امریکہ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کے زعم میں تیسری لڑائی کے لئے ہمہمی بھر سکتا ہے، لڑائی کسی بہانے چھیڑ بھی سکتا ہے پر وہ اپنی دھاک اور اپنے پیسے کو دیش کی مول لٹا کر بھی دنیا کی ہمدردی اپنے لئے اس وقت تک حاصل نہیں کر سکتا جب تک وہ اوچھی چال بازی سے باز نہ آئے .

اگر امریکہ کو چال بازیاں ہی چلنا ہے تو بھارت کو گرو بنائے وہ اسے سکھا سکتی ہے کہ چال بازیاں کس طرح چلنے پر چال بازی نہیں معلوم ہوتیں، نیکیاں سی لگتی ہیں . بھارت ماتا تو اسکو صاف دلی اور صاف گوئی سکھا سکتی ہے .

—بھگوان دین

हाल में मिली खबरों से ऐसा नतीजा निकलता है कि यह बात कि क़ैदी अपने घर नहीं जाना चाहते सोलह आने सच नहीं है. आठ आने भी सच नहीं है. जितना आम्ल पाई सच है वह भी उस प्रचार पर टिकी है जो यू. एन. ओ. कमांड और दक्खिनी कोरिया ने चीनी और कोरियाई क़ैदियों में किया है. न जाने क़ैदियों को क्या क्या कह कर बहकाया गया है. एक तो ऐसी अनोखी बात सुनी है कि जिसकी कल्पना नहीं हो सकती. वह है—

एक क़ैदी के बदन पर यह गोदना गुदा था—मैं साम्यवाद को बहुत बुरा समझता हूं. मैं अपने घर नहीं लौटना चाहता क्योंकि मेरा घर उस जगह है जहां साम्यवादी सरकार है. ऊपर लिखा ज्यों के त्यों शब्दों में नहीं पर यह हम ज़िम्मेदारी के साथ कह रहे हैं कि उस क़ैदी के सारे बदन पर जो गोदना गुदा था वह इससे भी कई गुना बुरा था.

जब उस क़ैदी तक इन पांच मुल्कों के पंचों की मार्फ़त हाथापाई बंद की शर्तें पहुंची तो वह क़ैदी घर जाने के लिये मचल पड़ा. उसे अपने गोदने से नफ़रत होने लगी. आख़िर वह आदमी पत्थर का एक टुकड़ा लेकर अपने बदन को रगड़ने लगा और उसने अपना सारा बदन खून लुहान कर डाला. किसी भारती सिपाही की निगाह उस पर जा पड़ी. उसने पूछा—तुम यह क्या कर रहे हो? वह बोला—आप ही बताइये मैं इस गोदने को अपने बदन पर लेकर किस मुंह से अपने घर जाऊं? मेरे गांव के लोग मुझे क्या कहेंगे? मुझे धोकेबाज़ समझेंगे या नहीं? मैं उस तकलीफ़ को इस तकलीफ़ से कई गुना ज़ियादा समझता हूं. अब मैं ऐसा न करूं तो क्या करूं? यह सुन भारती सिपाही रो पड़ा.

'हांडी में से चांवल' न्याय से यह कहने में हमें झिझक नहीं कि यू. एन. ओ. कमांड ने जो एक तरह से अमरीकी कमान्ड है खुद या अपने इशारे से यह काम दक्खिनी कोरिया के धूर्त नेता सिंगमन री की मार्फ़त कराया हो. न जाने क्या क्या और बातें उन क़ैदियों के दिलों में भरी गई हैं. न जाने और किस किस तरह उनके तन मन मस्तक को तोड़ा मरोड़ा गया है जिस से वह अपनी मातृ भूमि से बेज़ार हो उठे हैं. न जाने उनका क्या हाल कर दिया गया है कि वह अपने को इस क़ाबिल नहीं समझते कि अपना मुंह अपने भाइयों को दिखाने की हिम्मत कर सकें. इस तरह की गुंडई कर के यह कह बैठना कि कोरियाई और चीनी क़ैदी अपने घर जाना नहीं चाहते लोगों की आंखों में धूल झोंकना है.

अमरीका यह न समझे कि भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने जिस कड़ी बोली में दक्खिनी

حال ہی میں ملی خبروں سے ایسا نتیجہ نکلتا ہے کہ یہ بات کہ قیدی اپنے گھر نہیں جانا چاہتے سولہ آنے سچ نہیں ہے. آٹھ آنے بھی سچ نہیں ہے . جتنا آنہ پائی سچ ہے وہ بھی اُس پرچار پر ٹکی ہے جو یو . این . او . کمانڈ اور دکھنی کوریا نے چینی اور کوریائی قیدیوں میں کیا ہے . نہ جانے قیدیوں کو کیا کیا کہکر بہکایا گیا ہے . ایک تو ایسی انوکھی بات کہی ہے کہ جس کی کلپنا نہیں ہوسکتی . وہ ہے—

ایک قیدی کے بدن پر یہ گودنا گدا تھا—میں سامیہ واد کو بہت برا سمجھتا ہوں . میں اپنے گھر نہیں لوٹنا چاہتا کیونکہ میرا گھر اُس جگہ ہے جہاں سامیہ وادی سرکار ہے . اوپر لکھا جیوں کے تیوں شبدوں میں نہیں پر یہ ذمہ داری کے ساتھ کہہ رہے ہیں کہ اُس قیدی کے سارے بدن پر جو گودنا گدا تھا وہ اِس سے بھی کئی گنا برا تھا .

جب اُس قیدی تک اِن پانچ ملکوں کے پنچوں کی معرفت ہاتھا پائی بند کی شرطیں پہنچیں تو وہ قیدی گھر جانے کے لئے مچل پڑا . اُسے اپنے گودنے سے نفرت ہونے لگی , آخر وہ آدمی پتھر کا ایک ٹکڑا لے کر اپنے بدن کو رگڑنے لگا اور اُس نے اپنا سارا بدن خون لہان کر ڈالا . کسی بھارتی سپاہی کی نگاہ اس پر جا پڑی. اس نے پوچھا—تم یہ کیا کر رہے ہو ؟ وہ بولا—آپ ہی بتائیے میں اِس گودنے کو اپنے بدن پر لے کر کس منھ سے اپنے گھر جاؤں ؟ میرے گاؤں کے لوگ مجھے کیا کہیں گے ؟ مجھے دھوکے باز سمجھیں گے یا نہیں ؟ میں اس تکلیف کو اِس تکلیف سے کئی گنا زیادہ سمجھتا ہوں . اب میں ایسا نہ کروں تو کیا کروں ؟ یہ سن بھارتی سپاہی رو پڑا .

' ہانڈی میں سے چاول' نیائے سے یہ کہنے میں ہمیں جھجھک نہیں کہ یو . این . او کمانڈ نے جو ایک طرح سے امریکی کمانڈ ہے خود یا اپنے اشارے سے یہ کام دکھنی کوریا کے دھورت نیتا سنگمن ری کی معرفت کرایا ہو . نہ جانے کیا کیا اور باتیں اُن قیدیوں کے دلوں میں بھری گئی ہیں . نہ جانے اور کس کس طرح اُن کے تن من مستک کو توڑا مروڑا گیا ہے جس سے وہ اپنی ماتر بھومی سے بیزار ہو اُٹھے ہیں . نہ جانے اُن کا کیا حال کر دیا گیا ہے کہ وہ اپنے کو اِس قابل نہیں سمجھتے کہ اپنا منہ اپنے بھائیوں کو دکھانے کی ہمت کر سکیں . اِس طرح کی غنڈئی کر کے یہ کہہ بیٹھنا کہ کوریائی اور چینی قیدی اپنے گھر جانا نہیں چاہتے لوگوں کی آنکھوں میں دھول جھونکنا ہے .

امریکہ یہ نہ سمجھے کہ بھارت کے پردھان منتری جواہر لال نہرو نے جس کڑی بولی میں دکھنی

हमारी राय / ہماری رائے

कोरिया फिर !

26 जुलाई '53 को "हाथापाई बंद" पर दोनों दल के ज्यों त्यों कर दस्तखत हो गये. हाथापाई बंद को 'दुश्मनी बंद' का रूप देने के लिये तैयारियां हो गईं. पांच देशों के पंच थोड़ी फ़ौज लेकर कोरिया पहुंच गये. यह देश हैं स्वीडन, स्विट्ज़रलैंड, चेकोस्लोवेकिया, पोलैंड और भारत. यह पांच यों चुने गये कि इन में से किसी ने असली लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया था. इन पांच की कमेटी का सरपंच है भारत. इसे दोनों पक्षों ने चुना है. इस कमेटी के सुपुर्द काम है कि वह लड़ाई के क़ैदियों को उस उस मुल्क में भेज दे जहां के वह रहने वाले हैं.

शुरू से यू. एन. ओ. कमांड और दक्खिन कोरिया यह कहता चला आ रहा है कि उत्तर कोरिया और चीन के जो क़ैदी उनके क़ब्ज़े में हैं उन में से बहुत से उन मुल्कों में नहीं जाना चाहते जहां साम्यवादी सरकारें हैं. इस बात पर बहुत मुल्कों को एतबार नहीं. साम्यवादी मुल्कों को तो बिलकुल नहीं. इसलिये ज़रूरी हुआ कि ऐसे मुल्कों से पंच वहां भेजे जायं जो लड़ाई में उतरे न हों, वह क़ैदियों को देखें कि क्या सचमुच यह बात सही है कि क़ैदी अपने घर सिर्फ़ इस वजह से नहीं लौटना चाहते कि वहां साम्यवादी सरकारें हैं ? ऐसे देश ऊपर बताए पांच चुने गये और वहां भेज दिये गये.

इन पंचों में से भारत अपनी थोड़ी फ़ौज ले गया है, बाक़ी चार देशों के सिपाही नाम के लिये उस में शामिल हैं. यह सब भी इतने थोड़े हैं कि अगर दक्खिनी कोरिया बिगड़ बैठे और हमला बोल दे तो इनका मुक़ाबला ऐसा होगा जैसा दसियों डिवीज़न और एक दस्ते का. इन पंचों और इनकी फ़ौज की रक्षा की ज़िम्मेदारी यू. एन. ओ. कमांड ने ली है. पंचों के कोरिया पहुंचने से पहले इन के ख़िलाफ़ और ख़ास तौर से भारतवर्ष के ख़िलाफ़ दक्खिनी कोरिया का नेता सिंगमन री अपने उद्गार निकाल चुका है. वहां पहुंचने पर उसने वैसा करना शुरू कर दिया है जैसा उसने कहा था.

کوریا پھر !

26 جولائی سن '53 کو "ہاتھا پائی بند" پر دونوں دل کے جیسے تیسے دستخط ہوگئے. ہاتھا پائی بند کو دشمنی بند کا روپ دینے کے لئے تیاریاں ہو گئیں. پانچ دیشوں کے پنچ تھوڑی فوج لے کر کوریا پہنچ گئے. وہ دیش ہیں سویڈن، سوئٹزرلینڈ، چیکوسلوواکیا، پولینڈ اور بھارت. یہ پانچ یوں چنے گئے کہ ان میں سے کسی نے اصلی لڑائی میں حصہ نہیں لیا تھا. ان پانچ کی کمیٹی کا سرپنچ ہے بھارت. اسے دونوں پکشوں نے چنا ہے. اس کمیٹی کے سپرد کام ہے کہ وہ لڑائی کے قیدیوں کو اس اس ملک میں بھیج دے جہاں کے وہ رہنے والے ہیں.

شروع سے یو. این. او. کمانڈ اور دکھن کوریا یہ کہتا چلا آ رہا ہے کہ اتر کوریا اور چین کے جو قیدی ان کے قبضے میں ہیں ان میں سے بہت سے ان ملکوں میں نہیں جانا چاہتے جہاں سامیہ واد سرکاریں ہیں. اس بات پر بہت ملکوں کو اعتبار نہیں. سامیہ واد ملکوں کو تو بالکل نہیں. اسی لئے ضروری ہوا کہ ایسے ملکوں سے پنچ وہاں بھیجے جائیں جو لڑائی میں اترے نہ ہوں. وہ قیدیوں کو دیکھیں کہ کیا سچ مچ یہ بات سچی ہے کہ قیدی اپنے گھر صرف اس وجہ سے نہیں لوٹنا چاہتے کہ وہاں سامیہ واد سرکار ہیں. ایسے دیش اوپر بتائے پانچ چنے گئے اور وہاں بھیج دئے گئے.

ان پانچوں میں سے بھارت اپنی تھوڑی فوج لے گیا ہے، باقی چار دیشوں کے سپاہی نام کے لئے اس میں شامل ہیں. یہ سب بھی اتنے تھوڑے ہیں کہ اگر دکھنی کوریا بگڑ بیٹھے اور حملہ بول دے تو ان کا مقابلہ ایسا ہوگا جیسا دسیوں ڈویژن اور ایک دستے کا. ان پنچوں اور ان کی فوج کی رکھشا کی ذمہ داری یو. این. او. کمانڈ نے لی ہے. پنچوں کے کوریا پہنچنے سے پہلے ان کے خلاف اور خاص طور سے بھارت ورش کے خلاف دکھنی کوریا کا نیتا سنگمن ری اپنے اُدگار نکال چکا ہے. وہاں پہنچنے پر اس نے ویسا کرنا شروع کر دیا ہے جیسا اس نے کہا تھا.

जुआ

लेखिका—श्रीमती मुक्ताबाई दीक्षित एम. ए. अनुवादक—श्री म. रा. सुपटकर, प्रकाशक—महाराष्ट्र राष्ट्र भाषा सभा, राष्ट्र भाषा भवन, 388 नारायण पेठ, पूना सफ़े—88, क़ीमत—दो रुपये आठ आने.

इन्सान अपने जीवन में अनेक संस्कारों, 'मानसिक विकारों और बाहरी घटनाओं से सदा लड़ाई करता है. इन घटनाओं की परिस्थितियां, कभी कभी मानसिक उथल पुथल और संघर्षों की तरफ़ इस तरह इशारा करती हैं कि घटना अकेली न रह कर जीवन के साथ बंध जाती है. नाटक ऐसी ही घटनाओं में से किसी खास घटना का सूचक है. जिस नाटक लिखने वाले की नज़र इन्सानी प्रकृति की ऊंची चट्टान तक पहुंचने की ताक़त रखती है वह बिखरी घटनाओं को एक कड़ी में पिरो देता है. ऐसे ही नाटककार की रचनाएं ज़िन्दगी की गहराई में उतर सकती हैं !

मुक्ताबाई भी ऐसे ही मराठी लेखिकाओं में से हैं. वह पुराने रीत रिवाजों और तंग नज़र विचार धाराओं की पाबन्द नहीं हैं और न आजकल के बाहरी वातावरन से परे. जीवन पथ पर उन्हें फूल भी मिले और कांटे भी. इस नाटक में उन्होंने आज के समाज की एक बहुत बड़ी कुरीति की तरफ़ सुन्दर ढंग से इशारा किया है और साथ ही साथ और उसका हल भी बहुत अच्छे तरीक़े से पाठकों सामने पेश किया है.

अपने इस नाटक में लेखिका ने एक महान आदर्श को लेकर ऊषा के त्याग की तसवीर अंकित की है. यह तसवीर सिर्फ़ तसवीर ही नहीं बल्कि एक नेक मानव प्रेमी और दुखी दिल की सच्ची पुकार है. तसवीर सचमुच महाराष्ट्र जीवन की एक खासी झलक देती है. पाठकों के दिल को छूती है. किताब की भाषा सरल और मुहावरेदार है. हिन्दी जगत को राष्ट्र भाषा सभा की यह एक अनोखी देन है. किताब का साइज़ और सफ़ों के लिहाज़ से किताब की क़ीमत ढाई रुपया कुछ ज़्यादा ही मालूम पड़ती है.

—चेतन कुमार शर्मा

جوا

لیکھکا—شریمتی مکتا بائی دیکشت ایم. اے؛ انوادک—شری م. ر. سوپٹکر؛ پرکاشک—مہاراشٹر راشٹر بھاشا سبھا، راشٹر بھاشا بھون، 388 نرائن پیٹھ، پونا؛ صفحے—88؛ قیمت—دو روپئے آٹھ آنے .

انسان اپنے جیون میں انیک سنسکاروں، مانسک وکاروں اور باہری گھٹناؤں سے سدا لڑائی کرتا رہتا ہے . ان گھٹناؤں کی پرستھتیاں، کبھی کبھی مانسک اتھل پتھل اور سنگھرشوں کی طرف اس طرح اشارہ کرتی ہیں کہ گھٹنا اکیلی نہ رہ کر جیون کے ساتھ بندھ جاتی ہے . ناٹک ایسی ہی گھٹناؤں میں سے کسی خاص گھٹنا کا سوچک ہے . جس ناٹک لکھنے والے کی نظر انسانی پرکرتی کی اونچی چٹان تک پہنچنے کی طاقت رکھتی ہے وہ بکھری گھٹناؤں کو ایک کڑی میں پرو دیتا ہے ایسے ہی ناٹک کار کی رچنائیں زندگی کی گہرائی میں اتر سکتی ہیں .

مکتا بائی بھی ایسے ہی مراٹھی لکھکوں میں سے ہیں . وہ پرانے ریت رواجوں اور تنگ نظر وچار دھاراؤں کی پابند نہیں ہیں اور نہ آجکل کے باہری واتاورن سے پرے . جیون پتھ پر انہیں پھول بھی ملے اور کانٹے بھی . اس ناٹک میں انہوں نے آج کے سماج کی ایک بہت بڑی کوریتی کی طرف سندر ڈھنگ سے اشارہ کیا ہے اور ساتھ ہی ساتھ اس کا حل بھی اچھے طریقے سے پاٹھکوں کے سامنے پیش کیا ہے .

اپنے اس ناٹک میں لیکھکا نے ایک مہان آدرش کو لے کر اوشا کے تیاگ کی تصویر انکت کی ہے . یہ تصویر صرف تصویر ہی نہیں بلکہ ایک نیک مانو پریمی اور دکھی دل کی سچی پکار ہے . یہ تصویر سچ مچ مہاراشٹر جیون کی ایک خاصی جھلک دیتی ہے . پاٹھکوں کے دل کو چھوتی ہے . کتاب کی بھاشا سرل اور محاورے دار ہے . ہندی جگت کو راشٹر بھاشا کی یہ ایک انوکھی دین ہے . کتاب کا سائز اور صفحوں کے لحاظ سے کتاب کی قیمت ڈھائی روپیہ کچھ زیادہ ہی معلوم ہوتی ہے .

—چیتن کمار شرما

राजनीतिक क़ैदियों के साथ जिस तरह इन्साफ़ किया जाता है उस पर फ़ैज़ ने सुन्दर व्यंग किया है.

"बने हैं अहले हविस, मुद्दई भी, मुंसिफ़ भी
किसे वकील करें, किस से मुंसिफ़ी चाहें"

फ़ैज़ जानते हैं कि उनका ताल्लुक़ उन बुज़ुर्गों से है जो हमेशा ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ते रहे हैं. फ़ैज़ को विश्वास है कि जीत उन्हीं की है क्योंकि वह सच्चाई के साथ हैं. वह कहते हैं—

"यूंही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से ख़ल्क़
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीत नई
यूंही हमेशा खिलाए हैं, हम ने आग में फूल
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई"

दुनिया आज दो गिरोहों में बंटी हुई है. एक रचना करना चाहता है, सब को आगे बढ़ाना चाहता है और दूसरा गिरोह खुद ग़रज़ी से अन्धा हो कर सब को बरबाद कर देना चाहता है, लड़ाई छेड़ना चाहता है. इन दोनों गिरोहों में संघर्ष जारी है, फ़ैज़ लिखते हैं—

"इन दोनों में रन पड़ता है
नित बसती बसती, नगर नगर
हर बसते घर के सीने में
हर चलती राह के माथे पर
वह कालिक भरते फिरते हैं
वह ज्योत जगाते रहते हैं
वह आग लगाते फिरते हैं
वह आग बुझाते रहते हैं"

फ़ैज़ के इस मजमुए में वह नज़्में भी शामिल हैं जो उन्होंने जेल में लिखी हैं 'ज़िन्दां की एक शाम, ज़िन्दां की एक सुबह' बहुत ही कामयाब नज़्में हैं और दिल पर इस क़दर असर करती हैं कि बार बार पढ़ने पर भी तबीयत नहीं भरती. फ़ैज़ के इस मजमुए को हिन्दी लिखावट में भी होना चाहिए. लोग इधर ध्यान दें यह हमारी प्रार्थना है.

—सुशील त्रिपाठी

سیاسی قیدیوں کے ساتھ جس طرح انصاف کیا جاتا ہے اُس پر فیض نے سندر ویَنگ کیا ہے۔

بنے ہیں اہلِ ہوس، مدعی بھی، منصف بھی
کسے وکیل کریں، کس سے منصفی چاہیں

فیض جانتے ہیں کہ اُن کا تعلق اُن بزرگوں سے ہے جو ہمیشہ ظلم کے خلاف لڑتے رہے ہیں۔ فیض کو وشواس ہے کہ جیت انہیں کی ہے کیونکہ وہ سچائی کے ساتھ ہیں۔ وہ کہتے ہیں—

"یونہی ہمیشہ اُلجھتی رہی ہے ظلم سے خلق
نہ اُن کی رسم نئی ہے، نہ اپنی ریت نئی
یونہی ہمیشہ کھلائے ہیں ہم نے آگ میں پھول
نہ اُن کی ہار نئی ہے نہ اپنی جیت نئی"

دنیا آج دو گروہوں میں بٹی ہوئی ہے، ایک رچنا کرنا چاہتا ہے، سب کو آگے بڑھانا چاہتا ہے اور دوسرا گروہ خود غرضی سے اندھا ہو کر سب کو برباد کر دینا چاہتا ہے، لڑائی چھیڑنا چاہتا ہے۔ اِن دونوں گروہوں میں سنگھرش جاری ہے، فیض لکھتے ہیں—

"اِن دونوں میں رن پڑتا ہے
نت بستی بستی، نگر نگر
ہر بستے گھر کے سینے میں
ہر چلتی راہ کے ماتھے پر
یہ کالک بھرتے پھرتے ہیں
وہ جوت جگاتے رہتے ہیں
یہ آگ لگاتے پھرتے ہیں
وہ آگ بجھاتے رہتے ہیں۔"

فیض کے اِس مجموعے میں وہ نظمیں بھی شامل ہیں جو اُنہوں نے جیل میں لکھی ہیں۔ 'زنداں کی ایک شام' 'زنداں کی ایک صبح' بہت ہی کامیاب نظمیں ہیں اور دل پر اس قدر اثر کرتی ہیں کہ بار بار پڑھنے پر بھی طبیعت نہیں بھرتی۔ فیض کے اِس مجموعے کو ہندی لکھاوٹ میں بھی ہونا چاہئے۔ لوگ ادھر دھیان دیں یہ ہماری پرارتھنا ہے۔

—مجیب رضوی

भी भेद भाव बरता जाता था. हिन्दुस्तानियों को दूसरा खाना, कम तनखा, कम सुविधायें मिलती थीं और गोरों को अथाह सुविधायें दी जाती थीं.

'रक्त लुट' की कामयाबी इस बात को सिद्ध करती है कि प्रेम गाथा के बिना भी हृदय स्पर्शी नाविल लिखा जा सकता है. एक दफ़ा उठा लेने पर इसे रखने को मन नहीं चाहता. सुन्दर छपाई और खूबसूरत जिल्द के साथ किताब में दुनिया के मशहूर चित्रकार चित्ता परसाद के चित्र भी इस में शामिल कर दिये गए हैं. यह चित्र किताब के मूल्य को बढ़ाते हैं. इस किताब का स्वागत होगा, ऐसी उम्मीद है.

—मुजीब रिज़वी

दस्ते सबा

लिखने वाले—फ़ैज़ अहमद फ़ैज़; निकालने वाले—आज़ाद किताब घर, कलां महल, देहली 6; लिखावट उरदू; सफ़ा 110; दाम दो रुपया चार आना.

दस्ते सबा फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का ताज़ा मजमूआ है. इस में 40 क़िते, ग़ज़लें और नज़्में शामिल हैं. किसी किताब की इतनी तारीफ़ काफ़ी है कि उसके लेखक फ़ैज़ हैं. फ़ैज़ स्यासी और अदबी दोनों दुनियाओं में मशहूर हैं. अदब में उनका लोहा माना जाता है. अब सियासत ने भी उनका लोहा मान लिया है. फ़ैज़ ने उरदू अदब में नई राहें दिखाई हैं. उनकी सब से बड़ी देन यह कि पुराने अदबी ढांचे में उन्होंने नए ख़यालात को समो दिया है. यह मानना पड़ता है कि कला के मैदान पिछलों ने अदब को आसमान तक पहुंचा दिया है. ज़रूरत इस बात की है कि उस की मदद से नए ख़यालात को जनता के सामने लाया जाए. फ़ैज़ ने अमल में यह बात करके दिखाई है और यह साबित किया है कि पुरानी कला और नए विचार का मेल बहुत ही सुन्दर और असरदार अदब पैदा करता है.

जो देश भक्त है वह ग़द्दार है, जो नहीं चाहता कि पाकिस्तान फिर से अमरीकियों का ग़ुलाम हो या अंगरेज़ों का दास बने वह मुजरिम है, वह पाकिस्तान का दुश्मन है. इस नीति का फ़ैज़ ने किस ख़ूबसूरती से परदा फ़ाश किया है.

"निसार मैं तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को निकले
नज़र चुरा के चले, जिस्म व जां बचा के चले"

بھی بہت بھاؤ برتا جاتا تھا . هندستانیوں کو دوسرا کھانا، کم تنخواہ، کم سودھائیں ملتی تھیں اور گوروں کو اتھاہ سودھائیں دی جاتی تھیں .

'رکت لوٹ' کی کامیابی اس بات کو سدھ کرتی ہے کہ پریم گاتھا کے بنا بھی هردے اسپرشی ناول لکھا جاسکتا ہے. ایک دفعہ اُٹھا لینے پر اسے رکھنے کو من نہیں چاہتا. سندر چھپائی اور خوبصورت جلد کے ساتھ کتاب میں دنیا کے مشہور چترکار چتاپرساد کے چتر بھی اس میں شامل کردئے گئے هیں . یہ چتر کتاب کے مولیہ کو بڑھاتے هیں . اس کتاب کا سواگت ہوگا' ایسی اُمید ہے .

—مجیب رضوی

دست صبا

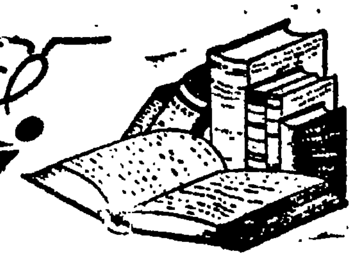
لکھنے والے—فیض احمد فیض؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر' کلاں محل' دهلی 6؛ لکھاوٹ اُردو؛ صفحہ—110؛ دام دو روپیہ چار آنے .

'دست صبا' فیض احمد فیض کا تازہ مجموعہ ہے . اس میں 40 قطعے' غزلیں اور نظمیں شامل هیں . کسی کتاب کی اتنی تعریف کافی ہے کہ اس کے لیکھک فیض هیں . فیض سیاسی اور ادبی دونوں دنیا میں مشہور هیں. ادب میں اُن کا لوہا مانا جاتا ہے . اب سیاست نے بھی اُن کا لوہا مان لیا ہے . فیض نے اُردو ادب میں نئی راہیں دکھائی هیں . اُن کی سب سے بڑی دین یہ ہے کہ پرانے ادبی ڈھانچے میں اُنہوں نے نئے خیالات کو سمو دیا ہے . یہ ماننا پڑتا ہے کہ کلا کے میدان میں پچھلوں نے ادب کو آسمان تک پہونچا دیا ہے . ضرورت اس بات کی ہے کہ اُس کی مدد سے نئے خیالات کو جنتا کے سامنے لایا جائے. فیض نے عمل میں یہ بات کرکے دکھائی ہے اور یہ ثابت کیا ہے کہ پرانی کلا اور نئے وچار کا میل بہت هی سندر اور اثردار ادب پیدا کرتا ہے .

جو دیش بھگت ہے وہ غدار ہے' جو نہیں چاہتا کہ پاکستان پھر سے امریکیوں کا غلام هو یا انگریزوں کا داس بنے وہ مجرم ہے' وہ پاکستان کا دشمن، اس نیتی کا فیض نے کس خوبصورتی سے پردہ فاش کیا ہے .

"نثار میں تری گلیوں پہ اے وطن کہ جہاں
چلی ہے رسم کہ کوئی نہ سر اُٹھا کے چلے
جو کوئی چاهنے والا طواف کو نکلے
نظر چرا کے چلے' جسم و جاں کو بچا کے چلے"

नई किताबें



نئی کتابیں

रंगरूट

लेखक—बरेन बसु; अनुवादक— बी. के. मोजुमदार; छापने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, लिमिटेड, बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—332; दाम चार रुपये.

'रंगरूट' बंगला भाषा में लिखी गई थी और इस नाविल के छपते ही बंगाल में हलचल मच गई थी. आलोचकों का कहना है कि इस नाविल ने बंगला के महान साहित्य को धनी बनाया है. इस नाविल का अंगरेज़ी में अनुवाद हो चुका है और अंगरेज़ी भाषी जनता ने दिल खोल कर इसका स्वागत किया है. अनुवादक और प्रकाशक ने हिन्दी जगत को यह किताब देकर बहुत ज़बरदस्त फ़र्ज़ निभाया है.

'रंगरूट' में ग़ुलाम भारत की अंगरेज़ी फ़ौज का जीवन चित्रित किया गया है. लेखक ने दूर से इस जीवन का अनुभव नहीं किया वह ख़ुद फ़ौज में रहा है, सारी कवायद को उसने ख़ुद अनुभव किया है. जो कुछ भी उसने लिखा है वह सच है. यथार्थ है.

'रंगरूट' में दो चीज़ों पर रोशनी पड़ती है. एक यह कि वह लोग पेट के हाथों मजबूर हो कर फ़ौज में भरती होते हैं जिन को लड़ाई से नफ़रत होती है, जिन्हें उस जीवन से लगाव नहीं होता. इस नाविल को पढ़ कर अंगरेज़ी शासकों के कुछ वाक्य फिर दिमाग़ में ताज़ा हो जाते हैं—हमारी किसी ने मदद नहीं की, हमारी सहायता भूख ने की है, भूख न होती तो हमें फ़ौजी न मिलते. दूसरी जिस बात पर रोशनी पड़ती है वह है फ़ौजी जीवन और वह परिस्थितियां जो अच्छे आदमी को जानवर बना देती हैं, एक भले वातावरण में पले इनसान को दुराचारी बनाती हैं, एक कोमल हृदय आदमी को कठोर बनाती हैं, आदमी को एक मशीन बना देती हैं जो हर बात का जवाब बस "यस सर" देती हैं.

फ़ौजी जीवन को खोल कर सामने रखने वाला 'रंगरूट' पहला नाविल है इसमें अंगरेज़ों की फ़ौजी नीति और उनके अफ़सरों के तरीक़े पर भी रोशनी पड़ती है. इस बात की भी ठीक जानकारी मिलती है कि अफ़सरों और मातहतों में फ़र्क़ होने के अलावा गोरे और काले का

رنگروٹ

لیکھک—برین بسو؛ انوادک—بی. کے. موجمدار؛ چھاپنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ، بمبئی 4؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—332؛ دام چار روپیہ۔

'رنگروٹ' بنگلہ بھاشا میں لکھی گئی تھی اور اس ناول کے چھپتے ہی بنگال میں ہل چل مچ گئی تھی۔ آلوچکوں کا کہنا ہے کہ اس ناول نے بنگلہ کے مہان ساہتیہ کو دھنی بنایا ہے۔ اس ناول کا انگریزی میں انوواد ہو چکا ہے اور انگریزی بھاشی جنتا نے دل کھولکر اس کا سواگت کیا ہے۔ انوادک اور پرکاشک نے ہندی جگت کو یہ کتاب دے کر بہت زبردست فرض نبھایا ہے۔

'رنگروٹ' میں غلام بھارت کی انگریزی فوج کا جیون چترت کیا گیا ہے۔ لیکھک نے دور سے اس جیون کا انوبھو نہیں کیا۔ وہ خود فوج میں رہا ہے، ساری کوائد کو اس نے خود انوبھو کیا ہے۔ جو کچھ بھی اس نے لکھا ہے وہ سچ ہے۔ یتھارتھ ہے۔

'رنگروٹ' میں دو چیزوں پر روشنی پڑتی ہے۔ ایک یہ کہ وہ لوگ پیٹ کے ہاتھوں مجبور ہو کر فوج میں بھرتی ہوتے ہیں جن کو لڑائی سے نفرت ہوتی ہے، جنہیں اس جیون سے کوئی لگاؤ نہیں ہوتا۔ اس ناول کو پڑھکر انگریز شاسکوں کے کچھ واکیہ پھر دماغ میں تازہ ہو جاتے ہیں—ہماری کسی نے مدد نہیں کی، ہماری سہایتا بھوک نے کی ہے، بھوک نہ ہوتی تو ہمیں فوجی نہ ملتے۔ دوسری جس بات پر روشنی پڑتی ہے وہ ہے فوجی جیون اور وہ پرستھتیاں جو اچھے آدمی کو جانور بنا دیتی ہیں، ایک بھلے واتاورن میں پلے انسان کو دراچاری بناتی ہیں، ایک کومل ہردے آدمی کو کٹھور بناتی ہیں، آدمی کو ایک مشین بنا دیتی ہیں جو ہر بات کا جواب کیول "یس سر" دیتی ہے۔

فوجی جیون کو کھول کر سامنے رکھنے والا 'رنگروٹ' پہلا ناول ہے۔ اس میں انگریزوں کی فوجی نیتی اور ان کے افسروں کے طریقے پر بھی روشنی پڑتی ہے۔ اس بات کی بھی ٹھیک جانکاری ملتی ہے کہ افسروں اور ماتحتوں میں فرق ہونے کے علاوہ گورے اور کالے کا

सफेद नसल के लोगों के अलावा दूसरी जाति के लोग भाग नहीं ले सकते.

वाशिंगटन के रेस्ट्रां, थियेटर और होटलों में रंग भेद बरता जाता है. अमरीकी कांगरेस के क़रीब नीगरों की एक तंग व तारीक और गंदी बाड़ी है. इसके लिये अमरीकी सरकार ख़ास तौर से ज़िम्मेदार है क्योंकि इस ज़िले का इन्तज़ाम एक कमीशन करता है जिसे प्रेसीडेन्ट मुक़र्रर करता है.

दूसरे मुल्क वालों को अमरीका में आबाद करने और नागरिकता के अधिकार देने का हक़ केन्द्री सरकार को है. इस मामले में भी भेद भाव बरता जाता है. इसी बुनियाद पर अरबी, अफ़ग़ानी, जापानी, कोरियाई, बरमी, मालायाई इंडोनेशियाई और थाईलैंड के निवासी अमरीका के नागरिक नहीं हो सकते.

सफ़ेद नसल के लोगों को एक ही क़िस्म के काम के लिये दूसरे लोगों से ज़ियादा तनख़ाह दी जाती है. दूसरे रंग वालों को तरक़्क़ी नहीं दी जाती. मकान भी घटिया क़िस्म के दिये जाते हैं. पुलिस और अदालतें भी सब के साथ बराबरी का बरताव नहीं करतीं.

हिन्दुस्तानियों के साथ अधिक ज़ियादती होती है. अलास्का में हिन्दुस्तानियों के साथ आज़ाद नागरिकों का सा बरताव नहीं किया जाता. अगस्त सन 1947 में मिस्टर ट्रूमैन ने टांगस बिल पर दस्तख़त किये थे. दो दो पीढ़ियों से दक्खनी पूर्वी अलास्का में बहुत से हिन्दुस्तानी खेतों और बाग़ों पर क़ाबिज़ थे. लेकिन टांगस बिल पास करके उनसे यह हक़ छीन लिया गया है. हिन्दुस्तानियों के बारे में जो कुछ अमरीकी सोचते हैं उसकी एक झलक जनरल शेरीडन के क़ौल से मिलती है. "वही हिन्दुस्तानी अच्छा है जो मर गया है." हिन्दुस्तानियों की माली हालत बहुत गिरी हुई है.

अमरीका में नीगरों को पत्थर मार मार कर मार दिया जाता है या ज़िन्दा जला दिया जाता है. हिन्दुस्तान के अमरीकी दूतावास ने नीगरों की सही हालत बताने के लिये एक पैमफ़लेट छापा है जिस में इन ज़ालिमाना हरकतों पर पर्दा डालने की कोशिश की गई है लेकिन फिर भी यह माना गया है कि अब भी कहीं कहीं ऐसे अत्याचार हो जाते हैं.

दुनिया में उस समय तक शान्ति स्थायी रूप से क़ायम नहीं रह सकती जब तक कि दुनिया के तमाम इनसानों को बिना ज़ात, धर्म, रंग और विचारों के फ़र्क़ के बराबर के अधिकार न मिल जाएं. शान्ति क़ायम होना आज दुनिया के हर इनसान के हित में है और इसलिये ज़रूरी है कि वह हर उस बात के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाए जो अशान्ति फैलाती हो.

سفید نسل کے لوگوں کے علاوہ دوسرے جاتی کے لوگ بھاگ نہیں لے سکتے.

واشنگٹن کے ریسٹراں، تھیٹر اور ہوٹلوں میں رنگ بھید برتا جاتا ہے. امریکی کانگریس کے قریب نیگروں کی ایک تنگ و تاریک اور گندی باڑی ہے. اس کے لئے امریکی سرکار خاص طور سے ذمے‌دار ہے کیونکہ اس ضلع کا انتظام ایک کمیشن کرتا ہے جسے پریسیڈنٹ مقرر کرتا ہے.

دوسرے ملک والوں کو امریکہ میں آباد کرنے اور ناگرکتا کے ادھیکار دینے کا حق کیندری سرکار کو ہے. اس معاملے میں بھی بھید بھاؤ برتا جاتا ہے. اسی بنیاد پر عربی، افغانی، جاپانی، کوریائی، برمی، ملایائی، انڈونیشیائی اور تھائی لینڈ کے نواسی امریکہ کے ناگرک نہیں ہو سکتے.

سفید نسل کے لوگوں کو ایک ہی قسم کے کام کے لئے دوسرے لوگوں سے زیادہ تنخواہ دی جاتی ہے. دوسرے رنگ والوں کو ترقی نہیں دی جاتی، مکان بھی گھٹیا قسم کے دیئے جاتے ہیں. پولیس اور عدالتیں بھی سب کے ساتھ برابری کا برتاؤ نہیں کرتیں.

ہندستانیوں کے ساتھ ادھک زیادتی ہوتی ہے. الاسکا میں ہندستانیوں کے ساتھ آزاد ناگرکوں کا سا برتاؤ نہیں کیا جاتا. اگست 1947 میں مسٹر ٹرومین نے ٹانگس بل پر دستخط کئے تھے. دو دو پیڑھیوں سے دکھنی پوربی الاسکا میں بہت سے ہندستانی کھیتوں اور باغوں پر قابض تھے. لیکن ٹانگس بل پاس کر کے اُن سے یہ حق چھین لیا گیا ہے. ہندستانیوں کے بارے میں جو کچھ امریکی سوچتے ہیں اُسکی ایک جھلک جنرل شیریڈن کے قول سے ملتی ہے—" وہی ہندستانی اچھا ہے جو مر گیا ہے." ہندستانیوں کی مالی حالت بہت گری ہوئی ہے.

امریکہ میں نیگروں کو پتھر مار مار کر مار دیا جاتا ہے یا زندہ جلا دیا جاتا ہے. ہندستان کے امریکی دوتاواس نے نیگروں کی صحیح حالت بتانے کے لئے ایک پمفلٹ چھاپا ہے جس میں ان ظالمانہ حرکتوں پر پردہ ڈالنے کی کوشش کی گئی ہے لیکن پھر بھی یہ مانا گیا ہے کہ اب بھی کہیں کہیں ایسے اتیاچار ہو جاتے ہیں.

دنیا میں اُس سمے تک شانتی استھائی روپ سے قائم نہیں رہ سکتی جب تک کہ دنیا کے تمام انسانوں کو بنا جات، دھرم رنگ اور وچاروں کے فرق کے برابر کے ادھیکار نہ مل جائیں. شانتی قائم ہونا آج دنیا کے ہر انسان کے ہت میں ہے اور اس لئے ضروری ہے کہ وہ ہر اُس بات کے خلاف آواز اُٹھائے جو اشانتی پھیلاتی ہو.

[illegible] नहीं. उन्हें कागज़ात घर ही पर भेज दिये जायेंगे. वह काग़ज़ उन तक कभी नहीं पहुँचते. इस तरह नीगरों को वोटर बनने से रोका जाता है.

मिसी सिपी, अलबामा और लूसियाना प्रान्तों में 15 लाख नीगरो ऐसे हैं जो क़ानून के अनुसार वोटर बन सकते हैं. लेकिन इन में से सिर्फ़ 21 हज़ार को ही वोट देने का हक़ है. यह ताज्जुब की बात है. मिसी सिपी प्रान्त में नीगरों की कुल एक फ़ी सदी आबादी को वोट देने का हक़ है. अलबामा में कुल दो फ़ी सदी नीगरो वोट दे सकते हैं. लूसियाना में कुल तीन फ़ी सदी नीगरों को वोटर बनाया गया है. न्यूमेक्सिको और ऐरीज़ोना की सूबे की सरकारों ने 1948 तक एक लाख हिन्दुस्तानियों को वोट का हक़ नहीं दिया था. यह हिन्दुस्तानी अब भी समाजिक उद्धार केन्द्रों से फ़ायदा नहीं उठा सकते.

केन्द्री क़ानून में जाति भेद

बहुत से अन्तर क़ौमी समझौतों पर अमरीका के दस्तख़त हैं. दूसरी जंग के बाद सन 1945 में पोस्डम के समझौते पर बहुत से राष्ट्रों ने दस्तख़त किये हैं इस समझौते पर अमरीका के भी दस्तख़त हैं. इस समझौते में कहा गया है कि "वह तमाम नाज़ी क़ानून जो जाति धर्म और राजकाजी विचारों के आधार पर आदमियों में फ़र्क़ करते हैं उन्हें ख़त्म कर दिया जायेगा." अमरीका यूनो का मेम्बर है और उसने वायदा किया है कि वह यूनो के चार्टर पर अमल करेगा. यूनो का बुनियादी असूल यह है कि तमाम इनसान बराबर हैं और हर तरह की आज़ादी उनका बुनियादी हक़ है.

इन समझौतों और वायदों के बाद भी अमरीकी सरकार नसली फ़र्क़ को जायज़ रखती है. यह भेद भाव क़ानून के रूप में भी है और अमल में तो बरता ही जाता है. कोलंबिया में तालीम के क्षेत्र में जाति भेद बरता जाता है. यह भेद भाव का क़ानून केन्द्री सरकार के क़ानून के अनुसार है.

सरकार दावा करती है कि हर स्कूल में हर जाति को बराबर की सुविधायें दी जाएंगी. लेकिन वाशिंगटन, जार्जिया और अलबामा के स्कूलों में घुसते ही इस दावे का भांडा फूट जाता है.

वाशिंगटन में केन्द्री क़ानून लागू हैं और उन्हीं के अनुसार खेल और मनोरंजन के क्षेत्र में भेद भाव बरता जाता है. यहां का मामला और अनोखा है. जनता की तरफ़ से जो खेल कूद होते हैं उन में सब रंग और सब जाति के लोग एक साथ मिल कर हिस्सा ले सकते हैं. लेकिन ऐसे जो खेल कूद सरकार की तरफ़ से होते हैं उन में

ضرورت نہیں. اُنہیں کاغذات گھر ہی پر بھیج دیئے جائینگے. یہ کاغذ اُن تک کبھی نہیں پہونچتے. اِس طرح نیگروں کو ووٹر بننے سے روکا جاتا ہے.

مسی سپی، الباما اور لوسیانا پرانتوں میں پندرہ لاکھ نیگرو ایسے ہیں جو قانون کے انوسار ووٹر بن سکتے ہیں. لیکن ان میں سے صرف 21 ہزار کو ہی ووٹ دینے کا حق ہے. یہ تعجب کی بات ہے. مسی سپی پرانت میں نیگروں کی کل ایک فیصدی آبادی کو ووٹ دینے کا حق ہے. الباما میں کل دو فیصدی نیگرو ووٹ دے سکتے ہیں. لوسیانا میں کل تین فیصدی نیگروں کو ووٹر بنایا گیا ہے. نیومیکسکو اور ایریزونا کی صوبہ کی سرکاروں نے 1948 تک ایک لاکھ ہندستانیوں کو ووٹ کا حق نہیں دیا تھا. یہ ہندستانی اب بھی سماجک اُدھار کیندروں سے فائدہ نہیں اُٹھا سکتے.

کیندری قانون میں جاتی بھید

بہت سے انتر قومی سمجھوتوں پر امریکہ کے دستخط ہیں. دوسری جنگ کے بعد 1945 میں پوسڈم کے سمجھوتے پر بہت سے راشٹروں نے دستخط کئے ہیں. اِس سمجھوتے پر امریکہ کے بھی دستخط ہیں. اِس سمجھوتے میں کہا گیا ہے کہ "وہ تمام نازی قانون جو جاتی دھرم اور راج کاجی وچاروں کے آدھار پر آدمیوں میں فرق کرتے ہیں اُنہیں ختم کر دیا جائیگا." امریکہ یونو کا ممبر ہے اور اُس نے وعدہ کیا ہے کہ وہ یونو کے چارٹر پر عمل کریگا. یونو کا بنیادی اصول یہ ہے کہ تمام انسان برابر ہیں اور ہر طرح کی آزادی اُن کا بنیادی حق ہے.

اِن سمجھوتوں اور وعدوں کے بعد بھی امریکی سرکار نسلی فرق کو جائز رکھتی ہے. یہ بھید بھاؤ قانون کے روپ میں بھی ہے اور عمل میں تو برتا ہی جاتا ہے. کولمبیا میں تعلیم کے چھیتر میں جاتی بھید برتا جاتا ہے. یہ بھید بھاؤ کا قانون کیندری سرکار کے قانون کے انوسار ہے.

سرکار دعویٰ کرتی ہے کہ ہر اِسکول میں ہر جاتی کو برابر کی سودھائیں دی جائیں گی. لیکن واشنگٹن، جارجیا اور الباما کے اسکولوں میں گھستے ہی اس دعوے کا بھانڈا پھوٹ جاتا ہے.

واشنگٹن میں کیندری قانون لاگو ہیں اور اُنہیں کے انوسار کھیل اور منورنجن کے چھیتر میں بھید بھاؤ برتا جاتا ہے. یہاں کا معاملہ اور انوکھا ہے. جنتا کی طرف سے جو کھیل کود ہوتے ہیں اُن میں سب رنگ اور سب جاتی کے لوگ ایک ساتھ ملکر حصہ لے سکتے ہیں. لیکن ایسے جو کھیل کود سرکار کی طرف سے ہوتے ہیں اُن میں

थे जा भी नहीं सकते. एक समय में और एक साथ एक खिड़की और एक सीढ़ी का इस्तेमाल करने की भी उन्हें इजाजत नहीं है.

राजकाजी अधिकार

ज़ियादातर प्रान्तों में नीगरों और गोरों को वोट देने का बराबर का क़ानूनी हक़ है. इस सम्बन्ध में जितने जाति भेद और रंग भेद क़ानून थे वह सब ख़त्म हो गये हैं. विधान के चौदहवें बदलाव के अनुसार केन्द्र ने प्रान्तों को ऐसे क़ानून बनाने से मना कर दिया है. फिर भी दक्खिनी प्रान्तों में लाखों नीगरों और पिछड़े हुए क़बीले ऐसे हैं जिन्हें वोट देने का हक़ नहीं है. चालबाजी, जुल्म और जबरदस्ती से इन नागरिकों को अपने नागरिक अधिकार से वंचित रक्खा जाता है. कुछ क़ानून ऐसे भी हैं जिनकी कुछ दफ़ाओं को उल्टे सीधे मानी पहनाए जाते हैं और जिनकी मदद से नीगरो का वोट का हक़ छीन लिया जाता है.

दक्खिनी प्रान्तों में उस आदमी को ही वोट का हक़ मिलता है जो सरकार को चुंगी अदा करता है. यह चुंगी आमदनी के लिहाज से लगाई जाती है. नीगरों आम तरीक़े से ग़रीब होते हैं. वह चुंगी नहीं देते इसलिये उन्हें वोट का हक़ नहीं मिलता.

वोट का हक़ देने से पहिले हर व्यक्ति की क़ाबलियत और समझ की परीक्षा की जाती है. यह क़ानून दक्खिन के तमाम प्रान्तों में लागू है. इस क़ानून के अनुसार वोटर बनने से पहिले हर आदमी को रजिस्ट्रार बोर्ड को इस बात का यक़ीन दिलाना पड़ेगा कि वह लिख पढ़ सकता है और अमरीका के केन्द्री विधान या प्रान्त के प्रांतीय विधान को समझ सकता है. इसके अलावा सरकारों ने रजिस्ट्रेशन बोर्ड को यह अख़्तयार दे दिया है कि रजिस्ट्रेशन के सम्बन्ध में वह ख़ुद जैसे नियम चाहे बना सकता है. रजिस्ट्रेशन में बहुत सी दिक़्क़तें होती हैं. रजिस्ट्रेशन बोर्ड के मेम्बरों को अपने गुन हर आदमी को वोटर बनने के लिये जताने पड़ते हैं. और वोटर होना या न होना उनकी मर्ज़ी पर निर्भर होता है. रजिस्ट्रेशन पबलिक जगहों पर नहीं किया जाता बल्कि इस मतलब के लिये सफ़ेद नसल वालों के घरों का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि सफ़ेद नसल के अफ़सर कालों के घरों पर नहीं जा सकते. इस के अलावा दूसरी दिक़्क़तें भी हैं. जब कोई नीगरो रजिस्ट्रेशन कराने जाता है तो उसे टला दिया जाता है. कभी कह दिया जाता है कि वह किसी दूसरे समय आए या किसी दूसरे दिन आए, और दो चार दफ़ा दौड़ कर वह चुप हो जाता है. कभी कहा जाता है कि उसके आने

ہے آ جا بھی نہیں سکتے . ایک سمے میں اور ایک ساتھ ایک کھڑکی اور ایک سیڑھی کا استعمال کرنے کی بھی انہیں اجازت نہیں ہے .

راجکاجی ادھکار

زیادہ تر پرانتوں میں نیگرو اور گوروں کو ووٹ دینے کا برابر کا قانونی حق ہے . اس سمبندھ میں جتنے جاتی بھید اور رنگ بھید قانون تھے وہ سب ختم ہو گئے ہیں . ودھان کے چودھویں بدلاؤ کے انوسار کیندر نے پرانتوں کو ایسے قانون بنانے سے منع کر دیا ہے . پھر بھی دکھنی پرانتوں میں لاکھوں نیگرو اور پچھڑے ہوئے قبیلے ایسے ہیں جنہیں ووٹ دینے کا حق نہیں ہے . چالبازی، ظلم اور زبردستی سے ان ناگرکوں کو نے ناگرک ادھیکار سے ونچت رکھا جاتا ہے . کچھ قانون ایسے بھی ایسے ہیں جن کی کچھ دفعوں کو الٹے سیدھے معنی پہنائے جاتے ہیں اور جن کی مدد سے نیگرو کا ووٹ کا حق چھین لیا جاتا ہے .

دکھنی پرانتوں میں اس آدمی کو ہی ووٹ کا حق ملتا ہے جو سرکار کو چنگی ادا کرتا ہے . یہ چنگی آمدنی کے لحاظ سے لگائی جاتی ہے . نیگرو عام طریقے سے غریب ہوتے ہیں . وہ چنگی نہیں دیتے . اس لئے انہیں ووٹ کا حق نہیں ملتا .

ووٹ کا حق دینے سے پہلے ہر ویکتی کی قابلیت اور سمجھ کی پریکشا کی جاتی ہے . یہ قانون دکھن کے تمام پرانتوں میں لاگو ہے . اس قانون کے انوسار ووٹر بننے سے پہلے ہر آدمی کو رجسٹرار بورڈ کو اس بات کا یقین دلانا پڑے گا کہ وہ لکھ پڑھ سکتا ہے اور امریکہ کے کیندری ودھان یا پرانت کے پرانتی ودھان کو سمجھ سکتا ہے . اس کے علاوہ سرکاروں نے رجسٹریشن بورڈ کو یہ اختیار دے دیا ہے کہ رجسٹریشن کے سمبندھ میں وہ خود جیسے نیم چاہے بنا سکتا ہے . رجسٹریشن میں بہت سی دقتیں ہوتی ہیں . رجسٹریشن بورڈ کے ممبروں کو اپنے گن ہر آدمی کو ووٹر بننے کے لئے جتانے پڑتے ہیں اور ووٹر ہونا یا نہ ہونا ان کی مرضی پر نربھر ہوتا ہے . رجسٹریشن پبلک جگہوں پر نہیں کیا جاتا بلکہ اس مطلب کے لئے سفید نسل والوں کے گھروں کا استعمال کیا جاتا ہے کیونکہ سفید نسل افسر کالوں کے گھروں پر نہیں جا سکتے . اس کے علاوہ دوسری دقتیں بھی ہیں . جب کوئی نیگرو رجسٹریشن کرانے جاتا ہے تو اسے ٹلا دیا جاتا ہے . کبھی کہہ دیا جاتا ہے کہ وہ کسی دوسرے سمے آئے یا کسی دوسرے دن آئے اور دو چار دفعہ دوڑ کر وہ چپ ہو جاتا ہے . کبھی کہا جاتا ہے کہ اسکے آنے

नहीं होगा कि तालीमी संस्थाओं ने भी रंग भेद और जाति भेद में ग़ैर लिखे अटल क़ानून का रूप ले लिया है.

जिस तरह अपने देश में डाक्टरी वग़ैरा पेशे करने के लिये प्रान्तीय सरकारों से लैसंस लेना पड़ता है. उसी तरह अमरीका में भी प्रान्तीय सरकारें बहुत से पेशे अख़्तयार करने के संबन्ध में लैसंस देती हैं. यह लैसंस एक सरकारी बोर्ड देता है. इस तरह के लैसंस देने में भी रंग और जात का ख़याल रक्खा जाता है. सन 1948 में एक सरकारी कमीशन ने इन बोर्डों की जांच की थी. और रिपोर्ट दी थी कि यह बोर्ड दरख़्वास्त वाले फ़ार्मों में ऐसी बहुत सी चीज़ें पूछते हैं जिनका पेशे से कोई ताल्लुक़ नहीं होता.

खेल मनोरंजन और सफ़र में जाति भेद क़ानून

दक्खिन के बहुत से प्रान्तों में नीगरो और गोरे एक साथ एक रेल के डिब्बे में नहीं बैठ सकते. नीगरों के लिये दूसरे डिब्बे होते हैं जो आम तरीक़े से ख़राब होते हैं. नीगरों का वेटिंग रूम भी अलग होता है.

नीगरो लोग उन पबलिक या प्राइवेट मनोरंजन घरों, पार्कों, अस्पतालों, सेवा समितियों, होटलों और थियेटरों में नहीं जा सकते जो गोरों के लिये मख़सूस हैं या जिनके मालिक गोरी नसल के हैं. जेल भी अलग अलग होते हैं. फ़ैक्टरियों में काले और गोरे मज़दूर साथ काम नहीं कर सकते.

ओकलाहोमा में नीगरों और सफ़ेद नसल के लोगों के लिये टेलीफ़ोन करने के अलग अलग कमरे हैं. अगर कोई नीगरो उस कमरे से टेलीफ़ोन करता है जो सफ़ेद नसल वालों के लिये मख़सूस है तो क़ानून उसे मुजरिम ठहराता है.

टेक्सास प्रान्त का क़ानून गोरों और नीगरों को साथ साथ बाक्सिंग मैच में हिस्सा लेने की इजाज़त नहीं देता.

आरकन्सास प्रान्त के क़ानून के अनुसार गोरे और नीगरो एक ही जगह वोट नहीं दे सकते. चुनाव के समय नीगरों के लिये अलग इन्तज़ाम किया जाता है.

उत्तर कारोलीना में क़ानून है की उस प्रान्त का फ़ौजी अफ़सर हमेशा सफ़ेद नसल का ही होगा.

दक्खिनी कारोलिना में क़ानून है की सूती मिलों में नीगरो और सफ़ेद नसल के मज़दूर एक कमरे में मिलकर काम नहीं कर सकते. वह एक ही खिड़की से तनख़्वाह भी नहीं ले सकते. पीने और हाथ धोने के लिये पानी और साबुन का इन्तज़ाम भी गोरे और कालों के लिये अलग अलग जगह और भिन्न भिन्न क़िस्म का किया जाता है. यही नहीं, नीगरो और सफ़ेद नसल के लोग एक ही दरवाज़े

نہیں ہوگا کہ تعلیمی سنستھاؤں میں بھی رنگ بھید اور جاتی بھید نے غیر لکھے اٹل قانون کا روپ لے لیا ہے۔

جس طرح اپنے دیش میں ڈاکٹری وغیرہ پیشے کرنے کے لئے پرانتی سرکاروں سے لائسنس لینا پڑتا ہے اسی طرح امریکہ میں بھی پرانتی سرکاریں بہت سے پیشے اختیار کرنے کے سمبندھ میں لائسنس دیتی ہیں۔ یہ لائسنس ایک سرکاری بورڈ دیتا ہے۔ اس طرح کے لائسنس دینے میں بھی رنگ اور جات کا خیال رکھا جاتا ہے۔ 1948 میں ایک سرکاری کمیشن نے ان بورڈوں کی جانچ کی تھی اور رپورٹ دی تھی کہ یہ بورڈ درخواست والے فارموں میں ایسی بہت سی چیزیں پوچھتے ہیں جن کا پیشے سے کوئی تعلق نہیں ہوتا۔

کھیل، منورنجن اور سفر میں جاتی بھید قانون

دکھن کے بہت سے پرانتوں میں نیگرو اور گورے ایک ساتھ ایک ریل کے ڈبے میں نہیں بیٹھ سکتے۔ نیگرو کے لئے دوسرے ڈبے ہوتے ہیں۔ جو عام طریقے سے خراب ہوتے ہیں۔ نیگروؤں کا ویٹنگ روم بھی الگ ہوتا ہے۔

نیگرو لوگ ان پبلک یا پرائیویٹ منورنجن گھروں، پارکوں، اسپتالوں، سیوا سمیتیوں، ہوٹلوں اور تھیٹروں میں نہیں جاسکتے جو گوروں کے لئے مخصوص ہیں یا جن کے مالک گوری نسل کے ہیں۔ جیل بھی الگ الگ ہوتے ہیں۔ فیکٹریوں میں کالے اور گورے مزدور ساتھ کام نہیں کرسکتے۔

اوکلاہوما میں نیگرو اور سفید نسل کے لوگوں کے لئے ٹیلیفون کرنے کے الگ الگ کمرے ہیں۔ اگر کوئی نیگرو اس کمرے سے ٹیلیفون کرتا ہے جو سفید نسل والوں کے لئے مخصوص ہے تو قانون اسے مجرم ٹھہراتا ہے۔

ٹیکسا پرانت کا قانون گوروں اور نیگروؤں کو ساتھ ساتھ باکسنگ میچ میں حصہ لینے کی اجازت نہیں دیتا۔

آرکنساس پرانت کے قانون کے انوسار گورے اور نیگرو ایک ہی جگہ ووٹ نہیں دے سکتے۔ چناؤ کے سمے نیگرو کے لئے الگ انتظام کیا جاتا ہے۔

اتری کارولینا میں قانون ہے کہ اس پرانت کا فوجی افسر ہمیشہ سفید نسل کا ہی ہوگا۔

دکھنی کارولینا میں قانون ہے کہ سوتی ملوں میں نیگرو اور سفید نسل کے مزدور ایک کمرے میں مل کر کام نہیں کرسکتے۔ وہ ایک ہی کھڑکی سے تنخواہ بھی نہیں لے سکتے۔ پینے اور ہاتھ دھونے کے لئے پانی اور صابن کا انتظام بھی گورے اور کالوں کے لئے الگ الگ جگہ اور بھن بھن قسم کا کیا جاتا ہے۔ یہی نہیں، نیگرو اور سفید نسل کے لوگ ایک ہی دروازے

जा सकते. जिन इलाक़ों में नीगरो को जाने की इजाज़त नहीं है वही शहर के ख़ूबसूरत इलाक़े हैं और वहीं ही सैर और मनोरंजन का प्रबन्ध है.

तालीम में जाति भेद क़ानून

प्रान्तीय सरकारों ने तालीम के मैदान में भी जाति भेद और रंग भेद को जायज़ रक्खा है. 21 प्रान्तों ने ऐसे क़ानून बना रक्खे हैं जिनके अनुसार नीगरो और गोरे बच्चे पबलिक स्कूलों में एक साथ नहीं पढ़ सकते. उनके वास्ते अलग अलग स्कूल होते हैं. तीन प्रान्तों में तो अमरीकी हिन्दुस्तानी भी सफ़ेद नसल के अमरीकनों के साथ एक स्कूल में नहीं पढ़ सकते. दो प्रान्तों ने क़ानून बना कर अलग अलग जाति के बच्चों के वास्ते अलग अलग कोर्स की किताबें मुक़र्रर कर रक्खी हैं. एक जाति के बच्चे को दूसरे जाति के बच्चे की कोर्स की किताब नहीं पढ़ाई जा सकती.

अमरीका के दक्खिनी भाग के बहुत से प्रान्तों में कारबारी कालिज, खेती के कालिज और दूसरे कालिजों में जाति भेद क़ानून लागू हैं. मेरी लैंड के एक क़ानून के अनुसार यह ज़रूरी है कि नीगरो स्कूलों का संचालक सफ़ेद नसल का आदमी हो. टैनेसी के प्रान्तों में यह क़ानून है कि कोई भी शख़्स जिसने वहां जन्म नहीं लिया है और सफ़ेद नसल का नहीं है, जिसने पैदाइश से ही अंगरेज़ी नहीं बोली है या जिसके मां बाप अंगरेज़ी नहीं बोलते हैं वह सफ़ेद नसल के बच्चों को नहीं पढ़ा सकता.

जैसा ऊपर मिसालों से ज़ाहिर है कि तालीम का ढांचा भी जाति भेद के आधार पर खड़ा है. 1947 में जो तालीम की जांच करने के लिये एक केन्द्रीय कमीशन मुक़र्रर हुआ था उसने रिपोर्ट दी कि बहुत से कालिज "इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कालिज में दाख़िले के वक़्त विद्यार्थी अपने धर्म जात और रंग व नसल के संबन्ध में कालिज अधिकारियों को पूरी पूरी जानकारी दें. विद्यार्थियों की क़ाबलियत का अन्दाज़ा लगाने या उन्हें किसी तरह की सहूलियत पहुंचाने के लिये यह जानकारी हासिल नहीं की जाती बल्कि इस जानकारी से फ़ायदा उठा कर ख़ास रंग और ख़ास जाति के लोगों को दाख़िल नहीं किया जाता."

जो कालिज ग़ैर सफ़ेद नसल के लोगों से यह बर्ताव करते हैं उनमें से बहुत से प्रान्तीय सरकारों के कालिज हैं, दूसरे कालिजों को टैक्स से छूट मिली है जिस कारन से वह अध सरकारी हो जाते हैं. इन सरकारी और अध सरकारी कालिजों में जब यह भेद बढ़ता जाता है और सरकार उसको नहीं रोक पाती है तो यह कहना ग़लत

جا سکتے ۔ جن علاقوں میں نیگرو کو جانے کی اجازت نہیں ہے وہی شہر کے خوبصورت علاقے ہیں اور وہیں ہی سیر اور منورنجن کا پربندھ ہے ۔

تعلیم میں جاتی بھید قانون

پرانتی سرکاروں نے تعلیم کے میدان میں بھی جاتی بھید اور رنگ بھید کو جائز رکھا ہے ۔ اکیس پرانتوں نے ایسے قانون بنا رکھے ہیں جن کے انوسار نیگرو اور گورے بچے پبلک اسکولوں میں ایک ساتھ نہیں پڑھ سکتے ۔ ان کے واسطے الگ الگ اسکول ہوتے ہیں ۔ تین پرانتوں میں تو امریکی ہندستانی بھی سفید نسل کے امریکنوں کے ساتھ ایک اسکول میں نہیں پڑھ سکتے ۔ دو پرانتوں نے قانون بناکر الگ الگ جاتی کے بچوں کے واسطے الگ الگ کورس کی کتابیں مقرر کر رکھی ہیں ۔ ایک جاتی کے بچے کو دوسرے جاتی کے بچے کی کورس کی کتاب نہیں پڑھائی جاسکتی ۔

امریکہ کے دکھنی بھاگ کے بہت سے پرانتوں میں کاروباری کالج، کھیتی کے کالج اور دوسرے کالجوں میں، جاتی بھید قانون لاگو ہے۔ میری لینڈ کے ایک قانون کے انوسار یہ ضروری ہے کہ نیگرو اسکولوں کا سنچالک سفید نسل کا آدمی ہو ۔ ٹینیسی کے پرانت میں یہ قانون ہے کہ کوئی بھی شخص جس نے وہاں جنم نہیں لیا ہے اور سفید نسل کا نہیں ہے، جس نے پیدائش سے ہی انگریزی نہیں بولی ہے یا جس کے ماں باپ انگریزی نہیں بولتے ہیں وہ سفید نسل کے بچوں کو نہیں پڑھا سکتا ۔

اوپر کی مثالوں سے ظاہر کہ تعلیم کا ڈھانچہ بھی جاتی بھید کے آدھار پر کھڑا ہے ۔ 1947 میں اونچی تعلیم کی جانچ کرنے کے لئے ایک کیندری کمیشن مقرر ہوا تھا۔ اس نے رپورٹ دی کہ بہت سے کالج "اس بات پر بہت زور دیتے ہیں کہ کالج میں داخلہ کے وقت ودیارتھی اپنے دھرم جات اور رنگ و نسل کے سمبندھ میں کالج ادھیکاریوں کو پوری پوری جانکاری دیں ۔ ودیارتھیوں کی قابلیت کا اندازہ لگانے یا انہیں کسی طرح کی سہولیت پہونچانے کے لئے یہ جانکاری حاصل نہیں کی جاتی بلکہ اس جانکاری سے فائدہ اٹھاکر خاص رنگ اور خاص جاتیوں کے لوگوں کو داخل نہیں کیا جاتا ۔"

جو کالج غیرسفید نسل کے لوگوں سے یہ برتاؤ کرتے ہیں ان میں سے بہت سے پرانتی سرکاروں کے کالج ہیں۔ دوسرے کالجوں کو ٹیکس سے چھوٹ ملی ہے، جس کارن سے یہ ادھ سرکاری ہو جاتے ہیں ۔ ان سرکاری اور ادھ سرکاری کالجوں میں جب یہ بھید بڑھتا جاتا ہے اور سرکار اس کو نہیں روک پاتی ہے تو یہ کہنا غلط

नीगरो पादरियों को सिर्फ़ नीगरो जोड़ों की शादी कराने की इजाज़त देता है और दूसरे सफ़ेद रंग के लोगों की शादी कराने से सख़्ती से मना करता है.

मेरी लैंड प्रान्त के एक क़ानून के शब्द यह हैं—"अगर किसी सफ़ेद नसल की औरत के पेट से किसी नीगरो का बच्चा पैदा होता है तो उस औरत को डेढ़ साल से लेकर ज़ियादा से ज़ियादा पांच साल की सज़ा दी जायगी." जारजिया और आरकन्सास प्रान्तों में भी ऐसे क़ानून हैं.

पन्द्रह प्रान्त सफ़ेद नसल के लोगों और मंगोलियन और पूरब वालों के दरमियान शादी की मनाही करते हैं. पन्द्रह से कुछ कम ऐसे प्रान्त हैं जिन में सफ़ेद नसल के लोगों और मलाया के लोगों, रेड इनडियनों, अमरीकी हिन्दुस्तानियों, एशिया के हिन्दुस्तानियों के बीच शादी की इजाज़त नहीं है. इन प्रान्तों में अमरीकी हिन्दुस्तानी और मलाया के लोग भी नीगरो से शादी नहीं कर सकते.

प्रान्तों की सरकारों और असेम्बलियों के अलावा शहरी कमेटियों ने रंग भेद से सम्बन्धित हज़ारों क़ानून बनाए हैं. उनमें से कुछ यह हैं.

अलबामा प्रान्त के बरमिंघम शहर के एक क़ानून की दफ़ा 597 के शब्द यह हैं. "नीगरों और सफ़ेद नस्ल के लोगों के लिये एक साथ खेलना या ताश शतरंज वग़ैरा ऐसे खेलों के लिये एक जगह इकट्ठा होना जुर्म है. ऐसा जुर्म करने वालों पर मुक़दमा चलाया जाएगा और उन को छे महीने की सज़ा दी जाएगी और या सौ डालर जुरमाना किया जाएगा."

एटलान्टा (जारजिया) का क़ानून सब से ज़ियादा दिलचस्प है–"कोई नाई जो सफ़ेद नसल का नहीं है किसी सफ़ेद नसल की औरत या लड़की की सेवा नहीं कर सकता."

क़बरस्तान के सम्बन्ध में भी क़ानून हैं—"जिस क़बरस्तान में सफ़ेद नसल के लोग गाड़े जाते हैं या जो जगह उनके इस्तेमाल के लिये छोड़ी गई है, उस क़बरस्तान में क़बरस्तान का अफ़सर न किसी नीगरो को गाड़ेगा न गाड़ने की इजाज़त देगा."

वाशिंगटन में पागलपन की हद दिखाई पड़ती है. वहां के एक क़ानून के अनुसार वह कुत्ते जिनके मालिक गोरे हैं और वह कुत्ते जिनके मालिक काले या पीले नसल के लोग हैं एक क़बरस्तान में दफ़न नहीं किये जा सकते.

अमरीका में बहुत से गांव और शहर ऐसे भी हैं जहां नीगरों और मैक्सिकन अमरीकियों को इस बात की हिदायत है कि वह रात के समय उन इलाक़ों के बाहर न जाएं जो उनके लिये मख़सूस हैं. कुछ जगहों पर शहर के ख़ास ख़ास हिस्सों में यह लोग किसी भी वक़्त नहीं

نیگرو پادریوں کو صرف نیگرو جوڑوں کی شادی کرانے کی اجازت دیتا ہے اور دوسرے سفید رنگ کے لوگوں کی شادی کرانے سے سختی سے منع کرتا ہے ۔

میری لینڈ پرانت کے ایک قانون کے شبد یہ ہیں— "اگر کسی سفید نسل کی عورت کے پیٹ سے کسی نیگرو کا بچہ پیدا ہوتا ہے تو اس عورت کو ڈیڑھ سال سے لےکر زیادہ سے زیادہ پانچ سال کی سزا دی جائیگی ۔" جارجیا اور آرکنساس پرانتوں میں بھی ایسے قانون ہیں ۔

پندرہ پرانت سفید نسل کے لوگوں اور منگولین اور پورب والوں کے درمیان شادی کی مناہی کرتے ہیں ۔ پندرہ سے کچھ کم ایسے پرانت ہیں جن میں سفید نسل کے لوگوں اور ملایا کے لوگوں، ریڈ انڈینوں، امریکی ہندستانیوں، ایشیا کے ہندستانیوں کے بیچ شادی کی اجازت نہیں ہے ۔ ان پرانتوں میں امریکی ہندستانی اور ملایا کے لوگ بھی نیگرو سے شادی نہیں کرسکتے ۔

پرانتوں کی سرکاروں اور اسمبلیوں کے علاوہ شہری کمیٹیوں نے رنگ بھید سے سمبندھت ہزاروں قانون بنائے ہیں ۔ ان میں سے کچھ یہ ہیں ۔

الباما پرانت کے برمنگھم شہر کے ایک قانون کی دفعہ 597 کے شبد یہ ہیں— "نیگرو اور سفید نسل کے لوگوں کے لئے ایک ساتھ کھیلنا یا تاش شطرنج وغیرہ ایسے کھیلوں کے لئے ایک جگہ اکٹھا ہونا جرم ہے ۔ ایسا جرم کرنے والوں پر مقدمہ چلایا جائیگا اور ان کو چھ مہینے کی سزا دی جائیگی اور یا سو ڈالر جرمانہ کیا جائیگا ۔"

اٹلانٹا (جارجیا) کا قانون سب سے زیادہ دلچسپ ہے— "کوئی نائی جو سفید نسل کا نہیں ہے کسی سفید نسل کی عورت یا لڑکی کی سیوا نہیں کرسکتا ۔"

قبرستان کے سمبندھ میں بھی قانون ہیں— "جس قبرستان میں سفید نسل کے لوگ گاڑے جاتے ہیں یا جو جگہ ان کے استعمال کے لئے چھوڑی گئی ہے اس قبرستان میں قبرستان کا افسر نہ کسی نیگرو کو گاڑے گا اور نہ گاڑنے کی اجازت دیگا ۔"

واشنگٹن میں پاگل پن کی حد دکھائی پڑتی ہے ۔ یہاں ایک قانون کے انوسار وہ کتے جن کے مالک گورے ہیں اور وہ کتے جن کے مالک کالے یا پیلے نسل کے لوگ ہیں ایک قبرستان میں دفن نہیں کئے جاسکتے ۔

امریکہ میں بہت سے گاؤں اور شہر ایسے بھی ہیں جہاں نیگرو اور میکسیکن امریکنوں کو اس بات کی ہدایت ہے کہ وہ رات کے سمے ان علاقوں کے باہر نہ جائیں جو ان کے لئے مخصوص ہیں ۔ کچھ جگہوں پر شہر کے خاص خاص حصوں میں یہ لوگ کسی بھی وقت نہیں

मौजूद हैं जो केन्द्रीय क़ानूनों के खिलाफ़ हैं, अंतरराष्ट्रीय मुआहिदों के खिलाफ़ हैं, इन्सानियत के खिलाफ़ हैं. हम सब से पहिले मिसी सिपी के एक क़ानून का ज़िक्र करते हैं.

"जो आदमी या संस्था ऐसी चीज़ को छापे और प्रकाशित करे या उसको छपे, टाइप या हाथ के लिखे किसी रूप में बांटे जिस में गोरों और नीगरो की समाजी बराबरी और उनके बीच शादी के सम्बन्ध में बहस की गई हो या उस तरफ़ सिर्फ़ इशारा किया गया हो या इस बात की सूचना दी गई हो, वह आदमी या संस्था मुजरिम समझे जावेंगे और उन पर 500 डालर तक जुर्माना किया जावेगा या 6 महीने की सज़ा दी जावेगी और या सज़ा जुर्माना दोनों दंड उन्हें एक साथ दिये जावेंगे."

अमरीका के तीस प्रान्तों की सरकारें नीगरो और गोरों के बीच शादी की इजाज़त नहीं देती. आज़ाद देशों में असेम्बलियां क़ानून पास करती हैं और सरकारें उस पर अमल कराती हैं. लेकिन अमरीका में उल्टा मामला है. अमरीका के 6 प्रान्तों की असेम्बलियों को यह हक़ नहीं है कि वह कभी भी नीगरों और गोरों की शादी की इजाज़त दे सकें. वह हक़ इन प्रान्तों की सरकारों ने हज़म कर लिया है'

टैक्सा प्रान्त का शादी सम्बन्धी क़ानून बहुत ही दिलचस्प है—

"अगर गोरे और नीगरो प्रान्त के अंदर आपस में शादी करते हैं, या उस प्रान्त के अन्दर शादी कर चुके हैं, और या प्रान्त से बाहर शादी कर चुके हैं और अब प्रान्त में आ कर मियां बीबी की तरह रह रहे हैं तो उनको कम से कम दो साल और ज़ियादा से ज़ियादा पांच साल तक बजारकारी जेल खानों या तोबा घरों में रहने की सज़ा मिलेगी."

यह भी ध्यान देने की बात है कि जो पादरी गोरों और नीगरों की शादियां कराते हैं उन्हें भी सज़ा दी जाती है. इस क़िस्म का क़ानून तीस प्रान्तों में है.

पच्छिम वरजिनिया के प्रान्त का यह कानून है— "जो आदमी सफ़ेद चमड़ी वालों और नीगरों में शादी कराता है वह मुजरिम समझा जायगा और मुक़दमा चला कर उस पर दो सौ डालर तक जुरमाना किया जायगा." यह क़ानून कुछ हलका है.

दक्खिन करोलीना प्रान्त में ऐसे पादरी को जो गोरों और नीगरों के बीच शादी कराता है एक साल तक की सख्त सज़ा दी जाती है.

कुछ प्रान्तों में ऐसे क़ानून भी हैं जो गोरे और नीगरो पादरियों के बीच भी फ़रक़ करते हैं. जारजिया का क़ानून

موجود هیں جو کیندری قانونوں کے خلاف هیں' انٹرنیشنل معاهدوں کے خلاف هیں' انسانیت کے خلاف هیں . هم سب سے پہلے مسسی سپی کے ایک قانون کا ذکر کرتے هیں—

"جو آدمی یا سنستھا ایسی چیز کو چھاپے اور پرکاشت کرے یا اُس کو چھپے' ٹائپ یا هاتھ کے لکھے کسی روپ میں بانٹے جس میں گوروں اور نیگرو کی سماجی برابری اور اُن کے بیچ شادی کے سمبندھ میں بحث کی گئی هو یا اِس طرف صرف اِشارہ کیا گیا هو یا اس بات کی سوچنا دی گئی هو' وہ آدمی یا سنستھا مجرم سمجھے جائیں گے اور اُن پر پانچ سو ڈالر تک جرمانہ کیا جائے گا یا چھ مہینے کی سزا دی جائے گی اور یا سزا اور جرمانہ دونوں ڈنڈ اُنہیں ایک ساتھ دیئے جائیں گے ."

امریکہ کے تیس پرانتوں کی سرکاریں نیگرو اور گوروں کے بیچ شادی کی اجازت نہیں دیتی . آزاد دیشوں میں اسمبلیاں قانون پاس کرتی هیں اور سرکاریں اُس پر عمل کراتی هیں. لیکن امریکہ میں اُلٹا معاملہ هے . امریکہ کے چھ پرانتوں کی اسمبلیوں کو یہ حق نہیں هے کہ وہ کبھی بھی نیگروؤں اور گوروں کی شادی کی اجازت دے سکیں. یہ حق ان پرانتوں کی سرکاروں نے هضم کرلیا هے .

ٹکسا پرانت کا شادی سمبندھی قانون بہت هی دلچسپ هے—

"اگر گورے اور نیگرو پرانت کے اندر آپس میں شادی کرتے هیں' یا اُس پرانت کے اندر شادی کر چکے هیں' اور یا پرانت سے باهر شادی کر چکے هیں اور اب پرانت میں آکر میاں بیوی کی طرح رہ رهے هیں تو کم سے کم دو سال اور زیادہ سے زیادہ پانچ سال تک ادھارکاری جیل خانوں یا توبہ گھروں میں رهنے کی سزا ملیگی ."

یہ بھی دھیان دینے کی بات هے کہ جو پادری گوروں اور نیگرو کی شادیاں کراتے هیں انہیں بھی سزا دی جاتی هے. اس قسم کا قانون تیس پرانتوں میں هے .

پچھم ورجینیا کے پرانت کا یہ قانون هے—"جو آدمی سفید چمڑی والوں اور نیگرو میں شادی کراتا هے وہ مجرم سمجھا جائے گا اور مقدمہ چلا کر اس پر دو سو ڈالر تک جرمانہ کیا جائے گا ." یہ قانون کچھ هلکا هے .

دکھن کرولینا پرانت میں ایسے پادری کو جو گوروں اور نیگرو کے بیچ شادی کراتا هے ایک سال تک کی سخت سزا دی جاتی هے .

کچھ پرانتوں میں ایسے قانون بھی هیں جو گورے اور نیگرو پادریوں کے بیچ بھی فرق کرتے هیں. جارجیا کا قانون

...ज्यादा ज्यादा से ज्यादा होनी ... इससे यह आबादी तीन गुना है. एक कमेटी ...लेम शहर की आबादी की जांच कर रही थी. यहां भी ...रो आबाद हैं. इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था अगर इतने सटा सटा कर लोगों को बसाया जाने लगा पूरे अमरीका की आबादी न्यूयार्क शहर के सिर्फ़ आधे ...से में बस जायगी.

जूरी क़ानून

इसी तरह जूरी का क़ानून भी है. खुद क़ानून में नसली और रंग भेद का कहीं ज़िक्र भी नहीं है. यह क़ानून सब ...रिकों को एकसा मानता है. लेकिन अमल में मामला ...ा है. प्रोफ़ेसर पालिन किब ने अपनी किताब "टेकसा ...टिन अमरीकन" में 1946 की एक रिपोर्ट का ज़िक्र ... है. इस रिपोर्ट में लिखा है कि "टेकसा की पचास ...न्टियां ऐसी हैं जहां लेटिन अमरीकनों की आबादी 15 ...दी से 25 फ़ी सदी तक है. इन इलाक़ों में भी ...सकन नसल के लोगों को कभी भी जूरी में नहीं ...या जाता. माल के मामूली मुक़दमों में भी इस नसल ...ोग जूरी के मेम्बर मुक़र्रर नहीं किए जाते."

यहां हमें यह बात साफ़ तरीक़े से समझ लेना चाहिए अमरीका में नसली और रंगी भेद भाव सिर्फ़ नीगरो ...ी सीमित नहीं है. यहूदी, लेटिन अमरीकी, पुराने ...रीकी और दूसरी जातियों के लोग भी इसके शिकार

पैसिफ़िक सागर में बहुत से द्वीप हैं जिन पर अमरीका ...ब्ज़ा है उन्हीं द्वीपों में किसी एक में समोआ जाति ...ोग आबाद हैं. कोई अमरीकी क़ानून ऐसा नहीं है ...ो समोआ जाति के लोगों को डाक्टर या दांत का ...र बनने से रोकता हो. लेकिन इस द्वीप के कालिजों ...क्टरी की तालीम नहीं दी जाती. इन्तज़ाम फ़ौज के ... में है और फ़ौजी अधिकारी तालीम का ढर्रा भी ... हैं. यहां के स्कूलों में अंगरेज़ी ज़बान की पढ़ाई पर ... दिया जाता है और कुछ दस्तकारियां भी सिखाई जाती ...किसी सूरत में भी कोई तकनीकी तालीम नहीं दी जाती. ...ज़ी की पढ़ाई इस लिए होती है ताकि मालिकों को ...चीत करने और व्योहार रखने में आसानी हो और ...कारियां इस लिये कि उनकी मेहनत कारखानेदारों के ...आ सके, बहरहाल कहने का मतलब यह है कि लिखा ... एक बात है और गैर लिखा अमली क़ानूनी दूसरी

...न्ती क़ानून

...ब हम लिखे दूसरे क़ानूनों को ले लें. अमरीका में 48 ... हैं. इन में से बहुत से प्रान्तों में ऐसे क़ानून

مربع میل میں جتنی آبادی زیادہ سے زیادہ ہونی چاہئیے اس سے یہ آبادی تین گنا ہے ۔ ایک کمیٹی هارلم شہر کی آبادی کی جانچ کر رہی تھی۔ یہاں بھی نیگرو آباد ہیں۔ اس کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں لکھا تھا کہ اگر اتنا سٹا سٹا کر لوگوں کو بسایا جانے لگا تو پورے امریکہ کی آبادی نیویارک شہر کے صرف آدھے حصے میں بس جائیگی۔

جوری قانون

اسی طرح جوری کا قانون بھی ہے ۔ خود قانون میں نسلی بھید اور رنگ بھید کا کہیں ذکر بھی نہیں ہے ۔ یہ قانون سب ناگرکوں کو یکساں مانتا ہے۔ لیکن عمل میں معاملہ اُلٹا ہے ۔ پروفیسر پالن کب نے اپنی کتاب "ٹکسا میں لیٹن امریکن" میں 1946 کی ایک رپورٹ کا ذکر کیا ہے ۔ اس رپورٹ میں لکھا ہے کہ "ٹکسا کی پچاس کاؤنٹیاں ایسی ہیں جہاں لیٹن امریکنوں کی آبادی 15 فی صدی سے 25 فی صدی تک ہے ۔ ان علاقوں میں بھی میکسیکن نسل کے لوگوں کو کبھی بھی جوری میں نہیں بلایا جاتا ۔ مال کے معمولی مقدموں میں بھی اس نسل کے لوگ جوری کے ممبر مقرر نہیں کئے جاتے ۔"

یہاں ہمیں یہ بات صاف طریقے سے سمجھ لینا چاہئیے کہ امریکہ میں نسلی اور رنگی بھید بھاؤ صرف نیگرو تک ہی سیمت نہیں ہے ۔ یہودی، لیٹن امریکی، پرانے امریکی اور دوسری جاتیوں کے لوگ بھی اس کے شکار ہیں ۔

پیسفک ساگر میں بہت سے دیپ ہیں جن پر امریکہ کا قبضہ ہے ۔ انہیں دیپوں میں کسی ایک میں سموا جاتی کے لوگ آباد ہیں ۔ کوئی امریکی قانون ایسا نہیں ہے جو سموا جاتی کے لوگوں کو ڈاکٹر یا دانت کا ڈاکٹر بننے سے روکتا ہو ۔ لیکن اس دیپ کے کالجوں میں ڈاکٹری کی تعلیم نہیں دی جاتی ۔ انتظام فوج کے ہاتھ میں ہے اور فوجی ادھیکاری تعلیم کا ڈھرا بھی طے کرتے ہیں ۔ یہاں کے اسکولوں میں انگریزی زبان کی پڑھائی پر زور دیا جاتا ہے اور کچھ دستکاریاں بھی سکھائی جاتی ہیں ۔ کسی صورت میں بھی کوئی تکنیکی تعلیم نہیں دی جاتی ۔ انگریزی کی پڑھائی اس لئے ہوتی ہے تاکہ مالکوں کو بات چیت کرنے اور بیوہار رکھنے میں آسانی ہو اور دستکاریاں اس لئے کہ ان کی محنت کارخانے داروں کے کام آ سکے ۔ بہرحال کہنے کا مطلب یہ ہے کہ لکھا قانون ایک بات ہے اور غیر لکھا عملی قانون دوسری بات ۔

پرانتی قانون

اب ہم لکھے دوسرے قانونوں کو لے لیں۔ امریکہ میں 48 پرانت ہیں۔ ان میں سے بہت سے پرانتوں میں ایسے قانون

कर सकता है, पर उनको पा कर इस नतीजे पर पहुँचना कि कौन बूटी किस शकल में कैसा गुन रखती है यह आसान नहीं. इसी को विज्ञान कहा जाता है. रूसी विचारकों ने इतिहास को इसी रीति से पढ़ा और उन्होंने 'हिसटारिकल मेटेरियेलिज़्म' या डाइलेक्टिकल मेथड के नाम से एक नया विज्ञान खड़ा कर दिया जो समाज शास्त्रियों के लिये जानना ज़रूरी है और उसी की देन है, समाजवाद से गुज़रता साम्यवाद.

—भगवानदीन

کرسکتا ہے، پر اُن کو پاکر اِس نتیجے پر پہونچنا کہ کون بوٹی کس شکل میں کیسا گن رکھتی ہے یہ آسان نہیں ۔ اِسی کو وگیان کہا جاتا ہے ۔ روسی وچارکوں نے اِتہاس کو اِسی ریتی سے پڑھا اور اُنہوں نے 'ہسٹاریکل میٹریلزم' یا ڈائلکٹیکل میتھڈ کے نام سے ایک نیا وگیان کھڑا کردیا جو سماج شاستریوں کے لئے جاننا ضروری ہے اور اُسی کی دین ہے' سماجواد سے گذرتا سامیہ واد ۔

—بھگوان دین

अमरीकी रंग भेद क़ानून

(ख़ुरशीद मेहदी)

रंग और नसल के भेद के पैरोकार अमरीका को अपना गुरु मानते है. एक नाज़ी प्रोफ़ेसर ने लिखा है कि जरमनी के जाति भेद क़ानून बनाने में अमरीकी जाति भेद और रंग भेद क़ानून से बहुत मदद मिली है और इसके लिये जरमनी के नाज़ी अमरीका वालों के एहसानमन्द हैं. अमरीका के इन क़ानूनों को जानना और अमरीका में बसने वाली मज़लूम जातियों की परिस्थिति पर विचार करना बहुत ज़रूरी है. इस विषय पर सोचते वक़्त इस बात का ध्यान ज़रूरी है कि अमरीका में क़ानूनों के शब्द कुछ हैं और अमल कुछ है. इसलिये हमें क़ानून और अमल दोनों को साथ साथ देखना चाहिये.

सफ़ेद चमड़ी वालों के मुहल्लों में नीगरो और यहूदी न बसने पाएं ऐसा कोई क़ानून नहीं है. यह भी ठीक है कि कोई ऐसा क़ानून नहीं है कि जिस के अनुसार नीगरो अलग अछूत बस्तियां बसाने पर मजबूर हों लेकिन अमल में कुछ दूसरी बात दिखाई पड़ती है. बालटीमोर शहर की कुल आबादी का बीस फ़ी सदी हिस्सा नीगरो हैं. लेकिन आबादी की कुल ज़मीन के सिर्फ़ दो फ़ी सदी हिस्से पर उनकी कुल आबादी फैली हुई है. शिकागो में बड़ी तादाद में नीगरो आबाद हैं. पर पूरी आबादी थोड़ी सी ज़मीन पर बसी हुई है. एक मुरब्बा मील ज़मीन पर 90 हज़ार नीगरो बसे हुए हैं. तन्दुरुस्ती के लिहाज़ से एक

امریکی رنگ بھید قانون

(خورشید مہدی)

رنگ اور نسل کے بھید کے پیروکار امریکہ کو اپنا گرو مانتے ہیں ۔ ایک نازی پروفیسر نے لکھا ہے کہ جرمنی کے جاتی بھید قانون بنانے میں امریکی جاتی بھید اور رنگ بھید قانونوں سے بہت مدد ملی ہے اور اِس کے لئے جرمنی کے نازی امریکہ والوں کے احسان مند ہیں ۔ ہم امریکہ کے اِن قانونوں کو جاننا اور امریکہ میں بسنے والی مظلوم جاتیوں کی پرستھتی پر وچار کرنا بہت ضروری ہے ۔ اِس وشے پر سوچتے وقت اِس بات کا دھیان ضروری ہے کہ امریکہ میں قانونوں کے شبد کچھ ہیں اور عمل کچھ ہے ۔ اس لئے ہمیں قانون اور عمل دونوں کو ساتھ ساتھ دیکھنا چاہئے ۔

سفید چمڑی والوں کے محلوں میں نیگرو اور یہودی نہ بسنے پائیں ایسا کوئی قانون نہیں ہے ۔ یہ بھی ٹھیک ہے کہ کوئی ایسا قانون نہیں ہے کہ جس کے انوسار نیگرو الگ اچھوت بستیاں بسانے پر مجبور ہوں ۔ لیکن عمل میں کچھ دوسری بات دکھائی پڑتی ہے ۔ بالٹیمور شہر کی کل آبادی کا بیس فیصدی حصہ نیگرو ہے ۔ لیکن آبادی کی کل زمین کے صرف دو فیصدی حصے پر اُن کی کل آبادی پھیلی ہوئی ہے ۔ شکاگو میں بڑی تعداد میں نیگرو آباد ہیں ۔ پر پوری آبادی تھوڑی سی زمین پر بسی ہوئی ہے ۔ ایک مربع میل زمین پر 90 ہزار نیگرو بسے ہوئے ہیں ۔ تندرستی کے لحاظ سے ایک

...न भी दूर हो जाय. ऊंच और नीच की भेद भाव ...ख़तम हो जाय. मज़दूरों और पढ़े लिखों में पूरी दोस्ती ...जाय. हां, पुलिस और फ़ौज ज़रूर रहेंगी जब तक कि ...दुनिया से इस तरह का भेद भाव न मिट जाय. इस ...सिले में कहने के लिये ज़रूरी बात एक और रह गई ...वह यह कि लेनिन और स्टालिन मार्क्स के शुरू के ...रों से भले ही हटे हों पर मार्क्स के मूल सिद्धान्तों ...हमेशा डटे रहे. और वह था मार्क्स का डाइलेक्टिकल ... (Marxian Dielectical Method). ...लेक्टिकल मेथड का मतलब है प्रबल रीति या सदा ...वाली रीति. इसका विस्तार से हाल तो अलग से ...लेख चाहता है. उस पर अलग ही लिखा जायगा. ...इतना लिखे देते हैं कि लेनिन और स्टालिन दोनों ...सच्चे जी से समझते थे कि वह मार्क्स और ऐंजिल ...के अनुयायी हैं. उनका ख़याल था कि मार्क्स के ...न्त की बुनियाद ही इस बात पर है और उस सिद्धांत ...जान ही यह है कि उस पर अमल करने के तरीक़े सदा ...रहेंगे और फैलते रहेंगे. मार्क्स के सिद्धान्त का मानना ...बात पर निर्भर है कि जैसे जैसे हालतें बदलें वैसे ही ...तरीक़े भी बदलें. सिद्धान्त को चिपके रहना, सिद्धान्त ...मानना है. दुनिया में होने वाले आन्दोलनों से निगाह ...ना सिद्धान्त की हंसी उड़ाना है. बदलाव जीवन है. ...न्त की रीतियों में अगर बदलाव न आयगा तो ...न्त सिद्धान्त ही न रह जायगा. जहां सिद्धान्त का ...रहना ज़रूरी है वहां तरीक़ों का बदलते रहना ज़रूरी ...जब बदलते रहते हैं, फिर तरीक़े और चालें क्यों न ...? सिद्धान्त को अटल बनाए रखने के लिये यह ...है. बालकपन, जवानी में न बदले और जवानी ...की शकल न ले तो आदमी नाम का प्राणी सौ बरस ...सके ? डाइलेक्टिकल मेथड इन बदलाव के बिना ...ही नहीं रह सकता.

...हिस्टारिकल मेटेरियेलिज़्म यानी इतिहासी मादीवाद ...द्धान्त ने सोवियत विचारकों में एक नई जान डाल ...होंने हर क्षेत्र में बदलाव कर डाले. समाज रचना ...या रूप दे दिया. समाज विद्या तक बदल डाली. ...इतिहास, दर्शन, शिक्षन, नीति, राज विद्या कोई क्षेत्र ...था जिसको उन्होंने नया रूप न दिया हो. बड़ी मेहनत ...उन्होंने सभी विद्याओं को इतिहासी मादीवाद पर ...यानी हिस्टारिकल मेटेरियेलिज़्म से उसका मेल ...है. यहां इतना ही याद रखना चाहिये कि उन्होंने ...विज्ञान खड़ा कर दिया है. यह कोई ऐसी चीज़ ...लोगों को काम करते करते अपने आप हासिल ...जी जाती कृतियों को अलग अलग जा कर देखना ...अलग-अलग लिख डालना आसान काम है, हर कोई

لیھیلنا بھی دور ہوجائے ۔ شہر اور دیہاتی بھید بھاؤ بھی ختم ہو جائے ۔ مزدوروں اور پڑھےلکھوں میں پوری دوستی ہو جائے ۔ ہاں' پولیس اور فوج ضرور رہیں گی جب تک کی ساری دنیا سے اس طرح کا بھید بھاؤ نہ مٹ جائے. اس سلسلے میں کہنے کے لئے ضروری بات ایک اور رہ گئی اور وہ یہ کہ لینن اور اسٹالن مارکس کے شروع کے وچاروں سے بھلے ہی ہٹے ہوں پر مارکس کے مول سدھانتوں پر ہمیشہ ڈٹے رہے. اور وہ تھا مارکس کا ڈائلکٹیکل میتھڈ (Marxian Dielectical Method). ڈائلکٹیکل میتھڈ کا مطلب ہے پربل ریتی یا سدا بڑھنے والی ریتی. اس کا وستار سے حال تو الگ سے لیکھ چاہتا ہے ۔ اس پر الگ ہی لکھا جائیگا ۔ یہاں اتنا لکھے دیتے ہیں کہ لینن اور اسٹالن دونوں یہ سچے جی سے سمجھتے تھے کہ وہ مارکس اور اینجلس کے پکے انویائی ہیں. ان کا خیال تھا کہ مارکس کے سدھانت کی بنیاد ہی اس بات پر ہے اور اس سدھانت کی جان ہی یہ ہے کہ اس پر عمل کرنے کے طریقے سدا بڑھتے رہینگے اور پھیلتے رہینگے. مارکس کے سدھانت کا ماننا اس بات پر نربھر ہے کہ جیسے جیسے حالتیں بدلیں ویسے ہی ویسے طریقے بھی بدلیں ۔ سدھانت کو چپکے رہنا' سدھانت کو نہ ماننا ہے. دنیا میں ہونے والے آندولنوں سے نگاہ پھیر لینا سدھانت کی ہنسی اڑانا ہے ۔ بدلاؤ جیون ہے ۔ سدھانت کی ریتیوں میں اگر بدلاؤ نہ آئیگا تو سدھانت سدھانت ہی نہ رہ جائیگا ۔ جہاں سدھانت کا اٹل رہنا ضروری ہے وہاں طریقوں کا بدلتے رہنا ضروری ہے ۔ سادھن بدلتے رہتے ہیں' پھر طریقے اور چالیں کیوں نہ بدلینگی ؟ سدھانت کو اٹل بنائے رکھنے کے لئے یہ خوراک ہے. بالکپن، جوانی میں نہ بدلے اور جوانی بڑھاپے کی شکل نہ لے تو آدمی نام کا پرانی سو برس کیسے جئے ؟ ڈائلکٹیکل میتھڈ ان بدلاؤ کے بنا جیوت ہی نہیں رہ سکتا ۔

ہسٹاریکل میٹریلزم یعنی اتہاسی مادی واد کے سدھانت نے سوویت وچارکوں میں ایک نئی جان ڈالدی. انہوں نے ہر چھیتر میں بدلاؤ کر ڈالے ۔ سماج رچنا کو نیا روپ دے دیا. سماج ودیا تک بدل ڈالی ۔ کلا' اتہاس' درشن' شکشن' نیتی' راج ودیا کوئی چھیتر نہیں بچا جس کو انہوں نے نیا روپ نہ دیا ہو ۔ بڑی محنت کے ساتھ انہوں نے سبھی ودیاؤں کو اتہاسی مادی واد پر کسا ہے یعنی ہسٹاریکل میٹریلزم سے اس کا میل بٹھایا ہے ۔ یہاں اتنا ہی یاد رکھنا چاہئے کہ انہوں نے ایک نیا وگیان کھڑا کردیا ہے ۔ یہ کوئی ایسی چیز نہیں جو لوگوں کو کام کرتے کرتے اپ آپ حاصل ہوتی ہے ۔ سب جڑی بوٹیوں کو الگ الگ جاکر دیکھنا اور ان کا اثر لکھ ڈالنا آسان کام ہے' ہر کوئی

को न मिला सकेगा. लेनिन और स्टालिन यह समझते थे कि समाजवाद का महल खड़ा करने में ग़रीब और बीच की हालत वाले किसान बड़े पक्के दोस्त साबित होंगे. ट्राट्सकी को यह सब दुश्मन दिखाई देते थे. ट्राट्सकी का जो वाक्य ऊपर दिया गया है उसमें ट्राट्सकी के शक साफ़ दिखाई देते हैं. उसका ख़्याल था कि मज़दूरों को सिर्फ़ उन पैसे वालों से ही टक्कर नहीं लेनी पड़ेगी जो क्रान्ति के समय मज़दूरों की मदद कर रहे थे. उनको उन किसानों से भी टक्कर लेनी पड़ेगी जो बहुत बड़ी तादाद में फैले हुए हैं. इस सिलसिले में यह लिख देना ज़रूरी है कि स्टालिन ने किस होशियारी से 'कुलक' कहलाने वाले किसानों को अपने साथ लिया. 'कुलक' खाते पीते किसान थे. वह आसानी से क्रान्ति में साथ नहीं दे सकते थे इस बात पर राज़ी नहीं हो सकते थे कि खेत बड़े पैमाने पर मिला कर खेती के काम में लाए जांय क्योंकि ऐसा करने से उनके स्वार्थ को धक्का लगता था. ऐसे किसानों को उस दल में शामिल कर लेना आसान काम न था जो दल मज़दूर और ग़रीब किसानों का बना हुआ था. ग़रीब किसान अमीर किसानों के ख़िलाफ़ खड़े हो सकते थे पर अमीर किसान ग़रीबों के साथ मिल कर अपनी खेती का बंटवारा करने के लिये कैसे तैयार हो सकते थे. ट्राट्सकी को यह सब काम मुश्किल दिखाई देते थे. शायद असंभव मालूम होता हो. लेनिन और स्टालिन को यही काम आसान और मामूली दिखाई देते थे. अब रूस दो दलों में न बंटता तो क्या करता ?

यह ठीक है लेनिन ने अपने देश और अपने समय के लिये मार्क्स के तरीक़ों को ठीक नहीं समझा लेकिन मार्क्स के इस सिद्धांत को हमेशा ठीक समझता रहा कि साम्यवाद की स्थापना बड़े पैमाने पर ही हो सकती है और उसका पैमाना सारी दुनिया ही हो सकती है. सन 1938 में स्टालिन लेनिन के इस विचार से भी अलग पड़ गया. उसकी समझ में यही ठीक बैठा कि जिस तरह लेनिन की नज़र में मार्क्स के तरीक़े मार्क्स के समय के लिये ठीक थे, वैसे ही लेनिन की यह बात कि साम्यवाद दुनिया भर के बड़े पैमाने पर ही हो सकता है, लेनिन के समय के लिये भले ठीक हो, उसके, यानी स्टालिन के समय के लिये, ठीक नहीं. उसने इस विचार का पूरा रूप दे ही दिया कि एक देश में भी साम्यवाद की ख़ास ख़ास सूरतें पैदा की जा सकती हैं. हां, साम्यवाद की, ख़ास ख़ासियत 'बे सरकार की हुकूमत' क़ायम नहीं की जा सकती. स्टालिन की राय में एक देश में ऐसी हालत लाई जा सकती है कि खाने पीने की बहुतायत हो जाय और आपसी मन मुटाव नाम को न रहे. गुंडापन एक दम दूर हो जाय. ऊंच

کو نہ ملا سکیگا ۔ لینن اور اسٹالن یہ سمجھتے تھے کہ سماجواد کا محل کھڑا کرنے میں غریب اور بیچ کی حالت والے کسان بڑے پکے دوست ثابت ہونگے ۔ ٹراٹسکی کو یہ سب دشمن دکھائی دیتے تھے ۔ ٹراٹسکی کا جو واکیہ اوپر دیا گیا ہے اس میں ٹراٹسکی کے شک صاف دکھائی دیتے ہیں ۔ اس کا خیال تھا کہ مزدوروں کو صرف ان پیسے والوں ہی سے ٹکر نہیں لینی پڑیگی جو کرانتی کے سمے مزدوروں کی مدد کر رہے تھے ۔ ان کو ان کسانوں سے بھی ٹکر لینی پڑیگی جو بہت بڑی تعداد میں پھیلے ہوئے ہیں ۔ اس سلسلے میں یہ لکھ دینا ضروری ہے کہ اسٹالن نے کس ہوشیاری سے 'کولک' کہلانے والے کسانوں کو اپنے ساتھ لیا ۔ 'کولک' کھاتے پیتے کسان تھے ۔ وہ آسانی سے کرانتی میں ساتھ نہیں دے سکتے تھے اس بات پر راضی نہیں ہوسکتے تھے کہ کھیت بڑے پیمانے پر ملاکر کھیتی کے کام میں لائے جائیں کیونکہ ایسا کرنے سے اُن کے سوارتھ کو دھکا لگتا تھا ایسے کسانوں کو اس دل میں شامل کرلینا آسان کام نہ تھا جو دل مزدور اور غریب کسانوں کا بنا ہوا تھا ۔ غریب کسان امیر کسانوں کے خلاف کھڑے ہوسکتے تھے پر امیر کسان غریبوں کے ساتھ ملکر اپنی کھیتی کا بٹوارا کرنے کے لئے کیسے تیار ہو سکتے تھے ۔ ٹراٹسکی کو یہ سب کام مشکل دکھائی دیتے تھے ۔ شاید اسمبھو معلوم ہوتا ہو لینن اور اسٹالن کو یہی کام آسان اور معمولی دکھائی دیتے تھے ۔ اب روس دو دلوں میں نہ بٹتا تو کیا کرتا ؟

یہ ٹھیک ہے لینن نے اپنے دیش اور اپنے سمے کے لئے مارکس کے طریقوں کو ٹھیک نہیں سمجھا لیکن مارکس کے اس سدھانت کو ہمیشہ ٹھیک سمجھتا رہا کہ سامیہ واد کی استھاپنا بڑے پیمانے پر ہی ہوسکتی ہے اور اس کا پیمانہ ساری دنیا ہی ہوسکتی ہے ۔ سن 1938 میں اسٹالن لینن کے اس وچار سے بھی الگ پڑ گیا ۔ اس کی سمجھ میں یہی ٹھیک بیٹھا کہ جس طرح لینن کی نظر میں مارکس کے سمے کے لئے ٹھیک تھے' ویسے ہی لینن کی یہ بات کہ سامیہ واد دنیا بھر کے بڑے پیمانے پر ہی ہوسکتا ہے' لینن کے سمے کے لئے بھلے ٹھیک ہو' اس کے' یعنی اسٹالن کے سمے کے لئے ٹھیک نہیں ۔ اس نے اس وچار کو پورا روپ دے ہی دیا کہ ایک دیش میں بھی سامیہ واد کی خاص خاص صورتیں پیدا کی جاسکتی ہیں ۔ ہاں' سامیہ واد کی خاص خاصیت 'بے سرکار کی حکومت' قائم نہیں کی جاسکتی ۔ اسٹالن کی رائے میں ایک دیش میں ایسی حالت لائی جاسکتی ہے کہ کھانے پینے کی بہتایت ہو جائے اور آپسی من مٹاؤ نام کو نہ رہے ۔ غنڈاپن ایک دم دور ہوجائے ۔ اونچ

इसलिये लेनिन की बात जितनी खरी सिद्ध हो जाती है उतनी और ऋषियों की नहीं. सत्य और अहिंसा की बात ले लीजिये. महावीर और बुद्ध ने कहने में कोई कसर नहीं रखी पर गांधी जी ने उस पर अमल कर के उसको लोगों के दिलों में बहुत गहराई तक पहुंचा दिया. व्यक्तिगत आज़ादी के क्षेत्र में लेनिन की मिसाल गांधी जी जैसी ही है.

यह कितने मारके की बात है कि इसी बात को ले कर रूस में दो दल बन गए. स्टालिन और ट्राट्सकी अलग अलग हो गए. सोवियत यूनियन की उन्नति के इतिहास में यह एक नया मोड़ आया. यह ऐसा अवसर था जिस समय यह फ़ैसला करना ज़रूरी था कि देश के अन्दर जो साधन और मानव शक्ति मौजूद है उस सबका समाजवाद का महल खड़ा करने के लिये उपयोग किया जाय या नहीं. यह सवाल उठा इसलिये कि ऐसा करने के लिये यह बिलकुल ज़रूरी था कि दुनिया के बाक़ी सब मुल्कों के साथ सहयोग किया जाय और शान्ति के साथ रहा जाय. जो मार्क्स और एंजिल्स के सिद्धान्त के ख़िलाफ़ तो नहीं था पर तरीक़ों के ख़िलाफ़ ज़रूर था. अगर मार्क्स और एंजिल्स मौक़े पर खुद मौजूद होते और अपने तरीक़ों में बदलाव करने के लिये तैयार न होते तो रूस में कभी वह क्रान्ति न करते जो लेनिन ने की और उस तरह की सरकार न बनाते जो स्टालिन ने बनाई. इसी ख़्याल को लेकर ट्रॉट्सकी को स्टालिन का साथ छोड़ना पड़ा. ट्रॉट्सकी यही तो चाहता था कि रूस अपने तमाम साधनों को दूसरे देशों में क्रान्ति करने के काम में लगाए यानी सारी दुनिया से लड़ाई मोल ले. ट्राट्सकी ने 'सन 1905 के साल' के नाम से जो किताब लिखी है उसने उसमें कहा है—"The contradiction in the situation of the worker's government in a backward country with an over whelming peasant population can be solved only on an international scale, on the arena of a world proletarian revolution." (पिछड़े हुए देश में जहां किसानों की तादाद बहुत ज़ियादा हो, मज़दूरों की सरकार की विपरीताओं का हल अन्तरक़ौमी पैमाने पर ही हो सकता है. उसके लिये सारी दुनिया में मज़दूर क्रान्ति खड़ी करने की ज़रूरत होती है.)

ट्राट्सकी के ऊपर लिखे विचार में जो बहुत उलझी गुत्थी है वह है किसान गुत्थी. ट्राट्सकी को लेनिन और स्टालिन के विचारों में तनिक भी विश्वास न था. वह मानता ही न था कि मज़दूरों और किसानों में कभी दोस्ती हो सकती है, क्योंकि इस दोस्ती में ऊपर हाथ रहेगा मज़दूर दल का. किसान दब जायगा. दबा हुआ दल दोस्ती

اِس لئے لینن کی بات جتنی کھری ثابت ہو جاتی ہے اُتنی اور رشیوں کی نہیں ۔ ستیہ اور اہنسا کی بات لے لیجئے، مہاویر اور بدھ نے کہنے میں کوئی کسر نہیں رکھی پر گاندھی جی نے اُس پر عمل کرکے اُس کو لوگوں کے دلوں میں بہت گہرائی تک پہونچا دیا. ویکتی گت آزادی کے چھیتر میں لینن کی مثال گاندھی جی جیسی ہی ہے.

یہ کتنے مارکہ کی بات ہے کہ اِسی بات کو لے کر روس میں دو دل بن گئے ۔ اِسٹالن اور ٹراٹسکی الگ الگ ہو گئے ۔ سوویت یونین کی اُنتی کے اِتہاس میں یہ ایک نیا موڑ آیا ۔ یہ ایسا اوسر تھا جس سمے یہ فیصلہ کرنا ضروری تھا کہ دیش کے اندر جو سادھن اور مانو شکتی موجود ہے اُس سب کا سماجواد کا محل کھڑا کرنے کے لئے اُپیوگ کیا جائے یا نہیں. یہ سوال اُٹھا اِس لئے کہ ایسا کرنے کے لئے یہ بالکل ضروری تھا کہ دنیا کے باقی سب ملکوں کے ساتھ سہیوگ کیا جائے اور شانتی کے ساتھ رہا جائے ۔ جو مارکس اور اینجلس کے سدھانت کے خلاف تو نہیں تھا پر طریقوں کے خلاف ضرور تھا. اگر مارکس اور اینجلس موقع پر خود موجود ہوتے اور اپنے طریقوں میں بدلاؤ کرنے کے لئے تیار نہ ہوتے تو روس میں کبھی وہ کرانتی نہ کرتے جو لینن نے کی اور اُس طرح کی سرکار نہ بناتے جو اسٹالن نے بنائی. اِسی خیال کو لےکر ٹراٹسکی کو اِسٹالن کا ساتھ چھوڑنا پڑا. ٹراٹسکی یہی تو چاہتا تھا کہ روس اپنے تمام سادھنوں کو دوسرے دیشوں میں کرانتی کرنے کے کام میں لگائے یعنی ساری دنیا سے لڑائی مول لے. ٹراٹسکی نے 'سن 1905 کے سال' کے نام سے جو کتاب لکھی ہے اُس نے اُس میں کہا ہے—"The contradiction in the situation of the worker's government in a backward country with an over whelming peasant population can be solved only on an international scale, on the arena of a world proletarian revolution." (پچھڑے ہوئے دیش میں، جہاں کسانوں کی تعداد بہت زیادہ ہو، مزدوروں کی سرکار کی وپریتاؤں کا حل انترقومی پیمانے پر ہی ہوسکتا ہے. اُس کے لئے ساری دنیا میں مزدور کرانتی کھڑی کرنے کی ضرورت ہوتی ہے.)

ٹراٹسکی کے اوپر لکھے وچار میں. جو بہت اُلجھی گتھی ہے وہ ہے کسان گتھی . ٹراٹسکی کو لینن اور اِسٹالن کے وچاروں میں تنک بھی وشواس نہ تھا . وہ مانتا ہی نہ تھا کہ مزدوروں اور کسانوں میں کبھی دوستی ہو سکتی ہے، کیونکہ اِس دوستی میں اُوپر ہاتھ رہیگا مزدور دل کا . کسان دب جائیگا . دبا ہوا دل دوستی

जिसकी आग भड़क कर रहेगी. शायद सबसे पहला देश वही होगा जो पूंजीवाद में सब से कमज़ोर होगा. साम्राज्यवाद उन दिनों सब जगह फैला हुआ था. पूंजीवाद का यह हाल नहीं था. वह कहीं बहुत कम था, कहीं मामूली, कहीं बहुत ज़ियादा. ऐसी हालत देखकर लेनिन ने यह ठीक नहीं समझा कि वह मार्क्स और एंजिल्स की तरह उस वक्त का इंतज़ार करे जब सारी दुनिया में समाजवाद ने जड़ जमा ली हो. उसे चाहिये कि वह किसी एक देश में क्रांति की विजय कर के दिखला दे. लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांत को सिर माथे चढ़ाया पर उन विचारों का बिलकुल साथ न दिया जो मार्क्स के समय के लिए भले ही बलवान रहे हों, लेनिन के समय के लिये निकम्मे थे. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांतों में कोई घटत बढ़त की. सिद्धांतों में घटत बढ़त नहीं हुआ करती. सिद्धांत गढ़े नहीं जाते. सिद्धान्त हमेशा से प्रकृति में मौजूद रहते हैं. उसे कोई कोई खोज निकालता है. लेनिन ने सिर्फ़ वह समय, वह जगह ढूंढ निकाली जहां वह उस सिद्धान्त पर अमल कर सकता था. ऐसे साथी खोज लिये जिनकी मदद से विजय प्राप्ति में आसानी हो सकती थी. ऐसे भावों को ताड़ लिया जो क्रान्ति का रूप ले सकते थे. उसने तय कर लिया कि एक देश में ही समाजवादी समाज का गढ़ खड़ा कर दिया जाय.

सन 1915 में उसने यहां तक कह डाला कि <u>राज-सत्ता और पैसे का असमान बढ़ाव पूंजीवाद का निरपेक्ष नियम है.</u> यानी पूंजीवाद वह बला है जिससे पैसे का असमान बंटवारा होता है और राज की असमान ताक़तें अपनी जगह बना लेती हैं. इसलिये समाजवाद का बीज एक देश में भी जम सकता है, अंकुर फोड़ सकता है और फल सकता है. सन 1922 में आखिर उसने कह ही डाला कि रूस समाजवादी हो जायगा. सन 1923 में लेनिन ने सहयोग पर एक पत्रक लिखा जिसमें उसने ज़ोर के साथ यह साबित किया कि सोवियत यूनियन में वह सब गुन मौजूद हैं जो एक भरे पूरे समाजवादी समाज में होने चाहियें.

लेनिन के यह उद्गार साफ़ कहते मालूम होते हैं कि मार्क्स और एंजिल्स अपने समय के लिये भले ही सही रहे हों, आज के लिये वह सही नहीं बैठते, क्योंकि आज की हालत बदल गई है. लेनिन के शब्दों से यह बात साफ़ टपकती है कि पुराने विचारकों को इस बात का अनुभव ही नहीं था कि दुनिया भर में समाजवाद फैल सकता है. उनके सामने ऐसी चीज़ थी ही नहीं फिर वह आगे के लिये ठीक ठीक कैसे सोच सकते थे! यह कह कर लेनिन ने एक ऐसी बात दुनिया को दे दी जो अब तक के ऋषि देते तो रहे थे पर अमल कर के अभी न दिखा पाए थे.

جس کی آگ بھڑک کر رہیگی۔ شاید سب سے پہلا دیش وہی ہوگا جو پونجی واد میں سب سے کمزور ہوگا۔ سامراجواد اُن دنوں سب جگہ پھیلا ہوا تھا۔ پونجی واد کا یہ حال نہیں تھا۔ وہ کہیں بہت کم تھا، کہیں معمولی، کہیں بہت زیادہ۔ ایسی حالت دیکھ کر لینن نے یہ ٹھیک نہیں سمجھا کہ وہ مارکس اور اینجلس کی طرح اُس وقت کا انتظار کرے جب ساری دنیا میں سماجواد نے جڑ جمالی ہو۔ اُسے چاہئے کہ وہ کسی ایک دیش میں کرانتی کی وجے کرکے دکھلا دے۔ لینن نے مارکس کے سدھانت کو سر ماتھے چڑھایا پر اُن وچاروں کا بالکل ساتھ نہیں دیا جو مارکس کے سمے کے لئے بھلے ہی بلوان رہے ہوں، لینن کے سمے کے لئے نکمے تھے۔ اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ لینن نے مارکس کے سدھانتوں میں کوئی گھٹت بڑھت کی۔ سدھانتوں میں گھٹت بڑھت نہیں ہوا کرتی۔ سدھانت گڑھے نہیں جاتے۔ سدھانت ہمیشہ سے پرکرتی میں موجود رہتے ہیں۔ اُسے کوئی کوئی کھوج نکالتا ہے۔ لینن نے صرف وہ سمے، وہ جگہ ڈھونڈھ نکالی جہاں وہ اُس سدھانت پر عمل کرسکتا تھا۔ ایسے ساتھی کھوج لئے جن کی مدد سے وجے پراپتی میں آسانی ہوسکتی تھی۔ ایسے بھاؤں کو تاڑ لیا جو کرانتی کا روپ لے سکتے تھے۔ اُس نے طے کر لیا کہ ایک دیش میں ہی سماجوادی سماج کا گڑھ کھڑا کر دیا جائے۔

سن 1915 میں اُس نے یہاں تک کہہ ڈالا کہ <u>راج ستّہ اور پیسے کا اسمان بڑھاؤ پونجی واد کا نرپیکش نیم ہے۔</u> یعنی پونجی واد وہ بلا ہے جس سے پیسے کا اسمان بٹوارہ ہوتا ہے اور راج کی اسمان طاقتیں اپنی جگہ بنا لیتی ہیں۔ اس لئے سماجواد کا بیج ایک دیش میں بھی جم سکتا ہے، انکر پھوڑ سکتا ہے اور پھل سکتا ہے۔ سن 1922 میں آخر اُس نے کہہ ہی ڈالا کہ روس سماجوادی ہوجائیگا۔ سن 1923 میں لینن نے سہیوگ پر ایک پترک لکھا جس میں اُس نے زور کے ساتھ یہ ثابت کیا کہ سوویت یونین میں وہ سب گن موجود ہیں جو ایک بھرے پورے سماجوادی سماج میں ہونے چاہئیں۔

لینن کے یہ اُدگار صاف کہتے معلوم ہوتے ہیں کہ مارکس اور اینجلس اپنے سمے کے لئے بھلے ہی صحیح رہے ہوں، آج کے لئے وہ صحیح نہیں بیٹھتے۔ کیوں کہ آج کی حالت بدل گئی ہے۔ لینن کے شبدوں سے یہ بات صاف ٹپکتی ہے کہ پرانے وچارکوں کو اس بات کا انوبھو ہی نہیں تھا کہ دنیا بھر میں سماجواد پھیل سکتا ہے۔ اُن کے سامنے ایسی چیز تھی ہی نہیں پھر وہ آگے کے لئے ٹھیک ٹھیک کیسے سوچ سکتے تھے؟ یہ کہہ کر لینن نے ایک ایسی بات دنیا کو دے دی جو اب تک کے رشی دیتے تو رہے تھے پر عمل کرکے ابھی نہ دکھا پائے تھے۔

सकेगा जिस तरह आज पशु पक्षी उसके साथ हैं.

इससे भी बढ़कर साम्यवाद में एक और बात होगी. पढ़ों और मजदूरों में इतना आपसीपन आ जायगा ना दो हाथों में. जज और चपरासी में नाम भेद ही , खान पान और रहन सहन का भेद नहीं. यह सब ऊपर से नहीं लादा जायगा. हकूमत नाम की ऊपर रहने चीज ऊपर रही न होगी. यह भाव अंदर से जागेंगे. भाव सिर्फ इसी लिये हैं कि पैदावार पर सब का कार नहीं. ऊंच नीच पैदा करने वाली यह असमता है दावार के बंटवारे मे की जाती है. आज एक विद्यार्थी को बेचकर मन को खुराक देता है, मस्तक के लिए कुछ ता है; एक मजदूर मस्तक को बेचकर तन को खुराक है और मन के लिये कुछ जुटा लेता है. साम्यवाद में मूर्खता जीवित न रह पायेगा. तन, मन, मस्तक तीनों नासिब खुराक मिलेगी. यह कोई बड़ी बात नहीं.

सबसे मार्के की बात यह है कि ऋषि मार्क्स के विचारों निया के अनगिनत विचारकों के मस्तकों में जगह पा . एक बहुत बड़ा दल यह पुकार पुकार कर कहने लगा है माजवाद और साम्यवाद के आदर्शों तक पहुंचा जा ता है. वह दल कह कर ही नहीं रह गया. उसने उस ओर बढ़ाया है. और इतना आगे बढ़ गया है कि दूसरा दल यह समझता था कि यह दल कुंए में गिरने जा रहा है, वह यह समझने लगा है कि इसने तो अब लिया स्वर्ग. इस वह दल साथ देने की जगह उसकी टांग पकड़ कर उसे ने की फिकर में लगा हुआ है. मार्क्स और एंजिल्स ने समय में यही समझते रहे कि सामाजिक क्रांति दुनिया हो ही नहीं सकती जब तक दुनिया के सब मुल्कों में जवाद अपनी जड़ न जमा ले. हां थोड़ा बहुत आन्दोलन विचारों का सारी दुनिया में जरूर फैल सकता है. द, यह भी संभव है कि बड़े बड़े देशों के कुछ लोग कर एक बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दें.

समाजवाद या साम्यवाद ने और कुछ काम किया या न , इतना जरूर किया कि उसने रूस जैसे पिछड़े देश में ऐसा आदमी पैदा कर दिया जिसने पूंजीवाद की मान बढ़वारी का एक सिद्धांत ही रच डाला. उसका नाम 'लेनिन". इस सिद्धांत का यह मतलब है कि दुनिया में जवाद के दौर में दुनिया के हर मुल्क में ऐसे सवाल हो गये हैं कि वह मुल्क लड़े बगैर नहीं रह सकते. हर दूसरे देश पर कब्जा जमाने की फिकर में है. जब दो एक ही चीज को चाहें तो लड़ाई जरूर हो जाती है. इस की जड़ में रहता है पूंजीवाद. इसी आधार पर लेनिन नतीजे पर पहुंचे कि किसी न किसी देश में पूंजीवाद के

مل سکے گا جسطرح آج پشو پکشی اس کے ساتھ کھیلتے ہیں۔

اس سے بھی بڑھکر سامیہ واد میں ایک اور بات ہو گی۔ لکھے پڑھوں اور مزدوروں میں اتنا اپنسی پن آ جائیگا جتنا دو ہاتھوں میں۔ جج اور چپراسی میں نام بھید ہی ہوگا کھان پان اور رہن سہن کا بھید نہیں۔ یہ سب بھی اوپر سے نہیں لادا جائیگا۔ حکومت نام کی اوپر رہنے والی چیز اوپر رہی نہ ہوگی۔ یہ بھاؤ اندر سے جاگینگے۔ یہ بھاؤ صرف اس لئے ہیں کہ پیداوار پر سب کا ادھیکار نہیں۔ اونچ نیچ پیدا کرنے والی وہ اسمتا ہے جو پیداوار کے بٹوارے میں کی جاتی ہے۔ آج ایک ودیارتھی تن کو بیچ کر من کو خوراک دیتا ہے، مستک کے لئے کچھ جٹاتا ہے؛ ایک مزدور مستک کو بیچکر تن کو خوراک دیتا ہے اور من کے لئے کچھ جٹا لیتا ہے۔ سامیہ واد میں ایسی مورکھتا جیوت نہ رہ پائے گی۔ تن، من، مستک تینوں کو مناسب خوراک ملے گی۔ یہ کوئی بڑی بات نہیں۔

سب سے مارکہ کی بات یہ ہے کہ رشی مارکس کے وچاروں نے دنیا کے ان گنت وچارکوں کے مستکوں میں جگہ پا لی ہے۔ ایک بہت بڑا دل یہ پکار پکار کر کہنے لگا ہے کہ سماجواد اور سامیہ واد کے آدرشوں تک پہنچا جا سکتا ہے۔ وہ دل کہکر ہی نہیں رہ گیا۔ اس نے اس اور قدم بڑھایا ہے۔ اور اتنا آگے بڑھ گیا ہے کہ دوسرا دل جو یہ سمجھتا تھا کہ یہ دل کنوئیں میں گرنے جا رہا ہے، وہ اب یہ سمجھنے لگا ہے کہ اس نے تو اب لیا سورگ۔ اس لئے وہ دل ساتھ دینے کی جگہ اس کی ٹانگ پکڑ کر اسے گھسیٹنے کی فکر میں لگا ہوا ہے۔ مارکس اور اینجلس بھی سمے میں یہی سمجھتے رہے کہ ساماجک کرانتی دنیا میں ہو ہی نہیں سکتی جب تک دنیا کے سب ملکوں میں سماجواد اپنی جڑ نہ جما لے۔ ہاں تھوڑا بہت آندولن ان وچاروں کا ساری دنیا میں ضرور پھیل سکتا ہے۔ شاید یہ بھی سمبھو ہے کہ بڑے بڑے دیشوں کے کچھ لوگ مل کر ایک بڑا آندولن کھڑا کر دیں۔

سماجواد یا سامیہواد نے اور کچھ کام کیا یا نہ کیا، اتنا ضرور کیا کہ اس نے روس جیسے پچھڑے دیش میں ایک ایسا آدمی پیدا کر دیا جس نے پونجیواد کی ادھک بڑھوار کا ایک سدھانت ہی رچ ڈالا۔ اس کا نام تھا "لینن"۔ اس سدھانت کا یہ مطلب ہے کہ دنیا میں سامراجواد کے دور میں دنیا کے ہر ملک میں ایسے سوال کھڑے ہو گئے ہیں کہ وہ ملک لڑے بغیر نہیں رہ سکتے۔ ہر دیش دوسرے دیش پر قبضہ جمانے کی فکر میں ہے۔ جب دو دیش ایک ہی چیز کو چاہیں تو لڑائی ضرور ہو جاتی ہے۔ اس لڑائی کی جڑ میں رہتا ہے پونجیواد۔ اس آدھار پر لینن اس نتیجے پر پہنچے کہ کسی نہ کسی دیش میں پونجیواد کے

पा सकें जितनी उस को ज़रूरत है. यह आगे बताया जायगा कि साम्यवाद का यह भी दावा है कि उसके फल देते ही हुकूमत नामी पत्ते पीले पड़ कर मुरझा चुके होंगे, क्योंकि उनको साम्यवाद की बेल से कोई रस ही न मिल रहा होगा. यहां ध्यान रहे हुकूमत का ख़्याल मुरझा जायगा, हुकूमत करने वाले नहीं, वह सब जीवित रहेंगे जैसे समाज के और आदमी. चोरों के ख़त्म हो जाने पर पुलिस विभाग ख़त्म हो जाता है, पुलिस वाले भी. वह उससे ज़ियादा अच्छे काम में लग जाते हैं. साम्यवाद का यह भी दावा है कि उसके फलने फूलने पर बे पढ़ा लिखा कोई न रह जायगा, दुबले पतले देखने को न मिलेंगे, जब मनोभावों का बे जगह, बे वक़्त, बे मतलब उपयोग ही नहीं होगा तो कोई बीमार क्यों पड़ेगा और क्यों न उसका व्यक्तित्व बढ़ेगा ? उसकी शख़्सियत क्यों किसी से कम रह सकेगी ? दो शब्दों में सारी दुनिया की वह उन्नति होगी जो आज तक कभी हुई ही नहीं.

साम्यवाद की तारीफ़ करते हुए साम्यवादियों का यह भी दावा है कि समाजवाद से बढ़कर साम्यवाद में एक बात और होगी, गुंडे नाम को न रह जावेंगे, आपसी मन मुटाव देखने को न मिलेगा, शहर देहात का भेद मिट जायगा. यानी वह हालत हो जायगी जिसकी कल्पना कहानियां लिखने वाले स्वर्ग में भी नहीं कर पाये. उन्हें यह मानना पड़ा कि स्वर्ग में आपसी मन मुटाव रहता है. इस बात को साबित करते हुए साम्यवाद ने यह दलील दी है कि जब देहात या ऐसी जगह जहां पिछड़े हुए लोग रहते हैं, शहर से अलग ही न होंगी तो कोई जंगली और देहाती रह ही क्यों जायगा ? हर तरह का सुभीता हर जगह क्यों न पहुंचाया जा सकेगा ? आने जाने के आज जितने साधन मौजूद हैं वह इतने ज़ियादा हैं कि उनकी पहुंच से परे दुनिया में कोई हिस्सा बच नहीं रहा, फिर साम्यवाद की हालत में सब मुल्कों की मिलकर जो बढ़वारी होगी तो उस में आने जाने के साधन आज से अच्छे ही बनेंगे तब दुनिया के किसी हिस्से में भी कोई क्यों पिछड़ा रह जायगा ? आदि-वासी कहलाने का कलंक से भरा टीका किसी के माथे पर कैसे रह सकेगा ? सोच समझ कर कोई नंगा भले ही रहे, कपड़े न मिलने से कोई नंगा न रह सकेगा. क्या कला कौशल, क्या खेती सभी का अर्थ होगा सारी दुनिया की बढ़वारी. किसी एक देश या किसी एक जात की नहीं. ज़रूरत से ज़ियादा किसी चीज़ की पैदावार नहीं, ज़रूरत से कम किसी चीज़ को रहने देना नहीं. ज़रूरत से मतलब सारी दुनिया की ज़रूरत. साम्यवाद में आज की तरह कोई क्यों शहरों में आ कर रहेगा ? क्यों इस तरह रहेगा जैसे काबुक के ख़ानों में कबूतर रहते हैं ? साम्यवाद में हर आदमी को प्रकृति के साथ इसी तरह खेलने को

پاسکیں جتنی اسکو ضرورت ہے ۔ یہ آگے بتایا جائے گا کہ سامیہ واد کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ اس کے پھل دیتے ہی حکومت نامی پتے پیلے پڑ کر مرجھا چکے ہونگے، کیونکہ ان کو سامیہ واد کی بیل سے کوئی رس ہی نہ مل رہا ہوگا۔ یہاں یہ دھیان رہے حکومت کا خیال مرجھا جائیگا، حکومت کرنے والے نہیں، وہ سب جیوت رہیں گے جیسے سماج کے اور آدمی ۔ چوروں کے ختم ہو جانے پر پولیس وبھاگ ختم ہو جاتا ہے، پولیس والے بھی ۔ وہ اس سے زیادہ اچھے کام میں لگ جاتے ہیں ۔ سامیہ واد کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ اس کے پھلنے پھولنے پر بے پڑھا لکھا کوئی نہ رہ جائے گا، دبلے پتلے دیکھنے کو نہ ملیں گے، جب منوبھاؤں کا بے جگہ، بے وقت، بے مطلب اپیوگ ہی نہیں ہوگا تو کوئی بیمار کیوں پڑے گا ۔ اور کیوں نہ اسکا ویکتتو بڑھے گا ؟ اسکی شخصیت کیوں کسی سے کم رہ سکے گی ؟ دو شبدوں میں ساری دنیا کی وہ اُنتی ہوگی جو آج تک کبھی ہوئی ہی نہیں ۔

سامیہ واد کی تعریف کرتے ہوئے سامیہ وادیوں کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ سماج واد سے بڑھکر سامیہ واد میں ایک بات اور ہوگی، غنڈے نام کو نہ رہ جاوینگے ۔ آپسی من مٹاؤ دیکھنے کو نہ ملے گا، شہر دیہات کا بھید مٹ جائے گا ۔ یعنی وہ حالت ہو جائے گی جس کی کلپنا کہانیاں لکھنے والے سورگ میں بھی نہیں کر پائے ۔ انہیں یہ ماننا پڑا کہ سورگ میں آپسی من مٹاؤ رہتا ہے ۔ اس بات کو ثابت کرتے ہوئے سامیہ واد نے یہ دلیل دی ہے کہ جب دیہات یا ایسی جگہ جہاں پچھڑے ہوئے لوگ رہتے ہیں، شہر سے الگ ہی نہ ہونگی تو کوئی جنگلی اور دیہاتی رہ ہی کیوں جائے گا ؟ ہر طرح کا سبھیتا ہر جگہ کیوں نہ پہنچایا جا سکے گا ؟ آنے جانے کے آج جتنے سادھن موجود ہیں وہ اتنے زیادہ ہیں کہ ان کی پہنچ سے پرے دنیا میں کوئی حصہ بچ نہیں رہا، پھر سامیہ واد کی حالت میں سب ملکوں کی ملکر جو بڑھواری ہوگی تو اس میں آنے جانے کے سادھن آج سے اچھے ہی بنیں گے تب دنیا کے کسی حصے میں بھی کوئی کیوں پچھڑا رہ جائے گا ؟ آدی واسی کہلانے کا کلنک سے بھرا ٹیکہ کسی کے ماتھے پر کیسے رہ سکے گا ؟ سوچ سمجھ کر کوئی ننگا بھلے ہی رہے، کپڑے نہ ملنے سے کوئی ننگا نہ رہ سکے گا ۔ کیا کلا کوشل کیا کھیتی سبھی کا ارتھ ہوگا ۔ ساری دنیا کی بڑھواری ۔ کسی ایک دیش یا کسی ایک جات کی نہیں ۔ ضرورت سے زیادہ کسی چیز کی پیداوار نہیں، ضرورت سے کم کسی چیز کو رہنے دینا نہیں ضرورت سے مطلب ساری دنیا کی ضرورت ۔ سامیہ واد میں آجکی طرح کوئی کیوں شہروں میں جا کر رہے گا ؟ کیوں اسطرح رہیگا جیسے کابک کے خانوں میں کبوتر رہتے ہیں ؟ سامیہ واد میں ہر آدمی کو پرکرتی کے ساتھ اسی طرح کھیلنے کو

में पूंजी होती है. इसी से मिलता जुलता छोटी छोटी दुकानों का हाल होता है. वह सब भी दूसरों की मेहनत से फायदा उठाती हैं. मजदूर जितना पैदा कर देता है उतने के दाम नहीं पाता. सब दाम अगर उसे मिल जायें तो दुकानदार को क्या बचे? समाजवाद का दावा है, वह पूंजीवाद और व्यक्तिवाद से कई गुना अच्छा है.

साम्यवाद इससे आगे की चीज है. साम्यवाद से समाजवादियों ने, या यूं कहिये, दुनिया के उन सब आदमियों ने, जो साम्यवाद के पुजारी हैं, साम्यवाद से बड़ी बड़ी उम्मीदें जोड़ रखी हैं. उनका ख्याल है, साम्यवाद वह हालत लाकर रहेगा जब आदमी चीजों के पैदा करने में खुले दिल से पूरी पूरी ताक़त लगा सकेगा. जिन साधनों, जिन औजारों की आज कल्पना भी नहीं की जा सकती उन सब को वह ला खड़ा करेगा और खाने पीने पहनने की चीजें इस बहुतायत से होंगी कि किसी को किसी चीज की कमी न रह जायगी! कविता की बोली में इस ख्याल को यों दिखाया जा सकता है कि साम्यवाद दूध की गंगा बहा देगा, अनाज के पहाड़ों जैसे ढेर लगा देगा. न कपड़ों की कमी रहेगी, न मकानों की. जब इतनी बहुतायत होगी तब यह सिद्धांत अपने आप समाज में जगह ले लेगा कि "हर एक से पूरा पूरा काम और हर एक को जी भर इनाम." ऐसी बहुतायत में यह बात तो रहेगी ही कि बच्चे बूढ़े या वह औरतें जो बच्चे पैदा करने की वजह से काम नहीं कर सकतीं उन सब को भी खाने पीने को मिलेगा, जी भर मिलेगा. साम्यवाद जिस तरह का चित्र सामने रखता है उसमें यह दिखाई तो देता है कि माल की इतनी बहुतयात होगी कि जिसे जितनी जरूरत हो, जो जितने का उपयोग कर सके, ले और करे, पर यह कोरा चित्र है, है कहां?

साम्यवाद दुनिया में ऐसी हालत पैदा करने के लिये कुछ शर्तें लगाता है. उन शर्तों के बगैर वैसी हालत लाने का वह दावा नहीं करता. उसका कहना है, साम्यवाद की बुनियाद एक देश में डाली तो जा सकती है पर वह फल तभी देगा जब उसकी बेल दुनिया के सब देशों में फैल चुकी होगी. यह उसकी बड़ी भारी शर्त है. इसका अर्थ हुआ कि साम्यवाद एक देश में फल ही नहीं सकता. सचमुच कोई आदमी एक बक्स में लौकी की बेल लगा कर उस से लौकी कैसे ले सकता है? बेल के पत्ते, डंठल देख सकता है. साम्यवाद की इस व्याख्या से न स्टालिन को इन्कार था न ट्रोट्स्की को. पर अमल के बारे में दोनों का मतभेद था इसलिये दोनों एक देश में न निभ सके. साम्यवाद साफ कहता है कि जब तक दुनिया भर के उत्पादन के साधनों पर सारी दुनिया का समान रूप से अधिकार न हो जावे तब तक मैं वह फल नहीं दूंगा जिस से हर एक अपना

میں پونجی ہوتی ہے ۔ اس سے ملتا جلتا چھوٹی دوکانوں کا حال ہوتا ہے ۔ وہ سب بھی دوسروں کی محنت سے فائدہ اٹھاتی ہیں ۔ مزدور جتنا پیدا کر دیتا ہے اتنے کے دام نہیں پاتا ۔ سب دام اگر اسے مل جائیں تو دوکاندار کو کیا بچے ؟ سماج کا دعویٰ ہے' وہ پونجی واد ویکتی واد سے کئی گنا اچھا ہے ۔

سامیہ واد اس سے آگے کی چیز ہے ۔ سامیہ واد سے سماجوادیوں نے' یا یوں کہئے' دنیا کے ان سب آدمیوں نے' جو سامیہ واد کے پجاری ہیں' سامیہ واد سے بڑی بڑی امیدیں جوڑ رکھی ہیں ۔ ان کا خیال ہے' سامیہ واد وہ حالت لا کر رہے گا جب آدمی چیزوں کے پیدا کرنے میں کھلے دل سے پوری پوری طاقت لگا سکے گا ۔ جن سادھنوں' جن اوزاروں کی آج کلپنا بھی نہیں کی جاسکتی ان سب کو وہ لا کھڑا کرے گا اور کھانے پینے پہننے کی چیزیں اس بہتایت سے ہونگی کہ کسی کو کسی چیز کی کمی نہ رہ جائے گی ! کویتا کی بولی میں اس خیال کو یوں دکھایا جا سکتا ہے کہ سامیہ واد دودھ کی گنگا بہا دیگا' اناج کے پہاڑوں جیسے ڈھیر لگا دے گا ۔ نہ کپڑوں کی کمی رہے گی' نہ مکانوں کی ۔ جب اتنی بہتایت ہوگی تب یہ سدھانت اپنے آپ سماج میں جگہ لے گا کہ—"ہر ایک سے پورا پورا کام اور ہر ایک کو جی بھر انعام ."

ایسی بہتات میں یہ بات تو رہے گی ہی کہ بچے بوڑھے یا وہ عورتیں جو بچے پیدا کرنے کی وجہ سے کام نہیں کر سکتیں ان سب کو بھی کھانے پینے کو ملے گا جی بھر ملیگا سامیہ واد جس طرح کا چتر سامنے رکھتا ہے اس میں یہ دکھائی تو دیتا ہے کہ مال کی اتنی بہتات ہوگی کہ جسے جتنی ضرورت ہو' جو جتنے کا اپیوگ کر سکے' لے اور کرے' پر یہ کورا چتر ہے' ہے کہاں ؟

سامیہ واد دنیا میں ایسی حالت پیدا کرنے کے لئے کچھ شرطیں لگاتا ہے ۔ ان شرطوں کے بغیر ویسی حالت لانے کا وہ دعویٰ نہیں کرتا ۔ اس کا کہنا ہے' سامیہ واد کی بنیاد ایک دیش میں ڈالی تو جاسکتی ہے پر وہ پھل تب ہی دیگا جب اسکی بیل دنیا کے سب دیشوں میں پھیل چکی ہوگی. یہ اسکی بڑی بھاری شرط ہے ۔ اسکا ارتھ ہوا کہ سامیہ واد ایک دیش میں پھل ہی سکتا ۔ سچ مچ کوئی آدمی ایک بکس میں لوکی کی بیل لگا کر اس سے لوکی کیسے لے سکتا ہے؟ بیل کے پتے' ڈنٹھل دیکھ سکتا ہے. سامیہ واد کی اس ویاکھیا سے نہ اسٹالن کو انکار تھا نہ ٹراٹسکی کو ۔ پر عمل کے بارے میں دونوں کا مت بھید تھا اس لئے دونوں ایک دیش میں نہ نبھ سکے ۔ سامیہ واد صاف کہتا ہے کہ جب تک دنیا بھر اتپادن کے سادھنوں پر ساری دنیا کا سمان روپ سے ادھیکار نہ ہو جائے تب تک میں وہ پھل نہیں دونگا جس سے ہر ایک اپنا

आंखों देखता है कि उसका तीर पहले से कहीं ज़ियादा दूर जाता है. फिर क्यों न आदमी सारी दुनिया के भाई चारे का ख्याल लेकर अपने देस के भाईचारे की बुनियाद डाले ? और क्यों न उसे दुनिया के भाईचारे के नाम से पुकारे ?

समाजवाद को सब ने साम्यवाद का पहला रूप माना है. समाजवाद और साम्यवाद दोनों छोटे रूप में हमेशा से हैं और हमेशा तक रहेंगे. समाज के जीवन चक्र का पूरा पूरा इतिहास अगर हमारे सामने होता तो आंखों से नहीं, समझ की आंखों से हम दोनों अवस्थाओं को समाज-जीवन के बहुत पहले युगों में देख सकते, पर वह इतिहास हमारे सामने नहीं. वह नहीं है, न सही, पुरानी चर्चा नहीं मिलती न सही; आजकल जो दो नाम हर राजविद्या पंडित के मुंह पर हैं—वह हैं, मार्क्स और ऐंजिल्स. मार्क्स को हिन्दुस्तान के नामी विद्वान लाला हरदयाल ने आज का ऋषि माना है. इन ऋषि का कहना है कि समाजवाद साम्यवाद का पहला रूप है. संत ऐंजिल्स ने भी इन्हीं की हां में हां मिलाई है. यही हाल रूसी और चीनी विचारकों का है. आज के विचारक आज की समस्या को हल करने में लगे हैं, उन्हीं बुनियादी नियमों को ढूंढ निकालने में जुटे हैं, जिन नियमों के बूते समाज ने अनेक हालतों में निकल कर आज का रूप लिया है. आगे क्या होगा इस पर वह ध्यान देते हैं सही, पर कम. जो लोग साम्यवाद की नींव डालने में लगे हैं, वह उस फ़र्क़ की तरफ़ नज़र नहीं डालते जो समाजवाद और साम्यवाद में है.

पैसे को निगाह में रख कर कितने ही ज़ोर से क्यों न कहा जाय कि इस अवस्था का नाम समाजवाद है. जब पैदा करने के सारे साधन समाज के हाथ में हों यानी उन पर सबका समान अधिकार हो, पर क्या इतने से समाजवाद के पूरे अर्थ हो गये ? ऐसी हालत में दो बड़ी कमी समाज में फिर भी रह जाएंगी, मज़दूरी और ख़ुदा. थोड़े शब्दों में समाजवाद को यों समझ लीजिये— "हर एक से पूरा पूरा काम; हर एक को पूरे काम के पूरे दाम." यह मन को जितना भला लगता है अमल में उतना ही मुश्किल है, हां, असंभव नहीं. इस से इतना होगा, काम करने वाले काम के दाम पा सकेंगे. निकम्मों का क्या होगा ? यह ठीक, इस व्यवस्था में अच्छे काम के अच्छे दाम और बहुत काम के बहुत दाम उठ सकेंगे; काम की अच्छाई बढ़ेगी, बढ़वारी भी होगी, पर इस से समाज की क्या सारी दिक़्क़तें दूर हो जावेंगी. पूंजीवाद पर इल्ज़ाम है कि वह व्योपार का ऐसा चक्र खड़ा कर देता है जिस से बेकारी बढ़ जाती है, काम करने वालों को उनके काम के पूरे पूरे दाम नहीं मिल पाते, क्योंकि उत्पादन के साधन पर सब का अधिकार नहीं होता, कुछ का होता है, जिनके हाथ

انکھوں دیکھتا ھے کہ اسکا تیر پہلے سے کہیں زیادہ دور جاتا ھے. پھر کیوں نہ آدمی ساری دنیا کے بھائی چارے کا خیال لے کر اپنے دیش کے بھائی چارے کی بنیاد ڈالے ؟ اور کیوں نہ اسے دنیا کے بھائی چارے کے نام سے پکارے؟

سماج واد کو سب نے سامیہ واد کا پہلا روپ مانا ھے . سماج واد اور سامیہ واد دونوں چھوٹے روپ میں ہمیشہ سے ہیں اور ہمیشہ تک رہینگے . سماج کے جیون چکر کا پورا پورا اتہاس اگر ہمارے سامنے ہوتا تو آنکھوں سے نہیں، سمجھ کی آنکھوں سے ہم دونوں اوستھاؤں کو سماج جیون کے بہت پہلے یگوں میں دیکھ سکتے، پر وہ اتہاس ہمارے سامنے نہیں. وہ نہیں ھے، نہ سہی، پرانی چرچہ نہیں ملتی نہ سہی؛ آجکل جو دو نام ہر راج ودیا پنڈت کے منہ پر ہیں وہ ہیں، مارکس اور اینجل . مارکس کو ہندستان کے نامی ودوان لالہ ہردیال نے آج کا رشی مانا ھے . ان رشی کا کہنا ھے کہ سماج واد سامیہ واد کا پہلا روپ ھے . سنت اینجلس نے بھی انہیں کی ہاں میں ہاں ملائی ھے . یہی حال روسی اور چینی وچارکوں کا ھے. آج کے وچارک آجکی سمسیا کو حل کرنے میں لگے ہیں، انہیں بنیادی نیموں کو ڈھونڈھ نکالنے میں جٹے ہیں، جن نیموں کے بوتے سماج نے انیک حالتوں میں نکل کر آجکا روپ لیا ھے . آگے کیا ہوگا اس پر وہ دھیان دیتے ہیں سہی پر کم . جو لوگ سامیہ واد کی نیو ڈالنے میں لگے ہیں، وہ اس فرق کی طرف نظر نہیں ڈالتے جو سماج واد اور سامیہ واد میں ھے .

پیسے کو نگاہ میں رکھکر کتنے ہی زور سے کیوں نہ کہا جائے کہ اس اوستھا کا نام سماج واد ھے. جب پیدا کرنے کے سارے سادھن سماج کے ہاتھ میں ہوں یعنی ان پر سب کا سمان ادھیکار ہو، پر کیا اتنے سے سماج واد کے پورے ارتھ ہوگئے ؟ ایسی حالت میں دو بڑی کمی سماج میں پھر بھی رہ جائینگی، مزدوری اور خدا . تھوڑے شبدوں میں سماج واد کو یوں سمجھ لیجئے— "ہر ایک سے پورا پورا کام؛ ہر ایک کو پورے کام کے پورے دام." یہ من کو جتنا بھلا لگتا ھے عمل میں اتنا ہی مشکل ھے، ہاں، اسنبھو نہیں . اس سے اتنا ہوگا، کام کرنے والے کام کے دام پا سکیں گے. نکموں کا کیا ہوگا؟ یہ ٹھیک، اس ویوستھا میں اچھے کام کے اچھے دام اور بہت کام کے بہت دام اٹھ سکینگے، کام کی اچھائی بڑھے گی، بڑھواری بھی ہوگی، پر اس سے سماج کی کیا ساری دقتیں دور ہو جائینگی اور پونجی واد پر الزام ھے کہ وہ بیوپار کا ایسا چکر کھڑا کر دیتا ھے جس سے بیکاری بڑھ جاتی ھے، کام کرنے والوں کو انکے کام پورے پورے دام نہیں مل پاتے، کیونکہ اتپادن کے سادھن پر سب کا ادھیکار نہیں ہوتا، کچھ ہوتا ھے، جن کے ہاتھ

समाजवाद और साम्यवाद

एक तरह से इन दोनों में इतना कम अन्तर है कि कोई भी समाजवाद को साम्यवाद और साम्यवाद को समाजवाद कह सकता है. साम्यवाद जैसी चीज़ अमल में कहीं है नहीं. रूस और चीन साम्यवादी कहलाते ज़रूर हैं पर वह तो अभी समाजवाद की पूरी मंज़िल नहीं पार कर पाये. हम बहुत बड़ी बात कह गये हैं, पर हमने यह बात ज़िम्मेदारी के साथ कही है. साम्यवाद सचमुच आदमी के लिये आदर्शवाद है. वह समझ में भले ही जल्दी आ जाय पर अमल में आना बेहद मुश्किल है. साम्यवाद समाज की उस अवस्था का नाम है जब समाज के लिये सरकार की हैसियत से कुछ करने के लिये रह ही नहीं जाता. थोड़े शब्दों में समाज के हर आदमी के दिल में यह बैठ जाना कि वह रैयत भी है और राजा भी—इसी का नाम है साम्यवाद. यह आसान काम नहीं. शायद मुश्किल भी नहीं, महा मुश्किल है.

अगर हम यह कहें कि समाजवाद लड़कपन की हालत का नाम है और साम्यवाद जवानी का तो ऊपर की बात थोड़ी कमज़ोर पड़ जाती है. हर लड़का जवान हो जाता है पर समाजवाद आज तक साम्यवाद का रूप लेते नहीं देखा गया. रूस चीन यह दलील देकर कि जब तक सारी दुनिया में समाजवाद न फैल जाय तब तक उनके देशों में साम्यवाद अपने पूरे रूप में नहीं खिल सकता, हमारा समर्थन ही करते मालूम होते हैं. समाजवाद और साम्यवाद को एक तरह और भी समझा जा सकता है. अगर समाज दुकान का रूप ले ले तो वह कहलायगा समाजवाद. अगर घर का रूप ले ले तो वह होगा साम्यवाद. पढ़ने वाले अब सोच कर देख लें कि जितना साम्यवाद कहने और समझने में आसान है, करने में आसान नहीं. हां, साम्यवाद का आदर्श सामने रख कर समाज की भलाई में लगना हर तरह ठीक. समाज से यहां मतलब मानव समाज से है, रूसी, चीनी, जापानी हिन्दुस्तानी, अंगरेज़ी, अमरीकी समाज से नहीं. विश्व बंधुत्व यानी जगत भाई चारे की आवाज़ उठाई जा सकती है, उस पर अमल नहीं किया जा सकता. दस बीस, लाख दो लाख, करोड़ दो करोड़ भी अगर अमल के लिये तैयार हो जाएं तब भी साम्यवाद के आदर्श को नहीं पहुंचा जा सकता. अब क्या इतनी मुश्किल चीज़ के लिये लोगों को कोशिश करनी चाहिये ?

चांद सूरज को निशाना बना कर तीर फेंकने की कोशिश करना कुछ एक की नज़र में पागलपन हो सकता है, फेंकने वाले की नज़र में नहीं. वह आये दिन अपनी

سماج واد اور سامیہ واد

ایک طرح سے ان دونوں میں اتنا کم انتر ہے کہ کوئی بھی سماج واد کو سامیہ واد اور سامیہ واد کو سماج واد کہہ سکتا ہے۔ سامیہ واد جیسی چیز عمل میں کہیں ہے نہیں۔ روس اور چین سامیہ وادی کہلاتے ضرور ہیں پر وہ تو ابھی سماج واد کی پوری منزل نہیں پار کر پائے۔ ہم بہت بڑی بات کہہ گئے ہیں، پر ہم نے یہ بات ذمہ داری کے ساتھ کہی ہے۔ سامیہ واد سچ مچ آدمی کے لئے آدرش واد ہے۔ وہ سمجھ میں بھلے ہی جلدی آجائے پر عمل میں آنا بے حد مشکل ہے۔ سامیہ واد سماج کی اس اوستھا کا نام ہے جب سماج کے لئے سرکار کی حیثیت سے کچھ کرنے کے لئے رہ ہی نہیں جاتا۔ تھوڑے شبدوں میں سماج کے ہر آدمی کے دل میں یہ بیٹھ جانا کہ وہ رعیت بھی ہے اور راجہ بھی۔ اسی کا نام ہے سماج واد۔ یہ آسان کام نہیں۔ شاید مشکل بھی نہیں، مہا مشکل ہے۔

اگر ہم یہ کہیں کہ سماج واد لڑکپن کی حالت کا نام ہے اور سامیہ واد جوانی کا تو اوپر کی بات تھوڑی کمزور پڑ جاتی ہے۔ ہر لڑکا جوان ہو جاتا ہے پر سماج واد آج تک سامیہ واد کا روپ لیتے نہیں دیکھا گیا۔ روس چین یہ دلیل دے کر کہ جب تک ساری دنیا میں سماج واد نہ پھیل جائے تب تک ان کے دیشوں میں سامیہ واد اپنے پورے روپ میں نہیں کھل سکتا، ہمارا سمرتھن ہی کرتے معلوم ہوتے ہیں۔ سماج واد اور سامیہ واد کو ایک طرح اور بھی سمجھا جا سکتا ہے۔ اگر سماج دوکان کا روپ لے لے تو یہ کہلائے گا سماج واد، اگر گھر کا روپ لے لے تو یہ ہوگا سامیہ واد۔ پڑھنے والے اب سوچ کر دیکھ لیں کہ جتنا سامیہ واد کہنے اور سمجھنے میں آسان ہے، کرنے میں آسان نہیں۔ ہاں، سامیہ واد کا آدرش سامنے رکھ کر سماج کی بھلائی میں لگنا ہر طرح ٹھیک۔ سماج سے یہاں مطلب مانو سماج سے ہے، روسی، چینی، جاپانی، ہندستانی، انگریزی، امریکی سماج سے نہیں۔ وشو بندھتو یعنی جگت بھائی چارے کی آواز اٹھائی جا سکتی ہے، اس پر عمل نہیں کیا جا سکتا۔ دس بیس، لاکھ دو لاکھ، کروڑ دو کروڑ بھی اگر عمل کے لئے تیار ہو جائیں تب بھی سامیہ واد کے آدرش کو نہیں پہنچا جا سکتا۔ اب کیا اتنی مشکل چیز کے لئے لوگوں کو کوشش کرنی چاہئے ؟

چاند اور سورج کو نشانہ بنا کر تیر پھینکنے کی کوشش کرنا کچھ ایک کی نظر میں پاگل پن ہو سکتا ہے، پھینکنے والے کی نظر میں نہیں۔ وہ آئے دن اپنی

बहुत से आगे चले गए थे, बहुत से पीछे थे. सब उस छोटे स्टेशन की ओर थके, हंसते, खिलखिलाते चले आ रहे थे कुछ ने झाड़ियों और जंगलों में अपना रास्ता खो कर फिर ढूंढ कर अपनी हिम्मत का सबूत दिया था. छोटे स्टेशन पर जीवन का स्रोत यकायक फूट पड़ा. तरह तरह की पीने की हजारों बोतलें खुलने और तेजी से खाली होने लगीं. हम कई सौ थे. और चढ़ाई और धूप का असर असल में हम पर हुआ था, हालांकि वह हमारे खुशी और आनन्द को कम नहीं कर सके.

ट्रेन चार बजे पीकिंग को रवाना हुई. तीन घंटे जैसे तीन मिनटों में गुजर गए. और होटल पहुंचते ही सब अपने अपने कमरों को भागे. दौड़ धूप खासी हुई थी. आराम की जरूरत सब को थी. बिस्तर में पड़ा महान दीवार की सी इमारतों की वे जरूरतों पर मैं देर तक विचार करता रहा. क्या ऐसी इमारतें, खुद यह महान दीवार ही कभी खूनी कबीलों के हमले रोक सकी ? शायद एक हद तक. शायद किसी हद तक नहीं. जो भी हो उनमें लगी बेशुमार मेहनत, धन, अनगिनत जीवन का नाश किसी भी सूरत में नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता.

इसीलिये नया चीन इस तरह की इमारतों की ममता छोड़ उस तरह के निर्मान में लगा हुआ है जो कम से कम वक्त में मानव का कल्यान करेंगे. विश्वामित्र ने घोषना की थी—"गुह्यं ब्रवीमि न मानुषात श्रेष्ठ तरंहि किंचित." (भेद की बात कहता हूं. मनुष्य से बढ़ कर कुछ भी नहीं.") इस रहस्य का भेद माओ से ज़ियादा किसी और ने नहीं पाया.

नागर, फोटो के उन नेगेटिवों के लिये अनेक धन्यवाद जो चित्रा लिखती है, उसे मिल गए हैं. जब मैं चीन की ओर चला था, तुम्हारे बच्चे अभी बीमार ही थे. विश्वास है कि वह अब स्वस्थ हो गए होंगे. मेरी ओर से उन्हें प्यार करना, पत्नी को नमस्कार कहना.

स्नेह,

तुम्हारा
भगवत शरन

بہت سے آگے چلے گئے تھے' بہت سے پیچھے تھے ۔ سب اس چھوٹے اسٹیشن کی اور تھکے' ہنستے' کلکلاتے چلے جا رہے تھے ۔ کچھ نے جھاڑیوں اور جنگلوں میں اپنا راستہ کھو کر پھر ڈھونڈھ کر اپنی ہمت کا ثبوت دیا تھا ۔ چھوٹے اسٹیشن پر جیون کا سوت یکایک پھوٹ پڑا ۔ طرح طرح کے پینے کی ہزاروں بوتلیں کھلنے اور تیزی سے خالی ہونے لگیں ۔ ہم کئی سو تھے ۔ اور چڑھائی اور دھوپ کا اثر اصل میں ہم پر ہوا تھا ۔ حالانکہ وہ ہمارے خوشی اور آنند کو کم نہیں کر سکے ۔

ٹرین چار بجے پیکنگ کو روانہ ہوئی ۔ تین گھنٹے جیسے تین منٹوں میں گذر گئے ۔ اور ہوٹل پہونچتے ہی سب اپنے اپنے کمروں کو بھاگے ۔ دوڑ دھوپ خاص ہوئی تھی آرام کی ضرورت سب کو تھی ۔ بستر میں پڑا مہان دیوار کی سی عمارتوں کی یہ ضرورتوں پر میں دیر تک وچار کرتا رہا ۔ کیا ایسی عمارتیں' خود یہ مہان دیوار ہی کبھی خونی قبیلوں کے حملے روک سکی ؟ شائد ایک حد تک ۔ شائد کسی حد تک نہیں ۔ جو بھی ہو اُن میں لگی بے شمار محنت' دھن' انگنت جیون کا ناش کسی بھی صورت میں نظرانداز نہیں کیا جا سکتا ۔

اسی لئے نیا چین اس طرح کی عمارتوں کی ممتا چھوڑ اُس کے نرمان میں لگا ہوا ہے جو کم سے کم وقت میں مانو کا کلیان کریںگے ۔ وشوامتر نے گھوشنا کی تھی—"گہیم بروِیمی نامانوشات ۔ سریشٹھ ترنگہی کنچِت" (بھید کی بات کہتا ہوں ۔ منوشیہ سے بڑھکر کچھ بھی نہیں !) اس رہسیہ کا بھید ماؤ سے زیادہ کسی اور نے نہیں پایا ۔

ناگر' فوٹو کے اُن نیگٹیوں کے لئے انیک دھنیہ باد جو چترا لکھتی ہے' اسے مل گئے ہیں ۔ جب میں چین کی اور چلا تھا' تمہارے بچے ابھی بیمار ہی تھے ۔ وشواس ہے کہ وہ اب سوَستھ ہوگئے ہونگے ۔ میری اور سے انہیں پیار کرنا' پتنی کو نمسکار کہنا ۔

سنیہ'

تمہارا
بھگوت شرن

देते. हुवांगती ने जो कब रेगिस्तान से समुद्र तक का स्वामी था, दुश्मनों के सामने मुल्क की हिफ़ाज़त के लिये दीवार खड़ी कर देने का इरादा किया. उसके हुक्म से उसके मशहूर सेनापति मैंग तियन ने दीवार खड़ी कर दी. दस लाख आदमी लगे कुछ राज के रूप में, कुछ चौकीदारों के रूप में, बाक़ी सब मज़दूरों के रूप में. सिर्फ़ इन्सान की ताक़तों ने दस साल के अन्दर वह जादू की दीवार खड़ी कर दी. लेकिन लाखों मज़दूर दीवार खड़ी होने के पहले ही उसकी नींव में दरगोर हो गए. उनसे कहीं ज़ियादा तादाद में वह थे जो घायल हो कर ज़िन्दगी भर के लिये बेकार हो गए. इसी लिये नया चीन, जैसे पुराने चीन के भी कुछ विचारवान लोग महान दीवार को ज़ुल्म और बेरहमी का निशान मानते हैं. वह विशाल इमारत वास्तव में ग़ैर मामूली है, लेकिन सामन्ती सदियों के दौरान में कितनी ही इमारतें ऐसी बनी हैं जिन्हें बनाने वाले हाथ बेकार हो गए हैं, बेकार कर दिये गये हैं. जो भी हो महान दीवार इतनी लम्बी चौड़ी है कि वह मुल्क की एक क़ुदरती सरहद बन गई है. चीन की क़रीब क़रीब सारी उत्तरी सरहद को घेरती हुई वह अटूट रेखा दूर के पच्छिमी कानसू के रेगिस्तान से पूरब के प्रशान्त महा सागर के किनारे तक पहुंचती है. जितना सामान इसमें लगा है, जानकारों का कहना है कि अगर उससे भू मध्य रेखा पर ज़मीन को घेरा जाय तो वह 8 फ़िट ऊंची 3 फ़िट मोटी बेस्टन के रूप में सारी ज़मीन को घेर लेगी.

पहरे की बुरजियों में बराबर फ़ौज रहती थी जो एक अजीब सिगनल के ज़रिये बहुत कम वक़्त में, एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज को सैकड़ों मील दूर ख़बर भेज देती थी. और सामराज की फ़ौज दीवार के नीचे आकर उन बर्बरों के ख़िलाफ़ तैयार हो जाती जो लूट खसोट की खोज में बराबर दीवार के एक सिरे से दूसरे तक घूमते रहते थे. नान काऊ का दर्रा हमेशा से चीन से दूर मंगोलिया जाने वाले क़ाफ़िलों का रास्ता रहा है. इसी की तरह और दर्रे भी और दिशाओं में आते थे जिससे दीवार में रास्ते बनाने पड़ते थे. आज तो कई जगह उसे तोड़ कर रेल और दूसरे आने जाने के साधनों के लिये रास्ते बना लिये गये हैं, दीवार हमारे पास क़रीब 30 फ़ीट ऊंची है. और उसका परकोटा नीचे 25 फ़ीट चौड़ा है. ख़तरे की जगहें ठोस बनावट से मज़बूत कर ली गई हैं. ऊपर ईंटें लगी हैं और बाहरी दीवार की मज़बूती के लिये दोहरा परकोटा दौड़ता है.

हम फीसलते,कूदते, ढेले बिखरी ईंटों और पत्थरों पर चलते नीचे उतरे. सीढ़ियों से नीचे और नीचे आख़ीर में ज़मीन पर, पृथ्वी माता पर आ खड़े हुए.

دیتے۔ ہوانگتی نے جو اب ریگستان سے سمندر تک کا سوامی تھا' دشمنوں کے سامنے ملک کی حفاظت کے لئے دیوار کھڑی کر دینے کا ارادہ کیا۔ اس کے حکم سے اس کے مشہور سینا پتی مینگ تین نے دیوار کھڑی کر دی۔ دس لاکھ آدمی لگے کچھ راج کے روپ میں' کچھ چوکیداروں کے روپ میں' باقی سب مزدوروں کے روپ میں۔ صرف انسان کی طاقتوں نے دس سال کے اندر وہ جادو کی دیوار کھڑی کر دی۔ لیکن لاکھوں مزدور دیوار کھڑی ہونے کے پہلے ہی اس کی نیو میں در گور ہوگئے۔ ان سے کہیں زیادہ تعداد میں وہ تھے جو گھائل ہو کر زندگی بھر کے لئے بیکار ہوگئے۔ اسی لئے نیا چین' جیسے پرانے چین کے بھی کچھ وچار وان لوگ مہان دیوار کو ظلم اور بے رحمی کا نشان مانتے ہیں۔ وہ وشال عمارت واستو میں غیر معمولی ہے۔ لیکن سامنتی صدیوں کے دوران میں کتنی ہی عمارتیں ایسی بنی ہیں جنہیں بنانے والے ہاتھ بیکار ہو گئے ہیں' بیکار کر دیئے گئے ہیں۔ جو بھی ہو مہان دیوار اتنی لمبی چوڑی ہے کہ وہ ملک کی ایک قدرتی سرحد بن گئی ہے۔ چین کی قریب قریب ساری اُتری سرحد کو گھیرتی ہوئی وہ اٹوٹ ریکھا دور کے پچھمی کان سو کے ریگستان سے پورب کے پرشانت مہا ساگر کے کنارے تک پہونچتی ہے۔ جتنا سامان اس میں لگا ہے' جانکاروں کا کہنا ہے کہ اگر اس سے بھومدھیہ ریکھا پر زمین کو گھیرا جائے تو وہ 8 فٹ اونچی 3 فٹ موٹی ویسٹن کے روپ میں ساری زمین کو گھیر لے گی۔

پہرے کی برجیوں میں برابر فوج رہتی تھی جو ایک عجیب سگنل کے ذریعہ بہت کم وقت میں ایک برج سے دوسرے برج کو سیکڑوں میل دور خبر بھیج دیتی تھی' اور سامراج کی فوج دیوار کے نیچے آ کر ان بربروں کے خلاف تیار ہو جاتی جو لوٹ کھسوٹ کی کھوج میں برابر دیوار کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک گھومتے رہتے تھے۔ نان کاؤ کا درہ ہمیشہ سے چین سے دور منگولیا سے جانے والے قافلوں کا راستہ رہا ہے۔ اسی کی طرح اور درے بھی اور دشاؤں میں جاتے تھے جس سے دیوار میں راستے بنانے پڑتے تھے۔ آج تو کئی جگہ اسے توڑ کر ریل اور دوسرے آنے جانے کے سادھنوں کے لئے راستے بنا لئے گئے ہیں۔ دیوار ہمارے پاس قریب 30 فٹ اونچی ہے اور اس کا پرکوٹا نیچے 25 فٹ چوڑا ہے۔ خطرے کی جگہیں ٹھوس بناوٹ سے مضبوط کر لی گئی ہیں۔ اوپر اینٹیں لگی ہیں اور باہری دیوار کی مضبوطی کے لئے دوہرا پرکوٹا دوڑتا ہے۔

ہم دوڑتے کودتے' ڈھیلے بکھری اینٹوں اور پتھروں پر چلتے نیچے اُترے۔ سیڑھیوں سے نیچے اور نیچے۔ آخر میں زمین پر' دھرتی ماتا پر آ کھڑے ہوئے۔

दिलों को छूती हुई हंसी, कभी न भूलने वाला शिष्टाचार! ग़ैर बनावटी दोस्ती! थक चला था पर पहाड़ों की चोटी पर चढ़ कर, पहाड़ों की ऊंचाई को नीचा दिखाने का लोभ बर्दाश्त न कर सका. हालां कि ऐसा करना महज़ अब 'फ़ार्म' की बात थी क्योंकि मैं चोटी तक क़रीब क़रीब पहुंच ही गया था. उमा शंकर शुक्ल ने जो ऊपर से आए थे ऐसा कहा भी. बड़े प्यारे हैं यह गुजराती कवि और आलोचक. उनका परिचय पाकर नागर, तुम खुश होते. हालांकि मुझे शक है कि उनमें भी तुम्हारी तरह उन भूमध्य सागर के किनारे के पुराने सौदागरों के खून की रवानी है जो पच्छिमी किनारे पर पुराने ज़माने में आ बसे थे. और वह मेरी तरह सिर्फ़ आलोचक भी नहीं हैं. आलोचक जो, चैनिंग पोलक के शब्दों में, सिखाता तो दौड़ना है पर खुद जिसके पैर नहीं होते! उमा शंकर कवि भी हैं और ऊंचे तबक़े के.

फिर भी मैं कुछ सीढ़ियां और चढ़ ही गया. सीधा खड़ा हो चारों तरफ़ देखा. दूर तक फैली पहाड़ों की चोटियां, कहीं एक दूसरे के बराबर दौड़ती, कहीं एक से निकल कर दूसरे में खो जाती. दूर के क्षितिज में उनका छोर विलीन हो गया था. दीवार और पहाड़ों की क़तार, पहाड़ों की क़तार और दीवार, हद नज़र तक 1500 मील लम्बी, हिमालय की लम्बाई के बराबर. कभी घाटियों में डूबती, कभी पहाड़ की चोटियों पर चढ़ती, दूर तक फैली दीवार, और उसके वह परकोटे, क़िले और बुरजियां. युगों के तेज से चमकते हुए. वह महान दीवार नान काऊ दर्रे की पहाड़ियों से ऊपर होती उन ऊंची चोटियों के घेरे करती सांप की चाल से चली जाती है जिन पर इमारत का तो क्या आदमी का पैर टिकना मुश्किल है, जहां तहां उसमें कुंडलियां बन गई हैं जो उस पहाड़ी सूनेपन में डर पैदा करती हैं. बहुत पुरानी रीत रिवाज और आज के बीच बनी वह दीवार ज़माने की बदलती तसवीरों को जैसे वह देख रही है. अशोक के राज काल के आस पास ही उसे क्रूर सम्राट चिन शिह हुआंग ती ने 214 ईसा से पहले बनवाया था. बदनाम सम्राट हुआंग ती ने विद्वानों का दमन और उनकी पुस्तकों को जला कर इतिहास में अपना नाम काला किया था. लेकिन महान दीवार का निर्माण उसकी अमर शोहरत का कारन हुआ. चीन का महान देश मामूली तरीक़े से पच्छिम में तिब्बत के ऊंचे पहाड़ों से महफ़ूज़ था. दक्खिन में जंगलों से और पूरब में समुद्र से लेकिन उत्तर ग़ैर महफ़ूज़ था. उसी तरफ़ से चीन हिम्मती हमलावरों की बेरहमी का शिकार था. चीन के इस खुले दरवाज़े का फ़ायदा उत्तर के उन बर्बरों ने उठाया जो यकायक देश के खुशहाल मैदानों में उतर आते, उनके नगरों को बर्बाद कर देते, उनके असहाय निवासियों को तलवार के घाट उतार

دلوں کو چھوتی ہوئی ہنسی، کبھی نہ بھولنے والا برادرانہ! غیر بناوٹی دوستی! تھک چلا تھا پر پہاڑوں کی چوٹی پر چڑھکر، پہاڑوں کی اونچائی کو نیچا دکھانے کا لوبھ برداشت نہ کر سکا۔ حالانکہ ایسا کرنا محض اب 'فارم' کی بات تھی کیونکہ میں چوٹی تک قریب قریب پہونچ ہی گیا تھا۔ اما شنکر شکل نے جو اوپر سے آئے تھے ایسا کہا بھی۔ بڑے پیارے ہیں یہ گجراتی کوی اور آلوچک۔ ان کا پریچے پا کر ناگر، تم خوش ہوتے۔ حالانکہ مجھے شک ہے کہ ان میں بھی تمہاری طرح ان بھومدھیہ ساگر کے کنارے کے پرانے سوداگروں کے خون کی روانی ہے جو پچھمی کنارے پر پرانے زمانہ میں آ بسے تھے۔ اور وہ میری طرح صرف آلوچک بھی نہیں ہیں۔ آلوچک جو، چے ننگ پولک کے شبدوں میں، سکھاتا تو دوڑنا ہے پر خود جسے پیر نہیں ہوتے! اما شنکر کوی بھی ہیں اور اونچے طبقے کے۔

پھر بھی میں کچھ سیڑھیاں اور چڑھ ہی گیا۔ سیدھا کھڑا ہو چاروں طرف دیکھا۔ دور تک پھیلی پہاڑوں کی چوٹیاں، کہیں ایک دوسرے کے برابر دوڑتی، کہیں ایک سے نکل کر دوسرے میں کھو جاتی۔ دور کے چھتیج میں ان کا چھور ولین ہو گیا تھا۔ دیوار اور پہاڑوں کی قطار، پہاڑوں کی قطار اور دیوار، حد نظر تک 1500 میل لمبی، ہمالیہ کی لمبائی کے برابر۔ کبھی گھاٹیوں میں ڈوبتی، کبھی پہاڑ کی چوٹیوں پر چڑھتی، دور تک پھیلی دیوار۔ اور اس کے وہ پرکوٹے قلعے اور برجیاں۔ یگوں کے تیج سے چمکتے ہوئے۔ وہ مہان دیوار نان کاؤ درے کی پہاڑیوں سے اوپر ہوتی ان اونچی چوٹیوں کے گھیرے کرتی سانپ کی چال سے چلی جاتی ہے جن پر عمارت کا تو کیا آدمی کا پیر ٹکنا مشکل ہے۔ جہاں تہاں اس میں کنڈلیاں بن گئی ہیں جو اس پہاڑی سونے پن میں ڈر پیدا کرتی ہیں۔ بہت پرانی ریت رواج اور آج کے بیچ بنی وہ دیوار زمانے کی بدلتی تصویروں کو جیسے وہ دیکھ رہی ہے۔ اشوک کے راج کال کے آس پاس ہی اسے کرور سمراٹ چن شیہ ہوانگتی نے 214 عیسوی سے پہلے بنوایا تھا۔ بدنام سمراٹ ہوانگتی نے ودوانوں کا دمن اور ان کی پستکوں کو جلا کر اتہاس میں اپنا نام کالا کیا تھا۔ لیکن مہان دیوار کا نرمان اسکی امر شہرت کا کارن ہوا۔ چین کا مہان دیش معمولی طریقے سے پچھم میں تبت کے اونچے پہاڑوں سے محفوظ تھا۔ دکھن میں جنگلوں سے اور پورب میں سمندر سے۔ لیکن اتر غیر محفوظ تھا۔ اسی طرف سے چین ہمتی حملہ آوروں کی بے رحمی کا شکار تھا۔ چین کے اس کھلے دروازہ کا قاعدہ اتر کے ان بربروں نے اٹھایا جو یکایک دیش کے خوشحال میدانوں میں اتر آتے ان کے نگروں کو برباد کر دیتے۔ ان کے اسہائے نواسیوں کو تلوار کے گھاٹ اتار

कामयाब हो गए. और वही 'जब तब' की खबर सफलताएं चीन का 'दुर्भाग्य' बन गईं, उसके पैरों की लौंडी बेड़ियां.

एक बार मैंने इस चीनी दीवार पर भी कुछ लिखा था. तुमने मेरी हाल की किताब 'बुरजियों के पीछे' तो पढ़ी ही होगी. याद है, तुम्हें इसकी एक कापी भेजी थी. उसी में चीन की दीवार भी थी, पर तब मैंने इस पर दूर से लिखा था और वह दूरी जमाने और जमीन दोनों की थी. आज उसकी चोटी पर चढ़ कर मैं दोनों को लांघ रहा हूं—जमाने को भी, जमीन को भी!

यह चियांग लिंग चुयाओ का छोटा स्टेशन पीकिंग से क़रीब 70 मील दूर है, नौ बजे राजधानी से चले थे. एक बजे दीवार के नीचे आ खड़े हुए. दीवार का मशहूर दरवाज़ा 'पाता लिंग' स्टेशन से बस चन्द मिनट की दूरी पर है. दिन का खाना ट्रेन में ही सबने खा लिया था और हम बग़ैर एक मिनट खोए पैदल बढ़ चले.

गिरोह में पैदल चलने में भी बड़ा मज़ा आता है. बूढ़े और जवान यकसां चुसती से चले. अलीम, गोपालन, और मैं साथ साथ चल रहे थे. साथ ही अमृत भी थे. लड़कियां हिरनों की तरह उछल रही थीं. पेरिन, सरला, पंकज, श्रीमती चटोपाध्याय और श्रीमती मेहता का एक झुंड था, पाकिस्तान के सर सिकन्दर हयात खां की कन्या और पुत्र वधू का दूसरा. दल के बाद दल, टूटे परकोटे से हम दीवार की बग़ल में पहुंचे और चढ़ाई शुरू हो गई.

चोटी तक पहुंचने का हमने इरादा किया था पर वहां पहुंचना कुछ आसान न था फिर भी शुरू की चढ़ाई ऐसी कुछ मुश्किल भी न थी. हम ताज़ा थे. चहल क़दमी करते, उछलते दौड़ते चढ़ चले, पर जैसे जैसे चढ़ाई सीधी होती चली वैसे ही वैसे हमारे पैर थकने लगे. हमारी चाल धीमी हो गई. कुछ रुक चले. कुछ धीमे हो चले, कुछ राह में आराम करते चले. एकाएक मैंने महाराज जी (गुजरात के हरिशंकर जी व्यास, पश्चिमी भारत के बड़े बुजुर्ग कांगरेसी नेता हैं) को दीवार की दूसरी ओर नीचे चट्टानों पर उछलते उतरते देखा. वह चोटी तक चढ़ चुके थे और अब वहां से उतर रहे थे जहां हम चढ़ते जा रहे थे. ताज्जुब! 70 बरस के यह बूढ़े, जो बहुत नम्र और शालीनता (फ़राख़दिली) में अनोखे हैं चोटी पर पहुंचने वालों में पहले थे. हमने उन्हें झाड़ियों के बीच पहाड़ी चट्टानों से हो कर उतरने को मना किया और उन्हें परकोटे के ऊपर खींच लिया. हम ऊपर चढ़ते गए. धक्के देते और खाते एक दूसरे को संभालते. इसराइल के बूढ़े और महिला अब बैठ गए. पार लगाना उनके बस की बात न था. अमरीकी दल, उनके बीच आकर्षक श्रीमती गार्डनर, चढ़ाई चढ़ता रहा.

کامیاب ہوگئے، اور وہی 'جب تب' کی خبر سپھلتائیں چین کا 'دربھاگیہ' بن گئیں' اس کے پیروں کی لونڈی بیڑیاں .

ایک بار میں نے اس چینی دیوار پر بھی کچھ لکھا تھا . تم نے میری حال کی کتاب 'برجیوں کے پیچھے' تو پڑھی ہی ہوگی. یاد ہے' تمہیں اس کی ایک کاپی بھیجی تھی. اسی میں چین کی دیوار بھی تھی' پر تب میں نے اس پر دور سے لکھا تھا اور وہ دوری زمانہ اور زمین دونوں کی تھی. آج اس کی چوٹی پر چڑھکر میں دونوں کو لانگھ رہا ہوں زمانہ کو بھی' زمین کو بھی

یہ چیانگ لنگ چیاؤ کا چھوٹا اسٹیشن پیکنگ سے قریب 70 میل دور ہے . نو بجے راجدھانی سے چلے تھے. ایک بجے دیوار کے نیچے آ کھڑے ہوئے. دیوار کا مشہور دروازہ 'پاتا لنگ' اسٹیشن سے بس چند منٹ کی دوری پر ہے. دن کا کھانا ٹرین میں ہی سب نے کھا لیا تھا اور اب ہم بغیر ایک منٹ کھوئے پیدل بڑھ چلے .

گروہ میں پیدل چلنے میں بھی بڑا مزا آتا ہے. بوڑھے اور جوان یکساں چستی سے چلے . علیم' گوپالن اور میں ساتھ ساتھ چل رہے تھے ساتھ ہی امرت بھی تھے . لڑکیاں ہرنوں کی طرح اچھل رہی تھیں'. پیرن' سرلا' پنکج' شریمتی چٹوپادھیا کے اور شریمتی مہتا کا ایک جھنڈ تھا . پاکستان کے سر سکندر حیات خاں کی کنیا اور پتر ودھو کا دوسرا . دل کے بعد دل' ٹوٹے پرکوٹے سے ہم دیوار کی بغل میں پہونچے اور چڑھائی شروع ہوگئی .

چوٹی تک پہونچنے کا ہم نے ارادہ کیا تھا پر وہاں پہونچنا کچھ آسان نہ تھا . پھر بھی شروع کی چڑھائی ایسی کچھ مشکل بھی نہ تھی. ہم تازہ تھے. چہل قدمی کرتے' اچھلتے دوڑتے چڑھ چلے' پر جیسے جیسے چڑھائی سیدھی ہوتی چلی ویسے ہی ویسے ہمارے پیر تھکنے لگے. ہماری چال دھیمی ہو گئی . کچھ رک چلے' کچھ دھیمے ہو چلے' کچھ راہ میں آرام کرتے چلے . ایکا ایک میں نے مہاراج جی (گجرات کے ہری شنکر جی ویاس' پچھمی بھارت کے بڑے بزرگ کانگریسی نیتا ہیں) کو دیوار کے دوسری اور نیچے چٹانوں پر اچھلتے اترتے دیکھا. وہ چوٹی تک چڑھ چکے تھے اور اب وہاں سے اتر رہے تھے جہاں ہم چڑھتے جا رہے تھے. تعجب! 70 برس کے یہ بوڑھے' جو بہت نمر اور شالینتا (فراخ دلی) میں انوکھے ہیں' چوٹی پر پہونچنے والوں میں پہلے تھے . ہم نے انہیں جھاڑیوں کے بیچ پہاڑی چٹانوں سے ہوکر اترنے کو منع کیا اور انہیں پرکوٹے کے اوپر کھینچ لیا . ہم اوپر چڑھتے گئے. دھکے دیتے اور کھاتے ایک دوسرے کو سنبھالتے . اسرائیل کے بوڑھے اور مہیلا اب بیٹھ گئے . پار لگانا ان کے بس کی بات نہ تھا . امریکی دل' ان کے بیچ آکرشک شریمتی گارڈنر چڑھائی چڑھتا رہا .

खबरों को कहीं छपने नहीं देंगे और यह भारती झुकते नगर की जीत अन्धेरे में ही पड़ी रह जायगी. पर आवाज़ है कि क़ब्र की छाती फाड़ पुकार उठती है, नूर है कि सौ स्याह परतों को छेद जाता है !

ग़रज़ यह कि मुझे चीन और उसके बाशिन्दों को देखने जानने को एक हफ़्ता और मिल गया. और इस मौक़े का मैं यक़ीनन सही इस्तेमाल करूंगा. शांति समिति खुद बेकार नहीं बैठी है. रोज़ बरोज़ नई व पुरानी जगहें दिखाने का इन्तज़ाम करती है. हम आज ही चीन की महान दीवार देखने गए थे. नीचे उसका ब्यौरा देता हूं, यक़ीन है पसन्द आएगा.

सुबह आठ बजे ही तैयार हो गया था. दीवार देखने जाने वालों से बैठक भर गई थी. हम में से ज़ियादातर के लिये यह ज़िन्दगी का पहला मौक़ा था क्योंकि चीन की दीवार, तुम जानते हो आख़िर तुम्हारे लखनऊ की हज़रत गंज की सड़क नहीं जहां तुम जब चाहो अपनी "क़ानूनन चहलक़दमी" कर लेते हो. रेलवे प्लेटफ़ार्म भी इसी तरह की दुनिया की क़रीब क़रीब सारी जातियों के प्रतिनिधियों से भरा था, हवा में चुहल भरी थी, हंसी के फ़व्वारे छूट रहे थे. बधाइयां, स्वागत के शब्द, कान में कहे मुहब्बत भरे शब्द अनजानी ज़बानों में अनजाने मुहावरों में हवा में लहरा रहे थे. कितनी तरह की ज़बानें इसका तुम अटकल नहीं लगा सकते. आवाज़ें प्यार से बोझिल पर ऐसी कि कोई भाषा का माहिर उनका वर्गीकरन न कर सके. हां, पर ना समझ को भी अपने भाव से भर देने वाली. पूरब और पच्छिम का सही सम्मिलन !

नई और बिलकुल मॉर्डन, स्पेशल ट्रेन हमें देहात पार ले चली, पीकिंग की विशाल भूरी दीवारों के साए में, हम चले, बार बार दीवारें दूर खो जातीं, बार बार उनके परकोटे सिर पर क़िले उठाए हमारे ऊपर छा जाते, हाथ बढ़ाते उंगलियां उन्हें छू लेतीं, ट्रेन हरे भरे मैदानों के बीच हमें ले चली. काओ लियांग के हिलते हरे खेतों के बीच, पुराने सरहदी शहर नानकाऊ के परे, उधर चिहली की पहाड़ियों में उसने हमें ला उतारा.

महान दीवार दूर के क्षितिज (उफ़क़) को चूमती, पहाड़ों के सिरों पर फिरती क़ुदरत के माथे पर पहने हुए हार की तरह लग रही है. दैत्य की सी उसकी पहरू बुरजियां, दैत्य के से उसके दौड़ते परकोटे, अनन्त कड़ियों की अनन्त शृंखला ! दीवारें, जो देश की हमेशा से रखवाली रही हैं, पहाड़ों के ऊपर अनोखी खूबसूरत आकाश-रेखा बना रही हैं. तुर्के, हून, खीतान, नूचेन, मंगोल और बर्बर— किसने समय समय पर इन पहरुओं को लांघने की कोशिश नहीं की ? किसने जब तब इसके परकोटे जहां तहां न छेद लिये ? जब तब बुरजियों के पहरों के बावजूद भी बर्बर

خبروں کو کہیں چھپنے نہیں دینگے اور یہ بھارتی نتطے نظر کی جیت اندھیرے میں ہی پڑی رہ جائیگی. پر آواز ہے کہ قبر کی چھاتی پھاڑ پکار اٹھتی ہے' نور ہے کہ سو سیاہ پرتوں کو چھید جاتا ہے .

غرض یہ کہ مجھے چین اور اس کے باشندوں کو دیکھنے جاننے کو ایک ہفتہ اور مل گیا. اور اس موقعہ کا میں یقیناً صحیح استعمال کرونگا . شانتی سمیتی خود بیکار نہیں بیٹھی ہے . روز بروز نئی و پرانی جگہیں دکھانے کا انتظام کرتی ہے. ہم آج ہی چین کی مہان دیوار دیکھنے گئے تھے . نیچے اس کا بیورا دیتا ہوں' یقین ہے پسند آئیگا .

صبح آٹھ بجے ہی تیار ہو گیا تھا . دیوار دیکھنے جانے والوں سے بیٹھک بھر گئی تھی . ہم میں سے زیادتر کے لئے یہ زندگی کا پہلا موقعہ تھا کیونکہ چین کی دیوار' تم جانتے ہو آخیر تمہارے لکھنؤ کی حضرت گنج سڑک نہیں جہاں تم جب چاہو اپنی " قانونن چہل قدمی" کرلیتے ہو . ریلوے پلیٹ فارم بھی اسی طرح کی دنیا کی قریب قریب ساری جاتیوں کے پرتی‌ندھیوں سے بھرا تھ' ہوا میں چہل بھری تھی' ہنسی کے فوارے چھوٹ رہے تھے. بدھائیاں' سواگت کے شبد کان میں کہے محبت بھرے شبد ان‌جانی زبانوں میں انجانے محاوروں میں ہوا میں لہرا رہے تھے . کتنی طرح کی زبانیں اس کا تم اٹکل نہیں لگا سکتے . آوازیں پیار سے بوجھل پر ایسی کہ کوئی بھاشا کا ماہر ان کا ورگی‌کرن نہ کر سکے . ہاں' پر ناسمجھ کو بھی اپنے بھاؤ سے بھر دینے والی. پورب اور پچھم کا صحیح سملن !

نئی بالکل ماڈرن' اسپیشل ٹرین ہمیں دیہات پار لے چلی' پیکنگ کی وشال بھوری دیواروں کے سائے میں. ہم چلے' بار بار دیواریں دور کھو جاتیں' بار بار ان کے پرکوٹے سر پر قلعے اٹھائے ہمارے اوپر چھا جاتے . ہاتھ بڑھاتے انگلیاں انہیں چھو لیتیں . ٹرین ہرے بھرے میدانوں کے بیچ ہمیں لے چلی. کاؤ لیانگ کے ہلتے ہرے کھیتوں کے بیچ' پرانے سرحدی شہر نان‌کاؤ کے پرے' ادھر چہلی کی پہاڑیوں میں اس نے ہمیں لا اتارا .

مہان دیوار دور کے چھتیج (اُفق) کو چومتی' پہاڑوں کے سروں پر پھرتی قدرت کے ماتھے پر پہنے ہوئے ہار کی طرح لگ رہی ہے . دیتیہ کی سی اس کی پہرو برجیاں' دیتیہ کے سے اس کے دوڑتے پرکوٹے اننت کڑیوں کی اننت شرنکھلا ! دیواریں' جو دیش کی ہمیشہ سے رکھوالی رہی ہیں' پہاڑوں کے اوپر انوکھی خوبصورت آکاش ریکھا بنا رہی ہیں . ترک' ہون' کھیتان' نوچین' منگول اور بربر—کس نے سمے سمے پر ان پہروں کو لانگھنے کی کوشش نہیں کی؟ کس نے جب تب اس کے پرکوٹے جہاں تہاں نہ چھید دیئے ؟ جب تب برجیوں کے پہروں کے باوجود بھی بربر

पीकिंग से खत

प्रिय नागर,

अपराधी हूं, एक जमाने से तुम्हें लिखा नहीं. चीन आने के पहले ही लिखने वाले वाला था पर व्यस्त रहने के कारन लिख न सका. हज़ार कोशिश की पर समय न मिला. और आज हज़ारों मील दूर पीकिंग से लिख रहा हूं. यक़ीन है, देर के लिये बुरा न मानोगे.

पीकिंग पहली अक्तूबर की तैयारी में लगा है. तैयारियां शांति सम्मेलन के लिये बड़े ज़ोर से हो रही हैं. एशिया और दोनों अमरीका के अधिकतर देशों से प्रतिनिधि पहुंच गए हैं. कुछ आज पहुंच रहे हैं. इनकी एक बड़ी तादाद अब तक चीन पहुंच चुकी है. और पीकिंग की राह में हैं. कुछ प्रतिनिधियों को मौसम खराब होने से प्राग और मास्को रुक जाना पड़ा है. कुहरा छटा कि वह उड़े. बहुत से योरोपियन जो प्रतिनिधि नहीं हैं राजधानी में हैं. वह मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में पहली अक्तूबर के जलसे में शामिल होने आए हैं. विदेशियों के अलावा चीन की उन कमगिनत जातियों के प्रतिनिधि भी यहां हैं जिन्हें सरकार खास कोशिश से सुखी रखती है. उनके रंग बिरंगे लिबास मन को बरबस खींच लेते हैं.

शान्ति सम्मेलन पहले की तय की हुई तारीख पर शुरू नहीं हो रहा है. किसी ने सुझाया कि इस तरह के सम्मेलन की शुरूआत हमारे गांधी के जन्म दिन 2 अक्तूबर को होनी चाहिये. सुझाव को पंख लग गए. डेलीगेशन से डेलीगेशन बढ़ चला. वह दिन, जो एक ऐसे राजकाजी महात्मा के जन्म से पवित्र हो चुका हो, जो शान्ति के लिये ही जिया, शान्ति के लिये ही मरा, निश्चय ही ऐसे मौक़े के लिये मौज़ूं था. सभी प्रतिनिधि मंडलों ने सुझाव के पक्ष में मंज़ूरी दे दी. संसार की जनता गांधी को कितना प्यार करती है, नागर, उसके अमन के उसूलों की कितनी क़ायल है! आज 25 है और कल 26, और दूसरी अक्तूबर है हफ्ते भर बाद. बड़ी अहम बात है, नागर, हफ्ते भर कानफ़रेन्स को टाल देना. हफ्ता भर रुके रहना कुछ आसान नहीं, उनके लिये जो हज़ारों मील चल कर यहां पहुंचे हैं, न उन्हीं के लिये जो इतने आलम की मेहमांनवाज़ी करते हैं. बाहर से आने वालों का तो लमहा लमहा अनमोल है और उनका हफ्ते भर रुक जाना, अमन और हिन्दुस्तान के लिये हद दर्जे का उत्साह और आदर ज़ाहिर करता है. काश,! हिन्दुस्तान के हमारे भाई इस राज़ को समझ पाते! मुझे डर है कि जो "जनतंत्र कहलाने वाली दुनिया" अखबारों की एजेंसियां कन्ट्रोल करते हैं वह इस तरह की

پیکنگ سے خط

پریہ ناگر'

اپرادھی ھوں' ایک زمانہ سے تمہیں لکھا نہیں. چین آنے کے پہلے ہی لکھنے والا تھا پر ویست رہنے کے کارن لکھ نہ سکا. ہزار کوشش کی پر سمے نہ ملا. اور آج ہزاروں میل دور پیکنگ سے لکھ رہا ھوں . یقین ہے' دیر کے لئے برا نہ مانو گے .

پیکنگ پہلی اکتوبر کی تیاری میں لگا ہے . تیاریاں شانتی سمے لن کے لئے بڑے زور سے ہو رہی ھیں . ایشیا اور دونوں امریکہ کے ادھک تر دیشوں سے پرتی ندھی پہونچ گئے ھیں . کچھ آج پہونچ رہے ھیں . ان کی ایک بڑی تعداد اب تک چین پہونچ چکی ہے . اور پیکنگ کی راہ میں ھیں . کچھ پرتی ندھیوں کو موسم خراب ہونے سے پراگ اور ماسکو رک جانا پڑا ہے . کہرا چھٹا کہ وہ اڑے . بہت سے یوروپین جو پرتی ندھی نہیں ھیں راجدھانی میں ھیں . وہ متر راشٹروں کے پرتی ندھی کے روپ میں پہلی اکتوبر کے جلسے میں شامل ہونے آئے ھیں. ودیشیوں کے علاوہ چین کی اُن کم گنت جاتیوں کے پرتی ندھی بھی یہاں ھیں جنہیں سرکار خاص کوشش سے سکھی کر رہی ہے. اُن کے رنگ برنگے لباس من کو بربس کھینچ لیتے ھیں .

شانتی سمے لن پہلے کی طے کی ہوئی تاریخ پر شروع نہیں ہو رہا ہے . کسی نے سمجھایا کہ اِس طرح کے سمے لن کی شروعات ہمارے گاندھی کے جنم دن 2 اکتوبر کو ہونی چاہئے. سجھاؤ پنکھ لگ گئے. ڈیلی گیشن سے ڈیلی گیشن آ چلا . وہ دن' جو ایک ایسے راجکاجی مہاتما کے جنم سے پوتر ہوچکا ہو' جو شانتی کے لئے ہی جیا' شانتی کے لئے ہی مرا' نشچے ہی ایسے موقعہ کے لئے موضوع تھا . سبھی پرتی ندھی منڈلوں نے سجھاؤ کے پکش میں منظوری دے دی . سنسار کی جنتا گاندھی کو کتنا پیار کرتی ہے' ناگر' اُس کے امن اصولوں کی کتنی قائل ہے ! آج 25 ہے اور کل ہے 26' اور دوسری اکتوبر ہے ہفتے بھر بعد. بڑی اہم بات ہے' ناگر' ہفتہ بھر کانفرنس کو ٹال دینا . ہفتہ بھر رکے رہنا کچھ آسان نہیں' نہ اُن کے لئے جو ہزاروں میل چل کر یہاں پہونچے ھیں' نہ انہیں کے لئے جو اتنے عالم کی مہمان نوازی کرتے ھیں. باہر سے آنے والوں کا تو لمحہ لمحہ انمول ہے اور اُن کا ہفتہ بھر رک جانا' امن اور ہندستان کے لئے حد درجہ کا اتساہ اور آدر ظاہر کرتا ہے . کاش ! ہندستان کے ہمارے بھائی اِس راز کو سمجھ پاتے ! پر مجھے ڈر ہے کہ جو "جن تنتر کہلانے والی دنیا" کی خبروں کی ایجنسیاں کنٹرول کرتے ھیں وہ اِس طرح کی

जाता है और कारखाने में जा कर जिस तरह वह मशीन में डाला जाता है वह तरीक़ा ऐसा नहीं जिसे पूरा साफ़ कहा जा सके. उसे देख कर उन आदमियों का जी उस दूध को पीने को तैयार नहीं हो सकता जिन्होंने अपने घर में दूध के बर्तनों की सफ़ाई देखी है. इस दृश्य का भी मन पर अच्छा प्रभाव नहीं रहा.

(7) कारखाने देखने का टिकट भी लगता है. बम्बई जैसे शहर में यह ठीक है, पर जो आदमी चालीस पचास मील उसे देखने आता है, उसे ज़रूर अखरता होगा. यह दूसरी बात है कि जहां उसने इतना रेल किराया दिया है वहां दो चार आने बड़ी बात नहीं.

(8) देखने वालों के साथ जैसा बर्ताव होना चाहिये वैसा नहीं होता. टिकट लगाने पर तो इसका और भी ज़ियादा ख़्याल रखना चाहिये.

हम देख कर वापस चले आए. उसी दिन 'नव भारत' में यह ख़बर मिली कि जो ख़बर आरे बस्ती के दूध के बारे में छपी थी कि उसमें कीड़े निकले वह ग़लत है. इसे पढ़कर हमारे मन पर यह असर पड़ा कि कारख़ाने वाले, शायद सरकार भी, सचाई दबाने की कोशिश करते हैं.

तीसरे दिन फिर अख़बारों में यह पढ़ने को मिला कि कीड़ों वाली ख़बर ठीक थी पर वह कीड़े दूध में नहीं निकले थे, अस्पताल के बर्तन में थे. इसी सिलसिले में यह ख़बर भी पढ़ने को मिली कि कीड़े निकलने की शिकायत एक दो बार पहले भी हो चुकी है.

बम्बई इतना बड़ा शहर है और इतना सभ्य हो गया है कि वह सभ्यता के इस ऐब से तो नहीं बच सकता कि नासाफ़ दूध उसे पीने को न मिले पर इससे तो बच ही सकता है कि आस्ट्रेलिया से दूध का चूरन मंगा कर अपनी दूध पीने की इच्छा को पूरा न करे. और यह तो बम्बई सरकार को भी शोभा नहीं देता कि वह आस्ट्रेलिया से दूध के डिब्बे मंगाए और उनसे ऐसे कारख़ाने में दूध तैयार कराए जहां से वह शुद्ध दूध देने का दावा करती है.

—भगवानदीन

جاتا ہے اور کارخانے میں جاکر جس طرح وہ مشین میں ڈالا جاتا ہے وہ طریقہ ایسا نہیں جسے پورا صاف کہا جاسکے. اسے دیکھکر ان آدمیوں کا جی اس دودھ کو پینے کو تیار نہیں ہوسکتا جنہوں نے اپنے گھر میں دودھ کے برتنوں کی صفائی دیکھی ہے. اس درشیہ کا بھی من پر اچھا پربھاؤ نہیں رہا.

(7) کارخانے دیکھنے کا ٹکٹ بھی لگتا ہے. بمبئی جیسے شہر میں یہ ٹھیک ہے، پر جو آدمی چالیس پچاس میل اسے دیکھنے آتا ہے، اسے ضرور اکھرتا ہوگا. یہ دوسری بات ہے کہ جہاں اس نے اتنا ریل کرایہ دیا ہے وہاں دو چار آنے بڑی بات نہیں.

(8) دیکھنے والوں کے ساتھ جیسا برتاؤ ہونا چاہئے ویسا نہیں ہوتا. ٹکٹ لگانے پر تو اس کا اور بھی زیادہ خیال رکھنا چاہئے.

ہم دیکھکر واپس چلے آئے. اسی دن 'نو بھارت' میں یہ خبر ملی کہ جو خبر آرے بستی کے دودھ کے بارے میں چھپی تھی کہ اس میں کیڑے نکلے وہ غلط ہے. اسے پڑھکر ہمارے من پر یہ اثر پڑا کہ کارخانے والے، شاید سرکار بھی، سچائی دبانے کی کوشش کرتے ہیں.

تیسرے دن پھر اخباروں میں یہ پڑھنے کو ملا کہ کیڑوں والی خبر ٹھیک تھی پر وہ کیڑے دودھ میں نہیں نکلے تھے، اسپتال کے برتن میں تھے. اسی سلسلے میں یہ خبر بھی پڑھنے کو ملی کہ کیڑے نکلنے کی شکایت یک دو بار پہلے بھی ہوچکی ہے.

بمبئی اتنا بڑا شہر ہے اور اتنا سبھیہ ہوگیا ہے کہ وہ سبھیتا کے اس عیب سے تو نہیں بچ سکتا کہ ناصاف دودھ اسے پینے کو نہ ملے پر اس سے تو بچ ہی سکتا ہے کہ آسٹریلیا سے دودھ کا چورن منگاکر اپنی دودھ پینے کی اچھا کو پورا نہ کرے. اور یہ تو بمبئی سرکار کو بھی شوبھا نہیں دیتا کہ وہ آسٹریلیا سے دودھ کے ڈبے منگائے اور ان سے ایسے کارخانے میں دودھ تیار کرائے جہاں سے وہ شدھ دودھ دینے کا دعویٰ کرتی ہے.

—بھگوان دین

(1) बस्ती, देखने में, बड़ी खूबसूरत और बहुत साफ है. हर देखने वाले का मन खिल उठता है.

(2) मशीनों का चलना, बोतलों की सफ़ाई, बर्तनों की सफ़ाई, हर आदमी देखकर वाह वाह करने लगता है. बच्चों के लिये बोतलों का, साफ़ होकर, अपने आप दूध लेने चलना तमाशा बन जाता है. इस तमाशे की खातिर इतनी भीड़ हो जाती है कि देखने वालों को बाहर खड़ा रहना पड़ता है. एक जत्था देख ले, तब दूसरे की बारी आती है.

(3) मशीन की सफ़ाई और मशीन के पंपों की सफ़ाई, सुना, कि होती है. पर जिस वक़्त होती है उस वक़्त देखने वालों को देखने की इजाज़त नहीं होती. इस विषय में सवाल जवाब से हमारे मन पर यह असर पड़ा कि यह सफ़ाई ऐसी नहीं होती जैसी होनी चाहिये; शायद ऐसी हो भी नहीं सकती जैसी होनी चाहिये. बड़े बड़े कारखानों में इस बुराई से नहीं बचा जा सकता. इस बुराई को दूर करने के लिये कारखाने वाले विज्ञान की मदद लेते हैं. ऐसी चीज़ों से काम लेते हैं जिनसे जर्म्स मर जायं यानी वह कीड़े नष्ट हो जांय जो आंख से दिखाई नहीं देते और जो तरह तरह की बीमारी पैदा करते हैं.

(4) जब हम कारखाने के उस हिस्से में पहुंचे जहां बनावटी दूध तैयार होता है, तो पता लगा आस्ट्रेलिया से मक्खन निकाले दूध का सूखा चूरन मनियों डब्बों में बंद कारखाने में आता है. वह एक मन गरम पानी में पौने चार सेर के हिसाब से मिलाया जाता है. जहां मिलाया जाता है वह जगह खुली है. जिस बर्तन में मिलाया जाता है उसका मुंह डेढ़ दो फ़ुट से कम व्यास का नहीं. वह ढका नहीं जा सकता. दूध का आटे जैसा चूरन, बर्तन के इधर उधर बिखरा रहता है. कभी कभी देखने वाले उसे उंगली से चाट कर देख भी लेते हैं. यही दूध आठ आने सेर बम्बई में मिलता है. इसे देख कर हमें डाक्टर की कीड़ों वाली बात समझ में आने में देर न लगी.

(5) जहां बनावटी दूध बने वहां असली दूध बिकना ठीक नहीं. हाथ कते बुने कपड़े की दूकान पर खद्दर भंडार ने कभी मिल के सूत और हाथ के बुने कपड़े की बिक्री की इजाज़त नहीं दी. ऐसा होने से हमारे मन पर यह असर रह जाय कि खालिस दूध भी बम्बई वालों को खालिस नहीं मिलता, बेजा नहीं.

(6) बस्ती में कई हज़ार भैंस हैं. खूब तन्दुरुस्त हैं. इनके रहने की जगह इतनी साफ़ है कि कोई सेठ भी अपनी एक दो गाय भैंस के लिये इतनी साफ़ जगह नहीं रख सकता. देखने वाली सब सफ़ाई वहां पूरी पूरी मिलती है, पर दूध दुहे जाने के बाद जिन बर्तनों में

بمبئی کی آرے کالونی

(1) بستی، دیکھنے میں، بڑی خوبصورت اور بہت صاف ہے۔ ہر دیکھنے والے کا من کھل اٹھتا ہے۔

(2) مشینوں کا چلنا، بوتلوں کی صفائی، برتنوں کی صفائی، ہر آدمی دیکھکر واہ واہ کرنے لگتا ہے۔ بچوں کے لئے بوتلوں کا، صاف ہو کر، اپنے آپ دودھ لینے چلنا تماشہ بن جاتا ہے۔ اس تماشہ کی خاطر اتنی بھیڑ ہوجاتی ہے کہ دیکھنے والوں کو باہر کھڑا رہنا پڑتا ہے۔ ایک جتھا دیکھ لے، تب دوسرے کی باری آتی ہے۔

(3) مشین کی صفائی اور مشین کے پمپوں کی صفائی، سنا کہ ہوتی ہے۔ پر جس وقت ہوتی ہے اس وقت دیکھنے والوں کو دیکھنے کی اجازت نہیں ہوتی۔ اس وشے میں سوال جواب سے ہمارے من پر یہ اثر پڑا کہ یہ صفائی ایسی نہیں ہوتی جیسی ہونی چاہئے؛ شاید ایسی ہو بھی نہیں سکتی جیسی ہونی چاہئے۔ بڑے بڑے کارخانوں میں اس برائی سے نہیں بچا جا سکتا۔ اس برائی کو دور کرنے کے لئے کارخانے والے وگیان کی مدد لیتے ہیں۔ ایسی چیزوں سے کام لیتے ہیں جن سے جرمس مر جائیں یعنی وہ کیڑے نشٹ ہو جائیں جو آنکھ سے دکھائی نہیں دیتے اور جو طرح طرح کی بیماری پیدا کرتے ہیں۔

(4) جب ہم کارخانے کی اس حصے میں پہنچے جہاں بناوٹی دودھ تیار ہوتا ہے، تو پتہ لگا آسٹریلیا سے مکھن نکالے دودھ کا سوکھا چورن ملیوں ڈبے میں بند کارخانے میں آتا ہے۔ وہ ایک من گرم پانی میں پونے چار سیر کے حساب سے ملایا جاتا ہے۔ جہاں ملایا جاتا ہے، وہ جگہ کھلی ہے۔ جس برتن میں ملایا جاتا ہے اس کا منہ ڈیڑھ دو فٹ سے کم ویاس کا نہیں وہ ڈھکا نہیں جا سکتا۔ دودھ کا آٹے جیسا چورن، برتن کے ادھر ادھر بکھرا رہتا ہے۔ کبھی کبھی دیکھنے والے اسے انگلی سے چاٹ کر دیکھ بھی لیتے ہیں۔ یہی دودھ آٹھ آنے سیر بمبئی میں ملتا ہے۔ اسے دیکھکر ہمیں ڈاکٹر کی کیڑوں والی بات سمجھ میں آنے دیر نہ لگی۔

(5) جہاں بناوٹی دودھ بنے وہاں اصلی دودھ بکنا ٹھیک نہیں۔ ہاتھ کتے بنے کپڑے کی دوکان پر کھدر بھنڈار نے کبھی مل کے سوت اور ہاتھ کے بنے کپڑے کی بکری کی اجازت نہیں دی۔ ایسا ہونے سے ہمارے من پر یہ اثر رہ جائے کہ خالص دودھ بھی بمبئی والوں کو خالص نہیں ملتا، بیجا نہیں۔

(6) بستی میں کئی ہزار بھینسیں ہیں۔ خوب تندرست ہیں۔ ان کے رہنے کی جگہ اتنی صاف ہے کہ کوئی سیٹھ بھی اپنی ایک دو گائے بھینس کے لئے اتنی صاف جگہ نہیں رکھ سکتا۔ دیکھنے والی سب صفائی یہاں پوری پوری ملتی ہے، پر دودھ دہے جانے کے بعد جن برتنوں میں

बम्बई की आरे कालोनी

बम्बई से चालीस पचास मील दूर, आरे नाम से एक बस्ती खड़ी हो गई है. यह बस्ती सिर्फ़ दूध का काम करती है. आस पास की बस्तियां छोड़ सारे बम्बई शहर को आरे बस्ती दूध भेजती है. बम्बई के हर निवासी की ज़ुबान पर उसका नाम सुना जा सकता है.

मैं इसी सितम्बर महीने में बम्बई था. सोलह दिन रहा. जिनके घर ठहरा था उनके घर आरे बस्ती का दूध पीने को मिला. दूध में अपने ढंग की गंध थी, ऐसी न थी जिसे बुरी कहा जा सके. एक तरह अच्छी थी. थोड़ी आग पा कर दूध गाढ़ा हो जाता था. पीने में अच्छा लगता था. पूछना पड़ा—इतना अच्छा दूध कहां से मिलता है? इस सवाल के जवाब में घर भर ने आरे के दूध के कारखाने की तारीफ़ करना शुरू कर दिया. घर की मालकिन ने भी कम तारीफ़ नहीं की. तारीफ़ सुन कर दूध बस्ती देखने को जी मचल पड़ा. दूसरे दिन बम्बई से निकलने वाले 'नवभारत' में यह खबर पढ़ने को मिली कि किसी लेडी डाक्टर ने दूध की जांच की और उस में पाव इंच से पौन इंच तक के पीले रंग के सूत जैसे कीड़े पाये गये. यह खबर पढ़ कर जी चाहा, जल्दी से जल्दी आरे बस्ती जाया जाय, उस कारखाने को देखा जाय.

जाने से पहले मैंने और कई जानकारों की जानकारी हासिल करना चाही. वह मिल गई. पता चला आरे बस्ती अपना दूध चौदह आने सेर बेचती है, अपने यहां का दूसरा दूध जिसका नाम 'टिन्ड-मिल्क' या बनावटी दूध है उसे आठ आना सेर बेचती है. यह सुनकर माथा ठनका. इसी सिल-सिले में यह भी मालूम हुआ कि बोरीविली के पास एक और आदर्श दुग्धालय है जो अपना दूध सोलह आने या अठारह आने सेर बेचता है. कभी कभी उसका भाव बीस आने सेर हो जाता है.

यह भी पता चला कि आदर्श दुग्धालय का दूध मंहगा होने की वजह से बम्बई शहर में नहीं खपता. आस पास की बस्तियों तक ही रह जाता है. यह भी पता चला कि आदर्श दुग्धालय किसी कम्पनी की चीज़ है और आरे का दूध कारखाना बम्बई सरकार की चीज़ है. सरकार की चीज़ है तो, पर उसकी कमेटी इतनी बलवान है कि वह हमेशा सरकार के क़ाबू से बाहर रहती है. इस बात में सचाई कितनी है इसे बम्बई सरकार जाने.

इस जानकारी के तुरत बाद ऐसे साधन जुट गये कि मैं दूसरे दिन आरे बस्ती देखने चल दिया. बस्ती देखकर मेरे मन पर यह असर रह गये.

بمبئی کی آرے کالونی

بمبئی سے چالیس پچاس میل دور' آرے نام سے ایک بستی کھڑی ہوگئی ہے. یہ بستی صرف دودھ کا کام کرتی ہے . آس پاس کی بستیاں چھوڑ سارے بمبئی شہر کو آرے بستی دودھ بھیجتی ہے . بمبئی کے ہر نواسی کی زبان پر اُس کا نام سنا جا سکتا ہے .

میں اِسی ستمبر مہینے میں بمبئی تھا . سولہ دن رہا . جن کے گھر ٹھہرا تھا اُن کے گھر آرے بستی کا دودھ پینے کو ملا . دودھ میں اپنے ڈھنگ کی گندھ تھی' ایسی نہ تھی جسے بری کہا جا سکے . ایک طرح اچھی تھی . تھوڑی آگ پا کر دودھ گاڑھا ہو جاتا تھا . پینے میں اچھا لگتا تھا . پوچھنا پڑا—اِتنا اچھا دودھ کہاں سے ملتا ہے ؟ اِس سوال کے جواب میں گھر بھر نے آرے کے دودھ کے کارخانے کی تعریف کرنا شروع کر دی . گھر کی مالکن نے بھی کم تعریف نہ کی . تعریف سن کر دودھ بستی دیکھنے کو جی مچل پڑا . دوسرے دن بمبئی سے نکلنے والے " نو بھارت " میں یہ خبر پڑھنے کو ملی کہ کسی لیڈی ڈاکٹر نے دودھ کی جانچ کی اور اُس میں پاؤ اِنچ سے پون انچ تک کے پیلے رنگ کے سوت جیسے کیڑے پائے گئے. یہ خبر پڑھکر جی چاہا' جلدی آرے بستی جایا جائے' اُس کارخانے کو دیکھا جائے .

جانے سے پہلے میں نے اور کئی جانکاروں سے جانکاری حاصل کرنا چاہی. وہ مل گئی. پتہ چلا آرے بستی اپنا دودھ چودہ آنہ سیر بیچتی ہے' اپنے یہاں کا دوسرا دودھ جس کا نام ' ٹنڈ ملک ' یا بناوٹی دودھ ہے اُسے آٹھ آنہ سیر بیچتی ہے . یہ سن کر ماتھا ٹھنکا . اِسی سلسلے میں یہ بھی معلوم ہوا کہ بوری ولی کے پاس ایک اور آدرش دگدھالیہ ہے جو اپنا دودھ سولہ آنہ یا اٹھارہ آنہ سیر بیچتا ہے. کبھی کبھی اُس کا بھاؤ بیس آنہ سیر ہو جاتا ہے .

یہ بھی پتہ چلا کہ آدرش دگدھالیہ کا دودھ مہنگا ہونے کی وجہ سے بمبئی شہر میں نہیں کھپتا . آس پاس کی بستیوں تک ہی رہ جاتا ہے . یہ بھی پتہ چلا کہ آدرش دگدھالیہ کسی کمپنی کی چیز ہے اور آرے کا دودھ کارخانہ بمبئی سرکار کی چیز ہے. سرکار کی چیز ہے تو' پر اُسکی کمیٹی اتنی بلوان ہے کہ وہ ہمیشہ سرکار کے قابو سے باہر رہتی ہے . اِس بات میں سچائی کتنی ہے اِسے بمبئی سرکار جانے .

اِس جانکاری کے ترت بعد ایسے سادھن جٹ گئے کہ میں دوسرے دن آرے بستی دیکھنے چل دیا . بستی دیکھکر میرے من پر یہ اثر رہ گئے .

है! उन्होंने चहक कर कहा—

"दरोगा जी आप यह कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हैं! मैं कुछ समझा नहीं. आपका मतलब क्या है?"

"घबराइये नहीं, सब समझ में आ जायगा."

"यानी......"

"यानी क्या......जवान बेटा अलग....जवान बहू आपके साथ......आपके कमरे में......आप की बीवी को मरे कितने दिन हो गये......?"

मुंशी जी गुस्से में थर्राते हुए खड़े हो गये और बोले—"आपका मतलब!"

"सौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को जाय."

"दारोगा जी....."

"मतलब क्या! जाहिर है कि आप बहू को अपने पास रखते हैं, लड़के को फिर क्यों जिन्दा देखना चाहेंगे."

"बस! बस!! दारोगा जी बहुत हो चुका. होश में..." गुस्से से मुंशी जी की आंखों में खून उतर आया था, उनके पैर लड़खड़ा रहे थे, जबान से पूरी बातें नहीं निकल रही थी. उनकी आंखें डबडबा आईं थीं.

दारोगा जी फिर बोले—"मुंशी जी! आप एक पुलिस के दारोगा से बातें कर रहे हैं, ऐरा, गैरा, नत्थू खैरा से नहीं. जरा सोच समझ कर बात कीजिये."

मुंशी जी जवाब देने के बजाय उठ कर चलने लगे.

"ठहरिये! जाते कहां हैं!" दरोगा जी ने रोब से कहा—"आपको मेरे साथ थाने चलना होगा!"

"थाने! क्यों......"

दरोगा जी ने दो कानिस्टिबलों को इशारा किया और वह मुंशी जी के दायें बायें हो गये. फिर एक व्यंग मुसकान से मुंशी जी की ओर देखा.

"कहिये अब तो चलेंगे!"

दरोगा जी ने कागज निकाल कर लिखना शुरू किया—लड़के की मौत! डकैती!! इन सब का जुर्म मुंशी जी के सिर मढ़ा गया. इसकी खास वजह लड़के की जवान बहू से नाजायज ताल्लुक.

दरोगा जी गर्व के साथ लिख रहे थे. बीच बीच में चौधरी साहब, राम बाबू, मोहन और उनके दूसरे साथी बोल पड़ते थे—"हां साहब! इनका तो बहुत पुराना ताल्लुक है. इसे गांव में कौन नहीं जानता!"

रिपोर्ट लिख कर पूरी कर ली गई. गवाहों में से चौधरी साहब, राम बाबू, और मोहन खास थे.

सारे गांव में सन्नाटा था! हर तरफ खामोशी थी.

दरोगा जी मुंशी जी को लिये थाने की ओर चले जा रहे थे.

चौधरी रामपाल सिंह मूंछों पर ताव देते हुए रामबाबू के कंधे पर हाथ मार कर कह रहे थे—"देखा तूने, इस तरह से काम होता है."

—मोहन कुमार शर्मा

ھ اُنھوں نے کہا—

"داروغہ جی، آپ یہ کیسی بہکی بہکی باتیں کر رہے ھیں! میں کچھ سمجھا نہیں، آپ کا مطلب کیا ھے؟"

"گھبرائیے نہیں، سب سمجھ میں آجائے گا."

"یعنی......"

"یعنی کیا......جوان بیٹا الگ......جوان بہو آپ کے ساتھ......آپ کے کمرے میں......آپ کی بیوی کو مرے کتنے دن ہوئے......؟"

منشی جی غصہ میں تھراتے ہوئے کھڑے ھوگئے اور بولے—"آپ کا مطلب!"

"سو سو چوھے کھاکے بلی حج کو جائے."

"داروغہ جی..."

"مطلب کیا! ظاھر ھے کہ آپ بہو کو اپنے پاس رکھتے ھیں، لڑکے کو پھر کیوں زندہ دیکھنا چاھیں گے."

"بس! بس!! داروغہ جی بہت ھو چکا. ھوش میں......" غصہ سے منشی جی کی آنکھوں میں خون اتر آیا تھا. اُن کے پیر لڑکھڑا رہے تھے. زبان سے پوری بات نہیں نکل رہی تھی. اُن کی آنکھیں ڈبڈبا آئی تھیں.

داروغہ جی پھر بولے—"منشی جی! آپ ایک پولیس کے داروغہ سے باتیں کر رہے ھیں، ایرا غیرا نتھو خیرا سے نہیں. ذرا سوچ سمجھکر بات کیجئے."

منشی جی جواب دینے کے بجائے اُٹھکر چلنے لگے.

"ٹھہریئے! جاتے کہاں ھیں!" داروغہ جی نے رعب سے کہا—"آپ کو میرے ساتھ تھانے چلنا ھوگا!"

"تھانے! کیوں......"

داروغہ جی نے کانسٹیبلوں کو اشارہ کیا اور وہ منشی جی کے دائیں بائیں ھوگئے. پھر ایک بھد مسکان سے منشی جی کی اور دیکھا.

"کہئے اب تو چلیئےگا!"

داروغہ جی نے کاغذ نکالکر لکھنا شروع کیا—لڑکے کی موت! ڈکیتی!! اِن سب کا جرم منشی جی کے سر مڈھا گیا. اِسکی خاص وجہ لڑکے کی جوان بہو سے نا جائز تعلق.

داروغہ جی گرو کے ساتھ لکھ رہے تھے. بیچ بیچ میں چودھری صاحب، رام بابو، موھن اور اُن کے دوسرے ساتھی بول پڑتے تھے—"ھاں صاحب! اِن کا تو بہت پرانا تعلق ھے. اِسے گاؤں میں کون نہیں جانتا!"

رپورٹ لکھکر پوری کر لی گئی. گواھوں میں سے چودھری صاحب، رام بابو اور موھن خاص تھے.

سارے گاؤں میں سناٹا تھا! ھر طرف خاموشی تھی.

داروغہ جی منشی جی کو لئے تھانے کی اور چلے جا رہے تھے.

چودھری رام پال سنگھ مونچھوں پر تاؤ دیتے ہوئے رام بابو کے کندھے پر ھاتھ مار کر کہہ رہے تھے—"دیکھا تونے، اِس طرح سے کام ھوتا ھے."

—موہن کمار شرما

"गहने कितने के होंगे ?"

"जियादा से जियादा एक डेढ़ हजार के होंगे, उससे जियादा नहीं" राम बाबू ने जवाब दिया.

"अच्छा......ठीक है ! यह पांच सौ तो दरोग़ा जी को सवेरे ही भिजवा दिये जायंगे. इसलिये यह पांच सौ रुपए मुझे अभी दे दो. बाक़ी का फिर......"

× × ×

डकैती की छानबीन के लिये दरोग़ा जी दोपहर को गांव में पहुंचे. सीधे चौधरी रामपाल सिंह के मकान पर चले गए

"आइये !आइये !! दरोग़ा जी कैसे तकलीफ़ की आपने !"

भई यह क्या कर डाला रात को !

"कुछ नहीं साहब ! बस मामूली सी बात. उसका इतना तूल तूमार बांध दिया है ! आपने नाहक़ तकलीफ़ की ? मैं तो आपके पास आने ही वाला था ." चौधरी रामपाल सिंह मुसकरा मुसकरा कर कह रहे थे.

"चौधरी साहब ! सरकारी नौकरी है सरकारी ! हो चाहे जो कुछ लेकिन काग़ज़ों की ख़ाना पुरी तो करनी ही पड़ती है ! क्या करता आता नहीं तो ?"

चौधरी साहब और दरोग़ा जी की बातें हो ही रही थी . कि मुंशी जी आ पहुंचे .

"आइये आइये ! मुंशी जी ! मुझे सख्त अफ़सोस है. कम्बख़्त बड़े ही ज़ालिम थे. आखिर लड़के ने क्या बिगाड़ा था ? रुपया पैसा लेने आए थे या लड़के को मारने ? मुंशी जी, सुना है कि कुछ डाकुओं को पहचान भी लिया है ."

मुंशी जी—"जी हां, पहचान तो जरूर लिया है, डाकू कौन थे ! रात दिन अपने पास बैठने उठने वालों ही में से थे ! किसको डाकू कहूं और किसको नहीं !"

"डाकुओं को पहचाना किसने था ?" दरोग़ा जी ने फिर सवाल किया .

"मेरे लड़के की बहू ने"

"लड़का कहां सो रहा था !"

"दरवाज़े से घुसते ही दाहिने हाथ के कमरे में !"

"बहू कहां थी !"

"मेरे कमरे में."

"हैं...यह क्या...पति कहीं पत्नी कहीं. क्या दोनों में पटती नहीं ?" दरोग़ा जी ने एक दम चौंक कर पूछा.

दरोग़ा जी की इन बातों से मुंशी जी कुछ घबरा से गए. उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह मामला क्या

" گہنے کتنے کے ہونگے ؟"

"زیادہ سے زیادہ ایک ڈیڑھ ہزار کے ہونگے' اس سے زیادہ نہیں" رام بابو نے جواب دیا .

' اچھا.....ٹھیک ہے ! یہ پانچ سو تو دروغہ جی کو سویرے ہی بھجوا دیئے جائینگے . اس لئے یہ پانچ سو روپیہ مجھے ابھی دے دو . باقی کا پھر......"

× × + +

ڈکیتی کی چھان بین کے لئے داروغہ جی دوپہر کو گاؤں میں پہونچے. سیدھے چودھری رام پال سنگھ کے مکان پر چلے گئے .

" آیئے ! آیئے !! دروغہ جی' کیسے تکلیف کی آپ نے ."

" بھئی ! یہ کیا کر ڈالا رات کو !"

" کچھ نہیں صاحب ! بس معمولی سی بات ہے . اس کا اتنا طول تمار باندھ دیا ہے ! آپ نے ناحق تکلیف کی ؟ میں تو آپ کے پاس آنے ہی والا تھا " چودھری رام پال سنگھ مسکرا مسکرا کہ رہے تھے .

" چودھری صاحب ! سرکاری نوکری ہے سرکاری ! ہو چاہے جو کچھ لیکن کاغذوں کی خانہ پوری تو کرنی ہی پڑتی ہے ! کیا کرتا آتا نہیں تو ؟"

چودھری صاحب اور داروغہ جی کی باتیں ہو رہی تھیں کہ منشی جی آ پہونچے .

" آیئے آیئے ! منشی جی! مجھے سخت افسوس ہے . کمبخت بڑے ہی ظالم تھے . آخر لڑکے نے کیا بگاڑا تھا ؟ روپیہ پیسہ لینے آئے تھے یا لڑکے کو مارنے ؟ منشی جی' سنا ہے کہ کچھ ڈاکوؤں کو پہچان بھی لیا ہے ."

منشی جی—" جی ہاں' پہچان تو ضرور لیا ہے' ڈاکو کون تھے ! رات دن اپنے پاس بیٹھنے اٹھنے والوں ہی میں سے تھے ! کس کو ڈاکو کہوں اور کسکو نہیں !"

" ڈاکوؤں کو پہچانا کس نے تھا ؟" دروغہ جی نے پھر سوال کیا .

" میرے لڑکے کی بہو نے !"

" لڑکا کہاں سو رہا تھا !"

" دروازہ سے گھستے ہی داھنے ھاتھ کے کمرے میں !"

" بہو کہاں تھی !"

" میرے کمرے میں ."

"ھیں...! یہ کیا...! پتی کہیں پتنی کہیں . کیا دونوں میں پٹتی نہیں؟" داروغہ جی نے ایک دم چونککر پوچھا .

دروغہ جی کی ان باتوں سے منشی جی کچھ گھبرا سے گئے. ان کی کچھ سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ یہ معاملہ کیا

"लेकिन सरकार! यह बात मेरे दिल में जम नहीं रही मेरा दिल न मालूम क्यों आपके इस काम से घबरा सा रहा है. गवाही नहीं देता! जहां तक डकैती का सम्बन्ध है हम सब आसानी से उसे पूरा कर सकते हैं.लेकिन मुंशी जी के लड़के को जान से मार डालना, यह बात कुछ अपने दिल में बैठ नहीं रही है..."

"राम बाबू, तू बूढ़ा होने को आया लेकिन तुझे इतनी अक़्ल नहीं आई कि कौन आदमी हमारा हितैशी है और कौन हमारा दुशमन. तुझे याद है उसी क़त्ल वाले केस में इस मुंशी के लड़के और खुद मुंशी ने हम लोगों को फंसाने की कितनी कोशिश की थी. वह तो दरोग़ा जी की निगाह अपनी ओर सीधी थी वर्ना इन लोगों ने तो कोई कसर बाक़ी नहीं रक्खी थी. इस इलाक़े में अब सिर्फ एक यही तो ऐसा आदमी रह गया है जो हमेशा मेरी निगाह में खटकता रहता है. गांव में आए दिन हमेशा कुछ न कुछ हम लोगों के गुट के खिलाफ लोगों को भड़काता रहता है. इसके अलावा मुझे आज कल गांव के अन्दर और गांव से बाहर के इलाके के भी आसार और ही नज़र आ रहे हैं. इस मुंशी ने इलाके के देहातों में घूमकर न मालूम क्या एक नया जोश लोगों में पैदा कर दिया है, सब लोग उसी के गीत गाते हैं. जबकि सब मेरी रिआया है. मेरी ही ज़मीन पर रहते हैं, मेरी ही दया पर निर्भर हैं. इसलिये आगे पीछे की सब बातों को ख्याल में रखकर राम बाबू हमें यह काम करना ही होगा. इसके अलावा दरोग़ा जी तो इस आदमी से बहुत सख्त नाराज़ हैं. हमें डरने की बात क्या है! एक तरफ से धन और दूसरी तरफ़ से जन; दोनों ही पहलू हमें अपनाने हैं. लड़के के दम पर ही तो यह फूंचा डोलता है. जब तक इसकी जड़ नहीं काटी जायगी. तब तक काम नहीं चल सकता.,,

× × ×

रात के अन्धेरे में फुस फुस हो रही थी. विचार यह था कि कोई नहीं सुन सकेगा, पत्ते भी नहीं. दम साधे नहीं सधता था. चौधरी साहब अकेले तसल्ली देते जाते थे, और बाक़ी हांप रहे थे, घबराये से थे.

राम बाबू ने अपने दिल को थामते हुए ज़मींदार साहब की बात का जवाब दिया—"हां सरकार! अपनी जान में तो हमने कोई कसर छोड़ी नहीं! हम तो बिलकुल मरा हुआ जानकर छोड़ आये हैं. पर सरकार! मुझे तो उनमें से किसी ने पहचान लिया है मेरा नाम एक औरत ने लिया था."

ज़मींदार साहब ने फिर पूछा — माल कहां है और कितना हाथ लगा है!"

राम बाबू ने कहा—"नक़द तो सिर्फ 500 ही है. बाकी का माल तो बाग़ में रक्खा है. कुछ गहने हैं और कुछ बर्तन."

"لیکن سرکار! یہ بات میرے دل میں جم نہیں رہی۔ میرا دل نہ معلوم کیوں آپ کے اس کام سے گھبرا سا رہا ہے۔ گواہی نہیں دیتا! جہاں تک ڈکیتی کا سمبندھ ہے ہم سب آسانی سے اسے پورا کرسکتے ہیں۔ لیکن منشی جی کے لڑکے کو جان سے مار ڈالنا' یہ بات کچھ اپنے دل میں بیٹھ نہیں رہی ہے......"

"رام بابو' تو بوڑھا ہونے کو آیا لیکن تجھے اتنی عقل نہیں آئی کہ کون آدمی ہمارا ہتیشی ہے اور کون ہمارا دشمن۔ تجھے یاد ہے اسی قتل والے کیس میں اس منشی کے لڑکے اور خود منشی نے ہم لوگوں کو پھنسانے کی کتنی کوشش کی تھی۔ وہ تو داروغہ جی کی نگاہ اپنی اور سیدھی تھی ورنہ ان لوگوں نے تو کوئی کسر باقی نہیں رکھی تھی۔ اس علاقہ میں اب صرف ایک یہی تو ایسا آدمی رہ گیا ہے جو ہمیشہ میری نگاہ میں کھٹکتا رہتا ہے۔ گاؤں میں آئے دن ہمیشہ کچھ نہ کچھ ہم لوگوں کے گٹ کے خلاف لوگوں کو بھڑکاتا رہتا ہے۔ اس کے علاوہ مجھے آجکل گاؤں کے اندر اور گاؤں سے باہر کے علاقے کے بھی آثار اور ہی نظر آ رہے ہیں۔ اس منشی نے علاقے کے دیہاتوں میں گھوم کر نہ معلوم کیا ایک نیا جوش لوگوں میں پیدا کر دیا ہے۔ سب لوگ اسی کے گیت گاتے ہیں جبکہ سب میری رعایا ہیں' میری ہی زمین پر رہتے ہیں' میری ہی دیا پر نربھر ہیں۔ اس لئے آگے پیچھے کی سب باتوں کو خیال میں رکھ کر رام بابو ہمیں یہ کام کرنا ہی ہوگا۔ اس کے علاوہ داروغہ جی تو اس آدمی سے بہت سخت ناراض ہیں۔ ہمیں ڈرنے کی بات کیا ہے! ایک طرف سے دھن اور دوسری طرف سے جن' دونوں ہی پہلو ہمیں اپنانے ہیں۔ لڑکے کے دم پر ہی تو یہ پھولا پھولتا ہے۔ جب تک اس کی جڑ نہیں کاٹی جائیگی تب تک کام نہیں چل سکتا۔"

× × ×

رات کے اندھیرے میں پھس پھس ہو رہی تھی۔ وچار یہ تھا کہ کوئی نہیں سن سکیگا' پتے بھی نہیں۔ دم سادھے نہیں سدھتا تھا۔ چودھری صاحب اکیلے تسلی دیتے جاتے تھے۔ اور باقی ہانپ رہے تھے' گھبرائے سے تھے۔

رام بابو نے اپنے دل کو تھامتے ہوئے زمیندار صاحب کی بات کا جواب دیا—"ہاں سرکار! اپنی جان میں تو ہم نے کوئی کسر چھوڑی نہیں! ہم تو بالکل مرا ہوا جانکر چھوڑ آئے ہیں۔ پر سرکار! مجھے تو ان میں سے کسی نے پہچان لیا ہے۔ میرا نام ایک عورت نے لیا تھا!"

زمیندار صاحب نے پھر پوچھا—"مال کہاں ہے اور کتنا ہاتھ لگا ہے!"

رام بابو نے کہا—نقد تو صرف 500 ہی ہے۔ باقی کا مال تو باغ میں رکھا ہے۔ کچھ گہنے ہیں اور کچھ برتن۔"

अब उससे और ज़ियादा चुप न रहा गया. बोल ही पड़ा—"इस चौधरी की हमेशा से यही आदत रही है. होगा कहीं. क्या जाने कहीं इससे भी लम्बा हाथ मारने चला गया हो. उन्हें क्या पड़ी है ! वह मौक़े पर थोड़े ही जाते हैं. मौक़े पर तो हमें जाना होता है न. वह तो बस माल का हिस्सा लेने को तैयार रहते हैं. वक़्त की उन्हें क्या चिन्ता ? पिटेंगे तो हम, पकड़े जायंगे तो हम. उन्हें क्या !"

माफ़ करना भई मुझे बहुत देर हो गई. यकायक सामने आ कर चौधरी रामपाल सिंह ने कहा.

"अरे साहब ! आपकी राह देखते देखते तो आंखें पथरा गईं. बहुत देर कर दी सरकार ! आख़िर कहां रह गए थे. सो गए थे या कहीं और दूसरी जगह चले गए थे."

"मोहन ! तू तो अब बड़ा बातूनी हो गया है ! चौधरी साहब ने कुछ टेढ़ी निगाह करते हुए मोहन की तरफ़ देखा. मानो उनकी आंखों का टेढ़ापन मोहन से कह रहा हो कि मैं कहीं भी गया था तू मुझसे पूछने वाला कौन होता है.

"भई ! अब ज़ियादा बात करने का मौक़ा नहीं है. जल्दी करो, टाइम सब निकला जा रहा है. राम बाबू तूने सब समझ लिया न ?"

"हां, सरकार ! समझ तो सब लिया है."

"धोका मत खा जाना."

"नहीं हुज़ूर ! लेकिन सरकार......"

राम बाबू ने बड़ी व्यग्रता के साथ कहा—"मैंने आपकी सब बातें इन सब को बता दी हैं. लेकिन यह लोग कुछ कच्चे पड़ रहे हैं"

ज़मींदार साहब बोले—"अरे राम बाबू ! तुझे मेरे साथ रहते हुए इतने दिन हो गए और मैंने तुझसे न मालूम इस काम से कितने बड़े बड़े और काम कराए हैं और तूने ख़ुद किये हैं. क्या तू इतनी जल्दी भूल गया ! अभी तो कल ही की तो बात है जब तूने मनोहर के लड़के का क़त्ल किया था. याद है न ! तेरा उसमें क्या हुआ ! जब तक मेरे दम में दम है मैं तेरा और तेरे इन साथियों का बाल बांका नहीं होने दूंगा. लेकिन तू तो सब जानता है तुझे यह भी मालूम है कि पिछले केस में अपने हाथ कुछ नहीं लगा. जो कुछ हिस्से में आया वह सब दरोग़ा जी की भेंट हो गया."

"हां, सरकार ! आपके बल का तो हमें पूरा पूरा भरोसा है. अगर आपका भरोसा न हो हमारी क्या हस्ती है जो इस तरह से बाहर रह कर उछल कूद करें."

اب اُس سے اور زیادہ چپ نہ رہا گیا. بول ہی پڑا—"اِس چودھری کی ہمیشہ سے یہی عادت رہی ہے . ہوگا کہیں. کیا جانے کہیں اِس سے بھی لمبا ہاتھ مارنے چلا گیا ہو . اُنہیں کیا پڑی ہے ! وہ موقع پر تھوڑے ہی جاتے ہیں. موقع پر تو ہمیں جانا ہوتا ہے نہ . وہ تو بس مال کا حصہ لینے کو تیار رہتے ہیں . وقت کی اُنہیں کیا چنتا ؟ پٹینگے تو ہم، پکڑے جائینگے تو ہم. اُنہیں کیا!"

"معاف کرنا بھئی مجھے بہت دیر ہوگئی" یکایک سامنے آکر چودھری رام پال سنگھ نے کہا .

"ارے صاحب ! آپ کی راہ دیکھتے دیکھتے تو آنکھیں پتھرا گئیں. بہت دیر کر دی سرکار ! آخر کہاں رہ گئے تھے. سوگئے تھے یا کہیں اور دوسری جگہ چلے گئے تھے ."

"موہن ! تو تو اب بڑا باتونی ہوگیا ہے !" چودھری صاحب نے کچھ ٹیڑھی نگاہ کرتے ہوئے موہن کی طرف دیکھا. مانو اُن کی آنکھوں کا ٹیڑھاپن موہن سے کہہ رہا ہو کہ میں کہیں بھی گیا تھا تو مجھ سے پوچھنے والا کون ہوتا ہے.

"بھئی ! اب زیادہ بات کرنے کا موقع نہیں ہے. جلدی کرو' ٹائم سب نکلا جا رہا ہے . رام بابو تو نے سب سمجھ لیا نہ ؟"

"ہاں' سرکار ! سمجھ تو سب لیا ہے ."

"دھوکہ مت کھا جانا ."

"نہیں حضور ! لیکن سرکار......"

رام بابو نے بڑی ویگرتا کے ساتھ کہا—"میں نے آپ کی سب باتیں اِن سب کو بتادی ہیں . لیکن یہ لوگ کچھ کچے پڑ رہے ہیں ."

زمیندار صاحب بولے—"ارے رام بابو ! تجھے میرے ساتھ رہتے ہوئے اِتنے دن ہوگئے اور میں نے تجھ سے نہ معلوم اِس کام سے کتنے بڑے بڑے اور کام کرائے ہیں اور تو نے خود کئے ہیں. کیا تو اِتنی جلدی بھول گیا ! ابھی کل ہی کی تو بات ہے جب تونے منوہر کے لڑکے کا قتل کیا تھا . یاد ہے نہ ! تیرا اُس میں کیا ہوا ! جب تک میرے دم میں دم ہے میں تیرا اور تیرے اِن ساتھیوں کا بال بانکا نہیں ہونے دونگا. لیکن تو تو سب جانتا ہے . تجھے یہ بھی معلوم ہے کہ پچھلے کیس میں اپنے ہاتھ کچھ نہیں لگا. جو کچھ حصے میں آیا وہ سب داروغہ جی کی بھینٹ ہوگیا ."

"ہاں' سرکار ! آپ کے بل کا تو ہمیں پورا پورا بھروسہ ہے ہی. اگر آپ کا بھروسہ نہ ہوتا تو ہماری ہستی کیا ہے جو اِس طرح سے باہر رہ کر اُچھل کود کریں ."

मुंशी जी की डकैती

भाई भाई को आपस में लड़ा देना, पड़ौसी पड़ौसी को एक दूसरे के खिलाफ़ भिड़ा देना, बाप बेटे में मन मुटाव पैदा करा देना, गांव की मुक़दमे बाज़ियों में अपना हर तरह से दख़ल रखना, जुआरियों, शराबियों, और गांव के दूसरे ख़राब आदमियों की तरफ़दारी करना, यही व्योपार अब चौधरी रामपाल सिंह ने अपना लिया था. उन्हें अपने इसी हुनर का भरोसा था. न कोई चिन्ता, न कोई दिक़्क़त न कोई मशक़्क़त ! घर बैठे बिठाए उनके हिस्से का रुपया आ जाता था. सिर्फ़ दरोग़ा जी के पास आने जाने की तकलीफ़ ज़रूर होती थी.

चौधरी साहब ने राम बाबू को बुला कर आज ही एक लम्बा चौड़ा हाथ मारने की स्कीम बताई थी. राम बाबू को हर तरह से समझा बुझा कर सब मामला तय कर लिया. वायदा हो गया कि रात को 11 बजे बाग़ में मिलेंगे.

राम बाबू—"बहुत अच्छा सरकार !" कह कर चला गया.

रात के बारह बज चुके थे. राम बाबू और उसके साथी बड़ी बेसबरी से चौधरी रामपाल सिंह का इंतज़ार कर रहे थे.

शराब के नशे में धुत मोहन बोला—"यार, राम बाबू तू भी ख़ूब है. ख़ूब चकमा दिया. मानते हैं दोस्त तेरी इस अक़्ल को जो काम करने का मौक़ा है वह सब चौधरी साहब के इन्तज़ार में निकला जा रहा है. फिर वहां जाके क्या मुंह दिखाओगे ?"

"नहीं यार ! घबरा क्यों रहा है, उन्होंने मुझसे आने का पक्का वायदा किया था. चौधरी साहब टलने वाले आसामी नहीं हैं. टाइम तो यार अभी बहुत है. आते ही होंगे." राम बाबू ने कहा.

मोहन मन ही मन में कुढ़ रहा था. उसका चेहरा गुस्से से लाल पीला हो रहा था. मन ही मन सोच रहा था—"अच्छा लम्बा हाथ मारने आए. न इधर के रहे न उधर के. अब तक तो कहीं छोटा सा ही हाथ मार कर अपने घर पैर पसारे सोते होते. कितनी देर हो गई यहां बैठे बैठे !"

منشی جی کی ڈکیتی

بھائی بھائی کو آپس میں لڑا دینا، پڑوسی پڑوسی کو ایک دوسرے کے خلاف بھڑا دینا، باپ بیٹے میں من مٹاؤ پیدا کرا دینا، گاؤں کی مقدمہ بازیوں میں اپنا ہر طرح سے دخل رکھنا، جواریوں، شرابیوں اور گاؤں کے دوسرے خراب آدمیوں کی طرفداری کرنا، یہی بیوپار اب چودھری رام پال سنگھ نے اپنا لیا تھا۔ انہیں اپنے اسی ہنر کا بھروسہ تھا۔ نہ کوئی چنتا، نہ کوئی دقت نہ کوئی مشقت! گھر بیٹھے بٹھائے ان کے حصہ کا روپیہ آجاتا تھا۔ صرف داروغہ جی کے پاس آنے جانے کی تکلیف ضرور ہوتی تھی۔

چودھری صاحب نے رام بابو کو بلاکر آج ہی ایک لمبا چوڑا ہاتھ مارنے کی اسکیم بتائی تھی۔ رام بابو کو ہر طرح سے سمجھا بجھاکر سب معاملہ طے کرلیا۔ وعدہ ہوگیا کہ رات کو 11 بجے باغ میں ملیں گے۔

رام بابو—"بہت اچھا سرکار!" کہہ کر چلا گیا۔

رات کے بارہ بج چکے تھے۔ رام بابو اور اس کے ساتھی بڑی بےصبری سے چودھری رام پال سنگھ کا انتظار کر رہے تھے۔

شراب کے نشے میں دھت موہن بولا—"یار، رام بابو تو بھی خوب ہے۔ خوب چکمہ دیا۔ مانتے ہیں دوست تیری اس عقل کو! جو کام کرنے کا موقع ہے وہ سب چودھری صاحب کے انتظار میں نکلا جا رہا ہے۔ پھر وہاں جاکے کیا منہ دکھاؤگے؟"

"نہیں یار! گھبرا کیوں رہا ہے، انہوں نے مجھ سے آنے کا پکا وعدہ کیا تھا۔ چودھری صاحب ٹلنے والے آسامی نہیں ہیں۔ ٹائم تو یار ابھی بہت ہے۔ آتے ہی ہوں گے۔" رام بابو نے کہا۔

موہن من ہی من میں کڑھ رہا تھا۔ اس کا چہرہ غصے سے لال پیلا ہو رہا تھا۔ من ہی من سوچ رہا تھا—"اچھا لمبا ہاتھ مارنے آئے۔ نہ اِدھر کے رہے نہ اُدھر کے۔ اب تک تو کہیں چھوٹا سا ہی ہاتھ مار کر پھر پسارے سوتے ہوتے۔ کتنی دیر ہوگئی یہاں بیٹھے بیٹھے!"

मैं एक सवाल पूछ कर उसको
खबरदार कर देना चाहता हूं
क्या ग़रीबों का खून भी तुम्हारी
तरह लाल नहीं है ?
क्या तुम उनका भूका रहना बर्दाश्त
कर सकते हो ?
तुम सिर्फ़ अपनी ही फ़िकर करते हो
दूसरों से तुम्हें कोई मतलब नहीं
क्या तुम एक हज़ार साल तक इसी तरह
अपनी क़िसमत पर मुसकराते रहोगे ?

जनता की भलाई चाहने वाला यह कवि बादशाह और दूसरे सलाहकारों और दरबारियों की नज़रों में खटकने लगा. उसको बदनाम किया गया. आखिर में अपने सरकारी ओहदे से उसको हाथ धोना पड़ा. अब उसके दोस्त भी उससे कन्नी काटने लगे. वह अब पो की परछाइ से भी घबराते थे. बाद को वह हुंग चाव के कोतवाल हो गए. यह जगह चे कियांग सूबे में है.

पो चू ई ने 3840 कविताएं और 174 व्यंग लिखे.

"चिन क्यांग से क्यांग सी तक" की किताब में पो ने अपने एक दोस्त को लिखा :

"मैंने अपने इस सफ़र में क़रीब 3,000 मील का दौरा किया. मैं ने आम तौर पर अपनी कविताएं गांव के स्कूलों, होटलों, बुद्ध के मंदिरों और नावों के केबिनों पर लिखी देखीं. इसके अलावा साधुओं, पढ़े लिखे लोगों, बेपढ़ी औरतों और जवान लड़कियों को भी मैंने अपनी कविताएं गाते सुना."

पो चू ई एक महान कवि, फ़िलासफ़र और ऊंचे दरजे के राजकाजी हस्ती थे वह सच्चे मानो में जनता के लिये जिये और जनता के लिये मरे.

आज से कुछ बरस पहले बहुत कम लोग पो के नाम से वाक़िफ़ थे. लेकिन जब चीन में जनता की सरकार बनी तो वहां के पुराने शायरों और कवियों को खोज निकाला गया. इस बारे में चीन की सरकार और भी खोजें कर रही है. पो की कविताएं और व्यंग अब सिर्फ़ चीन, जापान और कोरिया में ही मशहूर नहीं हो रहे हैं बल्कि दूसरे मुल्क भी पो की कविताओं में एक नया सन्देश पाते हैं.

—राजेश सरन

میں ایک سوال پوچھ کر اُس کو
خبردار کردینا چاہتا ہوں
کیا غریبوں کا خون بھی تمہاری
طرح لال نہیں ہے ؟
کیا تم اُن کا بھوکا رہنا برداشت
کرسکتے ہو ؟
تم صرف اپنی ہی فکر کرتے ہو
دوسروں سے تمہیں کوئی مطلب نہیں
کیا تم ایک ہزار سال تک اِسی طرح
اپنی قسمت پر مسکراتے رہوگے ؟

جنتا کی بھلائی چاہنے والا یہ کوی بادشاہ اور دوسرے صلاحکاروں اور درباریوں کی نظروں میں کھٹکنے لگا ۔ اُس کو بدنام کیا گیا۔ آخر میں اپنے سرکاری عہدے سے اُس کو ہاتھ دھونا پڑا ۔ اب اُس کے دوست بھی اُس سے کنّی کاٹنے لگے ۔ وہ اب پو کی پرچھائیں سے بھی گھبراتے تھے ۔ بعد کو وہ ہنگ چاؤ کے کوتوال ہوگئے۔ یہ جگہ چے کیانگ صوبے میں ہے ۔

پو چو ای نے 3,840 کویتائیں اور 174 ویَنگ لکھے۔

"چِن کیانگ سے کیانگسی تک" کی کتاب میں پو نے اپنے ایک دوست کو لکھا :

میں نے اپنے اِس سفر میں قریب 3,000 میل کا دورہ کیا ۔ میں نے عام طور پر اپنی کویتائیں گاؤں کے اِسکولوں ہوٹلوں، بدھ کے مندروں اور ناؤں کی کیبنوں پر لکھی دیکھیں ۔ اِس کے علاوہ سادھوؤں، پڑھے لکھے لوگوں، بےپڑھی عورتوں اور جوان لڑکیوں کو بھی میں نے اپنی کویتائیں گاتے سنا ۔

پو چو ای ایک مہان کوی، فلاسفر اور اُونچے درجے کے راجکاجی ہستی تھے۔ وہ سچے معنوں میں جنتا کے لئے جئے اور جنتا کے لئے مرے ۔

آج سے کچھ برس پہلے بہت کم لوگ پو چو ای کے نام سے واقف تھے۔ لیکن جب چین میں جنتا کی سرکار بنی تو وہاں کے پرانے شاعروں اور کویوں کو کھوج نکالا گیا ۔ اِس بارے میں چین کی سرکار اور بھی کھوجیں کر رہی ہے ۔ پو کی کویتاؤں اور ویَنگ اب صرف چین، جاپان اور کوریا میں ہی مشہور نہیں ہو رہے ہیں بلکہ دوسرے ملک بھی پو کی کویتاؤں میں ایک نیا سندیش پاتے ہیں ۔

—راجیش سرن

कर किस तरह अपना हाथ तोड़ लिया. अपनी एक दूसरी कविता 'तू लिन का बूढ़ा किसान.' में ग़रीबों का बयान करते हुए वह लिखता है:

तीसरे महीने बारिश की आशा थी,
लेकिन आशा निराशा में बदल गई
एक ख़ुश्क हवा चल पड़ी
मेरे गेहूं के अंकुर अभी फूटे भी न थे
वह पीले पड़ गए और मुरझा गए
यकायक पतझड़ ऋतु में बहुत ठंड
पड़ने लगी
मेरे चावल के खेत जो अभी हरे
और अध पके थे
हाकिम आया, मुझको कुछ
ख़बर न दी
टैक्स फ़ौरन मांगे गए
उनकी जबरन वसूली की गई
अपनी तरक़्क़ी और ख़िताब की सिर्फ़
उसको परवाह थी
टैक्सों के अदा करने लिये
मैंने शहतूत के पेड़ और ज़मीन गिरवी रख दी
अब अगली फ़सल तक खाने को अनाज
तन ढकने को कपड़ा कहां से आएगा
ओ अफ़सर, तू ने मेरे तन से मेरा कपड़ा भी
छीन लिया
तू ने मेरे मुंह से मेरे दो कौर भी छीन लिये......

फ़ू अपनी एक दूसरी कविता में रोंगटे खड़े कर देता है. कविता का नाम है—"एक बड़े आलीशान मकान पर."

यह बड़ा आलीशान मकान किसके क़ब्ज़े में है.
इसकी सुन्दर खिड़कियां चौड़ी सड़क की
तरफ़ खुलती हैं
छै या सात बड़े बड़े कमरे एक दूसरे से सटे हैं
कमरों की छतों में चमकती दमकती
हरी ईंटें लगी हैं
एक एक कमरे की क़ीमत
एक एक लाख रुपया होगी
इसका मालिक क़रीब दस साल से
यहां रहता है
वह एक सरकारी ऊंचा अफ़सर भी है
उसका खाने का भंडार क़ीमती मांस से
भरा पड़ा है
उसकी तिजोरी सिक्कों से भरी पड़ी है.

بوجھ کر کس طرح اپنا ہاتھ توڑ لیا۔ اپنی ایک دوسری کویتا 'تو لن کا بوڑھا کسان' میں غریبوں کا دکھ بیان کرتے ہوئے وہ لکھتا ہے:

تیسرے مہینے بارش کی آشا تھی
لیکن آشا نراشا میں بدل گئی
ایک خشک ہوا چل پڑی
میرے گیہوں کے انکرے ابھی پھوٹے بھی نہ تھے
وہ پیلے پڑ گئے اور مرجھا گئے
یکایک پت جھڑ رتو میں بہت ٹھنڈ پڑنے لگی
میرے چاول کے کھیت جو ابھی ہرے اور ادھ پکے تھے
حاکم آیا، مجھکو کچھ خبر نہ دی
ٹیکس فوراً مانگے گئے
اُن کی جبرن وصولی کی گئی
اپنی ترقی اور خطاب کی صرف اُس کو پرواہ تھی
ٹیکسوں کے ادا کرنے کے لئے
میں نے شہتوت کے پیڑ اور زمین گروی رکھ دی
اب اگلی فصل تک کھانے کو اناج
تن ڈھکنے کو کپڑا کہاں سے آئیگا؟
او افسر، تونے میرے تن سے میرا کپڑا بھی چھین لیا
تونے میرے منہ سے میرے دو کور بھی چھین
لئے.........

فو اپنی ایک دوسری کویتا میں رونگٹے کھڑے کر دیتا ہے۔ کویتا کا نام ہے—"ایک بڑے عالیشان مکان پر۔"

یہ بڑا عالیشان مکان کس کے قبضہ میں ہے۔
اس کی سندر کھڑکیاں چوڑی سڑک کی طرف
کھلتی ہیں
چھ یا سات بڑے بڑے کمرے ایک دوسرے سے سٹے
ہیں
کمروں کی چھتوں میں چمکتی دمکتی
ہری اینٹیں لگی ہیں
ایک ایک کمرے کی قیمت
ایک ایک لاکھ روپیہ ہوگی
اس کا مالک قریب دس سال سے یہاں رہتا ہے
وہ ایک سرکاری اونچا افسر بھی ہے
اُس کے کھانے کا بھنڈار قیمتی مانس سے
بھرا پڑا ہے۔
اُس کی تجوری سکوں سے بھری پڑی ہے

ऊपर की कविता एक अनोखा समां पेश करती है. दिल में एक सिहरन पैदा कर देती है. कविता का एक एक शब्द दिल की गहराई को छूता चला जाता है. पो की एक और कविता सुनिये. इस कविता का नाम है 'जड़ी बूटी जमा करने वाला.'

तमाम दिन मैं खेतों में इधर उधर घूमता रहा
अब मैं जड़ी बूटी की खोज करूंगा
सूरज निकलने से पहले हंसिया ले मैं निकला पड़ता
हूं, ढूंढता......
लेकिन जब शाम को सूरज छिपने के बाद
मैं घर खाली टोकरी लिये लौटता हूं......
मैं अपनी जड़ी बूटियां बड़ी बड़ी कोठियों के
मालिकों के पास ले जाता हूं,
जिनके गालों में गढ़े पड़े हैं,
उनके घोड़ों को मजबूत और तेज रफ़्तार
बनाने के लिये
मैं अपनी जड़ी बेच देता हूं घोड़े के रूखे सूखे
चारे के बदले में,
किस लिये, अपनी भूक मिटाने के लिये......

पाठकों को मालूम होगा कि कितना दर्द भरा है इस कविता में. आंखों में आंसू आ जाते हैं. अन्दर से आवाज आती है कि भगवान करें कि वह तिजोरियों में रुपया बन्द कर के रखने वाले सेठ वह भी ज़रा ग़रीबों के दुःख को जानें.

37 साल की उमर में पो चू ई को बादशाह का खास सलाहकार मुक़र्रर किया गया. उसने बादशाह को सलाह दी कि ग़रीबों की पुकार सुनें. अपने दूसरे झूटे सलाहकारों के फन्दे में न फंसें. इसके अलावा जनता की भलाई के वास्ते पो ने बहुत सी बातें बादशाह को बताई. बादशाह के अलावा दूसरे सलाहकारों और मशीरों को भी उनका फ़र्ज़ बताया. उनको हर चन्द और बार बार समझाया कि उनका भला ग़रीबों की भलाई में है. 38 साल की उमर में उसने एक किताब लिखी. उसका नाम 'नये गीत' रखा. किताब की भूमिका में पो ने लिखा :

"......मेरी ज़बान सीधी सादी है. मामूली समझ का आदमी उसको आसानी से समझ सकता है. मैं सच बात कहता हूं. मेरी शैली बहुत आसान है और हर तरह के गानों में अपनाई जा सकती है. मेरी कविता सिर्फ़ जनता के लिये है. मैं जनता के लिये ही लिखता हूं. मैं कविता कविता के लिये ही नहीं करता."

दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई के बाद उसका एक व्यंग बहुत मशहूर हुआ. वह था—'एक बूढ़ा आदमी और उसका टूटा हुआ हाथ'. इसमें दिखाया गया है कि किस तरह एक बूढ़े आदमी ने ज़बरदस्ती फ़ौज में भरती किये जाने पर जान

اوپر کی کویتا ایک انوکھا سماں پیش کرتی ہے۔
دل میں ایک سہرن پیدا کر دیتی ہے۔ کویتا کا ایک
ایک شبد دل کی گہرائی کو چھوتا چلا جاتا ہے۔ پو کی ایک
اور کویتا سنئے۔ اس کویتا کا نام ہے۔ ' جڑی بوٹی جمع
کرنے والا۔'

تمام دن میں کھیتوں میں اِدھر اُدھر گھومتا رہا
اب میں جڑی بوٹی کی کھوج کرونگا
سورج نکلنے سے پہلے ہنسیا لے میں
نکل پڑتا ہوں، ڈھونڈھتا.........
لیکن جب شام کو سورج چھپنے کے بعد
میں گھر خالی ٹوکری لئے لوٹتا ہوں.......
میں اپنی جڑی بوٹیاں بڑی بڑی کوٹھیوں کے
مالکوں کے پاس لے جاتا ہوں
جن کے گالوں میں گڈھے پڑے ہیں،
اُن کے گھوڑوں کو مضبوط اور تیز رفتار بنانے کے لئے
میں اپنی جڑی بوٹی دیتا ہوں گھوڑے کے روکھے سوکھے
چارے کے بدلے میں،
کس لئے، اپنی بھوک مٹانے کے لئے.........

پاٹھکوں کو معلوم ہوگا کہ کتنا درد بھرا ہے اِس کویتا
میں۔ آنکھوں میں آنسو آجاتے ہیں۔ اندر سے آواز آتی
ہے کہ بھگوان کرے کہ یہ تجوریوں میں روپیہ بند کرکے
رکھنے والے سیٹھ، یہ بھی ذرا غریبوں کے دکھ کو جانیں۔

37 سال کی عمر میں پو چو ای کو بادشاہ کا خاص صلاح‌کار
مقرر کیا گیا۔ اُس نے بادشاہ کو صلاح دی کہ غریبوں کی
پکار سنے۔ اپنے دوسرے جھوٹے صلاح‌کاروں کے پھندے میں
نہ پھنسے۔ اِس کے علاوہ جنتا کی بھلائی کے واسطے پو نے
بہت سی باتیں بادشاہ کو بتائیں۔ بادشاہ کے علاوہ دوسرے
صلاح‌کاروں اور مشیروں کو بھی اُن کا فرض بتایا۔ اُن کو
ہرچند اور بار بار سمجھایا کہ اُن کا بھلا غریبوں کی
بھلائی میں ہے۔ 38 سال کی عمر میں اس نے ایک کتاب
لکھی۔ اُس کا نام 'نئے گیت' رکھا۔ کتاب کی بھومکا میں
پو نے لکھا :

"......میری زبان سیدھی سادی ہے۔ معمولی سمجھ
کا آدمی اسکو آسانی سے سمجھ سکتا ہے۔ میں سچ بات
کہتا ہوں۔ میری شیلی بہت آسان ہے اور ہر طرح کے
گانوں میں اپنائی جاسکتی ہے۔ میری کویتا صرف جنتا
کے لئے ہے۔ میں جنتا کے لئے ہی لکھتا ہوں۔ میں کویتا
کویتا کے لئے ہی نہیں کرتا۔"

دنیا کی پہلی بڑی لڑائی کے بعد اُس کا ایک ویَنگ
بہت مشہور ہوا۔ وہ تھا—'ایک بوڑھا آدمی اور اُس کا
ٹوٹا ہوا ہاتھ'۔ اِس میں دکھایا گیا ہے کہ کس طرح ایک
بوڑھے آدمی نے زبردستی فوج میں بھرتی کئے جانے پر جان

जमा कर के रखा जाय. इन सब बातों के देखते हुए हो ने कोशिश की कि समाजी कमजोरियां और राजकाजी खराबियां बिलकुल खतम हो जायें या कुछ कम हो जायें.

हो ने अपनी कविता 'भारी टैक्स' में लिखा है :

लुटेरा अफसर शुरू से ही बुरी आदतें अपनाता है
वह मुझसे क़ीमती धन अपने से ऊंचे हाकिम को खुश करने के लिये लेता है
वह हर मौसम—जाड़ा, बहार, बरसात—में कुछ न कुछ मांगता ही रहता है
मैं टैक्स जमा करने वाले को देने पर मजबूर हूं
मैं इस काम में एक पल की भी देर नहीं कर सकता
ओ बुरे हाकिम,
तू ने मेरी पीठ की गरमी को भी छीन लिया है
अपने लिये, अपने को ऊंचा उठाने के लिये...

ऊपर की कविता का हमने अंगरेजी से अनुवाद करने की कोशिश की है. हम पूरे कामयाब न हो सके लेकिन फिर भी जनता से—ग़रीब लोगों, किसानों, मजदूरों—किस तरह टैक्स वसूल किया जाता था साफ़ साफ़ सामने आ जाता है. यह भी साफ़ हो जाता है कि बड़े बड़े हाकिम किस तरह अपने निजी हित के लिये लोगों को तकलीफ़ पहुंचाते थे.

अगली कविता में किसान के दुख भरे जीवन पर रोशनी डाली गई है :

कड़कड़ाती गर्म ज़मीन ने किसानों के नंगे पैरों को झुलस दिया है
सूरज की जलती किरनों ने किसानों की पीठ पर गहरे निशान बना दिये हैं
सुबह से शाम तक काम में घिरे रहने के कारन किसान गरमी की चिन्ता नहीं करता
वह अपने काम में मशग़ूल, दिन की रोशनी का सद उपयोग करता है
किसान के बराबर एक औरत नहीं के बराबर कपड़े पहने खड़ी है
एक छोटा बच्चा उसकी छाती से चिपटा हुआ है
वह अपने सीधे हाथ से बचे खुचे अनाज को जमा कर रही है
उसके बाएं हाथ में एक टूटी टोकरी लटकी हुई है
"हम जो कुछ काटेंगे वह टैक्सों में चला जायगा" वह कह रही है
हम बचे खुचे अनाज को अपनी भूख मिटाने के लिये बटोर रहे हैं......

جمع کر کے رکھا جائے. ان سب باتوں کو دیکھتے ہوئے ہو نے کوشش کی کہ سماجی کمزوریاں اور راج کاجی خرابیاں بالکل ختم ہو جائیں یا کچھ کم ہو جائیں.

ہو نے اپنی کویتا 'بھاری ٹیکس' میں لکھا ہے :

لٹیرا افسر شروع سے ہی بری عادتیں اپناتا ہے
وہ مجھ سے قیمتی دھن اپنے سے اونچے حاکم کو خوش کرنے کے لئے لیتا ہے
وہ ہر موسم—جاڑا، بہار، برسات—میں نہ کچھ مانگتا ہی رہتا ہے
میں ٹیکس جمع کرنے والے کو دینے پر مجبور ہوں
میں اس کام میں ایک پل کی بھی دیر نہیں کر سکتا
او برے حاکم،
تو نے میری پیٹھ کی گرمی کو بھی چھین لیا ہے
اپنے لئے، اپنے کو اونچا اٹھانے کے لئے......

اوپر کی کویتا کا ہم نے انگریزی سے انوواد کرنے کی کوشش کی ہے. ہم پورے کامیاب نہ ہو سکے لیکن پھر بھی جنتا سے—غریب لوگوں، کسانوں، مزدوروں—کس طرح ٹیکس وصول کیا جاتا تھا صاف صاف سامنے آ جاتا ہے. یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ بڑے بڑے حاکم کس طرح اپنے نجی ہت کے لئے لوگوں کو تکلیف پہونچاتے تھے.

اگلی کویتا میں کسان کے دکھ بھرے جیون پر روشنی ڈالی گئی ہے :

کڑکڑاتی گرم زمین نے کسانوں کے ننگے پیروں کو جھلس دیا ہے
سورج کی جلتی کرنوں نے کسانوں کی پیٹھ پر گہرے نشان بنا دیئے ہیں
صبح سے شام تک کام میں گھرے رہنے کے کارن
کسان گرمی کی چنتا نہیں کرتا
وہ اپنے کام میں مشغول، دن کی روشنی کا سد اپیوگ کرتا ہے
کسان کے برابر ایک عورت نہیں کے برابر کپڑے پہنے کھڑی ہے
ایک چھوٹا بچہ اسکی چھاتی سے چپٹا ہوا ہے
وہ اپنے سیدھے ہاتھ سے بچے کچھے اناج کو جمع کر رہی ہے
اس کے بائیں ہاتھ میں ایک ٹوٹی ٹوکری لٹکی ہوئی ہے
"ہم جو کچھ کاٹیں گے وہ ٹیکسوں میں چلا جائے گا" وہ کہہ رہی ہے
ہم بچے کچھے اناج کو اپنی بھوک مٹانے کے لئے بٹور رہے ہیں......

सरकारी नौकर की हैसियत से उन्होंने अपना काम बहुत अच्छी तरह अनजाम दिया. नौकर होते ही पो ने एक ख़त अपने दोस्त को लिखा : "जब मैं लोगों से मिलता जुलता या बातें करता हूं तो सदा सब तरह की बातें करता हूं. मैं इस बात को महसूस करता हूं कि साहित्य को वक़्त की पुकार सुनना चाहिये और कविता में जनता का सच्चा जीवन साफ़ साफ़ झलकना चाहिये."

पो को सरकारी कामों में काफ़ी महारत थी लेकिन वह दरबारी न थे. वह इतने सच्चे और नेक दिल आत्मा थे कि दूसरे हाकिमों को उनकी बातों पर यक़ीन ही नहीं आता था. उनकी कविताओं में छोटे और बड़े सबकी ख़राबियां और कमज़ोरियां साफ़ साफ़ पता चलती हैं. उन्होंने अपनी मशहूर कविता 'कविता जमा करने वाला' में अपने बादशाह को हिदायत की कि पुराने काल के बादशाहों ने जनता के सुखों और दुखों को कविता के द्वारा ही समझा बूझा. इसलिये आपको भी कला के वास्ते एक अलग महकमा खोल देना चाहिये. पो ने लिखा

बड़े बड़े अफ़सर भ्रष्टाचारी हैं
ग़रीबों को सताते और उनका ख़ून चूसते हैं
अफ़सरों से बढ़ कर राज के मिनिस्टर हैं
जो हमेशा अपने बादशाह को धोका देते हैं.

पो की कविताओं में ख़ास बात यह थी कि वह हमेशा 'जनता को जगाने' की फ़िकर में रहते थे. कुछ लोग उनकी कविताओं को पढ़ कर या सुन कर खिल्ली उड़ाया करते थे. कुछ लोग समझते थे कि उनका दिमाग़ ख़राब हो गया है. लेकिन वह अपनी धुन के पक्के थे. वह बग़ैर किसी डर और हिचकिचाहट के कविता करते रहे. उन्होंने लोगों की खिल्ली उड़ाने या मज़ाक़ का कभी बुरा नहीं माना. वह तो सदा यही कहा करते थे कि एक दिन आएगा जब यही लोग मेरी कविता को क़द्र की निगाह से देखेंगे. और अन्त में हुआ भी यही.

शुरू शुरू में उन्होंने अपने एक दोस्त को लिखा : "मुझे इस बात की फ़िकर नहीं है कि चन्द लोग मेरी कविता के बारे में क्या राय क़ायम करते हैं. मैं जो कुछ भी लिखता हूं वह आम और जनता की भाषा में लिखता हूं. तुम ही मेरे एक प्यारे दोस्त हो जो मेरे व्यंगों को समझते और पसन्द करते हो."

राजकाजी ग़लतियां और समाजी कमज़ोरियां पो के दिलों में ज़ोर मार रही थीं. घरेलू झगड़ों और भारी भारी टैक्सों के कारन लोग तंग आ गए थे. बड़े बड़े टैक्स सिर्फ़ जनता से ही वसूल किये जाते थे. इन अमीर लोगों को ग़रीब जनता की कुछ भी परवाह नहीं थी. वह तो सदा इसी फ़िकर में रहते थे कि किस तरह तिजोरियों में सोना चांदी

سرکاری نوکر کی حیثیت سے اُنھوں نے اپنا کام بہت اچھی طرح انجام دیا ۔ نوکر ہوتے ہی پو نے ایک خط اپنے دوست کو لکھا : " جب میں لوگوں سے ملتا جلتا یا باتیں کرتا ہوں تو سدا سب طرح کی باتیں کرتا ہوں ۔ میں اِس بات کو محسوس کرتا ہوں کہ ساہتیہ کو وقت کی پکار سننا چاہئے اور کویتا میں جنتا کا سچا جیون صاف صاف جھلکنا چاہئے ۔"

پو کو سرکاری کاموں میں کافی مہارت تھی لیکن وہ درباری نہ تھے ۔ وہ اتنے سچے اور نیک دل آتما تھے کہ دوسرے حاکموں کو اُن کی باتوں پر یقین ہی نہیں آتا تھا ۔ اُن کی کویتاؤں میں چھوٹے اور بڑے سب کی خرابیاں اور کمزوریاں صاف صاف پتہ چلتی ہیں ۔ اُنھوں نے اپنی مشہور کویتا ' کویتا جمع کرنے والا ' میں اپنے بادشاہ کو ہدایت کی کہ پرانے کال کے بادشاہوں نے جنتا کے سکھوں اور دکھوں کو کویتا کے دوارا ہی سمجھا بوجھا ۔ اس لئے آپ کو بھی کلا کے واسطے ایک الگ محکمہ کھول دینا چاہئے ۔ پو نے لکھا :

بڑے بڑے افسر بھرشٹاچاری ہیں
غریبوں کو ستاتے اور اُن کا خون چوستے ہیں
افسروں سے بڑھکر راج کے منسٹر ہیں
جو ہمیشہ اپنے بادشاہ کو دھوکہ دیتے ہیں ۔

پو کی کویتاؤں میں خاص بات یہ تھی کہ وہ ہمیشہ ' جنتا کو جگانے ' کی فکر میں رہتے تھے ۔ کچھ لوگ اُن کی کویتاؤں کو پڑھکر یا سن کر کھلی اڑایا کرتے تھے ۔ کچھ لوگ سمجھتے تھے کہ اُن کا دماغ خراب ہوگیا ہے ۔ لیکن وہ اپنی دھن کے پکے تھے ۔ وہ بغیر کسی ڈر اور ہچکچاہٹ کے کویتا کرتے رہے ۔ اُنھوں نے لوگوں کی کھلی اڑانے یا مذاق کا کبھی برا نہیں مانا ۔ وہ تو سدا یہی کہا کرتے تھے کہ ایک دن آئے گا جب یہی لوگ میری کویتا کو قدر کی نگاہ سے دیکھینگے ۔ اور انت میں ہوا بھی یہی ۔

شروع شروع میں اُنھوں نے اپنے ایک دوست کو لکھا : " مجھے اس بات کی فکر نہیں ہے کہ چند لوگ میری کویتا کے بارے میں کیا رائے قائم کرتے ہیں ۔ میں جو کچھ بھی لکھتا ہوں وہ عام اور جنتا کی بھاشا میں لکھتا ہوں ۔ تم ہی میرے ایک پیارے دوست ہو جو میرے ویانگوں کو سمجھتے اور پسند کرتے ہو ۔"

راج کاجی غلطیاں اور سماجی کمزوریاں پو کے دلوں میں زور مار رہی تھیں ۔ گھریلو جھگڑوں اور بھاری بھاری ٹیکسوں کے کارن لوگ تنگ آ گئے تھے ۔ بڑے بڑے ٹیکس صرف جنتا سے ہی وصول کئے جاتے تھے ۔ ان امیر لوگوں کو غریب جنتا کی کچھ پرواہ نہیں تھی ۔ وہ تو سدا اِسی فکر میں رہتے تھے کہ کس طرح تجوریوں میں سونا چاندی

पो चू ई: महान चीनी कवि

पो चू ई का नाम चीन के बड़े से बड़े कवियों में शुमार किया जाता है. इनका जन्म 772 ईसवी में हिन चेंग हुआ. यह जगह होनान सूबे में है. इनके माता पिता मामूली हैसियत के आदमी थे. यहां तक कि गुज़र बसर भी आसानी से नहीं हो पाती थी. इन पर इनकी माता विचारों का बहुत असर है. वह एक नेक और खुदा-परस्त महिला थीं. ग़रीबों की सेवा करने में उनकी मां बहुत सुख प्राप्त होता था. इनके पिता एक मामूली सरकारी नौकर थे. एक मामूली नौकर होते हुए भी उनके विचार बहुत ऊंचे थे और वह भी दीन हीन की सेवा करने अपनी नेक पत्नी से किसी तरह कम न थे.

दूसरे और बच्चों की तरह इनका बचपन भी खेलने कूदने में बीता. इनके और दोस्त इनसे मिल कर बहुत खुश होते थे. शुरू की तालीम अपने गांव और हो नान सूबे ही पाई. लेकिन इनका दिल ज़ियादा पढ़ने में नहीं लगता. इनकी हर दम यही इच्छा रहती थी कि मैं खूब घूमूं और घूम घूम कर जनता की तकलीफ़ को समझूं. शुरू शुरू पो चू ई को दिक़्क़तें सामने आईं. उन्होंने उनका सामना किया. घूमने और जनता की विपता जानने के लिये उनको थोड़े से पैसे की ज़रूरत थी लेकिन पैसा कहां से आता. फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी और घूमने निकल पड़े. अपनी रोज़ी की तलाश में वह हु पेह, क्वांग सू और चे-क्यांग सूबों में भी गए. लेकिन पो को कोई खास सफलता नहीं मिली.

बड़ी मुसीबतों और दिक़्क़तों को सहन करते हुए 26 साल की उमर में पो ने रियासत में नौकरी पाने के लिये इम्तहान पास कर लिया. 28 साल की उमर में वह मामूली सरकारी अफ़सर बन गए.

सरकारी अफ़सर बनने के थोड़े अरसे बाद उन्होंने देखा कि बड़े बड़े हाकिम किस तरह ग़रीब जनता को सताते, किस तरह उनका खून चूसते हैं और सोने चांदी के टुकड़ों से किस तरह अपनी जेबें भरते हैं. यह सब बातें देख कर उनका दिल भर आता था. शाम को जब वह घर आते और रात को सोते समय दिन की बातों पर ग़ौर करते तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते. वह सदा ईश्वर से प्रार्थना करते कि इन ग़रीबों की सहायता करो. ग़रीबों की फ़िक्र करते करते वह सो जाते. कभी कभी रात को सपने में देखते कि किसी हाकिम के हुक्म से ग़रीब के घर उजाड़े जा रहे हैं और वह ज़ालिम खड़ा हँस रहा है.

پو چو اِی: مہان چینی کوی

پو چو اِی کا نام چین کے بڑے سے بڑے کویوں میں شمار کیا جاتا ہے۔ اِن کا جنم 772 عیسوی میں ہِن چینگ میں ہوا۔ یہ جگہ ہونان صوبے میں ہے۔ اِن کے ماتا پِتا معمولی حیثیت کے آدمی تھے۔ یہاں تک کہ گذر بسر بھی آسانی سے نہیں ہو پاتی تھی۔ اِن پر اِن کی ماتا کے وچاروں کا بہت اثر ہے۔ وہ ایک نیک اور خدا پرست مہیلا تھیں۔ غریبوں کی سیوا کرنے میں اُن کی ماں کو بہت سکھ پراپت ہوتا تھا۔ اِن کے پتا ایک معمولی سرکاری نوکر تھے۔ ایک معمولی نوکر ہوتے ہوئے بھی اُن کے وچار بہت اونچے تھے اور وہ بھی دین ہین کی سیوا کرنے میں اپنی نیک پتنی سے کسی طرح کم نہ تھے۔

دوسرے اور بچوں کی طرح اِن کا بچپن بھی کھیلنے کودنے میں بیتا۔ اِن کے اور دوست اِن سے مل کر بہت خوش ہوتے تھے۔ شروع کی تعلیم اپنے گاؤں اور ہو نان صوبے میں ہی پائی۔ لیکن اِن کا دل زیادہ پڑھنے میں نہیں لگتا تھا۔ اِن کی ہر دم یہی اِچھا رہتی تھی کہ میں خوب گھوموں اور گھوم گھوم کر جنتا کی تکلیف کو سمجھوں۔ شروع شروع میں پو چو اِی کو دقتیں سامنے آئیں۔ انہوں نے اِن کا سامنا کیا۔ گھومنے اور جنتا کی بپتا جاننے کے لئے اِن کو تھوڑے سے پیسے کی ضرورت تھی لیکن پیسہ کہاں سے آتا۔ پھر بھی انہوں نے ہمت نہ ہاری اور گھومنے نکل پڑے۔ اپنی روزی کی تلاش میں وہ ہو پیہ، کیانگ سو اور چے کیانگ صوبوں میں بھی گئے۔ لیکن پو کو کوئی خاص سپھلتا نہیں ملی۔

بڑی مشکلوں اور دقتوں کو سہن کرتے ہوئے 26 سال کی عمر میں پو نے ریاست میں نوکری پانے کے لئے ایک امتحان پاس کر لیا۔ 28 سال کی عمر میں وہ ایک معمولی سرکاری افسر بن گئے۔

سرکاری افسر بننے کے تھوڑے عرصے بعد انہوں نے دیکھا کہ بڑے بڑے حاکم کس طرح غریب جنتا کو ستاتے ہیں، کس طرح اُن کا خون چوستے ہیں اور سونے چاندی کے ٹکڑوں سے اپنی کس طرح جیبیں بھرتے ہیں۔ یہ سب باتیں دیکھ کر اِن کا دل بھر آتا تھا۔ شام کو جب وہ گھر پہنچتے اور رات کو سوتے سمے دن کی باتوں پر نظر ڈالتے تو اُن کی آنکھوں میں آنسو آجاتے۔ وہ سدا ایشور سے پرارتھنا کرتے کہ اِن غریبوں کی سہائتا کرو۔ غریبوں کی فکر کرتے کرتے وہ سو جاتے۔ کبھی کبھی رات کو سپنے میں دیکھتے کہ کسی حاکم کے حکم سے غریب کے گھر اجاڑے جا رہے ہیں اور وہ ظالم کھڑا ہنس رہا ہے۔

नहीं होती तो दूसरे क़ायदों से रियासतहा, सूर, जमा बना लेते हैं. अक्सर विद्वान अपनी जानकारी बताने के लिये और विधाई अदारे अपनी शान बरक़रार रखने के लिये क़िस्म के कई पन इस्तेमाल करते हैं. उरदू के मुशकिल परस्त अरबी पढ़ां लोग बाज़ ऐसे लफ़ज़ों की जमा इस्तेमाल करते हैं जिन का रिवाज इस माना में बहुत कम है. मसलन दौलत को वाहिद यानी एकपन की हालत में बमानी रियासत कोई इस्तेमाल नहीं करता मगर जमा में दौल रियासतों या मुमलिकतों के माने में इस्तेमाल किया जाता है. बाज़ नीम वहशी क़बीलों के लोग हसलियां डाल डाल कर अपनी गरदनें लांबी करते हैं या छल्ले डाल डाल कर अपने होंट या नाक चौड़े या चपटे करते हैं. इसी तरह हमारे उरदू के मुशकिल परस्त बहुतेरे क़ायदों के इस्तेमाल पर भी जब बेचैन रहते हैं तो एक ही लफ़ज़ की जमा दो दो क़ायदों से बनाते हैं, जैसे :

कैफ़ियत की जमा कैफ़ियतें बनाने की बजाय कैफ़ियात और कवाइफ़.

उरदू की मुशकिल परस्ती का नतीजा है कि गुज़िशता बीस पच्चीस बरस में जिन मुज़क्कर इसमों का रिवाज हुआ है, उन पर उरदू क़ायदा नहीं लागू किया जाता बल्कि बिना ज़रूरत कई पन की अलामत जोड़ी जाती है. मसलन

मौज़ू की जमा मौज़ूआत

ग़ैर उरदू तरीक़े पर जमा बनाने का रिवाज बाज़ हलक़ों में इतना बढ़ गया है कि वाहिद और जमा को यकसां शक्ल में इस्तेमाल करना ग़लत समझा जाता है. ख़ास कर हैदराबाद और पंजाब में मिसाल के तौर पर अगर आप यह कहें—'क़ौमी लीडरों को मुख़तलिफ़ मौज़ूओं पर तक़रीरें करनी पड़ती हैं." तो उसको "ग़ैर फ़सीह" समझा जायगा. ख़ास उरदू में इस जुमले को यों कहेंगे :

"लीडराने क़ौम को मुख़तलिफ़ मौज़ूआत पर तक़ारीर करनी पड़ती हैं."

<u>उरदू लफ़ज़ों के गुन रूप</u>

उरदू वाले इसमों के अलावा गुन रूप भी फ़ारसियाना और अरबियाना तरीक़ों से बनाते हैं. जैसे :

मिल्लत से मिल्लती बनाने की बजाये मिल्ली (बरतपन मिल्ली)

نہیں ہوتی تو دوسرے قایدوں سے ریاستہا، صور، جما بنا لیتے ہیں۔ اکسر ودوان اپنی جانکاری جتانے کے لئے اور ودھائی ادارے اپنی شان برقرار رکھنے کے لئے قسم کے کئی پن استعمال کرتے ہیں۔ اردو کے مشکل پرست اربی زدہ لوگ باز ایسے لفزوں کی جما استعمال کرتے ہیں جن کا رواج اس مانا میں بہت کم ہے۔ مسلن دولت کو واحد یعنی ایکپن کی حالت میں بمعنی ریاست کوئی استعمال نہیں کرتا مگر جما میں دول ریاستوں یا مملکتوں کے مانے میں استعمال کیا جاتا ہے۔ باز نیم وحشی قبیلوں کے لوگ ہسلیاں ڈال ڈال کر اپنی گردنیں لمبی کرتے ہیں یا چھلے ڈال ڈال کر اپنے ہونٹ یا کان یا ناک چوڑے یا چپٹے کرتے ہیں۔ اسی طرح ہمارے اردو کے مشکل پرست بہتیرے قایدوں کے استعمال پر بھی جب بے چین رہتے ہیں تو ایک ہی لفز کی جما دو دو قایدوں سے بناتے ہیں جیسے :

کیفیت کی جمع کیفیتیں بنانے کی بجائے کیفیات اور کوائف ۔

اردو کی مشکل پرستی کا نتیجہ ہے کہ گذشتہ بیس پچیس برس میں جن مذکر اسموں کا رواج ہوا ہے ان پر اردو قایدا نہیں لاگو کیا جاتا بلکہ بنا ضرورت کئی پن کی علامت جوڑی جاتی ہے ۔ مسلن

موضوع کی جمع موضوعات

غیر اردو طریقے پر جما بنانے کا رواج باز حلقوں میں اتنا بڑھ گیا ہے کہ واحد اور جمع کو یکساں شکل میں استعمال کرنا غلط سمجھا جاتا ہے ۔ خاص کر حیدرآباد اور پنجاب میں مثال کے طور پر اگر آپ یہ کہیں ''قومی لیڈروں کو مختلف موضوعوں پر تقریریں کرنی پڑتی ہیں'' تو اس کو ''غیر فصیح'' سمجھا جائے گا ۔ خاص اردو میں اس جملے کو یوں کہیں گے :

''لیڈران قوم کو مختلف موضوعات پر تقاریر کرنی پڑتی ہیں ۔''

<u>اردو لفظوں کے گن روپ</u>

اردو والے اسموں کے علاوہ گن روپ بھی فارسیانہ اور عربیانہ طریقوں سے بناتے ہیں ۔ جیسے :

ملت سے ملتی بنانے کی بجائے ملی (برتن ملی)

अलिफ़ (الف) या है (ہ) की बजाय ये (ے) से बदलता है. जैसे लड़का, लड़के, हिस्सा, हिस्से, घोड़ा, घोड़े, फ़ैसला, फ़ैसले.

इस आम क़ायदे और हिन्दी और उरदू में यकसां तरीक़े पर जमा बनाने के उसूल के ख़िलाफ़ उरदू के मुश्किल पसंद मेहरबान

हिस्से	लिखने या कहने की बजाय		हिस्स
क़िस्से	,,	,,	क़िस्स
मुहल्ले	,,	,,	मुहल्लाजात
क़बीले	,,	,,	क़बीलाजात
रक़बे	,,	,,	रक़बाजात
मुजबे	,,	,,	मुजबात

इस्तेमाल करते हैं.

हिन्दी और उरदू दोनों में यह आम क़ायदा है कि [illegible]ीसवीं मोअन्नस इसमों की जमाएँ बढ़ाने से बना ली जाती है. [illegible]से रियासतें, कैफ़ियतें, भैसें तस्वीरें मेजें, वग़ैरा.

यह क़ायदा आम भी है और आसान भी. आसान [illegible]सलिये कि किसी लफ़्ज़ में कुछ जोड़ देने से इस लफ़्ज़ [illegible]ी शकल नहीं बदलती जैसे समाज से समाजी बनाया जाय [illegible] असल लफ़्ज़ समाज अपने ग़ुन रूप में भी बाक़ी रहता [illegible]. पर उरदू वाले ख़ास कर चन्द देहाईयों से

[illegible]ल्लत	का कई पन	मिल्लतें	बनाने की बाजाय	मिलल
[illegible]रत	,,	सीरतें	,,	सैर*
[illegible]रत	,,	सूरतें	,,	सूर*
[illegible]न्दील	,,	क़न्दीलें	,,	क़नादील
[illegible]ासूसियत	,,	ख़सूसियतें	,,	ख़सूसियात
[illegible]फ़ारिश	,,	शिफ़ारिशें	,,	शिफ़ारशात
[illegible]य	,,	रायें	,,	आरा
[illegible]ियासत	,,	रियासतें	,,	रियासतहा

ग़ौर से देखिये उरदू तरीक़े पर जमा बनाने के लिये [illegible]सल लफ़्ज़ में जोड़ देना काफ़ी है. मगर फ़ारसियाना और [illegible]रबियाना तौर पर कई पन बनाना गोरख धन्धा है. कहीं [illegible] सिरफ़ अलिफ़ (الف) ते (ت) जोड़ देते हैं जैसे [illegible]फ़ारशात में, मगर कहीं आख़री हर्फ़ छोड़ कर अलिफ़ (الف) ते (ت) बढ़ा देते हैं जैसे "ख़ुसूसियात" में, कहीं [illegible]आख़री हर्फ़ छोड़ कर बीच हर्फ़ की तकरार करते हैं, जैसे [illegible]लल में. इतने क़ायदों के बाद भी जब उनको तशफ़्फ़ी

---

* इसे तफ़रीह के मानों में सैर (Saer) न पढ़ [illegible]ढ़िये बल्कि सीयर (बर वज़न मीटर !)

● कितने पढ़े लिखे उरदू दां समझ सकेंगे कि 'ग़ालिब' [illegible] इस शेर में सूर सूरत की जमा है:—

है मुश्तमिल नमूद सूर पर वजूदे बहर
याँ क्या धरा है? क़तरा व मौज व हुबाब में

الف یا ہ کی بجائے ے بلتا ھے. جیسے لوکا لوکے' حصہ' حصے' گھوڑا' گھوڑے' فیصلہ' فیصلے .

اِس عام قاعدے اور هندی اور اردو میں یکساں طریقے پر جما بنانے کے اصول کے خلاف اردو کے مشکل پسند مہربان

حصے	لکھنے یا کہنے کی بجائے			حصص
قصے	,,	,,	,,	قصص
محلے	,,	,,	,,	محلہ جات
قبیلے	,,	,,	,,	قبیلہ جات
رقبے	,,	,,	,,	رقبہ جات
معجزے	,,	,,	,,	معجزات

استعمال کرتے ھیں .

هندی اور اردو دونوں میں یہ عام قاعدا ھے کہ بیسویں مونث اسموں کی جمایں بڑھانے سے بنا لی جاتی ھے . جیسے ریاستیں' کیفیتیں' بھینسیں' تصویریں' میزیں وغیرا .

یہ قاعدا عام بھی ھے اور آسان بھی . آسان اس لئے کہ کسی لفظ میں کچھ جوڑ دینے سے اس لفظ کی شکل نہیں بدلتی جیسے سماج سے سماجی بنایا جائے تو اصل لفظ سماج اپنے روپ میں بھی باقی رھتا ھے . مگر اردو والے خاصکر چند دیہاتیوں سے

ملت	کا کئی پن	ملتیں	بنانے کی بجائے	ملل
سیرت	,,	سیرتیں	,,	سیر*
صورت	,,	صورتیں	,,	صور*
قندیل	,,	قندیلیں	,,	قنادیل
خصوصیت	,,	خصوصیتیں	,,	خصوصیات
سفارش	,,	سفارشیں	,,	سفارشات
رائے	,,	رائیں	,,	آرا
ریاست	,,	ریاستیں	,,	ریاستہا

غور سے دیکھئے اردو طریقے پر جما بنانے کے لئے اصل لفظ میں جوڑ دینا کافی ھے. مگر فارسیانہ اور عربیانہ طور پر کئی پن بنانا گورکھ دھندا ھے . کہیں تو صرف (الف) (ت) جوڑ دیتے ھیں جیسے سفارشات میں' مگر کہیں آخری حرف چھوڑ کر الف ت بڑھاتے ھیں جیسے "خصوصیات" میں' کہیں آخری حرف چھوڑ کر بیچ حرف کی تکرار کرتے ھیں' جیسے ملل میں. اتنے قاعدوں کے بعد بھی جب ان کو تشفی

---

* اِسے تفریح کے معنوں میں سیر (Saer) نہ پڑھئے بلکہ سیر (بروزن میٹر !)

● کتنے پڑھے لکھے اردو داں تاڑ سکیں گے کہ غالب کے اِس شعر میں صور صورت کی جمع ھے :

ھے مشتمل نمود صور پر وجود بحر
یاں کیا دھرا ھے؟ قطرہ و موج و حباب میں

कम रहे हैं तो यह क्या ज़रूरी है कि हिन्दी प्रेमी भी ढाई हज़ार बरस पहले की व्याकरन और उच्चारन के आजकल की जनता पर भार डालें और अपनी सरल भाषा को भारी भरकम शब्दों और अजनबी उच्चारन से कठिन बनाएं.

इसलिये मैं हिन्दी प्रेमियों से कहता हूं कि दूसरों का ख्याल किये बिना अपनी भाषा की खैर मनाएं, आजकल के आम भाषाई झुकाव और उच्चारन को शुद्ध मानें और आम व्याकरन के मुताबिक़ अपना व्याकरन बनायें और इसी को सही मानें. हिन्दी प्रेमी आम तौर पर प्रजा राज के पक्षपाती होते हैं. कैसे अचरज की बात है कि प्रजा राज्य का बोल बुलन्द करने वाले हिन्दी प्रेमी भाषा के मामले में प्रजा का विरोध करते हैं और करोड़ों की ज़बानों पर चालू भाषा के खिलाफ़ चन्द संस्कृत प्रेमियों के व्याकरन और उच्चारन को चलाना चाहते हैं. चन्द विधाई अदारों और सरकारी विभागों में भले ही भाषाई शुद्धियावाद की तहरीक चल पड़े मगर दस फ़ी सैकड़ा लोगों पर भी इसका असर नहीं पड़ेगा और हिन्दी वालों का भाषाई शुद्धियावाद नाकाम साबित होगा. हां करोड़ों के खर्च पर भी तालीम का प्रकाश ज़ियादा नहीं होगा और कठिन भाषा में लिखी हुई पुस्तकों से पढ़ने वालों को कम फ़ायदा पहुंचेगा और अनगिनत किताबें बिन पढ़ी 'बिन समझी' बिन मुफ़ीद और बिन असर साबित होंगी.

हिन्दुस्तानी को सचमुच सारे देस की आम भाषा बनाना है तो हमें अच्छी तरह ख़याल करना होगा कि हिन्दी और उरदू संस्कृत पुजारियों और फ़ारसी परस्तों के हाथों जकड़ी हुई हैं और उनकी मदद से नहीं बल्कि उनकी मुख़ालफ़त के बावजूद तरक़्क़ी कर रही हैं.

हिन्दी प्रेमी माने या ना माने उरदू दानों और उर्दू के हामियों से हिन्दुस्तानी का प्रचार करने वालों की यह दरख़ास्त है कि वही अपनी ज़बान को ज़माने के झुकाव के मुताबिक़ बनने और पनपने दें न यह कि आम बोल चाल की मुख़ालफ़त करके उरदू की तरक़्क़ी में रुकावटें पैदा करें. उरदू वालों से हमें यह शिकायत है कि उरदू में बोले जाने वाले लफ़्ज़ों और जुमलों पर फ़ारसी और अरबी का कड़ियल बोझ डाला जा रहा है. ख़ास कर लफ़्ज़ों के गुन रूप और (इससे भी ज़ियादा) लफ़्ज़ों के कई पन में अकसर तौर उरदू तरीक़े इस्तेमाल किये जाते हैं.

उरदू का यह आम क़ायदा है कि

तमाम मुज़क्कर इस्म जिन के आख़िर में अलिफ़ (الف) या हे (ہ न हो एक पन और कई पन में यकसां होते हैं: जैसे मकान, आदमी, मच्छर, ओहदेदार, जागीरदार, पलंग, और जिन के आख़िर में अलिफ़ या हे हो उनका कई पन

نا ہے ہمیں کو یہ کیا ضروری ہے کہ ہندی پریمی بھی ھائی ہزار برس پہلے کی ویاکرن اور اچارن سے آجکل ی جنتا پر بار ڈالیں اور اپنی سرل بھاشا کو بھاری بھرکم شبدوں اور اجنبی اچارن سے کٹھن بنائیں ۔

اس لئے میں ہندی پریمیوں سے کہتا ہوں کہ دوسروں خیال کئے بنا اپنی بھاشا کی خیر منائیں؛ آجکل کے م بھاشائی جھکاؤ اور اچارن کو شدھ مانیں اور آم ویاکرن ے مطابق اپنا ویاکرن بنائیں اور اسی کو سچا مانیں ۔ ہندی پریمی آم تور پر پرجا راج کے پکش پاتی ہوتے ہیں۔ یسے اچرج کی بات ہے کہ پرجا راج کا بول بلند کرنے الے ہندی پریمی بھاشا کے معاملے میں پرجا کا ورودھ کرتے ہیں اور کروڑوں کی زبانوں پر چالو بھاشا کے خلاف چند سنسکرت پریمیوں کے ویاکرن اور اچارن کو چلانا چاہتے ہیں۔ چند ودھائی اداروں اور سرکاری وبھاگوں میں بھلے ہی بھاشائی شدھیاوا کی تحریک چل پڑے مگر دس فی سیکڑہ لوگوں پر بھی اس کا اثر نہیں پڑیگا اور ہندی والوں بھاشائی شدھیاوا ناکام ثابت ہوگا. ہاں کروڑوں کے خرچ ر بھی تالیم کا پرکاش زیادہ نہیں ہوگا اور کٹھن بھاشا میں لکھی ہوئی پستکوں سے پڑھنے والوں کو کم فائدہ پہنچے گا اور ان گنت کتابیں بن پڑھی' بن سمجھی' ن مفید اور بن اثر ثابت ہونگی ۔

ہندوستانی کو سچ مچ سارے دیس کی آم بھاشا بنانا تو ہمیں اچھی ترہ خیال کرنا ہوگا کہ ہندی اور اردو سنسکرت پجاریوں اور فارسی پرستوں کے ہاتھوں جکڑی ئی ہیں اور ان کی مدد سے نہیں بلکہ ان کی مخالفت باوجود ترقی کر رہی ہیں ۔

ہندی پریمی مانیں یا نہ مانیں اردو دانوں اور اردو حامیوں سے ہندوستانی کا پرچار کرنے والوں کی یہ خواہش ہے کہ وہی اپنی زبان کو زمانے کے جھکاؤ کے طابق بننے اور پنپنے دیں نہ یہ کہ آم بولچال کی مخالفت کے اردو کی ترقی میں رکاوٹیں پیدا کریں ۔ اردو والوں ہمیں یہ شکایت ہے کہ اردو میں بولے جانے والے لفظوں جملوں پر فارسی اور اربی کا کڑیل بوجھ ڈالا جا رہا ۔ خاص کر لفظوں کے گن روپ اور (اس سے بھی زیادہ) ظوں کے کئی پن میں اکثر طور اردو طریقے استعمال کئے اتے ہیں ۔

اردو کا یہ عام قاعدہ ہے کہ

تمام مذکر اسم جن کے آخیر میں، الف یا ہ نہ ہو' ایک اور کئی پن میں یکساں ہوتے ہیں : جیسے کان' آدمی' مچھر' عہدیدار' جاگیردار' پلنگ' جن کے آخیر میں الف یا ہ ہو ان کا کئی پن

इससे ज़्यादा कठिन व्याकरण, और सब से ज़्यादा कठिन परिभाषाई शब्दावली को जारी करना और कठिनाइयां बढ़ाना और फैलाना सभी ठीक होगा. सामराजी तबक़ा राजी और ख़ुद राजी, सभी जनता को नावाक़िफ़, अनपढ़ और जाहिल रखना चाहते थे क्योंकि जनता की नादानी, ना समझी और अनपढ़पन में उनकी अपनी भलाई छुपी थी.

अलबत्ता, जो लोग समझते हैं कि ठाठ की ज़िन्दगी से सादगी, ढकोसलों की शान से निर्धनों की इज़्ज़त, भीक और डर के महलों से कमाई और आनन्द की झोंपड़ियां; रिश्वतों के हज़ारों से ईमानदाराना मेहनत के सौ सवा सौ ही बेहतर हैं; जनता की तरक़्क़ी और जनता की भलाई की ख़ातिर सेवा करना राज और सामराज से अच्छा है वह कभी दुनियादारों और संसार प्रेमियों पर रश्क नहीं करते बल्कि विद्या प्रकाश करने के लिये भाषा, व्याकरन और शब्दावली को सरल बनाते हैं क्योंकि वह जानते, मानते और चाहते हैं कि राज का मक़सद जनता की भलाई है और भलाई के लिये जनता को हुनरमन्द और धनवान बनाना लाज़मी है, जिस के लिये जानकारी अटल है और जानकारी फैलाने और बढ़ाने के लिये आसान से आसान भाषा होनी चाहिये.

ग़र्ज़, भाषा का मसला भी हमारे जीवन फ़लसफ़े और निगाही नुक़्ते से गहरा सम्बन्ध रखता है. अगर हम सच्चे जनता प्रेमी हैं तो हम पर हर हालत में जनताई भाषा को (और लाज़मी बात है) आम उच्चारन और आम व्याकरन को पसन्द करेंगे. अगर हम जातबन्दी और ख़ुदग़र्ज़ी में फंसे हैं या हम में झूटी शेख़ी है तो हम भाषाई मामलों में जनता का विरोध करेंगे और आम झुकाव के ख़िलाफ़ अपनी हट चला कर जनता की भाषा तो बहरहाल नहीं बदल सकेंगे, हां इसकी तरक़्क़ी में रोड़े अटका कर उसके मेयार को नीचा और फैलाव को घिरा हुआ रख सकेंगे.

जब हार और जीत, तरक़्क़ी और गिरावट सब जीवन फ़लसफ़े और निगाही नुक़्ते से गहरा सम्बन्ध रखते हैं तो आम बातों में भी बड़ा मत भेद होगा. जिसे आप स्राप मौत कहेंगे मैं शहादत समझूंगा, जिस जीवन को आप बेकार समझेंगे मैं सफल ठहराऊंगा ? ठीक इसी तरह जिस चीज़ को आप हिन्दी प्रचार कहेंगे मैं हिन्दी की जड़ कन्दी समझता हूं. यह तो किसी तरह मैं मान नहीं सकता कि एक शख़्स काम चोर, गुमराह और नादान है तो दूसरा शख़्स भी उसी की तक़लीद करे और अपनी नाकामयाबी का सबब पहले शख़्स को क़रार दे. ठीक इसी तरह अगर उर्दू वाले दो ढाई हज़ार मील दूर की व्याकरन और उच्चारन से अपनी भाषा को मुश्किल और बोझल

اس سے زیادہ کٹھن ویاکرن، اور سب سے زیادہ کٹھن پری بھاشائی شبداولی کو جاری کرنا اور کٹھنائیاں بڑھانا اور پھیلانا سبھی ٹھیک ہوگا۔ سامراجی طبقہ، راجی اور خودراجی، سبھی جنتا کو ناواقف، انپڑھ اور جاہل رکھنا چاہتے تھے کیوں کہ جنتا کی نادانی، ناسمجھی اور انپڑھپن میں ان کی اپنی بھلائی چھپی تھی۔

البتہ، جو لوگ سمجھتے ہیں کہ ٹھاٹھ کی زندگی سے سادگی، ڈھکوسلوں کی شان سے نردھنوں کی عزت، بھیک اور ڈر کے محلوں سے کمائی اور آنند کی جھونپڑیاں؛ رشوتوں کے ہزاروں سے ایماندارانہ محنت کے سو سوا سو ہی بہتر ہیں؛ جنتا کی ترقی اور جنتا کی بھلائی کی خاطر سیوا کرنا راج اور سامراج سے اچھا ہے وہ کبھی دنیاداروں اور سنسار پریمیوں پر رشک نہیں کرتے بلکہ ودیا پرکاش کرنے کے لئے بھاشا، ویاکرن اور شبداولی کو سرل بناتے ہیں کیوں کہ وہ جانتے، مانتے اور چاہتے ہیں کہ راج کا مقصد جنتا کی بھلائی ہے اور بھلائی کے لئے جنتا کو ہنرمند اور دھنوان بنانا لازمی ہے، جس کے لئے جانکاری اٹل ہے اور جانکاری پھیلانے اور بڑھانے کے لئے آسان سے آسان بھاشا ہونی چاہئے۔

غرض، بھاشا کا مسئلہ بھی ہمارے جیون فلسفے اور نگاہی نکتے سے گہرا سمبندھ رکھتا ہے۔ اگر ہم سچے جنتا پریمی ہیں تو ہم پر ہر حالت میں جنتائی بھاشا کو (اور لازمی بات ہے) عام اچارن اور عام ویاکرن کو پسند کریں گے۔ اگر ہم ذات بندی اور خودغرضی میں پھنسے ہیں یا ہم میں جھوٹی شیخی ہے تو ہم بھاشائی معاملوں میں بھی جنتا کا ورودھ کریں گے اور عام جھکاؤ کے خلاف اپنی ہٹ چلا کر جنتا کی بھاشا تو بہر حال نہیں بدل سکیں گے، ہاں اس کی ترقی میں روڑے اٹکا کر اس کے معیار کو نیچا اور پھیلاؤ کو گھرا ہوا رکھ سکیں گے۔

جب ہار اور جیت، ترقی اور گراوٹ سب جیون فلسفے اور نگاہی نکتے سے گہرا سمبندھ رکھتے ہیں تو عام باتوں میں بھی بڑا مت بھید ہوگا۔ جسے آپ سراپ موت کہیں گے میں شہادت سمجھوں گا، جس جیون کو آپ بیکار سمجھیں گے میں سپھل ٹھہراؤں گا ؟ ٹھیک اسی طرح جس چیز کو آپ ہندی پرچار کہیں گے میں ہندی کی جڑ کندی سمجھتا ہوں۔ یہ تو کسی طرح میں مان نہیں سکتا کہ ایک شخص کام چور، گمراہ اور نادان ہے تو دوسرا شخص بھی اسی کی تقلید کرے اور اپنی ناکامیابی کا سبب پہلے شخص کو قرار دے۔ ٹھیک اسی طرح اگر اردو والے دو ڈھائی ہزار میل دور کی ویاکرن اور اچارن سے اپنی بھاشا کو مشکل اور بوجھل

मसले को छोड़ कर ऐसी बात पर बहस करना जिससे असल बात का कुछ लगाव न हो. यह "मक़सद से मज़ाग़-पन" की वह क़िसम है जिसे इल्ज़ामी बहस कहना चाहिए.

हिन्दुस्तानी के निगाही नुक़ते से हमें यह देखना है कि आजकल हिन्दी प्रेमी माने जाने वाले, हिन्दी साहित्य सेवा करने वाली संस्थाएं, हिन्दी लेखक और हिन्दी विद्वान हिन्दी व्याकरन और हिन्दी जनता के आम उच्चारन मानते हैं या नहीं ? इससे क्या बहस कि उरदू वाले भी चाल चल रहे हैं कि उलटी, ज़हर पी रहे हैं या अमृत, अक़्लमन्दी कर रहे हैं या नादानी ?

बहस यह है कि हमें अपने बोझ को हलका करना है, भाषा को आसान बनाना है ताकि विद्या की तरक़्क़ी तेज़ रफ़्तार से हो. अगर भाषा आसान होगी तो लोग भाषाओं और पुस्तकों से ज़ियादा फ़ायदा उठा सकेंगे, वह जानकारी में बेहतर, हुनर या फ़न में भी बेहतर होंगे. हिन्दुस्तान के शहरियों का जीवन मेयार ज़ियादा ऊंचा होगा क्योंकि हम अपनी क़ूवत विद्या हासिल करने या हुनर सिखने में ज़ियादा सर्फ़ कर सकेंगे न कि भाषाएं और लिखावटें सीखने में. इन वजहों से हमें अपने बोझ को हलका करना है. हिन्दी चूंकि राज भाषा बनने वाली है, इसलिये हिन्दी के बोझ को हलका करना और भी ज़रूरी है. यह नुक़ता बहस तलब है. यह नहीं कि उरदू वाले अपने बोझ को बढ़ा रहे हैं या नहीं.

मंतिक़ यानी सोच बिचार के सही तरीक़े सिखाने वाली विद्या हमें सिखाती है कि "दो काले मिल कर एक गोरा नहीं होते; 'दो पापों' से एक पुन नहीं होता; दो कपूतों से एक सपूत नहीं होता."

ठीक इसी तरह उरदू वाले भूल कर रहे हों तो इससे यह कैसे ज़ाहिर होता है कि हिन्दी वालों की भूल भूल नहीं है ? भारत माता के दो बेटे हों और दोनों के दोनों कपूत निकलें तो माता का दुख दूना होगा आधा नहीं.

यह बात आसानी से मेरी समझ में आती है कि दूसरों को ठाठ और राज करता हुआ देख कर हम भी तै कर लें कि दो दिन की ज़िन्दगी है, शान और मज़े में गुज़ार दें; चाहे इसका ज़रिया देस फ़रोशी हो या भड़ुई, भाण्डपन हो या लूट, ग़सब हो या काला बाज़ार, जत्था बन्दी हो या क़ौम फ़रोशी ! अगर हमारा मक़सद ही यह हो कि किसी ना किसी तरह धन और राज के मालिक बन जाएं और इसे बढ़ाएं या संभाले रखें तो हम भी जनता को जाहिल रखने और उसे भूल भुलैयों में फंसा कर राज और ठाठ करने में ठीक रास्ते पर होंगे, जब हमारा मक़सद ही जनता को जाहिल रखना है तो फिर कठिन भाषा,

نکتے کو چھوڑ کر ایسی بات پر بحث کرنا جس سے اصل بات کو کچھ لگاؤ نہ ہو۔ یہ "مقصد سے الگویں" کی وہ قسم ہے جسے الزامی بحث کہنا چاہئے۔

هندستانی کے نگاهی نکتے سے هیں یہ دیکھنا ہے کہ آجکل هندی پریمی مانے جانے والے، هندی ساهتیہ کی سیوا کرنے والی سنستھاییں، هندی لیکھک اور هندی ودوان هندی ویاکرن اور هندی جنتا کے عام اچارن کو مانتے هیں یا نہیں ؟ اس سے کیا بحث کہ اُردو والے سیدھی چال چل رہے هیں کہ الٹی، زهر پی رہے هیں یا امرت، عقلمندی کر رہے هیں یا نادانی ؟

بحث یہ ہے کہ هیں اپنے بوجھ کو هلکا کرنا ہے، بھاشا کو آسان بنانا ہے تاکہ ودیا کی ترقی تیز رفتار سے هو۔ اگر بھاشا آسان هوگی تو لوگ بھاشاؤں اور پستکوں سے زیادہ فائدہ اٹھا سکینگے، وہ جانکاری میں بہتر، هنر یا فن میں بھی بہتر هونگے۔ هندستان کے شہریوں کا جیون معیار زیادہ اونچا هوگا کیوں کہ هم اپنی قوت ودیا حاصل کرنے یا هنر سیکھنے میں زیادہ صرف کرسکینگے نہ کہ بھاشاییں اور لکھاوٹیں سیکھنے میں۔ ان وجہوں سے هیں اپنے بوجھ کو هلکا کرنا ہے هندی چونکہ راج بھاشا بننے والی ہے، اس لئے هندی کے بوجھ کو هلکا کرنا اور بھی ضروری ہے۔ یہ نکتہ بحث طلب ہے۔ یہ نہیں کہ اُردو والے اپنے بوجھ کو بڑھا رہے هیں یا نہیں۔

منطق یانے سوچ بچار کے صحیح طریقے سکھانے والی ودیا هیں سکھاتی ہے کہ "دو کالے مل کر ایک گورا نہیں ہوتے؛ دو پاپوں سے ایک پن نہیں هوتا؛ دو کپوتوں سے ایک سپوت نہیں هوتا۔"

ٹھیک اسی طرح اُردو والے بھول کر رہے هوں تو اس سے یہ کیسے ظاہر هوتا ہے کہ هندی والوں کی بھول بھول نہیں ہے ؟ بھارت ماتا کے دو بیٹے هوں اور دونو کے دونو کپوت نکلیں تو ماتا کا دکھ دونا هوگا آدھا نہیں۔

یہ بات آسانی سے میری سمجھ میں آتی ہے کہ دوسروں کو ٹھاٹھ اور راج کرتا هوا دیکھ کر هم بھی طے کرلیں کہ دو دن کی زندگی ہے، شان اور مزے میں گزار دیں؛ چاہے اس کا ذریعہ دیس فروشی هو یا بھڑئی، بھانڈپن هو یا لوٹ، غصب هو یا کالا بازار، جتھا بندی هو یا قوم فروشی ! اگر همارا مقصد هی یہ هو کہ کسی نہ کسی طرح دھن اور راج کے مالک بن جائیں اور اسے بڑھائیں یا سنبھالے رکھیں تو هم بھی جنتا کو جاهل رکھنے اور اسے بھول بھلیوں میں پھنسا کر راج اور ٹھاٹھ کرنے میں ٹھیک راستے پر هونگے؛ جب همارا مقصد هی جنتا کو جاهل رکھنا ہے تو پھر کٹھن بھاشا،

चीनी कनफ्यूशियस धर्म की किताब शू किंग में लिखा है :—

"बात साफ़ साफ़ कहो, लेकिन मिठास के साथ, दूसरों से नरमी के बरताव करो लेकिन खुद्दारी के साथ, ताक़तवर बनो पर किसी पर ज़ुल्म न करो, काम वीरों के साथ करो लेकिन किसी के साथ गुसताख़ी न करो, सब के साथ रवादारी बरतो लेकिन अपनी जगह अडिग रहो, नरम रहो लेकिन पक्के, बुराइयों से हिम्मत न हारो लेकिन नेकी का आदर मान बराबर दिल में बनाए रखो. दूसरों की कमज़ोरियां सच सच बताओ लेकिन इस तरह कि उसके दिल को चोट न पहुंचे, सब के सामने झुक कर चलो, लेकिन सचाई के लिये अपने को ख़तरे में डालने से कभी संकोच न करो. खुले दिल से दान दो लेकिन पात्र और कुपात्र देख कर, अपने इरादे में पक्के रहो लेकिन दिल हमेशा साफ़ और सच्चा रहे. बहादुर बनो लेकिन इनसाफ़ से न हटो." यह बीच का रास्ता ही सच्चे दीन धर्म का रास्ता है.

چینی کنفیوشس دھرم کی ایک کتاب شو کنگ میں لکھا ہے :—

" بات صاف صاف کہو لیکن مٹھاس کے ساتھ، دوسروں سے نرمی سے برتاؤ کرو لیکن خود داری کے ساتھ، طاقتور بنو پر کسی پر ظلم نہ کرو، کام وِیروں کے ساتھ کرو لیکن کسی کے ساتھ گستاخی نہ کرو، سب کے ساتھ رواداری برتو لیکن اپنی جگہ اڈگ رہو، نرم رہو لیکن پکے، برائیوں سے ہمت نہ ہارو لیکن نیکی کا آدرمان برابر دل میں بنائے رکھو۔ دوسروں کی کمزوریاں سچ سچ بتاؤ لیکن اس طرح کہ اُن کے دل کو چوٹ نہ پہنچے۔ سب کے سامنے جھک کر چلو، لیکن سچائی کے لئے اپنے کو خطرے میں ڈالنے سے کبھی سنکوچ نہ کرو۔ کھلے دل سے دان دو لیکن پاتر اور کپاتر دیکھ کر، اپنے ارادے میں پکے رہو لیکن دل ہمیشہ صاف اور سچا رہے۔ بہادر بنو لیکن انصاف سے نہ ہٹو۔"
یہ بیچ کا راستہ ہی سچے دین دھرم کا راستہ ہے۔

उलटी मंतिक़

(डाक्टर ज़ाकिर हुसैन)

जब कभी हिन्दी प्रेमियों और भाषा के शुद्धी परस्तों के सामने इन बातों का ज़िकर हुआ, तुरन्त ही जवाब मिला :

"और उरदू वाले क्या कर रहे हैं ? पाकिस्तान में क्या हो रहा है ?"

इसके बाद वह उरदू वालों की फ़ारसी परस्ती और अरबी ज़दगी की मिसालें गिनाने बैठते हैं, वह भी हिन्दुस्तानी के पक्ष पातियों को गोया हिन्दुस्तानी के मुवाफ़िक़ों को उरदू वालों से न कोई रंजिश है न शिकायत !

एतराज़ का जवाब देने के बजाए एतराज़ करने वाले पर उलटा एतराज़ करना, इल्ज़ाम दूर करने के बजाए तोड़ इल्ज़ाम लगाना आम तरीक़ा सही मगर उलटा तरीक़ा है, उलटी समझ है, ग़लत मंतिक़ है. विलायती भाषा में इस क़िस्म की उलटी बहस को Iquoratio Eleuchi याने Irrelevance to Purpose या मक़सद से बेताल्लुक़ कहते हैं. मतलब यह कि बहस के

اُلٹی منتق

(ڈاکٹر ذاکر حسین)

جب کبھی ہندی پریمیوں اور بھاشا کے شدھی پرستوں کے سامنے ان باتوں کا ذکر ہوا، ترنت ہی جواب ملا :

"اور اُردو والے کیا کر رہے ہیں ؟ پاکستان میں کیا ہو رہا ہے ؟"

اس کے بعد وہ اُردو والوں کی فارسی پرستی اور عربی زدگی کی مثالیں گنانے بیٹھتے ہیں، وہ بھی ہندستانی کے پکش پاتیوں کو گویا ہندستانی کے موافقوں کو اُردو والوں سے نہ کوئی رنجش ہے نہ شکایت !

اعتراض کا جواب دینے کی بجائے اعتراض کرنے والے پر اُلٹا اعتراض کرنا، الزام دور کرنے کی بجائے توڑ الزام لگانا عام طریقہ سہی مگر اُلٹا طریقہ ہے، اُلٹی سمجھ ہے، غلط منتق ہے، ولایتی بھاشا میں اس قسم کی الٹی بحث کو Iquoratio Eleuchi یا Irrelevance to Purpose یا مقصد سے الگ کہتے ہیں۔ مطلب یہ کہ بحث کے

योरप की एक कहावत है :—"सब को समझ लेना सब को माफ़ कर देना है."

आदमी सब को तभी समझ सकता है जब पहले अपने को यानी अपने दिल को ठीक ठीक समझ ले. हम दूसरों की तरफ़ दयावान या हमदर्द तभी हो सकते हैं जब हम अपने अन्दर निगाह डाल कर अन्तर दृष्टि, यानी सीर नफ़सी के ज़रिये यह अच्छी तरह देख लें कि हमारी अपनी ज़िन्दगी के और हमारे दिल के अन्दर कितनी कमज़ोरियां, बुराइयां और बद ख़्यालियां छुपी हुई हैं.

महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है :—"13 नेकियां सब एक सच्चाई के अलग अलग रूप हैं: और 13 बुराइयां सब झूठ की अलग अलग शक्लें हैं."

पारसी धर्म की किताब गाथा में अहुर मज़्द से बार बार सचाई के दीदार की ही प्रार्थना की गई है.

महाभारत में कहा है कि :—"सचाई से बढ़ कर कोई धर्म है ही नहीं."

एक सूफ़ी कहता है :—"सूफ़ी के लिये सिवाय सचाई के मज़हब के और कोई मज़हब है ही नहीं. वह और कोई मज़हब जानता ही नहीं."

सब सचाइयों की यह सचाई कि सब के अन्दर एक ही आत्मा है अपने को "प्रेम" की शक्ल में ज़ाहिर करती है. प्रेम के अलग अलग रूप हैं. बड़ों के साथ वह आदर, इज़्ज़त, पूजा और एहतराम की शक्ल अख़्तियार करता है. छोटों के साथ क्षमा, नरमी, मुहब्बत और दया की शक्ल लेता है. बराबर वालों के साथ दोस्ती और प्रेम की शक्ल. इन सब भावनाओं के साथ आदमी के अलग अलग फ़र्ज़ जुड़े हुए हैं. जब आदमी सब के अन्दर एक आत्मा देखता है तो ख़ुश दिली उस का फ़र्ज़ हो जाता है. प्रेम उसका मज़हब हो जाता है. बाक़ी सब नेकियां ख़ुद बख़ुद पीछे पीछे दौड़ती हैं और जहां सब झूठों का झूठ यानी जुदाई ग़ैरियत का ख़्याल ज़ोर करता है वहां प्रेम की जगह नफ़रतें पैदा होती हैं यानी अपने से बड़ों का डर, बराबर वालों पर गुस्सा, और कमज़ोरों पर ज़ुल्म.

इंजील में कहा गया है कि :—"नेकी हर क़ौम को ऊंचा उठाती है."

इसी उसूल को पूरा करने के लिये कहा जा सकता है कि ग़फ़लत, ख़ुद ग़रज़ी, दूसरों पर ज़ुल्म ज़ियादती और दूसरी क़ौमों के जान व माल से बेजा फ़ायदा उठाने की ख़्वाहिश या कमज़ोर क़ौमों को चूसने की इच्छा बड़ी से बड़ी क़ौम को नीचे गिरा देती है. केवल सब को अपनी तरह समझ कर ही आदमी इन सब बुराइयों और मुसीबतों से बच सकता है.

یورپ کی ایک کہاوت ہے :—" سب کو سمجھ لینا سب کو معاف کر دینا ہے ."

آدمی سب کو تبھی سمجھ سکتا ہے جب پہلے اپنے کو یعنی اپنے دل کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لے . ہم دوسروں کی طرف دیاوان یا ہمدرد تبھی ہو سکتے ہیں جب ہم اپنے اندر نگاہ ڈالکر انتر درشٹی' یعنی سیر نفسی کے ذریعہ یہ اچھی طرح دیکھ لیں کہ ہماری اپنی زندگی کے اور ہمارے دل کے اندر کتنی کمزوریاں' برائیاں اور بد خیالیاں چھپی ہوئی ہیں .

مہابھارت کے شانتی پرو میں لکھا ہے :—" 13 نیکیاں سب ایک سچائی کے الگ الگ روپ ہیں . اور 13 برائیاں سب جھوٹ کی الگ الگ شکلیں ہیں ."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں اہور مزد سے بار بار سچائی کے دیدار کی ہی پرارتھنا کی گئی ہے .

مہا بھارت میں کہا ہے کہ :—" سچائی سے بڑھکر کوئی دھرم ہے ہی نہیں ."

ایک صوفی کہتا ہے :—" صوفی کے لئے سوائے سچائی کے مذہب کے اور کوئی مذہب ہے ہی نہیں ، وہ اور کوئی مذہب جانتا ہی نہیں ."

سب سچائیوں کی یہ سچائی کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے اپنے کو " پریم " کی شکل میں ظاہر کرتی ہے . پریم کے الگ الگ روپ ہیں . بڑوں کے ساتھ وہ آدر' عزت' پوجا اور احترام کی شکل اختیار کرتا ہے . چھوٹوں کے ساتھ کھشما' نرمی' محبت اور دیا کی شکل لیتا ہے . برابر والوں کے ساتھ دوستی اور پریم کی شکل . ان سب بھاوناؤں کے ساتھ آدمی کے الگ الگ فرض جڑے ہوئے ہیں . جب آدمی سب کے اندر ایک آتما کو دیکھتا ہے تو خوش دلی اس کا فرض ہوجاتا ہے . پریم اسکا مذہب ہوجاتا ہے . باقی سب نیکیاں خود بخود پیچھے پیچھے دوڑتی ہیں اور جہاں سب جھوٹوں کا جھوٹ یعنی جدائی یا غیریت کا خیال زور کرتا ہے وہاں پریم کی جگہ نفرتیں پیدا ہوتی ہیں یعنی اپنے سے بڑوں کا ڈر' برابر والوں پر غصہ' اور کمزوروں پر ظلم .

انجیل میں کہا گیا ہے کہ :—" نیکی ہر قوم کو اونچا اٹھاتی ہے ."

اسی اصول کو پورا کرنے کے لئے کہا جا سکتا ہے کہ غفلت' خود غرضی' دوسروں پر ظلم زیادتی اور دوسری قوموں کے جان و مال سے بیجا فائدہ اٹھانے کی خواہش یا کمزور قوموں کو چوسنے کی اچھا بڑی سے بڑی قوم کو نیچے گرا دیتی ہے . کیول سب کو اپنی طرح سمجھ کر ہی آدمی ان سب برائیوں اور مصیبتوں سے بچ سکتا ہے .

और जो रोते हैं उनके साथ रोओ. एक दूसरे के साथ हम ख्याल हो. जहां तक तुम्हारी शक्ति में है सब लोगों के साथ अमन से रहो. सब तुम्हारे प्यारे हैं. किसी से बदला न लो. अगर तुम्हारा दुश्मन भूका है तो उसे खाना खिलाओ. अगर वह प्यासा है तो उसे पानी पिलाओ. इस तरह करने से दुश्मन की हैसियत से तुम इसके सर पर जलते हुए कोयले डाल दोगे. बुराई तुम्हें न जीतने पाए. तुम बुराई को भलाई से जीतो. सच्चे हाकिम वह हैं जिन से कोई नेकी करने वाला नहीं डरता और जिन से केवल बुराई करने वाले डरते हैं. इसलिये जो चीज़ जिसकी है उसे दो...किसी का उधार अपने ऊपर न रखो सिवाय इसके कि सब एक दूसरे से प्यार करो!'

"जो दूसरे को प्यार करता है वह सच्चे धर्म का पालन करता है. इसलिये बदचलनी न करो, किसी की जान न लो, चोरी न करो, झूटी गवाही न दो, दूसरे की चीज़ का लोभ न करो. और अगर कोई और हुक्म है तो यह है और इसमें सब आ जाते हैं कि अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ. प्रेम कभी पड़ोसी को नुक़सान नहीं पहुंचा सकता. प्रेम ही पूरा धर्म है. सचाई यह सचाई कि सब के अन्दर एक ही आत्मा है तुम्हें सब बुराइयों से बचा लेगी और आज़ाद कर देगी." (इंजील रोमन्स और जान)

गीता में श्री कृश्न ने कहा है :—"ऐ अर्जुन! इसमें कोई शक नहीं कि मन को रोक कर क़ाबू में करना बहुत मुश्किल है लेकिन अभ्यास से यानी बार बार मश्क़ करने से और वैराग यानी दुनिया से अपने दिल को हटाने से मन क़ाबू में आ जाता है."

गीता में और उपनिशदों में जगह जगह कहा गया है कि मन को बाहर की चीज़ों से हटा कर धीरे धीरे अपने अन्दर की तरफ़ लगाना चाहिये.

मौलाना रूम ने इसी बात को इन शब्दों में अदा किया है :—

"अपनी आंखों को बन्द कर, अपने कानों को बन्द कर, अपने होंटों को बन्द कर. फिर भी अगर हक़ीक़त का राज़ तुझे दिखाई न दे तो हम पर हंस लेना."

यही बात दूसरे सूफ़ियों ने तरह तरह से और बहुत तफ़सील के साथ कही है.

वेदान्त में कहा गया है :—"पुन और पाप दोनों पाप हैं क्योंकि दोनों आत्मा को इस जिस्म और इस दुनिया के साथ बांधते हैं."

एक सूफ़ी ने इसी चीज़ को इस तरह कहा है :—"चूंकि नेक और बद दोनों ख़ुदा ही से हैं इसलिये समझदार आदमी दोनों से दिल को हटा कर उसे अपने अन्दर के ख़ुदा की तरफ़ लगाता है."

اور جو روتے ہیں اُن کے ساتھ رو۔ ایک دوسرے کے ساتھ ہمخیال ہو۔ جہاں تک تمہاری شکتی میں ہے سب لوگوں کے ساتھ امن سے رہو۔ سب تمہارے پیارے ہیں کسی سے بدلہ نہ لو۔ اگر تمہارا دشمن بھوکا ہے تو اسے کھانا کھلاؤ۔ اگر وہ پیاسا ہے تو اسے پانی پلاؤ۔ اس طرح کرنے سے دشمن کی حیثیت سے تم اس کے سر پر جلتے ہوئے کوئلے ڈال دو گے۔ برائی تمہیں نہ جیتنے پائے۔ تم برائی کو بھلائی سے جیتو۔ سچے حاکم وہ ہیں جن سے کوئی نیکی کرنے والا نہیں ڈرتا اور جن سے کیول برائی کرنے والے ڈرتے ہیں۔ اس لئے جو چیز جسکی ہے اسے دو......کسی کا ادھار اپنے اوپر نہ رکھو سوائے اس کے کہ سب ایک دوسرے سے پیار کرو۔"

"جو دوسرے کو پیار کرتا ہے وہ سچے دھرم کا پالن کرتا ہے۔ اس لئے بدچلنی نہ کرو، کسی کی جان نہ لو، چوری نہ کرو، جھوٹی گواہی نہ دو، دوسرے کی چیز کا لوبھ نہ کرو۔ اور اگر کوئی اور حکم ہے تو یہ ہے اور اس میں سب آ جاتے ہیں کہ اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پریم کرو جیسا اپنے ساتھ۔ پریم کبھی پڑوسی کو نقصان نہیں پہنچا سکتا۔ پریم ہی پورا دھرم ہے۔ سچائی یہ سچائی کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے تمہیں سب برائیوں سے بچا لے گی اور آزادی کر دے گی۔" (انجیل رومنس اور جان)

گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے :—" اے ارجن! اس میں کوئی شک نہیں کہ من کو روک کر قابو میں کرنا بہت مشکل ہے لیکن ابھیاس سے یعنی بار بار مشق کرنے سے اور ویراگ یعنی دنیا سے اپنے دل کو ہٹانے سے من قابو میں آ جاتا ہے۔"

گیتا میں اپنشدوں میں جگہ جگہ کہا گیا ہے کہ من کو باہر کی چیزوں سے ہٹا کر دھیرے دھیرے اپنے اندر کی طرف لگانا چاہئے۔

مولانا روم نے اسی بات کو ان شبدوں میں ادا کیا ہے:—

" اپنی آنکھوں کو بند کر، اپنے کانوں کو بند کر، اپنے ہونٹوں کو بند کر۔ پھر بھی اگر حقیقت کا راز تجھے دکھائی نہ دے تو ہم پر ہنس لینا۔"

یہی بات دوسرے صوفیوں نے طرح طرح سے اور بہت تفصیل کے ساتھ کہی ہے۔

ویدانت میں کہا گیا ہے :—" پن اور پاپ دونوں پاپ ہیں کیونکہ دونوں آتما کو اس جسم اور اس دنیا کے ساتھ باندھتے ہیں۔"

ایک صوفی نے اسی چیز کو اس طرح کہا ہے:—" چونکہ نیک اور بد دونوں خدا ہی سے ہیں اس لئے سمجھدار آدمی دونوں سے دل کو ہٹا کر اسے اپنے اندر کے خدا کی طرف لگاتا ہے۔"

शामिल करते हैं. इन्हीं को आहार इच्छा, काम इच्छा और दूसरी इच्छा भी कहा जाता है. इन्हीं से क़ानून, मिलकियत और शादी का जन्म होता है. इनमें से हर एक के अच्छे और परोपकारी पहलू भी हैं. इन्हें अहिन्सा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य कहा जाता है. सूफ़ी इन्हें तर्क ईज़ा रसानी, तर्क दौलत और तर्क शहवत कहते हैं. सत् यानी हक़ इन सबके ऊपर है.

जिस तरह अहंकार यानी ख़ुदी से सब बुराइयां पैदा होती हैं उसी तरह निरअहंकारता यानी असली बेख़ुदी से सब भलाइयां पैदा होती हैं. हज़रत ईसा ने कहा है :—
"अपने पूरे दिल से ईश्वर से प्यार कर." उन्होंने यह भी कहा है :—"अपने पड़ोसी से उसी तरह प्यार कर जैसा अपने साथ." वजह साफ़ है. ईश्वर ही हमारे अन्दर की असल हक़ीक़त है और वही हमारे पड़ोसी के अन्दर की हक़ीक़त है. इसलिये असलियत दोनों की एक ही है.

जिस तरह ख़ुदी से काम और क्रोध पैदा होते हैं उसी तरह सच्ची बेख़ुदी से भक्ति यानी इश्क़े हक़ीक़ी और करुना यानी रहम पैदा होते हैं. एक हमें अविद्या और जहालत की तरफ़ ले जाता है और दूसरा विद्या यानी इरफ़ान की तरफ़. वेदान्त के मुताबिक़ अविद्या की ख़ास शकलें आवरन और विक्षेप हैं. इन्हीं दोनों को सूफ़ी हिजाब और ईज़ा कहते हैं. विद्या यानी इरफ़ान से ही काम और क्रोध को जीता जा सकता है. इसके लिये रास्ता त्याग यानी तर्क और व्यवसाय यानी मुजाहिदा का रास्ता है. इन्हीं को वैराग और अभ्यास भी कहते हैं यानी दुनिया से हट कर आत्मा यानी हक़ की तरफ़ दिल को लगाना. यह दुनिया से हटना दुनिया के फ़रायज़ से भागना नहीं है, क्योंकि सच्चे त्याग यानी तर्क से ही सर्व भूत हित यानी ख़िदमते ख़ल्क़ की लगन पैदा होती है.

मनुस्मृति में लिखा है :—
"अपनी आत्मा के अन्दर सबको देखो. सच और झूट ठीक और ग़लत सब उसी के अन्दर हैं. जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर सबको देखता है उसका मन फिर पाप की तरफ़ नहीं जा सकता."

इंजील में लिखा है :—
"अपने पूरे दिल, पूरी आत्मा और पूरे मन से ईश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ. इन दोनों आज्ञाओं पर ही सारा धर्म और पुराने सब पैग़म्बरों के उपदेश इनहिसार करते हैं." (मैथ्यू)

इंजील में और लिखा है :—
'जो तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाएं उन्हें आशीर्वाद दो, किसी को बददुआ न दो. जो ख़ुश हैं उनके साथ ख़ुशी मनाओ

شامل کہتے ہیں۔ انہیں کو آہار اچھا' کام اچھا اور دوسری اچھا بھی کہا جاتا ہے ۔ انہیں سے قانون' ملکیت اور شادی کا جنم ہوتا ہے۔ ان میں سے ہر ایک کے اچھے اور پروپکاری پہلو بھی ہیں ۔ انہیں اہنسا' اپریگرہ اور برہم چریہ کہا جاتا ہے ۔ صوفی انہیں ترک ایذا رسانی' ترک دولت اور ترک شہوت کہتے ہیں۔ ست یعنی حق ان سب کے اوپر ہے ۔

جس طرح اہنکار یعنی خودی سے سب برائیاں پیدا ہوتی ہیں اسی طرح نراہنکارتا یعنی اصلی بے خودی سے سب بھلائیاں پیدا ہوتی ہیں ۔ حضرت عیسیٰ نے کہا ہے:—"اپنے پورے دل سے ایشور سے پیار کر۔" انہوں نے یہ بھی کہا ہے :—"اپنے پڑوسی سے اسی طرح پیار کر جیسا اپنے ساتھ۔" وجہ صاف ہے۔ ایشور ہی ہمارے اندر کی اصل حقیقت ہے اور وہی ہمارے پڑوسی کے اندر کی حقیقت ہے۔ اس لئے اصلیت دونوں کی ایک ہی ہے ۔

جس طرح خودی سے کام اور کرودھ پیدا ہوتے ہیں اسی طرح سچی بیخودی سے بھکتی یعنی عشق حقیقی اور کرونا یعنی رحم پیدا ہوتے ہیں۔ ایک ہمیں اودیا اور جہالت کی طرف لے جاتا ہے اور دوسرا ودیا یعنی عرفان کی طرف ۔ ویدانت کے مطابق اودیا کی خاص شکلیں آورن اور وکشیپ ہیں۔ انہیں دونوں کو صوفی حجاب اور ایذا کہتے ہیں ۔ ودیا یعنی عرفان ہی سے کام اور کرودھ کو جیتا جاسکتا ہے ۔ اس کے لئے راستہ تیاگ یعنی ترک اور ویوسائے یعنی مجاہدہ کا راستہ ہے ۔ انہیں کو ویراگ اور ابھیاس بھی کہتے ہیں یعنی دنیا سے ہٹ کر آتما یعنی حق کی طرف دل کو لگانا ۔ یہ دنیا سے ہٹنا دنیا کے فرائض سے بھاگنا نہیں ہے' کیونکہ سچے تیاگ یعنی ترک سے ہی سرو بھوت ہت یعنی خدمت خلق کی لگن پیدا ہوتی ہے ۔

منو اسمرتی میں لکھا ہے :—
"اپنی آتما کے اندر سب کو دیکھو۔ سچ اور جھوٹ ٹھیک اور غلط سب اسی کے اندر ہیں ۔ جو کوئی آتما کے اندر سب کو دیکھتا ہے اس کا من پھر پاپ کی طرف نہیں جاسکتا ۔"

انجیل میں لکھا ہے :—
" اپنے پورے دل' پوری آتما اور پورے من سے ایشور سے پریم کرو اور اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پریم کرو جیسا اپنے ساتھ ۔ ان دونوں آگیاؤں پر ہی سارا دھرم اور پرانے سب پیغمبروں کے اپدیش انحصار کرتے ہیں۔" (میتھیو).

انجیل میں اور لکھا ہے :—
" جو تمہیں تکلیف پہنچائیں انہیں آشیرباد دو' کسی کو بد دعا نہ دو۔ جو خوش ہیں اُن کے ساتھ خوشی مناؤ

असली कुफ़ है. सूफ़ियों के मुताबिक़ कुफ़ के भी अलग अलग दरजे हैं. शरीअत के मैदान में गुनाह में फंसना ही कुफ़ या शिर्क है. तरीक़त के मैदान में दुनिया से मौहब्बत करना कुफ़ या शिर्क है. हक़ीक़त के मैदान में ग़ैर यानी मा सिवा अल्लाह के ? वजूद को मानना ही कुफ़ और शिर्क है. इसीलिये सूफ़ी किताब गुलशने राज़ में लिखा है : —

कि रा कुफ़ हक़ीक़ी शुद पदीदार
ज़ इसलामे मजाज़ी गश्त बेज़ार.

यानी जिस किसी ने असली कुफ़ को समझ लिया वह फिर इस इसलाम मजाज़ी से बेज़ार यानी अलग हो गया.

इसलाम मजाज़ी से मतलब ऊपर के इसलाम यानी रीत रिवाज के इसलाम से है. असल इसलाम अपनी ख़ुदी को मिटाता है. इसीलिये एक सूफ़ी ने कहा है :—

नमाज़े ज़ाहिदां क़द्दो सिजूद अस्त—
नमाज़े आशिक़ां तरके वजूद अस्त

यानी ज़ाहिद यानी रीत रिवाज में फंसे हुए मुसलमानों की नमाज़ कभी सीधे खड़े होना और कभी सजदे में झुकना है जो नमाज़ में किया जाता है और आशिक़ों यानी प्रेमियों की नमाज़ अपनी ख़ुदी यानी अहंकार को मिटाना है.

ब्रह्म माया के यानी ख़ुदा से ख़ुदी के असर में आ कर ही जीव यानी एक अलग वजूद हो जाता है. परमात्मा ही अविद्या के असर से जीव आत्मा दिखाई देने लगता है. आज़ाद असीर हो जाता है. इसी लिये फ़रिश्ते और शैतान के मेल का नाम इनसान है हममें से हर एक को अपने अन्दर फ़रिश्ता और शैतान दोनों एक साथ दिखाई दे सकते हैं. वही चेहरा कभी मुसकराता है और कभी गुर्राता है. एक सूफ़ी ने कहा है कि :—

"दरिन्दों से भी तुझे हिस्सा मिला है और फ़रिश्तों से भी. दरिन्दों की हद से निकल जा तो तू फ़रिश्तों की भी हद से ऊपर उठ जायगा."

यही बात गीता में दूसरी तरह कही गई है.

अंगरेज़ शायर टेनीसन ने कहा है :—"हम अपनी छोटी छोटी ख़ुदियों को मार कर उनकी सीढ़ी बना कर धीरे धीरे ऊपर की रूहानी मनज़िलों तक पहुंच सकते हैं."

यह अहंकार या ख़ुदी अपने को तीन शकलों में ज़ाहिर करती है. यह तीन ख़ाहिशें हैं. वेदान्त में इनके नाम हैं. एक 'स्याम' यानी मैं हमेशा रहूं, दूसरे 'बहु-स्याम' यानी मैं बहुत होजाऊं, तीसरे 'बहुधा स्याम' यानी मैं बहुत तरह हो जाऊं. वेदान्त में ही इनके नाम लोकेषना, वित्तेषना और दारेषना भी हैं. बौद्ध धर्म में इन्हें भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा और काम तृष्णा कहा गया है. जैन धर्म में इन्हें आहार संज्ञा, परिग्रह संज्ञा और मैथुन संज्ञा कहते हैं. सूफ़ी लोग इसी को ज़मीन, ज़र और ज़न की

اصلی کفر ہے۔ صوفیوں کے مطابق کفر کے بھی الگ الگ درجے ہیں۔ شریعت کے میدان میں گناہ میں پھنسنا ہی کفر یا شرک ہے۔ طریقت کے میدان میں دنیا سے محبت کرنا کفر یا شرک ہے۔ حقیقت کے میدان میں غیر یعنی ماسوا اللہ کے ؟ وجود کو ماننا ہی کفر اور شرک ہے۔ اسی لئے صوفی کتاب گلشن راز میں لکھا ہے:—

کہ را کفر حقیقی شد پدیدار
ز اسلام مجازی گشت بیزار

یعنی جس کسی نے اصلی کفر کو سمجھ لیا وہ پھر اس اسلام مجازی سے بیزار یعنی الگ ہوگیا ہے۔

اسلام مجازی سے مطلب اوپر کے اسلام یعنی ریت رواج کے اسلام سے ہے۔ اصل اسلام اپنی خودی کو مٹاتا ہے۔ اسی لئے ایک صوفی نے کہا ہے :—

نماز زاہداں قدو سجود است
نماز عاشقاں ترک وجود است

یعنی زاہد یعنی ریت رواج میں پھنسے ہوئے مسلمانوں کی نماز کبھی سیدھے کھڑے ہونا اور کبھی سجدے میں جھکنا ہے جو نماز میں کیا جاتا ہے اور عاشقوں یعنی پریمیوں کی نماز اپنی خودی یعنی اہنکار کو مٹانا ہے۔

برہم مایا کے یعنی خدا سے خودی کے اثر میں آکر ہی جیو یعنی ایک الگ وجود ہو جاتا ہے۔ پرماتما ہی اودیا کے اثر سے جیو آتما دکھائی دینے لگتا ہے۔ آزاد اسیر ہو جاتا ہے۔ اسی لئے فرشتے اور شیطان کے میل کا نام انسان ہے۔ ہم میں سے ہر ایک کو اپنے اندر فرشتہ اور شیطان دونوں ایک ساتھ دکھائی دے سکتے ہیں۔ وہی چہرہ کبھی مسکراتا ہے اور کبھی غراتا ہے۔ ایک صوفی نے کہا ہے کہ :—

"درندوں سے بھی تجھے حصہ ملا ہے اور فرشتوں سے بھی۔ درندوں کی حد سے نکل جا تو تو فرشتوں کی بھی حد سے اوپر اٹھ جائےگا۔"

یہی بات گیتا میں دوسری طرح کہی گئی ہے۔

انگریز شاعر ٹینی سن نے کہا ہے :—"ہم اپنی چھوٹی چھوٹی خودیوں کو مار کر ان کی سیڑھی بناکر دھیرے دھیرے اوپر کی روحانی منزلوں تک پہنچ سکتے ہیں۔"

یہ اہنکار یا خودی اپنے کو تین شکلوں میں ظاہر کرتی ہے۔ یہ تین خواہشیں ہیں۔ ویدانت میں ان کے نام ہیں۔ ایک 'سیام' یعنی میں ہمیشہ رہوں' دوسرے 'بہو سیام' یعنی میں بہت ہوجاؤں' تیسرے 'بہودھا سیام' یعنی میں بہت طرح ہوجاؤں۔ ویدانت میں ہی ان کے نام لوکیشنا' وتیشنا اور داریشنا' بھی ہیں۔ بودھ دھرم میں انہیں بھوترشنا' وبھو ترشنا اور کام ترشنا کہا گیا ہے۔ جین دھرم میں انہیں آہار سنگیا' پری گرہ سنگیا' اور میتھن سنگیا کہتے ہیں۔ صوفی لوگ اسی کو زمین' زر اور زن کی

पुन और पाप

(डाक्टर भगवानदास)

ईसाई धर्म में 'सात अमर अच्छाइयां' यानी सात ख़ास पुन के काम गिनाए गए हैं. वह सात यह हैं :—श्रद्धा यानी एतक़ाद, उम्मीद, दया और रवादारी, इनसाफ़, समझदारी, बुरी चीज़ों से परहेज़ और धीरज. वेदान्त में छै साधन बताए गए हैं. साधन का मतलब है वह बातें जो आदमी को ऊपर उठने में मदद दें. वह छै यह हैं. एक दया भरी शान्ति, दूसरे अपने ऊपर क़ाबू रख कर बुराइयों से बचना, तीसरे बैराग यानी बेलाग रहना, चौथे बर्दाश्त सब्र या धीरज, पांचवें श्रद्धा और छटे सब से मेल रखते हुए एकाग्रता यानी यकसुई. ईसाई धर्म में सात घातक पाप माने जाते हैं. वह यह हैं :—ग़रूर, लालच, शहवत यानी काम, ग़ुस्सा, बहुत खाना, हसद यानी ईर्षा और क़ाहिली. वेदान्त में आदमी के छै दुशमन गिनाए गए हैं. वह छै यह हैं:-काम यानी शहवत, क्रोध यानी ग़ुस्सा, लोभ, मोह, घमंड और हसद यानी दूसरों से जलन. मोह के अन्दर ज़ियादा खाना, सुस्ती और डर तीनों शामिल हैं.

मौलाना रूम ने आज से सात सौ बरस पहले इन सात या छै बुराइयों की जगह दो गुनाह सब गुनाहों की जड़ बताए हैं. उनका कहना है कि :—"ख़श्म और शहवत यानी क्रोध और काम आदमी को अन्धा कर देते हैं और उसकी रूह को सीधे रास्ते से भटका कर ग़लत रास्ते पर ले जाते हैं."

श्री कृश्न ने गीता में आज से पांच हज़ार बरस पहले कहा था कि :—"राग और द्वेष यानी कुछ चीज़ों से बेजा लगाव और कुछ चीज़ों से बेजा अलगाव आदमी के तरक़्क़ी के रास्ते की सब से बड़ी रुकावटें हैं." एक दूसरी जगह गीता में कहा गया है :—"काम और क्रोध ही इस दुनिया में आदमी के सब से बड़े दुशमन हैं." श्री कृश्न के शब्द और मौलाना रूम के शब्द दोनों एक दूसरे की गूंज मालूम होते हैं.

योग शास्त्र के मुताबिक़ अहंकार यानी ख़ुदी ही इन सब बुराइयों और पापों की जड़ है. काम और क्रोध दोनों इसी से पैदा होते हैं. अहंकार की जड़ अविद्या है. अविद्या उस वहम या धोके को कहते हैं कि यह हाड़ मांस का छोटा सा जिस्म ही मैं हूं और मैं और दूसरे सब अलग अलग हैं और हम सब का असल असलियत यानी हक़ से अलहदा कोई अलग वजूद है. हमारे इस वहम या अविद्या से ही हमारी सब बुराइयां पैदा होती हैं. यह अविद्या ही

پن اور پاپ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

عیسائی دھرم میں 'سات امر اچھائیاں' یعنی سات خاص پن کے کام گنائے گئے ہیں۔ وہ سات یہ ہیں:—شردھا یعنی اعتقاد، اُمید، دیا اور رواداری، انصاف، سمجھداری، بری چیزوں سے پرہیز اور دھیرج۔ ویدانت میں چھ سادھن بتائے گئے ہیں۔ سادھن کا مطلب ہے وہ باتیں جو آدمی کو اوپر اُٹھنے میں مدد دیں۔ وہ چھ یہ ہیں۔ ایک دیا بھری شانتی، دوسرے اپنے اوپر قابو رکھکر برائیوں سے بچنا، تیسرے ویراگ یعنی بےلاگ رہنا، چوتھے برداشت صبر یا دھیرج، پانچویں شردھا اور چھٹے سب سے میل رکھتے ہوئے ایکاگرتا یعنی یکسوئی۔ عیسائی دھرم میں سات گھاتک پاپ مانے جاتے ہیں وہ یہ ہیں:—غرور، لالچ، شہوت یعنی کام، غصہ، بہت کھانا، حسد یعنی ایرشا اور کاہلی۔ ویدانت میں آدمی کے چھ دشمن گنائے گئے ہیں۔ وہ چھ یہ ہیں:—کام یعنی شہوت، کرودھ یعنی غصہ، لوبھ، موہ، گھمنڈ اور حسد یعنی دوسروں سے جلن۔ موہ کے اندر زیادہ کھانا، سستی اور ڈر تینوں شامل ہیں۔

مولانا روم نے آج سے سات سو برس پہلے ان سات یا چھ برائیوں کی جگہ دو گناہ سب گناہوں کی جڑ بتائے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ :—"خشم اور شہوت یعنی کرودھ اور کام آدمی کو اندھا کر دیتے ہیں اور اُس کی روح کو سیدھے راستے سے بھٹکا کر غلط راستے پر لے جاتے ہیں۔"

شری کرشن نے گیتا میں آج سے پانچ ہزار برس پہلے کہا تھا کہ :—"راگ اور دویش یعنی کچھ چیزوں سے بیجا لگاؤ اور کچھ چیزوں سے بیجا الگاؤ آدمی کی ترقی کے راستے کی سب سے بڑی رکاوٹیں ہیں۔" ایک دوسری جگہ گیتا میں کہا گیا ہے :—"کام اور کرودھ ہی اِس دنیا میں آدمی کے سب سے بڑے دشمن ہیں۔" شری کرشن کے شبد اور مولانا روم کے شبد دونوں ایک دوسرے کی گونج معلوم ہوتے ہیں۔

یوگ شاستر کے مطابق اہنکار یعنی خودی ہی اِن سب برائیوں اور پاپوں کی جڑ ہے۔ کام اور کرودھ دونوں اِسی سے پیدا ہوتے ہیں۔ اہنکار کی جڑ اودیا ہے۔ اودیا اُس وہم یا دھوکے کو کہتے ہیں کہ یہ ہاڑ مانس کا چھوٹا سا جسم ہی میں ہوں اور میں اور دوسرے سب الگ الگ ہیں اور ہم سب کا اصل اصلیت یعنی حق سے علیحدہ کوئی الگ وجود ہے۔ ہمارے اِس وہم یا اودیا سے ہی ہماری سب برائیاں پیدا ہوتی ہیں۔ یہ اودیا ہی

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अक्तूबर, सन '53 नम्बर 4

جلد 15 اکتوبر' سن '53 نمبر 4

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

बापू की क़ुरबानी

(प्रेम धवन)

धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
भूल नहीं सकती है दुनिया तेरी अमर कहानी
हम सब तेरे क़ातिल हैं, हम ख़ूनी तेरे बापू
दाग़ कभी यह धो न सकेंगे सारी क़ौम के आंसू
पाप कभी यह धो न सकेगा गंगा का भी पानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
यह तेरा ही ख़ून नहीं है, यह ख़ून है मानवता का
ख़ून अमन का, आज़ादी का, दुखियारी जनता का
सब की आंख में आंसू हैं सब के मुख पर वीरानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
तू अंधियारे भारत में उजियाला ले कर आया
घर घर जाकर तू ने आज़ादी का दीप जलाया
तुझ से हमने अपनी यह क़ीमत पहचानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
ने सीना तान के शाही ताक़त को ललकारा
'छोड़ो भारत' 'छोड़ो भारत' गूंजा तेरा नारा
जेलों में बन गई बुढ़ापा तेरी वीर जवानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
री क़ीमत पूछे कोई आज नोआखाली से
सा फूल है टूटा अपने गुलशन की डाली से
तू ने सब का दुख सुख बांटा, सब की पीड़ा जानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
लती आग में तूने फूट की आग बुझाई
पनी जान गंवा के लाखों की है जान बचाई
आख़िर सच की जीत हुई, और हार झूट ने मानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी
मर रहेगा अमर रहेगा, मौत से जो लड़ता है
ादी के नाम पे मरने वाला कब मरता है
जब तक दुनिया है गूंजेगी तेरी अमृत बानी
धन्य धन्य ए गांधी बापू! धन्य तेरी क़ुरबानी

باپو کی قربانی

(پریم دھون)

دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
بھول نہیں سکتی ہے دنیا تیری امر کہانی
ہم سب تیرے قاتل ہیں' ہم خونی تیرے باپو
داغ کبھی یہ دھو نہ سکیں گے ساری قوم کے آنسو
پاپ کبھی یہ دھو نہ سکے گا گنگا کا بھی پانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
یہ تیرا ہی خون نہیں ہے' یہ خون ہے مانوتا کا
خون امن کا' آزادی کا' دکھیاری جنتا کا
سب کی آنکھ میں آنسو ہیں سب کے مکھ پر ویرانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تو اندھیارے بھارت میں اجیالا لے کر آیا
گھر گھر جا کر تو نے آزادی کا دیپ جلایا
تجھ سے ہم نے اپنی یہ قیمت پہچانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تو نے سینہ تان کے شاہی طاقت کو للکارا
'چھوڑو بھارت' 'چھوڑو بھارت' گونجا تیرا نارا
جیلوں میں بن گئی بڑھاپا تیری ویر جوانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
تیری قیمت پوچھے کوئی آج نواکھالی سے
کیسا پھول ہے ٹوٹا اپنے گلشن کی ڈالی سے
تو نے سب کا دکھ سکھ بانٹا' سب کی پیڑا جانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
جلتی آگ میں تو نے پھوٹ کی آگ بجھائی
اپنی جان گنوا کے لاکھوں کی ہے جان بچائی
آخر سچ کی جیت ہوئی' اور ہار جھوٹ نے مانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی
امر رہیگا امر رہیگا' موت سے جو لڑتا ہے
آزادی کے نام پہ مرنے والا کب مرتا ہے
جب تک دنیا ہے گونجے گی تیری امرت بانی
دھنیہ دھنیہ اے گاندھی باپو! دھنیہ تیری قربانی

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी | ہندستانی کلچر سوسائٹی

का | کا

माहवारी परचा | ماھواری پرچا

अक्तूबर 1953 اکتوبر

चन्दा—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

چندہ—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے.

मैनेजर | مینیجر
नया हिन्द | 'نیا ھند'
145, मुट्ठीगंज इलाहाबाद. | 145، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर - ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین مظفر حسن بشمبھر ناتھ سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

*　*　*　*　*

इस नम्बर के खास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय

ہماری رائے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद　ہندستانی کلچر سوسائٹی' الہ آباد

अक्तूबर 1953 اکتوبر

कीमत एक आना　قیمت ایک آنہ

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की माँग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब में इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी–एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है–की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ापरस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी माँग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہو گیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہو سکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلے گا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائیں گے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना :प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों ा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, वरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में स का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; स प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल . गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; टरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद मान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० ; पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम ाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया न्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से म्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम रा सकेंगे.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

[illegible]

नोट—ये किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं   نوٹ: یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم ۔ اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم ۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم ۔ اے۔ ایل ایل ۔ بی ۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. [illegible]	,,	0	8	0	,,	28. [illegible]
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—   ملنے کا پتہ—

मैनेजर 'नया हिन्द'   مینیجر 'نیا ہند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.   145، مٹھی گنج' الہ آباد-3

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक आंखों देखा बर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج . اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949–50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

मिलने का पता—
संगम, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—
سنگم، نیا ہند، 145، مٹھی گنج، الہ آباد .

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' -46, [illegible], इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلےگا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لیا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنےکی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر [illegible] الہ آباد۔

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان اِنسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

۱۴۵ مٹھی گنج، الہ آباد.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूझ के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

ज़ाहिरी दिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास की सदी कमीशन.

मिलने का पता—
मासिक 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک — شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے، اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی۔

"ان کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادوتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

"جہاں تک بھاو کا سمبندھ ہے کویتائیں اچ استر کی ہیں۔"

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

"جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں۔"

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

"ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اس سنگرہ کا آنند لینگے اور ان سے پریرنا گرہن کرینگے یہ نشچت ہے۔"

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

"ہم ان کی (کویتاؤں کی) شکتی، تازگی اور سوجھ کے قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے۔"

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

"جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے۔"—'نیا سماج' کلکتہ

ظاہری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد، بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی۔ دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن۔

ملنے کا پتہ—
ماہنامہ 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें खरीदने वालों को और बुकसेलरों को खास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा कागज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندوستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا ۔ رایل آٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپئے ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ہے ۔ صفحے 25 دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج ' الہ آباد ۔

[illegible] गये, हमारे [illegible] कट कर [illegible] हो गये, हमारे यहां दूध घी का कल हो गया और हम इनसानियत से गिर गये ? क्यों—सिर्फ़ इस वजह से कि हमने धर्म रूपी नारियल के ऊपरी खोपरे को तो पकड़ लिया मगर अन्दर की असली गरी पर कोई ध्यान नहीं दिया. अफ़सोस इस बात का है कि गवरनर श्री मुन्शी ने वैसा ही किया.

गवरनर मुन्शी जैसे लोगों को समझना चाहिये कि हमारे गाय बैलों, जंगलों और गांवों की तबाही का असली कारन बहुत से वह बड़े बड़े कारखाने हैं जहां खालें पकती और जूते बनते हैं, जहां मशीनों से तेल पेरा जाता और बनस्पती बनता है, वह बड़े बड़े पुतली घर हैं जिन्होंने करोड़ों कारीगरों को बरबाद कर दिया, वह बड़े ट्रैक्टर और अमरीकी खाद और ट्यूब वैल हैं जो ज़मीन को बरबाद करते और तालाबों, कुओं को सुखा देते हैं, वह फ़ौजें हैं जो जंगलों को जला डालती हैं. आज देश में जो निज़ाम हकूमत चल रहा है उसके अनुसार गाय बैल और जंगलों की ज़रूरत ही नहीं रह जाती. बनावटी खाद, बनावटी घी, बनावटी चावल वग़ैरा के आगे गोबर या देशी घी या अपने धान को कौन पूछे ! इस नई तहज़ीब में क्या गांव, क्या गाय, क्या जंगल, सभी बे-मानी हैं और वैलफ़ेयर स्टेट के लिये मानो रुकावट हैं ! इसलिये अगर गवरनर मुन्शी सचमुच यह चाहते हैं कि यहां के गांव, गाय और जंगल फूले फलें तो उन्हें अपनी हकूमत का तर्ज़ बदलना होगा और उसका मुंह पच्छिम से हटा कर पूरब की तरफ़ मोड़ना पड़ेगा. अगर ऐसा नहीं किया जाता तो जंगल सूखते जायंगे, राजस्थान का रेगिस्तान बढ़ता चला आएगा और गिरि गोवरधन की पूजा पाधा पुरोहितों द्वारा सीधे सादे बेगुनाहों को मूंडने लूटने का ज़रिये बनी रहेगी.

हमारे दिलों और दिमाग़ों के कोनों में अकसर कई इस तरह की इच्छाएं और भावनाएं छिपी दबी पड़ी रहती हैं जिनसे कभी कभी हम ख़ुद भी परिचित नहीं होते. हमें डर है कि सोमनाथ के बड़प्पन को फिर से क़ायम करना और उसके झूठे या सच्चे इतिहास को ताज़ा रखना, काशी में दो दो सौ ब्राह्मणों के पैर धोना और उन्हें दक्षिना देना, और इसी तरह गिरि गोवरधन की पूजा करना जैसे कामों के पीछे न भारत की जनता के सच्चे हित की चिन्ता इतनी प्रबल होती है और न हिन्दू धर्म में श्रद्धा इतनी गहरी होती है जितनी यह चिन्ता और यह इच्छा कि भारत सरकार का सेक्युलर पन किसी तरह बदले और भारत एक हिन्दू साम्प्रदायिक राज दिखाई देने लगे. अगर हमारा यह शक किसी अंश में भी ठीक है—और हमें यक़ीन है कि है—तो इसमें शक नहीं कि यह हम सब के लिये बड़ी ही शर्म और दुख की चीज़ है. साम्प्रदायिकता का यह भूत हमें कब तक सताता रहेगा !

23. 9. '53 —सुरेश रामभाई

میں قلم ہوگیا' ہمارے جنگل کٹ کر غائب ہوگئے' یہاں دودھ گھی کا کال ہوگیا اور ہم انسانیت سے گرگئے ؟ کیوں—صرف اس وجہ سے کہ ہم نے دھرم روپی ناریل کے اوپری کھوپرے کو تو پکڑ لیا مگر اندر کی اصلی گری پر کوئی دھیان نہیں دیا. افسوس اس بات کا ہے کہ گورنر شری منشی نے ویسا ہی کیا.

گورنر منشی جیسے لوگوں کو سمجھنا چاہئے کہ ہمارے گائے بیلوں' جنگلوں اور گاؤں کی تباہی کا اصلی کارن بہت سے وہ بڑے بڑے کارخانے ہیں جہاں کھالیں پکتی اور جوتے بنتے ہیں' جہاں مشینوں سے تیل پیرا جاتا اور بناسپتی بنتا ہے' وہ بڑے بڑے پتلی گھر ہیں جنہوں نے کروڑوں کاریگروں کو برباد کردیا' وہ بڑے ٹریکٹر اور امریکی کھاد اور ٹیوب ویل ہیں جو زمین کو برباد کرتے اور تالابوں' کنوؤں کو سکھا دیتے ہیں' وہ فوجیں ہیں جو جنگلوں کو جلا ڈالتی ہیں. آج دیش میں جو نظام حکومت چل رہا ہے اس کے انوسار گائے بیل اور جنگلوں کی ضرورت ہی نہیں رہ جاتی. بناوٹی کھاد' بناوٹی گھی' بناوٹی چاول وغیرہ کے آگے گوبر یا دیشی گھی یا اپنے دھان کو کون پوچھے ! اس نئی تہذیب میں کیا گاؤں' کیا گائے' کیا جنگل' سبھی بے معنی ہیں اور ویلفیئر اسٹیٹ کے لئے مانو رکاوٹ ہیں ! اس لئے اگر گورنر منشی سچ مچ یہ چاہتے ہیں کہ یہاں کے گاؤں' گائے اور جنگل پھولے پھلیں تو انہیں اپنی حکومت کا طرز بدلنا ہوگا اور اس کا منہ پچھم سے ہٹاکر پورب کی طرف موڑنا پڑیگا. اگر ایسا نہیں کیا جاتا تو جنگل سوکھتے جائینگے' راجستھان کا ریگستان بڑھتا چلا آئیگا اور گری گووردھن کی پوجا پادھا پروہتوں دوارا سیدھے سادے بے گناہوں کو مونڈنے لوٹنے کا ذریعہ بنی رہیگی.

ہمارے دلوں اور دماغوں کے کونوں میں اکثر کئی اس طرح کی اچھائیں اور بھاونائیں چھپی دبی پڑی رہتی ہیں جن سے کبھی کبھی ہم خود بھی پریچت نہیں ہوتے. ہمیں ڈر ہے کہ سومناتھ کے بڑپن کو پھر سے قائم کرنا اور اس کے جھوٹے یا سچے اتہاس کو تازہ رکھنا' کاشی میں دو دو سو براہمنوں کے پیر دھونا اور انہیں دکشنا دینا' اور اسی طرح گری گووردھن کی پوجا کرنا جیسے کاموں کے پیچھے نہ بھارت کی جنتا کے سچے ہت کی چنتا اتنی پربل ہوتی ہے اور نہ ہندو دھرم میں شردھا اتنی گہری ہوتی ہے جتنی یہ چنتا اور یہ اچھا کہ بھارت سرکار کا سیکولر پن کسی طرح بدلے اور بھارت ایک ہندو سامپردائک راج دکھائی دینے لگے. اگر ہمارا یہ شک کسی انش میں بھی ٹھیک ہے—اور ہمیں یقین ہے کہ ہے—تو اس میں شبہ نہیں کہ یہ ہم سب کے لئے بڑی ہی لجا اور دکھ کی چیز ہے. سامپردائکتا کا یہ بھوت ہمیں کب تک ستاتا رہیگا !

—سریش رامبھائی 23 . 9 . 53

पर इसरार करने से हम इत्तफ़ाक़ करते हैं और मानते हैं कि इस काम में जनता को पूरा सहयोग देना चाहिये और सरकार को तो चाहिये ही कि कोई कोशिश बाक़ी न रखे.

पर सवाल यही है कि वह कोशिश किस शकल में हो. गवरनर की हैसियत से श्री मुन्शी ने इस मौक़े पर जो स्पीच दी उसके कुछ जुमले हम नीचे देते हैं :

"इस महोत्सव का मालिक (Presiding Diety) श्री कृष्ण है क्यों कि श्री कृष्ण को जंगल प्यारे थे. वृन्दावन में वह गऊएँ चराते थे. कदम बन में गोपियों के साथ खेलते थे और गिरिराज गोवरधन में अपने सखाओं के साथ उन्होंने अपनी जवानी गुज़ारी थी ?

'हम हिन्दुस्तानियों को पेड़ एक पाक चीज़ है.'

'पेड़ लगाने और सींचने से बढ़ कर पूजा का कोई दूसरा रास्ता नहीं है."

गवरनर की हैसियत से ही उन्होंने वह पूजा की जिस पर 'नेशनल हेरल्ड' से भी न रहा गया. अगर निजी हैसियत से कोई हिन्दू भाई अपने घर में बैठकर इस तरह की बातें करे और पंडित जी के इशारे पर आचमन आदि करे तो किसी को भी कोई शिकायत नहीं हो सकती. श्री मुन्शी ख़ानगी तौर पर (न कि गवरनर के रंग ढंग, शान और रोब के साथ) अगर गिरि गोवरधन के मन्दिर में या और कहीं पूजा करें किसी को भी कोई शिकायत नहीं हो सकती. पर गवरनर बन कर और आम जनता के ख़रचे पर इस तरह पूजा करना और ऐसी बातें करना किस शासक को शोभा दे सकता है ? जब कि उसकी पूजा में पेड़ पत्थरों की पूजा करने वाले और पूजा नहीं करने वाले, श्री कृष्ण को अवतार मानने वाले और नहीं मानने वाले, ईश्वर या ख़ुदा में यक़ीन रखने वाले और नहीं रखने वाले सभी तरह के लोग शामिल हैं ? हमें नहीं मालूम कि सखाओं के साथ जवानी गुज़ारने की या गोपियों के साथ खेलने का या चुरा चुरा कर मक्खन खाने का आदर्श गवरनर साहब हमारे आज के नौजवानों के आगे बनाए रखना चाहते हैं या नहीं.

न हमें यही मालूम कि गवरनर साहब की निगाह में पेड़ अगर पाक हैं तो क्या आदमी से भी ज़ियादा पाक हैं. और न यही मालूम कि भगवान की पूजा करने के लिये गवरनर साहब पेड़ लगवाना ज़ियादा अच्छा मानते हैं या सिर का पसीना चोटी तक बहा कर मेहनत की कमाई खाना.

गवरनर श्री मुन्शी जैसे इतिहास के जानकार यह ज़रूर जानते होंगे कि हिन्दुस्तान के घरों में तुलसी की पूजा लगातार होती रही है और होती है, पीपल के पेड़ के आगे यहाँ के लोग हाथ जोड़ते रहे हैं और अब भी जोड़ते हैं, श्री कृष्ण का जन्म दिन मनाते रहे हैं और अब भी हर शहर और हर गाँव में मनाते हैं. लेकिन फिर भी हमारा

پر اصرار کرنے سے ہم اتفاق کرتے ہیں اور مانتے ہیں کہ اس کام میں جنتا کو پورا سہیوگ دینا چاہئے اور سرکار کو تو چاہئے ہی کہ کوئی کوشش اٹھا نہ رکھے ۔

پر سوال یہی ہے کہ وہ کوشش کس شکل میں ہو ۔ گورنر کی حیثیت سے شری منشی نے اس موقعے پر جو اسپیچ دی اس کے کچھ جملے ہم نیچے دیتے ہیں :

" ون مہوتسو کا مالک (Presiding Diety) شری کرشن ہے کیونکہ شری کرشن کو جنگل پیارے تھے ۔ ورندا بن میں وہ گائیں چراتے تھے' کدم بن میں گوپیوں کے ساتھ کھیلتے تھے اور گری راج گووردھن میں اپنے سکھاؤں کے ساتھ انہوں نے اپنی جوانی گذاری تھی؟

'ہم ہندستانیوں کو پیڑ ایک پاک چیز ہے .'

' پیڑ لگانے اور سینچنے سے بڑھکر پوجا کا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے ."

گورنر کی حیثیت سے ہی انہوں نے وہ پوجا کی جس ' نیشنل ہیرالڈ ' سے بھی نہ رہا گیا ۔ اگر نجی حیثیت سے کوئی ہندو بھائی اپنے گھر میں بیٹھ کر اس طرح کی باتیں کرے اور پنڈت جی کے اشارہ پر آچمن آدی کرے تو کسی کو بھی کوئی شکایت نہیں ہو سکتی ۔ شری منشی خانگی طور پر (نہ کہ گورنر کے رنگ ڈھنگ' شان اور رعب کے ساتھ) اگر گری گووردھن کے مندر میں یا اور کہیں پوجا کریں کسی کو بھی کوئی شکایت نہیں ہو سکتی ۔ پر گورنر بن کر اور عام جنتا کے خرچہ پر اس طرح پوجا کرنا اور ایسی باتیں کرنا کس شاسک کو شوبھا دے سکتا ہے ؟ جب کہ اسکی پوجا میں پیڑ پتھروں کی پوجا کرنے والے اور پوجا نہیں کرنے والے' شری کرشن کو اوتار ماننے والے اور نہیں ماننے والے' ایشور یا خدا میں یقین رکھنے والے اور نہیں رکھنے والے سبھی طرح کے لوگ شامل ہیں؟ ہمیں نہیں معلوم کہ سکھاؤں کے ساتھ جوانی گذارنے کی یا گوپیوں کے ساتھ 'کھیلنے کا یا چرا چرا کر مکھن کھانے کا آدرش گورنر صاحب ہمارے آج کے نوجوانوں کے آگے بنائے رکھنا چاہتے ہیں یا نہیں ۔

نہ ہمیں یہی معلوم کہ گورنر صاحب کی نگاہ میں پیڑ اگر پاک ہیں تو کیا آدمی سے بھی زیادہ پاک ہیں ۔ اور نہ یہی معلوم کہ بھگوان کی پوجا کرنے کے لئے گورنر صاحب پیڑ لگوانا زیادہ اچھا مانتے ہیں یا سر کا پسینہ چوٹی تک بہاکر محنت کی کمائی کھانا ۔

گورنر شری منشی جیسے اتہاس کے جانکار یہ ضرور جانتے ہونگے کہ ہندستان کے گھروں میں تلسی کی پوجا لگاتار ہوتی رہی ہے اور ہوتی ہے' پیپل کے پیڑ کے آگے یہاں کے لوگ ہاتھ جوڑتے رہے ہیں اور اب بھی جوڑتے ہیں' شری کرشن کا جنم دن مناتے رہے ہیں اور اب بھی ہر شہر اور ہر گاؤں میں مناتے ہیں ۔ لیکن پھر بھی ہمارا

[illegible] इस देश के [illegible], व्योपारियों, समाज [illegible], अख़बारों के के एडीटरों, पुलिस व इण्डस्ट्री मिनिस्टरों, प्लानिंग कमीशन के मेम्बरों, सूबों के मुख्य मंत्रियों, पार्लियामेन्ट के मेम्बरों और प्रधान मंत्री के आगे पेश करते हैं. अपने देश के हाकिमों और सरपरस्तों से हमारी विनती है कि इस चिट्ठी की रोशनी में वह हिन्दुस्तान के मौजूदा रोगों को ठीक ठीक पहचानें और फिर उसका सही इलाज तलाश करें. बड़ी बड़ी मशीनों और योजनाओं के फेर में फंस कर हमारे देश में न केवल बेरोज़गारी की नई पौध ही खड़ी हो रही है, पुराने रोज़गार से लगे हुए लोग भी तबाह होते जा रहे हैं. समय है कि देश के समझदार लोग चाहे सरकार में हों या उसके बाहर—ग़लत फ़ैशन के चक्कर में न पड़ कर ज़माने की मांग को—देहाती धन्धों या ग्रामोद्योग की पुकार को—सुनें और देश में फैलते हुए जुरमों और समाज में बढ़ने वाली नाइनसाफ़ी और इनसान इनसान के बीच खड़ी हो जाने वाली दीवारों को ख़तम करें.

18. 9. '53 —सुरेश रामभाई

गिरिराज गोवरधन की पूजा

इस महीने की 2 तारीख़ वाले, लखनऊ के प्रसिद्ध दैनिक 'नेशनल हेरल्ड' में एक तसवीर छपी है जिस में इस सूबे के गवरनर श्री कन्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी और उनकी धर्म पत्नी एक पंडित जी के साथ बैठे पूजा कर रहे हैं. तसवीर के नीचे लिखा है कि "पिछली जन्माष्टमी के मौक़े पर (तारीख़ 31 अगस्त को) मथुरा में गिरीराज गोवरधन पर वन महोत्सव का उद्घाटन करने के पहले गवरनर श्री मुन्शी पूजा पर.' तसवीर के ऊपर 'नेशनल हेरल्ड' ने बहुत ही मुनासिब सुर्ख़ी दी है "हमारी सेकुलर स्टेट !" ऐसी बामानी और बाजवाब सुर्ख़ी के लिये हम अपने इस सहयोगी को बधाई देते हैं.

तसवीर के नीचे डेढ़ कालम में 'नेशनल हेरल्ड' ने वह रिपोर्ट छापी है जो इस सिलसिले में उत्तर प्रदेश के सूचना महकमे के संचालक ने उन्हें भेजी. उसमें ज़ियादातर हिस्सा श्री मुन्शी की स्पीच है. हमने ध्यान के साथ उस रिपोर्ट को पढ़ा. श्री मुन्शी की इस बात से हम सहमत हैं कि "राजस्थान की गरम हवाएं और वहां का बढ़ता हुआ रेगिस्तान हमारे सूबे के मथुरा और आगरा ज़िलों को, जो ब्रजभूमि नाम से सरनाम हैं, तबाह किये डाल रहा है और इस बढ़ाव को रोकने की सख़्त ज़रूरत है." श्री मुन्शी की इस बात से भी हम सहमत हैं कि "आज भी हिन्दुस्तान में जंगलों का रक़बा कुल ज़मीन का 20 फ़ी सदी रह गया है उसे बढ़ा कर 33 पर लाया जाए. इसलिये ज़रूरी है कि ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाए जाएं." श्री मुन्शी के इस

چٹھی ہم دیش کے صدر سے لیکر ... اور کاشتکاروں، بیوپاریوں، سماج سدھارکوں، اخباروں کے ایڈیٹروں، پولیس و انڈسٹری منسٹروں، پلاننگ کمیشن کے ممبروں، صوبوں کے مکھیہ منتریوں، پارلیامنٹ کے ممبروں اور پردھان منتری کے آگے پیش کرتے ہیں۔ اپنے دیش کے حاکموں اور سرپرستوں سے ہماری ونتی ہے کہ اس چٹھی کی روشنی میں وہ ہندستان کے موجودہ روگ کو ٹھیک ٹھیک پہچانیں اور پھر اس کا صحیح علاج تلاش کریں۔ بڑی بڑی مشینوں اور یوجناؤں کے پھیر میں پھنس کر ہمارے دیش میں نہ کیول بیروزگاری کی نئی پود ہی کھڑی ہو رہی ہے، پرانے روزگار سے لگے ہوئے لوگ بھی تباہ ہوتے جا رہے ہیں۔ سمے ہے کہ دیش کے سمجھدار لوگ—چاہے سرکار میں ہوں یا اس کے باہر—غلط فیشن کے چکر میں نہ پڑکر زمانے کی مانگ کو—دیہاتی دھندوں یا گرام ادیوگ کی پکار کو—سنیں اور دیش میں پھیلتے ہوئے جرموں اور سماج میں بڑھنے والی ناانصافی اور انسان انسان کے بیچ کھڑی ہو جانے والی دیواروں کو ختم کریں۔

18 . 9 . '53 —سریش رام بھائی

گری راج گووردھن کی پوجا

اس مہینے کی 2 تاریخ والے، لکھنؤ کے پرسدھ دینک 'نیشنل ہیرالڈ' میں ایک تصویر چھپی ہے جس میں اس صوبے کے گورنر شری کنہیا لال مانک لال منشی اور ان کی دھرم پتنی ایک پنڈت جی کے ساتھ بیٹھے پوجا کر رہے ہیں۔ تصویر کے نیچے لکھا ہے کہ "پچھلی جنماشٹمی کے موقع پر (تاریخ 31 اگست کو) متھرا میں گری راج گووردھن پر ون مہوتسو کا ادگھاٹن کرنے کے پہلے گورنر شری منشی پوجا پر۔" تصویر کے اوپر 'نیشنل ہیرالڈ' نے بہت ہی مناسب سرخی دی ہے "ہماری سیکولر اسٹیٹ !" ایسی بامعنی اور لاجواب سرخی کے لئے ہم اپنے اس سہیوگی کو بدھائی دیتے ہیں۔

تصویر کے نیچے ڈیڑھ کالم میں 'نیشنل ہیرالڈ' نے وہ رپورٹ چھاپی ہے جو اس سلسلے میں اتر پردیش کے سوچنا محکمے کے سنچالک نے انہیں بھیجی۔ اس میں زیادہ تر حصہ شری منشی کی اسپیچ ہے۔ ہم نے دھیان کے ساتھ اس رپورٹ کو پڑھا۔ شری منشی کی اس بات سے ہم سہمت ہیں کہ "راجستھان کی گرم ہوائیں اور وہاں کا بڑھتا ہوا ریگستان ہمارے صوبے کے متھرا اور آگرہ ضلعوں کو، جو برج بھومی نام سے سرنام ہیں، تباہ کئے ڈال رہا ہے اور اس بڑھاؤ کو روکنے کی سخت ضرورت ہے۔" شری منشی کی اس بات سے بھی ہم سہمت ہیں کہ "آج جو ہندستان میں جنگلوں کا رقبہ کل زمین کا 20 فیصدی رہ گیا ہے اسے بڑھا کر 33 پر لایا جائے۔ اس لئے ضروری ہے کہ زیادہ سے زیادہ پیڑ لگائے جائیں۔" شری منشی کے اس

तैयार करने के और दूसरे काम दैपालपुर में शुरू किये हैं वो इस वक्त मेरी तैनाती के दिनों में चालू हैं.

"इसका साफ़ साफ़ असर यहां के जुरमों पर पड़ा है. इससे बहुत से बेकार आदमी—जिनमें नूरा, शेख मुन्नू व फौजदार खां जैसे मशहूर जरायम पेशा हिस्ट्रीशीटर आदमी हैं, जिनका काम चतुराई से प्रजा को लूटना, सेंध लगाना और चोरियां करना था—एक दम धन्दे से लग गए. जब से आपने इनको काम दिया है इस परगने की चोरियां बहुत कम हो गईं और यह कहना चाहिये कि संगीन क़िस्म की चोरी तो बिलकुल ही बन्द हो गई है और यह लोग नेक चलन हो कर सुधर रहे हैं. चोरियां ज़ियादातर बेरोज़गारी व भूके मरने से भी होती थीं. इस संस्था के ज़रिये ज़ियादातर ऐसे ग़रीबों को काम मिला है जो भूकों मरते और चोरियां करते थे. इन्होंने रोज़गार मिलने पर पुराना काम छोड़ दिया. इसी तरह हमारे चौकीदारों को भी आपने काम दिया है जिससे उनकी माली हालत सुधरी. वह थाने से साढ़े सत्रह रुपये तनख़ा पाते थे जिससे पूरी गुज़र नहीं होती थी. वह जल्दी जल्दी एक दो माह में नौकरी छोड़ देते थे, वह अब सब धन्दे से लग गए हैं और नौकरी भी ठीक तौर से करते हैं. जहां तक जुरमों और रिआया की जान माल की हिफ़ाज़त का काम पुलिस के ज़िम्मे है उस काम में आप के उद्योग से बहुत मदद मिली. इस के लिये मैं अपने मय स्टाफ़ के आपका व आपकी संस्था का निहायत शुक्रगुज़ार हूं और आशा करता हूं कि आइन्दा भी इसी तरह काम चालू रख कर आप मदद करते रहेंगे."
(लकीरें हमारी) इस चिट्ठी को देखकर हमें बहुत ख़ुशी हुई. हमने संघ के सदर से पूछा कि यह चिट्ठी तो आठ महीने पहले की है अब आठ महीने बाद क्या हालत है. थोड़ी देर तक वह चुप रहे. हमने जब अपना सवाल दोहराया तो उन्होंने दुख के साथ कहा कि "अब हालत बिलकुल बदल गई है, एक हिस्ट्री शीटर ने—जिसे पहले नेक चलनी का इनाम दिया गया था—अब इधर तीन चार चोरियां की हैं और अब उस के नाम वारन्ट है और गांव व पड़ोस में चोरी डकैती, जुर्म ज़ोरों से उभर आए हैं." जब हमने इसका कारन पूछा तो उन्होंने बताया कि "हमारे संघ में पहले जहां अस्सी आदमी धन्दे से लगे थे वहां अब केवल बारह रह गए हैं औरों के लिये हमारे पास काम नहीं है. क्योंकि माल तैयार रखा है पर कोई ख़रीदार नहीं है—दरियां पड़ी हैं, दही की खाद पड़ी है, लेने वाला कोई नहीं. सारा पैसा फंस गया और संघ की जान तक ख़तरे में है. ऐसी सूरत में लोगों को काम मिले तो कहां से मिले और फिर वह चोरी न करें तो क्या करें."

ऊपर की चिट्ठी और दैपालपुर सहकारी ग्रामोद्योग

"اس کا صاف صاف اثر یہاں کے جرموں پر پڑا ہے. اس سے بہت سے بیکار آدمی—جن میں نورا، شیخ منو و فوجدار خاں جیسے مشہور جرائم پیشہ، ہسٹری شیٹر آدمی ہیں، جن کا کام چترائی سے پرجا کو لوٹنا، سیندھ لگانا اور چوریاں کرنا تھا—ایک دم دھندے سے لگ گئے. جب سے آپ نے ان کو کام دیا ہے اس پرگنے کی چوریاں بہت کم ہو گئی ہیں اور یہ کہنا چاہئے کہ سنگین قسم کی چوری تو بالکل ہی بند ہو گئی ہے اور یہ لوگ نیک چلن ہو کر سدھر رہے ہیں. چوریاں زیادہ تر بے روزگاری، بھوکے مرنے سے بھی ہوتی تھیں. اس سنستھا کے ذریعے زیادہ تر ایسے غریبوں کو کام ملا ہے جو بھوکوں مرتے اور چوریاں کرتے تھے. انہوں نے روزگار ملنے پر پرانا کام چھوڑ دیا. اسی طرح ہمارے چوکیداروں کو بھی آپ نے کام دیا ہے جس سے ان کی مالی حالت سدھری. وہ تھانے سے ساڑھے سترہ روپے تنخواہ پاتے تھے جس سے پوری گذر نہیں ہوتی تھی. وہ جلدی جلدی ایک دو ماہ میں نوکری چھوڑ دیتے تھے، وہ اب سب دھندے سے لگ گئے ہیں اور نوکری بھی ٹھیک طور سے کرتے ہیں. جہاں تک جرموں اور رعایا کی جان مال کی حفاظت کا کام پولیس کے ذمہ ہے اس کام میں آپ کے ادیوگ سے بہت مدد ملی. اس کے لئے میں اپنے اسٹاف کے آپکا و آپ کی سنستھا کا نہایت شکر گذار ہوں اور آشا کرتا ہوں کہ آئندہ بھی اسی طرح کام چالو رکھ کر آپ مدد کرتے رہینگے." (لکیریں ہماری)
اس چٹھی کو دیکھکر ہمیں بہت خوشی ہوئی. ہم نے سنگھ کے صدر سے پوچھا کہ یہ چٹھی تو آٹھ مہینے پہلے کی ہے اب آٹھ مہینے بعد کیا حالت ہے. تھوڑی دیر تک وہ چپ رہے. ہم نے جب اپنا سوال دوہرایا تو انہوں نے دکھ کے ساتھ کہا کہ "اب حالت بالکل بدل گئی ہے، ایک ہسٹری شیٹر نے—جسے پہلے نیک چلنی کا انعام دیا گیا تھا—اب ادھر تین چار چوریاں کی ہیں اور اب اس کے نام وارنٹ ہے اور گاؤں میں و پڑوس میں چوری ڈکیتی، جرم زوروں سے ابھر آئے ہیں." جب ہم نے اس کا کارن پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ "ہمارے سنگھ میں پہلے جہاں اسی آدمی دھندے سے لگے تھے وہاں اب کیول بارہ رہ گئے ہیں، اوروں کے لئے ہمارے پاس کام نہیں ہے. کیونکہ مال تیار رکھا ہے پر کوئی خریدار نہیں ہے—دریاں پڑی ہیں، ہڈی کی کھاد پڑی ہے، لینے والا کوئی نہیں. سارا پیسہ پھنس گیا اور سنگھ کی جان تک خطرہ میں ہے. ایسی صورت میں لوگوں کو کام ملے تو کہاں سے ملے اور پھر وہ چوری نہ کریں تو کیا کریں."
اوپر کی چٹھی اور دیپالپور سہکاری گرام ادیوگ

वाजिब है कि हमारे हाकिम जनता की पुकार को समझें और उसे पूरा करें. यहीं से, हिन्दुस्तान की जनता के आगे रास्ता साफ़ है. 15 अगस्त '1947 को इस जनता ने हिन्दुस्तान से अंगरेज़ों को विदा किया. अब किसी दूसरी 15 अगस्त का उसे इंतज़ार है जब वह हिन्दुस्तान से इस अंगरेज़ियत को भी विदा करेगी. तब भारत के शासक देश के ग़रीब मज़दूरों, किसानों और कारीगारों में से निकले हुए वह लोग होंगे जो अंगरेज़ नौकर शाही के भारतीय संस्करण न हो कर जनता के सच्चे सेवक होंगे, जनता को समझेंगे, जनता की तरह सीधे सादे ढंग से रहेंगे. देश का सारा समाजी, माली और राज काजी ढांचा दुनिया के अच्छे से अच्छे प्रगतिशील विचारों से पूरा लाभ उठाते हुए देश की आत्मा के अनुकूल और देश की अच्छी से अच्छी परमपराओं पर मज़बूती से क़ायम होगा.

26. 8. '53 —सुरेश रामभाई

जुर्म और देहाती धन्दे

पिछले महीने, 'रोग कुछ इलाज कुछ' नाम के अपने एक नोट में चोरी डकैती, क़त्ल और भगाए जाने वग़ैरा के बढ़ते हुए जुरमों की कई वजह गिनाते हुए पहली वजह हमने यह बताई थी :

'देहात के उद्योग धन्धों का दिन दूना रात चौगुना बरबाद होना.'

हाल ही में इसका एक नया ज़बरदस्त सबूत हमें मिला. इसी सितम्बर के दूसरे हफ़्ते में हमारा इन्दौर जाना हुआ जो मध्य भारत का सबसे बड़ा नगर है. इन्दौर से पचीस मील की दूरी पर देपालपुर नाम का एक बड़ा क़सबा है. जहां "सहकारी ग्रामोद्योग विकास संघ लिमिटेड" के नाम से एक कोआपरेटिव सोसाइटी कई साल से काम कर रही है. इसके मातहत दरी बुनाई, हड्डी खाद बनाने आदि के काम होते हैं. यह संघ कई बरस से काम कर रहा है. 1951-52 में जब इसका काम ज़ोर शोर से चलता था तो इसमें अस्सी कारीगर काम करते थे. इसका नतीजा यह हुआ कि देपालपुर व आस पास के इलाक़े से चोरी डकैती वग़ैरा जुर्म कम हो गए. हमने जब संघ के काग़ज़ात देखे तो उनमें संघ के सदर के नाम देपालपुर थाने के सब इन्सपेक्टर की एक चिट्ठी मिली जिसमें संघ के काम की खुले दिल से तारीफ़ की गई है.

यह चिट्ठी जो 15 जनवरी 1953 को लिखी गई है सब इन्सपेक्टर साहब कहते हैं :—

"निवेदन है कि आप की संस्था ने देहाती धन्धों का रचनात्मक काम दरी वग़ैरा बनाने व बुनाई व हड्डी खाद

واجب ہے کہ ہمارے حاکم 'جنتا' کی پکار کو سمجھیں اور اسے پورا کریں۔ یہیں تو ہندستان کی جنتا کے آگے راستہ صاف ہے. 15 اگست 1947 کو اس جنتا نے ہندستان سے انگریزوں کو وداع کیا . اب کسی دوسری 15 کا اسے انتظار ہے جب وہ ہندستان سے اس انگریزیت کو بھی وداع کریگی . تب بھارت کے شاسک دیش کے غریب مزدوروں' کسانوں اور کاریگروں میں سے نکلے ہوئے وہ لوگ ہونگے جو انگریز نوکر شاہی کے بھارتیہ سنسکرن نہ ہوکر جنتا کے سچے سیوک ہونگے' جنتا کو سمجھینگے' جنتا کی طرح سیدھے سادے ڈھنگ سے رہیں گے . دیش کا سارا سماجی' مالی اور راج کاجی ڈھانچہ دنیا کے اچھے سے اچھے پرگتی شیل وچاروں سے پورا لابھ اٹھاتے ہوئے دیش کی آتما کے انوکول اور دیش کی اچھی سے اچھی پرمپراؤں پر مضبوطی سے قائم ہوگا .

—سریش رام بھائی 26 . 8 . '53

جرم اور دیہاتی دھندے

پچھلے مہینے' 'روگ کچھ علاج کچھ' نام کے اپنے ایک نوٹ میں چوری ڈکیتی' قتل اور بھگائے جانے وغیرہ کے بڑھتے ہوئے جرموں کی کئی وجہ گناتے ہوئے پہلی وجہ ہم نے یہ بتائی تھی :

' دیہات کے ادیوگ دھندوں کا دن دونا رات چوگنا برباد ہونا .'

حال ہی میں اسکا ایک نیا زبردست ثبوت ہمیں ملا. اسی ستمبر کے دوسرے ہفتے میں ہمارا اندور جانا ہوا جو مدھیہ بھارت کا سب سے بڑا نگر ہے . اندور سے پچیس میل کی دوری پر دیپال پور نام کا ایک بڑا قصبہ ہے . جہاں '' سہکاری گرام ادیوگ وکاس سنگھ لمیٹڈ '' کے نام سے ایک کوآپریٹو سوسائٹی کئی سال سے کام کر رہی ہے . اس کے ماتحت دری بنائی' ہڈی کھاد بنانے آدی کے کام ہوتے ہیں . یہ سنگھ کئی برس سے کام کر رہا ہے . 1951-52 میں جب اس کا کام زور شور سے چلتا تھا تو اس میں اسی کاریگر کام کرتے تھے . اس کا نتیجہ ہوا کہ دیپال پور و اس پاس کے علاقے سے چوری ڈکیتی وغیرہ جرم کم ہوگئے . ہم نے جب سنگھ کے کاغذات دیکھے تو ان میں سنگھ کے صدر کے نام دیپال پور تھانے کے سب انسپکٹر کی ایک چٹھی ملی جس میں سنگھ کے کام کی کھلے دل سے تعریف کی گئی ہے .

یہ چٹھی جو 15 جنوری 1953 کو لکھی گئی ہے' سب انسپکٹر صاحب لکھتے ہیں :

" نویدن ہے کہ آپ کی سنستھا نے دیہاتی دھندوں کا رچناتمک کام دری وغیرہ بنانے و بنائی و ہڈی کھاد

वजह है कि हमारे सारे शोर गुल होते हुए राजस्थान का रेगिस्तान उत्तर प्रदेश में सेंध लगाता चला आ रहा है, जगह जगह के दरिया अपने रास्ते बदल कर उपजाऊ इलाक़ों को बंजर बना डाल रहे हैं और एक न एक आफ़त मुल्क पर आए दिन सवार रहती है.

ऐसी हालत में क्या मानी रखती हैं राजपति या प्रधान मंत्री की अपीलें मिसाल के लिये हम देखें कि आज हिन्दुस्तान के अन्दर विदेशी पैसा, विदेशी माल, विदेशी ब्योपारी और सलाहकार या दल्लाल पहले से ज़ियादा हैं या कम ? अगर ज़ियादा हैं तो इसे हम अपनी तरक़्क़ी की निशानी समझें या गिरावट की. कसौटी यह है कि मुल्क के अमीरों और ग़रीबों के बीच की खाई कुछ कम हुई या नहीं. अगर खाई पटी है तो बाहर वाले मुबारक, हाकिम हुक्काम मुबारक. सब कुछ मुबारक. लेकिन असलियत क्या है ? हम यहां एक पुराने तजुरबेकार आई. सी. एस. अफ़सर की ही राय पेश करते हैं जो सोलह आने अंगरेज़ियत के पैरोकार हैं और मौजूदा हिन्द सरकार की कमेटियों मीटिंगों में जिन्हें जगह दी जाती है—उनका नाम है श्री ए. डी. गोरेवाला—उनका कहना है कि :

"आजकल ख़ुशहाल लोग ज़ियादा ख़ुशहाल हो गए हैं और अमीर ज़ियादा अमीर बन गए हैं. साथ ही साथ ग़रीब बिला शक पहले से ज़ियादा ग़रीब हो गए हैं."

कहां मुल्क में इस फ़र्क़ का बढ़ना और कहां नई दिल्ली में वह दावत ! अगर यही हालत बनी रही तो मुल्क में जो भी न हो जाय थोड़ा. महात्मा गांधी ने अपनी छोटी सी किताब "रचनात्मक प्रोग्राम" में लिखा है :

"नई दिल्ली के शानदार महलों और ग़रीबों, चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने वालों की, काल कोठरियों के बीच का फ़र्क़ आज़ाद भारत में एक दिन भी नहीं रह सकता. आज़ाद भारत में ग़रीबों को वही शक्ति हासिल होगी जो अमीर से अमीर को. अगर अमीरी को ख़ुशी ख़ुशी न छोड़ा गया, अगर अमीरी से मिलने वाली शक्ति को न छोड़ा गया और फिर सब की बेहतरी के लिये उसका उपयोग न किया गया तो एक न एक दिन अहिंसात्मक इन्क़िलाब हो कर रहेगा."

लेकिन शायद हमारे शासकों ने इस सच्चाई से मुंह फेर लिया है और समझते हैं कि सचाई की तरफ़ न देखना ही सचाई को टालना करना है, नहीं तो 15 अगस्त जैसे पवित्र दिन उनसे उस दावत में बैठते भी न बनता और उन्हें ख़याल आया होता कि यह टीम टाम तो रोज़ की हैं. कम से कम आज के दिन तो—बरस के अन्दर एक दिन तो—कोई ऐसा नेक काम कर लें जिससे ग़रीब पड़ोसी के बच्चों की रोटी का कुछ सहारा हो जाय.

وجہ ہے کہ ہمارے سارے شور گل ہوتے ہوئے راجستھان کا ریگستان اُتّر پردیش میں سیندھ لگاتا چلا آ رہا ہے، جگہ جگہ کے دریا اپنے راستے بدل کر اُپجاؤ علاقوں کو بنجر بنا ڈال رہے ہیں اور ایک نہ ایک آفت ملک پر آئے دن سوار رہتی ہے.

ایسی حالت میں کیا معنی رکھتی ہیں راجپتی یا پردھان منتری کی اپیلیں . مثال کے لئے ہم دیکھیں کہ آج ہندستان کے اندر ودیشی پیسہ، ودیشی مال، ودیشی بیوپاری اور صلاحکار یا دلال پہلے سے زیادہ ہیں یا کم ؟ اگر زیادہ ہیں تو اسے ہم اپنی ترقی کی نشانی سمجھیں یا گراوٹ کی. کسوٹی یہ ہے کہ ملک کے امیروں اور غریبوں کے بیچ کی کھائی کچھ کم ہوئی یا نہیں . اگر کھائی پٹی ہے تو باہر والے مبارک، حاکم حکام مبارک، سب کچھ مبارک. لیکن اصلیت کیا ہے؟ ہم یہاں ایک پرانے تجربہ کار آئی. سی. ایس. افسر کی ہی رائے پیش کرتے ہیں جو سولہ آنے انگریزیت کے پیروکار ہیں اور موجودہ ہند سرکار کی کمیٹیوں میٹنگوں میں جنہیں جگہ دی جاتی ہے—اُن کا نام ہے شری اے. ڈی. گورے والا—اُن کا کہنا ہے کہ :

"آج کل خوشحال لوگ زیادہ خوشحال ہو گئے ہیں اور امیر زیادہ امیر بن گئے ہیں . ساتھ ہی ساتھ غریب بلاشک پہلے سے زیادہ غریب ہو گئے ہیں ."

کہاں ملک میں اِس فرق کا بڑھنا اور وہاں نئی دلی میں وہ دعوت ! اگر یہی حالت بنی رہی تو ملک میں جو بھی نہ ہو جائے تھوڑا. مہاتما گاندھی نے اپنی چھوٹی سی کتاب "رچناتمک پروگرام" میں لکھا ہے :

"نئی دلی کے شاندار محلوں اور غریبوں، چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہانے والوں کی، کال کوٹھریوں کے بیچ کا فرق آزاد بھارت میں ایک دن بھی نہیں رہ سکتا . آزاد بھارت میں ایک دن بھی نہیں رہ سکتا. آزاد بھارت میں غریبوں کو وہی شکتی حاصل ہوگی جو امیر سے امیر کو. اگر امیری کو خوشی خوشی نہ چھوڑا گیا، اگر امیری سے ملنے والی شکتی کو نہ چھوڑا گیا اور پھر سب کی بہتری کے لئے اس کا اپیوگ نہ کیا گیا تو ایک نہ ایک دن اہنسانمک انقلاب ہوکر رہیگا ."

لیکن شاید ہمارے شاسکوں نے اِس سچائی سے منھ پھیر لیا ہے اور سمجھتے ہیں کہ سچائی کی طرف نہ دیکھنا ہی سچائی کو ٹالنا کرنا ہے، نہیں تو 15 اگست جیسے پوتر دن اُن سے اِس دعوت میں بیٹھتے بھی نہ بنتا اور اُنہیں خیال آیا ہوتا کہ یہ ٹیم ٹام تو روز کی ہے. کم سے کم آج کے دن تو—برس کے اندر ایک دن تو—کوئی ایسا نیک کام کرلیں جس سے غریب پڑوسی کے بچوں کی روٹی کا کچھ سہارا ہوجائے .

मुल्की पैमाने पर जब हम ज़रा बारीकी से देखते हैं तो एक दम धक्का सा लगता है. हमने अख़बार में फ़ोटो देखा कि 15 अगस्त को राजपति ने अपने महल के बाग़ में एक आलीशान दावत दी जिसमें आला से आला लोग मौजूद थे. इस दावत में 'आज़ादी की एक केक' थी जिसे प्रधान मंत्री ने तलवार से काटा ! कहीं हम सपना तो नहीं देख गये, कहां आज़ादी और कहां आज़ादी की केक ! लेकिन नहीं, फ़ोटो हिन्द सरकार की तरफ़ से भेजा हुआ फ़ोटो है—साफ़ दीख रहा है कि पंडित जवाहरलाल किसी गोल चीज़ के टुकड़े कर रहे हैं. कहां यह नई दिल्ली की केक वाली दावत और कहां बारा खम्भा पार हमारे पढ़े लिखे बेरोज़गार नौजवान या देश में हर जगह मिलने वाले अनपढ़ किसान, जिन्होंने कभी यह भी नहीं जाना कि भर पेट खाना किसे कहते हैं ! कहां खाने की वह दावत, कहां खाने की यह अदावत !

इस हालत को देख कर यह सवाल पैदा होता है कि 1857 से ले कर 1947 तक हमारे बुज़ुर्गों ने जिस चीज़ के लिये अपने को मिटा दिया वह क्या थी ? क्या हमारी आज़ादी का केवल यही मक़सद था कि अंगरेज़ों को हटा कर अंगरेज़ियत को बरक़रार रखें ? क्या हमारे सारे स्वतंत्रता संग्राम की केवल यही मन्शा थी कि जिन कुर्सियों पर, जिन कोठियों में अंगरेज़ बैठे हैं वहां हमारे हिन्दुस्तानी भाई बैठ जायें और फिर हू बहू उनकी नक़ल उतारें. नहीं तो क्या मतलब रखता है आज़ादी के दिन प्रधान मंत्री का तलवार हाथ में ले कर केक काटना ? क्या आज़ादी मनाने का कोई दूसरा तरीक़ा हमारे इल्म में है ही नहीं ? क्या दावत का और कोई दस्तूर हम जानते ही नहीं ! हमें यक़ीन है कि 15 अगस्त के उस जश्न में अगर शेरवानी और चूड़ीदार पाजामों की जगह कुछ लोगों को सूट पहना दिये जाते तो पता नहीं चल सकता था कि यह मजलिस हिन्दुस्तान की आज़ादी के सिलसिले में हो रही है या किसी दूसरी विलायत की. क्या सोचते होंगे परदेश वाले कि हिन्दुस्तानी अपनी आज़ादी का दिन भी अपने ढंग से नहीं मना सकते तब फिर भला कोई दूसरा काम क्यों कर अपने ढंग से कर सकते हैं.

और वाक़या है कि अंगरेज़ियत हमारे हाकिमों के दिमाग़, मिज़ाज, बरताव और अदा में इस दरजे समा गई है और दिन दूनी रात चौगुनी समाती चली जा रही है कि जिस मक़सद के लिये स्वराज की कोशिश मुल्क ने की थी हम उस मक़सद से बहुत दूर हटते चले जा रहे हैं. यही वजह है कि मुल्क के धन्धे एक एक कर तबाह हो रहे हैं, मुल्क में बेरोज़गारी बढ़ रही है, भुखमरी और अकाल की सूरत हर दम कहीं न कहीं किसी न किसी शकल में बनी रहती है. और यही

ملکی پیمانے پر جب ہم ذرا باریکی سے دیکھتے ہیں تو ایک دم جھٹکا سا لگتا ہے ۔ ہم نے اخبار میں فوٹو دیکھا کہ 15 اگست کو راج پتی نے اپنے محل کے باغ میں ایک عالیشان دعوت دی جس میں اعلیٰ سے اعلیٰ لوگ موجود تھے ۔ اس دعوت میں ' آزادی کی ایک کیک ' تھی جسے پردھان منتری نے تلوار سے کاٹا ! کہیں ہم سپنا تو نہیں دیکھ گئے' کہاں آزادی اور کہاں آزادی کی کیک ! لیکن نہیں' فوٹو ہند سرکار کی طرف سے بھیجا ہوا فوٹو ہے—صاف دیکھ رہا ہے کہ پنڈت جواہر لال کسی گول چیز کے ٹکڑے کر رہے ہیں ۔ کہاں یہ نئی دلی کی کیک والی دعوت اور کہاں بارا کھمبا پار ہمارے پڑھے لکھے بے روزگار نوجوان یا دیش میں ہر جگہ ملنے والے ان پڑھ کسان' جنہوں نے کبھی یہ بھی نہیں جانا کہ بھر پیٹ کھانا کسے کہتے ہیں ! کہاں کھانے کی وہ دعوت' کہاں کھانے کی یہ عداوت !

اس حالت کو دیکھکر یہ خیال پیدا ہوتا ہے کہ 1857 سے لے کر 1947 تک ہمارے بزرگوں نے جس چیز کے لئے اپنے کو مٹا دیا وہ کیا تھی؟ کیا ہماری آزادی کا کیول یہی مقصد تھا کہ انگریزوں کو ہٹا کر انگریزیت کو برقرار رکھیں؟ کیا ہمارے سارے سوتنترتا سنگرام کی کیول یہی منشا تھی کہ جن کرسیوں پر' جن کوٹھیوں میں انگریز بیٹھے ہیں وہاں ہمارے ہندستانی بھائی بیٹھ جائیں اور پھر ہوبہو ان کی نقل اتاریں۔ نہیں تو کیا مطلب رکھتا ہے آزادی کے دن پردھان منتری کا تلوار ہاتھ میں لے کر کیک کاٹنا ؟ کیا آزادی منانے کا کوئی دوسرا طریقہ ہمارے علم میں ہے ہی نہیں ؟ کیا دعوت کا اور کوئی دستور ہم جانتے ہی نہیں! ہمیں یقین ہے کہ 15 اگست کے اس جشن میں اگر شیروانی اور چوڑی دار پاجاموں کی جگہ کچھ لوگوں کو سوٹ پہنا دئے جاتے تو پتہ نہیں چل سکتا تھا کہ یہ مجلس ہندستان کی آزادی کے سلسلے میں ہو رہی ہے یا کسی دوسری ولایت کی ۔ کیا سوچتے ہونگے پردیس والے کہ ہندستانی اپنی آزادی کا دن بھی اپنے ڈھنگ سے نہیں منا سکتے ۔ تب پھر بھلا کوئی دوسرا کام کیوں کر اپنے ڈھنگ سے کر سکتے ہیں ۔

اور واقعہ ہے کہ انگریزیت ہمارے حاکموں کے دماغ' مزاج' برتاؤ اور ادا میں اس درجے سما گئی ہے اور دن دونی رات چوگنی سماتی چلی جا رہی ہے کہ جس مقصد کے لئے سوراج کی کوشش ملک نے کی تھی ہم اس مقصد سے بہت دور ہٹتے چلے جا رہے ہیں ۔ یہی وجہ ہے کہ ملک کے دھندے ایک ایک کر تباہ ہو رہے ہیں' ملک میں بےروزگاری بڑھ رہی ہے' بھکمری اور اکال کی صورت ہردم کہیں نہ کہیں کسی نہ کسی شکل میں بنی رہتی ہے۔ اور یہی

हमारी राय
ہماری رائے

आज़ादी की केक

15 अगस्त की तारीख़ हमारे इतिहास में अमर रहेगी. इस दिन हिन्दुस्तान की राजनीति ने पलटा खाया, अंगरेज़ी हकूमत का दौर ख़तम हो कर हिन्दुस्तान की अपनी हकूमत का दौर शुरू हुआ. आज़ादी की छटी सालगिरह के मौक़े पर हमारे राजपति और प्रधान मंत्री ने, दस्तूर के मुताबिक़, बयान दिये और झंडा फहराया.

राजपति ने अपने बयान में कहा कि "आज के दिन हमको अपने मुल्क में ख़ुशहाली और दुनिया में आम बेहतरी लाने की ग़रज़ से ज़ियादा काम करने के लिये अपने को फिर से समर्पन कर देना चाहिये." प्रधान मंत्री ने लाल क़िले पर झंडा फहराने के बाद कहा कि "आज के दिन हमें फिर से प्रन लेना चाहिये कि आपस में मिल कर इस मुल्क की सेवा करेंगे और ग़रीबी के ख़िलाफ़ मोरचा लेने को तैयार होंगे." राजेन्द्र बाबू और पंडित जवाहर लाल, दोनों ही हमारे देश की तपी तपाई और निखरी हुई हस्तियां हैं. इन्होंने एक ज़माने में इस मुल्क की ख़ातिर कोई क़ुरबानी बाक़ी नहीं रखी. उनकी इन पुरजोश अपीलों के आगे हमारा सर झुकता है और हमें यक़ीन है कि हर हिन्दुस्तानी के दिल की यही आवाज़ होगी कि इस मुल्क में ख़ुशहाली आए, दुनिया बेहतर बने, सब मिल कर रहें और ग़रीबी का नाश हो. सिरजनहार हम सब की इस दुआ को क़बूल करें!

फिर फ़ौरन ही ख़याल पैदा होता है कि क्या इन अपीलों में या हमारी इस दुआ में ताक़त है? दूसरे शब्दों में, क्या हमारे क़दम उसी मंज़िल की तरफ़ बढ़ रहे हैं जिस तक पहुंचने की हम दुआ कर रहे हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि दुआ पूरब जाने की कर रहे हों और रास्ता नाप रहे हों पच्छिम का! हमें अपना दिल टटोल कर देखना चाहिये, ईमान, इनसाफ़ और निडरता के साथ अपने दिल के हर कोने की तलाशी लेनी चाहिये और फिर उसी के अनुसार आगे की राह पकड़नी चाहिये. अगर बहके हुए हों तो लौट पड़ना चाहिये, अगर सही चल रहे हों तो क़दम ज़ियादा तेज़ी से बढ़ाने चाहियें.

آزادی کی کیک

15 اگست کی تاریخ ہمارے اتہاس میں امر رہے گی. اس دن ہندستان کی راج نیتی نے پلٹا کھایا، انگریزی حکومت کا دور ختم ہو کر ہندستان کی اپنی حکومت کا دور شروع ہوا. آزادی کی چھٹی سال گرہ کے موقع پر ہمارے راج پتی اور پردھان منتری نے، دستور کے مطابق، بیان دیئے اور جھنڈا پھہرایا.

راج پتی نے اپنے بیان میں کہا کہ "آج کے دن ہم کو اپنے ملک میں خوش حالی اور دنیا میں عام بہتری لانے کی غرض سے زیادہ کام کرنے کے لئے اپنے کو پھر سے سمرپن کر دینا چاہئے." پردھان منتری نے لال قلعہ پر جھنڈا پھہرانے بعد کہا کہ "آج کے دن ہمیں پھر سے پرن لینا چاہئے کہ آپس میں مل کر اس ملک کی سیوا کریں گے اور غریبی کے خلاف مورچہ لینے کو تیار ہوں گے." راجیندر بابو اور پنڈت جواہر لال، دونوں ہی ہمارے دیش کی تپی تپائی اور نکھری ہوئی ہستیاں ہیں. انہوں نے ایک زمانہ میں اس ملک کی خاطر کوئی قربانی باقی نہیں رکھی. ان کی ان پرجوش اپیلوں کے آگے ہمارا سر جھکتا ہے اور ہمیں یقین ہے کہ ہر ہندستانی کے دل کی یہی آواز ہوگی کہ اس ملک میں خوش حالی آئے، دنیا بہتر بنے، سب مل کر رہیں اور غریبی کا ناش ہو. سرجن ہار ہم سب کی اس دعا کو قبول کریں!

پھر فوراً ہی خیال پیدا ہوتا ہے کہ کیا ان اپیلوں میں یا ہماری اس دعا میں طاقت ہے؟ دوسرے شبدوں میں، کیا ہمارے قدم اسی منزل کی طرف بڑھ رہے ہیں جس تک پہونچنے کی ہم دعا کر رہے ہیں؟ کہیں ایسا تو نہیں کہ دعا پورب جانے کی کر رہے ہوں اور راستہ ناپ رہے ہوں پچھم کا! ہمیں اپنا دل ٹٹول کر دیکھنا چاہئے، ایمان، انصاف اور نڈرتا کے ساتھ اپنے دل کے ہر کونے کی تلاشی لینی چاہئے اور پھر اسی کے انوسار آگے کی راہ پکڑنی چاہئے. اگر بہکے ہوئے ہوں تو لوٹ پڑنا چاہئے، اگر سہی چل رہے ہوں تو قدم زیادہ تیزی سے بڑھانے چاہئیں.

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भूदान यज्ञ

लेखक—विनोबा भावे
प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद.
भाषा—हिन्दी, सफ़े—148.
क़ीमत—एक रुपया चार आना.

28 अप्रैल सन 1951 का दिन इस क्रान्तिकारी इतिहास का एक महान पर्व है. इसी दिन विनोबा के मन में एक नई चेतना ने स्थान लिया. हिन्दुस्तान के इस महान संत के दिल में एक टीस पैदा हुई, अपने देश के उन लाखों करोड़ों ग़रीबों, निर्धन और बेज़मीन वालों के लिये. क़ुदरत से हवा, धूप, पानी सब बे रोक टोक हर एक को मिलते हैं. इन पर सबका बराबर बराबर अधिकार है. इस उसूल को ले कर विनोबा जी पैदल चल कर हिन्दुस्तान भर का दौरा कर रहे हैं. वह ज़मीन मालिकों से ज़मीन ले कर बे ज़मीन वालों को देना चाहते हैं. विनोबा के इस भूदान आन्दोलन का आज संसार में शोर मचा हुआ है. वह अपने संदेश को घर घर पहुंचाते और जवान, बूढ़े, बच्चे, मर्द औरत सब के दिल पर अपने इस आन्दोलन का असर पैदा करते दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति के साथ आगे बढ़ रहे हैं. विनोबा जी ने आज हिन्दुस्तान को शान्ति पूर्ण ढंग से ज़मीन की इस बड़ी समस्या को हल करने का अहिंसक मार्ग दिखाया. हिन्दुस्तान के बाहर भी विनोबा के इस आन्दोलन की चरचा ज़ोरों से फैल रही है. लोग इस आन्दोलन को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं. कुछ विदेशियों का कहना है कि शान्ति मय तरीक़े से हिन्दुस्तान के बाहर भी ज़मीन का मसला तय किया जा सकता है.

भूदान यज्ञ की कल्पना, उसका विकास, उसका आरंभ क्यों और कैसे हुआ इसका सुन्दर परिचय थोड़े से में इस किताब में मिलेगा. इस पुस्तक में विनोबा जी के भूदान सम्बन्धी लेखों और भाषनों को जमा किया गया है. इस आन्दोलन में दिलचस्पी रखने वाले रचनात्मक कार्य कर्ताओं और सर्वोदय प्रेमियों के लिये यह किताब बहुत काम की है. सम्पत्ति दान क्या है इसकी जानकारी भी इस छोटी सी पुस्तक में कराई गई है. इस किताब के पढ़ने के बाद लोगों को नई रोशनी मिलेगी. किताब की छपाई सादा और सुन्दर है. नव जीवन प्रकाशन मन्दिर को ऐसी किताब निकालने पर हम मुबारक बाद देते हैं.

—चेतन कुमार शर्मा

بھودان یگیہ

لیکھک—ونوبا بھاوے .
پرکاشک—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد .
بھاشا—ہندی؛ صفحہ—148 .
قیمت—ایک روپیہ چار آنہ .

28 اپریل سن 1951 کا دن اس کرانتکاری اتہاس کا ایک مہان پرو ہے . اسی دن ونوبا کے من میں ایک نئی چیتنا نے استھان لیا . ہندستان کے اس مہان سنت کے دل میں ایک ٹیس پیدا ہوئی، اپنے دیش کے ان لاکھوں کروڑوں غریبوں، نردھن اور بے زمین والوں کے لئے . قدرت سے ہوا، دھوپ، پانی سب بے روک ٹوک ہر ایک کو ملتے ہیں . ان پر سب کا برابر برابر ادھیکار ہے . اس اصول کو لے کر ونوبا جی پیدل چل کر ہندستان بھر کا دورہ کر رہے ہیں . وہ زمین مالکوں سے زمین لے کر بے زمین والوں کو دینا چاہتے ہیں . ونوبا کے اس بھودان آندولن کا آج سنسار میں شور مچا ہوا ہے . وہ اپنے سندیش کو گھر گھر پہنچاتے اور جوان، بوڑھے، بچے، مرد عورت سب کے دل پر اپنے اس آندولن کا اثر پیدا کرتے دن دونی رات چوگنی انّتی کے ساتھ آگے بڑھ رہے ہیں . ونوبا جی نے آج ہندستان کو شانتی پورن ڈھنگ سے زمین کی اس بڑی سمسیا کو حل کرنے کا اہنسک مارگ دکھایا . ہندستان کے باہر بھی ونوبا کے اس آندولن کی چرچہ زوروں سے پھیل رہی ہے . لوگ اس آندولن کو عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں . کچھ ودیشیوں کا کہنا ہے کہ شانتی مے طریقے سے ہندستان کے باہر بھی زمین کا مسئلہ طے کیا جا سکتا ہے .

بھودان یگیہ کی کلپنا، اس کا وکاس، اس کا آرمبھ کیوں اور کیسے ہوا اس کا سندر پریچے تھوڑے سے میں اس کتاب میں ملیگا. اس پستک میں ونوبا جی کے بھودان سمبندھی لیکھوں اور بھاشنوں کو جمع کیا گیا ہے . اس آندولن میں دلچسپی رکھنے والے رچناتمک کارکرتاؤں اور سروودے پریمیوں کے لئے یہ کتاب بہت کام کی ہے . سمپتی دان وغیرہ کیا ہے اس کی جانکاری بھی اس چھوٹی سی پستک میں کرائی گئی ہے . اس کتاب کے پڑھنے کے بعد لوگوں کو نئی روشنی ملیگی. کتاب کی چھپائی سادہ اور سندر ہے . نوجیون پرکاشن مندر کو ایسی کتاب نکالنے پر ہم مبارکباد دیتے ہیں .

—چیتن کمار شرما

ज़ाहिर है कि अभी एक तिहाई काम ही हुआ है. लेकिन, जैसा विनोबा जी ने इसी सितम्बर के शुरू में भूदान के मुख्य संयोजकों से कहा, जब इतनी कम शक्ति से चांडिल के बाद से दो लाख एकड़ हर महीने में मिल गई तो अगले चालीस माह में चार करोड़ अस्सी लाख एकड़ (यानी हर माह में केवल बारह लाख) ज़रा ज़ियादा शक्ति लगा कर क्यों नहीं मिल सकती, ज़रूर मिल सकती है, सिर्फ़ लगने और जुट जाने की बात है.

भूदान एक चिराग़

आख़िर में, देश के पढ़े लिखों, समझदार और साधन दार भाई बहनों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं से, विशेष कर सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट साथियों से हमारी प्रार्थना है कि वह इस आन्दोलन को समझने की कोशिश करें और फिर कन्धे से कन्धा मिला कर चलें, हमारे दोष, ऐब बतायें और सुधरवायें. आन्दोलन तीसरे दौर से निकल कर चौथे दौर में—विरोध और दबाने के दौर में—घुसने जा रहा है. क्या मुसीबत के वक्त भी साथी लोग साथ नहीं देंगे? और फिर यह खाई कब तक बनी रहेगी? अगर हिन्दुस्तान की जनता को ज़िन्दा रहना है तो यह खाई पटनी चाहिये. क्या भूदानी और क्या कम्यूनिस्ट, और हर कोई वह जो मौजूदा शासन से असन्तुष्ट है और शासित जनता के साथ है, इनको मिलना होगा, एक होना होगा. इस मेल के लिये भूदान यज्ञ से बढ़ कर कोई दूसरा काम अभी तक इस वक्त नहीं दीखता. हिन्दुस्तान में छाई हुई मुर्दनी और फैले हुए अंधेरे को चीरने वाला भू दान यज्ञ के अलावा कोई दूसरा कारगर चिराग़ नहीं दीखता. और जब तक कोई बड़ा या बेहतर काम नहीं मिलता हम सब इसमें क्यों न मिल जायं? जहां कोई वाक़ई बड़ा या बेहतर काम हमारे हाथ लगा इसे बन्द करके हम सब उसमें लग जायेंगे.

20. 9. '53 —सुरेश रामभाई

ظاہر ہے کہ ابھی ایک تہائی کام ہی ہوا ہے. لیکن جیسا ونوبا جی نے اسی ستمبر کے شروع میں بھودان کے مکھیہ سنیوجکوں سے کہا، جب اتنی کم شکتی سے چانڈل کے بعد سے دو لاکھ ایکڑ ہر مہینے میں مل گئی تو اگلے چالیس ماہ میں چار کروڑ اسی لاکھ ایکڑ (یعنی ہر ماہ میں کیول بارہ لاکھ) ذرا زیادہ شکتی لگا کر کیوں نہیں مل سکتی، ضرور مل سکتی ہے، صرف لگنے اور جٹ جانے کی بات ہے.

بھودان ایک چراغ

آخر میں، دیش کے پڑھے لکھوں، سمجھدار اور سادھن دار بھائی بہنوں اور راج نیتک کاریہ کرتاؤں سے، وشیش کر سوشلسٹ اور کمیونسٹ ساتھیوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وہ اس آندولن کو سمجھنے کی کوشش کریں اور پھر کندھے سے کندھا ملا کر چلیں، ہمارے دوش، عیب بتائیں اور سدھروائیں. آندولن تیسرے دور سے نکل کر چوتھے دور میں—ورودھ اور دبانے کی دور میں—گھسنے جا رہا ہے. کیا مصیبت کے وقت بھی ساتھی لوگ ساتھ نہیں دیں گے؟ اور یہ کھائی کب تک بنی رہے گی؟ اگر ہندستان کی جنتا کو زندہ رہنا ہے تو یہ کھائی پٹنی چاہئے. کیا بھودانی اور کیا کمیونسٹ، اور ہر کوئی وہ جو موجودہ شاسن سے اسنتشٹ ہے اور شاست جنتا کے ساتھ ہے، ان کو ملنا ہوگا، ایک ہونا ہوگا. اس میل کے لئے بھودان یگیہ سے بڑھ کر کوئی دوسرا کام ابھی اس وقت نہیں دیکھتا. ہندستان میں چھائی ہوئی مردنی اور پھیلے ہوئے اندھیرے کو چیرنے والا بھودان یگیہ کے علاوہ کوئی دوسرا کارگر چراغ نہیں دیکھتا. اور جب تک کوئی بڑا یا بہتر کام نہیں ملتا ہم سب اس میں کیوں نہ مل جائیں؟ جہاں کوئی واقعی بڑا یا بہتر کام ہمارے ہاتھ لگا اسے بند کرکے ہم سب اس میں لگ جائیں گے.

20 . 9 . '53 —سریش رام بھائی

इसमें कुछ कि कुछ कार्यकर्ता, और विशेष कर कुछ कम्यु-निस्ट भाई, भूदान का आन्दोलन से अलग हैं. इससे नुकसान सिर्फ देश का, जनता जनार्दन का है. हो सकता है कि भूदान के लोगों या कार्यकर्ताओं में दोष हों, खामियां हों, लेकिन उन दोषों की वजह से आन्दोलन को गलत नहीं कहा जा सकता. लोग आयेंगे और जायेंगे, आज नहीं तो कल, गलत कार्यकर्ताओं की जगह सही कार्यकर्ता आयेंगे. लेकिन उनकी वजह से आन्दोलन न रुकना चाहिये न रुकेगा.

अब तक मिली ज़मीन का ब्योरा

चांडिल सम्मेलन के बाद आन्दोलन में कुछ तेजी आई है. जब बिहार का कोटा चार लाख से बत्तीस लाख हुआ तो दूसरे कई प्रदेशों ने भी अपने कोटे आप से आप बढ़ाए और डट कर काम करने का फैसला किया. 31 अगस्त 1953 तक 20,66,895 एकड़ ज़मीन दान में मिल चुकी है. इसका प्रदेशवार ब्योरा हम नीचे दे रहे हैं :

गिनती	प्रदेश	कोटा	ज़मीन जो मिली	फी सैकड़ा
1.	आसाम	25,000	1,349	5
2.	आंध्र	100,000	7097	7
3.	उत्तर प्रदेश	11,00,000	11,414	49
4.	उड़ीसा	225,000	18,118	12
5.	करनाटक	50,000	1,100	2
6.	केरल	25,000	6 00	25
7.	गुजरात	75,000	16,765	22
8.	तामिलनाड	150,000	14,000	9
9.	देहली	10,000	7,500	75
10.	पंजाब-पेप्सू	1,00,000	2,134	2
11.	बंगाल	2,00,000	169	10·0
12.	बिहार	32,00,000	10,75,217	33
13.	मध्यप्रदेश	2,00,000	52,420	26
14.	मध्य भारत	1,25,000	51,221	41
15.	महाराष्ट्र	1,00,000	8,665	8·5
16.	मैसूर	1,00,000	1,200	1
17.	राजस्थान	2,00,000	2,17,866	109
18.	विन्ध्य प्रदेश	40,000	3,467	8·5
19.	सौराष्ट्र	50,000	8,000	16
20.	हिमाचल	...	1,350	
21.	हैदराबाद	1,50,000	63,982	52
	जोड़	61,50,000	20,66,895	33

ہمارے دیش کے کچھ کاریہ کرتا اور وشیش کر کچھ کمیونسٹ بھائی بھودان یگیہ آندولن سے الگ ہیں. اس سے نقصان صرف دیش کا، جنتا جناردن کا ہے. ہوسکتا ہے کہ بھودان کے لوگوں یا کاریہ کرتاؤں میں دوش ہوں، خامیاں ہوں، لیکن ان دوشوں کی وجہ سے آندولن کو غلط نہیں کہا جاسکتا. لوگ آئیں گے اور جائیں گے، آج نہیں تو کل، غلط کاریہ کرتاؤں کی جگہ صحیح کاریہ کرتا آئیں گے. لیکن ان کی وجہ سے آندولن نہ رکنا چاہئے نہ رکے گا.

اب تک ملی زمین کا بیورا

چانڈل سمیلن کے بعد آندولن میں کچھ تیزی آئی ہے. جب بہار کا کوٹا چار لاکھ سے بتیس لاکھ ہوا تو دوسرے کئی پردیشوں نے بھی اپنے کوٹے آپ سے آپ بڑھائے اور ڈٹ کر کام کرنے کا فیصلہ کیا. 31 اگست 1953 تک 20,66,895 ایکڑ زمین دان میں مل چکی ہے. اس کا پردیش وار بیورا ہم نیچے دے رہے ہیں :

گنتی	پردیش	کوٹا	زمین جو ملی	فی سیکڑہ
1.	آسام	25,000	1,349	5
2.	آندھرا	100,000	7097	7
3.	اتر پردیش	11,00,000	11,414	49
4.	اڑیسہ	225,000	18,118	12
5.	کرناٹک	50,000	1,100	2
6.	کیرل	25,000	6500	25
7.	گجرات	75,000	16,765	22
8.	تامل ناڈ	150,000	14,000	9
9.	دہلی	10,000	7,5,000	75
10.	پنجاب-پیپسو	1,00,000	2,134	2
11.	بنگال	2,00,000	169	10·0
12.	بہار	3200,000	1075,217	33
13.	مدھیہ پردیش	2000,000	52,420	26
14.	مدھیہ بھارت	125,000	51,221	41
15.	مہاراشٹر	1,00,000	8,665	8·5
16.	میسور	100,000	1,200	1
17.	راجستھان	200,000	2,17,866	10
18.	وندھیہ پردیش	40,000	3,467	8·5
19.	سوراشٹر	50,000	8,000	16
20.	ہماچل		1,350	
21.	حیدرآباد	1,50,000	63,982	52
	جوڑ	61,50,000	20,66,895	33

[illegible] बन जायगा.

(ii) सरकार से कोई काम कराना माने सरकारी शक्ति का निज़ाम से कराना, यानी उन शक्तियों को मज़बूत करना जो आज सरकारी बन्दोबस्त को संभाले हुए हैं. इसलिये सरकार के ज़रिये से भूदान यज्ञ का काम कराने का मतलब है अपने को सरकार का और भी ज़ियादा ताबेदार या मोहताज बना लेना, यानी आज जिस शिकंजे में (अंगरेज़ों के बनाए सामराज शाही, पूंजी खोर और ग़रीब चूस शिकंजे में) भारत की जनता कसी हुई है उस शिकंजे को और भी ज़ियादा मज़बूत बना कर अपने को पुंज पुंज कर लेना. इसका मतलब हुआ अपनी बेड़ियां खुद ही बांधना और अपनी रही सही आज़ादी को और भी ख़त्म कर देना. इसके ख़िलाफ़ भूदान यज्ञ आन्दोलन का मक़सद है जनता का सच्चा समाज क़ायम करना. ऐसा समाज क़ायम करना जिसमें 'स्टेट' 'राजा' 'सरकार' या शासन नाम की चीज़ ही न रहे, शासन रहित (Stateless) और दरजे रहित (Classless) समाज. इसके लिये शुरू से कोशिश करनी चाहिये. इसीलिये भूदान डंके की चोट पर कहता है कि ज़मीन न मेरी, न तेरी, न सरकार की बल्कि ईश्वर की यानी समाज की और जो ज़मीन पर खून पसीना एक करे वही खाए. यह दो उसूल भूदान यज्ञ आन्दोलन के आधार हैं और इनके बल बूते पर चल कर ही राम राज या हकूमते इलाही या किंगडम आफ गाड क़ायम की जा सकती है.

(iii) भारत की मौजूदा सरकार विधान के बन्धनों से बंधी है, वह जब तक विधान न बदले ज़मीन बिना मावज़ा दिये किसी से नहीं ले सकती. इसलिये जब एक ताक़त किसी काम को कर ही नहीं सकती तो फिर उससे उस काम के लिये कहने से फ़ायदा क्या? हमारा अपना ख़याल है कि अगर सरकार से कहा जाय तो उसी वक़्त कहा जाय जब उसके 'न' के ख़िलाफ़ डटे रहने की हम में, देश में हिम्मत हो और चीज़ें उस तरह करवा लेने की ताक़त हो जैसे देश चाहता है. जब तक वह ताक़त नहीं है तब तक उसे पैदा करना चाहिये और अपनी फ़ौज को मज़बूत बनाना चाहिये. यही चाह है भूदान कार्यकर्ता की. और यही चाह है कट्टर से कट्टर समाजवादी, साम्यवादी या कम्यूनिस्ट की. दोनों सरकार की 'न' को जनता की 'हां' में बदल देना चाहते हैं. दोनों सरकार की 'न' को नेस्त-नाबूद कर देना चाहते हैं. यही नहीं, सरकारी सत्ता को ही नेस्त-नाबूद कर शासन रहित और दरजे रहित समाज बनाना चाहते हैं.

लेकिन अफ़सोस की बात है कि इतना होते हुए भी

[illegible]

(ii) سرکار سے کوئی کام کرانا معنی سرکاری شکتی یا نظام سے کرانا، یعنی ان شکتیوں کو مضبوط کرنا جو آج سرکاری بندوبست کو سنبھالے ہوئے ہیں۔ اس لئے سرکار کے ذریعے سے بھودان یگیہ کا کام کرانے کا مطلب ہے اپنے کو سرکار کا اور بھی زیادہ تابعدار یا محتاج بنا لینا، یعنی آج جس شکنجے میں (انگریزوں کے بنائے سامراج شاہی، پونجی خور اور غریب چوس شکنجے میں) بھارت کی جنتا کسی ہوئی ہے اس شکنجے کو اور بھی زیادہ مضبوط بناکر اپنے کو پنج پنج کرلینا۔ اس کا مطلب ہوا اپنی بیڑیاں خود ہی باندھنا اور اپنی رہی سہی آزادی کو اور بھی ختم کردینا۔ اس کے خلاف بھودان یگیہ آندولن کا مقصد ہے جنتا کا سچا سماج قائم کرنا۔ ایسا سماج قائم کرنا جس میں 'اسٹیٹ' 'راجہ' 'سرکار' یا شاسن نام کی چیز ہی نہ رہے' شاسن رہت (Stateless) اور درجے رہت (Classless) سماج۔ اس کے لئے شروع سے کوشش کرنی چاہئے۔ اسی لئے بھودان ڈنکے کی چوٹ پر کہتا ہے کہ زمین نہ میری نہ تیری' نہ سرکار کی بلکہ ایشور کی یعنی سماج کی اور جو زمین پر خون پسینہ ایک کرے وہی کھائے۔ یہ دو اصول بھودان یگیہ کے آندولن کے آدھار ہیں اور ان کے بل بوتے پر چلکر ہی رام راج یا حکومت الٰہی یا کنگڈم آف گاڈ قائم کی جاسکتی ہے۔

(iii) بھارت کی موجودہ سرکار ودھان کی بندھنوں سے بندھی ہے۔ وہ جب تک ودھان نہ بدلے زمین بلا معاوضہ دئے کسی سے نہیں لے سکتی۔ اس لئے جب ایک طاقت کسی کام کو کر ہی نہیں سکتی تو پھر اس سے اس کام کے لئے کہنے سے فائدہ کیا؟ ہمارا اپنا خیال ہے کہ اگر سرکار سے کہا جائے تو اسی وقت جب کہا جائے اس کے 'نہ' کے خلاف ڈٹے رہنے کی ہم میں دیش میں ہمت ہو اور چیزیں اس طرح کروالینے کی طاقت ہو جیسے دیش چاہتا ہے۔ جب تک وہ طاقت نہیں ہے تب تک اسے پیدا کرنا چاہئے اور اپنی فوج کو مضبوط بنانا چاہئے۔ یہی چاہ ہے بھودان کاریہ کرتا کی۔ اور یہی چاہ ہے کٹر سے کٹر سماجوادی' سامیہ وادی یا کمیونسٹ کی۔ دونوں سرکار کی 'نہ' کو جنتا کی 'ہاں' میں بدل دینا چاہتے ہیں۔ دونوں سرکار کی 'نہ' کو نیست و نابود کردینا چاہتے ہیں۔ یہی نہیں' سرکاری ستا کو ہی نیست و نابود کر شاسن رہت اور درجہ رہت سماج بنانا چاہتے ہیں۔

لیکن افسوس کی بات ہے کہ اتنا ہوتے ہوئے بھی

[illegible] है कि यह मोह दूर दिलों में से निकल जाय.

(iii) "जब हजारों की तादाद में ग़रीब या छोटे लोग दान देते हैं तो उससे एक नैतिक ताक़त पैदा होती है जिसका असर अमीरों या बड़ों पर भी पड़ता है. ऐसा सचमुच हुआ. जहां ग़रीब लोग दो बरस से मुझे ज़मीन दे रहे थे उससे अमीरों में लज्जा पैदा हुई. और लज्जा क्या नहीं कर सकती ?

(iv) "हमें छोटे बड़े के भेद मिटा कर सब को मिला कर एक ऐसी सेना खड़ी करनी है जो अपने बल पर लड़ सके. अगर अमीर लोग अपने दिल नहीं खोलते तो हम एक क़दम आगे जायेंगे. हमने अपने ऊपर यह पाबन्दी कभी नहीं लगाई कि जो कुछ अब कर रहे हैं उसके अलावा कभी कुछ और नहीं करेंगे. ऐसी पाबन्दियों में हमारा विश्वास नहीं है."

भूदान और सरकार

दूसरा सवाल है सरकार का. जो भाई बहन यह मान बैठे हैं कि भूदान का काम सरकार के एक इशारे में हो सकता है वह आजकल की राजनीति और अर्थनीति से नावाक़िफ़ हैं. सरकार को रोकता कौन है ? अगर यह काम सरकार करना चाहती है तो क्यों नहीं कर डालती ? सच यह है कि सरकार भी जान गई है कि भूदान यज्ञ केवल भूमि के नये बंटवारे का ही दूसरा नाम नहीं है, बल्कि दौलत व सम्पत्ति और उसके पैदा करने के सभी तरह के साधनों का नया बंटवारा भी इसमें शामिल है. इतना ही नहीं, सरकार की ताक़त और हुकूमत का भी बंटवारा इसमें आ जाता है ! कौन सरकार आज दुनिया में है जो अपने टुकड़े कराने को तैयार हो या खुद ही अपने पैर में कुल्हाड़ी चला ले ? इसलिये भूदान यज्ञ सरकारी दायरे के परे की चीज़ है और सरकारी अधिकारी आज भले ही इसको साधुवाद कहें या इसकी तारीफ़ करें लेकिन कल नहीं तो परसों उनसे भूदान यज्ञ का फैला रूप बर्दाश्त नहीं होने वाला है. और फिर वह इसके साथ किस तरह पेश आएंगे मालिक ही जानता है.

लेकिन सरकार से कह कर भूदान यज्ञ का काम न कराने की और भी वजह हैं :

(i) सरकार से कराने के पहले अगर जनता खुद ही इसे कर डाले, अपनी ताक़त से ही इसे पूरा कर ले तो इससे बढ़ कर क्या हो सकता है. क़ानून का काम तो वैसा ही है जैसा किसी किताब के ख़तम हो जाने पर 'इतिश्री' या 'तमाम शुद' लिख देना. अगर किताब ख़तम हो गई है तो उसके लिखने न लिखने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं.

ہوی یعنیں کا ۔ میں چاهتا ہوں کہ یہ موہ جو کسی میں سے نکل جائے ۔

(iii) "جب ہزاروں کی تعداد میں غریب یا چھوٹے لوگ دان دیتے ہیں تو اُس سے ایک نیتک طاقت پیدا ہوتی ہے جس کا اثر امیروں یا بڑوں پر بھی پڑتا ہے ۔ ایسا سچ مچ ہوا جہاں غریب لوگ دو برس سے مجھے زمین دے رہے تھے اس سے امیروں میں لجا پیدا ہوئی ۔ اور لجا کیا نہیں کرسکتی ؟

(iv) "ہمیں چھوٹے بڑے کے بھید مٹا کر سب کو ملاکر ایک ایسی سینا کھڑی کرنی ہے جو اپنے بل پر لڑ سکے ۔ اگر امیر لوگ اپنے دل نہیں کھولتے تو ہم ایک قدم آگے جائیں گے ۔ ہم نے اپنے اوپر یہ پابندی کبھی نہیں لگائی کہ جو کچھ اب کر رہے ہیں اس کے علاوہ کبھی کچھ اور نہیں کریں گے ۔ ایسی پابندیوں میں ہمارا وشواس نہیں ہے ۔"

بھودان اور سرکار

دوسرا سوال ہے سرکار کا ۔ جو بھائی بہن یہ مان بیٹھے ہیں کہ بھودان کا کام سرکار کے ایک اشارے میں ہوسکتا ہے وہ آجکل کی راجنیتی اور ارتھنیتی سے ناواقف ہیں ۔ سرکار کو روکتا کون ہے ؟ اگر یہ کام سرکار کرنا چاہتی ہے تو کیوں نہیں کر ڈالتی ؟ سچ یہ ہے کہ سرکار بھی جان گئی ہے کہ بھودان یگیہ کیول بھومی کے نئے بٹوارے کا ہی دوسرا نام نہیں ہے، بلکہ دولت و سمپتی اور اس کے پیدا کرنے کے سبھی طرح کے سادھنوں کا نیا بٹوارہ بھی اس میں شامل ہے ۔ اتنا ہی نہیں، سرکار کی طاقت اور حکومت کا بھی بٹوارہ اس میں آ جاتا ہے ! کون سرکار آج دنیا میں ہے جو اپنے ٹکڑے کرانے کو تیار ہو یا خود ہی اپنے پیر میں کلہاڑی چلا لے ؟ اس لئے بھودان یگیہ سرکاری دائرے کے پرے کی چیز ہے اور سرکاری ادھیکاری آج بھلے ہی اس کو سادھوواد کہیں یا اس کی تعریف کریں لیکن کل نہیں تو پرسوں ان سے بھودان یگیہ کا پھیلا روپ برداشت نہیں ہونے والا ہے ۔ اور پھر وہ اس کے ساتھ کس طرح پیش آئیں گے مالک ہی جانتا ہے ۔

لیکن سرکار سے کہکر بھودان یگیہ کا کام نہ کرانے کی اور بھی وجہ ہیں :

(i) سرکار سے کرانے کے پہلے اگر جنتا خود ہی اسے کر ڈالے، اپنی طاقت سے ہی اسے پورا کرلے تو اس سے بڑھکر کیا ہوسکتا ہے ۔ قانون کا کام تو ویسا ہی ہے جیسا کسی کتاب کے ختم ہو جانے پر 'اتی شری' یا 'تمام شد' لکھ دینا ۔ اگر کتاب ختم ہوگئی ہے تو اس کے لکھنے نہ لکھنے سے کچھ بنتا بگڑتا نہیں ۔

एक चीज़ और भी है. केवल ज़मीन जमा कर लेना भूदान यज्ञ का ध्येय नहीं है. असली मक़सद विनोबा जी के शब्दों में यह है :

"किसी की ज़मीन का छटा हिस्सा लेना भूदान यज्ञ का सब से छोटा अंग है. मिली ज़मीन को बांटना है. जिन्हें ज़मीन मिलेगी उन्हें खेती के साधन देना है. उन्हें उन ज़मीनों पर बसाना जमाना है. जिन गांवों में हमें ज़मीन मिले वहां खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम के ज़रिये ग्राम राज क़ायम करना है."

ऊपर के पांच एतराज़ों के अलावा आम तौर से दो तरह के एतराज़ और सुनने में आते हैं :

(1) भूदान यज्ञ में ग़रीबों से ज़मीन क्यों ली जाती है ?

(2) दूसरों से ज़मीन मांगने के बजाय सरकार से कह कर यह काम क्यों नहीं करा लिया जाता ?

दोनों सवाल साफ़ हैं. उनके जवाब भी उतने ही साफ़ हैं :

ग़रीबों से भी ज़मीन क्यों ?

विनोबा सबसे ज़मीन मांगते हैं. इसके यह माने नहीं कि वह सबसे बराबर ज़मीन मांगते हैं. मोटे तौर से वह छटा हिस्सा मांगते हैं. लेकिन बड़े ज़मींदारों किसानों से कहते हैं कि ज़रूरत भर की ज़मीन रख कर बाक़ी सब मुझे दे दो, जो ग़रीब हैं उनसे जो भी 'प्रसाद' के रूप में मिलता है उसे ले लेते हैं. ग़रीबों की भेंट मंज़ूर करने के, विनोबा के लफ़्ज़ों में, चार कारन हैं:

(i) "बेज़मीन वालों की ख़ातिर जिस तरह अमीर किसान का देना धर्म है उसी तरह ग़रीब किसान का भी है क्योंकि बेज़मीन वाले के मुक़ाबले तो वह अमीर ही हैं. पानी जैसे पहाड़ का समुद्र को जाता है वैसे ही मैदान का भी क्योंकि समुद्र से दोनों ही ऊंचे हैं. इसी तरह हर एक को अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये. मेरे खाते समय अगर कोई भूका आ पहुंचे तो ख़ुद आधे पेट या भूके रह कर भी उसे खिलाना मेरा फ़र्ज़ है. समाज के अन्दर मैं यह भावना पैदा करना चाहता हूं."

(ii) "मैं यह बात हर एक के दिल में बैठा देना चाहता हूं कि हवा और पानी की तरह ज़मीन भी केवल ईश्वर की है. आज जैसे अमीर अपने को अपनी ज़मीन का मालिक समझता है उसी तरह ग़रीब अपने को अपने टुकड़े का मालिक समझता है. मालिकी का रोग दोनों को है. जंगल में रहने वाले बाबा को अपनी लंगोटी का उतना ही मोह होता है जितना रईस को अपनी कपड़े

لیکن چھوڑ دیتی ہے ۔ کیول زمین جمع کر لینا بھودان یگیہ کا دھئے نہیں ہے ۔ اصلی مقصد ونوبا جی کے شبدوں میں یہ ہے :

"کسی کی زمین کا چھٹا حصہ لینا بھودان یگیہ کا سب سے چھوٹا انگ ہے. ملی زمین کو بانٹنا ہے ۔ جنھیں زمین ملے گی انھیں کھیتی کے سادھن دینا ہے ۔ انھیں ان زمینوں پر بسانا جمانا ہے ۔ جن گاؤں میں زمین ملے وہاں کھادی، گرام ادیوگ، نئی تعلیم کے ذریعے گرام راج قائم کرنا ہے ."

اوپر کے پانچ اعتراضوں کے علاوہ عام طور سے دو طرح کے اعتراض اور سننے میں آتے ہیں :

(1) بھودان یگیہ میں غریبوں سے زمین کیوں لی جاتی ہے ؟

(2) دوسروں سے زمین مانگنے کے بجائے سرکار سے کہکر یہ کام کیوں نہیں کرا لیا جاتا ؟

دونوں سوال صاف ہیں ۔ ان کے جواب بھی اتنے ہی صاف ہیں :

غریبوں سے بھی زمین کیوں ؟

ونوبا سب سے زمین مانگتے ہیں. اس کے یہ معنی نہیں کہ وہ سب سے برابر زمین مانگتے ہیں. موٹے طور سے وہ چھٹا حصہ مانگتے ہیں ۔ لیکن بڑے زمینداروں کسانوں سے کہتے ہیں کہ ضرورت بھر کی زمین رکھکر باقی سب مجھے دے دو، جو غریب ہیں ان سے جو بھی 'پرساد' کے روپ میں ملتا ہے اسے لے لیتے ہیں. غریبوں کی بھینٹ منظور کرنے کے، ونوبا کے لفظوں میں، چار کارن ہیں :

(i) "بے زمین والوں کی خاطر جس طرح امیر کسان کا دینا دھرم ہے اسی طرح غریب کسان کا بھی ہے کیونکہ بے زمین والے کے مقابلے تو وہ امیر ہی ہیں. پانی جیسے پہاڑ کا سمندر کو جاتا ہے ویسے ہی میدان کا بھی کیونکہ سمندر سے دونوں ہی اونچے ہیں ۔ اسی طرح ہر ایک کو اپنا فرض ادا کرنا چاہئے ۔ میرے کھاتے سمے اگر کوئی بھوکا آ پہنچے تو خود آدھے پیٹ یا بھوکے رکھکر بھی اسے کھلانا میرا فرض ہے ۔ سماج کے اندر میں یہ بھاونا پیدا کرنا چاہتا ہوں ."

(ii) "میں یہ بات ہر ایک کے دل میں بٹھا دینا چاہتا ہوں کہ ہوا اور پانی کی طرح زمین بھی کیول ایشور کی ہے ۔ آج جیسے امیر اپنے کو اپنی زمین کا مالک سمجھتا ہے اسی طرح غریب اپنے کو اپنے ٹکڑے کا مالک سمجھتا ہے ۔ مالکی کا روگ دونوں کو ہے. جنگل میں رہنے والے بابا کو اپنی لنگوٹی کو اتنا ہی موہ ہوتا ہے. جتنا رئیس کو اپنی کپڑے

और खुशी से लिया जाता है. कोई दबाव नहीं डाला जाता. बिहार के गया जिले के सिवाडीह गांव के लोगों ने अपनी कुल जमीन विनोबा जी को दान में दी थी. बाद में मालूम हुआ कि यह काम उन्होंने अपनी राजी से नहीं बल्कि किसी दबाव से किया था. तब विनोबा जी ने उनके सारे के सारे दान पत्र खारिज कर दिये !

(4) मीरा बहन की यह शिकायत सही है कि दान में मिलने वाली अकसर जमीन खराब निकल जाती है. लेकिन जमीन मिलते वक़्त तो उसकी पूरी जानकारी इतनी नहीं है, दाता का भाव देखा जाता है. इसलिये कौन इनकार करे और किस आधार पर इनकार करे ? फिर, अगर वह खेती के लायक़ न हो तो चरागाह के काम आ सकती है, चरागाह के लायक़ न हो तो उसकी सख्त मिट्टी से रेह बना कर साबुन बनाने का काम लिया जा सकता है, इसके लायक़ भी न हो तो उस पर बस्तियां बसाई जा सकती हैं जैसा कि शरनार्थियों को आज बदतर कही जाने वाली जमीनों पर बसते देखा गया है. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि जमीन लेते वक़्त हर मुमकिन एहतियात बरतनी चाहिये. और बहन जी को यह जानकर खुशी होगी कि यह एहतियात बरती जा रही है. और पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा अच्छी जमीनें अब मिल रही हैं. हाल ही में, केरल में एक दाता ने ऐसी उपजाऊ दस एकड़ जमीन दी है जिसका दाम अस्सी हज़ार रुपया है.

इसी सिलसिले में एक बात और भी है. आज भले कोई दाता अच्छी जमीन रख कर खराब दे दे, लेकिन हवा बदल रही है और वह यह महसूस कर रहा है कि अब जमीन उसकी नहीं रहने वाली है. और बंट कर रहेगी. जमीन उसकी होगी जो उस पर काम करेगा. साथ ही साथ बे जमीन वालों में भी चेतना आ रही है और उनका भी एक नैतिक दबाव पड़ना शुरू हो गया है. जिसकी वजह से अच्छी जमीनें आसानी से मिलने लगी हैं और मिलेंगी.

आन्दोलन का मक़सद

(5) मीरा बहन का यह कहना कि किसी तरह भी जमीन जमा कर लेने की कोशिश है भूदान कार्य कर्ताओं के साथ ज़ियादती करना है. ऐसी कोई भाग दौड़ या कोशिश है ही नहीं. विनोबा जी ने हाल में ही कहा है :

"मैंने कहा था कि भूदान यज्ञ का काम 1957 तक पूरा होना चाहिये. मैं यह नहीं कहता कि 1957 तक पूरा करने के लिये उसे हिंसा से भी करो तो चलेगा. हम तो अहिंसा और प्रेम से समझा बुझा कर ही यह काम करना चाहते हैं. यह भूमि का मसला हमारे लिये एक साधन है. हम तो शुद्ध धर्म का प्रचार करना चाहते हैं. और उसके साथ साथ त्याग और प्रेम की भावना लोगों में फैलाना चाहते हैं."

اور خوشی سے لیا جاتا ہے۔ کوئی دباؤ نہیں ڈالا جاتا۔ بہار کے گیا ضلع کے سیواڈیہہ گاؤں کے لوگوں نے اپنی کل زمین ونوبا جی کو دان میں دی تھی۔ بعد میں معلوم کہ یہ کام انہوں نے اپنی راضی سے نہیں بلکہ کسی دباؤ سے کیا تھا۔ تب ونوباجی نے اُن کے سارے کے سارے دان پتر خارج کر دئیے!

(4) میرا بہن کی یہ شکایت صحیح ہے کہ دان میں ملنے والی اکثر زمین خراب نکل جاتی ہے۔ لیکن زمین ملتے وقت تو اُسکی پوری جانکاری اتنی نہیں ہے، داتا کا بھاؤ دیکھا جاتا ہے۔ اس لئے کون انکار کرے اور کس آدھار پر انکار کرے؟ پھر، اگر وہ کھیتی کے لائق نہ ہو تو چراگاہ کے کام آ سکتی ہے، چراگاہ کے لائق نہ ہو تو اُسکی سخت مٹی سے ریہ بنا کر صابن بنانے کا کام لیا جا سکتا ہے، اس کے لائق بھی نہ ہو تو اس پر بستیاں بسائی جا سکتی ہیں۔ جیسا کہ شرنارتھیوں کو آج بدتر کہی جانے والی زمینوں پر بستے دیکھا گیا ہے۔ لیکن یہ ماننا پڑے گا کہ زمین لیتے وقت ہر ممکن احتیاط برتنی چاہئے۔ اور بہن جی کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ یہ احتیاط برتی جا رہی ہے۔ اور پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ اچھی زمینیں اب مل رہی ہیں۔ حال ہی میں، کیرل میں ایک داتا نے ایسی اُپجاؤ دس ایکڑ زمین دی ہے جسکا دام اسی ہزار روپیہ ہے۔

اسی سلسلے میں ایک بات اور بھی ہے۔ آج بھلے کوئی داتا اچھی زمین رکھ کر خراب دے دے، لیکن ہوا بدل رہی ہے اور وہ یہ محسوس کر رہا ہے کہ اب زمین اسکی نہیں رہنے والی ہے۔ اور بٹ کر رہے گی۔ زمین اسکی ہوگی جو اس پر کام کرے گا۔ ساتھ ہی ساتھ بےزمین والوں میں بھی چیتنا آ رہی ہے اور اُن کا بھی ایک نیتک دباؤ پڑنا شروع ہو گیا ہے۔ جسکی وجہ سے اچھی زمینیں آسانی سے ملنے لگی ہیں اور ملینگی۔

آندولن کا مقصد

(5) میرا بہن کا یہ کہنا کہ کسی طرح بھی زمین جمع کر لینے کی کوشش ہے۔ بھودان کاریہ کرتاؤں کے ساتھ زیادتی کرنا ہے۔ ایسی کوئی بھاگ دوڑ یا کوشش ہے ہی نہیں۔ ونوبا جی نے حال میں ہی کہا ہے:

" میں نے کہا تھا کہ بھودان یگیہ کا کام 1957 تک پورا ہونا چاہئے۔ میں یہ نہیں کہتا کہ 1957 تک پورا کرنے کے لئے اسے ہنسا سے بھی کرو تو چلے گا۔ ہم تو اہنسا اور پریم سے سمجھا بجھا کر ہی یہ کام کرنا چاہتے ہیں۔ یہ بھومی کا مسئلہ ہمارے لئے ایک سادھن ہے۔ ہم تو شدھ دھرم کا پرچار کرنا چاہتے ہیں۔ اور اُس کے ساتھ ساتھ تیاگ اور پریم کی بھاونا لوگوں میں پھیلانا چاہتے ہیں۔"

अपने सच्चे, बेज़बान और क़ुदरती साथियों को भूल जायें. इसलिये हम सब को मीरा बहन का अहसान मन्द होना चाहिये कि उन्होंने इस पहलू पर रोशनी डाली जिसे हर भूदान कार्यकर्ता को ख़याल में रखना चाहिये.

उत्तर प्रदेश में अब तक लगभग पांच लाख एकड़ ज़मीन मिल चुकी है. मीरा बहन का यह कहना बिलकुल सही है कि इस में से लगभग आधी ज़मीन 'पड़ती' होगी जिस पर मवेशियों या पेड़ों का हक़ है. हम भी इस हक़ को स्वीकार करते हैं और बहन जी को यह जान कर ख़ुशी होगी कि जो ज़मीन बांटी जाती है वह गांव वालों की सलाह से और जानवरों वग़ैरा के हित को ध्यान में रख ही बांटी जाती है. हमीरपुर ज़िले में अब तक लगभग बीस हज़ार एकड़ ज़मीन बंट चुकी है जिस में गांव वालों ने तेरह हज़ार एकड़ चरागाह और पेड़ों के लिये अलग कर दी है. हमें यक़ीन है कि ज़मीन बांटते वक़्त बहन जी की इस बात का आगे और भी ज़ियादा ध्यान रक्खा जायगा.

(2) मीरा बहन का यह कहना सोलह आना सही है कि जो ज़मीन मिलती है उसका पूरा ब्योरा जनता के सामने नहीं आता. इसके तीन कारन हैं: (i) अच्छे कार्यकर्ताओं की कमी (ii) यू. पी. के पटवारियों का स्तीफ़ा और (iii) तफ़सील में जाने से आम तौर से लोगों का घबराना. दीन हीन के लिये सच्चे काम करने वालों की कितनी कमी है इसका तजुरबा बहन जी को ख़ूब है फिर भी उनकी मांग सही है. हमें उम्मीद है कि जगह जगह की भूदान कमेटियां दान में मिलने वाली ज़मीन के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानकारी हासिल करेंगी और लोगों को देंगी. इससे बंटवारे में हद दरजे सहूलियत पैदा होगी.

(3) ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े किये जाने का एतराज़ पुराना है. बहुत कम लोग शायद यह जानते हों कि दाता जो ज़मीन देता है वह कहीं एक जगह इकट्ठी नहीं रहती बल्कि टुकड़ों टुकड़ों में इधर उधर बिखरी रहती है. शायद ही कहीं ऐसा हुआ हो कि भूदान में बांटने के कारन किसी टुकड़े के और टुकड़े किये गए हों. इस मसले पर काफ़ी गहरी चरचा स्वर्गीय श्री किशोरलाल मशरूवाला ने अपने कई लेखों में 'हरिजन' में की थी. भूदान में यह देखा जाता है कि हर आदमी को एक एकड़ तर या पांच एकड़ ख़ुश्क ज़मीन से कम न दी जाय.

विनोबा जी ने आन्दोलन को 'भूदान' नहीं 'भूदान यज्ञ' नाम दिया है. अगर 'भू' या ज़मीन इस आन्दोलन का दिल है और दान उसकी रीढ़ की हड्डी है तो हमारा मानना है कि 'यज्ञ' उसकी आत्मा है. इसकी वजह से इसमें हर एक से आहुति मंज़ूर की जाती है, हर एक से दान ले लिया जाता है. किसी की आर्थिक भावनाओं से सही या ग़लत फ़ायदा उठाने की बात ही नहीं है. दान [illegible] दाता की मरज़ी से

اپنے سچے، بے زبان اور قدرتی ساتھیوں کو بھول جائیں اس لئے ہم سب کو میرا بہن کا احسان مند ہونا چاہئے کہ انہوں نے اس پہلو پر روشنی ڈالی جسے ہر بھودان کاریہ کرتاؤں کو خیال میں رکھنا چاہئے۔

اتر پردیش میں اب تک لگ بھگ پانچ لاکھ ایکڑ زمین مل چکی ہے ۔ میرا بہن کا یہ کہنا بالکل صحیح ہے کہ اس میں سے لگ بھگ آدھی زمین 'پڑتی' ہوگی جس پر مویشیوں یا پیڑوں کا حق ہے ۔ ہم بھی اس حق کو سویکار کرتے ہیں اور بہن جی کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ جو زمین بانٹی جاتی ہے وہ گاؤں والوں کی صلاح سے اور جانوروں وغیرہ کے ہت کو دھیان میں رکھکر ہی بانٹی جاتی ہے ۔ ہمیرپور ضلع میں اب تک لگ بھگ بیس ہزار ایکڑ زمین بٹ چکی ہے جس میں سے گاؤں والوں نے تیرہ ہزار ایکڑ چراگاہ اور پیڑوں کے لئے الگ کر دی ہے ۔ ہمیں یقین ہے کہ زمین بانٹتے وقت بہن جی کی اس بات کا آگے اور بھی زیادہ خیال رکھا جائیگا۔

(2) میرا بہن کا یہ کہنا سولہ آنہ صحیح ہے کہ جو زمین ملتی ہے اسکا پورا بیورا جنتا کے سامنے نہیں آتا۔ اس کے تین کارن ہیں: (i) اچھے کاریہ کرتاؤں کی کمی (ii) یو. پی کے پٹواریوں کا استعفی اور (iii) تفصیل میں جانے سے عام طور سے لوگوں کا گھبرانا ۔ دین ہین کے لئے سچے کام کرنے والوں کی کتنی کمی ہے اسکا تجربہ بہن جی کو خوب ہے ۔ پھر بھی ان کی مانگ صحیح ہے ۔ ہمیں امید ہے کہ جگہ جگہ کی بھودان کمیٹیاں دان میں ملنے والی زمین کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جانکاری حاصل کریں گی اور لوگوں کو دیں گی ۔ اس سے بٹوارے میں حد درجہ سہولیت پیدا ہوگی۔

(3) زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے کئے جانے کا اعتراض پرانا ہے بہت کم لوگ شاید یہ جانتے ہیں کہ داتا جو زمین دیتا ہے وہ کہیں ایک جگہ اکٹھی نہیں رہتی بلکہ ٹکڑوں ٹکڑوں میں ادھر ادھر بکھری رہتی ہے ۔ شاید ہی کہیں ایسا ہوا ہو کہ بھودان میں بانٹنے کے کارن کسی ٹکڑے کے اور ٹکڑے کئے گئے ہوں ۔ اس مسئلے پر کافی گہری چرچا سورگیہ شری کشور لال مشروالا نے اپنے کئی لیکھوں میں 'ہریجن' میں کی تھی۔ بھودان میں یہ دیکھا جاتا ہے کہ ہر آدمی کو ایک ایکڑ تر یا پانچ ایکڑ خشک زمین سے کم نہ دی جائے۔

ونوبا جی نے آندولن کو 'بھودان' نہیں ' بھودان یگیہ' نام دیا ہے ۔ اگر ' بھو ' یا زمین اس آندولن کا دل ہے اور ' دان ' اسکی ریڑھ ہڈی ہے تو ہمارا ماننا ہے کہ 'یگیہ' اسکی آتما ہے ۔ اسی وجہ سے اس میں ہر ایک سے آہوتی منظور کی جاتی ہے' ہر ایک سے دان لے لیا جاتا ہے۔ کسی کی آرتھک بھاوناؤں سے صحیح یا غلط فائدہ اٹھانے کی بات ہی نہیں ہے ۔ دان پتر داتا کی مرضی

मीरा बहन के एतराज़

अब भू-दान-यज्ञ आन्दोलन दूसरे दौर से तीसरे दौर में आया. लोग समझ गए कि इसकी खिल्ली उड़ाने से कोई फ़ायदा नहीं है और यह धीरे धीरे गहरा होता चला जा रहा है. देश के समझदार लोगों का ध्यान इस ओर जाने लगा और उन्होंने अपनी निगाह से इसे देखना शुरू किया. आन्दोलन पर कड़ी टीकाएं होने लगीं. इन टीकाओं में सबसे ज़ोरदार, सच्ची और प्रेम भरी टीका देश की महान सेवक और गांधी जी की परम भक्त मीरा बहन ने की. पिछली पहली मई के "हिन्दुस्तान टाइम्स" अख़बार में उनका एक लेख छपा जिसमें उन्होंने अपने दिल का दर्द और शंकायें सामने रखीं. उनके पांच एतराज़ यह हैं :

1. भूदान वालों को मवेशियों और पेड़ों के बचाने की कोई चिन्ता नहीं है और यू. पी. में मिली हुई आधी ज़मीन ऐसी है जिस पर हमारे इन बेज़बान और क़ुदरती दोस्तों का हक़ था और होना चाहिये.

2. जो ज़मीन मिलती है उसका सिलसिलेवार हिसाब जनता के सामने नहीं आता.

3. इस आन्दोलन से ज़मीन के छोटे छोटे टुकड़े हो जाने का डर है और देहातियों की धार्मिक भावना का ग़लत फ़ायदा उठाया जाता है.

4. ज़ियादातर ख़राब ज़मीन ही दान में मिली है जिसका नतीजा यह होगा कि ख़राब ज़मीन बेज़मीन वालों के मत्थे मढ़ जायगी और अच्छी ज़मीन पर ज़मींदारों का क़ब्ज़ा हमेशा बना रहेगा.

5. ऐसा लगता है कि पांच करोड़ एकड़ ज़मीन जिस तरह से भी हो सके जमा करने की कोशिश की जा रही है.

अब हम इनको बारी बारी से लेंगे.

(1) इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज हमारे देश में जितने समाज सेवक या कर्ता धर्ता हैं उनमें मवेशियों और पेड़ों के लिये जो ध्यान और मोहब्बत मीरा बहन के दिल में है वह किसी और के दिल में नहीं. बरसों से एक अनोखी लगन और आत्मिक श्रद्धा के साथ वह इनकी [illegible] रही हैं और यह भी सही बात है कि भू दान वाले मवेशियों और पेड़ों की तरफ़ उतने मुख़ातिब नहीं हैं जितना होना चाहिये. हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी या अर्थनीति में मवेशियों और पेड़ पौधों की क्या जगह है, और खेती के मामले में मशीनें या ट्रैक्टर हमारे देश के लिये कितने हानिकर हैं, हम जानते हैं कि गाय, बैल या पेड़ों के पालने पर ही हमारे गांवों का पनपना निर्भर है. आज कल हर जगह मशीनों का बोल बाला है. इसलिये बहुत मुमकिन था कि मशीनों के फेर में आ कर हम

میرا بہن کے اعتراض

اب بھودان یگیہ آندولن دوسرے دور سے تیسرے دور میں آیا۔ لوگ سمجھ گئے کہ اُسکی کھلی اُڑانے سے کوئی فائدہ نہیں ہے اور یہ دھیرے دھیرے گہرا ہوتا چلا جا رہا ہے۔ دیش کے سمجھدار لوگوں کا دھیان اِس اور جانے لگا اور اُنہوں نے اپنی نگاہ سے اِسے دیکھنا شروع کیا۔ آندولن پر کڑی ٹیکائیں ہونے لگیں۔ ان ٹیکاؤں میں سب سے زوردار، سچی اور پریم بھری ٹیکا دیش کی مہان سیوک اور گاندھی جی کی پرم بھگت میرا بہن نے کی۔ پچھلی پہلی مئی کے "ہندستان ٹائمس" اخبار میں اُنکا ایک لیکھ چھپا جس میں اُنہوں نے اپنے دل کا درد اور شنکائیں سامنے رکھیں۔ اُن کے پانچ اعتراض یہ ہیں :

1. بھودان والوں کو مویشیوں اور پیڑوں کے بچانے کی کوئی چنتا نہیں ہے اور یو. پی. میں ملی ہوئی آدھی زمین ایسی ہے جس پر ہمارے ان بے زبان اور قدرتی دوستوں کا حق تھا اور ہونا چاہئے۔

2. جو زمین ملتی ہے اُسکا سلسلےوار حساب جنتا کے سامنے نہیں آتا۔

3. اِس آندولن سے زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ہو جانے کا ڈر ہے اور دیہاتیوں کی دھارمک بھاونا کا غلط فائدہ اُٹھایا جاتا ہے۔

4. زیادہ تر خراب زمین ہی دان میں ملی ہے۔ جسکا نتیجہ یہ ہوگا کہ خراب زمین بے زمین والوں کے متھے مڑھ جائے گی اور اچھی زمین پر زمینداروں کا قبضہ ہمیشہ بنا رہے گا۔

5. ایسا لگتا ہے کہ پانچ کروڑ ایکڑ زمین جس طرح سے بھی ہو سکے جمع کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔

اب ہم ان کو باری باری سے لینگے۔

(1) اِس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ آج ہمارے دیش میں جتنے سماج سیوک یا کرتا دھرتا ہیں اُن میں مویشیوں اور پیڑوں کے لئے جو دھیان اور محبت میرا بہن کے دل میں ہے وہ کسی اور کے دل میں نہیں۔ برسوں سے ایک انوکھی لگن اور آتمک شردھا کے ساتھ وہ ان کی پرورش کر رہی ہیں اور یہ بھی سچی بات ہے کہ بھودان والے مویشیوں اور پیڑوں کی طرف اتنے مخاطب نہیں ہیں جتنا ہونا چاہئے۔ ہم یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ ہندستانی زندگی یا ارتھ نیتی میں مویشیوں اور پیڑ پودوں کی کیا جگہ ہے، اور کھیتی کے معاملے میں مشینیں یا ٹریکٹر ہمارے دیش کے لئے کتنے ہانیکر ہیں۔ ہم جانتے ہیں کہ گائے بیل، یا پیڑوں کے پالنے پر ہی ہمارے گاؤں کا پنپنا نربھر ہے۔ پر آج کل ہر جگہ مشینوں کا بول بالا ہے۔ اس لئے یہ بہت ممکن تھا کہ مشینوں کے پھیر میں آ کر ہم

1. दान दी हुई सम्पत्ति हर एक को अपने पास ही रखना है जरूरत हो तो बैंक में भी रख सकते हैं.

2. आमदनी का जो हिस्सा देना है वह जीवन भर या कम से कम पांच साल तक देना है.

3. क़र्ज़दार यह दान नहीं दे सकता यानी दान देने वाले का क़र्ज़े से मुक्त होना ज़रूरी है.

4. दान दी हुई सम्पत्ति का खर्च मेरे कहने के मुताबिक़ करना होगा.

साथ ही साथ उन्होंने काम का ढंग भी बदला. उन्होंने बिहार के हर ज़िले का कोटा मुक़र्रर किया और कार्यकर्ताओं से अपील की कि उसे पूरा करें. इसके अलावा बिहार का उन्होंने एक ज़िला चुना—गया ज़िला जहां काफ़ी ज़ियादा ज़ोर लगाया. अपने पुराने मंजे हुए काम करने वाले चुन कर लगभग साठ सत्तर आदमी गया ज़िले में नवम्बर 52 में लगा दिये और छे महीने के अन्दर एक लाख एकड़ ज़मीन की मांग की.

चांडिल सम्मेलन

दिसम्बर के महीने में विनोबा का स्वास्थ्य बहुत गिर गया. वह बीमार पड़ गए. मान भूमि ज़िले के चान्डिल नामक मुक़ाम पर उन्होंने क़याम किया. जब उनकी तबियत अच्छी होने लगी तो चांडिल में ही देश भर के भू दान कार्यकर्ता और सर्वोदय प्रेमी मार्च 1953 में जमा हुए. उस वक़्त तक सारे भारत से क़रीब आठ लाख एकड़ ज़मीन मिल चुकी थी. चाण्डिल सम्मेलन में विनोबा ने बताया कि भू दान यज्ञ का असल मक़सद क्या है. उन्होंने बताया कि असल मक़सद वह आज़ाद जन शक्ति पैदा करना है जो सरकार की फ़ौजी या हिंसा शक्ति के ख़िलाफ़ होगी और क़ानून या सज़ा की शक्ति से भी ऊपर होगी और जिसके बल पर हिन्दुस्तान के लोग अपने पैरों पर खड़े हो कर गांव राज (यानी हर गांव में गांव वालों की ही हुकूमत) क़ायम कर सकेंगे.

चांडिल से विनोबा फिर पैदल निकल पड़े. इस नए सफ़र में उन्हें ज़मीन लाख लाख एकड़ मिलने लगी. एक राजा ने अपने कुल परिवार की तरफ़ से दो लाख से ऊपर ज़मीन दी और विनोबा को इत्मीनान दिलाया कि ज़मीन मांगने का काम अब हम करेंगे और दूसरे ज़मींदारों से करायेंगे. इसके साथ कुल गांव के गांव भी विनोबा को दान में मिलने लगे. इस तरीक़े का पहला दान मई 1952 में मिला था जब उत्तर प्रदेश के हमीरपुर ज़िले के मंगरोठ गांव के (जिसमें 105 घर हैं) 65 ज़मीन वाले परिवारों में से 64 ने अपनी कुल भूमि दान में दे दी और 'सबै भूमि गोपाल की' का आदर्श दुनिया के सामने रखा.

1. دان میں دی ہوئی سمپتی ہر ایک کو اپنے پاس ہی رکھنا ہے ۔ ضرورت ہو تو بینک میں بھی رکھ سکتے ہیں ۔

2. آمدنی کا جو حصہ دینا ہے وہ جیون بھر یا کم سے کم پانچ سال تک دینا ہے ۔

3. قرض دار دان نہیں دے سکتا یعنی دان دینے والے کا قرضے سے مکت ہونا ضروری ہے ۔

4. دان دی ہوئی سمپتی کا خرچ میرے کہنے کے مطابق کرنا ہوگا ۔

ساتھ ہی ساتھ اُنہوں نے کام کا ڈھنگ بھی بدلا ۔ اُنہوں نے بہار کے ہر ضلعے کا کوٹا مقرر کیا اور کاریہ کرتاؤں سے اپیل کی کہ اسے پورا کریں ۔ اس کے علاوہ بہار کا اُنہوں نے ایک ضلع چنا—گیا ضلع جہاں کافی زیادہ زور لگایا ۔ اپنے پرانے منجھے ہوئے کام کرنے والے چن کر لگ بھگ ساٹھ ستر آدمی گیا ضلعے میں نومبر 52 میں لگا دئیے اور چھ مہینے کے اندر ایک لاکھ ایکڑ زمین کی مانگ کی ۔

چانڈل سمیلن

دسمبر کے مہینے میں ونوبا کا سواستھ بہت گر گیا ۔ وہ بیمار پڑ گئے ۔ مان بھومی ضلعے کے چانڈل نامک مقام پر اُنہوں نے قیام کیا ۔ جب اُن کی طبیعت اچھی ہونے لگی تو چانڈل میں ہی دیش بھر کے بھودان کاریہ کرتا اور سروودے پریمی مارچ 1953 میں جمع ہوئے ۔ اس وقت تک سارے بھارت سے قریب آٹھ لاکھ ایکڑ زمین مل چکی تھی ۔ چانڈل سمیلن میں ونوبا نے بتایا کہ بھودان یگیہ کا اصل مقصد کیا ہے ۔ اُنہوں نے بتایا کہ اصل مقصد وہ آزاد جن شکتی پیدا کرنا ہے جو سرکار فوجی یا ہنسا شکتی کے خلاف ہوگی اور قانون یا سزا کی شکتی سے بھی اوپر ہوگی اور جس کے بل پر ہندستان کے لوگ اپنے پیروں پر کھڑے ہو کر گاؤں راج (یعنی ہر گاؤں میں گاؤں والوں کی ہی حکومت) قائم کر سکیں گے ۔

چانڈل سے ونوبا پھر پیدل نکل پڑے ۔ اس نئے سفر میں اُنہیں زمین لاکھ لاکھ ایکڑ ملنے لگی ۔ ایک راجا نے اپنے کل پریوار کی طرف سے دو لاکھ سے اوپر زمین دی اور ونوبا کو اطمینان دلایا کہ زمین مانگنے کا کام اب ہم کریں گے اور دوسرے زمینداروں سے کروائیں گے ۔ اس کے ساتھ کل گاؤں کے گاؤں بھی ونوبا کو دان میں ملنے لگے ۔ اس طریقے کا پہلا دان مئی 1952 میں ملا تھا جب اُتر پردیش کے ہمیرپور ضلع کے منگروٹھ گاؤں کے (جس میں 105 گھر ہیں) 65 زمین والے پریواروں میں سے 64 نے اپنی کل بھومی دان میں دے دی اور "سبے بھومی گوپال کی" کا آدرش دنیا کے سامنے رکھا ۔

सेवापुरी आश्रम में जमा हुए और दो साल के अन्दर बीस लाख एकड़ ज़मीन जमा करने का सब ने निश्चय किया. अब तक विनोबा अपने काम में अकेले थे. सेवापुरी सम्मेलन के बाद से कुछ और लोगों ने हाथ बंटाना और थोड़ा बहुत वक़्त देना शुरू किया.

सेवापुरी के बाद विनोबा आगे बढ़े. जौनपुर, लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, जालौन, हमीरपुर, फतेहपुर, राय बरेली, सुलतानपुर और प्रतापगढ़ ज़िलों में होते हुए 21 जून 1952 को वह इलाहाबाद पहुंचे. उस दिन अपने आराम कमरे में बैठे हुए, इलाहाबाद यूनिवरसिटी के एक प्रोफ़ेसर ने विनोबा की खिल्ली उड़ाते हुए अपने दोस्तों से कहा कि "अब यह गांधी के नये गधे निकले हैं जो भीख मांग मांग कर देश के सब से बड़े आर्थिक सवालों को—ज़मीन के सवाल को हल करना चाहते हैं." हमें यक़ीन है देश के दूसरे हिस्सों में भी बहुत से पढ़े लिखे लोगों ख़ास कर प्रोफ़ेसरों और वकीलों के दिमाग़ में, यही ख़याल आया होगा. मोटे तौर पर 1951 में भू-दान आन्दोलन पहले दौर में से गुज़रा जब उसकी तरफ़ लोग ध्यान ही नहीं देते थे. 1952 में दूसरा दौर शुरू हुआ जब कुछ लोग इसकी हंसी उड़ाने और मज़ाक़ करने लगे.

यू. पी. से बिहार

उत्तर प्रदेश के सब ज़िलों में घूमने के बाद (टेहरी गढ़वाल, अलमोड़ा और नैनीताल के पहाड़ी ज़िलों को छोड़ कर) विनोबा जी 4 जुलाई को बनारस में काशी विद्यापीठ पहुंचे. बरसात के दो महीने उन्होंने वहीं गुज़ारे 11 सितम्बर 1952 को वह बिहार के लिये निकले उस वक़्त तक 3,50,041 एकड़ ज़मीन देश भर में उन्हें मिल चुकी थी. विनोबा ने प्रन किया कि जब तक पांच करोड़ एकड़ पूरे नहीं हो जाते मैं परम धाम आश्रम वापस नहीं जाऊंगा.

बिहार, राजा जनक और भगवान बुद्ध की भूमि है. यहीं पर 1917 में महात्मा गांधी को अहिंसा देवी का सब से पहले साक्षात्कार हुआ था. विनोबा ने निश्चय किया कि बिहार इस बात की कसौटी बनना चाहिये कि अहिंसा की शक्ति से आर्थिक दायरे में क्या कुछ किया जा सकता है. उन्होंने बिहार का कोटा चार लाख एकड़ से (जैसा सेवापुरी में तय हुआ था) बढ़ा कर 32 लाख एकड़ कर दिया. वहां उन्होंने 'सम्पत्ति दान यज्ञ' का नया ख़याल पेश किया जिसमें "छठा दो" की मांग की. यानी हर आदमी अपनी कुल मिलकियत का छठा हिस्सा ग़रीबों के लिये दान दे दे. इस नये यज्ञ के बारे में विनोबा का कहना है:

سیواپوری آشرم میں جمع ہوئے اور دو سال کے اندر پچیس لاکھ ایکڑ زمین جمع کرنے کا سب نے نشچے کیا ۔ اب تک ونوبا اپنے کام میں اکیلے تھے ۔ سیواپوری سمیلن کے بعد سے کچھ اور لوگوں نے بھی ہاتھ بٹانا اور تھوڑا بہت وقت دینا شروع کیا ۔

سیواپوری کے بعد ونوبا آگے بڑھے ۔ جونپور، لکھنؤ، اناؤ، کانپور، جالون، ہمیرپور، فتحپور، رائے بریلی، سلطانپور اور پرتاپگڈھ ضلعوں میں ہوتے ہوئے 21 جون 1952 کو وہ الہ آباد پہنچے ۔ اس دن اپنے آرام کمرے میں بیٹھے ہوئے، الہ آباد یونیورسٹی کے ایک پروفیسر نے ونوبا کی کھلی اڑاتے ہوئے اپنے دوستوں سے کہا کہ "اب یہ گاندھی کے نئے گدھے نکلے ہیں جو بھیک مانگ مانگ کر دیش کے سب سے بڑے آرتھک سوالوں کو—زمین کے سوال کو حل کرنا چاہتے ہیں ۔" ہمیں یقین ہے کہ دیش کے دوسرے حصوں میں بھی بہت سے پڑھے لکھے لوگوں خاص کر پروفیسروں اور وکیلوں کے دماغ میں یہی خیال آیا ہوگا ۔ موٹے طور پر 1951 میں بھودان آندولن پہلے دور میں سے گذرا جب اس کی طرف لوگ دھیان ہی نہیں دیتے تھے ۔ 1952 میں دوسرا دور شروع ہوا جب کچھ لوگ اس کی ہنسی اڑانے اور مذاق کرنے لگے ۔

یو ۔ پی ۔ سے بہار

اتر پردیش کے سب ضلعوں میں گھومنے کے بعد (ٹیہری گڑھوال، المورا اور نینی تال کے پہاڑی ضلعوں کو چھوڑ کر) ونوبا جی 4 جولائی کو بنارس میں کاشی ودیا پیٹھ پہنچے ۔ برسات کے دو مہینے انہوں نے وہیں گذارے ۔ 11 ستمبر 1952 کو وہ بہار کے لئے نکلے اس وقت تک 350,041 ایکڑ زمین دیش بھر میں انہیں مل چکی تھی ۔ ونوبا نے پرن کیا کہ جب تک پانچ کروڑ ایکڑ پورے نہیں ہو جاتے میں پرم دھام آشرم واپس نہیں جاؤں گا ۔

بہار، راجا جنک اور بھگوان بدھ کی بھومی ہے ۔ یہیں پر 1917 میں مہاتما گاندھی کو اہنسا دیوی کا سب سے پہلے ساکشاتکار ہوا تھا ۔ ونوبا نے نشچے کیا کہ بہار اس بات کی کسوٹی بننا چاہئے کہ اہنسا کی شکتی سے آرتھک دائرے میں کیا کچھ کیا جا سکتا ہے ۔ انہوں نے بہار کا کوٹا چار لاکھ ایکڑ سے (جیسا سیواپوری میں طے ہوا تھا) بڑھا کر 32 لاکھ ایکڑ کر دیا ۔ یہاں انہوں نے 'سمپتی دان یگیہ' کا نیا خیال پیش کیا جس میں "چھٹا دو" کی مانگ کی ۔ یعنی ہر آدمی اپنی کچھ ملکیت کا چھٹا حصہ غریبوں کے لئے دان دے دے ۔ اس نئے یگیہ کے بارے میں ونوبا کا کہنا ہے :

लेकिन विनोबा अपने रास्ते पर डटे रहे. दो महीने के अन्दर उन्हें हैदराबाद के नलगुंडा और वारंगल ज़िलों के इलाक़े में—जो तेलंगाना के नाम से मशहूर है—बारह हज़ार एकड़ से ऊपर ज़मीन मिली और भूदान यज्ञ का ख़याल मुल्क के सामने आया. कहने वालों ने कहा कि जो ज़मीन मिली है इसमें लेने वाले का जादू कुछ नहीं है बल्कि उस इलाक़े का जादू है जहां वह घूम रहा है. विनोबा चुप रहे और मुसकरा दिये क्योंकि उनकी निगाह में तो यह जादू उस सिरजनहार का था जिसकी माया कभी किसी ने नहीं जानी.

पांच करोड़ एकड़ की मांग

1951 की 11 सितम्बर को विनोबा जी अपने परमधाम आश्रम से जो वर्धा शहर से चार मील दूर है, उत्तर की तरफ़ दिल्ली के लिये निकले. उन्हें पंडित जवाहरलाल ने बुलाया था और वह सरकारी प्लानिंग कमीशन की नई सरकारी पंच साला योजना पर विनोबा का समर्थन चाहते थे. लेकिन रेल या हवाई जहाज़ की बजाय विनोबा ने पैदल ही चलना बेहतर समझा. इस सफ़र में उनकी वही धुन रही जो गर्मियों के महीने में तेलंगाना में थी. गांव गांव, डगर डगर जाते और हर जगह एक ही राग रहता :

"बाबा आपके पांच बेटे हैं तो छठा मुझे समझिये और भूमि का मेरा हिस्सा मेरे हवाले कीजिये."

इस तरह दरिद्र नारायन के प्रतिनिधि हो कर विनोबा दिल्ली की तरफ़ बढ़ते चले गए. रास्ते में एक दिन उन्होंने ऐलान किया कि पांच साल के अन्दर, 1957 तक मैं देश भर से पांच करोड़ ज़मीन की मांग करता हूं ताकि हिन्दुस्तान में कोई भी बे ज़मीन वाला किसान न रहे. विनोबा 13 नवम्बर को दिल्ली पहुंचे. इन 62 रोज़ में उन्हें 19,436 एकड़ ज़मीन दान में मिल चुकी थी. दिल्ली में वह ग्यारह रोज़ रहे. सरकार को अपनी पंच साला योजना के लिये विनोबा का समर्थन तो न मिल सका. पर दिल्ली से चल कर विनोबा उत्तर प्रदेश में घुसे. यहां के रचनात्मक काम करने वालों ने 1952 के आख़ीर तक पांच लाख एकड़ ज़मीन जमा करने का संकल्प किया.

उत्तर प्रदेश का दौरा

विनोबा ने एक के बाद एक उत्तर प्रदेश के ज़िलों में घूमना शुरू किया. उनके पैर में चोट लग गई. कड़ी सर्दी के दिन थे और आज़ाद भारत के पहले चुनाव का ज़ोर था. विनोबा ने अपनी रोज़ की यात्रा जारी रक्खी और वह अपना संदेश अटूट श्रद्धा के साथ सुनाते चले गए.

अप्रैल 1952 में वह बनारस पहुंचे. उस मौक़े पर सारे देश के सर्वोदय विचार वाले लोग बनारस से चौदह मील दूर

لیکن ونوبا اپنے راستے پر ڈٹے رہے . دو مہینے کے اندر انہیں حیدرآباد کے نلگنڈا اور وارنگل ضلعوں کے علاقے میں—جو تلنگانہ کے نام سے مشہور ہے—بارہ ہزار ایکڑ سے اوپر زمین ملی اور بھودان یگیہ کا خیال ملک کے سامنے آیا . کہنے والوں نے کہا کہ جو زمین ملی ہے اس میں لینے والے کا جادو کچھ نہیں ہے بلکہ اس علاقے کا جادو ہے جہاں وہ گھوم رہا ہے . ونوبا چپ رہے اور مسکرا دئے کیونکہ ان کی نگاہ میں تو یہ جادو اس سرجنہار کا تھا جس کی مایا کبھی کسی نے نہیں جانی .

پانچ کروڑ ایکڑ کی مانگ

1951 کی 11 ستمبر کو ونوبا جی اپنے پرم دھام آشرم سے جو وردھا شہر سے چار میل دور ہے' اتر کی طرف دلی کے لئے نکلے . انہیں پنڈت جواہر لال نے بلایا تھا اور وہ سرکاری پلاننگ کمیشن نئی سرکاری پانچ سالہ یوجنا پر ونوبا کا سمرتھن چاہتے تھے . لیکن ریل یا ہوائی جہاز کی بجائے ونوبا نے پیدل ہی چلنا بہتر سمجھا اس سفر میں ان کی وہی دھن رہی جو گرمیوں کے مہینے میں تلنگانہ میں تھی . گاؤں گاؤں' ڈگر ڈگر جاتے اور ہر جگہ ایک ہی راگ رہتا :

"بابا آپ کے پانچ بیٹے ہیں تو چھٹا مجھے سمجھئے اور بھومی کا میرا حصہ میرے حوالے کیجئے ."

اس طرح دردر نارائن کے پرتی ندھی ہوکر ونوبا دلی کی طرف بڑھتے چلے گئے . راستے میں ایک دن انہوں نے اعلان کیا کہ پانچ سال کے اندر 1957 تک میں دیش بھر سے پانچ کروڑ زمین کی مانگ کرتا ہوں تاکہ ہندستان میں کوئی بھی بے زمین والا کسان نہ رہے . ونوبا 13 نومبر کو دلی پہونچے . ان 62 روز میں انہیں 19,436 ایکڑ زمین دان میں مل چکی تھی . دلی میں وہ گیارہ روز رہے . سرکار کو اپنی پنچ سالہ یوجنا کے لئے ونوبا کا سمرتھن تو نہ مل سکا . پر دلی سے چل کر ونوبا اترپردیش میں گھسے . یہاں کے رچناتمک کام کرنے والوں نے 1952 کے آخیر تک پانچ لاکھ ایکڑ زمین جمع کرنے کا سنکلپ کیا .

اتر پردیش کا دورا

ونوبا نے ایک کے بعد ایک اترپردیش کے ضلعوں میں گھومنا شروع کیا . ان کے پیر میں چوٹ لگ گئی . کڑی سردی کے دن تھے اور آزاد بھارت کے پہلے چناؤ کا زور تھا . ونوبا نے اپنی روز کی یاترا جاری رکھی اور وہ اپنا سندیش اٹوٹ شردھا کے ساتھ سناتے چلے گئے .

اپریل 1952 میں وہ بنارس پہنچے . اس موقعہ پر سارے دیش کے سروودے وچار والے لوگ بنارس سے چودہ میل دور

को विदेशी माल के बोझ से बचाए. फिर माल की बिक्री का इन्तजाम करे, अधिकतर सामान खुद खरीदे, अथवा माल सस्ते दामों पर मुहैया करे. कोआपरेटिव सोसाइटियां बना कर घरेलू धन्धों को आगे बढ़ाए. चीन के इस तजुरबे को सीखने के लिये एक मिशन भेजा जाए तभी कुछ ठोस काम हो सकेगा.

—गंगा शरन

کو ودیشی مال کے بوجھ سے بچائے ۔ پھر مال کی بکری کا انتظام کرے، ادھک تر سامان خود خریدے ۔ کتھا مال سستے داموں پر مہیا کرے ۔ کوآپریٹو سوسائٹیاں بنا کر گھریلو دھندوں کو آگے بڑھائے ۔ چین کے اس تجربہ کو سیکھنے کے لئے ایک مشن بھیجا جائے ۔ تبھی کچھ ٹھوس کام ہو سکے گا ۔

—گنگا شرن

भूदान आन्दोलन और उससे उम्मीदें

कोई भी आन्दोलन या तहरीक पांच दौरों में से होकर निकल आये तभी कामयाब होती है. वह पांच यह हैं : एक, उसकी तरफ लोगों का ध्यान न देना, उसकी हंसी उड़ाना, तीन, उसकी निन्दा करना, चार उसका विरोध करना और उसे दबाना और आखीर में उसका लोहा मानना. विनोबा जी का भू-दान-यज्ञ आन्दोलन भी इन्हीं दौरों में से हो कर गुजर रहा है.

आन्दोलन की शुरूआत

18 अप्रैल 1951 को जब हैदराबाद रियासत के नालगोंडा जिले में घूमते हुए वह पोचमपल्ली नाम के गांव पहुंचे तो वहां के दुखी हरिजन किसानों ने 80 एकड़ जमीन की मांग की. विनोबा जी ने फौरन पूछा कि क्या कोई दाता है जो इनकी मांग पूरी करेगा. साई का एक लाल खड़ा हो गया और बड़ी नम्रता से उसने कहा कि महाराज! अपने स्वर्गीय पिता के नाम पर मैं अपनी और अपने भाइयों की तरफ से 100 एकड़ जमीन आपको भेंट करता हूं. विनोबा खुशी से उछल पड़े और उन्हें लगा कि भगवान उन से यह काम कराना चाहता है. फिर क्या था. वह गांव गांव घूम कर जमीन की भीख मांगने लगे.

लोगों ने जब सुना कि कोई साधु जमीन मांग मांग कर बेजमीन वालों को दे रहा है तो उन्हें यकीन न हुआ. उन्होंने कहा कि आज के कलयुग के जमाने में जब आदमी फूटी कौड़ी भी मुश्किल से देता है तो क्या कोई कीमती चीज क्यों देने वाला है और फिर जब जमीन के चप्पे चप्पे के लिये खून खराबा और फौजदारी होती है तो किसी का जमीन देना एक अनहोनी बात है.

بھودان آندولن اور اس سے امیدیں

کوئی بھی آندولن یا تحریک پانچ دوروں میں سے ہوکر نکل آئے تبھی کامیاب ہوتی ہے ۔ وہ پانچ یہ ہیں : ایک، اس کی طرف لوگوں کا دھیان نہ دینا، دو اس کی ہنسی اڑانا، تین اس کی نندا کرنا، چار اس کا ورودھ کرنا اور اسے دبانا اور آخر میں اس کا لوہا ماننا ۔ ونوبا جی کا بھودان یگیہ آندولن بھی انہیں دوروں میں سے ہوکر گزر رہا ہے ۔

آندولن کی شروعات

18 اپریل 1951 کو جب حیدرآباد ریاست کے نلگنڈہ ضلع میں گھومتے ہوئے وہ پوچم پلی نام کے گاؤں پہنچے تو وہاں کے دکھی ہریجن کسانوں نے 80 ایکڑ زمین کی مانگ کی ۔ ونوبا جی نے فوراً پوچھا کہ کیا کوئی داتا ہے جو ان کی مانگ پورا کرے گا ۔ سائی کا ایک لال کھڑا ہوگیا اور بڑی نمرتا سے اس نے کہا کہ مہاراج! اپنے سورگیہ پتا کے نام پر میں اپنی اور اپنے بھائیوں کی طرف سے 100 ایکڑ زمین آپ کو بھینٹ کرتا ہوں ۔ ونوبا خوشی سے اچھل پڑے اور انہیں لگا کہ بھگوان مجھ سے یہ کام کرانا چاہتا ہے ۔ پھر کیا تھا ۔ وہ گاؤں گاؤں گھوم کر زمین کی بھیک مانگنے لگے ۔

لوگوں نے جب سنا کہ کوئی سادھو زمین مانگ مانگ کر بےزمین والوں کو دے رہا ہے تو انہیں یقین نہ ہوا ۔ انہوں نے کہا کہ آج کے کلجگ کے زمانے میں جب آدمی پھوٹی کوڑی بھی مشکل سے دیتا ہے تو بھلا کوئی قیمتی چیز کیوں دینے والا ہے ۔ اور پھر جب زمین کے چپے چپے کے لئے خون خرابا اور فوجداری ہوتی ہے تو کسی کا زمین دینا انہونی بات ہے ۔

और हिस्सा मिलता है जो उसको मिलता है तो उसके मन में यह बात आती थी कि वह ही क्यों अधिक काम करे. इसका असर पूरे उत्पादन पर पड़ा. लेकिन 1951 में यह भूल सुधार ली गई. नये क़ानून बनाए गए जिनके अनुसार इन कोआपरेटिव सोसाइटियों का सीधा संबन्ध कुल चीन कोआपरेटिव संघ से हो गया. मज़दूरों के काम के हिसाब से उनकी मज़दूरी तय की गई और मज़दूरी के हिसाब से कोआपरेटिव में उनका हिस्सा तय हुआ. यहां यह बात ध्यान देने की है कि मज़दूरी में यह फ़र्क़ चीन में इतना अधिक नहीं है जितना हमें अपने यहां देखने को मिलता है. चीन में यह फ़र्क़ कहीं भी एक और आठ की निस्बत से ज़ियादा नहीं है. सिद्धान्त रूप में वहां मज़दूरी उसके पद के लिहाज़ से नहीं बल्कि ज़रूरत के लिहाज़ से तय की जाती है. आम तौर पर एक साधारन मज़दूर की औसत आमदनी 80 रुपया होती है.

समय समय पर दस्तकारों की इलाक़ाई व समूचे देश की कानफ़रेन्सें भी होती रहती हैं. इसी तरह की एक कानफ़रेन्स 'हो पेह' सूबे में हुई थी. सूबे भर की कोआपरेटिव संस्था के कारकर्ताओं ने इसमें भाग लिया. माल की क़िस्म, अधिक पैदावार और अधिक बिक्री के ऊपर लोगों ने अपने अपने विचार ज़ाहिर किये. कोआपरेटिव सोसाइटी के ज़रिये बड़े बड़े उद्योग चालू करने का सुझाव रखा गया और सरकार से अधिक सहयोग व पूंजी की मांग की गई ताकि बड़े पैमाने पर उद्योग चालू किये जा सकें और जनता और देश का अधिक से अधिक लाभ हो. सरकारी नीति समझाने के लिये एक अधिकारी ने भी इस कानफ़रेन्स में भाग लिया और पूछे गए सवालों का जवाब दिया. मज़दूरों व कोआपरेटिव की दिक़्क़तों को सुना जो उनके सामने थीं और उन पर विचार करने व उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया. इस तरह सरकार सही दिक़्क़तों का अन्दाज़ा लगा लेती है. हमारी सरकार की तरह थोड़े से ग़ैर जानकार आदमियों की कमेटी बना कर मामला उनके हवाले नहीं कर देती.

हमारे यहां अब घरेलू धन्धों को प्रोत्साहन देने की बात हो रही है. ख़ाली बातों से कुछ नहीं होने का चीन से हमें इस सम्बन्ध में बहुत सीखना है. कारीगरों को आज एक जून भी खाना नसीब नहीं हो पाता. अपना काम करने के लिये उनके पास पैसा नहीं है. किसी तरह क़र्ज़ ले दे कर माल तैयार करते हैं, उसकी निकासी का कोई प्रबन्ध नहीं. झक मार कर बेचारों को उलटे सीधे दामों पर ही अपनी चीज़ें बेचनी पड़ती हैं. तुरन्त पैसा न मिलने पर घर में फ़ाक़ा हो जाता है, धन्धा ठप हो जाता है.

हमारी सरकार को चाहिये कि पहले वह घरेलू धन्दों

اور حصہ ملتا ھے۔ جو اسکو ملتا ھے تو اس کے من میں یہ بات آتی تھی کہ وہ ھی کیوں ادھک کام کرے. اسکا اثر پورے اتپادن پر پڑا . لیکن 1951 میں یہ بھول سدھار لی گئی . نئے قانون بنائے گئے جن کے انوسار ان کوآپریٹو سوسائٹیوں کا سیدھا سمبندھ کل چین کوآپریٹو سنگھ سے ھوگیا . مزدوروں کے کام کے حساب سے ان کی مزدوری طے کی گئی اور مزدوری کے حساب سے کوآپریٹو میں ان کا حصہ طے ھوا . یہاں یہ بات دھیان دینے کی ھے کہ مزدوری میں یہ فرق چین میں اتنا ادھک نہیں ھے جتنا ھمیں یہاں دیکھنے کو ملتا ھے . چین میں یہ فرق کہیں بھی ایک اور آٹھ کی نسبت سے زیادہ نہیں ھے . سدھانت روپ میں وہاں مزدوری پد کے لحاظ سے نہیں بلکہ اسکی ضرورت کے لحاظ سے طے کی جاتی ھے . عام طور پر ایک سادھارن مزدور کی اوسط آمدنی 80 روپیہ ھوتی ھے .

سمے سمے پر دستکاروں کی علاقائی و سموچے دیش کی کانفرنسیں بھی ھوتی رھتی ھیں . اسی طرح کی ایک کانفرنس 'ھو پیہ' صوبہ میں ھوئی تھی . صوبہ بھر کی کوآپریٹو سنستھا کے کارکرتاؤں نے اس میں بھاگ لیا . مال کی قسم' ادھک پیداوار اور ادھک بکری کے اوپر لوگوں نے اپنے اپنے وچار ظاھر کئے . کوآپریٹو سوسائٹی کے ذریعے بڑے بڑے ادیوگ چالو کرنے کا سجھاؤ رکھا گیا اور سرکار سے اور ادھک سہیوگ و پونجی کی مانگ کی گئی تاکہ بڑے پیمانے پر ادیوگ' چالو کئے جا سکیں اور جنتا اور دیش کا ادھک سے ادھک لابھ ھو . سرکاری نیتی سمجھانے کے ایک ادھیکاری نے بھی اس کانفرنس میں بھاگ لیا اور پوچھے گئے سوالوں کا جواب دیا . مزدوروں و کوآپریٹو کی دقتوں کو سنا جو ان کے سامنے تھیں اور ان پر وچار کرنے و انھیں دور کرنے کا آشواسن دیا . اس طرح سرکار صحیح دقتوں کا اندازہ لگا لیتی ھے . ھماری سرکار کی طرح تھوڑے سے غیر جانکار آدمیوں کی کمیٹی بناکر معاملہ ان کے حوالے نہیں کر دیتی .

ھمارے یہاں اب گھریلو دھندوں کو پروتساھن دینے کی بات ھو رھی ھے . خالی باتوں سے کچھ نہیں ھونے کا . چین سے ھمیں اس سمبندھ میں بہت سیکھنا ھے . کاریگروں کو آج ایک جون بھی کھانا نصیب نہیں ھو پاتا . اپنا کام کرنے کے لئے ان کے پاس پیسہ نہیں ھے . کسی طرح قرض لے دے کر مال تیار کرتے ھیں' اسکی نکاسی کا کوئی پربندھ نہیں . جھک مار کر بیچاروں کو الٹے سیدھے داموں پر ھی اپنی چیزیں بیچنی پڑتی ھیں . ترنت پیسہ نہ ملنے پر گھر میں فاقہ ھو جاتا ھے' دھندا ٹھپ ھو جاتا ھے .

ھماری سرکار کو چاھئے کہ پہلے وہ گھریلو دھندوں

सामान पैदा किया. इन दस्तकारी कोआपरेटिव स्टोरों में पूंजी 18,90,738 डालर के क़रीब लगी हुई है. सन 1952 में इन्होंने 166,026,462 डालर की क़ीमत का सामान तैयार किया.

सूती कपड़ा	60,00,000 गांठ
मोज़े के जोड़े	27,00,000 दर्जन
लोहा	20,000 टन
लकड़ी व लोहे के खेती के औज़ार	30,000,000 अदद
तोलिया	30,000,000 अदद
काग़ज़	30,000 टन
गंधक	35,000 टन
फुटकर सामान	4,00,000 टन

ऊपर दिये आंकड़ों से पता चलता है कि चीन की ज़रूरत का बहुत बड़ा हिस्सा घरेलू धन्धों से पूरा होता है और यह भी साफ़ हो जाता है कि घरेलू धन्दे इसी तरह फलते फूलते रहेंगे.

दस्तकारों की कोआपरेटिव संस्थाओं को एक और सुविधा सरकार से मिली है वह है कच्चे माल की. उनको अपनी चीज़ों के लिये कच्चे माल की तलाश में इधर उधर नहीं भटकना पड़ता. यह काम सरकार करती है. वह अपनी मांग सरकार के सामने रखते हैं. सरकार उसका इन्तज़ाम करती है. और इस तरह उनका बहुत काफ़ी समय और पैसा बचता है. कभी कभी तो ऐसा होता था कि कच्चे माल की कमी से पूरा का पूरा उद्योग ठप हो जाता था क्योंकि बहुत से कच्चे माल ऐसे हैं जो विदेशों से आते हैं या देश में भी होते हैं तो जल्द उनको हासिल नहीं किया जा सकता. घरेलू धन्धों को कच्चे माल की कमी से नुक़सान होता है. चीन में यह कठिनाई कोआपरेटिव संस्थाओं के सामने नहीं है. हर तरह का कच्चा माल सरकारी विभाग उन्हें मुहैया करता है. मिसाल के लिये सरकार ने बुनकरों की कोआपरेटिव संस्था को 1953 में 68,288,520 डालर का सूत सप्लाई किया. लुहारों की कोआपरेटिव को बहुत काफ़ी तादाद में कच्चा लोहा दिया गया. घरेलू धन्धों में जान डालने के लिये यह बहुत ज़रूरी है.

शुरू शुरू में इन कोआपरेटिव संस्थाओं में काफ़ी कमियां थीं. जिसमें एक ख़ास यह था कि सोसाइटी में हर मज़दूर को बराबर बराबर हिस्सा दिया गया था. उसमें मज़दूर की क़ाबलियत, वह कितना काम कर सकता है इस सब का कोई ध्यान नहीं रखा गया था. इसका नतीजा यह हुआ कि मज़दूरों में काम करने की भावना की कमी पाई गई क्योंकि जब एक अधिक काम करने वाला मज़दूर देखता था कि एक कम काम करने वाले को वही वेतन

سامان پیدا کیا ۔ اِن دستکاری کوآپریٹو اسٹوروں میں پونجی 18,90,738 ڈالر کے قریب لگی ہوئی ہے ۔ سن 1952 میں انہوں نے 166,026,462 ڈالر کی قیمت کا سامان تیار کیا ۔

سوتی کپڑا	60,00,000 گانٹھ
موزے کے جوڑے	2700,000 درجن
لوہا	20,000 ٹن
لکڑی و لوہے کے کھیتی کے اوزار	30,000,000 عدد
تولیہ	30,000,000 عدد
کاغذ	30,000 ٹن
گندھک	35,000 ٹن
پھٹکر سامان	4,00,000 ٹن

اوپر دیئے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ چین کی ضرورت کا بڑا حصہ گھریلو دھندوں سے پورا ہوتا ہے اور یہ بھی صاف ہو جاتا ہے کہ گھریلو دھندے اِسی طرح پھلتے پھولتے رہیں گے ۔

دستکاروں کی کوآپریٹو سنستھاؤں کو ایک اور سودھا سرکار سے ملی ہے وہ ہے کچے مال کی ۔ اُن کو اپنی چیزوں کے لئے کچے مال کی تلاش میں اِدھر اُدھر نہیں بھٹکنا پڑتا ۔ یہ کام سرکار کرتی ہے ۔ وہ اپنی مانگ سرکار کے سامنے رکھتے ہیں ۔ سرکار اُس کا انتظام کرتی ہے ۔ اور اِس طرح اُن کا بہت کافی سمے اور پیسہ بچتا ہے ۔ کبھی کبھی تو ایسا ہوتا تھا کہ کچے مال کی کمی سے پورا کا پورا اُدیوگ ٹھپ ہو جاتا تھا کیونکہ بہت سے کچے مال ایسے ہیں جو ودیشوں سے آتے ہیں یا دیش میں بھی ہوتے ہیں تو جلد اُن کو حاصل نہیں کیا جا سکتا ۔ گھریلو دھندوں کو کچے مال کی کمی سے نقصان ہوتا ہے ۔ چین میں یہ کٹھنائی کوآپریٹو سنستھاؤں کے سامنے نہیں ہے ۔ ہر طرح کا کچا مال سرکاری وبھاگ انہیں مہیا کرتا ہے ۔ مثال کے لئے سرکار نے بنکروں کی کوآپریٹو سنستھا کو 1953 میں 68,288,520 ڈالر کا سوت سپلائی کیا ۔ لوہاروں کی کوآپریٹو کو بہت کافی تعداد میں کچا لوہا دیا گیا ۔ گھریلو دھندوں میں جان ڈالنے کے لئے یہ بہت ضروری ہے ۔

شروع شروع میں ان کوآپریٹو سنستھاؤں میں کافی کمیاں تھیں ۔ جس میں ایک خاص یہ تھی کہ سوسائٹی میں ہر مزدور کو برابر برابر حصہ دیا گیا تھا ۔ اُس میں مزدور کی قابلیت، وہ کتنا کام کر سکتا ہے اِس سب کا کوئی دھیان نہیں رکھا گیا تھا ۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ مزدوروں میں کام کرنے کی بھاونا کی کمی پائی گئی کیونکہ جب ایک ادھک کام کرنے والا مزدور دیکھتا تھا کہ ایک کم کام کرنے والوں کو وہی ویتن

इसकी जगह उन्हीं दाम में जनता को देश का बना हुआ माल दिया जाय. इसके लिये सरकार ने सब से पहले विदेशी माल का आना बन्द किया. कुछ खास जरूरी चीज़ें जिन का उत्पादन ही मुमकिन नहीं था बाक़ी सब विदेशी चीज़ों का आना रोक दिया गया. जो चीज़ें आती भी थीं उन पर टेक्स बढ़ा दिया गया ताकि उनकी क़ीमत बढ़ जाय और देशी चीज़ों का मुक़ाबला उनको न करना पड़े. जनता के बीच राष्ट्र प्रेम व स्वदेशी की भावना का प्रचार किया गया.

दूसरा काम सरकार ने यह किया कि कोआपरेटिव सोसाइटियों के लिये क़ानून बना दिया. उनको क़र्ज़ दिया. सूद की दर बहुत कम रखी. इधर उधर बिखरी हुई कमेटियों का संगठन किया.

कोआपरेटिव सोसाइटियां अब काफ़ी संगठित और ताक़तवर हो गई थी. इनका उत्पादन बढ़ गया था और देश की ज़रूरत का एक बहुत बड़ा हिस्सा इन्हीं के ज़रिये पूरा किया जाता था। यह बात नीचे के आंकड़ों से साफ़ है :

दियासलाई	70 फ़ी सदी
आटा	84 „
चीनी	75 „
दवाएँ	80 „
कातने बुनने व कसीदाकारी का समान	70 „
काग़ज़ व रबर	50 „

इन आंकड़ों से पता चलता है कि चीन के आर्थिक जीवन में घरेलू धन्धों ने पूरा क़ब्जा कर लिया. यह सब सरकार की नीति के कारन हो सका. इन सामानों के अलावा फ़रनीचर, इमारती सामान, खेती बारी के औज़ार, साइन्स के सामान वग़ैरा भी इन्हीं दस्तकारी सोसाइटियों के ज़रिये बनने लगे.

इन सोसाइटियों को अपने बने हुए माल की खपत और बिक्री के लिये चिन्ता नहीं करनी पड़ती. माल तैयार होते ही 40 फ़ी सदी माल सरकार के स्टेट कमर्शियल स्टोर बेच देते हैं और 40 फ़ी सदी सपलाई ऐन्ड मार्केटिंग कारपोरेशन बेचते हैं बाक़ी कुल 20 फ़ी सदी माल सोसाइटियों को बेचना पड़ता है उनको कोई दिक़्क़त नहीं होती सरकार जो माल खरीदती है उस का दाम नक़द देता है. पैदावार करने वाले को कोई कठिनाई नहीं होती. माल बनते ही उसका माल बिक जाता है और उचित मुनाफ़ा मिल जाता है.

कोआपरेटिव सोसाइटियों की ताक़त बढ़ गई है. देश के कोने कोने में इनका जाल बिछा हुआ है. सन 1952 के आख़री तक इसके मेम्बरों की तादाद 147 लाख थी. और सन 1952 में उन्होंने तमाम मुल्क की ज़रूरत को पूरा करने के लिये 22 फ़ीसदी और देहात की ज़रूरत का 70 फ़ी सदी

اس کی جگہ انہی دام میں جنتا کو دیش کا بنا ہوا مال دیا جائے۔ اس کے لئے سرکار نے سب سے پہلے ودیشی مال کا آنا بند کیا ۔ کچھ خاص ضروری چیزیں جن کا اتپادن ہی ممکن نہیں تھا باقی سب ودیشی چیزوں کا آنا روک دیا گیا ۔ جو چیزیں آتی بھی تھیں ان پر ٹیکس بڑھا دیا گیا تاکہ ان کی قیمت بڑھ جائے اور دیشی چیزوں کا مقابلہ انکو نہ کرنا پڑے۔ جنتا کے بیچ راشٹر پریم و سودیشی کی بھاونا کا پرچار کیا گیا ۔

دوسرا کام سرکار نے یہ کیا کہ کوآپریٹو سوسائٹیوں کے لئے قانون بنا دیا ۔ ان کو قرض دیا ۔ سود کی در بہت کم رکھی۔ اِدھر اُدھر بکھری ہوئی کمیٹیوں کا سنگٹھن کیا۔

کوآپریٹو سوسائٹیاں اب کافی سنگٹھت اور طاقتور ہوگئی تھیں ۔ ان کا اتپادن بڑھ گیا تھا اور دیش کی ضرورت کا ایک بہت بڑا حصہ انہیں کے ذریعے پورا کیا جاتا تھا۔ یہ بات نیچے کے آنکڑوں سے صاف ہے :

دیاسلائی	70 فی صدی
آٹا	„ 84
چینی	„ 75
دوائیں	„ 80
کاڑھنے، بننے وکسیدہ کاری کا سامان	„ 70
کاغذ و ربر	„ 50

ان آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ چین کے آرتھک جیون میں گھریلو دھندوں نے پورا قبضہ کرلیا ۔ یہ سب سرکار کی نیتی کے کارن ہو سکا ۔ ان سامانوں کے علاوہ فرنیچر، عمارتی سامان، کھیتی باری کے اوزار، سائنس کے سامان وغیرہ بھی انہیں دستکاری سوسائٹیوں کے ذریعے بننے لگے ۔

ان سوسائٹیوں کو اپنے بنے ہوئے مال کی کھپت اور بکری کے لئے چنتا نہیں کرنی پڑتی ۔ مال تیار ہوتے ہی 40 فیصدی مال سرکار کے اسٹیٹ کمرشیل اسٹور بیچ دیتے ہیں اور سپلائی اینڈ مارکیٹنگ کارپوریشن بیچتے ہیں ۔ باقی کل 20 فیصدی مال سوسائٹیوں کو بیچنا پڑتا ہے ۔ ان کو کوئی دقت نہیں ہوتی ۔ سرکار جو مال خریدتی ہے اس کا دام نقد دیتی ہے ۔ پیداوار کرنے والے کو کوئی کٹھنائی نہیں ہوتی ۔ مال بنتے ہی اس کا مال بک جاتا ہے اور اچت منافع مل جاتا ہے ۔

کوآپریٹو سوسائٹیوں کی طاقت بڑھ گئی ہے ۔ دیش کے کونے کونے میں جال بچھا ہوا ہے ۔ سن 1952 کے آخر تک اس کے ممبروں کی تعداد 147 لاکھ تھی ۔ اور سن 1952 میں انہوں نے تمام ملک کی ضرورت کو پورا کرنے کے لئے 22 فیصدی اور دیہات کی ضرورت کا 70 فیصدی

चीन में घरेलू धन्धे

आज से कुछ बरस पहले हमारे देश की तरह चीन में भी पैदावार में कमी थी और बेकारी अपना पंजा गाड़े हुए थी. तमाम बाज़ार विदेशी माल से भरे थे. घरेलू उद्योग धन्धे ठप हो चुके थे बल्कि यह कहना चाहिये कि ठप किये गये थे. मज़दूरों, कारीगरों और दस्तकारों के सामने बड़ी भयंकर समस्या थी. उन लोगों के हाथ की बनी चीज़ों का बाज़ार विदेशी माल के मुक़ाबले बन्द हो चुका था.

हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी. चांग काई शेक की सरकार उन लोगों की हालत की तरफ़ से उदासीन थी. सरकार विदेशियों के हाथ कठपुतली बनी हुई थी और वह विदेशी लोग सरकार को किसी ऐसी नीति को अपनाने नहीं देते थे जिस से कि चीनी घरेलू धन्धे उन्नति कर सकें. सरकार घरेलू धन्धों पर उलटा आघात करती रही. चीन के मज़दूरों और कारीगरों की चेतना बढ़ी और उन्होंने हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने के बजाए कुछ करने की ठानी.

पर उनकी शक्ति छितरी हुई थी. इस छितरी हुई ताक़त के एकट्ठा करने की ज़रूरत थी. एक ऐसे रास्ते की ज़रूरत थी जिस पर सब चल सकें, सब जिस में हिस्सा ले सकें, और बराबर की तरक़्क़ी कर सकें. ऐसे रास्ता बताने और उस पर ले चलने के लिये अपने अन्दर से उन्होंने एक नेता चुना, जो उन्हीं की तरह था, उनके दुखों और तकलीफ़ों को जानता था, उनकी समस्याओं को अपनी समस्याएं समझता था. कोआपरेटिव आन्दोलन चल पड़ा. कोआपरेटिव सोसाइटियां बनाई गईं जिन में कुछ मज़दूर मिल कर काम करते, कारख़ाने के मालिक होते और फ़ायदे का आपस में बटवारा करते. पहले हर एक को अपने माल को बनाने और बेचने की चिन्ता रहती थी. अब यह चिन्ता एक समूह की चिन्ता बन गई. कोआपरेटिव सोसाइटियां अपना काम कर रही थीं पर अभी इनके अन्दर पूरी तरह खड़ी होने की ताक़त नहीं थी. उनके बने हुए माल के लिये बाज़ार की कमी, पूंजी का अभाव था, कच्चे माल की कठिनाइयां थीं. इस कारन से यह सोसाइटियां बहुत काम नहीं कर सकीं.

1949 में देश आज़ाद हुआ. जनता की अपनी सरकार बनी। विदेशी आदमियों से चीन पाक हो गया. नई सरकार बनते ही सब से पहले इसका ध्यान किसान मज़दूरों के रोज़ी की समस्या पर गया. सरकार देश का निर्मान करना चाहती थी. उसको अपनी जनता पर विश्वास था. इस सरकार ने घरेलू धन्धों को प्रोत्साहन दिया.

देशी घरेलू उद्योग धन्धों को चौपट होने से बचाने का उपाय यह था कि विदेशी माल का आना रोका जाए और

چین میں گھریلو دھندے

آج سے کچھ برس پہلے ہمارے دیش کی طرح چین میں بھی پیداوار میں کمی تھی اور بیکاری اپنا پنجہ گاڑے ہوئے تھی۔ تمام بازار بدیشی مال سے بھرے تھے ۔ گھریلو ادیوگ دھندے ٹھپ ہو چکے تھے بلکہ یہ کہنا چاہئے کہ ٹھپ کئے گئے تھے ۔ مزدوروں، کاریگروں اور دستکاروں کے سامنے بڑی بھینکر سمسیا تھی ۔ اُن لوگوں کے ہاتھ کی بنی چیزوں کا بازار ویدیشی مال کے مقابلے بند ہو چکا تھا ۔

حالت دن پر دن بگڑتی جا رہی تھی ۔ چانگ کائی شیک کی سرکار اُن لوگوں کی حالت کی طرف سے اُداسین تھی ۔ سرکار ویدیشیوں کے ہاتھ کٹھ پتلی بنی ہوئی تھی۔ اور وہ ویدیشی لوگ سرکار کو کسی ایسی نیتی کو اپنانے نہیں دیتے تھے۔ جس سے کہ چینی گھریلو دھندے اُنتی کر سکیں ۔ سرکار گھریلو دھندوں پر اُلٹا آگھات کرتی رہی ۔ چین کے مزدوروں اور کاریگروں کی چیتنا بڑھی اور اُنہوں نے ہاتھ پر ہاتھ رکھ کر بیٹھنے کے بجائے کچھ کرنے کی ٹھانی ۔

پر اُن کی شکتی چھتری ہوئی تھی ۔ اس چھتری ہوئی طاقت کے اکٹھا کرنے کی ضرورت تھی ۔ ایک ایسے راستے کی ضرورت تھی جس پر سب چل سکیں، سب جس میں حصہ لے سکیں، اور برابر کی ترقی کر سکیں۔ ایسا راستہ بتانے اور اُس پر لے چلنے کے لئے اپنے ہی اندر سے اُنہوں نے ایک نیتا چنا، جو اُن ہی کی طرح تھا اُن کے دکھوں اور تکلیفوں کو جانتا تھا، اُن کی سمسیاؤں کو اپنی سمسیا سمجھتا تھا۔ کواپریٹو آندولن چل پڑا۔ کواپریٹو سوسائٹیاں بنائی گئیں، جن میں کچھ مزدور مل کر کام کرتے، کارخانے کے مالک ہوتے۔ اور فائدے کا آپس میں بٹوارا کرتے۔ ہر پہلے ایک کو اپنے مال کو بنانے اور بیچنے کی چنتا رہتی تھی ۔ اب یہ چنتا ایک سمُوہ کی چنتا بن گئی ۔ کواپریٹو سوسائٹیاں اپنا کام کر رہی تھیں ۔ پر ابھی اُن کے اندر پوری طرح کھڑے ہونے کی طاقت نہیں تھی۔ اُن کے بنے ہوئے مال کے لئے بازار کی کمی، پونجی کا ابھاؤ تھا ۔ کچے مال کی کٹھنائیاں تھیں۔ اس کارن سے سوسائٹیاں بہت زیادہ کام نہیں کر سکیں ۔

1949 میں دیش آزاد ہوا۔ جنتا کی اپنی سرکار بنی۔ ودیشی آدمیوں سے چین پاک ہو گیا ۔ نئی سرکار بنتے ہی سب سے پہلے اس کا دھیان کسان مزدوروں کے روزی کی سمسیا پر گیا ۔ سرکار دیش کا نرمان کرنا چاہتی تھی۔ اس کو اپنی جنتا پر وشواس تھا ۔ اس سرکار نے گھریلو دھندوں کو پروتساہن دیا ۔

دیشی گھریلو ادیوگ دھندوں کو چوپٹ ہونے سے بچانے کا اپائے یہ تھا کہ ودیشی مال کا آنا روکا جائے اور

कम्यूनिस्टों ने बिलकुल अपना ही देश समझ कर चीन की जो कुछ भी सहायता की है वह सोने के अक्षरों में लिखे जाने के क़ाबिल है. एक किसान ने कहा—"वह लोग तो एक बड़े भाई की तरह बरताव करते हैं. और हर बात को इस तरह समझाते हैं जिस तरह एक बड़ा भाई छोटे भाई को कोई चीज़ समझाता है."

हमारे देश की तरह चीन में भी सब से बड़ा धन्धा खेती है. ज़ियादातर आबादी इसी धन्धे पर निर्भर है. सोवियत माहिरों की मदद से चीनियों ने अपने इस धन्धे में काफ़ी तरक़्क़ी कर ली. उन्होंने मुल्क की पैदावार को बहुत ज़ियादा तादाद में बढ़ा लिया. इस काम में और ज़ियादा तरक़्क़ी देने के लिये उन्होंने खेती बारी कोआपरेटिव, और पायनियर फ़ार्म बना लिये. चांग काई शेक के ज़माने में कोआपरेटिव और पानियर फ़ार्म वग़ैरा गिनती के थे. लेकिन जनता की सरकार आते ही सोवियत एक्सपर्टों की मदद से ज़मीन को उपजाऊ बनाया गया. इस काम को करने में शुरू शुरू में बड़ी कठिनाइयां सामने आईं लेकिन रूस के नये नये औज़ारों से बनजर ज़मीन को सुधारा गया. ज़मीन उपजाऊ बनाने के अलावा जानवरों की नसल को भी सुधारा गया. घोड़े और बकरियों की नसल सुधारने के लिये स्टेशन खोले गए.

"चीन की ज़रा सी ज़मीन भी अब बनजर नहीं है" यह बात एक खेतीबारी के माहिर लिसेन्को ने कही जो वहां सन 1949 से लगातार रहता आ रहा है. चीनी किसान आजकल हल चलाने, फ़सल बार बार पैदा करने और खाद के ठीक ठीक इस्तेमाल पर काफ़ी ज़ोर देते हैं.

चीनी लोग इस बात को ख़ूब अच्छी तरह समझते हैं कि रूसी माहिरों ने उनको सिर्फ़ तकनीकी सहायता ही नहीं पहुंचाई बल्कि उन्होंने मुल्क के रहन सहन के स्तर को ऊंचा उठाने में काफ़ी मदद की है. सोवियत लोगों का चीन में स्वागत अच्छी तरह किया जाता है. वह हर समय चीनियों को बग़ैर किसी शर्त के मदद देने के लिये तैयार रहते हैं. चीन और रूस का मक़सद एक है. दोनों ईमानदारी, लगन और आम जनता के हितों को अच्छी तरह समझते बूझते हुए तेज़ी से अपनी मंज़िल की तरफ़ जा रहे हैं.

—राजेश सरन

اشتراکیوں نے بالکل اپنا ہی دیش سمجھ کر چین کی جو کچھ بھی سہائتا کی ہے وہ سونے کے حرفوں میں لکھے جانے کے قابل ہے۔ ایک کسان نے کہا—"وہ لوگ تو ایک بڑے بھائی کی طرح برتاؤ کرتے ہیں۔ اور ہر بات کو اس طرح سمجھاتے ہیں جسطرح ایک بڑا بھائی چھوٹے بھائی کو کوئی چیز سمجھاتا ہے۔"

ہمارے دیش کی طرح چین میں بھی سب سے بڑا دھندا کھیتی ہے۔ زیادہ تر آبادی اسی دھندے پر نربھر ہے۔ سوویت ماہروں کی مدد سے چینیوں نے اپنے اس دھندے میں کافی ترقی کر لی۔ انہوں نے ملک کی پیداوار کو بہت زیادہ تعداد میں بڑھا لیا۔ اس کام میں اور زیادہ ترقی دینے کے لئے انہوں نے کھیتی باڑی کوآپریٹو اور پائنیر فارم بنا لئے۔ چانگ کائی شیک کے زمانے میں کوآپریٹو اور پائنیر فارم وغیرہ گنتی کے تھے۔ لیکن جنتا کی سرکار آتے ہی سوویت ایکسپرٹوں کی مدد سے زمین کو اپجاؤ بنایا گیا۔ اس کام کو کرنے میں شروع شروع میں بڑی کٹھنائیاں سامنے آئیں لیکن روس کے نئے نئے اوزاروں سے بنجر زمین کو سدھارا گیا۔ زمین کو اپجاؤ بنانے کے علاوہ جانوروں کی نسل کو بھی سدھارا گیا۔ گھوڑے اور بکریوں کی نسل سدھارنے کے لئے اسٹیشن کھولے گئے۔

"چین کی ذرا سی زمین بھی اب بنجر نہیں ہے" یہ بات ایک کھیتی باڑی کے ماہر لسینکو نے کہی جو وہاں سن 1949 سے لگاتار رہتا آ رہا ہے۔ چینی کسان آجکل ہل چلانے، فصل بار بار پیدا کرنے اور کھاد کے ٹھیک ٹھیک استعمال پر کافی زور دیتے ہیں۔

چینی لوگ اس بات کو خوب اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ روسی ماہروں نے ان کو صرف تکنیکی سہائتا ہی نہیں پہنچائی بلکہ انہوں نے ملک کے رہن سہن کے استر کو اونچا اٹھانے میں کافی مدد کی ہے۔ سوویت لوگوں کا چین میں سواگت اچھی طرح کیا جاتا ہے۔ وہ ہر سمے چینیوں کو بغیر کسی شرط کے مدد دینے کے لئے تیار رہتے ہیں۔ چین اور روس کا مقصد ایک ہے۔ دونوں ایمانداری، لگن اور عام جنتا کے ہتوں کو اچھی طرح سمجھتے بوجھتے ہوئے تیزی سے اپنی منزل کی طرف جا رہے ہیں۔

—راجیش سرن

काफी तरक्की हुई है. बड़ी लड़ाई से पहले चीन में लोहे की कमी थी लेकिन अब चीन में लोहा काफी पाया जाता है. पहले एक फरनेस की झाड़ पोंछ करने में कम से कम तीस घंटे खर्च होते थे लेकिन अब वही काम आठ घंटे में आसानी से किया जाता है.

सन 1950 और सन 1951 में फु शाई नान कोयले की खानों को रूसी एक्सपर्टों ने तीन बार देखा. पहले 80 से 50 फी सदी कोयला इन खानों से निकाला जाता था लेकिन अब 85 फी सदी निकाला जाता है. पहले के मुक़ाबले कोयले की क़िस्म बहुत अच्छी है.

बिजली के धन्धे में भी रूसी सलाहकारोंने सन 1950 में 188 स्कीमें चीन की सरकार के सामने रखीं. तीन सिन शहर में बिजली के इस्तेमाल के लिये नये तरीक़े अमल में लाए गए.

हरबिन चीन के उत्तर पच्छिम में है. यहां पर कपड़े (मलमल) की एक बहुत बड़ी मिल है. इस मिल में ज़ियादातर रूसी मशीनें लगी हुई हैं. हर तरह की रंगाई वग़ैरा का काम बिजली की मदद से दो आदमी आसानी से यहां पर अनजाम देते हैं. फूशिन भी चीन के उत्तर पच्छिम में बसा हुआ है. यहां पर एक थरमल पावर प्लान्ट है जो बिजली की मदद से चलता है.

रूसी माहिरों की मदद से शु आंग या शान कोयले की खान का उत्पादन दुगना कर लिया गया है. इस बारे में एक लड़के ने अपने 60 बरस के बूढ़े बाप से हंसी हंसी में कहा कि यह मशीन कुछ महीने में ऐसा काम कर सकती है जिसको आप अपनी ज़िन्दगी में अनजाम नहीं दे सकते.

एन येह बेरा चिटिन ने एक नया रसायन तैयार किया जो एक खास तरह के काग़ज़ बनाने में काफी काम देता है. इस तरह के काग़ज़ की मांग दिन दूनी बढ़ रही है. इसका कारन यह है कि चीन के अन्दर अख़बारों और किताबों की मांग बढ़ती जा रही है. लोगों में एक नया जोश पैदा हो रहा है. वह अपने मुल्क के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानने के उत्सुक रहते हैं.

चीन के अन्दर थोड़ा बहुत सीसा भी पैदा किया जाता है. अच्छा और ऊंचे क़िस्म का सीमेंट भी तैयार किया जाता है.

सोवियत माहिरों की मदद से चीनी अपनी तकनीकी शिक्षा को बढ़ाते हैं. जब शिक्षा अच्छी तरह मिल चुकती है तो वही चीनी इन्जीनियर और तकनीकी माहिर बनते बनते हैं. धीरे धीरे वह अपने मुल्क के निर्मान के काम में लग जाते हैं. पिछली 31 दिसम्बर तक बीस हज़ार चीनियों ने रूसियों से तकनीकी शिक्षा हासिल की. सोवियत

میں کافی بڑھوتی ہوئی ہے ۔ بڑی لڑائی سے پہلے چین میں لوہے کی کمی تھی لیکن اب چین میں لوہا کافی پایا جاتا ہے ۔ پہلے ایک فرنیس کی جھاڑ پونچھ کرنے میں کم سے کم تیس گھنٹے خرچ ہوتے تھے لیکن اب وہی کام آٹھ گھنٹے میں آسانی سے کیا جاتا ہے ۔

سن 1950 اور سن 1951 میں فو آئی نان کوئلے کی کھانوں کو روسی ایکسپرٹوں نے تین بار دیکھا ۔ پہلے 80 سے 50 فیصدی کوئلہ ان کھانوں سے نکالا جاتا تھا لیکن اب 85 فیصدی نکالا جاتا ہے ۔ پہلے کے مقابلے کوئلہ کی قسم بہت اچھی ہے ۔

بجلی کے دھندے میں بھی روسی صلاح کاروں نے سن 1950 میں 188 اسکیمیں چین کی سرکار کے سامنے رکھیں ۔ تین سن شہر میں بجلی کے استعمال کے لئے نئے طریقے عمل میں لائے گئے ۔

ہر بن چین کے اتر پچھم میں ہے ۔ یہاں پر کپڑے (ململ) کی ایک بہت بڑی مل ہے ۔ اس مل میں زیادہ تر روسی مشینیں لگی ہوئی ہیں ۔ ہر طرح کی رنگائی وغیرہ کا کام بجلی کی مدد سے دو آدمی آسانی سے یہاں پر انجام دیتے ہیں ۔ فو شن بھی چین کے اتر پچھم میں بسا ہوا ہے ۔ یہاں پر ایک تھرمل پاور پلانٹ ہے جو بجلی کی مدد سے چلتا ہے ۔

روسی ماہروں کی مدد سے شو آنگ یا شان کوئلے کی کھان کا اتپادن دگنا کر لیا گیا ہے ۔ اس بارے میں ایک لڑکے نے اپنے 60 برس کے بوڑھے باپ سے ہنسی ہنسی میں کہا کہ یہ مشین کچھ مہینے میں ایسا کام کر سکتی ہے جس کو آپ اپنی زندگی میں انجام نہیں دے سکتے ۔

این ینگ ویراچٹن نے ایک نیا رسائن تیار کیا جو ایک خاص طرح کے کاغذ بنانے میں کافی کام دیتا ہے ۔ اس طرح کے کاغذ کی مانگ دن دونی بڑھ رہی ہے ۔ اسکا کارن یہ ہے کہ چین کے اندر اخباروں اور کتابوں کی مانگ بڑھتی جا رہی ہے ۔ لوگوں میں ایک نیا جوش پیدا ہو رہا ہے ۔ وہ اپنے ملک کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جاننے کے اتسک رہتے ہیں ۔

چین کے اندر تھوڑا بہت سیسا بھی پیدا کیا جاتا ہے ۔ اچھا اور اونچے قسم کا سیمنٹ بھی تیار کیا جاتا ہے ۔

سوویت ماہروں کی مدد سے چینی اپنی تکنیکی شکشا کو بڑھاتے ہیں ۔ جب شکشا اچھی طرح مل چکتی ہے تو وہی چینی انجینئر اور تکنیکی ماہر بنتے ہیں ۔ دھیرے دھیرے وہ اپنے ملک کے نرمان کے کام میں لگ جاتے ہیں ۔ پچھلی 31 دسمبر تک بیس ہزار چینیوں نے روسیوں سے تکنیکی شکشا حاصل کی ۔ سوویت

गये. काम के दौरान में एक खूबी यह रही कि आना जाना बन्द नहीं हुआ. सिलोनेव ने नई नई तरकीबें निकालीं और उनको अपने काम में सफलता मिली. आज इस पुल का यह हाल है कि भारी भारी रेलें इस पर आसानी और तेज़ रफ़्तार से गुज़र जाती हैं.

हुआई दरिया संसार के बड़े बड़े दरियाओं में गिना जाता है. पहले हर साल इसमें ज़ोर की बाढ़ आती थी. इस बाढ़ के कारन खेत, मवेशी और लोगों की हज़ारों की तादाद में जानें चली जाती थीं. चीन में जब जनता की सरकार बनी तो ग़रीबों के दुखड़ों पर उसका ध्यान ख़ास तौर पर गया. उन्होंने जो सब से पहला काम सोचा वह यह था कि किस तरह बाढ़ को रोका जाय. इस के लिये उन्होंने बड़ी बड़ी तरकीबें कीं. एक रूसी माहिर बुखोव से इस काम में काफ़ी मदद मिली. बुखोव ने बाढ़ को रोकने के लिये बड़े बड़े डाम बनाने की स्कीम बनाई. इन डामों की मदद से बिजली पैदा की गई. इसी तरह एक और हाइड्रो एलिकट्रिक डाम जेन होवा में बनाया गया. यह डाम जब बन कर तैयार हुआ तो लोगों को बहुत ख़ुशी हुई. उन्होंने अपने रूसी जानकार को तोहफ़े दिये. अगर इस काम को पच्छिमी सलाहकारों की मदद से करवाया जाता तो चीन सरकार का करोड़ों रुपया ख़र्च हो जाता. लेकिन चीन सरकार ने कम पैसे में और कम वक़्त में जनता की शक्ति से इस डाम को जल्द से जल्द पूरा कर लिया.

इन ऊपर लिखे बड़े बड़े कामों में मदद के अलावा रूसी सलाहकारों ने चीन के दूसरे धन्धों में अपनी पूरी पूरी मदद दी. यहां पर एक बात का ज़िकर कर देना बेजा न होगा. रूसी सलाहकार या माहिर जो चीन आते हैं वह उसी तरह रहते सहते, खाते और पीते हैं जिस तरह चीन के लोग. चीनी इन्जीनियरों के मुक़ाबले रूसियों को तनख़ा कुछ ज़ियादा मिलती है. इसके अलावा उनको वही चीज़ें मिलती हैं जो चीनियों को प्राप्त हैं. रूसी सलाहकारों की बाबत चार बातें ख़ास हैं : (i) चीन में जो मौजूदा मशीनरी है उसको ही नये तरीक़े और नये तकनीकी ढंग से इस्तेमाल किया जाता है; (ii) चीन के कच्चे माल से ही नई नई चीज़ें बनाई जाती हैं; (iii) चीनियों को अच्छी तरह तकनीकी ट्रेनिंग देना और (iv) रूस में जो बड़े बड़े औज़ार काम में लाए जाते हैं उसकी ठीक ठीक जानकारी चीनी विद्यार्थियों को देना.

बड़े बड़े धन्धों में चीनियों की सहायता जिस क़दर रूसियों ने की है वह अपनी आप मिसाल है. यह सब रूसियों की अथक मेहनत का नतीजा है. मिसाल के तौर पर इसी 9 मार्च 1953 को एक ब्लास्ट फरनेस जो आठ साल से बेकार पड़ा था काम करने लगा है. स्पात की पैदावार

لئے۔ کام کے دوران میں ایک خوبی یہ رہی کہ آنا جانا بند نہیں ہوا۔ سیلونیو نے نئی نئی ترکیبیں نکالیں اور اس کو اپنے کام میں سپھلتا ملی۔ آج اس پل کا یہ حال ہے کہ بھاری بھاری ریلیں اس پر آسانی اور تیزی رفتار سے گذر جاتی ہیں۔'

ہوائی دریا سنسار کے بڑے بڑے دریاؤں میں گنا جاتا ہے۔ پہلے ہر سال اس میں زور کی باڑھ آتی تھی۔ اس باڑھ کے کارن کھیت، مویشی اور لوگوں کی ہزاروں کی تعداد میں جانیں چلی جاتی تھیں۔ چین میں جب جنتا کی سرکار بنی تو غریبوں کے دکھڑوں پر اسکا دھیان خاص طور پر گیا۔ انہوں نے جو سب سے پہلا کام سوچا وہ یہ تھا کہ کس طرح باڑھ کو روکا جائے۔ اس کے لئے انہوں نے بڑی بڑی ترکیبیں کیں۔ ماہر بخوو ایک روسی سے اس کام میں کافی مدد ملی۔ بخوو نے باڑھ کو روکنے کے لئے بڑے بڑے ڈام بنانے کی اسکیم بنائی۔ ان ڈاموں کی مدد سے بجلی پیدا کی گئی۔ اسی طرح ایک اور ہائیڈرو الیکٹرک ڈام جین ہوچی میں بنایا گیا۔ یہ ڈام جب بن کر تیار ہوا تو لوگوں کو بہت خوشی ہوئی۔ انہوں نے اپنے روسی جانکار کو تحفے دیئے۔ اگر اس کام کو پچھمی صلاح کاروں کی مدد سے کروایا جاتا تو چین سرکار کا کروڑوں روپیہ خرچ ہو جاتا۔ لیکن چین سرکار نے کم پیسے میں اور کم وقت میں جنتا کی شکتی سے اس ڈام کو جلد سے جلد پورا کرلیا۔

ان اوپر لکھے بڑے بڑے کاموں میں مدد کے علاوہ روسی صلاح کاروں نے چین کے دوسرے دھندوں میں اپنی پوری پوری مدد دی۔ یہاں پر ایک بات کا ذکر کردینا بےجا نہ ہوگا۔ روسی صلاح کار یا ماہر جو چین آتے ہیں وہ اسی طرح رہتے سہتے، کھاتے اور پیتے ہیں جس طرح چین کے لوگ۔ چینی انجینیروں کے مقابلے روسیوں کو تنخواہ کچھ زیادہ ملتی ہے۔ اس کے علاوہ ان کو وہی چیزیں ملتی ہیں جو چینیوں کو پراپت ہیں۔ روسی صلاح کاروں کی بابت چار باتیں خاص ہیں: (i) چین میں جو موجودہ مشینری ہے اس کو ہی نئے طریقے اور نئے تکنیکی ڈھنگ سے استعمال کیا جاتا ہے۔ (ii) چین کے کچے مال سے ہی نئی نئی چیزیں بنائی جاتی ہیں؛ (iii) چینیوں کو اچھی طرح تکنیکی ٹریننگ دینا اور (iv) روس میں جو بڑے بڑے اوزار کام میں لئے جاتے ہیں اسکی ٹھیک ٹھیک جانکاری چینی ودیارتھیوں کو دینا۔

بڑے بڑے دھندوں میں چینیوں کی سہائتا جس قدر روسیوں نے کی ہے وہ اپنی آپ مثال ہے۔ یہ سب روسیوں کی انتھک محنت کا نتیجہ ہے۔ مثال کے طور پر اسی 9 مارچ 1953 کو ایک بلاسٹ فرنس جو آٹھ سال سے بیکار پڑا تھا کام کرنے لگا ہے۔ اسپات کی پیداوار

एक दूसरे को काटती और कुछ दूरी की बात इसमें . यह सब बातें बुनियादी रेलों की विरासत हैं."

नये चीन की सरकार के सामने बड़े बड़े मसले पेश . इन मसलों में सब से बड़े और जरूरी थे यातायात और र बाढ़ों का रोकना. चांग काई शेक की हुकूमत के दौरान इन दोनों की हालत बहुत खराब थी. बड़े बड़े पुल टूटे थे. रेलों को इन पर गुजरने में बहुत वक्त लगता था. सी सहायता की मदद से इन पुलों को सुधारा गया. कैंग हानकाओ कैन्टन लाइन को एक सिरे से दुरुस्त या गया. इस सिलसिले में एक रूसी माहिर की स्लिन ा जिकर जरूरी है. चीनियों के साथ इन्होंने चीन की माम लाइनों की खुद जांच की. पुलों को नये ढंग से धारा. पुरानी चीजों के बारे में उन्होंने कहा—"इन लों को हम को पुराने जमाने का नहीं समझना चाहिये. अपनी जरूरत के मुताबिक हमको काम में लाने के लिये नको बना लेना चाहिये."

आगे चल कर हम इस लेख में यह बयान करेंगे कि किस किस दायरे में रूसी माहिरों ने चीनियों की मदद ;

यलो रीवर पुल चेंगचाव में बना हुआ है. होनान बे में चेंगचाव एक मशहूर जगह है. यह चीन के बड़े बड़े हरों में शुमार किया जाता है. इस पुल का काम भी रूसी गों की अथक और बेलाग मेहनत से किया गया है. पुल के बनाने का जो रास्ता अख्तियार किया गया पुराने चीन के मुकाबले बिलकुल दूसरा था. चांग ई शेक के इन्जीनियरों ने भी इस पुल के बनाने में हो बहुत कोशिश जरूर की थी लेकिन जनवादी चीन रूसियों की सहायता से इस पुल को थोड़े अरसे में पने काम लायक पूरी तरह ठीक कर लिया है. यह पुल ज से क़रीब 52 बरस पहले बेलजियम और फ्रांस के केदारों की मदद से बनाया गया था. जब यह नया नया ना था तब रेलें इस पुल पर 10 मील फी घंटे के हिसाब गुजरती थी. सन 1929 में एक अमरीका सलाहकार बुलाया गया. इसने उस पुल को अच्छी तरह देखा भाला केन कोई खास सुझाव नहीं दे सका. 1946 में चांग काई क के इन्जीनियरों ने इस पुल को फिर से ठीक करने की शिश की. एक अमरीकन कम्पनी को 100,000 डालर इसकी मरम्मत के लिये दिये गए लेकिन कुछ फायदा ी हुआ. पुल की हालत क़रीब क़रीब ज्यूं की त्यूं रही.

नवम्बर 1949 में रूसी माहिर जिगोरियकोव और सके साथी शिलोतेव ने इस यलो रीवर पुल को ठीक करने बीड़ा उठाया. एक साल के अन्दर अन्दर इन रूसी माहिरों ने पुल को इस क़ाबिल बना दिया कि भारी भारी न और तेज़ चलने वाली रेलें रफ़्तार से इसके ऊपर जाने लगे

کہ ایک دوسرے کو کاٹتی اور کہیں جوڑنے کی باتیں ان میں ہے ۔ یہ سب باتیں پرانی ریلوں کی وراثت ہیں ۔"

نئے چین کی سرکار کے سامنے بڑے بڑے مسئلے پیش تھے ۔ ان مسئلوں میں سب سے بڑے اور ضروری تھے یاتایات اور باڑھوں کا روکنا ۔ چانگ کائی شیک کی حکومت کے دوران میں ان دونوں کی حالت بہت خراب تھی ۔ بڑے بڑے پل ٹوٹے ہوئے تھے ۔ ریلوں کو ان پر گذرنے میں بہت وقت لگتا تھا ۔ روسی سہائتا کی مدد سے ان پلوں کو سدھارا گیا ۔ پیکنگ ہانکاؤ کینٹن لائن کو ایک سرے سے درست کیا گیا ۔ اس سلسلے میں ایک روسی ماہر شری سلن کا ذکر ضروری ہے ۔ چینیوں کے ساتھ انہوں نے چین کی تمام لائنوں کی خود جانچ کی ۔ پلوں کو نئے ڈھنگ سے سدھارا ۔ پرانی چیزوں کے بارے میں انہوں نے کہا—"ان پلوں کو ہمکو پرانے زمانے کا نہیں سمجھنا چاہئے ۔ اپنی ضرورت کے مطابق ہمکو کام میں لانے کے لئے ان کو بنالینا چاہئے ۔"

آگے چل کر ہم اس لیکھ میں یہ بیان کریں گے کہ کس کس دائرے میں روسی ماہروں نے چینیوں کی مدد کی ۔

یلو ریور پل چنگ چاؤ میں بنا ہوا ہے ۔ ہونان صوبے میں چنگ چاؤ ایک مشہور جگہ ہے ۔ یہ چین کے بڑے بڑے شہروں میں شمار کیا جاتا ہے ۔ اس پل کا کام بھی روسی لوگوں کی انتھک اور بےلاگ محنت سے کیا گیا ہے ۔ اس پل کے بنانے کا جو راستہ اختیار کیا گیا وہ پرانے چین کے مقابلے بالکل دوسرا تھا ۔ چانگ کائی شیک کے انجینیروں نے بھی اس پل کے بنانے میں تھوڑی بہت کوشش ضرور کی تھی لیکن جنوادی چین نے روسیوں کی سہائتا سے اس پل کو تھوڑے عرصے میں اپنے کام لائق پوری طرح ٹھیک کرلیا ہے ۔ یہ پل آج سے قریب 52 برس پہلے بلجیم اور فرانس کے ٹھیکیداروں کی مدد سے بنایا گیا تھا ۔ جب یہ نیا نیا بنا تھا تب ریلیں اس پل پر 10 میل فی گھنٹہ کے حساب سے گذرتی تھیں ۔ سن 1929 میں ایک امریکی صلاح کار کو بلایا گیا ۔ اس نے اس پل کو اچھی طرح دیکھا بھالا لیکن کوئی خاص شکل نہیں دے سکا ۔ 1946 میں چانگ کائی شیک کے انجینیروں اس پل کو پھر سے ٹھیک کرنے کی کوشش کی ۔ ایک امریکی کمپنی کو 100,000 ڈالر بھی اس کی مرمت کے لئے دیئے گئے لیکن کچھ فائدہ نہیں ہوا ۔ پل کی حالت قریب قریب جوں کی توں رہی ۔

نومبر 1949 میں روسی ماہر ژنگوریکوو اور اس کے ساتھی شلوتیو نے اس یلو ریور پل کو ٹھیک کرنے کا بیڑا اٹھایا ۔ ایک سال کے اندر اندر ان روسی ماہروں نے پل کو اس قابل بنا دیا کہ بھاری بھاری انجن پوری تیز رفتار سے اس کے اوپر آنے جانے

"किसी के साथ बुराई करने से बुराई सह लेना ज़ियादा अच्छा है."

चीनी महात्मा लाओत्से ने कहा है कि "बुराई का बदला मेहरबानी से दो."

लाओत्से के मशहूर चेले महात्मा क्वांगचे ने कहा है कि :—

"नेकों के साथ मैं नेकी करूंगा और जो नेक नहीं हैं उनके साथ भी नेकी करूंगा ताकि वह नेक बन सकें. जो लोग सच्चे हैं उनके साथ मैं भी सच्चा रहूंगा और जो लोग सच्चे नहीं हैं उनके साथ भी मैं सच्चा रहूंगा ताकि इस तरह सब सच्चे बन सकें."

लगभग इन्हीं सब महा पुरुषों ने और लगभग सब धर्मों के क़ायम करने वालों ने समय समय पर अन्याय या ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ने की इजाज़त भी दी है. हर आदमी का धर्म देश, काल और परिस्थिति के अनुसार और उसकी अपनी तबियत, विकास और क़ाबलियत के अनुसार होता और बदलता रहता है. पर सब धर्म ग्रंथों के अनुसार सब से ऊंचा और सब से अधिक काम का धर्म यही है कि आदमी बुराई का बदला नेकी से दे और किसी दूसरे को दुख पहुंचाने के बजाय ख़ुद दुःख सहने को तैयार रहे.

"کسی کے ساتھ برائی کرنے سے برائی سہ لینا زیادہ اچھا ہے۔"

چینی مہاتما لاؤ زے نے کہا ہے کہ "برائی کا بدلہ مہربانی سے دو۔"

لاؤ زے کے مشہور چیلے مہاتما کوانگ زے نے کہا ہے کہ :—

"نیکوں کے ساتھ میں نیکی کروں گا اور جو نیک نہیں ہیں اُن کے ساتھ بھی نیکی کروں گا تاکہ وہ نیک بن سکیں۔ جو لوگ سچے ہیں اُن کے ساتھ میں بھی سچا رہوں گا اور جو لوگ سچے نہیں ہیں اُن کے ساتھ بھی میں سچا رہوں گا تاکہ اِس طرح سب سچے بن سکیں۔"

لگ بھگ اِنہیں سب مہا پرشوں نے اور لگ بھگ سب دھرموں کے قائم کرنے والوں نے سمے سمے پر انیائے یا ظلم کے خلاف لڑنے کی اجازت بھی دی ہے۔ ہر آدمی کا دھرم دیش، کال اور پرستھتی کے انوسار اور اُس کی اپنی طبیعت، وکاس اور قابلیت کے انوسار ہوتا اور بدلتا رہتا ہے۔ پر سب دھرم گرنتھوں کے انوسار سب سے اُونچا اور سب سے ادھک کام کا دھرم یہی ہے کہ آدمی برائی کا بدلہ نیکی سے دے اور کسی دوسرے کو دکھ پہنچانے کے بجائے خود دکھ سہنے کو تیار رہے۔

चीन में रूसी माहिर

जिस दिन से चीन में नई सरकार बनी है वहां एक जादू सा हो गया है. हर तरफ़ ख़ुशहाली नज़र आती है. भूक, बेकारी, और रहने सहने के बन्दोबस्त में नया ढंग अपनाया गया है. लोगों का स्तर पहले से ऊंचा उठ गया है. एक सवाल उठता है कि चीनी अपने मुल्क को इतने थोड़े अरसे में कैसे बना सके? इसका जवाब साधारन है—चीनियों में अपने मुल्क को तरक़्क़ी देने का मज़बूत इरादा—साथ ही साथ रूसी माहिरों ने भी चीन को बनाने व लोगों का स्तर ऊंचा करने में जो सहायता दी है वह भी तारीफ़ के क़ाबिल है. चिंग माउ चो ने 13 फ़रवरी 1953 को चीन रूस दोस्ती समझौते के बारे में कहा—"हमारे और महान रूस के बीच जो समझौता हुआ है उसमें कोई धोका धड़ी करने की बात नहीं है, न होड़ की बात है, न एक दूसरे को बाज़ार से निकालने की बात है,

چین میں روسی ماہر

جس دن سے چین میں نئی سرکار بنی ہے وہاں ایک جادو سا ہو گیا ہے۔ ہر طرف خوش حالی نظر آتی ہے۔ بھوک، بیکاری اور رہنے سہنے کے بندوبست میں نیا ڈھنگ اپنایا گیا ہے۔ لوگوں کا استر پہلے سے اُونچا اُٹھ گیا۔ ایک سوال اُٹھتا ہے کہ چینی اپنے ملک کو اِتنے تھوڑے عرصے میں کیسے بنا سکے؟ اُس کا جواب سادھارن ہے—چینیوں میں اپنے ملک کو ترقی دینے کا مضبوط ارادہ—ساتھ ہی ساتھ روسیوں نے بھی چین کو بنانے و لوگوں کا استر اُونچا کرنے میں جو سہائتا دی ہے وہ بھی تعریف کے قابل ہے۔ چو این لائی جی نے 13 فروری 1953 کو چین روس دوستی سمجھوتے کے بارے میں کہا—"ہمارے اور مہان روس کے بیچ جو سمجھوتا ہوا ہے اُس میں کوئی دھوکا دھڑی کرنے کی بات نہیں ہے، نہ ہوڑ کی بات ہے، نہ ایک دوسرے کو بازار سے نکالنے کی بات ہے،

चीन के महात्मा क्नोत्से ने लिखा है :—

"अच्छे लोग आदर सत्कार से खुश नहीं होते और कोई उनका निरादर करे तो नाराज़ नहीं होते. यह वही कर सकते हैं जो भगवान की अनन्त एक रूपता को समझ चुके हैं."

गीता में यही बात बार बार आती है.

इंजील में लिखा है :—

"अगर तुम्हारा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना दो, अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी दो."

एक दूसरी जगह इंजील में लिखा है :—

"जो आदमी जल्दी से ग़ुस्सा नहीं करता वह बड़े से बड़े बलवान आदमी से ज़ियादा बलवान है, और जो अपनी आत्मा पर क़ाबू रखता है वह उस आदमी से बढ़ कर है जो एक शहर जीत लेता है...नफ़रत से नफ़रत और झगड़ा बढ़ता है लेकिन प्रेम से सब पाप दब जाते हैं... नरम जवाब ग़ुस्से को मोड़ देता है लेकिन कड़वे शब्द ग़ुस्से को और भड़का देते हैं."

एक और जगह इंजील में लिखा है—"पूरा प्रेम डर को निकाल कर बाहर कर देता है."

यही 'बात धम्म पद' और महाभारत में भी इन्हीं शब्दों में कही गई है. महाभारत में लिखा है कि "जो आदमी अपने उभरते हुए क्रोध को जीत कर शान्त करे वही सच्चा बहादुर है न कि वह जो लड़ाई के मैदान में बहुत से दुश्मनों को पछाड़ ले."

सामवेद में लिखा है कि :—

"दो ऐसे पुल हैं जिन्हें पार करना ज़रा मुशकिल है. उन्हें होशयारी से पार करना चाहिये. एक क्रोध और शान्ति के बीच का पुल और दूसरा झूट और सच के बीच का पुल.

रिगवेद में लिखा है :—

"हिंसा का बदला हिंसा से मत दो और न शाप यानी बददुआ का बदला शाप से दो. दूसरे के छल कपट का बदला चालों से मत दो. इन सब के बदले में लोगों को आशीर्वाद दो." (1-41,9)

गीता में लिखा है कि "जो अपने क्रोध को जीत लेता है वही ईश्वर तक पहुंचता है."

सुक़रात को यूनान का सब से अधिक बुद्धिमान मनुष्य माना जाता है. उसने एक जगह लिखा है कि :—

हमें किसी की बुराई का बदला बुराई से नहीं देना चाहिये और न किसी के साथ बुराई करनी चाहिये चाहे उसने हमारे साथ कितनी भी बुराई क्यों न की हो."

सुक़रात की एक और मशहूर कहावत है :—

چین کے مہاتما کو انگ زے نے لکھا ہے :—

" اچھے لوگ آدر ستکار سے خوش نہیں ہوتے اور کوئی اُن کا نرادر کرے تو ناراض نہیں ہوتے . یہ وہی کر سکتے ہیں جو بھگوان کی اننت ایک روپتا کو سمجھ چکے ہیں ."

گیتا میں یہی بات بار بار آتی ہے .

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" اگر تمہارا دشمن بھوکا ہو تو اُسے کھانا دو' اگر وہ پیاسا ہو تو اُسے پانی دو ."

ایک دوسری جگہ اِنجیل میں لکھا ہے :—

" جو آدمی جلدی سے غصہ نہیں کرتا وہ بڑے سے بڑے بلوان آدمی سے زیادہ بلوان ہے' اور جو اپنی آتما پر قابو رکھتا ہے وہ اُس آدمی سے بڑھکر ہے جو ایک شہر جیت لیتا ہے......نفرت سے نفرت اور جھگڑا بڑھتا ہے لیکن پریم سے سب پاپ دب جاتے ہیں......نرم جواب غصہ کو موڑ دیتا ہے لیکن کڑوے شبد غصہ کو اور بھڑکا دیتے ہیں ."

ایک اور جگہ اِنجیل میں لکھا ہے—" پورا پریم ڈر کو نکال کر باہر کر دیتا ہے ."

یہی بات دھم پد اور مہا بھارت میں بھی اِنہیں شبدوں میں کہی گئی ہے . مہا بھارت میں لکھا ہے کہ " جو آدمی اپنے اُبھرتے ہوئے کرودھ کو جیت کر شانت کرے وہی سچا بہادر ہے نہ کہ وہ جو لڑائی کے میدان میں بہت سے دشمنوں کو پچھاڑ لے."

سام وید میں لکھا ہے کہ :—

" دو ایسے پل ہیں جنہیں پار کرنا ذرا مشکل ہے . اِنہیں ہوشیاری سے پار کرنا چاہئے . ایک کرودھ اور شانتی کے بیچ کا پل اور دوسرا جھوٹ اور سچ کے بیچ کا پل ."

رگ وید میں لکھا ہے :—

ہنسا کا بدلہ ہنسا سے مت دو اور نہ شاپ یعنی بددعا کا بدلہ شاپ سے دو . دوسرے کے چھل کپٹ کا بدلہ چالوں سے مت دو. اِن سب کے بدلے میں لوگوں کو آشیرواد دو ."
(1-41,9)

گیتا میں لکھا ہے کہ " جو اپنے کرودھ کو جیت لیتا ہے وہی ایشور تک پہنچتا ہے ."

سقراط کو یونان کا سب سے ادھک بدھیمان منشیہ مانا جاتا ہے . اُس نے ایک جگہ لکھا ہے کہ :—

" ہمیں کسی کی برائی کا بدلہ برائی سے نہیں دینا چاہئے اور نہ کسی کے ساتھ برائی کرنی چاہئے چاہے اُس نے ہمارے ساتھ کتنی بھی برائی کیوں نہ کی ہو ."

سقراط کی ایک اور مشہور کہاوت ہے :—

भागवत पुराण में और भी साफ लिखा है कि :—

"किसी तरह किसी एक प्राणी को भी जो समझदार आदमी संतोष या तसल्ली देता है उसका ऐसा करना ही ईश्वर की पूजा करना है. नेक आदमी दूसरों के दुख से दुखी होते हैं. उनका यह दुखी होना ही सब से बड़ी आराधना यानी इबादत है. सब का भला चाहना यही सबका सब से बड़ा धर्म है. जो ज्योति यानी नूर आदमी के अपने अन्दर है वही ज्योति सब के अन्दर है और सब में बराबर है."

आदमी के इस सब से बड़े धर्म या फर्ज़ की शकलें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं. इन शकलों को तय करने में आदमी को कभी कभी काफ़ी कठिनाई पड़ती है. अलग अलग हालतों में अपने ठीक फर्ज़ को समझने के लिये आवश्यकता केवल यह है कि आदमी का दिल साफ़ और पक्षपात से खाली हो. यानी वह किसी तरह की धर्मान्धता, कट्टरता और केवल ऊपरी रीत रिवाज या दिखावे में फंसा हुआ न हो.

हज़रत ईसा ने कहा है :—

"बुराई से टक्कर न लो, अगर कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चांटा मारे तो बायां गाल भी उसके सामने कर दो" जो तुम्हें बददुआ दे उसे तुम उसे आशीर्वाद दो, अपने दुश्मनों से प्रेम करो और जो तुम्हें तकलीफ़ पहुचाएं उनके लिये भलाई की दुआ करो."

बुद्ध भगवान ने कहा है :—

"नफ़रत को मुहब्बत से जीतो."

क़ुरान में लिखा है:—इदफ़अ बिल्लति हियहसन (96-23) यानी बुराई का बदला भलाई से दो.

मनुस्मृति में लिखा है :—

"जो तुम पर क्रोध करे उस पर तुम क्रोध न करो और जो तुम से कड़ाई से बोले उसके साथ तुम मिठाई से बात करो."

महाभारत में लिखा है :—

"क्रोध को गुस्सा न करके यानी मेहरबानी से जीतो, बदी को नेकी से जीतो, ओछेपन को दान से जीतो और झूट को सच से जीतो."

बुद्ध ने अपनी किताब 'धम्म पद' में ठीक महाभारत के ऊपर के शब्दों को दुहराया है.

जैन धर्म की किताब में इसी असूल को ज़रा बदल कर यूं लिखा है :—

"अपने गुस्से को मीठी क्षमा से जीतो, अपने घमण्ड को नम्रता से क़ाबू में करो, हर तरह के छल कपट को सीधी सचाई से जीतो और लोभ को शान्ति और संतोष से क़ाबू में करो.'[1]

بھاگوت پران میں اور بھی صاف لکھا ہے کہ :—

" کسی طرح کسی ایک پرانی کو بھی جو سمجھدار آدمی سنتوش یا تسلی دیتا ہے اس کا ایسا کرنا ہی ایشور کی پوجا کرنا ہے ۔ نیک آدمی دوسروں کے دکھ سے دکھی ہوتے ہیں ۔ ان کا یہ دکھی ہونا ہی سب سے بڑی آرادھنا یعنی عبادت ہے ۔ سب کا بھلا چاہنا یہی سب کا سب سے بڑا دھرم ہے ۔ جو جیوتی یعنی نور آدمی کے اپنے اندر ہے وہی جیوتی سب کے اندر ہے اور سب میں برابر ہے ۔"

آدمی کے اس سب سے بڑے دھرم یا فرض کی شکلیں دیش' کال اور پرستھتی کے انوسار بدلتی رہتی ہیں ۔ ان شکلوں کے طے کرنے میں آدمی کو کبھی کبھی کافی کٹھنائی پڑتی ہے ۔ الگ الگ حالتوں میں اپنے ٹھیک فرض کو سمجھنے کے لئے آوشیکتا کیول یہ ہے کہ آدمی کا دل صاف اور پکشپات سے خالی ہو ۔ یعنی وہ کسی طرح کی دھرماندھتا' کٹرتا اور کیول اوپری ریت رواج یا دکھاوے میں پھنسا ہوا نہ ہو ۔

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

" برائی سے ٹکر نہ لو' اگر کوئی تمہارے داہنے گال پر چانٹا مارے تو بایاں گال بھی اس کے سامنے کر دو ۔"

جو تمہیں بددعا دے اسے تم آشیرواد دو' دشمنوں سے پریم کرو اور جو تمہیں تکلیف پہنچائیں ان کے لئے بھلائی کی دعا کرو ۔"

بدھ بھگوان نے کہا ہے :—

" نفرت کو محبت سے جیتو ۔"

قرآن میں لکھا ہے :—

اِدفع بالتی ہی احسن (96-23)

یعنی برائی کا بدلہ بھلائی سے دو ۔

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

" جو تم پر کرودھ کرے اس پر تم کرودھ نہ کرو اور جو تم سے کڑائی سے بولے اس کے ساتھ تم مٹھائی سے بات کرو ۔"

مہا بھارت میں لکھا ہے :—

" کرودھ کو غصہ نہ کر کے یعنی مہربانی سے جیتو' بدی کو نیکی سے جیتو' اوچھے پن کو دان سے جیتو اور جھوٹ کو سچ سے جیتو ۔"

بدھ نے اپنی کتاب 'دھم پد' میں ٹھیک مہا بھارت کے اوپر کے شبدوں کو دہرایا ہے ۔

جین دھرم کی کتاب میں اسی اصول کو ذرا بدل کر یوں لکھا ہے :—

" اپنے غصے کو میٹھی کشما سے جیتو' اپنے گھمنڈ کو نمرتا سے قابو میں کرو' ہر طرح کے چھل کپٹ کو سیدھی سچائی سے جیتو اور لوبھ کو شانتی اور سنتوش سے قابو میں کرو ۔"

बुद्ध धर्म की पुस्तक 'धम्म पद' में लिखा है :—

"नफ़रतों से नफ़रतें कभी नहीं बुझ सकतीं. नफ़रत न करने से ही नफ़रतें बुझ सकती हैं और प्रेम में बदल सकती हैं. यही सनातन धर्म है."

महाभारत में कहा गया है :—

"ए राजा ! दूसरों के सरसों के दाने के बराबर दोषों को भी तुम देख लेते हो और अपने बेल की फल के बराबर दोषों को देखते हुए भी तुम नहीं देखते."

इंजील में लिखा है :—

"तुम अपने भाई की आंख के अन्दर का तिल भी क्यों देख लेते हो और खुद अपनी आंख के अन्दर की शहतीर भी क्यों नहीं देख पाते ?"

धम्म पद में लिखा है :—

"दूसरों के दोष हम आसानी से देख लेते हैं, अपने दोष बहुत मुश्किल से दिखाई देते हैं. अपने पड़ोसी के दोषों को हम बड़े शौक़ से इस तरह फटकते हैं जिस तरह दाने से भूसा फटका जाता है, और अपने दोषों को इस तरह छिपाते फिरते हैं जिस तरह जुआ चोर लोग अपने उल्टे पासे को छिपाने की कोशिश करते हैं. करना चाहिये हमें यह कि दूसरों के दोषों को खोजने में न पड़ कर अपने दोषों को बड़ी सावधानी से फटक फटक कर अलग करें."

यह 'सुनहरा असूल' एक गहरी रूहानी सच्चाई से पैदा होता है. यह सच्चाई ही सब सचाइयों की एक सचाई है. आदमी दूसरों के साथ वह सलूक क्यों करे जो वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें ? इसलिये क्योंकि 'वह' और 'दूसरे' हक़ीक़त में एक हैं. सब के अन्दर एक ही आत्मा रमी हुई है. सब एक ही के अनेक रूप हैं. जो कुछ मैं दूसरों के साथ करता हूं वह वास्तव में अपने ही साथ करता हूं. हमारे भले और बुरे काम सब हम पर इसी तरह लौट कर आते हैं जिस तरह चिड़ियां दिन भर हवा में उड़ कर रात को लौट कर सब अपने बसेरे में आ जाती हैं. जल्दी या देर में जो सलूक कोई किसी दूसरे के साथ करता है वही अटल रूप में उसके साथ होता है.

उपनिषद् में लिखा है :—

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्ये वानु पश्यति
सर्व भूतेषु चात्मानम् ततो न विजुगुप्सते

यानी-जो आदमी सब प्राणियों को अपने अन्दर ही देखता है और सब प्राणियों के अन्दर अपनी आत्मा को देखता है वह फिर न किसी से नफ़रत करता है, न किसी से डरता है, न किसी का बुरा करता है और न कभी धोखा खाता है.

بدھ دھرم کی پستک دھم پد میں لکھا ہے:—

" نفرتوں سے نفرتیں کبھی نہیں بجھ سکتیں . نفرت نہ کرنے سے ہی نفرتیں بجھ سکتی ہیں اور پریم میں بدل سکتی ہیں . یہی سناتن دھرم ہے ."

مہا بھارت میں کہا گیا ہے :—

" اے راجا ! دوسروں کے سرسوں کے دانے کے برابر دوشوں کو بھی تم دیکھ لیتے ہو اور اپنے بیل کے پھل کے برابر دوشوں کو دیکھتے ہوئے بھی تم نہیں دیکھتے."

انجیل میں لکھا ہے :—

" تم اپنے بھائی کی آنکھ کے اندر کا تل بھی کیوں دیکھ لیتے ہو اور خود اپنی آنکھ کے اندر کی شہتیر بھی کیوں نہیں دیکھ پاتے ؟"

دھم پد میں لکھا ہے :—

" دوسروں کے دوش ہم آسانی سے دیکھ لیتے ہیں، اپنے دوش بہت مشکل سے دکھائی دیتے ہیں . اپنے پڑوسی کے دوشوں کو ہم بڑے شوق سے اس طرح پھٹکتے ہیں جس طرح دانے سے بھوسا پھٹکا جاتا ہے، اور اپنے دوشوں کو اس طرح چھپاتے پھرتے ہیں جس طرح جوا چور لوگ اپنے الٹے پاسے کو چھپانے کی کوشش کرتے ہیں . کرنا چاہئے ہمیں یہ کہ دوسروں کے دوشوں کو کھوجنے میں نہ پڑ کر اپنے دوشوں کو بڑی ساودھانی سے پھٹک پھٹک کر الگ کریں ."

یہ سنہرا اصول ایک گہری روحانی سچائی سے پیدا ہوتا ہے . وہ سچائی ہی سب سچائیوں کی ایک سچائی ہے . آدمی دوسروں کے ساتھ وہ سلوک کیوں کرے جو وہ چاہتا ہے کہ دوسرے اس کے ساتھ کریں ؟ اس لئے کیونکہ 'وہ' اور 'دوسرے' حقیقت میں ایک ہیں . سب کے اندر ایک ہی آتما رمی ہوئی ہے . سب ایک ہی کے انیک روپ ہیں . جو کچھ میں دوسروں کے ساتھ کرتا ہوں وہ واستو میں اپنے ہی ساتھ کرتا ہوں . ہمارے بھلے اور برے کام سب ہم پر اسی طرح لوٹ کر آتے ہیں جس طرح چڑیاں دن بھر ہوا میں اڑ کر رات کو لوٹ کر سب اپنے بسیرے میں آ جاتی ہیں . جلدی یا دیر میں جو سلوک کوئی کسی دوسرے کے ساتھ کرتا ہے وہی اٹل روپ میں اس کے ساتھ ہوتا ہے .

اپنشد میں لکھا ہے :—

یستو سروانی بھوتانی آتمنی ایو انوپشیتی
سرو بھوتیشو چاتمانم . تتو نہ وجو گپستے

یعنی جو آدمی سب پرانیوں کو اپنے اندر ہی دیکھتا ہے اور سب پرانیوں کے اندر اپنی آتما کو دیکھتا ہے وہ پھر نہ کسی سے نفرت کرتا ہے، نہ کسی سے ڈرتا ہے، نہ کسی کا برا کرتا ہے اور نہ کبھی دھوکا کھاتا ہے .

नतीजों के तौर पर निकलते हैं. मिसाल के लिये महाभारत में लिखा है कि :—

"आदमी अपने जिस काम के बारे में यह चाहे कि दूसरे उसे न जाने और जिस काम को करते हुए उसका अपना दिल शरमाये वह काम आदमी को कभी नहीं करना चाहिये."

इसी तरह मनु स्मृति में लिखा है :—

"जिस काम के बारे में आदमी यह चाहता है कि सब उसे जान जायें, जिस के करते हुए उसका दिल बिलकुल शरमाता नहीं, जिससे उसकी अन्तरात्मा को संतोष मिलता है वही काम सच्चा सात्विक यानी अफ़ज़ल काम है, वही धर्म है."

महाभारत के अनुशासन पर्व में एक जगह कहा गया है कि :—

"कोई मुझे ऐसा तरीक़ा बता दे जिससे मैं दुखिया लोगों और दुखिया प्रानियों के अन्दर घुस कर हमेशा उनके दुख को अपने दुख की तरह अनुभव कर सकूं."

इंजील में हज़रत ईसा ने कहा है :—

"मैं भूखा था, मैं प्यासा था, मैं नंगा था, मैं बीमार था, मैं जेलखानों में क़ैद था. जिस दरजे तक तुमने मेरे किसी छोटे से छोटे भाई किसी भी इनसान के साथ यह सलूक किया है उस दरजे तक तुमने मेरे साथ वही सलूक किया है."

इसी सुनहरे उसूल से दूसरा नतीजा यह निकलता है कि हमें दूसरों की बुराई करना, दूसरों के दोष निकालना, दूसरों पर ताना कसना, किसी की पीठ पीछे बुराई करना, बुरी नियत से टोका टिप्पनी करना, बुरी बातें कहते फिरना, किसी को बदनाम करना जैसे कामों से हमेशा बचना चाहिये. बदक़िस्मती से यह सब आदतें चारों तरफ़ दिखाई देती हैं. आपस की मित्रता के लिये और मानव समाज के सुख के लिये इस तरह की आदतें बहुत ही बुरी हैं.

चीनी महात्मा मनशियस लिखता है कि :—

"लोगों में यह एक बीमारी है कि वह अपने खेत की तो परवाह नहीं करते और दूसरों के खेतों में जा जा कर वहां से ख़राब घास उखाड़ते फिरते हैं. इस तरह के लोग दूसरों से तो बड़ी बड़ी बातें चाहते हैं और ख़ुद अपना फ़र्ज़ बहुत कम समझते हैं."

एक दूसरा चीनी महात्मा क्वांग त्से लिखता है कि "दूसरों को सुधारने की कोशिश करना जब कि हमारी अपनी नेकी पर बादल छाए हुए हों अपनी नेकी के ऊपर एक ऐसे काम का भार डालना है जो उसके बूते से बाहर है."

نتیجوں کے طور پر نکلتے ہیں۔ مثال کے لئے مہا بھارت میں لکھا ہے کہ :—

"آدمی اپنے جس کام کے بارے میں یہ چاہے کہ دوسرے اسے نہ جانیں اور جس کام کو کرتے ہوئے اس کا اپنا دل شرمائے وہ کام آدمی کو کبھی نہیں کرنا چاہئے."

اسی طرح منو اسمرتی میں لکھا ہے :—

"جس کام کے بارے میں آدمی یہ چاہتا ہے کہ اسے سب لوگ جان جاویں، جس کے کرتے ہوئے اس کا دل بالکل شرماتا نہیں۔ جس سے اس کی انتر آتما کو سنتوش ملتا ہے وہی کام سچا ساتوک یعنی افضل کام ہے۔ وہی دھرم ہے."

مہا بھارت کے انوشاسن پرو میں ایک جگہ کہا گیا ہے کہ :—

"کوئی مجھے ایسا طریقہ بتا دے جس سے میں دکھیا لوگوں اور دکھیا پرانیوں کے اندر گھس کر ہمیشہ ان کے دکھ کو اپنے دکھ کی طرح انوبھو کر سکوں."

انجیل میں حضرت عیسی نے کہا ہے :—

"میں بھوکا تھا، میں پیاسا تھا، میں ننگا تھا، میں بیمار تھا، میں جیل خانہ میں قید تھا۔ جس درجہ تک تم نے میرے کسی چھوٹے سے چھوٹے بھائی کسی بھی انسان کے ساتھ یہ سلوک کیا ہے اس درجہ تک تم نے میرے ساتھ بھی سلوک کیا ہے."

اسی سنہرے اصول سے دوسرا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ ہمیں دوسروں کی برائی کرنا، دوسروں کے دوش نکالنا، دوسروں پر طعنہ کسنا، کسی کی پیٹھ پیچھے برائی کرنا، بری نیت سے ٹوکا ٹپنی کرنا، بری باتیں کہتے پھرنا، کسی کو بدنام کرنا جیسے کاموں سے ہمیشہ بچنا چاہئے۔ بدقسمتی سے یہ سب عادتیں چاروں طرف دکھائی دیتی ہیں۔ آپس کی مترتا کے لئے اور مانو سماج کے سکھ کے لئے اس طرح کی عادتیں بہت ہی بری ہیں۔

چینی مہاتما منشیس لکھتا ہے کہ :—

"لوگوں میں یہ ایک بیماری ہے کہ وہ اپنے کھیت کی تو پرواہ نہیں کرتے اور دوسروں کے کھیتوں میں جا جا کر وہاں سے خراب گھاس اکھاڑتے پھرتے ہیں۔ اس طرح کے لوگ دوسروں سے تو بڑی بڑی باتیں چاہتے ہیں اور خود اپنا فرض بہت کم سمجھتے ہیں."

ایک دوسرا چینی مہاتما کوانگ زے لکھتا ہے کہ "دوسروں کو سدھارنے کی کوشش کرنا جب کہ ہماری اپنی نیکی پر بادل چھائے ہوں اپنی نیکی کے اوپر ایک ایسے کام کا بوجھ ڈالنا ہے جو اس کے بوتے سے باہر ہے."

से [illegible] पृथक है. और ईश्वर न उससे अलग हो सकता है जो सब के घट घट में बैठे हुए एक ईश्वर की पूजा करता है वह कहीं भी रहे ईश्वर उसके साथ है."

मनुस्मृति में भी यही बात ठीक इन्हीं शब्दों में कही गई है और लिखा है कि—"जिसे यह बात हासिल है उसे ही सच्चा स्वराज हासिल है."

हितोपदेश में लिखा है :—

आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पंडितः

यानी जो सब प्राणियों को अपनी ही तरह देखता है वही पंडित है.

चीन के ताव धर्म की एक किताब में लिखा है :—

"दूसरों को मुसीबतों में उन पर दया करो. दूसरे की खुशहाली से खुश हो. जिन्हें तुम्हारी मदद की जरूरत हो उन्हें मदद दो. जो खतरे में हों उन्हें खतरे से बचाओ दूसरों की कामयाबी में खुश हो और उनकी नाकामी में उन से हमदर्दी करो. यह सब इस तरह समझ कर करो कि मानो उनकी जगह तुम ही हो."

एक मुसलमान सूफ़ी कहता है :—

हरचे बर खुद नपसन्दी बर दीगिरां मपसन्द

यानी जो तू अपने लिये पसन्द नहीं करता वह दूसरों के लिये भी पसन्द न कर.

एक और मशहूर सूफ़ी शायर ने 'मर्दुम आज़ारी' यानी किसी दूसरे का दिल दुखाने को सब से बड़ा गुनाह बताया है.

बुद्ध धर्म की मशहूर किताब 'धम्मपद' में लिखा है कि :—

"तकलीफ़ से सब लोग बचना चाहते हैं, ज़िन्दगी सब को प्यारी है, उन सबकी तरह ही तू भी है. इसलिये अपने से दूसरे का हाल समझ कर न किसी की जान ले और न किसी को नुक़सान पहुंचा."

इंजील में लिखा है :—"अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही प्यार करो जैसा अपने साथ करते हो."

यह बात ग़ौर करने की है कि इस सुनहरे उसूल में खुदी को या अपने को मिटाने के लिये नहीं कहा गया. इसमें सिर्फ़ यह कहा गया है कि दूसरों को भी यानी सब को अपनी ही तरह समझो.

पारसी धर्म की किताब 'गाथा' में लिखा है :—"जो बात सब के लिये और हर किसी के लिये अच्छी है वही मेरे लिये अच्छी है. इसलिये जो मैं अपने लिये चाहूं वही सब के लिये चाहूं. यही सच्चा धर्म है."

इसी सुनहरे उसूल से कुछ और छोटे छोटे उसूल भी

سے الگ نہیں ہوسکتا اور نہ ایشور اُس سے الگ ہوسکتا ہے۔ جو سب کے گھٹ گھٹ میں بیٹھے ہوئے ایک ایشور کی پوجا کرتا ہے وہ کہیں بھی رہے ایشور اُس کے ساتھ ہے۔"

منو اِسمرتی میں بھی یہی بات ٹھیک انہیں شبدوں میں کہی گئی ہے اور لکھا ہے کہ—"جسے یہ بات حاصل ہے اُسے ہی سچا سوراجیہ حاصل ہے۔"

ہتوپدیش میں لکھا ہے :—

آتموت سروبھوتیشو یہ پشیتی سہ پنڈتہ

یعنی جو سب پرانیوں کو اپنی ہی طرح دیکھتا ہے وہی پنڈت ہے۔

چین کے تاؤ دھرم کی ایک کتاب میں لکھا ہے :—

"دوسروں کی مصیبتوں میں اُن پر دیا کرو۔ دوسروں کی خوشحالی سے خوش ہو۔ جنہیں تمہاری مدد کی ضرورت ہو انہیں مدد دو۔ جو خطرے میں ہوں انہیں خطرے سے بچاؤ۔ دوسروں کی کامیابی میں خوش ہو اور اُن کی ناکامی میں اُن سے ہمدردی کرو۔ یہ سب اِس طرح سمجھ کر کرو کہ مانو اُن کی جگہ تم ہی ہو۔"

ایک مسلمان صوفی کہتا ہے :—

ہرچہ برخود نہ پسندی بر دیگراں مپسند

یعنی جو تو اپنے لئے پسند نہیں کرتا وہ دوسروں کے لئے بھی پسند نہ کر۔

ایک اور مشہور صوفی شاعر نے "مردم آزادی" یعنی کسی دوسرے کا دل دکھانے کو سب سے بڑا گناہ بتایا ہے۔

بودھ دھرم کی مشہور کتاب 'دھم پد' میں لکھا ہے کہ :—

"تکلیف سے سب لوگ بچنا چاہتے ہیں، زندگی سب کو پیاری ہے، اُن سبکی طرح ہی تو بھی ہے۔ اِس لئے اپنے سے دوسرے کا حال سمجھکر نہ کسی کی جان لے اور نہ کسی کو نقصان پہنچا۔"

انجیل میں لکھا ہے :—"اپنے پڑوسی کے ساتھ ویسا ہی پیار کرو جیسا اپنے ساتھ کرتے ہو۔"

یہ بات غور کرنے کی ہے کہ اِس سنہرے اصول میں خودی کو یا اپنے کو مٹانے کے لئے نہیں کہا گیا۔ اِس میں صرف یہ کہا گیا ہے کہ دوسروں کو بھی یعنی سب کو اپنی ہی طرح سمجھو۔

پارسی دھرم کی کتاب 'گاتھا' میں لکھا ہے :—"جو بات سب کے لئے اور ہر کسی کے لئے اچھی ہے وہی میرے لئے اچھی ہے۔ اِس لئے جو میں اپنے لئے چاہوں وہی سب کے لئے چاہوں۔ یہی سچا دھرم ہے۔"

اِسی سنہرے اُصول سے کچھ اور چھوٹے چھوٹے اُصول بھی

महरिषी व्यास ने महाभारत में कहा है :—

"दूसरों के साथ कोई ऐसा काम न करो जो तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ न किया जाय. किसी दूसरे के साथ कोई ऐसा बरताव नहीं करना चाहिये जो अपने साथ किया जाय तो हमें अच्छा न लगे. जो जो हम अपने लिये चाहें वही दूसरों के लिये चाहें यही धर्म का निचोड़ है. यही पूरा धर्म है. इसे ध्यान से सुनना चाहिये और सुन कर इसे दिल में जगह देनी चाहिये."

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"सब से बढ़ कर ईमान यही है कि तुम जो चीज़ अपने लिये पसन्द करो वही सब के लिये पसन्द करो और जिससे तुम्हें तकलीफ़ होती हो उसे और सब के लिये भी तकलीफ़ की चीज़ मानो."

महरिषी व्यास ने जिसे "धर्म सर्व सोम" यानी 'पूरा धर्म' कहा है उसी को मुहम्मद साहब ने "अफ़ज़लुल ईमान" यानी 'सब से बढ़ कर ईमान' बताया है.

भागवत पुरान में लिखा है :—

"यह धर्म कभी नहीं बदल सकता और अच्छे लोग हमेशा इस पर अमल करते हैं कि हमें दूसरे लोगों के दुख में दुख और उनके सुख में सुख महसूस करना चाहिये."

चीनी महात्मा कनफ़्यूशियश से किसी ने पूछा कि कोई ऐसा एक शब्द बताइये जिस पर आदमी ज़िन्दगी भर अपने सदाचार को ढाल सके. कनफ़्यूशियश ने एक चीनी शब्द में जवाब दिया जिसका मतलब है 'अपनी तरह सबको' और फिर समझाया कि—"दूसरों के साथ कोई ऐसा बरताव न करो जो तुम नहीं चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें. तुम इस पर अमल करोगे तो घर में या बाहर तुम्हारे कामों से कोई तुम्हारा दुशमन न होगा."

महात्मा बुद्ध ने इसी उसूल को 'समान आत्मता' का नाम दिया है. सब गृहस्थों के लिये बुद्ध ने चार बातों को ज़रूरी बताया है. अव्वल 'दान' यानी ख़ैरात. दूसरे 'प्रिय वचन' यानी प्यारा बोलना. तीसरे 'अर्थ चर्या' यानी मेहनत और ईमानदारी से रोज़ी कमाना और चौथे सब भलाइयों की जड़ समान 'आत्मता' यानी सब को अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ही आत्मा को देखना.

गीता में यही बात तरह तरह से कही गई है. लिखा है कि :—

"हे अर्जुन ! जो आदमी अपनी ही तरह सब के दुख और सुख को एक बराबर देखता है वही सब से बड़ा योगी है. जो सब जानदारों के अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब जानदारों को देखता है, जो सबके अन्दर ईश्वर को और ईश्वर के अन्दर सबको देखता है वह कभी ईश्वर

مہرشی ویاس نے مہابھارت میں کہا ہے :—

"دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا کام نہ کرو جو تم چاہتے ہو کہ تمہارے ساتھ نہ کیا جائے ۔ کسی دوسرے کے ساتھ کوئی ایسا برتاؤ نہیں کرنا چاہئے جو اپنے ساتھ کیا جائے تو ہمیں اچھا نہ لگے۔ جو جو ہم اپنے لئے چاہیں وہی ہم دوسروں کے لئے چاہیں ۔ یہی دھرم کا نچوڑ ہے ۔ یہی پورا دھرم ہے۔ اسے دھیان سے سننا چاہئے اور سن کر اسے دل میں جگہ دینی چاہئے ۔"

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"سب سے بڑھکر ایمان یہی ہے کہ تم جو چیز اپنے لئے پسند کرو وہی سب کے لئے پسند کرو اور جس سے تمہیں تکلیف ہوتی ہو اسے اور سب کے لئے بھی تکلیف کی چیز مانو ۔"

مہرشی ویاس نے جسے "دھرم سرو سوم" یعنی 'پورا دھرم' کہا ہے اسی کو محمد صاحب نے "افضل ایمان" یعنی 'سب سے بڑھکر ایمان' بتایا ہے ۔

بھاگوت پران میں لکھا ہے :—

"یہ دھرم کبھی نہیں بدل سکتا اور اچھے لوگ ہمیشہ اس پر عمل کرتے ہیں کہ ہمیں دوسرے لوگوں کے دکھ میں دکھ اور ان کے سکھ میں سکھ محسوس کرنا چاہئے ۔"

چینی مہاتما کنفیوشیس سے کسی نے پوچھا کہ کوئی ایسا ایک شبد بتائیے جس پر آدمی زندگی بھر اپنے سداچار کو ڈھال سکے۔ کنفیوشیس نے ایک چینی شبد میں جواب دیا جس کا مطلب ہے 'اپنی طرح سب کو' اور پھر سمجھایا کہ—"دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا برتاؤ نہ کرو جو تم نہیں چاہتے کہ وہ تمہارے ساتھ کریں ۔ تم اس پر عمل کروگے تو گھر میں یا باہر تمہارے کاموں سے کوئی تمہارا دشمن نہ ہوگا ۔"

مہاتما بدھ نے اسی اصول کو 'سمان آتمتا' کا نام دیا ہے ۔ سب گرہستھوں کے لئے بدھ نے چار باتوں کو ضروری بتایا ہے ۔ اول 'دان' یعنی خیرات ۔ دوسرے 'پریہ وچن' یعنی پیارا بولنا ۔ تیسرے 'ارتھ چریا' یعنی محنت اور ایمانداری سے روزی کمانا اور چوتھے سب بھلائیوں کی جڑ 'سمان آتمتا' یعنی سب کو اپنی طرح سمجھنا اور سب کے اندر ایک ہی آتما کو دیکھنا ۔

گیتا میں یہی بات طرح طرح سے کہی گئی ہے ۔ لکھا ہے کہ :—

"اے ارجن ! جو آدمی اپنی ہی طرح سب کے دکھ سکھ کو ایک برابر دیکھتا ہے وہی سب سے بڑا یوگی ہے۔ جو سب جانداروں کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب جانداروں کو دیکھتا ہے، جو سب کے اندر ایشور کو اور ایشور کے اندر سب کو دیکھتا ہے وہ کبھی ایشور

कहा है. मगर फिर भी, सरकार ने नवम्बर 1952 में दूसरा "समझौता" और कर लिया और अब तीसरे का नम्बर है! क्या यही तरीक़ा है देश के आर्थिक उद्धार का? अगर यह रफ़्तार चलती रही और मरकज़ियत और मशीनीयत और फ़ौजियाने का दौर इसी तरह बढ़ता रहा तो मुल्क की समाजी और आर्थिक हालत क़ाबू के बाहर, बदतर और ख़तरनाक होती जाएगी. बेरोज़गारी आसमान तक उठती चली आयेगी, अकाल और भुखमरी प्लेग हैज़े की तरह फैलेंगे और चोरी डकैती बदकारियों का ठिकाना नहीं रहेगा. भारत भारत न रह कर एक अंगरेज़ी अमरीकी सरमायेदारों की विरासत बन जायेगा.

अपने नेताओं से और ख़ास कर कांग्रेसी नेताओं से हमारी विनती है कि अपने दिल पर हाथ रख कर देखें कि क्या सचमुच देश की आर्थिक आज़ादी का यही रास्ता है अगर नहीं तो क्यों नहीं फेंकते इस अंगरेज़ी अमरीकी माया जाल को और अपनी जनता की भीतरी ताक़त पर विश्वास क्यों नहीं करते? यही उन्हें महात्मा गांधी का बार बार बताया हुआ रास्ता था.

28. 8. '53 —सुरेश रामभाई

کہا ہے مگر پھر بھی، سرکار نے نومبر 1952 میں دوسرا "سمجھوتہ" اور کرلیا اور اب تیسرے کا نمبر ہے! کیا یہی طریقہ ہے دیش کے آرتھک ادھار کا؟ اگر یہ رفتار چلتی رہی اور مرکزیت اور مشینیت اور فوجیانے کا دور اسی طرح بڑھتا رہا تو ملک کی سماجی اور آرتھک حالت قابو کے باہر، بدتر اور خطرناک ہوتی جائیگی. بیروزگاری آسمان تک اٹھتی چلی جائیگی، اکال اور بھکمری پلیگ ہیضے کی طرح پھیلیں گے اور چوری ڈکیتی بدکاریوں کا ٹھکانہ نہیں رہے گا. بھارت بھارت نہ رہ کر ایک انگریزی امریکی سرمایہ‌داروں کی وراثت بن جائے گا.

اپنے نیتاؤں سے اور خاص کر کانگریسی نیتاؤں سے ہماری بنتی ہے کہ اپنے دل پر ہاتھ رکھ کر دیکھیں کہ کیا سچ مچ دیش کی آرتھک آزادی کا یہی راستہ ہے اگر نہیں تو کیوں نہیں پھینکتے اس انگریزی امریکی مایا جال کو اور اپنی جنتا کی بھیتری طاقت پر وشواس کیوں نہیں کرتے؟ یہی انہیں مہاتما گاندھی کا بار بار بتایا ہوا راستہ تھا.

—سریش رام‌بھائی 28. 8. '53

नेकी का सुनहरा उसूल

(डाक्टर भगवान दास)

हज़रत ईसा का एक मशहूर उपदेश है—"तुम दूसरे लोगों से, जो बरताव चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें ठीक उसी तरह का बरताव तुम दूसरों के साथ करो." इसे हज़रत ईसा का सुनहरा उसूल कहा जाता है.

यह सुनहरा उसूल सब धर्मों की किताबों में मिलता है. इसके दो पहलू हैं. एक यह कि दूसरों के साथ कोई ऐसा बरताव न करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ न करें. और दूसरा यह कि दूसरों के साथ वही बरताव करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें. राज या सरकार की तरफ़ से रोक थाम, निषेध यानी इम्तनाअ के जितने हुक्म जारी होते हैं वह सब पहले पहलू से संबन्ध रखते हैं और करने अरने संबंधी यानी इमदाद के जितने हुक्म जारी होते हैं वह सब दूसरे पहलू से संबन्ध रखते हैं.

نیکی کا سنہرا اصول

(ڈاکٹر بھگوان داس)

حضرت عیسیٰ کا ایک مشہور اپدیش ہے—"تم دوسرے لوگوں سے جو برتاؤ چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں ٹھیک اسی طرح کا برتاؤ تم دوسروں کے ساتھ کرو." اسے حضرت عیسیٰ کا سنہرا اصول کہا جاتا ہے.

یہ سنہرا اصول سب دھرموں کی کتابوں میں ملتا ہے. اس کے دو پہلو ہیں. ایک یہ کہ دوسروں کے ساتھ کوئی ایسا برتاؤ نہ کرو جو تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ نہ کریں. اور دوسرا یہ کہ دوسروں کے ساتھ وہی برتاؤ کرو جو تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں. راج یا سرکار کی طرف سے روک تھام، نشیدھ یعنی امتناع کے جتنے حکم جاری ہوتے ہیں وہ سب پہلے پہلو سے سمبندھ رکھتے ہیں اور کرنے دھرنے سمبندھی یعنی امداد کے جتنے حکم جاری ہوتے ہیں وہ سب دوسرے پہلو سے سمبندھ رکھتے ہیں.

ही कारन नये राज के अन्दर तालीम, अदालत, हुकूमत वग़ैरा का ढंग भी वही पुराना चल रहा है जो पहले था. जब तक मौजूदा आर्थिक ढांचे की बुनियादों पर चोट न की जायगी तब तक मुल्क की कोई बेहतरी हो सकना नामुमकिन है. पर हमारे रेलवे मिनिस्टर और योजना मिनिस्टर और कांगरेस के प्रधान मंत्री सब यही उम्मीद दिलाते हैं कि अंगरेज़ी स्वार्थ के लिये रचे हुए ढांचे की बुनियादों को छुए बिना ही देश में 'आर्थिक इन्क़िलाब" हो जायेगा. यह वैसा ही है जैसे कोई यह उम्मीद करे कि मद्रास जाने वाली गरेंडट्रंक गाड़ी में त्रिवेन्द्रम का टिकट लेकर बैठने पर वह दिल्ली पहुंच जायेगा.

हमारे कांगरेस मिनिस्टर और हाकिम रात दिन जनता को यह इतमिनान दिलाने के फेर में रहते हैं कि सरकार जो कर रही है, बाहर की ओर विशेष कर अमरीकी जो मदद ले रही है, वह एकदम सही चीज़ है. पर महात्मा गांधी ने—जिनकी दुहाई देते हुए हमारे शासक, कभी नहीं थकते—1942 में ही साफ़ साफ़ कह दिया था :

"हम जानते हैं कि अमरीकी इमदाद के क्या माने हैं. आख़िर में इसका मतलब यही है कि अंगरेज़ी राज के साथ साथ अमरीकी राज नहीं तो अमरीकी असर ज़रूर देश में क़ायम हो जाय......"

1945 में हिन्दुस्तान के कुछ बड़े बड़े व्योपारियों के अमरीका जाते वक़्त महात्मा गांधी ने एक व्योपारी को ख़बरदार किया था. उन्होंने एक तार दे कर उन से कहा था कि जब तक कांगरेस वर्किंग कमेटी की जानदार हस्तियां जेलों में पड़ी हैं तब तक "मुल्क को बेचने" का सौदा न कर लेना. लेकिन ज़माने की गर्दिश देखिये कि हालात ने ऐसा पलटा खाया कि प्रधान मंत्री की हैसियत से पंडित जवाहर लाल नेहरू ने ही अमरीकी सरकार के साथ एक ऐसे "समझौते" पर दस्तख़त किये जो ग़ुलामी के पट्टे से कम नहीं है और जिसके बारे में स्वार्गीय आचार्य किशोर लाल मशरूवाला के यह शब्द हैं :

"यह (हिन्द अमरीकी 'समझौता') असल में अमरीका के वास्ते एक पट्टा है जिससे वह अपने को हिन्दुस्तान में जमा सके, पहले एक व्योपारी के भेस में और बाद में हिन्दुस्तान के राजनीतिक मालिक के भेस में. हिन्द सरकार ने अपनी सारी इन्तज़ामी मशीनरी अमरीका के सिपुर्द करने और उसकी इश्तेहार बाज़ी या प्रोपेगेन्डा करने के लिये रज़ामंदी दे दी है."

(अंगरेज़ी से अनुवाद)

विनोबा जी ने भी अमरीकी मदद पर दुख ज़ाहिर किया है, डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने इसे "गले का फन्दा"

ہی کارن نئے راج کے اندر تعلیم' عدالت' حکومت وغیرہ کا ڈھنگ بھی وہی پرانا چل رہا ہے جو پہلے تھا . جب تک موجودہ آرتھک ڈھانچے کی بنیادوں پر چوٹ نہ کی جائیگی تب تک ملک کی کوئی بہتری ہو سکنا ناممکن ہے . پر ہمارے ریلوے منسٹر اور یوجنا منسٹر اور کانگریس کے پردھان منتری سب یہی اُمید دلاتے ہیں کہ انگریزی سوارتھ کے لئے رچے ہوئے ڈھانچے کی بنیادوں کو چھوئے بنا ہی دیش میں "آرتھک انقلاب" ہو جائیگا. یہ ویسا ہی ہے جیسے کوئی یہ اُمید کرے کہ مدراس جانے والی گرینڈٹرنک گاڑی میں تریوندرم کا ٹکٹ لیکر بیٹھنے پر وہ دلی پہنچ جائیگا .

ہمارے کانگریس منسٹر اور حاکم رات دن جنتا کو یہ اطمینان دلانے کے پھیر میں رہتے ہیں کہ سرکار جو کر رہی ہے' باہر کی اور وشیش کر امریکی جو مدد لے رہی ہے' وہ ایک دم سہی چیز ہے . پر مہاتما گاندھی نے—جن کی دہائی دیتے ہوئے ہمارے شاسک کبھی نہیں تھکتے—1942 میں ہی صاف صاف کہہ دیا تھا :

"ہم جانتے ہیں کہ امریکی امداد کے کیا معنے ہیں. آخیر میں اس کا مطلب یہی ہے کہ انگریزی راج کے ساتھ ساتھ امریکی راج نہیں تو امریکی اثر ضرور دیش میں قائم ہو جائے......"

1945 میں ہندستان کے کچھ بڑے بڑے بیوپاریوں کے امریکہ جاتے وقت مہاتما گاندھی نے ایک بیوپاری کو خبردار کیا تھا . انہوں نے ایک تار دے کر اُن سے کہا تھا کہ جب تک کانگریس ورکنگ کمیٹی کی جاندار ہستیاں جیلوں میں پڑی ہیں تب تک "ملک کو بیچنے" کا سودا نہ کرلینا'. لیکن زمانے کی گردش دیکھئے کہ حالات نے ایسا پلٹا کھایا کہ پردھان منتری کی حیثیت سے پنڈت جواہر لال نہرو نے ہی امریکی سرکار کے ساتھ ایک ایسے "سمجھوتے" پر دستخط کئے جو غلامی کے پٹے سے کم نہیں ہے اور جس کے بارے میں سورگیہ آچاریہ کشور لال مشروالا کے یہ شبد ہیں .

"یہ (ہند امریکی 'سمجھوتہ') اصل میں امریکہ کے واسطے ایک پٹہ ہے جس سے وہ اپنے کو ہندستان میں جما سکے' پہلے ایک بیوپاری کے بھیس میں اور بعد میں ہندستان کے راجنیتک مالک کے بھیس میں . ہند سرکار نے اپنی ساری انتظامی مشینری امریکہ کے سپرد کرنے اور اس کی اشتہاربازی یا پروپیگنڈہ کرنے کے لئے رضامندی دے دی ہے."

(انگریزی سے انوواد)

ونوبا جی نے بھی امریکی مدد پر دکھ ظاہر کیا ہے . ڈاکٹر جے . سی . کماریا نے اسے "گلے کا پھندا"

(5) देश की बेकार पड़ी जन शक्ति का इस्तेमाल न करके विदेशी और इन्सान खाऊ मशीनी शक्ति को राह दी जा रही है.

(6) हिन्दुस्तान का ज़ियादातर कच्चा माल (जैसे अबरक, मैंगनीज़, लाख, कपास, पटसन, वग़ैरा) विदेश भेज दिया जाता है और ऐश आराम की, मशीनरी की और दीगर ऐसी चीज़ें मंगाई जाती हैं जिनके बिना देश का अच्छी तरह काम चल सकता है.

(7) हमारे गांवों और गांव वालों की बुनियादी ज़रूरतों के मामलों में (जैसे खाना, कपड़ा, मकान) अपनी ख़ुद मुख़्तयारी और अपने पैरों पर खड़े रहने की ताक़त का तेज़ी से मिटते जाना.

(8) फ़ौज ख़र्च का दिन दिन बढ़ते जाना और हथियारों वग़ैरा के लिये हमारा विदेशी कम्पनियों के मोहताज बनते जाना.

(9) हमारी रोज़ की ज़िन्दगी में पैसे का हावी होते जाना और आदमी के मोल का घटते जाना.

यह थोड़े से नतीजे हमने मिसाल के तौर पर गिनाए हैं, सौ बातों की एक बात यह कि हिन्दुस्तान की जनता के आर्थिक शोषण के वास्ते जो रास्ते अंगरेज़ों ने बनाये थे वह लगातार क़ायम हैं. दूसरे शब्दों में, अंगरेज़ की जगह हिन्दुस्तानी के गद्दी लेने पर भी लाखों को चूस कर चन्द गिने चुनों की ख़ातिर हिन्दुस्तान के आर्थिक वसीलों को निचोड़ने के लिये जो सांचा अंगरेज़ों ने ढाला था उस पर आंच तक नहीं आई, नहीं तो क्या कारन है कि हिन्दुस्तान का काश्तकार पैसे वाली फ़सलें—जैसे तिलहन, ईख, कपास, पटसन, ज़ियादा पैदा करने पर भी पहले से ज़ियादा ग़रीब हैं. और चाय, काफ़ी के बाग़ों में काम करने वाले मज़दूर पहले से भी ज़ियादा तबाही की सूरत में हैं? क्या कारन है कि चीनी की इतनी अधिक तैयारी के होते हुए उतनी तैयारी जितनी "पंच साला योजना" में तय की गई है—चीनी बाहर से आये और मामूली आदमी को अपनी चीनी के लिये ज़ियादा दाम देना पड़े? यही और केवल यही कि देश के शोषण के वास्ते तैयार की हुई अंगरेज़ी मशीनरी में अब तक कोई ख़ास तबदीली नहीं हुई है. यही नहीं, श्री ए. डी. गोरवाला ने प्लानिंग कमीशन को अपनी रिपोर्ट में कहा है:

"हमारे व्योपार और रसद महकमे के इन्तज़ाम के कुछ दोष यह हैं—योजना की कमी, हमारी नीति हमेशा बदलते रहना, हमारा आज़ाद तबियत से कुछ सोच न सकना और हमारा बाहरी दबाव और असर में आ जाना."

यह भी ज़ाहिर है कि आर्थिक ढांचे के न बदलने के

(5) دیش کی بیکار پڑی جن شکتی کا استعمال نہ کرکے ودیشی اور انسان کھاؤ مشینی شکتی کو راہ دی جا رہی ہے۔

(6) ہندستان کا زیادہ تر کچا مال (جیسے ابرک، مینگنیز، لاکھ، کپاس، پٹسن وغیرہ) ودیش بھیج دیا جاتا ہے اور عیش آرام کی، مشینری کی اور دیگر ایسی چیزیں منگائی جاتی ہیں جن کے بنا دیش کا اچھی طرح کام چل سکتا ہے۔

(7) ہمارے گاؤں اور گاؤں والوں کی بنیادی ضرورتوں کے معاملوں میں (جیسے کھانا، کپڑا، مکان) اپنی خود مختیاری اور اپنے پیروں پر کھڑے رہنے کی طاقت کا تیزی سے مٹتے جانا۔

(8) فوج خرچ دن دن بڑھتے جانا اور ہتھیاروں وغیرہ کے لئے ہمارا ودیشی کمپنیوں کے محتاج بنتے جانا۔

(9) ہماری روز کی زندگی میں پیسے کا حاوی ہوتے جانا اور آدمی کے مول کا گھٹتے جانا۔

یہ تھوڑے سے نتیجے ہم نے مثال کے طور پر گنائے ہیں، سو باتوں کی ایک بات یہ کہ ہندستان کی جنتا کے آرتھک شوشن کے واسطے جو راستے انگریزوں نے بنائے تھے وہ لگاتار قائم ہیں۔ دوسرے شبدوں میں، انگریز کی جگہ ہندستانی کے گدی لینے پر بھی لاکھوں کو چوس کر چند گنے چنوں کی خاطر ہندستان کی آرتھک وسیلوں کو نچوڑنے کے لئے جو سانچہ انگریزوں نے ڈھالا تھا اس پر آنچ تک نہیں آئی، نہیں تو کیا کارن ہے کہ ہندستان کا کاشتکار پیسے والی فصلیں—جیسے تلہن، ایکھ، کپاس، پٹسن زیادہ پیدا کرنے پر بھی پہلے سے زیادہ غریب ہیں۔ اور چائے، کافی کے باغوں میں کام کرنے والے مزدور پہلے سے بھی زیادہ تباہی کی صورت میں ہیں؟ کیا کارن ہے کہ چینی کی اتنی ادھک تیاری کے ہوتے ہوئے اتنی تیاری جتنی "پنچ سالہ یوجنا" میں طے کی گئی ہے—چینی باہر سے آئے اور معمولی آدمی کو اپنی چینی کے لئے زیادہ دام دینا پڑے؟ یہی اور کیول یہی کہ دیش کے شوشن کے واسطے تیار کی ہوئی انگریزی مشینری میں اب تک کوئی خاص تبدیلی نہیں ہوئی ہے۔ یہی نہیں، شری اے۔ ڈی۔ گوروالا نے پلاننگ کمیشن سے اپنی رپورٹ میں کہا ہے:

"ہمارے بیوپار اور رسد محکمے کے انتظام کے کچھ دوش یہ ہیں—یوجنا کی کمی، ہماری نیتی ہمیشہ بدلتے رہنا، ہمارا آزاد طبیعت سے کچھ سوچ نہ سکنا اور ہمارا باہری دباؤ اور اثر میں آ جانا۔"

یہ بھی ظاہر ہے کہ آرتھک ڈھانچے کے نہ بدلنے کے

नुकसान होता है. 1952 में चार महीनों में, काम करने वाले 62,000 हिन्दुस्तानी मज़दूर काम से निकाल दिये गये और बेरोज़गार हो गये. इसी तरह लाख का काम करने वाली विदेशी कम्पनियों को लाखों रुपये की बचत होती है. मन माने दाम पर बिहार के गांव वालों से कच्ची लाख खरीदी जाती है और फिर जैसे चाहे बेची जाती है. नतीजा यह है कि लाख का काम करने वाले छोटे मोटे 200 हिन्दुस्तानी व्योपारियों का काम 1953 के शुरू में ठप्प हो गया और लगभग बीस हज़ार मज़दूर बेकार हो गये और इस काम में लगे सात लाख से ज़ियादा किसानों की रोज़ी मारी गई.

इस सिलसिले में कुछ आंकड़े रिज़र्व बैंक आफ इण्डिया की रिपोर्ट में छपे हैं. उसमें बताया गया है कि 30 जून 1948 को हिन्दुस्तान में 596 करोड़ रुपये बाहर वालों के लगे थे. इसमें 72·4 फ़ी सदी ब्रिटेन का था. रिज़र्व बैंक का यह भी कहना है कि विदेशी फ़र्मों और बैंकों को हर साल लगभग 40 करोड़ रुपये का नफ़ा होता है और 60 करोड़ रुपये सूद में और कमीशन के तौर पर उन्हें हरसाल ग़रीब हिन्दुस्तानियों की जेब से मिलता है. इसके अलावा 10 करोड़ रुपया पुराने अंगरेज़ साहिबों की पेन्शन में चला जाता है. इसमें वह रुपया शामिल नहीं है जो विदेशी फ़र्मों को माल का विदेश से लेन देन करने में मिलता है. मोटे तौर पर लगभग सवा सौ करोड़ रुपये हर साल यानी हर महीने दस करोड़ से ऊपर हमारा धन विदेशों को चला जाता है. फिर भी हमें बताया जाता है कि हिन्दुस्तान आर्थिक आज़ादी की तरफ़ बढ़ रहा है.

पिछले पांच छै बरस में मुल्क की जो आर्थिक "प्रगति" हुई उसके जो नतीजे नुमाया तौर पर सामने आये हैं वह यह हैं :

(1) हिन्दुस्तान में आज पहले के मुक़ाबले अंगरेज़ी पूंजी और अंगरेज़ी व्योपारियों की तादाद कहीं ज़ियादा है.

(2) अंगरेज़ों के अलावा, अमरीकी पूंजी और अमरीकी व्योपारियों की तादाद में तेज़ी से इज़ाफ़ा हुआ है.

(3) उन आर्थिक "विशेषज्ञों" और "सलाहकारों" की तादाद भी, जिन्हें हिन्दुस्तान के ग्राम जीवन का अनुभव उरद के ऊपर सफ़ेदी के बराबर भी नहीं होता, बहुत बढ़ी है.

(4) विकास की आड़ में हमारे गांव के छोटे बड़े धन्धे तबाह हो गये और अब हमारी खेती को भी विदेशों और ख़ास कर अमरीका का मोहताज बनाने की कोशिश है.

معطل ہوتا ہے . 1952 میں چار مہینوں میں کام کرنے والے 62,000 ہندستانی مزدور کام سے نکال دئے گئے اور بے روزگار ہوگئے . اسی طرح لاکھ کا کام کرنے والی ودیشی کمپنیوں کو لاکھوں روپے کی بچت ہوتی ہے . من مانے دام پر بہار کے گاؤں والوں سے کچی لاکھ خریدی جاتی ہے اور پھر جیسے چاہے بیچی جاتی ہے . نتیجہ یہ ہے کہ لاکھ کا کام کرنے والے چھوٹے موٹے 200 ہندستانی بیوپاریوں کا کام 1953 کے شروع میں ٹھپ ہوگیا اور لگ بھگ بیس ہزار مزدور بیکار ہوگئے اور اس کام میں لگے سات لاکھ سے زیادہ کسانوں کی روزی ماری گئی .

اس سلسلے میں کچھ آنکڑے ریزرو بینک آف انڈیا کی رپورٹ میں چھپے ہیں . اس میں بتایا گیا ہے کہ 30 جون 1948 کو ہندستان میں 596 کروڑ روپے باہر والوں کے لگے تھے . اس میں 72·4 فیصدی برٹین کا تھا . ریزرو بینک کا یہ بھی کہنا ہے کہ ودیشی فرموں اور بینکوں کو ہر سال لگ بھگ 40 کروڑ روپے کا نفع ہوتا ہے اور 60 کروڑ روپے سود میں اور کمیشن کے طور پر انہیں ہر سال غریب ہندستانیوں کی جیب سے ملتا ہے . اس کے علاوہ 10 کروڑ روپیہ پرانے انگریز صاحبوں کی پنشن میں چلا جاتا ہے . اس میں وہ روپیہ شامل نہیں ہے جو ودیشی فرموں کو مال کا ودیش سے لین دین کرنے میں ملتا ہے . موٹے طور پر لگ بھگ سوا سو کروڑ روپیہ ہر سال یعنی ہر مہینے دس کروڑ سے اوپر ہمارا دھن ودیشوں کو چلا جاتا ہے . پھر بھی ہمیں بتایا جاتا ہے کہ ہندستان آرتھک آزادی کی طرف بڑھ رہا ہے .

پچھلے پانچ چھ برس میں ملک کی جو آرتھک " پرگتی " ہوئی ہے اس کے جو نتیجے نمایاں طور پر سامنے آئے ہیں وہ یہ ہیں :

(1) ہندستان میں آج پہلے کے مقابلے انگریزی پونجی اور انگریزی بیوپاریوں کی تعداد کہیں زیادہ ہے .

(2) انگریزوں کے علاوہ امریکی پونجی اور امریکی بیوپاریوں کی تعداد میں تیزی سے اضافہ ہوا ہے .

(3) ان آرتھک " وشیشگیوں " اور " صلاح کاروں " کی تعداد بھی ، جنہیں ہندستان کے گرام جیون کا انوبھو اُرد کے اوپر سفیدی کے برابر بھی نہیں ہوتا بہت بڑھی ہے .

(4) وکاس کی آڑ میں ہمارے گاؤں کے چھوٹے بڑے دھندے تباہ ہوگئے اور اب ہماری کھیتی کو بھی ودیشوں اور خاص کر امریکہ کا محتاج بنانے کی کوشش ہے .

सिलसिला	व्यापार का नाम	हिन्दुस्तानी	विदेशी
3.	ट्रान्सपोर्ट	48	125
4.	मोटर	56	75
5.	छपाई प्रकाशन	53	109
6.	धात (लोहा वगैरा)	50	97
7.	रंग-दवाएँ	168	363
8.	मशीनरी	352	831
9.	चमड़ा और रबर	115	154
10.	मामूली कम्पनी	69	75
11.	मैनेजिंग एजेन्सी	244	735
12.	एजेन्ट	167	641
13	कपड़ा	45	122
14.	पटसन	46	648
15.	चाय-काफ़ी	75	1067
16.	कोयला	53	91
17.	तेल	258	381
18.	दूसरी धातें	56	193
19.	चीनी	12	65
20.	दूसरे कारखाने	164	421

ध्यान देने की बात है कि पटसन, चाय काफ़ी, मैनेजिंग एजेन्सी और एजेन्ट के कारोबारों में हिन्दुस्तानी और विदेशी मुलाज़िमों की तादाद में फ़र्क़ बहुत ज़ियादा है और पटसन या काफ़ी ही वह चीज़ें हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि इन से डालर की कमाई होती है जिस के बदले में अमरीका से मशीन माल मिलता है. दूसरे शब्दों में हमारे सब ख़ास ख़ास व्योपार विदेशियों के हाथों में हैं. हमारे देश का सारा व्योपार 34 विलायती और 6 हिन्दुस्तानी बड़ी फ़र्मों के हाथ में है यह हिन्दुस्तानी फ़र्में वही हैं जो अंगरेज़ी राज में क़ायम हुई थीं और जिन का लगाव विदेशी फ़र्मों से है. बहुत से कारख़ाने ऐसे भी हैं जो कहने को हिन्दुस्तानी हैं पर उनका काम धाम विदेशी मैनेजिंग एजेन्सी के हाथ में है जिन कम्पनियों में यह एजेन्सियां काम करती हैं उनमें इनकी 14.6 फ़ी सदी पूंजी रहती है, लेकिन नफ़े का बहुत बड़ा हिस्सा वह ख़ुद साफ़ कर लेती हैं. दूसरी जंग के दौरान में हिन्दुस्तान के पटसन व्योपार में जो फ़ायदे हुए उनका 54 फ़ी सदी मैनेजिंग एजेन्सियों के हत्थे लगा. यह एजेन्सियां ज़ियादातर अंगरेज़ी हैं.

अब ज़रा यह देखें कि विदेशी कारख़ानों के नफ़े का क्या हिसाब है. 1950 में विदेशी चाय कम्पनियों को 124 लाख रुपये का फ़ायदा हुआ. चाय के बग़ीचों में एक पौन्ड पीछे मुश्किल से चार आने मज़दूरी में ख़र्च होते हैं और एक पौन्ड पर कुल ख़र्चों के बाद लगभग बारह आने का

گنتی	بیوپار یا کام	ہندستانی	ودیشی
3.	ٹرانسپورٹ	48	125
4.	موٹر	56	75
5.	چھپائی پرکاشن	53	109
6.	دھات (لوہا وغیرہ)	50	97
7.	رنگ-دوائیں	168	363
8.	مشینری	352	831
9.	چمڑا اور ربڑ	115	154
10.	معمولی کمپنی	69	75
11.	مینیجنگ ایجنسی	244	735
12.	ایجنٹ	167	641
13.	کپڑا	45	122
14.	پٹسن	46	648
15.	چائے کافی	75	1067
16.	کوئلہ	53	91
17.	تیل	258	381
18.	دوسری دھاتیں	56	193
19.	چینی	12	65
20.	دوسرے کارخانے	164	421

دھیان دینے کی بات ہے کہ پٹسن، چائے کافی، مینیجنگ ایجنسی اور ایجنٹ کے کاروباروں میں ہندستانی اور ودیشی ملازموں کی تعداد میں فرق بہت زیادہ ہے اور پٹسن یا کافی ہی وہ چیزیں ہیں جن کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ ان سے ڈالر کی کمائی ہوتی ہے جس کے عوض میں امریکہ سے مشین مال ملتا ہے۔ دوسرے شبدوں میں ہمارے سب خاص خاص بیوپار ودیشیوں کے ہاتھوں ہے۔ ہمارے دیش کا سارا بیوپار 34 ولایتی اور 6 ہندستانی بڑی فرموں کے ہاتھ میں ہے۔ یہ ہندستانی فرمیں وہی ہیں جو انگریزی راج میں قائم ہوئی تھیں اور جن کا لگاؤ ودیشی فرموں سے ہے۔ بہت سے کارخانے ایسے ہیں جو کہنے کو ہندستانی ہیں پر ان کا کام دھام ودیشی مینیجنگ ایجنسی کے ہاتھ میں ہے۔ جن کمپنیوں میں یہ ایجنسیاں کام کرتی ہیں ان میں ان کی 14.6 فی صدی پونجی رہتی ہے، لیکن نفع کا بہت بڑا حصہ وہ خود صاف کر لیتی ہیں۔ دوسری جنگ کے دوران میں ہندستان کے پٹسن بیوپار میں جو فائدے ہوئے ان کا 54 فی صدی مینیجنگ ایجنسیوں کے حصے لگا۔ یہ ایجنسیاں زیادہ تر انگریزی ہیں۔

اب ذرا یہ دیکھیں کہ ودیشی کارخانوں کے نفع کا کیا حساب ہے۔ 1950 میں ودیشی چائے کمپنیوں کو 124 لاکھ روپے کا فائدہ ہوا۔ چائے کے باغیچوں میں ایک پونڈ پیچھے مشکل سے چار آنے مزدوری میں خرچ ہوتے ہیں اور ایک پونڈ پر کل خرچوں کے بعد لگ بھگ بارہ آنے کا

यह है कि असलियत क्या है. ऐसा मालूम होता है कि हमारी सियासी आज़ादी का जितना समय गुज़रता जाता है हमारी आर्थिक गुलामी घटने के बजाय उतनी ही बढ़ती जाती है. हम यहां तक कहेंगे कि सरकार जितना 'तरक़्क़ी" की तरफ़ बढ़ती है मामूली आदमी की आर्थिक आज़ादी उतनी ही छीन ली जाती है. यह तरक़्क़ी जितना ज़ियादा "योजना बन्दी" के साथ होती है उतनी ही अपनी आर्थिक आज़ादी से जनता और ज़ियादा मुहताज होती जाती है. चन्द मोटी मोटी चीज़ें हम यहां पेश करना चाहते हैं.

किसी को एतबार न होगा कि अंगरेज़ी झंडे के हिन्दुस्तान से हटने के बाद यहां पर अंगरेज़ी माल, अंगरेज़ी पूंजी और अंगरेज़ी ब्योपारियों की तादाद बढ़ गई. फिर केवल अंगरेज़ी नहीं अमरीकी भी बढ़े, और दूसरे दूसरे देश वाले भी. हमारे मुल्क में आज चौदह सौ के लगभग ऐसे उद्योग धन्धे और कारख़ाने हैं जिन में अधिकतर पूंजी विदेशी है और जो लगभग सोलह आना विदेशियों के हाथों में हैं. इन कारख़ानों में विदेशियों की तादाद 1947 में 7162 थी, 1952 में 7653 हो गई. इनका ब्योरा यह है :

गिनती	कहां से	1947	1952
1.	इंगलैन्ड	6495	6820
2.	बाक़ी योरप	403	535
3.	अमरीका	183	202
4.	कनाडा	28	22
5.	आस्ट्रेलिया	14	14
6.	न्यूज़ीलैन्ड	5	6
7.	इसराईल	1	...
8.	पाकिस्तान	...	6
9.	दूसरे	33	48
	कुल	7162	7653

यह आंकड़े 1066 विदेशी कारख़ानों से जमा की हुई सरकारी सूचना के अनुसार हैं. लेकिन तीन सौ कारख़ानों ने सरकार के पूछने पर भी कोई सूचना नहीं दी. इन विदेशी कारख़ानों की दूसरी ख़ूबी यह है कि इनमें एक हज़ार रुपये या उससे ज़ियादा तनख़ा पर काम करने वाले लोग ज़ियादातर गोरे हैं. 1952 में विदेशी कारख़ानों में ऊंची तनख़ा पाने वाले हिन्दुस्तानियों और गोरों का हिसाब यह था :

गिनती	ब्योपार या काम	हिन्दुस्तानी	विदेशी
1.	साहूकारी	45	277
2.	बीमा	61	161

یہ ہے کہ اصلیت کیا ہے . ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہماری سیاسی آزادی کا جتنا سمے گذرتا جاتا ہے ہماری آرتھک غلامی گھٹنے کے بجائے اتنی ہی بڑھتی جاتی ہے . ہم یہاں تک کہیں گے کہ سرکار جتنا " ترقی " کی طرف بڑھتی ہے معمولی آدمی کی آرتھک آزادی اتنی ہی چھین لی جاتی ہے . یہ ترقی جتنا زیادہ " یوجنا بندی " کے ساتھ ہوتی ہے اتنی ہی اپنی آرتھک آزادی سے جنتا اور زیادہ محتاج ہو جاتی ہے . چند موٹی موٹی چیزیں ہم یہاں پیش کرنا چاہتے ہیں.

کسی کو اعتبار نہ ہوگا کہ انگریزی جھنڈے کے ہندستان سے ہٹنے کے بعد یہاں پر انگریزی مال، انگریزی پونجی اور انگریزی بیوپاریوں کی تعداد بڑھ گئی . پھر کیول انگریزی نہیں، امریکی بھی بڑھے، اور دوسرے دوسرے دیش والے بھی . ہمارے ملک میں آج چودہ سو کے لگ بھگ ایسے ادیوگ دھندے اور کارخانے ہیں جن میں ادھکتر پونجی ودیشی ہے اور جو لگ بھگ سولہ آنہ ودیشیوں کے ہاتھوں میں ہیں . ان کارخانوں میں ودیشیوں کی تعداد 1947 میں 7162 تھی، 1952 میں 7653 ہو گئی. ان کا بیورا یہ ہے :

گنتی	کہاں سے	1947	1952
1.	انگلینڈ	6495	6820
2.	باقی یورپ	403	535
3.	امریکہ	183	202
4.	کناڈا	28	22
5.	آسٹریلیا	14	14
6.	نیوزی لینڈ	5	6
7.	اسرائیل	1	...
8.	پاکستان	...	6
9.	دوسرے	33	48
	کل	7162	7653

یہ آنکڑے 1066 ودیشی کارخانوں سے جمع کی ہوئی سرکاری سوچنا کے انوسار ہیں . لیکن تین سو کارخانوں نے سرکار کے پوچھنے پر بھی کوئی سوچنا نہیں دی . ان ودیشی کارخانوں کی دوسری خوبی یہ ہے کہ ان میں ایک ہزار روپے یا اس سے زیادہ تنخواہ پر کام کرنے والے لوگ زیادہ تر گورے ہیں . 1952 میں ودیشی کارخانوں میں اونچی تنخواہ پانے والے ہندستانیوں اور گوروں کا حساب یہ تھا :

گنتی	بیوپار یا کام	ہندستانی	ودیشی
1.	ساہوکاری	45	277
2.	بیمہ	61	161

आज़ाद भारत—आर्थिक ग़ुलामी की राह पर

रिवाज के अनुसार पिछली पंद्रह अगस्त को नई दिल्ली में और सूबों की राजधानियों में सरकार की छत्र छाया में खूब जश्न मनाए गए. अखबारों ने जो विशेषांक इस मौक़े पर निकाले हैं उनमें भी गवरनरों, मिनिस्ट्रों और सरकारी सूचना महकमों के लेख पर लेख भरे थे. उनकी एक ही रट थी कि मुल्क बड़े ज़ोर शोर साथ तरक़्क़ी कर रहा है और सियासी आज़ादी तो मिल गई और अब आर्थिक आज़ादी की तरफ़ देश तेज़ी से दौड़ रहा है. उससे पहले जुलाई के महीने में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की एक बैठक आगरे में हुई थी जिसमें आर्थिक मसलों पर तीन ठहराव पास हुए थे. उनमें दो वर्किंग कमेटी की तरफ़ से थे. इनका विषय था "समाजी और आर्थिक प्रोग्राम" और "बेरोज़गारी." तीसरा ठहराव कमेटी के किसी मेम्बर की तरफ़ से निजी था जो स्वदेशी पर था और जिसमें कांगरेस वालों का ध्यान उनके इस फ़र्ज़ की ओर दिलाया गया था कि स्वदेशी की आदत डालें और उसे बढ़ावा दें और जहां तक हो सके हिन्दुस्तान की बनी चीज़ें और विशेष कर ग्राम उद्योग की चीज़ें बरतें.

इन तीनों ठहरावों पर रोशनी डालते हुए कुल हिन्द कांगरेस कमेटी के पखवारी अखबार "आर्थिक समीक्षा" के 20 जुलाई वाले नम्बर में प्रधान सम्पादक का, जो कांगरेस के प्रधान मंत्री भी हैं, एक लेख है. इस लेख में यह इत्मीनान दिलाया गया है कि आगरे के ठहरावों को "केवल पाक विचार और बेकार की बातें" कहना ग़लत होगा बल्कि उनसे यह पता चलता है कि "देश में समाजी और आर्थिक इन्क़लाब लाने की अपनी प्रतिज्ञा पर कांगरेस पूरी तरह डटी हुई है." समाजी और आर्थिक दायरों में आज जो प्रगति है उससे असन्तोष ज़ाहिर करते हुए उस लेख में उम्मीद दिखाई गई है कि केन्द्र की और सूबों की सरकारें आर्थिक सवालों का हल मुस्तैदी के साथ और धर्म विजय भावना से करेंगी और अगले कुछ बरसों में हम अपने महान देश के लिये आर्थिक आज़ादी हासिल कर लेंगे." बड़ी ख़ुशी की बात है कि इस तरह जोश-ख़रोश के साथ कांगरेस की या सरकार की शक्तियां हमें अपनी मंज़िल पर ले जायंगी. हमने 'राष्ट्र' शब्द का या जन शक्ति शब्द का इस्तेमाल जान कर नहीं किया क्योंकि कांगरेस के तीनों ठहरावों में आम जनता से कोई सहयोग की मांग या अपील नहीं की गई है लेकिन देखना

آزاد بھارت—آرتھک غلامی کی راہ پر

رواج کے انوسار پچھلی پندرہ اگست کو نئی دلی میں اور صوبوں کی راجدھانیوں میں سرکار کی چھتر چھایا میں خوب جشن منائے گئے۔ اخباروں نے جو وشیشانک اس موقع پر نکالے ہیں ان میں بھی گورنروں، منسٹروں اور سرکاری سوچنا محکموں کے لیکھ پر لیکھ بھرے تھے۔ ان کی ایک ہی رٹ تھی کہ ملک بڑے زور شور کے ساتھ ترقی کر رہا ہے اور سیاسی آزادی تو مل گئی اور اب آرتھک آزادی کی طرف دیش تیزی سے دوڑ رہا ہے۔ اس سے پہلے جولائی کے مہینے میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی ایک بیٹھک آگرہ میں ہوئی تھی جس میں آرتھک مسئلوں پر تین ٹھہراؤ پاس ہوئے تھے۔ ان میں دو ورکنگ کمیٹی کی طرف سے تھے۔ ان کا وشے تھا "سماجی اور آرتھک پروگرام" اور "بے روزگاری"۔ تیسرا ٹھہراؤ کمیٹی کے کسی ممبر کی طرف سے نجی تھا جو سودیشی پر تھا اور جس میں کانگریس والوں کا دھیان ان کے اس فرض کی اور دلایا گیا تھا کہ سودیشی کی عادت ڈالیں اور اسے بڑھاوا دیں اور جہاں تک ہوسکے ہندوستان کی بنی چیزیں اور وشیش کر گرام ادیوگ کی چیزیں برتیں۔

ان تینوں ٹھہراؤں پر روشنی ڈالتے ہوئے کل ہند کانگریس کمیٹی کے پکھواری اخبار "آرتھک سمیکشا" کے 20 جولائی والے نمبر میں پردھان سمپادک کا جو کانگریس کے پردھان منتری بھی ہیں ایک لیکھ ہے۔ اس لیکھ میں یہ اطمینان دلایا گیا ہے کہ آگرہ کے ٹھہراؤں کو "کیول پاک وچار اور بیکار کی باتیں" کہنا غلط ہوگا بلکہ ان سے یہ پتہ چلتا ہے کہ "دیش میں سماجی اور آرتھک انقلاب لانے کی اپنی پرتگیا پر کانگریس پوری طرح ڈٹی ہوئی ہے۔" سماجی اور آرتھک دائروں میں آج جو پرگتی ہے اس سے اسنتوش ظاہر کرتے ہوئے اس لیکھ میں امید دلائی ہے کہ کیندر اور صوبوں کی سرکاریں آرتھک سوالوں کا حل مستعدی کے ساتھ اور دھرم وجے بھاؤنا سے کریں گی اور اگلے کچھ برسوں میں ہم اپنے مہان دیش کے لئے آرتھک آزادی حاصل کر لیں گے۔ بڑی خوشی کی بات ہے کہ اس طرح جوش خروش کے ساتھ کانگریس کی یا سرکار کی شکتیاں ہمیں اپنی منزل پر لے جائیں گی۔ ہم نے 'راشٹر' شبد کا یا جن شکتی شبد کا استعمال جان کر نہیں کیا کیونکہ کانگریس کے تینوں ٹھہراؤ میں عام جنتا سے کوئی سہیوگ کی مانگ یا اپیل نہیں کی گئی ہے لیکن دیکھنا

दूसरे से भिड़ गए. आगे पीछे ज़मीन पर लोटते पोटते रहे. सर से पैर तक पसीना बहने लगा पर किसी की जीत न हुई. रुस्तम ग़ुस्से में दाद आकुल का सिर बड़े ज़ोर से एक पत्थर से टकराया और वह क़रीब क़रीब बेहोश हो गया. काका रुस्तम उस के लहू का प्यासा था पर और करने का दम नहीं रह गया था. उस की आंख हठात कटार पर पड़ी जो उस के निकट ही पड़ी थी. सारा ज़ोर लगा कर उसे ज़मीन से खींच बाहर निकाला और दाद आकुल की बग़ल में घोंप दिया. इस में इतना ज़ोर ख़र्च किया कि दोनों हाथ शल हो गए.

देखने वाले दौड़ पड़े और बड़ी मुश्किल से दाद आकुल को ज़मीन से उठाया. लहू के क़तरे बग़ल से ज़मीन पर गिरने लगे. दाद आकुल ने अपने हाथों से घाव को दबा किसी तरह खींच कर अपने को दीवार के सहारे पहुंचाया. फिर ज़मीन पर गिर पड़ा. लोगों ने फिर उसे उठा कर हाथों हाथ घर तक पहुंचा दिया.

दूसरे दिन सवेरे ही उस के घायल होने की ख़बर हाजी समद के यहां पहुंची. बड़ा लड़का वली ख़ां हाल पूछने आया. ज्यों ही दाद आकुल के तकिये पर पहुंचा देखा कि रंग उड़ा हुआ है और बिस्तर में पड़ा है. मुंह से लहू भरा कफ़ जारी है. आंखों पर अंधेरा है और बड़ी कठिनाई से सांस ले रहा है. दाद आकुल ने बेहोशी जैसी हालत में उसे कुछ कुछ पहचाना, मरी मरी कांपती आवाज़ में कहने लगा :

"इस दुनिया में......बस यही तोता......मेरा था......मेरी जान...... इस प्यारे तोते को......उस के सुपुर्द कर देना......"

फिर चुप हो गया. वली ख़ां ने रेशमी रुमाल निकाला, आंखों से आंसू पोंछे. दाद आकुल बेहोश हो गया और उसने एक घंटे बाद प्राण छोड़ दिये.

शीराज़ भर उस के लिये रोता था.

वली ख़ां ने तोते का पिंजरा उठाया और घर ले गया. शाम का वक़्त था मिरजान तोते का पिंजरा सामने रखे बैठी थी, उस के रंग बिरंगे पंख, टेढ़ी चोंच, गोल उदासी आंखें देख कर कुछ चकित सी हो रही थी. एकाएक तोते ने दाद आकुल के लहजे में भुरभुरी आवाज़ में कहना शुरू किया :—

"मिरजान......मिरजान......तूने मुझे मार डाला......किस से कहूं......मिरजान......तेरे प्रेम ने......मुझे मार डाला."

मिरजान की आंखों से टप टप आंसू गिरने लगे.

دوسرے سے بھڑ گئے . آگے پیچھے زمین پر لوٹتے پوٹتے رہے . سر سے پیر تک پسینہ بہنے لگا پر کسی کی جیت نہ ہوئی . غصے میں داش آکل کا سر بڑے زور سے ایک پتھر سے ٹکرایا اور وہ قریب قریب بیہوش ہوگیا . کاکا رستم اس کے لہو کا پیاسا تھا پر اور لڑنے کا دم نہیں رہ گیا تھا . اسکی آنکھ اچانک کٹار پر پڑی جو اس کے نزدیک ہی پڑی تھی . سارا زور لگا کر اسے زمین سے کھینچ باہر نکالا اور داش آکل کی بغل میں گھونپ دیا . اس میں اتنا زور خرچ کیا کہ دونوں ہاتھ شل ہو گئے .

دیکھنے والے دوڑ پڑے اور بڑی مشکل سے داش آکل کو زمین سے اٹھایا . لہو کے قطرے بغل سے زمین پر گرنے لگے . داش آکل نے اپنے ہاتھوں سے گھاؤ کو دبا کسی طرح کھینچ کر اپنے کو دیوار کے سہارے پہنچایا . پھر زمین پر گر پڑا . لوگوں نے پھر اسے اٹھا کر ہاتھوں ہاتھ گھر تک پہنچا دیا .

دوسرے دن سویرے ہی اس کے گھائل ہونے کی خبر حاجی صمد کے یہاں پہنچی . بڑا لڑکا ولی خاں حال پوچھنے آیا . جیوں ہی داش آکل کے تکیہ پر پہنچا دیکھا کہ رنگ اڑا ہوا ہے اور بستر میں پڑا ہے . منھ سے لہو بھرا کف جاری ہے . آنکھوں پر اندھیرا ہے اور بڑی کٹھنائی سے سانس لے رہا ہے . داش آکل نے بیہوشی جیسی حالت میں اسے کچھ کچھ پہچانا ، مری مری کانپتی آواز میں کہنے لگا :

" اس دنیا میں......بس یہی طوطا......میرا تھا......میری جان......اس پیارے طوطے کو......اس کے سپرد کر دینا......"

پھر چپ ہوگیا . ولی خاں نے ریشمی رومال نکالا ، آنکھوں سے آنسو پونچھے . داش آکل بیہوش ہوگیا اور اس نے ایک گھنٹے بعد پران چھوڑ دئے .

شیراز بھر اس کے لئے روتا تھا .

ولی خاں نے طوطے کا پنجرہ اٹھایا اور گھر لے گیا . شام کا وقت تھا مرجان طوطے کا پنجرہ سامنے رکھے بیٹھی تھی ، اس کے رنگ برنگے پنکھ ، ٹیڑھی چونچ ، گول اداسی آنکھیں دیکھ کر کچھ چکت سی ہو رہی تھی . ایکا ایک طوطے نے داش آکل کے لہجے میں بھربھری آواز میں کہنا شروع کیا :—

" مرجان......مرجان......تو نے مجھے مار ڈالا......کس سے کہوں......مرجان......تیرے پریم نے......مجھے مار ڈالا ."

مرجان کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے .

...[illegible] नहीं थी कि उस के सामने खड़ा रह सके. पर आज इच्छा हो चल पड़ा. जा कर एक घर के दरवाजे के सामने पत्थर की बैंच पर बैठ गया. जेब से पाइप निकाला, उसमें तम्बाकू भरा और धीरे धीरे दम लगाने लगा. उसने देखा कि जगह पहले की निसबत खराब हो गई थी. आदमी भी कुछ बदले हुए जंचते थे. ऐसे ही, जैसे वह स्वयं [illegible] था और बदला हुआ था. आंखों में अंधेरा और सिर में दर्द मालूम होने लगा. एकाएक धुंधला साया दिखाई दिया जो दूर से उसकी ओर बढ़ रहा था, जैसे ही पास पहुंचा उसे सुनाई पड़ा :

"श श शठ को काली रात के राजा ने पहचाना ?"

दाह आकुल ने काका रुस्तम को पहचाना, खड़ा हो गया, हाथों को कमर पर रख ज़मीन पर थूका और बोला :

"अरे निर्लज, अपने को क्या समझता है! बड़ा [illegible] बना है, अभी किसी ऐसे वैसे से पाला नहीं पड़ा."

काका रुस्तम ने हंसी उड़ाते हुए ठट्ठा लगाया और आगे बढ़ कर कहा :

"ब...ब...बहुत दिन हुए को...को...कोई इधर ऐसा ...पै...पैदा नहीं हुआ. आ...आ...आज रात हाजी के ...घ...घर में ब्याह रचा है पर तू...तू...न...न......"

दाह आकुल ने बात काटते हुए कहा :

"ईश्वर तुझे खूब पहचानता है इसी से तो उसने आधी [illegible] काट दी है. आज रात जो आधी रह गई उसे मैं काटे देता हूं."

काका रुस्तम ने झटपट अपनी कटार को गिलाफ से निकाला और फुरती से हाथ में संभाला. दाह आकुल ने कटार का सिरा ज़मीन में घोप दिया और हाथ छाती पर रख खड़ा हो कर बोला :

"देखें किस में दम है जो इस कटार को ज़मीन से बाहर निकाले."

काका रुस्तम ने अचानक उस पर वार किया पर दाह आकुल ने ऐसा कलाई का हाथ मारा कि कटार काका के हाथ से छूट गई. इन दोनों के झगड़े का रौला सुन कर आने जाने वाले खड़े हो गए और तमाशा देखने लगे. लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई कि आगे आता और बीच बचाव करता.

दाह आकुल ने मुसकराते हुए कहा :

"चल जा, जा उठा ले पर शर्त यह है इस दफा खूब [illegible] से पकड़ना, मैंने तो आज रात ठान ली है कि सब छोटे मोटे पुराने हिसाब चुका दूं."

काका रुस्तम [illegible] बांधे आगे बढ़ा और दोनों एक

مجال نہیں تھی کہ اس کے سامنے کھڑا رہ سکے. پر آج اچھا ٹھن رہا جا کر ایک گھر کے دروازہ کے سامنے پتھر کی بینچ پر بیٹھ گیا . جیب سے پائپ نکالا اس میں تمباکو بھرا اور دھیرے دم لگانے لگا . اس نے دیکھا کہ جگہ پہلے کی نسبت خراب ہوگئی تھی . آدمی بھی کچھ بدلے ہوئے جانچتے تھے . ایسے ہی جیسے وہ سوئم ٹوٹا تھا اور بدلا ہوا تھا . آنکھوں میں اندھیرا اور سر میں درد معلوم ہونے لگا . ایکایک دھندلا سایہ دکھائی دیا جو دور سے اسکی اور بڑھ رہا تھا، جیسے ہی پاس پہونچا اسے سنائی پڑا :

"ش...ش...شٹھ کو کالی رات کے راجہ نے پہچانا؟"

داهن آنل نے کاکا رستم کو پہچانا، کھڑا ہوگیا، هاتھوں کو کمر پر رکھ زمین پر تھوکا اور بولا :

"ارے نرلج، اپنے کو کیا سمجھتا ہے ! بڑا ھیکڑ بنا ہے، ابھی کسی ایسے ویسے سے پالا نہیں پڑا ہے." کاکا رستم نے ھنسی اڑاتے ہوئے ٹھٹھا لگایا اور آگے بڑھکر کہا :

ب...ب بہت دن ہوئے کو...کو...کوئی ادھر ایسا پے... ...پ پیدا نہیں ہوا. آ...آ...آج رات حاجی کے گھ...گھ... گھر میں بیاہ رچا ہے پر تو...تو...نہ...نہ..."

داهن آنل نے بات کاٹتے ہوئے کہا :

"ایشور تجھے خوب پہچانتا ہے اسی سے تو اس نے آدمی جیبھ کاٹ دی ہے . آج رات جو آدھی رہ گئی اسے میں کاٹے دیتا ہوں ."

کاکا رستم نے جھٹ پٹ اپنی کٹار کو غلاف سے نکالا اور پھرتی سے سنبھالا . داهن آنل نے کٹار کا سرا زمین میں گھونپ دیا اور هاتھ چھاتی پر رکھ کھڑا ہو کر بولا :

"دیکھیں کس میں دم ہے جو اس کٹار کو زمین سے باہر نکالے ."

کاکا رستم نے اچانک اس پر وار کیا پر داهن آنل نے ایسا کلائی کا هاتھ مارا کہ کٹار کاکا کے هاتھ سے چھوٹ گئی. ان دونوں کے جھگڑے کا رولا سن کر آنے جانے والے کھڑے ہو گئے اور تماشہ دیکھنے لگے . لیکن کسی کی ھمت نہیں ہوئی کہ آگے آتا اور بیچ بچاو کرتا .

داهن آنل نے مسکراتے ہوئے کہا :

"چل جا، جا اٹھا لے پر شرط یہ ہے اس دفعہ خوب مضبوطی سے پکڑنا . میں نے تو آج رات ٹھان لی ہے کہ سب چھوٹے موٹے پرانے حساب چکا دوں ."

کاکا رستم مٹھیں باندھے آگے بڑھا اور دونوں ایک

"ठठाई में क्या मज़ा धरा है ?"

फिर उसके कपड़ों में हाथ देकर कहने लगा :

"यह क्या पहना है ? यह चोगा तो फट गया है, चाहो नया खरीद कर ला दूं."

दाश आकुल ने ठंडी सांस भरी, जेब से रुपए निकाले और उसकी हथेली पर रखे. घर में से निकला सांझ का समय था. उस का शरीर जल रहा था, मन मलीन था और सिर दर्द कर रहा था. कूचों में तीसरे पहर की बारिश से फिसलन थी. मट्टी की सौंधाहट और नारंगी के फूलों की की खुशबू हवा में महक रही थी. मिरजान की सूरत, लाल गाल, काली आंखें. ऊंची भवें, बालों की लटें जो माथे पर बिखरी थीं धुंधली सी छिपी छिपी उस की आंखों के सामने पुतली के समान खड़ी हो गईं. उस ने सारी आप बीती की याद जिंदा करा दी. एक एक कर के स्मृति पट पर तसवीरें गुज़रने लगीं. दोस्तों के साथ सादी की क़बर की यात्रा और बाबा कोही की सभी सैर सपाटों की याद ताज़ा हो गई. कभी चेहरे पर मुस्कराहट आती थी तो कभी झुंझलाहट. पर एक चीज़ जो पूरी तरह दिल में जम गई थी वह थी अपने घर की घृणा. उस का विचार ही सहन से बाहर था. ऐसा मालूम होता था जैसे जी बैठा जाता हो. एक ही चाह थी कहीं दूर निकल जाए. फिर सोचा रात को फिर शराब पीए अपने तोते से दिल का दर्द कहे. उसके लिए जीवन व्यर्थ, निस्सार, और क्षुद्र हो गया था. इसी बीच में एक कवित्त ध्यान में आया और वह व्यग्र हो गुन गुनाने लगा :

ब शब नशीनीए ज़िन्दानियां बज़्मे हसरत
कि नुक़्ले मजलिसां दाना हाए ज़ंजीर हस्त

(बन्दियों के रतजगे मुझे आतुर कर देते हैं, उनके पास महफ़िल में खानों को बेड़ियों के दानों के सिवा क्या है.)

एक और गीत याद आया. जिसे मध्यम सुर में गाने लगा :

दिलम दीवाना शुद ऐ आक़िलान आरीद ज़ंजीरी.
कि न बवद चारए दीवाना जुज़ ज़ंजीरे तदबीरी.

(मेरा दिल पागल हो गया है, अरे चतुर पंडितो, जंजीरें ले आओ. दीवाने का इलाज सिवाए जंजीरों की सांसत के और कुछ नहीं!) उस ने उस गीत को निराश दुख दर्द भरे सुरों में गाया. फिर जैसे साहस हीन हो गया हो अथवा ध्यान किसी दूसरी ओर मुड़ गया हो चुप हो गया.

जब दाश आकुल सरचदक मुहल्ले में पहुंचा तो अंधेरा हो गया था. जगह तो वही थी जहां अगले दिनों में उस का हृदय और माथा झुका रहता था. और किसी को

"ٹھٹھولی میں کیا مزہ دھرا ہے ؟" پھر اُس کے کپڑوں میں ہاتھ دے کر کہنے لگا :

" یہ کیا پہنا ہے ؟ یہ چوغہ تو پھٹ گیا ہے، چاہو تو نیا خرید کر لا دوں ."

داش آکل نے ٹھنڈی سانس بھری، جیب سے روپے نکالے اور اُسکی ہتھیلی پر رکھے . گھر میں سے نکلا سانجھ کا سمے تھا . اُس کا شریر جل رہا تھا، من ملین تھا اور سر درد کر رہا تھا . کوچوں میں تیسرے پہر کی بارش سے پھسلن تھی . مٹی کی سوندھاہٹ اور نارنگی کی خوشبو ہوا میں مہک رہی تھی . مرجان کی صورت، لال گال، کالی آنکھیں، اونچی بھویں بالوں کی لٹیں جو ماتھے پر بکھری تھیں دھندلی سی چھپی چھپی اُسکی آنکھ کے سامنے پتلی کے سمان کھڑی ہو گئیں . اس نے ساری آپ بیتی کی یاد زندہ کرا دی . ایک ایک کر کے سمرتی پٹ پر تصویریں گذرنے لگیں . دوستوں کے ساتھ سعدی کی قبر کی یاترا اور بابا کوہی کی سبھی سیر سپاٹوں کی یاد تازہ ہو گئی . کبھی چہرہ پر مسکراہٹ آتی تھی تو کبھی جھنجھلاہٹ . پر ایک چیز پوری طرح دل میں جم گئی تھی وہ تھی اپنے گھر کی گھرنا . اس کا وچار ہی سہن سے باہر تھا . ایسا معلوم ہوتا تھا جیسے جی بیٹھا جاتا ہو . ایک ہی چاہ تھی کہیں دور نکل جائے . پھر سوچا رات کو پھر شراب پئے' اپنے طوطے سے دل کا درد کہے . اس کے لئے جیون ویرتھ' نسار' اور چھدر ہوگیا تھا . اسی بیچ میں ایک کوت دھیان میں آیا اور وہ ویگر ہو گنگنانے لگا :

بشب نشینیٔ زندانیاں بزم حسرت
کہ نقل مجلساں دانا ہائے زنجیر ہست

(بندیوں کے رتجگے مجھے آتر کر دیتے ہیں' اُن کے پاس محفل میں کھانوں کو بیڑیوں کے دانوں کے سوا کیا ہے) ایک اور گیت یاد آیا . جسے مدھم سر میں گانے لگا :

دلم دیوانہ شد اے عاقلاں آرید زنجیری
کہ نہ بود چارۂ دیوانہ جز زنجیر تدبیری

(میرا دل پاگل ہوگیا ہے' ارے چتر پنڈتو' زنجیریں لے آؤ. دیوانہ کا علاج سوائے زنجیروں کی سانست کے اور کچھ نہیں !) اُس نے اُس گیت کو نراش دکھ درد بھرے سروں میں گایا . پھر جیسے ساہس ہین ہوگیا ہو اتھوا دھیان کسی دوسری اور مڑ گیا ہو چپ ہوگیا .

جب داش آکل سرزدک محلے میں پہنچا تو اندھیرا ہوگیا تھا . جگہ تو وہی تھی جہاں اگلے دنوں میں اُس کا ہردے اور ماتھا جھکا رہتا تھا . اور کسی کی

ब महमानों की आंखें चौंध गईं. दाश आकुल लम्बे डग भरता इमाम जुमे के सामने पहुंचा. खड़े हो कर बोला :

"इमाम साहब, ईश्वर हाजी को बख्शे उसने वसीयत या लिखी मुझे पूरे सात बरस के लिये झगड़े में फंसा या. अब उसका सबसे छोटा लड़का जो पांच साल का था रे बारह साल का हुआ. यह सब उसके माल दौलत का साब किताब है. (तीन आदमियों की ओर जो पीछे खड़े संकेत करते हुए) आज तक जो कुछ खर्च हुआ है, आज ी रात का खर्च मिला कर, सब मैंने अपनी जेब से दिया है. ब इनका रास्ता अलग है मेरा रास्ता अलग."

इतना कह पाया था कि उसका गला भर आया. आगे एक शब्द बोल सका और न जवाब की प्रतीक्षा कर सका. र झुकाए आंखों में आंसू भरे दरवाजे से बाहर निकल या. गली में पहुंच कर ठंडी सांस भरी. अनुभव किया क आज़ाद हूं और उत्तरदायित्व के बोझ से कंधा लका हो गया है. पर जी टूट गया था और दिल में गहरा व था. लापरवाही के साथ लम्बे लम्बे डग बढ़ाए चलते लते मुल्ला इसहाक़ यहूदी की शराब की दुकान दिखाई ी. झटपट सीढ़ियों पर जिन की ईंटें भीगी थीं चढ़ा और राने धुंए से काले अहाते में दाखिल हुआ. इस के चारों पहलुओं पर छोटे गंदे कमरे थे जिन में खिड़कियां ऐसी जैसे भिड़ के छत्ते में छेद. हौज के पानी के ऊपर काई मी थी. खटाई की बू, मीठी मीठी और पुरानी सील की हवा में फैली थी. मुल्ला इसहाक़ दुबला पतला आदमी ली टोपी पहने, बकरे की सी दाढ़ी बढ़ाए, लालची आंखें ले सामने आया. बनावटी हंसी हंसा. दाश आकुल बड़ा दास हो कर बोला :

"भाई जान! दया कर के एक बढ़िया सी बोतल लाओ, ज़रा गला ठंडा करूं." मुल्ला इसहाक़ ने सिर लाया, सीढ़ियों से उतर कर तहखाने में गया और चन्द नट बाद एक बोतल लेकर ऊपर आया. दाश आकुल ने तल हाथ में ली, उसकी गरदन को खम्बे से मारा और का मुंह उड़ा दिया, एक घूंट में आधी बोतल खाली कर आंखों में आंसू भर आए. मुंह पर हाथ रख कर खांसी रोका और हाथ की पीठ से मुंह साफ किया. मुल्ला सहाक़ का लड़का जो निहायत दुबला पतला और मैला ला था और जिस का पेट निकला हुआ, मुंह खुला और ठों से राल टपक रही थी, दाश आकुल को देख रहा था. आकुल ने नमकदानी में जो अहाते की दीवार के क में रखी थी उंगली डाली और मुंह में रख ली.

मुल्ला इसहाक़ सामने आया, उसने दाश आकुल के पर हाथ रखा और बिना किसी विशेष प्रयोजन बोला :

سب مہمانوں کی آنکھیں چوندھ گئیں ۔ داش آکل لمبے ڈگ بھرتا امام جمعہ کے سامنے پہونچا ۔ کھڑے ہو کر بولا :

" امام صاحب، ایشور حاجی کو بخشے اس نے وصیت کیا لکھی مجھے پورے سات برس کے لئے جھگڑے میں پھنسا دیا ۔ اب اسکا سب سے چھوٹا لڑکا جو پانچ سال کا تھا پورے بارہ سال کا ہوا ۔ یہ سب اس کے مال دولت کا حساب کتاب ہے ۔ (تین آدمیوں کی اور جو پیچھے کھڑے تھے سنکیت کرتے ہوئے) آج تک جو کچھ خرچ ہوا ہے، آج کی رات کا خرچ ملا کر، سب میں نے اپنی جیب سے دیا ہے ۔ اب ان کا راستہ الگ ہے میرا راستہ الگ ۔"

اتنا کہہ پایا تھا کہ اس کا گلا بھر آیا ۔ آگے نہ ایک شبد بول سکا اور نہ جواب کی پرتیکشا کر سکا ۔ سر جھکائے آنکھوں میں آنسو بھرے دروازہ سے باہر نکل گیا ۔ گلی میں پہنچ کر ٹھنڈی سانس بھری ۔ انوبھو کیا کہ آزاد ہوں اور اتردائتو کے بوجھ سے کندھا ہلکا ہوگیا ہے ۔ پر جی ٹوٹ گیا تھا اور دل میں گہرا گھاؤ تھا ۔ لاپرواہی کے ساتھ لمبے لمبے ڈگ بڑھائے چلتے چلتے ملا اسحاق یہودی کی شراب کی دوکان دکھائی دی ۔ جھٹ پٹ سیڑھیوں پر جن کی اینٹیں بھیگی تھیں چڑھا اور پرانے دھوئیں سے کالے احاطے میں داخل ہوا ۔ اس کے چاروں پہلوؤں پر چھوٹے گندے کمرے تھے جن میں کھڑکیاں ایسی تھیں جیسے بھڑ کے چھتے میں چھید ۔ حوض کے پانی کے اوپر کائی جمی تھی ۔ کھٹائی کی بو، میٹھی میٹھی اور پرانی سیل کی بو ہوا میں پھیلی تھی ۔ ملا اسحاق دبلا پتلا آدمی میلی ٹوپی پہنے، بکرے کی سی داڑھی بڑھائے، لالچی آنکھیں کھولے سامنے آیا ۔ بناوٹی ہنسی ہنسا ۔ داش آکل بڑا نراس ہو کر بولا :

" بھائی جان ! دیا کر کے بڑھیا سی بوتل لاؤ، ذرا گلا ٹھنڈا کروں " ملا اسحاق نے سر ہلایا، سیڑھیوں سے اتر کر تہخانے میں گیا اور چند منٹ بعد ایک بوتل لے کر اوپر آیا ۔ داش آکل نے بوتل ہاتھ میں لی، اسکی گردن کو کھمبے سے مارا اور اس کا منہ اڑا دیا ۔ ایک گھونٹ میں آدھی بوتل خالی کر دی ۔ آنکھوں میں آنسو بھر آئے ۔ منہ پر ہاتھ رکھکر کھانسی کو روکا اور ہاتھ کی پیٹھ سے منہ صاف کیا ۔ ملا اسحاق کا لڑکا جو نہایت دبلا پتلا اور میلا کچیلا تھا اور جس کا پیٹ نکلا ہوا، منہ کھلا اور ہونٹوں سے رال ٹپک رہی تھی، داش آکل کو دیکھ رہا تھا ۔ داش آکل نے نمک دانی میں جو احاطے کی دیوار کے طاق میں رکھی تھی انگلی ڈالی اور منہ میں رکھ لی ۔

ملا اسحاق سامنے آیا ۔ اس نے داش آکل کے کندھے پر ہاتھ رکھا اور بنا کسی وشیش پریوجن کے بولا :

तस्वीरें फिरती रहती थी, यही समय था जब दाश आकुल अपने सच्चे, असली नैसर्गिक रूप में अपने दिल की भावनाओं, आशाओं, कामनाओं को उन आचार परम्परा के बन्धनों से, उन नैतिक विचारों की अधीनता से जो उसे बचपन से सिखाए गए थे बिना लज्जा मुक्त हो, सब संकोच छोड़, मिरजान को अपनी छाती से लगा लेता था और उसके गालों को चूमता था.

लेकिन जैसे ही आंख खुलती अपने को बुरा भला कहता, अपने जीवन पर फटकार भेजता, पागल की तरह कमरे के अन्दर अपने पीछे घूमता और होठों तले अपने ही से बातें करता. फिर दिन भर प्रेम को अन्दर ही अन्दर घोटने का यत्न करता और दौड़ धूप में हाजी के कामों की देख भाल में समय बिताता.

इसी हालत में सात बरस कट जाते हैं. दाश आकुल ने हाजी के बीबी बच्चों के पालन पोसन में तनिक भी कमी नहीं की. यदि कोई बच्चा बीमार पड़ता तो दिन रात करुणा से आतुर मां की न्याईं उसके पास रात रात भर जागता था. इन बच्चों से उसे लगाव हो गया था. पर उसका संबन्ध जो मिरजान के साथ था वह कुछ और ही चीज़ थी. शायद मिरजान के प्रेम ने ही उसे इतना विनीत और शांत बना दिया था. समय बीता और इस ज़माने में हाजी समद के सब बच्चे बड़े हो गए.

परन्तु जो न होनी चाहिये थी आख़िर वही हुई. भावी बलवान है, मुहिम घटना सामने आई. मिरजान के लिये वर मिल गया. पर वह भी कैसा. दाश आकुल से कई साल बड़ा और सूरत का उससे कहीं कुरूप. इस घटना से दाश आकुल ने अपने माथे पर बल नहीं पड़ने दिया. बल्कि इसके विरुद्ध ठंडे दिल से उसके जहेज़ की तैयारी में लग गया. ब्याह की रात यथा योग्य उत्सव की रचना की. हाजी के बच्चों को घर में ले आया. बड़े कमरे में जिसमें ज़नाना मरदाना दोनों थे महमानों के स्वागत का प्रबंध किया. शीराज़ के जितने मोटे आसामी थे, ब्योपारी और बड़े आदमी सभी को न्योता दिया.

उस दिन तीसरे पहर पांच बजे जब मेहमान कमरे के चारों ओर एक सिरे से दूसरे सिरे तक क़ीमती क़ालीनों और ग़ालीचों पर पर बैठे थे और मिठाइयों और मेवों के ख़ोनचे उनके सामने लगे थे दाश आकुल अपने पुराने ढंग से अकड़फूं बना, कंघी तेल बिना सिर के बाल बिखेरे, धारीदार कपड़े का चोग़ा, नीली साटन का पैजामा, कड़े काम का जूता, नई ऊंची फुंदनेदार टोपी पहने, शाल बग़ल में गसियाय, दुधारी तलवार कमरबन्द में लगाए दाख़िल हुआ. उसके पीछे पीछे तीन और आदमी हिसाब की बहियें और काग़ज़ लिये अन्दर आए. इनकी धज देखकर

تصویریں پھرتی رہتی تھیں' وہی سمے تھا جب داش آکل اپنے سچے' اصلی نیسرگک روپ میں اپنے دل کی بھاوناؤں آشاؤں' کا مناؤں کو اُن آچار پرمپرا کے بندھنوں سے' اُن نیتک وچاروں کی ادھینتا سے جو اُسے بچپن سے سکھائے گئے تھے بنا لجا مکت ہو' سب سنکوچ چھوڑ' مرجان کو اپنی چھاتی سے لگا لیتا تھا اور اُس کے گالوں کو چومتا تھا .

لیکن جیسے ہی آنکھ کھلتی اپنے کو برا بھلا کہتا' اپنے جیون پر پھٹکار بھیجتا' پاگل کی طرح کمرے کے اندر اپنے پیچھے گھومتا اور ہونٹوں تلے اپنے ہی سے باتیں کرتا . پھر دن بھر پریم کو اندر ہی اندر گھونٹنے کا یتن کرتا اور دوڑ دھوپ میں حاجی کے کاموں کی دیکھ بھال میں سمے بتاتا .

اِسی حالت میں سات برس کٹ جاتے ہیں . داش آکل نے حاجی کے بیوی بچوں کے پالن پوسن میں تنک بھی کمی نہیں کی . یدی کوئی بچہ بیمار پڑتا تو دن رات کرونا سے آتر ماں کی نیائیں اُس کے پاس رات رات بھر جاگتا تھا . اِن بچوں سے اُسے لگاؤ ہوگیا تھا . پر اُس کا سمبندھ جو مرجان کے ساتھ تھا وہ کچھ اور ہی چیز تھی . شاید مرجان کے پریم نے ہی اُسے اِتنا ونیت اور شانت بنا دیا تھا . سمے بیتا اور اِس زمانے میں حاجی صمد کے سب بچے بڑے ہوگئے .

پرنتو جو نہ ہونی چاہئے تھی آخر وہی ہوئی . بھاوی بلوان ہے' مہم گھٹنا سامنے آئی . مرجان کے لئے بر مل گیا . پر وہ بھی کیسا . داش آکل سے کئی سال بڑا اور صورت کا اُس سے کہیں کروپ . اِس گھٹنا سے داش آکل نے اپنے ماتھے پر بل نہیں پڑنے دیا . بلکہ اِس کے ورودھ ٹھنڈے دل سے اُس کے جہیز کی تیاری میں لگ گیا . بیاہ کی رات یتھا یوگیہ اُتسو کی رچنا کی . حاجی کے بچوں کو گھر میں لے آیا . بڑے کمرے میں جس میں زنانہ مردانہ دونوں تھے مہمانوں کے سواگت کا پربندھ کیا . شیراز کے جتنے موٹے اسامی تھے' بیوپاری اور بڑے آدمی سبھی کو نیوتا دیا .

اُس دن تیسرے پہر پانچ بجے جب مہمان کمرہ کے چاروں اور ایک سرے سے دوسرے سرے تک قیمتی قالینوں اور غالیچوں پر بیٹھے تھے اور مٹھائیوں اور میووں کے خونچے اُن کے سامنے لگے تھے داش آکل اپنے پرانے ڈھنگ سے اکڑفوں بنا' کنگھی تیل بنا سر کے بال بکھیرے' دھاری دار کپڑے کا چوغہ' نیلی ساٹن کا پاجامہ' کڑے کام کا جوتا' نئی اونچی پھندنے دار ٹوپی پہنے' شال بغل میں گسیائے' دودھاری تلوار کمر بند میں لگائے داخل ہوا . اُس کے پیچھے پیچھے تین اور آدمی حساب کی بہیں اور کاغذ لئے اندر آئے . اِن کی دھج دیکھ کر

[illegible] जिसके दिल में गांठ सी पड़ गयी थी, [illegible] बोला:

"बावी कहती में ख्याल, मियां हाजी समद की बेटी
आशिक बने हैं. यह धोखा बड़ी, यह लोगों की आंखों
धूल, कैसा झूठ का जाल फैलाया कि हाजी का वकील
न बैठा. उसकी सारी जमींदारी हथिया ली. ईश्वर की
न है."

अब दाश आकुल का किसी पर रंग नहीं चढ़ता था.
किसी की उसको परवाह थी. जहां कहीं पहुंचता कोने
कोने काना फूसी होने लगती. उसकी हंसी होती. दाश
आकुल इधर उधर यह सब कुछ सुनता, लवे न लगाता,
ध्यान देता. कारन यह था कि मिरजान का प्रेम ऐसा
रग पट्ठों में बैठ गया था कि सिवाय उसके न कोई और मन
विचार था न हृदय में इच्छा.

रातों को व्याकुलता वश शराब पीता था. मन बहलाने
लिये एक तोता खरीद लिया था. पिंजरे के सामने बैठ
जाता और तोते के सामने अपने जी का दुखड़ा दोहराता.
यह ठीक है यदि मिरजान की मां से मंगनी को कहता तो
वह खुशी से राज़ी हो जाती. पर वह भी नहीं चाहता
कि स्त्री बच्चों के बन्धन अपने पैरों में डाल ले.
चाहता था आज़ाद रहे. जैसे अब तक उमर काटी थी. दिल
यह भी ख्याल था कि जिस लड़की को बाप ने उसके
सुपुर्द किया है उसे अपनी पत्नी बना लेना नमक हरामी
है. फिर जब रात को आइने में अपनी सूरत देखता तो
चाकू के घावों के उभरे दाने, आंख के नीचे खिंचा मास
दिखाई देता था, खिंची आवाज़ में ज़ोर ज़ोर से कहता:

"वह शायद मुझे पसन्द नहीं करती अवश्य किसी
सुन्दर युवक की चाह करती है. नहीं, नहीं, यह कहां की
मरदानगी है. वह चौदह बरस की है मेरी आयु लगभग
चालीस की. पर करूं क्या? इस प्रेम के मारे मरा जाता
हूं. मिरजान! तू मेरी जान ले लेगी, किस से कहूं, मिरजान!
तेरा प्रेम मुझे मारे डालता है."

उसकी आंखों में आंसू भर आते. शराब के गिलास
पर गिलास पी जाता. कुछ देर में उसी तरह बैठे बैठे सिर
का दर्द लिये सो जाता.

पर आधी रात को जिस समय शीराज़ के पेचीले
गली कूचे, मनोहर सुहाने बाग़, रंगीली लाल शराबें निद्रा
में झुकी होती थीं, जिस समय गहरे नीले आकाश में बड़े
शांत झिलमिलाते तारे एक दूसरे को अपनी रहस्य भरी
कहानी सुनाते थे, जिस समय मिरजान अपने लाल लाल
गालों को बिस्तरे में छिपाए धीरे धीरे सांस ले रही होती
और उसकी आंखों के सामने दिन भर की [illegible] की

کاکا رستم جس کے دل میں گانٹھ سی پڑ گئی تھی ہکلاتے ہکلاتے بولا:

"باسی کوٹھی میں اُبال' میاں حاجی صمد کی بیٹی کے عاشق بنے ہیں . یہ دھوکہ دھڑی' یہ لوگوں کی آنکھوں میں دھول' کیسا جھوٹ کا جال پھیلایا کہ حاجی کا وکیل بن بیٹھا . اسکی ساری زمینداری ہتھیا لی. ایشور کی دین ہے ."

اب داش آکل کا کسی پر رنگ نہیں چڑھتا تھا . نہ کسی کی اس کو پرواہ تھی . جہاں کہیں پہونچتا کونے کونے کانا پھوسی ہونے لگتی. اسکی ہنسی ہوتی. داش آکل اِدھر اُدھر یہ سب کچھ سنتا' لوے نہ لگاتا' نہ دھیان دیتا. کارن یہ تھا کہ مرجان کا پریم ایسا رگ پٹھوں میں بیٹھ گیا تھا کہ سوائے اس کے نہ کوئی اور من میں وچار تھا نہ ہردے میں اچھا .

راتوں کو ویاکلتا وش شراب پیتا تھا . من بہلانے کے لئے ایک طوطا خرید لیا تھا . پنجرے کے سامنے بیٹھ جاتا اور طوطے کے سامنے اپنے جی کا دکھڑا دوہراتا . یہ ٹھیک ہے یدی مرجان کی ماں سے منگنی کو کہتا تو وہ خوشی سے راضی ہو جاتی . پر یہ بھی نہیں چاہتا تھا کہ استری بچوں کے بندھن اپنے پیروں میں ڈال لے . چاہتا تھا آزاد رہے . جیسے اب تک عمر کاٹی تھی . دل میں یہ بھی خیال تھا کہ جس لڑکی کو باپ نے اس کے سپرد کیا ہے اسے اپنی پتنی بنا لینا نمک حرامی ہے . پھر جب رات کو آئنے میں اپنی صورت دیکھتا تو چاقو کے گھاؤں کے ابھرے دانے' آنکھ کے نیچے کھنچا ماس دکھائی دیتا تھا' کھنچی آواز میں زور زور سے کہتا :

" وہ شاید مجھے پسند نہیں کرتی . اوشیہ کسی سندر یوک کی چاہ کرتی ہے . نہیں' نہیں' یہ کہاں کی مردانگی ہے . وہ چودہ برس کی ہے میری آیو لگ بھگ چالیس کی . پر کروں کیا ؟ اس پریم کے مارے مرا جاتا ہوں . مرجان ! تو میری جان لے لیگی' کس سے کہوں مرجان ! تیرا پریم مجھے مارے ڈالتا ہے ."

اسکی آنکھوں میں آنسو بھر جاتے . شراب کے گلاس پر گلاس پی جاتا . کچھ دیر میں اسی طرح بیٹھے بیٹھے سر کا درد لئے سو جاتا .

پر آدھی رات کو جس سمے شیراز کے پیچیلے گلی کوچے' منوہر سہانے باغ' رنگیلی لال شرابیں ندرا میں جھکی ہوتی تھیں' جس سمے گہرے نیلے آکاش میں بڑے شانت جھلملاتے تارے ایک دوسرے کو اپنی رہسیہ بھری کہانی سناتے تھے' جس سمے مرجان اپنے لال لال گالوں کو بستر میں چھپائے دھیرے دھیرے سانس لے رہی ہوتی تھی اور اسکی آنکھوں کے سامنے [illegible] کی

वह बेपरवाह और लुटाऊ था. दुनियां के धन दौलत की क़दर नहीं करता था. जीवट, स्वाधीन, उदार और अभिमानी जीवन बिताता था. और किसी बात में रुचि नहीं थी. अपनी थाती को अभागों दरिद्रों को खिलाने बांटने में लगाता था. तेज़ दोहरी खिंची शराब पीता था, चौराहे पर खड़े हो आवाज़े कसता था, या अपने मित्रों के साथ जो उसकी चापलूसी में लगे रहते थे बैठ कर समय बिताता था. उस के गुन औगुनों की यहीं तक सीमा थी. पर अचंभे की बात यह थी कि अभी तक प्रेम ने उसके जीवन को विकल नहीं किया था. कितनी बार ऐसा हुआ उसके चार दोस्तों ने उसे घेरा और मंडली जमाई परन्तु वह सदा इन से अलग अलग रहा. लेकिन जिस दिन से हाजी समद का वकील और उत्तरदायी बना और मिरजान को देखा उस के जीवन में परिवर्तन हो गया. एक ओर तो बैकुंठवासी हाजी का देनदार था और कंधो पर उत्तरदायित्व का बोझ संभाले था, परन्तु दूसरी ओर मिरजान के हाथों में अपने हृदय की सारी दौलत सौंप चुका था. सब चीज़ों से अधिक उसे उत्तरदायित्व का बोझ दबाए था. वह आदमी जिसे अपने माल की तनिक परवाह न थी और जिसने अपने धन के बड़े भाग की अवहेलना की, आग में आहुति दे दी थी, प्रति दिन तड़के जैसे ही उठता था इस फ़िक्र में पड़ जाता था कि कैसे हाजी की ज़मींदारी की आमदनी को बढ़ाए. उस ने हाजी के बीबी बच्चों को एक छोटे मकान में भेज दिया और उस के निजी मकान को किराये पर उठा दिया. बच्चों के पढ़ने के लिए अध्यापक रख दिया और रुपये को व्योपार में लगा दिया. सवेरे से शाम तक दौड़ धूप में ज़मीन और इलाक़े की देख भाल में लगा रहता था.

इस समय से दाश आकुल ने रातों का घूमना और चौरस्तों का आखेट छोड़ दिया. यार दोस्तों का आवेश भी कम हो गया और सिर पर जो पागलपन सवार रहता था उतर गया. पर वह सब लुंगे लफ़ाड़े गुंडे जो उस के प्रतिस्पर्धी थे मुल्लाओं के बहकाने से उसके पीछे पड़ गए. मुल्लाओं को यह जलन थी कि दाश आकुल ने हाजी समद की बपौती को उनके हाथ नहीं लगने दिया. इसी से वह सब उसे गालियां देते थे और अपनी बैठकों और क़हवा खानों में उसकी बातों का मज़ाक़ उड़ाते थे. पाचिनार के क़हवा खाने में दाश आकुल की बहुधा मट्टी पलीद करते थे और कहते थे :—

दाश आकुल की बात है न, मुंह क्या है किसी कुत्ते जैसा ! यारो, अब तो अच्छा ख़ासा भिखारी है. हाजी के घर में पड़ा दुम हिलाया रहता है. मालूम होता है किसी चीज़ के फेर में है. अब तो जब सरदज़क मुहल्ले में दाखिल होता है तो दुम दबा कर निकल जाता है.

وہ بے پرواہ اور لٹاؤ تھا. دنیا کی دھن دولت کی قدر نہیں کرتا تھا. جیوٹ، سوادھین، اُدار اور ابھیمانی جیون بتاتا تھا. اور کسی بات میں رچی نہیں تھی. اپنی تھاتی کو ابھاگوں دردروں کو کھلانے بانٹنے میں لگا تھا. تیز دوہری کھنچی شراب پیتا تھا' چوراہے پر کھڑے ہو کر آوازیں کستا تھا' یا اپنے متروں کے ساتھ جو اسکی چاپلوسی میں لگے رہتے تھے بیٹھکر سمے بتاتا تھا. اس کے گن اوگنوں کی یہیں تک سیما تھی. پر اچنبھے کی بات یہ تھی کہ ابھی تک پریم نے اس کے جیون کو وکل نہیں کیا تھا. کتنی بار ایسا ہوا اس کے چار دوستوں نے اسے گھیرا اور منڈلی جمائی پرنتو وہ سدا ان سے الگ الگ رہا. لیکن جس دن سے حاجی صمد کا وکیل اور اتر دائی بنا اور مرجان کو دیکھا اس کے جیون میں پریورتن ہوگیا. ایک اور تو بیکنٹھ باسی حاجی کا دیندار تھا اور کندھوں پر اتر دائتو کا بوجھ سنبھالے تھا' پرنتو دوسری اور مرجان کے ہاتھوں میں اپنے ہردے کی ساری دولت سونپ چکا تھا. سب چیزوں سے ادھک اسے اتر دائتو کا بوجھ دبائے تھا. وہ آدمی جسے اپنے مال کی تنک پرواہ نہ تھی اور جس نے اپنے دھن کے بڑے بھاگ کی اوہیلنا کی' آگ میں آہوتی دے دی تھی' پرتی دن تڑکے جیسے ہی اٹھتا تھا اس فکر میں پڑ جاتا تھا کہ کیسے حاجی کی زمینداری کی آمدنی کو بڑھائے. اس نے حاجی کے بیوی بچوں کو ایک چھوٹے مکان میں بھیج دیا اور اس کے نجی مکان کو کرائے پر اٹھا دیا. بچوں کے پڑھنے کے لئے ادھیاپک رکھ دیا اور روپے کو بیوپار میں لگا دیا. سویرے سے شام تک دوڑ دھوپ میں زمین اور علاقہ کی دیکھ بھال میں لگا رہتا تھا.

اس سمے سے داش آکل نے راتوں کا گھومنا اور چوراستوں کا آکھیٹ چھوڑ دیا. یار دوستوں کا آویش بھی کم ہوگیا اور سر پر جو پاگل پن سوار رہتا تھا اتر گیا. پر وہ سب لنگے لفاڑے غنڈے جو اس کے پرتی اسپردھی تھے ملاؤں کے بہکانے سے اس کے پیچھے پڑ گئے. ملاؤں کو یہ جلن تھی کہ داش آکل نے حاجی صمد کی بپوتی کو ان کے ہاتھ نہیں لگنے دیا. اس سے یہ سب اسے گالیاں دیتے تھے اور بیٹھکوں اور قہوہ خانوں میں اس کی باتوں کا مذاق اڑاتے تھے. پاچی نار کے قہوہ خانہ میں داش آکل کی بہودھا مٹی پلید کرتے تھے اور کہتے تھے :—

"داش آکل کی بات ہے نہ' منہ کیا ہے کسی کتے جیسا ! یارو' اب تو اچھا خاصہ بھکاری ہے. حاجی کے گھر میں پڑا دم ہلاتا رہتا ہے. معلوم ہوتا ہے کسی چیز کے پھیر میں ہے. اب تو جب سرجیک محلے میں داخل ہوتا ہے تو دم دبا کر نکل جاتا ہے."

न कामों के [illegible] को परीक्षा के लिए भेज दिया. जो रुपया लेना था वसूल कर लिया और जो देना था दे दिया.

इन सब कामों को ज्यों त्यों दो दिन रात लगा कर समाप्त किया. तीसरी रात दाश आकुल थका मांदा सैयद हाज ग़रीब के चौराहे के नज़दीक अपने घर की तरफ रवाना हुआ. रास्ते में इमाम कुली लोहार मिला कहने लगा :

"आज दो दिन से काका रुस्तम तुम्हारी राह देख रहा है. कल रात कहता था उस दिन तो बड़ी डींग हांकता था, बड़ी शेखी बघारता था पर जान पड़ता है अब सब कहा सुना भूल गया."

दाश आकुल ने मूछों पर ताव दिया और कहा :

"उसे कहने दो."

दाश आकुल को खूब याद था तीन दिन पहले दोमेल के क़हवा ख़ाने में काका रुस्तम उस से बदला लेने की सोच रहा था. पर दाश आकुल अपने प्रतिस्पर्धी को अच्छी तरह समझता था, जानता था कि काका रुस्तम ने इमाम कुली को गांठा है ताकि उसे नीचा दिखाए. इसी कारन उसने इस के कहने को कुछ महत्व नहीं दिया. अपनी राह ली और चलता बना. रास्ते में उस का सारा ध्यान मिरजान की तरफ लगा था. जितना यत्न करता था कि उस के मुखड़े को अपनी आंखों से दूर करे उतने ही अधिक बल पूर्वक उसकी मूर्ती आंखों के सामने आ खड़ी होती थी.

दाश आकुल पैंतीस बरस का जवान था. मोटा ताज़ा पर कुरूप था. जो उसे पहली दफ़ा देखता था इस के चेहरे से घिन करने लगता था. पर अगर कुछ देर उसके साथ बात चीत को बैठ जाए अथवा उस की जीवन यात्रा के क़िस्सों को जो लोगों की ज़बानों पर चढ़े थे सुने तो उस का जादू आदमी के हृदय को मोह लेता था. उस के चेहरे के आड़े तिरछे घाव जो चाकू से लगे थे अनदेखे से हो जाते थे. और उस के चेहरे से तेज टपकता था. उस की नीली आंखें, भारी भरवां भवें, चौड़े चकले गाल, सुतवां नाक और काली काली दाढ़ी और मूंछ बड़ा आकर्षन रखते थे. लेकिन घावों से चेहरा भद्दा हो गया था, गाल और माथा तलवार के ज़ख़्मों से घायल थे और गाल पर घाव भरने के दाने पड़ गए थे. चेहरे की लकीरों से नीचे लाल लाल मांस चमकता था. और सब से भद्दा यह था कि बाईं आंख के किनारे का मांस नीचे की ओर खिंच आया था.

दाश आकुल का बाप फ़ार्स प्रांत के बड़े ज़मींदारों में था. उस के मरने पर उस की सारी सम्पत्ति इस इकलौते बेटे को मिली थी. पर दाश आकुल का हाथ खुला था,

مقوں کے تمالوں کو پریکھا کے لئے بھیج دیا ۔ جو روپیہ لینا تھا وصول کر لیا اور جو دینا تھا دے دیا ۔

ان سب کاموں کو جیوں تیوں دو دن رات لگا کر سماپت کیا ۔ تیسرا رات داش آکل تھکا ماندہ سید حاج غریب کے چوراہے کے نزدیک اپنے گھر کی طرف روانہ ہوا ۔ راستے میں امام قلی لوہار ملا اور کہنے لگا :

" آج دو دن سے کاکا رستم تمہاری راہ دیکھ رہا ہے ۔ کل رات کہتا تھا اس دن تو بڑی ڈینگ ہانکتا تھا' بڑی شیخی بگھارتا تھا' پر جان پڑتا ہے اب سب کہا سنا بھول گیا ۔"

داش آکل نے مونچھوں پر تاؤ دیا اور کہا :

" اسے کہنے دو ۔"

داش آکل کو خوب یاد تھا تین دن پہلے دومیل کے قہوہ خانہ میں کاکا رستم اس سے بدلہ لینے کی سوچ رہا تھا ۔ پر داش آکل اپنے پرتی اسپردھی کو اچھی طرح سمجھتا تھا' جانتا تھا کہ کاکا رستم نے امام قلی کو گانٹھا ہے تاکہ اسے نیچا دکھائے ۔ اسی کارن اس نے اس کے کہنے کو کچھ مہتو نہیں دیا ۔ اپنی راہ لی اور چلتا بنا ۔ راستے میں اس کا سارا دھیان مرجان کی طرف لگا تھا ۔ جتنا یتن کرتا تھا کہ اس کے مکھڑے کو اپنی آنکھوں سے دور کرے اتنے ہی ادھک بل پوروک اسکی مورتی آنکھوں کے سامنے آ کھڑی ہوتی تھی ۔

داش آکل پینتیس برس کا جوان تھا ۔ موٹا تازہ پر کروپ تھا ۔ جو اسے پہلی دفعہ دیکھتا تھا اس کے چہرے سے گھن کرنے لگتا تھا ۔ پر اگر کچھ دیر اس کے ساتھ بات چیت کو بیٹھ جائے اتھوا اسکی جیون یاترا کے قصوں کو جو لوگوں کی زبانوں پر چڑھے تھے سنیں تو اسکا جادو آدمی کے ہردئے کو موہ لیتا تھا ۔ اس کے چہرہ کے آڑے ترچھے گھاؤ جو چاقو سے لگے تھے ان دیکھے سے ہو جاتے تھے ۔ اور اس کے چہرہ سے تیج ٹپکتا تھا ۔ اسکی نیلی آنکھیں' بھاری بھروں بھویں' چوڑے چکلے گال' ستواں ناک اور کالی کالی داڑھی اور مونچھ بڑا آکرشن رکھتے تھے ۔ لیکن گھاؤں سے چہرہ بھدا ہوگیا تھا' گال اور ماتھا تلوار کے زخموں سے گھائل تھے اور گال پر گھاؤ بھرنے کے دانے پڑ گئے تھے ۔ چہرہ کی لکیروں سے نیچے لال لال ماس چمکتا تھا ۔ اور سب سے بھدا یہ تھا کہ بائیں آنکھ کے کنارے کا ماس نیچے کی اور کھنچ آیا تھا ۔

داش آکل کا باپ فارس پرانت کے بڑے زمینداروں میں سے تھا ۔ اس کے مرنے پر اسکی ساری سمپتی اس اکلوتے بیٹے کو ملی تھی ۔ داش آکل کا ہاتھ کھلا تھا'

पहुँचा मातम की मजलिस उठ चुकी थी. कुछ क़ुरान पढ़ने वाले और कारबारी रह गए थे जो पैसों के बटवारे पर झगड़ रहे थे. कुछ देर हौज़ के सामने खड़ा रखने के बाद उसे एक बड़े कमरे में ले गए जिस की खिड़कियां मरदाने में खुलती थीं. हाजी की बीबी परदे के पीछे आकर खड़ी हुई. मामूली सलाम बंदगी के बाद दाश आकुल फ़र्श पर बैठ गया और बीबी से बोला :

"ख़ानम ! सुखी रहो ! ईश्वर तुम्हारे बच्चों की रक्षा करें !"

बीबी ने भरी आवाज़ में कहा :

"रात को जैसे हाजी का हाल बुरा होने लगा, जा कर इमाम जुमे को उसके सिरहाने ले आए और हाजी ने सब सज्जनों के सामने तुम्हें अपना वकील और उत्तराधिकारी नियत किया. अवश्य ही तुम हाजी को पहले से जानते होगे ?"

"हां पांच साल हुए हम काज़रून के सफ़र में मिले थे."

"ईश्वर हाजी को बख़्शे, सदा कहा करता था यदि कोई मर्द है तो बस एक ही है."

"ख़ानम ! मैं तो अपने आप को सब बंधनों से मुक्त रखना चाहता था. पर मेरे ऊपर अब तो बेचारे मुए हाजी की थाती का बोझ आ पड़ा है. मुझे सूरज की इन किरनों की शपथ है कि जीते जी इन सब पगड़धारी मुल्लाओं से समझ लूंगा."

यह कह कर उसने जो गरदन मोड़ी तो दूसरे परदे के पीछे से एक लड़की खड़ी दिखाई दी. उसका मुखड़ा दमक रहा था और उसकी काली आंखें मोहने वाली थीं. पलक भर में उन दोनों की आंखें मिलीं. पर ऐसा लगता है कि लड़की लजा गई, उसने परदा गिरा दिया और पीछे हट गई. क्या यह लड़की सचमुच सुन्दर नहीं थी ?

होगी, कुछ भी हो उसकी मन मोहिनी आंखें अपना काम कर गईं. दाश आकुल का दिल लोट पोट हो गया, उसका सिर झुक गया और चेहरा लाल हो गया.

यह लड़की मिरजान, हाजी समद की बेटी थी जो कौतूहल वश शहर के विख्यात सिर धरे और अपने रक्षक के दर्शनों के लिये चली आई थी.

दूसरे दिन से दाश आकुल हाजी के कामों की देख भाल में लग गया. उस ने एक पुरानी चीज़ों के जानकार को, मुहल्ले के दो साथियों को और एक मुन्शी को अपने साथ लिया और सब चीज़ों की बड़ी सावधानी के साथ सूची बनाई और इन्हें सियाहे पर चढ़ाया. जो चीज़ें ज़ियादा थीं उन्हें गोदाम में भर दिया और उस के दरवाज़ों पर मुहर लगा दी. जो बेचने लायक़ थीं उन्हें बेच दिया.

پہونچا ماتم کی مجلس اٹھ چکی تھی ۔ کچھ قرآن پڑھنے والے اور کاروباری رہ گئے تھے جو پیسوں کے بٹوارے پر جھگڑ رہے تھے ۔ کچھ دیر حوض کے سامنے کھڑا رکھنے کے بعد اسے ایک بڑے کمرے میں لے گئے جسکی کھڑکیاں مردانے میں کھلتی تھیں ۔ حاجی کی بیوی پردے کے پیچھے آ کر کھڑی ہوئی ۔ معمولی سلام بندگی کے بعد داش آکل فرش پر بیٹھ گیا اور بیوی سے بولا :

" خانم ! سکھی رہو ! ایشور تمہارے بچوں کی رکشا کریں !"

بیوی نے بھری آواز میں کہا :

" رات کو جیسے حاجی کا حال برا ہونے لگا' جا کر إمام جمعہ کو اس کے سرہانے لے آئے اور حاجی نے سب سجنوں کے سامنے تمہیں اپنا وکیل اور اترادھکاری نیت کیا ۔ اوشیہ ہی تم حاجی کو پہلے سے جانتے ہوگے؟"

" ہاں پانچ سال ہوئے ہم قازرون کے سفر میں ملے تھے ۔"

" ایشور حاجی کو بخشے' سدا کہا کرتا تھا یدی کوئی مرد ہے تو بس ایک ہی ہے ۔"

" خانم !، میں تو اپنے آپ کو سب بندھنوں سے مکت رکھنا چاہتا تھا۔ پر میرے اوپر اب تو بیچارے موئے حاجی کی تھاتی کا بوجھ آ پڑا ہے ۔ مجھے سورج کی ان کرنوں کی شپتھ ہے کہ جیتے جی ان پگڑ دھاری ملاؤں سے سمجھ لوں گا ۔"

یہ کہکر اس نے جو گردن موڑی تو دوسرے پردے کے پیچھے سے ایک لڑکی کھڑی دکھائی دی ۔ اس کا مکھڑا دمک رہا تھا اور اسکی کالی آنکھیں موہنے والی تھیں ۔ پلک بھر میں ان دونوں کی آنکھیں ملیں ۔ پر ایسا لگتا ہے کہ لڑکی لجا گئی' اس نے پردہ گرا دیا اور پیچھے ہٹ گئی ۔ کیا یہ لڑکی سچ مچ سندر نہیں تھی !

ہوگی' کچھ بھی ہو اسکی من موہنی آنکھیں اپنا کام کر گئیں ۔ داش آکل کا دل لوٹ پوٹ ہو گیا' اس کا سر جھک گیا اور چہرہ لال ہو گیا ۔

یہ لڑکی مرجان' حاجی صمد کی بیٹی تھی جو کوتوہل وش شہر کے وکھیات سر دھرے اور اپنے رکشک کے درشنوں کے لئے چلی آئی تھی ۔

دوسرے دن سے داش آکل حاجی کے کاموں کی دیکھ بھال میں لگ گیا ۔ اس نے ایک پرانی چیزوں کے جانکار کو' محلے کے دو ساتھیوں کو اور ایک منشی کو اپنے ساتھ لیا اور سب چیزوں کی بڑی ساودھانی کے ساتھ سوچی بنائی اور انہیں سیاہے پر چڑھایا ۔ جو چیزیں زیادہ تھیں انہیں گودام میں بھر دیا اور اس کے دروازوں پر مہر لگا دی ۔ جو بیچنے لائق تھیں انہیں بیچ دیا ۔

लेकिन इस कारण कि इस में व्यंग्य की तरफ़ संकेत था, लोगों की ओर भी ज़ोर से हंसी आई. क़हवची ने नौकर पर झुंझला कर आघात किया, पर दाश आकुल ने मुस्कराते हुए रुपयों का बटुआ निकाला और क़हवची के सामने फेंक दिया.

क़हवची ने बटुआ उठा लिया. हथेली में लेकर तोला और मुस्कराया.

इसी बीच एक छोटे क़द का आदमी मलमल की चाकट खुली मोरी का पाजामा, फ़ेल्ट टोपी पहने घबराया हुआ क़हवे ख़ाने के अन्दर आया. उसने चारों तरफ़ देखा, दाश आकुल के सामने आकर सलाम की और बोला :—

"हाजी समद का देहान्त हो गया." दाश आकुल ने सिर ऊंचा किया और कहा :—

"ईश्वर क्षमा करे."

"पर क्या तुम्हें नहीं मालूम कि उसने वसीयत की है."

"मैं महा ब्राह्मन तो हूं नहीं, जाओ महा ब्राह्मनों को ख़बर दो."

"आख़िर उसने तुम्हें ही तो अपनी वसीयत का वकील और मीरास का उत्तरदायी बनाया है."

यह सुनना था कि दाश आकुल चौंक पड़ा. दो बार उसने उसे सिर से पैर तक देखा और माथे पर हाथ फेरा. उसकी अंडे नुमा टोपी पीछे की तरफ़ खिसक गई थी और दुरंगा माथा दिखाई देने लगा था. आधा धूप की तपन से जल कर कत्थई रंग का हो गया था और जो टोपी के नीचे था सफ़ेद था. फिर उसने सिर हिलाया, पाइप को जिस की नै पर पच्चीकारी का काम था जेब से निकाला. धीरे धीरे चिलम में तम्बाकू भरा और अंगूठे से उसे जमाया. फिर उसे सुलगा कर बोला :

"ईश्वर हाजी को क्षमा करें. अब तो बेचारा चल बसा, पर कुछ अच्छा नहीं कर गया, मुझे झगड़े में फंसा गया. ख़ैर, तुम जाओ, मैं पीछे पीछे आता हूं."

यह आदमी जो आया था हाजी समद का पेशकार था. लम्बी डग भरता वह क़हवाख़ाने से बाहर हो गया. दाश आकुल के माथे पर सिकुड़नें पड़ गईं. कुछ देर तो दिल बहलाव के लिये पाइप के फुंक लगाए, पर ऐसा लगता था मानों क़हवाख़ाने का हंसमुख आकाश अचानक काले बादलों से ढक गया हो. कुछ देर बाद दाश आकुल ने पाइप की राख झाड़ी, खड़ा हुआ, ऊनी कपड़े से मढ़े पिंजरे को क़हवची के नौकर को सौंपा और क़हवा ख़ाने से बाहर निकला.

जिस समय दाश आकुल हाजी समद के मरदाने में

لیکن اِس کارن کہ اِس میں ومکم کی طرف سنکیت تھا' لوگوں کو بھی زور سے ھنسی آئی . قہوچی نے نوکر پر جھنجھلا کر آگھات کیا' پر داش آکل نے مسکراتے ہوئے روپیوں کا بٹوا نکالا اور قہوچی کے سامنے پھینک دیا .

قہوچی نے بٹوا اُٹھا لیا . ھتھیلی میں لے کر تولا اور مسکرایا .

اِسی بیچ ایک چھوٹے قد کا آدمی ململ کی چاکٹ کھلی موری کا پاجامہ' فیلٹ ٹوپی پہنے گھبرایا ہوا قہوہ خانے کے اندر آیا . اُس نے چاروں طرف دیکھا' داش آکل کے سامنے آ کر سلام کی اور بولا :—

" حاجی صمد کا دیہانت ھوگیا ." داش آکل نے سر اُونچا کیا اور کہا :—

" ایشور چھما کرے ."

" پر کیا تمہیں نہیں معلوم کہ اُس نے وصیت کی ھے ."

" میں مہا براھمن تو ھوں نہیں' جاؤ مہابراھمنوں کو خبر دو ."

" آخر اِس نے تمہیں ھی تو اپنی وصیت کا وکیل اور میراث کا اُتر دائی بنایا ھے ."

یہ سننا تھا کہ داش آکل چونک پڑا . دو بار اُس نے اُسے سر سے پیر تک دیکھا اور ماتھے پر ھاتھ پھیرا . اُسکی انڈے نما ٹوپی پیچھے کی طرف کھسک گئی تھی اور دورنگا ماتھا دکھائی دینے لگا تھا . آدھا دھوپ کی تاپ سے جل کر کتھئی رنگ کا ھوگیا تھا اور جو ٹوپی کے نیچے تھا سفید تھا . پھر اُس نے سر ھلایا' پائپ کو جس کی نے پر پچی کاری کا کام تھا جیب سے نکال نکالا . دھیرے دھیرے چلم میں تمباکو بھرا اور انگوٹھے سے اُسے جمایا . پھر اُسے سلگا کر بولا :

" ایشور حاجی کو چھما کریں . اب تو بیچارہ چل بسا' پر کچھ اچھا نہیں کر گیا' مجھے جھگڑے میں پھنسا گیا . خیر' تم جاؤ' میں پیچھے پیچھے آتا ھوں ."

یہ آدمی جو آیا تھا حاجی صمد کا پیشکار تھا . لمبی ڈگ بھرتا وہ قہوہ خانہ سے باھر ھو گیا . داش آکل کے ماتھے پر سکوڑیں پڑ گئیں . کچھ دیر تو دل بہلاؤ کے لئے پائپ کے پھنک لگائے' پر ایسا لگتا تھا مانو قہوہ خانہ کا ھنس مکھ آکاش اچانک کالے بادلوں سے ڈھک گیا ھو . کچھ دیر بعد داش آکل نے پائپ کی راکھ جھاڑی' کھڑا ھوا' اُونی کپڑے سے منڈھے منڈھے پنجرے کو قہوچی کے نوکر کو سونپا اور قہوہ خانہ سے باھر نکلا .

جس سمے داش آکل حاجی صمد کے مردانے میں

की मत लें, नीच ! क्या है कहीं का फक्कड़. लज्जा नहीं आती ? यह अच्छा भिखमंगों का पेशा लिया है. रात हुई और आदमियों के रास्ते में आ खड़े हुए. वली के बेटों की क़सम अगर फिर दुबारा बदमस्ती की तो तेरी मूछों को धूआं ही दे दूंगा ! इसी चाक़ू से कहीं दो टुकड़े न कर दिए हों !"

काका रुस्तम झटपट दुम कूल्हों में दबा चलता बना. पर दिल में कीने की आग भड़क गई. ताक में रहने लगा मौक़ा मिले तो इस से बदला लूं.

किन्तु दाश आकुल के साथ सारे शीराज़ के लोग मित्रता रखते थे. क्यों कि जहां उस ने एक तरफ़ सारे सर्दज़क के मुहल्ले को अपनी मीरास बना लिया था वहां बच्चों और औरतों से कुछ काम नहीं रखा था। बल्कि इस के विरुद्ध आदमियों के साथ भी दया भाव बरतता था अगर कोई मत मारा किसी औरत से हंसी करता या कड़ी बात कहता मिला तो उस के लिए दाश आकुल से जान छुड़ा कर निकल जाना कठिन था. बहुत दफ़ा देखा गया दाश आकुल ने लोगों की रुपये पैसे से सहायता की और मौज आ गई तो दूसरों का बोझ उठा कर उनके घर तक पहुंचा दिया. पर उस से यह नहीं देखा जाता था कि कोई भी अपने को उस से ऊंचा समझे. कहां काका रुस्तम जो प्रति दिन तीन मिसक़ाल अफ़ीम का धूआं कर देता था और सैकड़ों तरह की धोखा धड़ी में लगा रहता था.

जब से उसका क़हवा ख़ाने में अपमान हुआ था काका रुस्तम ज़हर का घूंट पिये बैठा था. एक दिन की बात है मूछों को चबा रहा था. छुरी से काटो तो बदन से लहू न निकले. बैठे बैठे कुछ देर पीछे उसने क़हक़हा लगाया. और सब लोग तो चुप रहे पर क़हवची का नौकर जो फ़लक रंग, खुले गले का कुर्ता, रात की टोपी, साटन का पजामा पहने पेट पर हाथ धरे खड़ा था हंसी के मारे उलटा हुआ जा रहा था. और सब भी उसे देख कर हंसी न रोक सके. काका अपनी जगह से उछल पड़ा, शीशे की चीनीदानी को उठा ज़ोर से क़हवची के नौकर के सिर पर दे पटका. चीनीदानी चायदानी से टकराई और चायदानी गिलाफ़ समेत मेज़ पर उलटती पलटती ज़मीन पर गिरी और कई प्याले टूट गए. काका रुस्तम खड़ा हो गया गुस्से से लाल क़हवा ख़ाने से बाहर निकल गया.

क़हवची ने परेशानी की हालत में चायदानी की तरफ़ देखा और बोला:—

"एक रुस्तम था और उसका हथियार ! एक मैं हूं और यह टूटी चायदानी !"

इस वाक्य को बड़ी दुख भरी आवाज़ में अदा किया.

کی مت لے، نیچ! کیا ہے کہیں کا پھکڑ۔ لجا نہیں آتی؟ یہ اچھا بھکمنگوں کا پیشہ لیا ہے۔ رات ہوئی اور آدمیوں کے راستے میں آ کھڑے ہوئے۔ ولی کے بیٹوں کی قسم اگر پھر دبارہ بدمستی کی تو تیری مونچھوں کو دھواں ہی دے دونگا! اسی چاقو سے کہیں دو ٹکڑے نہ کر دیئے ہوں!"

کاکا رستم جھٹ پٹ دم کولوں میں دبا چلتا بنا۔ پر دل میں کینے کی آگ بھڑک گئی۔ تاک میں رہنے لگا موقعہ ملے تو اس سے بدلہ لوں۔

کنتو داش آکل کے ساتھ سارے شیراز کے لوگ مترتا رکھتے تھے۔ کیونکہ جہاں اس نے ایک طرف سارے سردزک کے محلے کو اپنی میراث بنا لیا تھا وہاں بچوں اور عورتوں سے کچھ کام نہیں رکھا تھا۔ بلکہ اس کے وردھ آدمیوں کے ساتھ بھی دیا بھاؤ برتتا تھا اور اگر کوئی مت مارا کسی عورت سے ہنسی کرتا یا کڑی بات کہتا ملا تو اس کے لئے داش آکل سے جان چھڑا کر نکل جانا کٹھن تھا۔ بہت دفعہ دیکھا گیا داش آکل نے لوگوں کی روپے پیسے سے سہائتا کی اور موج آگئی تو دوسروں کا بوجھا اٹھا کر ان کے گھر تک پہونچا دیا۔ پر اس سے یہ نہیں دیکھا جاتا تھا کہ کوئی بھی اپنے کو اس سے اونچا سمجھے۔ کہاں کاکا رستم جو پرتی دن تین مسقال افیم کا دھواں کر دیتا تھا اور سینکڑوں طرح کی دھوکہ دھڑی میں لگا رہتا تھا۔

جب سے اس کا قہوہ خانہ میں اپمان ہوا تھا کاکا رستم زہر کا گھونٹ پئے بیٹھا تھا۔ ایک دن کی بات ہے مونچھوں کو چبا رہا تھا۔ چھری سے کاٹو تو بدن سے لہو نہ نکلے۔ بیٹھے بیٹھے کچھ دیر پیچھے اس نے قہقہہ لگایا۔ اور سب تو چپ رہے پر قہوچی کا نوکر جو فلک رنگ، کھلے گلے کا کرتہ، رات کی ٹوپی، ساٹن کا پاجامہ پہنے پیٹ پر ہاتھ دھرے کھڑا تھا ہنسی کے مارے الٹا ہوا جا رہا تھا۔ اور سب بھی اسے دیکھکر ہنسی نہ روک سکے۔ کاکا اپنی جگہ سے اچھل پڑا، شیشے کی چینی دانی کو اٹھا زور سے قہوچی کے نوکر کے سر پر دے پٹکا۔ چینی دانی چائے دانی سے ٹکرائی اور چائے دانی غلاف سمیت میز پر سے الٹتی پلٹتی زمین پر آ گری اور کئی پیالے ٹوٹ گئے۔ کاکا رستم کھڑا ہوگیا۔ غصہ سے لال قہوہ خانہ سے باہر نکل گیا۔

قہوچی نے پریشانی کی حالت میں چائے دانی کی طرف دیکھا اور بولا:—

"ایک رستم تھا اور اس کا ہتھیار! ایک میں ہوں اور یہ ٹوٹی چائے دانی!"

اس واکیہ کو بڑی دکھ بھری آواز میں ادا کیا۔

"क क क्या, क क कब बाप से आ, समझा !"
आकुल ने कहवजी के नौकर की तरफ़ घूर कर देखा
उसे आंख के इशारे अपना मतलब बताना चाहता हो.
र ने काका का कहना अनसुना कर दिया। दही को
ली में बांध फिर प्यालों को एक बड़े तांबे के बरतन में
पानी की बालटी में डुबोया. एक एक को आहिस्ता
स्ता निकाल कर सुखाया और मलमल से शीशे के
ों को रगड़ना शुरू किया. रगड़ की गिच गिच की
वाज़ सुनाई देने लगी.

काका रुस्तम को इस बे परवाही पर गुस्सा आया,
ी बार चिल्ला कर बोला "क क क क्या बैहरा है ! तु
से कह रहा हूं."

नौकर ने मुसकराते हुए दाश आकुल की तरफ़ निगाह
ी. काका रुस्तम ने दांतों से होंठ दबाते हुए कहा :

"अरे ! यह दमख़म ! जिन्हें ब बड़ा घ घ घमंड है
ड़े तीस मार खां बने हैं. आ जाएं. आज रात हो जाए
दो हाथ हम भी दे...देखें."

दाश आकुल उसी तरह बरफ़ को प्याले में घोलता रहा.
उसने कनखियों से हाल चाल को भांपा और शोख़ी से
हा लगाया, उसके सुफ़ेद पक्के दांतों की पूरी पंगति
ी से रंगी मूंछ के नीचे बिजली सी कौंद गई. वह बोला:

"ढीठ ! यह दल बल ! मालूम होगा कौन रुस्तम
वान है, सरदार की दुम !"

सब लोग मुस्करा दिए। हंसे इस लिए नहीं कि काका
म तुतला कर बोला था। क्यों, यह तो सब जानते ही
उस की ज़बान हकलाती है. बात यह थी दाश आकुल
शहर में सफ़ेद सिर वाले बैल की तरह मशहूर था.
को हर रोज़ मुल्ला इसहाक़ यहूदी की दूकान में जब
ो बार खिंची शराब की पूरी बोतल चढ़ा सर्दख़ाने
ले में खड़ा हो जाता तब काका रुस्तम तो किस गिनती
उस का बाबा भी होता तो घुटना टेक देता. काका
मझता था कि दाश आकुल से पाला नहीं ले सकता,
स का सामना कर सकता था. समझता क्यों नहीं, दो
मार खा चुका था, और तीन चार बार वह उस के
पर चढ़ बैठा था.

पर भाग्य की गति न्यारी है. एक दिन काका रुस्तम
दान खाली पाकर डींग हांकनी शुरू कर दी. पर वैसे
श आकुल यमदूत की तरह सिर पर आ पहुंचा. बरस
व्यंग से लगा कहने :

"काका, बड़ा घर का वीर बना है. मालूम होता है
म का अंडा ज़ियादा चढ़ा लिया है, बहुत मस्ती छाई
मालूम नहीं कौन है ! छोड़ इस ढिठाई को, बहुत दून

"پھپھپھ' اے...اے ایک چالے لے آ' سمجھا!" داش
آکل نے قہوجی کے نوکر کی طرف گھور کر دیکھا جیسے آنکھ
کے اشارے اپنا مطلب بتانا چاہتا ہو. نوکر نے کاکا کا کہنا ان
سنا کر دیا . دہی کو پوٹلی میں باندھ پھر پیالوں کو
ایک بڑے تانبے کے برتن میں بھر پانی کی بالٹی میں ڈبویا.
ایک ایک کو آہستہ آہستہ نکال کر سکھایا اور جھاڑن سے
شیشے کے پیالوں کو رگڑنا شروع کیا . رگڑ کی گز گز کی آواز
سنائی دینے لگی .

کاکا رستم کو اِس بے پرواہی پر غصہ آیا' دوسری بار چلا
کر بولا "ک-ک-ک کیا بہرہ ہے ! تو تجھ سے کہ رہا
ہوں ."

نوکر نے مسکراتے ہوئے داش آکل کی طرف نگاہ ڈالی .
کاکا رستم نے دانتوں سے ہونٹ دباتے ہوئے کہا : " ارے ! یہ
دم خم ! جنھیں ب بڑا گھ گھمنڈ ہے ب بڑے تیس مار
خاں بنے ہیں . آ جائیں . آج رات ہو جائے ایک دو ہاتھ
ہم بھی دے......دیکھیں ."

داش آکل اسی طرح برف کو پیالے میں گھولتا رہا .
پھر اُس نے کنکھیوں سے حال چال کو بھانپا' اور شوخی
سے قہقہہ لگایا' اُس کے سفید پکے دانتوں کی پوری پنگتی
مہندی سے رنگی مونچھ کے نیچے بجلی سی کوند گئی .
وہ بولا :

" ڈھیٹھ ! یہ دل بل ! معلوم ہوگا کون رستم پہلوان
ہے' سردار کی دم !"

سب لوگ مسکرا دیئے . ہنسے اِس لئے نہیں کہ
کاکا رستم تتلا کر بولا تھا . کیوں' یہ تو سب جانتے ہی تھے
کہ اُسکی زبان ہکلاتی ہے . بات یہ تھی داش آکل سارے
شہر میں سفید سر والے بیل کی طرح مشہور تھا . رات
کو ہر روز ملا اِسحاق یہودی کی دوکان میں جب وہ دوبار
کھنچی شراب کی پوری بوتل سردخانے محلے میں کھڑا
ہو جاتا تب کاکا رستم تو کس گنتی میں تھا اُس کا
بابا بھی ہوتا تو گھٹنا ٹیک دیتا . کاکا بھی سمجھتا تھا
کہ داش آکل سے پالا نہیں لے سکتا' نہ اُس کا سامنا کر
سکتا تھا . سمجھتا کیوں نہیں' دو دفعہ مار کھا چکا تھا'
اور تین چار بار وہ اُس کے سینے پر چڑھ بیٹھا تھا .

پر بھاگیہ کی گتی نیاری ہے . ایک دن کاکا رستم نے
میدان خالی پا کر ڈینگ ہانکنی شروع کر دی . پر
ویسے ہی داش آکل یم دوت کی طرح سر پر آ پہونچا .
برس پڑا ویَنگ سے کہنے لگا :

" کاکا بڑا گھر کا ویر بنا ہے . معلوم ہوتا ہے افیم کا
انٹا زیادہ چڑھا لیا ہے' بہت مستی چھائی ہے . جانتا
جانتا نہیں کون ہے ؟ چھوڑ اِس ڈھٹھائی کو' بہت دون

दाश आकुल

(सादिक़ हिदायत)

[तेहरान से डाक्टर ताराचन्द का एक ख़त आया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि :—"जब से मैं यहां आया हूं मैं ईरान की कलचर के अनेक पहलुओं में दिलचस्पी लेने की कोशिश कर रहा हूं. हाल में मैं ईरान का आजकल का कुछ साहित्य पढ़ता रहा हूं. यह नया ईरानी साहित्य पुराने और माने हुए फ़ारसी साहित्य से शैली में और भाव में बहुत अलग हो गया है. एक नई तरह की छोटी कहानियां चल पड़ी हैं. इन कहानियों के प्रसिद्ध लेखकों में एक लेखक का दर्जा बहुत ख़ास है. उसे अभी तक ईरान में बहुत से लोग नहीं जानते. बाहर तो और भी कम जानते हैं. लेकिन साहित्य के आलोचक उसके काम की बड़ी क़द्र करते हैं. छोटी कहानियों के लिखने में उसने बिलकुल एक नई रूह फूंक दी है. उसकी कहानियां आम जनता, उनके दुखों और उनकी मुसीबतों को बयान करती हैं. उसकी भाषा भी उसके दीन-हीन पात्रों की बोल चाल की भाषा है. इस छोटी कहानी लिखने वाले का नाम सादिक़ हिदायत है. उसने बहुत सी कहानियां लिखीं. क़रीब तीन साल हुए उसका देहान्त हो गया. वह ईरान से पेरिस गया हुआ था वहीं अपने हाथों उसने अपनी जान खो दी. अपने फ़ुरसत के वक़्तों में मैंने उसकी एक छोटी कहानी का हिन्दी में तरजुमा किया है जो इस ख़त के साथ मैं तुम्हें भेज रहा हूं. यह उसके अपने ढंग की एक कहानी है. ईरान के शहरों में साधारन ग़रीब लोगों के जीवन के वातावरन का इससे पता चलता है." यही कहानी हम नीचे दे रहे हैं.
—सुन्दरलाल]

शीराज़ के रहने वाले सभी जानते थे कि दाश आकुल और काका रुस्तम एक दूसरे को एक आंख नहीं भाते. एक की परछाईं पड़ जाए तो दूसरा छुरी भोंकने को तैयार. एक दिन दाश आकुल दुमेल के क़हवा ख़ाने में बेंच पर पलथी मारे बैठा था. यह उस का पुराना अड्डा था. उसके पास एक ऊनी कपड़े से मंढ़ा पिंजरा रखा था. इस पर एक लाल कपड़ा पड़ा था. दाश आकुल नीले रंग के प्याले में उंगली से बरफ़ घोल रहा था. अचानक काका रुस्तम दरवाज़े से घुसा और उस की तरफ़ घृना की निगाह डालते हुए, कमर से बंधी शाल को हाथ से संभालते हुए सामने की बेंच पर बैठ गया. फिर क़हवा ख़ाने के नौकर की तरफ़ मुंह कर के बोला :

داش آکل

(صادق ھدایت)

[طہران سے ڈاکٹر تارا چند کا ایک خط آیا ہے جس میں اُنھوں نے لکھا ہے کہ :—"جب سے میں یہاں آیا ہوں میں ایران کی کلچر کے انیک پہلوؤں میں دلچسپی لینے کی کوشش کر رہا ہوں. حال میں میں ایران کا آج کل کا کچھ ساہتیہ پڑھتا رہا ہوں. یہ نیا ایرانی ساہتیہ پرانے اور مانے ہوئے فارسی ساہتیہ سے شیلی میں اور بھاؤ میں بہت الگ ہو گیا ہے. ایک نئی طرح کی چھوٹی کہانیاں چل پڑی ہیں. ان کہانیوں کے پرسدھ لیکھکوں میں ایک لیکھک کا درجہ بہت خاص ہے. اسے ابھی تک ایران میں بہت سے لوگ نہیں جانتے. باہر تو اور بھی کم جانتے ہیں. لیکن ساہتیہ کے آلوچک اس کے کام کی بڑی قدر کرتے ہیں. چھوٹی کہانیوں کے لکھنے میں اس نے بالکل ایک نئی روح پھونک دی ہے. اسکی کہانیاں عام جنتا، ان کے دکھوں اور ان کی مصیبتوں کو بیان کرتی ہیں. اسکی بھاشا بھی اس کے دین ہین پاتروں کی بول چال کی بھاشا ہے. اس چھوٹی کہانی لکھنے والے کا نام صادق ھدایت ہے. اس نے بہت سی کہانیاں لکھیں. قریب تین سال ہوئے اس کا دیہانت ہو گیا. وہ ایران سے پیرس گیا ہوا تھا وہیں اپنے ہاتھوں اس نے اپنی جان کھو دی. اپنے فرصت کے وقتوں میں میں نے اسکی ایک چھوٹی کہانی کا ہندی میں ترجمہ کیا ہے جو اس خط کے ساتھ میں تمہیں بھیج رہا ہوں. یہ اس کے اپنے ڈھنگ کی ایک کہانی ہے. ایران کے شہروں میں سادھارن غریب لوگوں کے جیون کے واتاورن کا اس سے پتہ چلتا ہے." یہی کہانی ہم نیچے دے رہے ہیں.
—سندرلال]

شیراز کے رہنے والے سبھی جانتے تھے کہ داش آکل اور کاکا رستم ایک دوسرے کو ایک آنکھ نہیں بھاتے. ایک کی پرچھائیں پڑ جائے تو دوسرا چھری بھونکنے کو تیار. ایک دن داش آکل دسیل کے قہوہ خانے میں بینچ پر پلتھی مارے بیٹھا تھا. یہ اس کا پرانا اڈا تھا. اس کے پاس ایک اونی کپڑے سے منڈھا پنجرہ رکھا تھا. اس پر ایک لال کپڑا پڑا تھا. داش آکل نیلے رنگ کے پیالے میں انگلی سے برف گھول رہا تھا. اچانک کاکا رستم دروازہ سے گھسا اور اسکی طرف گھرنا کی نگاہ ڈالتے ہوئے کمر سے بندھی شال کو ہاتھ سے سنبھالتے ہوئے سامنے کی بینچ پر بیٹھ گیا. پھر قہوہ خانہ کے نوکر کی طرف منہ کر کے بولا :

अगर आज हिन्दी प्रेमी जान बूझ कर यह फ़ैसला ते होते कि हिन्दी की तरक़्क़ी में कठिनाइयां होती हैं, तो ो मगर हम न तो संस्कृत उच्चारन छोड़ सकते हैं संस्कृत व्याकरन, तो भी उनकी पालिसी समझ में आ ती थी. सारा दुख तो यह कि हिन्दी प्रेमी उलटा रास्ता ते हुए भी, उसी को सीधा रास्ता समझते हैं और नी भूल से हिन्दी को कठिन बनाते जा रहे हैं.

अगर हिन्दी प्रेमी प्रजा राज के क़ायल न होते, जनताई ा का आदर करने वाले न होते तो भी यह मन बहलावा सकता था कि क्या किया जाए, उनके विचार ही प्रजा विरोध में हैं. हसरत की बात तो यह कि खुद प्रजा पुजारी जनताई भाषा का सच्चा आदर न कर के दो ढाई हज़ार स पहले की व्याकरन को फिर जनमाना चाहते हैं. वह भूल रहे हैं कि इस मक़सद में वह सफल होंगे भी तो नी कोशिश और मेहनत के बाद! इतनी ही कोशिश मेहनत अगर वह आजकल की जनताई भाषा को ाने के लिए करें तो उन्हें दस गुनी क़ामयाबी होगी. वह ज कल के जनताई तरीक़े छोड़ कर डेढ़ दो हज़ार बरस ले की व्याकरन और उच्चारन को दोबारा ज़िन्दा करने कोशिश कर रहे हैं और साथ ही हिन्दी को राष्ट्र भाषा देश की हर दिल प्रेमी और प्रचलित भाषा बनाने सपना देख रहे हैं.

اگر نام ماتر هندی پریمی جان بوجهکر یہ فیصلہ کرتے هوتے کہ هندی کی ترقی میں کٹهنائیاں هوتی هیں' تو هوئے دو مگر هم نہ تو سنسکرت اُچارن چهوڑ سکتے هیں نہ سنسکرتی ویاکرن' تو بهی اُن کی پالسی سمجه میں آسکتی تهی. سارا دکه تو یہ هے کہ هندی پریمی اُلٹا راستا چلتے هوئے بهی' اُسی کو سیدها راستا سمجهتے هیں اور اپنی بهول سے هندی کو کٹهن بناتے جا رهے هیں.

اگر هندی پریمی پرجا راج کے قائل نہ هوتے' جنتائی بهاشا کا آدر کرنے والے نہ هوتے تو بهی یہ من بہلوا هوسکتا تها کہ کیا کیا جائے' اُن کے وچار هی پرجا کے وِرودھ میں هیں. حسرت کی بات تو یہ هے کہ خود پرجا پجاری جنتائی بهاشا کا سچا آدر نہ کرکے دو ڈهائی هزار برس پہلے کی ویاکرن کو پهر جلانا چاهتے هیں. وہ بهول رهے هیں کہ اِس مقصد میں وہ سپهل هونگے بهی تو کتنی کوشش اور محنت کے بعد! اتنی هی کوشش اور محنت اگر وہ آجکل کی جنتائی بهاشا کو پهیلانے کے لئے کریں تو اُنہیں دس گنی کامیابی هوگی. وہ آجکل کے جنتائی طریقے چهوڑ کر ڈیڑھ هزار برس پہلے کی ویاکرن اور اچارن کو دوبارہ زندا کرنے کی کوشش کر رهے هیں اور ساته هی هندی کو راشٹر بهاشا سارے دیس کی هر دل پریمی اور پرچلت بهاشا بنانے کا سپنا دیکه رهے هیں.

जो लिखने वाला या तक़रीर करने वाला चुन चुन कर संस्कृत या अरबी फ़ारसी के शब्दों का ही इस्तेमाल करता है वह देश का नुक़सान करता है. हमारी राष्ट्र भाषा में वह सब तरह के शब्द आने चाहिये जो जनता में काम आने लगे हैं. फैली हुई भाषा में यह ताक़त रहती ही है इसलिये तो वह सब जगह काम में आती है.

—महात्मा गांधी

جو لکهنے والا یا تقریر کرنے والا چن چن کر سنسکرت یا عربی فارسی کے شبدوں کا هی استعمال کرتا هے وہ دیش کا نقصان کرتا هے. هماری راشٹر بهاشا میں وہ سب طرح کے شبد آنے چاهئیں جو جنتا میں کام آنے لگے هیں. پهیلی هوئی بهاشا میں یہ طاقت رهتی هی هے اس لئے تو وہ سب جگہ کام میں آتی هے.

—مهاتما گاندهی

संस्कृत व्याकरण और फ़ारसी, अरबी या अंगरेज़ी क़ायदों को छोड़ कर हिन्दुस्तानी भाषा पर सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरण लागू करें !

उरदू के हामी उरदू में दाख़िल शुदा लफ़्ज़ों पर अरबी और फ़ारसी क़वायद लागू करके अदबी जुर्म कर रहे हैं. वह अपनी ज़बान को मुशकिल बना कर ख़ुद उरदू को नुक़सान पहुंचा रहे हैं, क्योंकि मुशकिल उरदू को ख़ुद उरदू के आम पढ़े लिखे नहीं समझते. हिन्दी प्रेमी हिन्दी भाषा पर संस्कृत व्याकरण लागू करके बड़ा भाशाई अपराध कर रहे हैं. इसकी वजह से हिन्दी कठिन होती जा रही है और हिन्दी जनता हिन्दी से फ़ायदा नहीं उठा सक रही है. इसलिए और भी ज़रूरी है कि हिन्दुस्तानी के पक्ष-पाती हमेशा इस असूल पर अमल करें कि हिन्दुस्तानी पर सिर्फ़ हिन्दुस्तानी व्याकरण का लागूपन होना चाहिए.

मिसाल के तौर पर देखिए, उरदू और हिन्दी में गुन रूप बनाने का आम क़ायदा यह है कि लफ़्ज़ के आख़िर में (ी) लगाई जाए. इस तरीक़े में यह आसानी है कि सिफ़त बनने से लफ़्ज़ में एक हरफ़ का एज़ाफ़ा होता है. इस की शकल नहीं बदलती. जैसे बंगाली शेर 'सिन्धी ताजिर' मारवाड़ी पहनावा' समाजी हालत.

इस आम समझ और ठेट हिन्दी तरीक़े के ख़िलाफ़ नाम मात्र हिन्दी प्रेमी

इतिहास	से	इतिहासी	बनाने की	बजाए	इतिहासिक
समाज	,,	समाजी	,,	,,	समाजिक
धर्म	,,	धर्मी	,,	,,	धारमिक
बरस	,,	हर बरस	कहने	,,	वारशिक
मास	,,	तमासी	,,	,,	तमासिक
राजनीति	,,	राजनीति	बनाने	,,	राजनीतिक

इस्तेमाल किए जाते हैं. इसी तरह दैनिक, साहित्यिक, सप्ताहिक कहना अहिन्दी तरीक़ा है, जिस को रिवाज देने के लिए हिन्दी के सूरमा बड़ी कोशिश कर रहे हैं.

हिन्दी तरीक़े को छोड़ कर ग़ैरहिन्दी तरीक़े से लफ़्ज़ों का गुन रूप बनाना हिन्दी प्रेमियों का हिन्दी प्रेम नहीं, संस्कृत पूजा और संस्कृती रोब दबाव है जिस के कारन उनमें ख़ुद अपनी भाशा के बारे में छुट वहम (Inferiority Complex) पाया जाता है. हिन्दी प्रेमियों के इस छुट वहम और इसकी वजह से पैदा होने वाली शुद्धी तहरीक से ख़ुद हिन्दी को जितना नुक़सान पहुंचा और अब भी पहुंच रहा है, इस का अन्दाज़ा करना आसान नहीं. हिन्दी वाले और उरदू वाले एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं. अहिन्दी इलाक़ों में रहने वाले लोगों के लिए हिन्दी का सीखना और समझना मुशकिल होता जा रहा है और हिन्दी की तरक़्क़ी में रोड़े अटकाये जा रहे हैं.

سنسکرت ویاکرن اور فارسی، عربی یا انگریزی قاعدوں کو چھوڑ کر ہندستانی بھاشا پر صرف ہندستانی ویاکرن لاگو کریں !

اردو کے حامی اردو میں داخل شدا لفظوں پر عربی اور فارسی قواعد لاگو کرکے ادبی جرم کر رہے ہیں ۔ وہ اپنی زبان کو مشکل بناکر خد اردو کو نقصان پہنچا رہے ہیں، کیوں کہ مشکل اردو کو خد اردو کے آم پڑھے لکھے نہیں سمجھتے ۔ ہندی پریمی ہندی بھاشا پر سنسکرت ویاکرن لاگو کرکے بڑا بھاشائی اپرادھ کر رہے ہیں۔ اس کی وجہ سے ہندی کٹھن ہوتی جا رہی ہے اور ہندی جنتا ہندی سے فایدا نہیں اٹھا سک رہی ہے ۔ اس لئے اور بھی ضروری ہے کہ ہندستانی کے پکش پاتی ہمیشا اس اسول پر امل کریں کہ ہندستانی پر صرف ہندستانی ویاکرن کا لاگو پن ہونا چاہئے ۔

مثال کے طور پر دیکھئے، اردو اور ہندی میں گن روپ بنانے کا آم قاعدا یہ ہے کہ لفظ کے آخر میں (ی) لگائی جائے. اس طریقے میں یہ آسانی ہے کہ صفت بننے سے لفظ میں ایک حرف کا اضافا ہوتا ہے ۔ اس کی شکل نہیں بدلتی. جیسے بنگالی شیر، سندھی تاجر، مارواڑی پہناوا، سماجی حالت ۔

اس آم سمجھ اور ٹھیٹ ہندی طریقے کے خلاف نام ماتر ہندی پریمی

اتہاس	سے	اتہاسی	بنانے کی	بجائے	اتہاسک
سماج	,,	سماجی	,,		ساماجک
دھرم	,,	دھرمی	,,		دھارمک
برس	,,	ہر برس	کہنے	,,	وارشک
ماس	,,	تماسی	,,		تماسک
راج نیتی	,,	راج نیتی	بنانے	,,	راج نیتک

استعمال کئے جاتے ہیں ۔ اسی طرح دینک، ساہتیک، سپتاہک کہنا اہندی طریقا ہے جس کو رواج دینے کے لئے ہندی کے سورما بڑی کوشش کر رہے ہیں ۔

ہندی طریقے کو چھوڑ کر غیر ہندی طریقے سے لفظوں کا گن روپ بنانا ہندی پریمیوں کا ہندی پریم نہیں، سنسکرت پوجا اور سنسکرتی رعب دباؤ ہے جس کے کارن ان میں خد اپنی بھاشا کے بارے میں چھٹ وہم (Inferiority Complex) پایا جاتا ہے ۔ ہندی پریمیوں کے اس چھٹ وہم اور اس کی وجہ سے پیدا ہونے والی شدھی تحریک سے خد ہندی کو جتنا نقصان پہنچا اور اب بھی پہنچ رہا ہے، اس کا اندازا کرنا آسان نہیں ۔ ہندی والے اور اردو والے ایک دوسرے سے دور ہوتے جا رہے ہیں۔ اہندی علاقوں میں رہنے والے لوگوں کے لئے ہندی کا سیکھنا اور سمجھنا مشکل ہوتا جا رہا ہے اور ہندی کی ترقی میں روڑے اٹکائے جا رہے ہیں ۔

सारी लिखावट में भी लिख दिया जाए और सब किताबें नागरी में भी छापी जाएं तो अच्छा होगा.

इन किताबों में सिर्फ़ पेशावरी इसतलाहें हैं. मेरी तजवीज़ यह भी है कि पेशावरी इसतलाहों के अलावा आम शब्द, तरकीबें, फ़िक़रे, कहावतें भी यकजाई जाएं जो इलाक़ाई ऐतबार से मुख़तलिफ़ जिल्दों में छापा की जाएं. जैसे हैदराबाद की हिन्दुस्तानी पूंजी, बिहार की हिन्दुस्तानी पूंजी, राजपूताने की हिन्दुस्तानी पूंजी.

(ब) आमयाबे का दूसरा पहलू यह है कि उत्तर देश और बीच देश के तमाम प्रान्तों और इलाक़ों में सिर्फ़ मुक़ामी शोहरत रखने वाले शब्दों को माने और शब्दकोष के साथ मुरत्तब और छापा किया जाए ताकि हर शब्द जो किसी इलाक़े में बोला या समझा जाता है, कुल देसी अहमियत हासिल कर के टकसाली और आम भाषा में शामिल हो सके.

मुख़तलिफ़ पेशों और इलाक़ों में बाज़ ऐसे अच्छे अच्छे शब्द बोले जाते हैं कि मौक़ा मिले तो वह बहुत जल्द सारे देश में चल पड़ें. बहुत से शब्द अब भी मौजूद हैं. सिर्फ़ हम उनसे वाक़िफ़ नहीं.

हमें हिन्दुस्तानी को फैलाने, तरक्क़ी देने और बलवान बनाने का एक असूल यह है कि उरदू वालों की मतरूकीयत की पालसी और हिन्दी वालों की छुआ छात और छूटम छाट की पालिसी के बिलकुल उलटा अमल करते हुए तमाम पेशों, ज़मानों और इलाक़ों के शब्दों को अपनाएं, फैलाएं और उन्हें पनपने का मौक़ा दें.

आख़िर में हिन्दुस्तानी शब्दयात का एक असूल बयान करना ज़रूरी है जिस को दुहराते दुहराते हिन्दुस्तानी के हमदर्द थक गए मगर न तो हिन्दी प्रेमी मानते हैं और न उरदू के हामी! सब से ज़ियादा मज़े की बात तो यह है कि ख़ुद हिन्दुस्तानी के मुवाफ़िक़ अपने ही माने हुए असूलों को अकसर भूल जाते हैं और बाज़ मर्तबा अपने ही असूलों का ख़ुद ही विरोध करते हैं! बहरहाल यह असूल जिस से हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी हो सकती है यह है कि हिन्दी भाशा पर हिन्दी ग्रेमर और उरदू भाशा पर उरदू ग्रेमर का असर होना चाहिए न यह कि हिन्दी पर संस्कृत व्याकरन लागू की जाए और उरदू पर फ़ारसी अर्बी क़वायद लादीं जाएं या दोनों पर अंगरेज़ी ग्रेमर.

इस असूल को हम यूं भी बयान कर सकते हैं कि शब्द चाहे किसी ज़बान के हों हिन्दी, उरदू और हिन्दुस्तानी में दाख़िल होने के बाद उनके गुन रूप (सिफ़ती शकलें) उनके कईपन (बहु वचन या जमा) हिन्दी, उरदू और हिन्दुस्तानी तरीक़े से बनाए जाएं न कि संस्कृत, फ़ारसी और अर्बी तरीक़े से. ख़ास कर हिन्दुस्तानी के लिए तो यह लाज़मी है कि हम

سلشاری لکھاوٹ میں بھی لکھ دیا جائے اور سب کتابیں ناگری میں بھی چھاپی جائیں تو اچھا ہوگا ۔

ان کتابوں میں سرف پیشہ وری اصطلاحیں ہیں ۔ میری تجویز یہ بھی ہے کہ پیشہ وری اصطلاحوں کے الوہ آم لفز' ترکیبیں' فقرے' کہاوتیں بھی یکجا کی جائیں جو علاقائی اتبار سے مختلف جلدوں میں چھاپا کی جائیں ۔ جیسے حیدرآباد کی ہندستانی پونجی؛ بہار کی ہندستانی پونجی' راجپوتانے کی ہندستانی پونجی ۔

(ب) آمیارے کا دوسرا پہلو یہ ہے کہ اتر دیس اور بیچ دیس کے تمام پرانتوں اور ائلاقوں میں سرف مقامی شہرت رکھنے والے لفزوں کو مانے اور اللفز کے ساتھ مرتب اور چھاپا کیا جائے تاکہ ہر لفز جو کسی ائلاقے میں بولا یا سمجھا جاتا ہے' کل دیسی اہمیت حاصل کر کے ٹکسالی اور آم بھاشا میں شامل ہو سکے ۔

مختلف پیشوں اور ائلاقوں میں باز ایسے اچھے اچھے لفز بولے جاتے ہیں کہ موقا ملے تو وہ بہت جلد سارے دیس میں چل پڑیں ۔ بہت سے لفز اب بھی موجود ہیں ۔ سرف ہم ان سے واقف نہیں ۔

ہمیں ہندستانی کو پھیلانے' ترقی دینے اور بلوان بنانے کا ایک اصول یہ ہے کہ اردو والوں کی متروکیت کی پالسی اور ہندی والوں کی چھوا چھات اور چھوتم چھات کی پالیسی کے بلکل الٹا امل کرتے ہوئے تمام پیشوں' زمانوں اور ائلاقوں کے لفزوں کو اپنائیں' پھیلائیں اور انہیں پنپنے کا موقا دیں ۔

آخر میں ہندستانی شبدیات کا ایک اصول بیان کرنا ضروری ہے جس کو دہراتے دہراتے ہندستانی کے ہمدرد تھک گئے مگر نہ تو ہندی پریمی مانتے ہیں اور نہ اردو کے حامی ! سب سے زیادہ مزے کی بات تو یہ ہے کہ خد ہندستانی کے موافق اپنے ہی مانے ہوئے اصولوں کو اکسر بھول جاتے ہیں اور باز مرتبہ اپنے ہی اصولوں کا خد ہی ورودھ کرتے ہیں ! بہر حال یہ اصول جس سے ہندستانی کی ترقی ہوسکتی ہے یہ ہے کہ ہندی بھاشا پر ہندی گریمر اور اردو بھاشا پر اردو گریمر کا اثر ہونا چاہئے نہ یہ کہ ہندی پر سنسکرت ویاکرن لاگو کی جائے اور اردو پر فارسی عربی قواعد لادی جائے یا دونو پر انگریزی گریمر ۔

اس اصول کو ہم یوں بھی بیان کرسکتے ہیں کہ لفز چاہے کسی زبان کے ہوں ہندی' اردو اور ہندستانی میں داخل ہونے کے بعد ان کے گن روپ (صفتی شکلیں) ان کے کئی پن (بہو وچن یا جمع) ہندی' اردو اور ہندستانی طریقے سے بنائے جائیں نہ کہ سنسکرت' فارسی اور عربی طریقے سے. خاص کر ہندستانی کے لئے تو یہ لازمی ہے کہ ہم

अपना बनाने की कोशिश में अपनी जानकारी साबित कर रहे हैं. इसलिये हिन्दुस्तानी प्रेमियों का यह फ़र्ज़ है कि वह हिन्दी वालों और उरदू वालों के छोड़े हुए लफ़्ज़ों को अपनाएं, भुलाए हुए लफ़्ज़ों को फिर से जारी करें और हिन्दुस्तानी के शब्द सागर को बढ़ाने के लिये मुख़्तलिफ़ प्रान्तों में बोले जाने वाले इलाक़ाई शब्दों और भांत भांत के पेशों में चलन पाई हुई इस्तलाहों को सलीक़े से एक जा करके इनको रिवाज देने की कोशिश करें.

जिस तरह कशिश का उलटा तोड़ कशिश, इलज़ाम का बरअक्स तोड़ इलज़ाम होता है, उसी तरह तर्क का उलटा अमनल तोड़ तर्क होना चाहिये : जिससे मुराद कई कोशिशें हैं.

तोड़ तर्क का मतलब

(i) तोड़ तर्क से मुराद पहले तो अपनावा है. याने हर वह लफ़्ज़ जो आम हो चुका हो हिन्दुस्तानी का जुज़ है. चाहे वही लफ़्ज़ उरदू वाले मतरूक क़रार दें या हिन्दी प्रेमी छोड़ दें.

(ii) भूले बिसरे और सचमुच छोड़े हुए लफ़्ज़ों को दुबारा चालू किया जाय. इस तरह पराये लफ़्ज़ों को बाज़ जनमा कर (याने Revive कर के) हिन्दुस्तानी लफ़्ज़ों की तादाद बढ़ाई जावे. इस तरीक़े को बाज़ जनमयावा (Revival) कहा जा सकता है.

* आमयावा

(iii) तोड़ तर्क का एक और जुज़ आमयावा याने Popularization है. इससे मुराद उन लफ़्ज़ों को आम करने और देस भर में रिवाज देने से है जो अब ख़ास ख़ास इलाक़ों और प्रान्तों में बोले जाते हैं या इस्तलाहों की तरह ख़ास ख़ास पेशों में समझे और उनहीं इलाक़ों में इस्तेमाल किये जाते हैं गोया आमयावे के दो पहलू हैं. इन दोनों पर अलग अलग टीका की जाती है.

(अ) हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी के लिये यह ज़रूरी है कि पेशावरी लुग़त जिसमें न सिर्फ़ तमाम लफ़्ज़ और इस्तलाहें बल्कि फ़िक़रे और तरकीबें भी हों मरत्तिब की जाएं और उनको सलीक़े से साफ़, सही, आवाज़पाती लिखावट के साथ छापा किया जाए ताकि हर लफ़्ज़ के माने और उच्चारण आसानी से मालूम हो सकें. जहां कहीं ज़रूरत हो तसवीरें भी दी जाएं.

इस सिलसिले में अनजुमन तरक़्क़ी उरदू ने बड़ा अच्छा काम किया है. उसने सात जिल्दों में बीसियों पेशों से सम्बन्ध रखने वाले लफ़्ज़ों की डिक्शनरियां छाप दीं. आइनदा एडीशन में हर लफ़्ज़ हिन्दी लिखावट और

لفظ چلانے کی کوشش میں اپنی جانکاری ثابت کر رهے هیں۔ اس لئے هندستانی پریمیوں کا یہ فرض هے کہ وہ هندی والوں اور اردو والوں کے چھوڑے هوئے لفظوں کو اپنائیں' بھلائے هوئے لفظوں کو پھر سے جاری کریں اور هندستانی کے شبد ساگر کو بڑھانے کے لئے مختلف پرانتوں میں بولے جانے والے علاقائی شبدوں اور بھانت بھانت کے پیشوں میں چلن پائی هوئی اصطلاحوں کو سلیقے سے ایک جا کر کے ان کو رواج دینے کی کوشش کریں۔

جس طرح کشش کا الٹا توڑ کشش' الزام کا برعکس توڑ الزام هوتا هے' اسی طرح ترک کا الٹا امل توڑ ترک هونا چاهئے ؛ جس سے مراد کئی کوشش هیں۔

توڑ ترک کا مطلب

(i) توڑ ترک سے مراد پهلے تو اپناوا هے یانے هر وہ لفظ جو عام هو چکا هو هندستانی کا جز هے۔ چاهے وهی لفظ اردو والے متروک قرار دیں یا هندی پریمی چھوڑ دیں۔

(ii) بھولے بسرے اور سچ مچ چھوڑے هوئے لفظوں کو دوبارا چالو کیا جائے۔ اس طرح پرائے لفظوں کو باز جنما کر (یانے Revive کر کے) هندستانی لفظوں کی تعداد بڑھائی جائے۔ اس طریق کو باز جنمیاوا (Reival) کہا جا سکتا هے۔

آمیاوا

(iii) توڑ ترک کا ایک اور جز آمیاوا یانے Popu-larization هے۔ اس سے مراد ان لفظوں کو عام کرنے اور دیس بھر میں رواج دینے سے هے جو اب خاص خاص علاقوں اور پرانتوں میں بولے جاتے هیں یا اصطلاحوں کی طرح خاص خاص پیشوں میں سمجھے اور انهیں علاقوں میں استعمال کئے جاتے هیں۔ گویا آمیاوے کے دو پہلو هیں۔ ان دونو پر الگ الگ ٹیکا کی جاتی هے۔

(الف) هندستانی کی ترقی کے لئے یہ ضروری هے کہ پیشہ وری لغت جس میں نہ صرف تمام لفظ اور اصطلاحیں بلکہ فقرے اور ترکیبیں بھی هوں مرتب کی جائیں اور ان کو سلیقے سے صاف' صحیح' آوازپاتی لکھاوٹ کے ساتھ چھاپا کیا جائے تاکہ هر لفظ کے مانے اور اچارن آسانی سے معلوم هو سکیں۔ جہاں کہیں ضرورت هو تصویریں بھی دی جائیں۔

اس سلسلے میں انجمن ترقی اردو نے بڑا اچھا کام کیا هے۔ اس نے سات جلدوں میں بیسیوں پیشوں سے سمبندھ رکھنے والے لفظوں کی ڈکشنریاں چھاپ دیں۔ آئندہ ایڈیشن میں هر لفظ هندی لکھاوٹ اور

हिन्दुस्तानी शब्दयात का दसवां और ग्यारहवां असूल :

तोड़ तर्क और हिन्दुस्तानी भाषा पर व्याकरन का लागूपन

(डाक्टर जाफ़र हसन)

उरदू ज़बान में एक बहुत बड़ा भाषाई झुकाव लफ़्ज़ों को तर्क करना याने छोड़ देना है, हर वह लफ़्ज़ जिसके बारे में मामूली सा भी शुबहा हो कि उसका इस्तेमाल इन दिनों नहीं किया जाता, मतरूक याने छोड़ा हुआ ठहराया जाता है और चन्द बरसों में बिलकुल भुला दिया जाता है. लफ़्ज़ों के छोड़ने का यह झुकाव हमारी भाषा को बहुत नुक़सान पहुंचा चुका है.

एक ज़माना था कि उरदू के बड़े बड़े शायर कसरत से हिन्दी लफ़्ज़ जो आज कल उरदू-दां जानते ही नहीं, बग़ैर तकल्लुफ़ इस्तेमाल करते थे: चुनांचे प्रेम, साजन, नयन, जग, बचन जैसे बीसियों नहीं सैकड़ों बल्कि हज़ारों लफ़्ज़ कम इस्तेमाल होते होते बिलकुल छोड़ दिये गए ! तर्क पसन्दी याने अच्छे ख़ासे लफ़्ज़ों को मतरूक क़रार देने का झुकाव उरदू वालों में तो था ही और अब भी है; हमारे फूटे भागों से यह वबा हिन्दी प्रेमियों को भी मुतास्सिर (असर) कर गई और ख़ास कर पिछली दो तीन दहाइयों में आम तौर पर समझे और बोले जाने वाले उरदू लफ़्ज़ों के साथ साथ इन ठेट हिन्दी के लफ़्ज़ों को छोड़ना शुरू किया जो उरदू में भी बोले जाते थे, चुनांचे वकील और मुद्दई के अलावा ऐसे लफ़्ज़ भी तर्क किये गए जो ख़ालिस हिन्दी थे : मिसाल के तौर पर दिया-सलाई की बजाय "धूम्रशिला" का लफ़्ज़ सुझाया गया है ! हमारे विधान के हिन्दी तरजुमे में अछूतपन के लिये अस्पर्शयता इस्तेमाल किया गया.

ज़बान को इस तरह मुशकिल बनाने और लफ़्ज़ों को छोड़ छोड़ कर इसका ज़ख़ीरा कम करने से आख़िरकार ख़ुद हमें नुक़सान पहुंचता है. हमारी ज़बान मुशकिल हो जाती है और मुशकिल भाषा के ज़रिये तालीम हासिल करना दूभर हो जाता है.

हिन्दी वालों और उरदू वालों से कोई तवक़्क़े (उम्मीद) नहीं कि ख़ुद अपनी रविश बदलेंगे. दोनों पाक-बाज़ी के ज़ब्त में अपने लफ़्ज़ों के साथ साथ अंगरेज़ी के ज़रिये आए हुए पूरबी भाषाओं के चालू. आम समझ और सुन्दर सुन्दर शब्द छोड़ कर मुशकिल, बोझिल और बिहंगम

ھندستانی شبدیات کا دسواں اور گیارھواں اسول :

توڑ ترک اور ھندستانی بھاشا پر ویاکرن کا لاگوپن

(ڈاکٹر جافر حسن)

اُردو زبان میں ایک بہت بڑا بھاشای جھکاؤ لفظوں کو ترک کرنا یانے چھوڑ دینا ھے . ھر وہ لفظ جس کے بارے میں مامولی سا بھی شبہ ھو کہ اس کا استعمال اندنوں نہیں کیا جاتا، متروک یانے چھوڑا ھوا ٹھہرا جاتا ھے اور چند برسوں میں بلکل بھلا دیا جاتا ھے . لفظوں کے چھوڑنے کا یہ جھکاؤ ھماری بھاشا کو بہت نقصان پہنچا چکا ھے .

ایک زمانا تھا کہ اردو کے بڑے بڑے شاعر کثرت سے ھندی لفظ جو آجکل اردو داں جانتے ھی نہیں، بغیر تکلف استعمال کرتے تھے : چنانچہ پریم، ساجن، نین، جگ، بچن جیسے بیسیوں نہیں سیکڑوں بلکہ ھزاروں لفظ کم استعمال ھوتے ھوتے بلکل چھوڑ دئے گئے ! ترک پسندی یانے اچھے خاصے لفظوں کو متروک قرار دینے کا جھکاؤ اردو والوں میں تو تھا ھی اور اب بھی ھے؛ ھمارے پھوٹے بھاگوں سے یہ وبا ھندی پریمیوں کو بھی متاثر کر گئی اور خاص کر پچھلی دو تین دھائیوں میں آم تور پر سمجھے اور بولے جانے والے اردو لفظوں کے ساتھ ساتھ ان ٹھیٹ ھندی کے لفظوں کو چھوڑنا شرو کیا جو اردو میں بھی بولے جاتے تھے، چنانچہ وکیل اور مدعی کے الاوا ایسے لفظ بھی ترک کئے گئے جو خالص ھندی تھے : مثال کے طور پر دیاسلائی کی بجائے " دھومر شلا " کا لفظ سجھایا گیا ھے ! ھمارے ودھان کے ھندی ترجمے میں اچھوت پن کے لئے اسپرشیتا استعمال کیا گیا .

زبان کو اس طرح مشکل بنانے اور لفظوں کو چھوڑ چھوڑ کر اس کا زخیرا کم کرنے سے آخرکار خد ھمیں نقصان پہنچتا ھے . ھماری زبان مشکل ھو جاتی ھے اور مشکل بھاشا کے ذرئے تالیم حاصل کرنا دوبھر ھو جاتا ھے.

ھندی والوں اور اردو والوں سے کوئی توقع (امید) نہیں کہ خد اپنی روش بدلیں گے ھولو پاکبازی کے خبط میں اپنے لفظوں کے ساتھ ساتھ انگریزی کے ذرئے آئے ھوئے پوربی بھاشاؤں کے چالو، آم سمجھ اور سندر سندر شبد چھوڑ کر مشکل، بوجھل اور بہنگم

सूरज चांद पे हमले होंगे
फिर भी न पूरे सपने होंगे
नील गगन की बस्ती में भी
हर क्षण इनके चरचे होंगे

पग पग पर एक लाश बिछा दी
शैतान की तज़्हीक* उड़ा दी
क्या सुन्दर निर्मान है इनका
मरघट की तसवीर बना दी

निर्बल को हर मर्द बली है
छल से अधिक हर मर्द छली है
इनकी समय की हर धारा में
काग़ज़ की भी नाव चली है

हाथ में इन के जामे जम है
हाइड्रोजन औ ऐटम बम है
नब्ज़ हवा की यह पहचानें
तूफ़ां का सर इन पर ख़म है

आओ सखी एक गीत सुना दें
ज़ख़्मी दिलों में प्यार जगा दें
परचम में है ख़ून की बदबू
आओ लाल आंचल लहरा दें

लाल आंचल में प्यार है पहला
दुल्हन का सिंगार है पहला
लाल आंचल के लहराने में
प्यार का ही इज़हार है पहला

पहले प्यार की हद पर आकर
जायेगा यह मर्द कहां पर
इसको अमन से रहना होगा
तोड़ूंगी मैं इसका ख़ंजर

आओ सखी ऐसे मुसका दें
अमन की हर सू ज्योति जगा दें
फ़ितरत की आवाज़ बदल कर
इन्सां को इन्सान बना दें

* मज़ाक़

سورج چاند پہ حملے ہونگے
پھر بھی نہ پورے سپنے ہونگے
نیل گگن کی بستی میں بھی
ہر چھن اُن کے چرچے ہونگے

پگ پگ پر ایک لاش بچھا دی
شیطان کی تضحیک* اُڑا دی
کیا سندر نرمان ہے اِن کا
مرگھٹ کی تصویر بنا دی

نربل کو ہر مرد بلی ہے
چھل سے ادھک ہر مرد چھلی ہے
اِن کی سمے کی ہر دھارا میں
کاغذ کی بھی ناؤ چلی ہے

ہاتھ میں اِن کے جام جم ہے
ہائڈروجن اور ایٹم بم ہے
نبض ہوا کی یہ پہچانیں
طوفاں کا سر اِن پر خم ہے

آؤ سکھی ایک گیت سنا دیں
زخمی دلوں میں ایک پیار جگا دیں
پرچم میں ہے خون کی بدبو
آؤ لال آنچل لہرا دیں

لال آنچل میں پیار ہے پہلا
دلہن کا سنگار ہے پہلا
لال آنچل کے لہرانے میں
پیار کا ہی اظہار ہے پہلا

پہلے پیار کی حد پر آکر
جائیگا یہ مرد کہاں پر
اِس کو امن سے رہنا ہوگا
توڑوں گی میں اِس کا خنجر

آؤ سکھی ایسے مسکا دیں
امن کی ہر سو جیوتی جگا دیں
فطرت کی آواز بدل کر
اِنساں کو اِنسان بنا دیں

* مذاق

आकाश आज वे चढ़ते होंगे
तूफ़ानों पर चढ़ते होंगे
गिरते पड़ते, लड़ते भिड़ते
जलते भुनते, कुढ़ते होंगे

آکاش آج یہ چڑھتے ہوں گے
طوفانوں پر چڑھتے ہوں گے
گرتے پڑتے، لڑتے بھڑتے
جلتے بھنتے، کڑھتے ہوں گے

दुश्मन सब का प्यार सखी है
यह कैसा संसार सखी है
मिल जुलकर रहने के बदले
खिचती क्यों तलवार सखी है

دشمن سب کا پیار سکھی ہے
یہ کیسا سنسار سکھی ہے
مل جل کر رہنے کے بدلے
کھنچتی کیوں تلوار سکھی ہے

कैसा रूप, जवानी कैसी
जग की प्रेम कहानी कैसी
कांटों के बिस्तर के ऊपर
कोमल रूप की रानी कैसी

کیسا روپ، جوانی کیسی
جگ کی پریم کہانی کیسی
کانٹوں کے بستر کے اوپر
کومل روپ کی رانی کیسی

नफ़रत का हंगामा हर सू
ज़ख़मी फूल और घायल ख़ुशबू
कोमलता सुन्दरता ज़ख़मी
इश्क़ का जोबन बे रंगो बू

نفرت کا ہنگامہ ہر سو
زخمی پھول اور گھائل خوشبو
کوملتا سندرتا زخمی
عشق کا جوبن بے رنگ و بو

कल की सुहागिन सेंदुर धोये
नल के लिये दमयन्ती रोये
पहली बार सजी जो दुल्हन
सेज पे वह भी तन्हा सोये

کل کی سہاگن سیندور دھوئے
نل کے لئے دمینتی روئے
پہلی بار جو سجی دلہن
سیج پہ وہ بھی تنہا سوئے

मर्द पे ऐ सखि नाज़ न करना
प्रीत के साज़ पे हाथ न धरना
तलवारों से मरने वाले
क्या जानेंगे प्यार से मरना

مرد پہ اے سکھی ناز نا کرنا
پریت کے ساز پہ ہاتھ نہ دھرنا
تلواروں سے مرنے والے
کیا جانیںگے پیار سے مرنا

प्यार का आंसू खेल है इनका
एक छलावा मेल है इनका
माया मोह से यह बचते हैं
नारी का घर जेल है इनका

پیار کا آنسو کھیل ہے ان کا
ایک چھلاوا میل ہے ان کا
مایا موہ سے یہ بچتے ہیں
ناری کا گھر جیل ہے ان کا

यह तहज़ीब के हैं निर्माता
सुख के बैरी दुख के दाता
उड़ते हैं आकाश के ऊपर
जोड़ेंगे परलोक से नाता

یہ تہذیب کے ہیں نرماتا
سکھ کے بیری دکھ کے داتا
اڑتے ہیں آکاش کے اوپر
جوڑیں گے پرلوک سے ناتا

देख सखी हंसती है दुनिया
झूले झूल रही है रधिया
ब्याही बिन ब्याही हर एक की
मसकी मसकी जोड़ पे अंगिया

دیکھو سکھی ھنستی ھے سکھیا
جھولے جھول رھی ھے رادھیا
بیاھی ان بیاھی ھر ایک کی
مسکی مسکی جوڑ پہ انگیا

देख के अपने तन पर चोली
कर न सकी मैं मन से ठिठोली
पी पी कह के पापी पपीहा
बोले निस दिन बोली ठिठोली

دیکھ کے اپنے تن پر چولی
کر نہ سکی میں من سے ٹھٹھولی
پی پی کہہ کے پاپی پپیہا
بولے نس دن بولی ٹھٹھولی

मन में लाख बिरोग लिये हूं
ग़म खाये और नीर पिये हूं
कुछ परदेसी का भी ग़म है
कुछ संकोच से होंट सिये हूं

من میں لاکھ بیروگ لئے ھوں
غم کھائے اور نیر پئے ھوں
کچھ پردیسی کا بھی غم ھے
کچھ سنکوچ سے ھونٹ سیئے ھوں

घूर रहा था कल एक राही
कोठे पर बे सुध मैं खड़ी थी
मसकी चोली ढलका आंचल
फिर भी मुझ को लाज न आई

گھور رھا تھا کل ایک راھی
کوٹھے پر بے سدھ میں کھڑی تھی
مسکی چولی ڈھلکا آنچل
پھر بھی مجھ کو لاج نہ آئی

रूप की क़ीमत भूल गई मैं
लाज की अज़मत भूल गई मैं
मादक रूप जवानी की भी
हर एक आदत भूल गई मैं

روپ کی قیمت بھول گئی میں
لاج کی عظمت بھول گئی میں
مادک روپ جوانی کی بھی
ھر ایک عادت بھول گئی میں

दुखती रग छू लेता आकर
मस्त पवन का झोंका अकसर
साजन का सन्देस न सुनकर
कांप उठता मेरा तन थर थर

دکھتی رگ چھو لیتا آ کر
مست پون کا جھونکا اکثر
ساجن کا سندیس نہ سن کر
کانپ اٹھتا میرا تن تھر تھر

सात समन्दर पार से उड़ कर
बादल छाया नील गगन पर
उस से पी का हाल जो पूछा
आंगन में बरसा वह झर झर

سات سمندر پار سے اڑ کر
بادل چھایا نیل گگن پر
اس سے پی کا حال جو پوچھا
آنگن میں برسا وہ جھر جھر

जीवन मेरा उनका है ग़म
जाने हैं किस हाल में प्रीतम
पलकों पर हिलते हैं आंसू
फूलों पर गिरती है शबनम

جیون میرا ان کا ھے غم
جانے ھیں کس حال میں پریتم
پلکوں پر ھلتے ھیں آنسو
پھولوں پر گرتی ھے شبنم

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 16 सितम्बर, सन '53 नम्बर 3

جلد 15 ستمبر' سن '53 نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

सिपाही की दुलहन

बैरी है सावन का महीना
दूभर है ऐसे में जीना
आंधी, पानी, बादल, बिजली
मौजों पर है अपना सफ़ीना

ऊदे ऊदे बादल छाए
कोयल मीठे बोल सुनाए
मन का पपीहा पीपी बोले
मुझ बिरहन को कुछ न सुहाए

सबज़ा सबज़ा, बूटा बूटा
महका महका, लहका लहका
ताल तलय्या, बन और क्यारी
हरसू जोबन निखरा निखरा

खट्टी मीठी और रसीली
बाग़ की जामुन देख सखी री
देख उधर वह झोंका आया
देख उधर वह बीकर टपकी

ऐसे सखी परदेस गए वह
मन पे लगा के ठेस गये वह
वारूं जो सिंगार है तन पर
देश को [illegible] का भेस गए वह

سپاھی کی دلہن

بیری ہے ساون کا مہینہ
دوبھر ہے ایسے میں جینا
آندھی' پانی' بادل' بجلی
موجوں پر ہے اپنا سفینہ

اودے اودے بادل چھائے
کوئل میٹھے بول سنائے
من کا پپیہا پی پی بولے
مجھ برہن کو کچھ نہ سہائے

سبزا سبزا' بوٹا بوٹا
مہکا مہکا' لہکا لہکا
تال تلیا' بن اور کیاری
ہر سو جوبن نکھرا نکھرا

کھٹی میٹھی اور رسیلی
باغ کی جامن دیکھ سکھی ری
دیکھ ادھر وہ جھونکا آیا
دیکھ ادھر وہ سیکر ٹپکی

ایسے سکھی پردیس گئے وہ
من پہ لگا کے ٹھیس گئے وہ
واروں جو سنگار ہے تن پر
دیش کو [illegible] کا بھیس گئے وہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

सितम्बर 1953 ستمبر

क्या किससे	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال' ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد .

याहिन्द

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल
ایڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी
نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

* * * * *

स नम्बर के ख़ास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद — ستانی کلچر سوسائٹی' الہ آباد

सितम्बर 1953 ستمبر

कीमत एक आना [illegible] آنہ

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक--सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह खत्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की खास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित विशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और इनसानी ज़िन्दगी— एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़ियानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई कागज़ पर छपी. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता--
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اِس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا۔ دیش نے اُس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا۔ دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصہ سے ہو رہی تھی۔ پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے۔

اِس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں۔ بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاوؤں سے اِس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے۔ نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے۔

اِس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اُس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور انسانی زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے۔ اِس سے پتہ چلیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا۔

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اِس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اٹھائینگے۔

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی، 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ۔

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الٰہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

द्द

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना चार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों ह का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, रों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में स का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; स प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; टरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद न नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० , पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम श पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

ट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी स सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया ने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या दाम [illegible] लेने पर हर बार एक रुपया कम

مقصد

1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'
145 مٹھی گنج' الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام
[illegible]

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा के महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख कर एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, [illegible], इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی۔ یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی۔ کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—
[illegible] 'نیا ہند' [illegible] الہ آباد

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

[illegible]

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرتر کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی' جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب' دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

154 [illegible]

हमारे यहाँ मिलने वा... कुछ ... और ... [illegible] | ... اور ... [illegible]

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं | نوٹ—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर औ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पंच चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پنچ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم. اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم. اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم. اے. ایل ایل. بی.، گدادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक आंखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں۔ گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ ۔

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج۔ اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں ۔ قیمت چار آنے ۔

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

منیجر نیا ہند، 145 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

सभा पतियों या अदालतों के सर पंचों का पक्ष पात और देहात के अन्दर आपसी फूट खास कर कांगरेसियों और प्रजा सोशलिस्टों के बीच भी इसके लिये कुछ हद तक जिम्मेदार हैं.

लेकिन गांव रक्षा सोसाइटियों से इनमें से किसी भी एक रोग के रुकने, दबने या दूर होने की गुंजाइश नहीं है. उल्टे गांव में एक तरह का आतंक और बढ़ जायगा—ऐसा आतंक जिसके द्वारा गांव में ज़ियादा खुशहाल या मुंह फट लोग या वह लोग जिनका शासन से सम्बन्ध है, ग़रीबों और लाचारों को सताया करते हैं, सीधे सादे या बे पढ़िये वाले या खामोश और मोहताज लोगों को इन सोसाइटियों से कुछ भी हासिल नहीं होगा. शायद उन्हें कुछ खोना ही पड़े क्योंकि गांव की हथियार बन्द नई जमात की ज़ियादतियों के खिलाफ़ वह अदालत तक पहुंच भी नहीं सकते !

गांव वालों की जान माल की हिफ़ाज़त का और गांवों की ज़िन्दगी को संभालने के लिये पहली ज़रूरी शर्त यह है कि विकेन्द्रित स्वावलम्बन की बुनियाद पर यानी हर गांव को अपने पैरों पर खड़ा करके और अपने शासन के अधिक से अधिक अधिकार दे कर गांवों की आर्थिक रचना क़ायम की जाय. उससे बेरोज़गारी मिटेगी, देहात का कच्चा माल शहर या मिलों या विदेश जाने और विदेश का या मिलों का पक्का माल देहात के अन्दर आने का अंगरेज़ों का बनाया घातक सिलसिला खतम होगा और पढ़े लिखे या बेपढ़े गांव वालों का शहरों की तरफ़ भागना भी कम होगा. लेकिन यह तभी मुमकिन है जब हिन्द सरकार अपनी आर्थिक, व्योपारी उत्पत्ति, शिक्षा और दूसरी नीतियों को बदलने को तैयार हो. यही नहीं, सरकार को अपना नज़रिया और काम करने का ढंग भी बदलना होगा. आज हमारे मुल्क की ही नहीं दुनिया की सब से बड़ी ज़रूरत है कि क़ौमी जीवन के हर पहलू में ज़ियादा से ज़ियादा विकेन्द्री करन किया जाय यानी देश के छोटे से छोटे टुकड़ों को स्वावलम्बी और खुद मुख़्तार बनाया जाय.

अगर हिन्द सरकार या प्रदेश सरकार अपना आर्थिक और इन्तज़ामी ढांचा बदले बिना और देहात के उद्योग धन्धे चौपट करा करा कर गांवों की हिफ़ाज़त डंडे के बल से कराना चाहेंगी तो वह उसी तरह नाकामयाब होंगी जैसे झरिया और रानीगंज के कोयले की खानों में गुलाब के फूल उगाने की कोशिश करना. सरकार को चाहिये कि जो असली रोग है उसका असली इलाज करे, नहीं तो, रोग कुछ है, दवा कुछ और ही.

1. 8. '53. —सुरेश रामभाई

سبھاپتیوں یا عدالتوں کے سرپنچوں کا پکش پات اور دیہات کے اندر آپسی پھوٹ خاص کر کانگریسیوں اور پرجا سوشلسٹوں کے بیچ بھی اس کے لئے کچھ حد تک ذمہ دار ہیں ۔

لیکن گاؤں رکشا سوسائٹیوں سے اِن میں سے کسی بھی ایک روگ کے رکنے' دبنے یا دور ہونے کی گنجائش نہیں ہے ۔ اُلٹے گاؤں میں ایک طرح کا آتنک اور بڑھ جائیگا—ایسا آتنک جس کے دوارا گاؤں میں زیادہ خوش حال یا منھ پھٹ لوگ یا وہ لوگ جن کا شاسن سے سمبندھ ہے' غریبوں اور لاچاروں کو ستایا کرتے ہیں' سیدھے سادے یا بےپڑھے والے یا خاموش اور محتاج لوگوں کو اِن سوسائٹیوں سے کچھ بھی حاصل نہیں ہوگا ۔ شاید اُنہیں کچھ کھونا ہی پڑے کیونکہ گاؤں کی ہتھیار بند نئی جماعت کی زیادتیوں کے خلاف وہ عدالت تک پہونچ بھی نہیں سکتے !

گاؤں والوں کی جان مال کی حفاظت کا اور گاؤں کی زندگی کو سنبھالنے کے لئے پہلی ضروری شرط یہ ہے کہ وکیندرت سواولمبن کی بنیاد پر یعنی ہر گاؤں کو اپنے پیروں پر کھڑا کرکے اور اپنے شاسن کے ادھک سے ادھک ادھیکار دے کر گاؤں کی آرتھک رچنا قائم کی جائے ۔ اُس سے بیروزگاری مٹیگی' دیہات کا کچا مال شہر یا ملوں میں یا ودیش جانے اور ودیش کا یا ملوں کا پکا مال دیہات کے اندر آنے کا انگریزوں کا بنایا گھاتک سلسلہ ختم ہوگا اور پڑھے لکھے یا بے پڑھے گاؤں والوں کا شہروں کی طرف بھاگنا بھی کم ہوگا ۔ لیکن یہ تبھی ممکن ہے جب ہند سرکار اپنی آرتھک' بیوپاری اُتپتی' شکشا اور دوسری نیتیوں کو بدلنے کو تیار ہو ۔ یہی نہیں' سرکار کو اپنا نظریہ اور کام کرنے کا ڈھنگ بھی بدلنا ہوگا ۔ آج ہمارے ملک کی ہی نہیں دنیا کی سب سے بڑی ضرورت ہے کہ قومی جیون کے ہر پہلو میں زیادہ سے زیادہ وکیندری کرن کیا جائے یعنی دیش کے چھوٹے سے چھوٹے ٹکڑوں کو سواولمبی اور خود مختار بنایا جائے ۔

اگر ہند سرکار یا اُترپردیش سرکار اپنا آرتھک اور انتظامی ڈھانچہ بدلے بنا اور دیہات کے اُدیوگ دھندے چوپٹ کرا کرا کر گاؤں کی حفاظت ڈنڈے کے بل سے کرانا چاہینگی تو وہ اُسی طرح ناکامیاب ہونگی جیسے جھریا اور رانی گنج کے کوئلے کی کھانوں میں گلاب کے پھول اُگانے کی کوشش کرنا ۔ سرکار کو چاہئے کہ جو اصلی روگ ہے اُس کا اصلی علاج کرے' نہیں تو' روگ کچھ ہے' دوا کچھ اور ہی ۔

—سریش رام بھائی 1 . 8 . '53

सोसाइटियों, राइफ़िल क्लब, चौकीदारी दल, हथियार [illegible] [illegible], फ़ौजी सामान डिपो वग़ैरा हज़ारों की तादाद में खोले जायंगे. साथ ही पुलिस की तादाद बढ़ाई जायगी, हथियार बन्द कान्सटेबिलों में इज़ाफ़ा किया जायगा और फ़ौज में भी ज़ियादा भरती की जायगी. इस में कितना रुपया सरकार पानी की तरह बहा देगी और इस ख़र्च को पूरा करने के लिये उसे आम जनता के ऊपर टैक्सों और दूसरे साधनों से कितना ज़ियादा दबाव डालना पड़ेगा हम नहीं कह सकते.

इस से भी ज़ियादा बड़ा सवाल यह है कि क्या यह सब करने के बाद हमारे गांव आज के मुक़ाबले ज़ियादा महफ़ूज़ हो जायंगे ? सीधा और साफ़ जवाब है कि "नहीं" ठीक उसी तरह जिस तरह भ्रष्टाचार विरोधी महकमा भ्रष्टाचार नहीं रोक सका, अनाज ज़ियादा उपजाओ आन्दोलन अनाज पैदा करने वाले से ज़ियादा नाज पैदा न करा सका. यही नहीं, हमारा ख़याल है कि उत्तर प्रदेश सरकार के इस कारनामे की वजह से देहातों की हालत और भी बिगड़ेगी. क्योंकि यह रक्षा सोसाइटियां या राइफ़िल क्लब उन रोगों का इलाज नहीं कर सकते जिन से आज हमारे देहाती भाई बहन परेशान हैं. हमें यक़ीन नहीं कि सरकार इन रोगों की असली वजहों से वाक़िफ़ न हो. वैसे तो वजहें बहुत सी हैं लेकिन उनमें से ख़ास ख़ास यह है :—

(1) देहात के उद्योग धन्धों का दिन दूना रात चौगुना बरबाद होना इसके कारन हमारे बुनकर, मोची, दलिहा, कुम्हार, बढ़ई, लुहार वग़ैरा लाखों कारीगरों और दस्तकारों का बेकार हो जाना;

(2) देहात के अन्दर खेती के दायरे में मशीनों की सिंचाई खादों और नये सुधरे हुए (?) औज़ारों और नल कूओं को बढ़ावा दिया जाना जिन के कारन बे ज़मीन वाले लाखों मज़दूर और भी बेकार हो जाते हैं;

(3) एक बड़े पैमाने पर किसानों की बे दख़ली होना और ज़मीनदारों का उनकी ज़मीनों को ज़ब्त कर लेना जिन्हें किसान पीढ़ियों से जोत रहा था, और बग़ीचों को ख़ुद काश्त में लिखा लेना,

(4) ज़मींदारी के हामी या ज़मींदारी नहीं जा सकती वाले ज़मींदारों का गुंडों बदमाशों को शै देना; और

(5) जिन लोगों का काम चोरी का पता लगाना और चोरों को पकड़ना था उन्हीं का लूट के माल में हिस्सा बांटा करना. चोरी डकैती क़त्ल की लहर के कुछ कारन वह नये टैक्स या महसूल भी हो सकते हैं जो सरकार ने या ज़िला बोर्डों ने सिंचाई, चुंगी, ऊंट बैल गाड़ी वग़ैरा के सिलसिले में लगाए हैं. नई गांव सभाओं,

سوسائٹیاں، رائفل کلب، چوکیداری دل، ہتھیار بندی پلٹن، فوجی سامان ڈپو وغیرہ ہزاروں کی تعداد میں کھولے جائینگے۔ ساتھ ہی پولیس کی تعداد بڑھائی جائے گی، ہتھیار بند کانسٹیبلوں میں اضافہ کیا جائے گا اور فوج میں بھی زیادہ بھرتی کی جائے گی۔ اس میں کتنا روپیہ سرکار پانی کی طرح بہا دے گی اور اس خرچ کو پورا کرنے کے لئے اس سے عام جنتا کے اوپر ٹیکسوں اور دوسرے سادھنوں سے کتنا زیادہ دباؤ ڈالنا پڑے گا ہم نہیں کہہ سکتے۔

اس سے بھی زیادہ بڑا سوال یہ ہے کی کیا یہ سب کرنے کے بعد ہمارے گاؤں آج کے مقابلے زیادہ محفوظ ہو جائیں گے؟ سیدھا اور صاف جواب ہے کہ " نہیں "۔ ٹھیک اسی طرح جس طرح بھرشٹاچار وِرودھی محکمہ بھرشٹاچار نہیں روک سکا، اناج زیادہ اُپجاؤ آندولن اناج پیدا کرنے والے سے زیادہ اناج پیدا نہ کرا سکا۔ یہی نہیں، ہمارا خیال ہے کہ اتر پردیش سرکار کے اس کارنامے کی وجہ سے دیہاتوں کی حالت اور بھی بگڑے گی۔ کیونکہ یہ رکشا سوسائٹیاں یا رائفل کلب اُن روگوں کا علاج نہیں کر سکتے جن سے آج ہمارے دیہاتی بھائی بہن پریشان ہیں۔ ہمیں یقین نہیں کہ سرکار اِن روگوں کی اصلی وجہوں سے واقف نہ ہو۔ ویسے تو وجہیں بہت سی ہیں لیکن اُن میں سے خاص خاص یہ ہیں :-

(1) دیہات کے اُدیوگ دھندوں کا دن دونا رات چوگنا برباد ہونا اور اس کے کارن ہمارے بنکر، موچی، دلیہا، بڑھئی، اور کمہار، وغیرہ لاکھوں کاریگروں اور دستکاروں کا بیکار ہوجانا؛

(2) دیہات کے اندر کھیتی کے دائرے میں مشینوں کی سینچائی کھادوں اور نئے سدھرے ہوئے (؟) اوزاروں اور نل کنوؤں کو بڑھاوا دیا جانا جن کے کارن بے زمین والے لاکھوں مزدور اور بھی بیکار ہو جاتے ہیں؛

(3) ایک بڑے پیمانے پر کسانوں کی بے دخلی ہونا اور زمینداروں کا اُن کی زمینوں کو ضبط کر لینا جنہیں کسان پیڑھیوں سے جوت رہا تھا، اور بغیچوں کو خود کاشت میں لکھا لینا؛

(4) زمینداری کے حامی یا زمینداری نہیں جا سکتی والے زمینداروں کا غنڈوں بدماشوں کو شہہ دینا؛ اور

(5) جن لوگوں کا کام چوری کا پتہ لگانا اور چوروں کا پکڑنا تھا اُنہیں کا لوٹ کے مال میں حصہ بانٹا کرنا۔ چوری ڈکیتی قتل کی لہر کے کچھ کارن وہ نئے ٹیکس یا محصول بھی ہو سکتے ہیں جو سرکار نے یا ضلع بورڈوں نے سینچائی، چنگی، اونٹ بیل گاڑی وغیرہ کے سلسلے میں لگائے ہیں۔ نئی گاؤں سبھاؤں،

अपने देश के हितों की रक्षा करने की सच्ची चिन्ता पर-वह भारत सरकार पर नाहक़ नाराज़ न हों, बल्कि अपने दिलों को टटोल कर देखें और हज़रत ईसा के इन अमर शब्दों पर विचार करें :

"दुनिया (यानी दुनिया के ऐश आराम) से मुहब्बत मत करो, न उन चीज़ों से जो दुनिया में हैं. अगर कोई आदमी दुनिया से मुहब्बत करता है तो परम पिता की मुहब्बत उसमें नहीं है क्योंकि दुनिया में जो कुछ भी है, चमड़े का मोह, आंखों का मोह और जीवन की झूठी शान, यह सब परम पिता की चीज़ नहीं, दुनिया की चीज़ हैं. और यह दुनिया फ़ानी है और इसका मोह भी फ़ानी है. लेकिन वह जो मालिक की मरज़ी को पूरा करता है हमेशा तक क़ायम रहता है"

31. 7. '53 —सुरेश रामभाई

रोग कुछ इलाज कुछ !

उत्तर प्रदेश के दैनिक अख़बारों में, चाहे वह अंगरेज़ी के हों, हिन्दी के या उरदू के, चोरी, डकैती, क़तल और भगाये जाने की ख़बरें बराबर निकलती रहती हैं. कभी कभी तो बड़े संगीन मामले सामने आते हैं. ज़ाहिर है कितने ही मामले, एक से एक ज़ियादा सनसनी भरे, ऐसे होंगे जो अख़बारों तक नहीं पहुंच पाते और जब तक वह किसी अदालत में न लाए जाएं किसी को उनकी ख़बर भी नहीं मिलती. क्या शहरों में, क्या देहातों में. चोरी, डकैती, क़तल वग़ैरा ख़ूब बढ़ रहे हैं. कुछ मुक़ामों में तो हफ़्ते में नहीं तो पखवाड़े में एक ख़ून हो जाना मामूली बात है. इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि ख़ास कर हमारे देहात के भाई बहनों की जान माल आज जितनी ज़ियादा ख़तरे में हैं उतनी पहले शायद ही कभी रही हो. इसलिये इस तरफ़ सूबे की सरकार का ध्यान जाना क़ुदरती बात थी.

मई के महीने में अख़बारों में यह ख़बर छपी कि उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ़ से यह जांच की गई कि यहां जुर्म किस ज़ियादती के साथ हो रहे हैं. पता चला कि हालत काफ़ी ख़राब है, और देहात के अन्दर 'गांव हिफ़ाज़त और बेहतरी सोसाइटियां' (Village Defence and Welfare Socities) रायफ़िल क्लब वग़ैरा खोले जाने चाहियें, और पुलीस गांव वालों को हथियारों का चलाना सीखने में मदद दे. इसके लिये इन्तज़ामी और क़ानूनी क़दम उठाए जाने की भी सिफ़ारिश की गई है.

इसलिये हमें उम्मीद होती है कि हमारे प्रदेश में—और फिर उनकी देखा देखी दूसरे [illegible] में—गांव रक्षा

اپنے دیش کے ہتوں کی رکشا کرنے کی سچی چنتا پر یہ بھارت سرکار پر ناحق ناراض نہ ہوں، بلکہ اپنے دلوں کو ٹٹول کر دیکھیں اور حضرت عیسیٰ کے ان امر شبدوں پر وچار کریں۔

"دنیا (یعنی دنیا کے عیش آرام) سے محبت مت کرو، نہ ان چیزوں سے جو دنیا میں ہیں۔ اگر کوئی آدمی دنیا سے محبت کرتا ہے تو پرم پتا کی محبت اس میں نہیں ہے کیونکہ دنیا میں جو کچھ بھی ہے چمڑے کا موہ، آنکھوں کا موہ اور جیون کی جھوٹی شان، یہ سب پرم پتا کی چیز نہیں، دنیا کی چیز ہیں۔ اور یہ دنیا فانی ہے اور اس کا موہ بھی فانی ہے۔ لیکن وہ جو مالک کی مرضی کو پورا کرتا ہے ہمیشہ تک قائم رہتا ہے۔"

31. 7. '53 —سریش رام بھائی

روگ کچھ علاج کچھ !

اتر پردیش کے دینک اخباروں میں، چاہے وہ انگریزی کے ہوں، ہندی کے یا اردو کے، چوری، ڈکیتی، قتل اور بھگائے جانے کی خبریں برابر نکلتی رہتی ہیں۔ کبھی کبھی تو بڑے سنگین معاملے سامنے آتے ہیں۔ ظاہر ہے کتنے ہی معاملے، ایک سے ایک زیادہ سنسنی بھرے، ایسے ہونگے جو اخباروں تک نہیں پہنچ پاتے اور جب تک وہ کسی عدالت میں نہ لائے جائیں کسی کو ان کی خبر بھی نہیں ملتی۔ کیا شہروں میں، کیا دیہاتوں میں، چوری، ڈکیتی، قتل وغیرہ خوب بڑھ رہے ہیں۔ کچھ مقاموں میں تو ہفتہ میں نہیں تو پکھواڑے میں ایک خون ہو جانا معمولی بات ہے۔ اس سے انکار نہیں کیا جا سکتا کہ خاصکر ہمارے دیہات کے بھائی بہنوں کی جان مال آج جتنی زیادہ خطرے میں ہے اتنی پہلے شاید ہی کبھی رہی ہو۔ اس لئے اس طرف صوبے کی سرکار کا دھیان جانا قدرتی بات تھی۔

مئی کے مہینے میں اخباروں میں یہ خبر چھپی کہ اتر پردیش سرکار کی طرف سے یہ جانچ کی گئی کہ یہاں جرم کس زیادتی کے ساتھ ہو رہے ہیں۔ پتہ چلا کہ حالت کافی خراب ہے، اور دیہات کے اندر 'گاؤں حفاظت اور بہتری سوسائٹیاں' (Village Defence and Welfare Societies) رائفل کلب وغیرہ کھولے جانے چاہئیں، اور پولیس گاؤں والوں کو ہتھیاروں کا چلانا سیکھنے میں مدد دے۔ اس کے لئے انتظامی اور قانونی قدم اٹھائے جانے کی بھی سفارش کی گئی ہے۔

اس لئے ہمیں امید ہوتی ہے کہ ہمارے پردیش میں— اور پھر ان کی دیکھا دیکھی دوسرے پردیشوں میں— گاؤں رکشا

ईसाई चाहे वह हिन्दुस्तानी हो या विदेशी, वह इस बात की पूरी कोशिश करेगा कि वह ऐसे रास्ते और तरीक़े ढूंढें जिनसे सरकार के ऊपर वह यह असर डाल सके कि "जन व्यवस्था यानी अमन को बनाये रखने के लिये' सरकार इन्सानियत से पेश आये." इस पर हमारे विदेशी लार्ड बिशप ने जवाब दिया कि "मैं आपके (डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के) इस विचार से सहमत नहीं हूं कि ईसा मसीह के जीवन या उपदेशों से यह कहीं भी सबक़ मिलता है कि सत्याग्रह या सिविल नाफ़रमानी के काम किये जायं." इसलिये लार्ड बिशप के ख़याल से सरकार सत्याग्रह को दबाने, रोकने के लिये जो कुछ भी ज़्यादतियां करे वह ठीक हैं. पूरी कोशिश की गई कि हमारे ज़्यादातर हिन्दुस्तानी ईसाई भाई अंगरेज़ी राज से अपने को आज़ाद करने के क़ौमी आन्दोलन से अलग रखें.

हम अपने देश के ईसाई और ग़ैर ईसाई सब भाइयों का ध्यान राष्ट्र पिता गांधी जी के नीचे दिये हुए शब्दों की तरफ़ दिलाते हैं—

"बहुत नम्रता के साथ खोज, मनन और विचार करने के बाद और जितने आदमियों से मिल सकता था उनसे चर्चा करने के बाद मैं इस नतीजे पर अर्सा हुआ पहुंचा कि दुनिया के सब धर्म सच्चे हैं. और साथ ही सब में कुछ न कुछ कमियां भी हैं. इसलिये जितना प्यार या लगाव मुझे अपने हिन्दू धर्म से हो उतना ही दूसरे धर्मों से भी होना चाहिये. इसका सीधा मतलब यह है कि हम सबके साथ वैसे ही प्रेम करें जैसे अपने नातेदारों, बाल बच्चों से और उनके अन्दर हम कोई भेद भाव न करें. अगर हम हिन्दू हैं तो हम यह प्रार्थना नहीं करेंगे कि कोई ईसाई हिन्दू हो जाय, या अगर मुसलमान हैं तो यह कि कोई हिन्दू या ईसाई मुसलमान हो जाय और न हम मन ही मन यह प्रार्थना करेंगे कि लोग अपना धर्म बदल दें, बल्कि हमारी अन्तरात्मा से यही प्रार्थना निकलनी चाहिये कि अगर कोई हिन्दू है तो बेहतर हिन्दू बने, मुसलमान है तो बेहतर मुसलमान बने और ईसाई है तो बेहतर ईसाई बने."

हमारे देश में रहने और आने वाले विदेशी ईसाई भाई अगर "बेहतर ईसाई" बनने और वैसा व्यवहार करने से इन्कार करते हैं तो बड़ी नम्रता के साथ हमें कहना पड़ेगा कि उनके लिये हिन्दुस्तान में कोई जगह नहीं. अगर वह "बेहतर ईसाई" बनने और वैसा व्यवहार करने से इन्कार करते हैं तो उनको हम अपने अपने मुल्क की सरकारों का जासूस ही समझेंगे. और कौन हुकूमत ऐसी है जो अपने मुल्क में परदेसी ख़ुफ़ियों को बिला रोक टोक घूमने फिरने की इजाज़त दे? विदेशी ईसाई पादरियों के मिशन के साथ हम कहना चाहते हैं कि

عیسائی، چاہے وہ ہندستانی ہو یا ودیشی اس بات کی پوری کوشش کریگا کہ وہ ایسے راستے اور طریقے ڈھونڈھے جن سے سرکار کے اوپر وہ یہ اثر ڈال سکے کہ "جن ویوستھا یعنی امن کو بنائے رکھنے کے لئے، سرکار انسانیت سے پیش آئے." اس پر ہمارے ودیشی لارڈ بشپ نے جواب دیا کہ "میں آپ کے (ڈاکٹر جے. سی. کمارپا کے) اس وچار سے سہمت نہیں ہوں کہ عیسیٰ مسیح کے جیون یا اپدیشوں سے یہ کہیں بھی سبق ملتا ہے کہ ستیہ گرہ یا سول نافرمانی کے کام کئے جائیں." اس لئے لارڈ بشپ کے خیال سے سرکار ستیہ گرہ کو دبانے، روکنے کے لئے جو کچھ بھی زیادتیاں کرے وہ ٹھیک ہیں. پوری کوشش کی گئی کہ ہمارے زیادہ تر ہندستانی عیسائی بھائی انگریزی راج سے اپنے کو آزاد کرنے کے قومی آندولن سے الگ رکھیں.

ہم اپنے دیش کے عیسائی اور غیر عیسائی سب بھائیوں کا دھیان راشٹر پتا گاندھی جی کے نیچے دیئے ہوئے شبدوں کی طرف دلاتے ہیں.

"بہت نمرتا کے ساتھ کھوج، منن اور وچار کرنے کے بعد اور جتنے آدمیوں سے مل سکتا تھا اُن سے چرچا کرنے کے بعد میں اس نتیجے پر عرصہ ہوا پہنچا کہ دنیا کے سب دھرم سچے ہیں. اور ساتھ ہی سب میں کچھ نہ کچھ کمیاں بھی ہیں. اس لئے جتنا پیار یا لگاؤ مجھے اپنے ہندو دھرم سے ہو اتنا ہی دوسرے دھرموں سے بھی ہونا چاہئے. اس کا سیدھا مطلب یہ ہے کہ ہم سب کے ساتھ ویسے ہی پریم کریں جیسے اپنے ناتےداروں و بال بچوں سے اور ان کے اندر ہم کوئی بھید بھاؤ نہ کریں. اگر ہم ہندو ہیں تو ہم یہ پرارتھنا نہیں کرینگے کہ کوئی عیسائی ہندو ہوجائے، یا اگر مسلمان ہے تو یہ کہ کوئی ہندو یا عیسائی مسلمان ہوجائے اور نہ ہم من ہی من یہ پرارتھنا کرینگے کہ لوگ اپنا دھرم بدل دیں، بلکہ ہماری انتر آتما سے یہی پرارتھنا نکلنی چاہئے کہ اگر کوئی ہندو ہے تو بہتر ہندو بنے، مسلمان ہے تو بہتر مسلمان بنے اور عیسائی ہے تو بہتر عیسائی بنے."

ہمارے دیش میں رہنے اور آنے والے ودیشی عیسائی بھائی اگر "بہتر عیسائی" بنے اور ویسا ویوہار کرنے سے انکار کرتے ہیں تو بڑی نمرتا کے ساتھ ہمیں کہنا پڑیگا کہ اُن کے لئے ہندستان میں کوئی جگہ نہیں. اگر وہ "بہتر عیسائی" بننے اور ویسا ویوہار کرنے سے انکار کرتے ہیں تو اُن کو ہم اپنے اپنے ملک کی سرکاروں کا جاسوس ہی سمجھینگے. اور کون حکومت ایسی ہے جو اپنے ملک میں ودیشی خفیوں کو بلا روک ٹوک گھومنے پھرنے کی اجازت دے؟ ودیشی عیسائی پادریوں کے مشن کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ

स्वर्गीय दीन बन्धु एंड्रूज़ जैसे इक्का दुक्का ने पैदा किया उन्हें हिन्दुस्तान आज भी प्रेम और आदर के साथ याद करता है. वह तो खुद अपना जीवन हज़रत ईसा के आदर्शों के अनुसार ढालने में इतने लगे हुए थे कि उन्हें दूसरों के धर्मों की नाम पट्टी बदलने बदलवाने की फ़ुरसत कहां.

प्रोटेस्टेन्ट कम्यूनिज़्म वालों की तीसरी दलील से असलियत और भी खुल जाती है. राम कृष्न मिशन वालों से अपने काम की मिसाल दे कर धमकी देना भेड़िये का मेमने को दोषी ठहराना है. राम कृष्न वालों ने कभी किसी ईसाई को हिन्दू नहीं बनाया. उनका सारा काम इन्सानी सेवा है. उनका पेशा धर्म बदलवाना नहीं. और कौन कह सकता है कि यह अमरीकी गिरजा वाले किसी आड़े वक़्त पर हिन्दुस्तान में अपने धर्म के भाईयों पर क्या जा बेजा दबाव न डालें? इटली के पिछले चुनाव में ही न्यूयार्क के कार्डिनल स्पेलमैन ने इटली में रहने वाले अपने अमरीकी कैथोलिक भाइयों को साफ़ हिदायत भेजी थी कि वह अपने रिश्तेदारों को मजबूर करें कि वह समाजवादी या कम्यूनिस्ट पार्टियों को वोट न दे कर पूंजीवाद पार्टियों को ही वोट दें.

हमारे अमरीकी मिशनरी भाई दूसरों का इलाज करने चले हैं. अपने अन्दर का रोग नहीं देखते. अमरीका ने 33 महीने के अन्दर जो 1029 मिशनरी हमारे देश में भेजे उन मिशनरियों में और हिन्द अमरीकी समझौते (या गुलामी के पट्टे?) के मातहत हिन्दुस्तान में आने वाले अमरीकनों में क्या फ़रक़ है? यह फ़ोर्ड फ़ाउन्डेशन, राकफ़ैलर फ़ाउन्डेशन और तरह तरह के वज़ीफ़े वग़ैरा क्या हैं? यह सब ऐसे साधन हैं जिनकी बदौलत हिन्दुस्तान के मिलों और यहां के बाज़ारों को चूसा जाय ताकि अमरीकी माल, अमरीकी साहित्य, अमरीकी कला या, अमरीकी हॉलीवुड की फ़िल्मों और नंगी तसवीरों और अमरीकी रहन सहन के लिये हिन्दुस्तान में खुली छूट मिल जाय? विदेशी मिशनरी हों या ऐक्सपर्ट, हमारे लिये इन में फ़र्क़ नाम का ही है, दोनों अपने अगोचर अमरीकी साम्राज के चहेते हैं. यह अमरीकी मिशनरी सच्चे होते तो इन्हें काफ़ी काम कोरिया और जापान में पड़ा है जहां काम वासना में पागल अमरीकी सिपाही ने अपनी ख़ुराफ़ातों से अपने देश को काफ़ी बदनाम कर रखा है.

यहां हमें उस गश्ती चिट्ठी की याद आती है जो महात्मा गांधी के "यंग इण्डिया" अख़बार के सम्पादक की हैसियत से डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ने, नमक सत्याग्रह के दौरान में हिन्दुस्तान के बड़े बड़े ईसाई व पादरियों को भेजी थी. कुमारप्पा जी ने यह चिट्ठी कलकत्ते के लार्ड बिशप और हिन्दुस्तान के मैट्रोपालिटन को भी भेजी और यह उम्मीद ज़ाहिर की कि "भारत के अन्दर हर

سورگیہ دین بندھو اینڈریوز جیسے اکا دکا نے پیدا کیا انہیں ہندستان آج بھی پریم اور آدر کے ساتھ یاد کرتا ہے۔ وہ تو خود اپنا جیون حضرت عیسیٰ کے آدرشوں کے انوسار ڈھالنے میں اتنے لگے ہوئے تھے کہ انہیں دوسروں کے دھرموں کی نام پٹی بدلنے بدلوانے کی فرصت کہاں۔

پروٹسٹنٹ کمیونزم والوں کی تیسری دلیل سے اصلیت اور بھی کھل جاتی ہے۔ رام کرشن مشن والوں سے اپنے کام کی مثال دے کر دھمکی دینا بھیڑیئے کا میمنے کو دوشی ٹھہرانا ہے۔ رام کرشن والوں نے کبھی کسی عیسائی کو ہندو نہیں بنایا۔ ان کا سارا کام انسانی سیوا ہے۔ ان کا پیشہ دھرم بدلوانا نہیں۔ اور کون کہہ سکتا ہے کہ یہ امریکی گرجا والے کسی آڑے وقت پر ہندستان میں اپنے دھرم کے بھائیوں پر کیا جا بیجا دباؤ نہ ڈالیں؟ اٹلی کے پچھلے چناؤ میں ہی نیویارک کے کارڈنل اسپل مین نے اٹلی میں رہنے والے اپنے امریکی کیتھولک بھائیوں کو صاف ہدایت بھیجی تھی کہ وہ اپنے رشتے داروں کو مجبور کریں کہ وہ سماج وادی یا کمیونسٹ پارٹیوں کو ووٹ نہ دیکر پونجی وادی پارٹیوں کو ہی ووٹ دیں!

ہمارے امریکی مشنری بھائی دوسروں کا علاج کرنے چلے ہیں۔ اپنے اندر کا روگ نہیں دیکھتے۔ امریکہ نے 33 مہینے کے اندر جو 1029 مشنری ہمارے دیش میں بھیجے ان مشنریوں میں اور ہند امریکی سمجھوتے (یا غلامی کے پٹے؟) کے ماتحت ہندستان میں آنے والے امریکنوں میں کیا فرق ہے؟ یہ فورڈ فاونڈیشن، راک فیلر فاونڈیشن اور طرح طرح کے وظیفے وغیرہ کیا ہیں؟ یہ سب ایسے سادھن ہیں جنکی بدولت ہندستان کے ملوں اور یہاں کے بازاروں کو چوسا جائے تاکہ امریکی مال، امریکی ساہتیہ، امریکی کلا یا امریکی ہالی وڈ کی فلموں اور ننگی تصویروں اور امریکی رہن سہن کے لئے ہندستان میں کھلی چھوٹ مل جائے؟ ودیشی مشنری ہوں یا ایکسپرٹ ہمارے لئے ان میں فرق نام کا ہی ہے۔ دونوں اپنے اگوچر امریکی سامراج کے چہیتے ہیں۔ یہ امریکی مشنری سچے ہوتے تو انہیں کافی کام کوریا اور جاپان میں پڑا ہے جہاں کام واسنا میں پاگل امریکی سپاہی نے اپنی خرافاتوں سے اپنے دیش کو کافی بدنام کر رکھا ہے۔

یہاں ہمیں اس گشتی چٹھی کی یاد آتی ہے جو مہاتما گاندھی کے "ینگ انڈیا" اخبار کے سمپادک کی حیثیت سے ڈاکٹر جے. سی. کمارپا نے نمک ستیہ گرہ کے دوران میں ہندستان کے بڑے بڑے عیسائی و پادریوں کو بھیجی تھی۔ کمارپا جی نے یہ چٹھی کلکتے کے لارڈ بشپ اور ہندستان کے مٹرو پالیٹن کو بھی بھیجی اور یہ امید ظاہر کی کہ "بھارت کے اندر ہر

यह भी सब को मालूम है कि इन बाग़ों में और आस पास के इलाक़ों में अंगरेज़ व्योपारी और विदेशी मिशनरी मिल कर मन माना राज करते हैं. इन ही लोगों के और ख़ास कर अमरीकी पादरियों के असर से नागा पहाड़ियों और उत्तर पूर्व की सरहद के दूसरे हिस्सों में रहने वाले नागा क़ौम के लोगों ने भारत से अलग होने की आवाज़ तक उठाई. ख़ुश क़िस्मती से यह ग़लत तहरीक बन्द हो गई. पर इन इलाक़ों में जो लोग गये हैं उनका कहना है कि अमरीकी मिशनरियों ने वहां एक अपना साम्राज ही क़ायम कर रखा है जहां दिल्ली सरकार की बहुत कम पूछ है. कुछ अर्सा पहले जब हमारे प्रधान मंत्री आसाम बरमा की सरहद पर गये तो हिन्द सरकार को महसूस हुआ कि हालत इतनी बिगड़ गई है कि अगर मुनासिब रोक थाम न की गई तो क़ाबू से बाहर हो जायगी. इसी का नतीजा है कि होम मिनिस्टर ने पार्लियामेन्ट में बयान दे कर विदेशी मिशनरियों को ख़बरदार किया जिस पर सारा एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ.

प्रोटेस्टेन्ट इवैनजिलिकल कम्यूनिज़्म (Protestant Evangelical Communism) के विदेशी ईसाई नेताओं ने हिन्द सरकार के विदेशी पादरियों पर कुछ पाबन्दियां लगाने पर तीन एतराज़ किये हैं:

(i) यह पाबन्दियां हिन्दुस्तान के रीतरिवाज के अनुकूल नहीं हैं क्योंकि गौतम बुद्ध ने ख़ुद ही अपने प्रचारक दूसरे देशों को भेजे थे.

(ii) इनके अन्दर "भौतिक वाद" (नास्तिकता) की गन्ध है जो हिन्दुस्तान की आन और शान के ख़िलाफ़ है.

(iii) अगर हिन्द सरकार अमरीकी पादरियों पर पाबन्दियां लगाएगी तो अमरीकी सरकार को भी अमरीका में चलने वाले रामकृष्ण मिशन के बारे में सोचना पड़ेगा.

ज़ाहिर है कि यह तीनों दलीलें कितनी लचर हैं. इन अमरीकी मिशनरियों में से कितनों में वह दिल है या वह भावना है जिसके मातहत बौद्ध भिक्षु दुनिया भर में काम करते थे? इनके मिशन तो राजकाजी और व्योपारी अड्डियां जैसे हैं. भौतिक वाद के ख़िलाफ़ उनका आवाज़ उठाना उलटे चोर का कोतवाल को डांटना जैसा है! अगर वह सच्चे हैं तो उनका पहला फ़र्ज़ यह है कि आस्तिकता का सबक़ अपने देशवासियों और अपनी सरकारों को जा कर सिखलायें. इससे कौन इन्कार करेगा कि विदेशी मिशन के बिरले ही भाई बहनों ने हिन्दुस्तान में सच्चे ईसाई की ज़िन्दगी—यानी हिन्दुस्तान के ग़रीब से ग़रीब लोगों के [illegible] मिल कर रहने की ज़िन्दगी बिताई है.

یہ بات سب کو معلوم ہے کہ ان باغیچوں میں اور اس پاس کے علاقوں میں انگریز بیوپاری اور ودیشی مشنری مل کر من مانا راج کرتے ہیں۔ ان ہی لوگوں کے اور خاص کر امریکی پادریوں کے اثر سے ناگا پہاڑیوں اور اتر پورب کی سرحد کے دوسرے حصوں میں رہنے والے ناگا قوم کے لوگوں نے بھارت سے الگ ہونے کی آواز تک اٹھائی۔ خوش قسمتی سے وہ غلط تحریک بند ہوگئی۔ پر ان علاقوں میں جو لوگ گئے ہیں ان کا کہنا ہے کہ امریکی مشنریوں نے وہاں ایک اپنا سامراج ہی قائم کر رکھا ہے جہاں دلی سرکار کی بہت کم پوچھ ہے۔ کچھ عرصہ پہلے جب ہمارے پردھان منتری آسام برما کی سرحد پر گئے تو ہند سرکار کو محسوس ہوا کہ حالت اتنی بگڑ گئی ہے کہ اگر مناسب روک تھام نہ کی گئی تو قابو سے باہر ہوجائیگی۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ ہوم منسٹر نے پارلیمنٹ میں بیان دے کر ودیشی مشنریوں کو خبردار کیا جس پر سارا ایک طوفان اٹھ کھڑا ہوا۔

پروٹسٹنٹ ایونجلیکل کمیونزم (Protestant Evangelical Communism) کے ودیشی عیسائی نیتاؤں نے ہند سرکار کے ودیشی پادریوں پر کچھ پابندیاں لگانے پر تین اعتراض کئے ہیں:

(i) یہ پابندیاں ہندستان کے ریت رواج کے انوکول نہیں ہیں کیونکہ گوتم بدھ نے خود ہی اپنے پرچارک دوسرے دیشوں کو بھیجے تھے۔

(ii) ان کے اندر "بھوتک واد" (ناستکتا) کی گندھ ہے جو ہندستان کی آن اور شان کے خلاف ہے۔

(iii) اگر ہند سرکار امریکی پادریوں پر پابندیاں لگائے گی تو امریکی سرکار کو بھی امریکہ میں چلنے والے رام کرشن مشن کے بارے میں سوچنا پڑیگا۔

ظاہر ہے کہ یہ تینوں دلیلیں کتنی لچر ہیں۔ ان امریکی مشنریوں میں سے کتنوں میں وہ دل ہے یا وہ بھاونا جس کے ماتحت بودھ بھکشو دنیا بھر میں کام کرتے تھے؟ ان کے مشن تو راج کاجی اور بیوپاری اڈیاں جیسے ہیں۔ بھوتک واد کے خلاف ان کا آواز اٹھانا الٹے چور کا کوتوال کو ڈانٹنا جیسا ہے! اگر وہ سچے ہیں تو ان کا پہلا فرض یہ ہے کہ آستکتا کا سبق اپنے دیش واسیوں اور اپنی سرکاروں کو جاکر سکھلائیں۔ اس سے کون انکار کریگا کہ ودیشی مشن کے برلے ہی بھائی بہنوں نے ہندستان میں سچے عیسائی کی زندگی—یعنی ہندستان کے غریب سے غریب لوگوں کے [illegible] مل کر رہنے کی زندگی بتائی ہے۔

पादरियों का उतना ही अपना है जितना किसी भी हिन्दू या मुसलमान का. हमें इस बात की भी बिलकुल चिन्ता नहीं कि इस देश की अधिकतर या सारी आबादी ,नाम के लिये हिन्दू धर्म को मानने वाली हो या मुसलिम धर्म की या ईसाई धर्म की. हम यहां केवल कुछ विदेशी पादरियों की बात कर रहे हैं.

अंगरेज़ी दौर में विदेशी मिशनरियों को सभी सहूलियतें हासिल थीं. उनके काम का दायरा भी बहुत फैला हुआ था—तालीम, सिहत, दवा दारू, यतीम खाने, खेल कूद, मनो रंजन वगैरा. उनमें से कुछ ने ऐसे ऐसे सख्त और ज़रूरी काम भी उठाये जिन से हम हिन्दुस्तानी आम तौर से बचते थे—खास कर कोढ़ियों की और छूत के दूसरे मरीज़ों की सेवा, अन्धों की तीमारदारी वग़ैरा. यह मिशनरी कई देशों के थे जैसे इंगलैंड, इटली, पुर्तगाल, स्पेन, जर्मनी, फ्रांस और अमरीका. इलाहाबाद और लखनऊ के क्रिस्चियन कालिज, नैनी का खेती कालिज, लखनऊ के लड़कियों का इसाबेला थोबर्न कालिज वग़ैरा अमरीकी मिशन के हैं और गोरखपुर का सेन्ट ऐन्डरूज़ कालिज, कानपूर का क्राइस्ट चर्च कालिज या आगरे का सेन्ट जान कालिज अंगरेज़ी मिशन के. क़ुदरती तौर पर, अंगरेज़ी मिशनरियों की तादाद दूसरों के मुक़ाबले ज़ियादा रही.

अंगरेज़ी राज के हट जाने के बाद भी विदेशी मिशनों के अधिकार और आज़ादी पहले जैसे ही बनी रही. उन का काम धाम बदस्तूर चलता रहा, यही नहीं, उस में इतनी तरक़्क़ी हुई कि अप्रैल 1950 से दिसम्बर 1952 तक हिन्दुस्तान में 1028 नये अमरीकन पादरी आये, 668 इटली के, 130 स्पेन के और 988 दूसरे 21 देशों के. अंगरेज़ मिशनरियों की तादाद कितने से कितनी इस अरसे में बढ़ी यह सहज मालूम भी नहीं हो सकता क्योंकि हमारे कामनवैल्थ में रहने के कारन अंगरेज़ लोग बिना किसी विसा या इजाज़त के आ जा सकते हैं.

इन विदेशी मिशनरियों को अपनी साज़िशों के लिये उपजाऊ ज़मीन हिन्दुस्तान के ग़ैर—उपजाऊ हिस्सों में—पहाड़ियों और पठारों में—मिली. पंजाब में कांगड़ा से लेकर बंगाल में दार्जीलिंग और आसाम में नागा पहाड़ियों तक, पच्छिमी घाट के ढालों पर, सतपुड़ा और नीलगिरी पहाड़ों पर और छोटा नागपुर के पठार पर यह विदेशी मिशनरी घने आबाद हैं. इसके अलावा उनकी बस्तियां ट्रावनकोर कोचीन में, हिन्दुस्तान की उत्तर पूर्वी सरहद पर और मध्य प्रदेश और पच्छिमी भारत के बनबासियों के बीच हैं. दक्खिन के रामनाद और तंजोर ज़िलों में भी यह कसरत से हैं. यह एक खुली बात है कि हमारे देश के चाय और काफ़ी के ज़ियादातर बग़ीचों के मालिक अभी तक अंगरेज़ हैं.

پادریوں کا اتنا ہی اپنا ہے جتنا کسی بھی ہندو یا مسلمان کا. ہمیں اس بات کی بھی بالکل چنتا نہیں کہ اس دیش کی ادھکتر یا ساری آبادی نام کے لئے ہندو دھرم کی ماننے والی ہو یا مسلم دھرم کی یا عیسائی دھرم کی. ہم یہاں کیول کچھ ودیشی پادریوں کی بات کر رہے ہیں.

انگریزی دور میں ودیشی مشنریوں کو سبھی سہولیتیں حاصل تھیں. ان کے کام کا دائرہ بھی بہت پھیلا ہوا تھا— تعلیم، صحت، دوا دارو، یتیم خانے، کھیل کود، منورنجن وغیرہ. ان میں سے کچھ نے ایسے ایسے سخت اور ضروری کام بھی اٹھائے جن سے ہم ہندستانی عام طور سے بچتے تھے—خاصکر کوڑھیوں کی اور چھوت کے دوسرے مریضوں کی سیوا، اندھوں کی تیمارداری وغیرہ. یہ مشنری کئی دیشوں کے تھے جیسے انگلینڈ، اٹلی، پرتگال، اسپین، جرمنی، فرانس اور امریکہ. الہ آباد اور لکھنؤ کے کرسچین کالج، نینی کا کھیتی کالج، لکھنؤ میں لڑکیوں کا ازابیلا تھوبرن کالج وغیرہ امریکی مشن کے ہیں اور گورکھپور کا سینٹ اینڈریوز کالج، کانپور کا کرائسٹ چرچ کالج یا آگرہ کا سینٹ جان کالج انگریزی مشن کے. قدرتی طور پر، انگریزی مشنریوں کی تعداد دوسروں کے مقابلہ زیادہ رہی.

انگریزی راج کے ہٹ جانے کے بعد بھی ودیشی مشنوں کے ادھیکار اور آزادی پہلے جیسے ہی بنی رہی. ان کا کام دھام بدستور چلتا رہا. یہی نہیں، اس میں اتنی ترقی ہوئی کہ اپریل 1950 سے دسمبر 1952 تک ہندستان میں 1028 نئے امریکن پادری آئے، 668 اٹلی کے، 130 اسپین کے اور 988 دوسرے ودیشوں کے. انگریز مشنریوں کی تعداد کتنے سے کتنی اس عرصہ میں بڑھی یہ سہج معلوم بھی نہیں ہو سکتا کیونکہ ہمارے کامن ویلتھ میں رہنے کے کارن انگریز لوگ ہندستان میں کسی ویزا یا اجازت کے آ جا سکتے ہیں.

ان ودیشی مشنریوں کو اپنی سازشوں کے لئے اپجاؤ زمین ہندستان کے غیر اپجاؤ حصوں میں—پہاڑیوں اور پٹھاروں میں ملی. پنجاب میں کانگڑا سے لے کر بنگال میں دارجلنگ اور آسام میں ناگا پہاڑیوں تک، پچھمی گھاٹ کے ڈھالوں پر، ستپڑا اور نیلگری پہاڑوں پر اور چھوٹا ناگپور کے پٹھار پر یہ ودیشی مشنری گھنے آباد ہیں. اس کے علاوہ ان کی بستیاں ٹراونکور کوچین میں، ہندستان کی اتر پوربی سرحد پر اور مدھیہ پردیش اور پچھمی بھارت کے بن واسیوں کے بیچ ہیں. دکھن کے رام ناد اور تنجور ضلعوں میں بھی وہ کثرت سے ہیں. یہ ایک کھلی بات ہے کہ ہمارے دیش کے چائے اور کافی کے زیادہ تر بغیچوں کے مالک ابھی تک انگریز ہیں.

न्दर … आम … कर दिया … इस पर ईसाई र्म के कई विदेशी ठेकेदार आग बबूला हो गये. उन में कुछ बड़ों बड़ों ने मिल कर एक बयान दिया कि हम गों ने हिन्दुस्तान की जो सेवाएं की हैं उनके लिये न्दुस्तान वालों को हमारा अहसान मन्द होना चाहिये, तेरा. इसके बाद भी आये दिन यह विदेशी पादड़ी अखबारों , बयानों या स्पीचों से अपना गुस्सा जाहिर करते रहते . हाल ही में पटना से कार्डिनल गरेसियस का बयान कला है (जो अभी आस्ट्रेलिया से लौटे हैं) कि "विदेशी साई पादरियों ने जो कुछ किया है उस से आंखें मोड़ना ौर उनके खिलाफ भावना पैदा करना ना शुकरापन गा."

ईसाई पादरियों की नेक और सच्ची सेवाओं की हम द्र करते हैं लेकिन उनके गलत कामों से और यहां की जकाजी, समाजी और आर्थिक जिन्दगी पर, सीधे या सीधे, असर डालने से भी आंखें नहीं मोड़ी जा सकतीं. ाल की घटनाएं साफ बता रही हैं कि धर्म की आड़ कर यह विदेशी मिशनरी अपने अपने देशों की सरकारों साम्राज शाही एजेन्ट बन कर हिन्दुस्तान के सच्चे हित ो जबरदस्त नुक़्सान पहुंचा रहे हैं.

हिन्दुस्तान के अन्दर धार्मिक आज़ादी हमेशा से रही . हर आदमी को अपने धर्म पर चलने और उसका प्रचार रने की यहां सदा इजाज़त रही. और न बाहर से ही सी आदमी को धर्म फैलाने से रोका गया. वैदिक धर्म ाया और यहां की मिट्टी में घुल मिल गया. उनके कई ज़ार साल बाद इसलाम आया और वह भी ऐसा घुल ल गया कि स्वामी रामतीर्थ ने कहा है :

चीस्त हिन्दू या मुसलमां, दो कूज़े यक कूज़े गर,

गरचे कूज़ा दो शुमार आयद, व लेकिन गिल यकेस्त.

इसके बाद यूरोप के लोग पहले व्यापारी बन कर ाए और अठारवीं सदी के आखिर तक यहां के हाकिम राजा बन बैठे. हिन्दुस्तान के ये अंगरेज़ मालिक ईसाई जिसकी वजह से उन्होंने अपने धर्म के विदेशी पादरियों ो हिन्दुस्तान में ईसाई धर्म की प्रचार की सारी सुविधाएं ं. लेकिन यह विदेशी मिशनरी आम तौर पर हिन्दुस्तान ी मिट्टी में अपने को घुला मिला न सके और आम जनता े अलग अपने ही ढंग की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे. नतीजा ह हुआ कि जिन लोगों को उन्होंने ईसाई बनाया उनमें ज़्यादातर लोगों ने अपने को देश की जनता से अलग खा और रहन सहन और पहनाव वग़ैरह में विदेशी चाल ो अपनाया. इस देश के ईसाई भाइयों को इस से काफी ुक़्सान पहुंचा. हमें खुशी है कि यह हालत बदली अब और ेज़ी से बदलती जा रही है. यह देश देश के ईसाई

اندر اپنا کام بند کر دینا چاہئے . اس پر عیسائی دھرم کے کئی ودیشی ٹھیکیدار آگ بگولہ ہوگئے . ان میں سے کچھ بڑوں بڑوں نے ملکر ایک بیان دیا کہ ہم لوگوں نے ہندستان کی جو سیوائیں کی ہیں، ان کے لئے ہندستان والوں کو ہمارا احسان مند ہونا چاہئے' وغیرہ . اس کے بعد بھی آئے دن یہ ودیشی پادری اخباروں میں' بیانوں یا اسپیچوں سے اپنا غصہ ظاہر کرتے رہتے ہیں . حال ہی میں پٹنہ سے کارڈنل گریسیس کا بیان نکلا ہے (جو ابھی آسٹریلیا سے لوٹے ہیں) کہ " ودیشی عیسائی پادریوں نے جو کچھ کیا ہے اس سے آنکھیں موڑنا اور ان کے خلاف بھاونا پیدا کرنا ناشکرا پن ہوگا ."

عیسائی پادریوں کی نیک اور سچی سیواؤں کی ہم قدر کرتے ہیں لیکن ان کے غلط کاموں سے اور یہاں کی راج کاجی' سماجی اور آرتھک زندگی پر' سیدھے یا نہ سیدھے اثر ڈالنے سے بھی آنکھیں نہیں موڑی جاسکتیں . حال کی گھٹنائیں صاف بتا رہی ہیں کہ دھرم کی آڑ لے کر یہ ودیشی مشنری اپنے اپنے دیشوں کی سرکاروں کے سامراج شاہی ایجنٹ بنکر ہندستان کے سچے ہت کو زبردست نقصان پہنچا رہے ہیں .

ہندستان کے اندر دھارمک آزادی ہمیشہ سے رہی ہے . ہر آدمی کو اپنے دھرم پر چلنے اور اس کا پرچار کرنے کی یہاں سدا اجازت رہی . اور نہ باہر کے ہی کسی آدمی کو دھرم پھیلانے سے روکا گیا . ویدک دھرم آیا اور یہاں کی مٹی میں گھل مل گیا . ان کے کئی ہزار سال بعد اسلام آیا اور وہ بھی ایسا گھل مل گیا کہ سوامی رام تیرتھ نے کہا ہے :

چیست ہندو یا مسلماں' دو کوزہ ایک کوزے گر'

گرچہ کوزا دو شمار آید' و لیکن گل چیست .

اس کے بعد یورپ کے لوگ پہلے بیوپاری بنکر آئے اور پھر اٹھارہویں صدی کے آخیر تک یہاں کے حاکم یا راجا بن بیٹھے . ہندستان کے انگریز مالک عیسائی تھے جس کی وجہ سے انہوں نے اپنے دھرم کے ودیشی پادریوں کو ہندستان میں عیسائی دھرم پرچار کی ساری سوودھائیں دیں . لیکن یہ ودیشی مشنری عام طور پر ہندستان کی مٹی میں اپنے کو گھلا ملا نہ سکے . اور جنتا سے الگ اپنے ہی ڈھنگ کی زندگی گذراتے رہے . نتیجہ یہ ہوا کہ جن لوگوں کو انہوں نے عیسائی بنایا ان میں سے زیادہ تر لوگوں نے اپنے کو دیش کی جنتا سے الگ رکھا اور رہن سہن اور پہناوے وغیرہ میں ودیشی چال کو اپنایا . اس دیش کے عیسائی بھائیوں کو اس سے کافی نقصان پہنچا . ہمیں خوشی ہے کہ یہ حالت بدلی اور اب اور بھی تیزی سے بدلتی جا رہی ہے . یہ دیش دیش کے عیسائی

सत्यानन्द जी का कुछ न कुछ सम्बन्ध था. स्वामी जी के जाने से देश का एक महान, सच्चा, निस्वार्थ और बेलाग सेवक हमारे बीच से उठ गया. मृत्यु के समय उनकी आयु केवल 56 बरस की थी. भगवान उनकी आत्मा का कल्यान करे. उनके सम्बन्धियों और हजारों साथियों को शान्ति दे और इस संकट के समय में इस देश की सेवा के मैदान में उनकी कमी को पूरा करें.

15. 8. '53. —सुन्दरलाल

विदेशी मिशनरी

धार्मिक आजादी के सिलसिले में हमारे देश के विधान की दफ़ा 25 में कहा गया है कि—"सब लोग अन्तरात्मा (जमीर) की आजादी के, और आजादी के साथ अपने धर्म को मानने, उस पर अमल करने और उसका प्रचार करने के अधिकार के बराबर के हक़दार हैं." साथ ही दफ़ा 26 कहती है :—

"जन व्यवस्था, सदाचार और तन्दुरुस्ती का ध्यान रखते हुए, हर मजहबी फ़िरक़े को और उसकी हर टुकड़ी को अधिकार होगा कि—

(ए) धर्म और ख़ैरात के मतलबों के लिये संस्थाएं क़ायम करे और चलाए;

(बी) धर्म के मामलों में अपने कामों का आप प्रबन्ध करें;

(सी) चल और अचल जायदाद की मालिक हो और इस तरह की जायदाद हासिल करे; और

(डी) क़ानून के अनुसार इस तरह की जायदाद का प्रबन्ध करे."

विधान के ये सब अधिकार भारत के सब शहरियों के लिये हैं चाहे वे हिन्दू, मुसलिम, ईसाई या किसी भी धर्म के मानने वाले हों. विदेशियों के लिये हर देश में कुछ न कुछ रोक थाम और कुछ अलग क़ानून होते हैं. फिर भी भारत के अन्दर विदेशी मिशनरी ईसाई धर्म प्रचार बे रोक टोक करते रहे हैं और कर रहे हैं. वैसे तो अंगरेजी राज में उन्होंने अपनी जड़ें गहरी बना ली थीं और धर्म की आड़ में देश के समाजी, तालीमी राज काजी और कलचरी जीवन पर काफ़ी हावी हो गये थे. उन्हें अंगरेजी हुकूमत का पूरा सहारा था. लेकिन हालमें इन विदेशी मिशनरियों के ग़लत कारनामे और साज़िशें हद के इतना ज़ियादा बाहर हो गये कि पार्लियामेन्ट के पिछले अपरैल के इजलास में, हमारे होम मिनिस्टर डाक्टर काटजू ने उन्हें आगाह किया कि अगर उन्होंने एहतियात न बरती तो उन्हें इस मुल्क के

ستیانند جی کا کچھ نہ کچھ سمبندھ تھا. سوامی جی کے جانے سے دیش کا ایک مہان' سچا' نسوارتھ اور بے لاگ سیوک ہمارے بیچ سے اُٹھ گیا. مرتیو کے سمے اُن کی آیو کیول 56 برس کی تھی. بھگوان اُن کی آتما کا کلیان کرے. اُن کے سمبندھیوں اور ہزاروں ساتھیوں کو شانتی دے اور اس سنکٹ کے سمے میں اس دیش کی سیوا کے میدان میں اُن کی کمی کو پورا کریں.

15 . 8 . '53 —سندرلال

ودیشی مشنری

دھارمک آزادی کے سلسلے میں ہمارے دیش کے ودھان کی دفعہ 25 میں کہا گیا ہے کہ—"سب لوگ انترآتما (ضمیر) کی آزادی کے' اور آزادی کے ساتھ اپنے دھرم کو ماننے' اُس پر عمل کرنے اور اُس کا پرچار کرنے کے ادھیکار کے برابر کے حق دار ہیں." ساتھ ہی دفعہ 26 کہتی ہے :—

"جن ویوستھا' سداچار اور تندرستی کا دھیان رکھتے ہوئے ہر مذہبی فرقے کو اور اُسکی ہر ٹکڑی کو ادھیکار ہوگا کہ—

(اے) دھرم اور خیرات کے مطلبوں کے لئے سنستھائیں قائم کرے اور چلائے؛

(بی) دھرم کے معاملوں میں اپنے کاموں کا آپ پربندھ کریں؛

(سی) چل اور اچل جائداد کی مالک ہو اور اس طرح کی جائداد حاصل کرے؛ اور

(ڈی) قانون کے انوسار اس طرح کی جائداد کا پربندھ کرے."

ودھان کے یہ سب ادھیکار بھارت کے سب شہریوں کے لئے ہیں چاہے وہ ہندو' مسلم' عیسائی یا کسی بھی دھرم کے ماننے والے ہوں. ودیشیوں کے لئے ہر دیش میں کچھ نہ کچھ روک تھام اور کچھ الگ قانون ہوتے ہیں. پھر بھی بھارت کے اندر ودیشی مشنری عیسائی دھرم پرچار بے روک ٹوک کرتے رہے ہیں اور کر رہے ہیں. ویسے تو انگریزی راج میں اُنہوں نے اپنی جڑیں گہری بنا لی تھیں اور دھرم کی آڑ میں دیش کے سماجی' تعلیمی' راج کاجی اور کلچری جیون پر کافی حاوی ہو گئے تھے. انہیں انگریزی حکومت کا پورا سہارا تھا. لیکن حال میں ان ودیشی مشنریوں کے غلط کارنامے اور سازشیں حد کے اتنا باہر ہو گئے کہ پارلیمنٹ کے پچھلے اپریل کے اجلاس میں' ہمارے ہوم منسٹر ڈاکٹر کاٹجو نے انہیں آگاہ کیا کہ اگر اُنہوں نے احتیاط نہ برتی تو انہیں اس ملک کے

हमारी राय

ہماری رائے

स्वामी सत्यानन्द

26 जुलाई सन 1953 को सेवापुरी आश्रम बनारस
स्वामी सत्यानन्द जी का शरीर छूट गया. स्वामी जी
श की आज़ादी के संग्राम के पुराने और तपे हुए सन्यासी
, विद्वान थे, महात्मा गांधी के सच्चे भक्त थे और
नके सिद्धान्तों पर डट कर अमल करने वाले. किसी
माने में जब उनका नाम पंडित बलदेव चोबे था वह
ाहौर के नये नेशनल कालेज में प्रोफ़ेसर थे. लाला लाजपत
ाय की पीपुल्स सोसाइटी के वह एक ख़ास मेम्बर थे.
रसे से उन्होंने अपना जीवन हिन्दू मुसलिम एकता
ौर हरिजन उद्धार के लिये अर्पन कर रखा था. सन
7–'48 में जब मैं दिल्ली में था पंजाब के कुछ शहरों में
ास कर अम्बाला के कुछ हिस्सों में हिन्दू, मुसलिम, सिख
मनस्य पूरे ज़ोरों पर था. किसी एक ऐसे आदमी की
रूरत थी जो वहां जा कर उस आग को ठंडा कर सके
ौर इस तरह के रचनात्मक काम वहां जारी कर सके
नसे आगे को प्रेम बढ़े. पंडित जवाहरलाल नेहरू
सलाह करके मैंने स्वामी जी को तार दिया, वह फ़ौरन
ल्ली पहुंच गए. उस ज़माने में वह आज़मगढ़ डिस्ट्रिक्ट
र्ड के प्रेसीडेन्ट भी थे और उन्होंने दूर पंजाब के इस
ाम को अपनी प्रेसीडेन्टी से ज़ियादा ज़रूरी समझा.
म्बाला पहुंच कर उन्होंने वह सुन्दर काम किया जिस
क़ीमत नहीं आंकी जा सकती. अम्बाला में उनका
नात्मक काम आज उनके बाद भी जारी है और उम्मीद
ारी रहेगा. हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी के वह
प्रेमी और हमदर्द थे. जिस तरह हिन्दुस्तानी कलचर
ायटी को उनका प्रेम और उनकी मदद हासिल थी,
तरह स्वामी सत्यानन्द जी के क़ायम किये हुए हरिजन
'दोहरी घाट' ज़िला आज़मगढ़ की स्थापना में
ी हाथ था. हरिजन गुरुकुल उनके जीवन की
चीज़ है. इस प्रान्त, बल्कि भारत की रचनात्मक
ालय सब कोशिशों और संस्थाओं से स्वामी

سوامی ستیا نند

26 جولائی سن '53 کو سیواپوری آشرم بنارس میں سوامی ستیا نند جی کا شریر چھوٹ گیا۔ سوامی جی دیش کی آزادی کے سنگرام کے پرانے اور تپے ہوئے سنیاسی تھے، ودوان تھے، مہاتما گاندھی کے سچے بھکت تھے اور اُن کے سدھانتوں پر ڈٹ کر عمل کرنے والے۔ کسی زمانے میں جب اُن کا نام پنڈت بلدیو چوبے تھا وہ لاہور کے نئے نیشنل کالج میں پروفیسر تھے۔ لالہ لاجپت رائے کی پیپلس سوسائٹی کے وہ ایک خاص ممبر تھے۔ عرصے سے اُنہوں نے اپنا جیون ہندو مسلم ایکتا اور ہریجن اُدھار کے لئے ارپن کر رکھا تھا۔ سن '47–'48 میں جب میں دلی میں تھا پنجاب کے کچھ شہروں خاص کر امبالہ کے کچھ حصوں میں ہندو، مسلم، سکھ ویمنسیہ پورے زوروں پر تھا۔ کسی ایک ایسے آدمی کی ضرورت تھی جو وہاں جا کر اُس آگ کو ٹھنڈا کر سکے اور اس طرح کے رچناتمک کام وہاں جاری کر سکے جن سے آگے کو پریم بڑھے۔ پنڈت جواہر لال نہرو سے صلاح کر کے میں نے سوامی جی کو تار دیا، وہ فوراً دلی پہونچ گئے۔ اُس زمانہ میں وہ اعظم گڑھ ڈسٹرکٹ بورڈ کے پریسیڈنٹ بھی تھے پر اُنہوں نے دور پنجاب کے اس کام کو اپنی پریسیڈنٹی سے زیادہ ضروری سمجھا۔ امبالہ پہونچ کر اُنہوں نے وہ سندر کام کیا جس کی قیمت نہیں آنکی جا سکتی۔ امبالہ میں اُن کا رچناتمک کام آج اُن کے بعد بھی جاری ہے اور اُمید ہے جاری رہیگا۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کے وہ خاص پریمی اور ہمدرد تھے۔ جس طرح ہندستانی کلچر سوسائٹی کو اُن کا پریم اور اُن کی مدد حاصل تھی اُسی طرح سوامی ستیانند جی کے قائم کئے ہوئے ہریجن گروکل 'دوہری گھاٹ' ضلع اعظم گڑھ کی استھاپنا میں میرا بھی کچھ ہاتھ تھا۔ ہریجن گروکل اُن کے جیون کی ایک خاص چیز ہے۔ اس پرانت، بلکہ بھارت کی رچناتمک کام کی لگ بھگ سب کوششوں اور سنستھاؤں سے سوامی

मालूम हुआ कि यह किताब उससे भी ज़ियादा आसान बोली में और उससे भी ज़ियादा सीधी शैली में लिखी गई है. अंगरेज़ी पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों रहने दिया है पर उनका अर्थ समझ कर पढ़ने वालों को अंधेरे में नहीं छोड़ा गया.

हमें अब तक इसके दो भाग मिले हैं पर आगे कुछ भाग और निकलने वाले हैं. एक का नाम होगा, इस दुनिया के अजायब घर, दूसरी किताब होगी, नख से शिख तक, और तीसरी होगी, यमदूत के खिलाफ संघर्ष.

अनुवाद में अनुवाद की बुराई बहुत ही कम है. कोई इसे अनुवाद नहीं कह सकता. हर तरह मूल पुस्तक सी जंचती है. मूल पुस्तक हमारे सामने होती तो हम यह भी कह सकते कि अनुवाद ज्यों का त्यों हुआ है या नहीं. जगह जगह चित्रों ने इस किताब की उपयोगिता और बढ़ा दी है.

इस किताब में एक कमी है. टाइप इतना छोटा है मानो वह बच्चों के लिये न लिखी जा कर विद्वानों के लिये लिखी गई है.

हिन्दी जानकार किसी को भी इस किताब के बग़ैर नहीं रहना चाहिये. —म.

खंडहरों का वैभव

लेखक—मुनी कान्ती सागर; दाम—छे रुपया.

भारतीय ज्ञानपीठ काशी ने 436 सफ़े की यह किताब यह कह कर निकाली है कि उसके छे रुपए दाम ही लागत से दो रुपए कम हैं. न जाने किस किस काम पर इस किताब के तैयार करने पर खर्च पड़ा होगा. खंडहरों और खंडित मूरतियों के इसमें चित्र भी काफ़ी हैं. उन लोगों के लिये सचमुच यह बड़े काम की किताब है जिन्हें खंडहरों को देख कर रोना आ जाता है. किसी मूरत को किसी ने अपने औज़ार तेज़ करने के काम में ले रखा है, इसे देख कर मुनी जी को रोना आ गया. इसलिये नहीं कि पत्थर की मूरत में जान थी क्योंकि जान के मामले में तो मूरती बनाने वालों का यह कहना है कि वह न मरती है, न कटती है, न जलती है, न छिदती है, न सूखती है वग़ैरा. और इसी के आधार पर उनका यह भी कहना है कि जिनकी यह मूरतियां हैं वह तपस्या में इतने लीन हुए थे कि किसी पर बेलें चढ़ गई थीं, किसी को सियार खाने लगे तो वह हिले डुले नहीं. उन्हें दुख इस बात का हुआ कि एक ऐसी मूरत पर औज़ार तेज़ किये जा रहे थे जो इतिहास की चीज़ थी, जो किसी अजायबघर में होनी चाहिये थी.

सचमुच किताब बड़े काम की है. हिन्दी में ऐसी किताब कम ही देखने को मिलती है. इस विषय को हिन्दी वालों ने अभी छेड़ा ही नहीं है. —म.

معلوم ہوا کہ یہ کتاب اُس سے بھی زیادہ آسان بولی میں اور اُس سے بھی زیادہ سیدھی شیلی میں لکھی گئی ہے۔ انگریزی پاریبھاشک شبدوں کو جیوں کا تیوں رہنے دیا ہے پر اُن کا ارتھ سمجھ کر پڑھنے والوں کو اندھیرے میں نہیں چھوڑا گیا۔

ہمیں اب تک اس کے دو بھاگ ملے ہیں پر آگے کچھ بھاگ اور نکلنے والے ہیں۔ ایک کا نام ہوگا' اس دنیا کے عجائب گھر' دوسری کتاب ہوگی' نکھ سے شکھ تک' اور تیسری ہوگی' یم دوت کے خلاف سنگھرش۔

انوواد میں انوواد کی برائی بہت ہی کم ہے۔ کوئی اسے انوواد نہیں کہہ سکتا۔ ہر طرح مول پستک سی جنچتی ہے۔ مول پستک ہمارے سامنے ہوتی تو ہم یہ بھی کہہ سکتے کہ انوواد جیوں کا تیوں ہوا ہے یا نہیں۔ جگہ جگہ چتروں نے اس کتاب کی اُپیوگتا اور بڑھا دی ہے۔

اس کتاب میں ایک کمی ہے۔ ٹائپ اتنا چھوٹا ہے مانو وہ بچوں کے لئے نہ لکھی جاکر ودوانوں کے لئے لکھی گئی ہے۔

ہندی جانکار کسی کو بھی اس کتاب کے بغیر نہیں رہنا چاہئے۔ —م۔

کھنڈھروں کا ویبھو

لیکھک—منی کانتی ساگر؛ دام—چھ روپیہ۔

بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی نے 436 صفحے کی یہ کتاب یہ کہہ کر نکالی ہے کہ اُس کے چھ روپیہ دام ہی لاگت سے دو روپیہ کم ہیں۔ نہ جانے کس کس کام پر اس کتاب کے تیار کرنے پر خرچ پڑا ہوگا۔ کھنڈھروں اور کھنڈت مورتیوں کے اس میں چتر بھی کافی ہیں۔ اُن لوگوں کے لئے سچ مچ یہ بڑے کام کی کتاب ہے جنہیں کھنڈھروں کو دیکھ کر رونا آجاتا ہے۔ کسی مورت کو کسی نے اپنے اوزار تیز کرنے کے کام میں لے رکھا ہے' اسے دیکھ کر منی جی کو رونا آگیا۔ اس لئے نہیں کہ پتھر کی مورت میں جان تھی کیونکہ جان کے معاملے میں تو مورتی بنانے والوں کا یہ کہنا ہے کہ وہ نہ مرتی ہے' نہ کٹتی ہے' نہ جلتی ہے' نہ چھدتی ہے' نہ سوکھتی ہے وغیرہ۔ اور اسی کے آدھار پر اُن کا یہ بھی کہنا ہے کہ جن کی یہ مورتیاں ہیں وہ تپسیا میں اتنے لین ہوئے تھے کہ کسی پر بیلیں چڑھ گئی تھیں' کسی کو سیار کھانے لگے تو وہ ہلے ڈلے نہیں۔ انہیں دکھ اس بات کا ہوا کہ ایک ایسی مورت پر اوزار تیز کئے جا رہے تھے جو اتہاس کی چیز تھی' جو کسی عجائب گھر میں ہونی چاہئے تھی۔

سچ مچ کتاب بڑے کام کی ہے۔ ہندی میں ایسی کتاب کم ہی دیکھنے کو ملتی ہے۔ اس وشے کو ہندی والوں نے ابھی چھیڑا ہی نہیں ہے۔ —م۔

यहां कवितायें दिये हुए हैं वहीं कवियों का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दे दिया है. संपादक ने यह करके इस किताब को इस योग्य बना दिया है कि यह पाठ्य पुस्तक बन सकती है. काका साहब की इस बात से हम सहमत हैं :—

"प्राचीन कविता संग्रह की कविता आज हमारे लिये कुछ कठिन सी हो गई है. शब्दार्थ कोश के सहारे उसका अर्थ समझना पड़ता है. अंगूर के फल के जैसा जिसका रस सुलभ था वह आज भाषा के कारन नारियल के फल जैसा हो गया है. अगर हम इसका प्रचार घर घर कर सकेंगे और सच्ची हिन्दुस्तानी को लोगों में प्रचलित कर देंगे तो इसका रस फिर से अंगूर के जैसा सुलभ और तृप्ति दायक हो जायगा."

—म.

अंतहीन कहानी

निकालने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, बंबई 4.

भाग पहला, दाम—बारह आने; सफ़े 74.

दूसरा भाग, दाम—एक रुपया, सफ़े 112.

इन किताबों के लेखक हैं देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय और अनुवादक हैं युगजीत नवलपुरी जी. खोज करने पर भी यह पता न चला कि मूल पुस्तक अंगरेज़ी में है या बंगला में और उसका असली नाम क्या है ? अनुमान है बंगला में होगी. यह बात किताब में दे देनी चाहिये थी. हिन्दी को इतना अनुदार नहीं होना चाहिये.

प्रकाशक के शब्दों में, शक नहीं, हिन्दी पढ़ने वालों को इस तरह की किताब की बड़ी भारी ज़रूरत थी. किताब की शैली सचमुच बड़ी आसान है. विज्ञान की पुस्तक कहानी की शक्ल में लिख डालना उसी का काम हो सकता है जो विज्ञान का माहिर हो. जिस ढंग से यह किताब लिखी गई है इसे पढ़ कर कभी कोई बालक यह नहीं कहेगा कि उसने कोई विज्ञान की किताब पढ़ी है. वह यही कहेगा उसने कहानी पढ़ी है. इस किताब को पढ़ कर वह दूसरों को सुनाए बग़ैर न रहेगा. और अगर कहीं अपनी बे पढ़ी लिखी मां को सुनाने बैठ गया तब तो उस बुढ़िया में भी अनजाने ही विज्ञान की चाट पैदा कर देगा. हम इस किताब की यों ही तारीफ़ नहीं कर रहे. हमें यह दावा है हम भी विज्ञान को बहुत आसान बना कर बच्चों के सामने पेश करते हैं. एक किताब हमने लिखी भी थी वह छप नहीं पाई. पर इस किताब को देख कर तो हमें ऐसा

جہاں شبدارتھ دیا ہوا ہے وہیں کویوں کا سنکشپت جیون پریچے بھی دے دیا ہے ۔ سمپادک نے یہ کر کے اس کتاب کو اس یوگیہ بنا دیا ہے کہ یہ پاٹھیہ پستک بن سکتی ہے ۔ کاکا صاحب کی اس بات سے ہم سہمت ہیں :—

"پراچین کویتا سنگرہ کی کویتا آج ہمارے لئے کچھ کٹھن سی ہو گئی ہے ۔ شبدارتھ کوش کے سہارے اس کا ارتھ سمجھنا پڑتا ہے ۔ انگور کے پھل کے جیسا جس کا رس سلبھ تھا وہ آج بھاشا کے کارن ناریل کے پھل جیسا ہوگیا ہے ۔ اگر ہم اس کا پرچار گھر گھر کرسکیں گے اور سچی ہندستانی کو لوگوں میں پرچلت کردیں گے تو اس کا رس پھر سے انگور کے جیسا سلبھ اور ترپتی دائک ہوجائے گا ۔"

—م

انت ہین کہانی

نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاوس، بمبئی 4 .

بھاگ پہلا، دام—بارہ آنے؛ صفحے 74 .

دوسرا بھاگ، دام—ایک روپیہ؛ صفحے 112.

ان کتابوں کے لیکھک ہیں دیوی پرساد چٹوپادھیائے اور انوادک ہیں یگ جیت نول پوری جی ۔ کھوج کرنے پر بھی یہ پتہ نہ چلا کہ مول پستک انگریزی میں ہے یا بنگلا میں اور اس کا اصلی نام کیا ہے ؟ انومان ہے بنگلا میں ہوگی ۔ یہ بات کتاب میں دے دینی چاہئے تھی ۔ ہندی کو اتنا انودار نہیں ہونا چاہئے ۔

پرکاشک کے شبدوں میں، شک نہیں، ہندی پڑھنے والوں کو اس طرح کی کتاب کی بڑی بھاری ضرورت تھی ۔ کتاب کی شیلی سچ مچ بڑی آسان ہے ۔ وگیان کی پستک کہانی کی شکل میں لکھ ڈالنا اسی کا کام ہو سکتا ہے جو وگیان کا ماہر ہو ۔ جس ڈھنگ سے یہ کتاب لکھی گئی ہے اسے پڑھکر کبھی کوئی بالک یہ نہیں کہے گا کہ اس نے کوئی وگیان کی کتاب پڑھی ہے ۔ وہ یہی کہے گا اس نے کہانی پڑھی ہے ۔ اس کتاب کو پڑھکر وہ دوسروں کو سنائے بغیر نہ رہے گا ۔ اور اگر کہیں اپنی بے پڑھی لکھی ماں کو سنانے بیٹھ گیا تب تو اس بڑھیا میں بھی انجانے ہی وگیان کی چاٹ پیدا کر دے گا ۔ ہم اس کتاب کی یوں ہی تعریف نہیں کر رہے ۔ ہمیں یہ دعویٰ ہے ہم بھی وگیان کو بہت آسان بناکر بچوں کے سامنے پیش کرتے ہیں ۔ ایک کتاب ہم نے لکھی بھی تھی وہ چھپ نہیں پائی ۔ پر اس کتاب کو دیکھکر تو ہمیں ایسا

दबा लेते हैं. जहां काम थोड़ा हो पाता है उसकी खुशबू बहुत फैल जाती है. दूसरे मुल्क जब इसका उपयोग करेंगे तो उन्हें बहुत जल्द ही हिन्दुस्तान से कई गुनी सफलता मिलेगी. यह दूसरी बात है कि जो नाम हिन्दुस्तान एक लाख एकड़ भूमि से पा सकता है दूसरे मुल्क उसी को पचास लाख एकड़ भूमिदान से कर सकेंगे. वह हिन्दुस्तान से कई गुना जियादा मालदार भी तो हैं. उन्हें इस किताब को पढ़ना ही चाहिये और इस पर अमल करने के लिये तैयार होना ही चाहिये.

किताब 134 सफ़े की है और इसका दाम है डेढ़ रुपया. इस किताब के मिलने का पता—नवजीवन पबलीशिंग हाउस, अहमदाबाद.

—भ

प्राचीन कविता संग्रह

यह किताब वर्धा से हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने निकाली है, इसके संपादक हैं रसूल अहमद "अबोध", दाम—डेढ़ रुपया.

नौ संतों की छटी हुई बानी का यह संग्रह है. यह नौ यह हैं—संत कबीर, मलिक मोहम्मद जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, अब्दुल रहीम खानखाना "रहीम" नंददास, रसखान, और बिहारीलाल.

यह संग्रह अपने ढंग का अलग है, ऐसे संग्रह की बड़ी ज़रूरत थी. इसकी भाषा कितनी ही पुरानी क्यों न हो पर दो तीन बार पढ़ने से मामूली पढ़े लिखे की समझ में आसानी से आ सकती है. इस पर भी किताब के आखिर में शब्दार्थ दे दिये गये हैं.

संपादक ने प्राचीन हिन्दी काव्य का संक्षिप्त परिचय देकर इस किताब को और भी जियादा उपयोगी बना दिया है. काका कालेलकर जी की संत बानी सिरबंध से जो किताब के शुरू में एक भूमिका दी हुई है उसे पढ़कर हर एक का जी मचल उठेगा कि एक बार इस पुस्तक में हो कर निकल जाय, और फिर यह असंभव है कि वह उसे कई बार न पढ़े.

हमारी अपनी राय यह है कि ऐसी किताबें घर घर में ज़रूर रखनी चाहिए. पर उनको रोज़ रोज़ नहीं पढ़ना चाहिये. कभी कभी और बहुत कम ही पढ़ना चाहिये. रोज़ पढ़ने से बदहज़मी हो जाने का डर है, पर संतों की किताबें इतनी मिठास लिये होती हैं कि बदहज़मी हो जाने का ख़याल किये बग़ैर उन्हें रोज़ पढ़ना ही है.

دبا لیتے ھیں ۔ جہاں کام تھوڑا ہو پاتا ہے اُس کی خوشبو بہت پھیل جاتی ہے ۔ دوسرے ملک جب اِس کا اُپیوگ کریں گے تو اُنھیں بہت جلد ہی ہندستان سے کئی گنی سپھلتا ملے گی یہ دوسری بات ہے کہ جو نام ہندستان ایک لاکھ ایکڑ بھومی سے پا سکتا ہے دوسرے ملک اُسی کو پچاس لاکھ ایکڑ بھومی‌دان سے کر سکیں گے ۔ وہ ہندستان سے کئی گنا زیادہ مالدار بھی تو ھیں ۔ اُنھیں اِس کتاب کو پڑھنا ہی چاہئے اور اس پر عمل کرنے کے لئے تیار ہونا ہی چاہئے ۔

کتاب 134 صفحے کی ہے اور اس کا دام ہے ڈیڑھ روپیہ ۔ اِس کتاب کے ملنے کا پتہ—نوجیون پبلشنگ ہاؤس، احمدآباد ۔

بھ—

پراچین کویتا سنگرہ

یہ کتاب وردھا سے ہندستانی پرچار سبھا نے نکالی ہے ۔ اِس کے سمپادک ہیں رسول احمد "ابودھ" ؛ دام— ڈیڑھ روپیہ ۔

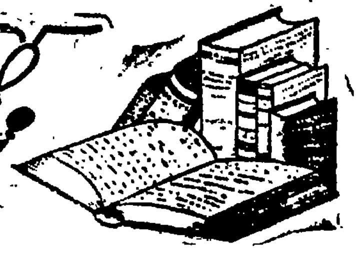
نو سنتوں کی چھٹی ہوئی وانی کا یہ سنگرہ ہے ۔ یہ نو یہ ہیں—سنت کبیر، ملک محمد جائسی، سورداس، تلسی داس، میرا بائی، عبدالرحیم خانخاناں "رحیم" نند داس، رس‌کھان، اور بہاری لال ۔

یہ سنگرہ اپنے ڈھنگ کا الگ ہے ۔ ایسے سنگرہ کی بڑی ضرورت تھی ۔ اِس کی بھاشا کتنی ہی پرانی کیوں نہ ہو پر دو تین بار پڑھنے سے معمولی پڑھے لکھے کی سمجھ میں آسانی سے آ سکتی ہے ۔ اِس پر بھی کتاب کے آخیر میں شبدارتھ دے دئے گئے ہیں ۔

سمپادک نے پراچین ہندی کاویہ کا سنکشپت پریچے دے‌کر اِس کتاب کو اور بھی زیادہ اُپیوگی بنا دیا ہے ۔ کاکا کالیلکر جی کی سنت وانی سر بندھ سے جو کتاب کے شروع میں ایک بھومکا دی ہوئی ہے اُسے پڑھکر ہر ایک کا جی مچل اُٹھے گا کہ ایک بار اِس پستک میں ہوکر نکل جائے ۔ اور پھر یہ اسمبھو ہے کہ وہ اُسے کئی بار نہ پڑھے ۔

ہماری اپنی رائے یہ ہے کہ ایسی کتابیں گھر گھر میں ضرور رکھنی چاہئیں ۔ پر اُن کو روز روز نہیں پڑھنا چاہئے ۔ کبھی کبھی اور بہت کم ہی پڑھنا چاہئے ۔ روز پڑھنے سے بدہضمی ہو جانے کا ڈر ہے، پر سنتوں کی کتابیں اتنی مٹھاس لئے ہوتی ہیں کہ آدمی بدہضمی ہو جانے کا خیال کئے بغیر اُنہیں روز پڑھتا ہی ہے ۔

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भू दान यज्ञ

यह किताब अंगरेजी भाषा में उन लेखों का संग्रह है जो विनोबा जी के नाम से भूदान यज्ञ के बारे में 'हरिजन' में समय समय निकलते रहे हैं. किताब के अंत में सम्पति दान प्रतिज्ञा पत्र भी छाप दिया गया है. जो भूदान यज्ञ के संबन्ध में जानना चाहते हैं उनके लिये यह किताब बड़े काम की साबित हो सकती है. आज की अर्थ कठनाई के दिनों में हिन्दुस्तानी किस तरह अपने ग़रीब भाईयों को मुफ्त ज़मीन दे डालते हैं इसकी कथा इस किताब में जानने के लिये मिल सकती है.

विनोबा जी के नाम से आज सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही नहीं दूसरे मुल्क वाले भी परिचित हैं. और उनमें ऐसी इच्छा होना स्वाभाविक है कि आखिर विनोबा जी ऐसा क्या जादू करते हैं जो लोग अपनी ज़मीनें ग़रीबों को देने के लिये तैयार हो जाते हैं. ठीक ठीक तो यह काम उसी वक़्त समझ में आ सकता है जब आदमी महीनों विनोबा जी के साथ रहे और उनको अपना काम करते हुए देखे. लेकिन अगर कोई ऐसा न कर सके तो उसके लिये यह किताब उस वक़्त ज़ियादा मददगार साबित हो सकती है जिस वक़्त वह खुद इस तरह का काम शुरू करे.

इस किताब को पढ़ कर जो से ग़रीबों का भला चाहने वालों के दिल में यह भावना जाग सकती है कि अगर वे भी इस तरह का कोई आन्दोलन अपने मुल्क में उठाएं तो उसे ज़रूर किसी न किसी हद तक सफलता मिलेगी. और अगर वह विश्वास के साथ उस काम में अपने को लगाये रखेगा तो अजब नहीं कि वह बहुत जल्दी विनोबा जी से एक क़दम आगे बढ़ जाय. हम यह बात इस आधार पर कह रहे हैं कि दूसरे मुल्क जितने ज़ियादा [illegible] भावना के भूखे हैं उतना हिन्दुस्तान नहीं. हिन्दुस्तान [illegible] भावना का भूखा नहीं, उसके अन्दर वह काफ़ी से ज़ियादा है और ज़रा छेड़ने पर जाग पड़ती है. और जल्दी [illegible] की [illegible] है. कि दूसरे मुल्क दांत तले उंगली

بھو دان یگیہ

یہ کتاب انگریزی بھاشا میں اُن لیکھوں کا سنگرہ ہے جو ونوباجی کے نام سے بھودان یگیہ کے بارے میں 'ہریجن' میں سمے سمے نکلتے رہے ہیں۔ کتاب کے انت میں سمپتی دان پرتگیا پتر بھی چھاپ دیا گیا ہے۔ جو بھودان یگیہ کے سمبندھ میں جاننا چاہتے ہیں اُن کے لئے یہ کتاب بڑے کام کی ثابت ہو سکتی ہے۔ آج کی ارتھ کٹھنائی کے دنوں میں ہندستانی کس طرح اپنے غریب بھائیوں کو مفت زمین دے ڈالتے ہیں اِسکی کتھا اِس کتاب میں جاننے کے لئے مل سکتی ہے۔

ونوبا جی کے نام سے آج صرف ہندستان ہی نہیں دوسرے ملک والے بھی پریچت ہیں۔ اور اُن میں ایسی اِچھا ہونا سوابھاوک ہے کہ آخر ونوبا ایسا کیا جادو کرتے ہیں جو لوگ اپنی زمین غریبوں کو دینے کے لئے تیار ہو جاتے ہیں۔ ٹھیک ٹھیک تو یہ کام اُسی وقت سمجھ میں آ سکتا ہے جب آدمی مہینوں ونوبا جی کے ساتھ رہے اور اُن کو اپنا کام کرتے ہوئے دیکھے۔ لیکن اگر کوئی ایسا نہ کر سکے تو اُس کے لئے یہ کتاب اُس وقت زیادہ مددگار ثابت ہو سکتی ہے جس وقت وہ خود اِسطرح کا کام شروع کرے۔

اِس کتاب کو پڑھکر جی سے غریبوں کا بھلا چاہنے والوں کے دل میں یہ بھاونا جاگ سکتی ہے کہ اگر وہ بھی اِس طرح کا کوئی آندولن اپنے ملک میں اُٹھائیں تو اُسے ضرور کسی نہ کسی حد تک سپھلتا ملے گی۔ اور اگر وہ وشواس کے ساتھ اُس کام میں اپنے کو لگائے رکھے گا تو عجب نہیں کہ وہ بہت جلدی ہی ونوبا جی سے ایک قدم آگے بڑھ جائے۔ ہم یہ بات اِس آدھار پر کہ رہے ہیں کہ دوسرے ملک جتنے زیادہ دھرم بھاونا کے بھوکے ہیں اُتنا ہندستان نہیں۔ ہندستان دھرم بھاونا کا بھوکا نہیں، اُس کے اندر وہ کافی سے زیادہ ہے اور ذرا چھیڑنے پر جاگ پڑتی ہے۔ اور جلدی ہی اپنا رنگ [illegible] ہے کہ دوسرے ملک دانت تلے انگلی

(तीन मिनट में डिप्टी साहब मुआइना लिख कर पंडित जी को घूरते हुए रवाना होते हैं और पंडित जी उन्हें पहुँचाने के लिये आगे बढ़ते हैं.)

डिप्टी साहब—मेरा पीछा छोड़िये और जाके अपनी क़िस्मत का फ़ैसला पढ़ लीजिए.

(पंडित जी को गोली सी लग जाती है. कई मिनट वहीं खड़े रहते हैं उसके बाद धीरे धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ते हैं. मुआइना पढ़ते पढ़ते पंडित जी बड़ बड़ाने लगते हैं.)

पंडित जी—अध्यापक बड़ा असभ्य है! लड़कों को कपड़ा पहनने की भी तमीज़ नहीं सिखाता! ख़ुद भी दाढ़ी बढ़ाये नंगे पैर स्कूल आता है! एँ...दाढ़ी...(और दाढ़ी पर जब हाथ जाता है तब उन्हें पता चलता है कि उनके चेहरे पर बालों की खेती उग आई है) अध्यापक का सलूक ही लड़कों की ग़ैर हाज़िरी का सबब है! (एँ मेरा सलूक! मैं क्या उन्हें मारता हूं या स्कूल आने से रोकता हूं!) महज़ 25 फ़ी सदी हाज़िरी रहती है! अगर ऐसा आदमी एक दिन भी और इस मदरसे में रहा तो स्कूल की ख़ैरियत नहीं! इसलिये इसका तबादला यहां से चालीस मील दूर खजूरी मदरसे में होना ज़रूरी है...... एँ खजूरी...... 40 मील दूर......इतवार की छुट्टियों में भी तो अब नहीं आ सकूंगा, क्योंकि बस से आने पर तो महीने भर की तनख़ा चार बार के बस के किराये में ही लग जायगी...! हे भगवान! अब क्या होगा, खेती बारी कैसे होगी, खेती और तनख़ाह से किसी तरह पेट भर जाता था अब ख़ाली तनख़ा से तो अपना ही पेट नहीं भरेगा। तीन लड़के, दो लड़कियों और बीवी का पेट कैसे भरेगा......! लड़के की फ़ीस और पढ़ाई का ख़र्च अब कैसे चलेगा......!

(पंडित जी के सामने सारा मदरसा चर्ख़ी की तरह घूमता हुआ नज़र आने लगा. उसी में उनकी बीवी, बच्चे, पढ़ने वाले लड़के भी नज़र आने लगे......! बीवी की साड़ी फटी है, बच्चों के बदन पर एक सूत नहीं हैं, पढ़ने वाले लड़के स्कूल से इसलिये लौट आये हैं कि फ़ीस न देने की वजह से मास्टर ने उन्हें क्लास से निकाल दिया है...! पंडित जी की आंख खुली थी लेकिन उन्हें गांव के महाजन का आना तब मालूम हुआ जब उसने पंडित जी की पीठ पर अपना हाथ कुछ ज़ोर से रखते हुए कहा—का हो पंडित सपनात हो का?

और पंडित जी के हाथ से रजिस्टर छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ता है.

(परदा धीरे धीरे गिरता है)

(تین منٹ میں ڈپٹی صاحب معائنہ لکھکر پنڈت جی کو گھورتے ہوئے روانہ ہوتے ہیں اور پنڈت جی انہیں پہنچانے کے لئے آگے بڑھتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—میرا پیچھا چھوڑیئے اور اپنی جا کے قسمت کا فیصلہ پڑھ لیجئے ۔

(پنڈت جی کو گولی سی لگ جاتی ہے ۔ کئی منٹ وہیں کھڑے رہتے ہیں ۔ اس کے بعد دھیرے دھیرے میز کی طرف بڑھتے ہیں ۔ معائنہ پڑھتے پڑھتے پنڈت جی بڑبڑانے لگتے ہیں)

پنڈت جی—ادھیاپک بڑا اسبھیہ ہے ! لڑکوں کو کپڑا پہننے کی تمیز نہیں سکھاتا ! خود بھی داڑھی بڑھائے ننگے پیر اسکول آتا ہے ! ایں......داڑھی......(اور داڑھی پر جب ہاتھ جاتا ہے تب انہیں پتہ چلتا ہے کہ ان کے چہرے پر بالوں کی کھیتی اگ آئی ہے) ادھیاپک کا سلوک ہی لڑکوں کی غیرحاضری کا سبب ہے ! (ایں میرا سلوک! میں کیا انہیں مارتا ہوں یا اسکول آنے سے روکتا ہوں) محض 25 فی صدی حاضری رہتی ہے ! اگر ایسا آدمی ایک دن بھی اور اس مدرسہ میں رہا تو اسکول کی خیریت نہیں ! اس لئے اس کا تبادلہ یہاں سے چالیس میل دور کھجوری مدرسہ میں ہونا ضروری ہے......ایں کھجوری...... 40 میل دور......اتوار کی چھٹیوں میں بھی تو اب نہیں آ سکوں گا کیونکہ بس سے آنے پر تو مہینے بھر کی تنخواہ چار بار کے بس کے کرائے میں ہی لگ جائیگی......! ہے بھگوان ! اب کیا ہوگا' کھیتی باری کیسے ہوگی' کھیتی اور تنخواہ سے کسی طرح پیٹ بھر جاتا تھا اب خالی تنخواہ سے تو اپنا ہی پیٹ نہیں بھرے گا ۔ تین لڑکے' دو لڑکیوں اور بیوی کا پیٹ کیسے بھرے گا......! لڑکے کی فیس اور پڑھائی کا خرچ اب کیسے چلے گا......!

(پنڈت جی کے سامنے سارا مدرسہ چرخی کی طرح گھومتا ہوا نظر آنے لگا ۔ اسی میں ان کی بیوی' بچے' پڑھنے والے لڑکے بھی نظر آنے لگے......! بیوی کی ساری پھٹی ہے' بچوں کے بدن پر ایک سوت نہیں ہے' پڑھنے والے لڑکے اسکول سے اس لئے لوٹ آئے ہیں کہ فیس نہ دینے کی وجہ سے ماسٹر نے انہیں کلاس سے نکال دیا ہے......پنڈت جی کی آنکھ کھلی تھی لیکن انہیں گاؤں کے مہاجن کا آنا تب معلوم ہوا جب اس نے پنڈت جی کی پیٹھ پر اپنا ہاتھ کچھ زور سے رکھتے ہوئے کہا—کا ہو پنڈت سپنات ہو کا ۔

(اور پنڈت جی کے ہاتھ سے رجسٹر چھوٹ کر زمین پر گر پڑتا ہے

(پردہ دھیرے دھیرے گرتا ہے)

जाब इस देहाती स्कूलों के मुदर्रिसों को जरा भी अक्ल भगवान ने नहीं दी. और उधर देखिये आप के लड़के अभी तक मैदान में प्रार्थना ही कर रहे हैं.

पंडित जी—(दौड़ कर लड़कों के पास) अरे तुम लोग यहीं खड़े हो, कमरे में चलो.

(सब लड़के कमरे में आते हैं)

डिप्टी साहब—नहाने का कोई इन्तज़ाम है ?

पंडित जी—जी सरकार ! कुआं बाग़ में है. चलिये.

डिप्टी साहब—क्या कुएं में डूब मरना है. शरीफ़ लोग कहीं कुएं पर नहाते हैं. जब आपके यहां न नहाने का कोई इन्तज़ाम, न रहने का कोई इन्तज़ाम, तो खाने का क्या इन्तज़ाम होगा ?

पंडित जी—हुज़ूर ! कुआं एक बड़े सायेदार आम के पेड़ के नीचे है, कुएं की जगत सौ साल पुरानी होते हुए भी ऐसी चिकनी है कि उस पर सो जाने की तबीयत करती है. उस पर हुज़ूर बड़े मज़े में नहा सकते हैं......!

डिप्टी साहब—जी हां ! मैंने कहा—शरीफ़ लोग कुएं पर नहीं नहाया करते पंडित जी महाराज ! और उस पर मज़ा यह कि जनाब उसके ऊपर खड़े सायेदार आम के पेड़ की तारीफ़ करते नहीं थक रहे हैं. आप को पता है आम की पत्तियों ने कुएं के पानी की क्या गत बना डाली होगी ?

पंडित जी—हुज़ूर ! पानी बड़ा ठंडा है. उसे एक बड़े पुन्यात्मा ने बनवाया था इसीलिए उसका पानी कभी घटता ही नहीं......!

डिप्टी साहब—अच्छा, आप अब मुझे राम कथा न न सुनायें. मैं यहां एक मिनट रुकने का नहीं. मुआइना रजिस्टर लाइए.

पंडित जी—मुआइना रजिस्टर ! हुज़ूर......!

(पंडित जी खड़े रहते हैं)

डिप्टी साहब—हुज़ूर के बच्चा ! मैं कहता हूं मुआइना रजिस्टर लाते हो या......

पंडित जी—(लाने के लिये दौड़ते हुए) हुज़ूर लाया......!

(पंडित जी रजिस्टर कांपते हाथों ला कर डिप्टी साहब की मेज़ पर रखते हैं. डिप्टी साहब मुआइना लिखते हैं और पंडित जी कांपते हाथों स्कूल के उन बच्चों को जो डिप्टी साहब का यह तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गए थे, अपनी अपनी जगह पर बैठने का इशारा करते जाते हैं और दांत पीसते जाते हैं)

جانے ان دیہاتی اسکولوں کے مدرسوں کو خدا بھی عقل بھگوان نے نہیں دی . اور ادھر دیکھئے آپ کے لڑکے ابھی تک میدان میں پرارتھنا ہی کر رہے ہیں .

پنڈت جی—(دوڑ کر لڑکوں کے پاس) ارے تم لوگ یہیں کھڑے ہو' کمرے میں چلو .

(سب لڑکے کمرے میں آتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—نہانے کا کوئی انتظام ہے ؟

پنڈت جی—جی سرکار ! کنواں باغ میں ہے. چلئے .

ڈپٹی صاحب—کیا کنوئیں میں ڈوب مرنا ہے . شریف لوگ کہیں کنوئیں پر نہاتے ہیں . جب آپ کے یہاں نہ نہانے کا کوئی انتظام' نہ رہنے کا کوئی انتظام تو کھانے کا کیا انتظام ہوگا .

پنڈت جی—حضور ! کنواں ایک بڑے سایہ دار آم پیڑ کے نیچے ہے' کنوئیں کی جگت سو سال پرانی ہوتے ہوئے بھی ایسی چکنی ہے کہ اس پر سو جانے کی طبیعت کرتی ہے . اس پر حضور بڑے مزے میں نہا سکتے ہیں......!

ڈپٹی صاحب—جی ہاں ! میں نے کہا—شریف لوگ کنوئیں پر نہیں نہایا کرتے پنڈت جی مہاراج ! اور اس پر مزا یہ کہ جناب اس کے اوپر کھڑے سایہ دار آم کے پیڑ کی تعریف کرتے نہیں تھک رہے ہیں . آپ کو پتہ ہے آم کی پتیوں نے کنوئیں کے پانی کی کیا گت بنا ڈالی ہوگی ؟

پنڈت جی—حضور ! پانی بڑا ٹھنڈا ہے' اسے ایک بڑے پنیاتما نے بنوایا تھا اسی لئے اس کا پانی کبھی گھٹتا ہی نہیں......!

ڈپٹی صاحب—اچھا' اب آپ مجھے رام کتھا نہ سنائیں . میں یہاں ایک منٹ رکنے کا نہیں . معائنہ رجسٹر لیجئے .

پنڈت جی—معائنہ رجسٹر ! حضور......!

(پنڈت جی کھڑے رہتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—حضور کے بچہ ! میں کہتا ہوں معائنہ رجسٹر لاتے ہو یا......

پنڈت جی—(لانے کے لئے دوڑتے ہوئے) حضور لایا......! (پنڈت جی رجسٹر کانپتے ہاتھوں لا کر ڈپٹی صاحب کی میز پر رکھتے ہیں . ڈپٹی صاحب معائنہ لکھتے ہیں اور پنڈت جی کانپتے ہاتھوں اسکول کے ان بچوں کو جو ڈپٹی صاحب کا یہ تماشہ دیکھنے کے لئے اکٹھے ہو گئے تھے' اپنی اپنی جگہ پر بیٹھنے کا اشارہ کرتے جاتے ہیں اور دانت پیستے جاتے ہیں)

डिपटी साहब—आपके यहां लड़कों की कितनी संख्या है ?

(पंडित जी रजिस्टर लाने दौड़ते हैं)

डिपटी साहब—क्या आप जबानी नहीं बता सकते ?

पंडित जी—जी ! जबानी ! हां क्यों नहीं ? जबानी, हमारे स्कूल से आप की दया से कुल साठ लड़के हैं.

डिपटी साहब—प्रार्थना में कितने लड़के हैं ?

पंडित जी—(जोर से गिनते हुए) एक दो तीन..... पन्द्रह, हुजूर की दया से पन्द्रह ही लड़के आये हैं.

डिपटी साहब—हुजूर की दया से पन्द्रह ही लड़के आये हैं, क्या मतलब है ? मेरी वजह से इतनी कम उपस्थिति है.

पंडित जी—नहीं हुजूर यह कौन कहता है.

डिपटी साहब—तो क्या आप के स्कूल में लड़कों की उपस्थिति 25 फी सदी ही होती है ? तब तो आप खूब स्कूल चलायेंगे.

पंडित जी—सरकार ! क्या करूं. घर घर बुलाने जाता हूं. फिर भी सब नहीं आते. किसी का लड़का गायें चराने लगा. किसी का बकरी. कोई मजदूरी करने लगा. कोई अपने जानवरों के लिये घास करने जाता है. सरकार इधर एक महीने से जब से भुक मरी बढ़ गई है, लड़कों की संख्या और कम हो गई. दिन भर गांव के सभी छोटे बड़े पास के ताल में जा कर जड़ें खोदते हैं और शाम को किसी तरह अपना पेट भरते हैं. छोटे लड़कों को मजदूरी तो मिलती नहीं. बड़ों को जो मजदूरी मिलती है उससे पूरे परिवार का पेट नहीं भरता. जाड़ों के दिन हैं किसी के पास कपड़े नहीं है. बच्चे नंगे स्कूल आने से सर्दी में बीमार पड़ जाते हैं.

डिपटी साहब—जी हां, बहानों का तो कोई अकाल ही नहीं पड़ा है. खैर लाइये, देखें हमारे रहने सहने और खाने पीने का क्या बन्दोबस्त कर रखा है ?

पंडित जी—(सन्दूक खोलते हुए दांत निकाल निकाल कर) यह नमकीन बाजार से मंगावाया हैं. यह दही अहीर के यहां से ताजा ही है. यह बताशा गांव के हलवाई के यहां का है.......यह ताजा भूना है.

हुजूर चावल...अरे हां, चावल के लिये लड़के को बाजार भेजा है.

डिपटी साहब—तो आप ने समझा था कि कोई मथुरा का चौबे आपके यहां मेहमान बन कर आ रहा है. आप को कुछ तमीज भी है. शरीफ लोगों का यह नाश्ता नहीं हुआ करता. न तो आप को चाय के प्रबन्ध की तमीज आई, न तो टोस्ट का, न अन्डे का. क्या बताया

ڈپٹی صاحب—آپ کے یہاں لڑکوں کی کتنی سنکھیا ہے ؟

(پنڈت جی رجسٹر لانے دوڑتے ہیں)

ڈپٹی صاحب—کیا آپ زبانی نہیں بتا سکتے ؟

پنڈت جی—جی ! زبانی ! ہاں کیوں نہیں ؟ زبانی ہمارے اسکول میں آپکی دیا سے کل ساٹھ لڑکے ہیں .

ڈپٹی صاحب—پرارتھنا میں کتنے لڑکے ہیں ؟

پنڈت جی—(زور سے گنتے ہوئے) ایک دو تین...... پندرہ .

حضور کی دیا سے پندرہ ہی لڑکے آئے ہیں .

ڈپٹی صاحب—حضور کی دیا سے پندرہ ہی لڑکے آئے ہیں' کیا مطلب ہے ؟ میری وجہ سے اتنی کم اپستھتی ہے.

پنڈت جی—نہیں حضور یہ کون کہتا ہے .

ڈپٹی صاحب—تو کیا آپ کے اسکول میں لڑکوں کی اپستھتی پچیس فیصدی ہی ہوتی ہے ؟ تب تو آپ خوب اسکول چلائیں گے .

پنڈت جی—سرکار ! کیا کروں . گھر گھر بلانے جاتا ہوں. پھر بھی سب نہیں آتے . کسی کا لڑکا گائے چرانے لگا . کس کا بکری . کوئی مزدوری کرنے لگا . کوئی اپنے جانوروں کے لئے گھاس کرنے جاتا ہے . سرکار ادھر ایک مہینہ سے جب بھکمری بڑھ گئی ہے' لڑکوں کی سنکھیا اور کم ہوگئی . دن بھر گاؤں کے سبھی چھوٹے بڑے پاس کے تال جاکر میں جڑیں کھودتے ہیں اور شام کو کسی طرح اپنا پیٹ بھرتے ہیں. چھوٹے لڑکوں کو مزدوری تو ملتی نہیں. بڑوں کو جو مزدوری ملتی ہے اس سے پورے پریوار کا پیٹ نہیں بھرتا . جاڑوں کے دن ہیں کسی کے پاس کپڑے نہیں ہیں . بچے ننگے اسکول میں آنے سے سردی میں بیمار پڑجاتے ہیں .

ڈپٹی صاحب—جی ہاں' بہانوں کا تو کوئی اکال ہی نہیں پڑا ہے . خیر لایئے دیکھیں ہمارے کھانے پینے کا کیا بندوبست کر رکھا ہے .

پنڈت جی—(صندوق کھولتے ہوئے دانت نکال نکالکر) یہ نمکین بازار سے منگوایا ہے . یہ دہی اہیر کے یہاں سے تازہ ہی ہے . یہ بتاشہ گاؤں کے حلوائی کے یہاں کا ہے...... یہ تازہ بھنا ہے .

حضور چاول......ارے ہاں' چاول کے لئے لڑکے کو بھیجا ہے .

ڈپٹی صاحب—تو آپ نے سمجھا تھا کہ کوئی متھرا کا چوبے آپ کے یہاں مہمان بنکر آ رہا ہے . آپ کو کچھ تمیز بھی ہے . شریف لوگوں کا یہ ناشتا نہیں ہوا کرتا . نہ تو آپ کو چائے کے پربندھ کی تمیز آئی' نہ تو ٹوسٹ کا' نہ انڈے کا . کیا بتایا

हां, क्या क्या पुलाव और चावल नहीं मिला ? (चिल्लाते) तो डिप्टी साहब को क्या खिलाऊंगा अपना मांस या लोगों का) इतने में एक लड़का दौड़ता हुआ आता है र डिप्टी साहब के आने का पता देता है.)

पंडित जी—(घबराये हुए)—क्यों जी आज प्रार्थना हुई न.
सब लड़के नहीं पंडित जी.

पंडित जी—अरे बड़ा गड़बड़ किया तुम बदमाशों ने. ओ प्रार्थना के लिये बगीचे में एक लाइन में खड़े हो जाओ.
(सभी लड़के बगीचे में एक लाइन में खड़े हो जाते हैं में से दो लड़के आगे निकल कर उन्हीं की तरफ़ मुंह के प्रार्थना शुरू कर देते हैं—बाक़ी सब लड़के दुहराते)

पंडित जी—(इतने में बगीचे में आ कर छड़ी को कते हुए) बगीचे में क्यों खड़े हो गये ? मैदान में प्रार्थना ती है न.

सब लड़के—आप ही ने तो कहा है बगीचे में चलो.
पंडित जी—मेरा दिमाग़ तो आज उड़ गया है, क्या लोगों का भी दिमाग़ चरने चला गया है. चलो ान में.

(सब लड़के बगीचे से मैदान में आने के लिये ड़कियों से कूदते हैं. और डिप्टी साहब छड़ी हिलाते हुए जाते हैं)

पंडित—(झुक कर) हुज़ूर सलाम.

डिप्टी साहब—(तेज़ी से) सलाम. यह सब क्या हो है ?

पंडित जी—हुज़ूर, प्रार्थना के लिये लड़के मैदान में आ हैं.

डिप्टी साहब—तो क्यों पीछे से कूद कूद कर आ रहे ?

पंडित जी—आज भूल से वह सब बगीचे में प्रार्थना लिये चले गये थे.
डिप्टी साहब—और आप भूल से घर चले गये थे.
पंडित जी—नहीं हुज़ूर. मैं तो आप के सामने हूं.
डिप्टी साहब—हां, अब तो सामने हैं. (घड़ी में देखते) लेकिन दस बजे प्रार्थना जो हो रही है. इसका मतलब के आप अभी अभी घर से तशरीफ़ ला रहे हैं. (इतने कुछ छोटे छोटे लड़के डिप्टी साहब को घेर कर खड़े हो हैं) और यही आपने बच्चों को तहज़ीब सिखाई है.
पंडित जी—(कांपते हुए) तुम लोग प्रार्थना के लिये लाइन में खड़े हो जाओ.
(लड़के एक लाइन में खड़े हो कर प्रार्थना करने लगते हैं)

ہاں، کیا کیا پوال اور چاول نہیں ملا ؟ (چلاتے ہوئے) تو ڈپٹی صاحب کو کیا کھلاؤنگا، اپنا ماس یا تم لوگوں کا؟
(اتنے میں ایک لڑکا دوڑتا ہوا آتا ہے اور ڈپٹی صاحب کے آنے کا پتہ دیتا ہے)
پنڈت جی—(گھبرائے ہوئے) کیوں جی آج پرارتھنا نہیں ہوئی نا .
سب لڑکے—نہیں پنڈت جی .
پنڈت جی—ارے بڑا گڑبڑ کیا تم بدمعاشوں نے . چلو پرارتھنا کے لئے بغیچے میں ایک لائن میں کھڑے ہو جاؤ.
(سبھی لڑکے بغیچے میں ایک لائن میں کھڑے ہو جاتے ہیں. ان میں سے دو لڑکے آگے نکل کر انہیں کی اور منہ کرکے پرارتھنا شروع کردیتے ہیں . باقی سب لڑکے دہراتے ہیں)
پنڈت جی—(بغیچے میں آکر چھڑی کو ٹھکٹھکے ہوئے) بغیچے میں کیوں کھڑے ہوگئے میدان میں پرارتھنا ہوتی ہے نہ .
سب لڑکے—آپ ہی نے تو کہا ہے بغیچے میں چلو .
پنڈت جی—میرا دماغ تو آج اڑ گیا ہے، کیا تم لوگوں کا بھی دماغ چرنے چلا گیا ہے . چلو میدان میں .
(سب لڑکے بغیچے سے میدان میں آنے کے لئے کھڑکیوں سے کودتے ہیں . اور ڈپٹی صاحب چھڑی ہلاتے ہوئے آجاتے ہیں) .
پنڈت جی—(جھک کر) حضور سلام .
ڈپٹی صاحب—(تیزی سے) سلام . یہ سب کیا ہو رہا ہے .
پنڈت جی—حضور، پرارتھنا کے لئے لڑکے میدان میں آرہے ہیں .
ڈپٹی صاحب—تو کیوں پیچھے سے کود کود کر آ رہے ہیں ؟
پنڈت جی—آج بھول سے وہ سب بغیچے میں پرارتھنا کے لئے چلے گئے تھے .
ڈپٹی صاحب—اور آپ بھول سے گھر چلے گئے تھے .
پنڈت جی—نہیں حضور میں تو آپ کے سامنے ہوں.
ڈپٹی صاحب—ہاں، اب تو سامنے ہیں (گھڑی میں دیکھتے ہوئے) لیکن دس بجے پرارتھنا جو ہو رہی ہے . اس کا مطلب ہے کہ آپ ابھی ابھی گھر سے تشریف لا رہے ہیں . (اتنے میں کچھ چھوٹے چھوٹے لڑکے ڈپٹی صاحب کو گھیر کر کھڑے ہوجاتے ہیں) اور یہی آپ نے بچوں کو تہذیب سکھائی ہے .
پنڈت جی—(کانپتے ہوئے) تم لوگ پرارتھنا کے لئے ایک لائن میں کھڑے ہو جاؤ .
(لڑکے ایک لائن میں کھڑے ہوکر پرارتھنا کرنے لگتے ہیں)

सिपाही—कुछ नहीं. अरे वही, जो आपने मिट्ठू अहीर वल्द घिरकुट अहीर 12 साल के बच्चे को लकड़ी काटने के लिए पेड़ पर चढ़ाया था. पेड़ से वह गिर पड़ा. उसी की रपट थाने में गई है.

पंडित जी—(घबराहट के साथ) ऐं क्या कहा, थाने में रपट गई है, मिट्ठू के गिरने की ? उसके बाप ने की है रपट ? इस दुनिया में किसी का ठिकाना नहीं कब कौन क्या कर बैठे. मेरे सारे किये कराये पर मिट्ठू के बाप ने पानी फेर दिया. अब तो नौकरी भी गई. बड़ा ग़ज़ब हुआ. हे भगवान ! अब क्या होगा. (पंडित जी के शरीर से पसीना छूटने लगा, पास की कुरसी पर बैठ गये, सर हाथों पर टिका दिया.)

सिपाही—मास्टर साहब ! कोई जवाब दीजिये. आप तो ऐसा घबरा गये जैसे किसी क़त्ल के मुजरिम हों.

पंडित जी—अरे भाई क़त्ल वत्ल का नाम न सुनाइये. नहीं तो मैं बेहोश हो जाऊंगा. आप ही बताइये मैं क्या जवाब दूं.

सिपाही—जवाब क्या दीजियेगा ? मेरे साथ तशरीफ़ ले चलिये.

पंडित जी—सिपाही साहब ! आज तो अगर मुहलत मिल जाय तो बड़ी दया होगी. आज हमारे साहब का मुआइना है. अगर मैं आज नहीं रहूंगा तो मुझे तुरन्त नौकरी से छुट्टी मिल जायगी (पाकेट से एक रुपए का नोट निकालते हुए) लीजिये यह मेरा आशीर्वाद. दरोग़ा जी से मेरा सलाम कह दीजियेगा.

सिपाही—अच्छा आदाब अर्ज़.

(चला जाता है)

दूसरा दृश्य

(समय 10 बजे. स्थान वही)

(शीतल और मंगरे दौड़े दौड़े चले आ रहे हैं)

पंडित जी—क्यों जी तुम लोग ख़ाली हाथ क्यों आ रहे हो ?

मंगरे—पुआल वाले ने कहा कि बिना पैसे के पुआल नहीं देंगे.

शीतल—चावल वाले ने कहा कि अभी पुराने दौरे में चावल मंगाया था, उसका दाम चुकता ही नहीं किया और फिर चले हैं लेने ! पहले वह दाम तो चुकता करो.

पंडित जी—(एक लड़के को ज़ोर से पीटते हुए जो शोर कर रहा था) बदमाश कहीं [illegible] आजिज़ कर दिये हैं.

سپاہی—کچھ نہیں ۔ ارے وہی و جو آپ نے مٹھو اہیر ولد گھرکٹ اہیر بارہ سال کے بچے کو لکڑی کاٹنے کے لئے پیڑ پر چڑھایا تھا ۔ پیڑ سے وہ گر پڑا۔ اسی کی رپٹ تھانے میں گئی ہے ۔

پنڈت جی—(گھبراہٹ کے ساتھ) ایں کیا کہا تھانے میں رپٹ گئی ہے۔ مٹھو کے گرنے کی ؟ اس کے باپ نے کی ہے رپٹ ؟ اس دنیا میں کسی کا ٹھکانہ نہیں ۔ کب کون کیا کر بیٹھے ۔ میرے سارے کئے کرائے پر مٹھو کے باپ نے پانی پھیر دیا ۔ اب تو نوکری بھی گئی۔ بڑا غضب ہوا ۔ ہے بھگوان ! اب کیا ہوگا ۔ (پنڈت جی کے شریر سے پسینہ چھوٹنے لگا' پاس کی کرسی پر بیٹھ گئے ۔ سر ہاتھوں پر ٹکا دیا۔)

سپاہی—ماسٹر صاحب' کوئی جواب دیجئے ۔ آپ تو ایسے گھبرا گئے جیسے کسی قتل کے مجرم ہوں ۔

پنڈت جی—ارے بھائی قتل وتل کا نام نہ سنائیے ۔ نہیں تو میں بیہوش ہو جاؤنگا ۔ آپ ہی بتائیے میں کیا جواب دوں ۔

سپاہی—جواب کیا دیجئیگا ؟ میرے ساتھ تشریف لے چلئے ۔

پنڈت جی—سپاہی صاحب ! آج تو اگر مہلت مل جائے تو بڑی دیا ہوگی۔ آج ہمارے صاحب کا معائنہ ہے ۔ اگر میں آج نہیں رہونگا تو مجھے تورنت نوکری سے چھٹی مل جائیگی ۔ (پاکٹ سے ایک روپیہ کا نوٹ نکالتے ہوئے) لیجئے یہ میرا آشیرواد۔ داروغہ جی سے میرا سلام کہدیجئیگا۔

سپاہی—اچھا آداب عرض ۔

(چلا جاتا ہے)

دوسرا درشیہ

(سمے دس بجے ۔ استھان وہی)

(شیتل اور منگرے دوڑے دوڑے چلے آرہے ہیں۔)

پنڈت جی—کیوں جی تم لوگ خالی ہاتھ کیوں آ رہے ہو ۔

منگرے—پوال والے نے کہاکہ بنا پیسے پوال کے نہیں دینگے۔

شیتل—چاول والے نے کہا کہ ابھی پرانے دورے میں چاول منگایا تھا اس کا دام چکتا ہی نہیں کیا اور پھر چلے ہیں لینے ! پہلے وہ دام تو چکتا کرو ۔

پنڈت جی—(ایک لڑکے کو زور سے پیٹتے ہوئے جو شور کر رہا تھا) بدمعاش کہیں کا طبیعت عاجز کردیئے ہیں ۔

सब लड़कों को.

(रामू सभी लड़कों को बुलाता है. कोई फटी कमीज़, फटी बन्डी, कोई नंगे आकर पंडित जी के पास खड़े हो जाते हैं)

पंडित जी—तुम सभी लोगों को भूगोल का सबक़ नहीं याद है ?

सब मिल कर—नहीं पंडित जी.

पंडित—(सर पीटते हुए) अरे गधे के बच्चो ! तब तो मेरी नौकरी गई. आज मुआइना होगा. साहब के सामने मैं क्या पूछूंगा. तुम सब ने क्यों नहीं याद किया ?

(सब मिल कर) तीन दिन से घर में राशन ही नहीं था पंडित जी.

पंडित जी—तो मर क्यों नहीं गये ? (ग़ुस्से के साथ) सब लोग भूगोल की किताब निकाल कर बैठ जाओ और हिन्दुस्तान की चौहद्दी याद करो. डिप्टी साहब के आने पर यही पूछा जायगा.

(सब लड़के एक साथ ज़ोर ज़ोर से—भारत के उत्तर में हिमालय पहाड़, दक्खिन में हिन्द महा सागर, पूरब में बंगाल की खाड़ी, पच्छिम में बिलोचिस्तान, अरब सागर, स्कूल की बिलडिंग गूंज रही है. डिप्टी साहब के आने का समय निकट आ रहा है. पंडित जी यह सोच कर परेशान हो रहे हैं. इधर उधर चक्कर काट रहे हैं.)

(इतने में एक सिपाही आता है.)

सिपाही—(बुलाते हुए) मास्टर साहब !

पंडित जी—कहिए साहब क्या हुक्म है ?

सिपाही—हुक्म क्या है, लीजिए यह सम्मन. दसख़त कीजिये.

(सम्मन निकाल कर देता है) और चलिये दरोग़ा जी ने आप को याद किया है.

पंडित जी—यह सब क्या है, दरोग़ा जी ने क्यों इतनी दया मुझ पर की. मुझ से उन से तो कोई जान पहिचान भी नहीं है.

सिपाही—ऐसे ही तो जान पहिचान हो जाती है—नदी नाव संयोग.

पंडित जी—सिपाही साहब ! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है.

सिपाही—घबराने की बात नहीं ! ऐसे मामले अगर दिन में तीन बार भी हों तो यहां कोई फ़िकर नहीं और आप ज़रा सी बात में परेशान हो गये.

पंडित जी—भाई आख़िर बात क्या है पहले यह तो बताओ.

تو سب لوگوں کو ۔

(رامو سبھی لوگوں کو بلاتا ہے ۔ کوئی پھٹی قمیض، کوئی پھٹی بنڈی، کوئی ننگے آکر پنڈت جی کے پاس کھڑے ہوجاتے ہیں ۔)

پنڈت جی—تم سبھی لوگوں کو بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے ؟

سب ملکر—نہیں پنڈت جی ۔

پنڈت جی—(سر پیٹتے ہوئے) ارے گدھے کے بچو ! تب تو میری نوکری گئی ۔ آج معائنہ ہوگا ۔ صاحب کے سامنے میں کیا پوچھونگا۔ تم سب نے کیوں نہیں یاد کیا؟

(سب ملکر) تین دن سے گھر میں راشن ہی نہیں تھا پنڈت جی ۔

پنڈت جی—تو مر کیوں نہیں گئے ؟ (غصہ کے ساتھ) سب لوگ بھوگول کی کتاب نکال کر بیٹھ جاؤ اور ہندستان کی چوحدی یاد کرو۔ ڈپٹی صاحب کے آنے پر یہی پوچھا جائیگا ۔

(سب لڑکے ایک ساتھ زور سے—بھارت کے اتر میں ہمالیہ پہاڑ، دکھن میں ہند مہاساگر، پورب میں بنگال کی کھاڑی، پچھم میں بلوچستان، عرب ساگر، اسکول کی بلڈنگ گونج رہی ہے ۔ ڈپٹی صاحب کے آنے کا سمے نکٹ آ رہا ہے ۔ پنڈت جی یہ سوچکر پریشان ہو رہے ہیں ۔ اِدھر اُدھر چکر کاٹ رہے ہیں۔)

(اِتنے میں ایک سپاہی آتا ہے)

سپاہی—(بلاتے ہوئے) ماسٹر صاحب ۔

پنڈت جی—کہیے صاحب کیا حکم ہے ؟

سپاہی—حکم کیا ہے، لیجئے یہ سمن ۔ دستخط کیجئے ۔ (سمن نکال کر دیتا ہے) اور چلئے داروغہ جی نے آپکو یاد کیا ہے ۔

پنڈت جی—یہ سب کیا ہے، داروغہ جی نے کیوں اتنی دیا مجھ پر کی۔ مجھ سے اُن سے تو کوئی جان پہچان بھی نہیں ہے ۔

سپاہی—ایسے ہی تو جان پہچان ہو جاتی ہے ۔ ندی ناؤ سنجوگ ۔

پنڈت جی—سپاہی صاحب ! میری سمجھ میں کچھ نہیں آ رہا ہے ۔

سپاہی—گھبرانے کی بات نہیں ! ایسے معاملے اگر دن میں تین بار بھی ہوں تو یہاں کوئی فکر نہیں اور آپ ذراسی بات میں پریشان ہوگئے ۔

پنڈت جی—بھائی آخر بات کیا ہے پہلے یہ تو بتاؤ۔

कह देना—पंडित जी की तीन माह की तनखा रुकी हुई है. सुबह शाम लगा हुआ है. मिली नहीं कि उसका पैसा फौरन मिल जायगा.

शीतल—अच्छा पंडित जी. (दौड़ता हुआ जाता है)

पंडित जी—और देख ! शीतल—ओ शीतल—ओ शीतल. क्या ज़रा सी देर में उड़ गया—कोई है जी शीतल को बुलाओ तो.

(एक लड़का दौड़ कर शीतल को बुलाता है)

शीतल—क्या है पंडित जी ?

पंडित जी—अबे पंडित जी के चेले ! चावल आया ?

शीतल—(सर खुजलाते हुए) अभी तो नहीं पंडित जी.

पंडित जी—हां, अभी तो नहीं पंडित जी. कह दिया और छुट्टी मिल गई कहता हूं मैं जिस बात का ख्याल न करूं वह चौपट ही हो जाय. देख, गुरुदीन के यहां चले जाना और कहना कि स्कूल के डिप्टी साहब का मुआइना है, अपनी दूकान का सब से पुराना और महीन चावल चार सेर देदें. रुपये की फिकर न करें. तनखा पाने पर उन्हें फौरन दाम मिल जायगा.

शीतल—बहुत अच्छा (चला जाता है)

पंडित जी—रामू !

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—कमरा साफ़ हो गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—टाट बिछ गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—घड़े में पानी रखा गया ?

रामू—जी पंडित जी.

पंडित जी—सब काम ठीक है ?

(रामू चुप है)

पंडित जी—अबे बोलता क्यों नहीं !

रामू—(धीरे से) नहीं पंडित जी.

पंडित जी—(रामू की नक़ल करते हुए) क्या नहीं ठीक है पंडित जी ?

रामू—पंडित जी ! भूगोल का सबक़ नहीं याद है.

पंडित जी—भूगोल का सबक़ नहीं याद है ? अरे, तब तो सारा मुआइना तुम चौपट करा दोगे. क्यों नहीं सबक़ याद हुआ डंडे नहीं पड़े इसलिये.

रामू—नहीं पंडित जी. तीन दिन हुआ शहर गई हुई थी मां, राशन लाने. रात तक नहीं आई थी—तीन दिन से हम लोग उसी का इन्तज़ार कर रहे थे. तीन दिन से बिना खाये रहना पड़ा सबक़ कैसे याद होता. सुबह आई है और हम सभी लोग अनाज को कूटने-पीसने में लगे थे.

पंडित जी—तो क्या किसी को नहीं याद है ? बुलाओ

کہ دینا ۔ پنڈت جی کی تین ماہ کی تنخواہ رکی ہوئی ہے۔ صبح شام لگا ہوا ہے ۔ ملی نہیں کہ اُس کا پیسہ فوراً مل جائے گا ۔

شیتل—اچھا پنڈت جی (دوڑتا ہوا جاتا ہے)

پنڈت جی—اور دیکھ ! شیتل' او شیتل' او شیتل ۔ کیا ذرا سی دیر میں اڑ گیا۔ کوئی ہے جی... شیتل کو بلاؤ تو۔

(ایک لڑکا دوڑ کر شیتل کو بلاتا ہے)

شیتل—کیا ہے پنڈت جی ؟

پنڈت جی—ابے پنڈت جی کے چیلے ! چاول آیا ؟

شیتل—(سر کھجلاتے ہوئے) ابھی تو نہیں پنڈت جی۔

پنڈت جی—ہاں' ابھی تو نہیں پنڈت جی ۔ کہ دیا اور چھٹی مل گئی ۔ کہتا ہوں میں جس بات کا خیال نا کروں وہ چوپٹ ہی ہو جائے ۔ دیکھ' گردین کے یہاں چلے جانا اور کہنا کہ اِسکول کے ڈپٹی صاحب کا معائنہ ہے ۔ اپنی دوکان کا سب سے پرانا اور مہین چاول چار سیر دے دیں ۔ روپیہ کی فکر نا کریں' تنخواہ پانے پر فوراً انہیں دام مل جائے گا ۔

شیتل—بہت اچھا (چلا جاتا ہے)

پنڈت جی—رامو' جی پنڈت جی ۔

پنڈت جی—کمرہ صاف ہوگیا ؟

رامو—جی پنڈت جی ۔

پنڈت جی—ٹاٹ بچھ گیا

رامو—جی پنڈت جی

پنڈت جی—گھڑے میں پانی رکھ گیا ؟

رامو—جی پنڈت جی ۔

پنڈت جی—سب کام ٹھیک ہے ؟

(رامو چپ ہے)

پنڈت جی—ابے بولتا کیوں نہیں !

رامو—(دھیرے سے) نہیں پنڈت جی ۔

پنڈت جی (رامو کی نقل کرتے ہوئے) کیا نہیں ٹھیک ہے ۔ پنڈت جی ؟

رامو—پنڈت جی بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے ۔

پنڈت جی—بھوگول کا سبق نہیں یاد ہے ؟ ارے تب تو سارا معائنہ تم چوپٹ کرا دوگے ۔ کیوں نہیں سبق یاد ہوا ؟ ڈنڈے نہیں پڑے اس لئے ؟

رامو—نہیں پنڈت جی۔ تین دن ہوا شہر گئی ہوئی تھی ماں راشن لانے ۔ رات تک نہیں آئی تھی ۔ تین دن سے ہم اُسی کا اِنتظار کر رہے تھے ۔ تین دن سے بنا کھائے رہنا پڑا ۔ سبق کیسے یاد ہوتا۔ صبح آئی ہے اور ہم سب ہی لوگ اناج کو کوٹنے پیسنے میں لگے تھے ۔

پنڈت جی—تو کیا کسی کو نہیں یاد ہے ؟ بلاؤ

(समय साढ़े आठ बजे सुबह. दिसम्बर का महीना)

(स्कूल के कुछ बच्चे झाड़ू लगा रहे हैं, कुछ स्कूल का फालतू सामान कमरों से मैदान के एक कोने में ला कर रख रहे हैं. बाहर दो दो लड़के पुराने टाटों को झाड़ झाड़ कर कमरों में बिछा रहे हैं)

पहला दृश्य

(पंडित जी) जल्दी जल्दी चले आ रहे हैं. साथ में एक लड़का है और उसके हाथ में दही की हंडिया है.

पंडित जी—अबे शीतल! तेरे पास अक्ल नहीं है?

शीतल—क्यों पंडित जी?

पंडित जी—क्यों पंडित जी! क्यों पंडित जी! सर पर ही टाट झाड़ झाड़ कर धूल उड़ा रहा है और फिर पूछता है क्यों पंडित जी?

शीतल—तब कहां झाड़ूं पंडित जी?

पंडित जी—सामने परती नहीं दिखाई देती?

शीतल—पंडित जी परती में झाड़ने पर उसके मालिक मारने दौड़ते हैं.

पंडित जी—उसके मालिक मारने दौड़ते हैं? उन्हें कुत्ते ने काट खाया है क्या?

शीतल—हां पंडित जी. वह कहते हैं कि परती में तुम लोग कोई काम न करो नहीं तो सरकार एक दिन इस पर भी कबजा जमा लेगी. मैं इसमें जुतवा कर आलू लगवाऊंगा.

पंडित जी—क्या कहा? आलू लगवायेंगे?

शीतल—हां पंडित जी. आलू लगवाने को कहते हैं.

पंडित जी—अरे तब तो मुझे मिटा ही देंगे. किसी तरह डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मेम्बरी का लालच दिला कर तो उन्हें तैयार किया था दान करने के लिये. चेयरमैन साहब के सामने उन्होंने वचन दिया था. अब अगर इनकार कर देंगे तो मैं कौन सा मुंह ले कर चेयरमैन साहब के पास जाऊंगा. मेरी बड़ी बदनामी हुई और बदनामी क्या होगी, तो मेरी नौकरी पर ही धब्बा आ जायगा. चेयर मैन साहब कहेंगे कि मैंने झूठ मूठ जमींदार को तैयार करके उन्हें खुश करना चाहा था. अब क्या होगा हे भगवान!

शीतल—पंडित जी. अभी तक मंगरे पुआल ले कर नहीं लौटा और अब डिप्टी साहब का डेरा आने ही वाला है. कहिये तो जाऊं देखूं क्या वजह है उसके न आने की.

पंडित जी—हां हां. ठीक याद दिलाया. दौड़ जल्दी जा. और देख, आकर पैसे के लिये कुछ कहे तो तुम

(ساڑھے آٹھ بجے صبح ۔ دسمبر کا مہینہ)

(اسکول کے کچھ بچے جھاڑو لگا رہے ہیں، کچھ اسکول کا فالتو سامان کمرو سے میدان کے ایک کونے میں لاکر رکھ رہے ہیں ۔ باہر دو دو لڑکے پرانے ٹاٹوں کو جھاڑ جھاڑ کر کمروں میں بچھا رہے ہیں)

پہلا درشیہ

(پنڈت جی) جلدی جلدی چلے آرہے ہیں۔ ساتھ میں ایک لڑکا ہے اور اُس کے ہاتھ میں دہی کی ہنڈیا ہے ۔

پنڈت جی—ابے شیتل! تیرے پاس عقل نہیں ہے؟

شیتل—کیوں پنڈت جی ۔

پنڈت جی—کیوں پنڈت جی ۔ سر پر ہی ٹاٹ جھاڑ جھاڑ کر دھول اڑا رہا ہے اور پوچھتا ہے کیوں پنڈت جی؟

شیتل—تب کہاں جھاڑوں پنڈت جی؟

پنڈت جی—سامنے پرتی نہیں دکھائی دیتی؟

شیتل—پنڈت جی پرتی میں جھاڑنے پر اُس کے مالک مارنے دوڑتے ہیں ۔

پنڈت جی—اُس کے مالک مارنے دوڑتے ہیں؟ اُنہیں کتے نے کاٹ کھایا ہے کیا؟

شیتل—ہاں پنڈت جی ۔ وہ کہتے ہیں کہ پرتی میں تم لوگ کوئی کام نا کرو نہیں تو سرکار ایک دن اس پر بھی قبضہ جما لے گی ۔ میں اس میں جتوا کر آلو لگواؤں گا ۔

پنڈت جی—کیا کہا؟ آلو لگوائیں گے؟

شیتل—ہاں پنڈت جی آلو لگوانے کو کہتے ہیں ۔

پنڈت جی—تب تو مجھے مٹا دینگے ۔ کسی طرح ڈسٹرکٹ بورڈ کی ممبری کی لالچ دلا کر تو اُنہیں تیار کیا تھا دان کرنے کے لئے ۔ چیرمین صاحب کے سامنے اُنہوں نے وچن بھی دیا تھا ۔ اب اگر انکار کر دینگے تو میں کون سا منھ لیکر چیرمین صاحب کے پاس جاؤں گا ۔ میری بڑی بدنامی ہوئی اور بدنامی کیا ۔ اب تو میری نوکری پر بھی دھبہ آ جائے گا ۔ چیرمین صاحب کہینگے کہ میں جھوٹ موٹ زمیندار کو تیار کر کے اُنہیں خوش کرنا چاہتا تھا ۔ اب کیا ہوگا ہے ۔ بھگوان!

شیتل—پنڈت جی! ابھی تک منگرے پوال لیکر نہیں لوٹا اور اب ڈپٹی صاحب کا ڈیرا آنے ہی والا ہے ۔ کہئے تو جاؤں دیکھوں کیا وجہ ہے اُس کے نا آنے کی ۔

پنڈت جی—ہاں ہاں ۔ ٹھیک یاد دلایا ۔ دوڑ جلدی جا ۔ اور دیکھو اگر پیسے کے لئے کچھ کہے تو تم

ठीक न समझी जायगी. वही संस्था अधिकार भरी आवाज़ में यह कह सकती है कि वह सरकार सरकार न समझी जाय जिस के राज में एक भी आदमी मजबूर हो कर भूखा सो जाता है. वही संस्था हर मुल्क को मजबूर कर सकेगी कि वह अपने यहां के किसी आदमी को भी न जाड़ों मरने दे, न लू खाने दे, न मजबूर हो कर बरसात में भीगने दे.

ऐसी संस्था के रहते क्या कभी यह हो सकेगा कि कोई एक भी आदमी किराये के मकान में रह रहा हो, या आज की तरह सड़क पर पड़ा पड़ा एड़ी रगड़ रगड़ अपनी जान दे रहा हो.

धर्म एक है. अगर आज दुनियां में ऐसे जियादा धर्म पाये जाते हैं तब हम यह कह कर ही इस लेख को खतम करते हैं कि सब धर्मों की जान "सचाई और प्रेम" है. यही सचाई और प्रेम धर्म की जड़ है. उसी सचाई और प्रेम की जय होती आई है और उसकी जय हो कर रहेगी. उसी की जय में सब की भलाई है और सब का कल्यान है.

—भगवानदीन

ٹھیک نہ سمجھی جائے گی. وہی سنستھا ادھیکار بھری آواز میں یہ کہہ سکتی ھے کہ وہ سرکار سرکار نہ سمجھی جائے جس کے راج میں ایک بھی آدمی مجبور ھو کر بھوکا سو جاتا ھے. وہی سنستھا ہر ملک کو مجبور کر سکے گی کہ وہ اپنے یہاں کے کسی آدمی کو بھی نہ جاڑوں مرنے دے، نہ لو کھانے دے نہ مجبور ھو کر برسات میں بھیگنے دے.

ایسی سنستھا کے رہتے کیا کبھی یہ ھو سکے گا کہ کوئی ایک بھی آدمی کرائے کے مکان میں رہ رہا ھو، یا آج کی طرح سڑک پر پڑا پڑا ایڑی رگڑ رگڑ کر اپنی جان دے رہا ھو.

دھرم ایک ھے. اگر آج دنیا میں ایسے زیادہ دھرم پائے جاتے ھیں تب ہم یہ کہکر ہی اس لیکھ کو ختم کرتے ھیں کہ سب دھرموں کی جان " سچائی اور پریم " ھے. یہی سچائی اور پریم دھرم کی جڑ ھے. اسی سچائی اور پریم کی جے ھوتی آئی ھے اور اس کی جے ھو کر رھے گی. اسی کی جے میں سب کی بھلائی ھے اور سب کا کلیان ھے.

—بھگوان دین

एकांकी नाटक

मुआइना

(उदय नारायन त्रिपाठी)

पात्र

पंडित जी—स्कूल के एक मास्टर

डिप्टी साहब—स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर

शीतल—स्कूल का मानीटर, और बच्चों से कुछ बड़ी उमर का

मंगरे—एक दूसरा लड़का

सिपाही

(स्थान—गांव के पूरब तरफ़ एक प्राइमरी स्कूल. स्कूल की छत खपड़े की. स्कूल में दो बड़े बड़े कमरे. कमरों में दो दो बड़ी बड़ी खिड़कियां और दो दो दरवाज़े. कमरे और बाहर के बरामदे की फ़र्शों पर पलास्तर नहीं है केवल ईंटों का खुरदरा फ़र्श. स्कूल से सटा हुआ पीछे की तरफ़ एक छोटा सा बग़ीचा—बग़ीचे में छोटी छोटी क्यारियां, क्यारियों में साग, मूली, प्याज़ के हरे हरे पौदे. एक क्यारी में हरी हरी घास से हिन्दुस्तान का नक़्शा बना है. बिलडिंग के आगे एक छोटा सा मैदान जिसके चारों तरफ़ फूल लगे हुए हैं.)

ایکانکی ناٹک

معائنہ

(اُدے نارائن ترپاٹھی)

پاتر—

پنڈت جی—اسکول کے ایک ماسٹر.

ڈپٹی صاحب—اسکولوں کے ڈپٹی انسپکٹر

شیتل—اسکول کا مانیٹر اور بچوں سے کچھ بڑی عمر کا.

منگرے—ایک دوسرا لڑکا

سپاہی

(استھان—گاؤں کے پورب طرف ایک پرائمری اسکول. اسکول کی چھت کھپڑے کی. اسکول میں دو بڑے بڑے کمرے. کمروں میں دو دو بڑی بڑی کھڑکیاں اور دو دو دروازے. کمرے اور باہر کے برآمدے کی فرشوں پر پلاسٹر نہیں کیول اینٹوں کا کھردرا فرش. اسکول سے سٹا ہوا پیچھے کی طرف ایک چھوٹا سا بغیچہ. بغیچہ میں چھوٹی چھوٹی کیاریاں. کیاریوں میں ساگ، مولی پیاز کے ہرے ہرے پودے. ایک کیاری میں ہری ہری گھاس سے ہندستان کا نقشہ بنا ھے. بلڈنگ کے آگے ایک چھوٹا سا میدان جس کے چاروں طرف پھول لگے ھیں.)

लग जाय और उसकी अन्तरात्मा इतनी पवित्र हो जाय कि वह निडर बन सके. वगैरा.

आदमी जिस तरह अलग अलग नाम रख कर भी एक है वैसे ही धर्म अलग अलग नाम रखते हुए क्यों नहीं एक हो सकते ? अलग अलग नाम वाले आदमी क्या आग बुझाने एक साथ नहीं दौड़ते ? लोगों को बाढ़ से बचाने के लिये एक दिल हो काम नहीं करते ? क्या फिर इसी तरह अलग अलग नाम वाले धर्म उस लड़ाई की आग को बुझाने के लिये जो लग कर आधी या तीन चौथाई दुनिया को खाक बना देगी मिल कर नहीं दौड़ सकते ? और क्या उसे बुझाने में समर्थ नहीं हो सकते ? एक आदमी सचाई के साथ भलाई में लग कर दुनिया का नक़्शा बदल देता है तो क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था, इतना मामूली काम भी नहीं कर सकती ? एक बार ऐसी संस्था अस्तित्व में तो आये, रूप तो ले, फिर वह आप देखेगी कि वह कितने बड़े बड़े काम कर सकती है. सबका भला चाहने वाली संस्था बहुत जल्दी जड़ पकड़ सकती है. जल्दी ही एक ऐसे पेड़ का रूप ले सकती है जिस की छाया में सारी दुनिया के आदमी बैठ सकें. जिस के फल खा कर दुनिया के आदमी तसल्ली पा सकें, जिस की खोज में वह फिर रहे हैं.

धर्म की जड़ सचाई, ईमानदारी, प्रेम, शील, संतोष हैं. बाक़ी सब तो धर्म पेड़ की डाली, पत्ते और फल फूल हैं. इन सबमें रस तो वही बह रहा है जिसे जड़ भेज रही है. तो फिर क्या सब धर्म एक नहीं हैं ? धर्म का लक्षन, जिस ग्रंथ में ढूंढा जायगा उसी ग्रंथ में वही मिलेगा जो दूसरे और ग्रंथों में है. जिस तरह सब रंगों की गाय का दूध सफ़ेद होता है, स्वाद में भी हर तरह एक होता है, वैसे ही सब धर्मों का रस यानी सार हर तरह एक ही होता है. दो होने की बात न किसी ने कही, न कोई कहता है और न कभी कोई कह सकेगा.

सब धर्म मिल कर एक ऐसी आवाज़ ज़रूर उठा सकते हैं, जैसी अब तक किसी धर्म ने न उठाई और न आज ही कोई अकेला धर्म वैसी आवाज़ उठा सकता है. नाम की क़ाबलियत तो उसी वक़्त आधी रह जाती है जब वह किसी के साथ जोड़ा जाता है. नाम किसी के साथ जुड़ कर अलहदगी ज़ियादा बतलाता है एकमेकता कम. आज ज़रूरत है एकमेकता की. सर्व धर्म सम्मेलनों ने धर्म की एकता को मुमकिन कर दिया है.

सब धर्मों की मिली जुली यह संस्था अपने देश ही नहीं, सारी दुनिया के सब आदमियों को समान रूप से सुख पहुंचा सकेगी और ज़ोर के साथ यह आवाज़ उठा सकेगी कि अब आगे आदमी की हिंसा किसी रूप में भी

جاگ جائے اور اُسکی انترآتما اِتنی پوتر ہوجائے کہ وہ نڈر بن سکے۔

آدمی جس طرح الگ الگ نام رکھکر بھی ایک ہے ویسے ہی دھرم الگ الگ نام رکھتے ہوئے کیوں نہیں ایک ہوسکتے ؟ الگ الگ نام والے آدمی کیا آگ بجھانے ایک ساتھ نہیں دوڑتے ؟ لوگوں کو باڑھ سے بچانے کے لئے ایک دل ہو کام نہیں کرتے ؟ کیا پھر اِسی طرح الگ الگ نام والے دھرم اِس لڑائی کی آگ کو بجھانے کے لئے جو لگ کر آدھی یا تین چوتھائی دنیا کو خاک بنادیگی مل کر نہیں دوڑ سکتے ؟ اور کیا اُسے بجھانے میں سمرتھ نہیں ہوسکتے ؟ ایک آدمی سچائی کے ساتھ بھلائی میں لگکر دنیا کا نقشہ بدل دیتا ہے ۔ تو کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا' اِتنا معمولی کام بھی نہیں کرسکتی ؟ ایک بار ایسی سنستھا استتو میں تو آئے' روپ تو لے' پھر وہ آپ دیکھیگی کہ وہ کتنے بڑے بڑے کام کرسکتی ہے ۔ سب کا بھلا چاہنے والی سنستھا بہت جلدی جڑ پکڑ سکتی ہے. جلدی ہی ایک ایسے پیڑ کا روپ لے سکتی ہے جسکی چھایا میں ساری دنیا کے آدمی بیٹھ سکیں ۔ جس کے پھل کھا کر دنیا کے آدمی تسلی پاسکیں' جسکی کھوج میں وہ پھر رہے ہیں ۔

دھرم کی جڑ سچائی' ایمانداری' پریم شیل' سنتوش ہیں. باقی سب تو دھرم پیڑ کی ڈالی' پتے اور پھل پھول ہیں ۔ اِن سب میں رس تو وہی بہ رہا ہے جسے جڑ بھیج رہی ہے. تو پھر کیا سب دھرم ایک نہیں ہیں ؟ دھرم کا لکشن جس گرنتھ میں ڈھونڈھا جائیگا اُسی گرنتھ میں وہی ملیگا جو دوسرے اور گرنتھوں میں ہے ۔ جس طرح سب رنگوں کی گائے کا دودھ سفید ہوتا ہے' سواد میں بھی ہر طرح ایک ہوتا ہے' ویسے ہی سب دھرموں کا رس یعنی سار ہر طرح ایک ہی ہوتا ہے ۔ دو ہونے کی بات نہ کسی نے کہی' نہ کوئی کہتا ہے اور نہ کوئی کہہ سکے گا ۔

سب دھرم مل کر ایک ایسی آواز ضرور اُٹھا سکتے ہیں' جیسی اب تک کسی دھرم نے نہ اُٹھائی اور نہ آج ہی کوئی اکیلا دھرم ویسی آواز اُٹھا سکتا ہے ۔ نام کی قابلیت تو اُسی وقت آدھی رہ جاتی ہے جب وہ کسی کے ساتھ جوڑا جاتا ہے. نام کسی کے ساتھ جڑ کر علیحدگی زیادہ بتلاتا ہے ایک مہکتا کم. آج ضرورت ہے کم ایک مہکتا کی ؛ سب دھرم سمیلنوں نے دھرم کی ایکتا کو ممکن کر دیا ہے ۔

سب دھرموں کی ملی جلی یہ سنستھا اپنے دیش ہی نہیں' ساری دنیا کے سب آدمیوں کو سمان روپ سے سکھ پہونچا سکےگی اور زور کے ساتھ یہ آواز اُٹھا سکے گی کہ اب آگے آدمی کی ہنسا کسی روپ میں بھی

कर सकेगी कि किसी भी आदमी को मौत की सजा न दी जाय.

(3) जगह जगह म्युनिस्पैलटी ने यह क़ानून बना रखे हैं, जिस से जानवरों को तकलीफ़ न हो पाये. तब क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से यह इन्तजाम नहीं कर सकेगी कि आदमी को ऐसे कामों में न लगाया जाय जिन में लगने से उनकी उम्र कम होती हो, उनकी देह का कोई अंग या उपांग बेकार हो जाता हो. अगर वह शुरू शुरू में ऐसा न भी कर सकी तो इतना तो फ़ौरन कर ही सकेगी कि आदमियों को ऐसे कामों में कम से कम वक़्त के लिए लगाया जाय.

(4) युद्ध संस्थाएं, धर्मसंस्थाएं नहीं कही जा सकतीं. पर वह भी इस धर्म का बड़ा ख़्याल रखती हैं कि जहां तक बने सिपाहियों का बेजा संहार न किया जाय. इसी बात को ध्यान में रख कर पहली लड़ाई में गैस से काम लिया गया, पर दूसरी लड़ाई में उसका उपयोग एक दम बन्द रखा गया. तब क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था जल्दी ही सब मुल्कों को इस बात के लिये मजबूर नहीं कर सकती कि इस क़िस्म के हथियार न तैयार किये जायं जो लाखों आदमियों को मिनटों में मार डालते हों. जैसे ऐटम बम, हाई ड्रोजन बम वग़ैरा.

(5) जानवरों की जान लेना धर्म तो नहीं है फिर भी कई धर्मों में जानवरों की क़ुरबानी देने का रिवाज है. क़ुरबानी देते वक़्त धर्म वाले इस बात का ख़्याल रखते हैं कि जिस जानवर की क़ुरबानी दी जाय उसे क़ुरबानी के वक़्त कम से कम तकलीफ़ हो. फिर क्या सब धर्मों की मिली जुली संस्था इतना भी न कर सकेगी कि सब मुल्कों को मजबूर करे कि वे ऐसी चीज़ें तैयार न करें जो आदमियों को तड़पा तड़पा कर मार डाले.

(6) सब नहीं तो कुछ जानवर ऐसे ज़रूर हैं जिन में जिनसी क़ायदों का बड़ा ख़्याल रखा जाता है. मोर के बारे में तो यह बात फैली हुई है कि वह जुफ़ती ही नहीं करता. कौवों को भी बहुत ही कम लोगों ने मैथुन करते देखा है. जब जानवरों में भी थोड़ा बहुत जिनसी ख़्याल मौजूद है तब सब धर्मों की मिली जुली संस्था को इस बात में मुश्किल नहीं होनी चाहिये कि वह सब मुल्कों में ऐसे क़ानून बनवा दे जिस से लोग ऐसे पेशों में न लग सकें जिन की वजह से वह समाज की नज़रों में गिर जाते हैं.

सब धर्मों की मिली जुली संस्था जब अपना रूप ले लेगी तब वह ख़ुद भी यह सोच सकेगी कि उसे आदमी की भलाई के लिये क्या क्या करना चाहिये, ऐसे कौन से तरीक़े हो सकते हैं जिस से आदमी में आत्माभिमान

کر سکیگی کہ کسی بھی آدمی کو موت کی سزا نہ دی جائے .

(3) جگہ جگہ میونسپلٹی نے یہ قانون بنا رکھے ہیں' جس سے جانوروں کو تکلیف نہ ہو پائے . تب کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے یہ انتظام نہیں کرسکیگی کہ آدمی کو ایسے کاموں میں نہ لگایا جائے جن میں لگنے سے اُن کی عمر کم ہوتی ہو اُن کی دیہ کا کوئی انگ یا اُپانگ بیکار ہو جاتا ہو . اگر وہ شروع شروع میں ایسا نہ بھی کرسکی تو اتنا تو فوراً کر ہی سکیگی کہ آدمیوں کو ایسے کاموں میں کم سے کم وقت کے لئے لگایا جائے .

(4) یدھ سنستھائیں' دھرم سنستھائیں نہیں کہی جاسکتیں. پر وہ بھی اِس دھرم کا بڑا خیال رکھتی ہیں کہ جہاں تک بنے سپاہیوں کا بیجا سنگھار نہ کیا جائے . اِسی بات کو دھیان میں رکھکر پہلی لڑائی میں گیس سے کام لیا گیا' پر دوسری لڑائی میں اُس کا اُپیوگ ایک دم بند رکھا گیا . تب کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا جلدی ہی سب ملکوں کو اِس بات کے لئے مجبور نہیں کرسکتی کہ اِس قسم کے ہتھیار نہ تیار کئے جائیں جو لاکھوں آدمیوں کو منٹوں میں مار ڈالتے ہوں' جیسے ایٹم بم و ہائڈروجن بم وغیرہ .

(5) جانوروں کی جان لینا دھرم تو نہیں ہے پھر بھی کئی دھرموں میں جانوروں کی قربانی دینے کا رواج ہے. قربانی دیتے وقت دھرم والے اِس بات کا خیال رکھتے ہیں کہ جس جانور کی قربانی دی جائے اُسے قربانی کے وقت کم سے کم تکلیف ہو . پھر کیا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا اِتنا بھی نہ کرسکیگی کہ سب ملکوں کو مجبور کرے کہ وہ ایسی چیزیں تیار نہ کریں جو آدمیوں کو تڑپا تڑپا کر مار ڈالے .

(6) سب نہیں تو کچھ جانور ایسے ضرور ہیں جن میں جنسی قاعدوں کا بڑا خیال رکھا جاتا ہے . مور کے بارے میں تو یہ بات پھیلی ہوئی ہے کہ وہ جفتی ہی نہیں کرتا . کوّوں کو بھی بہت ہی کم لوگوں نے میتھن کرتے دیکھا ہے . جب جانوروں میں بھی تھوڑا بہت جنسی خیال موجود ہے تب سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا کو اِس بات میں مشکل نہیں ہونی چاہئے کہ وہ سب ملکوں میں ایسے قانون بنوا دے جس سے لوگ ایسے پیشوں میں نہ لگ سکیں جنکی وجہ سے وہ سماج کی نظروں میں گر جاتے ہیں .

سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا جب اپنا روپ لے لیگی تب وہ خود بھی سوچ سکیگی کہ اُسے آدمی کی بھلائی کے لئے کیا کیا کرنا چاہئے' ایسے کون سے طریقے ہو سکتے ہیں جس سے آدمی میں اتم ابھمان

झूठ बोलना होता है, बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना होता है, यह दोनों काम अधर्म हैं. अधर्म से ही भड़क पैदा होती है. भड़क उठना खुद अधर्म है. भड़क कर अधर्म ही किया जा सकता है, धर्म नहीं किया जा सकता.

सब धर्म एक हो कर, हो सकता है ऐसा विधान तैयार कर दें जिस से नये नये धर्मों का पैदा होना बंद हो जाय. धर्मों की यह मिली जुली संस्था ही शायद समय समय पर वह काम कर लिया करे जो नये नये धर्म पैदा हो कर किया करते हैं. नये धर्म यही तो करते हैं कि सचाई, प्रेम और ईमानदारी में जान डालते हैं. समय के अनुसार एक विधान बनाते हैं और किसी एक नये विचार के साथ समाज से नाता जोड़ देते हैं. यह इतने आसान काम हैं कि इन्हें सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से कर लिया करेगी. जब ऐसा हो जायगा तब आदमी दुख में पड़ने से बचेगा तो नहीं, पर जल्दी ही दुख भंवर से खींच निकाला जाया करेगा.

सब धर्मों की मिली जुली यह संस्था अपना नाम धर्म संस्था रख सकती है. यू. एन. ओ. की तरह इस का नाम यू. आर. ओ. भी हो सकता है. ऐसी संस्था बन जाने पर नीचे लिखी बातें न हों यह हो ही नहीं सकता.

(1) धर्म अहिंसा की भावुकता में आकर पशु पक्षियों, कीड़े मकोड़ों से इतना ज़ियादा राग करने लगे हैं, उन्हें अपने स्वार्थ की वजह से इतनी ज़ियादा मोहब्बत हो गई है कि उन जानवरों की खातिर एक धर्म दूसरे धर्म के आदमियों की जान ले सकता है. उन्हीं जानवरों के नाम पर एक धर्म दूसरे धर्म वालों के खिलाफ़ लड़ने को तैयार कर सकते हैं. इन्हीं जानवरों की खातिर एक धर्म अपनों में से ही किसी एक को सज़ा दे सकता है और जात से बाहर कर सकता है. धर्मों की इस बेजा मोहब्बत के कारन धर्म वालों ने आदमी के प्रति बेजा राग द्वेष का रोग बसा लिया है. जिस का सब धर्मों की मिली जुली संस्था आसानी से इलाज कर सकेगी. हमारा ख़याल है कि आदमी नाम का प्रानी जहां तक हो सकेगा दुख न पायेगा.

(2) हर धर्म वाले किसी न किसी जानवर से इतनी मोहब्बत करते ही हैं कि वह उसे नहीं मारते, उनके एक दो ही नहीं कई खून माफ़ हैं. जिस तरह हिन्दुओं के बारे में यह कहा कि गाय का मोर्चा बना कर कई बार ग़ैर हिन्दुओं ने हिन्दुओं को जीता, वैसे ही यह कथा भी मशहूर है कि बिल्लियों का मोर्चा बना कर कई बार ग़ैर मिस्रियों ने मिस्र के लोगों को जीता. अब जब जानवर इस तरह किसी हालत में भी धर्म की रूह से नहीं मारे जा सकते तो क्या सब धर्म मिल कर जल्दी से जल्दी ऐसी व्यवस्था न

جھوٹ بولنا ہوتا ہے، بات کو بڑھا چڑھا کر کہنا ہوتا ہے، یہ دونوں کام ادھرم ہیں۔ ادھرم سے ہی بھڑک پیدا ہوتی ہے۔ بھڑک اٹھنا خود ادھرم ہے۔ بھڑک کر ادھرم ہی کیا جاسکتا ہے، دھرم نہیں کیا جاسکتا۔

سب دھرم ایک ہو کر، ہو سکتا ہے ایسا ودھان تیار کر دیں جس سے نئے نئے دھرموں کا پیدا ہونا بند ہو جائے۔ دھرموں کی یہ ملی جلی سنستھا ہی شاید سمے سمے پر وہ کام کر لیا کرے جو نئے نئے دھرم پیدا ہو کر کیا کرتے ہیں۔ نئے دھرم یہی تو کرتے ہیں کہ سچائی، پریم اور ایمانداری میں جان ڈالتے ہیں۔ سمے کے انوسار ایک ودھان بناتے ہیں اور کسی ایک نئے وچار کے ساتھ سماج سے کا ناتا جوڑ دیتے ہیں۔ یہ اتنے آسان کام ہیں کہ انہیں سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے کر لیا کریگی۔ جب ایسا ہو جائے گا تب آدمی دکھ میں پڑنے سے بچے گا تو نہیں، پر جلدی ہی دکھ بھنور سے کھینچ نکالا جایا کرے گا۔

سب دھرموں کی ملی جلی یہ سنستھا اپنا نام دھرم سنستھا رکھ سکتی ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کی طرح اس کا نام یو۔ آر۔ او۔ بھی ہو سکتا ہے۔ ایسی سنستھا بن جانے پر نیچے لکھی باتیں نہ ہوں یہ ہو ہی نہیں سکتا۔

(1) دھرم اہنسا کی بھاوکتا میں آ کر پشو پکھشیوں، کیڑے مکوڑوں سے اتنا زیادہ راگ کرنے لگے ہیں، انہیں اپنے سوارتھ کی وجہ سے اتنی زیادہ محبت ہو گئی ہے کہ ان جانوروں کی خاطر ایک دھرم دوسرے دھرم کے آدمیوں کی جان لے سکتا ہے۔ انہیں جانوروں کے نام پر ایک دھرم دوسرے دھرم والوں کے خلاف لڑنے کو تیار کر سکتے ہیں۔ ان ہی جانوروں کی خاطر ایک دھرم اپنوں میں سے ہی کسی ایک کو سزا دے سکتا ہے اور جات سے باہر کر سکتا ہے۔ دھرموں کی اس بیجا محبت کے کارن دھرم والوں نے آدمی کے پرتی بیجا راگ دویش کا روگ بسا لیا ہے۔ جس کا سب دھرموں کی ملی جلی سنستھا آسانی سے علاج کر سکے گی۔ ہمارا خیال ہے کہ آدمی نام کا پرانی جہاں تک ہو سکے گا دکھ نہ پائے گا۔

(2) ہر دھرم والے کسی نہ کسی جانور سے اتنی محبت کرتے ہی ہیں کہ وہ اسے نہیں مارتے، ان کے ایک دو ہی نہیں کئی خون معاف ہیں۔ جس طرح ہندوں کے بارے میں یہ کہا کہ گائے کا مورچہ بنا کر کئی بار غیر ہندوؤں نے ہندوؤں کو جیتا، ویسے ہی یہ کتھا بھی مشہور ہے کہ بلیوں کا مورچہ بنا کر کئی بار غیر مصریوں نے مصر کے لوگوں کو جیتا۔ اب جب جانور اس طرح کسی حالت میں بھی دھرم کی روح سے نہیں مارے جاسکتے تو کیا سب دھرم مل کر جلدی سے جلدی ایسی ویوستھا نہ

अब्दुल क़ादिर भगवानदास शब्द का अरबी तरजुमा है. जहां धर्म के पीछे नाम लगा कि दूसरे धर्म वालों को उससे नफ़रत हुई या रग़बत.

अलग अलग धर्मों में पंथ बन बैठे हैं. पंथ शुरू शुरू में ईमानदारी ले कर चले थे, पर कुछ ही दिनों में वह उससे ऊब गये और पंथ के मोह में फंस कर उसी रूप में रंग गये जिस रूप को ख़त्म करने के लिये उन्होंने जन्म लिया था. असल में पंथ उस ईमानदार आदमी की कोशिश का नतीजा होते हैं जो अपने धर्म के रिवाजों से तंग आ चुका होता है और जो अपनी आंखों रिवाजों के हाथ समाज का नाश होता देख रहा होता है. समाज एक संस्था है, अगरचे वह जानदारों की बनी हुई होती है पर ख़ुद बेजान होती है. बेजान होने के नाते भावों से दूर होती है, दया नाम की चीज़ उससे कोसों दूर रहती है, वह मशीन की तरह अपने क़ायदों से ऐसे ही काम लेती है जैसे मशीन अपने पुर्ज़ों से. आलू काटने वाली मशीन जिस तरह अंगुली को भी काट देती है, वैसे ही क़ायदों में जकड़ा हुआ समाज, भले बुरे में तमीज़ करना छोड़ देता है, बेरहम हो कर व्यक्ति के साथ व्यवहार करने लगता है. इसी दुख को दूर करने के लिये समाज में से कोई एक आदमी नया उसूल गढ़ कर नये क़ायदों की बुनियाद डाल देता है. यही उसूल और क़ायदे पंथ का रूप ले लेते हैं और वह आदमी पंथ का गुरु बन बैठता है. जब सब धर्म मिल कर एक हो जायंगे, तब नये नये पंथ खड़ा होने का रिवाज मिट जायगा. "धर्म ख़तरे में है" यह नारा भी संसार से उठ जायगा. दुनिया के पर्दे पर अकेला धर्म ही है जो न कभी ख़तरे में पड़ सकता है, और न जिस का कभी खंडन हो सकता है, न किसी ने खंडन किया है, न आज कोई खंडन कर सकता है, और न कभी कोई खंडन कर सकेगा.

धर्म यानी सचाई, उसे दुनिया में ख़तरा कैसा? उसका खंडन कैसा? आर्य समाज हिन्दुओं में पैदा एक पंथ है जिसने सचाई का कभी खंडन नहीं किया. हिन्दुओं के रिवाजों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई, मूर्ति पूजा धर्म नहीं था, न वह धर्म है, न कभी होगा. भक्ति भावना को रूप देने के लिये मूर्ति पूजा एक रिवाज है. मूर्ति पूजा मुसलमानों में नहीं है. आर्य समाज ने हिन्दुओं की मूर्ति पूजा के रिवाज को ख़त्म किया और उसकी जगह एकेश्वर निराकार की पूजा को क़ायम किया. ऐसा करके उसने धर्म का खंडन नहीं किया, लेकिन हिन्दुओं ने यही शोर मचाया कि ऐसा करना उनके धर्म पर आघात करना है, इससे उनके धर्म का खंडन होता है, उनका धर्म ख़तरे में पड़ता है. उनकी यह आवाज़ें लोगों को सिर्फ़ भड़का[illegible] के लिये थीं. सची बात से लोगों में भड़क पैदा नहीं होत[illegible]. भड़क के लिये

عبدالقادر بھگوان داس شبد کا عربی ترجمہ ہے. جہاں دھرم کے پیچھے نام لگا کہ دوسرے دھرم والوں کو اُس سے نفرت ہوئی یا رغبت .

الگ الگ دھرموں میں پنتھ بن بیٹھے ہیں. پنتھ شروع شروع میں ایمانداری لےکر چلے تھے' پر کچھ ہی دنوں میں وہ اُس سے اوب گئے اور پنتھ کے موہ میں پھنس کر اُسی روپ میں رنگ گئے جس روپ کو ختم کرنے کے لئے اُنہوں نے جنم لیا تھا. اصل میں پنتھ اُس ایماندار آدمی کی کوشش کا نتیجہ ہوتے ہیں جو اپنے دھرم کے رواجوں سے تنگ آچکا ہوتا ہے اور جو اپنی آنکھوں رواجوں کے ہاتھ سماج کا ناش ہوتا دیکھ رہا ہوتا ہے . سماج ایک سنستھا ہے' اگرچہ وہ جانداروں کی بنی ہوئی ہوتی ہے تو پر خود بےجان ہوتی ہے' بےجان ہونے کے ناتے بھاؤں سے دور رہتی ہے . دیا نام کی چیز اُس سے کوسوں دور رہتی ہے . وہ مشین کی طرح اپنے قاعدوں سے ایسے ہی کام لیتی ہے جیسے مشین اپنے پرزوں سے . آلو کاٹنے والی مشین جس طرح انگلی کو بھی کاٹ دیتی ہے' ویسے ہی قاعدوں میں جکڑا ہوا سماج' بھلے برے میں تمیز کرنا چھوڑ دیتا ہے' بےرحم ہوکر ویکتی کے ساتھ ویوہار کرنے لگتا ہے. اِسی دکھ کو دور کرنے کے لئے سماج میں سے کوئی ایک آدمی نئے اصول گڑھ کر نئے قاعدوں کی بنیاد ڈالدیتا ہے. یہی اصول اور قاعدے پنتھ کا روپ لیتے ہیں اور وہ آدمی پنتھ کا گورو بن بیٹھتا ہے . جب سب دھرم مل کر ایک ہوجائینگے' تب نئے نئے پنتھ کھڑا ہونے کا رواج مٹ جائیگا. "دھرم خطرے میں ہے" یہ نعرہ بھی سنسار سے اُٹھ جائیگا. دنیا کے پردے پر اکیلا دھرم ہی ہے جو نہ کبھی خطرے میں پڑسکتا ہے اور نہ جس کا کبھی کھنڈن ہوسکتا ہے' نہ کسی نے کھنڈن کیا ہے' نہ آج کوئی کھنڈن کرسکتا ہے' اور نہ کبھی کھنڈن کرسکیگا .

دھرم یعنی سچائی' اسے دنیا میں خطرہ کیسا؟ اُسکا کھنڈن کیسا؟ آریہ سماج ہندوؤں میں پیدا ایک پنتھ ہے جس نے سچائی کا کبھی کھنڈن نہیں کیا. ہندوؤں کے رواجوں کے خلاف آواز اُٹھائی' مورتی پوجا دھرم نہیں تھا' نہ وہ دھرم ہے' نہ کبھی ہوگا. بھکتی بھاونا کو روپ دینے کے لئے مورتی پوجا ایک رواج ہے. مورتی پوجا مسلمانوں میں نہیں ہے. آریہ سماج نے ہندوؤں کی مورتی پوجا کے رواج کو ختم کیا اور اُس کی جگہ ایکیشور نراکار کی پوجا کو قائم کیا . ایسا کرکے اُس نے دھرم کا کھنڈن نہیں کیا' لیکن ہندوؤں نے یہی شور مچایا کہ ایسا کرنا اُن کے دھرم پر آگھات کرنا ہے' اِس سے اُن کے دھرم کا کھنڈن ہوتا ہے' اُن کا دھرم خطرے میں پڑتا ہے . اُن کی یہ آوازیں لوگوں کو صرف بھڑکانے کے لئے تھیں . سچی بات سے لوگوں میں بھڑک پیدا نہیں ہوتی . بھڑک کے لئے

है, अगर पानी गरम है तो वह अधर्मी है, विधर्मी है, कुधर्मी है. यही हाल धर्म युद्ध का है, धर्म युद्ध जैसा समास नहीं बनता, अगर समास बनता है, तो वहां तलवारें नहीं चलेंगी, ख़ून नहीं बहेगा, गला नहीं कटेगा, कड़वे बोल तक नहीं बोले जायगें, किसी आदमी को दुख पहुंचे यह हो ही न सकेगा, इस तरह का धर्म युद्ध समास उस युद्ध का द्योतक हो सकता है जो आप दिन आदमी के अन्दर चलता रहता है, वहां मारा मारी और कटा कटी नहीं होती.

धर्म युद्ध नाम की चीज़ अगर कहीं बाहरी दुनिया में है तो वह उसी धर्म की देन हो सकती है जो बहुत पुराना हो कर बेजान हो चुका हो. उसमें की सचाई ईमानदारी या तो बेदम हो चुकी हो, या दम तोड़ रही हो.

दो धर्मों में जब युद्ध होता है, उसे धर्म युद्ध कहना कोरा रिवाज है असलियत नहीं. धर्म नहीं लड़ते, धर्मों के रिवाज टकरातें हैं, जो जो युद्ध धर्म युद्ध के नाम से मशहूर हैं वे या तो रिवाज युद्ध थे, या धन युद्ध थे. या नारी युद्ध या अधिकार युद्ध या और कोई युद्ध. न थे तो धर्म युद्ध न थे, महाभारत हुआ पांच गांव की ख़ातिर, लंका कांड हुआ सीता की ख़ातिर, इन्हें धर्म युद्ध कैसे कहा जा सकता है ? पाकिस्तान के लिये युद्ध हुआ यह था राजकाजी अधिकारों की ख़ातिर, पर उसे हर मुसलमान धर्म युद्ध कहता है.

धर्म नाम से पुकारी जाने वाली सचाई की तलवार पैनी होती है, पर वह तो ख़ून नहीं निकालती, आमने सामने आने वाली अगर सचाई की तलवार लिये हों तो लड़ेंगे नहीं, एक दूसरे के गले मिलेंगे, हां जब वह तलवारें रिवाज में डूबे आदमियों के हाथों में होंगी तो वह गर्म हो जायंगी—एक दूसरे का काट करेंगी, फ़ौलादी तलवारों का भी यही हाल है, दो दुश्मनों की तलवारें एक बक्स में नंगी हो कर गले मिल कर लेट लेती हैं, वही दोनों दुश्मनों के हाथों में पहुंच कर खनाखन और खटाखट करने लगतीं हैं, दो दोस्तों की तलवारें उसी तरह नंगी हो कर एक बक्स में दूसरे से लिपट कर सो सकती हैं, और दोनों दोस्तों के हाथों में आ कर भी एक दूसरे का चुम्बन कर सकती हैं, खनाखन और खटाखट से दूर रहती हैं. इसी तरह सचाई और ईमानदारी की तलवारें भी दो दुश्मन धर्मों के हाथों में पड़ कर कर झूठ और बेईमानी के काम पर उतर आती हैं. इसी से समझा जा सकता है कि अलग अलग धर्मों का अस्तित्व कितना ख़तरनाक है. धर्मों ने अपना नाम रख कर धर्म को बदनाम कर दिया है. क्या अब्दुल क़ादिर, और भगवानदास दोनों आदमी होते हुए एक आदमी में अलग अलग भाव पैदा नहीं करते ? वैसे

ہے؛ اگر پانی گرم ہے تو وہ ادھرمی ہے، ودھرمی ہے، کودھرمی ہے۔ یہی حال دھرم یدھ کا ہے، دھرم یدھ جیسا سماس نہیں بنتا؛ اگر سماس بنتا ہے، تو وہاں تلواریں نہیں چلینگی، خون نہیں بہیگا، گلا نہیں کٹیگا، کڑوے بول تک نہیں بولے جائینگے، کسی آدمی کو دکھ پہونچے یہ ہو ہی نہ سکیگا؛ اِس طرح کا دھرم یدھ سماس اس یدھ کا دھوتک ہوسکتا ہے جو آپ دن آدمی کے اندر چلتا رہتا ہے، وہاں مارا ماری اور کٹا کٹی نہیں ہوتی ۔

دھرم یدھ نام کی چیز اگر کہیں باہری دنیا میں ہے تو وہ اُسی دھرم کی دین ہوسکتی ہے جو بہت پرانا ہوکر بےجان ہوچکا ہو ۔ اُس میں کی سچائی ایمانداری یا تو بےدم ہوچکی ہو یا دم توڑ رہی ہو ۔

دو دھرموں میں جب یدھ ہوتا ہے، اُسے دھرم یدھ کہنا کورا رواج ہے، اصلیت نہیں۔ دھرم نہیں لڑتے، دھرموں کے رواج ٹکراتے ہیں، جو جو یدھ دھرم یدھ کے نام سے مشہور ہیں وہ یا تو رواج یدھ تھے، یا دھن یدھ یا ناری یدھ یا ادھیکار یدھ یا اور کوئی یدھ۔ نہ تھے تو دھرم یدھ نہ تھے، مہابھارت ہوا پانچ گاؤں کی خاطر، لنکا کانڈ ہوا سیتا کی خاطر، انہیں دھرم یدھ کیسے کہا جاسکتا ہے؟ پاکستان کے لئے یدھ ہوا یہ تھا راجکاجی ادھیکاروں کی خاطر، پر اسے ہر مسلمان دھرم یدھ کہتا ہے ۔

دھرم نام سے پکاری جانے والی سچائی کی تلوار پینی ہوتی ہے، پر وہ تو خون نہیں نکالتی، آمنے سامنے آنے والے اگر سچائی کی تلوار لئے ہوں تو لڑینگے نہیں، ایک دوسرے کے گلے ملینگے، ہاں جب وہ تلواریں رواج میں ڈوبے آدمیوں کے ہاتھوں میں ہونگی تو وہ گرم ہوجائینگی۔ ایک دوسرے کا کاٹ کرینگی، فولادی تلواروں کا بھی یہی حال ہے، دو دشمنوں کی تلواریں ایک بکس میں ننگی ہوکر گلے مل کر لیٹ لیتی ہیں، وہی دونوں دشمنوں کے ہاتھوں میں پہونچکر کھنا کھن اور کھٹا کھٹ کرنے لگتی ہیں، دو دوستوں کی تلواریں اسی طرح ننگی ہوکر ایک بکس میں ایک دوسرے سے لپٹکر سو سکتی ہیں، اور دونوں دوستوں کے ہاتھوں میں آکر بھی ایک دوسرے کا چمبن کرسکتی ہیں، کھنا کھن اور کھٹا کھٹ سے دور رہتی ہیں۔ اسی طرح سچائی اور ایمانداری کی تلواریں بھی دو دشمن دھرموں کے ہاتھوں میں پڑکر جھوٹ اور بےایمانی کے کام پر اُتر آتی ہیں ۔ اِسی سے سمجھا جاسکتا ہے کہ الگ الگ دھرموں کا استتو کتنا خطرناک ہے ۔ دھرموں نے اپنا نام رکھکر دھرم کو بدنام کردیا ہے ۔ کیا عبدالقادر اور بھگوان داس دونوں آدمی ہوتے ہوئے ایک آدمی میں الگ الگ بھاؤ پیدا نہیں کرتے ؟ جیسے

में सब धर्म के आदमी शामिल होंगे, क्या लड़ाई के बीज जल भुन कर राख न हो जायंगे, क्या फिर मुल्कों का द्वेष क़ायम रह सकेगा ?

पुराने लोगों ने लड़ाई के तीन कारन माने हैं—ज़र, ज़मीन, ज़न, यानी धन, धरती और नारी.

आज, इन तीन में बाज़ार शामिल किया जा सकता है. है यह धन का दूसरा नाम. आज भी लड़ाई होती तो इन्हीं तीन कारनों से है, पर हर लड़ाई शुरू की जाती है धर्म के नाम पर. हर मुल्क यह शोर मचाने की कोशिश करता है कि उसके धर्म को ख़तरा है. अगर यह बात सच न होती तो कवियों को अपने छंदों में यह बात न कहनी पड़ती, "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना." ग़लत या सही अलग अलग धर्म दो मुल्कों को लड़ा कर, सीधे नासीधे कारन ज़रूर होते हैं.

अलग अलग धर्म फूट और बैर की तलवारों की धारों को तेज़ कर देते हैं. यह कैसे मज़े की बात है कि जो धर्म अपने बालपन में इन तलवारों की धारों को गुठल या कुंद करता है, वही धर्म पुराना हो कर, उल्टा काम करने लगता है. आदमी जीते जी बच्चों को ख़ुश करता है, डर दूर करता है, पर मरने पर बच्चों को रुलाने और डराने लगता है.

अलग अलग धर्म बड़े भयानक होते हैं, पानी को बनाने वाली हवायें, आक्सीजन और हाइड्रोजन अलग अलग कौन कम बला हैं ?

अलग अलग धर्म ज़हर बने हुये हैं, मिल कर अमृत का रूप ले लेंगे. चूना और कत्था, अलग अलग आदमी के लिए बुरे होते हैं, आदमियत को कम करते हैं, पर वही दोनों मिल कर पान के साथ आदमी के पेट में पहुंच कर आदमी की आदमियत बढ़ाते हैं.

दुनिया के सब धर्म मिल कर अमृत का रूप ले लेंगे, उनके अमृत का असर हमारी आंखों के सामने न भी हो, तब भी यह बात हमारे सामने है ही कि फिर कोई मुल्क लड़ाई के लिए अपनी पीठ धर्म से न ठुकवा सकेगा. धर्म की हिमायत के बिना लड़ाई के लिए बिल्कुल निर्बल न भी बने, कुछ अंशों में कमज़ोर ज़रूर हो जायगा, क्योंकि सब धर्म मिल कर सब से पहला काम यही तो करेंगे कि वह लड़ाई को धर्म के ख़िलाफ़ ठहरायेंगे.

ठंडी आग की तरह गरम पानी की बात नहीं बनती, पर ठंडी आग भी मिलती है और गरम पानी भी मिलता है, फिर भी आज तक किसी ने यह न कहा, न माना, न अनुभव किया, न इस पर अमल किया कि आग का धर्म ठंडा करना है और पानी का धर्म जलाना. अगर आग ठंडी है तो वह अधर्मी है, विधर्मी है, कुधर्मी

میں سب دھرم کے آدمی شامل ہونگے ۔ کیا لڑائی کے بیج جل بھن کر راکھ نہ ہو جائینگے' کیا پھر ملکوں کا دویش قائم رہ سکے گا ؟

پرانے لوگوں نے لڑائی کے تین کارن مانے ہیں—زر' زمین' زن' یعنی دھن' دھرتی اور ناری ۔

آج' ان تین میں بازار شامل کیا جا سکتا ہے ۔ ہے یہ دھن کا دوسرا نام ۔ آج بھی ہوتی انہیں تین کارنوں سے ہے' پر ہر لڑائی شروع کی جاتی ہے دھرم کے نام پر ۔ ہر ملک یہ شور مچانے کی کوشش کرتا ہے کہ اس کے دھرم کو خطرہ ہے ۔ اگر یہ بات سچ نہ ہوتی تو کویوں کو اپنے چھندوں میں یہ بات نہ کہنی پڑتی' " مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا ۔" غلط یا صحیح الگ الگ دھرم دو ملکوں کو لڑا کر' سیدھے نا سیدھے کارن ضرور ہوتے ہیں ۔

الگ الگ دھرم پھوٹ اور بیر کی تلواروں کی دھاروں کو تیز کر دیتے ہیں ۔ یہ کیسے مزے کی بات ہے کہ جو دھرم اپنے بالپن میں ان تلواروں کی دھاروں کو گٹھل یا کند کرتا ہے' وہی دھرم پرانا ہو کر' الٹا کام کرنے لگتا ہے ۔ آدمی جیتے جی بچوں کو خوش کرتا ہے' ڈر دور کرتا ہے' پر مرنے پر بچوں کو رلانے اور ڈرانے لگتا ہے ۔

الگ الگ دھرم بڑے بھیانک ہوتے ہیں' پانی کو بنانے والی ہوائیں' آکسیجن اور ہائیڈروجن الگ الگ کون کم بلا ہیں ؟

الگ الگ دھرم زہر بنے ہوئے ہیں' مل کر امرت کا روپ لے لینگے ۔ چونا اور کتھا' الگ الگ آدمی کے لئے برے ہوتے ہیں' آدمیت کو کم کرتے ہیں' پر وہی دونوں مل کر پان کے ساتھ آدمی کے پیٹ میں پہنچ کر آدمی کی آدمیت بڑھاتے ہیں ۔

دنیا کے سب دھرم مل کر امرت کا روپ لے لینگے' ان کے امرت کا اثر ہماری آنکھوں کے سامنے نہ بھی ہو' تب بھی یہ بات ہمارے سامنے ہے ہی کہ پھر کوئی ملک لڑائی کے لئے اپنی پیٹھ دھرم سے نہ ٹھکوا سکے گا ۔ دھرم کی حمایت کے بنا لڑائی کے لئے بالکل نربل نہ بھی بنے' کچھ انشوں میں کمزور ضرور ہو جائے گا' کیونکہ سب دھرم مل کر سب سے پہلا کام یہی تو کرینگے کہ وہ لڑائی کو دھرم کے خلاف ٹھہرائینگے ۔

ٹھنڈی آگ کی طرح گرم پانی کی بات نہیں بنتی' پر ٹھنڈی آگ بھی ملتی ہے اور گرم پانی بھی ملتا ہے' پھر بھی آج تک کسی نے یہ نہ کہا' نہ مانا' نہ انوبھو کیا' نہ اس پر عمل کیا کہ آگ کا دھرم ٹھنڈا کرنا ہے اور پانی کا دھرم جلانا ۔ اگر آگ ٹھنڈی ہے تو وہ ادھرمی ہے' ودھرمی ہے' کدھرمی

अहिंसा और आदमी

आदमी को मार डालना ऐसी हिंसा है जिसे सब समझते हैं, जिसकी सब धर्मों ने बुराई की है. जान लेने वाले को सब धर्मों ने मौत की व्यवस्था दी है, पर इस तरफ लोगों का बहुत कम ध्यान गया है कि मार डालने से तिल तिल कर मारना और भी ज़ियादा बुरा है. इस तरह की दुख देने की प्रथा को रोकने की तरफ किसी का ध्यान गया ही नहीं. किसी इक्के दुक्के ने ऐसा किया हो तो अलग बात है.

आज की नयी धर्म सभा को अहिंसा में आदमी को इस तरह सताया जाना भी शामिल करना होगा. आज की सभा यह भी देखेगी कि कहीं कोई आदमी किसी तरह सताया तो नहीं जा रहा. जिस तरह कभी धर्मों ने पशुओं के लिए पशुशालाएं बनाई थीं, वैसे ही आज आदमी के विकास के लिए तरह तरह की शालाएं और आश्रम खोलने पड़ेंगे. हर पेशे पर गहरी नज़र डालनी होगी. जिस तरह अफीम, शराब इस्तेमाल कर और ऐयाशी में फंस कर आदमी सुख मानता है, और अपनी देह घुलाता जाता है, वैसे ही आदमी पेशे करने में भी सुख मानता है और अपनी उम्र कम करता जाता है. उन पेशों से आदमी को निकालना इस नई धर्म सभा का काम होगा. रिक्शे वालों की तरफ आज कल सब भले आदमियों का ध्यान दौड़ रहा है. रिक्शे में बाइसिकल जुड़ जाने से धर्म रस में भीगे हुए आदमियों की तसल्ली नहीं हो पाती. पर न जाने क्यों किसी की नज़र रेल के ड्राइवर की तरफ नहीं जाती, जिस को इंजन में किसी मौसम का आराम नहीं. गर्मियों में बेहद गर्म, जाड़ों में तीर की तरह चुभने वाली ठंड और बरसात में हर तरह की बौछार का मुकाबला. नाव का मल्लाह बहाव के खिलाफ़ नाव खेकर, और बीसियों आदमियों को नाव में बिठा कर, क्या रिक्शा वाले से कुछ कम तकलीफ़ में रहता है? क्या यही हाल कोयले की खानों में काम करने वालों का नहीं है? जो लोग ऊंट किराये पर उठाते हैं वह लोग तो रिक्शे वालों से कहीं ज़ियादा दुखी हैं. यह तो मीलों सवार के पीछे ऊंट की चाल से दौड़ते हैं. इसी तरह के और भी अनेकों पेशे गिनाये जा सकते हैं. भट्टियों के लिए जो आग से तपे तन्दूर में घुसता है, वह तो न जाने एक ही दिन में अपनी उमर के कितने दिन उस भाड़ में झोंक देता है. यह नये ढंग की धर्म सभा जिस का विषय सिर्फ़ आदमी ही होगा, आदमी की इन सब तकलीफ़ों को, बहुत जल्दी ढूंढ निकालेगी और उनको दूर करने का कोई न कोई उपाय ढूंढ निकालेगी. ऐसी धर्म सभा के बनने पर, जिस

اہنسا اور آدمی

آدمی کو مار ڈالنا ایسی ہنسا ہے جسے سب سمجھتے ہیں، جسکی سب دھرموں نے برائی کی ہے. جان لینے والے کو سب دھرموں نے موت کی ویوستھا دی ہے، پر اس طرف لوگوں کا بہت کم دھیان گیا ہے کہ مار ڈالنے سے تل تل کر مارنا اور بھی زیادہ برا ہے. اس طرح کی دکھ دینے کی پرتھا کو روکنے کی طرف کسی کا دھیان گیا ہی نہیں. کسی اکے دکے نے ایسا کیا ہو تو الگ بات ہے.

آج کی نئی دھرم سبھا کو اہنسا میں آدمی کو اس طرح ستایا جانا بھی شامل کرنا ہوگا. آج کی سبھا یہ بھی دیکھے گی کہ کہیں کوئی آدمی کسی طرح ستایا تو نہیں جا رہا. جس طرح کبھی دھرموں نے پشوؤں کے لئے پشو شالائیں بنائی تھیں، ویسے ہی آج آدمی کے وکاس کے لئے طرح طرح کی شالائیں اور آشرم کھولنے پڑیں گے. ہر پیشے پر گہری نظر ڈالنی ہوگی. جس طرح افیم، شراب استعمال کر اور عیاشی میں پھنس کر آدمی سکھ مانتا ہے اور اپنی دیہ گھلاتا جاتا ہے ویسے ہی آدمی پیشے کرنے میں بھی سکھ مانتا ہے اپنی عمر کم کرتا جاتا ہے. ان پیشوں سے آدمی کو نکالنا اس نئی دھرم سبھا کا کام ہوگا. رکشے والوں کی طرف آج کل سب بھلے آدمیوں کا دھیان دوڑ رہا ہے. رکشے میں بائیسکل جڑ جانے سے دھرم رس میں بھیگے ہوئے آدمیوں کی تسلی نہیں ہو پاتی. پر نہ جانے کیوں کسی کی نظر ریل کے ڈرائیور کی طرف نہیں جاتی، جسکو انجن میں کسی موسم کا آرام نہیں. گرمیوں میں بے حد گرم، جاڑوں میں تیر کی طرح چبھنے والی ٹھنڈ اور برسات میں ہر طرح کی بوچھار کا مقابلہ. ناؤ کا ملاح بہاؤ کے خلاف ناؤ کھے کر اور بیسیوں آدمیوں کو ناؤ میں بٹھا کر، کیا رکشے والے سے کچھ کم تکلیف میں رہتا ہے؟ کیا یہی حال کوئلے کی کھانوں میں کام کرنے والوں کا نہیں ہے؟ جو لوگ اونٹ کرائے پر اٹھاتے ہیں یہ لوگ تو رکشے والوں سے کہیں زیادہ دکھی ہیں. یہ تو میلوں سوار کے پیچھے اونٹ کی چال سے دوڑتے ہیں. اسی طرح کے اور بھی پیشے گنائے جا سکتے ہیں. بھٹیوں کے لئے جو آگ سے تپے تنور میں گھستا ہے، وہ تو نہ جانے ایک ہی دن میں اپنی عمر کے کتنے دن اس بھاڑ میں جھونک دیتا ہے. یہ نئے ڈھنگ کی دھرم سبھا جس کا وشے صرف آدمی ہی ہوگا آدمی کی ان سب تکلیفوں کو بہت جلدی ڈھونڈھ نکالے گی. اور ان کو دور کرنے کا کوئی نہ کوئی اپائے ڈھونڈھ نکالے گی. ایسی دھرم سبھا کے بننے پر جس

के बचाया जा सकेगा, हमें यह याद रखना चाहिये कि जो खरीदार अक़्लमन्द होता है और प्लान के अनुसार खरीद करता है उस पर भी रोज़गार निर्भर करता है. 'विमको' जैसी विदेशी इजारादारियों पर रोक लगाना चाहिये. मिसालें क़ायम करके और प्रचार करके लोगों में स्वदेशी की भावना जगाना चाहिये.

दाम मुक़र्रर करने के संबन्ध में जो पालिसी सरकार अपनाए उसका ज़ोर सस्ती पर न होना चाहिये. पहला आधार यह होना चाहिये कि माल के पैदा करने वाले को इतना दाम मिल जाए जो उसके गुज़ारे के लिये काफी हो, इस बात की गारन्टी होनी चाहिये.

ऊपर की कही बातों से यह साफ़ नतीजा निकलता है कि बेरोज़गारी और ग़रीबी फैलने के सिलसिले में सब से पहली मुजरिम सरकार है. अगर जनता को खुली छोड़ दिया जाय, अगर उचित वातावरन पैदा कर दिया जाये, अगर दाम इस तरह मुक़र्रर किये जायं कि माल पैदा करने वाले को इतनी आमदनी हो सके जिस से वह अच्छे स्तर का जीवन बिता सके तो अमरीका और बरतानिया की तरह लोग उद्योगी और कारबारी पेशे की तरफ़ क़ुदरतन झुकेंगे और आज़ाद पेशा अपनायेंगे और सरकारी दफ़्तरों में ग़ुलामी करना पसन्द नहीं करेंगे.

स्वदेशी

बचपन से ही लोगों को इस बात की तालीम मिलनी चाहिये कि वह स्वदेशी को अपनायें. उनको तालीम मिलनी चाहिये कि हर चीज़ से बढ़ कर वह इनसानियत के जज़्बे का ख़याल रखें. धन के मोल को दूसरे नम्बर पर समझें.

इस सब के लिये एक उचित तालीमी पालिसी की ज़रूरत है. कांगरेस कमेटी की बैठक में एक नये तालीमी ढांचे की चरचा हुई. मदरास सरकार ने उसको ज़ोर शोर से अपनाया है. यह ढांचा इस तरह का है कि जिस में अन्धा अन्धे को रास्ता दिखाता है. जिस विचार धारा को लेकर हम चाहते हैं कि हमारी अगली नसल तरक़्क़ी करे उसकी तालीम हम बच्चों के मां बाप को नहीं देते. हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है वह है उचित बेसिक तालीम न कि तालीम का ढकोसला. इस तरह की तालीम का ज़बरदस्त अभाव है. सब से बड़ी बात तो यह है कि इसकी ज़रूरत तक महसूस नहीं की जा रही है.

हम विश्वास करते हैं कि कांगरेस कमेटी ने जो ठहराव पास किया है उस पर अमल किया जायगा और ऊपर के विचारों पर भी गंभीरता से सोच विचार होगा.

سے بچایا جا سکے گا ہمیں یہ یاد رکھنا چاہئے کہ جو خریدار عقلمند ہوتا ہے اور پلان کے انوسار خرید کرتا ہے اس پر بھی روزگار نربھر کرتا ہے. 'وِمکو' جیسی ودیشی اجارہ داریوں پر روک لگانا چاہئے . مثالیں قائم کرکے اور پرچار کر کے لوگوں میں سودیشی کی بھاونا جگانا چاہئے .

دام مقرر کرنے کے سمبندھ میں جو پالیسی سرکار اپنائے اس کا زور سستی پر نہ ہونا چاہئے . پہلا آدھار یہ ہونا چاہئے کہ مال کے پیدا کرنے والے کو اتنا دام مل جائے جو اس کے گزارے کے لئے کافی ہو' اس بات کی گارنٹی ہونی چاہئے .

اوپر کہی باتوں سے یہ صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ بیروزگاری اور غریبی پھیلنے کے سلسلے میں سب سے پہلی مجرم سرکار ہے. اگر جنتا کو کھلی چھوڑ دی جائے' اگر اُچت واتاورن پیدا کردیا جائے' اگر دام اس طرح مقرر کئے جائیں کہ مال پیدا کرنے والے کو اتنی آمدنی ہوسکے جس سے وہ اچھے استر کا جیون بتاسکے تو امریکہ اور برطانیہ کی طرح لوگ ادیوگی اور کاروباری پیشے کی طرف قدرتاً جھکیں گے اور آزاد پیشہ اپنائیں گے. اور سرکاری دفتروں میں غلامی کرنا پسند نہیں کریں گے .

سودیشی

بچپن سے ہی لوگوں کو اس بات کی تعلیم ملنی چاہئے کہ وہ سودیشی کو اپنائیں. انکو تعلیم ملنی چاہئے کہ ہر چیز سے بڑھ کر وہ انسانیت کے جذبے کا خیال رکھیں. دھن کے مول کو دوسرے نمبر پر سمجھیں .

اس سب کے لئے ایک اُچت تعلیمی پالیسی کی ضرورت ہے . کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں ایک نئے تعلیمی ڈھانچے کی چرچا ہوئی ہے. مدراس سرکار نے اس کو زور شور سے اپنایا ہے . یہ ڈھانچہ اس طرح کا ہے کہ جس میں اندھا اندھے کو راستہ دکھاتا ہے. جس وچاردھارا کو لیکر ہم چاہتے ہیں کہ ہماری اگلی نسل ترقی کرے اسکی تعلیم ہم بچوں کے ماں باپ کو نہیں دیتے . ہمیں جس چیز کی ضرورت ہے وہ ہے اُچت بیسک تعلیم نہ کہ تعلیم کا ڈھکوسلہ . اس طرح کی تعلیم کا زبردست ابھاو ہے. سب سے بڑی بات تو یہ ہے کہ اسکی ضرورت تک محسوس نہیں کی جا رہی ہے .

ہم وشواس کرتے ہیں کہ کانگریس کمیٹی نے جو ٹھہراؤ پاس کیا ہے اس پر عمل کیا جائے گا اور اوپر کے وچاروں پر بھی گمبھیرتا سے سوچ وچار ہوگا .

मुक़ाबला करने के लिये सरकार के पास कोई अमली प्रोग्राम नहीं है. अगर कुछ किया जाता है तो वह यह कि बेचारे ग़रीबों को गाली दी जाती है और कहा जाता है कि उन में काम करने का उत्साह नहीं है. अगर सरकार ईमानदार है तो उसे एक साफ़ प्लान बनाना चाहिये ताकि सब को रोज़गार मिल सके. सरकार को चाहिये कि वह ऐसे कारख़ानों को माली सहायता दे और घरेलू और विदेशी उद्योग के वेगों से इन नये उद्योगों की हिफ़ाज़त करे.

बंटवारा

हम पहले कह चुके हैं कि सस्ते और नक़ली विदेशी सामान से हमारा बाज़ार पटा पड़ा है. माल के अन्दर आने और देश से बाहर जाने के संबन्ध में सरकार की कोई सोची विचारी पालिसी नहीं है. बने बनाए सामान के देश में आने से और कच्चे माल के देश से जाने से हमारे मुल्क में बेरोज़गारी फैलती है. इसलिये यह ज़रूरी है कि इन पर रोक लगाई जाय. अगर सरकार सिर्फ़ बनावटी टिसुए नहीं बहाती और ईमानदार है तो ऐसा करना बेहद ज़रूरी है क्योंकि बिना इसके जनता को रोज़गार नहीं मिल सकता.

माल की खपत

पैदा करने वाला उस वक़्त तक ख़ुशहाल नहीं हो सकता जब तक उचित दाम पर उसका माल जल्द ही न बिक जाय. सरकार सब से ज़ियादा माल ख़रीदती है. सरकार को बहुत बेदर्दी के साथ स्वदेशी माल ख़रीदने की पालिसी पर अमल करना चाहिये और दूसरों के सामने मिसाल रखना चाहिये. आज कल ख़रीद करने वाले सरकारी विभाग सस्ता माल ख़रीदने की कोशिश करते हैं; वह माल ज़ियादातर विदेशों से आते हैं और वहां की बड़ी बड़ी मिलों में पैदा किये जाते हैं. इस पालिसी से देशी माल का बाज़ार सुकड़ता है और जो लोग माल पैदा करते हैं बरबाद होते हैं. जहां तक हिन्दुस्तानी माल मिल सके वहां ख़रीद करने वाले सरकारी विभाग किसी भी बहाने से विदेशी सामान न ख़रीदने पायें. सस्ती का ख़याल करके अपने देश के रोज़गार को दूसरों के हाथ में न सौंपना चाहिये. वज़ीरों को इस बात पर ज़ोर देना चाहिये कि हिन्दुस्तानी माल की ही खपताई की जाय. आज कल ज़ियादातर वज़ीर पारकर फ़ाउन्टेन पैन रखते हैं, अमरीकी कार का इस्तेमाल करते हैं, उनके दफ़्तरों की स्टेशनरी और दूसरे सामान विदेशी होते हैं. जब तक ऊंचे लोगों में यह जज़बा है तब तक क्या उम्मीद की जा सकती है कि आम लोगों को रोज़गार

مقابلہ کرنے کے لئے سرکار کے پاس کوئی عملی پروگرام نہیں ہے۔ اگر کچھ کیا جاتا ہے تو وہ یہ ہے کہ بیچارے غریبوں کو گالی دی جاتی ہے اور کہا جاتا ہے کہ اُن میں کام کرنے کا اُتساہ نہیں ہے۔ اگر سرکار ایماندار ہے تو اُسے ایک صاف پلان بنانا چاہئے تاکہ سب کو روزگار مل سکے ۔ سرکار کو چاہئے کہ وہ ایسے کارخانوں کو مالی سہائتا دے اور گھریلو اور ودیشی اُدیوگ کے ویگوں سے ان نئے اُدیوگوں کی حفاظت کرے ۔

بٹوارا

ہم پہلے کہہ چکے ہیں کہ سستے اور نقلی ودیشی سامان سے ہمارا بازار پٹا پڑا ہے ۔ مال کے اندر آنے اور دیش سے باہر جانے کے سمبندھ میں سرکار کی کوئی سوچی وچاری پالیسی نہیں ہے ۔ بنے بنائے سامان کے دیش میں آنے سے اور کچے مال کے دیش سے جانے سے ہمارے ملک میں بیروزگاری پھیلتی ہے ۔ اس لئے یہ ضروری ہے کہ ان پر روک لگائی جائے ۔ اگر سرکار صرف بناوٹی ٹسوے نہیں بہاتی اور ایماندار ہے تو ایسا کرنا بیحد ضروری ہے کیونکہ بنا اِس کے جنتا کو روزگار نہیں مل سکتا ۔

مال کی کھپت

پیداوار کرنے والا اُس وقت تک خوشحال نہیں ہو سکتا جب تک کہ اُچت دام پر اُس کا مال جلد ہی نہ بک جائے۔ سرکار سب سے زیادہ مال خریدتی ہے ۔ سرکار کو بہت سختی کے ساتھ سودیشی مال خریدنے کی پالیسی پر عمل کرنا چاہئے اور دوسروں کے سامنے مثال رکھنا چاہئے۔ آجکل خرید کرنے والے سرکاری وبھاگ سستا مال خریدنے کی کوشش کرتے ہیں؛ یہ مال زیادہتر ودیشوں سے آتے ہیں اور وہاں کی بڑی بڑی ملوں میں پیدا کئے جاتے ہیں ۔ اس پالیسی سے دیشی مال کا بازار سکڑتا ہے اور جو لوگ مال پیدا کرتے ہیں برباد ہوتے ہیں۔ جہاں تک ہندستانی مال مل سکے وہاں تک خرید کرنے والے سرکاری وبھاگ کسی بھی بہانے سے ودیشی سامان نہ خریدنے پائیں۔ سستی کا خیال کرکے اپنے دیش کے روزگار کو دوسروں کے ہاتھ میں نہ سونپنا چاہئے ۔ وزیروں کو اس بات پر زور دینا چاہئے کہ ہندستانی مال کی ہی کھپائی کی جائے۔ آجکل زیادہتر وزیر پارکر فاؤنٹین پن رکھتے ہیں' امریکی کار کا استعمال کرتے ہیں' اُن کے دفتروں کی اسٹیشنری اور دوسرے سامان ودیشی ہوتے ہیں ۔ جب تک اونچے لوگوں میں یہ جذبہ ہے تب تک کیا اُمید کی جاسکتی ہے کہ عام لوگوں کو روزگار

हल

अगर हम वाक़ई चाहते हैं कि देश खुशहाल हो और सब को रोज़गार मिल जाय तो हमें सारे देश के लिये एक ऐसा प्रोग्राम बनाना पड़ेगा जिसके अधीन पूंजी की पैदावार उसका बंटवारा और सामान की खपत सभी आजाएं. इस तरह हमें अपने उद्योगी प्लान, व्योपारी पालिसी और दामों के आधार सब पर फिर से सोच विचार करना पड़ेगा. अगर हम इन में नई जान नहीं फूंक सकते तो हमें बातों में अपनी ताक़त न गंवाना चाहिये.

उद्योगी प्लान

पैदावार के ढांचे को ऐसा बनाना पड़ेगा कि उसमें ज़ियादा से ज़ियादा लोग काम कर सकें और पढ़े लिखों को भी काम मिल सके. यह ढांचा इस आधार पर खड़ा किया जाय कि पूंजी कहीं से नहीं मिल सकती. इस तरह किसान खेती से पैदावार करेगा और घरेलू धन्दे उद्योगी सामान पैदा करेंगे.

पैदावार

जब से हमारे किसानों ने ग़ल्ला पैदा करना त्याग कर कारखानों के लिये कच्चा माल पैदा करना शुरू किया है तब से हमारे देश में खाने की बेहद कमी हो गई है. उद्योगी सामानों की ज़रूरत को पूरा करने के बजाय कारखानेदार इश्तहार दे दे कर ग़ैर ज़रूरी आवश्यकतायें पैदा करते हैं और इस तरह ग़ैर ज़रूरी सामानों की मांग को बढ़ाते हैं. पैदावार करने का सारा आधार रुपया कमाना है देश की सेवा करना नहीं है. जब यह भावना उभरती है तो समाज में बराबरी पैदा करने की सारी कोशिशें बेकार हो जाती हैं. हर चीज़ की क़द्रें गिर जाती है. इसके साथ ही साथ गांव और घरेलू धन्दे भी ख़तम होते हैं और इस तरह के अवसर बहुत कम हो जाते हैं कि आम लोग कोई काम कर सकें और फ़ायदा कमा सकें. शुरू में पढ़े लिखे लोग कुछ तकनीकी उद्योगों में काम करते थे. वह उद्योग यह थे: दियासलाई, साबुन, तेल और मिट्टी के तेल और पेट्रोल वग़ैरा के धन्दे. इनकी जगह 'हिमको', 'लीवर ब्रादर्स' और दूसरी बड़ी कम्पनियों ने ले ली है.

कुछ कारीगरों ने स्याही बनाना, फ़ाउन्टेन पैन की मरम्मत और रंग और वारनिश बनाना शुरू किया. बाहरी माल की होड़ यह नहीं कर पाए और मैदान से इन्हें हट जाना पड़ा. इसी तरह सीने की मशीन, बिजली के पंखे, बिजली के सामान, रेडियो, बरतन वग़ैरा बनाने के कुछ छोटे छोटे कारखाने देश में बढ़ने लगे थे. बाहरी माल के होड़ से यह बन्द हो गए या बुरी तरह से तबाह हैं. इसका

حل

اگر ہم واقعی چاہتے ہیں کہ دیش خوش حال ہو اور سب کو روزگار مل جائے تو ہمیں سارے دیش کے لئے ایک ایسا پروگرام بنانا پڑے گا جس کے ادھین پونجی کی پیداوار اُس کا بٹوارا اور سامان کی کھپت سبھی آ جائیں ۔ اِس طرح ہمیں اپنے اُدیوگی پلان، بیوپاری پالیسی اور داموں کا آدھار سب پر پھر سے سوچ وچار کرنا پڑے گا ۔ اگر ہم اِن میں نئی جان نہیں پھونک سکتے تو ہمیں باتوں میں اپنی طاقت نہ گنوانا چاہئے ۔

اُدیوگی پلان

پیداوار کے ڈھانچے کو ایسا بنانا پڑے گا کہ اُسمیں زیادہ سے زیادہ لوگ کام کر سکیں، اور پڑھے لکھوں کو بھی کام مل سکے ۔ یہ ڈھانچہ اِس آدھار پر کھڑا کیا جائے کہ پونجی کہیں سے نہیں مل سکتی ۔ اِسطرح کسان کھیتی سے پیداوار کرے گا اور گھریلو دھندے اُدیوگی سامان پیدا کریں گے ۔

پیداوار

جب سے ہمارے کسانوں نے غلہ پیدا کرنا تیاگ کر کارخانوں کے لئے کچا مال پیدا کرنا شروع کر دیا ہے تب سے ہمارے دیش میں کھانے کی بے حد کمی ہوگئی ہے ۔ اُدیوگی سامانوں کی ضرورت کو پورا کرنے کے بجائے کارخانے دار اشتہار دے دے کر غیر ضروری آوشیکتائیں پیدا کرتے ہیں اور اِسطرح غیر ضروری سامانوں کی مانگ کو بڑھاتے ہیں، پیداوار کرنے کا سارا آدھار روپیہ کمانا ہے دیش کی سیوا کرنا نہیں ہے ۔ جب یہ بھاونا اُبھرتی ہے تو سماج میں برابری پیدا کرنے کی ساری کوششیں بیکار ہو جاتی ہیں ۔ ہر چیز کی قدریں گر جاتی ہیں ۔ اِس کے ساتھ ہی ساتھ گاؤں اور گھریلو دھندے بھی ختم ہوتے ہیں اور اِسطرح کے اوسر بہت کم ہو جاتے ہیں کہ عام لوگ کوئی کام کر سکیں اور فائدہ کما سکیں ۔ شروع میں پڑھے لکھے لوگ کچھ تکنیکی اُدیوگوں میں کام کرتے تھے ۔ وہ اُدیوگ یہ تھے : دیاسلائی صابن، تیل اور مٹی کے تیل اور پٹرول وغیرہ کے دھندے پر اِن کی جگہ 'ہمکو' لیور برادرس' اور دوسری بڑی کمپنیوں نے لے لی ہے ۔

کچھ کاریگروں نے سیاہی بنانا، فاؤنٹین پن کی مرمت اور رنگ اور وارنش بنانا شروع کیا ۔ باہری مال کی ہوڑ یہ نہیں کر پائے اور میدان سے انہیں ہٹ جانا پڑا ۔ اِسی طرح سینے کی مشین، بجلی کے پنکھے، بجلی کے سامان، ریڈیو، برتن وغیرہ بنانے کے کچھ چھوٹے چھوٹے کارخانے دیش میں بڑھنے لگے تھے ۔ باہری مال کی ہوڑ سے یہ بند ہو گئے ہیں یا بری طرح سے تباہ ہیں ۔ اِسکا

रही है तब से हम दो वक्त की रोटी भी नहीं कमा पाते. ऐसी शान्ति से क्या फायदा ?" क्या यही दर्शन है जिसके दिखाए पथ पर हमारा देश चलेगा ? हम जानते हैं कि दुनिया के दूसरे कुछ हिस्से इस दर्शन को अपना चुके हैं. इस बात का दिमाग में आना ही कि लड़ाई से रोजगार मिलता है, इस बात को जाहिर करता है कि हमारा सारा ढांचा हिंसा पर टिका हुआ है. शान्ति के जमाने में जो भी पेशा हम करते हैं उनको फायदेमन्द बनाने के लिये अधिक मजदूरी मिलनी चाहिये. इस हल से फिर यह बात उठ खड़ी होती है कि चीजों के दाम बढ़ाए जायं.

मनुष्य शक्ति को इस्तेमाल में लाने की सारी बातें सिर्फ बकवास हैं जब तक वह परिस्थिति पैदा नहीं की जा सकती जिस की तरफ़ मनुष्य शक्ति खिंचती है. अगर आप चींटियों का जमघट करना चाहते हैं तो शहद बिखेरना पड़ेगा. अगर आप आदमियों में यह उत्साह पैदा करना चाहते हैं कि वह काम करें तो आपको ऐसी परिस्थिति पैदा करनी पड़ेगी कि वह काम कर सकें और उस काम के लिये उन्हें अच्छी उजरत देनी पड़ेगी. मशीन और उद्योगी केन्द्रीकरन के फैलाव के पीछे जब तक भी यह विचार काम करता है कि बाजार भाव सस्ता हो तब तक मनुष्य शक्ति काम से जी चुराएगी या बेकार रहेगी— लोग अपना जीवन तक बेचने को तैयार हैं बशरते कि आप उचित मावजा दें. भरती करने वाला हर सारजन्ट इस बात को स्वीकार करेगा ! इसी कारन से हमारा फ़ौजी बजट जो बहुत ही भारी है हंसी खुशी पास हो जाता है, पर हमारे उद्योगों के मजदूरों की मजदूरी बेहद कम है.

आजकल "घरेलू उद्योग को प्रोत्साहन" देने का शोर लगातार उठ रहा है. घरेलू उद्योग के सामानों की क्या जरूरत है जब कोई उन्हें खरीदता ही नहीं है. आजकल की जो दुर्दशा है उसमें ऐसे सामान पैदा करने वाला हमेशा भुक्कड़ रहेगा, इसकी गारन्टी है. मशीनी कारखानों में पैदावार अधिक मात्रा में की जाती है और माल सस्ता और स्टैंडर्ड होता है. यह माल घरेलू उद्योग के सामान को मैदान में टिकने नहीं देता. सरकार ने घरेलू उद्योग के सामान की एक नुमायश अभी मदरास में की थी. यह नुमायशें खास कर इस लिये की जाती हैं कि घरेलू धन्धों को बढ़ाया जाय और जनता में उनके लिये प्रेम पैदा किया जाय. पर इन नुमायशों में भी घरेलू धन्धों से होड़ करने वाले सामान जैसे लक्स सोप, फ्लेक्स शू, मिल के सूत का कपड़ा और सिलोलाइड और प्लास्टिक के सामान मौजूद रहते हैं. यह सब बेशरमाना बगला भगती है. इसका और कोई मतलब नहीं सिवाय इसके कि भोली भाली जनता को धोखा दिया जाय.

کئی ہے تب سے ہم دو وقت کی روٹی بھی نہیں کما پاتے . ایسی شانتی سے کیا فائدہ ؟" کیا یہی درشن ہے جس کے دکھائے پتھ پر ہمارا دیش چلے گا ؟ ہم جانتے ہیں کہ دنیا کے دوسرے کچھ حصے اس درشن کو اپنا چکے ہیں . اس بات کا دماغ میں آنا ہی کہ لڑائی سے روزگار ملتا ہے' اس بات کو ظاہر کرتا ہے کہ ہمارا سارا ڈھانچہ ہنسا پر ٹکا ہوا ہے . شانتی کے زمانے میں جو بھی پیشہ ہم کرتے ہیں اُن کو فائدے مند بنانے کے لئے ادھک مزدوری ملنی چاہئے . اس حل سے پھر یہ بات اُٹھ کھڑی ہوتی ہے کہ چیزوں کے دام بڑھائے جائیں .

منش شکتی کو استعمال میں لانے کی ساری باتیں صرف بکواس ہیں جب تک وہ پرستھتی پیدا نہیں کی جا سکتی جس کی طرف منش شکتی کھنچتی ہے . اگر آپ چیونٹیوں کا جمگھٹ کرنا چاہتے ہیں تو شہد بکھیرنا پڑے گا . اگر آپ آدمیوں میں یہ اُتساہ پیدا کرنا چاہتے ہیں کہ وہ کام کریں ، تو آپ کو ایسی پرستھتی پیدا کرنی پڑے گی کہ وہ کام کر سکیں اور اُس کام کے لئے انہیں اچھی اُجرت دینی پڑے گی . مشین اور اُدیوگی کیندری کرن کے پھیلاؤ کے پیچھے جب تک یہ وچار بھی کام کرتا ہے کہ بازار بھاؤ سستا ہو تب تک منش شکتی کام سے جی چرائے گی یا بیکار رہے گی . لوگ اپنا جیون تک بیچنے کو تیار ہیں بشرطیکہ آپ اُچت معاوضہ دیں . بھرتی کرنے والا ہر سارجنٹ اس بات کو سویکار کرے گا ! اسی کارن سے ہمارا فوجی بجٹ جو بہت ہی بھاری ہے ہنسی خوشی پاس ہو جاتا ہے' پر ہمارے اُدیوگوں کے مزدوروں کی مزدوری بے حد کم ہے .

آجکل " گھریلو اُدیوگ کو پروتساہن" دینے کا شور لگاتار اُٹھ رہا ہے . گھریلو اُدیوگ کے سامانوں کی کیا ضرورت ہے جب کوئی اُنہیں خریدتا ہی نہیں ہے . آج کل کی جو دردشا ہے اُس میں ایسے سامان پیدا کرنے والا ہمیشہ بھوکڑ رہے گا' اِسکی گارنٹی ہے . مشینی کارخانوں میں پیداوار ادھک ماترا میں کی جاتی ہے اور مال سستا اور اسٹینڈرڈ ہوتا ہے . یہ مال گھریلو اُدیوگ کے سامان کو میدان میں ٹکنے نہیں دیتا . سرکار نے گھریلو اُدیوگ کے سامان کی ایک نمائش ابھی مدراس میں کی تھی . یہ نمائشیں خاص کر اس لئے کی جاتی ہیں کہ گھریلو دھندوں کو بڑھایا جائے اور جنتا میں اُن کے لئے پریم پیدا کیا جائے . پر ان نمائشوں میں بھی گھریلو دھندوں سے ہوڑ کرنے والے سامان جیسے لکس سوپ' فلکس شو' مل کے سوت کا کپڑا اور سلولائیڈ اور پلاسٹک کے سامان موجود رہتے ہیں . یہ بے شرمانہ بگلا بھگتی ہے . اس کا اور کوئی مطلب نہیں سوائے اس کے کہ بھولی بھالی جنتا کو دھوکا کیا جائے .

क्या वह देश की सेवा कर रहे हैं या उन्हें इनामस्वरूप नौकरी मिल गई है? इस नौकरी का आधार उनकी अपनी सेवाओं पर नहीं है बल्कि उन सेवाओं पर है जो आज़ादी की लड़ाई के समय गांधी जी की अगवाई में समूची कांग्रेस पार्टी ने की थीं? अगर वज़ीर अपनी गद्दियों को सेवा के रूप में मानते हैं तो उन्हें शाहाना शान शौक़त को छोड़ कर इसे सिद्ध करना होगा.

अगर ऊपर वाले वज़ारत को देश सेवा का साधन समझते हैं तो नीचे वालों का सरकारी नौकरियों की तरफ़ खिंचना क़ुदरती है. क्या वह इनसान नहीं हैं? जिस तरह ऊपर वाले किसी तरफ़ खिंच सकते हैं, किसी चीज़ की तरफ़ उनका झुकाव हो सकता है उसी तरह नीचे वाले भी किसी तरफ़ खिंच सकते हैं या किसी चीज़ की तरफ़ उनका झुकाव हो सकता है.

जो लोग पिसे हुए हैं उन्हें "मेहनत करने के आदर भाव" का वाज़ देने से कुछ हासिल नहीं हो सकता. मोची को पन्द्रह सौ रुपया महीना देना शुरू कर दीजिये और आप देखेंगे कि ऊंची ज़ात वाले उस जगह को अपनाने की कोशिश में एक दूसरे को पीछे छोड़ देंगे. दामों को मुक़र्रर करने का जो ढांचा आज हमारे देश में है उसका यही कमाल है. पढ़े लिखे नौजवान गांवों में जायं, इस बात की चर्चा ही बेकार है. उस वक़्त तक यह बेकार है जब तक हम नौजवानों को इसके सिवा कुछ नहीं दे सकते कि वह गांवों में जा कर आधे पेट रहें, मेहनत करें पर उनका अपना खेत कोई न हो. इसका हल यह है कि खेती की पैदावार का दाम बढ़ाया जाय और बिचौलिये ख़तम कर दिये जायं ताकि किसान को अपने माल की अच्छी क़ीमत मिल सके.

इन समस्याओं पर ध्यान दिये बग़ैर 'पूंजी के बराबर बंटवारे" का उपदेश देना बिलकुल बेवक़ूफ़ी है. जब तक हम हज़ारों की तनख़ाहें मार रहे हैं उस वक़्त तक इस बात का कोई असर नहीं होने का. क्या यह उपदेशक अपने उपदेशों पर ख़ुद अमल करने को तैयार हैं?

ऐसी परिस्थिति में टैक्स बढ़ाना, लेवी लगाना और करनसी नोट छाप कर सरकारी आमदनी बढ़ाना वग़ैरा ज़ख़म पर नमक छिड़कना है. आख़िरी सुझाव यह ज़ाहिर करते हैं कि हाल में नोट बढ़ोती का जो कड़वा तजरबा हमें हुआ है उसकी याद कितनी जल्दी हमारे दिमाग़ से मिट गई.

एक बार मैं शान्ति की आवश्यकता पर जबलपुर में बोल रहा था. हथियार के कारख़ाने के एक मज़दूर ने मुझसे पूछा: "जनाब जब लड़ाई हो रही थी तब हमको अच्छी मज़दूरी मिलती थी लेकिन जब से शान्ति हो

کیا وہ دیش کی سیوا کر رہے ہیں یا انہیں انعام کے طور پر نوکری مل گئی ہے؟ اس نوکری کا آدھار ان کی اپنی سیواؤں پر نہیں بلکہ ان سیواؤں پر ہے جو آزادی کی لڑائی کے سمے گاندھی جی کی اگوائی میں کانگریس پارٹی نے کی تھیں؟ اگر وزیر اپنی گدیوں کو سیوا کی روپ میں مانتے ہیں تو انہیں شاہانہ شان شوکت کو چھوڑ کر اسے سدھ کرنا ہوگا۔

اگر اوپر والے وزارت کو دیش سیوا کا سادھن سمجھتے ہیں تو نیچے والوں کا سرکاری نوکریوں کی طرف کھنچنا قدرتی ہے۔ کیا وہ انسان نہیں ہیں؟ جس طرح اوپر والے کسی طرف کھنچ سکتے ہیں، کسی چیز کی طرف ان کا جھکاؤ ہو سکتا ہے اسی طرح نیچے والے بھی کسی طرف کھنچ سکتے ہیں یا کسی چیز کی طرف ان کا جھکاؤ ہو سکتا ہے۔

جو لوگ پسے ہوئے ہیں انہیں "محنت کرنے کے آدر بھاؤ" کا وعظ دینے سے کچھ حاصل نہیں ہو سکتا۔ موچی کو پندرہ سو روپیہ مہینہ دینا شروع کر دیجئے اور آپ دیکھیں گے کہ اونچی ذات والے اس جگہ کو اپنانے کی کوشش میں ایک دوسرے کو پیچھے چھوڑ دیں گے۔ داموں کو مقرر کرنے کا جو ڈھانچہ آج ہمارے دیش میں ہے اس کا یہی کمال ہے۔ پڑھے لکھے نوجوان گاؤں میں جائیں، اس بات کی چرچا ہی بیکار ہے۔ اس وقت تک یہ بیکار ہے جب تک ہم نوجوانوں کو اس کے سوا کچھ نہیں دے سکتے کہ وہ گاؤں میں جا کر آدھے پیٹ رہیں، محنت کریں پر ان کا اپنا کھیت کوئی نہ ہو۔ اس کا حل یہ ہے کہ کھیتی کی پیداوار کے دام بڑھا دیئے جائیں اور بچولئے ختم کر دیئے جائیں تاکہ کسان کو اپنے مال کی اچھی قیمت مل سکے۔

ان سمسیاؤں پر دھیان دیئے بغیر "پونجی کے برابر بٹوارے" کا اپدیش دینا بالکل بیوقوفی ہے۔ جب تک ہم ہزاروں کی تنخواہیں مار رہے ہیں اس وقت تک اس بات کا کوئی اثر نہیں ہونے کا۔ کیا یہ اپدیشک اپنے اپدیشوں پر خود عمل کرنے کو تیار ہیں؟

ایسی پرستھتی میں ٹیکس بڑھانا، لیوی لگانا اور کرنسی نوٹ چھاپ کر سرکاری آمدنی بڑھانا وغیرہ زخم پر نمک چھڑکنا ہے۔ آخری سجھاؤ یہ ظاہر کرتے ہیں کہ حال میں نوٹ بڑھوتی کا جو کڑوا تجربہ ہمیں ہوا ہے اس کی یاد کتنی جلدی ہمارے دماغ سے مٹ گئی۔

ایک بار میں شانتی کی آوشیکتا پر جبل پور میں بول رہا تھا۔ ہتھیار کے کارخانے کے ایک مزدور نے مجھ سے پوچھا: "جناب جب لڑائی ہو رہی تھی تب ہم کو اچھی مزدوری ملتی تھی لیکن جب سے شانتی ہو

[illegible]. अगर यह सरकार जिसके जवाहरलाल जी नेता हैं ऐसी परिस्थिति पैदा नहीं करती जिसमें कि रोज़गार के दूसरे साधन पैदा हो सकें तो इस सुझाव का कोई नतीजा निकलने वाला नहीं.

प्लानिंग वज़ीर श्री गुलज़ारीलाल नन्दा ने बेरोज़गारी के कारनों पर जो विचार ज़ाहिर किये हैं वह बिलकुल ऊपरी हैं. आबादी की बढ़ोती से वह नालां हैं. उनका कहना है कि विकास योजनाओं के लिये जो सरकारी फंड है वह ढंग से खर्च नहीं किया गया. उनका ख़याल है कि जनता की ख़रीदने की ताक़त छिपटी हुई है. वह सोचते हैं कि रक़म बचाने की आदत लोगों में नहीं है. वह कहते हैं कि आज कल का तालीमी ढांचा किसी के पेशे से मेल नहीं खाता. उसी तरह की और बातें वह कहते हैं. ऐसे विचार ज़ाहिर कर के इस बात की कोशिश की जाती है कि छोटे मोटे कारनों पर जनता का ध्यान जम जाय और उन बड़े बड़े कारनों की तरफ़ उसका ध्यान न जा पाए जिसमें सरकार फंसी हुई है.

इसी तरह दूसरों ने लड़ाई के वातावरन के ख़ातमे पर बेरोज़गारी की ज़िम्मेदारी डाली है और कहा है कि शान्ति के आने से बेरोज़गारी फैलेगी. बेरोज़गारी की मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये बहुत ही सतही सुझाव रखे गए हैं. "आम आदमी को सुखी और खुशहाल बनाने के लिये" जवाहरलाल जी ने एक सुन्दर विचार ज़ाहिर किया है और उनकी इच्छा है इस तरह योजना बनाई जाय कि सब को रोज़गार मिल सके. दूसरों का ख़याल है कि मनुष्य शक्ति को काम में लाया जाय. घरेलू उद्योग और छोटे छोटे कारख़ानों के उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाय. हमारी ख़्वाहिश है कि यह विचार क़ायम रहें और अमल में लाए जायं. कभी कभी यह जो तितर बितर विचार उठ खड़े होते हैं उनसे यह पता तो ज़रूर चलता है कि सब कुछ हज़म कर जाने वाली राजकाजी गुटबन्दी से फ़ुरसत पा कर हमारे नेता आम जनता की समस्याओं पर भी सोच विचार कर लेते हैं. लेकिन अफ़सोस है कि आज की परिस्थिति को सुधारने के लिये इनके इरादों में कोई मज़बूती दिखाई नहीं पड़ती. ऐसे ऊंचे भाव दादाभाई नौरोजी के समय से पहले से ज़ाहिर किये जाते रहे हैं. सवाल उठता है कि हम क्या करें? हमें बातें करना बन्द कर देना चाहिये और काम में जुट जाना चाहिये.

अगर लोग सरकारी नौकरी पाने के इच्छुक हैं तो उसका मतलब यह नहीं है कि इस राष्ट्रीय सेवा से उन्हें कोई ख़ास लगाव है. इसका कारन यह है सरकारी नौकरी में तनख़ाह ज़ियादा मिलती है, नौकरी सुरक्षित रहती है और कम से कम शक्ति खपानी पड़ती है. यह ऐसा कड़वा सच है कि इसका अमीरों को भी सामना करना पड़ता है.

[illegible] انکلتی ۔ اگر وہ سرکار جس کے جواہرلال جی نیتا ہیں ایسی پرستھتی پیدا نہیں کرتی جس میں کہ روزگار کے دوسرے سادھن پیدا ہوسکیں تو اس سجھاؤ کا کوئی نتیجہ نکلنے والا نہیں ہے ۔

پلاننگ وزیر شری گلزاری لال نندا نے بیروزگاری کے کارنوں پر جو وچار ظاہر کئے ہیں وہ بالکل اوپری ہیں ۔ آبادی کی بڑھوتی سے وہ نالاں ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ وکاس یوجناؤں کے لئے جو سرکاری فنڈ ہے وہ ڈھنگ سے خرچ نہیں کیا گیا ۔ اُن کا خیال ہے کہ جنتا کی خریدنے کی طاقت چھدری ہوئی ہے ۔ وہ سوچتے ہیں کہ رقم بچانے کی عادت لوگوں میں نہیں ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ آجکل کا تعلیمی ڈھانچہ کسی کے پیشے سے میل نہیں کھاتا ۔ اسی طرح کی اور باتیں وہ کہتے ہیں ۔ ایسے وچار ظاہر کرکے اس بات کی کوشش کی جاتی ہے کہ چھوٹے موٹے کارنوں پر جنتا کا دھیان جم جائے اور اُن بڑے بڑے کارنوں کی طرف اُس کا دھیان نہ جا پائے جس میں سرکار پھنسی ہوئی ہے ۔

اسی طرح دوسروں نے لڑائی کے واتاورن کے خاتمے پر بیروزگاری کی ذمہ داری ڈالی ہے اور کہا ہے کہ شانتی کے آنے سے بیروزگاری پھیلے گی۔ بیروزگاری کی مصیبت سے چھٹکارا پانے کے لئے بہت ہی سطحی سجھاؤ رکھے گئے ہیں۔ "عام آدمی کو سکھی اور خوشحال بنانے کے لئے" جواہر لال جی نے ایک سندر وچار ظاہر کیا ہے اور اُنکی اِچھا ہے کہ اس طرح یوجنا بنائی جائے کہ سب کو روزگار مل سکے۔ دوسروں کا خیال ہے کہ منش شکتی کو کام میں لیا جائے، گھریلو اُدیوگ اور چھوٹے چھوٹے کارخانوں کے اُدیوگوں کو پروتساہن دیا جائے۔ ہماری خواہش ہے کہ یہ وچار قائم رہیں اور عمل میں لائے جائیں۔ کبھی کبھی یہ جو تتربتر وچار اُٹھ کھڑے ہوتے ہیں اُن سے یہ پتہ تو ضرور چلتا ہے کہ سب کچھ ہضم کر جانے والی راج کاجی گٹ بندی سے فرصت پاکر ہمارے نیتا عام جنتا کی سمسیاؤں پر بھی سوچ وچار کرلیتے ہیں ۔ لیکن افسوس ہے کہ آجکی پرستھتی کو سدھارنے کے لئے اِن کے اِرادوں میں کوئی مضبوطی دکھائی نہیں پڑتی ۔ ایسے اونچے بھاؤ دادا بھائی نوروجی کے سمے سے پہلے سے ظاہر کئے جاتے رہے ہیں۔ سوال اُٹھتا ہے کہ ہم کیا کریں ؟ ہمیں باتیں کرنا بند کردینا چاہئے اور کام میں جٹ جانا چاہئے ۔

اگر لوگ سرکاری نوکری پانے کے اچھک ہیں ،تو اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ اس راشٹری سیوا سے اُنہیں کوئی خاص لگاؤ ہے ۔ اس کا کارن یہ ہے کہ سرکاری نوکری میں تنخواہ زیادہ ملتی ہے، نوکری سرکشت رہتی ہے، اور کم سے کم شکتی کھپانی پڑتی ہے ۔ یہ ایسا کڑوا سچ ہے کہ اِسکا رئیسوں کو بھی سامنا کرنا پڑتا ہے ۔

सकते हैं कि उसके पढ़ने में देवनागरी के मुकाबले में आधा वक्त खर्च हो. जिसके मानी यह हुए कि हम आसानी से अपने देस की इलमी उमर को दुगना कर सकते हैं या यूं कहो कि जिससे हमारे देस में इल्म दुगना फैले. पर ऐसी लिपि बनाने के लिये ज़रूरत है जांच, पड़ताल, खोज की हमारी सरकार ने और साइन्सोंकी खोज के लिये हाल ही में दस ग्यारह कमेटियां बनाई हैं. काश हमारी सरकार इस लिपि की साइन्स की तरफ़ भी ध्यान दे और एक ऐसी साइन्सदानों की कमेटी मुक़र्रर करे जो हमारे लिये ऐसी लिपि बनाए जिससे हमारी इलमी उमर दुगनी नहीं तो कम से कम ड्योढ़ी हो जाय. शायद यह मेरा ख़याल ग़लत न हो कि जितना फ़ायदा हमारे देस को ऐसी लिपि कमेटी से हो सकता है और किसी मौजूदा साइन्स कमेटी से उम्मीद नहीं किया जा सकता.

سکتے ھیں کہ اس کے پڑھنے میں دیوناگری کے مقابلہ میں آدھا وقت خرچ ھو. جس کے معنی یہ ھوئے کہ ھم آسانی سے اپنے دیس کی علمی عمر کو دوگنا کر سکتے ھیں یا یوں کہو کہ جس سے ھمارے دیس میں علم دوگنا پھیلے. پر ایسی لپی بنانے کے لئے ضرورت ھے جانچ' پڑتال' کھوج کی. ھماری سرکار نے اور سائنسوں کی کھوج کے لئے حال ھی میں دس گیارہ کمیٹیاں بنائی ھیں. کاش ھماری سرکار اس لپی کی سائنس کی طرف بھی دھیان دے اور ایک ایسی سائنس دانوں کی کمیٹی مقرر کرے جو ھمارے لئے ایسی لپی بنائے جس سے ھماری علمی عمر دگنی نہیں تو کم سے کم ڈیوڑھی ھو جائے. شاید یہ میرا خیال غلط نہ ھو کہ جتنا فائدہ ھمارے دیس کو ایسی لپی کمیٹی سے ھو سکتا ھے اور کسی موجودہ سائنس کمیٹی سے امید نہیں کیا جا سکتا.

बे रोज़गारी और स्वदेशी

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

अभी हाल में आल इंडिया कांगरेस कमेटी की जो बैठक आगरे में हुई थी उसमें बे रोज़गारी और स्वदेशी पर एक ठहराव पास किया गया है. इसके लिये आल इंडिया कमेटी को बधाई मिलनी चाहिये. हम आशा करते हैं कि इस ठहराव पर गंभीरता से विचार किया जायगा और सरकार जिसके सर्वेसर्वा कांगरेस के ही सदर हैं इसको अमल में लाएगी. जलसे के बाहर और उसके अन्दर जो तक़रीरें हुई हैं उनमें पिटे पिटाए वाक्यों का इस्तेमाल हुआ है. वह यह हैं : "रहने सहने के स्तर को ऊंचा उठाना," "ग़रीबी को ख़तम करना," "राष्ट्री पूंजी को बढ़ाना" और "पूंजी का बराबर बंटवारा" वग़ैरा वग़ैरा. इस तरह की पवित्र बातें सुनते सुनते हम थकता गए हैं. आज जो कुछ हमें चाहिये वह यह है कि इन विचारों का कुछ अमली नतीजा निकले.

जवाहरलाल जी इस बात को बुरा समझते हैं कि लोग सरकारी नौकरियों की इच्छा करें. उनका सुझाव है कि रोज़गार के दूसरे साधन पैदा किये जावें. यह बहुत ही अच्छा सुझाव है पर न यह कोई अछूता विचार है और न

بیروزگاری اور سودیشی

(ڈاکٹر جے. سی. کماریپا)

ابھی حال میں آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی جو بیٹھک آگرہ میں ھوئی تھی اس میں بیروزگاری اور سودیشی پر ایک ٹھہراؤ پاس کیا گیا ھے. اس کے لئے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کو بدھائی ملنی چاھئے. ھم آشا کرتے ھیں کہ اس ٹھہراؤ پر گمبھیرتا سے وچار کیا جائے گا اور سرکار جس کے سروے سروا کانگریس کے ھی صدر ھیں اس کو عمل میں لائے گی. جلسے کے باھر اور اس کے اندر جو تقریریں ھوئی ھیں ان میں پٹے پٹائے واکیوں کا استعمال ھوا ھے. وہ یہ ھیں : "رھنے سھنے کے استر کو اونچا اٹھانا" "غریبی کو ختم کرنا." "راشٹری پونجی کو بڑھانا" اور "پونجی کا برابر بٹوارہ" وغیرہ وغیرہ. اس طرح کی پوتر باتیں سنتے سنتے ھم اکتا گئے ھیں. آج جو کچھ ھمیں چاھئے وہ یہ ھے کہ ان وچاروں کا کچھ عملی نتیجہ نکلے.

جواھر لال جی اس بات کو برا سمجھتے ھیں کہ لوگ سرکاری نوکریوں کی اچھا کریں. ان کا سجھاؤ ھے کہ روزگار کے دوسرے سادھن پیدا کئے جائیں. یہ بہت ھی اچھا سجھاؤ ھے پر نہ یہ کوئی انوکھا وچار ھے اور نہ

अंगरेज़ी लिपि बीस की सदी जल्द पढ़ सकते हैं और उन्हें जिन्होंने कभी उरदू लिपि सीखी थी वह भी आज की सदी नहीं तो कम से कम तीस की सदी उरदू लिपि देव नागरी से जल्द पढ़ सकते हैं. इनमें से जिसे मेरी बात में शक हो, चाहिये कि आप अपना इम्तहान ले ले.

इस में तो शक की गुंजायश नहीं कि जो लिपि जल्दी पढ़ी जा सकती है उस में पढ़ाई ज़ियादा हो सकती है. अगर पच्चीस की सदी का फ़रक़ हो तो जो तालीम स्कूल में देव नागरी में चार बरस में दी जाती है वह दूसरी लिपि में तीन बरस में बच्चा हासिल कर लेगा. अगर बीस की सदी का फ़रक़ हो तो देवनागरी के पांच बरस बराबर होते हैं दूसरी लिपि के चार बरस के. स्कूल में ही नहीं सारी उम्र भर यह फ़र्क़ रहेगा. पचास बरस की उमर तक जो एक देव नागरी में पढ़ेगा दूसरा चालीस बरस की उमर में इतना इल्म हासिल कर लेगा. वह ज़माना लद गया जब हिन्दुस्तान एक अलग थलग मुल्क था जिसे दुनिया के और मुलकों से कुछ वास्ता न था. आज कल हमारा दुनिया की सब क़ौमों से मुक़ाबला है. इस देवनागरी के बिरते पर हम कैसे मुक़ाबला कर सकते हैं जब तक हमें देवनागरी के मंहगे पढ़ने का इल्म न था तब तक अपनी पुरानी लिपि समझ कर उसको सराहना बुरा न था. अब जब कि यह बात साफ़ दिखाई देती है कि देवनागरी हर तरह से मंहगा और घाटे का सौदा है उसको वही सराह सकता है जो देस का दुशमन हो चाहे वह अपने आपको कांगरेसी ही नहीं देस भक्त कहता हो.

देवनागरी से तो गुजराती और बंगाली लिपि सस्ती हैं और इनसे भी ज़ियादा तामिल लिपि. लेकिन उरदू और रोमन के मुक़ाबले में वह भी बहुत मंहगी पड़ती हैं. इस से यह न समझना चाहिये कि मैं उरदू लिपि या आजकल की अंगरेज़ी रोमन के हक़ में हूं. मेरी राय में उरदू का बड़ा भारी नुक़्स यह है कि इसके हिज्जे बे असूल होने की वजह से उरदू अच्छी तरह सीखने में देवनागरी या रोमन के मुक़ाबले में शुरू में दो बरस ज़ियादा लगते हैं. किसी क़ौम के लिये बचपन के दो बरस ज़ाया करने एक बहुत भारी क़ुरबानी है लेकिन फिर भी क़ौम की सारी उमर का चौथाई या पांचवा हिस्सा क़ुरबान करने से बहुत कम. रोमन लिपि जो अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी के लिये बनाई है वह कुछ ठीक नहीं जंचती. लेकिन इसे ठीक करना कुछ मुशकिल काम नहीं मालूम होता.

अंगरेज़ी में कुछ ऐसी किताबें हैं जिनमें किसी लिपि की अच्छाई या बुराई जांचने के असूल दर्ज हैं. इन असूलों के मुताबिक़ अगर कोई लिपि बनाई जाय जो हमारी बोली के मुताबिक़ हो तो बहुत अच्छा हो. मेरे ख़याल में रोमन ही एक ऐसी लिपि है जिस को हम इतना आसान बना

انگریزی لپی بیس فیصدی جلد پڑھ سکتے ہیں اور انہیں جنہوں نے کبھی اردو لپی سیکھی لی وہ بھی آج پچاس فیصدی نہیں تو کم سے کم تیس فیصدی اردو لپی دیوناگری سے جلد پڑھ سکتے ہیں۔ ان میں سے جسے میری بات میں شک ہو چاہئے کہ آپ اپنا امتحان لے لے۔

اس میں تو شک کی گنجائش نہیں کہ جو لپی جلدی پڑھی جا سکتی ہے اس میں پڑھائی زیادہ ہو سکتی ہے۔ اگر پچیس فیصدی کا فرق ہو تو جو تعلیم اسکول میں دیوناگری میں چار برس میں دی جاتی ہے وہ دوسری لپی میں تین برس میں بچہ حاصل کر لے گا۔ اگر بیس فیصدی کا فرق ہو تو دیوناگری کے پانچ برس برابر ہوتے ہیں دوسری لپی کے چار برس کے۔ اسکول میں ہی نہیں ساری عمر بھر یہ فرق رہے گا۔ پچاس برس کی عمر تک جو ایک دیوناگری میں پڑھے گا دوسرا چالیس برس کی عمر میں اتنا علم حاصل کر لے گا۔ وہ زمانہ لد گیا جب ہندستان ایک الگ تھلگ ملک تھا۔ جسے دنیا کے اور ملکوں سے کچھ واسطہ نہ تھا۔ آج کل ہمارا دنیا کی سب قوموں سے مقابلہ ہے۔ اس دیوناگری کے برتے پر ہم کیسے مقابلہ کر سکتے ہیں جب تک ہمیں دیوناگری کے مہنگے پڑنے کا علم نہ تھا تب تک اپنی پرانی لپی سمجھ کر اس کا سراہنا برا نہ تھا۔ اب جب کہ یہ بات صاف دکھائی دیتی ہے کہ دیوناگری ہر طرح سے مہنگا اور گھاٹے کا سودا ہے اس کو وہی سراہ سکتا ہے جو دیس کا دشمن ہو چاہے وہ اپنے آپ کو کانگریسی ہی نہیں دیس بھگت کہتا ہو۔

دیوناگری سے تو گجراتی اور بنگالی لپی سستی ہیں اور ان سے بھی زیادہ تامل لپی۔ لیکن اردو اور رومن کے مقابلہ میں وہ بھی بہت مہنگی پڑتی ہیں۔ اس سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ میں اردو لپی یا آجکل کی انگریزی رومن کے حق میں ہوں۔ میری رائے میں اردو کا بڑا بھاری نقص یہ ہے کہ اس کے ہجے بے اصول ہونے کی وجہ سے اردو اچھی طرح سیکھنے میں دیوناگری یا رومن کے مقابلہ میں شروع میں دو برس زیادہ لگتے ہیں۔ کسی قوم کے لئے بچوں کے دو برس ضائع کرنے ایک بہت بھاری قربانی ہے لیکن پھر بھی قوم کی ساری عمر کا چوتھائی یا پانچواں حصہ قربانی کرنے سے بہت کم۔ رومن لپی جو انگریزوں نے ہندستانی کے لئے بنائی ہے وہ کچھ ٹھیک نہیں جچتی لیکن اسے ٹھیک کرنا کچھ مشکل کام نہیں معلوم ہوتا۔

انگریزی میں کچھ ایسی کتابیں ہیں جن میں کسی لپی کی اچھائی یا برائی جانچنے کے اصول درج ہیں۔ ان اصولوں کے مطابق اگر کوئی لپی بنائی جائے جو ہماری بولی کے موافق ہو تو بہت اچھا ہو۔ میرے خیال میں رومن ہی ایک ایسی لپی ہے جس کو ہم اتنا آسان بنا

अपने दोस्तों का इम्तहान लिया और यह बात सोलह आने पूरी सच्ची मालूम दी. लेकिन इसकी वजह न सूझी. अंगरेजी में लिपियों पर और छापे पर कुछ किताबें मिलीं. उनके पढ़ने से वजह तो कुछ मालूम हुई लेकिन दिल को तसल्ली न हुई. मुमकिन है कि मेरी और मेरे दोस्तों की तालीम में ही कुछ नुक़्स हो या हमारी आंखों में ही नुक़्स हो. यह तो साफ़ है कि जिस लिपि के पढ़ने की ज़ियादा मश्क़ हो वह जल्दी पढ़ी जाती है. ऐसे आदमी कहां से ढूंढें जायं जिन्हें दो तीन लिपियों के पढ़ने की बराबर मश्क़ हो. और फिर मैं बूढ़ा आदमी किस किस के घर जाऊं. किस किस की मिन्नत करूं. सोच सोच के यह फ़ैसला किया कि यह काम असल में तालीम के महकमे का है. उनका यह फ़र्ज़ है कि वह इस बात का पूरा पता लगायें. उनके पास इसकी पूरी जांच परताल करने के लिये हज़ार आसानियां हैं जो किसी निजी आदमी को मैयस्सर नहीं हो सकतीं. लिहाज़ा मैंने एक लम्बी चिट्ठी लिखी जिस में जहां तक मुझ से हो सकता था मैंने अपनी तकलीफ़ और ख़याल को ज़ाहिर किया और प्रार्थना कि वह इस बात की पूरी पूरी जांच करें क्योंकि जहां तक मेरी समझ थी देव नागरी से पेचीदा और ज़ियादा वक़्त लेने वाली और कोई लिपि नहीं और इसलिये इसके अपनाने से देस की आने वाली सभ्यता और ख़ुशहाली पर बहुत बुरा असर पड़ेगा. डेढ़ सौ कापी इस चिट्ठी की देस के हर सूबे के गवरनर, बड़े वज़ीर, शिक्षा वज़ीर, डायरेक्टर, हर यूनिवरसिटी के चांसलर और वाइस चांसलर और कुछ कालिज के प्रिंसपलों और प्रोफ़ेसरों को भेजी गई. लेकिन वाहरी हमारे देस की सभ्यता और हकूमत का नशा कि बावजूद मेरी बेहद ख़ुशामद और लजाहत के इन डेढ़ सौ ऊंचे अफ़सरों में सिर्फ़ दो ने चिट्ठी की रसीद दी और वह भी कोरी रसीद. किसी न मेरी प्रार्थना सुनी और न देस की सभ्यता और ख़ुशहाली का ख़याल किया.

चूंकि उत्तर प्रदेश देव नागरी पर बहुत ज़ोर देता है इसलिये मैंने कम से कम पचास चिट्ठियां यू. पी. के तालीमी अफ़सरों जिनमें हिन्दी अंगरेज़ी संस्कृत के प्रोफ़ेसर ख़ास शामिल थे भेजीं. ताकि अगर मेरा ख़याल ग़लत है तो वह आसानी से मेरे ख़याल को दुरुस्त कर सकें. लेकिन यू. पी. का बाबा आदम ही निराला मालूम होता है. मजाल है कि किसी के कान पर जूं तक रेंगी हो. और यह चिट्ठी तो भेजी गई थी अगस्त सन 1952 में. इस के बाद मैंने ख़ुद बहुत कुछ देख भाल की और अब मैं डंके की चोट कह सकता हूं कि जितने देव नागरी के बड़े बड़े ढंढोर जी यानी यू. पी. के वज़ीर, कांगरेस प्रधान, गवरनर, जज, यूनिवरसिटियों के चांसलर, वाइस चांसलर, प्रोफ़ेसर, तालीम के डायरेक्टर, स्कूलों के इंस्पेक्टर हैं यह सब देव नागरी से

لو دوستوں کا امتحان لیا اور یہ بات سولہ آنے پوری سچی معلوم دی ۔ لیکن اسکی وجہ نہ سوجھی ۔ انگریزی میں لپیوں پر اور چھاپے پر کچھ کتابیں ملیں ۔ ان کے پڑھنے سے وجہ تو کچھ معلوم ہوئی لیکن دل کی تسلی نہ ہوئی ۔ ممکن ہے کہ میری اور میرے دوستوں کی تعلیم میں ہی کچھ نقص ہو یا ہماری آنکھ میں ہی نقص ہو ۔ یہ تو صاف ہے کہ جس لپی کے پڑھنے کی زیادہ مشق ہو وہ جلدی پڑھی جاتی ہے ۔ ایسے آدمی کہاں سے ڈھونڈھے جائیں جنھیں دو تین لپیوں کے پڑھنے کی برابر مشق ہو ۔ اور پھر میں بوڑھا آدمی کس کس کے گھر جاؤں ۔ کس کس کی منت کروں ۔ سوچ سوچ کے یہ فیصلہ کیا کہ یہ کام اصل میں تعلیم کے محکمہ کا ہے ۔ ان کا یہ فرض ہے کہ وہ اس بات کا پورا پتہ لگائیں ۔ ان کے پاس اسکی پوری جانچ پڑتال کرنے کے لئے ہزار آسانیاں ہیں جو کسی نجی آدمی کو میسر نہیں ہو سکتیں ۔ لہذا میں نے ایک لمبی چٹھی لکھی جس میں جہاں تک مجھ سے ہو سکتا تھا میں نے اپنی تکلیف اور خیال کو ظاہر کیا اور پرارتھنا کی کہ وہ اس بات کی پوری پوری جانچ کریں کیونکہ جہاں تک میری سمجھ تھی دیوناگری سے پیچیدہ اور زیادہ وقت لینے والی اور کوئی لپی نہیں اور اس لئے اس کے اپنانے سے دیس کی آنے والی سبھیتا اور خوشحالی پر بہت برا اثر پڑے گا ۔ ڈیڑھ سو کاپی اس چٹھی کی دیس کے ہر صوبے کے گورنر، بڑے وزیر، شکشا وزیر، ڈائرکٹر، ہر یونیورسٹی کے چانسلر اور وائس چانسلر اور کچھ کالجوں کے پرنسپلوں اور پروفیسروں کو بھیجی گئیں لیکن واہ رے ہماری دیس کی سبھیتا اور حکومت کا نشہ کہ باوجود میری از حد خوشامد اور لجاجت کے ان ڈیڑھ سو اونچے افسروں میں صرف دو نے چٹھی کی رسید دی اور وہ بھی کوری رسید ۔ کسی نے نہ میری پرارتھنا سنی اور نہ دیس کی سبھیتا اور خوشحالی کا خیال کیا ۔

چونکہ اتر پردیش دیوناگری پر بہت زور دیتا ہے اس لئے میں نے کم سے کم پچاس چٹھیاں یو ۔ پی ۔ کے تعلیمی افسروں جن میں ہندی انگریزی سنسکرت کے پروفیسر خاص شامل تھے بھیجیں ۔ تاکہ اگر میرا خیال غلط ہے تو وہ آسانی سے میرے خیال کو درست کر سکیں ۔ لیکن یو ۔ پی ۔ کا باوا آدم ہی نرالا معلوم ہوتا ہے ۔ مجال ہے کہ کسی کے کان پر جوں تک رینگی ہو ۔ خیر یہ چٹھی تو بھیجی گئی تھی اگست سن 1952 میں ۔ اس کے بعد میں نے خود بہت کچھ دیکھ بھال کی اور اب میں ڈنکے کی چوٹ کہ سکتا ہوں کہ جتنے دیوناگری کے بڑے بڑے ڈھنڈھورچی یعنی یو ۔ پی ۔ کے وزیر، کانگریس پردھان، گورنر، جج، یونیورسٹیوں کے چانسلر، وائس چانسلر، پروفیسر، تعلیم کے ڈائرکٹر، سکولوں کے انسپکٹر ہیں یہ سب دیوناگری سے

लफ़्ज़ों की गिनती और ज़ियादा हो सकती थी. यह भी ज़ाहिर है कि अंगरेज़ी के हिज्जे फ़िज़ूल लम्बे हैं. मसलन are, were की आख़री e फ़ज़ूल. Bought के छै हरफ़ों की जगह bot तीन हरफ़ काफ़ी थे हिसाब लगाने वालों ने हिसाब लगाया है कि अंगरेज़ी की इबारत में 1/7 हरफ़ फ़ज़ूल दिखावे के हैं. यानी 13 फ़ी सदी आसानी से कम किये जा सकते हैं. अगर चाहो तो तुम भी इस हिसाब को परख सकते हो. अंगरेज़ी की कोई इबारत ले लो, इसके हरफ़ गिन लो और उसमें फ़ज़ूल हरफ़ों को भी गिन लो. यह 13 फ़ी सदी का तख़मीना बहुत कुछ दुरुस्त ही पाओगे.

हिन्दी 'हिन्दुस्तान' और अंगरेज़ी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' दोनों दिल्ली की एक ही कम्पनी के अख़बार हैं और एक ही छापाख़ाने में छपते हैं. हिन्दी के 132 लफ़्ज़ों की जगह अंगरेज़ी हिन्दुस्तान में 228 लफ़्ज़ छपते हैं. अगर इन 228 में 228 का 1/7 और जोड़ा जाय तो 260 हो जाते हैं और यह 260 हिन्दी 132 के दुगने से ज़रा ही कम होते हैं. सोचो तो सही कि अगर हम देवनागरी की जगह किसी तरह रोमन लिपि या इस जैसी कोई और छोटी लिपि तजवीज़ कर लें तो आसानी से हिन्दी किताबों और अख़बारों की क़ीमत आधी रह जाय. यहां यह जता देना ज़रूरी है कि रोमन लिपि को और भी छटाया और हिन्दी के मुनासिब बनाया जा सकता है. अगर कोई ज़रा भी इस तरफ़ ध्यान दे.

स्कूल की फ़ीसों के अलावा आज कल पढ़ाई में किताबों और कापियों का ख़र्च ही मान नहीं. आज कल तो ख़ैर पढ़ाई कुछ अंगरेज़ी, कुछ हिन्दी और कुछ उरदू में होती है. अब हमारी सरकार के ख़ैरख़्वाह चाहते हैं कि आइन्दा सारी पढ़ाई लिखाई देवनागरी में हो. इसका नतीजा साफ़ है. जो किताबें आज कल अंगरेज़ी या उरदू में पढ़ाई जाती हैं वह भी देवनागरी में छपेंगी और इसलिये उनकी क़ीमत दुगनी हो जायगी और कापियां भी दुगनी बरती जायंगी. अब रहा यह सवाल कि हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब मुल्क में पढ़ाई लिखाई का ख़र्च बढ़ाना कहां तक मुनासिब है उन ग़रीबों से पूछो जिनके बच्चे पढ़ने जाते हैं.

यह तो मुझे बहुत दिनों से मालूम था कि देव नागरी लिखने में वक़्त बहुत ज़ियादा लगता है. इसकी वजह न मैंने सोची और न सोचने की कोशिश की. वजह यह कि लिखाई का काम स्कूलों में कम ही करना पड़ता है. इस लिये लिखाई में कुछ देर लगने से तालीम में कुछ बहुत फ़र्क़ नहीं लगता. एक दिन बैठे बैठे ख़याल आया कि जो लिखाई ज़ियादा जगह घेरती है और जिसे लिखने में देर लगती है उसे पढ़ने में भी मुमकिन है ज़ियादा वक़्त लगता हो. ख़याल आया था कि परख लूं. अपना इम्तहान लिया,

لفظوں کی گنتی اور زیادہ ہو سکتی تھی. یہ بھی ظاہر ہے کہ انگریزی کے ہجے فضول لمبے ہیں مثلاً are, were کی آخری e فضول. Bought کے چھ حرفوں کی جگہ bot تین حرف کافی تھے. حساب لگانے والوں نے حساب لگایا ہے کہ انگریزی کی عبارت میں 1/7 حرف فضول دکھاوے کے ہیں. یعنی 13 فیصدی آسانی سے کم کئے جاسکتے ہیں. اگر چاہو تو تم بھی اس حساب کو پرکھ سکتے ہو. انگریزی کی کوئی عبارت لے لو، اس کے حرف گن لو اور اس میں فضول حرفوں کو بھی گن لو یہ 13 فیصدی کا تخمینہ بہت کچھ درست ہی پاؤگے.

ہندی 'ہندستان' اور انگریزی 'ہندستان ٹائمس' دونوں دلی کی ایک ہی کمپنی کے اخبار ہیں اور ایک ہی چھاپہ خانہ میں چھپتے ہیں. ہندی کے 132 لفظوں کی جگہ انگریزی ہندستان میں 228 لفظ چھپتے ہیں. اگر ان 228 میں 228 کا 1/7 اور جوڑا جائے تو 260 ہو جاتے ہیں اور یہ 260 ہندی 132 کے دوگنے سے ذرا ہی کم ہوتے ہیں. سوچو تو سہی کہ اگر ہم دیوناگری کی جگہ کسی طرح رومن لپی یا اس جیسی کوئی اور چھوٹی لپی تجویز کر لیں تو آسانی سے ہندی کتابوں اور اخباروں کی قیمت آدھی رہ جائے. یہاں یہ جتا دینا ضروری ہے کہ رومن لپی کو اور بھی چھٹایا اور ہندی کے مناسب بنایا جاسکتا ہے اگر کوئی ذرا بھی اس طرف دھیان دے.

اسکول کی فیسوں کے علاوہ آجکل پڑھائی میں کتابوں اور کاپیوں کا خرچ ہی مان نہیں. آجکل تو خیر پڑھائی کچھ انگریزی، کچھ ہندی، کچھ اردو میں ہوتی ہے. اب ہماری سرکار کے خیر خواہ چاہتے ہیں کہ آئندہ ساری پڑھائی لکھائی دیوناگری میں ہو. اس کا نتیجہ صاف ہے. جو کتابیں آجکل انگریزی یا اردو میں پڑھائی جاتی ہیں وہ بھی دیوناگری میں چھپینگی اور اس لئے انکی قیمت دوگنی ہو جائیگی اور کاپیاں بھی دوگنی برتی جائینگی. اب رہا یہ سوال کہ ہندستان جیسے غریب ملک میں پڑھائی لکھائی کا خرچ بڑھانا کہاں تک مناسب ہے ان غریبوں سے پوچھو جن کے بچے پڑھنے جاتے ہیں.

یہ تو مجھے بہت دنوں سے معلوم تھا کہ دیوناگری لکھنے میں وقت بہت زیادہ لگتا ہے. اس کی وجہ نہ میں نے سوچی اور نہ سوچنے کی کوشش کی. وجہ یہ کہ لکھائی کا کام اسکولوں میں کم ہی کرنا پڑتا ہے اس لئے لکھائی میں کچھ دیر لگنے سے تعلیم میں کچھ بہت فرق نہیں لگتا. ایک دن بیٹھے بیٹھے خیال آیا کہ جو لکھائی زیادہ جگہ گھیرتی ہے اور جسے لکھنے میں دیر لگتی ہے اسے پڑھنے میں بھی ممکن ہے زیادہ وقت لگتا ہو. خیال آیا تھا کہ پرکھ لوں. اپنا امتحان لیا،

	चार इंच कालम में सतरों की गिनती	एक सतर में कितने लफ़्ज़	चार इंच कालम में लफ़्ज़ों की गिनती
गुजराती-जन्म भूमि-बम्बई	24	5 1/2	132
बंगाली-युगान्तर-कलकत्ता	26	5	130
बंगाली-आनन्द बाज़ार पत्रिका-कलकत्ता	26	5	130
मराठी-नव शक्ति-बम्बई	20	4 1/2	90
गुरमुखी-पंथ सेवक-जालन्धर	16	4 1/2	72
गुरमुख.-अकाली पत्रिका-अमृतसर	16	4 1/2	72
उड़िया-प्रजातंत्र	20	4	80
तामिल-दुनियामनी	35	4	140
मलयालम-मातृभूमि	29	4	126
मलयालम-गोमती	20	4	80
उरदू-मिलाप-दिल्ली	21	11	231
उरदू-वीर भारत-दिल्ली	21	10	210
उरदू-तेज-दिल्ली	18	10	180
अंगरेज़ी-स्टेट्समैन-दिल्ली	38	6	228
32 से 40 सतरें औसत			
अंगरेज़ी-हिन्दुस्तान-दिल्ली	38	6	228
30 से 40 सतरें औसत			

	چار انچ کالم میں سطروں کی گنتی	ایک سطر میں کتنے لفظ	چار انچ کالم میں لفظوں کی گنتی
گجراتی-جنم بھومی-بمبئی	24	5 1/2	132
بنگالی-جگانتر-کلکتہ	26	5	130
بنگالی-آنند بازار پتریکا-کلکتہ	26	5	130
مرہٹی-نوشکتی-بمبئی	20	4 1/2	90
گورمکھی-پنتھ سیوک-جالندھر	16	4 1/2	72
گورمکھی-اکالی پتریکا-امرتسر	16	4 1/2	72
اڑیا-پرجاتنتر	20	4	80
تامل-دنیا منی	35	4	140
ملیالم-ماتربھومی	29	4	126
ملیالم-گومتی	20	4	80
اردو-ملاپ-دلی	21	11	231
اردو-ویر بھارت-دلی	21	10	210
اردو-تیج-دلی	18	10	180
انگریزی-اسٹیٹسمین-دلی	38	6	228
32 سے 40 سطریں اوسط			
انگریزی-ہندوستان-دلی			
3 سے 40 سطریں اوسط	38	6	228

इन एनसाइक्लोपीडियों के कालमों की लम्बाई चौड़ाई बराबर है

ان انسائیکلوپیڈیوں کے کالموں کی لمبائی چوڑائی برابر ہے ۔

	कालम में सतरें	सतर में लफ़्ज़	कालम में लफ़्ज़
हिन्दी-विश्वभारती	40	10	400
चेम्बर एनसाइक्लोपीडिया	78	10	780
अमरीकन एनसाइक्लोपीडिया	74	10	740
एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका	83	10	830

	کالم میں سطریں	سطر میں لفظ	کالم میں لفظ
ہندی-وشوبھارتی	40	10	400
چیمبر انسائیکلوپیڈیا	78	10	780
امریکن انسائیکلوپیڈیا	74	10	740
انسائیکلوپیڈیا برٹانیکا	83	10	830

यहां यह जता देना ज़रूरी है कि उरदू अख़बारों के कागज़ और ज़बानों के अख़बारों के कागज़ों से कम क़ीमत और घटिया क़िस्म का होता है. मुमकिन ही नहीं निश्चित है कि अगर वह भी वैसा ही कागज़ इस्तेमाल करते तो उनके

یہاں یہ جتا دینا ضروری ہے کہ اردو اخباروں کے کاغذ اور زبانوں کے اخباروں کے کاغذوں سے کم قیمت اور گھٹیا قسم کا ہوتا ہے ۔ ممکن ہی نہیں نشچت ہے کہ اگر وہ بھی ویسا ہی کاغذ استعمال کرتے تو ان کے

देवनागरी और तालीम

(मदन गोपाल)

अक्सर आदमियों का तजरबा तो यह ही कहता है कि देवनागरी लिखने में ज़ियादा वक़्त लगता है. अंगरेज़ी या उरदू लिखाई में कम. मुझे कुछ आदमी ऐसे ज़रूर मिले हैं जो दावे से कहते हैं कि जितना वक़्त मुझे अंगरेज़ी या उरदू लिखने में लगता है उस से भी कम वक़्त में वह देवनागरी लिख सकते हैं. मेरी कभी हिम्मत नहीं पड़ी कि इनका मुक़ाबला करूं क्योंकि मैं जानता हूं कि जितना वक़्त मुझे एक मील चलने में लगता है उससे भी कम वक़्त में कुछ लोग दो मील आसानी से तय कर लेते हैं. उनके दो मील तय कर लेने से मुझे कभी यह शक नहीं हुआ कि उनके दो मील मेरे एक मील के दुगने से कम हैं.

यह साबित करना कि देवनागरी ही नहीं जितनी हिन्दू लिपियां हैं वह अंगरेज़ी यानी रोमन लिपि और उरदू लिपि से लगभग दुगनी ज़ियादा लम्बी हैं कोई मुश्किल काम नहीं. एक आसान तरीक़ा तो यह है कि लफ़्ज़ों की गिनती की जाय. ऐसी छपाइयों में जहां छापने वाले को कोशिश होती है कि छपाई जगह भी कम ले और साथ ही इतनी रोशन हो कि आसानी से पढ़ी जाय जैसा कि अख़बारों, डिक्शनरियों और इनसाइक्लोपीडियों के छापने वालों की काग़ज़ बचाने के लिये हमेशा यह कोशिश होती है कि जहां तक हो सके टाइप छोटा हो और लिखाई गुनजान हो लेकिन इतनी छोटी और गुनजान भी न हो कि पढ़ने में ज़ियादा तकलीफ़ हो. साथ ही इनकी यह भी कोशिश होती है कि यह काग़ज़ भी कुछ बहुत क़ीमती न लगाया जाय.

इस नक़्शे की दुरुस्ती हर शख़्स आसानी से जांच सकता है.

	चार इंच कालम में सतरों की गिनती	एक सतर में कितने लफ़्ज़	चार इंच कालम में लफ़्ज़ों की गिनती
हिन्दी-हिन्दुस्तान-दिल्ली	22	6	132
हिन्दी-अमर भारत-दिल्ली	18	6	108
हिन्दी-विश्वमित्र-दिल्ली	18	5	90
गुजराती-हिन्दुस्तान-बम्बई	24	5 1/2	132

دیوناگری اور تعلیم

(مدن گوپال)

اکثر آدمیوں کا تجربہ تو یہ ہی کہتا ہے کہ دیوناگری لکھنے میں زیادہ وقت لگتا ہے ۔ انگریزی یا اردو لکھائی میں کم ۔ مجھے کچھ آدمی ایسے ضرور ملے ہیں جو دعوے سے کہتے ہیں کہ جتنا وقت مجھے انگریزی یا اردو لکھنے میں لگتا ہے اس سے بھی کم وقت میں وہ دیوناگری لکھ سکتے ہیں ۔ میری کبھی ہمت نہیں پڑی کہ میں ان کا مقابلہ کروں کیونکہ میں جانتا ہوں کہ جتنا وقت مجھے ایک میل چلنے میں لگتا ہے اس سے بھی کم وقت میں کچھ لوگ دو میل آسانی سے طے کر لیتے ہیں ۔ ان کے دو میل طے کر لینے سے مجھے کبھی یہ شک نہیں ہوا کہ ان کے دو میل میرے ایک میل کے دوگنے سے کم ہیں ۔

یہ ثابت کرنا کہ دیوناگری ہی نہیں جتنی ہندو لپیاں ہیں وہ انگریزی یعنی رومن لپی اور اردو لپی سے لگ بھگ دوگنی زیادہ لمبی ہیں کوئی مشکل کام نہیں ۔ ایک آسان طریقہ تو یہ ہے کہ لفظوں کی گنتی کی جائے ۔ ایسی چھپائیوں میں جہاں چھاپنے والے کی کوشش ہوتی ہے کہ چھپائی جگہ بھی کم لے اور ساتھ ہی اتنی روشن ہو کہ آسانی سے پڑھی جائے جیسا کہ اخباروں، ڈکشنریوں اور انسائکلوپیڈیوں کے چھاپنے والوں کی کاغذ بچانے کے لئے ہمیشہ یہ کوشش ہوتی ہے کہ جہاں تک ہوسکے ٹائپ چھوٹا ہو اور لکھائی گنجان ہو لیکن اتنی چھوٹی اور گنجان بھی نہ ہو کہ پڑھنے میں زیادہ تکلیف ہو ۔ ساتھ ہی انکی یہ بھی کوشش ہوتی ہے کہ کاغذ بھی کچھ بہت قیمتی نہ لگایا جائے ۔

اس نقشہ کی درستی ہر ایک شخص آسانی سے جانچ سکتا ہے ۔

چار انچ کالم میں لفظوں کی گنتی	ایک سطر میں کتنے لفظ	چار انچ کالم میں سطروں کی گنتی	
132	6	22	ہندی-ہندستانی-دلی
108	6	18	ہندی-امر بھارت-دلی
90	5	18	ہندی-وشوامتر-دلی
132	5 1/2	24	گجراتی-ہندستان بمبئی

उसने दुकान से उतर कर मेरे गाल पर ज़ोर से एक थप्पड़ जमा दी.

"अजी अनाथ बच्चे को क्यों मारते हो" दुकानदार की पत्नी ने कहा.

"अनाथ है यह बच्चा ! पाकेट मार है यह पाकेट मार. दुकान संभाल लो." अपनी पत्नि से कहता हुए दुकानदार घर को चल दिया.

मैं वहीं खड़ा रहा.

"क्या चाहता है बच्चा ! क्यों दुकान के पास खड़ा है. तेरी उम्र बड़ी हो गई है. पाजामा ले ले." दुकानदार की पत्नी ने कहा.

मैं बिना जवाब दिये ज़रा अन्धेरे की तरफ़ चला गया. गठरी से एक रुपया निकाल कर दुकानदार की पत्नी की तरफ़ बढ़ाया और कहा—माई !......

'क्यों मेरे लाल !" दुकानवाली ने कहा

"मुझे एक छोटी सी चड्डी चाहिये. जेबदार होना चाहिये. रुपया दूंगा."

"ओह हो ! रुपया भी है तेरे पास ? कहां से चुराया ?" उसने कहा.

"नहीं माई चुराया नहीं एक सेठ ने एक रुपया दिया था." यह कहते हुए मैंने रुपया उसके हाथ पर रख दिया. उसने रुपये को बजाया और एक चड्डी निकाल कर कहा—

"यह लो, यह डेढ़ रुपये का है. तीन साल तक नहीं फटेगा. लेकर जल्दी भाग जा नहीं तो मालिक आ जायंगे."

मैंने चड्डी लेकर वहीं पहन ली. घुटने के ऊपर तक थी. दुकान वाली ने नीचे उतर कर उसे कमर तक खींच कर बकलस लगा दिया. मैं दौड़ने लगा. लंगोटी को दूर फेंक दिया और रुपये की गठरी को जेब में रख लिया मेरी चिन्ताएं हवा हो गईं. नल के पास गया और हाथ मुंह धोया. फिर से दुकान की तरफ़ जा कर मैंने कहा—"माई नमस्कार !"

"देखो न कैसा सुन्दर दिखाई देता है. यह लो एक छोटी कमीज़ ! रुपया नहीं चाहिये. आठ दिन में एक बार नल के पानी में भिगो कर धूप में डाल देना." मैंने कमीज़ को पहन लिया और कहा—"माई, तुम जो कहोगी वही करूंगा "

यह कह कर साहब की चाल से मैं वहां से चल दिया.

अनुवादक—टी. राजन

اُس نے دوکان سے اُتر کر میرے گال پر زور سے ایک تھپڑ جمادی۔

"اجی اناتھ بچے کو کیوں مارتے ہو" دوکاندار کی پتنی نے کہا۔

"اناتھ ہے یہ بچہ ! پاکٹمار ہے یہ پاکٹمار ۔ دوکان سنبھال لو۔" اپنی پتنی سے کہتے ہوئے دوکاندار گھر کو چل دیا۔

میں وہیں کھڑا رہا۔

"کیا چاہتا ہے بچہ ! کیوں دوکان کے پاس کھڑا ہے ۔ تیری عمر بڑی ہوگئی ہے ۔ پاجامہ لے لے ۔" دوکاندار کی پتنی نے کہا۔

میں بنا جواب دیئے ذرا اندھیرے کی طرف چلا گیا۔ گٹھڑی سے ایک روپیہ نکال کر دوکاندار کی پتنی کی طرف بڑھایا اور کہا—مائی !........

"کیوں میرے لال !" دوکان والی نے کہا۔

"مجھے ایک چھوٹی سی چڈی چاہئے ۔ جیبدار ہونا چاہئے ۔ روپیہ دونگا ۔"

"اوہو ! روپیہ بھی ہے تیرے پاس؟ کہاں سے چرایا" اُس نے کہا۔

"نہیں مائی' چرایا نہیں ایک سیٹھ نے ایک روپیہ دیا تھا ۔" یہ کہتے ہوئے میں نے روپیہ اُس کے ہاتھ پر رکھ دیا ۔ اُس نے روپئے کو بجایا اور ایک چڈی نکال کر کہا—

"یہ لو' یہ ڈیڑھ روپیہ کا ہے ۔ تین سال تک نہیں پھٹیگا. لیکر جلدی بھاگ جا نہیں تو مالک آجائینگے ۔"

میں نے چڈی لیکر وہیں پہن لی ۔ گھٹنے کے اُوپر تک تھی۔ دوکان والی نے نیچے اُتر کر اُسے کمر تک کھینچ کر بکلس لگا دیا. میں دوڑنے لگا. لنگوٹی کو دور پھینک دیا اور روپئے کی گٹھری کو جیب میں رکھ لیا. میری چنتائیں ہوا ہوگئیں ۔ نل کے پاس گیا اور ہاتھ منہ دھویا ۔ پھر سے دوکان کی طرف جاکر میں نے کہا—"مائی نمسکار !"

"دیکھو نہ کیسا سندر دکھائی دیتا ہے ۔ یہ لو ایک چھوٹی قمیض ! روپیہ نہیں چاہئے ۔ آٹھ دن میں ایک بار نل کے پانی میں بھگو کر دھوپ میں ڈال دینا ۔"

میں نے قمیض کو پہن لیا اور کہا—"مائی' تم جو کہوگی وہی کرونگا ۔"

یہ کہکر صاحب کی چال سے میں وہاں سے چلدیا ۔

انوادک—ٹی ۔ راجن

इसी तरह दूसरी रात भी कटी. पौ फटने के पहले उठ कर दक्खिन की तरफ चला.

नलकम बागम के एक अंधेरे कोने में जा बैठा. कभी सिसकियां भरता, कभी मां की याद करके रो उठता, रोने के थोड़ी देर बाद कुछ तसल्ली हो जाती.

एक दिन एक खोखले पेड़ की खोज में फिर रहा था. पुराने मामबलम के एक कोने में ऐसा पेड़ मिला. शाम का समय था. वहां कोई भी नहीं था. पेड़ पर चढ़ गया. खोखले के अंदर हाथ डाला. उसके अंदर चिकनाहट थी. मुझे बड़ी खुशी हुई. रुपये की गठरी रख कर नीचे उतर आया. फिर वहां पड़े हुए ईंट के टुकड़े को हाथ में लिये ऊपर चढ़ा. नेवला या और कोई जानवर उसे कुरेदने न पाये इसलिये मैंने ईंट का टुकड़ा रुपयों की गठरी पर रख दिया. वह हाथ से खिसक कर अंदर गिर पड़ा. दुबारा हाथ डाल कर देखा तो वहां रुपये न थे और ईंट का टुकड़ा भी न था.

कंधे की गहराई तक हाथ अन्दर चला गया वह तो निरा खोखला ही था. आखिर रुपयों से हाथ धोना पड़ा. उस वक्त मुझे जो दुख हुआ वह लिखा नहीं जा सकता. पागल की तरह हाथ से खोखले को नोच नोच कर देखने लगा. वह खोखला खाली था. आंखों से आंसू की बूंदें टपटप गिरने लगीं. मुझे चक्कर आने लगा और मैं नीचे गिर पड़ा. थोड़ी देर वहीं बैठा रहा. उस पेड़ को जिसने मेरे धन को निगल लिया था, ऊपर से नीचे तक निहारता रहा. पहले सामने की तरफ बैठा था. पेड़ में कुछ और खोखले नजर आये. शायद रुपये की गठरी नीचे वाले खोखलों में कहीं गिर पड़ी हो इस विचार और आशा के साथ फिर से पेड़ पर चढ़ा. जहां मैंने गठरी रखी थी उसी के नीचे एक और खोखला था. ईंट का टुकड़ा दिखाई पड़ा. मेरी आंखों में चमक आ गई. टटोलने पर गठरी भी नजर आई. उस वक्त जो आनंद मिला था शब्दों में उसे बयान नहीं कर सकता. मैं खुशी के मारे उछलने कूदने लगा. दो दिन तक जितना दुख और चिन्ता से बेचैन रहा था उतना ही अब आनंद प्राप्त हुआ था.

गठरी खोल कर उस में से एक आना लिया. बचे पैसों को लंगोटी में बांधा और शहर की तरफ चल पड़ा. एक आने का *'इडियाप्पम' खरीदा और फिर नल का पानी पी कर मूर मार्केट की तरफ तेजी से बढ़ा. वहां पुराने कुर्ते और कई चीजों की दुकानें थीं.

“चोर बदमाशों का यहां क्या काम, मार खाओगे” दुकानदार ने कहा.

* चावल के साथ जो नारियल छील कर बनाया जाता है.

اسی طرح دوسری رات بھی کٹی ۔ پو پھٹنے کے پہلے اٹھکر دکھن کی طرف چلا ۔

نلکم باغم کے ایک اندھیرے کونے میں جا بیٹھا ۔ کبھی سسکیاں بھرتا، کبھی ماں کی یاد کرکے رو اٹھتا ۔ رونے کے تھوڑی دیر بعد کچھ تسلی ہو جاتی ۔

ایک دن ایک کھوکھلے پیڑ کی کھوج میں پھر رہا تھا ۔ پرانے مامبلم کے ایک کونے میں ایسا پیڑ ملا ۔ شام کا سمے تھا ۔ وہاں کوئی بھی نہیں تھا ۔ پیڑ پر چڑھ گیا ۔ کھوکھلے کے اندر ہاتھ ڈالا ۔ اس کے اندر چکناہٹ تھی ۔ مجھے بڑی خوشی ہوئی ۔ میں اس کے اندر روپئے کی گٹھری رکھکر نیچے اتر آیا ۔ پھر وہاں پڑے ہوئے اینٹ کے ٹکڑے کو ہاتھ میں لئے اوپر چڑھا ۔ نیولا یا اور کوئی جانور اسے کریدنے نہ پاوے اس لئے میں نے اینٹ کا ٹکڑا روپیوں کی گٹھری پر رکھ دیا ۔ وہ ہاتھ سے کھسک کر اندر گر پڑا ۔ دوبارہ ہاتھ ڈال کر دیکھا تو وہاں روپئے نہ تھے اور اینٹ کا ٹکڑا بھی نہ تھا !

کندھے کی گہرائی تک ہاتھ اندر چلا گیا وہ تو نرا کھوکھلا ہی تھا ۔ آخر روپیوں سے ہاتھ دھونا پڑا ۔ اس وقت مجھے جو دکھ ہوا وہ لکھا نہیں جاسکتا ۔ پاگل کی طرح ہاتھ سے کھوکھلے کو نوچ نوچ کر دیکھنے لگا ۔ وہ کھوکھلا خالی تھا ۔ آنکھوں سے آنسو کی بوندیں ٹپ ٹپ گرنے لگیں ۔ مجھے چکر آنے لگا اور میں نیچے گر پڑا ۔ تھوڑی دیر وہیں بیٹھا رہا ۔ اس پیڑ کو جس نے میرے دھن کو نگل لیا تھا اوپر سے نیچے تک نہارتا رہا ۔ پہلے سامنے کی طرف بیٹھا تھا ۔ پیڑ میں کچھ اور کھوکھلے نظر آئے ۔ شاید روپئے کی گٹھری نیچے والے کھوکھلوں میں کہیں گر پڑی ہو اس وچار اور آشا کے ساتھ پھر سے پیڑ پر چڑھا ۔ جہاں میں نے گٹھری رکھی تھی اس کے نیچے ایک اور کھوکھلا تھا ۔ اینٹ کا ٹکڑا دکھائی پڑا ۔ میری آنکھوں میں چمک آ گئی ۔ ٹٹولنے پر گٹھری بھی نظر آئی ۔ اس وقت جو آنند ملا تھا شبدوں میں اسے بیان نہیں کرسکتا ۔ میں خوشی کے مارے اچھلنے کودنے لگا ۔ دو دن تک جتنا دکھ اور چنتا سے بےچین رہا تھا اتنا ہی اب آنند پراپت ہوا تھا ۔

گٹھری کھولکر اس میں سے ایک آنہ لیا ۔ بچے پیسوں کو لنگوٹی میں باندھا اور شہر کی طرف چل پڑا ۔ ایک آنے کا *'اڈیاپم' خریدا اور پھر نل کا پانی پی کر مور مارکیٹ کی طرف تیزی سے بڑھا ۔ یہاں پرانے کرتے اور کئی چیزوں کی دوکانیں تھیں ۔

”چور بدمعاشوں کا یہاں کیا کام، مار کھاؤگے“ دوکاندار نے کہا ۔

* چاول کے ساتھ جو ناریل چھیل کر بنایا جاتا ہے ۔

इसके बाद कुप्पाडी ने मेरे हिस्से के रुपयों में से दो रुपये ले लिये और कहा—"देखो असल मालिक तो इन रुपयों का मैं ही हूं क्योंकि जेब मारने वाला मैं था. पहले पहल तुमने बड़े काम में हिस्सा लिया है इसलिये गुरु-दक्षिणा में दो रुपये मुझे दो."

"ठीक है, खुशी से ले लो" मैंने कहा.

उस दिन मैं बहुत खुश था. उस रात को मुझे नींद नहीं आई. मैं राख के टीले पर लेटा था पर रुपये की बात खटक रही थी अगर मेरे पास रुपये होने की बात किसी को मालूम हो गई तो मुझे मार मार कर कचूमर निकाल देगा. मैं घबराहट और चिन्ता में डूबा हुआ था इसलिये रात भर नींद नहीं आई. भूख लगने पर मूंछ वाले मारिया पिल्ले अपनी फल की दुकान से पके हुए फल दिया करते थे. फल हाथ में दे देते थे. उनकी दुकान का केला खूब पका हुआ और जायक़ेदार होता था. पेनांग में भी ऐसा बढ़िया केला नहीं मिलता. गली के होटल वाले बाबू 'लोवर्स' कह कर बुलाते और बचा खुचा सालन और भात थाली भर दिया करते. पास की लोहे के दुकान वाले सामी चेट्टी दोपहर को जब खाना खाने जाते तो 'अरे कृष्ना ज़रा दुकान देखते रहना' कह कर पूरी दुकान को मेरी निगरानी में छोड़ कर चले जाते थे. उनके वापस आने तक मैं चोरों से दुकान की रखवाली करता रहता था. वापस आते ही चेट्टी कहते—"यह लो अधन्नी, 'दोसा' खरीद कर खा लेना.

वहीं एक कोने में एक बुढ़िया बैठी 'दोसा' बेचती थी. वैसा बढ़िया दोसा कहीं भी नहीं मिलता था.

चोरी का यह पैसा मुझे अनचाहा और बड़ा बोझ सा लगा. दुनिया तो पैसे की रट लगा कर बैठी है पर मुझे तो उस से चिढ़ सी लगी. अब वह बात याद आते ही मैं हंस उठता हूं पहले जो डर था वह मुझ से सहा नहीं जाता था. रुपये रखने के लिये बटुआ या पेटी नहीं थी. जेब वाला कुर्ता भी नहीं था. यह बात किसी से कह भी नहीं सकता था. पैसे फेंक देने को भी मन नहीं चाहता था. अगर किसी दुकानदार के पास सौंपना चाहूं तो वह चोर बदमाश कह कर रुपये छीन कर पुलिस के हवाले कर देता इसका डर लगा रहता था.

जब अनजाने में आंख लगी भी तो सपने देख कर कांप उठता था. सपने में कोई मुझे दबा कर ज़बरदस्ती से रुपये छीन लेता था! सपने को सिर्फ सपना समझ कर थोड़ी सी शांति पाता.

पहले तो ऐसा नहीं हुआ था. किसी भी खुरदरी ज़मीन पर लेट कर आराम की नींद सो जाता, पर रुपया हाथ लगते ही आराम की नींद उचट गई. मुझे हर समय डर सताने लगा.

اس کے بعد کپاٹی نے میرے حصے کے روپیوں میں سے دو روپیہ لے لئے اور کہا—"دیکھو اصل مالک تو ان روپیوں میں ہی ہوں کیونکہ جیب مارنے والا میں تھا۔ پہلے پہل تم نے بڑے کام میں حصہ لیا ہے اس لئے گرو دکچھنا میں دو روپیہ مجھے دو۔"

"ٹھیک ہے، خوشی سے لے لو" میں نے کہا۔

اس دن میں بہت خوش تھا۔ اس رات کو مجھے نیند نہیں آئی۔ میں راکھ کے ٹیلے پر لیٹا تھا پر روپئے کی بات کھٹک رہی تھی۔ اگر میرے پاس روپئے ہونے کی بات کسی کو معلوم ہوگی تو مجھے مار مار کر کچومر نکال دے گا۔ میں گھبراہٹ اور چنتا میں ڈوبا ہوا تھا۔ اس لئے رات بھر نیند نہیں آئی۔ بھوک لگنے پر مونچھ والے ماریا پلے اپنی پھل کی دوکان سے پکے ہوئے پھل دیا کرتے تھے۔ پھل ہاتھ میں دے دیتے تھے۔ انکی دوکان کا کیلا خوب پکا ہوا اور ذائقہ دار ہوتا تھا۔ پینانگ میں بھی ایسا بڑھیا کیلا نہیں ملتا۔ گلی کے ہوٹل والے بابو 'لوورس' کہکر بلاتے اور بچا کچھا سالن اور بھات تھالی بھر دیا کرتے۔ پاس کی لوہے کی دوکان والے سامی چیٹی دوپہر کو جب کھانا کھانے جاتے تو 'ارے کرشنا ذرا دکان دیکھتے رہنا' کہکر پوری دوکان کو میری نگرانی میں چھوڑ کر چلے جاتے تھے۔ ان کے واپس آنے تک میں چوروں سے دوکان کی رکھوالی کرتا رہتا تھا۔ واپس آتے ہی چیٹی کہتے—"یہ لو ادھنی 'دوسا' خرید کر کھا لینا۔"

وہیں ایک کونے میں ایک بڑھیا بیٹھی 'دوسا' بیچتی تھی۔ ویسا بڑھیا دوسا کہیں بھی نہیں ملتا تھا۔

چوری کا یہ پیسہ مجھے ان چاہا اور بڑا بوجھ سا لگا۔ دنیا تو پیسے کی رٹ لگا کر بیٹھی ہے پر مجھے تو اس سے چڑھ سی لگی۔ اب وہ بات یاد آتے ہی میں ہنس اٹھتا ہوں۔ پہلے جو ڈر تھا وہ مجھ سے سہا نہیں جاتا تھا۔ روپیہ رکھنے کے لئے بٹوا یا پیٹی نہیں تھی۔ جیب والا کرتہ بھی نہیں تھا۔ یہ بات کسی سے کہہ بھی نہیں سکتا تھا۔ پیسے پھینک دینے کو بھی من نہیں چاہتا تھا۔ اگر کسی دوکاندار کے پاس سونپنا چاہوں تو وہ چور بدمعاش کہکر روپئے چھین کر پولیس کے حوالے کردیتا اس کا ڈر لگا رہتا تھا۔

جب انجانے میں آنکھ لگی بھی تو سپنے دیکھکر کانپ اٹھتا تھا۔ سپنے میں کوئی مجھے دبا کر زبردستی سے روپئے چھین لیتا تھا! سپنے کو صرف سپنا سمجھکر تھوڑی سی شانتی پاتا۔

پہلے تو ایسا نہیں ہوا تھا۔ کسی بھی کھردری زمین پر لیٹ کر آرام کی نیند سو جاتا! پر روپیہ ہاتھ لگتے ہی آرام کی نیند اچٹ گئی۔ مجھے ہر سمے ڈر ستانے لگا۔

कुछ रुपया जमा कर लिया. जब वह हिन्दुस्तान लौटा तब उसकी उम्र चालीस साल की थी. वह तीन पत्नियों के साथ आया था. अब वह तम्बाकू का बड़ा व्योपारी है. मौज की जिन्दगी बसर करता है. उसके आठ लड़के और दो लड़कियां हैं. उसके यहां झगड़ा फ़साद का नाम व निशान तक नहीं. अब वह गौरव पूर्ण जीवन बिता रहा है. सब से छोटी और आखरी लड़की के सिवा बाक़ी सब तम्बाकू मंडी में दूसरे मज़दूरों के साथ मज़दूर बन कर काम कर रहे हैं. ओवर्स कुन्नन का नाम पेराकू रामास्वामी मुदालियर हो गया है. अब वह तमिल भाषा के अच्छे लेखक बन चुके हैं. उन्होंने पेनांग में लिखना पढ़ना सीखा और चौबीस साल की उम्र के बाद उन्होंने 'मेरी कहानी' नामक अपनी जीवनी लिखी है. अब वह खुद अपनी जीवन कहानी सुनाते हैं. कहानी यूं है—

कुप्पाडी ने एक बूढ़े की जेब से बटुआ चुरा लिया था. वह ट्राम के पीछे से निकला और चुपके से बटुए को नीचे डाल दिया. पक्किरी दौड़ने लगा. शोर मचा कि बटुआ किसी ने मार दिया! चोर को पकड़ो. फ़ौरन ही लोगों ने भागते हुए पक्किरी को पकड़ लिया और खूब पीटा. सड़क के सामने मैं खड़ा था, पर किसी ने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं. लोगों ने मार खाने वाले लड़के को घेर लिया. नीचे पड़े बटुए को चुपके से उठा कर मैंने अपनी लंगोटी के अन्दर रख लिया. लड़का जो पकड़ा गया था रो उठा. ज़ियादा थप्पड़ खाने की वजह से वह ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था. लोगों ने उसके कपड़ों को देखा पर उसके पास कुछ नहीं था.

"छोड़ दीजिये इस बेचारे को. चुराने वाला यह नहीं था. चोर आप की पकड़ में कैसे आ सकता है?" एक टोकरी वाली ने कहा.

मैंने भी उन लोगों की बात चीत में भाग लिया. "यह तो बदमाश चोर है. चुरा कर अपने साथी के हाथ में दे दिया होगा" मैंने कहा.

भीड़ बिखर गई. बटुआ खोने वाला आदमी परेशान हो कर अपने मित्र के साथ बात करते हुए चल दिया.

अपने पहले से बने प्रोग्राम के अनुसार एक बाग़ के कोने में कुप्पाडी, पक्किरी और मैं तीनों मिले. बटुए में अट्ठारह चांदी के रुपये और कुछ रेज़गारी भी थी. कुप्पाडी ने बड़ी शराफ़त दिखाई. उसने रुपयों को तीन हिस्सों में बांटा. छे चांदी के रुपये उसने अपने हिस्से में लिये और पक्किरी को छे रुपये दिये. मेरे हिस्से के छे रुपये रखे और बचे हुए पैसों में दस आने पक्किरी के हाथ में रख कर कहा—
"यह लो दस आने, मार खाने की मज़दूरी."

کچھ روپیہ جمع کر لیا ۔ جب وہ ہندستان لوٹا تب اس کی عمر چالیس سال کی تھی ۔ وہ تین پتنیوں کے ساتھ آیا تھا ۔ اب وہ تمباکو کا بڑا بیوپاری ہے ۔ موج کی زندگی بسر کرتا ہے ۔ اس کے آٹھ لڑکے اور دو لڑکیاں ہیں ۔ اس کے یہاں جھگڑا فساد کا نام و نشان تک نہیں ۔ اب وہ گورو پورن جیون بتا رہا ہے ۔ سب سے چھوٹی اور آخری لڑکی کے سوا باقی سب تمباکو منڈی میں دوسرے مزدوروں کے ساتھ مزدور بن کر کام کر رہے ہیں ۔ اوورس کنن کا نام پیراکو راما سوامی مدالیر ہو گیا ہے ۔ اب وہ تمل بھاشا کے اچھے لیکھک بن چکے ہیں ۔ انہوں نے پینانگ میں لکھنا پڑھنا سیکھا اور چوبیس سال کی عمر کے بعد انہوں نے 'میری کہانی' نامک اپنی جیونی لکھی ہے ۔ اب وہ خود اپنی جیون کہانی سناتے ہیں ۔ کہانی یوں ہے—

کپاڈی نے ایک بوڑھے کی جیب سے بٹوا چرا لیا تھا ۔ وہ ٹرام کے پیچھے سے نکلا اور چپکے سے بٹوے کو نیچے ڈال دیا ۔ پکری دوڑنے لگا ۔ شور مچا کہ بٹوا کسی نے مار دیا ۔ چور کو پکڑو ۔ فوراً ہی لوگوں نے بھاگتے ہوئے پکری کو پکڑ لیا اور خوب پیٹا ۔ سڑک کے سامنے میں کھڑا تھا پر کسی نے میری طرف دیکھا بھی نہیں ۔ لوگوں نے مار کھانے والے لڑکے کو گھیر لیا ۔ نیچے پڑے بٹوے کو چپکے سے اٹھا کر میں نے اپنی لنگوٹی کے اندر رکھ لیا ۔ لڑکا جو پکڑا گیا تھا رو اٹھا ۔ زیادہ تھپڑ کھانے کی وجہ سے وہ زور سے چلا چلا کر رو رہا تھا ۔ لوگوں نے اس کے کپڑوں کو دیکھا پر اس کے پاس کچھ نہیں تھا ۔

"چھوڑ دیجئے اس بیچارے کو ۔ چرانے والا یہ نہیں تھا ۔ چور آپکی پکڑ میں کیسے آسکتا ہے؟" ایک ٹوکری والی نے کہا ۔

میں نے بھی ان لوگوں کی بات چیت میں بھاگ لیا ۔ "یہ تو بدمعاش چور ہے ۔ چرا کر اپنے ساتھی کے ہاتھ میں دے دیا ہوگا" میں نے کہا ۔

بھیڑ بکھر گئی ۔ بٹوا کھونے والا آدمی پریشان ہوکر اپنے متر کے ساتھ بات کرتے ہوئے چل دیا ۔

اپنے پہلے سے بنے پروگرام کے انوسار ایک باغ کے کونے میں کپاڈی، پکری اور میں تینوں ملے ۔ بٹوے میں اٹھارہ چاندی کے روپئے اور کچھ ریزگاری بھی تھی ۔ کپاڈی نے بڑی شرافت دکھائی ۔ اس نے روپیوں کو تین حصوں میں بانٹا ۔ چھ چاندی کے روپئے اس نے اپنے حصے میں لئے اور پکری کو چھ روپیہ دیئے ۔ میرے حصے کے چھ روپیہ رکھے اور بچے ہوئے پیسوں میں دس آنے پکری کے ہاتھ میں رکھ کر کہا—"یہ لو دس آنے مار کھانے کی مزدوری ۔"

"भीड़ में किसी की जेब में हाथ न डालेगा ना." आनरेरी मजिस्ट्रेट ने सलाह दी.

"हरगिज़ नहीं साहब ! मैं भीख ही मागूंगा." ओवर्स क्रुश्नन ने कटाक्ष किया.

"दारोगा जी ! आपकी क्या मर्जी है ?"

"जैसी अदालत की मर्जी. यह बदमाश है. यह खुद कहता है कि मैं ओवरसीयर हूं." दारोगा जी ने कहा.

"जी साहब ! मैं चोर नहीं हूं. ओवर्स मां का दिया हुआ नाम है." लड़के ने जवाब दिया.

मजिस्ट्रेट ने कागज़ात को उलट पुलट कर देखा और दारोगा जी की तरफ मुड़कर पूछा "कोई गवाह है ?"

दारोगा जी और उनके नायब मुलाज़िमों में कानाफूसी हुई. थोड़ी देर के बाद दारोगा जी ने कहा—"अदालत की सलाह के मुताबिक़ लड़के को छोड़ दिया जाय."

(2)

जिस औरत ने इन लड़कों को पाला था उसको हैज़े में मरे आठ साल बीत चुके. उसके मरने पर बच्चे बिलकुल अनाथ हो गये. गलियों में भीख मांगना, आवारा लड़कों के साथ गलियों में सोना उन अनाथों की दिनचर्या थी.

वह लड़के दिन भर इधर उधर घूमते भटकते और रात होने पर नयनापुरम के शीशे के कारखाने के पास के राख के टीले पर सो जाते थे. कचहरी की कारवाई के बाद दो तीन दिन तक ओवर्स कृष्नन ने चोरी के कामों में हिस्सा नहीं लिया था. तब कुप्पाड़ी जो इस से चार साल बड़ा था, कहा—"अरे ओवर्स, इतना क्यों डर रहे हो ?"

"मैं डरता नहीं हूं. डरपोक तो तुम हो." ओवर्स ने जवाब दिया.

चाइना बाज़ार, मूर मार्केट और कोतवाल चावड़ी की तरफ दो तीन दिन तक वह दोनों मौक़े की ताक में बैठे रहे पर हाथ कुछ नहीं लगा.

"रास्ता चलने वाले सबके सब चोरों से परेशान मालूम होते हैं. अपनी जेबों पर हाथ रख कर सावधानी से चले जा रहे हैं. इस के पहले तो ऐसा नहीं होता था." कुप्पाड़ी ने कहा.

लोगों के शास्त्र के अनुसार कुप्पाड़ी चोर है और चोरों के शास्त्र में लोग चोर हैं.

ओवर्स कृष्नन आठ साल तक इसी तरह के काम करता रहा. बाद में किसी ने उसे फुसला कर पेनांग के रबड़ के बागीचे में भेज दिया. वह मेहनत से काम करने लगा. होशियारी और ईमानदारी से काम करके उसने

"بھیڑ میں کسی کی جیب میں ہاتھ ڈالیگا نہ." آنریری مجسٹریٹ نے صلاح دی.

"ہرگز نہیں صاحب ! میں بھیک ہی مانگونگا" اوورس کرشنن نے کٹاکش کیا.

"داروغہ جی ! آپ کی کیا مرضی ہے؟"

"جیسی عدالت کی مرضی . یہ بدمعاش ہے . یہ خود کہتا ہے کہ میں اوورسیر ہوں ." داروغہ جی نے کہا .

"جی صاحب ! میں چور نہیں ہوں . اوورس ماں کا دیا ہوا نام ہے ." لڑکے نے جواب دیا .

مجسٹریٹ نے کاغذات کو الٹ پلٹ کر دیکھا اور داروغہ جی کی طرف مڑ کر پوچھا " کوئی گواہ ہے ؟"

داروغہ جی اور اُن کے نائب ملازموں میں کانا پھوسی ہوئی . تھوڑی دیر کے بعد داروغہ جی نے کہا —"عدالت کی صلاح کے مطابق لڑکے کو چھوڑ دیا جائے ."

(2)

جس عورت نے اِن لڑکوں کو پالا تھا اُس کو ہیضہ میں مرے آٹھ سال بیت چکے . اُس کے مرنے پر بچے بالکل اناتھ ہوگئے . گلیوں میں بھیک مانگنا' آوارہ لڑکوں کے ساتھ گلیوں میں سونا اُن اناتھوں کی دن چریا تھی.

یہ لڑکے دن بھر اِدھر اُدھر گھومتے بھٹکتےاور رات ہونے پر نینا پرم کے شیشے کے کارخانے کے پاس کے راکھ کے ٹیلے پر سو جاتے تھے . کچہری کی کاروائی کے بعد دو تین دن تک اوورس کرشنن نے چوری کے کاموں میں حصہ نہیں لیا تھا . تب کپاڑی نے جو اس سے چار سال بڑا تھا' کہا— "ارے اوورس اتنا کیوں ڈر رہے ہو ؟"

" میں ڈرتا نہیں ہوں . ڈرپوک تو تم ہو ." اوورس نے جواب دیا .

چائنا بازار' مور مارکیٹ اور کوتوال چاوڑی کی طرف دو تین تک وہ دونوں موقع کی تاک میں بیٹھے رہے پر ہاتھ کچھ نہیں لگا.

" راستہ چلنے والے سب کے سب چوروں سے پریشان معلوم ہوتے ہیں . اپنی جیبوں پر ہاتھ رکھکر ساودھانی سے چلے جارہے ہیں. اِس کے پہلے تو ایسا نہیں ہوتا تھا" کپاڑی نے کہا .

لوگوں کے شاستر کے انوسار کپاڑی چور ہے اور چوروں کے شاستر میں لوگ چور ہیں .

اوورس کرشنن آٹھ سال تک اِسی طرح کے کام کرتا رہا . بعد میں کسی نے اُسے پھسلا کر پینانگ کے ربر کے باغیچہ میں بھیج دیا . وہ محنت سے کام کرنے لگا . ہوشیاری اور ایمانداری سے کام کرکے اُس نے

"माफ़ फ़र्माइयेगा !" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने कहा और कुरसी को पीछे की तरफ़ खिसका कर बैठ गए.

"बड़ा कृष्णन झगड़ने लगा और अपने को मिस्त्री कहना शुरू किया. इसलिये मां उसको मिस्त्री कृष्णन् कहने पर राज़ी हो गई. और उसी दिन से मुझे ओवर्स कृष्णन् के नाम से पुकारने लगी." लड़के ने जवाब दिया.

"अरे तू ओवरसीयर है ?" मजिस्ट्रेट ने हंसते हुए पूछा और पास बैठे हुए आनरेरी मजिस्ट्रेट को भी जो ज़रा गुस्से में मालूम पड़ते थे, हंसाने की कोशिश की.

"और दूसरे का क्या नाम था ?" हाकिम ने पूछा.

"उसका कोई नाम नहीं रखा. वह रोता नहीं था. बड़ा सीधा सादा लड़का था."

"तो क्या तू शरीर लड़का है ?"

"नहीं साहब, मैं भी सीधा सादा हूं."

"सो तो ठीक है. तूने मैलापूर के मेले में क्यों चोरी की थी ?"

"मैंने चोरी नहीं की. मैं ने सिर्फ़ भीक मांगी थी."

"मौक़ा पड़ने पर कभी कभी चुराते भी हो न !" दारोग़ा जी ने पूछा.

आनरेरी मजिस्ट्रेट को हंसी आ गई—लड़का भी हंस दिया और अदालत में जितने लोग थे सब के सब हंस पड़े. हर एक को लड़के के साथ हमदर्दी थी. जब लड़का हंस रहा था, तब उसके मुख पर एक तरह का प्रकाश दिखाई दे रहा था जो सबों अपनी तरफ़ खींचने लगा.

"देखो तो सही, उसका मुखड़ा कितना सुन्दर है वह तो किसी अच्छे कुल का पुत्र सा मालूम होता है." एक वकील साहब ने अपनी राय ज़ाहिर की.

"किसी कुलीन स्त्री ने बदचलन बन कर इसको जन्म दिया होगा. नयना पुरम के कुछ लोग ऐसे बच्चों को ख़रीद कर गुज़र करते हैं. वह सब बच्चे तो बड़े सुन्दर होते हैं." दूसरे वकील ने कहा.

"हां हां, वैसे ही चोर लड़के मद्रास में बढ़ते जा रहे हैं." एक सज्जन ने कहा.

× × ×

"कृष्णा ! हमारी बात मान ले. आगे से न चुराने का वादा करेगा तो इस बार तुझे माफ़ कर देंगे." मजिस्ट्रेट ने कहा.

"हां, आप जैसा कहते हैं वैसा ही करूंगा." लड़के ने कहा.

" معاف فرمائیگا ." آنریری مجسٹریٹ نے کہا اور کرسی کو پیچھے کی طرف کھسکا کر بیٹھ گئے .

" بڑا کرشنن جھگڑنے لگا اور اپنے کو مستری کہنا شروع کیا . اس لئے ماں اس کو مستری کرشنن کہنے پر راضی ہو گئی . اور اسی دن سے مجھے اوورس کرشنن کے نام سے پکارنے لگی . لڑکے نے جواب دیا .

" ارے تو اورسیر ہے ؟" مجسٹریٹ نے ہنستے ہوئے آنریری مجسٹریٹ کو بھی جو ذرا غصہ میں معلوم پڑتے تھے، ہنسانے کی کوشش کی .

" اور دوسرے کا کیا نام تھا ؟" حاکم نے پوچھا .

" اس کا کوئی نام نہیں رکھا . وہ روتا نہیں تھا . بڑا سیدھا سادہ لڑکا تھا ."

" تو کیا تو شریر لڑکا ہے ؟"

" نہیں صاحب میں بھی سیدھا سادہ ہوں ."

" سو تو ٹھیک ہے . تو نے میلاپور کے میلے میں کیوں چوری کی تھی ؟"

" میں نے چوری نہیں کی. میں نے صرف بھیک مانگی تھی ."

موقعہ پڑنے پر کبھی کبھی چرانے بھی ہو نہ !" داروغہ جی نے پوچھا .

آنریری مجسٹریٹ کو ہنسی آ گئی—لڑکا بھی ہنس دیا اور عدالت میں جتنے لوگ تھے سب کے سب ہنس پڑے . ہر ایک کو لڑکے کے ساتھ ہمدردی تھی . جب لڑکا ہنس رہا تھا، تب اس کے مکھ پر ایک طرح کا پرکاش دکھائی دے رہا تھا جو سبوں کو اپنی طرف کھینچنے لگا .

" دیکھو تو سہی اس کا مکھڑا کتنا سندر ہے وہ تو کسی اچھے کل کا پترسا معلوم ہوتا ہے." ایک وکیل صاحب نے اپنی رائے ظاہر کی .

" کسی کلین استری نے بد چلن بن کر اس کو جنم دیا ہوگا . نینا پورم کے کچھ لوگ ایسے بچوں کو خرید کر گذر کرتے ہیں . وہ سب بچے تو بڑے سندر ہوتے ہیں ." دوسرے وکیل نے کہا .

" ہاں ہاں، ویسے ہی چور لڑکے مدراس میں بڑھتے جا رہے ہیں ." ایک سجن نے کہا .

× × × ×

" کرشنا ! ہماری بات مان لے . آگے سے نہ چرانے کا وعدہ کریگا تو اس بار تجھے معاف کر دینگے." مجسٹریٹ نے کہا .

ہاں، آپ جیسا کہتے ہیں ویسا ہی کروں گا" لڑکے نے کہا .

दौलत

(चक्रवर्ती राजगोपालाचारी)

प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट का इजलास हो रहा था. मंच पर दो जज विराजमान थे. एक सरकारी मुलाज़िम और दूसरे बे तनखा पाने वाले सलाहकार. नीचे की कुरसियों पर कुछ वकील और पुलीस के हाकिम बैठे थे. मुजरिम के कटघरे में एक लड़का खड़ा था.

"तेरे बाप का क्या नाम है ?"

"मेरे बाप नहीं हैं" लड़के ने जवाब दिया.

"कब मरे थे ?" मजिस्ट्रेट ने सहानुभूति प्रकट करते हुए पूछा.

"मरे नहीं! मेरे पिता थे ही नहीं !" लड़के ने कहा.

दोनों हाकिम हंस पड़े.

"तेरी उम्र क्या है ?" पेशकार ने पूछा और लिखना शुरू किया.

"दस साल"

"नाम !"

"ओवर्स कृष्नन्"

"ओवर्स का क्या माने होता है ?"

"मुझे लोग उसी नाम से पुकारते हैं."

"ऐसा नाम क्यों रखा गया ? यह मालूम है ?" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने बीच में पूछा.

"मेरी मां को—नहीं जी, मुझे पालने वाली मां के एक अपना बेटा था और दूसरा पालतू. दोनों मुझसे उम्र में बड़े थे. उनके नाम भी कृष्नन् थे—बड़ा कृष्नन् और छोटा कृष्नन्. मैं उनकी देख रेख करता था इसलिये मां ने मुझे मिस्त्री कृष्नन के नाम से पुकारा. बड़े कृष्नन् को यह बात पसन्द नहीं आई; वह रो उठा. वह तो सगा बेटा था न !"

"यह तुझे कैसे मालूम हुआ कि वह सगा बेटा है ?" आनरेरी मजिस्ट्रेट ने पूछा.

"वह जो कुछ कहना चाहता है उसे कहने दीजिये. बीच में दखल न दीजिये." मजिस्ट्रेट ने धीरे से कहा पर उनकी आवाज़ में ज़ोर था.

دولت

(چکرورتی راج گوپالاچاری)

پریسیڈینسی مجسٹریٹ کا اجلاس ہو رہا تھا. منچ پر دو جج وراجمان تھے . ایک سرکاری ملازم اور دوسرے بےتنخواہ پانے والے صلاح‌کار . نیچے کی کرسیوں پر کچھ وکیل اور پولیس کے حاکم بیٹھے تھے. مجرم کے کٹگھرے میں ایک لڑکا کھڑا تھا .

" تیرے باپ کا کیا نام ہے ؟"

" میرے باپ نہیں ہیں" لڑکے نے جواب دیا .

" کب مرے تھے؟" مجسٹریٹ نے سہانوبھوتی پرکٹ کرتے ہوئے پوچھا .

" مرے نہیں ! میرے پتا تھے ہی نہیں !" لڑکے نے کہا .

دونوں حاکم ہنس پڑے .

" تیری عمر کیا ہے ؟" پیشکار نے پوچھا اور لکھنا شروع کیا .

" دس سال "

" نام ! "

" اوورس کرشنن "

" اوورس کا کیا معنی ہوتا ہے ؟"

" مجھے لوگ اُسی نام سے پکارتے ہیں ."

" ایسا نام کیوں رکھا گیا . یہ معلوم ہے ؟" آنریری مجسٹریٹ نے بیچ میں پوچھا .

" میری ماں کو—نہیں جی، مجھے پالنے والی ماں کے ایک اپنا بیٹا تھا اور دوسرا پالتو . دونوں مجھ سے عمر میں بڑے تھے . اُن کے نام بھی کرشنن ہے—بڑا کرشنن اور چھوٹا کرشنن . میں اُن کی دیکھ ریکھ کرتا تھا اِس لئے ماں نے مجھے مستری کرشنن کے نام سے پکارا . بڑے کرشنن کو یہ بات پسند نہیں آئی؛ وہ رو اُٹھا . وہ تو سگا بیٹا تھا نہ !"

" یہ تجھے کیسے معلوم ہوا کہ وہ سگا بیٹا ہے؟ " آنریری مجسٹریٹ نے پوچھا .

" وہ جو کچھ کہنا چاہتا ہے اُسے کہنے دیجئے . بیچ میں دخل نہ دیجئے ." مجسٹریٹ نے دھیرے سے کہا پر اُن کی آواز میں زور تھا .

न कहीं, कभी न कभी, किसी न किसी ने गढ़ा ही था तब ही तो वह किसी न किसी ज़बान में मशहूर हो कर उसका जुज़ बन गया ? आख़िर लफ़्ज़ है क्या ? एक आवाज़ है जिसके माने ख़ुद इस लफ़्ज़ में नहीं होते. अगर हम पानी को टानी कहें और दूध को मनजा तो टानी के माने उस चीज़ के होंगे जिससे हम अपनी प्यास बुझाते हैं, और मनजा से मुराद वह चीज़ होगी जिससे घी, मक्खन वग़ैरा बनता है.

लफ़्ज़ों के गढ़ने में कोई बुराई नहीं. अलबत्ता इनकी आवाज़ें ऐसी होनी चाहिये जो हमारी भाषा के सुभाव से मेल पैदा कर सकें; जिनमें हर दिल प्रेम पन हो याने जनता में मक़बूलियत का माद्दा. नये लफ़्ज़ों की तैदाद में धीरे धीरे ही इज़ाफ़ा करना चाहिये ताकि वह हमारी भाषा में कसरते इस्तेमाल से घुल मिल सकें और उनके समझने में दुश्वारी न हो.

बिलकुल नये लफ़्ज़ों के बनाने की यह तरकीब हो सकती है कि जो लफ़्ज़ और नाम ग़ैर इरादी तौर पर हमारी भाषा में बनाए गए थे और अब हमारी ज़बान का जुज़ बन गए हैं उन्हीं के नमूने या आधार पर नये नये मसदर, नाम वग़ैरा गढ़े जायं. मसलन मैंने एक दरख़्त को जो पीपल से मिलता जुलता है एपल नाम दिया है. नीम हमारे देस का मशहूर दरख़्त है. जमधर एक हथियार का नाम है. भाषाई ज़ौक़ और एहतियात से काम लेते हुए हम इन लफ़्ज़ों के आधार पर बीसियों नये नये लफ़्ज़ बना सकते हैं जो हमारी ज़बान में खप सकते हैं.

हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा हिन्दुस्तानी को बनाना चाहिये जो न संस्कृत के सांचे में ढाली हुई हिन्दी हो और न फ़ारसी के सांचे में ढाली हुई उरदू, बल्कि दोनों का एक ख़ूबसूरत संगम हो जिस में मुल्क की अलग अलग ज़बानों से बल्कि ग़ैर मुल्की ज़बानों से शब्द बे झिझक लिये जायं. अपने को सिर्फ़ हिन्दी या उरदू तक संकुचित रखना अपराध और देश भक्ति के ख़िलाफ़ एक जुर्म होगा.

—महात्मा गांधी

('हरिजन' 5 अक्तूबर सन 47)

نہ کہیں کبھی نہ کبھی کسی نہ کسی نے گڑھا ہی تھا، تبھی تو وہ کسی نہ کسی زبان میں مشہور ہو کر اس کا جز بن گیا ؟ آخر لفظ ہے کیا ؟ ایک آواز ہے جس کے معنی خود اس لفظ میں نہیں ہوتے ۔ اگر ہم پانی کو ٹانی کہیں اور دودھ کو منجا تو ٹانی کے معنے اس چیز کے ہوں گے جس سے ہم اپنی پیاس بجھاتے ہیں، اور منجا سے مراد وہ چیز ہوگی جس سے گھی، مکھن وغیرہ بنتا ہے ۔

لفظوں کے گڑھنے میں کوئی برائی نہیں البتہ ان کی آوازیں ایسی ہونی چاہئیں جو ہماری بھاشا کے سبھاؤ سے میل پیدا کر سکیں؛ جن میں ہر دل پریم ہی ہو یانے جنتا میں مقبولیت کا مادا ۔ نئے لفظوں کی تعداد میں دھیرے دھیرے ہی اضافہ کرنا چاہئے تاکہ وہ ہماری بھاشا میں کثرت استعمال سے گھل مل سکیں اور ان کے سمجھنے میں دشواری نہ ہو ۔

بالکل نئے لفظوں کے بنانے کی یہ ترکیب ہو سکتی ہے کہ جو لفظ اور نام غیر ارادی طور پر ہماری بھاشا میں بنائے گئے تھے اور اب ہماری زبان کا جز بن گئے ہیں انہیں کے نمونے یا آدھار پر نئے مصدر، نام وغیرہ گڑھے جائیں ۔ مثلاً میں نے ایک درخت کو جو پیپل سے ملتا جلتا ہے ایپل نام دیا ہے ۔ نیم ہمارے دیش کا مشہور درخت ہے ۔ جمدھر ایک ہتھیار کا نام ہے ۔ بھاشائی ذوق اور احتیاط سے کام لیتے ہوئے ہم ان لفظوں کے آدھار پر بیسیوں نئے نئے لفظ بنا سکتے ہیں جو ہماری زبان میں کھپ سکتے ہیں ۔

ہندستان کی راشٹر بھاشا ہندستانی کو بنانا چاہئے جو نہ سنسکرت کے سانچے میں ڈھلی ہوئی ہندی ہو اور نہ فارسی کے سانچے میں ڈھلی ہوئی اردو، بلکہ دونوں کا ایک خوبصورت سنگم ہو جس میں ملک کی الگ الگ زبانوں سے بلکہ غیر ملکی زبانوں سے شبد بے جھجک لئے جائیں ۔ اپنے کو صرف ہندی یا اردو تک سنکچت رکھنا مکل اور دیش بھکتی کے خلاف ایک جرم ہوگا ۔

—مہاتما گاندھی

('ہریجن' 5 اکتوبر سن 47)

11. जान जोखम : इज्ज़त के लिये ख़तरा

अगरचे यह सब लफ़्ज़ अच्छे और बाज़ बहुत अच्छे हैं मगर यह सब इन ही असूलों पर बनाए गए हैं जिनकी टीका पिछले सफ़ों में हो चुकी है. यानी चालू लफ़्ज़ों से नया लफ़्ज़ बनाना, जुड़वाँ लफ़्ज़ बनाना या दूसरे लफ़्ज़ बनाना. इनकी और भी मिसालें हैं जो मेरी नज़र से गुज़री हैं या मैंने कहीं सुनी थीं या ख़ुद मुझे सूझी थीं :

धन काज—वह अमल या कोशिश जो हम दौलत हासिल करने के लिये करते हैं.

धर्म काज—वह अमल या कोशिश जो हम ख़ुदा या मज़हब की ख़ातिर करते हैं.

राज काज—वह काम काज जो हकूमत को बदलने या बेहतर बनाने की ख़ाहिश से या हकूमत हासिल करने या बरक़रार रखने के लिये किया जाता है.

मन काज—वह काम जो हम दिल की ख़ातिर करते हैं.

दुबदुबिया वह शख़्स जिसका काम काज या वाक़फ़ियत बिलकुल मामूली बल्कि घटिया हो.

अबपतिया—अलिफ़ (الف) बे (ب) पे (پ) ते (ت) पढ़ने वाला. नौसिख.

आसेबिन—वह औरत जिस पर भूत का असर हो.

सुलक्कड़—बहुत जल्द जल्द सोने वाला. भुलक्कड़ के आधार पर.

मनदुरुस्ती—मन + दुरुस्ती—तन्दुरुस्ती के वज़न पर; इस लफ़्ज़ के माने ख़ुद ज़ाहिर हैं.

नये नये लफ़्ज़ों की इतनी मिसालें देने के बाद भी सौ फ़ी सैकड़ा नये नये लफ़्ज़ों की ज़रूरत इसलिये होती है कि बाज़ चीज़ें जो हमारे अतराफ़ हम देख सकते हैं, या हम ख़ुद अपने में महसूस करते हैं या क़ुदरत की पैदावार हैं, इनके लिये अब तक कोई नाम या लफ़्ज़ हमारी ग़फ़लत, कम ज़ौक़ी या कम समझी के कारन नहीं रखे गए थे.

हैदराबाद के अतराफ़ में पाए जाने वाले बाज़ ख़ुद उगाऊ दरख़्तों के लिये मैंने यह नाम दिये हैं : अंझल (अनझल), सिम्सर (सिमसर), दंदूर (बदज़ुम अंगूर) दिनेनी (दिनएनी); और इन फूलों को जिनसे जाबजा तख़्ते के तख़्ते भरे रहते हैं और बहार में कसरत से दिखाई देते हैं, मैंने चिन्तारे का नाम दिया है

बाज़ लोग लफ़्ज़ गढ़ने के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. वह कहते हैं कि यह तो कोई बात न हुई कि हर नई चीज़ या विशेषता के लिये हम एक लफ़्ज़ गढ़ लें ? मैं कहता हूं कि आख़िर इसमें हरज ही क्या है. [illegible] आख़िर कहीं

11. مان جوکھم : عزت کے لئے خطرہ

اگرچہ یہ سب لفظ اچھے اور باز بہت اچھے ہیں مگر سب ان ہی اصولوں پر بنائے گئے ہیں جن کی ٹیکا پہلے صفحوں میں ہو چکی ہے . یانے چالو لفظوں سے نیا لفظ بنانا' جڑواں لفظ بنانا یا دوسرے لفظ بنانا . ان کی اور بھی مثالیں ہیں جو میری نظر سے گزری ہیں یا میں نے کہیں سنی تھیں یا خد مجھے سوجھی تھیں؛

دھن کاج = وہ عمل یا کوشش جو ہم دولت حاصل کرنے کے لئے کرتے ہیں .

دھرم کاج = وہ عمل یا کوشش جو ہم خدا یا مذہب کی خاطر کرتے ہیں .

راج کاج = وہ کام کاج جو حکومت کو بدلنے یا بہتر بنانے کی خواہش سے یا حکومت حاصل کرنے یا قرار رکھنے کے لئے کیا جاتا ہے .

من کاج = وہ کام جو ہم دل کی خاطر کرتے ہیں .

ددبدیا = وہ شخص جس کا کام کاج یا واقفیت بلکل معمولی بلکہ گھٹیا ہو .

ابپتیا = ا ب پ ت پڑھنے والا نو سکھ .

آسیبن = وہ اورت جس پر بھوت کا اثر ہو .

سلکڑ = بہت جلد جلد سونے والا—بھلکڑ کے آدھار پر

مندرستی = من + درستی؛ تندرستی کے وزن پر؛ اس لفظ کے مانے خد ظاہر ہیں .

نئے نئے لفظوں کی اتنی مثالیں دینے کے باد بھی سو فی سیکڑہ نئے نئے لفظوں کی ضرورت اس لئے ہوتی ہے کہ باز چیزیں جو ہمارے اطراف ہم دیکھ سکتے ہیں' یا ہم خد اپنے میں محسوس کرتے ہیں یا قدرت کی پیداوار ہیں' ان کے لئے اب تک کوئی نام یا لفظ ہماری غفلت' کم ذوقی یا کم سمجھی کے کارن نہیں رکھے گئے تھے .

حیدرآباد کے اطراف میں پائے جانے والے باز خد اگاؤ درختوں کے لئے میں نے یہ نام دئے ہیں : انجھل (ان جھل)' سمسر (سم سر)' دندور (بدزبان انگور)' دینی (دن لے نی)' اور ان پھولوں کو جن سے جا بجا تختے کے تختے بھرے رہتے ہیں اور بہار میں کثرت سے دکھائی دیتے ہیں' میں نے چنتارے کا نام دیا ہے .

باز لوگ لفظ گھڑنے کے بلکل خلاف ہیں . وہ کہتے ہیں کہ یہ تو کوئی بات نہ ہوئی کہ ہر نئی چیز یا وشیشتا کے لئے ہم ایک لفظ گڑھ لیں ؟ میں کہتا ہوں کہ آخر اس میں حرج ہی کیا ہے . ہر لفظ آخر کہیں

आम तौर पर बड़ी ख़ूबसूरत और बाज़ मरतबा दिलफ़रेब लगती है. इन फूलों वाली घास का कोई नाम नहीं. इसके अलावा दो तीन सफ़ेद जाम खुद उगाऊ दरख़्त हैं. इन्हें इनसानी ग़ारतगरी से बचाया जाय तो हैदराबाद के अतराफ़ की लाखों एकड़ पथरीली ज़मीन पर जंगल के जंगल बसाए जा सकते हैं. इत्तफ़ाक़ से कहीं कहीं यह दरख़्त बच जाते हैं जिन से उनके वजूद और फ़ायदे पन का सबूत मिलता है. इन दरख़्तों के भी कोई नाम नहीं.

हिन्दुस्तान के लिये जो Draft Constitution बना था उसके हिन्दी अनुवाद की तमहीद में लिखा था:—

"Uptil now Hindi infact every other language of India has been the vehicle of thoughts on subjects such as theologoy, poetry, history and the like...Hindi has never been used for making laws and drafting constitutions."

इन सब मिसालों से एक ही बात बार बार साबित होती है. वह यह कि हमारी भाषा को अनगिनत नये नये लफ़्ज़ों की ज़रूरत है. जहां कहीं जुड़वां और मिलवां लफ़्ज़ बनाने के बाद या हिन्दयावे से भी या किसी और उसूल को इख़्तियार करने के बाद भी काम नहीं चलता वहां मौज़ूं और अच्छे लफ़्ज़ों को गढ़ना ही पड़ेगा. इसके बिना कोई चारा नहीं. बिलकुल मजबूरी की सूरत में नई नई आवाज़ों के इज़हार से नये नाम सुझाने पड़ेंगे या नये लफ़्ज़ तजवीज़ करने पड़ेंगे.

पंडित ब्रजमोहन दत्ता तरया 'कैफ़ी' ने अपनी बढ़िया किताब "कैफ़िया" में यह नये लफ़्ज़ तजवीज़ किये हैं:—

1. अदबी नादारी : बे ज़रूरत दूसरी ज़बान के अदब से मदद लेने की रग़बत
2. अधूरा हाफ़ज़ा : पूरी बात याद न रखना
3. उड़नाऊ : हवाई जहाज़
4. भकड़ोल : भक से उड़ने वाली चीज़. ठिठोल के जोड़ पर
5. जान अनजानपन : तजाहिल आरफ़ाना
6. तिलंजन : तेल से चलने वाला इंजन
7. ज़िन्दगी का ढलवां हिस्सा : जवानी के ख़तम के क़रीब की उमर
8. गंगा जमनी सलूक : वह सलूक जो एकसा या यकसां न हो.
9. गुलाबी जज़्बात : अध गरम या कमज़ोर जज़्बे जैसे गुलाबी जाड़ा.
10. लाम बन्दी : जंग में जाने की तैयारियां

آم تور پر بڑی خوبصورت اور باز مرتبہ دلفریب لگتی ھے ۔ اس پھولوں والی گھاس کا کوئی نام نہیں اس کے الوا دو تین سفید جان خد اگاؤ درخت ھیں ۔ انھیں انسانی غارت گری سے بچایا جائے تو حیدرآباد کے اطراف کی لاکھوں ایکڑ پتھریلی زمین پر جنگل کے جنگل بسائے جاسکتے ھیں۔ اتفاق سے کہیں کہیں یہ درخت بچ جاتے ھیں جن سے ان کے وجود اور فایدے پن کا ثبوت ملتا ھے۔ ان درختوں کے بھی کوئی نام نہیں ۔

ھندستان کے لئے جو Draft Constitution بنا تھا' اس کے ھندی انوواد کی تمہید میں لکھا تھا :—

"Uptil now Hindi infact every other language of India has been the vehicle of thoughts on subjects such as theologoy, poetry, history and the like......Hindi has never been used for making laws and drafting constitutions."

ان سب مثالوں سے ایک ھی بات بار بار ثابت ھوتی ھے۔ وہ یہ کہ ھماری بھاشا کو انگنت نئے نئے لفظوں کی ضرورت ھے۔ جہاں کہیں جڑواں اور ملواں لفظ بنانے کے باد یا ھندیاوے سے بھی یا کسی اور اصول کو اختیار کرنے کے باد بھی کام نہیں چلتا وھاں موزوں اور اچھے لفظوں کو گھڑنا ھی پڑیگا۔ اس کے بنا کوئی چارا نہیں ۔ بلکل مجبوری کی صورت میں نئی نئی آوازوں کے اظہار سے نئے نام سجھانے پڑینگے یا نئے لفظ تجویز کرنے پڑینگے ۔

پنڈت برجموھن دتا ریہ 'کیفی' نے اپنی بڑھیا کتاب "کیفیہ" میں یہ نئے لفظ تجویز کئے ھیں:—

1. ادبی ناداری : بے ضرورت دوسری زبان کے ادب سے مدد لینے کی رغبت ۔
2. ادھورا حافظہ : پوری بات یاد نہ رکھنا ۔
3. اڑناؤ : ھوائی جہاز
4. بھکڑول : بھک سے اڑنے والی چیز ۔ ٹھٹول کے جوڑ پر ۔
5. جان انجان پن : تجاھل عارفانہ
6. تلنجن : تیل سے چلنے والا انجن'
7. زندگی کا ڈھلواں حصہ : جوانی کے ختم کے قریب کی عمر ۔
8. گنگا جمنی سلوک : وہ سلوک جو ایک سا یا یکساں نہ ھو ۔
9. گلابی جذبات : ادھ گرم یا کمزور جذبے جیسے گلابی جاڑا ۔
10. لام بندی : جنگ میں جانے کی تیاریاں

पहलुओं को या एक ही रंग की मुख़्तलिफ़ गहराइयों को ज़ाहिर करते हैं. मिसाल के तौर पर Liberty, Freedom, Independece के लिये उरदू में सिर्फ़ आज़ादी और हिन्दी स्वतंत्रता इस्तेमाल होता है. जब कभी कोई ऐसा जुमला आता है.

"Freedom does not exist even in all independent countries" तो बड़ी दिक़्क़त आ पड़ती है और अनुवादक को अपनी भाषा में ठीक शब्दों की कमी का अहसास होता है.

मरने से ज़ियादा आम और क्या हक़ीक़त हैं ? सदियों से नहीं हज़ारों बरस से हमारे मुल्क में मुरदों के जलाने की रसम चली आ रही है फिर भी Cremation के लिये कोई आम समझ लफ़्ज़ हमारी ज़बानों में नहीं है.

दूध की तमाम शकलों को ज़ाहिर करने के लिये हमारे पास लफ़्ज़ हैं–Frost पाला, Fog कोहरा, Mist धुन्ध, मगर Beef, Mutton, Ham के लिये हमारी ज़बान में मुरादफ़े न होने के कारन हमें मजबूर हो कर गाय का गोश्त, बकरे का गोश्त, सूअर का गोश्त कहना पड़ता है.

यहां तक भी ग़नीमत है क्योंकि बुरे भले बहरहाल किसी न किसी तरह मतलब ज़ाहिर हो ही जाता है मगर दिल दिमाग़ की कैफ़ियतों को ज़ाहिर करने के लिये और इनसानी सीरत की विशताएं बताने के लिये हमारे पास लफ़्ज़ ही नहीं हैं.

वह कौन है जिस में अपनी तारीफ़ सुनने की ख़ाहिश नहीं ? अपने वजूद को ज़ाहिर करने की तड़प नहीं ? 'ख़ुदनुमाई', 'बनाव' सिंघार', 'शेख़ी' 'फ़ख़्र' वग़ैरा सब इसी एक दिली लगन से संबन्ध रखते हैं. फिर भी हमारी भाषा में कोई ऐसा शब्द नहीं जैसे अंगरेज़ी में Vanity या जरमन में Eilelkeiet है. आख़िर में इन बराबरों पर ध्यान दीजिये और इनके लिये आम समझ या मशहूर उरदू हिन्दी शब्द बताइये :

Analogy, Example, Command, Order, Derision, Banter, Raillery, Burlesque, Mockery, Irony, Satire, Tribe, Clan, Jens, Retaliation, Retribution, Vendetta, Trend, Tendency, Inclivation, Trait, Vitality, Energy, Vocation, Profession.

इन लफ़्ज़ों को भी जाने दीजिये. हमारे देस के कितने दरख़्त (पेड़) हैं जो हम हज़ारों बरस से देखते चले आए हैं मगर इनके कोई नाम ही नहीं ! हैदराबाद के चारों तरफ़ जहां कहीं ठीक जगह मिल जाती है बारिश में बिलकुल छोटे छोटे फूलों वाली घास निकल आती है जो

پہلوؤں کو یا ایک ہی رنگ کی مختلف گہرائیوں کو ظاہر کرتے ہیں۔ مثال کے طور پر Liberty, Freedom, Independence کے لئے اردو میں صرف آزادی اور ہندی میں سوتنترتا استعمال ہوتا ہے . جب کبھی کوئی ایسا جملہ آتا ہے—

"Freedom does not exist even in all independent countries" تو بڑی دقت آ پڑتی ہے اور انوادک کو اپنی بھاشا میں ٹھیک شبدوں کی کمی کا احساس ہوتا ہے .

مرنے سے زیادہ عام اور کیا حقیقت ہے؟ صدیوں سے نہیں ہزاروں برس سے ہمارے ملک میں مردوں کے جلانے کی رسم چلی آ رہی ہے۔ پھر بھی Cremation کے لئے کوئی عام سمجھ لفظ ہماری زبان میں نہیں ہے .

دودھ کی تمام شکلوں کو ظاہر کرنے کے لئے ہمارے پاس لفظ ہیں—Frost پالا، Fog کہرا، Mist دھندھ، مگر Beef, Mutton, Ham کے لئے ہماری زبان میں مرادفے نہ ہونے کے کارن ہمیں مجبور ہو کر گائے کا گوشت، بکرے کا گوشت، سور کا گوشت کہنا پڑتا ہے .

یہاں تک بھی غنیمت ہے کیوں کہ برے بھلے بہر حال کسی نہ کسی طرح مطلب ظاہر ہو ہی جاتا ہے مگر دل دماغ کی کیفیتوں کو ظاہر کرنے کے لئے اور انسانی سیرت کی وشیشتائیں بتانے کے لئے ہمارے پاس لفظ ہی نہیں ہیں .

وہ کون ہے جس میں اپنی تعریف سننے کی خواہش نہیں ؟ اپنے وجود کو ظاہر کرنے کی تڑپ نہیں ؟ 'خودنمائی' 'بناؤ سنگھار' 'شیخی' 'فخر' وغیرہ سب اسی ایک دلی لگن سے سمبندھ رکھتے ہیں۔ پھر بھی ہماری بھاشا میں کوئی ایسا شبد نہیں جیسے انگریزی میں Vanity یا جرمن میں Eilelkeiet ہے۔ آخر میں ان برابروں پر دھیان دیجئے اور ان کے لئے عام سمجھ یا مشہور اردو ہندی شبد بتائیے:

Analogy, Example, Command, Order Derision, Banter, Raillery, Burlesque, Mockery, Irony, Satire, Tribe, Clan, Jens, Retaliation, Retribution, Vendetta, Trend, Tendency, Inclivation, Trait, Vitality, Energy, Vocation, Profession.

ان لفظوں کو بھی جانے دیجئے۔ ہمارے دیس کے کتنے درخت (پیڑ) ہیں جو ہم ہزاروں برس سے دیکھتے چلے آئے ہیں مگر ان کے کوئی نام ہی نہیں ! حیدرآباد کے چاروں طرف جہاں کہیں ٹھیک جگہ مل جاتی ہے بارش میں بالکل چھوٹے چھوٹے پھولوں والی گھاس نکل آتی ہے جو

जब चाहती है कि आदमी अपने ऊपर आगे की नसलों की ज़िम्मेदारी को समझे और उसे पूरा करे. अंगरेज़ कवि ब्राउनिंग ने कहा है:—"स्त्री होने के मानी ही मां होना है. दुनिया का सारा प्रेम मां के साथ ही शुरू होता है और आख़ीर में चारों तरफ़ घूम कर वहीं ख़तम होता है. इनसानी प्रेम दुनिया भर का चक्कर काट कर आख़िर घर के अन्दर आ कर आराम लेता है."

چاہتی ہے کہ آدمی اپنے اوپر آگے کی نسلوں کی ذمہداری کو سمجھے اور اسے پورا کرے . انگریز کوی براؤننگ نے کہا ہے :—'' استری ہونے کے معنی ہی ماں ہونا ہے . دنیا کا سارا پریم ماں کے ساتھ ہی شروع ہوتا ہے اور آخیر میں چاروں طرف گھوم کر وہیں ختم ہوتا ہے . انسانی پریم دنیا بھر کا چکر کاٹ کر آخر گھر کے اندر آ کر آرام لیتا ہے ."

हिन्दुस्तानी शब्दयात का नवां असूल : नये नये लफ़्ज़

(डाक्टर ज़ाकिर हुसैन)

अकबर इलाहाबादी पिछली पीढ़ी के बड़े शायरों में से थे. उन्होंने सूदी की अंगरेज़ी कविता "The Waters of Loder" का तरजुमा किया है. इस तरजुमे में तमहीद (भूमिका) के तौर पर उन्होंने लिखा है कि अंगरेज़ी शायर को—

मुनासिब जो इंगलिश मसादर (क्रियाएं) मिले
मुक़फ़्फ़ा (तुकदार) किये उनके सब सिलसिले
यह इसरार करते हैं भाई हसन
कि मैं भी हूं इस बहर में ग़ोता ज़न
अजब है नहीं इनकी उस पर नज़र
कुजा मैं कुजा सूदी नामवर
सिवा इसके हैं और भी मुशकिलें
नहीं सहल इस राह की मंज़िलें
मेरे पास सरमाया काफ़ी नहीं
वह मसदर नहीं, वह क़वाफ़ी (जानकारी) नहीं

इस लाजवाब तमहीद में (जिस से बेहतर तमहीद मुझे हिन्दी, अंगरेज़ी और जरमन कविता में नहीं मिली) अकबर ने बड़ी सच्ची बात कही है और शायराना अन्दाज़ में सिर्फ़ इस बात को ज़ाहिर किया है कि हमारी भाषा कंगाल है. इसमें दुनिया की चीज़ों और दिल की बातों को ज़ाहिर करने की शक्ति नहीं.

ज़बान की मुफ़लिसी (ग़रीबी) का सबूत इन लफ़्ज़ों से भी मिलता है जो बिलकुल एक ही चीज़ के मुख़्तलिफ़

هندستانی شبدیات کا نواں اسول : نئے نئے لفز

(ڈاکٹر ذاکر حسین)

اکبر الہ آبادی پچھلی پیڑھی کے بڑے شاعروں میں سے تھے . انہوں نے سودی کی انگریزی کویتا 'The Waters of Loder' کا ترجمہ کیا ہے . اس ترجمے میں تمہید (بھومیکا) کے طور پر انہوں نے لکھا ہے کہ انگریزی شاعر کو—

مناسب جو انگلش مصادر (کریائیں) ملے
مقفا (تک دار) کئے اُن کے سب سلسلے
یہ اصرار کرتے ہیں بھائی حسن
کہ میں بھی ہوں اس بحر میں غوطہ زن
عجب ہے نہیں اُن کی اس پر نظر
کجا میں کجا سودی نامور
سوا اس کے ہیں اور بھی مشکلیں
نہیں سہل اس راہ کی منزلیں
میرے پاس سرمایہ کافی نہیں
وہ مصدر نہیں، وہ قوافی (جانکاری) نہیں

اس لاجواب تمہید میں (جس سے بہتر تمہید مجھے ہندی، انگریزی اور جرمن کویتا میں نہیں ملی) اکبر نے بڑی سچی بات کہی ہے اور شاعرانہ انداز میں صرف اس بات کو ظاہر کیا ہے کہ ہماری بھاشا کنگال ہے . اس میں دنیا جہان کی چیزوں اور دل کی باتوں کو ظاہر کرنے کی شکتی نہیں .

زبان کی مفلسی (غریبی) کا ثبوت ان لفظوں سے بھی ملتا ہے جو بالکل ایک ہی چیز کے مختلف

इसमें शक नहीं कि शादी की एक ग़रज़ यह भी है कि दोनों एक दूसरे से सुख भोगें. लेकिन इससे कहीं बढ़ कर ग़रज़ शादी की यह है कि दोनों मिल कर अपने अन्दर के ख़ालिक़ या ईश्वर को पहचानें और आगे की नसलों के लिये दोनों सच्चे बाप और सच्ची मां बनें. इसी ग़रज़ के लिये आदमी को आदमी और औरत को औरत बनाया गया है.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है:—

"शादी का हुक्म इसलिये दिया गया है ताकि दोनों बुराई से बचे रहें. दोनों में से किसी की ताक़त ज़ाया न जाय और दोनों का किरदार पाक रहे."

चीनी महात्मा कनफ़ूशियस ने कहा है कि:—

"जहां कहीं पति और पत्नी में सच्चा मेल होता है वहां मां बाप और बच्चों सब में प्रेम रहता है. वहां भाइयों और बहनों में मिठास और मुहब्बत रहती है. सारा घर ख़ुश रहता है. इस तरह के एक घर की मिसाल से सारे पास पड़ोस में प्रेम बढ़ता है. इसका असर सारे देश पर पड़ता है."

कलचर और मज़हब दोनों के लिये चीनी शब्द चियाओ (Chiao) है. यह चियाओ जिस शब्द से निकला है उसके माने हैं 'माता पिता से प्रेम और उनकी सेवा'. कनफ़ूशियस ने इस बारे में लिखा है :—

"हर शरीफ़ आदमी मां बाप की सेवा की इसलिये सलाह देता है ताकि आदमी उन सब लोगों की इज़्ज़त करें जो दुनिया में किसी के बाप हैं. छोटे भाइयों को बड़े भाई का मान रखने की इसीलिये आज्ञा दी जाती है ताकि दुनिया के सब भाइयों का मान हो. उनमें प्रेम हो. जो लोग अपने मां बाप से प्रेम करते हैं और उनकी इज़्ज़त करते हैं वह दूसरों के साथ नफ़रत या गुसताख़ी नहीं कर सकते. मां बाप के साथ अच्छा बरताव सारी नेकी कि जड़ है यही कलचर की बुनियाद है. मां बाप के साथ अच्छे बरताव का ही आख़री नतीजा यह है कि आदमी ठीक काम करे और ठीक सदाचार से रहे जिससे आगे आने वाली नसलों के लिये एक मिसाल क़ायम रहे और दुनिया के बुज़ुरगों का सच्चा मक़सद पूरा हो."

सन 1914-18 की बड़ी जंग के बाद दुनिया में बेशरमी का एक ख़ौफ़नाक तूफ़ान आया. जिन्सी ख़ाहिशें यानी कामवासनायें नंगा नाच नाचने लगीं, लोग शादी की असल ज़िम्मेदारी से बचने और साथ ही अपनी काम वासनाओं को पूरा करने के लिये दवाओं और बनावटी तरीक़ों का खुले इस्तेमाल करने लगे. यह तूफ़ान एक नापाक और ज़हरीला तूफ़ान है. लेकिन पच्छिम के अच्छे विचारकों और नेक अदीबों ने भी इस बात को अच्छी तरह समझा है कि शादी का सबसे मीठा और रूहानी

اس میں شک نہیں شادی کی ایک غرض یہ بھی ہے کہ دونوں ایک دوسرے سے سکھ بھوگیں ۔ لیکن اس سے کہیں بڑھ کر غرض شادی کی ہے کہ دونوں مل کر اپنے اندر کے خالق یا ایشور کو پہچانیں اور آگے کی نسلوں کے لئے دونوں سچے باپ اور سچی ماں بنیں ۔ اسی غرض کے لئے آدمی کو آدمی اور عورت کو عورت بنایا گیا ہے ۔

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے:—

" شادی کا حکم اس لئے دیا گیا ہے تاکہ دونوں برائی سے بچے رہیں ۔ دونوں میں سے کسی کی طاقت ضائع نہ جائے اور دونوں کا کردار پاک رہے ۔"

چینی مہاتما کنفیوشس نے کہا ہے کہ :—

" جہاں کہیں پتی اور پتنی میں سچا میل ہوتا ہے وہاں ماں باپ اور بچوں سب میں پریم رہتا ہے ۔ وہاں بھائیوں اور بہنوں میں مٹھاس اور محبت رہتی ہے ۔ سارا گھر خوش رہتا ہے ۔ اس طرح کے ایک گھر کی مثال سے سارے پاس پڑوس میں پریم بڑھتا ہے ۔ اس کا اثر سارے دیش پر پڑتا ہے ۔"

کلچر اور مذہب دونوں کے لئے چینی شبد چیاؤ (Chiao) ہے ۔ یہ چیاؤ جس شبد سے نکلا ہے اس کے معنی ہیں 'ماتا پتا سے پریم اور ان کی سیوا ۔ کنفیوشس نے اس بارے میں لکھا ہے :—

" ہر شریف آدمی ماں باپ کی سیوا کی اس لئے صلاح دیتا ہے تاکہ آدمی ان سب لوگوں کی عزت کریں جو دنیا میں کسی کے باپ ہیں ۔ چھوٹے بھائیوں کو بڑے بھائی کا مان رکھنے کی اسی لئے آگیا دی جاتی ہے تاکہ دنیا کے سب بھائیوں کا مان ہو ۔ ان میں پریم ہو ۔ جو لوگ اپنے ماں باپ سے پریم کرتے ہیں اور ان کی عزت کرتے ہیں وہ دوسروں کے ساتھ نفرت یا گستاخی نہیں کر سکتے ۔ ماں باپ کے ساتھ اچھا برتاؤ ساری نیکی کی جڑ ہے ۔ یہی کلچر کی بنیاد ہے ۔ ماں باپ کے ساتھ اچھے برتاؤ کا ہی آخری نتیجہ یہ ہے کہ آدمی ٹھیک کام کرے اور ٹھیک سداچار سے رہے جس سے آگے آنے والی نسلوں کے لئے ایک مثال قائم رہے اور دنیا کے بزرگوں کا سچا مقصد پورا ہو ۔"

سن 1914-18 کی بڑی جنگ کے بعد دنیا میں بےشرمی کا ایک خوفناک طوفان آیا ۔ جنسی خواہشیں یعنی کام واسنائیں ننگا ناچ ناچنے لگیں ۔ لوگ شادی کی اصل ذمہ داری سے بچنے اور ساتھ ہی اپنی کام واسناؤں کو پورا کرنے کے لئے دواؤں اور بناوٹی طریقوں کا کھلے استعمال کرنے لگے ۔ یہ طوفان ایک ناپاک اور زہریلا طوفان ہے ۔ لیکن پچھم کے اچھے وچارکوں اور نیک ادیبوں نے بھی اس بات کو اچھی طرح سمجھا ہے کہ شادی کا سب سے میٹھا اور روحانی

हर धर्म के अन्दर इस पर भी जोर दिया गया है कि पति और पत्नी को एक दूसरे के साथ प्रेम का बरताव करना चाहिये और एक दूसरे से सच्चा रहना चाहिये. किसी दूसरी स्त्री या किसी दूसरे पुरुष की तरफ़ अपनी जिसमानी इच्छा पूरी करने की निगाह से नहीं देखना चाहिये. तभी लोग अपनी औलाद के लिये सच्चे मां बाप बन सकते हैं.

इनजील में लिखा है:—"पति और पत्नी शादी के बाद दो नहीं रह जाते बल्कि एक जिस्म हो जाते हैं. इसलिये जिन्हें अल्लाह ने मिला कर एक किया है उन्हें कोई आदमी एक दूसरे से अलग न करे."

मनु ने लिखा है कि :—"पति और पत्नी सह धर्मचारी हों यानी जिन्दगी के सारे काम मिल कर करें और मरते वक़्त तक और मरने के बाद भी एक दूसरे के साथ सच्चे और वफ़ादार रहें."

क़ुरान ख़ास सूरतों में एक आदमी को जियादा से जियादा चार शादी तक की इजाज़त देता है. लेकिन क़ुरान का साफ़ हुक्म है कि:—

"अगर तुम्हें यह डर है कि तुम अपनी सब बीवियों के साथ एक सा इनसाफ़ का बरताव नहीं कर सकोगे, और एक से जियादा बीवियों के भी साथ ठीक ठीक इनसाफ़ कर सकना तुम्हारी अपनी ताक़त से बाहर है, चाहे तुम कितनी भी चाहो, तो सिर्फ़ एक ही के साथ शादी करो, यही तुम्हारे लिये जियादा ठीक है ताकि तुम नेकी से डिगने न पाओ." (3–4, 139)

वेदान्त में और सांख्य शास्त्र में बताया गया है कि दुनिया की सारी रिश्तेदारियां ब्रह्म और माया यानी पुरुष और प्रकृति के शुरू के गठबंधन से शुरू होती हैं. इसलाम में इसी शुरू के गठबंधन को 'ज़ात और सिफ़ात' या 'आबाए उलूमी और उमहात सिफ़ली' का गठबंधन कहा गया है. दुनिया के सब जिसमानी और रूहानी रिश्ते इन्हीं शुरू के रिश्तों से निकले हैं.

पुरुष और स्त्री या पति और पत्नी का नाता इस तरह का है जिस तरह नदियां समन्दर में जा कर गिरती हैं, उन सबका पानी खारा हो जाता है. फिर समन्दर का पानी ऊपर उठता है. आसमान की धूप से नाता जोड़ता है, उसका खारीपन जाता रहता है और वह फिर मीठा हो कर जमीन पर बरसने लगता है और उन्हीं नदियों को फिर भर देता है. एक नेक और सच्ची पत्नी अपने प्रेम से अपने गिरे हुए पति को नरक या दोज़ख़ में से भी खींच कर उसी तरह बाहर निकाल लेती है जिस तरह सपेरा सांप को बिल में से जबरदस्ती खींच कर बाहर निकाल लेता है.

ہر دھرم کے اندر اس پر بھی زور دیا گیا ہے کہ پتی اور پتنی کو ایک دوسرے کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا چاہئے اور ایک دوسرے سے سچا رہنا چاہئے۔ کسی دوسری استری یا کسی دوسرے پرش کی طرف اپنی جسمانی اِچھا پوری کرنے کی نگاہ سے نہیں دیکھنا چاہئے۔ تبھی لوگ اپنی اولاد کے لئے سچے ماں باپ بن سکتے ہیں :

اِنجیل میں لکھا ہے :—" پتی اور پتنی شادی کے بعد دو نہیں رہ جاتے بلکہ ایک جسم ہو جاتے ہیں۔ اس لئے جنہیں اللہ نے ملا کر ایک کیا ہے اُنہیں کوئی آدمی ایک دوسرے سے الگ نہ کرے۔"

منو نے لکھا ہے کہ :—" پتی اور پتنی سہہ دھرم چاری ہوں یعنی زندگی کے سارے کام مل کر کریں اور مرتے وقت تک اور مرنے کے بعد بھی ایک دوسرے کے ساتھ سچے اور وفادار رہیں۔"

قرآن خاص صورتوں میں ایک آدمی کو زیادہ سے زیادہ چار شادی تک کی اجازت دیتا ہے۔ لیکن قرآن کا صاف حکم ہے کہ :—

" اگر تمہیں یہ ڈر ہے کہ تم اپنی سب بیویوں کے ساتھ ایک سا اور انصاف کا برتاؤ نہیں کر سکو گے، اور ایک سے زیادہ بیویوں کے ساتھ ٹھیک ٹھیک اِنصاف کر سکنا تمہاری اپنی طاقت سے باہر ہے، چاہے تم کتنا بھی چاہو، تو صرف ایک ہی کے ساتھ شادی کرو، یہی تمہارے لئے زیادہ ٹھیک ہے تاکہ تم نیکی سے ڈگنے نہ پاؤ۔"
.(3–4, 139)

ویدانت میں اور سانکھیہ شاستر میں بتایا گیا ہے کہ دنیا کی ساری رشتہ داریاں برہمہ اور مایا یعنی پرش اور پرکرتی کے شروع کے گٹھ بندھن سے شروع ہوتی ہیں۔ اِسلام میں اسی شروع کے گٹھ بندھن کو 'ذات اور صفات' یا 'آبائے علوی اور اُمہات سفلی' کا گٹھ بندھن کہا گیا ہے۔ دنیا کے سب جسمانی اور روحانی رشتے اِنہیں شروع کے رشتوں سے نکلے ہیں۔

پرش اور اِستری یا پتی اور پتنی کا ناتا اس طرح کا ہے جس طرح ندیاں سمندر میں جا کر گرتی ہیں، ان سب کا پانی کھارا ہو جاتا ہے۔ پھر سمندر کا پانی اوپر اُٹھتا ہے۔ آسمان کی دھوپ سے ناتا جوڑتا ہے، اس کا کھاری پن جاتا رہتا ہے اور وہ پھر میٹھا ہو کر زمین پر برسنے لگتا ہے اور اُنہیں ندیوں کو پھر بھر دیتا ہے۔ ایک نیک اور سچی پتنی اپنے پریم سے اپنے گرے ہوئے پتی کو نرک یا دوزخ میں سے بھی کھینچ کر اُسی طرح باہر نکال لیتی ہے جس طرح سپیرا سانپ کو بل میں سے زبردستی کھینچ کر باہر نکال لیتا ہے۔

मौलाना रूम ने कहा है :—

"सोहबत सालेह तुरा सालेह कुनद"

यानी—नेकों की सोहबत आदमी को नेक बनाती है.

महाभारत में, मनुस्मृति में और वेदों में गुरु, बाप और इन दोनों से कहीं ज़ियादा मां के बड़प्पन की जगह जगह चरचा की गई है.

ईश्वर के प्यारे नामों में अंगरेज़ी में 'फ़ादर इन हैवन' अरबी में बादी, ख़ालिक़, ईरानी में अब्बा, अम्मा, इसी तरह संस्कृत में लोक माता वग़ैरा नाम हैं. इस तरह के नाम पुराने मिसरी धर्म और दुनिया के सब धरमों में मिलते हैं.

बुध का सब से सुन्दर और सबसे ऊंचा उपदेश महा मंगल सुत्त कहलाता हैं जिसके मानी हैं सबसे अधिक मंगल यानी फ़िलाह का गीत. इस गीत में लिखा है:—

'गुमराही में पड़े हुए बुरे लोगों से बचना, विद्वानों की सेवा करना, जो इज़्ज़त के क़ाबिल हैं उनकी इज़्ज़त करना, नेक काम करना, मां बाप का आदर करना, अपनी स्त्री और बाल बच्चों की प्रेम के साथ देख रेख करना, अपनी आत्मा पर क़ाबू रखना, अपनी इच्छाओं को कम करना, ब्रह्मचर्य रखना, चार बड़ी सचाइयों यानी दुख, दुख का कारन, दुख को जीतना और दुख को जीतने का रास्ता, इन्हें निगाह में रख कर अपने रोज़ का जीवन बिताना और इस सीधे रास्ते पर चल कर अन्त में निरवान यानी निजात हासिल करना यही सब से बड़ी बहबूदी यानी कल्यान का रास्ता है."

गीता में भगवान ने कहा है:—

"इस जगत का मैं ही पिता हूं, मैं ही माता हूं, मैं ही दादा हूं, मैं ही मालिक हूं. मैं ही संभालने वाला हूं, मैं ही पालने वाला हूं, मुझ से ही यह दुनिया चल रही है, मैं ही इसे चलते देख रहा हूं, मैं ही इसका सहारा हूं. मेरे अन्दर ही यह ठहरी हुई है, मैं ही इसका पैदा करने वाला और मैं ही ख़तम करने वाला हूं, मैं ही इसका भला चाहने वाला हूं, मैं ही इसका शुरू और मैं ही इसका आख़ीर हूं, मैं ही इसका वह बीज हूं जो कभी नष्ट नहीं होता."

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"वह ईश्वर ही सबका पिता, सबका पति, सबका सेवक, सबका मालिक और वही सबका सखा है, वही सब कुछ है."

मुहम्मद साहब का मशहूर उपदेश है:—

"यह सारी ख़िलक़त अल्लाह का कुनबा है और इन सब में अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे के साथ सब से ज़ियादा नेकी करता है."

مولانا روم نے کہا ہے :—

"صحبت صالح ترا صالح کند"

یعنی—نیکوں کی صحبت آدمی کو نیک بناتی ہے .

مہابھارت میں، منوسمرتی میں اور ویدوں میں گرو، باپ اور ان دونوں سے کہیں زیادہ ماں کے بڑپن کی جگہ جگہ چرچا کی گئی ہے .

ایشور کے پیارے ناموں میں انگریزی میں فادر ان ہون، عربی میں بادی، خالق، ایرانی میں ابا، اما، اسی طرح سنسکرت میں لوک ماتا وغیرہ نام ہیں . اس طرح کے نام پرانے مصری دھرم اور دنیا کے سب دھرموں میں ملتے ہیں .

بدھ کا سب سے سندر اور سب سے اونچا اپدیش مہا منگل ست کہلاتا ہے جس کے معنی ہیں سب سے ادھک منگل یعنی فلاح کا گیت . اس گیت میں لکھا ہے:—

" گمراہی میں پڑے ہوئے برے لوگوں سے بچنا، ودوانوں کی سیوا کرنا، جو عزت کے قابل ہیں ان کی عزت کرنا، نیک کام کرنا، ماں باپ کا آدر کرنا، اپنی استری اور بال بچوں کی پریم کے ساتھ دیکھ ریکھ کرنا، اپنی آتما پر قابو رکھنا، اپنی اچھاؤں کو کم کرنا، برہمچریہ رکھنا، چار بڑی سچائیوں یعنی دکھ، دکھ کا کارن، دکھ کو جیتنا اور دکھ کو جیتنے کا راستہ، انہیں نگاہ میں رکھ کر اپنا روز کا جیون بتانا اور اس سیدھے راستے پر چل کر انت میں نروان یعنی نجات حاصل کرنا یہی سب سے بڑی بہبودی یعنی کلیان کا راستہ ہے ."

گیتا میں بھگوان نے کہا ہے :—

" اس جگت کا میں ہی پتا ہوں میں ہی ماتا ہوں، میں ہی دادا ہوں میں ہی مالک ہوں، میں ہی سنبھالنے والا ہوں، میں ہی پالنے والا ہوں، مجھ سے ہی یہ دنیا چل رہی ہے، میں ہی اسے چلتے دیکھ رہا ہوں، میں ہی اس کا سہارا ہوں، میرے اندر ہی یہ ٹھہری ہوئی ہے، میں ہی اس کا پیدا کرنے والا اور میں ہی ختم کرنے والا ہوں . میں ہی اس کا بھلا چاہنے والا ہوں، میں ہی اس کا شروع اور میں ہی اسکا آخیر ہوں، میں ہی اسکا وہ بیج ہوں جو کبھی نشٹ نہیں ہوتا ."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

" وہ ایشور ہی سب کا پتا، سب کا پتی، سب کا سیوک، سب کا مالک اور وہی سب کا سکھا ہے، وہی سب کچھ ہے ."

محمد صاحب کا مشہور اپدیش ہے :—

" یہ ساری خلقت اللہ کا کنبہ ہے اور ان سب میں اللہ کو سب سے پیارا وہ ہے جو اللہ کے اس کنبے کے ساتھ سب سے زیادہ نیکی کرتا ہے ."

और अपनी मां दोनों का आदर करो."

मोहम्मद साहब ने कहा है :—"अपने मां बाप की इज़्ज़त करो और उनकी सेवा करो. जन्नत हमेशा मांओं के पैरों के नीचे रहती है. अल्लाह कहता है कि जिस तरह तुम मेरे शुक्र गुज़ार हो उसी तरह अपने मां बाप के शुक्र गुज़ार बनो. याद करो कि तुम्हारी मां ने कितने दर्दों के साथ और दुख सह सह कर तुम्हें नौ महीने अपने पेट में रखा था और फिर कितनी तकलीफ़ से तुम्हें पैदा किया, तुम्हें पाला और बरसों अपना दूध पिला पिला कर तुम्हें बड़ा किया." (हदीस)

अल्लाह के नामों में अल रहमान, अल रज़्ज़ाक़ और अल ग़फ़्फ़ार उसके सब से प्यारे नाम हैं यानी दया करने वाला, रोज़ी देने वाला और माफ़ करने वाला. बच्चे के लिये मां से बढ़ कर रहमान, रज़्ज़ाक़ और ग़फ़्फ़ार और कौन है ? इसीलिये जहां मां का दिल है वहीं भगवान हैं. वहीं जन्नत है.

वेद में लिखा है :—

"आचार्य देवो भव पित्री देवो भव मात्री देवो भव,

प्रजा तंतुम मा विवेच्छत्सय:"

यानी—अपने उस्ताद को देवता की तरह समझो, अपने बाप को देवता की तरह समझो और सब से बढ़ कर अपनी मां को देवता की तरह समझो, इस तरह एक नसल से दूसरी नसल तक इस लगातार सिलसिले को टूटने न दो.

जिस लड़के या लड़की के दिल के अन्दर मां की तसवीर बैठी हुई है उस दिल को वह तसवीर बुराई और गुनाह की तरफ़ जाने से रोकती रहेगी और उसे सैकड़ों ख़तरों से बचा लेगी. जिस नसल के लोग अपने दिलों में अपने से पहले की नसल की इज़्ज़त नहीं करते और उनके शुक्र-गुज़ार नहीं होते वह कभी इस क़ाबिल भी न हो सकेंगे कि उनके बाद की नसल वाले ख़ुद उनकी इज़्ज़त कर सकें. इस तरह उस क़ौम में पिछले ज़माने, हाल के ज़माने और आगे के ज़माने में रिश्ता टूट जायगा और सारी क़ौम गिरावट की तरफ़ बढ़ने लगेगी. बहुत सी किताबों के पढ़ने से इतना लाभ नहीं होता और इतनी समझ नहीं आती जितनी सत्संग यानी नेक लोगों के पास बैठने से, उनकी बातें सुनने से और तजुरबेकार बुज़ुरगों की सेवा करने और उनके पास बैठने से आती है.

एक सूफ़ी ने कहा है—

"जवानां सोहबते पीरां हिसारे आफ़ियत बाशद"

यानी जवान लोगों के लिये बुज़ुर्गों की सोहबत में बैठना हिफ़ाज़त के क़िले में बैठना है.

اور اپنی ماں دونوں کا آدر کرو."

محمد صاحب نے کہا ہے :—"اپنے ماں باپ کی عزت کرو اور ان کی سیوا کرو. جنت ہمیشہ ماؤں کے پیروں کے نیچے رہتی ہے . اللہ کہتا ہے کہ جس طرح تم میرے شکرگزار ہو اسی طرح اپنے ماں باپ کے شکرگزار بنو . یاد کرو کہ تمہاری ماں نے کتنے دردوں کے ساتھ اور دکھ سہہ سہہ کر تمہیں نو مہینے اپنے پیٹ میں رکھا تھا اور پھر کتنی تکلیف سے تمہیں پیدا کیا. تمہیں پالا اور برسوں اپنا دودھ پلا پلا کر تمہیں بڑا کیا." (حدیث)

اللہ کے ناموں میں الرحمان، الرزاق اور الغفار اس کے سب سے پیارے نام ہیں یعنی دیا کرنے والا، روزی دینے والا اور معاف کرنے والا. بچے کے لئے ماں سے بڑھکر رحمان، رزاق اور غفار اور کون ہے ؟ اسی لئے جہاں ماں کا دل ہے وہیں بھگوان ہیں . وہیں جنت ہے .

وید میں لکھا ہے :—

"آچاریہ دیوو بھوپتری دیوو بھو ماتری دیوو بھو، پرجا تنتم ماویو چھیتسیہ ."

یعنی—اپنے استاد کو دیوتا کی طرح سمجھو، اپنے باپ کو دیوتا کی طرح سمجھو اور سب سے بڑھکر اپنی ماں کو دیوتا کی طرح سمجھو، اس طرح ایک نسل سے دوسری نسل تک اس لگاتار سلسلہ کو ٹوٹنے نہ دو .

جس لڑکے یا لڑکی کے دل کے اندر ماں کی تصویر بیٹھی ہوئی ہے اس دل کو وہ تصویر برائی اور گناہ کی طرف جانے سے روکتی رہے گی اور اسے سیکڑوں خطروں سے بچا لے گی. جس نسل کے لوگ اپنے دلوں میں اپنے سے پہلے کی نسل کی عزت نہیں کرتے اور ان کے شکرگزار نہیں ہوتے وہ کبھی اس قابل بھی نہ ہوسکیں گے کہ ان کے بعد کی نسل والے خود ان کی عزت کرسکیں . اسی طرح اس قوم میں پچھلے زمانے، حال کے زمانے اور آگے کے زمانے میں رشتہ ٹوٹ جائے گا اور ساری قوم گراوٹ کی طرف بڑھنے لگے گی . بہت سی کتابوں کے پڑھنے سے اتنا لابھ نہیں ہوتا اور اتنی سمجھ نہیں آتی جتنی ست سنگ یعنی نیک لوگوں کے پاس بیٹھنے سے، ان کی باتیں سننے سے اور تجربہ‌کار بزرگوں کی سیوا کرنے اور ان کے پاس بیٹھنے سے آتی ہے .

ایک صوفی نے کہا ہے—

"جواں را صحبت پیراں حصار عافیت باشد" یعنی جوان لوگوں کے لئے بزرگوں کی صحبت میں بیٹھنا حفاظت کے قلعہ میں بیٹھنا ہے .

मां बाप और घर

(डाक्टर भगवानदास)

बाप, गुरू और इनसे बढ़ कर मां का आदर मान करने की आज्ञा सब धर्मों की पुस्तकों में मिलती है. मां बाप को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि वह अपने बच्चों से प्रेम करें. क़ुदरत अपने आप मां बाप को मजबूर करती है कि वह अपने बच्चों से प्रेम करें और उन्हें पालें. इसी से बच्चे सब देशों में बढ़ते और फलते फूलते रहते हैं.

मां बाप का प्रेम उसी तरह सन्तानों की तरफ़ जाता है जिस तरह नदी का जल बहता रहता है. दुनिया में ऐसे जानवर भी हैं जो अपने बच्चों को खा जाते हैं पर वे ऐसे ही हैं जैसे हर नियम का कोई न कोई अपवाद या काट भी होता ही है. शेर, भेड़िया और नागन मायें तक अपने बच्चों को प्रेम से पालती हैं यह क़ुदरती है. दूसरी तरफ़ बच्चे मां बाप से प्यार अपनी ज़रूरत और ग़रज़ से करते हैं. इसीलिये बच्चों के दिलों में मां बाप के लिये प्रेम बनाए रखने के लिये उन्हें समझाने बुझाने की आवश्यकता होती है. इसी लिये सब धर्मों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि बच्चे मां बाप का आदर करें. वैदिक धर्म में यह भी हिदायत है कि मां बाप को चाहिये कि अपने बच्चों को इस तरह पालें और उन्हें इस तरह रखें कि बच्चे बड़े होकर नेक और धर्मात्मा बनें.

मां के अन्दर बच्चे‍प्रे का म इतना अधिक होता है कि मादा जानवर अकसर अपने बच्चों को बचाने के लिये अपनी जान पर खेल जाते हैं. हज़रत ईसा जैसे नरम दिल इनसान ने जब किसी को बच्चों को तकलीफ़ देते हुए देखा तो वह चिल्ला पड़े :—"जो कोई इन छोटे बच्चों में से एक को भी कष्ट पहुंचाएगा उसके लिये अच्छा है कि चक्की का पाट उसकी गरदन में बांध कर उसे समन्दर में ढकेल दिया जावे. यह बच्चे मेरी बात सुनते हैं." (इनजील)

शंकराचार्य ने कहा है :—"पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती."

मनुस्मृति में लिखा है :—"बच्चे के पैदा करने और पालने में मां बाप जो कष्ट उठाते हैं बच्चा सौ बरस तक मां बाप की सेवा कर के भी उसका बदला नहीं दे सकता."

चीनी महात्मा कनफ़्यूशियस ने कहा है :—"मां बाप से प्रेम करना और बड़ों की इज़्ज़त करना यही निस्वार्थ जीवन की नींव होती है."

मूसा और ईसा दोनों की आज्ञा है :—"अपने बाप

ماں باپ اور گھر

(ڈاکٹر بھگوان‌داس)

باپ' گرو اور ان سے بڑھکر ماں کا آدرمان کرنے کی آگیا سب دھرموں کی پستکوں میں ملتی ھے ۔ ماں باپ کو یہ بتانے کی آوشیکتا نہیں ھے کہ وہ اپنے بچوں سے پریم کریں ۔ قدرت اپنے آپ ماں باپ کو مجبور کرتی ھے کہ وہ اپنے بچوں سے پریم کریں اور انہیں پالیں ۔ اسی سے بچے سب دیشوں میں بڑھتے اور پھلتے پھولتے رہتے ھیں ۔

ماں باپ کا پریم اسی طرح سنتانوں کی طرف جاتا ھے جس طرح ندی کا جل بہتا رہتا ھے ۔ دنیا میں ایسے جانور بھی ھیں جو اپنے بچوں کو کھا جاتے ھیں پر وہ ایسے ھی ھیں جیسے ھر نیم کا کوئی نہ کوئی اپواد یا کاٹ بھی ھوتا ھی ھے ۔ شیر بھیڑیا اور ناگن مائیں تک اپنے بچوں کو پریم سے پالتی ھیں یہ قدرتی ھے ۔ دوسری طرف بچے ماں باپ سے پیار اپنی ضرورت اور غرض سے کرتے ھیں۔ اسی لئے بچوں کے دلوں میں ماں باپ کے لئے پریم بنائے رکھنے کے لئے انہیں سمجھانے بجھانے کی آوشیکتا ھوتی ھے ۔ اسی لئے سب دھرموں نے اس بات پر زور دیا ھے کہ بچے ماں باپ کا آدر کریں ۔ ویدک دھرم میں یہ بھی ھدایت ھے کہ ماں باپ کو چاھئے کہ اپنے بچوں کو اس طرح پالیں اور انہیں اس طرح رکھیں کہ بچے بڑے ھوکر نیک اور دھرماتما بنیں ۔

ماں کے اندر بچے کا پریم اتنا ادھک ھوتا ھے کہ مادہ جانور اکثر اپنے بچوں کو بچانے کے لئے اپنی جان پر کھیل جاتے ھیں ۔ حضرت عیسیٰ جیسے نرم دل انسان نے جب کسی کو بچوں کو تکلیف دیتے ھوئے دیکھا تو وہ چلا پڑے :—"جو کوئی ان چھوٹے بچوں میں سے ایک کو بھی کشٹ پہنچائے گا اس کے لئے اچھا ھے کہ چکی کا پاٹ اسکی گردن میں باندھکر اسے سمندر میں ڈھکیل دیا جاوے ۔ یہ بچے میری بات سنتے ھیں" (انجیل)

شنکراچاریہ نے کہا ھے :—"پتر کپتر ھوسکتا ھے لیکن ماتا کبھی کوماتا نہیں ھوتی ۔"

منو سمرتی میں لکھا ھے :—"بچے کے پیدا کرنے اور پالنے میں ماں باپ جو کشٹ اٹھاتے ھیں بچہ سو برس تک ماں باپ کی سیوا کرکے بھی اس کا بدلہ نہیں دے سکتا ھے۔"

چینی مہاتما کنفیوشیس نے کہا ھے :—"ماں باپ سے پریم کرنا اور بڑوں کی عزت کرنا یہی نسوارتھ جیون کی نیو ھوتی ۔"

موسیٰ اور عیسیٰ دونوں کی آگیا ھے :—"اپنے باپ

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 15 अगस्त, सन '53 नम्बर 1

نمبر 2 اگست، سن '53 جلد 15

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

क्या हाथ आया ?

निर्बल को बल न मिला मुझ से
डरपोक निडर नहीं बन पाया
हाथों में मेरे, सोचो तो,
हो कर स्वतंत्र फिर क्या आया !
भूके को कन न मिला मुझ से
बन्दी न प्रिया से मिल पाया
हो कर स्वतंत्र, सोचो, सोचो,
मेरे हाथों में क्या आया !
निधड़क न निकल पाईं बहिनें
मुन्ना न कुदकता मिल पाया
आई स्वतंत्रता खाक आई
आया स्वराज क्या खाक आया !
रातें न कटीं जब बिन जागे
दिन में घर घर पहरा पाया
हो कर स्वतंत्र, खोया रुपया
पर हाथ न एक धेला आया !
रिशवत न मिटी मेरे बूते,
अटकाव न रत्ती हट पाया,
करके स्वतंत्र ले भागे धन
कर मेरे रीता घट आया !

—भगवानदीन

کیا ہاتھ آیا ؟

نربل کو بل نہ ملا مجھ سے
ڈرپوک نڈر نہیں بن پایا
ہاتھوں میں میرے، سوچو تو،
ہو کر سوتنتر پھر کیا آیا !
بھوکے کو کن نہ ملا مجھ سے
بندی نہ پریا سے مل پایا
ہوکر سوتنتر، سوچو، سوچو،
میرے ہاتھوں میں کیا آیا !
ندھڑک نہ نکل پائیں بہنیں
منا نہ کدکتا مل پایا
آئی سوتنترتا خاک آئی
آیا سوراج کیا خاک آیا !
راتیں نہ کٹیں جب بن جاگے
دن میں گھر گھر پہرا پایا
ہو کر سوتنتر، کھویا روپیہ
پر ہاتھ نہ ایک دھیلا آیا !
رشوت نہ مٹی میرے بوتے،
اٹکاؤ نہ رتی ہٹ پایا،
کر کے سوتنتر لے بھاگے دھن
کر میرے ریتا گھٹ آیا .

— بھگوان دین

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

अगस्त 1953 اگست

क्या किससे	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال. ایک پرچہ دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145 ، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند' بھگوان‌دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

* * * * *

हमारी राय

ہماری رائے

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी इलाहाबाद — ہندوستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

अगस्त 1953 اگست

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक - सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल छिपाई कागज़ पर छपी. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاووں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بےمثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلےگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائیں گے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈھالی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—
مینیجر "نیا ہند" 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

[illegible]

(1) [illegible] ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना [illegible] रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) [illegible] फैलाने के लिये कताबों, अखबारों, रिसालों [illegible] छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, [illegible] से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में [illegible] का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; [illegible] प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल [illegible]. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; [illegible]टरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद [illegible]मान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० [illegible]र, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम [illegible]न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम [illegible] पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

[illegible]—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी [illegible] सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" [illegible] मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया [illegible] ही मेम्बर बना लिया जावेगा. अलग से [illegible] देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई [illegible] दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या [illegible] लेने पर एक बार एक रुपया कम [illegible]

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں [illegible] کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، [illegible] سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں [illegible] کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ [illegible] پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ [illegible] باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ [illegible] — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید [illegible]مان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ [illegible]ر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم [illegible]ند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش [illegible]وال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی [illegible] صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے [illegible] ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ [illegible] پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی [illegible] دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو [illegible] روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام [illegible] کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं — نوٹ:— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलौना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— ملنے کا پتہ—

मैनेजर 'नया हिन्द' — مینیجر 'نیا ہند'

125 [illegible]

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
[illegible] 46, [illegible]

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنسانمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 खास खास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक खर्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलिएटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा बर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک۔۔۔پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین'سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ھے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 50-1949 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کےلئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ--

مینیجر 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج' الہ باد .

ज़िम्मेदारी किसकी

यह सवाल बार बार उठता है कि क्या डाक्टर री में यह हिम्मत है कि वह ऐसे क़दम उठा सकते हैं, और हर बार जवाब "नहीं" ही मिलता है. जब हम पूरी परिस्थिति पर ध्यान देते हैं तो साफ़ पता चलता है कि डाक्टर री सिर्फ़ एक गुड्डे मात्र हैं बाक़ी सारी ज़िम्मेदारी अमरीकियों की है. अमरीका असल में सुलह नहीं चाहता. चू एन लाई के प्रस्ताव के मुक़ाबले में उसने ऐसे सुझाव रखे थे जो किसी तरह माने नहीं जा सकते थे. लेकिन दुनिया में उनकी काफ़ी ले दे हुई. पंडित नेहरू ने उनके प्रस्ताव की निन्दा की और मिस्टर चर्चिल ने भी खुले शब्दों में उन सुझावों का विरोध किया. आख़िर हार कर अमरीकियों को सुलह करने पर मजबूर होना पड़ा और क़ैदियों के सवाल पर समझौता हो गया. लेकिन मन से वह इसके लिये राज़ी नहीं थे. इस वजह से उस समझौते को उन्होंने फ़ौरन भंग करवा दिया और शोर मचाया की डाक्टर री उनकी बात नहीं मानते हैं और यह भी दुनिया को बताया कि अमरीकी हिपुओं और अमरीकी फ़ौजों को भी ख़तरा हो गया है. इससे अमरीका को दो फ़ायदे हुए—एक तरफ़ बरतानिया वग़ैरा की बात भी रख ली और सुलह भी न होने पाई. दूसरी तरफ़ अपनी कुमक भी बढ़ा ली.

यूनो की ज़िम्मेदारी

यूनो की ज़बरदस्त ज़िम्मेदारी है क्योंकि वह एक फ़रीक़ के के रूप में कोरिया में लड़ रही है और उसे इजाज़त नहीं देनी चाहिये कि अमरीकी उसका नाम लेकर अपना उल्लू सीधा करें. लेकिन अफ़सोस है कि यूनो अमरीका की कठपुतली सी बन गई है और ऐसा लगता है कि यूनो और अमरीका की पालसियों में कोई फ़रक़ नहीं रह गया है.

पंडित नेहरू ने बिलकुल सही आवाज़ उठाई है. शान्ति चाहने वाली सारी जनता उनकी इस आवाज़ के साथ है. आज इस बात की ज़रूरत है कि यूनो अपनी हैसियत पहचाने और अपना फ़र्ज़ पूरा करे. सिक्यूरिटी कौंसिल तो केवल अमरीकी गुटके मात्र है. लेकिन जनरल असेम्बली में बहुत से आज़ाद विचार रखने वाले राष्ट्रों को अपनी बात कहने का मौक़ा मिल जाता है. इसलिये ज़रूरी है कि जनरल असेम्बली ही में कोरिया के सवाल पर विचार हो और कोई ठीक फ़ैसला किया जाय.

उचित सुलह होने के लिये ज़रूरी है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया से किसी तरह का समझौता न करे और दूसरे तमाम विदेशी फ़ौजें कोरिया से हट जाएं. इसमें हर तरह की फ़ौजें शामिल हैं. हमें पूरी ताक़त से आवाज़ उठाना चाहिये और संधि करने पर अमरीका को मजबूर करने की कोशिश करना चाहिये.

15. 7. '53 मुजीब रिज़वी

ذمے داری کس کی

یہ سوال بار بار اُٹھتا ہے کہ کیا ڈاکٹر ری میں یہ ہمت ہے کہ وہ ایسے قدم اُٹھا سکتے ہیں، اور ہر بار جواب "نہیں" ہی ملتا۔ جب ہم پوری پرستھتی پر دھیان دیتے ہیں تو صاف پتہ چلتا ہے کہ ڈاکٹر ری صرف ایک گڈے ماتر ہیں باقی ساری ذمے داری امریکیوں کی ہے۔ امریکہ اصل میں صلح نہیں چاہتا۔ چو این لائی کے پرستاؤ کے مقابلے میں اس نے ایسے سجھاؤ رکھے تھے جو کسی طرح مانے نہیں جا سکتے تھے۔ لیکن دنیا میں ان کی کافی لے دے ہوئی۔ پنڈت نہرو نے اُن کے پرستاؤ کی نندا کی اور مسٹر چرچل نے بھی کھلے شبدوں میں اُن سجھاؤں کا ورودھ کیا۔ آخیر ہار کر امریکیوں کو صلح کرنے پر مجبور ہونا پڑا اور قیدیوں کے سوال پر سمجھوتہ ہوگیا۔ لیکن من سے وہ اس کے لئے راضی نہیں تھے۔ اس وجہ سے اس سمجھوتے کو انہوں نے فوراً بھنگ کروا دیا اور شور مچایا کہ ڈاکٹر ری اُن کی بات نہیں مانتے ہیں اور یہ بھی دنیا کو بتایا کہ امریکی قیدیوں اور امریکی فوجوں کو بھی خطرہ ہو گیا ہے۔ اس سے امریکہ کو دو فائدے ہوئے ایک طرف برطانیہ وغیرہ کی بات بھی رکھ لی اور صلح بھی نہ ہونے پائی۔ دوسری طرف اپنی کمک بھی بڑھا لی۔

یونو کی ذمے داری

یونو کی زبردست ذمے داری ہے کیونکہ وہ ایک فریق کے روپ میں کوریا میں لڑ رہی ہے اور اسے اجازت نہیں دینی چاہئے کہ امریکی اُس کا نام لے کر اپنا اُلو سیدھا کریں۔ لیکن افسوس ہے کہ یونو امریکہ کی کٹھ پتلی سی بن گئی ہے اور ایسا لگتا ہے کہ یونو اور امریکہ کی پالیسیوں میں کوئی فرق نہیں رہ گیا ہے۔

پنڈت نہرو نے بالکل صحیح آواز اُٹھائی ہے۔ شانتی چاہنے والی ساری جنتا اُن کی اِس آواز کے ساتھ ہے۔ آج اِس بات کی ضرورت ہے کہ یونو اپنی حیثیت پہچانے اور اپنا فرض پورا کرے۔ سکیورٹی کونسل تو کیول امریکی گٹکے ماتر ہے۔ لیکن جنرل اسمبلی میں بہت سی آزاد وچار رکھنے والے راشٹروں کو اپنی بات کہنے کا موقع مل جاتا ہے۔ اس لئے ضروری ہے کہ جنرل اسمبلی ہی میں کوریا کے سوال پر وچار ہو اور کوئی ٹھیک فیصلہ کیا جائے۔

اُچت صلح ہونے کے لئے ضروری ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا سے کسی طرح کا سمجھوتہ نہ کرے اور دوسرے تمام ودیشی فوجیں کوریا سے ہٹ جائیں۔ اِس میں ہر طرح کی فوجیں شامل ہیں۔ ہمیں پوری طاقت سے آواز اُٹھانا چاہئے اور سندھی کرنے پر امریکہ کو مجبور کرنے کی کوشش کرنا چاہئے۔

—مجیب رضوی 15. 7. '53

के उन क़ैदियों को रिहा कर दें जो कम्युनिस्ट नहीं ताकि वह जहां चाहे जा सकें." डाक्टर री को समझौते की कोई उम्मीद नहीं है और वह कहते हैं कि "मैं बहुत से अमरीकियों की इस बात से सहमत नहीं हूं कि शान्ति मय ढंग से कोरिया को एक किया जा सकता है और तीन महीने के अन्दर चीनी फ़ौजें वापस चली जायंगी."

इन ख़बरों का अमरीका की तरफ़ से कोई खंडन नहीं किया गया. पर दूसरी तरफ़ इसका सबूत मिलता है कि यह बातें सही हैं क्योंकि यह ख़बरें "वर्ल्ड टेलीग्राम एंड सन" के रिपोर्टर मिस्टर जिम जी लोकास ने भेजी हैं और यह अख़बार डाक्टर री से सहानुभूति ही नहीं रखता बल्कि उनका ज़बरदस्त समर्थक है.

कमीशन में बदलाव

कमीशन में बदलाव का मतलब है कि क़ैदियों के सवाल पर फिर बात शुरू की जाय. इसके लिये कमयुनिस्ट कैसे तैयार होंगे. इससे पता चलता है कि यह मांग करके सुलह को भंग करने की कोशिश हो रही है.

ज़मीन की फ़ौजें

डाक्टर री की मांग है कि तीन महीने के अन्दर विदेशों की ज़मीन की फ़ौजें कोरिया से चली जायं. चीन वाले बार बार मांग कर चुके हैं कि तमाम विदेशी फ़ौजें कोरिया से निकल जायं क्योंकि तभी सुलह हो सकती है और दोनों कोरिया शान्ति मय ढंग से एक हो सकते हैं, पर ग़ौर करने की बात यह है कि डाक्टर री ने ज़मीन की फ़ौजों पर ही क्यों ज़ोर दिया है. ज़ाहिर है कि अमरीका की ज़मीन की फ़ौजें कम हैं और बहुत ताक़तवर नहीं हैं. अमरीका की जल सेना और हवाई सेना बहुत ताक़तवर हैं. ज़मीन की फ़ौज चीन की बहुत मज़बूत है. ज़मीन की फ़ौजें तो हट जाएंगी लेकिन हवाई सेना और जल सेना वहीं रहेंगी. इस तरह अमरीका को ताक़त मिलती है. इसी के साथ यह धमकी भी है कि अगर तीन महीने के अन्दर चीनी फ़ौजें नहीं गईं तो डाक्टर री उत्तर पर धावा बोल देंगे.

री और अमरीका का समझौता

राबर्टसन साहब ने भी कहा है कि अमरीका और दक्खिनी कोरिया में एक राज़ीनामा करने की बातचीत हो रही है, इस राज़ीनामे में फ़ौजी सहायता भी शामिल है. इस तरह का समझौता हो जाने पर सुलह की कोई गुन्जायश नहीं रह जाती क्योंकि दक्खिन कोरिया पूरी तरह से अमरीका के चंगुल में होगा और उत्तर कोरिया अपने को अमरीका के सुपुर्द करना कभी पसन्द नहीं करेगा. इस तरह बंटवारा ज्यों का त्यों बना रहेगा और किसी वक़्त भी डाक्टर री "अगरेशन" का शोर मचा कर उत्तर पर हमला कर सकते हैं.

کے اُن قیدیوں کو رہا کر دیں گے جو کمیونسٹ نہیں ہیں تاکہ وہ جہاں چاہیں جا سکیں." ڈاکٹر ری کو سمجھوتے کی کوئی اُمید نہیں ہے اور وہ کہتے ہیں کہ "میں بہت سے امریکیوں کی اِس بات سے سہمت نہیں ہوں کہ شانتی مے ڈھنگ سے کوریا کو ایک کیا جا سکتا ہے اور تین مہینے کے اندر چینی فوجیں واپس چلی جائیں گی."

اِن خبروں کا امریکہ کی طرف سے کوئی کھنڈن نہیں کیا گیا. پر دوسری طرف اِس کا ثبوت ملتا ہے کہ یہ باتیں صحیح ہیں کیونکہ یہ خبریں " ورلڈ ٹیلیگرام اینڈ سن " کے رپوٹر مسٹر جم . جی . لوکاس نے بھیجی ہیں اور یہ اخبار ڈاکٹر ری سے سہانبھوتی ہی نہیں رکھتا بلکہ اُن کا زبردست سمرتھک ہے .

کمیشن میں بدلاؤ

کمیشن میں بدلاؤ کا مطلب ہے کہ قیدیوں کے سوال پر پھر بات شروع کی جائے . اس کے لئے کمیونسٹ کیسے تیار ہونگے . اِس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ مانگ کر کے صلح کو بھنگ کرنے کی کوشش ہو رہی ہے .

زمین کی فوجیں

ڈاکٹر ری کی مانگ ہے کہ تین مہینے کے اندر ودیشوں کی زمین فوجیں کوریا سے چل جائیں . چین والے بار بار مانگ کر چکے ہیں کہ تمام ودیشی فوجیں کوریا سے نکل جائیں کیونکہ تبھی صلح ہو سکتی ہے اور دونوں کوریا شانتی مے سے ڈھنگ سے ایک ہو سکتے ہیں پر غور کرنے کی بات یہ ہے کہ ڈاکٹر ری نے زمین کی فوجوں پر ہی کیوں زور دیا ہے. ظاہر ہے کہ امریکہ کی زمین کی فوجیں کم ہیں اور بہت طاقتور نہیں ہیں. امریکہ کی جل سینا اور ہوائی سینا بہت طاقتور ہیں. زمین کی فوج چین کی بہت مضبوط ہے. زمین فوجیں تو ہٹ جائینگی لیکن ہوائی سینا اور جل سینا وہیں رہینگی . اِسطرح امریکہ کو طاقت ملتی ہے. اِسی کے ساتھ یہ دھمکی بھی ہے کہ اگر تین مہینے کے اندر چینی فوجیں نہیں گئی تو ڈاکٹر ری اُتر پر دھاوا بول دینگے .

ری اور امریکہ کا سمجھوتا

رابرٹسن صاحب نے بھی کہا ہے کہ امریکہ اور دکھنی کوریا میں ایک راضی نامہ کرنے کی بات چیت ہو رہی ہے' اِس راضی نامے میں فوجی سہایتا بھی شامل ہے . اِسطرح کا سمجھوتا ہو جانے پر صلح کی کوئی گنجائش نہیں رہ جاتی کیونکہ دکھنی کوریا پوری طرح سے امریکہ کے چنگل میں ہوگا اور اُتری کوریا اپنے کو امریکہ کے سپرد کرنا کبھی پسند نہیں کرے گا . اِسطرح بٹوارا جیوں کا تیوں بنا رہے گا اور کسی وقت بھی ڈاکٹر ری " اگریشن " کا شور مچا کر اُتر پر حملہ کر سکتے ہیں .

विचार एक हैं. डाक्टर री के विचार बिलकुल साफ़ हैं और अगर उनके अधिकतर विचारों से राबर्टसन साहब मेल रखते हैं तो सुलह की कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रह जाती.

ऐलान में कहा गया है कि "हम एक साथ मिल कर काम करने का इरादा रखते हैं ताकि बहुत थोड़े अरसे में हम अपने लक्ष यानी आज़ाद और समूचे कोरिया को हासिल कर लें" यहां "समूचे" शब्द को नोट करने की ज़रूरत है. कोरिया को जोड़ना तो सभी चाहते हैं पर ढंग का सवाल है. यह बात मार के की है कि इस नोट में दोनों कोरिया को एक करने की शपथ तो ली गई है पर किस ढंग से उनको एक किया जायगा इस पर बिलकुल रोशनी नहीं डाली गई. यह बात बहुत से शक पैदा कर देती है.

बाद की ख़बरों से पता चलता है कि डाक्टर री ने तीन बातें मानी हैं : (1) दक्खिनी कोरिया समझौता के रास्ते में रोड़े नहीं अटकाएगा. (2) अमरीका से दक्खिन कोरिया एक समझौता करेगा जिस के अनुसार अमरीका उसकी फ़ौजी रक्षा करेगा और उसे माली मदद देगा. (3) दक्खिन कोरिया के पास जो 8655 उत्तरी कोरिया के क़ैदी बाक़ी रह गए हैं उन्हें डाक्टर री कमीशन के हवाले कर देंगे.

ख़बरों से यह भी पता चलता है कि डाक्टर री ने एक मांग की है कि अमरीका वाले पान मोन जोन में कमयुनिस्टों से कहें कि हिन्दुस्तान चेकोस्लावेकिया और पोलेन्ड को कमीशन से निकाल दिया जाय. उन्होंने यह भी कहा है कि अगर 90 दिन के अन्दर विदेशों की सारी ज़मीन की फ़ौजें वापस नहीं चली जायंगी तो वह उत्तर कोरिया की तरफ़ मार्च कर देंगे.

कमीशन से हिन्दुस्तान, चेकोस्लावेकिया और पोलेन्ड के हटाने की बात को अमरीका वालों ने झूट बताया है पर उन्होंने इस बात को बिलकुल अन्धेरे में रखा है कि आया दक्खिनी कोरिया ने ऐसी मांग की है कि नहीं.

री और समझौता

डाक्टर री समझौता नहीं चाहते. राबर्टसन साहब के स्यूल से हटते ही उन्होंने प्रेस कानफ़रेन्स की थी और उसमें अपने विचार साफ़ साफ़ रखे हैं. उन्होंने कहा है कि वह समझौते को नहीं मान सकते और न उस पर दसख़त करने के संबन्ध में कोई हिस्सा लेंगे. सिर्फ़ तीन महीने तक ख़ामोश रहेंगे और समझौते के रास्ते में कोई अड़चन नहीं लगायेंगे. उन्होंने यह भी कहा कि "जनरल मार्क क्लार्क ने मुझे पूरा पूरा अश्वासन दिया है कि हिन्दुस्तान की फ़ौजें कोरिया में नहीं आने पाएंगी." डाक्टर री का कहना है कि "मेरे और राबर्टसन साहब के बीच में जो राज़ी नामा हुआ है उससे साफ़ है कि हम चीन

وچار ایک ھیں ۔ ڈاکٹر ری کے وچار بالکل صاف ھیں اور اگر اُن کے اَدھک تر وچاروں سے رابرٹسن صاحب میل رکھتے ھیں تو صلح کی کوئی اُمید باقی نہیں رہ جاتی ۔

اعلان میں کہا گیا ہے کہ "ہم ایک ساتھ مل کر کام کرنے کا ارادہ رکھتے ھیں تاکہ بہت تھوڑے عرصے میں ہم اپنے لکش یعنی آزاد اور سموچے کوریا کو حاصل کرلیں۔" یہاں "سموچے" شبد کو نوٹ کرنے کی ضرورت ھے ۔ کوریا کو جوڑنا تو سبھی چاھتے ھیں پر ڈھنگ کا سوال ھے۔ یہ بات معرکے کی ھے کہ اِس نوٹ میں دونوں کوریا کو ایک کرنے کی شپتھ تو لی گئی ھے پر کس ڈھنگ سے اُن کو ایک کیا جائے گا اِس پر بالکل روشنی نہیں ڈالی گئی ۔ یہ بات بہت سے شک پیدا کردیتی ھے ۔

بعد کی خبروں سے پتہ چلتا ہے کہ ڈاکٹر ری نے تین باتیں مانی ھیں : (1) دکھنی کوریا سمجھوتا کے راستے میں روڑے نہیں اٹکائے گا ۔ (2) امریکہ سے دکھن کوریا ایک سمجھوتہ کرے گا جس کے انوسار امریکہ اُس کی فوجی رکھشا کرے گا اور اُسے مالی مدد دے گا۔ (3) دکھن کوریا کے پاس جو 8655 اتری کوریا کے قیدی باقی رہ گئے ھیں انہیں ڈاکٹر ری کمیشن کے حوالے کردیں گے ۔

خبروں سے یہ بھی پتہ چلتا ھے کہ ڈاکٹر ری نے مانگ کی ھے کہ امریکہ والے پان موں جون میں کمیونسٹوں سے کہیں کہ ھندستان، چیکوسلواکیا اور پولینڈ کو کمیشن سے نکال دیا جائے۔ اُنہوں نے یہ بھی کہا ھے کہ اگر 90 دن کے اندر ودیشوں کی ساری زمین کی فوجیں واپس نہیں چلی جائیں گی تو وہ اتر کوریا کی طرف مارچ کردیں گے ۔

کمیشن سے ھندستان، چیکوسلواکیا اور پولینڈ کو ھٹانے کی بات کو امریکہ والوں نے جھوٹ بتایا ھے پر اُنہوں نے اِس بات کو بالکل اندھیرے میں رکھا ھے کہ آیا دکھنی کوریا نے ایسی مانگ کی ھے کہ نہیں ۔

ری اور سمجھوتہ

ڈاکٹر ری سمجھوتہ نہیں چاھتے ۔ رابرٹسن صاحب کے سیول سے ھٹتے ھی انہوں نے پریس کانفرنس کی تھی اور اُس میں اپنے وچار صاف صاف رکھے ھیں ۔ انہوں نے کہا ھے کہ وہ سمجھوتہ کو نہیں مان سکتے اور نہ اُس پر دستخط کرنے کے سمبندھ میں کوئی حصہ لیں گے ۔ صرف تین مہینے تک خاموش رہیں گے اور سمجھوتے کے راستے میں کوئی اڑچن نہیں لگائیں گے ۔ اُنہوں نے یہ بھی کہا ھے کہ "جنرل مارک کلارک نے مجھے پورا پورا اشواسن دیا ھے کہ ھندستان کی فوجیں کوریا میں نہیں آنے پائیں گی۔" ڈاکٹر ری کا کہنا ھے کہ "میرے اور رابرٹسن صاحب کے بیچ میں جو راضی نامہ ہوا ھے اُس سے صاف ھے کہ ہم چین

योग्य फ़र्क़ यह था. भारत के प्रस्ताव में यूनो को तटस्थ माना गया था और क़ैदियों को उसके सुपुर्द करने की सिफ़ारिश की गई थी जब कि यूनो खुद ही लड़ाई में एक फ़रीक़ की हैसियत से है. चू एन लाई ने समझाया कि यूनो की जगह एक कमीशन हो जिस में तटस्थ देशों के प्रतिनिधि हों और उसी के सुपुर्द सारे क़ैदी कर दिये जायं.

किसी सूरत एक ऐसा रास्ता निकल आया जिस पर दोनों राज़ी हो गए और 7 जून सन '53 को राज़ीनामे पर दोनों फ़रीक़ के प्रतिनिधियों ने दस्तख़त कर दिये. इस राज़ीनामे का मोटा विवरन यह है—(1) एक कमीशन होगा जिस के मेम्बर पांच होंगे. हिन्दुस्तान कमीशन का का चेयरमैन होगा और स्विटज़रलैंड चेकोस्लावेकिया, स्वीडन, पोलेन्ड कमीशन के मेम्बर होंगे. (2) सारे क़ैदी इस कमीशन की निगरानी में दे दिये जायंगे. (3) निगरानी रखने के लिये हिन्दुस्तान की फ़ौजें कोरिया जायंगी. (4) कमीशन के दूसरे मेम्बर अपने 50 प्रतिनिधि भेज सकते हैं. (5) यह कमीशन उत्तर कोरिया और चीन के प्रतिनिधियों को क़ैदियों से मिल कर उन्हें आश्वासन देने की आसानियां देगा. रेडियो ब्राडकास्ट भी क़ैदियों को सुनने दिया जायेगा.

लेकिन इस समझौते की स्याही भी न सूखने पाई थी कि नई अड़चन खड़ी हो गई. डाक्टर री की सरकार ने उत्तर कोरिया के 26 हज़ार क़ैदियों को छोड़ दिया. इस तरह समझौते की शरतों का विरोध शुरू हो गया. इसकी ज़िम्मेदारी किस पर है इसका बर्नन हम बाद में करेंगे.

डाक्टर री और अमरीका के बीच बहुत गरमा गरम बातें होने लगीं और उन्होंने चेतावनी दी कि अगर अमरीका हमारा साथ नहीं देगा तो हम अकेले ही उत्तर कोरिया पर चढ़ जायंगे और उसे फ़तह कर लेंगे. अमरीकी सीनेट के कुछ मेम्बर डाक्टर री को प्रोत्साहन देते रहे लेकिन देखने में सदर आइज़नहावर री की विचार धारा का विरोध करते रहे. ख़बरें यहां तक आने लगीं कि अमरीकी फ़ौजें ख़तरे में पड़ गई हैं और अमरीका से कुमक भी पहुंच गई. इन सब ख़तरों को सामने रख कर वाशिंगटन से मिस्टर वाल्टर राबर्टसन भेजे गए कि वह डाक्टर री से बातचीत करें और सुलह के लिये उन्हें तैयार कर लें. चौदह दिन की बातचीत के बाद डाक्टर री और मिस्टर राबर्टसन में कोई समझौता हो गया और दोनों ने उसका ऐलान कर दिया. दुनिया को फिर उम्मीद होने लगी कि सुलह हो जायगी. लेकिन सुलह की शरतें दुनिया वालों को साफ़ साफ़ नहीं बताई गईं.

ऐलान में कहा गया है कि डाक्टर री और राबर्टसन के बीच ऐके का बहुत बड़ा मैदान है. इसका मतलब यह हुआ कि अधिक से अधिक बातों पर डाक्टर री और राबर्टसन के

بنیادی فرق یہ تھا ۔ بھارت کے پرستاؤ میں یونو کو تٹستھ مانا گیا تھا اور قیدیوں کو اُس کے سپرد کرنے کی سفارش کی گئی تھی جبکہ یونو خود ہی لڑائی میں ایک فریق کی حیثیت سے ہے ۔ چواین لائی نے سمجھایا کہ یونو کی جگہ ایک کمیشن ہو جس میں تٹستھ دیشوں کے پرتی ندھی ہوں اور اُسی کے سپرد سارے قیدی کردئے جائیں ۔

کسی صورت ایک ایسا راستہ نکل آیا جس پر دونوں راضی ہوگئے اور 7 جون سن '53 کو راضی‌نامے پر دونوں فریق کے پرتی‌ندھیوں نے دستخط کردیئے ۔ اِس راضی‌نامے کا موٹا ورن یہ ہے ۔ (1) ایک کمیشن ہوگا جس کے ممبر پانچ ہونگے ۔ ہندستان کمیشن کا چیرمین ہوگا اور سوئٹزرلینڈ، چیکوسلاویکیا، سویڈن، پولینڈ کمیشن کے ممبر ہونگے ۔ (2) سارے قیدی اِس کمیشن کی نگرانی میں دیے دئے جائینگے ۔ (3) نگرانی رکھنے کے لئے ہندستان کی فوجیں کوریا جائینگی ۔ (4) کمیشن کے دوسرے ممبر اپنے 50 پرتی‌ندھی بھیج سکتے ہیں ۔ (5) یہ کمیشن اُتر کوریا اور چین کے پرتی‌ندھیوں کو قیدیوں سے مل کر اُنہیں آشواسن دینے کی آسانیاں دے گا ۔ ریڈیو براڈ کاسٹ بھی قیدیوں کو سننے دیا جائے گا ۔

لیکن اِس سمجھوتے کی سیاہی بھی نہ سوکھنے پائی تھی کہ نئی اڑچن کھڑی ہوگئی ۔ ڈاکٹر ری کی سرکار نے اُتر کوریا کے 26 ہزار قیدیوں کو چھوڑ دیا ۔ اِس طرح سمجھوتہ کی شرطوں کا ورودھ شروع ہوگیا ۔ اِس کی ذمہ‌داری کس پر ہے اِس کا ورنن ہم بعد میں کرینگے ۔

ڈاکٹر ری اور امریکہ کے بیچ بہت گرما گرم باتیں ہونے لگیں اور اُنہوں نے چیتاؤنی دی کہ اگر امریکہ ہمارا ساتھ نہیں دے گا تو ہم اکیلے ہی اُتر کوریا پر چڑھ جائیں گے اور اُسے فتح کرلیں گے ۔ امریکی سینیٹ کے کچھ ممبر ڈاکٹر ری کو پروتساہن دیتے رہے لیکن دیکھنے میں صدر آئزن ہاور ری کی وچار دھارا کا ورودھ کرتے رہے ۔ خبریں یہاں تک آنے لگیں کہ امریکی فوجیں خطرے میں پڑگئی ہیں اور امریکہ سے کمک بھی پہونچ گئی ۔ اِن سب خطروں کو سامنے رکھکر واشنگٹن سے مسٹر والٹر رابرٹسن بھیجے گئے کہ وہ ڈاکٹر ری سے بات چیت کریں اور صلح کے لئے اُنہیں تیار کرلیں ۔ چودہ دن کی بات چیت کے بعد ڈاکٹر ری اور مسٹر رابرٹسن میں کوئی سمجھوتہ ہوگیا اور دونوں نے اُس کا اعلان کردیا ۔ دنیا کو پھر اُمید ہونے لگی کہ صلح ہو جائے گی ۔ لیکن صلح کی شرطیں دنیا والوں کو صاف صاف نہیں بتائی گئیں ۔

اعلان میں کہا گیا ہے کہ ڈاکٹر ری اور رابرٹسن کے بیچ ایکے کا بہت بڑا میدان ہے ۔ اِس کا مطلب یہ ہوا کہ ادھک سے ادھک باتوں پر ڈاکٹر ری اور رابرٹسن کے

इस ब्योरे में आये खरच से ज़ियादा रुपया लगा हुआ है. सरकार को इससे कम आमदनी नहीं. मालूम हुआ चौदह करोड़ रुपया साल सरकार चाय बाग़ों से हासिल करती है. शायद यही वजह है कि उस तरफ़ ज़मींदारी के ख़्याल से नज़र उठा कर नहीं देखती.

इस पर विस्तार से तो हम फिर कभी लिखेंगे. यहां इतना और लिख देना चाहते हैं कि जो मज़दूरी मज़दूरों को दी जाती है वह सब बड़े झमेले की चीज़ है. उसे हमें समझने में कुछ देर लगी. मज़दूर तो उस झमेले की बात को बहुत समझाने पर भी नहीं समझ सकता. हमें यह बताया गया कि उन्हें एक दिन में एक रुपया साढ़े पांच आने मज़दूरी मिलती है. पर वह मज़दूरी भी कई टुकड़ों में बंटी रहती है. यानी छे आने, छे आने, सात आने, ढाई आने.

यह भी बताया गया कि इन्हें अभी तक चार आने सेर दाल दी जाती थी, एक रुपये सेर तेल, पांच रुपये मन चावल पर अब यह बंद कर दिया गया है. अब चावल पंद्रह रुपये मन कर दिया गया है. बाक़ी चीज़ें बंद कर दी गई हैं, उन्हें वह जो भाव हो उस भाव ख़रीदें. पढ़ने वालों को यह याद रहे कि पैसा दे कर भी वह उससे ज़ियादा चीज़ नहीं ख़रीद सकते जितना सरकारी राशन नियत है. और वह उनके लिये काफ़ी नहीं होता.

पंजाब से ले कर आसाम तक यह अंगरेज़ों की फैली हुई बस्ती भी एक कारन है जिसकी वजह से फ़्रांसीसी, पुर्तगाली और डच लोग अपनी अपनी जेबें हिन्दुस्तान के कोनों से उठा कर ले जाने में आनाकानी कर रहे हैं. हिन्दुस्तानी सरकार ने जो गोरखों की भर्ती का अड्डा अपने यहां बना रखा था यह उससे भी ज़ियादा बुरी बात है. उससे छुटकारा पाने में दिक़्क़त नहीं हुई. इससे छुटकारा पाने में दिक़्क़त होने की संभावना है. चौदह करोड़ साल की आमदनी का लालच इस राह में रुकावट साबित होगा.

15. 7. '53 — भगवानदीन

कोरिया की सुलह और डाक्टर री

लड़ाई के क़ैदियों को लेकर सालों बात होती रही. कोई समझौता नहीं हो पा रहा था और एक दफ़ा तो सारी उम्मीदें टूट ही गई थीं. पान मुन जोन की बातें ख़त्म कर दी गई थीं लेकिन चीन के बड़े वज़ीर ने इस संबन्ध में बहुत रचनात्मक क़दम उठाए और इस सवाल को हल करने के लिये बहुत जायज़ हल रखा. यह हल भारत के उस प्रस्ताव के बिलकुल नज़दीक थे जो इस सवाल पर यूनो पास कर चुकी थी. दोनों में एक बड़ा और ध्यान देने के

اس بیوپار میں آئے خرچ سے زیادہ روپیہ لگا ہوا ہے. سرکار کو اس سے کم آمدنی نہیں' معلوم ہوا چودہ کروڑ روپیہ سال سرکار چائے باغوں سے حاصل کرتی ہے . شاید یہی وجہ ہے کہ اس طرف زمینداری کے خیال سے نظر اٹھا کر نہیں دیکھتی .

اس پر وستار سے تو ہم پھر کبھی لکھینگے . یہاں اتنا اور لکھ دینا چاہتے ہیں کہ جو مزدوری مزدوروں کو دی جاتی ہے وہ سب بڑے جھمیلے کی چیز ہے . اسے ہمیں سمجھنے میں کچھ دیر لگی . مزدور تو اس جھمیلے کی بات کو بہت سمجھانے پر بھی نہیں سمجھ سکتا . ہمیں یہ بتایا گیا کہ انہیں ایک دن میں ایک روپیہ ساڑھے پانچ آنے مزدوری ملتی ہے . پر وہ مزدوری بھی کئی ٹکڑوں ٹکڑوں میں بٹی رہتی ہے . یعنی چھ آنے' چھ آنے' سات آنے' ڈھائی آنے .

یہ بھی بتایا گیا کہ انہیں ابھی تک چار آنہ سیر دال دی جاتی تھی' ایک روپیہ سیر تیل' پانچ روپیہ من چاول پر اب یہ بند کر دیا گیا ہے . اب چاول پندرہ روپیہ من کر دیا گیا ہے . باقی چیزیں بند کر دی گئی ہیں . انہیں وہ جو بھاؤ ہو اس بھاؤ خریدیں . پڑھنے والوں کو یہ یاد رہے کہ پیسہ دے کر بھی وہ اس سے زیادہ چیز نہیں خرید سکتے جتنا سرکاری راشن نیت ہے . اور وہ ان کے لئے کافی نہیں ہوتا .

پنجاب سے لیکر آسام تک یہ انگریزوں کی پھیلی ہوئی بستی بھی ایک کارن ہے جس کی وجہ سے فرانسیسی' پرتگالی اور ڈچ لوگ اپنی اپنی جیبیں ہندستان کے کونوں سے اٹھا کر لے جانے میں آنا کانی کر رہے ہیں . ہندستانی سرکار نے جو گورکھوں کی بھرتی کا اڈا اپنے یہاں بنا رکھا تھا یہ اس سے بھی زیادہ بری بات ہے . اس چھٹکارا پانے میں دقت نہیں ہوئی . اس سے چھٹکارا پانے میں دقت ہونے کی سمبھاونا ہے . چودہ کروڑ سال کی آمدنی کا لالچ اس راہ میں رکاوٹ ثابت ہوگا .

—بھگوان دین 15. 7. '53

کوریا کی صلح اور ڈاکٹر رہی

لڑائی کے قیدیوں کو لے کر سالوں بات ہوتی رہی . کوئی سمجھوتہ نہیں ہو پا رہا تھا اور ایک دفعہ تو ساری امیدیں ٹوٹ ہی گئیں تھیں . پان مون جون کی باتیں ختم کر دی گئی تھیں . لیکن چین کے بڑے وزیر نے اس سمبندھ میں بہت رچناتمک قدم اٹھائے اور اس سوال کو حل کرنے کے لئے بہت جائز حل رکھا . یہ حل بھارت کے اس پرستاو کے بالکل نزدیک تھے جو اس سوال پر یونو پاس کر چکی تھی . دونوں میں ایک بڑا اور دھیان دینے کے

चाय बाग़ की तहक़ीक़ात बेशक बड़ी मुश्किल चीज़ है. हम चार पांच घंटे में कुछ जानकारी हासिल नहीं कर सकते. लेकिन अगर यह कहावत ठीक है कि ढेर में से एक मुट्ठी देखने से ढेर का पता चल जाता है, या एक चावल देख लेने से भात के गलने न गलने का पता चल जाता है, तब हम अपने आप को यह कहने का हक़दार समझते हैं कि जो हालत हमने वहां मज़दूरों की देखी वह ऐसी थी कि उसकी तरफ़ सरकार को बहुत ज़ियादा ध्यान देने की ज़रूरत है. हम जैसे ही उस मज़दूर के पास से उठे, एक कोढ़ी आ कर हमसे बातें करने लगा. पंडित सुन्दरलाल जी हमारे साथ थे उन्होंने मैनेजर के आदमी से पूछा, क्या यह भी मज़दूर है. वह बोला, नहीं यह मज़दूर नहीं. कहीं से चला आया है. और फिर उससे डांट कर बोला, तू कौन है, कहां से चला आया? इतने में वह मज़दूर बोल उठा, यह चला नहीं आया, यह तो अमुक मज़दूर का रिश्तेदार है. उसी के पास रहता है.

मज़दूरों की बात को हम यहीं छोड़ते हैं. हमें कहना यह है कि जब ज़मींदारी ख़तम की जा रही है तो चाय बाग़ों की ज़मींदारी क्यों ख़तम न की गई. यह ज़मींदारी तो उस ज़मींदारी से बेहद बुरी है जिस ज़मींदारी को ख़तम करने की बात लोगों ने उठा रखी है और सरकार भी उस काम में लगी हुई है. चाय बाग़ों की ज़मींदारी ज़मींदारी नहीं, रियासत के अन्दर रियासत है. उन बाग़ों पर सरकार की हुकूमत नाम के लिये है. चाय बाग़ों में रहने वाली मज़दूर प्रजा दिल्ली, पंजाब, बिहार, बंगाल, आसाम की सरकारों की प्रजा नहीं. वह उन ज़मींदारों की प्रजा है जो चाय बाग़ के हर तरह मालिक बने हुए हैं और वह सब हैं अंगरेज़. ठीक है उसमें चौदह पंद्रह फ़ी सदी हिन्दुस्तानी कहलाने वाले ज़मींदार भी हैं, पर वह सबके सब हर बात में अंगरेज़ ज़मींदारों के आश्रित हैं. जिन बैंकों से चाय बाग़ वाले रुपया उधार लेते हैं वह सब अंगरेज़ी बैंक हैं, जितने दलाल इस काम में लगे हुए हैं वह सब अंगरेज़ हैं, जितने मैनेजिंग एजेंट्स हैं वह ज़ियादातर अंगरेज़ हैं. इन सबके दफ़्तर कलकत्ता में हैं. इसकी निकासी सब अंगरेज़ों के हाथ में है. एक तरह से इसका सब कारबार अंगरेज़ों के हाथ में है. हिन्दुस्तानी उनकी मदद के बग़ैर एक मिनट उस मैदान में नहीं टिक सकते. यह हम अंदाज़े से नहीं कह रहे, हिन्दुस्तानी ज़मींदार और ज़मींदारों से अच्छी तरह पूछताछ के बाद कह रहे हैं. इसमें शक नहीं, हिन्दुस्तानी ज़मींदारों के मातहत मज़दूरों का वैसा ही हाल है जैसा अंगरेज़ों के मातहत. हिन्दुस्तानी ज़मींदार इस तरफ़ कुछ सुधार भी करना चाहें तो नहीं कर सकते, होड़ के मैदान में वह पीछे रह जायेंगे और अपना दिवाला निकाल बैठेंगे.

چائے باغ کی تحقیقات بے شک بڑی مشکل چیز ہے۔ ہم چار پانچ گھنٹے میں کچھ جانکاری حاصل نہیں کر سکتے۔ لیکن اگر یہ کہاوت ٹھیک ہے کہ ڈھیر میں سے ایک مٹھی دیکھنے سے ڈھیر کا پتہ چل جاتا ہے، یا ایک چاول دیکھ لینے سے بھات کے گلنے نہ گلنے کا پتہ چل جاتا ہے، تب ہم اپنے آپ کو یہ کہنے کا حقدار سمجھتے ہیں کہ جو حالت ہم نے وہاں مزدوروں کی دیکھی وہ ایسی تھی کہ اس کی طرف سرکار کو بہت زیادہ دھیان دینے کی ضرورت ہے۔ ہم جیسے ہی اس مزدور کے پاس سے اٹھے ایک کوڑھی آ کر ہم سے باتیں کرنے لگا۔ پنڈت سندر لال جی ہمارے ساتھ تھے۔ انہوں نے منیجر کے آدمی سے پوچھا، کیا یہ بھی مزدور ہے۔ وہ بولا، نہیں یہ مزدور نہیں۔ کہیں سے چلا آیا ہے۔ اور پھر اس سے ڈانٹ کر بولا، تو کون ہے، کہاں سے چلا آیا؟ اتنے میں وہ مزدور بول اٹھا، یہ چلا نہیں آیا، یہ تو امک مزدور کا رشتہ دار ہے۔ اسی کے پاس رہتا ہے۔

مزدوروں کی بات کو ہم یہیں چھوڑتے ہیں۔ ہمیں کہنا یہ ہے کہ جب زمینداری ختم کی جا رہی ہے تو چائے باغوں کی زمینداری کیوں ختم نہ کی گئی۔ یہ زمینداری تو اس زمینداری سے بے حد بری ہے جس زمینداری کو ختم کرنے کی بات لوگوں نے اٹھا رکھی ہے اور سرکار بھی اس کام میں لگی ہوئی ہے۔ چائے باغوں کی زمینداری زمینداری نہیں، ریاست کے اندر ریاست ہے۔ ان باغوں پر سرکار کی حکومت نام کے لئے ہے۔ چائے باغوں میں رہنے والی مزدور پرجا دلی، پنجاب، بہار، بنگال، آسام کی سرکاروں کی پرجا نہیں۔ وہ ان زمینداروں کی پرجا ہے جو چائے باغ کے ہر طرح کے مالک بنے ہوئے ہیں اور وہ سب ہیں انگریز۔ ٹھیک ہے اس میں چودہ پندرہ فیصدی ہندستانی کہلانے والے زمیندار بھی ہیں، پر وہ سب کے سب ہر بات میں انگریز زمینداروں کے آشرت ہیں۔ جن بینکوں سے چائے والے روپیہ ادھار لیتے ہیں وہ سب انگریزی بینک ہیں، جتنے دلال اس کام میں لگے ہوئے ہیں وہ سب انگریز ہیں، جتنے مینیجنگ ایجنٹس ہیں وہ زیادہ تر انگریز ہیں۔ ان سب کے دفتر کلکتہ میں ہیں۔ اس کی نکاسی سب انگریزوں کے ہاتھ میں ہے۔ ایک طرح سے اس کا سب کار بار انگریزوں کے ہاتھ میں ہے۔ ہندستانی ان کی مدد کے بغیر ایک منٹ اس میدان میں نہیں ٹک سکتے۔ یہ ہم اندازے سے نہیں کہہ رہے، ہندستانی زمیندار اور زمینداروں سے اچھی طرح پوچھ تاچھ کے بعد کہہ رہے ہیں۔ اس میں شک نہیں، ہندستانی زمینداروں کے ماتحت زمینداروں کا ویسا ہی حال ہے جیسا انگریزوں کے ماتحت۔ ہندستانی زمیندار اس طرف کچھ سدھار بھی کرنا چاہیں تو نہیں کر سکتے، ہوڑ کے میدان میں وہ پیچھے رہ جائیں گے اور اپنا دیوالہ نکال بیٹھیں گے۔

असलियत बहुत कम जान पाये. वजह यह थी कि मजदूरों को अपना दुख दर्द बताना नहीं आता. उनको यह तक नहीं मालूम कि वह किस शर्त पर रखे गये हैं, उन्हें क्या तनख्वाह मिलेगी, किस शक्ल में मिलेगी, वह रोज़ मिलेगी या हफ़्तेवार या माहवारी.

जब हमने देखा कि मज़दूरों से इस तरह कुछ नहीं हाथ आता तो हम उनका घर देखने चल दिये. घर नाम से जो मज़दूरों को एक झोंपड़ी मिली थी जिस में हमने पांच प्राणी पाये वह ऐसी थी जिस में आप बिना सर झुकाये किसी तरह प्रवेश नहीं कर सकते. दाख़िल होने और निकलने में अगर आप का सिर किसी बांस से न टकराये तब समझना चाहिये कि आप बड़े भाग्यशाली हैं. उस झोंपड़ी के बाहर एक छोटा सा चबूतरा था जो एक फ़ुट ऊंचा, तीन चार फ़ुट चौड़ा, छै सात फ़ुट लंबा था. उसी पर बैठकर हम सब उस मज़दूर से बात करने लगे. मैनेजर का आदमी खड़ा रहा, शायद इस वजह से कि उसके लिये वहां जगह न थी, या इस वजह से कि उसने मज़दूर के पास बैठना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझा.

चबूतरे पर तीन हम थे, एक मजदूर, उसकी पत्नी और उसके तीन बच्चे. कपड़ों के लिहाज़ से मज़दूर डेढ़ दो. फ़ुट चौड़ी, छै सात फ़ुट लंबी धोती कमर से लपेटे था. उसकी पत्नी एक मैली सी साड़ी पहने थी. तीन बच्चों में से दो, एक एक कुर्ता पहने थे. हमने उस मज़दूर से पूछा, तुम कहां से आये हो ? वह बोला, मैं यहीं पैदा हुआ हूं. हमने पूछा, तुम्हारे बाप कहां से आये थे ? वह बोला, वह भी यहीं पैदा हुए थे. हां उसके बाबा शायद कहीं बाहर से आये थे. हमने पूछा, तुम्हें पेट भर खाना मिलता है ? उसने जवाब दिया, नहीं. इस पर मैनेजर का आदमी बोल पड़ा, जितना राशन सरकार की तरफ़ से नियत है उतना तुम्हें मिलता है या नहीं ? वह बोला, उतना तो मिलता है, पर उस में पेट नहीं भरता. मैनेजर का आदमी बोला, तुम अपना धान भी तो उगा लेते हो ? वह बोला, इस साल नहीं उगाया. हम इस जवाब को कुछ न समझ पाये. मैनेजर के आदमी ने झट समझाया, सिर्फ़ उन मज़दूरों को अपना धान उगाने दिया जाता है जो साल भर अपना काम पूरा कर के दिखा देते हैं. जो नहीं दिखाते उनको खेत नहीं उगाने दिया जाता. धान उगाने में मज़दूर की बे परवाही नहीं थी, मज़दूर का चाय पत्ती तोड़ने का काम इतना नहीं हो पाया था जितने होने पर उसे वह अधिकार मिलता. हमने पूछा, तुमने काम पूरा क्यों नहीं किया ? वह बोला, मैं बीच बीच में बीमार पड़ गया, काम पूरा किस तरह होता. मैनेजर का आदमी बोल उठा, देखिये साहब, इस में हमारा क्या क़सूर है ?

اصلیت بہت کم جان پائے. وجہ یہ تھی کہ مزدوروں کو اپنا دکھ درد بتانا نہیں آتا. ان کو یہ تک نہیں معلوم کہ وہ کس شرط پر رکھے گئے ہیں، انہیں کیا تنخواہ ملیگی، کس شکل میں ملیگی، وہ روز ملیگی یا ہفتہ وار یا ماہواری.

جب ہم نے دیکھا کہ مزدوروں سے اس طرح کچھ نہیں ہاتھ آتا تو ہم اُن کا گھر دیکھنے چل دئے. گھر نام سے جو مزدوروں کو ایک جھونپڑی ملی تھی جس میں ہم نے پانچ پرانی پائے وہ ایسی تھی جس میں آپ بنا سر جھکائے کسی طرح پرویش نہیں کرسکتے. داخل ہونے اور نکلنے میں اگر آپ کا سر کسی بانس سے نہ ٹکرائے تب سمجھنا چاہئے کہ آپ بڑے بھاگیہ شالی ہیں. اُس جھونپڑی کے باہر ایک چھوٹا سا چبوترا تھا جو ایک فٹ اُونچا، اور تین چار فٹ چوڑا، اور چھ سات فٹ لمبا تھا. اسی پر بیٹھکر ہم سب اُس مزدور سے بات کرنے لگے. منیجر کا آدمی کھڑا رہا، شاید اِس وجہ سے کہ اُس کے لئے وہاں جگہ نہ تھی، یا اِس وجہ سے کہ اس نے مزدور کے پاس بیٹھنا اپنی شان کے خلاف سمجھا.

چبوترے پر تین ہم تھے، ایک مزدور، اُسکی پتنی اور اس کے تین بچے. کپڑوں کے لحاظ سے مزدور ڈیڑھ دو فٹ چوڑی، چھ سات فٹ لمبی دھوتی کمر سے لپیٹے تھا. اُسکی پتنی ایک میلی سی ساڑی پہنے تھی. تین بچوں میں سے دو، ایک ایک کرتا پہنے تھے. ہم نے اُس مزدور سے پوچھا، تم کہاں سے آئے ہو؟ وہ بولا، میں یہیں پیدا ہوا ہوں. ہمنے پوچھا، تمہارے باپ کہاں سے آئے تھے؟ وہ بولا، وہ بھی یہیں پیدا ہوئے تھے. ہاں اُس کے بابا شاید کہیں باہر سے آئے تھے. ہمنے پوچھا، تمہیں پیٹ بھر کھانا ملتا ہے؟ اُس نے جواب دیا، نہیں اِس پر منیجر کا آدمی بول پڑا، جتنا راشن سرکار کی طرف سے نیت ہے اُتنا تمہیں ملتا ہے یا نہیں؟ وہ بولا، اُتنا تو ملتا ہے، پر اُس میں پیٹ نہیں بھرتا. منیجر کا آدمی بولا، تم اپنا دھان بھی تو اُگا لیتے ہو؟ وہ بولا، اِس سال نہیں اُگایا. ہم اِس جواب کو کچھ نا سمجھ پائے. منیجر کے آدمی نے جھٹ سمجھایا، صرف ان مزدوروں کو اپنا دھان اُگانے دیا جاتا ہے جو سال بھر اپنا کام پورا کرکے دکھا دیتے ہیں. جو نہیں دکھاتے اُن کو کھیت نہیں اُگانے دیا جاتا. دھان اُگانے میں مزدور کی بے پرواہی نہیں تھی، مزدور کا چائے پتی توڑنے کا کام اِتنا نہیں ہو پایا تھا جتنے ہونے پر اُسے وہ ادھیکار ملتا. ہم نے پوچھا، تم نے کام پورا کیوں نہیں کیا؟ وہ بولا، میں بیچ بیچ میں بیمار پڑ گیا، کام پورا کس طرح ہوتا. منیجر کا آدمی بول اُٹھا، دیکھئے صاحب اِس میں ہمارا کیا قصور ہے؟

और राजकुमारी अमृत कौर और सैलों के बयानों से पता चलता है कि दूर दूर के गांव पहाड़ों और जंगलों तक में आम जनता के सुख चैन का जितना अच्छा प्रबन्ध आज रूस में है उतना अच्छा दुनिया के शायद ही किसी दूसरे देश में हो. हर युग अपने साथ अपनी नई समस्याएं लाता है और अपने साथ ही उनके के हल भी लाता है. इन्सानी क़ौम इसी तरह एक मनज़िल से दूसरी मनज़िल तक आगे को बढ़ती जा रही है. हमें मानव इतिहास की इस गति को समझना और उसमें मदद करना चाहिये.

4. 7. '53 —सुन्दरलाल

चाय बाग़ान

जिस तरह अमरीकी यहां आ गये हैं, आते जाते हैं, न बुलाये गये न बुलाये जाते हैं, वैसे ही अंगरेज़ निकाले नहीं गये, निकाले नहीं जाते, चले गये हैं, चले जाना नहीं चाहते, चले जाते हैं.

अप्रैल के महीने में हमें जलपाइगुरी जाना पड़ा. गये शांति सभा के काम से, पर देखने पहुंच गये चाय बाग़ान. चाय बाग़ में हर एक आदमी नहीं जा सकता. उसे वहां के मैनेजर की इजाज़त लेनी होती है. हमें इजाज़त मिल गई. चाय बाग़ में अगर आप क़ुली हैं, या वहां के क़ुली के रिश्तेदार हैं, फिर चाहे आप कोई भी क्यों न हों चाय बाग़ में जा सकते हैं, अकेले घूम सकते हैं, अगर आप समझदार हिन्दुस्तानी हैं तब आप को अकेले नहीं घूमने दिया जायगा. आपके साथ चाय बाग़ का अंगरेज़ मैनेजर अपना कोई बाबू कर देगा, वह आप को चाय बाग़ दिखा देगा.

चाय बाग़ में चाय के पौधों के सिवाय देखने की कोई चीज़ नहीं. उनके देखने में ज़ियादा वक़्त भी नहीं लग सकता. उसके लिये किसी आदमी की ज़रूरत नहीं. हां, अगर कोई वह कारख़ाना देखना चाहे जहां चाय तैयार की जाती है तो बेशक किसी मदद की ज़रूरत हो सकती है. हमने कारख़ाने बहुत देखे हैं, उसके देखने का शौक़ न था. असल में हम गये थे यह देखने कि वहां क़ुलियों का क्या हाल है, उन मज़दूरों का क्या हाल है जो चाय के कारख़ाने में काम करते हैं.

चाय बाग़ में पहुंच कर जब हमने वहां के मज़दूरों से बात चीत की तो हमें रोका नहीं गया, पर जब क़ुली कुछ बताते तो वह बता न पाते, कि मैनेजर साहब का आदमी उन्हें बीच में रोक कर उन से कुछ सवाल करने लगता या यह बताने लगता कि उन्हें जवाब क्या और किस तरह देना चाहिये? हमारे रोकने पर मैनेजर का वह आदमी ऐसा करने से रुक गया. पर उसके बाद हम मज़दूरों से

اور راجکماری امرت کور اور جیسوں کے بیانوں سے پتہ چلتا ہے کہ دور دور کے گاؤں پہاڑوں اور جنگلوں تک میں عام جنتا کے سکھ چین کا جتنا اچھا پربندھ آج روس میں ہے اتنا اچھا دنیا کے شاید ہی کسی دوسرے دیش میں ہو. ہر یگ اپنے ساتھ اپنی نئی سمسیائیں لاتا ہے اور اپنے ساتھ ہی ان کے حل بھی لاتا ہے. انسانی قوم اسی طرح ایک منزل سے منزل تک آگے کو بڑھتی جا رہی ہے. ہمیں مانو اتہاس کی اس گتی کو سمجھنا اور اس میں مدد کرنا چاہئے.

— سندر لال 4. 7. '53

چائے باغان

جس طرح امریکی یہاں آ گئے ہیں، آتے جاتے ہیں، نہ بلائے گئے نہ بلائے جاتے ہیں، ویسے ہی انگریز نکالے نہیں گئے، نکالے نہیں جاتے، چلے گئے ہیں، چلے جانا نہیں چاہتے، چلے جاتے ہیں.

اپریل کے مہینے میں ہمیں جلپائیگوری جانا پڑا. گئے شانتی سبھا کے کام سے، پر دیکھنے پہنچ گئے چائے باغان. چائے باغ میں ہر ایک آدمی نہیں جا سکتا. اسے وہاں کے منیجر کی اجازت لینی ہوتی ہے. ہمیں اجازت مل گئی. چائے باغ میں اگر آپ قلی ہیں، یا وہاں کے قلی کے رشتےدار ہیں، پھر چاہے آپ کوئی بھی کیوں نہ ہوں چائے باغ میں جا سکتے ہیں، اکیلے گھوم سکتے ہیں، اگر آپ سمجھدار ہندوستانی ہیں تب آپ کو اکیلے نہیں گھومنے دیا جائیگا. آپ کے ساتھ چائے باغ کا انگریز منیجر اپنا کوئی بابو کر دیگا، وہ آپکو چائے باغ دکھا دیگا.

چائے باغ میں چائے کے پودوں کے سوائے دیکھنے کی کوئی چیز نہیں. ان کے دیکھنے میں زیادہ وقت بھی نہیں لگ سکتا. اس کے لئے کسی آدمی کی ضرورت نہیں. ہاں اگر کوئی وہ کارخانہ دیکھنا چاہئے جہاں چائے تیار کی جاتی ہے تو بیشک کسی مدد کی ضرورت ہوسکتی ہے. ہم نے کارخانے بہت دیکھے ہیں، اس کے دیکھنے کا شوق نہ تھا. اصل میں ہم گئے تھے یہ دیکھنے کی وہاں قلیوں کا کیا حال ہے، ان مزدوروں کا کیا حال ہے جو چائے کے کارخانے میں کام کرتے ہیں.

چائے باغ میں پہنچ کر جب ہم نے وہاں کے مزدوروں سے بات چیت کی تو ہمیں روکا نہیں گیا، پر جب قلی کچھ بتاتے تو وہ بتا نہ پاتے، کہ منیجر صاحب کا آدمی انہیں بیچ میں روک کر ان سے کچھ سوال کرنے لگتا یا یہ بتانے لگتا کہ انہیں جواب کیا اور کس طرح دینا چاہئے؟ ہمارے روکنے پر منیجر کا وہ آدمی ویسا کرنے سے رک گیا. پر اس کے بعد ہم مزدوروں سے

मेहनत में मजदूर के लिये हाथ पांव की मेहनत, जज के लिये दिमाग़ की मेहनत, अध्यापक के लिये ज़बान की मेहनत, लेखक के लिये क़लम की मेहनत सब शामिल हैं. अलग अलग तरह की मेहनतों के लिये मजदूरी पूरी तरह बराबर तो नहीं हो सकती न शायद दुनिया में अभी तक कहीं है. लेकिन आज कल के जो बढ़े हुए और बेइनसाफ़ी के फ़र्क़ हैं वह बेहद कम हो सकते हैं और होने चाहियें. इस बारे में भी हम भाई मोहन लाल जी के सामने अपने पड़ोसी चीन ही की मिसाल रखना चाहते हैं. नये चीन के कारखानों में छोटे से छोटे से बड़े मजदूर की मजदूरी और कारखाने के मैनेजर या डायरेक्टर की तनखा में तीन और आठ का औसत है. कानपुर में यही औसत एक और छियानवे है. दुनिया से ग़रीबी को मिटाने के लिये हमें इसी फ़र्क़ को कम से कम करना है.

इस फ़र्क़ को जहां तक हो सके कम कर के ही हम अपने अन्दर सच्ची इन्सानियत पैदा कर सकते हैं और सब को सुख पहुँचा सकते हैं.

भाई मोहन लाल जी ने पूंजीपतियों द्वारा चट्टियों, मुसाफ़िरख़ानों वग़ैरा के बनाए जाने की चर्चा की है. यह सच है कि अच्छे और बुरे पूंजी पतियों और मजदूरों सब में होते हैं. दुनिया के पूंजी पतियों ने, और राजाओं और सामराटों तक ने बड़े बड़े अच्छे काम भी किये हैं. पर जो आदमी दूसरे लाखों आदमियों की मेहनत से फ़ायदा उठा कर करोड़ों रुपये कमाता है और उन करोड़ों में से चन्द लाख इस तरह के दान पुन में ख़र्च कर देता है और बाक़ी धन से बिना अपना पसीना बहाये गुलछर्रे उड़ाता है जबकि उसके लिये उन लाखों मेहनत करने वालों के न तन पर कपड़ा दिखाई देता है और न उन्हें पेट भर खाने को मिलता है. वह न अपने अन्दर की मानवता को जगा पाता है और न दूसरों के साथ ही इनसाफ़ बरतता है. हमारी आजकल की यह माली और समाजी बेइनसाफ़ी अब ख़त्म होनी चाहिये. हर युग की अपनी मांग होती है. इस युग की यही ज़बरदस्त मांग है.

रहे इस तरह के सवाल के आगे के लिये मुसाफ़िरख़ाने और चट्टियां कौन बनवायेगा या बिना पूंजीपतियों के इनकम टैक्स के सरकार का ख़र्च कैसे चलेगा. हर समाजी ढांचे में इस तरह के कामों का अपना अपना ढंग होता है. चीन में तो अधिकतर उद्योग धन्धों पर कोई इनकम टैक्स भी नहीं है. इतने बड़े मुल्क की सरकार का लगभग सारा ख़र्च ज़मीन की मालगुज़ारी और बाहर के देशों से आने जाने वाले माल पर टैक्सों से सुन्दरता से चलता है. रूस से लौटे हुए डाक्टर राधा कमलन

محنت میں مزدور کے لئے ہاتھ پاؤں کی محنت، جج کے لئے دماغ کی محنت، ادھیاپک کے لئے زبان کی محنت، لیکھک کے لئے قلم کی محنت سب شامل ہیں . الگ الگ طرح کی محنتوں کے لئے مزدوری پوری طرح برابر تو نہیں ہو سکتی . نہ شاید دنیا میں ابھی تک کہیں ہے . لیکن آج کل کے جو بڑھے ہوئے اور بے انصافی کے فرق ہیں وہ بےحد کم ہو سکتے ہیں اور ہونے چاہئیں . اس بارے میں بھی ہم بھائی موہن لال جی کے سامنے اپنے پڑوسی چین ہی کی مثال رکھنا چاہتے ہیں. نئے چین کے کارخانوں میں چھوٹے سے چھوٹے بڑے مزدور کی مزدوری اور کارخانے کے منیجر یا ڈائرکٹر کی تنخواہ میں تین اور آٹھ کا اوسط ہے . کانپور میں یہی اوسط ایک اور چھیانوے ہے . دنیا سے غریبی کو مٹانے کے لئے ہمیں اسی فرق کو کم سے کم کرنا ہے .

اس فرق کو جہاں تک ہو سکے کم کر کے ہی ہم اپنے اندر سچی انسانیت پیدا کر سکتے ہیں اور سب کو سکھ پہنچا سکتے ہیں .

بھائی موہن لال جی نے پونجی پتیوں دوارا چٹیوں، مسافر خانوں وغیرہ کے بنائے جانے کی چرچا کی ہے . یہ سچ ہے کہ اچھے اور برے پونجی پتیوں اور مزدوروں سب میں ہوتے ہیں . دنیا کے پونجی پتیوں نے اور راجاؤں اور سمراٹوں تک نے بڑے بڑے اچھے کام بھی کئے ہیں . پر جو آدمی دوسرے لاکھوں آدمیوں کی محنت سے فائدہ اٹھا کر کروڑوں روپیہ کماتا ہے اور ان کروڑوں میں سے چند لاکھ اس طرح کے دان پن میں خرچ کر دیتا ہے اور باقی دھن سے بنا اپنا پسینہ بہائے گل چھرے اڑاتا ہے جبکہ اس کے لئے ان لاکھوں محنت کرنے والوں کے نہ تن پر کپڑا دکھائی دیتا ہے اور نہ انہیں پیٹ بھر کھانے کو ملتا ہے . وہ نہ اپنے اندر کی مانوتا کو جگا پاتا ہے اور نہ دوسروں کے ساتھ ہی انصاف برتتا ہے . ہماری آج کل کی یہ مالی اور سماجی بے انصافی اب ختم ہونی چاہئے . ہر یگ کی اپنی مانگ ہوتی ہے . اس یگ کی یہی زبردست مانگ ہے .

رہے اس طرح کے سوال کہ آگے کے لئے مسافر خانے اور چٹیاں کون بنوائے گا یا بنا پونجی پتیوں کے انکم ٹیکس کے سرکار کا خرچ کیسے چلے گا . ہر سماجی ڈھانچے میں اس طرح کے کاموں کا اپنا اپنا ڈھنگ ہوتا ہے. چین میں تو ادھک تر ادیوگ دھندوں پر کوئی انکم ٹیکس بھی نہیں ہے . اتنے بڑے ملک کی سرکار کا لگ بھگ سارا خرچ زمین کی مالگذاری اور باہر کے دیشوں سے آنے جانے والے مال پر ٹیکسوں سے سندرتا سے چلتا ہے . روس سے لوٹے ہوئے ڈاکٹر رادھا کرشنن

हमारे तजरबे में यह बात आ चुकी है कि जब आदमी दूसरे का काम करने लगता है तो वह दूसरा उसी पर छोड़ देता है. जब कांगरेसी लोग गांव में सफ़ाई करने जाया करते थे तो यह देखा गया था कि गांव वाले उन्हीं पर बिलकुल छोड़ देते थे. यह तो मानना ही पड़ेगा कि आदमी स्वारथी है.

फिर अगर दौलत बराबर बांटी जावेगी तो आमदनी सब ही की घट जावेगी तो जो लाखों रुपया इनकमटैक्स का आता है वह कहां से आवेगा और सरकारी खरचा कहां से चलेगा.

—मोहनलाल नेहरू

[पंडित मोहनलाल जी नेहरू के इस ख़त को हम बड़ी ख़ुशी से "नया हिन्द" में जगह दे रहे हैं. जो लोग दुनिया में माली बराबरी क़ायम करना चाहते हैं उनका असल मतलब दौलत को बराबर बराबर बांटना नहीं है बल्कि जहां तक मुमकिन हो सके दौलत पैदा करने के साधनों को बराबर बराबर बांटना है. जिस से हर आदमी को अपनी मेहनत से दौलत पैदा करने का बराबर का मौक़ा मिल सके. जैसे अगर एक आदमी के पास सौ एकड़ ज़मीन है जिसे वह किसी तरह ख़ुद नहीं जोत सकता और चार आदमी हैं जो आसानी से पच्चीस पच्चीस एकड़ ज़मीन जोत सकते हैं और उनके पास ज़मीन नहीं है तो बराबरी चाहने वाला सिर्फ़ यह चाहता है कि पहले आदमी की सौ एकड़ ज़मीन इन चारों में बांट दी जाय. इस तरह अगर पहले आदमी के पास हल बैल वग़ैरा खेती का समान इतना है जिस से चारों का काम चल सके तो उसे भी चारों में बांट दिया जाय. ज़मीन हल और बैल दौलत पैदा करने के साधन हैं दौलत नहीं. दोनों में फ़र्क़ है. दौलत का बटवारा उस दर्जा तक ज़रूरी हो जाता है जिस दर्जा तक साधनों को काम में लाने के लिये ज़रूरी हो. मिसाल के लिये चीन में पुराने ज़मींदारों की कमाई हुई पूंजीयां ज़ब्त नहीं की गईं. उनके किराया पर चढ़ने वाले मकान या उनके तिजारती या उद्योगी कारख़ाने ज़ब्त नहीं किये गए. क्योंकि उनकी फ़ालतू ज़मीनें और पैदावार के दूसरे साधन जो उनकी आवश्यकता से अधिक थे लेकर सब में बराबर बांट दिये गए हैं.

इस तरह के बटवारे में किसी के निठ्ठले बैठने या गुलछर्रे उड़ाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता. हर एक के लिये मेहनत करना ज़रूरी हो जाता है. इस तरह की बराबरी चाहने वालों का एक ख़ास उसूल यह भी है कि हर आदमी अपने पालन पोषण के लिये अपनी शक्ती भर मेहनत करे. ऐसे प्रबन्ध से हर आदमी अपनी मेहनत के अनुसार ही सुख भोग सकेगा.

ہمارے تجربے میں یہ بات آ چکی ہے کہ جب آدمی دوسرے کا کام کرنے لگتا ہے تو وہ دوسرا اُسی پر چھوڑ دیتا ہے. جب کانگریسی لوگ گاؤں میں صفائی کرنے جایا کرتے تھے تو یہ دیکھا گیا تھا کہ گاؤں والے اُنہیں پر بالکل چھوڑ دیتے تھے. یہ تو ماننا ہی پڑیگا کہ آدمی سوارتھی ہے.

پھر اگر دولت برابر بانٹی جاوے تو آمدنی سب ہی کی گھٹ جاویگی تو جو لاکھوں روپیہ اِنکم ٹیکس کا آتا ہے وہ کہاں سے آویگا اور سرکاری خرچہ کہاں سے چلے گا .

——موہن لال نہرو

پنڈت موہن لال جی نہرو کے اس خط کو ہم بڑی خوشی سے "نیا ہند" میں جگہ دے رہے ہیں . جو لوگ دنیا میں مالی برابری قائم کرنا چاہتے ہیں ان کا اصل مطلب دولت کو برابر برابر بانٹنا نہیں ہے بلکہ جہاں تک ممکن ہوسکے دولت پیدا کرنے کے سادھنوں کو برابر بانٹنا ہے . جس سے ہر آدمی کو اپنی محنت سے دولت پیدا کرنا کا برابر موقع مل سکے . جیسے اگر ایک آدمی کے پاس سو ایکڑ زمین ہے جسے وہ کسی طرح خود نہیں جوت سکتا اور تین آدمی ہیں جو آسانی سے پچیس پچیس ایکڑ زمین جوت سکتے ہیں اور اُن کے پاس زمین نہیں ہے تو برابری چاہنے والا صرف یہ چاہتا ہے کہ پہلے آدمی کی سو ایکڑ زمین ان چاروں میں بانٹ دی جائے. اِسی طرح اگر پہلے آدمی کے پاس ہل بیل وغیرہ کھیتی کا سامان اِتنا ہے جس سے چاروں کا کام چل سکے تو اُسے بھی چاروں میں بانٹ دیا جائے. زمین ہل اور بیل دولت پیدا کرنے کے سادھن ہیں دولت نہیں. دونوں میں فرق ہے . دولت کا بٹوارہ اُس درجہ تک ضروری ہو جاتا ہے جس درجہ تک سادھنوں کو کام میں لانے کے لئے ضروری ہو . مثال کے لئے چین میں پرانے زمینداروں کی کمائی ہوئی پونجیاں ضبط نہیں کی گئیں. ان کے کرایہ پر چڑھنے والے مکان یا اُن کے تجارتی یا ادیوگی کارخانے ضبط نہیں کئے گئے. کیونکہ اُن کی فالتو زمینیں اور پیداوار کے دوسرے سادھن جو ان کی آوشیکتا سے ادھک تھے لے کر سب میں برابر بانٹ دئے گئے ہیں .

اس طرح کے بٹوارے میں کسی کے نکھٹے بیٹھنے یا گلچھرے اڑانے کا تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. ہر ایک کے لئے محنت کرنا ضروری ہو جاتا ہے. اِس طرح کی برابری چاہنے والوں کا ایک خاص اُصول یہ بھی ہے کہ ہر آدمی اپنے پالن پوشن کے لئے اپنی شکتی بھر محنت کرے . ایسے پربندھ میں ہر آدمی اپنی محنت کے انوسار ہی سکھ بھوگ سکے گا .

हमारी राय — ہماری رائے

एक ख़त

दौलत का बंटवारा

भाई सुन्दरलाल जी. जय हिन्द ! मैं आप का "नया हिन्द" पढ़ रहा था कि एक लेख में लेखक महोदय ने लिखा था कि अगर हिन्दुस्तान में दौलत बराबर बांट दी जावे तो कोई ग़रीब न रहेगा. यह पढ़ कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ. मैं तो समझता हूं कि अगर ऐसा हो भी सके तो सब ही ग़रीब हो जावेंगे क्योंकि लोग काम काज छोड़ कर गुलछर्रे उड़ाने लगेंगे और बंटी हुई दौलत चार दिन में फू हो जावेगी. ज़रा सोचिये अगर हज़ार बरस पहले ऐसा हुआ होता तो जो सुभीते आज तीर्थ यात्रा में मिल जाते हैं कहां मिलते. पूंजीवाद चाहे भी जितना बुरा आज समझा जाता हो मगर पूंजीवादियों ने ही तो यह सुभीते जनता के वास्ते बनाए हैं. आप यहां से बद्रीनाथ तक जावें. देखेंगे कि हर तीन चार मील पर पूंजीवादियों ने चट्टियां बना दी हैं जहां मुसाफ़िर ठहर सकते हैं और आराम से रात काट सकते हैं. यदि दौलत बराबर बंटी हुई होती तो क्या यह चट्टियां चंदे से बनती. हर बड़े और छोटे नगर में मुसाफ़िरख़ाने बने हैं जिस के वास्ते सरकार ने पैसा भी नहीं दिया है कौन बनाता.

फिर दौलत बराबर कैसे बंट सकती है. एक आदमी पैसा अधिक पैदा करता है क्योंकि उसके वास्ते परिश्रम करता है दूसरा कुछ नहीं करता, दोनों क्या बराबर के हक़दार हैं. एक की बुद्धि तेज़ है वह हवाई जहाज़ बनाता है उस पर उड़ता है दूसरों को सिखाता है, दूसरा न बनाता है, न उस में कोई सहायता देता है फिर दोनों में बराबरी कैसे हो सकती है. क्या यह बे इनसाफ़ी नहीं कि एक की मेहनत और बुद्धि का फ़ायदा दूसरे को मिले ?

आप एक की आमदनी में टैक्सों द्वारा कमी चाहे भी कितनी कर दें मगर दूसरे को बिना किसी काम किये उसका लाभ दें यह ज़रा समझ के बाहर है. आमदनी में कमी या ज़ियादती होना आदमी की समझ और बुद्धि पर ही निरभर रहेगा.

ایک خط

دولت کا بٹوارہ

بھائی سندر لال جی۔ جے ہند! میں آپکا "نیا ہند" پڑھ رہا تھا کہ ایک لیکھ میں لیکھک مہودے نے لکھا تھا کہ اگر ہندستان میں دولت برابر بانٹ دی جاوے تو کوئی غریب نہ رہیگا. یہ پڑھکر مجھے بڑا آشچریہ ہوا . میں تو سمجھتا ہوں کہ اگر ایسا ہو بھی سکے تو سب ہی غریب ہو جاوینگے کیونکہ لوگ کام کاج چھوڑ کر گلچھرے اڑانے لگینگے اور بٹی ہوئی دولت چار دن میں پھو ہو جاویگی۔ ذرا سوچئے اگر ہزار برس پہلے ایسا ہوا ہوتا تو جو سبھیتے آج تیرتھ یاترا میں مل جاتے ہیں کہاں ملتے۔ پونجی واد چاہے بھی جتنا برا آج سمجھا جاتا ہو مگر پونجی وادیوں نے ہی تو یہ سبھیتے جنتا کے واسطے بنائے ہیں۔ آپ یہاں سے بدری ناتھ تک جاویں . دیکھینگے کہ ہر تین چار میل پر پونجی وادیوں نے چٹیاں بنادی ہیں جہاں مسافر ٹھہر سکتے ہیں اور آرام سے رات کاٹ سکتے ہیں۔ یدی دولت برابر بٹی ہوئی ہوتی تو کیا یہ چٹیاں چندے سے بنتیں۔ ہر بڑے اور چھوٹے نگر میں مسافر خانے بنے ہیں جس کے واسطے سرکار نے پیسہ بھی نہیں دیا ہے کون بناتا .

پھر دولت برابر کیسے بٹ سکتی ہے . ایک آدمی پیسہ پیدا کرتا ہے کیونکہ اس کے واسطے پریشرم کرتا ہے دوسرا کچھ نہیں کرتا' دونوں کیا برابر کے حقدار ہیں . ایک کی بدھی تیز ہے وہ ہوائی جہاز بناتا ہے اسپر اڑتا ہے دوسروں کو سکھاتا ہے۔ دوسرا نہ بناتا ہے' نہ اس میں کوئی سہائتا دیتا ہے . پھر دونوں میں برابری کیسے ہو سکتی ہے . کیا یہ بےانصافی نہیں کہ ایک کی محنت اور بدھی کا فائدہ دوسرے کو ملے ؟

آپ ایک کی آمدنی میں ٹیکسوں دوارا کمی چاہے بھی کتنی کردیں مگر دوسرے کو بنا کسی کام کئے اسکا لابھ دیں یہ ذرا سمجھ کے باہر ہے۔ آمدنی میں کمی یا زیادتی ہونا آدمی کی سمجھ اور بدھی پر ہی نربھر رہیگا .

स्मरन यात्रा

लेखक—काका कालेलकर; अनुवादक—खुशहाल सिंह चौहान और श्री पाद जोशी; निकालने वाले—नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; लिखावट हिन्दी; सफ़े 370; कीमत साढ़े तीन रुपया.

हर एक इनसान के पास अगर कोई क़ीमती चीज़ है तो वह उसका अपना अनुभव ही होता है. स्मरन यात्रा में काका कालेलकर के जीवन यात्रा के छठे बरस से लेकर 18 बरस तक के प्रसंगों का संग्रह है. जीवन यात्रा के यह संग्रह आज हमारे बच्चों को बहुत ही कारगर साबित होंगे. हमारे बाल समाज को आज वास्तव में ऐसे ही संग्रहों की ज़रूरत है, क्योंकि बालकों और नव जवानों के मन से संकोच निकाल कर अगर उन्हें अपने विषय में बोलने के लिये माहिर करना हो, उन्हें आत्मबल देने की कला सिखानी हो तो सब से सुन्दर साधन उन्हें शिक्षा देने का एक यह भी है कि हम उनके सामने अपने जीवन के बचपन का नक़्शा निसंकोचता के साथ पेश करें. हमने भी अपने बचपन में आशा निराशाओं का अनुभव किया है. उस समय हम किस तरह छटपटाते रहे हैं, नये नये प्रसंगों की ओर हम कैसे कैसे आकर्शित होते रहे हैं, वग़ैरा बातों को यथार्थता के साथ हम बच्चों और नव जवानों के सामने रक्खें तो हम देखेंगे कि यह बच्चे भी अपने अंदर ऐसा महसूस करेंगे कि हमारे बुज़ुर्गों का जीवन भी हमारे जीवन जैसा ही था. इसलिये यह लोग हमारे जीवन को आसानी से समझ पायेंगे और सचाई व सहानुभूति के साथ उस पर विचार भी कर सकेंगे.

बच्चों और नव जवानों को यह देख कर बड़ी तसल्ली होती है कि उनके अनुभव, उनकी ग़लतियां, उनकी महत्वकांक्षायें और उनका बुद्धूपन इन में से कुछ भी असाधारन नहीं है! और उन्हीं के जैसे और भी बहुत से हैं. उनको यह महसूस होता है कि जिस चीज़ को दूसरे लोग कर सके उसे वह भी कर सकेंगे. इस तरह उनका आत्म विश्वास बढ़ने लगता है. इस निगाह से 'स्मरन यात्रा' हिन्दी साहित्य को एक क़ीमती देन है. यह नवजवानों और बच्चों को प्रेरना देने और उनके आत्म बल को बढ़ाने व उनके जीवन स्तर को उठाने में एक ज़बरदस्त चिराग़ साबित होगी.

—चेतन कुमार शर्मा

اسمرن یاترا

لیکھک—کاکا کالیلکر؛ انوواذک—خوش حال سنگھ چوہان اور شری پاد جوشی؛ نکالنے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 370؛ قیمت ساڑھے تین روپیہ .

ہر ایک اِنسان کے پاس اگر کوئی قیمتی چیز ہے تو وہ اُس کا اپنا انوبھو ہی ہوتا ہے . اسمرن یاترا میں کاکا کالیلکر کے جیون یاترا کے چھٹے برس سے لیکر 18 برس تک کے پرسنگوں کا سنگرہ ہے. جیون یاترا کے یہ سنگرہ آج ہمارے بچوں کو بہت ہی کارگر ثابت ہوں گے. ہمارے بال سماج کو آج واستو میں ایسے ہی سنگرہوں کی ضرورت ہے . کیونکہ بالکوں اور نوجوانوں کے من سے سنکوچ نکال کر اگر اُنھیں اپنے وِشے میں بولنے کے لئے ماہر کرنا ہو، اُنھیں آتم بل دینے کی کلا سکھانی ہو تو سب سے سُندر سادھن اُنھیں شکشا دینے کا ایک یہ بھی ہے کہ ہم اُن کے سامنے اپنے جیون کے بچپن کا نقشہ نسنکوچتا کے ساتھ پیش کریں. ہم نے بھی اپنے بچپن میں آشا نراشاؤں کا انوبھو کیا ہے . اُس سمے ہم کس طرح چھٹپٹاتے رہے ہیں، نئے نئے پرسنگوں کی اور ہم کیسے کیسے آکرشت ہوتے رہے ہیں، وغیرہ باتوں کو یتھارتھتا کے ساتھ ہم بچوں اور نوجوانوں کے سامنے رکھیں تو ہم دیکھینگے کہ یہ بچے بھی اپنے اندر ایسا محسوس کرینگے کہ ہمارے بزرگوں کا جیون بھی ہمارے جیون جیسا ہی تھا . اِس لئے یہ لوگ ہمارے جیون کو آسانی سے سمجھ پائینگے اور سچائی و سہانوبھوتی کے ساتھ اُس پر وچار بھی کرسکیں گے .

بچوں اور نوجوانوں کو یہ دیکھکر بڑی تسلی ہوتی ہے کہ اُن کے انوبھو، اُن کی غلطیاں، اُن کی مہتو کانشائیں اور اُن کا بدھوپن اِن میں سے کچھ بھی اسادھارن نہیں ہے ! اور اُنھیں کے جیسے اور بھی بہت سے ہیں. اُن کو یہ محسوس ہوتا ہے کہ جس چیز کو دوسرے لوگ کرسکے اُسے وہ بھی کرسکینگے . اِس طرح اُن کا آتم وشواس بڑھنے لگتا ہے. اِس نگاہ سے 'اسمرن یاترا' ہندی ساہتیہ کو ایک قیمتی دین ہے. یہ نوجوانوں اور بچوں کو پریرنا دینے اور اُن کے آتم بل کو بڑھانے و اُن کے جیون استر کو اُٹھانے میں ایک زبردست چراغ ثابت ہوگی .

—چیتن کمار شرما

शब्द तो मुझे याद नहीं पर यह जैनेन्द्र जी के ही विचार हैं—नावल में दर्शन का पुट होना चाहिये, समाज का आज का चित्रन होना चाहिये और कल समाज जहां पहुंचे उसकी एक हलकी तसवीर हो और उधर जाने का संकेत. 'व्यतीत' का दर्शन हमारी समझ में नहीं आया. आज के समज का चित्रन भी नहीं है.

जैनेन्द्र जी ने इस नावल में हिन्दू "Cousin" की शादियां करवाई हैं. ज़ाहिर है हिन्दू समाज में रिश्ते की बहनों का वही दरजा है जो सगी बहनों का. यह आज के हिन्दू समाज का चित्रन नहीं है. पर इस बात के आगे सब बेकार है कि "ऐसी घटना घटी है, तभी तो मैंने लिखा है, यह सब यथार्थ है." किस भविश्य की तरफ़ यह नावल संकेत करता है, यह सब हम नहीं मालूम कर पाते. एक ही भविश्य का पता चलता है और वह यह कि "हिन्दुस्तुओं में रिश्ते की बहनों के साथ ब्याह रचाया जाया करे.' आज जब दुनिया के मनोविज्ञानी "Cousins" की शादी को बुरा बता रहे हैं और ऐसी चालू रसमों को तुड़वा रहे हैं ऐसी परिस्थिति में जैनेन्द्र जी के सन्देश का क्या अर्थ लगाया जाय, यह सोचने की बात है.

किताब की शैली रसीली है और एक दफ़ा उठा लेने के बाद रखने का मन नहीं चाहता. जैनेन्द्र की शैली एक शराब है. जब तक नशा रहता है, पाठक सब कुछ भूला रहता है, बदमस्त रहता है. और जब नशा उतरता है, किताब ख़तम होती है, पाठक होश में आता है तो तबियत में ख़ुशी, उत्साह, जोश कोई आदर्श होने के बजाए ग्लानी होती है, जैसे अपने किये पर पछतावा होता हो, शर्म लगती हो. —मुजीब रिज़वी

कारटून—अगस्त का ख़ास नम्बर

माहवारी उरदू रिसाला; सफ़ा 24; दाम चार आना; साइज़ $\frac{20\times30}{16}$ सालाना चन्दा दो रुपए आठ आने; पता—बशीर मंज़िल, ग़ाज़ीपुर.

रज़िया सज्जाद ज़हीर, वामिक़ जौनपुरी, मैकश ग़ाज़ीपुरी, राही मासूम रज़ा और राज़ जैसे उरदू अदब के चमकते सितारे "कारटून" के एडीटर हैं.

"कारटून" एक तनज़िया (व्यंगात्मक) रिसाला है. उरदू में ऐसे रिसालों की सख़्त ज़रूरत है. ज़िन्दगी में हर वक़्त गम्भीर रहना कोई अच्छी ज़िन्दगी नहीं है. "कारटून" का गुन यह है कि यह हंसाता भी है और ज़िन्दगी की असलियत और आजकल की समस्याओं को खोल कर पढ़ने वालों के सामने रखता जाता है. "हम कारटून" की तरक़्क़ी चाहते हैं और चाहते हैं कि ज़ियादा से ज़ियादा लोग इसकी मदद करें:

—बेनी माधव

شبد تو مجھے یاد نہیں پر یہ جینیندر جی کے ہی وچار ہیں—ناول میں درشن کا پٹ ہونا چاہئے' سماج کا آج کا چترن ہونا چاہئے اور کل سماج جہاں پہونچے اس کی ایک ہلکی تصویر ہو اور ادھر جانے کا سنکیت . ' ویتیت ' کا درشن ہماری سمجھ میں نہیں آیا . آج کے سماج کا چترن بھی نہیں ہے .

جینیندر جی نے اس ناول میں ہندو "Cousin" کی شادیاں کروائی ہیں. ظاہر ہے ہندو سماج میں رشتے کی بہنوں کا وہی درجہ ہے جو سگی بہنوں کا. یہ آج کے ہندو سماج کا چترن نہیں ہے. پر اس بات کے آگے سب بیکار ہے کہ " ایسی گھٹنا گھٹی ہے' تبھی تو میں نے لکھا ہے' یہ سب یتھارتھ ہے ." کس بھوشیہ کی طرف یہ ناول سنکیت کرتا ہے' یہ سب ہم نہیں معلوم کر پاتے . ایک ہی بھوشیہ کا پتہ چلتا ہے اور وہ یہ کہ "ہندؤں میں رشتے کی بہنوں کے ساتھ بیاہ رچایا جایا کرے ." آج جب دنیا کے منووگیانی " Cousins " کی شادی کو برا بتا رہے ہیں اور ایسی چالو رسموں کو تڑوا رہے ہیں ایسے پرستھتی میں جینیندر جی نے سندیش کا کیا ارتھ لگایا جائے' یہ سوچنے کی بات ہے .

کتاب کی شیلی رسیلی ہے اور ایک دفعہ اٹھا لینے کے بعد رکھنے کے من نہیں چاہتا . جینیندر کی شیلی ایک شراب ہے . جب تک نشہ رہتا ہے' پاٹھک سب کچھ بھولا رہتا ہے' بد مست رہتا ہے . اور جب نشہ اترتا ہے' کتاب ختم ہوتی ہے' پاٹھک ہوش میں آتا ہے تو طبیعت میں خوشی' اتساہ' جوش کوئی آدرش ہونے کے بجائے گلانی ہوتی ہے جیسے اپنے کئے پر پچھتاوا ہوتا ہو' شرم لگتی ہو . ——مجیب رضوی

کارٹون—اگست کا خاص نمبر

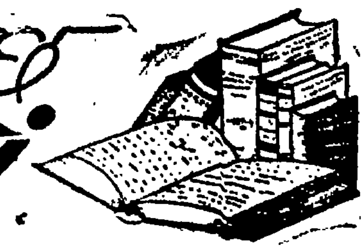
ماہواری اردو رسالہ؛ صفحہ 24؛ دام چار آنہ؛ سائز $\frac{20\times30}{16}$ سالانہ چندہ دو روپیہ آٹھ آنے؛ پتہ—بشیر منزل' غازیپور .

رضیہ سجاد ظہیر' وامق جونپوری' میکش غازیپوری' راہی معصوم رضا اور راز جیسے اردو ادب کے دمکتے ستارے "کارٹون" کے ایڈیٹر ہیں .

"کارٹون" ایک طنزیہ (ویَنگ آتمک) رسالہ ہے . اردو میں ایسے رسالوں کی سخت ضرورت ہے . زندگی میں ہر وقت گمبھیر رہنا کوئی اچھی زندگی نہیں ہے. "کارٹون" کا گن یہ ہے کہ یہ ہنساتا بھی ہے اور زندگی کی اصلیت اور آج کل کی سمسیاؤں کو کھول کر پڑھنے والے کے سامنے رکھتا جاتا ہے. ہم "کارٹون" کی ترقی چاہتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ زیادہ سے زیادہ لوگ اس کی مدد کریں.

——بینی مادھو

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

व्यतीत

लिखने वाले—जैनेन्द्र कुमार; निकालने वाले—पूर्वोदय प्रकाशन, 7 दरियागंज, दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सफ़ा 170; दाम साढ़े तीन रुपया.

दस साल की ख़ामोशी के बाद जैनेन्द्र जी का यह तीसरा नावल है. दिल्ली रेडियो से यह नावल प्रसारित हो चुका है. "विवर्त" और "सुखदा" में दो औरतों की जीवनी है. पर 'व्यतीत' में एक मर्द की जीवनी को चित्रित किया गया है. पढ़ने पर इतना तो फ़ौरन ही पता चलता है कि जैनेन्द्र जी ने इसको बहुत जलदी में लिखा है और फिर शायद पन्ने भी नहीं उलटे. संकेत में बात करना उनकी शैली है और उन्होंने दिल खोल कर इसका उपयोग इसमें किया है.

नावल हीरो के संस्मरन मात्र है. 45 बरस की उमर में एक दिन वह "व्यतीत" पर विचार करने लगता है और बीती घटनाओं में डूब जाता है. 45 बरस में उसकी नाव कई पतवारों के सहारे चली है. एक लड़की जीवन में आई. हीरो को उसने कुछ दूर ढकेला, फिर पतवार छूट गया. एक के बाद दूसरी लड़की का सहारा ले कर हीरो की जीवन नैय्या आगे बढ़ती है और मर्द औरत के इसी मेल, दिल के जज़बे और प्रेम के सहारे नावल की कहानी भी आगे बढ़ती है और एक बारगी रुक जाती है, 45 बरस पूरे हो जाते हैं.

इस नावल के भी सारे पात्र "टायप" हैं. ढूंढने पर शायद ही मिल सकें. पर जैनेन्द्र जी के बारे में लोगों का कहना है कि वह "सच्ची घटनाओं के आधार" पर ही नावल लिखते हैं. अगर मैं भूलता नहीं हूं तो ख़ुद उनका भी कहना है कि "मैं जिस तरह घटना घटती है, उसी तरह कल्पना का रंग मिला कर उसे चित्रित कर देता हूं" किसी माली के लिये यह गर्व की बात नहीं हो सकती. जंगल और बाग़ में यही फ़रक़ है. जंगल में फूल ख़ुद उगते हैं, बढ़ते हैं, और बाग़ में फूलों को काट छांट कर "कलचर" किया जाता है, एक शकल दी जाती है. हो सकता है जंगल ज़ियादा सुन्दर दिखाई पड़े, रस भी उसमें हो, मन मोहक हो, पर जंगल जंगल है और बाग़ बाग़.

ویتیت

لکھنے والے—جینیندر کمار؛ نکالنے والے—پوروَدے پرکاشن' 7 دریا گنج' دلی' لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 170؛ دام ساڑھے تین روپیہ .

دس سال کی خاموشی کے بعد جینیندر جی کا یہ تیسرا ناول ہے. دلی ریڈیو سے یہ ناول پرسارت ہو چکا ہے . " وورت " اور " سکھدا " میں دو عورتوں کی جیونی ہے . پر 'ویتیت' میں ایک مرد کی جیونی کو چترت کیا گیا ہے. پڑھنے پر اتنا تو فوراً ہی پتہ چلتا ہے کہ جینیندر جی نے اس کو بہت جلدی میں لکھا ہے اور پھر شاید پنے بھی نہیں الٹے . سنکیت میں بات کرنا اُن کی شیلی ہے اور اُنہوں نے دل کھول کر اس کا اُپیوگ اس میں کیا ہے .

ناول ہیرو کے سنسمرن ماتر ہے . 45 برس کی عمر میں ایک دن وہ " ویتیت " پر وچار کرنے لگتا ہے اور بیتی گھٹناؤں میں ڈوب جاتا ہے . 45 برس میں اس کی ناؤ کئی پتواروں کے سہارے چلی ہے . ایک لڑکی جیون میں آئی . ہیرو کو اس نے کچھ دور ڈھکیلا' پھر پتوار چھوٹ گیا . ایک کے بعد دوسری لڑکی کا سہارا لے کر ہیرو کی جیون نیا آگے بڑھتی ہے اور مرد عورت کے اسی میل' دل کے جذبے اور پریم کے سہارے ناول کی کہانی بھی آگے بڑھتی ہے اور ایک بارگی رک جاتی ہے' 45 برس پورے ہو جاتے ہیں .

اس ناول کے بھی سارے پاتر " ٹائپ " ہیں . ڈھونڈنے پر شاید ہی مل سکیں . پر جینیندر جی کے بارے میں لوگوں کا کہنا ہے کہ وہ " سچی گھٹناؤں کے آدھار " پر ہی ناول لکھتے ہیں. اگر میں بھولتا نہیں ہوں تو خود اُن کا بھی کہنا ہے کہ " میں جس طرح گھٹنا گھٹتی ہے' اسی طرح کلپنا کا رنگ ملا کر اسے چترت کر دیتا ہوں ." کسی مالی کے لئے یہ گرو کی بات نہیں ہو سکتی . جنگل اور باغ میں یہی فرق ہے . جنگل میں پھول خود اُگتے ہیں' بڑھتے ہیں' اور باغ میں پھولوں کو کانٹ چھانٹ کر " کلچر " کیا جاتا ہے' ایک شکل دی جاتی ہے . ہو سکتا ہے جنگل زیادہ سندر دکھائی پڑے' رس بھی اس میں ہو' من موہک ہو' پر جنگل جنگل ہے اور باغ باغ .

नैनीताल

नैनीताल में हिन्द चीन दोस्ती पर एक सभा हुई. पंडित जी ढाई घंटे तक बोलते रहे.

अलमोड़ा

शान्ति समिति ने यहां सभा की. एक सोशलिस्ट सज्जन इस सभा के कर्ता धर्ता थे. काफी लोग आए थे. शान्ति की राह से आज अलग जाना आसान नहीं है. जो अपने बारे में सोचता है, जिसे दुनिया में किसी चीज़ से भी प्रेम है, वह शान्ति चाहता है......शान्ति के सिवा उसके लिये कोई चारा ही नहीं है.

अलमोड़ा से हम लोग कोसानी के लिये चल पड़े. रास्ते में रानीखेत पड़ता है. रानीखेत और नैनीताल......दोनों की खूबसूरती में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. रानीखेत फूलों से लदा है......हर तरफ़ महक बिखरी रहती है...... नैनीताल में झील छोड़ कर कुछ नहीं है और यहां......नेचर ने दोनों हाथ से इसे खूबसूरती बांटी है.

कोसानी के दृश्य बारिश शुरू होने के बाद भाग्य वालों को ही मिलते हैं......सात सात रोज़ तक लोग इन्तज़ार करते हैं और नाउम्मीदी का दामन थामे वापस हो जाते हैं. और कोई हैं, कि गये और दर्शन हो गये !

रिम झिम झरी लगी थी......सब ने मना किया कि कोसानी जाना बेकार है......पर चल ही पड़े. आसमान साफ़ होने लगा. दृश्य दिखाई देने लगा. जैसे बटन दबा कर किसी ने परदा हटा दिया हो......ढाई सौ मील तक फैला हुआ बर्फ़......जैसे किसी ने रूपहले महल खड़े किये हों,......यहां गांधी जी आकर ठहरे थे...... आंखें इन दृश्यों को देखते कभी नहीं थकतीं, मन कभी नहीं उकताता.

फिर नीचे उतरना ही पड़ा. कहते हैं आनन्द का रास्ता ढलवां होता है और तपस्या का रास्ता चढ़ाई पर होता है......पर यहां मामला उलटा है. चढ़ाई पर आनन्द है, रस है, स्वर्ग है और ढलवां रास्ते पर......लू, गरमी, पसीना,......बेचैनी......पूरी तपस्या. फिर अलमोड़ा और रानी खेत होते काठ गोदाम पहुंच गए और...... फिर वहां से क़न्नोज.

क़न्नौज

यहां दो सभाएं हुईं. बहुत कम आबादी है......और फिर इलाहाबाद के लिये क़ाफ़िला चल पड़ा.

نینی تال

نینی تال میں ہند چین دوستی پر ایک سبھا ہوئی . پنڈت جی ڈھائی گھنٹے تک بولتے رہے .

الموڑا

شانتی سمتی نے یہاں سبھا کی . ایک شوسلسٹ سجن اس سبھا کے کرتا دھرتا تھے . کافی لوگ آئے تھے . شانتی کی راہ سے آج الگ جانا آسان نہیں ہے . جو اپنے بارے میں سوچتا ہے' جسے دنیا میں کسی چیز سے بھی پریم ہے وہ شانتی چاہتا ہے شانتی کے سوا اس کے لئے کوئی چارہ ہی نہیں ہے .

الموڑا سے ہم لوگ کوسانی کے لئے چل پڑے . راستے میں رانی کھیت پڑتا ہے . رانی کھیت اور نینی تال ......دونوں کی خوبصورتی میں زمین آسمان کا فرق ہے . رانی کھیت پھولوں سے لدا ہے......ہر طرف مہک بکھری رہتی ہے......نینی تال میں جھیل کو چھوڑ کر کچھ نہیں ہے اور یہاں......نیچر نے دونوں ہاتھ سے اسے خوبصورتی بانٹی ہے .

کوسانی کے درشیہ بارش شروع ہونے کے بعد بھاگ والوں کو ہی ملتے ہیں......سات سات روز تک لوگ انتظار کرتے ہیں اور نا امیدی کا دامن تھامے واپس ہو جاتے ہیں . اور کوئی ہیں' کہ گئے اور درشن ہو گئے !

رم جھم جھڑی لگی تھی......سب نے منع کیا کہ کوسانی جانا بیکار ہے......پر چل ہی پڑے . آسمان صاف ہونے لگا . درشیہ دکھائی دینے لگا . جیسے بٹن دبا کر کسی نے پردہ ہٹا دیا ہو......ڈھائی سو میل تک پھیلا ہوا برف......جیسے کسی نے روپہلے محل کھڑے کئے ہوں'......یہاں گاندھی جی آ کر ٹھہرے تھے......آنکھیں ان درشیوں کو دیکھتے کبھی نہیں تھکتیں' من کبھی نہیں اکتاتا .

پھر نیچے اترنا ہی پڑا . کہتے ہیں آنند کا راستہ ڈھلوان ہوتا ہے اور تپسیا کا راستہ چڑھائی پر ہوتا ہے...... پر یہاں معاملہ الٹا ہے . چڑھائی پر آنند ہے' رس ہے' سورگ ہے اور ڈھلوان راستے پر......لو' گرمی' پسینہ......بے چینی ......پوری تپسیا . پھر الموڑا اور رانی کھیت ہوتے کاٹھ گدام پہونچ گئے اور......پھر وہاں سے قنوج .

قنوج

یہاں دو سبھائیں ہوئیں . بہت کم آبادی ہے......اور پھر الہ آباد کے لئے قافلہ چل پڑا .

चिलकिया में किसानों की सभा हुई. इधर के लोगों में कोई जागरण नहीं पर सिक्खों में हिम्मत है, उत्साह है. पंडित सुन्दरलाल चीन के किसानों की जीत के हाल उन्हें सुनाते रहे. चीन के किसानों को जमीन मिल गई है, यह जान कर उन्हें खुशी भी हुई थी और ताज्जुब भी.

पंडित जी ने कहा—"चीन की पैदावार बेहद बढ़ गई है. मंडियां अनाज से पटी पड़ी हैं. किसान भर पेट खाता है और मलहार गाता है."

एक सिक्ख ने साफ़े को हिलाया और दूसरे को गोद कर बोला—"हम भी पैदावार बढ़ा सकते हैं, देश को एक दाना भी विदेश से नहीं लेना पड़ेगा......

"पागल हो, पागल......पैदावार बढ़ाओगे तो खेत ही छिन जायगा.....समझे......पैदावार और कम करो !" दूसरे ने जवाब दिया.

पानी.....एक नेमत है नेमत.....रामनगर में नहर की कुंजी है. एक दिन पानी चिलकिया की तरफ़ आता है.....दूसरे दिन बन्द......इधर बन्द होता है तो दूसरी तरफ़ पानी पहुंचता है. दूसरी तरफ़ बन्द होता है तो इधर आता है...जो आता भी है. वह ऊंट के मुंह को जीरा......नहर में घुटने से ज़ियादा पानी हो ही नहीं सकता......उसी नहर से पानी पीना, जानवरों को पिलाना, नहाना धोना...ज़िन्दगी के सारे काम चलाना......यहां के लोग कहते हैं कि यह भी भाग्य से है......नहीं तो......ऐसे भी इलाक़े हैं जहां ऐसा भी प्रबन्ध नहीं......यही तो संतोष है.

'प्यास न जाने धोबी घाट" की बात वह लोग क्या समझें. कहना यह चाहिये—"प्यास न जाने कीचड़ कांद" कहीं गढ़े में पानी हो और लोग उपयोग न करें, कैसे हो सकता है. कमबख्त मरते भी नहीं......कहां हैं डाक्टर, कहां हैं उनके सफ़ाई के ढंग, कहां हैं उनके जर्म......इनमें से किसी की ज़रूरत यहां वालों को नहीं है.

एक आदमी प्यासा था......एक भैंसा भी प्यासा था......गढ़े की तरफ़ दोनों भागे. भैंसा आगे पहुँच गया, पानी में घुस गया......पानी को मथ कर कीचड़ बना डाला......और आदमी......उसने घाट पर पहुंच कर अपने चारों तरफ़ निराशा भरी निगाहें दौड़ाईं......एक ठंडी सांस भर के बैठ गया......चुल्लू लगाया और कीचड़ पी गया.

किसी ने कहा—"कीचड़ पी रहे हो."

"पानी का स्वरूप हमारे लिये यही है" उत्तर मिला.

काशीपुर और रामनगर

दोनों शहरों में शान्ति समिति की सभा हुई. पंडित जी का सन्देश सुनने के लिये लोग बड़ी तादाद में इकट्ठा हो गए.

چلکیا میں کسانوں کی سبھا ہوئی . اِدھر کے لوگوں میں کوئی جاگرن نہیں پر سکھوں میں ہمت ہے' اُتساہ ہے . پنڈت سندر لال چین کے کسانوں کی جیت کے حال اُنہیں سناتے رہے . چین کے کسانوں کو زمین مل گئی ہے یہ جان کر اُنہیں خوشی بھی ہوئی تھی اور تعجب بھی.

پنڈت جی نے کہا—"چین کی پیداوار بےحد بڑھ گئی ہے . منڈیاں اناج سے پٹی پڑی ہیں . کسان بھر پیٹ کھاتا ہے اور ملہار گاتا ہے ."

ایک سکھ نے صافے کو ہلایا اور دوسرے کو گود کر بولا —" ہم بھی پیداور بڑھا سکتے ہیں' دیش کو ایک دانہ بھی بدیش سے نہیں لینا پڑے گا......"

" پاگل ہو' پاگل......پیداوار بڑھاؤ گے تو کھیت ہی چھن جائے گا......سمجھے......پیداوار اور کم کرو !" دوسرے نے جواب دیا .

پانی......ایک نعمت ہے نعمت......رام‌نگر میں نہر کی کنجی ہے . ایک دن پانی چلکیا کی طرف آتا ہے......دوسرے دن بند......ادھر بند ہوتا ہے تو دوسری طرف پانی پہونچتا ہے . دوسری طرف بند ہوتا ہے تو ادھر آتا ہے......جو آتا بھی ہے وہ اُونٹ کے منہ کو زیرہ......نہر میں گھٹنے سے زیادہ پانی ہو ہی نہیں سکتا......اسی نہر سے پانی پینا' جانوروں کو پلانا' نہانا دھونا......زندگی کے سارے کام چلانا......یہاں کے لوگ کہتے ہیں کہ یہ بھی بھاگیہ......سے ہے......نہیں تو......ایسے علاقے ہیں جہاں ایسا بھی پربندھ نہیں یہی تو سنتوش ہے .

" پیاس نہ جانے دھوبی گھاٹ " کی بات یہ لوگ کیا سمجھیں. کہنا یہ چاہئے—"پیاس نہ جانے کیچڑ کاند" نہیں گڈھے میں پانی ہو اور لوگ اپیوگ نہ کریں' کیسے ہو سکتا ہے . کم بخت مرتے بھی نہیں......کہاں ہیں ڈاکٹر' کہاں ہے اُن کے صفائی کے ڈھنگ' کہاں ہیں اُن کے جرم......اِن میں سے کسی کی ضرورت یہاں والوں کو نہیں ہے .

ایک آدمی پیاسا تھا......ایک بھینسا بھی پیاسا تھا......گڈھے کی طرف دونوں بھاگے. بھینسا آگے پہنچ گیا' پانی میں گھس گیا......پانی کو متھ کر کیچڑ بنا ڈالا......اور آدمی......اُس نے گھاٹ پر پہونچ کر اپنے چاروں طرف نراشا بھری نگاہیں دوڑائیں......ایک ٹھنڈی سانس بھر کے بیٹھ گیا......چلو لگایا اور کیچڑ پی گیا .

کسی نے کہا—"کیچڑ پی رہے ہو ."

" پانی کا سروپ ہمارے لئے یہی ہے" اُتر ملا .

کاشی پور اور رام‌نگر

دونوں شہروں میں شانتی سمیتی کی سبھا ہوئی. پنڈت جی کا سندیش سننے کے لئے لوگ بڑی تعداد میں اکٹھا ہوگئے.

नहीं जानता था......घबराहट के अलावा दूसरा रास्ता ही कौन था......पर ठीक समय पर चेकोस्लावेकिया का एक नौजवान मिल गया......उसने सब ठीक करवा दिया......चेकोस्लावेकिया वग़ैरा देशों में जाने से लोगों को रोका जाता है. रोम में उन्हें परेशान कर के वापस कर दिया जाता है........और "आयरन करटेन" अपना मुंह खोले लोगों को बुलाता रहता है.......मैं सोशलिस्ट हूं.......पर मेरी समझ में यह बात नहीं आती......आ भी नहीं सकती......मैं किसकी बात मानं......अपनी आंखों को कैसे झुटलाऊं, अपने को धोका कैसे दूं.

डेलीगेट कानफ़रेन्स में चार प्रस्ताव पास हुए और लोग अपनी अपनी राह चल दिये—फिर मिलने के लिये, एक ताक़त बनने के लिये.

तीन चार दिन नैनीताल में आराम करके, नेचर का रस चूस कर हम हलद्वानी की तरफ़ चल पड़े.

हलद्वानी

नैनीताल की आबादी कुल छे सात हज़ार है...... लेकिन हलद्वानी में तीस बत्तीस हज़ार आदमी आबाद हैं. नैनीताल सर है और हलद्वानी पैर. एक में ठंडक है और दूसरे में गरमी. यहां भी शान्ति समिति की मीटिंग हुई. पंडित जी ने चीन का हाल सुनाया लोग सुनते रहे, सर हिलाते रहे.

चिलकिया रामनगर

इस इलाक़े में बड़े बड़े गांव नहीं होते. पांच दस घर का गांव बहुत बड़ा गांव है. खेत कम लोगों के पास हैं पर बे खेत ज़ियादा लोग हैं. कुछ लोग मेहनत करते हैं और कुछ उनकी मेहनत से फ़ायदा उठाते हैं. दस बीघे खेत वाला किसान काफ़ी अमीर होता है. पर कितने हैं जिनके पास इतने बीघे खेत हैं! एक तरफ़ निल है और दूसरी तरफ़ सैकड़ों नहीं, हज़ारों नहीं बल्कि दसियों हज़ार बीघे एक एक आदमी के क़बज़े में हैं. ट्रेक्टर ख़ूब दिखाई पड़ते हैं.

चावल की पैदावार ख़ूब होती है. चावल ध्यान कर के ही मुंह में पानी भर आता है. हंसराज चावल का क्या कहना. सफ़ेद, पतला, लम्बा. उबलने पर छल्ला बन जाता है. भूक न भी हो तो खाने का मन चलता है, आंखों में लालच समा जाती है.

यहां की समस्याएं कुछ अजीब सी हैं. पानी की समस्या, खेत की समस्या, खाने की समस्या. बहुत से सिख आ कर आबाद हो गए हैं. उन्होंने जंगल काटे, ख़ून पसीना एक करके बंजर को उपजाऊ बना दिया....... लेकिन अब......क्या मज़ाक़ है. जब कुछ नहीं था, तो किसी का हक़ नहीं था, किसी को चिन्ता नहीं थी. अब सब कुछ है.....सरकार कहती है यहां से चले जाओ, यह ज़मीन छोड़ जाओ!

نہیں جانتا تھا......گھبراہٹ کے علاوہ دوسرا راستہ ہی کون تھا......پر ٹھیک سمے پر چیکوسلویکیا کا ایک نوجوان مل گیا......اس نے سب ٹھیک کروا دیا۔ چیکوسلویکیا وغیرہ دیشوں میں جانے سے لوگوں کو روکا جاتا ہے۔ روم میں انہیں پریشان کر کے واپس کر دیا جاتا ہے......اور "آئرن کرٹین" اپنا منہ کھولے لوگوں کو بلاتا رہتا ہے......میں سوشلسٹ ہوں......پر میری سمجھ میں یہ بات نہیں آتی......آ بھی نہیں سکتی......میں کس کی بات مانوں......اپنی آنکھوں کو کیسے جھٹلاؤں، اپنے کو دھوکا کیسے دوں۔

ڈیلیگیٹ کانفرنس میں چار پرستاؤ پاس ہوئے اور لوگ اپنی اپنی راہ چل دیئے—پھر ملنے کے لئے، ایک طاقت بننے کے لئے۔

تین چار دن نینی تال میں آرام کر کے، نیچر کا رس چوس کر ہم ہلدوانی کی طرف چل پڑے۔

ہلدوانی

نینی تال کی آبادی کل چھ سات ہزار ہے......لیکن ہلدوانی میں تیس بتیس ہزار آدمی آباد ہیں۔ نینی تال سر ہے اور ہلدوانی پیر۔ ایک میں ٹھنڈک ہے اور دوسرے میں گرمی۔ یہاں بھی شانتی سمتی کی میٹنگ ہوئی۔ پنڈت جی نے چین کا حال سنایا۔ لوگ سنتے رہے، سر ہلاتے رہے۔

چلکیا رام نگر

اس علاقے میں بڑے بڑے گاؤں نہیں ہوتے۔ پانچ دس گھر کا گاؤں بہت بڑا گاؤں ہے۔ کھیت کم لوگوں کے پاس ہیں پر بے کھیت زیادہ لوگ ہیں۔ کچھ لوگ محنت کرتے ہیں اور کچھ ان کی محنت سے فائدہ اٹھاتے ہیں—دس بیگھے کھیت والا کسان کافی امیر ہوتا ہے۔ پر کتنے ہیں جن کے پاس اتنے بیگھے کھیت ہیں! ایک طرف نل ہے اور دوسری طرف سیکڑوں نہیں، ہزاروں نہیں بلکہ دسیوں ہزار بیگھے ایک ایک آدمی کے قبضے میں ہیں۔ ٹریکٹر خوب دکھائی پڑتے ہیں۔

چاول کی پیداوار خوب ہوتی ہے۔ دھیان کر کے ہی منہ میں پانی بھر آتا ہے۔ ہنس راج چاول کا کیا کہنا۔ سفید، پتلا، لمبا۔ ابلنے پر چھلا بن جاتا ہے۔ بھوک نہ بھی ہو تو کھانے کا من چلتا ہے، آنکھوں میں لالچ سما جاتی ہے۔

یہاں کی سمسیائیں کچھ عجیب سی ہیں—پانی کی سمسیا، کھیت کی سمسیا، کھانے کی سمسیا۔ بہت سے سکھ آ کر آباد ہو گئے ہیں۔ انہوں نے جنگل کاٹے، خون پسینہ ایک کر کے بنجر کو اپجاؤ بنا دیا......لیکن اب......کیا مذاق ہے۔ جب کچھ نہیں تھا، تو کسی کا حق نہیں تھا، کسی کو چنتا نہیں تھی۔ جب سب کچھ ہے......سرکار کہتی ہے یہاں سے چلے جاؤ، یہ زمین چھوڑ جاؤ!

होते हैं, तमाशे भी होते हैं, वहीं सभायें भी होती हैं. शान्ति समिति ने एक सभा की थी. पंडित सुन्दरलाल जी बोलने वाले थे. सब चीज़ तैयार थी सिवाय दो के—लोगों का मूड और जगह. ऐसे में किसी का मूड ठीक रह कैसे सकता है. सामने हाकी मैच हो रहा था. एक तरफ़ बुढ़ापा था और दूसरी तरफ़ जवानी. एक तरफ़ मर्द थे और दूसरी तरफ़ लड़कियां. खेल हो रहा था. दुनिया की हर चीज़ भूल कर वह लोग खेल रहे थे.

खेल आखिर खतम हुआ, जगह भी खाली हो गई, लोगों को मूड भी आ गया.

श्री गंगादत्त पांडे सभापति थे. उन्होंने शान्ति आन्दोलन पर रोशनी डाली और फिर पंडित जी की बारी थी. पंडित जी बोलते रहे और लोग सुनते रहे. तादाद बढ़ती गई. लगभग ढाई तीन हज़ार आदमी इस मैदान में शान्ति का सन्देश सुन रहे थे.

एक आदमी ने कहा "इतनी बड़ी सभा सन 1947 के बाद नैनीताल में आज तक नहीं हुई."

दूसरे ने कहा. "ठंड पड़ने लगी है, पर लोग हटने का नाम ही नहीं लेते. जादू सा हो गया है. नहीं तो लोग... ये लोग तो हालीडे मूड में रहते हैं."

पंडित जी ने भाशन खतम कर दिया और उसके बाद पी. सी. जोशी ने अपनी बात लोगों के सामने रखी.

मीटिंग खतम कर के "पाइन" लौटने की सूझी. पर लाखों दिक्क़तें. बस, गेट का बन्द होना वग़ैरा वग़ैरा.

चांदनी छिटक आई थी. भाई लोगों को झील में नाव चलाने की सूझी. झील की लंबाई एक मील है. मल्लाह एक दफ़ा की उतराई एक रुपया लेता है. चल दिये हम लोग झील की छाती को रौंदते हुए.

झील लम्बी चली गई है और उसके चारों तरफ़ उस गड्ढे में फ़्लेट बने हैं. जब बल्ब जलते हैं तो झील आकाश बन जाती है और इन बल्बों की छाया तारे बन कर इस आसमान पर छिटक जाती है. कितना सुन्दर दृश्य था. आदमी कुछ समय के लिये अपने को खो बैठता है.

दूसरे दिन डेलीगेट कानफ़रेन्स थी. दूर दूर से लोग आए थे. सोशलिस्ट, कांगरेसी, कमयुनिस्ट सभी थे.

एक नौजवान उठे और बोले—"मैं सोशलिस्ट हूं. मैं बर्लिन "यूथ फ़ैसटिवल" में गया था......पर न जाने "आयरन करटेन" की बात लोग क्यों करते हैं.....मुझे जो दिक़्क़त हुई वह अपने देश में हुई और उन देशों में हुई जहां आयरन करटेन नहीं है......झींक झांक कर पास्पोर्ट मिला......रोम तक पहुँच गए......पर रोम में हमें डांट बताई गई और न जाने क्या क्या धमकियां दी गईं और क़ानून क़ायदे बताए गए. मेरा पहला सफ़र था, कुछ भी तो

بھی ہوتے ہیں، تماشے بھی ہوتے ہیں۔ بہیں سبھائیں بھی ہوتی ہیں۔ شانتی سمیتی نے ایک سبھا کی تھی۔ پنڈت سندر لال جی بولنے والے تھے۔ سب چیز تیار تھی سوائے دو کے—لوگوں کا موڈ اور جگہ۔ ایسے میں کسی کا موڈ ٹھیک رہ کیسے سکتا ہے۔ سامنے ہاکی میچ ہو رہا تھا۔ ایک طرف بڑھاپا تھا اور دوسری طرف جوانی ایک طرف مرد تھے اور دوسری طرف لڑکیاں۔ کھیل ہو رہا تھا۔ دنیا کی ہر چیز بھول کر وہ لوگ کھیل رہے تھے۔

کھیل آخر ختم ہوا، جگہ بھی خالی ہوگئی، لوگوں کو موڈ بھی آ گیا۔

شری گنگا دت پانڈے سبھا پتی تھے۔ انہوں نے شانتی آندولن پر روشنی ڈالی۔ اور پھر پنڈت جی کی باری تھی۔ پنڈت جی بولتے رہے اور لوگ سنتے رہے۔ تعداد بڑھتی گئی، بڑھتی گئی۔ لگ بھگ ڈھائی تین ہزار آدمی اس میدان میں شانتی کا سندیش سن رہے تھے۔

ایک آدمی نے کہا "اتنی بڑی سبھا سن 1947 کے بعد نینی تال میں آج تک نہیں ہوئی۔"

دوسرے نے کہا "ٹھنڈ پڑنے لگی ہے، پر لوگ ہٹنے کا نام ہی نہیں لیتے۔ جادو سا ہوگیا ہے۔ نہیں تو لوگ... یہ لوگ ہالی ڈے موڈ میں رہتے ہیں....."

پنڈت جی نے بھاشن ختم کردیا اور اس کے بعد پی۔ سی۔ جوشی نے اپنی بات لوگوں کے سامنے رکھی۔

میٹنگ ختم کرکے پھر "پائن" لوٹنے کی سوجھی۔ پر لاکھوں دقتیں۔ بس، گیٹ کا بند ہونا وغیرہ وغیرہ۔

چاندنی چھٹک آئی تھی۔ بھائی لوگوں کو جھیل میں ناؤ نوریا کھیلنے کی سوجھی۔ جھیل کی لمبائی ایک میل ہے۔ ملاح ایک دفعہ کی اترائی ایک روپیہ لیتا ہے۔ چل دئے ہم لوگ جھیل کی چھاتی کو روندتے ہوئے۔

جھیل لمبی چلی گئی ہے اور اس کے چاروں طرف اس گڈھے میں فلیٹ بنے ہیں۔ جب بلب جلتے ہیں تو جھیل آکاش بن جاتی ہے اور ان بلبوں کی چھایا تارے بن کر اس آسمان پر چھٹک جاتی ہے۔ کتنا سندر درشیہ تھا۔ آدمی کچھ سمے کے لئے اپنے کو کھو بیٹھتا ہے۔

دوسرے دن ڈیلی گیٹ کانفرنس تھی۔ دور دور سے لوگ آئے تھے۔ سوشلسٹ، کانگریسی، کمیونسٹ سبھی تھے۔

ایک نوجوان اٹھے بولے—"میں سوشلسٹ ہوں۔ میں برلن "یوتھ فسٹیول" میں گیا تھا.....پر نہ جانے "آئرن کرٹین" کی بات لوگ کیوں کرتے ہیں.....مجھے جو دقت ہوئی وہ اپنے دیش میں ہوئی اور ان دیشوں میں ہوئی جہاں آئرن کرٹین نہیں ہے......جھینک جھانک کر پاسپورٹ ملا.....روم تک پہنچ گئے.....پر روم میں ہمیں ڈانٹ بتائی گئی اور نہ جانے کیا کیا دھمکیاں دی گئیں اور قانون قاعدے بتائے گئے۔ میرا پہلا سفر تھا، کچھ بھی تو

"कितना बाबू जी" कुली ने पूछा. उसकी आवाज़ में विस्मय भी था और एक सिराधा भी.

"27 हज़ार."

"आदमियों पर कितना खर्च होता है ?" मैंने पूछा.

"आदमियों पर ...... आदमियों पर......आपका मतलब इन......कुलियों पर......यह तो खूब कमा लेते हैं. सीज़न में इनका धन्धा खूब चल जाता है......ऐसे यह ठीक हैं......मगर......

यह माल रोड भी क्या बला है. जहां देखो इस नाम की सड़क मिल जायगी और पहाड़ी शहरों में तो ज़रूर ही हर अच्छी सड़क का नाम माल रोड होता है......."माल रोड" भी एक भेद है. यह हज़रत "माल" कौन थे, क्यों सड़कों का नाम इनके नाम पर रखा जाता है !

अब हम नैनीताल की माल रोड पर चल रहे थे, बढ़िया चिकनी सड़क. फिर तार और उसके बाद पतला सा कच्चा रास्ता. "इन रास्तों पर घोड़े दौड़ा करते हैं" हमारे एक साथी ने कहा.

मैंने कहा "तो इस सड़क पर आदमी दौड़ते होंगे"

"हां, अब दौड़ने लगे हैं" उन्होंने उत्तर दिया.

"अब से क्या मतलब"

"जब तक अंगरेज़ यहां था इस सड़क पर कोई हिन्दुस्तानी नहीं चल सकता था. हिन्दुस्तानी पगडंडी पर चलते थे और अंगरेज़ इस सड़क पर.

हमें कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं थी......लोग खुद उत्सुक थे—कोई कहता यह है तल्ली ताल कोई मल्ली ताल की तरफ़ उंगली घुमाता कोई फ़ील्ड दिखाता, कोई मौसम की चर्चा करता, कोई कुछ. जितने मुंह उतनी बातें.

मंज़िल भी आ गई !

"पाइन" चीड़ को कहते हैं. चीड़ की खुशबू के क्या कहने. हवा में महक बसी हुई थी.

हम जागने की कोशिश करते थे और आंखें खुद बन्द होती जाती थीं . पाइन एक चोटी है. यहां "गांधी विद्या निकेतन" के एक कमरे में हम लोगों ने कमर खोली. एक अंगड़ाई ली और नहाने की तैयारी करने लगे.

गांधी विद्या निकेतन के बिलकुल सामने दूर एक चोटी पर एक और स्कूल है "बिरला विद्या मन्दिर" गांधी विद्या निकेतन भक्ति की निशानी है और बिरला विद्या मन्दिर धन की. शायद यह फ़रक़ सब समझते हैं. गांधी निकेतन को सरकार भी भक्ति ज़ियादा देती है, धन कम और बिरला निकेतन को धन ज़ियादा और भक्ति......कहा नहीं जा सकता !

नैनीताल

एक ही मैदान है. बहुत लम्बा चौड़ा मैदान. यहां खेल

"کتنا بابو جی" قلی نے پوچھا. اُسکی آوازمیں وسمے بھی تھا اور ایک نراشا بھی.

"27 ہزار".

"آدمیوں پر کتنا خرچ ہوتا ہے؟" میں نے پوچھا .

"آدمیوں پر......آدمیوں پر......آپ کا مطلب اِن قلیوں پر......یہ تو خوب کما لیتے ہیں . سیزن میں اِن کا دھندہ خوب چل جاتا ہے......ایسے یہ ٹھیک ہیں ......مگر......

یہ مال روڈ بھی کیا بلا ہے . جہاں دیکھو اِس نام کی سڑک مل جائےگی اور پہاڑی شہروں میں تو ضرور ہی ہر اچھی سڑک کا نام مال روڈ ہوتا ہے......"مال روڈ" بھی ایک بھید ہے . یہ حضرت "مال" کون تھے' کیوں سڑکوں کا نام اِن کے نام پر رکھا جاتا ہے !

اب ہم نینی تال کی مال روڈ پر چل رہے تھے . بڑھیا چکنی سڑک . پھر تار اور اُس کے بعد پتلا سا کچا راستہ. "اِن راستوں پر گھوڑے دوڑا کرتے ہیں" ہمارے ایک ساتھی نے کہا .

میں نے کہا "تو اِس سڑک پر آدمی دوڑتے ہونگے"

"ہاں' اب دوڑنے لگے ہیں." اُنہوں نے اتر دیا .

"اب سے کیا مطلب"

"جب تک انگریز یہاں تھا اِس سڑک پر کوئی ہندستانی نہیں چل سکتا تھا . ہندستانی پگڈنڈی پر چلتے تھے اور انگریز اِس سڑک پر .

ہمیں کچھ پوچھنے کی ضرورت نہیں تھی......لوگ خود اُتسک تھے کوئی کہتا وہ ہے تلی تال. کوئی ملی تال کی طرف اُنگلی گھماتا . کوئی فیلڈ دکھاتا کوئی موسم کی چرچا کرتا' کوئی کچھ . جتنے منہ اُتنی باتیں .

منزل بھی آ گئی !

"پائن" چیڑ کو کہتے ہیں . چیڑ کی خوشبو کے کیا کہنے. ہوا میں مہک بسی ہوئی تھی .

ہم جاگنے کی کوشش کرتے تھے اور آنکھیں خود بند ہوتی جاتی تھیں. پائن ایک چوٹی ہے. یہاں "گاندھی ودیا نکیتن" کے ایک کمرے میں ہم لوگوں نے کمر کھولی. ایک انگڑائی لی اور نہانے کی تیاری کرنے لگے .

گاندھی ودیا نکیتن کے بالکل سامنے دور ایک چوٹی پر ایک اور اسکول ہے "برلا ودیا مندر".

گاندھی ودیا نکیتن بھکتی کی نشانی ہے اور برلا ودیا مندر دھن کی. شاید یہ فرق سب سمجھتے ہیں. گاندھی نکیتن کو سرکار بھی بھکتی زیادہ دیتی ہے' دھن کم اور برلا نکیتن کو دھن زیادہ اور بھکتی...کہا نہیں جاسکتا !

نینی تال

ایک ہی میدان ہے. بہت لمبا چوڑا میدان. یہاں کھیل

......एक दफ़ा मेरे दिमाग़ में मिट्टी का तेल बेचने वाली स्ट्रोल की दुकानों का सीन घूम गया. वहां कारड देख र तेल मिलता था. यहां टिकट पर ! मजबूरी......

मामला गंभीर था और जब तक उसे हल न किया य छुटकारा मिलना मुश्किल था—एक टिकट ले लिया. सा लगा कि जैसे एक बारगी बरफ़ पड़ गई हो. सारी गरमा मी ख़तम हो गई, सारा जोश ठंडा पड़ गया. जिसका कट हमारे पास था, वह ख़ुश था. उसकी आंखें चमक ी थीं और दूसरों में ईर्षा पैदा कर रही थीं......और की......निराश हताश पीछे लौट रहे थे, अपने एक साथी भाग्य को सराहते, अपनी क़िसमत को कोसते.

यह रोज़ का क़िस्सा है. जब कोई मोटर रुकती है, जब कोई बस आकर यहां खड़ी होती है तो सदा इस समन्दर उबार आ जाता है. सदा यही होता है. वो एक क़िसमत ले बाज़ी मार ले जाते हैं......और बाक़ी......वही आगे ज़दूरी मिलने की आस में जीवन बिताते रहते हैं, दूसरी स का इन्तज़ार करते रहते हैं.

यह यहां के क़ुली हैं, यह यहां के असली निवासी हैं. और......नैनीताल में बाहर से आए हुए, इनके अन्नदाता ! मने लेक ब्रिज पर घूम रहे थे. लाल, पीली, नीली साड़ियां आंखों में चकाचौंध पैदा करने लगती थीं. साड़ियों के आंचल का लहराव देखा जाय कि इन क़ुलियों पर नज़र माई जाय......एक बार विचार उठा तो लेकिन बस उठ र ही रह गया.

लेक में, बाबुओं की चालों में, रेशमी रंग बिरंगी साड़ियों में शायद ज़ियादा खिंचाव था और इधर तरफ़ ग़रीबी थी, गंदगी थी, मैले फटे कपड़े थे. कोई न्दरता नहीं थी हम उधर ही खिंच गए. एक दफ़ा मुड़ र इस क़ुली समुदाय पर नज़र डाली, उन्हें घूरा. इस समय नके लिये सहानुभूति थी पर दूसरे ही छन......दूसरी दुनियां थी......आनन्द की दुनिया. और यह सब एक ली याद मात्र दिमाग़ के किसी कोने में जा छिपे !

नैनीताल के एक सज्जन कह रहे थे—तकलीफ़ तो हुई होगी......बड़ी अच्छी सड़क है. ......हां हां कभी भी मतली होने लगती है.......पर सड़क बहुत ही अच्छी . पहाड़ी शहरों में इस से अच्छी सड़क कहीं नहीं ......हिन्दुस्तान में ही नहीं सारी दुनिया में ऐसी सड़क हीं है......

और मैं गद गद हो उठा......इस तरह की सड़क सारी दुनिया में नहीं है !

वह सज्जन कह रहे थे—"लेकिन साहब ख़ूब ख़र्च होता एक मील सड़क पर 27 हज़ार रुपया ख़र्च होता है......"

تھے......ایک دفعہ میرے دماغ میں مٹی کا تیل بیچنے والی پٹرول کی دوکانوں کا سین گھوم گیا . وہاں کارڈ دیکھ کر تیل ملتا تھا. یہاں ٹکٹ پر !......مزدوری۔

معاملہ گمبھیر تھا اور جب تک اسے حل نہ کیا جائے چھٹکارا ملنا مشکل تھا—ایک ٹکٹ لے لیا. ایسا لگا کہ جیسے ایکبار گی برف پڑگئی ہو . ساری گرما گرمی ختم ہوگئی' سارا جوش ٹھنڈا پڑ گیا. جس کا ٹکٹ ہمارے پاس تھا' وہ خوش تھا. اُس کی آنکھیں چمک رہی تھیں اور دوسروں میں ایرشا پیدا کر رہی تھیں......اور باقی......نراش ہتاش پیچھے لوٹ رہے تھے' اپنے ایک ساتھی کے بھاگیہ کو سراہتے' اپنی قسمت کو کوستے .

یہ روز کا قصہ ہے . جب کوئی موٹر رکتی ہے' جب کوئی بس آکر یہاں کھڑی ہوتی ہے تو سدا اِس سمندر میں جوار آ جاتا ہے. سدا یہی ہوتا ہے. دو ایک قسمت والے بازی مار لے جاتے ہیں......اور باقی......وہی آگے مزدوری ملنے کی آس میں جیون بتاتے رہتے ہیں' دوسری بس کا انتظار کرتے رہتے ہیں .

یہ یہاں کے قلی ہیں' یہ یہاں کے اصلی نواسی ہیں. اور......نینی تال میں باہر سے آئے ہوئے' اِن کے ان داتا ! سامنے لیک برج پر گھوم رہے تھے . لال' پیلی' نیلی ساڑیاں آنکھوں میں چکا چوندھ پیدا کرنے لگتی تھیں . ساڑیوں کے آنچل کا لہراؤ دیکھا جائے کہ اِن قلیوں پر نظر جمائی جائے......ایک بار وچار اُٹھا تو لیکن بس اُٹھکر ہی رہ گیا .

لیک میں' بابوؤں کی چالوں میں' ریشمی رنگ برنگی ساڑیوں میں شاید زیادہ کھنچاؤ تھا. اور ادھر صرف غریبی تھی' گندگی تھی' بھونڈا پن تھا' میلے پھٹے کپڑے تھے' کوئی سندرتا نہیں تھی ہم اُدھر ہی کھنچ گئے. ایک دفعہ مڑ کر اس قلی سمودائے پر نظر ڈالی' انہیں گھورا . اِس سمے اِن کے لئے سہانوبھوتی تھی پر دوسرے ہی چھن...... دوسری دنیا تھی......آنند کی دنیا. اور یہ سب ایک بھولی یاد ماتر دماغ کے کسی کونے میں جا چھپے !

نینی تال کے ایک سجن کہہ رہے تھے—تکلیف تو ہوئی نہ ہوگی......بڑی اچھی سڑک ہے......ہاں ہاں کبھی کبھی متلی ہونے لگتی ہے......پر سڑک بہت ہی اچھی ہے. پہاڑی شہروں میں اِس سے اچھی سڑک کہیں نہیں ہے...... ہندستان میں ہی نہیں ساری دنیا میں ایسی سڑک نہیں ہے......

اور میں گد گد ہو اُٹھا......اِس طرح کی سڑک ساری دنیا میں نہیں ہے !

وہ سجن کہہ رہے تھے—"لیکن صاحب خوب خرچ ہوتا ہے. ایک میل سڑک پر 27 ہزار روپیہ خرچ ہوتا ہے......"

कम उमर के बच्चों से मजदूरी नहीं कराई जा सकती. सारे क़ानून चुप थे, सारे बिल ख़ामोश थे......और क़ानून के रखवाले !......कुछ हाल में बैठे आनन्द ले रहे थे, और कुछ......शायद रिकशे वालों का चालान कर रहे थे, खोनचे वालों से जगह ख़ाली करा रहे थे.

ज़ुबैदा पर किसी को रहम नहीं आया, किसी की आवाज़ नहीं निकली. आखिर क्या करती, उसने जीभ निकाल कर एक चटख़ारा भरा और निराश हो कर चली गई, उसी परदे के पीछे, उसी अंधियारे में, उसी गढ़े में !!

नैनीताल भी आ गया

साढ़े छे हज़ार फ़िट की चढ़ाई खेल नहीं. पिकअप पुरानी थी. पर हिम्मत का क्या कहना ! थक थक जाती थी, पर रुकने का नाम न लेती थी. थकावट दूर करने के लिये धोबी "छिय्यो राम छिय्योराम" चिल्लाता है. मज़दूर बोझ उठाते समय "हिया हिया" के नारे लगाता है. हमारी पिकअप अब बेचारी रास्ते भर "घर घर" करती रही है. कभी यह रुकने की बात सोचती, ऊंघ सी जाती. पर ड्रायवर भी क्या ज़ालिम था......वह हन्टर लगाता. उसका पूरा बदन हिल उठता, दांत भींच कर वह हाथ लगाता......और मोटर......मरती क्या न करती. "घर घर" की एक लम्बी चीख़ मार कर आगे बढ़ जाती.

हर सफ़र का अन्त होता ही है. आखिर नैनीताल आ ही गया. पिकअप ने ठंडी सांसे भरीं. खड़े होते ही हांपने लगी. कमबख़्त की उसासें थीं या धुंआ उगल रही थी. तमाम धुंआ भर गया.

ड्रायवर ने उतर कर फाटक खोलना चाहा. पर बेचारा आदमियों के समन्दर में डूब गया और भंवर में ऐसा फंसा कि हम तक पहुंच ही न पाया. लहरें टकरा कर वापस चली जाती हैं. पर जो आदमी भी हमारी पिकअप से जा टकराता वापस होने का नाम न लेता. ड्रायवर ने बहुत दुहाई दी, बहुत हाथ पैर मारा. पर वह और घिरता गया, भीड़ और बढ़ती गई.

लाख समझाया कि हमें क़ुली नहीं चाहिये. हमारे पास सामान नहीं है. हम क़रीब ही जायंगे......शायद यह भाषा वह लोग नहीं समझते......शायद पिंड छुड़ाने के लिये सब लोग उन से ऐसी ही बातें कहा करते हैं. उन्होंने भी ताड़ लिया है......कभी भड़के नहीं खाते, कभी धोका नहीं खाते. फाटक कहां खुलता ! आदमियों और मोटर के बीच में केवल हवा ही बाक़ी थी......शायद वह भी न रही हो, मोटर में बैठे बैठे दम घुटने लगा. एक फाटक का शीशा सरका दिया. ग़ज़ब हो गया......एक दो नहीं दसियों हाथ अन्दर घुसने लगे. सब के हाथ में टिकट

کم عمر کے بچوں سے مزدوری نہیں کرائی جا سکتی . سارے قانون چپ تھے' سارے بل خاموش تھے......اور قانون کے رکھوالے !!......کچھ ہال میں بیٹھے آنند لے رہے تھے' اور کچھ...شاید رکشے والوں کا چالان کر رہے تھے' کھونچے والوں سے جگہ خالی کرا رہے تھے .

زبیدہ پر کسی کو رحم نہیں آیا' کسی کی آواز نہیں نکلی. آخر کیا کرتی' اس نے جیبھ نکال کر ایک چٹخارہ بھرا اور نراش ہو کر چلی گئی' اسی پردے کے پیچھے' اسی اندھیارے میں' اسی گڈھے میں !!

نینی تال بھی آگیا

ساڑھے چھ ہزار فٹ کی چڑھائی کھیل نہیں. پک اپ پرانی تھی. پر ہمت کیا کہنا ! تھک تھک جاتی تھی' پر رکنے کا نام نہ لیتی تھی. تھکاوٹ دور کرنے کے لئے دھوبی "چھیورام چھیورام" چلاتا ہے . مزدور بوجھ اٹھاتے سمے "ہیا ہیا" کے نعرے لگاتا ہے. ہماری پک اپ بیچاری راستے بھر گھر گھر کرتی رہی ہے. کبھی یہ رکنے کی بات سوچتی' اونگھ سی جاتی . پر ڈرائیور بھی کیا ظالم تھا . وہ ہنٹر لگاتا. اس کا پورا بدن ہل اٹھتا' دانت بھینچ کر وہ ہاتھ لگاتا......اور موٹر......مرتی کیا نہ کرتی. "گھر گھر" کی ایک لمبی چیخ مار کر آگے بڑھ جاتی .

ہر سفر کا انت ہوتا ہی ہے . آخر نینی تال آ ہی گیا . پک اپ نے ٹھنڈی سانسیں بھریں . کھڑے ہوتے ہی ہانپنے لگی . کمبخت کی اساسیں تھیں یا دھواں اگل رہی تھی. تمام دھواں بھر گیا .

ڈرائیور نے اتر کر پھاٹک کھولنا چاہا. پر بیچارا آدمیوں کے سمندر میں ڈوب گیا اور بھنور میں ایسا پھنسا کہ ہم تک پہونچ ہی نہ پایا. لہریں ٹکرا کر واپس چلی جاتی ہیں. پر جو آدمی بھی ہماری پک اپ سے جا ٹکراتا واپس ہونے کا نام نہ لیتا . ڈرائیور نے بہت دہائی دی' بہت ہاتھ پیر مارا. پر وہ اور گھرتا گیا' بھیڑ اور بڑھتی گئی.

لاکھ سمجھایا کہ ہمیں قلی نہیں چاہئے. ہمارے پاس سامان نہیں ہے. ہم قریب ہی جائیں گے......شاید یہ بھاشا وہ لوگ نہیں سمجھتے......شاید پنڈ چھڑانے کے لئے سب لوگ ان سے ایسی ہی باتیں کہا کرتے ہیں . انہوں نے بھی تاڑ لیا ہے......کبھی بھڑکے نہیں کھاتے' کبھی دھوکا نہیں کھاتے. پھاٹک کہاں کھلتا ! آدمیوں اور موٹر کے بیچ میں کیول ہوا ہی باقی تھی......شاید وہ بھی نہ رہی ہو . موٹر میں بیٹھے بیٹھے دم گھٹنے لگا . ایک پھاٹک کا شیشہ سرکا دیا . غضب ہوگیا......ایک دو نہیں دسیوں ہاتھ اندر گھسنے لگے. سب کے ہاتھ میں ٹکٹ

और एक सात साल की बच्ची डायस पर आ ही गई. रंगी रंगाई, बंधी बंधाई ! वह खेलती रही.

और लोग, सभ्य लोग, धार्मिक लोग, सरकारी लोग, समाज सुधारक लोग कुछ और समझते रहे—वह समझते रहे कि वह नाच रही है, वह समझते रहे कि उन्हें रिझा रही है, वह समझते रहे कि वह उनका दिल बहला रही है.

एक बूढ़े सज्जन क़रीब बैठे थे, उन्होंने ज़ोर की अंगड़ाई ली. दाढ़ी पर हाथ फेरा और इस ज़ोर से करवट बदली कि कोहनी ने बल्लम सा वार किया......फिर वह ठीक बैठ गए. ज़ुबैदा अपना खेल खेलती रही. बूढ़े मियां ने फिर दाढ़ी पर हाथ फेरा और एक रुपया डायस पर फेंक दिया.

बग़ल से एक पंजाबी महाशय बोले—ज़ालिम है ज़ालिम......अभी उमर ही क्या है......इसे पांच बरस बाद देखना......

"अजी, क्या कहवे......ख़ूब नाचती है......क्या हाव भाव हैं."

ज़ुबैदा अपना खेल खेलती रही.

पंजाबी सज्जन ने अपनी बच्ची को एक चपत मारी और ज़ोर से गरजे—उसकी नक़ल करती है, कमीनी, तू यह बुरी बातें सीख रही है.

बच्ची ने मुंह बनाया......पर रोई नहीं. रुकी रही......शायद फ़ैसला खटाई में पड़ गया था कि वह रोए या न रोए.

पंजाबी सज्जन ने अपनी बच्ची को वही करतब करने नहीं दिये जो ज़ुबैदा कर रही थी—दोनों बच्चियां थीं, दोनों एक उमर की थीं, दोनों एक तरह की थीं. पर एक पर रोक थी और दूसरे को प्रोत्साहन मिल रहा था. बच्ची को तो चपत मार कर चुप कर दिया गया, पर उन पंजाबी सज्जन ने शायद मन से नहीं पूछा—"अगर उनकी बच्ची यही सब कुछ करती तो वह क्या करते, हंसते, खिलखिलाते, आनन्द लेते ? ज़ुबैदा क्या उनकी बेटी नहीं हो सकती थी, और क्या उनकी बेटी किसी दिन समय चक्र के क्रूर हाथों से ज़ुबैदा नहीं बन सकती थी. पर इस पर कौन सोचता है ! इसकी किसको चिन्ता है.

ज़ुबैदा के यहां बाप थे, दादे थे. पर उन सब के लिये ज़ुबैदा एक छोकरी थी, एक नाचने वाली छोकरी...... आगे चल कर ज़ुल्म ढाने वाली छोकरी—जैसे सब उसको ललचाई नज़रों से देख रहे हों !!

ज़ुबैदा थक गई थी, पसीने पसीने हो गई थी. सात बरस की उमर और यह मेहनत ! कहां थे सरकार के वह क़ानून जो बच्चों की रखवाली करते हैं, कहां थे वह नेता जो सीना उभार कर कहते हैं कि बारह बरस से

اور ایک سات سال کی بچی ڈائس پر آ ہی گئی۔ رنگی رنگائی، بندھی بندھائی! وہ کھیلتی رہی۔

اور لوگ، سبھیہ لوگ، دھارمک لوگ، سرکاری لوگ، سماج سدھارک لوگ کچھ اور سمجھتے رہے—وہ سمجھتے رہے کہ وہ ناچ رہی ہے، وہ سمجھتے رہے کہ انہیں رجھا رہی ہے، وہ سمجھتے رہے کہ وہ اُن کا دل بہلا رہی ہے۔

ایک بوڑھے سجن قریب بیٹھے تھے، انہوں نے زور کی انگڑائی لی۔ ڈاڑھی پر ہاتھ پھیرا اور اس زور سے کروٹ بدلی کہ کہنی نے بلم سا وار کیا......پھر وہ ٹھیک بیٹھ گئے۔ زبیدہ اپنا کھیل کھیلتی رہی۔ بوڑھے میاں نے پھر ڈاڑھی پر ہاتھ پھیرا اور ایک روپیہ ڈائس پر پھینک دیا۔

بغل سے ایک پنجابی مہاشے بولے—ظالم ہے ظالم......ابھی عمر ہی کیا ہے......اسے پانچ برس بعد دیکھنا......

"اجی، کیا کہئے......خوب ناچتی ہے......کیا ہاؤ بھاؤ ہیں۔"

زبیدہ اپنا کھیل کھیلتی رہی۔

پنجابی سجن نے اپنی بچی کو ایک چپت ماری اور زور سے گرجے—اس کی نقل کرتی ہے، کمینی تو یہ بری باتیں سیکھ رہی ہے۔

بچی نے منہ بنایا......پر روئی نہیں رکی رہی...... شاید فیصلہ کھٹائی میں پڑ گیا تھا کہ وہ روئے یا نہ روئے۔

پنجابی سجن نے اپنی بچی کو وہی کرتب کرنے نہیں دیئے جو زبیدہ کر رہی تھی—دونوں بچیاں تھیں، دونوں ایک عمر کی تھیں۔ دونوں ایک طرح کی تھیں۔ پر ایک پر روک تھی اور دوسرے کو پروتساہن مل رہا تھا۔ بچی کو تو چپت مار کر چپ کر دیا گیا، پر اُن پنجابی سجن نے شاید من سے نہیں پوچھا—"اگر اُن کی بچی بھی سب کچھ کرتی تو وہ کیا کرتے، ہنستے، کھلکھلاتے، آنند لیتے؟ زبیدہ کیا اُن کی بیٹی نہیں ہو سکتی تھی، اور کیا اُن کی بیٹی کسی دن سمے چکر کے کرور ہاتھوں سے زبیدہ نہیں بن سکتی تھی۔ پر اس پر کون سوچتا ہے! اس کی کس کو چنتا ہے۔

زبیدہ کے وہاں باپ تھے، دادے تھے۔ پر اُن سب کے لئے زبیدہ ایک چھوکری تھی، ایک ناچنے والی چھوکری تھی ......آگے چل کر ظلم ڈھانے والی چھوکری—جیسے سب اس کو للچائی نظروں سے دیکھ رہے ہوں!!

زبیدہ تھک گئی تھی، پسینے پسینے ہو گئی تھی۔ سات سال کی عمر اور یہ محنت! کہاں تھے سرکار کے وہ قانون جو بچوں کی رکھوالی کرتے ہیں، کہاں تھے وہ نیتا جو سینہ ابھار کر کہتے ہیں کہ بارہ برس سے

सब के बारे में याद दिलाते जाते थे. बात करते करते कभी कोई मोटी गाली भी दे बैठता......पर यह गाली प्यार की थी, व्योहार की थी और अगर अंगरेज़ी शब्द का उपयोग किया जाय तो यह गाली इस समाज की एटीकेट थी.

बारह बरस से नीचे के लड़के चिल्ला रहे थे—लैमन सोडा, चाय सिगरेट, लैमन सोडा, चाय सिगरेट...... थानेदार साहब बैठे मुसकरा रहे थे !

कहने का मतलब यह कि डायस खाली था, हाल भरा था, हर तरह के आदमियों से खचाखच भरा था, जगह नहीं मिलती थी, तिल धरने को जगह नहीं थी. अनगिनत आदमी थे पर "आदम ज़ात" कितने थे यह नहीं कहा जा सकता, हर आदमी आदम का औलाद नहीं होता !! हज़रत आदम आदमी थे पर आदमी की औलाद नहीं थे !!

बिजली के पंखे बन्द थे, बल्बों को किसी ने गुल कर दिया था. जिस स्विच पर हाथ रखते ही उजाला फूट पड़ता था आज उसे ऊपर नीचे करते करते न जाने कितने थक चुके थे, पर न उजाला होता था, न हवा आती थी.

डायस का सन्नाटा ख़तम हो गया, परदे में एक कम्पन हुआ, लाउड स्पीकर ज़ोर से गुर्राया—सब की नज़रें डायस की तरफ़ उठ गईं, लोग किसी अनोखी चीज़ का इन्तज़ार करने लगे.

पर वाह री क़िसमत ! खोदा पहाड़ निकला चूहा. कहां हूर का सपना कहां यह लंगूर के दर्शन ! एक साहब आए. लम्बे ज़ियादा, चौड़े ज़रूरत से बहुत कम, नीचे का हिस्सा 1/3 और ऊपर का ठीक दुगना, लम्बे लम्बे हाथ और सारस ऐसी गरदन बिलकुल अमरूद के ठूंट. मज़ा यह कि उस ठूंट पर रेशमी सूट—किसी को ज़ोर से छींक आई और उधर ही से किसी ने कहा—फ़क़त दुम की कसर है.

इन महाशय ने अपने सुन्दर रूप का प्रदर्शन देर तक नहीं किया. सीधे लाउड स्पीकर पर आए और एक झटके से उसे अपने क़द तक खींच लिया और टाई ठीक कर के, एक दफ़ा ज़ोर से पैर पटक कर बोले—"अब देखिये, ज़िन्दा परियों के नाच, अब सुनिये स्वर्ग की जीती जागती अपसराओं के गीत ! आपके सामने बेबी ज़ुबैदा एक नाच पेश करेंगी......

छम, छम छम......छम छम छम

साज़ों को भूले राग याद पड़ गए, तबला ठनक उठा, हारमोनियम में आवाज़ पैदा हो गई.

हाल वालों के मुंह पर एक हलकी सी हंसी छा गई......एक छम हुई, एक साथ, बड़ी तेज़ गति से छम छम होने लगी. किसी ने पीछे से कहा—छिपती क्या हो, सामने न आओ......दूसरे ने कहा—आओ, आओ, जियो ! जी भर कर जियो......

سب کے بارے میں یاد دلاتے جاتے تھے. بات کرتے کرتے کبھی کوئی موٹی گالی بھی دے بیٹھتا......پر یہ گالی پیار کی تھی، ببوہار کی تھی اور اگر انگریزی شبد کا اُپیوگ کیا جائے تو یہ گالی اِس سماج کی ایٹیکیٹ تھی .

بارہ برس سے نیچے کے لڑکے چلا رہے تھے—لیمن سوڈا، چائے سگریٹ، لیمن سوڈا، چائے سگریٹ......تھانےدار صاحب بیٹھے مسکرا رہے تھے !

کہنے کا مطلب یہ کہ ڈائس خالی تھا، ہال بھرا تھا، ہر طرح کے آدمیوں سے کھچا کھچ بھرا تھا، جگہ نہیں ملتی تھی، تل دھرنے کو جگہ نہیں تھی . ان گنت آدمی تھے پر "آدمزاد" کتنے تھے یہ نہیں کہا جاسکتا ! ہر آدمی آدم کا اولاد نہیں ہوتا !! حضرت آدم آدمی تھے پر آدمی کی اولاد نہیں !!

بجلی کے پنکھے بند تھے، بلبوں کو کسی نے گل کردیا تھا . جس سوئچ پر ہاتھ رکھتے ہی اُجالا پھوٹ پڑتا تھا آج اسے اوپر نیچے کرتے کرتے نہ جانے کتنے تھک چکے تھے، پر نہ اُجالا ہوتا تھا، نہ ہوا آتی تھی .

ڈائس کا سناٹا ختم ہوگیا، پردے میں ایک کمپن ہوا، لاوڈاسپیکر زور سے غرایا—سب کی نظریں ڈائس کی طرف اُٹھ گئیں، لوگ کسی انوکھی چیز کا اِنتظار کرنے لگے.

پر واہ ری قسمت ! کھودا پہاڑ، نکلا چوہا. کہاں حور کا سپنا کہاں یہ لنگور کے درشن ! ایک صاحب آئے. لمبے زیادہ، چوڑے ضرورت سے بہت کم، نیچے کا حصہ 3/1 اور اُوپر کا ٹھیک دگنا، لمبے لمبے ہاتھ اور سارس ایسی گردن بالکل امرود کے ٹھونٹ. مزا یہ کہ اُس ٹھونٹ پر ریشمی سوٹ—کسی کو زور سے چھینک آئی اور اُدھر ہی سے کسی نے کہا—فقط دم کی کسر ہے .

اِن مہاشے نے اپنے سندر سروپ کا پردرشن دیر تک نہیں کیا . سیدھے لاوڈ اسپیکر پر آئے اور ایک جھٹکے سے اسے اپنے قد تک کھینچ لیا اور ٹائی ٹھیک کر کے، ایک دفعہ زور سے پیر پٹک کر بولے—" اب دیکھئے زندہ پریوں کے ناچ، اب سنئے سورگ کی جیتی جاگتی اپسراؤں کے گیت ! آپ کے سامنے بے بی زبیدہ ایک ناچ پیش کریںگی......

چھم، چھم چھم....چھم چھم چھم .

سازوں کو بھولے راگ یاد پڑ گئے، طبلہ ٹھنک اُٹھا، ہارمونیم میں آواز پیدا ہوگئی .

ہال والوں کے منہ پر ایک ہلکی سی ہنسی چھا گئی.....ایک چھم ہوئی، ایک ساتھ، بڑی تیز گتی سے چھم چھم ہونے لگی، کسی نے پیچھے سے کہا—چھپتی کیا ہو، سامنے نہ آؤ.....دوسرے نے کہا—آؤ، آؤ، جیو ! جی بھر کر جیو......

प्रवासी की डायरी

वह यह भी तो नहीं जानती थी कि वह क्या कर रही है!

वह नाच रही थी, कूद रही थी, नन्हे मुन्ने हाथों से कुरता नोच रही थी, गरारे का पायंचा पकड़ कर मटक रही थी, ज़बान निकाल कर मुँह चिढ़ाती थी, हथेलियां चटकाती थी, आंखें मटकाती थी.

और देखने वाले......!!

उसने मां से सब कुछ सीखा था, सारे हाव भाव वह जान गई थी. पर......यह "पर" बहुत बड़ा है. वह यह नहीं जानती थी कि वह क्या कर रही है और जो कुछ वह कर रही है उसका क्या मतलब है?

उसके लिये यह सब वैसे ही खेल था जैसे गुड़िया का ब्याह रचाना, हमजोलियों में खेलना—बिगड़ना, मनना, मनाना, ताने देना, हथेली चटकाना, पल में छुट्टी कर लेना, मुंह बना लेना और पल में दूसरे को बांहों में भींच लेना, बहनापा जोड़ लेना—बिल्कुल वैसे ही जैसे बच्चों का खेल......ज़ियादा से ज़ियादा आप यही कह सकते हैं कि "बिगड़े" बच्चों का खेल—

वह खेल रही थी और लोग हंस रहे थे, झूम रहे थे, दादें दे रहे थे......और वह खेल रही थी......तारीफों के नशे में डूब कर वह खेल रही थी.

अभी डाइस पर कोई नहीं था—सिर्फ़ कुछ ख़ामोश बाजे, खोए खोए से कुछ साज़, कुछ परदे, और उनके पीछे भोंडे तरीक़े से झुनझुनाते हुए घुंघरू, कभी एक घुंघरू बजता और कभी सारे के सारे बज उठते, बजते तो थे वह एक साथ पर अलग अलग आवाज़ों के साथ. अलग अलग लय लिये हुए, अलग अलग तान अपने में समाये हुए.

अभी बिल्कुल सन्नाटा था.

सन्नाटे का मतलब यह नहीं कि हाल ही में कोई नहीं था. हाल भरा था, लाउड स्पीकर वाले घूम रहे थे, लाइट वाले चक्कर मार रहे थे. कुछ लोग—दुनियां की हर बात की जानकारी रखने वाले—बे धड़क बोल रहे थे, किसी ने इस कम्पनी को कलकत्ता में देखा था, किसी ने इन के रंग कानपुर में देखे थे, किसी पर इस कम्पनी ने लखनऊ में जादू किया था. कुछ इन में से अपने पड़ोस वालों की तेज़ इच्छाओं को और तेज़ कर रहे थे और कुछ एक दूसरे की ग़लती दुरुस्त करते जाते थे, असली मुक़ाम, घटना, दुर्घटना,

پرواسی کی ڈائری

وہ یہ بھی تو نہیں جانتی تھی کہ وہ کیا کر رہی ہے!

وہ ناچ رہی تھی، کود رہی تھی، ننھے منے ہاتھوں سے کرتا نوچ رہی تھی، غرارے کا پائنچہ پکڑ کر مٹک رہی تھی، زبان نکال کر منہ چڑھاتی تھی، ہتھیلیاں چٹکاتی تھی، آنکھیں مٹکاتی تھی۔

اور دیکھنے والے......!!

اس نے ماں سے سب کچھ سیکھا تھا، سارے ہاؤ بھاؤ وہ جان گئی تھی۔ پر......یہ "پر" بہت بڑا ہے۔ وہ یہ نہیں جانتی تھی کہ وہ کیا کر رہی ہے اور جو کچھ وہ کر رہی ہے اس کا کیا مطلب ہے؟

اس کے لئے یہ سب ویسے ہی کھیل تھا جیسے گڑیا کا بیاہ رچانا، جیسے ہمجولیوں میں کھیلنا—بگڑنا، منانا، طعنے دینا، ہتھیلی چٹکانا، پل میں کھٹی کرلینا، منہ بنا لینا اور پل میں دوسرے کو باہوں میں بھینچ لینا، بہناپا جوڑ لینا—بالکل ویسے ہی جیسے بچوں کا کھیل......زیادہ سے زیادہ آپ یہی کہہ سکتے ہیں کہ "بگڑے" بچوں کا کھیل۔

وہ کھیل رہی تھی اور لوگ ہنس رہے تھے، جھوم رہے تھے، دادیں دے رہے تھے......اور وہ کھیل رہی تھی......تعریفوں کے نشے میں ڈوب کر وہ کھیل رہی تھی۔

ابھی ڈائس پر کوئی نہیں تھا—صرف کچھ خاموش باجے، کھوئے کھوئے سے کچھ ساز، کچھ پردے اور ان کے پیچھے بھونڈے طریقے سے جھنجھناتے ہوئے گھنگھرو، کبھی ایک گھنگھرو بجتا اور کبھی سارے کے سارے بج اٹھتے، بجتے تو تھے وہ ایک ساتھ پر الگ الگ آوازوں کے ساتھ، الگ الگ لے لئے ہوئے، الگ الگ تان اپنے میں سمائے ہوئے۔

ابھی بالکل سناٹا تھا۔

سناٹے کا مطلب یہ نہیں کہ ہال ہی میں کوئی نہیں تھا۔ ہال بھرا تھا، لاؤڈ اسپیکر والے گھوم رہے تھے، لائٹ والے چکر مار رہے تھے۔ کچھ لوگ—دنیا کی ہر بات کی جانکاری رکھنے والے—بےدھڑک بول رہے تھے۔ کسی نے اس کمپنی کو کلکتہ میں دیکھا تھا، کسی نے ان کے رنگ کانپور میں دیکھے تھے، کسی پر اس کمپنی نے لکھنؤ میں جادو کیا تھا۔ کچھ ان میں سے اپنے پڑوس والوں کی تیز اچھاؤں کو اور تیز کر رہے تھے اور کچھ ایک دوسرے کی غلطی درست کرتے جاتے تھے، اصلی مقام، گھٹنا، درگھٹنا،

और ज़िन्दगी के हर मैदान में उन्हें अमल में लाने के लिये आम जनता में जागृति पैदा करना. जीत सचाई ही की होती है झूठ की नहीं—धर्म के असल उसूल को सुनना चाहिये और सुन कर दिल में बैठाना चाहिये. वह असल उसूल यह है कि जो बात अपने लिये बुरी लगती हो वह किसी दूसरे के साथ नहीं करनी चाहिये—आदमी को चाहिये कि सब दुखियों के दुख दूर होने की इच्छा करे—दूसरे को फ़ायदा पहुंचाने से बढ़ कर कोई धर्म नहीं."

आख़ीर में श्रीमती मीरा बहन ने दुआ मांगी कि :—

"दुनिया में एक धर्म की सच्ची भावना जगाने और आदमी को आदमी का कुटुम्बी बना कर सारे संसार को एक ख़ानदान की शकल देने में यह आश्रम मुनासिब हिस्सा ले सके."

—ख़ुरशीद मेहदी

सूरत गढ़ी पखान की कीया सिरजनहार,
दादू सांच सूझे नहीं यूं डूबा संसार.
आतम माहीं राम है पूजा ताकी होई,
सेवा बंदन आरती साध करें सब कोई.
माहें निरंजन देव हैं माहें सेवा होइ,
माहें उतारें आरती, दादू सेवक सोइ.

—दादू

اور زندگی کے ہر میدان میں انہیں عمل میں لانے کے لئے عام جنتا میں جاگرتی پیدا کرنا . جیت سچائی ہی کی ہوتی ہے جھوٹ کی نہیں—دھرم کے اصل اصول کو سننا چاہئے اور سن کر دل میں بیٹھانا چاہئے . وہ اصل اصول یہ ہے کہ جو بات اپنے لئے بری لگتی ہو وہ کسی دوسرے کے ساتھ نہیں کرنی چاہئے—آدمی کو چاہئے کہ سب دکھیوں کے دکھ کے دور ہونے کی اچھا کرے—دوسرے کو فائدہ پہنچانے سے بڑھکر کوئی دھرم نہیں .

آخیر میں شریمتی میرا بہن نے دعا مانگی کہ :—

" دنیا میں ایک دھرم کی سچی بھاونا جگانے اور آدمی کو آدمی کا کٹمبی بنا کر سارے سنسار کو ایک خاندان کی شکل دینے میں یہ آشرم مناسب حصہ لے سکے ."

—خورشید مہدی

صورت گڑھی پکھان کی کیا سرجن ہار،
دادو سانچ سوجھے نہیں یوں ڈوبا سنسار
آتم ماہیں رام ہے پوجا تاکی ہوئے،
سیوا بندن آرتی سادھ کریں سب کوئے،
ماہیں نرنجن دیو ہے ماہیں سیوا ہوئے،
ماہیں اتاریں آرتی، دادو سیوک سوئے .

—دادو

और विश्वासों पर कबीर साहब खुले हमला करते थे. हिन्दुओं से उन्होंने कहा कि :—

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर तीरथ सगरे पानी—
रामा करना मरते देखे चारों वेद कहानी.

मुसलमानों की तरफ़ रुख करके उन्होंने कहा कि :—

कंकर पत्थर जोड़ के मसजिद लेई बनाए—
ता चढ़ मुल्ला बांग दे का बहिरो भयो खुदाए

कबीर साहब का काशी को छोड़ कर मगहर में जा कर शरीर त्यागना जबकि समझा जाता था कि काशी में मरने से मुक्ति मिलती है और मगहर में मरने वाला अगले जन्म में गधा होता है उनकी आज़ाद ख़याली का एक अच्छा सबूत है.

अपनी बाबत वह कहते हैं :—

कबीर पोंगरा (बेटा) अल्लाह राम का सत गुरू दीन दिखाई

कबीर साहब मूरती पूजा, अवतारवाद, जातपात और छुआ छूत के कट्टर विरोधी थे. वह सच्चे मूहिद यानी एक ईश्वर के मानने वाले थे. ईश्वर को वह अल्लाह और राम दोनों नामों से पुकारते थे. लेकिन उन्होंने यह साफ़ कहा है कि उनका राम सीता का पति रामचन्द्र नहीं था :—

सिरजनहार न ब्याही सीता जल पुशान नहीं बंधिया

कबीर साहब सच्चे ईश्वर भक्त यानी अल्लाह वाले थे. दुनिया की ऊंची से ऊंची रूहानी हस्तियों में उनका शुमार किया जाता है. दीन और धर्म का जो रास्ता उन्होंने इस देश के सामने रखा उसे उनके बाद गुरू नानक, दादू, प्लेटो, रै दास, बाबा फ़रीद, दरिया साहब, नाम देव और इसी तरह के सैकड़ों महात्माओं, फ़क़ीरों, सन्तों और दरवेशों ने उत्तर से दक्खिन और पूरब से पच्छिम तक मुल्क भर में फैलाया. आज इन महात्माओं के पद और उनके कलाम देश के गांव गांव में फैले हुए हैं और हमारी सबसे बड़ी रूहानी पूंजी हैं.

हिन्दुस्तान अभी तक पूरी तरह इन महात्माओं के बताए हुए रास्ते पर नहीं चल सका. लेकिन मशीअते एज़दी यानी विधी और इतिहास की गति दोनों हमें यह बताती मालूम होती हैं कि इस मुल्क के लिये सच्ची रूहानियत का, सलामती और कल्यान का वही एक रास्ता है.

•जलसे में श्रीमती मीरा बहन ने आश्रम की साल भर की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई. इस रिपोर्ट में उन्होंने आश्रम के छुपे हुए मक़सद की तरफ़ सबका ध्यान दिलाया. वह मक़सद यह है :—

"धर्म के सच्चे रूप और बुनियादी उसूलों को खोजना

اور وشواسوں پر کبیر صاحب کھلے حملہ کرتے تھے. ہندوؤں سے اُنھوں نے کہا کہ :—

مالا لکڑ، ٹھاکر پتھر تیرتھ سگرے پانی—
راما کرھنا مرتے دیکھے چاروں وید کہانی ۔

مسلمانوں کی طرف رخ کر کے اُنھوں نے کہا کہ :—

کنکر پتھر جوڑ کے مسجد لئی بنائے—
واچڑھ ملا بانگ دے کا بہرو بھیو خدائے ۔

کبیر صاحب کا کاشی کو چھوڑ کر مگہر میں جاکر شریر تیاگنا جب کہ سمجھا جاتا تھا کہ کاشی میں مرنے سے مکتی ملتی ہے اور مگہر میں مرنے والا اگلے جنم میں گدھا ہوتا ہے ان کی آزاد خیالی کا ایک اچھا ثبوت ہے ۔

اپنی بابت وہ کہتے ہیں :—

کبیر پونگرا (بیٹا) اللہ رام کا ست گرو دین دکھائی ۔

کبیر صاحب مورتی پوجا، اوتار واد، جات پات اور چھوا چھوت کے کٹر وِرودھی تھے ۔ وہ سچے موحد یعنی ایک ایشور کے ماننے والے تھے. ایشور کو وہ اللہ اور رام دونوں ناموں سے پکارتے تھے ۔ لیکن اُنھوں نے یہ صاف کہا ہے کہ اُن کا رام سیتا کا پتی رام چندر نہیں تھا :—

سرجن ہار نہ بیاہی سیتا جل پشان نہیں بندھیا

کبیر صاحب سچے ایشور بھگت یعنی اللہ والے تھے. دنیا کی اونچی سے اونچی روحانی ہستیوں میں اُن کا شمار کیا جاتا ہے ۔ دین اور دھرم کا جو راستہ اُنھوں نے اس دیش کے سامنے رکھا اُسے اُن کے بعد گرونانک، دادو، پلیٹو، رے داس، بابا فرید، دریا صاحب، نام دیو اور اسی طرح کے سیکڑوں مہاتماؤں، فقیروں، سنتوں اور درویشوں نے اُتر سے دکھن اور پورب سے پچھم تک ملک بھر میں پھیلایا ۔ آج ان مہاتماؤں کے پد اور اُن کے کلام دیش کے گاؤں گاؤں میں پھیلے ہوئے ہیں اور ہماری سب سے بڑی روحانی پونجی ہیں ۔

ہندستان ابھی تک پوری طرح ان مہاتماؤں کے بتائے ہوئے راستے پر نہیں چل سکا. لیکن مشیت ایزدی یعنی ودھی اور اتہاس کی گتی دونوں ہمیں یہ بتاتی معلوم ہوتی ہیں کہ اس ملک کے لئے سچی روحانیت کا، سلامتی اور کلیان کا وہی ایک راستہ ہے ۔

جلسے میں شریمتی میرا بہن نے آشرم کی سال بھر کی رپورٹ پڑھ کر سنائی ۔

اس رپورٹ میں اُنھوں نے آشرم کے چھپے ہوئے مقصد کی طرف سب کا دھیان دلایا ۔ وہ مقصد یہ ہے :—

"دھرم کے سچے روپ اور بنیادی اصولوں کو کھوجنا

इस आश्रम का पहला सालाना जलसा 27 जून सन '53 को पंडित सुन्दरलाल की सदारत में हुआ. जलसे के साथ साथ आश्रम में "कबीर दिन" भी मनाया गया. उस दिन जेठ महीने की पूनो थी. कबीर साहब जेठ की पूनो ही को पैदा हुए थे. और एक साल पहले जेठ की पूनो ही को कबीर साहब की यादगार में ही आश्रम क़ायम किया गया था. कहा जा सकता है कि कबीर साहब का मिशन ही आश्रम का मिशन है.

27 जून सन '53 को सत्य आश्रम लखनऊ में कबीर साहब की ज़िन्दगी और उनके उपदेशों पर जो व्याख्यान सुन्दरलाल जी ने दिया उसका कुछ हिस्सा यह है :—

कबीर साहब को इस देश के अन्दर हिन्दू मुसलिम एकता का बानी और उसका सब से पहला महान प्रचारक कहा जा सकता है. दूसरे लोगों ने इस एकता को राजकाजी और समाजी मैदानों में क़ायम करने की कोशिश की और इसी निगाह से इस सवाल को देखा पर कबीर साहब ने इसी एकता को धार्मिक और रूहानी निगाह से देखा और उसी मैदान में उसे पक्का करने की कोशिश की. कबीर साहब हिन्दू और मुसलमान धरमों को अलग अलग न मानते थे. वह दोनों धरमों को एक निगाह से देखते थे. दोनों की बुनियादी सचाइयों को एक मानते थे और दोनों के उन ऊपरी रीत रिवाजों पर जिन के कारन दोनों में फ़रक़ दिखाई देता है एक सी आज़ादी के साथ टीका टिप्पनी करते थे. दोनों की बुराइयों और कमज़ोरियों पर वह खुले हमले करते थे. सच यह है कि वह बजाय हिन्दू धर्म या इसलाम धर्म के एक प्रेम धर्म, एक मज़हबे इश्क़, एक मानव धर्म या मज़हबे इनसानियत के मानने वाले थे. इस बारे में उनकी नीचे लिखी लाइनें देश भर में मशहूर हैं :—

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ—पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर 'प्रेम" का—पढ़े सो पंडित होय"

हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी झगड़े के बारे में उन्होंने कहा है :—

हिन्दू कहें राम मोहीं प्यारा—तुरक कहें रहमाना
आपस में दोउ लर लर मुए—मरम न का हू जाना

उनके नीचे लिखे पद इस बारे में उनके विचारों को बिलकुल साफ़ कर देते हैं :—

भाई रे ! दुई जगदीश कहां ते आए—कहो कौने बौराए
अल्लाह, राम, करीमा, केशव,—हरि हज़रत नाम धराए
गहना एक कनक (सोना) ते गहना—यामें भाव न दूजा
कहन सुनन को दू कर थापे—एक नमाज़ एक पूजा

हिन्दू और मुसलमान दोनों के ऊपरी रीत रिवाजों

اِس آشرم کا پہلا سالانہ جلسہ 27 جون سن '53 کو پنڈت سندر لال کی صدارت میں ہوا. جلسے کے ساتھ ساتھ آشرم میں " کبیر دن " بھی منایا گیا . اُس دن جیٹھ مہینے کی پونو تھی . کبیر صاحب جیٹھ کی پونو ہی کو پیدا ہوئے تھے . اور ایک سال پہلے جیٹھ کی پونو ہی کو کبیر صاحب کی یادگار میں ہی آشرم قائم کیا گیا تھا . کہا جاسکتا ہے کہ کبیر صاحب کا مشن ہی آشرم کا مشن ہے .

27 جون سن '53 کو ستیہ آشرم لکھنؤ میں کبیر صاحب کی زندگی اور اُن کے اُپدیشوں پر جو ویاکھیان سندر لال جی نے دیا اُس کا کچھ حصہ یہ ہے :—

کبیر صاحب کو اِس دیش کے اندر ہندو مسلم ایکتا کا بانی اور اُس کا سب سے پہلا مہان پرچارک کہا جاسکتا . دوسرے لوگوں نے اِس ایکتا کو راجکاجی اور سماجی میدانوں میں قائم کرنے کی کوشش کی اور اِسی نگاہ سے اِس سوال کو دیکھا . پر کبیر صاحب نے اِسی ایکتا کو دھارمک اور روحانی نگاہ سے دیکھا اور اُسی میدان میں اُسے پکا کرنے کی کوشش کی. کبیر صاحب ہندو اور مسلمان دھرموں کو الگ الگ نہ مانتے تھے . وہ دونوں دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھتے تھے. دونوں کی بنیادی سچائیوں کو ایک مانتے تھے اور دونوں کے اُن اوپری ریت رواجوں پر جن کے کارن دونوں میں فرق دکھائی دیتا ہے ایک سی آزادی کے ساتھ ٹیکا ٹپنی کرتے تھے . دونوں کی برائیوں اور کمزوریوں پر وہ کھلے حملے کرتے تھے. سچ یہ ہے کہ وہ بجائے ہندو دھرم یا اِسلام دھرم کے ایک پریم دھرم' ایک مذہب عشق' ایک مانو دھرم یا مذہب اِنسانیت کے ماننے والے تھے. اِس بارے میں اُن کی نیچے لکھی لائنیں دیش بھر میں مشہور ہیں :—

"پوتھی پڑھ پڑھ جگ موا—پنڈت بھیا نہ کوئے
ڈھائی اچھر "پریم" کا—پڑھے سو پنڈت ہوئے"

ہندوؤں اور مسلمانوں کے آپسی جھگڑے کے بارے میں اُنھوں نے کہا ہے :—

ہندو کہیں رام موہی پیارا—ترک کہیں رحمانا
آپس میں دو لر لر موئے—مرم نہ کا ہو جانا

اُن کے نیچے لکھے پد اِس بارے میں اُن کے وچاروں کو بالکل صاف کر دیتے ہیں :—

بھائی رے! دوئی جگدیش کہاں تے آئے—کہو کونے بورائے
اللہ' رام' کریما کیشو — ہری حضرت نام دھرائے
گہنا ایک کنک (سونا) تے گہنا—وا میں بھاؤ نہ دوجا
کہن سنن کو دو کر تھاپے — اک نماز اک پوجا

ہندو اور مسلمان دونوں کے اوپری ریت رواجوں

ही जनता को दबाना, सताना और उसके ज़रिये अपनी जड़ें मज़बूत करना होता है तो शायद कुछ भी नहीं समझे. सोशलिस्ट नेताओं को सोचना पड़ेगा कि वह हाकिम का साथ देना चाहते हैं या जनता का. अगर जनता का साथ देना चाहते हैं तो दो नाव की सवारी छोड़ दें और जनता के हित में काम करने वाली सभी ताक़तों से जहां तक मुमकिन हो सके मिल कर काम करें चाहे वह आचार्य विनोबा का भूदान यज्ञ हो चाहे कम्युनिस्टों का शान्ति आन्दोलन. अगर वह इतना नहीं कर सकते तो ईमान का तक़ाज़ा है कि वह अपनी पार्टी तोड़ कर कांगरेस में मिल जायें या जहां और रास्ता मिले वहां घुस जायें.

—सुरेश रामभाई

ہی جنتا کو دبانا، ستانا اور اسکے ذریعہ اپنی جڑیں مضبوط کرنا ہوتا ہے تو شاید کچھ بھی نہیں سمجھے. سوشلسٹ نیتاؤں کو سوچنا پڑیگا کہ وہ حاکم کا ساتھ دینا چاہتے ہیں یا جنتا کا. اگر جنتا کا ساتھ دینا چاہتے ہیں تو دو ناؤ کی سواری چھوڑ دیں اور جنتا کے ہت میں کام کرنے والی سبھی طاقتوں سے جہاں تک ممکن ہوسکے مل کر کام کریں چاہے وہ آچاریہ ونوبا کا بھودان یگیہ ہو چاہے کمیونسٹوں کا شانتی آندولن. اگر وہ اتنا نہیں کرسکتے تو ایمان کا تقاضہ ہے کہ وہ اپنی پارٹی توڑ کر کانگریس میں مل جائیں یا جہاں اور راستہ ملے وہاں گھس جائیں .

——سریش رام بھائی

सत्य आश्रम, लखनऊ में कबीर जयन्ती

श्री अक्षय ब्रह्मचारी को फ़ैज़ाबाद की बाबरी मसजिद के संबंध में देश भर जान चुका है. लगभग एक साल से ब्रह्मचारी जी ने लखनऊ में लोकमान्य तिलक रोड पर गोमती के किनारे सत्य आश्रम नाम से एक आश्रम क़ायम कर रखा है. यह आश्रम दो चार झोंपड़ियों और छप्परों का एक झुंड है जिसके साथ थोड़ी सी खेती बारी की ज़मीन है. जगह सुन्दर और एकान्त की है. आश्रम में कुल तीन चार आदमी रहते हैं जो ब्रह्मचारी जी की तरह ही सादा जीवन बिताते हैं और उन्हीं की तरह ईश्वर भक्ति और इनसानी मोहब्बत के प्रचार में समय ख़र्च करते हैं. साम्प्रदायिक मामलों से यह सब वैसे ही बेलाग हैं जैसे ब्रह्मचारी जी. आश्रम में कोई छुआ छूत नहीं बरती जाती. आश्रम वासी अधिकतर आश्रम ही की पैदा हुई चीज़ों से अपना गुज़ारा करते हैं. इन में दो ख़ास हैं : एक ज़िला शाहजहांपुर के रहने वाले माहौर जी जो लगभग सत्तर बरस के हैं और जिनकी सारी उमर देश की सेवा और हिन्दू मुसलिम एकता के प्रचार में ही बीती है. दूसरे मीरा बहन जो एक पढ़ी लिखी विधवा हैं और आश्रम का सारा प्रबन्ध करती हैं. आश्रम में रोज़ ग़रीबों को मुफ़्त दवा दी जाती है और कम से कम हर इतवार को एक आम सत्संग होता है जिस में सब धरमों के लोग शामिल होते हैं. गीता क़ुरान और बाइबिल सब का पाठ होता है और सब धरमों का तुलनात्मक अध्ययन करने की कोशिश की जाती है.

ستیہ آشرم، لکھنؤ میں "کبیر جینتی"

شری اکشے برہمچاری کو فیض آباد کی بابری مسجد کے سمبندھ میں دیش بھر جان چکا ہے . لگ بھگ ایک سال سے برہمچاری جی نے لکھنؤ میں لوکمانیہ تلک روڈ پر گومتی کے کنارے ستیہ آشرم نام سے ایک آشرم قائم کر رکھا ہے. یہ آشرم دو چار جھونپڑیوں اور چھپروں کا ایک جھنڈ ہے جس کے ساتھ تھوڑی سی کھیتی باری کی زمین ہے. جگہ سندر اور ایکانت کی ہے . آشرم میں کل تین چار آدمی رہتے ہیں جو برہمچاری جی کی طرح ہی سادہ جیون بتاتے ہیں اور انہیں کی طرح ایشور بھکتی اور انسانی محبت کے پرچار میں سمے خرچ کرتے ہیں . سامپردائک معاملوں میں یہ سب ویسے ہی بےلاگ ہیں جیسے برہمچاری جی. آشرم میں کوئی چھوا چھوت نہیں برتی جاتی. آشرم واسی ادھکتر آشرم ہی کی پیدا ہوئی چیزوں سے اپنا گذارہ کرتے ہیں . ان میں دو خاص ہیں: ایک ضلع شاہجہانپور کے رہنے والے ماہور جی جو لگ بھگ ستر برس کے ہیں اور جن کی ساری عمر دیش کی سیوا اور ہندو مسلم ایکتا کے پرچار میں ہی بیتی ہے . دوسرے میرا بہن جو ایک پڑھی لکھی ودھوا ہیں اور آشرم کا سارا پربندھ کرتی ہیں . آشرم میں روز غریبوں کو مفت دوا دی جاتی ہے اور کم سے کم ہر اتوار کو ایک عام ستسنگ ہوتا ہے جس میں سب دھرموں کے لوگ شامل ہوتے ہیں . گیتا قرآن اور بائبل سب کا پاٹھ ہوتا ہے اور سب دھرموں کا تلناتمک ادھین کرنے کی کوشش کی جاتی ہے .

8. सेहत की आड़ में देश के अन्दर विदेशी सच्ची झूठी दवाओं और कुटुम्ब रोकू योजनाओं का बढ़ना.

9. फ़ौज पर खर्च बढ़ता जाना और हथियारों के लिये परदेशों का मुंह ताकना.

10. इन्सान की मेहनत की जगह पैसे को गद्दी पर बिठाना और उसी को सारे इन्तज़ाम व काम काज का मरकज़ क़ायम रखना.

हमने इन सवालों में से कुछ सरसरी तौर पर गिना दिये हैं. हमारा मन्शा यह है कि इस मसविदे के आधार वही हैं जो सरकारी पंच साला योजना के हैं और जब जनता के अन्दर वह योजना नई जान नहीं फूंक सकी तो यह मसविदा कहां तक उसमें कामयाब होगा.

नेताओं का फ़र्ज़

आज श्री जय प्रकाश नरायन भूदान यज्ञ में अपना बहुत क़ीमती समय खर्च कर रहे हैं. पर भूदान यज्ञ के पीछे तो असली स्वाराज या ग्राम राज की कल्पना है जिसका इस मसविदे में नाम तक नहीं. उल्टे चक बन्दी, आपसी बहु धन्दी सोसाइटियों वगैरह का राग गाया है जो हमारे लिये विनाशक नुक़सानदे है. मोटे तौर पर हम कहें तो यह मसविदा तीन खूटों पर खड़ा है—संगीनों का बल, डंडे का बल, और बड़े बड़े कारखानों का बल. इसके ख़िलाफ़ भूदान यज्ञ पैरोकार है प्रेम के बल का और छोटे छोटे उद्योग धन्धों का जो हमारे गांव गांव को स्वावलम्बी बनायें ताकि देश का छोटे से छोटे हिस्सा अपने पैरों पर खड़ा हो सके. इसलिये हमारी समझ में नहीं आता कि कोई गांधीवादी इस मसविदे पर किस तरह अपने दस्तख़त कर देगा. और अगर आचार्य कृपलानी व जय प्रकाश बाबू का गांधीवाद यही है तो हम बड़ी नम्रता के साथ कहेंगे कि गांधीवाद का यह मार्का जितनी जल्दी इस दुनिया से ख़तम हो जाये उतना ही अच्छा है.

अब रह जाता है सवाल कि इस तरह की बात चीत का पार्टी कार्यकर्ता और आम जनता पर क्या असर पड़ता है. हमने देखा कि कारकर्ता, चाहे कांगरेसी हो चाहे प्रजा सोशलिस्ट उस पर इस बात चीत का असर नहीं पड़ा, ख़ास कर सोशलिस्ट पर. उल्टे, उनकी घबराहट बढ़ी और वह हैरान है कि उसके तले से ज़मीन क्यों निकली जा रही है. आज जनता के लिये दोनों में भेद उसूल का उतना नहीं जितना शख़सियतों का है—हाल ही में रेलवे मज़दूरों के कांगरेस संगठन और सोशलिस्ट संगठनों के मिल जाने से यह ख़याल और भी पक्का हो गया है.

आख़िर में हमारा निवेदन है कि प्रजा सोशलिस्ट भाई ग़लती पर हैं. वह अब तक अगर वह नहीं समझे कि कांगरेस हाकिम है और हुक्कामों की पार्टी है-जिसका पेशा

.8 مصعت کی آڑ میں دیش کے اندر ودیشی سچی جھوٹی دواؤں اور کٹمب روکو یوجناؤں کا بڑھنا ۔

.9 فوج پر خرچ بڑھتا جانا اور ہتھیاروں کے لئے پردیسوں کا منھ تاکنا ۔

.10 انسان کی محنت کی جگہ پیسے کو گدی پر بیٹھانا اور اُسی کو سارے انتظام و کام کاج کا مرکز قائم رکھنا ۔

ہم نے ان سوالوں میں سے کچھ سرسری طور پر گنا دئے ہیں ۔ ہمارا منشا یہ ہے کہ اس مسودہ کے آدھار وہی ہیں جو سرکاری پنچ سالا یوجنا کے ہیں اور جب جنتا کے اندر یہ یوجنا نئی جان نہیں پھونک سکی تو یہ مسودہ کہاں تک اُس میں کامیاب ہوگا ۔

نیتاؤں کا فرض

آج شری جے پرکاش نارائن بھودان یگ میں اپنا بہت قیمتی سمے خرچ کر رہے ہیں ۔ پر بھودان یگیہ کے پیچھے تو اصلی سوراج یا گرام راج کی کلپنا ہے جس کا اِس مسودہ میں نام تک نہیں ۔ اُلٹے چک بندی' آپسی بہو دھندی سوسائٹیاں وغیرہ کا راگ گایا ہے جو ہمارے لئے بنا شک نقصان دہ ہیں ۔ موٹے طور پر ہم کہیں تو یہ مسودہ تین کھونٹوں پر کھڑا ہے ۔ سنگینوں کا بل' ڈنڈے کا بل اور بڑے بڑے کارخانوں کا بل ۔ اِس کے خلاف بھودان یگیہ پیروکار ہے پریم کے بل کا اور چھوٹے سے اُدیوگ دھندوں کا جو ہمارے گاؤں گاؤں کو سواولمبی بنائیں تاکہ دیش کا چھوٹے سے چھوٹا حصہ اپنے پیروں پر کھڑا ہوسکے ۔ اِس لئے ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ کوئی گاندھی وادی اِس مسودہ پر کس طرح اپنے دستخط کر دیگا ۔ اور اگر آچاریہ کرپلانی و جے پرکاش بابو کا گاندھی واد یہی ہے تو ہم بڑی نمرتا کے ساتھ کہینگے کہ گاندھی واد کا یہ مارکہ جتنی جلدی اِس دنیا سے ختم ہو جائے اُتنا ہی اچھا ہے ۔

اب رہ جاتا ہے سوال کہ اِس طرح کی بات چیت کا پارٹی کارکرتا اور عام جنتا پر کیا اثر پڑتا ہے ۔ ہم نے دیکھا کہ کارکرتا' چاہے کانگریسی ہو چاہے پرجا سوشلسٹ اُس پر اِس بات چیت کا اثر نہیں پڑا' خاصکر سوشلسٹ پر ۔ اُلٹے' اُن کی گھبراہٹ بڑھی اور وہ حیران ہے کہ اُس کے تلے سے زمین کیوں نکلی جا رہی ہے ۔ آج جنتا کے لئے دونوں میں بھید اُصول کا اُتنا نہیں جتنا شخصیتوں کا ہے۔حال ہی میں ریلوے مزدوروں کے کانگریس سنگٹھن اور سوشلسٹ سنگٹھنوں کے مل جانے سے یہ خیال اور بھی پکا ہو گیا ہے ۔

آخر میں ہمارا نویدن ہے کہ پرجا سوشلسٹ بھائی غلطی پر ہیں۔ وہ اب تک اگر یہ نہیں سمجھے کہ کانگریس حاکم ہے اور حکاموں کی پارٹی ہے' جس کا پیشہ

महों में वह अब सोशलिस्ट पार्टी के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा जाना चाहेंगे.) लेकिन हमें ताज्जुब और दुःख इस बात का है कि यह प्रोग्राम जय प्रकाश बाबू ने अपना लिया जो यह कहते हैं कि मैं गांधी जी को फिर से खोज कर रहा हूं और जो गांधीवादियों व सोशलिस्टों के साथ करने की उम्मीद रखते हैं. इस प्रोग्राम की कुछ मदें जैसे—चक बन्दी, लाज़िमी बहु धन्धी सोसाइटियां, सरकार का किसानों की बजाये पंचायतों से सम्बन्ध, सरकारी व्यापार की बढ़ोतरी, यूनियन शाप के आधार पर मज़दूरों का संगठन—ऐसे हैं जो निहायत ख़तरनाक हैं और हिन्दुस्तान की सर ज़मीन के एक दम ख़िलाफ़ हैं. हां, इसमें कुछ ठीक बातें भी हैं—जैसे असेम्बली के ऊपर वाली कौंसिल का ख़ात्मा, राजकाजी ताक़त का विकेन्द्रीकरन, सरकारी इन्तज़ाम ख़र्च में कमी करना, ज़मीन को फिर से बांटना, बेदख़लियां रोकना, बैंकों व बीमा कम्पनियों और कोयले व दूसरी खानों का राष्ट्रीकरन. पर कुछ के बारे में गोल मोल चर्चा है जैसे क़ानून और क़ानूनी तरीक़े में सुधार, बड़े और छोटे उद्योगों के दायरे बनाना वग़ैरा. हमारी मौजूदा कांगरेस सरकार भी बड़े और छोटे उद्योगों के दायरे बनाने की हामी भरती है पर अमल में नहीं उतारती. इसी तरह वह क़ानून में सुधार की बात करती है पर करती नहीं.

मगर हमें दुख इस बात का है कि इन प्रोग्रामों ने उन बड़े बड़े सवालों को छुआ ही नहीं जो आज मुल्क को तबाह कर डाल रहे हैं, जैसे:

1. देश के अन्दर बढ़ती हुई विदेशी पूंजी और ख़ास कर अमरीकी पैसा व माल.

2. देश के अन्दर बढ़ती हुई "एक्सपर्ट" के नाम पर विदेशी लोगों का अपना हित सीधा करते चलते चले आना.

3. विकास के बहाने देश की काश्तकारी व छोटे छोटे उद्योगों का ख़त्म होना.

4. देश की जन शक्ति को नज़र अन्दाज़ कर के करोड़ों और अरबों रुपया बड़े बड़े डाम बांधने में ख़र्च करना जिन के सच्चे होने में भी शक है.

5. डालर कमाने के नाम पर देश का कच्चा माल बाहर भेज देना और विदेशों के मन माने दाम पर उनका अनाज और दूसरे पक्के माल ख़रीदना.

6. खाने, कपड़े और मकान की बुनियादी ज़रूरतों के मामले में गांवों का शहरों और विदेशों का मुहताज बनते जाना.

7. देश में तालीम का सिलसिला वही बना रहना जो अंगरेज़ों ने अपनी ग़रज़ के लिये जारी किया था.

مدوں میں وہ پرجا سوشلسٹ پارٹی کے مقابلے میں کہیں زیادہ جانا چاہینگے .) لیکن ہمیں تعجب اور دکھ اِس بات کا ہے کہ یہ پروگرام جے پرکاش بابو نے اپنا لیا جو یہ کہتے ہیں کہ میں گاندھی جی کو پھر سے کھوج کر رہا ہوں اور جو گاندھی وادیوں و سوشلسٹوں کے ساتھ کرنے کی اُمید رکھتے ہیں۔ اِس پروگرام کی کچھ مدیں جیسے—چک بندی' لازمی بہو دھندی سوسائٹیاں' سرکار کا کسانوں کی بجائے پنچایتوں سے سمبندھ' سرکاری بیوپار کی بڑھوتری' یونین شاپ کے آدھار پر مزدوروں کا سنگھٹن —ایسے ہیں جو نہایت خطرناک ہیں اور ہندستان کی سرزمین کے ایک دم خلاف ہیں . ہاں' اِس میں کچھ ٹھیک باتیں بھی ہیں—جیسے اسمبلی کے اُوپر والی کونسل کا خاتمہ' راج کاجی طاقت کا وکیندری کرن' سرکاری اِنتظام خرچ میں کمی کرنا' زمین کو پھر سے بانٹنا' بے دخلیاں روکنا' بینکوں و بیمہ کمپنیوں اور کوئلہ و دوسری کھانوں کا راشٹری کرن۔ پر کچھ کے بارے میں گول مال چرچہ جیسے قانون اور قانونی طریقے میں سدھار' بڑے اور چھوٹے اُدیوگوں کے دائرے بنانا وغیرہ۔ ہماری موجودہ کانگریس سرکار بھی بڑے اور چھوٹے اُدیوگوں کے دائرے بنانے کی حامی بھرتی ہے پر عمل میں نہیں اُتارتی . اِسی طرح وہ قانون میں سدھار کی بات کرتی ہے پر کرتی نہیں۔

مگر ہمیں دکھ اِس بات کا ہے کہ اِن پروگراموں نے اُن بڑے بڑے سوالوں کو چھوا ہی نہیں جو آج ملک کو تباہ کر ڈال رہے ہیں' جیسے :

1. دیش کے اندر بڑھتی ہوئی ودیشی پونجی اور خاص کر امریکی پیسہ و مال .

2. دیش کے اندر بڑھتی ہوئی "ایکسپرٹ" کے نام پر ودیشی لوگوں کا اپنا ہت کرتے چلتے چلے آنا .

3. وکاس کے بہانے دیش کی کاشتکاری و چھوٹے چھوٹے اُدیوگوں کا ختم ہونا .

4. دیش کی جن شکتی کو نظر انداز کرکے کروڑوں اور اربوں روپیہ بڑے بڑے ڈام باندھنے میں خرچ کرنا جن کے سچے ہونے میں بھی شک ہے .

5. ڈالر کمانے کے نام پر دیش کا کچا مال باہر بھیج دینا اور ودیشوں کے من مانے دام پر اُن کا اناج اور دوسرے پکے مال خریدنا .

6. کھانے' کپڑے اور مکان کی بنیادی ضرورتوں کے معاملے میں گاؤں کا شہروں اور ودیشوں کا محتاج بنتے جانا .

7. دیش میں تعلیم کا سلسلہ وہی بنا رہنا جو انگریزوں نے اپنی غرض کے لئے جاری کیا تھا .

वादा कर देने का मेरे लिये नामुमकिन है. पर हां आपकी तरफ से उनका पेश करना जायज़ और माक़ूल बात है.

5. इसलिये हमारी बात चीत को यहीं खतम हो जाना चाहिये पर सहयोग की भावना और अभ्यास हम बढ़ाते रह सकते हैं और हो सकता है कि आगे चलकर हम एक दूसरे के ज़ियादा नज़दीक आ जायें.

इन दोनों ख़तों से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि प्रधान मंत्री और कांगरेस सदर होने के नाते पंडित जवाहर लाल नेहरू अपनी नीति में कोई भी नुमायां फ़र्क़ करने को तैयार नहीं हैं और वह प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से सहयोग बिना किसी शर्त मांगते हैं. यह बात पंडित जी ने अपने प्रेस बयान में भी कही है—"मैंने सहयोग की किन्हीं नये तुले तरीक़ों का विचार नहीं किया था क्योंकि मैं पृष्ठ भूमि और नज़रिया साफ़ कर लेना चाहता था. इस सफ़ाई के बाद ही तफ़सील की बातों पर बहस की जा सकती थी." "उन्होंने यह भी कहा कि वह हालत अभी नहीं आई थी कि कम से कम प्रोग्राम वग़ैरह तय किये जायें." लिहाज़ा यह बात चीत खतम करना मुनासिब समझा गया पर आगे जो भी सहयोग के मौक़े मिलेंगे उनका सद उपयोग किया जायगा.

श्री जय प्रकाश नारायन ने अपने बयान में कहा कि बिना किसी प्रोग्राम के तय किये हुए दोनों दलों का सहयोग बेमाने बात थी और "नज़रिये के इस भेद" के कारन सहयोग का सवाल मुलतवी कर दिया गया. जय प्रकाश बाबू ने यह भी कहा कि "नीति का गोल माल रहना" भारत सरकार की एक "भारी कमी" रही है और देश के अंदर "तेज़ी का माद्दा" पैदा कर लोगों के सामने "कोई ठोस चीज़" रखने की सख्त ज़रूरत थी जिसके लिये हमने एक प्रोग्राम दिया पर वह पंडित नेहरू को मंज़ूर नहीं हुआ. इस बात चीत से पता चला कि दोनों दल वालों में काफ़ी बातों पर एक मत है और "एक कमाल की चीज़ यह है कि हमारी राय एक होती है पर फिर भी हम एक राय न होते." जयप्रकाश जी के कहने का सार यह है कि यह बात चीत नाकामयाब नहीं हुई है. पर खतम ज़रूर हो गई है.

प्रजा सोशलिस्ट प्रोग्राम के दोष

अब हम प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के 14 मदी प्रोग्राम को लेंगे.

उस प्रोग्राम का कांगरेस पार्टी को मंज़ूर न होने पर हमें ताज्जुब है क्योंकि इसमें कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जो अंगरेज़ों के ज़माने में कांगरेस ने खुद न कही हो. इस प्रोग्राम की ज़ियादातर क्या शायद सभी मदों से हमारे देश के कम्यूनिस्ट भाई सहमत हो सकते हैं. (हां, कुछ

وعدہ کردینے کا میرے لئے نا ممکن ہے۔ پر ہاں آپ کی طرف سے اُن کا پیش کرنا جائز اور معقول بات ہے ۔

5. اِس لئے ہماری بات چیت کو یہیں ختم ہوجانا چاہئے پر سہیوگ کی بھاونا اور ابھیاس ہم بڑھاتے رہ سکتے ہیں اور ہوسکتا ہے کہ آگے چل کر ہم ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک آجائیں ۔

اِن دونوں خطوں سے یہ صاف ظاہر ہوتا ہے کہ پردھان منتری اور کانگریس صدر ہونے کے ناتے پنڈت جواہر لال نہرو اپنی نیتی میں کوئی بھی نمایاں فرق کرنے کو تیار نہیں ہیں اور وہ پرجا سوشلسٹ پارٹی سے سہیوگ بلا کسی شرط مانگتے ہیں ۔ یہ بات پنڈت جی نے اپنے پریس بیان میں بھی کہی ہے—"میں نے سہیوگ کی کنہیں نئے تلے طریقوں کا وچار نہیں کیا تھا کیونکہ میں پرشٹھ بھومی اور نظریہ صاف کرلینا چاہتا تھا ۔ اِس صفائی کے بعد ہی تفصیل کی باتوں پر بحث کی جاسکتی تھی ."
"اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ وہ حالت ابھی نہیں آئی تھی کہ کم سے کم پروگرام وغیرہ طے کئے جائیں ." لہذا یہ بات چیت ختم کرنا مناسب سمجھا گیا آگے جو بھی سہیوگ کے موقعہ ملینگے اُن کا سد اُپیوگ کیا جائیگا .

شری جے پرکاش نرائن نے اپنے بیان میں کہا کہ بنا کسی پروگرام کے طے کئے ہوئے دونوں دلوں کا سہیوگ بے معنی بات تھی اور "نظریئے کے اِس بھید" کے کارن سہیوگ کا سوال ملتوی کردیا گیا ۔ جے پرکاش بابو نے یہ بھی کہا "نیتی کا گول مال رہنا" بھارت سرکار کی ایک "بھاری کمی" رہی ہے اور دیش کے اندر "تیزی کا مادہ" پیدا کر لوگوں کے سامنے "کوئی ٹھوس چیز" رکھنے کی سخت ضرورت تھی جس کے لئے ہم نے ایک پروگرام دیا پر وہ پنڈت نہرو کو منظور نہیں ہوا ۔ اِس بات چیت سے پتہ چلا کہ دونوں دل والوں میں کافی باتوں پر ایک مت ہے اور "ایک کمال کی چیز یہ ہے کہ ہماری رائے ایک ہوتی ہے پر پھر بھی ہم ایک رائے نہ ہوتے." جے پرکاش جی کے کہنے کا سار یہ بات چیت ناکامیاب نہیں ہوئی ہے پر ختم ضرور ہوگئی ہے ۔

پرجا سوشلسٹ پروگرام کے دوش

اب ہم پرجا سوشلسٹ پارٹی کے 14 مدی پروگرام کو لینگے ۔

اُس پروگرام کا کانگریس پارٹی کو منظور نہ ہونے پر ہمیں تعجب ہے کیونکہ اِس میں کوئی چیز بھی ایسی نہیں ہے جو انگریزوں کے زمانے میں کانگریس نے خود نہ کہی ہو. اِس پروگرام کی زیادہ تر کیا شاید سبھی مدوں سے ہمارے دیش کے کمیونسٹ بھائی سہمت ہوسکتے ہیں ۔ (ہاں، کچھ

3. भाषावार हिसाब से हिन्दुस्तान का नक़्शा दो बारा खींचना और शासनी खर्च में कमी करना.

4. आर्थिक बराबरी और शोषण दूर करने के लिये जमीन को फिर से बांटना, बे दख़लियां बन्द करना, चकबन्दी कराना, जमींदारी की बची खुची सकलें ख़त्म करना, बहुधंधी सहयोगी समितियां जबरदस्ती खोलना, खेती को सहायता देना और सरकार जहां तक हो सके अलग अलग किसानों का ताल्लुक़ न रख उनकी सहयोगी सोसाइटियों या पंचायतों से रखे.

5. बंजर जमीन को ठीक कर उसमें गांव सहयोगियों के ज़रिये बेज़मीन वालों को बसाना.

6. बैंकों और बीमा कम्पनियों का राष्ट्रीकरन करना.

7. सरकार की तरफ़ व्यापार चलने का काम तेज़ी से बढ़ाना.

8. सरकार या सहयोगी समितियों या ख़ुद मुख़्तार ग्राम उद्योगों या मजदूर कौन्सिलों की तरफ़ से अलग अलग मामलों में कुछ मशीनों का इन्तज़ाम करना.

9. मज़दूर संगठन.

10. कोयले और दूसरी धातु की खानों का राष्ट्रीकरन.

11. सरकारी कारोबार में मज़दूरों की शिरकत लेना.

12. बड़ी और छोटी राजबन्दियों के कमरों की हदें बांध देना.

13. ऊंचे सरकारी मुलाज़िमों की तनख़ाहें कम करना.

14. स्वदेशी भावना का प्रचार.

इस चौदह मदी प्रोग्राम पर हम आख़िर में विचार करेंगे.

बातचीत क्यों ख़तम हुई ?

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस ख़त जवाब में जो ख़त 16 मार्च को लिखा उसकी ख़ास चीज़ें यह हैं:

1. अनुभव और ज़ियादा विचार करने से सरकारी पंच साला योजना में कुछ सुधार व फ़र्क़ किये जा सकते हैं पर उसकी बुनयाद वैसी की वैसी ही बनी रहेगी.

2. सोशलिस्ट मक़सदों और नामों को मैं पूरी तरह क़बूल करता हूं लेकिन असली सवाल यह है कि उनकी तरफ़ बढ़ा कैसे जाये.

3. आप लोगों से बात करने के पीछे मेरी मन्शा यही थी कि हमारे कामों में ज़ियादा से ज़ियादा दूसरों का सहयोग मिले.

4. आपके प्रोग्राम में और चीज़ों के अलावा बुनियादी वैधानिक तब्दीलियां भी हैं जिन्हें पूरा करना मेरे लिये मुश्किल है. प्रोग्राम की अलग अलग मदों पर मुझे कोई ख़ास एतराज़ नहीं है लेकिन उनके बारे में कोई

.8 بھاشا وار حساب سے هندستان کا نقشه دوبارہ کھینچنا اور شاسنی خرچ میں کمی کرنا .

.4 آرتھک برابری اور شوشن دور کرنے کے لئے زمین کو پھر سے بانٹنا، بے دخلیاں بند کرنا، چک بندی کرانا زمینداری کی بچی کھچی شکلیں ختم کرنا، بہو دھندی سہیوگی سمتیاں زبردستی کھولنا، کھیتی کو سہائتا دینا اور سرکار جہاں تک ہو سکے الگ الگ کسانوں کا تعلق نه رکھ اُن کی سہیوگی سوسائٹیوں یا پنچائتوں سے رکھے .

.5 بنجر زمینوں کو ٹھیک کر اُس میں گاؤں سہیوگیوں کے ذریعے بےزمین والوں کو بسانا .

.6 بینکوں اور بیمه کمپنیوں کا راشٹری کرن کرنا .

.7 سرکار کی طرف بیوپار چلنے کا کام تیزی سے بڑھانا.

.8 سرکار یا سہیوگی سمیتیوں یا خود مختار گرام اُدیوگوں یا مزدور کونسلوں کی طرف سے الگ الگ معاملوں میں کچھ مشینوں کا اِنتظام کرنا .

.9 مزدور سنگھٹن .

.10 کوئلے اور دوسری دھاتو کی کھانوں کا راشٹری کرن .

.11 سرکاری کاروبار میں مزدوروں کی شرکت لینا .

.12 بڑی اور چھوٹی راج بندیوں کے کمروں کی حدیں باندھ دینا .

.13 اُونچے سرکاری ملازموں کی تنخواهیں کم کرنا .

.14 سودیشی بھاونا کا پرچار .

اس چودہ مدی پروگرام پر ہم آخر میں وچار کرینگے.

بات چیت کیوں ختم ہوئی ؟

پنڈت جواہر لال نہرو نے اِس خط کے جواب میں جو خط 16 مارچ کو لکھا اُسکی خاص چیزیں یہ ہیں :

.1 انوبھو اور زیادہ وچار کرنے سے سرکاری پنچ سالا یوجنا میں کچھ سدھار و فرق کئے جاسکتے ہیں پر اُسکی بنیاد ویسی کی ویسی ہی بنی رہیگی.

.2 سوشلسٹ مقصدوں اور ناموں کو میں پوری طرح قبول کرتا ہوں لیکن اصلی سوال یہ ہے کہ اُن کی طرف بڑھا کیسے جائے .

.3 آپ لوگوں سے بات کرنے کے پیچھے میری منشا یہی تھی کہ ہمارے کاموں میں زیادہ سے زیادہ دوسروں کا سہیوگ ملے .

.4 آپ کے پروگرام میں اور چیزوں کے علاوہ بنیادی ویدھانک تبدیلیاں بھی ہیں جنہیں پورا کرنا میرے لئے مشکل ہے . پروگرام کی الگ الگ مدوں پر مجھے کوئی خاص اعتراض نہیں ہے لیکن اُن کے بارے میں کوئی

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का मसविदा

इस में पहली चीज जय प्रकाश बाबू का खत है. इस खत की खास बातें यह हैं :

1. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सामने समाजवाद की मंजिलें और उसके नाम साफ़ हैं. इन मंजिलों पर जल्द से जल्द पहुंचने की ज़रूरत है.

2. गांधी वादी और सोशलिस्ट साथ साथ काम कर सकते हैं.

3. अगर हिन्दुस्तान एक लोक हितकारी या वेलफ़ेयर राज की जाली तस्वीर पेश करके रह जाता है तो चीन की अपील रोके न रुकेगी.

4. विदेशी लोगों की पर्चियों पर हमें फूलना न चाहिये. हम को अपने ही तर्ज़ से चीज़ों की परख करनी चाहिये.

5. अगर आप (पंडित जवाहरलाल) महज़ चंद सोशलिस्टों को सरकारी कुर्सियों पर बैठाना चाहते हैं. तो वह बेकार है—ज़रूरत इस बात की है कि देश के पुनर्निर्माण के काम को मिल कर उठाया जाय.

6. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के प्रोग्राम के मसविदे के पहलुओं पर रोशनी.

ऊपर लिखी बातों में पांच पर तो हम मोटे तौर से श्री जय प्रकाश नारायण से सहमत हैं. पर उनका एक जुमला हमारी समझ में नहीं आया—अगर चीन की अपील घर कर गई तो "वह करोड़ों के जीवन पर असर डालेगी और इतिहास के बहाव को तबाहकुन रूप से बदल देगी." यह शब्द "तबाहकुन" किस विचार से इस्तेमाल किया गया ? गो हम यह नहीं मानते कि हिन्दुस्तान चीन की हु बहु नक़ल करके कामयाब होगा लेकिन हम "चीन की अपील" के ज़रूर क़ायल हैं और उसे ग़रीबपरवर, जन-हितकारी और संसार रक्षक मानते हैं :

चिट्ठी में छटी चीज़ है प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के प्रोग्राम के मसविदे के पहलुओं पर रोशनी. उस मसविदे में चौदह मदें हैं जो हम संक्षेप में यहां दे रहे हैं.

1. वैधानिक सुधार—ताकि समाजी तबदीलियों के बीच की रुकावटें दूर हो जायें. राजों और महाराजों और सिविल सर्विस पेशावारों को दी गई गारंटियां ख़त्म हो जायें और असेम्बलियों के ऊपर वाली कौन्सिलें ख़त्म हो जायें.

2. शासनी सुधार—जिसके अन्दर राज काजी ताक़त और शासनी सत्ता का विकेन्द्री करण शामिल है. क़ानून और क़ानूनी कार्रवाई में सुधार और घूसख़ोरी से पेश आने के लिये असरदार मशीनरी.

پرجا سوشلسٹ پارٹی کا مسودہ

اِن میں پہلی چیز جے پرکاش بابو کا خط ہے ۔ اِس خط کی خاص باتیں یہ ہیں :

1. پرجا سوشلسٹ پارٹی کے سامنے سماج واد کی منزلیں اور اِس کے نام صاف ہیں ۔ اِن منزلوں پر جلد سے جلد پہونچنے کی ضرورت ہے ۔

2. گاندھی وادی اور سوشلسٹ ساتھ ساتھ کام کر سکتے ہیں ۔

3. اگر ہندستان ایک لوک ہتکاری یا ویل فیئر راج کی جعلی تصویر پیش کر کے رہ جاتا ہے تو چین کی اپیل روکے نہ رکے گی ۔

4. ودیشی لوگوں کی پرچیوں پر ہمیں پھولنا نہ چاہئے ۔ ہم کو اپنے ہی طرز سے چیزوں کی پرکھ کرنی چاہئے ۔

5. اگر آپ (پنڈت جواہر لال) محض چند سوشلسٹوں کو سرکاری کرسیوں پر بیٹھانا چاہتے ہیں تو وہ بیکار ہے—ضرورت اس بات کی ہے کہ دیش پنر نرمان کے کام کو مل کر اُٹھایا جائے ۔

6. پرجا سوشلسٹ پارٹی کے پروگرام کے مسودے کے پہلوؤں پر روشنی ۔

اوپر لکھی باتوں میں پانچ پر تو ہم موٹے طور سے شری جے پرکاش نارائن سے سہمت ہیں ۔ پر اُن کا ایک جملہ ہماری سمجھ میں نہیں آیا—اگر چین کی اپیل گھر کر گئی ہے تو وہ " کروڑوں کے جیون پر اثر ڈالیگی اور اتہاس کے بہاؤ کو تباہ کن روپ سے بدل دے گی." یہ شبد "تباہ کن" کس وچار سے استعمال کیا گیا ؟ گو ہم یہ نہیں مانتے کہ ہندستان چین کی ہو بہو نقل کر کے کامیاب ہوگا لیکن ہم " چین کی اپیل " کے ضرور قائل ہیں اور اُسے غریب پرور، جن ہتکاری اور سنسار رکشک مانتے ہیں ۔

چٹھی میں چھٹی چیز ہے پرجا سوشلسٹ پارٹی کے پروگرام کے مسودے کے پہلوؤں پر روشنی ۔ اُس مسودہ میں چودہ مدیں ہیں جو ہم سنکچھیپ میں یہاں دے رہے ہیں :

1. ویدھانک سدھار—تاکہ سماجی تبدیلیوں کے بیچ کی رکاوٹیں دور ہو جائیں ۔ راجوں اور مہا راجوں اور سول سروس پیشہ وروں کو دی گئیں گارنٹیاں ختم ہو جائیں اور اسمبلیوں کے اوپر والی کونسلیں ختم ہو جائیں ۔

2. شاسنی سدھار—جس کے اندر راجکاجی طاقت اور شاسنی ستا کا وکیندری کرن شامل ہے ۔ قانون اور قانونی کاروائی میں سدھار اور گھوس خوری سے پیش آنے کے لئے اثر مشینری ۔

किया कि देश के सामने जो बड़े बड़े राजकाजी, आर्थिक और समाजी सवाल हैं वह अकेले कांगरेस पार्टी पूरी तरह नहीं सुलझा सकती और दूसरी पार्टियों की जितनी ज़ियादा मदद भी जाय उतना ही अच्छा है. ज़ाहिर है कि उसकी साम्प्रदायिक नीति के कारन जन संघ को वह अपने साथ न लेना चाहते हैं और न ले सकते हैं. कम्युनिस्ट पार्टी को वह एक रुख़ी समझते हैं जिस की वजह से उससे भी उनका मेल नहीं बैठ सकता. अब रह जाती है प्रजा सोशलिस्ट पार्टी जिस में बहुत से काम करने वाले ऐसे हैं जिन्होंने बरसों तक पंडित जवाहरलाल और दूसरे कांगरेस वालों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम किया है और हर तरह की क़ुरबानी में शरीक रहे हैं. निजी तौर पर जवाहरलाल जी के विचार काफ़ी हद तक सोशलिस्ट रहे हैं. इसलिये कोई छै सात महीना पहिले पंडित जवाहरलाल
۲ ने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेता श्री जय प्रकाश नारायन से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की.

श्री जय प्रकाश की इस सिलसिले में पहली मुलाक़ात फ़रवारी 1953 के शुरू में हुई. इस मुलाक़ात में जवाहरलाल जी ने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का सहयोग, सरकारी और आम दोनों सतह पर मांगा. श्री जय प्रकाश नारायन ने भी महसूस किया कि मुल्क की मौजूदा हालत में दोनों पार्टियों को मिल कर मुल्क को बनाने में लग जाना चाहिये. इस के बाद पंडित जवाहरलाल ने आचार्य कृपलानी और आचार्य नरेन्द्रदेव से भी मुलाक़ात की. लेकिन इन मुलाक़ातों का कोई ठोस फल न निकला और आगे बातचीत जारी रखने का तय पाया. अपने साथियों की सलाह से 4 मार्च 1953 को श्री जय प्रकाश नारायन ने एक लम्बा ख़त लिखा जिस के साथ अपनी पार्टी के प्रोग्राम का मसविदा भी पेश किया जिस के बिना पर वह कांगरेस के साथ मिल कर काम कर सकते थे.

इस बीच देश के अख़बारों में बड़ी चर्चा चल पड़ी और बहुत कुछ यह उम्मीद होने लगी कि कांगरेस और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एक दूसरे में घुल मिल जायगी. 16 मार्च को पंडित जवाहरलाल और जय प्रकाश बाबू की दूसरी मुलाक़ात हुई. इस में दोनों ने देखा कि हमारे बीच काफ़ी बातों पर रज़ामन्दी है लेकिन वह वक़्त नहीं आया जब किसी कमोबेश प्रोग्राम को लेकर दोनों पार्टियां एक साथ चल सकें. इसलिये यह बात चीत ख़त्म हो गई. बात चीत के बाद एक ख़त पंडित जवाहरलाल ने जय प्रकाश बाबू को लिखा और दोनों नेताओं ने प्रेस कान्फ्रेन्सों में बयान भी दिये. ऊपर की दोनों चिट्ठियां और यह बयान अख़बारों में में छपे हैं और जिन्हें हमने ध्यान के साथ देखा है.

کہا کہ دیش کے سامنے جو بڑے بڑے راجکاجی، آرتھک اور سماجی سوال ہیں وہ اکیلے کانگریس پارٹی پوری طرح نہیں سلجھا سکتی اور دوسری پارٹیوں کی جتنی زیادہ مدد لی جائے اتنا ہی اچھا ہے۔ ظاہر ہے کہ اسکی سامپردائک نیتی کے کارن جن سنگھ کو وہ اپنے ساتھ نہ لینا چاہتے ہیں اور نہ لے سکتے ہیں۔ کمیونسٹ پارٹی کو وہ ایک رخی سمجھتے ہیں جسکی وجہ سے اس سے بھی ان کا میل نہیں بیٹھ سکتا۔ اب رہ جاتی ہے پرجا سوشلسٹ پارٹی جس میں بہت سے کام کرنے والے ایسے ہیں جنہوں نے برسوں تک پنڈت جواہرلال اور دوسرے کانگریس والوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملا کر کام کیا ہے اور ہر طرح کی قربانی میں شریک رہے ہیں۔ نجی طور پر جواہر لال جی کے وچار کافی حد تک سوشلسٹ رہے ہیں۔ اس لئے کوئی چھ سات مہینے پہلے پنڈت جواہر لال نے پرجا سوشلسٹ پارٹی کے نیتا شری جے پرکاش نارائن سے ملنے کی اچھا ظاہر کی۔

شری جے پرکاش کی اس سلسلے میں پہلی ملاقات فروری 1953 کے شروع میں ہوئی۔ اس ملاقات میں جواہر لال جی نے پرجا سوشلسٹ پارٹی کا سہیوگ، سرکاری اور عام دونوں سطح پر مانگا۔ شری جے پرکاش نارائن نے بھی محسوس کیا کہ ملک کی موجودہ حالت میں دونوں پارٹیوں کو ملکر ملک کو بنانے میں لگ جانا چاہئے۔ اس کے بعد پنڈت جواہر لال نے آچاریہ کرپلانی اور آچاریہ نریندر دیو سے بھی ملاقات کی۔ لیکن ان ملاقاتوں کا کوئی ٹھوس پھل نہ نکلا اور آگے بات چیت جاری رکھنے کا طے پایا۔ اپنے ساتھیوں کی صلاح سے 4 مارچ 1953 کو شری جے پرکاش نارائن نے ایک لمبا خط لکھا جس کے ساتھ اپنی پارٹی کے پروگرام کا مسودہ بھی پیش کیا جس کے بنا پر وہ کانگریس کے ساتھ مل کر کام کر سکتے تھے۔

اس بیچ دیش کے اخباروں میں بڑی چرچہ چلی اور بہت کچھ یہ امید ہونے لگی کہ کانگریس اور پرجا سوشلسٹ پارٹی ایک دوسرے میں گھل مل جائیگی۔ 16 مارچ کو پنڈت جواہر لال اور جے پرکاش بابو کی دوسری ملاقات ہوئی۔ اس میں دونوں نے دیکھا کہ ہمارے بیچ کافی باتوں پر رضامندی ہے لیکن وہ وقت نہیں آیا جب کسی کم و بیش پروگرام کو لے کر دونوں پارٹیاں ایک ساتھ چل سکیں۔ اس لئے یہ بات چیت ختم ہو گئی۔ بات چیت کے بعد ایک خط پنڈت جواہر لال نے جے پرکاش بابو کو لکھا اور دونوں نیتاؤں نے پریس کانفرنسوں میں بیان بھی دیئے۔ اوپر کی دونوں چٹھیاں اور یہ بیان اخباروں میں چھپے ہیں اور جنہیں ہم نے دھیان کے ساتھ دیکھا ہے۔

सोशलिस्ट पार्टी के नाम से काम भी करते थे. सोशलिस्टों के अलग होने के करीब ढाई तीन साल बाद कांगरेस से कुछ और लोग भी बाहर निकल आये जैसे आचार्य कृपलानी, डाक्टर प्रफुल्ल घोष, श्री टी. प्रकाशम वग़ैरा. जिन्होंने किसान मजदूर प्रजापार्टी के नाम से नया संगठन शुरू किया. इस पार्टी का कांगरेस से कोई खास उसूली मतभेद नहीं था लेकिन कांगरेस हकूमत और कांगरेस संस्था की अमली कार्रवाइयों से और जनता के दुख दर्द को दूर करने में कांगरेस की नाकामयाबी के कारन से वह कांगरेस से असन्तुष्ट थे.

दिसम्बर 1951 और जनवरी-फरवरी 1952 में सारे देश के अन्दर, नये विधान के अनुसार, वोट पड़ा और चुनाव लड़े गये. इस चुनाव में कांगरेस पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, और किसान मजदूर प्रजा पार्टी के अलावा और भी बहुत सी पार्टियां शरीक हुई जिन में खास हैं कम्युनिस्ट पार्टी और जन संघ पार्टी. इन में जन संघ पार्टी पूरे सोलह आना साम्प्रदायिक पार्टी है जो हिन्दू राष्ट्र में यक़ीन रखती है और हिन्दुस्तान को पाकिस्तान का जवाबी हिन्दू पवित्र स्थान बनाना चाहती है. इसके ख़िलाफ़ कम्युनिस्ट पार्टी कांगरेस की तरह बिल्कुल ग़ैर साम्प्रदायिक है, पर उसके सामने राज काजी और आर्थिक नमूना वही है जो पहिले रूस ने या अब हाल में चीन ने पेश किया है और जिस पर वह किसी भी साधन से जल्द से जल्द पहुंचना चाहती है. यही वजह है कि सोशलिस्ट पार्टी जो आर्थिक दृष्टि से कम्युनिज़्म के जन्म दाता कार्ल मार्क्स के विचारों की क़ायल होते हुए भी अपने मक़सद पर केवल वैधानिक साधन से पहुंचना चाहती है, कम्युनिस्ट पार्टी से नहीं पटती.

चुनाव में कांगरेस पार्टी बहुत ज़ोरों के साथ जीती और क्या बीच नई दिल्ली में, क्या सूबों में हर जगह उसने अपनी मिनिस्ट्री बनाई. चुनाव के बाद देश की हालत पर सोशलिस्ट पार्टी वालों और किसान मजदूर प्रजा पार्टी वालों, दोनों ने अलग अलग और मिल कर भी विचार किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि देश में एक सिरे पर तो कांगरेस पार्टी है जो दिन दूने रात चौगुने पूंजीवादी चक्करों में फंसती जा रही है और दूसरे सिरे पर कम्युनिस्ट पार्टी है जो रूस चीन के नाम पर जनता को क्रान्ति के लिये उकसाती है और दोनों के बीच में हमारी दो पार्टियां हैं. उन्होंने सोचा कि दोनों में जब बहुत ज़ियादा फ़र्क़ नहीं है तो जनता को उलझन में न रख हमें एक होना चाहिये और वैधानिक व शान्ति के रास्ते देश को आगे बढ़ाना चाहिये. दोनों पार्टियों का यह मेल सन् 1952 के आख़िरी चौथाई में हुआ.

जवाहरलाल की प्रजा पार्टी वालों से मुलाक़ात

इस अरसे में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने महसूस

سوشلسٹ پارٹی کے نام سے کام بھی کرتے تھے. سوشلسٹوں کے الگ ہونے کے قریب ڈھائی تین سال بعد کانگریس سے کچھ اور لوگ بھی باہر نکل آئے جیسے آچاریہ کرپلانی' ڈاکٹر پرپھل گھوش' شری ٹی پرکاشم وغیرہ. جنہوں نے کسان مزدور پرجا پارٹی کے نام سے نیا سنگٹھن شروع کیا. اس پارٹی کا کانگریس سے کوئی خاص اصولی مت بھید نہیں تھا لیکن کانگریس حکومت اور کانگریس سنستھا کی عملی کاروائیوں سے اور جنتا کے دکھ درد کو دور کرنے میں کانگریس کی ناکامیابی کے کارن سے وہ کانگریس سے اسنتشٹ تھے.

دسمبر 1951 اور جنوری فروری 1952 میں سارے دیش کے اندر' نئے ودھان کے انوسار ووٹ پڑا اور چناؤ لڑے گئے اس چناؤ میں کانگریس پارٹی' سوشلسٹ پارٹی' اور کسان مزدور پرجا پارٹی کے علاوہ اور بھی بہت سی پارٹیاں شریک ہوئیں جن میں خاص ہیں کمیونسٹ پارٹی اور جن سنگھ پارٹی. اس میں جن سنگھ پارٹی پورے سولہ آنہ سامپردائک پارٹی ہے جو ہندو راشٹر میں یقین رکھتی ہے اور ہندستان کو پاکستان کا جوابی ہندو پوترا استھان بنانا چاہتی ہے. اس کے خلاف کمیونسٹ پارٹی کانگریس کی طرح بالکل غیر سامپردائک ہے' پر اس کے سامنے راجکاجی اور آرتھک نمونہ وہی ہے جو پہلے روس نے یا اب حال میں چین نے پیش کیا ہے اور جس پر وہ کسی بھی سادھن سے جلد سے جلد پہونچنا چاہتی ہے. یہی وجہ ہے کہ سوشلسٹ پارٹی' جو آرتھک درشٹی سے کمیونزم کے جنم داتا کارل مارکس کے وچاروں کی قائل ہوتے ہوئے بھی اپنے مقصد پر کیول ویدھانک سادھن سے پہونچنا چاہتی ہے' کمیونسٹ پارٹی سے نہیں پٹتی.

چناؤ میں کانگریس پارٹی بہت زوروں کے ساتھ جیتی اور کیا بیچ نئی دلی میں' کیا صوبوں میں ہر جگہ اس نے اپنی منسٹری بنائی. چناؤ کے بعد دیش کی حالت پر سوشلسٹ پارٹی والوں' اور کسان مزدور پرجا پارٹی والوں دونوں نے الگ الگ اور مل کر بھی وچار کیا اور اس نتیجے پر پہونچے کہ دیش میں ایک سرے پر تو کانگریس پارٹی ہے جو دن دونے رات چوگنے پونجی وادی چکروں میں پھنستی جا رہی ہے اور دوسرے سرے پر کمیونسٹ پارٹی ہے جو روس چین کے نام پر جنتا کو کرانتی کے لئے اکساتی ہے اور دونوں کے بیچ میں ہماری دو پارٹیاں ہیں. انہوں نے سوچا کہ دونوں میں جب بہت زیادہ فرق نہیں ہے تو جنتا کو الجھن میں نہ رکھ ہمیں ایک ہو جانا چاہئے اور ویدھانک و شانتی کے راستے دیش کو آگے بڑھانا چاہئے. دونوں پارٹیوں کا یہ میل سن 1952 کے آخری چوتھائی میں ہوا.

جواہر لال کی پرجا پارٹی والوں سے ملاقات

اس عرصہ میں پنڈت جواہر لال نہرو نے محسوس

कांगरेस प्रजा सोशलिस्ट बात चीत

ाज साढ़े पांच बरस से ऊपर हुआ जब हमारे बीच गरेज़ों की राजकाजी और फ़ौजी ताक़त हट कर देश ागडोर हमारे अपने हाथों में आई और पंडित रलाल नेहरू ने कांगरेस की तरफ़ से और उसकी से सारा काम सम्भालना शुरू किया. लेकिन छः . भी पूरे से नहीं गुज़रे थे कि हमारे सब से बड़े रहबर मा गांधी हम लोगों के बीच न रहे. उधर अंगरेज़ों के पर मुल्क के जो दो टुकड़े हो गये थे उसके कारन ों लाखों आदमी बे घर बार के हो कर पनाह ढूंढने । और उनको बसाने की ज़िम्मेदारी हकूमत पर आई रह पंडित जवाहर लाल के कंधों पर बोझ बढ़ता चला लेकिन उन्होंने बहुत नेक दिली, बहादुरी, और क़ल मिज़ाजी से आफ़तों का सामना किया और देश न के काम में जी जान से जुट गये. इस काम के लिये ने रास्ता वही पसन्द किया जिस पर वह गुलामी के ने में ही अपनी पसन्द ज़ाहिर कर चुके थे. पंडित रलाल ने जब से होश सम्भाला तब से उनकी यही थी कि हिन्दुस्तान से अंगरेज़ चले जायं लेकिन ज़ियत बनी रहे और उसी के सांचे में सारा मुल्क ाय. इसलिये हकूमत हाथ में आते ही अंगरेज़ियत के र पर उन्होंने हिन्दुस्तान की नई इमारत की बुनियादें ' शुरू कीं. इसके लिये उन्हें अंगरेज़ों की क़ायम की रकारी, आर्थिक, उद्योगी और फ़ौजी मशीनरी या न को बरक़रार रखा इस वजह से देश की आम जनता सरकार के बीच की खाई, गुलामी के ज़माने के बले, ज़ियादा नहीं घट पाई और न जनता को ी की ज्योति ही मिल सकी. इसका नतीजा यह हुआ ांगरेस संस्था एक तरफ़ जनता से दूर हटती चली गई दूसरी तरफ़ वह फंस गई हकूमत की पेचीदा मशीनरी लदल में. उसने जितना ज़ियादा निकलना चाहा उतनी ़यादा धंसती चली गई.

कांगरेस से अलग हो कर पार्टियां बनना

कांगरेस के अन्दर कुछ काम करने वालों को कांगरेस ह ढर्रा पसन्द नहीं आया और वह कांगरेस से अलग ये. उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के नाम से अपनी अलग बना ली. इस पार्टी के अन्दर देश के कुछ बड़े और ऊंचे काम करने वाले शामिल हुए जैसे आचार्य देव, श्री जय प्रकाश नारायन, डाक्टर राम मनोहर या और श्री अशोक मेहता वग़ैरा. जो कांगरेस में रहते श्री समाजवादी विचार रखते थे और कांगरेस

کانگریس پرجا سوشلسٹ بات چیت

آج ساڑھے پانچ برس سے اوپر ہوا جب ہمارے بیچ سے انگریزوں کی راج کاجی اور فوجی طاقت ہٹ کر دیش کی باگ ڈور ہمارے اپنے ہاتھوں میں آئی اور پنڈت جواہر لال نہرو نے کانگریس کی طرف سے اور اسکی مدد سے سارا کام سنبھالنا شروع کیا . لیکن چھ مہینے بھی پورے سے نہیں گذرے تھے کہ ہمارے سب سے بڑے رہبر مہاتما گاندھی ہم لوگوں کے بیچ نہ رہے . ادھر انگریزوں کے ہٹنے پر ملک کے جو دو ٹکڑے ہو گئے تھے اس کے کارن ہزاروں لاکھوں آدمی بے گھر بار کے ہو کر پناہ ڈھونڈھنے نکلے اور اُن کو بسانے کی ذمہداری حکومت پر آئی . اِسطرح پنڈت جواہر لال کے کندھوں پر بوجھ بڑھتا چلا گیا . لیکن اُنہوں نے بہت نیک دلی، بہادری اور مستقل مزاجی سے آفتوں کا سامنا کیا اور دیش نرمان کے کام میں جی جان سے جٹ گئے . اس کام کے لئے اُنہوں نے راستہ وہی پسند کیا جس پر وہ غلامی کے زمانے میں ہی اپنی پسند ظاہر کر چکے تھے . پنڈت جواہر لال نے جب سے ہوش سنبھالا تب سے اُن کی یہی چاہ تھی کہ ہندستان سے انگریز چلے جائیں لیکن انگریزیت بنی رہے اور اسی کے سانچے میں سارا ملک ڈھل جائے . اس لئے حکومت ہاتھ میں آتے ہی انگریزیت کے آدھار پر اُنہوں نے ہندستان کی نئی عمارت کی بنیادیں ڈالنا شروع کیں . اِس کے لئے اُنہیں انگریزوں کی قائم کی ہوئی سرکاری، آرتھک، اُدیوگی اور فوجی مشینری یا سنگٹھن کو بر قرار رکھا . اِس وجہ سے دیش کی عام جنتا اور سرکار کے بیچ کی کھائی، غلامی کے زمانے کے مقابلے، زیادہ نہیں گھٹ پائی اور نہ جنتا کو آزادی کی جیوتی ہی مل سکی . اِسکا نتیجہ یہ ہوا کہ کانگریس سنستھا ایک طرف جنتا سے دور ہٹتی چلی گئی اور دوسری طرف وہ پھنس گئی حکومت کی پیچیدہ مشینری کے دل دل میں . اُس نے جتنا زیادہ نکلنا چاہا اُتنی ہی زیادہ دھنستی چلی گئی .

کانگریس سے الگ ہو کر پارٹیاں بننا .

کانگریس کے اندر کچھ کام کرنے والوں کو کانگریس کا یہ ڈھرا پسند نہیں آیا اور وہ کانگریس سے الگ ہو گئے . اُنہوں نے سوشلسٹ پارٹی کے نام سے اپنی الگ جماعت بنا لی . اِس پارٹی کے اندر دیش کے کچھ بڑے سچے اور اونچے کام کرنے والے شامل ہوئے جیسے آچاریہ نریندر دیو، شری جے پرکاش نارائن، ڈاکٹر رام منوہر لوہیا اور شری اشوک مہتا وغیرہ . جو کانگریس میں رہتے سمے بھی سماج وادی وچار رکھتے تھے اور کانگریس

बिलकुल ऐसा ही होता और मेरे बुजुर्गों के देश हिन्दुस्तान की मोहब्बत इन सीनों में भी रौशन हो जायगी जिनकी चिनगारियां ठंडी पड़ गई हैं.

यह हिन्दुस्तान जो मेरी मोहब्बत का काबा है पिछले एक हजार साल के ऐसे वाक़ेआत (घटनाओं) का रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) नहीं होना चाहिये जिस में नफ़रत और दुश्मनी के चरचे हैं. और न सन 1947 और इसके पहले व बाद के भयानक खूनी शैतानी कारनामे इस हिन्दुस्तान की असल तसवीर हैं. मैं नफ़रत व दुश्मनी के हिन्दुस्तान पर बिलकुल उसी तरह लानत भेजता हूं जिस तरह नफ़रत व दुश्मन के पाकिस्तान पर—मैं मुसलमान बादशाहों और हिन्दू राजों और अंगरेजी दौर के शरीफ़ हिन्दू मुसलिम बाशिन्दों की उस अज़ीमतरीन रिवायात (महान परम्परा) के हिन्दुस्तान को सलाम करता हूं जो पाकिस्तान बन जाने के बाद भी हिन्दू मुसलिम इत्तहाद (एकता) की मिसाली तस्वीर कहला सके.

अपने पैग़ामे मोहब्बत को खतम करते हुए मैं हिन्दुस्तान की अकसरियत (बहुगिनत) और हुक्मरां पारटी से यह इलतिजा (प्रार्थना) करता हूं कि वह अपने दिल से यह ख्याल निकाल दें कि पाकिस्तान के बाशिन्दे हिन्दुस्तान के दुश्मन हैं. जो जज़बात (भाव) इन सतरों में जाहिर किये गए हैं वह तमाम पाकिस्तानी बाशिन्दों के दिली जज़बात हैं. दोनों मुलकों के दरमियान दौरे जनून (पागल पन के जमाने) को अब खतम हो जाना चाहिये. हिन्दुस्तान की सर ज़मीन खुद उसके बाशिन्दों की ही नहीं पाकिस्तानी बाशिन्दों की भी महबूब (प्यारी) है.

उठिये और नफ़रत की फ़िज़ा (वातावरन) ख़तम कर दीजिये, तमाम इख़तिलाफ़ात (मतभेद) बाहमी तदबीर (आपसी तदबीर) से हल कर दीजिये. हिन्दुस्तान पाकिस्तान की दोस्ती को मिस्र व ईरान और रूस व अमरीका की दोस्ती पर तरजीह दीजिये. करोड़ों इनसानों के दिली जज़बात पढ़िये और अपने अमल से दिलों को फ़तह कर लीजिये.

हिन्दुस्तान व पाकिस्तान पायन्दाबाद (चिरंजीवी)
नफ़रत बरबाद मोहब्बत ज़िन्दाबाद

हिन्दुस्तान का प्रेमी
एक सच्चा पाकिस्तानी
—मोहम्मद इसमाईल 'ज़बीह'
—'सियासत' कानपुर से

بالکل ایسا ہی ہوتا اور میرے بزرگوں کے دیش ہندستان کی محبت ان سینوں میں بھی روشن ہو جائے گی جن کی چنگاریاں ٹھنڈی پڑ گئی ہیں ۔

یہ ہندستان جو میری محبت کا خزانہ ہے پچھلے ایک ہزار سال کے ایسے واقعات (گھٹناؤں) کا رد عمل (پرتی کریا) نہیں ہونا چاہئے جس میں نفرت اور دشمنی کے چرچے ہیں، اور نہ سن 1947 اور اس کے پہلے و بعد کے بھیانک خونی و شیطانی کارنامے اس ہندستان کی اصل تصویر ہیں ۔ میں نفرت و دشمنی کے ہندستان پر بالکل اسی طرح لعنت بھیجتا ہوں جس طرح نفرت و دشمنی کے پاکستان پر — میں مسلمان بادشاہوں اور ہندو راجوں اور انگریزی دور کے شریف ہندو مسلم باشندوں کی اس عظیم ترین روایات (مہان پرمپرا) کے ہندستان کو سلام کرتا ہوں جو پاکستان بن جانے کے بعد بھی ہندو مسلم اتحاد (ایکتا) کی مثالی تصویر کہلا سکے ۔

اپنے پیغام محبت کو ختم کرتے ہوئے میں ہندستان کی اکثریت (بہو گنت) اور حکمران پارٹی سے یہ التجا (پرارتھنا) کرتا ہوں کہ وہ اپنے دل سے یہ خیال نکال دیں کہ پاکستان کے باشندے ہندستان کے دشمن ہیں ۔ جو جذبات (بھاؤ) ان سطروں میں ظاہر کئے ہیں وہ تمام پاکستانی باشندوں کے دلی جذبات ہیں ۔ دونوں ملکوں کے درمیان دور جنون (پاگل پن کے زمانے) کو اب ختم ہو جانا چاہئے ۔ ہندستان کی سر زمین خود اس کے باشندوں کی ہی نہیں پاکستانی باشندوں کی بھی محبوب (پیاری) ہے ۔

اٹھئے اور نفرت کی فضا (واتاورن) ختم کر دیجئے، تمام اختلافات (مت بھید) باہمی تدبیر آپسی تدبیر سے حل کر دیجئے ۔ ہندستان پاکستان کی دوستی کو مصر و ایران اور روس و امریکہ کی دوستی پر ترجیح دیجئے ۔ کروڑوں انسانوں کے دلی جذبات پڑھئے اور اپنے عمل سے دلوں کو فتح کر لیجئے ۔

ہندستان و پاکستان پائندہ باد (چرنجیوی)
نفرت برباد محبت زندہ باد

ہندستان کا پریمی
ایک سچا پاکستانی
محمد اسمٰعیل ' ذبیح '
—' سیاست ' کانپور سے

का फ़र्ज़ अदा करना समझता हूं लेकिन मेरी ख़्वाहिश यह क्यों कि हिन्दुस्तान तरक़्क़ी न करे ?

बेशक मैं यह चाहता हूं कि हिन्दुस्तान तास्सुब से पाक ज़ाहिरी या मख़्फ़ी (छिपी) तंगनज़री से इस मुल्क निजात (छुटकारा) मिले. मुसलमान को सियासी राजकाजी), कल्चरी, इक़्तिसादी (माली), तहज़ीबी और मज़हबी हर क़िस्म की आज़ादी हो. वह मुतास्सिब अहले (साम्प्रदायिक के शिकार देश-भाई) की शर (शरारत) बचे और उसके साथ हुक्मरां पारटियों का सलूक ज़िन्दगी के हर पहलू में बराबरी का हो. लेकिन यह क तो मैं पाकिस्तान में बसने वाली हिन्दू अक़लियत अगिनत) के लिये भी चाहता हूं.

मैं दोनों मुल्कों में कोई फ़रक़ नहीं करता. दोनों मुल्कों हक़ीक़ी (वास्तविक) तरक़्क़ी करना चाहिये. मसनूई बनावटी) या प्रोपेगेंन्डे की तरक़्क़ी से हक़ीक़ी (वास्तविक) साफ़ क़ायम नहीं हो सकता इसीलिये मैं हिन्दुस्तान की क़ीक़ी तरक़्क़ी के लिये दुआ करता हूं.

मैं हिन्दुस्तान को तास्सुब से पाक और पाकिस्तान तरफ़ नफ़रत से ख़ाली देखना चाहता हूं. हिन्दुस्तान लत से मामूर (भरपूर) हो जाय. ग़ल्ला और फल और म ज़िन्दगी की ज़रूरतें उसके हर इनसान को वाफ़र तादाद धिक मात्रा) में नसीब हों. उसका उद्योग दुनिया में जाय, उसका इल्म (ज्ञान) और उसका हुनर दुनिया में के और हिन्दुस्तान का हर बाशिन्दा इनसानियत और ख़लाक़ (नैतिकता) में आलारिवायात का (उमदा परम्परा भाने वाला) हामिल हो यह मेरी दिली दुआ है.

मैं चाहता हूँ कि जिस तरह हर ग़ैर मुल्की सय्याह टक) हिन्दुस्तान में सैर करने वक़्त ताज महल, लाल और जामा मसजिद देहली वग़ैरा देख कर हिन्दुस्तान ज़मत (बड़ाई) से मुतास्सिर (प्रभावित) होता है जिस तरह बनारस और मुरादाबाद वग़ैरा की दस्तका- हिन्दुस्तान की हुनर मन्दी का सिक्का ग़ैर मुल्कों क़ायम करती है हालांकि यह सब हिन्दुस्तानी तहज़ीब क़ाफ़त के मज़ाहरे (प्रदर्शन) मुसलमानों से वाबस्ता म्बन्धित) हैं, उसी तरह से मौजूदा हुकूमते हिन्द मेरे पाकिस्तानी या किसी अमरीकन या अंगरेज़ को स्तान की मुसलिम बस्तियों में सैर कराए और यह कि आज़ाद हिन्दुस्तान की अक़लियत नवाज़ी (कम लोगों के साथ बरताव) और इनसाफ़ पसन्दी का रा (प्रदर्शन) इन मुसलमानों में देखो जो कल्चरी (सियासी राजकाजी) इनसाफ़ से बहरावर (फ़ायदा कर) मुतमइन (इतमिनान की) ज़िन्दगी बसर कर . जिस दिन ऐसा हो जायगा पाकिस्तान में भी

کرنا اپنا فرض سمجھتا ہوں لیکن میری خواہش یہ کیوں ہو کہ ہندستان ترقی نہ کرے؟

بے شک میں یہ چاہتا ہوں کہ ہندستان تعصب سے پاک ہو، ظاہری یا مخفی (چھپی) تنگ نظری سے اس ملک کو نجات (چھٹکارا) ہے ۔ مسلمان کو سیاسی (راجکاجی) کلچری اقتصادی (مالی) تہذیبی مذہبی ہر قسم کی آزادی ہو ۔ وہ متعصب اہل وطن سمپردائک کے شکار دیش بھائی کی شر (شرارت) سے بچے اور اس کے ساتھ حکمران پارٹیوں کا سلوک زندگی کے ہر پہلو میں برابری کا ہو۔ لیکن یہ سلوک تو میں پاکستان میں بسنے والی ہندو اقلیت (کم گنتی) کے لئے بھی چاہتا ہوں ۔

میں دونوں ملکوں میں کوئی فرق نہیں کرتا—دونوں ملکوں کا حقیقی (واستوک) ترقی کرنا چاہئے مصنوعی دکھاوٹی یا پروپیگنڈے کی ترقی سے حقیقی (واستوک) انصاف قائم نہیں ہو سکتا اس لئے میں ہندستان کی حقیقی ترقی کے لئے دعا کرتا ہوں ۔

میں ہندستان کو تعصب سے پاک اور پاکستان کی طرف نفرت سے خالی دیکھنا چاہتا ہوں ۔ ہندستان دولت سے معمور (بھرپور) ہو جائے۔ غلہ اور پھل اور تمام زندگی کی ضرورتیں ہر انسان کو وافر تعداد (ادھک ماترا) میں نصیب ہوں اسکا ادیوگ دنیا میں پھیل جائے، اسکا علم (گیان) اور اسکا ہنر دنیا میں چمکے اور ہندستان کا ہر باشندہ انسانیت اور اخلاق (نیتکتا) میں اعلیٰ روایات کا (عمدہ پرمپرا کو نبھانے والا) کا حامل ہو یہ میری دلی دعا ہے ۔

میں چاہتا ہوں کہ جس طرح ہر غیر ملکی سیاح (پالرک) ہندستان میں سیر کرتے وقت تاج محل، لال قلعہ اور جامع مسجد دہلی وغیرہ دیکھ کر ہندستان کی عظمت (بڑائی) سے متاثر (پربھاوت) ہوتا ہے اور جس طرح بنارس اور مرادآباد وغیرہ کی دستکاریاں ہندستان کی ہنر مندی کا سکہ غیر ملکوں پر قائم کرتی ہیں حالانکہ یہ سب ہندستانی تہذیب و ثقافت کے مظاہرے (پردرشن) مسلمانوں سے وابستہ (سمبندھت) ہیں اسی طرح موجودہ حکومت ہند میرے جیسے پاکستانی یا کسی امریکی یا انگریز کو ہندستان کی مسلم بستیوں میں سیر کرائے اور یہ کہے کہ آزاد ہندستان کی اقلیت نوازی کم (گنتی لوگوں کے ساتھ برتاؤ) اور انصاف پسندی کا مظاہرہ (پردرشن) ان مسلمانوں میں دیکھو جو معاشی (کلچری) اور سیاسی (راجکاجی) انصاف سے بہرہ ور (فائدہ اٹھا کر) (مطمئن (اطمینان کی) زندگی بسر کر رہے ہیں۔ جس دن ایسا ہوجائیگا پاکستان میں بھی

दोनों मुल्क दोस्त न बन सकें, भाई न बन सकें तो इस उसूल पर एक दूसरे से सुलह कर लें कि अगर ये उनके दरमियान तलाक़ हो गई है मगर उनकी मुश्तरका यादगार (मिली जुली) निशानी एक ख़ूबसूरत बच्चा है जो मुश्तरका (मिली जुली) रिवायात (परम्परा) की शक्ल में मौजूद है. दोनों के ख़ून और जोश व मोहब्बत का यह संगम पाकिस्तान वालों को हिन्दुस्तान से मोहब्बत करने और हिन्दुस्तान वालों को पाकिस्तान से मोहब्बत करने पर मजबूर कर सकता है.

आज पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो अलग अलग आज़ाद मुल्क बन गए हैं और उनके दरमियान आमद व रफ़्त (आने जाने) की पाबन्दियां हैं और उनके शदीद इख़्तिलाफ़ात (भयानक मतभेद) को सारी दुनिया में रुसवाकुन (बदनाम करने वाले) शोहरत हासिल हो गई है. मगर दुनिया में कोई दो मुल्क ऐसे हैं जैसे यह हिन्द व पाक हैं. क्या हिन्दुस्तान रूस, अमरीका या चीन से इस क़दर क़रीब हो सकता है जितना वह पाकिस्तान से है. क्या पाकिस्तान, मिस्र व ईरान व हिजाज़ से इस क़दर क़रीब है जिस क़दर वह हिन्दुस्तान से बिहार, बंगाल व आसाम के के लाखों बाशिन्दे मशरिक़ी पाकिस्तान में बाहम (आपस) इस तरह मरबूत (मिले जुले) हैं कि उनकी रिश्तेदारियां क़ायम हैं. तिजारत और सनअत (उद्योग) का मदार एक दूसरे पर है. पंजाब, यू. पी., सी. पी., बम्बई और दक्खिन के लाखों बाशिन्दे पच्छिमी पाकिस्तान में चले गए हैं. इस तरह कि उनके लाखों रिश्तेदार मुस्तक़िल (हमेशा लिये) हिन्दुस्तान में ही रहते हैं. मेरा अनदाज़ा है कि हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के एक करोड़ इनसान इस तरह हैं कि उनकी रिश्तेदारियां दोनों तरफ़ हैं. और इसी तरह इतने ही लोग ऐसे ही हैं जो अपने दोस्त और बेहतरीन पड़ोसी दोनों मुल्कों में रखते हैं.

अब यह नामुमकिन है कि यह सब करोड़ों लोग फिर मुन्तक़िल (एक जगह से दूसरी जगह जाना) हो जायं. उनको हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में रहना होगा. और उनके दिल एक दूसरे की याद में तड़पते रहेंगे और उनमें हर सहीहुलख़याल (उचित विचार वाला) शख़्स यही चाहेगा कि उसके रिश्तेदार दोस्त जिस मुल्क में हैं वह अमन (शान्ति) से रहें और तरक़्क़ी करें. कौन बदक़िस्मत चाहेगा कि मैं अगर पाकिस्तान में हूं तो यह ख़्वाहिश (इच्छा) करूं कि हिन्दुस्तान बरबाद हो जाय. क्या मेरी ख़्वाहिश यह न होगी कि मेरा साबक़ा (पुराना) वतन मेरे अज़ीज़ों और दोस्तों और असलाफ़ (पूर्वजों) का वतन तरक़्क़ी करे, फूले फले और क़ामयाब हो.

मैं सच्चे दिल से पाकिस्तान की सलामती, आज़ादी, फ़ारिग़ुलबाली (सुख सम्पन्न) और तरक़्क़ी की कोशिश

دونوں ملک دوست نہ بن سکیں، بھائی نہ بن سکیں تو اس اصول پر ایک دوسرے سے صلح کر لیں کہ اگرچہ ان کے درمیان طلاق ہو گئی ہے، مگر ان کی مشترکہ یادگار (ملی جلی نشانی) ایک خوبصورت بچہ ہے جو مشترکہ (ملی جلی) روایات پرمپرا کی شکل میں موجود ہے ۔ دونوں کے خون اور جوش و محبت کا یہ سنگم پاکستان والوں کو ہندوستان سے محبت کرنے اور ہندوستان والوں کو پاکستان سے محبت کرنے پر مجبور کر سکتا ہے ۔

آج پاکستان اور ہندوستان دو الگ الگ آزاد ملک بن گئے ہیں اور ان کے درمیان آمدورفت (آنے جانے) کی پابندیاں ہیں اور ان کے شدید اختلافات (بھیانک مت بھید) کو ساری دنیا میں رسوا کن (بدنام کرنے والی) شہرت حاصل ہو گئی ہے ۔ مگر کیا دنیا میں کوئی دو ملک ایسے ہیں جیسے یہ ہندو پاک ہیں۔ کیا ہندوستان روس، امریکہ یا چین سے اس قدر قریب ہو سکتا ہے جتنا وہ پاکستان سے ہے ۔ کیا پاکستان، مصر و ایران و حجاز سے اس قدر قریب ہے جس قدر وہ ہندوستان سے۔ بہار و بنگال و آسام کے لاکھوں باشندے مشرقی پاکستان میں باہم (آپس) اس طرح مربوط (ملے جلے) ہیں کہ ان کی رشتہ داریاں قائم ہیں ۔ تجارت اور صنعت ادیوگ کا مدار ایک دوسرے پر ہے ۔ پنجاب، یوپی، بمبئی اور دکن کے لاکھوں باشندے پچھمی پاکستان میں چلے گئے ہیں ۔ اسطرح کہ ان لاکھوں رشتہ دار مستقلاً ہمیشہ کے لئے ہندوستان میں ہی رہتے ہیں۔ میرا اندازہ ہے کہ ہندوستان و پاکستان کے ایک کروڑ انسان اسطرح ہیں کہ ان کی رشتہ داریاں دونوں طرف ہیں ۔ اور اسطرح اتنے ہی لوگ ایسے ہی ہیں جو اپنے دوست اور بہترین پڑوسی دونوں ملکوں میں رکھتے ہیں ۔

اب یہ ناممکن ہے کہ یہ سب کروڑوں لوگ پھر منتقل (ایک جگہ سے دوسری جگہ جانا) ہو جائیں ۔ ان کو ہندوستان و پاکستان میں رہنا ہوگا۔ اور ان کے دل ایک دوسرے کی یاد میں تڑپتے رہیں گے ان میں ہر صحیح الخیال (اچھے وچار والا) ۔ یہی چاہے گا کہ اسکے رشتہ دار دوست جس ملک میں ہیں وہ امن و (شانتی) سے رہیں اور ترقی کریں ۔ کون بدقسمت یہ چاہے گا کہ میں اگر پاکستان میں ہوں تو یہ خواہش (اچھا) کروں کہ ہندوستان برباد ہو جائے ۔ کیا میری خواہش یہ نہ ہوگی کہ میرا سابقہ (پرانا) وطن میرے عزیزوں اور دوستوں اور اسلاف (پوروجوں) وطن ترقی کی کرے پھولے پھلے اور کامیاب ہو۔

میں سچے دل سے پاکستان کی سلامتی، آزادی، فارغ البالی (سکھ سمپن) اور ترقی کی کوشش

तंग नज़र सियासतदां (संकीर्ण राजनीतिज्ञ) कहते हैं
मुल्क तक़सीम हो गया. इसलिये हिन्दुस्तान की तहज़ीब
ग और पाकिस्तान की अलग है. मैं कहता हूं कि यह
ाके वाक़्या (वास्तविकता के विरुद्ध) है. तुम यक़ीन
कि पाकिस्तान में हिन्दुस्तानी तहज़ीब के काफ़ी असर
बहुत सी रसमें, बहुत से पकवान, बहुत सी मिठाइयां,
चाल के कई अलफ़ाज़ (शब्द) और एक हद तक
बिरादरी की हदें यह सब पाकिस्तान में हिन्दुस्तान के
असरों का नतीजा हैं. इसी तरह आज के हिन्दुस्तान
ज़ार साला इस्लामी तहज़ीब इस तरह समा गई है
कोई हिन्दू अपने आपको उससे अलग नहीं कर सकता.
टोपी, यह जूता, यह शेरवानी, यह कुरता, यह पाय-
ा, यह चमचा, प्लेटें और दस्तरख़ान, यह मुग़लई
, यह औरतों के हक़ों (अधिकारों) के क़वानीन
नून), यह मियां तानसेन की मौसीक़ी (संगीत) यह
र ख़ुसरो का सितार और मधुभरी मीठी बोली, यह
म ख़ानख़ाना और कबीर की शायरी, यह तौहीद और
श्वर के एकता की बातें, यह समन्दर पार का सफ़र और
से ज़ियादा यह कि हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान और
अरबी नाम हिन्दी और भारत वर्ष का नाम हिन्द
हिन्दुस्तान सिर्फ़ तुम्हारा ही ज़ाती (निजी) सरमाया
जी) है या उनकी तख़लीक़ (निर्मान) में मेरा और
बुज़ुर्गों का भी कुछ हिस्सा है ?

याद रखो कि अगर पाकिस्तान ख़ालिस मुसलिम
है और हिन्दुस्तान ख़ालिस हिन्दू देश, तब
हिन्दुस्तान नहीं भूल सकता कि आज के हिन्दुस्तान
क पाकिस्तानी मुसलमान के बाप दादा के हज़ारों
नक़ूश (चिन्ह) ज़िन्दा हैं जिनको न तुम
सकते हो और न मैं. और अगर कभी तुम ने यह
की कि उन तहज़ीबी असरों को मुसलमानों का
कर अपने से अलग करना चाहा तो तुम ऐसे बदल
गे कि पहचाने भी न जा सकोगे. और तुम्हें कोई
स्तान का बाशिन्दा (वासी) नहीं, बल्कि मोहन
ड़ो, हड़प्पा और इसी तरह के पुराने तहज़ीबी दौर
) का इनसान समझेगा. आज अगर नफ़रत की तुन्द
) हवाओं से हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के बाशिन्दों
दिमाग़ पर सकून नहीं है तो यह मायूसी (निराशा)
बात नहीं. हक़ीक़त यह है कि यह तक़सीम दो भाइयों
जायदाद की तक़सीम है. लेकिन अगर कोई उसको भी
मानता है तो न माने. इतना तो हर एक को तसलीम
कार) करना ही पड़ेगा कि दोनों मुल्कों में कलचरी
तारीख़ी रिवायात (परम्परा) का मुशतरक सरमाया
ली जुली पूंजी) अब भी मौजूद है. और अगर यह

تنگ نظر سیاست داں (سنکیرن راجنیتگ) کہتے
ہیں کہ ملک تقسیم ہو گیا . اس لئے ہندستان کی
تہذیب الگ اور پاکستان کی الگ ہے . میں کہتا ہوں
کہ یہ خلاف واقعہ واستوکتا کے وِرودھ ہے . تم یقین کرو کہ
پاکستان میں ہندستانی تہذیب کے کافی اثر ہیں. بہت
سی رسمیں، بہت سے پکوان بہت سی مٹھائیاں، بول
چال کے کئی الفاظ (شبد) اور ایک حد تک ذات برادری
کی حدیں یہ سب پاکستان میں ہندستان کے ہندو اثروں
کا نتیجہ ہیں . اسی طرح آج کے ہندستان میں ہزار
سالہ اسلامی تہذیب اسطرح سما گئی ہے کہ کوئی ہندو
بھی آپ کو اس سے الگ نہیں کر سکتا . یہ ٹوپی یہ جوتا،
یہ شیروانی یہ کرتہ پائجامہ، یہ چمچہ، پلیٹیں اور دسترخوان،
یہ مغلئی کھانے، یہ عورتوں کے حقوں (ادھیکاروں)
کے قوانین (قانون)، یہ میاں تان سین کی موسیقی
(سنگیت) یہ امیر خسرو کا ستار اور مدھ بھری میٹھی
بولی، یہ رحیم خان خاناں اور کبیر کی شاعری، یہ توحید
اور پرمیشور کے ایکتا کی باتیں، یہ سمندر پار کا سفر اور
سب سے زیادہ یہ کہ ہندستان کی قومی زبان اور اسکا عربی
نام ہندی اور بھارت ورش کا نام ہند اور ہندستان صرف
تمہارا ہی ذاتی (نجی) سرمایہ (پونجی) ہے یا اس کی
تخلیق (نرمان) میں میرا اور میرے بزرگوں کا بھی کچھ
حصہ ہے ؟

یاد رکھو کہ اگر پاکستان خالص مسلم وطن ہے اور
ہندستان خالص ہندو دیش، تب بھی میں ہندستان
کو نہیں بھول سکتا . کہ آج کے ہندستان میں ہر ایک
پاکستانی مسلمان کے باپ دادا کے ہزاروں ایسے نقوش
(چنہہ) زندہ ہیں جن کو نہ تم مٹا سکتے ہو اور نہ میں.
اور اگر کبھی تم نے یہ غلطی کی کہ ان تہذیبی اثروں کو
مسلمانوں کا سمجھ کر اپنے سے الگ کرنا چاہا تو تم ایسے
بدل جاؤ گے کہ پہچانے بھی نہ جا سکو گے. اور تمہیں کوئی
ہندستان کا باشندہ (واسی) نہیں، بلکہ موہن جودڑو،
ہڑپہ اور اسی طرح کے پرانے تہذیبی دور (یگ) کا انسان
سمجھے گا . آج اگر نفرت تند (تیز) ہواؤں سے ہندستان
و پاکستان کے باشندوں کا دماغ پر سکون نہیں ہے تو یہ
مایوسی (نراشا) کی بات نہیں . حقیقت یہ ہے کہ یہ
تقسیم دو بھائیوں کی جائداد کی تقسیم ہے . لیکن اگر
کوئی اس کو بھی نہیں مانتا ہے تو نہ مانے . اتنا تو ہر
ایک کو تسلیم (سویکار) کرنا ہی پڑے گا کہ دونوں ملکوں
میں کلچری اور تاریخی روایات (پرمپرا) کا مشترک
سرمایہ (ملی جلی پونجی) اب بھی موجود ہے. اور اگر یہ

रूहानी दरबार, निज़ाम उद्दीन औलिया, अमीर ख़ुसरो, शाह चिराग़ और बख़्तियार काकी के मज़ार, गुलबरगा शरीफ़, हज़रत सलीम चिश्ती, सालार मसूद ग़ाज़ी, शाह मदार और वह तमाम हज़ारों औलिया जो हिन्दुस्तान के हर हिस्से (भाग) में चिराग़े रूहानियत (आध्यात्मिक दीप) जलाए हुए हैं. मैं उनको कैसे भूल जाऊं. यह सब मेरे ही नहीं हर पाकिस्तानी के रूहानी इमाम (अध्यात्मिक गुरु) हैं और अपने मरकज़ (केन्द्र) से कोई भी हटना कभी पसन्द नहीं कर सकता. ज़रूरते वक़्त ने बेशक हिन्दुस्तान को दो हिस्सों में बांट दिया है. लेकिन जिस तरह नीला आसमान, चौड़ा समन्दर, ज़मीन, चांद, सूरज, सितारे, बादल, हवाएं और कोई भी क़ुदरत की देन तक़सीम नहीं हो सकी उसी तरह हिन्दुस्तान की सर ज़मीन पर आराम फ़रमाने वाले बुज़ुर्गाने दीन (धार्मिक बुज़ुर्ग) भी मेरे लिये ना क़ाबिले तक़सीम हैं (तक़सीम नहीं हो सकते) यह तुम्हारे भी हैं और मेरे भी और मैं हिन्दुस्तान को अक़ीदत (भक्ति) व मोहब्बत से हमेशा दुआएं देता रहूंगा क्योंकि इस सर ज़मीन पर यह रूहानी (अध्यात्मिक) चांद व सूरज चमक रहे हैं.

कोई लाख कहे मैं यह नहीं मान सकता कि हिन्दुस्तान के कलचरी और तारीख़ी यादगारों में मुझ पाकिस्तानी का कुछ भी हिस्सा नहीं है. इनसाफ़ से कह दो कि क्या ताजमहल सिर्फ़ तुम्हारा है. यह लाल क़िला, यह ख़ूबसूरत जामा मस्जिद, यह हुमायूं का मक़बरा, यह क़ुतुब मीनार, यह सिकन्द्रा, यह फ़तेहपूर सीकरी सिर्फ़ तुम्हारे हैं मेरे नहीं. यह दक्खिन की सर ज़मीन पर हज़ारों तारीख़ी इमारतें, यह गुजरात, मालवा की यादगारें, यह यू. पी, बिहार, बंगाल और रियासतों में फैले हुए कलचरी अजायबात सब कुछ तुम्हारे हैं मेरे नहीं ?

पिछले एक हज़ार साल में पठानों, ख़िलजियों, लोधियों, मुग़लों और दूसरे मुसलिम हुक्मरानों समराटों ने हिन्दुस्तान की सब क़ौमों के साथ मिल जुल कर और हिन्दुस्तानी बन कर जो काम किये हैं और जिस तरह हिन्दुस्तान से कुछ सीख कर और उसको कुछ सिखा कर ज़बान ख़याल रस्म रिवाज और ज़िन्दगी के हर शोबे (भाग) में तख़लीक़ात (निर्मान) की हैं और जिसके असरात (प्रभाव) आज के हिन्दुस्तान में समाए हुए हैं क्या उन सबके तुम ही तन्हा (अकेले) वारिस हो, मैं नहीं ? और मुझे कोई हक़ नहीं कि यह कह सकूं कि इस्लामी तारीख़ के इस अज़ीम (महान) हज़ार साला दौर (युग) के तमद्दुनी (कलचरी) व तारीख़ी असरात (प्रभाव) में मेरा भी इसलिये हिस्सा है कि मैं सन 1947 से पहले ख़ुद भी और मेरे बाप दादा भी इस तहज़ीबी तामीर (निर्मान) में शरीक थे ?

کا روحانی دربار، نظام الدین اولیا، امیر خسرو، شاہ چراغ اور بختیار کاکی کے مزار، گلبرگہ شریف، حضرت سلیم چشتی، سالار مسعود غازی، شاہ مدار اور وہ تمام ہزاروں اولیا جو ہندستان کے ہر خطے (بھاگ) میں چراغ روحانیت (آدھیاتمک دیپ) جلائے ہوئے ہیں۔ میں ان کو کیسے بھول جاؤں۔ یہ سب میرے ہی نہیں ہر پاکستانی کے روحانی امام (آدھیاتمک گرو) ہیں اور اپنے مرکز (کیندر) سے کوئی بھی ہٹنا کبھی پسند نہیں کرسکتا۔ ضرورت وقت نے بے شک ہندستان کو دو حصوں میں بانٹ دیا ہے۔ لیکن جسطرح نیلا آسمان، چوڑا سمندر، زمین، چاند، سورج، ستارے، بادل، ہوائیں اور کوئی بھی قدرت کی دین تقسیم نہیں ہو سکی اسی طرح ہندستان کی سرزمین پر آرام فرمانے بزرگانے دین (دھارمک بزرگ) بھی میرے لئے ناقابل تقسیم (تقسیم نہیں ہوسکتے) ہیں۔ یہ تمہارے بھی ہیں اور میرے بھی اور میں ہندستان کو عقیدت (بھکتی) و محبت سے ہمیشہ دعائیں دیتا رہوں گا۔ کیونکہ اس سرزمین پر یہ روحانی (آدھیاتمک) چاند و سورج چمک رہے ہیں۔

کوئی لاکھ کہے میں یہ نہیں مان سکتا کہ ہندستان کے کلچری اور تاریخی یادگاروں میں مجھ پاکستانی کا کچھ بھی حصہ نہیں ہے۔ انصاف سے کہدو کہ کیا تاج محل صرف تمہارا ہے۔ یہ لال قلعہ، یہ خوبصورت جامع مسجد، یہ ہمایوں کا مقبرہ، یہ قطب مینار، یہ سکندرہ، یہ فتحپور سیکری۔ صرف تمہارے ہیں میرے نہیں۔ یہ دکن کی سرزمین پر ہزاروں تاریخی عمارتیں، یہ گجرات، مالوہ کی یادگاریں، یہ یو پی، بہار، بنگال اور ریاستوں میں پھیلے ہوئے کلچری عجائبات سب کچھ تمہارے ہیں میرے نہیں ؟

پچھلے ایک ہزار سال میں پٹھانوں، خلجیوں، لودھیوں، مغلوں اور دوسرے مسلم حکمرانوں (سمراٹوں) نے ہندستان کی سب قوموں کے ساتھ مل جل کر اور ہندستانی بنکر جو کام کئے ہیں اور جس طرح ہندستان سے کچھ سیکھ کر اور اس کو کچھ سکھاکر زبان، خیال، رسم و رواج اور زندگی کے ہر شعبے (بھاگ) میں تخلیقات (نرمان) کی ہیں اور جس کے اثرات (پربھاؤ) آج کے ہندستان میں سمائے ہوئے ہیں کیا ان سب کے تم ہی تنہا (اکیلے) وارث ہو، میں نہیں ؟ اور مجھے کوئی حق نہیں کہ یہ کہہ سکوں کہ اسلامی تاریخ کے اس عظیم (مہان) ہزار سالہ دور (یگ) کے تمدنی (کلچری) و تاریخی اثرات (پربھاؤ) میں میرا بھی حصہ ہے کہ میں سن 1947 سے پہلے تک خود بھی اور میرے باپ دادا بھی اس تہذیبی تعمیر (نرمان) میں شریک تھے ؟

झांकता रहूंगा. अगर यह दीवानगी है तो मैं मजबूर हूं और अगर यह फ़ितरते इनसानी (मानुषिक प्रकृति) है तो दुनिया से कह दो कि इनसानी फ़ितरत पर बंदिश आयद करना (लगाना) अच्छा काम नहीं. और मैं उस हिन्दुस्तान को कैसे भूल जाऊं कि यह सिर्फ़ मेरा ही नहीं मेरे बाप दादा और मेरी पुश्तों और मेरे अज़ीज़ों का वतन भी है. अगर यह नामवर (मशहूर) थे तो उनकी अज़मतें (महानता) और उनके कारनामे उस वतन के पेशानी पर कहकशां (सितारे) बन गए हैं. और अगर यह गुमनाम थे तो उनकी मिट्टी अबदल आबाद (हमेशा के लिये) तक जुज़्व ख़ाक (ज़मीन का हिस्सा) हिन्दुस्तान हो चुकी है, यह कारनामे और यह ख़ाक मेरी मीरास (विरासत) है. कोई मुझसे ख़ाक छीने मैं उसकी याद तो अपने दिल से मिटा नहीं सकता. यह कसक बन कर मेरी रूह में समा गई है. और मैं इस हिन्दुस्तान को कैसे भूलूं जहां मुझे अच्छे पड़ोसी, अच्छे दोस्त और अच्छे हम वतन भी इस कसरत (ज़ियादती) से मिले जो नाक़ाबिले फ़रामोश हैं (भूले नहीं जा सकते) और जिनकी शराफ़तों और गहरी इनसानियत ने मज़हब के फ़रक़ के बग़ैर एक सच्चे दोस्त की ज़िम्मेदारियों को इस ख़ूबी (अच्छाई) से निभाया कि अगर मैं चाहूं भी तो अपने दिल से उनके गहरे नक़ूश (चिन्ह) नहीं मेट सकता.

मुझे इक़रार है कि हिन्दुस्तान में नफ़रत और क़त्ल व ख़ून की आंधियों के दरमियान भी मुझे और मेरी तरह सैकड़ों पाकिस्तानियों को हिन्दुस्तान के देस में ऐसी इनसानियत को रोशन कर रखने वाली शमाएं जलती मिली हैं जो इनसानियत की रोशनी को गुल (बुझने) से बचाती रही हैं और जिन्होंने हम वतन इनसान होने के फ़र्ज़ की तक्मील (पूर्ति) की. उनकी याद भूल जाना भी मेरे बस से बाहर है.

और मैं जो एक मुसलमान हूं इस हिन्दुस्तान को कैसे भुला दूं जो सिर्फ़ इसलामी नुक़्तए नज़र (दृष्टीकोन) से ही अज़ीमुश्शान (महान) यादगारों का मजमुआ (संग्रह) है. मैं हिन्दुस्तान में जहां भी जाऊं हर तरफ़ मुझे इसलाम की एक हज़ार साला अज़मत (बड़ाई) की छाप नज़र आती है. कोई शहर और कोई क़स्बा भी तो ऐसा नहीं जहां मुसलिम तहज़ीब सर उभारे न खड़ी हो और तारीख़ी इमारतों की शक्ल में हिन्दुस्तानी कलचरी ख़ज़ाने का जुज़्वे आज़म (बड़ा हिस्सा) न बन गई हो.

तुम कहते हो कि मैं पाकिस्तानी हूं और हिन्दुस्तान में अब मेरा कुछ भी नहीं है. मेरी रूह इस बात को मानने से इनकार करती है. हिन्दुस्तान में मेरा इतना कुछ है जितना यहां के बसने वाले हिन्दुओं, बुद्धों, जैनियों और सिखों का है. अजमेर का आस्ताना ग़रीब नवाज़, कलियर

جھانکتا رہتا رہوں گا ۔ اگر یہ دیوانگی ہے تو میں مجبور ہوں اور اگر یہ فطرت انسانی (مانوشک پرورتی) ہے تو دنیا سے کہدو کہ انسانی فطرت پر بندش عائد کرنا (لگانا) اچھا کام نہیں ۔ اور میں اس ہندستان کو کیسے بھول جاؤں کہ یہ صرف میرا ہی نہیں میرے باپ دادا اور میری پشتوں اور میرے عزیزوں کا وطن بھی ہے ۔ اگر یہ نامور (مشہور) تھے تو انکی عظمتیں (مہانتا) اور ان کے کارنامے اس وطن کی پیشانی پر آسمان (ستارے) بن گئے ہیں ۔ اور اگر یہ گمنام تھے تو انکی مٹی ابدالآباد (ہمیشہ کے لئے) تک جزو خاک (زمین کا حصہ) ہندستانی ہو چکی ہے ' یہ کارنامے اور یہ خاک میری میراث (وراثت) ہے ۔ کوئی مجھ سے اسے چھینے میں اسکی یاد تو اپنے دل سے مٹا نہیں سکتا ۔ یہ کسک بنکر میری روح میں سما گئی ہے ۔ اور میں اس ہندستان کو کیسے بھولوں جہاں مجھے اچھے پڑوسی' اچھے دوست اور اچھے ہم وطن بھی اس کثرت (زیادتی) سے ملے جو ناقابل فراموش ہیں ۔ (بھولے نہیں جاسکتے) اور جنکی شرافتوں اور گہری انسانیت نے مذہب کے فرق کے بغیر ایک سچے دوست کی ذمہ داریوں کو اس خوبی (اچھائی) سے نبھایا کہ اگر میں چاہوں بھی تو اپنے دل سے ان کے گہرے نقوش (چنہ) نہیں مٹا سکتا ۔

مجھے اقرار ہے کہ ہندستان میں نفرت اور قتل و خون کی آندھیوں کے درمیان بھی مجھے اور میری طرح سینکڑوں پاکستانیوں کو ہندستان کے دیس میں ایسی انسانیت کو روشن کر رکھنے والی شمعیں جلتی ملی ہیں جو انسانیت کی روشنی کو گل (بجھنے) سے بچاتی رہیں اور جنہوں نے ہم وطن انسان ہونے کے فرض کی تکمیل (پورتی) کی ۔ انکی یاد بھول جانا بھی میرے بس سے باہر ہے ۔

اور میں جو ایک مسلمان ہوں اس ہندستان کو کیسے بھلا دوں جو صرف اسلامی نقطہ نظر (درشٹی کون) سے ہی عظیم الشان (مہان) یادگاروں کا مجموعہ (سنگرہ) ہے ۔ میں ہندستان میں جہاں بھی جاؤں ہر طرف مجھے اسلام کی ایک ہزار سالہ عظمت (بڑائی) کی چھاپ نظر آتی ہے ۔ کوئی شہر اور کوئی قصبہ بھی تو ایسا نہیں جہاں مسلم تہذیب سر ابھارے نہ کھڑی ہو اور تاریخی عمارتوں کی شکل میں ہندستانی کلچری خزانے کا جزواعظم (بڑا حصہ) نہ بن گئی ہو ۔

تم کہتے ہو کہ میں پاکستانی ہوں اور ہندستان میں اب میرا کچھ نہیں ہے ۔ میری روح اس بات کو ماننے سے انکار کرتی ہے ۔ ہندستان میں میرا اتنا کچھ ہے ۔ جتنا یہاں کے بسنے والے ہندوؤں' جینیوں اور سکھوں کا ہے ۔ اجمیر کا آستانہ غریب نواز' کلیر

[illegible] और खुद अपना और अपनी नस्लों के दरमियान मोहब्बत की विरासत छोड़ जाना चाहिये. नफ़रत और दुश्मनी दो भाइयों की आदत नहीं है. ग़ैर क़ुदरती काम और शैतानी हरकत है.

कहते हैं चूंकि पाकिस्तान बन गया है इसलिये हिन्दुस्तान से हर उस मुसलमान का ताल्लुक़ ख़तम है जो वहां से चला गया. मैं साफ़ कहता हूं कि यह बात ग़लत है. जायदाद के बटवारे के बाद कौन से दो भाई ख़ून और रिश्ते के इश्तिराक (मेल) को छोड़ देते हैं. और अगर छोड़ना भी चाहते हैं. तो उनसे दिल का चैन और उनकी ज़िन्दगी का सकून (इतमिनान) रुख़सत हो जाता है. मैं पाकिस्तानी हूं और अब ताज़िन्दगी पाकिस्तानी रहूंगा. मेरी इज़्ज़त, शोहरत और रहन सहन और मेरी औलाद का मुस्तक़बिल (भविष्य) सब कुछ पाकिस्तान से वाबस्ता (संबन्धित) है और मुझे किसी दुनियावी (संसारिक) फ़ायदे की हिन्दुस्तान से तवक़्क़ो (उम्मीद) नहीं. लेकिन फिर मैं भी हिन्दुस्तान को कैसे भूल जाऊं ?

दोनों मुल्कों के क़ानून साज़ों (क़ानून बनाने वालों) ने अगरचे यह बंदिश लगा दी है कि तरके वतन (वतन छोड़ने वाले) करने वाले इस वतन के बाशिन्दे (वासी) नहीं रहे जिस से वह तरके वतन कर आए हैं लेकिन जब तक दोनों मुल्कों में "तारकीने वतन" (शरनार्थी) की इस्तलाह (परिभाषा) मौजूद है मैं पाकिस्तानी हो कर भी हिन्दुस्तानी वतन के साथ मनसूब (संबन्धित) रहूंगा. और तमाम क़ानून साज़ (क़ानून बनाने वाले) अपनी बेचारगी पर मातम करते रहेंगे कि वह तारकीने वतन (वतन छोड़ने वालों) को बेवतन कहने पर मजबूर हो गए.

मैं पाकिस्तानी उस हिन्दुस्तान को कैसे भूल जाऊं जो उसी मुल्क के एक शहर में पैदा हुआ और जिसकी गलियों में मेरे रात दिन की पैमाइशें (नाप) अब भी क़ायम हैं. मैं पाकिस्तान से आ कर जब कभी अपने पैदायशी वतन, अपने घर और अपने मोहल्ले में चक्कर लगाता हूं तो दरो दीवार की ईंट ईंट और गली कूचों का पेच व ख़म (घुमाव फिराव) मेरे बचपन की तसवीर ले कर पुकारने लगती हैं. और क़दम क़दम पर सदा (आवाज़) आती है कि ऐ मुसाफ़िर ! तेरी उम्र का ज़ायद (अधिक) हिस्सा हमारे साये में ही बसर हुआ और तेरी ज़िन्दगी की तामीर (बनाने) में हमारा दख़ल है. मैं इन गलियों में बीती हुई बचपन की ज़िन्दगी को कैसे भूल जाऊं. यह गलियां ज़रूर मेरा वतन हैं चाहे कोई मेरे और इनके दरमियान क़ानून और नफ़रत की कितनी ही ऊंची दीवार हायल (खड़ी) कर दे. जब तक मेरा बस चलेगा मैं इन ऊंची दीवारों के ऊपर से अपने बचपन के घर को

ئے اور خود اپنی اور اپنی نسلوں کے درمیان محبت کی وراثت چھوڑ جانا چاہئے . نفرت اور دشمنی بھائیوں کی عادت نہیں ہے. غیر قدرتی کام اور شیطانی حرکت ہے .

کہتے ہیں کہ چونکہ پاکستان بن گیا ہے اس لئے ہندوستان سے ہر اس مسلمان کا تعلق ختم ہے جو یہاں سے چلا گیا . میں صاف کہتا ہوں کہ یہ بات غلط ہے . جائداد کے بٹوارے کے بعد کون سے دو بھائی خون اور رشتے کے اشتراک (میل) کو چھوڑ دیتے ہیں . اور اگر چھوڑنا بھی چاہتے ہیں تو ان کے دل کا چین اور انکی زندگی کا سکون (اطمینان) رخصت ہو جاتا ہے . میں پاکستانی ہوں اور اب تا زندگی پاکستانی رہوں گا. میری عزت، شہرت اور رہن سہن اور میری اولاد کا مستقبل (بھوشیہ) سب کچھ پاکستان سے وابستہ (سمبندھت) اور مجھے کسی دنیاوی (سنسارک) فائدے کی ہندوستان سے توقع (امید) نہیں. لیکن پھر بھی میں ہندوستان کو کیسے بھول جاؤں ؟

دونوں ملکوں کے قانون سازوں (قانون بنانے والوں) نے اگرچہ یہ بندش لگادی ہے کہ ترک وطن (وطن چھوڑنے والے) کرنے والے اس وطن کے باشندے (واسی) نہیں رہے جس سے وہ ترک وطن کر آئے ہیں لیکن جب تک دونوں ملکوں میں "تارکین وطن" (شرنارتھی) کی اصطلاح (پریبھاشا) موجود ہے میں پاکستانی ہوکر بھی ہندوستانی وطن کے ساتھ منسوب (سمبندھت) رہوں گا. اور تمام قانون ساز (قانون بنانے والے) اپنی بیچارگی پر ماتم کرتے رہیں گے کہ وہ تارکین وطن (وطن چھوڑنے والوں) کو بےوطن کہنے پر مجبور ہوگئے .

میں پاکستانی اس ہندوستان کو کیسے بھول جاؤں جو اسی ملک کے ایک شہر میں پیدا ہوا اور جس کی گلیوں میں میرے رات دن کی پیمائشیں (ناپ) اب بھی قائم ہیں . میں پاکستان سے آکر جب کبھی اپنے پیدائشی وطن، اپنے گھر اور اپنے محلے میں چکر لگاتا ہوں تو در و دیوار کی اینٹ اینٹ اور گلی کوچے کا پیچ و خم (گھماؤ پھراؤ) میرے بچپن کی تصویر لیکر پکارنے لگتی ہیں . اور قدم قدم پر صدا (آواز) آتی ہے کہ اے مسافر ! تیری عمر کا زائد (ادھک) ہمارے سایہ میں ہی بسر ہوا اور تیری زندگی کی تعمیر میں (بنانے) میں ہمارا دخل ہے. میں ان گلیوں میں بیتی ہوئی بچپن کی زندگی کیسے بھول جاؤں. یہ گلیاں ضرور میرا وطن ہیں چاہے کوئی میرے اور ان کے درمیان قانون اور نفرت کی کتنی ہی اونچی دیوار حائل (کھڑی) کردے. جب تک میرا بس چلے گا میں ان اونچی دیواروں کے اوپر سے اپنے بچپن کے گھر کو

यह हिन्दुस्तान !

(एक कट्टर पाकिस्तानी की क़लम से)

[मौलाना इसमाईल 'ज़बीह' कानपुर के रहने वाले हैं. सन 1947 में वह पाकिस्तान चले गए थे. अभी हाल में वह हिन्दुस्तान आए थे. वापसी के समय उन्होंने कानपुर के उरदू रोज़ाना अख़बार 'सियासत' में यह लेख लिखा था. यह लेख दिल से लिखा गया है और जो चीज़ दिल से लिखी जाती है असर करती है. हम यह लेख ख़ुशी से अपने पाठकों के सामने पेश करते हैं— एडीटर]

शायद तंगनज़र सियासतदां (संकीर्ण राजनीतिज्ञ) इस बात पर ताज्जुब करें कि एक कट्टर पाकिस्तानी किस तरह हिन्दुस्तान के लिये अपने दिल में मोहब्बत का ख़ज़ाना रख सकता है और किस तरह उसके क़लम से उस मुल्क के लिये दुआएं निकल सकती हैं जिस को हिन्दुस्तान का दुश्मन समझा जा सकता हो.

लेकिन मैं जो एक कट्टर पाकिस्तानी हूं बरमिला (खुल्लमखुल्ला) कहता हूं कि मेरे दिल व दिमाग़ के किसी गोशे (कोने) में हिन्दुस्तान के लिये न नफ़रत है और न बदख़्वाही (बुरा चाहने) का कोई जज़बा. और मेरी तरह बेशुमार (अनगिनत) पाकिस्तानी हिन्दुस्तान के लिये ख़ैर सगाली (सद् भावना) और नेक ख़्वाहिशात के जज़बे रखते हैं. हैरत (आश्चर्य) है कि इस दौर (युग) में हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के अन्दर ऐसे लोग तो बड़े अज़ीमुल मर्तबत (महान) समझे जाएं जो चीन, रूस, अमरीका और इंगलिस्तान से गहरे बिरादराना ताल्लुक़ात (संबन्ध) के अलमबरदार हों. लेकिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की दिली दोस्ती की ख़्वाहिश पर ताज्जुब का इज़हार (प्रकट) हो और इसके लिये कोई संजीदा (गंभीर) कोशिश न की जाय.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सिर्फ़ दो हमसाया (पड़ोसी) मुल्क ही नहीं हैं. बल्कि यह दोनों ऐसे शदीद नाक़ाबिले शिकस्त (न टूटने वाले) तारीख़ी, तमद्दुनी (कल्चरी) और इनसानी रिश्तों में कसे हुए हैं जो सिर्फ़ दो सगे भाइयों के दरमियान ही हो सकता है. इस रिश्ते को इख़्तिलाफ़ (मत भेद) बिगाड़ तो सकता है तोड़ नहीं सकता और कोई शरीफ़ इनसान दो भाइयों के दरमियान दुश्मनी और नफ़रत को अच्छा काम नहीं कह सकता. दो भाइयों को अलग अलग रह कर भी मुशतरका रिवायात (मिली जुली परम्पराओं) की हिफ़ाज़त करनी

یہ ہندستان !

(ایک کٹر پاکستانی کی قلم سے)

[مولانا اسمعیل 'ذبیح' کانپور کے رہنے والے ہیں، سن 1947 میں وہ پاکستان چلے گئے تھے . ابھی حال میں وہ ہندستان آئے تھے . واپسی کے سمے انہوں نے کانپور کے اردو روزانہ اخبار 'سیاست' میں یہ لیکھ لکھا تھا . یہ لیکھ دل سے لکھا گیا ہے اور جو چیز دل سے لکھی جاتی ہے اثر کرتی ہے . ہم یہ لیکھ خوشی سے اپنے پاٹھکوں کے سامنے پیش کرتے ہیں—ایڈیٹر]

شاید تنگ نظر سیاستداں (سنکیرن راجنیتگیہ) اس بات پر تعجب کریں کہ ایک کٹر پاکستانی کس طرح ہندستان کے لئے اپنے دل میں محبت کا خزانہ رکھ سکتا ہے اور کس طرح اس کے قلم سے اس ملک کے لئے دعائیں نکل سکتی ہیں جسکو ہندستان کا دشمن سمجھا جاسکتا ہو .

لیکن میں جو ایک کٹر پاکستانی ہوں برملا (کھلم کھلا) کہتا ہوں کہ میرے دل و دماغ کے کسی گوشے (کونے) میں ہندستان کے لئے نہ نفرت ہے اور نہ بدخواہی (برا چاہنے) کا کوئی جذبہ . اور میری طرح بیشمار (اںگنت) پاکستانی ہندستان کے لئے خیر سگالی (سدبھاونا) اور نیک خواہشات کے جذبے رکھتے ہیں . حیرت (آشچریہ) ہے کہ اس دور (یگ) میں ہندستان و پاکستان کے اندر ایسے لوگ تو بڑے عظیم المرتبت (مہان) سمجھے جائیں جو چین' روس' امریکہ اور انگلستان سے گہرے برادرانہ تعلقات (سمبندھ) کے علمبردار ہوں، لیکن ہندستان اور پاکستان کی دلی دوستی کی خواہش پر تعجب کا اظہار (پرکٹ) ہو اور اس کے لئے کوئی سنجیدہ (گمبھیر) کوشش نہ کی جائے.

ہندستان اور پاکستان صرف دو ہمسایہ (پڑوسی) ملک ہی نہیں ہیں . بلکہ یہ دونوں ایسے شدید ناقابل شکست (نہ ٹوٹنے والے) تاریخی' تمدنی (کلچری) اور انسانی رشتوں میں کسے ہوئے ہیں جو صرف دو سگے بھائیوں کے درمیان ہی ہو سکتا ہے. اس رشتے کو اختلاف (مت بھید) بگاڑ تو سکتا ہے توڑ نہیں سکتا اور کوئی شریف انسان دو بھائیوں کے درمیان دشمنی اور نفرت کو اچھا کام نہیں کہ سکتا. دو بھائیوں کو الگ الگ رہکر بھی مشترکہ روایات (ملی جلی پرمپراؤں) کی حفاظت کرنی

बीता नहीं देता. हमें खुद अपनी योग्यता के सहारे खड़ा होना चाहिये और अपने अन्दर शक्ति पैदा करना चाहिये. लोग हमारी इज़्ज़त करें और हमारे पीछे चलें इसलिये कि हम उनकी सेवा करते हैं. इसलिये नहीं कि हम ज़ोर ज़ोर से महात्मा गांधी की जय चिल्लाते हैं. अगर हम अच्छे ढंग से लोगों की सेवा करेंगे तो वह ज़रूर हमारा साथ देंगे. हमें इस बारे में कोई डर अपने मन में नहीं रखना चाहिये.

आज कल की दुनिया एक दूसरे पर शकों और नफ़रत से झलनी झलनी हो रही है. ऐसी हालत में दुनियां में शान्ति या अमन लाने के लिये चाहे कोई कितनी भी छोटी से छोटी कोशिश करे हम उस कोशिश से आंख नहीं बन्द कर सकते. चाहे वह कोशिश किसी भी तरफ़ से क्यों न ई हो. इसमें राजनैतिक *विचारों* या पारटी बन्दियों को बीच में लाना तो और भी ग़लत है. अगर कोई कमयुनिस्ट डूबती डूबते हुए बच्चे को बचाता है तो वह उन दस कांग्रेस वालों से कहीं ज़ियादा तारीफ़ के क़ाबिल है जो हाथ ऊंचे उठा कर उस काम पर इसलिये अफ़सोस करते हैं क्योंकि वह किसी कमयुनिस्ट ने किया है. इसलिये मुझे अफ़सोस है कि इस बेवक़्त के खून के दबाव के बढ़ जाने से अमन के आन्दोलन में मेरा सहयोग अभी कुछ समय के लिये रुक गया और मुझे विश्वास है कि जल्दी ही मैं इस दौरे से छुटकारा पा कर लोगों की ज़ियादा अच्छी सेवा कर सकूंगा. ईश्वर करे मेरी यह प्रार्थना जितनी मैं आशा है उससे भी जल्दी पूरी हो !

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہونا نہیں دیتا ۔ ہمیں خود اپنی یوگیتا کے سہارے کھڑا ہونا چاہئے اور اپنے اندر شکتی پیدا کرنا چاہئے ۔ لوگ ہماری عزت کریں اور ہمارے پیچھے چلیں اس لئے کہ ہم اُن کی سیوا کرتے ہیں۔ اس لئے نہیں کہ ہم زور زور سے مہاتما گاندھی کی جے چلاتے ہیں۔ اگر ہم اچھے ڈھنگ سے لوگوں کی سیوا کریں گے تو وہ ضرور ہمارا ساتھ دیں گے۔ ہمیں اس بارے میں کوئی ڈر اپنے من میں نہیں رکھنا چاہئے ۔

آج کل کی دنیا ایک دوسرے پر شکوں اور نفرت سے چھلنی چھلنی ہو رہی ہے ۔ ایسی حالت میں دنیا میں شانتی یا امن لانے کے لئے چاہے کوئی کتنی بھی چھوٹی سی چھوٹی کوشش کرے ہم اس کوشش سے آنکھ نہیں بند کر سکتے ۔ چاہے وہ کوشش کسی بھی طرف سے کیوں نہ کوئی ہو ۔ اس میں راجنیتک وچاروں یا پارٹی بندیوں کو بیچ میں لانا تو اور بھی غلط ہے ۔ اگر کوئی کمیونسٹ کسی ڈوبتے ہوئے بچے کو بچاتا ہے تو وہ اُن دس کانگریس والوں سے کہیں زیادہ تعریف کے قابل ہے جو ہاتھ اونچے اُٹھا کر اس کام پر اس لئے افسوس کرتے ہیں کیونکہ وہ کسی کمیونسٹ نے کیا ہے۔ اسلئے مجھے افسوس ہے کہ اس بے وقت کے خون کے دباؤ کے بڑھ جانے سے امن کے آندولن میں میرا سہیوگ ابھی کچھ سمے کے لئے رک گیا اور مجھے وشواس ہے کہ جلدی ہی میں اس دورے سے چھٹکارا پا کر لوگوں کی زیادہ اچھی سیوا کر سکوں گا ۔ ایشور کرے میری یہ پرارتھنا جتنی مجھے آشا ہے اس سے بھی جلدی پوری ہو !

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کمارپا.

انوادک—سریش رام بھائی۔

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے ۔

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

...नहें अब रुक कर डाक्टर की सलाह पर गंभीरता से विचार और अमल करना चाहिये. उनकी यह भी राय है कि मैं बहुत दिनों से अंगरेज़ी महावरे के अनुसार ... की मोमबत्ती को दोनों तरफ़ से जलाता रहा हूं. ...वा जी स्वभाव से नरम दिल के हैं. उन्हें इस बात ... एतराज़ है कि मैं अपनी पिछली किताबों तक को ...ने में अपनी शक्ति खर्च करूं. वह चाहते हैं कि ...ी तरह आराम करूं. उनका इस तरह सोचना शुद्ध ... दिखाती है.

पिछले कुछ बरसों के अन्दर जब मैं जनवादी चीन सोवियत रूस के क़ौमी रचनात्मक कामों को देखने समझने के लिये वहां गया तो कुछ लोगों को इस ...तराज़ हुआ था. कुछ के एतराज़ का तो यह कारन ... मुझ पर पहले ही से काम का काफ़ी बोझ था और अपनी तन्दुरुस्ती का ध्यान रखते हुए अपने काम ...ना नहीं चाहिये था. दूसरों के एतराज़ का कारन ... तौर पर राजनैतिक था. उन्हें ऐसा लगा कि मैं ...निस्टों के साथ बहुत ज़ियादा घुल मिल रहा हूं और ...निस्ट हिंसा करने वाले लोग हैं और मेरा उनसे इतना ... मिलना ठीक नहीं. इस तरह के लोगों को मैंने ...वाब दिया कि हज़रत ईसा के ज़माने में भी कुछ ...न्तक लोगों ने हज़रत ईसा के रोम के सरकारी ... वसूल करने वालों और पापियों के साथ मिलने पर एतराज़ किया था. मैंने उन्हें हज़रत ईसा के ... की भी याद दिलाई. हज़रत ईसा ने एतराज़ करने ... को जवाब दिया कि :—"जो लोग तन्दुरुस्त हैं उन्हें ... की ज़रूरत नहीं है. हकीम की ज़रूरत उन्हें है जो ... हैं." इसी तरह अगर कमयुनिस्ट लोग हिंसक हैं ...में से जिन लोगों को अहिंसा में पूरा विश्वास है ...से कमयुनिस्टों ही के साथ रहना चाहिये ताकि ...आस पास की हिंसा को कम कर सकें. बदक़िसमती ... ऊंचे ऊंचे कांगरेस वाले भी ऐसे हैं जिन्हें अपने ...तना विश्वास नहीं है कि आज़ादी से इस तरह के ...से मिल जुल सकें या इन में से कुछ पावर यानी ... पीछे इस बुरी तरह से पड़ गए हैं कि उन्हें डर ... अगर कमयुनिस्ट देशों ने कोई अच्छा काम किया ... कोई ऐसा मित्र जो निशपक्ष हो और किसी ... से संबन्ध न रखता हो उनके उस काम की ...शंसा करे तो उससे इन राजनीतिज्ञों की नेक नामी ... आ जायगी. यह नेक नामी भी जो कुछ है वह ...ों ने अपनी मेहनत से नहीं कमाई बल्कि उन लोगों ... त्मक कामों से मिली है जो अब हमारे बीच में ... इस तरह का हर किसी खुदार पारटी लीडर को

کہ انہیں اب رک کر ڈاکٹر کی صلاح پر گمبھیرتا سے وچار اور عمل کرنا چاہئے ۔ اُن کی یہ بھی رائے ہے کہ میں بہت دنوں سے انگریزی محاورے کے انوسار جیون کی موم بتی کو دونوں طرف سے جلاتا رہا ہوں ۔ ونوبا جی سوبھاؤ سے نرم دل کے ہیں ۔ انہیں اس بات پر بھی اعتراض ہے کہ میں اپنی پچھلی کتابوں تک کو دہرانے میں اپنی شکتی خرچ کروں ۔ وہ چاہتے ہیں کہ میں پوری طرح آرام کروں ۔ اُن کا اِس طرح سوچنا شدھ پریم کی نشانی ہے۔

پچھلے کچھ برسوں کے اندر جب میں جنوادی چین اور سوویت روس کے قومی رچناتمک کاموں کو دیکھنے اور سمجھنے کے لئے وہاں گیا تو کچھ لوگوں کو اس پر اعتراض ہوا تھا ۔ کچھ کے اعتراض کا تو یہ کارن تھا کہ مجھ پر پہلے ہی سے کام کا کافی بوجھ تھا اور مجھے اپنی تندرستی کا دھیان رکھتے ہوئے اپنے کام کو بڑھانا نہیں چاہئے تھا ۔ دوسروں کے اعتراض کا کارن خاص طور پر راجنیتک تھا ۔ انہیں ایسا لگا کہ میں کمیونسٹوں کے ساتھ بہت زیادہ گھل مل رہا ہوں اور کمیونسٹ ہنسا کرنے والے لوگ ہیں اور میرا اُن سے اتنا زیادہ ملنا ٹھیک نہیں ۔ اس طرح کے لوگوں کو میں نے یہ جواب دیا کہ حضرت عیسیٰ کے زمانے میں بھی کچھ شدھ چنتک لوگوں نے حضرت عیسیٰ کے روم کے سرکاری ٹیکس وصول کرنے والوں اور پاپیوں کے ساتھ ملنے جلنے پر اعتراض کیا تھا. میں نے انہیں حضرت عیسیٰ کے جواب کی بھی یاد دلائی ۔ حضرت عیسیٰ نے اعتراض کرنے والوں کو جواب دیا کہ :—"جو لوگ تندرست ہیں انہیں حکیم کی ضرورت نہیں ہے ۔ حکیم کی ضرورت انہیں ہے جو بیمار ہیں." اسی طرح اگر کمیونسٹ لوگ ہنسک ہیں تو ہم میں سے جن لوگوں کو اہنسا میں پورا وشواس ہے انہیں ایسے کمیونسٹوں ہی کے ساتھ رہنا چاہئے تاکہ اُن کے آس پاس کی ہنسا کو کم کر سکیں ۔

بدقسمتی سے کچھ اونچے اونچے کانگریس والے بھی ایسے ہیں جنہیں اپنے اوپر اتنا وشواس نہیں ہے کہ آزادی سے اس طرح کے لوگوں سے مل جل سکیں یا اِن میں سے کچھ پاور یعنی سکتا کے پیچھے اس بری طرح سے پڑ گئے ہیں کہ انہیں ڈر ہے کہ اگر کمیونسٹ دیشوں نے کوئی اچھا کام کیا ہو اور کوئی ایسا مِتر جو نشپکش ہو اور کسی پارٹی سے سمبندھ نہ رکھتا ہو اُن کے اس کام کی اچھی پرشنسا کرے تو اس سے اُس راج نیتگوں کی نیک نامی میں کمی آ جائے گی. یہ نیک نامی بھی جو کچھ ہے وہ اِن لوگوں نے اپنی محنت سے نہیں کمائی بلکہ اُن لوگوں کے رچناتمک کاموں سے ملی ہے جو اب ہمارے بیچ میں نہیں ہیں ۔ اس طرح کا ہر کسی خوددار پارٹی لیڈر کو

बंगलोर ले गए. वहां के बड़े डाक्टर ने तीन दिन तक पूरी तफसील के साथ मेरा इमतहान किया. इमतहान के बाद उसने मुझे सलाह दी कि मुझे अपनी सब ज़िम्मेवारियों और रोज़मर्रा की काम की देख रेख और निगरानी से पूरी तरह छुट्टी ले लेनी चाहिये और अगर हो सके तो कारोबारी ज़िन्दगी से ही अलग हो जाना चाहिये.

डाक्टर की इस सिफारिश को मैंने सर्व सेवा संघ के सामने रखा और चाहा कि वह मुझे काम से अलग होने की इजाज़त दें. जवाब में उन्होंने मुझ से प्रार्थना की कि मैं अभी काम से पूरी तरह अलग न होऊं बल्कि काम कम कर दूं और जो कुछ करूं आराम के साथ करूं. उन्होंने मुझ से यह भी कहा कि मैं अपने जगह जगह के दौरे बन्द कर दूं. किसी एक जगह अपना डेरा गाड़ लूं और रोज़ मर्रा के काम की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर न रख कर काम करने वालों को सलाह मशवरे से मदद दूं. यही अब मैं करने की कोशिश कर रहा हूं और जहां तक मेरी तन्दुरुस्ती इजाज़त देगी उनकी इच्छाओं को पूरा करूंगा.

इस तरह मैं जो अपने काम के रास्ते से ज़रा सा हट गया उस से कुछ लोगों में तरह तरह के विचार पैदा हुए. लोगों ने तरह तरह की टीका टिप्पनियां भी कीं. कुछ दोस्तों ने मुझ से चाहा कि मैं इन टीका टिप्पनियों का समाधान करूं. मुझे कहना पड़ता है कि मेरे काम से अलग होने की जो छोटी सी खबर अखबारों में छप गई थी उस में देश के लोगों ने जो दिलचसपी ज़ाहिर की है उसे देख कर मुझे अचरज हुआ है.

कुछ लोगों का खयाल है कि सर्वोदय गिरोह के अन्दर हम लोगों में जो मत भेद पैदा हो गए हैं उन्हें दबाने या ढकने का यह एक अलग ढंग है और तन्दुरुस्ती का बहाना लेकर मैंने असल में उन मतभेदों के कारन अपने बाक़ी साथियों से अपने को अलग कर लिया है. हर ज़िन्दा संस्था में तफसील की बातों में अलग अलग राय होना क़ुदरती है, ख़ास कर उन लोगों में जो दुनिया की आज कल की बिगड़ी हुई हालत में ज़िंदगी का कोई नया तरीक़ा ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं. हम में भी गहरे मतभेद हैं. लेकिन कोई मतभेद इतना ज़बरदस्त नहीं है कि जिस की वजह से हम में से कोई असली मक़सद से हटे या जिस के कारन मैं उस काम को छोड़ दूं जो गांधी जी ने हमारे सुपुर्द किया है. मेरा फ़र्ज़ यही है कि यह काम करता रहूं या उसके करने में अपनी जान दे दूं, लेकिन अभी तो इतनी गहरी आज़मायश का कोई मौक़ा भी नहीं आया है.

इस काम में जो लोग मेरे नज़दीक के साथी रहे हैं उनसे मुझे प्रेम ही प्रेम मिला है. उन्होंने मेरी हर ज़रूरत का बेहद खयाल रखा है. काका कालेलकर ने मुझे लिखा

بنگلور لے گئے. وہاں کے بڑے ڈاکٹر نے تین دن تک پوری تفصیل کے ساتھ میرا اِمتحان کیا . اِمتحان کے بعد اُس نے مجھے صلاح دی کہ مجھے اپنی سب ذمہ داریوں اور روزمرہ کی کام کی دیکھ ریکھ اور نگرانی سے پوری طرح چھٹی لے لینی چاہئے اور اگر ہوسکے تو کاروباری زندگی سے ہی الگ ہو جانا چاہئے .

ڈاکٹر کی اِس سفارش کو میں نے سرو سیوا سنگھ کے سامنے رکھا اور چاہا کہ وہ مجھے کام سے الگ ہونے کی اجازت دیں . جواب میں اُنہوں نے مجھ سے پرارتھنا کی کہ میں ابھی کام سے پوری طرح الگ نہ ہوؤں بلکہ کام کم کردوں اور جو کچھ کروں آرام کے ساتھ کروں. اُنہوں نے مجھ سے یہ بھی کہا کہ میں اپنے جگہ جگہ کے دورے بند کردوں . کسی ایک جگہ اپنا ڈیرہ گاڑلوں اور روزمرہ کے کام کی ذمہ داری اپنے اوپر نہ رکھکر کام کرنے والوں کو صلاح مشورے سے مدد دوں. یہی اب میں کرنے کی کوشش کر رہا ہوں اور جہاں تک میری تندرستی اِجازت دے گی اُن کی اِچھاؤں کو پورا کروں گا .

اِس طرح میں جو اپنے کام کے راستے سے ذرا سا ہٹ گیا اُس سے کچھ لوگوں میں طرح طرح کے وچار پیدا ہوئے. لوگوں نے طرح طرح کی ٹیکا ٹپنیاں بھی کیں . کچھ دوستوں نے مجھ سے چاہا ہے کہ میں اِن ٹیکا ٹپنیوں کا سمادھان کروں. مجھے کہنا پڑتا ہے کہ میرے کام سے الگ ہونے کی جو چھوٹی سی خبر اخباروں میں چھپ گئی تھی اُس میں دیش کے لوگوں نے جو دلچسپی ظاہر کی ہے اُسے دیکھکر مجھے اچرج ہوا ہے .

کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ سروودے گروہ کے اندر ہم لوگوں میں جو مت بھید پیدا ہوگئے ہیں انہیں دبانے یا ڈھکنے کا یہ ایک الگ ڈھنگ ہے اور تندرستی کا بہانا لےکر میں نے اصل میں اُن مت بھیدوں کے کارن اپنے باقی ساتھیوں سے اپنے کو الگ کرلیا ہے . ہر زندہ سنستھا میں تفصیل کی باتوں میں الگ الگ رائے ہونا قدرتی ہے، خاصکر اُن لوگوں میں جو دنیا کی آجکل کی بگڑی ہوئی حالت میں زندگی کا کوئی نیا طریقہ ڈھونڈنے کی کوشش کر رہے ہیں. ہم میں بھی گہرے مت بھید ہیں . لیکن کوئی مت بھید اِتنا زبردست نہیں ہے کہ جسکی وجہ سے ہم میں سے کوئی اصلی مقصد سے ہٹے یا جس کے کارن میں اُس کام کو چھوڑ دوں جو گاندھی جی نے ہمارے سپرد کیا ہے . میرا فرض یہی ہے کہ یہ کام کرتا رہوں یا اُس کے کرنے میں اپنی جان دے دوں. لیکن ابھی تو اِتنی گہری آزمائش کا کوئی موقع بھی نہیں آیا ہے .

اِس کام میں جو لوگ میرے نزدیک کے ساتھی رہے ہیں اُن سے مجھے پریم ہی پریم ملا ہے. اُنہوں نے میری ہر ضرورت کا بے حد خیال رکھا ہے . کاکا کالیلکر نے مجھے لکھا

मेरा काम से अलग होना

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

मैं बीमारी से अच्छा होने के लिये आराम कर रहा हूं. यह खबर पा कर बहुत से दोस्तों ने खास दिलचस्पी ज़ाहिर की. तरह तरह की चरचा शुरू हो गई. मेरे आराम करने के अलग अलग माने लगाए गए और मुझ से कहा गया कि मैं एक बयान दे कर असलियत लोगों के सामने रख दूं. मैंने सोचा, मुझे ऐसा लगा कि केवल लोगों की जानकारी बढ़ाने का सवाल नहीं है. इससे कुछ और भी फ़ायदा है. इसीलिये इस लेख में मैं इस सारे मामले पर कुछ रोशनी डाल रहा हूं.

लगभग पन्द्रह बरस हुए जब मेरे दाहिने अंग पर फ़ालिज गिरा. यह फ़ालिज कई घंटे रहा. डाक्टर जीवराज मेहता और एम. डी. गिल्डर ने मेरा डाक्टरी इमतहान किया. उन्हें पता चला कि दौरे की वजह यह थी कि मेरे खून का दबाव बहुत बढ़ गया था. दोनों डाक्टरों ने राय दी कि मुझे पूरा आराम करना चाहिये. गांधी जी हम सब की मां की तरह तीमारदारी करते थे. वह तुरन्त मगनवाड़ी से उठा कर मुझे सेवा ग्राम ले गए. वहां उन्होंने मुझे एक साल तक अपनी निजी देख रेख में रखा. उन्होंने मेरा रोज़ का काम और मेरी ज़िम्मेदारियां सब कम कर दीं.

इस तरह खुद अपनी देख रेख करने में मुझे बड़ी अच्छी शिक्षा मिली. उसी के सहारे मैं तब से अब तक चल सका और जब कभी ज़रा अच्छा रहा दस घंटा से लेकर बारह घन्टे तक रोज़ाना काम करता रहा. जब कभी बीच बीच में तबियत ज़रा गिरती थी तो काम कम कर देता था. पिछले कई साल से मेरे शरीर की शक्ति घट रही है. उमर भी साठ से ऊपर हो चुकी. इस पर भी थोड़ी सी अहत्यात के साथ और रोज़ की अपनी हालत के अनुसार आदतों में अदल बदल कर के मैं दूर दूर तक सफ़र कर सका. चीन, जापान, जरमनी और सोवियत रूस सब जगह गया और साथ साथ अपना आए दिन का काम भी करता रहा.

मई सन '53 में कुछ ईसाई नौ जवानों ने कोनूर में एक कानफ़रेन्स की जिसकी ग़रज़ थी सोसायटी यानी मानव समाज को समझना. इस मौक़े पर मुझे उसी तरह का फिर एक छोटा सा दौरा आ गया जो बीच बीच में बन्द हो हो कर लगभग एक अठवारह तक रहा. मेरे दोस्त मुझे डाक्टरी इम्तहान के लिये विक्टोरिया अस्पताल

میرا کام سے الگ ہونا

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپا)

میں بیماری سے اچھا ہونے کے لئے آرام کر رہا ہوں . یہ خبر پاکر بہت سے دوستوں نے خاص دلچسپی ظاہر کی. طرح طرح کی چرچا شروع ہوگئی . میرے آرام کرنے کے الگ الگ معنی لگائے گئے اور مجھ سے کہا گیا کہ میں ایک بیان دے کر اصلیت لوگوں کے سامنے رکھ دوں. میں نے سوچا مجھے ایسا لگا کہ کیول لوگوں کی جانکاری بڑھانے کا سوال نہیں ہے. اس سے کچھ اور بھی فائدہ ہے . اسی لئے اس لیکھ میں میں اس سارے معاملے پر کچھ روشنی ڈال رہا ہوں .

لگ بھگ پندرہ برس ہوئے جب میرے داہنے انگ پر فالج گرا . یہ فالج کئی گھنٹے رہا . ڈاکٹر جیوراج مہتا اور ایم. ڈی. گلڈر نے میرا ڈاکٹری امتحان کیا . انہیں پتہ چلا کہ دورے کی وجہ یہ تھی کہ میرے خون کا دباؤ بہت بڑھ گیا تھا . دونوں ڈاکٹروں نے رائے دی کہ مجھے پورا آرام کرنا چاہئے. گاندھی جی ہم سب کی ماں کی طرح تیمارداری کرتے تھے . وہ فورا مگن واڑی سے اٹھا کر مجھے سیوا گرام لے گئے . وہاں انہوں نے مجھے ایک سال تک اپنی نجی دیکھ ریکھ میں رکھا انہوں نے میرا روز کا کام اور میری ذمہ داریاں سب کم کردیں .

اس طرح خود اپنی دیکھ ریکھ کرنے میں مجھے بڑی اچھی شکشا ملی . اسی کے سہارے میں تب سے اب تک چل سکا اور جب کبھی ذرا اچھا رہا دس گھنٹہ سے لے کر بارہ گھنٹہ تک روزانہ کام کرتا رہا . جب کبھی بیچ بیچ میں طبیعت ذرا گرتی تھی تو کام کم کر دیتا تھا. پچھلے کئی سال سے میرے شریر کی شکتی گھٹ رہی ہے . عمر بھی ساٹھ سے اوپر ہوچکی . اس پر بھی تھوڑی سی احتیاط کے ساتھ اور روز کی اپنی حالت کے انوسار عادتوں میں ادل بدل کر کے میں دور دور تک سفر کر سکا. چین، جاپان، جرمنی اور سوویت روس سب جگہ گیا اور ساتھ ساتھ اپنا آئے دن کا کام بھی کرتا رہا .

مئی سن ۵۳ء میں کچھ عیسائی نوجوانوں نے کونور میں ایک کانفرنس کی جس کی غرض تھی سوسائٹی یعنی مانو سماج کو سمجھنا. اس موقعہ پر مجھے اسی طرح کا پھر ایک چھوٹا سا دورہ آگیا جو بیچ بیچ میں بند ہو ہوکر لگ بھگ ایک اٹھوارہ تک رہا. میرے دوست مجھے ڈاکٹری امتحان کے لئے وکٹوریہ اسپتال

अंग्रेज़ों में लिये हुए लफ़्ज़ों से बदसूरत शब्दों का मुक़ाबला कीजिये तो आप महसूस करेंगे कि हमारी भाषा के असल शब्द कितने घटिया हैं.

उस शानदार तारे को जिसके जिलो में अनगिनत "तारों" का झुंड होता है और एक ख़ूबसूरत पंखे की तरह फैला होता है दुमदार सितारा या झाड़ू तारा कहना अपनी बदज़ौक़ी, भाषाई कंगाली और लफ़्ज़ी नादारी है.

Rainbow के लिये कौसे क़ुज़ा बहुत मुश्किल और ख़ुद उर्दू में कम समझ में आने वाला लफ़्ज़ है. राम धनुष में कोई ख़ूबी नहीं. कोई कशिश नहीं. मेरे ख़याल में धनकमान या सतरंगी बेहतर शब्द है. सहरा उर्दू में जंगल को कहते हैं. इसलिये Desert को वीरानिया या वीरानिस्तान कहना बेहतर है. असलीयत के लिहाज़ से रेगिस्तान लफ़्ज़ ठीक है.

रांड और रंडवा बड़े घिनावने लफ़्ज़ हैं. रांड तो हमारी ज़बान में कोसने और बददुआ के तौर पर चालू है. रांड का कलचरल बराबरिया बेवा है. रंडवा के लिये मेरे एक दोस्त ने "बेबीविया" का लफ़्ज़ सुझाया है, जिसके यह मानी निकल सकते हैं (या बहुत जल्द हासिल कर लिये जा सकते हैं) कि वह शख़्स जिसकी बीवी का इन्तक़ाल हो चुका है.

आवले जावले बड़ा बेतुका लफ़्ज़ है. न मालूम इसके माने शुरू में क्या थे. इसके मुक़ाबले में अंगरेज़ी लफ़्ज़ Twins बड़ा प्यारा लफ़्ज़ है. रंडोसे की तरह यह लफ़्ज़ भी बरसों मुझे बुरा लगता रहा. एक रोज़ किसी ने इसके लिये "दु नन्हे" सुझाया जो मुझे बहुत भला लगा यानी दो नन्हें. अकसर लोग इस बात को मानेंगे कि "दो नन्हे" आवले जावले से बेहतर है.

بنگلوں میں سے ہوئے لفظوں سے بدلو شبدوں کا مقابلہ کیجیگے تو آپ محسوس کرینگے کہ ہماری بھاشا کے اصل لفظ کتنے گھٹیا ہیں ۔

اس شاندار تارے کو جس کے جلو میں ان گنت " تاروں " کا جھنڈ ہوتا ہے اور ایک خوبصورت پنکھے کی طرح پھیلا ہوتا ہے دم دار ستارا یا جھاڑوتارا کہنا اپنی بد ذوقی، بھاشائی کنگالی اور لفظی ناداری ہے ۔

Rainbow کے لئے قوس قزح بہت مشکل اور خود اردو میں کم سمجھ میں آنے والا لفظ ہے ۔ رام دھنش میں کوئی خوبی نہیں، کوئی کشش نہیں ۔ میرے خیال میں دھن کمان یا ست رنگی بہتر لفظ ہے ۔ صحرا اردو میں جنگل کو کہتے ہیں ۔ اس لئے Desert کو ویرانیہ یا ویرانستان کہنا بہتر ہے ۔ اصلیت کے لحاظ سے ریگستان لفظ ٹھیک ہے ۔

رانڈ اور رنڈوا بڑے گھناونے لفظ ہیں ۔ رانڈ تو ہماری زبان میں کوسنے اور بد دعا کے طور پر بھی چالو ہے ۔ رانڈ کا کلچرل برابریا بیوا ہے ۔ رنڈوا کے لئے میرے اک دوست نے " بے بیویا " کا لفظ سجھایا ہے، جس کے یہ مانے نکل سکتے ہیں ۔ (یا بہت جلد حاصل کر لئے جا سکتے ہیں) کہ وہ شخص جس کی بیوی کا انتقال ہو چکا ہے ۔

آونلے جاونلے بڑا بیتکا لفظ ہے ۔ نہ معلوم اس کے مانے شرو میں کیا تھے ۔ اس کے مقابلے میں انگریزی لفظ Twins بڑا پیارا لفظ ہے ۔ رنڈوے کی طرح یہ لفظ بھی برسوں مجھے برا لگتا رہا ۔ ایک روز کسی نے اس کے لئے " دو ننھے " سجھایا جو مجھے بہت بھلا لگا یانے دو ننھے، اکثر لوگ اس بات کو تو مانینگے کہ " دو ننھے " آونلے جاونلے سے بہتر ہے ۔

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी तक़रीर प्रभावक हो तो उसको संक्षिप्त करो, क्योंकि अलफ़ाज़ सूरज की किरणों की तरह हैं जितनी ज़्यादा इकट्ठा होंगी उतनी ही तेज़ होंगी.

—सूदे

× × ×

समझ में न आने वाली भाषा बिना रोशनी की लालटेन है.

—अज्ञात

اگر تم چاہتے ہو کہ تمہاری تقریر پربھاوک ہو تو اس کو سنچھپت کرو کیونکہ الفاظ سورج کی کرنوں کی طرح ہیں جتنی زیادہ اکٹھا ہونگی اتنی ہی تیز ہونگی ۔

—سودے

× × × ×

سمجھ میں نہ آنے والی بھاشا بنا روشنی کی لالٹین ہے ۔

—اگیات

न सिर्फ़ हिन्दुस्तानी में बल्कि उरदू और शायद हिन्दी में भी चल पड़ेंगी. इस तरह हिन्दी और उरदू में यकसां बोले जाने वाले लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ेगी. यह बजाय ख़ुद हिन्दुस्तानी के ज़रिये हिन्दी और उरदू की सेवा होगी.

हर ज़बान में अच्छे और बुरे शब्द होते हैं. हमारी भाषा में चन्द लफ़्ज़ बहुत घिनावने हैं, बाज़ कानों को नागवार गुज़रते हैं. ऐसे भी लफ़्ज़ हैं जो भोंडे या बेतुके या बे मानेदार मालूम देते हैं और सुनने वालों या पढ़ने वालों में से बहुत बड़ी तैदाद को अच्छे नहीं लगते. ऐसे सब लफ़्ज़ों का छाँटना और उनकी बजाय अच्छे लफ़्ज़ों का समझाना मुमकिन नहीं, अलबत्ता यह मुमकिन है कि चन्द लफ़्ज़ बदलाव लफ़्ज़ों के तौर पर चालू होने में सफल हों और वक़्त ही यह फ़ैसला करे कि इनमें कौन से लफ़्ज़ बाक़ी रखने के क़ाबिल हैं.

लफ़्ज़ों के बुरे, घिनावने, भोंडे, बेतुके या बे माना होने से जो मुराद है, उसको बयान से बेहतर मिसालों से ज़ाहिर किया जा सकता है.

अंगरेज़ी और हिन्दी उर्दू के इन लफ़्ज़ों और तरकीबों पर ग़ौर कीजिये :

दामाद	Son-in-law
बहू	Daughter-in-law
पारटी, असराना, चाय पारटी	At Home
मूसला धार बारिश हो रही थी	"It was raining cats and doges"
भिंडी	Lady's Figer

मामूली समझ और ज़ौक़ रखने वाले आसानी से अनदाज़ा कर सकते हैं कि इन मुरादफ़ों में उरदू लफ़्ज़ अच्छे और अंगरेज़ी बुरे हैं. चाय की दावत को घर पर या भिन्डी को ख़ातून की उंगली कहना बहुत भोंडी तरकीबें हैं. और भी मिसालें देकर लफ़्ज़ों की दूसरी क़िस्मों को समझाया जा सकता है.

हमारी भाषा में यूं तो बीसियों घिनावने, भोंडे और बेतुके लफ़्ज़ हैं मगर बाद की जिदवल में सिर्फ़ वही लफ़्ज़ दिये जाते हैं, जिनकी बजाय या जिनके साथ साथ एक और लफ़्ज़ चालू हो सकता है ताकि हिन्दुस्तानी के शब्द सागर या लफ़्ज़ी ज़ख़ीरे में इज़ाफ़ा हो.

दुमदार तारा (दुमतारा), (झाड़ू तारा)	Comet
सतरंगी, धनकमान [क़ौसे क़ज़ा राम धनुष]	Rainbow
वीराना, वीरानिस्तान [सहरा] या रेगिस्तान	Desert
जुड़वें	Twin
बेजोड़िया	Widower

نہ صرف ہندستانی میں بلکہ اردو اور شاید ہندی میں بھی چل پڑینگی ۔ اس طرح ہندی اور اردو میں یکساں بولے جانے والے لفزوں کی تیداد بڑھیگی ۔ یہ بجائے خد ہندستانی زریعہ ہندی اور اردو کی سیوا ہوگی ۔

ہر زبان میں اچھے اور برے شبد ہوتے ہیں ۔ ہماری بھاشا میں چند لفز بہت گھناونے ہیں، باز کانوں کو ناگوار گزرتے ہیں ۔ ایسے بھی لفز ہیں جو بھونڈے یا بے تکے یا بے مانے دار مالوم ہوتے ہیں اور سننے والوں یا پڑھنے والوں میں سے بہت بڑی تعداد کو اچھے نہیں لگتے ۔ ایسے سب لفزوں کا چھانٹنا اور ان کی بجائے اچھے لفزوں کا سمجھانا ممکن نہیں، البتہ یہ ممکن ہے کہ چند لفز بدلاؤ لفزوں کے طور پر چالو ہونے میں سپھل ہوں اور وقت ہی یہ فیصلہ کرے کہ ان میں کون سے لفز باقی رکھنے کے قابل ہیں ۔

لفزوں کے برے، گھناونے، بھونڈے، بے تکے یا بے مانا ہونے سے جو مراد ہے، اس کو بیان سے بہتر مثالوں سے ظاہر کیا جا سکتا ہے ۔

انگریزی اور ہندی اردو کے ان لفزوں اور ترکیبوں پر غور کیجئے :

Son-in-law	داماد
Daughter-in-law	بہو
'At Home	پارٹی، عصرانہ، چائے پارٹی
"It was raining cats and dogs."	موسلا دھار بارش ہو رہی تھی
Lady's Finger	بھنڈی

معمولی سمجھ اور ذوق رکھنے والے آسانی سے اندازا کر سکتے ہیں کہ ان مرادفوں میں اردو لفز اچھے اور انگریزی برے ہیں ۔ چائے کی دعوت کو گھر پر یا بھنڈی کو خاتون کی انگلی کہنا بہت بھونڈی ترکیبیں ہیں ۔ اور بھی مثالیں دیکر لفزوں کی دوسری قسموں کو سمجھایا جا سکتا ہے ۔

ہماری بھاشا میں یوں تو بیسیوں گھناونے، بھونڈے اور بے تکے لفز ہیں مگر باد کی جدول میں صرف وہی لفز دئے جاتے ہیں، جن کی بجائے یا جن کے ساتھ ساتھ ایک اور لفز چالو ہو سکتا ہے تاکہ ہندستانی کے شبد ساگر یا لفزی ذخیرے میں اضافہ ہو ۔

Comet	دمب تارہ (دمب تارا)، [جھاڑو تارا]
Rainbow	ستر نگی، دھنک کمان [قوس قزح، رام دھنش]
Desert	ویرانہ، ویرانستان [صحرا] یا ریگستان
Twin	جڑویں
Widower	بے جوڑیا

Petoridalogy	फ़रन विद्या	Pteridology	فرن ودیا
Politics	राज विद्या	Politics	راج ودیا
Pomology	फल विद्या	Pomology	پھل ودیا
Psychology	मन विद्या	Psychology	من ودیا
Radiology	रेडियो विद्या	Radiology	ریڈیو ودیا
Semasiology	अर्थ विद्या	Semasiology	ارتھ ودیا
Sexology	जिन्स विद्या	Sexology	جنس ودیا
Sociology	समाज विद्या	Sociology	سماج ودیا
Staistics	गिनती विद्या	Statistics	گنتی ودیا
Teleology	ग़रज़ विद्या	Teleology	غرض ودیا
Theology	दीन विद्या	Theology	دین ودیا
Therapeutics	सेहत विद्या	Therapeutics	صحت ودیا
Thermology	गरमी विद्या	Thermology	گرمی ودیا
Tricology	बाल विद्या	Tricology	بال ودیا
Zoology	जानवर विद्या	Zoology	جانور ودیا

क़बूल आम और जनताई पसन्द के बारे में ठीक तौर पर कुछ भी क़त्ई बयानी करना मुशकिल है क्योंकि आम पसन्दी में मन मानापन बहुत है. फ़र्द की तरह, समाज या गिरोह में और इन ही की तरह जनता में तलव्वुन मिज़ाजी और चंचलपन बहुत पाया जाता है. कभी अच्छी चीज़ नापसन्द और कभी नापसन्द करने के क़ाबिल चीज़ बेहद मक़बूल होती है तो दूसरे मौक़ों पर पसन्द की हुई चीज़ें छोड़ कर नापसन्द की हुई चीज़ें इख़्तियार कर ली जाती हैं. लफ़्ज़ों, मुहावरों, कहावतों और इस्तलाहों के साथ भी जनता का यही मन माना सलूक होता है. फिर भी सिर्फ़ क़यास के तौर पर हम कह सकते हैं कि राज विद्या, मन विद्या, समाज विद्या, धन विद्या, रोग विद्या, तन विद्या, दिल विद्या जैसी इस्तलाहें चल पड़ेंगी मगर आसमान विद्या से आसमानियत बल्कि आकाशयात बेहतर मालूम होता है. इसी तरह रंगयात रंग विद्या से बेहतर भी है और ज़ियादा सही भी. क़तई तौर से कुछ फ़ैसला करना अगरचे मुशकिल है मगर संसारयात और समाजयात जैसी इस्तलाहें संसार विद्या और समाज विद्या के बराबर बल्कि कुछ बेहतर हैं.

जिस तरह जरमन भाषा में Okonomik या Witschaftslehre को Economics, Soziologic या Gesellschaftslehre को Sociology, Orthopadik या Knochenlehre को Orthopa, Ophthalonogie या Augenlehre को Opthalmology. कहते हैं उसी तरह यह आशा की जा सकती है कि अगर मेरे समझाए हुए शब्दों को चलन पाने का मौक़ा मिले तो समाजयात के अलावा समाज विद्या, मआशियात के साथ धन विद्या, नफ़सियात के अलावा मनविद्या

قبول آم اور جنتائی پسند کے بارے میں ٹھیک تور پر کچھ بھی قطعی بیانی کرنا مشکل ہے کیوں کہ آم پسندی میں من مانا پن بہت ہے ۔ فرد کی طرح، سماج یا گروہ میں اور ان ہی کی طرح جنتا میں تلون مزاجی اور چنچل پن بہت پایا جاتا ہے ۔ کبھی اچھی چیز ناپسند اور کبھی ناپسند کرنے کے قابل چیز بےحد مقبول ہوتی ہے تو دوسرے موقوں پر پسند کی ہوی چیزیں چھوڑ کر ناپسند کی ہوی چیزیں اختیار کرلی جاتی ہیں ۔ لفظوں، محاوروں، کہاوتوں اور اصطلاحوں کے ساتھ بھی جنتا کا یہی من مانا سلوک ہوتا ہے ۔ پھر بھی صرف قیاس کے تور پر ہم کہ سکتے ہیں کہ راج ودیا، من ودیا، سماج ودیا، دھن ودیا، روگ ودیا، تن ودیا، دل ودیا جیسی اصطلاحیں چل پڑینگی ، مگر آسمان ودیا سے آسمانیت بلکہ آکاشیات بہتر معلوم ہوتا ہے۔ اسی طرح رنگیات رنگ ودیا سے بہتر بھی ہے اور زیادہ سہی بھی ۔ قطعی تور سے کچھ فیصلہ کرنا اگرچہ مشکل ہے مگر سنساریات اور سماجیات جیسی اصطلاحیں سنسار ودیا اور سماج ودیا کے برابر بلکہ کچھ بہتر ہیں ۔

جس طرح جرمن بھاشا میں Okonomik یا Witschaftslehre کو Economics , Soziologic یا Gesellschaftslehre کو Sociology , Orthopadik یا Knochenlehre کو Orthopa Ophthalonogie یا Augenlehre کو Opthalmology کہتے ہیں، اسی طرح یہ آشا کی جاسکتی ہے کہ اگر میرے سمجھائے ہوئے لفظوں کو چلن پانے کا موقع ملے تو سماجیات کے علاوہ سماج ودیا، معاشیات کے ساتھ ساتھ دھن ودیا، نفسیات کے علاوہ من ودیا

सब से पहले तो तमाम इल्मों के नामों का आखिरी निकाल कर इसकी बजाय विद्या लिख दिया जाय और उसकी सिफ़त विद्याई बना ली जाय. जैसे

سب سے پہلے تو تمام علموں کے ناموں کا آخر یہ نکال کر اسکی بجائے ودیا لکھ دیا جائے اور اسکی صفت ودیائی بنالی جائے جیسے

Acoustics	आवाज़ विद्या	Acoustics	آواز ودیا
Aesthetics	हुस्न विद्या	Aesthetics	حسن ودیا
Anthropology	इनसान विद्या	Anthropology	انسان ودیا
Biology	जीवन विद्या	Biology	جیون ودیا
Botany	पेड़ विद्या	Botany	پیڑ ودیا
Cardiology	दल विद्या	Cardiology	دل ودیا
Cosmology	संसार विद्या	Cosmology	سنسار ودیا
Criminology	जुर्म विद्या	Criminology	جرم ودیا
Economics	धन विद्या	Economics	دھن ودیا
Electrology	बिजली विद्या	Electrology	بجلی ودیا
Entrology	आंत विद्या	Entrology	آنت ودیا
Etymology	माख़ज़ विद्या	Etymology	ماخذ ودیا
Genealogy	कुटुम विद्या	Genealogy	کٹم ودیا
Geology	ज़मीन विद्या	Geology	زمین ودیا
Herpetology	रेंग विद्या	Herpetology	رینگ ودیا
Ichthyology	मछली विद्या	Ichthyology	مچھلی ودیا
Ideology	विचार विद्या	Ideology	وچار ودیا
Jurisprudence	क़ानून विद्या	Jurisprudence	قانون ودیا
Limnology	सागर विद्या	Limnology	ساگر ودیا
Linguistics	भाषा विद्या	Linguistics	بھاشا ودیا
Matrology	वचन विद्या	Matrology	وچن ودیا
Methodology	तरीक़ विद्या	Methodology	طریق ودیا
Mineraology	धात विद्या	Mineralogy	دھات ودیا
Mythology	देव विद्या	Mythology	دیو ودیا
Nephology	बादल विद्या	Nephology	بادل ودیا
Obstetrics	जिनाई विद्या	Obestetrics	جنائی ودیا
Odontology	दांत विद्या	Odontology	دانت ودیا
Ophiology	सांप विद्या	Ophiology	سانپ ودیا
Ophthalmology	आंख विद्या	Ophthalmology	آنکھ ودیا
Ornithology	पक्षी विद्या, पंछी विद्या	Ornithology	پکشی ودیا، پنچھی ودیا
Orhlogy	पहाड़ विद्या	Orhlogy	پہاڑ ودیا
Orthopadics	हड्डी विद्या	Orthopaedics	ہڈی ودیا
Otorhinolaryngology	कान नाक हलक़ विद्या	Otorhinolaryngology	کان ناک حلق ودیا
Pathology	रोग विद्या	Pathology	روگ ودیا
Pedagogy	तालीम विद्या	Pedagogy	تعلیم ودیا
Pharhlogy	अग्नि विद्या	Pharhlogy	اگنی ودیا
Philology	शब्द विद्या	Philology	لفظ ودیا
Phrenology	खोपड़ी विद्या	Phrenology	کھوپڑی ودیا
Physiology	तन विद्या	Physiology	تن ودیا
Polemics	बहस विद्या	Polemics	بحث ودیا

सीख सकती है. हमारे देश में मज़दूरी के क्षेत्र में इतना भारी फ़र्क़ है कि मालूम होता है कि सादगी जिस आदर्श की गांधी जी प्रचार करते थे और जिस पर वह अमल करते थे वह हवा में उड़ गया. बराबर की होशयारी और काम के लिये बराबर दाम मिलने का सिद्धान्त प्रायमरी स्कूल के मास्टर, कालिज के प्रोफ़ेसर और किसान सब को माली हैसियत से एक साथ ला खड़ा करता है और रूसी इस सिद्धान्त पर अमल करने की कोशिश कर रहे हैं, इस से हमारी आंख खुलनी चाहिये. अगर डाक्टर कुमारप्पा चाहते हैं कि इन सिद्धान्तों पर हिन्दुस्तान में भी अमल हो तो उनको छोड़ कर जिन्हें पूंजी के बल बूते पर इख़्तियार और ओहदा मिल गया है और किसी को घबराने की ज़रूरत नहीं है.

हिन्दुस्तानी शब्दियात का आठवां असूलः बदलाव लफ़्ज़ों का चलन

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी के लिये परिभाषाई शब्द यानी इस्तलाहें बनाने का हमने एक असूल यह मुक़र्रर किया था कि ऐसे जोड़दार लफ़्ज़ बनाए जायें जिस में एक लफ़्ज़ एक ज़बान से मुताल्लिक़ हो और इसका पहला जोड़ या आख़रिया दूसरी ज़बान से. एक और असूल यह है कि मिलवां लफ़्ज़ों में से एक लफ़्ज़ एक ग्रुप का हो तो दूसरा लफ़्ज़ दूसरे ग्रुप. का इनही असूलों के अधार पर यह परिभाषाई शब्द या इस्तलाहें मिसाल के तौर पर पेश की गईं थीं :—

पत्थरयात, घातियात, टेक्नीकयात, सांपयात वग़ैरा.

जरमन भाशा की जानकारी से फ़ायदा उठाते हुए हिन्दुस्तानी शब्दियात के लिये यह असूल भी पेश किया जा सकता है कि जहां तक आसानी से बन पड़े बदलाव लफ़्ज़ों को चलन का मौक़ा दिया जावे ताकि दोनों लफ़्ज़ चलन या दोनों इस्तलाहों में से आम रिवाज और जनताई फ़ैसले के मुताबिक़ एक लफ़्ज़ चल पड़े.

जैसे अब भी हमारी ज़बान में ताला और क़ुफ़्ल, कुन्जी और चाबी, अमरूद और जाम, किवाड़ और दरवाज़ा, दरीचा और खिड़की, केला और मोज़, मक्खन और मस्का, ओस और शबनम, एक ही चीज़ के दो दो नाम हैं, इसी तरह हम बहुत सी इस्तलाहों के लिये बदलाव लफ़्ज़ समझ सकते हैं.

[illegible] ساتھی ہے۔ ہمارے دیش میں مزدوری کے چھیتر میں اتنا بھاری فرق ہے کہ معلوم ہوتا ہے کہ سادگی کے جس آدرش کا گاندھی جی پرچار کرتے تھے اور جس پر وہ عمل کرتے تھے ہوا میں اڑ گیا۔ برابر کی ہوشیاری اور کام کے لئے برابر ملنے کا سدھانت پرائمری اسکول کے ماسٹر، کالج کے پروفیسر اور کسان سب کو مالی حیثیت سے ایک ساتھ کھڑا کرتا ہے اور روسی اس سدھانت پر عمل کرنے کی کوشش کر رہے ہیں، اس سے ہماری آنکھ کھلنی چاہئے۔ ڈاکٹر کمارپا چاہتے ہیں کہ ان سدھانتوں پر ہندستان میں بھی عمل ہو تو ان کو چھوڑ کر جنھیں پونجی کے بل بوتے پر اختیار اور عہدہ مل گیا ہے اور کسی کو گھبرانے کی ضرورت نہیں ہے۔

ھندستانی شبدیات کا آٹھواں اسول : بدلاؤ لفزوں کا چلن

(ڈاکٹر جافر حسن)

ھندستانی کے لئے پربھاشائی شبد یانی اسطلاحیں بنانے کا ھم نے ایک اسول یہ مقرر کیا تھا کہ ایسے جوڑدار لفز بنائے جائیں جس میں ایک لفز ایک زبان سے متعلق ہو اور اس کا پہلا جوڑ یا آخریہ دوسری زبان سے۔ ایک اور اسول یہ ہے کہ ملواں لفزوں میں سے ایک لفز ایک گروپ کا ہو تو دوسرا لفز دوسرے گروپ کا۔ ان ھی اسولوں کے آدھار پر یہ پربھاشائی شبدیات اسطلاحیں مثال کے تور پر پیش کی گئی تھیں :—

پتھریات، گھاتیات، ٹکنیکیات، سانپیات وغیرہ۔

جرمن بھاشا کی جانکاری سے فایدا اٹھاتے ہوئے ھندستانی شبدیات کے لئے یہ اسول بھی پیش کیا جاسکتا ہے کہ جہاں تک آسانی سے بن پڑے بدلاؤ لفزوں کو چلن کا موقا دیا جاوے تاکہ دونو لفز چلیں یا دونو اسطلاحوں میں سے آم رواج اور جنتائی فیصلے کے مطابق ایک لفز چل پڑے۔

جیسے اب بھی ھماری زبان میں تالا اور قفل، کنجی اور چابی، امرود اور جام، کواڑ اور دروازہ، دریچہ اور کھڑکی، کیلا اور موز، مکھن اور مسکا، اوس اور شبنم، ایک ھی چیز کے دو دو نام ھیں، اسی ترہ ھم بہت سی اسطلاحوں کے لئے بدلاؤ لفز سمجھ سکتے ھیں۔

[illegible] का [illegible]

[illegible] मुताबिक [illegible] में [illegible] और [illegible] में क्या फ़रक़ है. [illegible] इसका [illegible] यह है: जहां [illegible] सरमाया [illegible] गिद्ध [illegible] लाश पर [illegible] हैं. इन गिद्धों [illegible] हैं. [illegible] यह है कि लाठी [illegible] की [illegible] गिद्धों को भगाया [illegible] और [illegible] चौकीदारी की जाय. यह कमयुनिज़्म [illegible] हिंसा की ताक़तों की मदद से शोषण करने [illegible] भगाने में वह कामयाब हो गए हैं. इस परिस्थिति को क़ायम रखने के लिये हर वक़्त हाथ में डंडा रखने की जरूरत उस वक़्त तक रहेगी जब तक शोषण करने वालों की शक्ति सरकार की शक्ति से कम है. लेकिन जैसे ही शोषण करने वाली ताक़तों की शक्ति सरकार की शक्ति से बढ़ेगी वैसे ही यह गिद्ध मुरदे पर टूट पड़ेंगे.

शोषण करने वाले गिद्धों को हम भी निकालना चाहते हैं लेकिन हमारे तरीक़े दूसरे हैं. हम उस जड़ को ही ख़तम कर देना चाहते हैं जिसकी वजह से गिद्ध आते हैं. हम मुरदार को ही दफ़न कर देंगे. पहली सूरत में जैसे गिद्ध नहीं आते वैसे ही इस सूरत में भी वह नहीं आएंगे. लेकिन इन दोनों तरीक़ों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. पहली सूरत में आधार हिंसा है और बाहर से बराबर कड़ी नज़र रखनी पड़ेगी, दूसरी सूरत में आधार अहिंसा है और खुद अपनी [illegible] नज़र रखनी पड़ेगी. हर व्यक्ति को ऐसी [illegible] जिससे कि वह अपने पर पूरा कंट्रोल रख सके.

"जहां तक सरकार का संबंध है रूस से हिन्दुस्तान बहुत कुछ सीख सकता है." हमारा देश कच्चा माल जैसे [illegible] विदेशों को भेज रहा है और इस तरह से अपनी जनता को उन चीज़ों से महरूम कर देता है जिन से वह रोज़ी कमा सके. यह बात इस तरह से है कि अपनी जनता के हाथ से काम छीन कर विदेशों को दिया [illegible] इस व्योपार के बदले [illegible] डालर हमको मिलते हैं [illegible] पतियों और पूंजी पतियों को [illegible] होता है [illegible] बहुत से आराम तलबी के [illegible] बाहर जाती.

[illegible] में जिस तरह रूसी अमल [illegible] काबिल है और यह कोई बुरी [illegible] की जाय, कि वह [illegible] इलाक़े के [illegible] और चीन से बहुत कुछ

[illegible]

[illegible] ابھی میں [illegible] جیسے [illegible] کیپٹلسٹ [illegible] والے طریقے [illegible] طریقے میں کیا فرق ہے۔" [illegible] جہاں [illegible] مردار [illegible] آتے ہیں [illegible] ان گدھوں [illegible] اور اس کو کھاتے ہیں۔ ان گدھوں [illegible] طریقہ [illegible] ایک طریقہ یہ ہے کہ لاٹھی [illegible] کی رکھوالی کی جائے اور گدھوں کو بھگایا جائے [illegible] چوکیداری [illegible] یہ کمیونسٹ ڈھنگ ہے۔ ہنسا کی طاقتوں کی مدد سے شوشن کرنے والے گدھوں [illegible] کامیاب ہوگئے ہیں۔ اس پرستھتی کو قائم رکھنے کے لئے ہر وقت ہاتھ میں ڈنڈا رکھنے کی ضرورت اس وقت تک رہے گی جب تک شوشن کرنے والوں کی شکتی سرکار کی شکتی سے کم ہے۔ لیکن جیسے ہی شوشن کرنے والی طاقتوں کی شکتی سرکار کی شکتی سے بڑھے گی ویسے ہی یہ گدھ مردے پر ٹوٹ پڑیں گے۔

شوشن کرنے والے گدھوں کو ہم بھی نکالنا چاہتے ہیں لیکن ہمارے طریقے دوسرے ہیں۔ ہم اس جڑ کو ہی ختم کر دینا چاہتے ہیں جس کی وجہ سے گدھ آتے ہیں۔ ہم مردار کو ہی دفن کر دیں گے۔ پہلی صورت میں جیسے گدھ نہیں آتے ویسے ہی اس صورت میں بھی وہ نہیں آئیں گے۔ لیکن ان دونوں طریقوں میں زمین آسمان کا فرق ہے۔ پہلی صورت میں آدھار ہنسا ہے اور باہر سے برابر کڑی نظر رکھنی پڑے گی، دوسری صورت میں آدھار اہنسا ہے اور خود اپنی [illegible] نظر رکھنی پڑے گی۔ ہر ویکتی کو ایسی ٹریننگ ملنی چاہئے جس سے کہ وہ اپنے پر پورا کنٹرول رکھ سکے۔

"جہاں تک سرکار کا سمبندھ ہے روس سے ہندوستان بہت کچھ سیکھ سکتا ہے۔" ہمارا دیش کچا مال جیسے [illegible] اپنی تک ودیشوں کو بھیج رہا ہے اور اس طرح سے اپنی جنتا کو ان دھندوں سے محروم کر دیتا ہے جن سے وہ روزی کما سکے۔ یہ بات اس طرح سے ہے کہ اپنی جنتا کے ہاتھ سے کام چھین کر ودیشوں کو دیا جائے۔ اس ویوپار کے بدلے میں جو ڈالر ہم کو ملتے ہیں ان سے [illegible] اور [illegible] پتیوں کو فائدہ ہوتا ہے۔ [illegible] آرام طلبی کے سامانوں کی خریداری سے [illegible] باہر جاتی ہے [illegible]

[illegible] میں جس طرح روسی عمل [illegible] قابل ہے اور یہ کوئی [illegible] کہ [illegible] اسی طرح [illegible] علاقے کے [illegible] روس اور چین سے بہت کچھ

[illegible] ... [illegible] ... से अपने [illegible] ... पर इस [illegible] के लिये [illegible] पड़ती है और यह [illegible] रह सकती है जब तक रूस की फ़ौजें [illegible] अधिक है. यह माली ढांचा क़ायम रहे [illegible] जनता को कोई मतलब नहीं है. दूसरी [illegible] गांधी जी का तरीक़ा है कि लोगों में स्वदेशी और समाजी इन्साफ़ की भावना जगाई जाय ताकि वह अपने [illegible] पैदा होने वाली चीज़ों को उस भाव से ख़रीदें [illegible] माल पैदा करने वाले के साथ पूरा न्याय हो. ग्रामोद्योग का यही उद्देश्य है और समाजी न्याय को पूरी तरह क़ायम रखने का यही एक उपाय है. रूस और हिन्दुस्तान के ख़रीदारों का फ़र्क़ बताते हुए एक दफ़ा डाक्टर कुमारप्पा ने कहा था, "रूस वालों की मिसाल उस शराबी की सी है जो शराब पीने से इसलिये परहेज़ करता है क्योंकि बोतलें अलमारियों में बन्द हैं और उनमें ताला लगा है. पर हम चाहते हैं कि आदमी ख़ुद ही शराब से [illegible] करे और अगर उसे [illegible] भी जाय, तो वह न पिये. इन दोनों मैदानों में रूस ने [illegible] से जो कुछ भी कामयाबी हासिल की है, गांधी जी पसन्द करते कि वह [illegible] हिन्दुस्तान में भी [illegible] जाय. रूस के तजरबों के बहुत अच्छे नतीजे निकले हैं. यह नतीजे हम में विश्वास पैदा करते हैं कि गांधी जी के सिद्धान्त असरदार हैं. रूसी जीवन के यह पहलू और केवल यही पहलू हैं जिन्हें गांधी वादी अर्थशास्त्री डाक्टर कुमारप्पा पसन्द करते हैं.

डाक्टर कुमारप्पा कहते हैं कि रूसी समाजी ढांचा पूरे मानों में सर्वोदय नहीं है लेकिन वह इस बात को मानते हैं कि रूसी समाजी ढांचे के कुछ पहलू गांधीवादी आदर्शों के बहुत क़रीब हैं. ताज्जुब की बात है कि प्रोफ़ेसर श्रीमन नरायन अग्रवाल ने कुमारप्पा जी के सुलझे और ज़िम्मेदारी पर आधारित बयानों का बिलकुल दूसरा ही अर्थ लिया है. [illegible] की बिलकुल ज़रूरत नहीं थी. एक लेख जो बहुत से अख़बारों में छपा है ख़ामख़्वाह प्रोफ़ेसर साहब ने इस बात को सिद्ध करने की कोशिश की है कि सर्वोदय और कम्युनिज़्म दो अलग अलग चीज़ें हैं. उन्होंने कुमारप्पा जी को "सोविएट रूस का प्रेमी" भी कहा है और कहा है कि वह सर्वोदय और कम्युनिज़्म में फ़र्क़ नहीं कर रहे हैं. दोनों विचार धाराओं के फ़र्क़ को डाक्टर कुमारप्पा से बेहतर कोई नहीं समझता और [illegible] आन्दोलन के सम्बन्ध में जहां जहां वह भाषण देते हैं इसी बात को [illegible] करते हैं. प्रोफ़ेसर अग्रवाल ने [illegible] लिया है वह

[illegible] ... [illegible] ... طرف [illegible] کے لئے [illegible] ہے ہوئی ہے [illegible] کے لئے [illegible] کی ضرورت پڑتی ہے اور یہ [illegible] رہ سکتی ہے جب تک [illegible] فوجیں ادھک ہیں . یہ مالی ڈھانچہ قائم [illegible] اس سے جنتا کو کوئی مطلب نہیں ہے. دوسرا [illegible] گاندھی جی کا طریقہ ہے کہ لوگوں میں [illegible] اور سماجی انصاف کی بھاونا جگائی جائے تاکہ وہ [illegible] پیدا ہونے والی چیزوں کو اس بھاؤ سے [illegible] مال پیدا کرنے والے کے ساتھ پورا نیائے [illegible] کا بھی یہی [illegible] ہے اور سماجی نیائے کو [illegible] قائم رکھنے کا یہی ایک اپائے ہے . روس اور [illegible] کے خریداروں کا فرق بتاتے ہوئے ایک دفعہ ڈاکٹر [illegible] کہا تھا : روس والوں کی مثال اس شرابی کی [illegible] جو شراب پینے سے اس لئے پرہیز کرتا ہے کیونکہ [illegible] الماریوں میں بند ہیں اور ان میں تالا لگا ہے. [illegible] چاہتے ہیں کہ آدمی خود ہی شراب سے پرہیز کرے اور اگر اسے [illegible] وہ نہ پئے . ان دونوں میدانوں میں روس نے [illegible] کچھ بھی کامیابی حاصل کی ہے گاندھی جی پسند کرتے کہ ان سب کو ہندستان میں بھی [illegible] کیا جائے . روس کے تجربوں کے بہت اچھے نتیجے نکلے ہیں . یہ نتیجے ہم میں وشواس پیدا کرتے ہیں کہ گاندھی جی کے سدھانت اثردار ہیں . روسی جیون کے یہ پہلو اور کیول یہی پہلو ہیں جنہیں گاندھی وادی [illegible] ڈاکٹر کماریپا پسند کرتے ہیں .

ڈاکٹر کماریپا کہتے ہیں کہ روسی سماجی ڈھانچہ پورے معنوں میں سروودے نہیں ہے لیکن وہ اس بات کو مانتے ہیں کہ روسی سماجی ڈھانچے کے کچھ پہلو گاندھی وادی [illegible] قریب ہیں . تعجب کی بات ہے کہ [illegible] اگروال نے کماریپا جی کے سلجھے اور [illegible] بیانوں کا بالکل دوسرا ہی ارتھ لیا ہے [illegible] کی بالکل ضرورت نہیں تھی . ایک لیکھ [illegible] اخباروں میں چھپا ہے خواہ مخواہ پروفیسر صاحب نے اس بات کو سدھ کرنے کی کوشش کی ہے کہ سروودے اور کمیونزم دو الگ الگ چیزیں ہیں . انہوں نے کماریپا جی کو "سوویت روس کا پریمی" بھی کہا ہے اور کہا ہے کہ وہ سروودے اور کمیونزم میں فرق نہیں کر رہے ہیں . [illegible] دھاراؤں [illegible] ڈاکٹر کماریپا سے بہتر [illegible] سمجھتا اور [illegible] آندولن کے سمبندھ میں [illegible] بات کو [illegible] پروفیسر اگروال نے [illegible] ہے وہ

चीज बाहर से मोटरें और पेट्रोल मंगाना नहीं चाहता. कुमारप्पा जी बराबर अपील करते आए हैं कि जो धातु कम मात्रा में हैं उनको कम खर्च किया जाय. ऊपर की बातें उनकी अपील को मजबूत करती हैं. उनका कहना है इन धातुओं की गिनती उस दायरे में है जो संकुचित है और जिस में बढ़ोती की कोई गुनजायश नहीं. दूसरे दायरे को कुमारप्पा जी दरिया रूपी माली व्यवस्था का नाम देते हैं, इस दायरे में वह चीजें आती हैं जो बढ़ती रहती हैं. रूस और उसके असर वाले देशों में जंगल, जमीन और पानी का बचाव किया जाता है, यह चीज कुमारप्पा जी को बहुत पसन्द है. यह वह बातें हैं जिनके लिये इन देशों को बधाई मिलनी चाहिये. अगर यह अच्छा काम वह देश कर रहे हैं जो कि कमयुनिज्म में विश्वास रखते हैं तो इससे किसी को नाखुश नहीं होना चाहिये.

दूसरी चीज जो कुछ मानों में गांधी जी के विचारों के नजदीक है वह है चीजों के दाम मुक़र्रर करने का ढंग. इसकी बुनियाद समाजी इनसाफ़ पर है और इस का असूल है कि जो आदमी सामान पैदा करता है उसको अच्छे ढंग, पर जीवन बिताने के लिये उचित मजदूरी मिलनी चाहिये और हर पेशे के लोगों को बराबर की होशयारी और बराबर के काम के लिये—बराबर दाम मिलने चाहिये. इसका मतलब यह है कि एक प्रोफ़ेसर और एक मोची दोनों अगर अपने अपने कामों में बराबर के होशयार हैं तो उन्हें बराबर मजदूरी मिलेगी. इस तरह चीजों के दाम जरूर बढ़ते हैं लेकिन अगर मोची को अच्छा जीवन बिताने के लायक़ मजदूरी मिलेगी तो जूतों का दाम जरूर दो सौ रूबल हो जायगा. अगर बाजार भाव पर समाजी इनसाफ़ का कन्ट्रोल है तो इससे किसी को दुशमनी नहीं होनी चाहिये—यह वह असूल हैं जिन पर हम अपने देश में अमल करना चाहते थे और खादी में कुछ हद तक इस तरीक़े का हमने उपयोग किया है. खादी की मंहगाई का मतलब है कि बुनकरों और कताई करने वालों को उचित मजदूरी मिले. इस तरह इनसानों के बीच की ना बराबरी खतम होती है और मजदूर के साथ इनसाफ़ होता है. यह काम रूसी सरकार दबाव डाल कर करती है. लेकिन जो लक्ष्य है और जो नतीजा निकलता है वह वही है जो हमारा लक्ष्य है और जो नतीजा हम अपने तरीक़े से निकालना चाहते हैं.

"लोहे की दीवारों" के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है पर यह दीवारें सिर्फ़ उस निगरानी का एक हिस्सा हैं जो रूस में विदेशी व्योपार पर रखी जाती हैं. अगर रूस के इस बाजार को उन सामानों के लिये खोल दिया जाय जो ऐसे मुल्कों में बनते हैं जहां मजदूरों का शोषण होता है और उनकी मजदूरी उचित नहीं मिलती और मुल्क जो पिछड़े

چیزیں باہر سے موٹریں اور پٹرول منگانا نہیں چاہتا . کماریپا جی برابر اپیل کرتے آئے ہیں کہ جو دھاتیں کم ماترا میں ہیں اُن کو کم خرچ کیا جائے . اوپر کی باتیں اُن کی اپیل کو مضبوط کرتی ہیں . اُن کا کہنا ہے کہ اِن دھاتوں کی گنتی اُس دائرے میں ہے جو سنکچت ہے اور جس میں بڑھوتی کی کوئی گنجائش نہیں. دوسرے دائرے کو کماریپا جی دریا روپی مالی ویوستھا کا نام دیتے ہیں . اِس دائرے میں وہ چیزیں آتی ہیں جو بڑھتی رہتی ہیں . روس اور اس کے اثر والے دیشوں میں جنگل، زمین اور پانی کا بچاؤ کیا جاتا ہے، یہ چیز کماریپا جی کو بہت پسند ہے . یہ وہ باتیں ہیں جن کے لئے اِن دیشوں کو بدھائی ملنی چاہئے . اگر یہ اچھا کام وہ دیش کر رہے ہیں جو کہ کمیونزم میں وشواس رکھتے ہیں تو اِس سے کسی کو ناخوش نہیں ہونا چاہئے .

دوسری چیز جو کچھ معنوں میں گاندھی جی کے وچاروں کے نزدیک ہے وہ ہے چیزوں کے دام مقرر کرنے کا ڈھنگ . اِس کی بنیاد سماجی انصاف پر ہے اور اِس کا اصول ہے کہ جو آدمی سامان پیدا کرتا ہے اُس کو اچھے ڈھنگ پر جیون بتانے کے لئے اُچت مزدوری ملنی چاہئے اور ہر پیشے کے لوگوں کو برابر کی ہوشیاری اور برابر کے کام کے لئے—برابر دام ملنے چاہئیں . اِس کا مطلب یہ ہے کہ ایک پروفیسر اور ایک موچی دونوں اگر اپنے اپنے کاموں میں برابر کے ہوشیار ہیں تو اُنہیں برابر مزدوری ملے گی. اِس طرح چیزوں کے دام ضرور بڑھتے ہیں لیکن اگر موچی کو اچھا جیون بتانے کے لائق مزدوری ملے گی تو جوتوں کا دام ضرور دو سو روبل ہو جائے گا . اگر بازار بھاؤ پر سماجی انصاف کا کنٹرول ہے تو اِس سے کسی کو دشمنی نہیں ہونی چاہئے—یہ وہ اصول ہیں جن پر ہم اپنے دیش میں عمل کرنا چاہتے تھے اور کھادی میں کچھ حد تک اِس طریقے کا ہم نے اپیوگ کیا ہے . کھادی کی مہنگائی کا مطلب ہے کہ بنکروں اور کتائی کرنے والوں کو اُچت مزدوری ملے . اِس طرح انسانوں کے بیچ کی نا برابری ختم ہوتی ہے اور مزدور کے ساتھ انصاف ہوتا ہے . یہ کام روسی سرکار دباؤ ڈال کر کرتی ہے . لیکن جو لکش ہے اور جو نتیجہ نکلتا ہے وہ وہی ہے جو ہمارا لکش ہے اور جو نتیجہ ہم اپنے طریقے سے نکالنا چاہتے ہیں .

" لوہے کی دیواروں " کے بارے میں بہت کچھ کہا جاتا ہے پر یہ دیواریں صرف اُس نگرانی کا ایک حصہ ہیں جو روس میں ودیشی بیوپار پر رکھی جاتی ہیں . اگر روس کے اِس بازار کو اُن سامانوں کے لئے کھول دیا جائے جو ایسے ملکوں میں بنتے ہیں جہاں مزدوروں کا شوشن ہوتا ہے اور اُن کو مزدوری اُچت نہیں ملتی اور جو ملک پچھڑے

डाक्टर कुमारप्पा और सोवियत रूस

(देवेन्द्र कुमार गुप्ता)

गांधी जी की विचार धारा को मानने वाले विचारकों में से शायद कुमारप्पा जी ने सत्य और अहिंसा पर निर्भर करने वाली माली व्यवस्था पर सब से ज़ियादा लिखा है. और इस ढंग से लिखा है जिसका जनता के हर भाग पर काफ़ी असर पड़ा है. उनका सदा से विश्वास है कि सत्य और अहिंसा पर ही हमारे सारे माली ढांचे को खड़ा होना चाहिये. इन सिद्धान्तों को अमली जामा पहनाने के लिये सदा से वह कोशिश करते आए हैं और अपनी योजनाओं को सफल बनाने में लगे रहे हैं. डाक्टर कुमारप्पा ने कुल भारत ग्रामोद्योग संघ की स्थापना की और महात्मा गांधी को उसका सदर बनाया. इस संस्था में कुमारप्पा जी लगभग बीस साल से काम कर रहे हैं. "अहिंसा के आधार पर चलने वाले जन तंत्र की एक बुनियादी इकाई" की खोज में डाक्टर साहब आज कल वरधा और नागपुर के बीच सेलडोह नामी गांव में तजरबे कर रहे हैं. इनकी कोशिश है कि सेलडोह को ऐसा बनाया जाय कि पूरा गांव स्वावलम्बी हो और साथ ही साथ शोषण का नाम निशान भी न रहे. "इन्हीं आधारों पर" लोग पूछते हैं कि वह रूस के अपने अनुभवों की कैसे इतने जोश से चर्चा करते हैं. क्या रूस गांधी जी के असूलों के बिलकुल ख़िलाफ़ नहीं है?

रूस में होने वाली तरक़्क़ी की जो सराहना कुमारप्पा जी करते हैं उसे समझने के लिये ज़रूरी है कि हम उनकी पूरी बात जान लें—वह इस पक्ष में नहीं हैं कि रूसी तरीक़े हिन्दुस्तान में भी आज़माए जायं. रूस की जो चीज़ उन्हें पसन्द है वह यह है कि वहां की सरकार स्वावलम्बन के सिद्धान्त पर अमल करती है. स्वावलम्बन सर्वोदय की बुनियाद है और सर्वोदय से बिलकुल मुख़्तलिफ़ ढंग से रूस और उसके असर वाले देशों में इस बुनियाद पर अमल हो रहा है. यह देश विदेशी सामान, कच्चे बाहरी माल या बाज़ार पर बहुत ही कम निर्भर हैं. चीन में डाक्टर कुमारप्पा ने देखा कि धातुओं को सेंत कर रखने की कोशिश की जाती है. मनचूरिया से अधिक मात्रा में कोयला पहले बाहर भेजा जाता था. लेकिन अब वहां से कोयला बाहर नहीं जाता, क्योंकि चीनियों का कहना है कि अगर हम इस समय कोयला बचायेंगे तो आने वाली नसलें उसका इस्तेमाल कर सकेंगी. इसी तरह की दूसरी मिसाल यह है कि चीन के बड़े बड़े शहरों की आलीशान सड़कों पर कुमारप्पा जी को मोटरें वग़ैरा दिखाई नहीं पड़ीं क्यों कि

ڈاکٹر کمارپپا اور سوویت روس

(دیوندر کمار گپتا)

گاندھی جی کی وچار دھارا کو ماننے والے وچارکوں میں سے شاید کمارپپا جی نے ستیہ اور اہنسا پر نربھر کرنے والی مالی ویوستھا پر سب سے زیادہ لکھا ہے اور اس ڈھنگ سے لکھا ہے جس کا جنتا کے ہر بھاگ پر کافی اثر پڑا ہے۔ اُن کا سدا سے وشواس ہے کہ ستیہ اور اہنسا پر ہی ہمارے سارے مالی ڈھانچے کو کھڑا ہونا چاہئے۔ اِن سدھانتوں کو عملی جامہ پہنانے کے لئے سدا سے وہ کوشش کرتے آئے ہیں اور اپنی یوجناؤں کو سپھل بنانے میں لگے رہے ہیں۔ ڈاکٹر کمارپپا نے کل بھارت گرام اُدیوگ سنگھ کی استھاپنا کی اور مہاتما گاندھی کو اُس کا صدر بنایا۔ اس سنستھا میں کمارپپا جی لگ بھگ بیس سال سے کام کر رہے ہیں۔ " اہنسا کے آدھار پر چلنے والے جن تنتر کی ایک بنیادی اکائی " کی کھوج میں ڈاکٹر صاحب آج کل وردھا اور ناگپور کے بیچ سیلڈوہ نامی گاؤں میں تجربے کر رہے ہیں۔ ان کی کوشش ہے کہ سیلڈوہ کو ایسا بنایا جائے۔ کہ پورا گاؤں سوالمبی ہو اور ساتھ ہی ساتھ شوشن کا نام نشان بھی نہ رہے۔

" انہیں آدھاروں پر " لوگ پوچھتے ہیں کہ وہ روس کے اپنے انوبھووں کی کیسے اتنے جوش سے چرچا کرتے ہیں۔ کیا روس گاندھی جی کے اصولوں کے بالکل خلاف نہیں ہے؟

روس میں ہونے والی ترقی کی جو سراہنا کمارپپا جی کرتے ہیں اُسے سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ ہم اُن کی پوری بات جان لیں—وہ اِس پکش میں نہیں ہیں کہ روسی طریقے ہندستان میں بھی آزمائے جائیں۔ روس کی جو چیز اُنہیں پسند ہے وہ یہ ہے کہ وہاں کی سرکار سوالمبن کے سدھانت پر عمل کرتی ہے۔ سوالمبن سرودے کی بنیاد ہے اور سرودے بالکل مختلف ڈھنگ سے روس اور اس کے اثر والے دیشوں میں اس بنیاد پر عمل ہو رہا ہے۔ یہ دیش ودیشی سامان، باہری کچے مال یا بازار پر بہت ہی کم نربھر ہیں۔ چین میں ڈاکٹر کمارپپا نے دیکھا کہ دھاتوؤں کو سینت کر رکھنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ منچوریا سے ادھک ماترا میں کوئلہ پہلے باہر بھیجا جاتا تھا۔ لیکن اب یہاں سے کوئلہ باہر نہیں جاتا، کیونکہ چینیوں کا کہنا ہے کہ اگر ہم اس سمے کوئلہ بچائیں گے تو آنے والی نسلیں اس کا استعمال کر سکیں گی۔ اسی طرح کی دوسری مثال یہ ہے کہ چین کے بڑے بڑے شہروں کی عالیشان سڑکوں پر کمارپپا جی کو موٹریں وغیرہ دکھائی نہیں پڑیں کیونکہ

[illegible]

"पुत्र हत्या [illegible] तो तुम [illegible] सकते हो."

"हां, [illegible] है. पर [illegible] में [illegible] पुत्र कहां मानता [illegible]"

[illegible]

"[illegible]राम जी, तुम जितना मुझे [illegible] की कोशिश करते हो [illegible] मेरा [illegible] तोता है [illegible] जी [illegible] से [illegible] जोड़ और [illegible]."

इतने में एक जवान हरकिशन के [illegible] पांव छूता है और [illegible] सिर उसके पांव में [illegible] है. हरकिशन [illegible] है. [illegible]राम की नज़र [illegible] के पीछे आने वाले बूढ़े पर पड़ती है. वह [illegible] को पहचानता है और हरकिशन से कहता है—"अरे, अरे, यह तो [illegible] है."

यह सुनते ही हरकिशन की नज़र [illegible] के [illegible] पर [illegible] दोनों मिलते हैं. कुछ नहीं बोलते. कई मिनट आंसू बहाते रहते हैं, अपने कपड़े तर करते रहते हैं. [illegible] होती [illegible]राम बोलता है, "[illegible] हैं [illegible]."

[illegible] बेटे को [illegible] से लिपट [illegible] है. और [illegible] में दोनों बेहोश होकर गिर पड़ते हैं.

हरकिशन [illegible] अपने [illegible] में आये तो [illegible]राम हंसकर बोल उठे, "[illegible] है तुम्हारी तलवार?"

[illegible] मूंठ भतीजे के हाथ में [illegible] भाई साहब के पांव के [illegible]

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

"[illegible] سے تو تم [illegible] سکتے ہو۔"

"[illegible] ہو سکتا ہوں۔ پر اب میں نے اسے پکڑ کہاں [illegible] چھلو کیا [illegible] ہوگا؟"

[illegible] پاس رہ کر بھی [illegible] چھلو رہ سکتا [illegible]

[illegible]

اتنے میں ایک جوان ہرکشن کے جھک کر پاؤں چھوتا ہے اور اپنا سر اس کے پاؤں میں دھر دیتا ہے۔ ہرکشن [illegible] ہے۔ [illegible]رام کی نظر اس جوان کے پیچھے آنے والے بوڑھے پر پڑتی ہے۔ وہ [illegible] کو پہچانتا ہے اور ہرکشن سے کہتا ہے—"ارے ارے یہ تو چھلو ہے۔"

[illegible]

[illegible] ہرکشن [illegible] چھوڑ کر [illegible] سے لپٹ جاتا ہے اور [illegible] میں دونوں بیہوش ہوکر گر پڑتے ہیں۔

ہرکشن جب ہوش میں آئے تو [illegible]رام ہنس کر بولے [illegible] ہے تمہاری تلوار؟"

[illegible] بھتیجے کے ہاتھ میں بڑے بھائی صاحب کے [illegible]"

—بھگوان [illegible]

"[illegible] हरकिशन जी, आप कहां [illegible]"

"[illegible] सिताराम जी, आप [illegible]"

"मैं तो दस बरस से यहीं हूं" [illegible]

"मैं तो पंद्रह बरस से यहां [illegible]"

"[illegible] [illegible]

[illegible] जा रहा [illegible] है [illegible]

[illegible] हो जाती. [illegible] मधाकिन रूप भी देखा. [illegible] के [illegible], [illegible] को, उठा कर ले. [illegible] हमेशा सरासर देवी थी. [illegible]. शैतान और देवी ही 'मिलकर' रह सकते हैं. [illegible] पर हमीदा ने जरूर काबू पा लिया होगा: और [illegible] को [illegible] लिया होगा, अब तो वह बीस का होगा, मगर [illegible] तुम उसे क्या पहचानोगे, [illegible] वह [illegible] रखता होगा, तुर्की टोपी [illegible] होगा [illegible] सोहम्मद वोहम्मद होगा."

"[illegible] जी, तुमने [illegible] मेरे दिल के घाव को [illegible]. मैं तो [illegible] समझे हुए था कि मैं अपना भेद अपने साथ लिये मर जाऊंगा. पर, [illegible] मालूम होता है [illegible] भेद नहीं रह गया, सैकड़ों कानों तक पहुंच चुका."

[illegible] बोले, "[illegible] तो [illegible] ही."

"[illegible] कितनी बुरी बात है, मैं अपना स्त्री को अकेली छोड़ कर भागा, नंगी तलवार देखकर मैं कायर बन गया. यह दिल [illegible] कैसा कभी पुर सकता है. जब से मैंने तुम से अपना भेद सुना है तब से बदले की आग भड़क उठी है. अब मैं एक दिन नहीं खोऊंगा, [illegible] गुंडे [illegible] का पता लगा कर रहूंगा, उसके घर को मिट्टी में मिलाकर रहूंगा."

"और अगर [illegible] जीता हुआ तो उसका क्या करोगे?"

"उसकी गर्दन पर एक लहसन है. हजारों में से मैं उस को [illegible] उसको भी एक तलवार के वार से [illegible]."

"[illegible]"

"[illegible] मार कर [illegible] उसे गुंडे को [illegible]

[illegible] तो कि तुम [illegible] रह सकोगे?"

[illegible]

"[illegible] پندرہ برس [illegible]"

[illegible]

[illegible] تو وہ پنجابی کا ہوگا۔ اگر زندہ ہو، ہر کسن جی اب تم [illegible] کیا پہچانو گے. اب تو وہ داڑھی رکھتا ہوگا، ترکی ٹوپی لگاتا ہوگا اور نام [illegible] کچھ محمد وحمد ہوگا۔"

"[illegible] [illegible] مطلب میرے دل کے گھاؤ کو [illegible]. میں تو یہ سمجھے ہوئے تھا کہ میں اپنا بھید [illegible] لئے مر جاؤنگا. پر اب معلوم ہوتا ہے بھید بھید نہیں رہ گیا، سیکڑوں کانوں تک پہونچ چکا ہے."

[illegible] بولے، "یہ تو ہے ہی."

"[illegible] کتنی بری بات ہے، میں اپنی استری کو اکیلی [illegible] ننگی تلوار دیکھکر میں کائر بن گیا. یہ دل [illegible] کیسے بھر سکتا ہے؟ جب سے میں نے تم سے اپنا بھید سنا ہے تب سے بدلے کی آگ بھڑک اٹھی ہے. اب میں ایک دن نہیں کھوؤنگا. اس گنڈے سے [illegible] کا پتہ لگا کر رہونگا، اس کے گھر کو مٹی میں ملا کر رہونگا."

"اور اگر [illegible] جیتا ہوا تو اس کا کیا کروگے؟"

"اسکی گردن پر ایک لہسن ہے. ہزاروں میں سے [illegible] سکتا ہوں. اسکو بھی ایک تلوار کے وار سے [illegible]"

[illegible]

"[illegible] مار کر [illegible] اس گنڈے [illegible]

[illegible] سمجھے ہو کہ تم [illegible]

[illegible]

उसके दिल में अब आपके लिये कोई गुरेज नहीं है. उसी ने मुझसे कहा है कि तू अब अपने बेटे अलताफ़ को सब हाल बता दे. मैं जब उससे बोली कि 'मेरा बेटा क्यों ? तो वह मेरा मुंह पकड़ कर बोली, "तेरा नहीं तो मेरा, मैंने पैदा किया तो क्या, तकलीफ़ तो सारी तूने भुगती." वह यह भी बोली कि मुझे इसके जनने में कोई तकलीफ़ नहीं हुई, जो कुछ हुई तुझे हुई. मैं तो एक तरह से तेरे पेट के अंदर की थैली भर रही. बेटा हर तरह तेरा. मैं अगर जीती रहती तो जाने वह बचता या नहीं. मेरे बहनोई अशफ़ाक़ ने मेरे साथ भला ही किया कि मुझे मार डाला, नहीं तो शायद अलताफ़ यानी तेरे बेटे को मरना पड़ता. बस जैसे ही मैं यह कह कर कि मैं अलताफ़ को अभी तुझे दिखाने जाती हूं, चलने लगी कि मेरी आंख खुल गई और मैं दौड़ी दौड़ी आपके पास आई."

रामकिशन जी, हम दोनों अलताफ़ के पास पहुँचे. देखते क्या हैं, वह अपने पलंग पर बैठा है. हमें आता देखकर एक दम उठा, मुझे सलाम किया, अपनी मां को पकड़ा, उसके गले लगा. उसको अपने पलंग पर बिठाया, पूछता क्या है:

"क्या तुम मेरी मां नहीं हो ?"

मैं तो घबरा उठा. पर हमीदा न घबराई न झिझकी, न शरमाई. उल्टा उसे गले लगा कर बड़े प्यार से बोली—"बता तू ने यह कैसे जाना ?"

अलताफ़ एक दम ऐसे बोलने लगा मानो तीन बरस का बच्चा हो. कहता क्या है, "नहीं अम्मी, तुम्हीं बताओ यह बात क्या है. अभी एक खातून आई थीं, मुझे ऐसे ही प्यार करती थी जैसे तुम प्यार करती हो. और कहती थीं कि मैं तुम्हारी अम्मी हूं. तुम न......"

हमीदा बोली, "हां, आगे कहो, चुप क्यों हो गये ?"

"नहीं नहीं, मेरी अच्छी अम्मी, तुम ही अम्मी हो. वह सब तो ख़्वाब की बात है. आगे मुझे ठीक ठीक याद भी नहीं."

हमीदा ने अलताफ़ का माथा चूमा. मैं पास कुर्सी पर बैठ गया. हमीदा ने सारा क़िस्सा साफ़ साफ़ बता दिया. उसके मां और बाप दोनों की अच्छी तस्वीर उसके सामने खींच दी. वह सब चुप चाप सुनता रहा. आख़िर में बोला, "मेरी प्यारी अम्मी मैंने समझ लिया."

बस, उस दिन की हमारी बैठक ख़तम हुई.

रामकिशन बोले, "तो यों आपने हमेशा के लिये अलताफ़ को पढ़ा दिया."

"जी नहीं, आप तो जल्दी करते हैं. ज़रा सब्र के साथ सुनिये. उस दिन के बाद से मैं हरकिशन का आशिक़ हो गया. मैंने उसकी तलाश शुरू कर दी, कहीं पता न चला. मेरी तलाश सिर्फ़ इसलिये थी कि मैं अपनी गर्दन उसकी तलवार के नीचे रख दूं और अपनी निजात करा लूं."

اس کے دل میں اب آپ کے لئے کوئی گریز نہیں ہے . اسی نے مجھ سے کہا ہے کہ تو اب اپنے بیٹے الطاف کو سب حال بتا دے . میں، جب اس سے بولی کہ میرا بیٹا کیوں ؟ تو وہ میرا منہ پکڑ کر بولی، "تیرا نہیں تو میرا، میں نے پیدا کیا تو کیا، تکلیف تو ساری تو نے بھگتی ." وہ یہ بھی بولی کہ مجھے اس کے جننے میں کوئی تکلیف نہیں ہوئی، جو کچھ ہوئی تجھے ہوئی. میں تو ایک طرح سے تیرے پیٹ کے اندر کی تھیلی بھر رہی. بیٹا ہر طرح تیرا. میں اگر جیتی رہتی تو جانے یہ بچتا یا نہیں . میرے بہنوئی اشفاق نے میرے ساتھ بھلا ہی کیا کہ مجھے مار ڈالا، نہیں تو شاید الطاف یعنی تیرے بیٹے کو مرنا پڑتا. بس جیسے ہی میں یہ کہہ کر کہ میں الطاف کو ابھی تجھے دکھانے جاتی ہوں، چلنے لگی کہ میری آنکھ کھل گئی اور میں دوڑی دوڑی آپ کے پاس آئی ."

رام کشن جی، ہم دونوں الطاف کے پاس پہونچے . دیکھتے کیا ہیں، وہ اپنے پلنگ پر بیٹھا ہے . ہمیں آتا دیکھ کر ایک دم اٹھا، مجھے سلام کیا، اپنی ماں کو پکڑا، اس کے گلے لگا. اسکو اپنے پلنگ پر بٹھایا، پوچھتا کیا ہے :

"کیا تم میری ماں نہیں ہو ؟"

میں تو گھبرا اٹھا. پر حمیدہ نہ گھبرائی نہ جھجکی، نہ شرمائی. الٹا اسے گلے لگا کر بڑے پیار سے بولی—"بتا تو نے یہ کیسے جانا ؟"

الطاف ایک دم ایسے بولنے لگا مانو تین برس کا بچہ ہو. کہتا کیا ہے، "نہیں امی، تمہیں بتاؤ یہ بات کیا ہے. ابھی ایک خاتون آئی تھیں، مجھے ایسے ہی پیار کرتی تھیں جیسے تم پیار کرتی ہو. اور کہتی تھیں کہ میں تمہاری امی ہوں . تم نہ..."

حمیدہ بولی، "ہاں، آگے کہو، چپ کیوں ہوگئے ؟"

"نہیں نہیں، میری اچھی امی، تم ہی امی ہو . وہ سب تو خواب کی بات ہے . آگے مجھے ٹھیک ٹھیک یاد بھی نہیں ."

حمیدہ نے الطاف کا ماتھا چوما. میں پاس کرسی پر بیٹھ گیا. حمیدہ نے سارا قصہ صاف صاف بتا دیا . اس کے ماں اور باپ دونوں کی اچھی تصویر اس کے سامنے کھینچ دی. وہ سب چپ چاپ سنتا رہا. آخر میں بولا، "میری پیاری امی میں نے سمجھ لیا ."

بس، اس دن کی ہماری بیٹھک ختم ہوئی .

رام کشن بولے، "تو یوں آپ نے ہمیشہ کے لئے الطاف کو پڑھا دیا ."

"جی نہیں، آپ تو جلدی کرتے ہیں . ذرا صبر کے ساتھ سنئے. اس دن کے بعد سے میں ہرکشن کا عاشق ہوگیا. میں نے اسکی تلاش شروع کردی، کہیں پتہ نہ چلا. میری تلاش صرف اس لئے تھی کہ میں اپنی گردن اسکی تلوار کے نیچے رکھ دوں اور اپنی نجات کرالوں ."

कर मेरे हाथों में दे देती. बस मेरा कलेजा ठंडा हो जाता. और जिस ख़याली दोज़ख़ की आग में मैं जल रहा होता वह ऐसे बुझ जाती जैसे कोई मामूली झोंपड़ी दमकल के पानी से.

रामकिशन, क्या पूछते हो, यह अलताफ़ इसी तरह मेरे दिल में जगह बनाता रहा. जब यह पांच बरस का हुआ तब हमीदा ने इसहाक़ को जन्म दिया. जिस वक़्त इसहाक़ के पैदा होने की ख़बर रहीमन ने मुझे दी, बैठक ख़ाने में उस वक़्त अलताफ़ मेरे पास बैठा था. बस अलताफ़ को मैंने गले लगा लिया और लगा उसे पुचकारने. मैं तो यही समझा कि यह सब अलताफ़ की करामात है. वरना मेरी क़िस्मत कहां जो मेरे घर बेटा पैदा हो. और कहां है हमीदा की क़िस्मत जो किसी बेटे को जनम दे सके. बेटे तो उन्हीं को नसीब होते हैं जो मोहब्बत के पुतले होते हैं. मुझ शैतान को बेटे कैसे नसीब हो सकते थे. मैं मोहब्बती बना अलताफ़ की बदौलत और यह सब उसी मोहब्बत का करिश्मा है.

रामकिशन जी, इसहाक़ के पैदा होने पर अलताफ़ से मेरी मोहब्बत दुगनी हुई तो उसकी क़द्र चौगनी बढ़ी. यह सुनकर तो तुम्हें अचरज ही होगा कि हमीदा ने जब ज़च्चेख़ाने में बेटा होने के बाद सबसे पहले अलताफ़ को तलब किया. जैसे ही रहीमन अलताफ़ को लेकर हमीदा के पास पहुँची, हमीदा ने उसे ऐसे पुचकारा मानो वही आज का पैदा उसका बेटा हो. समझे रामकिशन जी, यह है हमारे अलताफ़ का हाल. इसको दिल में जगह न मिलती तो और किसको मिलती."

रामकिशन जी बोल पड़े, "क्या इसी वजह से आपने अलताफ़ के नाम हमेशा के लिये पट्टा लिखा दिया है?"

"नहीं, रामकिशन जी नहीं, ज़रा सब्र के साथ सुनिये. मैं कोई बात छिपा नहीं रखूंगा, सब साफ़ साफ़ बता दूँगा."

हां, तो हमीदा जब जब सुशीला का ज़िक्र करती तब तब मेरा दिल धुलता और कुछ ही दिनों में वह धुल कर इतना साफ़ हो गया कि हरकिशन के लिये नाम के लिये भी नफ़रत न रह गई. कुछ दिनों में ही रग़बत ने वह जगह ले ली, यानी हरकिशन से मोहब्बत बढ़ने लगी. अब अलताफ़ सत्रह बरस का हो चुका था. काफ़ी समझदार था. हम दोनों ने यही ठीक समझा कि अब अलताफ़ को सारा मामला सच सच बता देना चाहिये. हमीदा की राय हुई, अभी नहीं. मैंने हमीदा की बात मान ली. अलताफ़ अठारह का हुआ, हमीदा फिर भी राज़ी न हुई. उन्नीसवां साल लगे पांच दिन हुए होंगे रात के तीन बजे का वक़्त था कि अचानक हमीदा मेरे पास आई और बोली, "मैंने अपनी बहन सुशीला को स्वप्न में अभी अभी देखा है.

کو مجھے ہاتھوں میں دے دیتی۔ بس میرا کلیجہ ٹھنڈا ہو جاتا ۔ اور جس خیالی دوزخ کی آگ میں میں جل رہا ہوتا وہ ایسے بجھ جاتی جیسے کوئی معمولی جھونپڑی دمکل کے پانی سے ۔

رام کشن' کیا پوچھتے ہو' یہ الطاف اسی طرح میرے دل میں جگہ بناتا رہا ۔ جب یہ پانچ برس کا ہوا تب حمیدہ نے اسحاق کو جنم دیا ۔ جس وقت اسحاق کے پیدا ہونے کی خبر رحیمن نے مجھے دی' بیٹھک خانے میں اس وقت الطاف میرے پاس بیٹھا تھا ۔ بس الطاف کو میں نے گلے لگا لیا اور لگا اسے پچکارنے۔ میں تو یہی سمجھا کہ یہ سب الطاف کی کرامات ہے ۔ ورنہ میری قسمت کہاں جو میرے گھر بیٹا پیدا ہو ۔ اور کہاں ہے حمیدہ کی قسمت جو کسی بیٹے کو جنم دے سکے ۔ بیٹے تو انہیں کو نصیب ہوتےہیں جو محبت کے پتلے ہوتے ہیں۔ مجھ شیطان کو بیٹے کیسے نصیب ہو سکتے تھے ۔ میں محبتی بنا الطاف کی بدولت اور یہ سب اسی محبت کا کرشمہ ہے ۔

رام کشن جی' اسحاق کے پیدا ہونے پر الطاف سے میری محبت دگنی ہوئی تو اس کی قدر چوگنی بڑھی یہ سن کر تو تمہیں اچرج ہی ہوگا کہ حمیدہ نے زچےخانے میں بیٹا ہونے کے بعد سب سے پہلے الطاف کو طلب کیا ۔ جیسے ہی رحیمن الطاف کو لے کر حمیدہ کے پاس پہونچی' حمیدہ نے اسے ایسے پچکارا مانو وہی آج کا پیدا اس کا بیٹا ہو ۔ سمجھے رام کشن جی' یہ ہے ہمارے الطاف کا حال ۔ اس کو دل میں جگہ نہ ملتی تو اور کس کو ملتی ۔"

رام کشن جی بول پڑے' "کیا اسی وجہ سے آپنے الطاف کے نام ہمیشہ کے لئے پٹا لکھا دیا ہے ؟"

" نہیں' رام کشن جی نہیں' ذرا صبر کے ساتھ سنیے ۔ میں کوئی بات چھپا نہیں رکھوں گا' سب صاف صاف بتادوں گا ۔"

ہاں' تو حمیدہ جب جب سشیلا کا ذکر کرتی تب تب میرا دل دھلتا اور کچھ ہی دنوں میں وہ دھل کر اتنا صاف ہوگیا کہ ہرکشن کے لئے نام کے لئے بھی نفرت نہ رہ گئی۔ کچھ دنوں میں ہی رغبت نے وہ جگہ لےلی' یعنی ہرکشن سے محبت بڑھنے لگی۔ اب الطاف سترہ برس کا ہوچکا تھا۔ کافی سمجھدار تھا ۔ ہم دونوں نے یہی ٹھیک سمجھا کہ اب الطاف کو سارامعاملہ سچ سچ بتا دینا چاہئے۔ حمیدہ کی رائے ہوئی' ابھی نہیں ۔ میں نے حمیدہ کی بات مان لی۔ الطاف اٹھارہ کا ہوا' حمیدہ پھر بھی راضی نہ ہوئی۔ انیسواں سال لگے پانچ دن ہوئےہونگے رات کے تین بجے کا وقت تھا کہ اچانک حمیدہ میرے پاس آئی اور بولی' "میں نے اپنی بہن سشیلا کو سپنے میں ابھی ابھی دیکھا ہے۔

"बेशक मोहब्बत तो है. पर इतने से तुम्हारी तसल्ली थोड़े होगी. तुम्हारे उस सवाल का जवाब तुम्हें अभी कहां मिला कि हम दोनों इसहाक़ से भी ज़ियादा अलताफ़ को चाहते हैं. काम करने न करने की वजह बाहरी है. वह मां बाप की मोहब्बत में इतना फ़र्क़ नहीं डाल सकती जितना तुम्हें देखने को मिला. बेशक इसहाक़ हमीदा के बतन यानी पेट से पैदा नहीं, अलताफ़ हमीदा के मन से पैदा है, दिल से पैदा है. पैदा तो कहना पड़ता है वह तो दिल में मौजूद है. इसहाक़ पेट छोड़ चुका, वहां, मौका पड़ने पर, और को जगह मिल सकती है, पर, दिल में हर एक को यों ही जगह नहीं मिल जाती. बेशक, दिल में जगह की कमी नहीं, पर दिल की सब खिड़कियां बंद हैं. उसमें कोई खिड़की खोल कर घुसे तो, जगह मिलेगी, इसहाक़ पेट का होने से शायद वैसी कोशिश नहीं करता, पर, अलताफ़ तो पहले ही से दिल में जगह पाये हुए है. वह तो नाम के लिये सुशीला के पेट में था. उसकी तो असली जगह हमीदा के दिल में थी और अब भी है.

"मेरे दिल में उसने अपने आप जगह नहीं बनाई हमीदा की मार्फ़त जगह पाई, पर हां, उसने वहां हमेशा रहने के लिये पट्टा मेरे हाथ से पाया है."

रामकिशन बोले, 'यानी?"

"यानी का जवाब आगे सुनिये :"

हुआ यह कि हमीदा जब जब सुशीला की याद कर कर रोती, तब तब मैं पछताता और ख़ुदा के सामने हाथ फैला कर मैं उससे यह मिन्नतें मांगता कि ऐ ख़ुदा मैं तुमसे माफ़ी नहीं चाहता, मेरी तसल्ली माफ़ी से नहीं होगी, मेरा गुनाह ज़बरदस्त है. मैंने एक बेगुनाह को बेमतलब मारा है. मुझे सज़ा मिलनी चाहिये. और वह सज़ा इससे बढ़कर और क्या हो सकती है कि मैं भी उसी तरह क़त्ल किया जाऊं जिस तरह मैंने सुशीला को क़त्ल किया. या अल्लाह, अगर दुनिया के पर्दे पर कहीं हरकिशन ज़िन्दा है और अगर उसी की तलवार से तू क़त्ल करा दे तब तो मैं बड़े इतमिनान के साथ मर सकूंगा और आक़बत के रोज़, मेरी समझ में मेरे गुनाहों का खाता बराबर का होगा.

हमीदा को इस से कुछ तसल्ली हो जाती, पर, रह रह कर उसे सुशीला की याद सताती रहती. मैं यह सोच कर कांप जाता कि अगर मैंने छुन्नु को भी मार दिया होता तब तो हमीदा को बेचारे मार दिया होता फिर क्या मेरे गुनाहों की कोई माफ़ी हो सकती थी. दोज़ख़ में जलने के सिवाय चारा ही क्या रह जाता.

हमीदा मेरे चेहरे से मेरे दिल का हाल ताड़ जाती और वह अलताफ़ को एक सैकेंड के लिये छाती से चिपका

"بیشک محبت تو هے . پر إتنے سے تمهاری تسلی تهوڑے هوگی . تمهارے اُس سوال کا جواب تمهیں ابهی کهاں ملا که هم دونوں اسحاق سے بهی زیادہ الطاف کو چاهتے هیں . کام کرنے نه کرنے کی وجه باهری هے . وہ ماں باپ کی محبت میں اِتنا فرق نهیں ڈال سکتی جتنا تمهیں دیکهنے کو ملا . بیشک اسحاق حمیدہ کے بطن یعنی پیٹ سے پیدا نهیں' الطاف حمیدہ کے من سے پیدا هے' دل سے پیدا هے . پیدا تو کهنا پڑتا هے وہ تو دل میں موجود هے . اسحاق پیٹ چهوڑ چکا' وهاں' موقع پڑنے پر' اور کو جگه مل سکتی هے' پر' دل میں هر ایک کو یوں هی جگه نهیں مل جاتی. بیشک' دل میں جگه کی کمی نهیں' پر دل کی سب کهڑکیاں بند هیں . اُس میں کوئی کهڑکی کهول کر گهسے تو' جگه ملے گی' اسحاق پیٹ کا هونے سے شاید ویسی کوشش نهیں کرتا' پر' الطاف تو پهلے هی سے دل میں جگه پائے هوئے هے . وہ تو نام کے لئے سوشیلا کے پیٹ میں تها . اُسکی تو اصلی جگه حمیدہ کے دل میں تهی اور اب بهی هے .

"میرے دل میں اُس نے اپنے آپ کو جگه نهیں بنائی' حمیدہ کی معرفت جگه پائی' پر هاں' اُس نے وهاں همیشه رهنے کے لئے پٹه میرے هاته میں سے پایا هے ."

رام کشن بولے' " یعنی؟"

"یعنی کا جواب آگے سنئیے :"

هوا یه که حمیدہ جب جب سوشیلا کی یاد کر کر روتی تب تب میں پچهتاتا اور خدا کے سامنے هاته پهیلا کر میں اُس سے یه منتیں مانگتا که اے خدا میں تجه سے معافی نهیں چاهتا' میری تسلی معافی سے نهیں هوگی' میرا گناہ زبردست هے. میں نے ایک بے گناہ کو بے مطلب مارا هے . مجهے سزا ملنی چاهئے . اور وہ سزا اس سے بڑھ کر اور کیا هو سکتی هے که میں بهی اُسی طرح قتل کیا جاؤں جس طرح میں نے سوشیلا کو قتل کیا . یا الله' اگر دنیا کے پردے پر کهیں هرکشن زندہ هے اور اگر اُسی کی تلوار سے تو میرا قتل کرا دے تب تو میں بڑے اطمینان کے ساته مر سکوں گا اور قیامت کے روز' میری سمجه میں میرے گناهوں کا کهاتا برابر کا هوگا .

حمیدہ کی اِس سے کچه تسلی هو جاتی' پر' رہ رہ کر اُسے سوشیلا کی یاد ستاتی رهتی . میں یه سوچ کر کانپ جاتا که اگر میں نے چهنو کو بهی مار دیا هوتا تب تو حمیدہ کو بے چارے مار دیا هوتا . پهر کیا میرے گناهوں کی کوئی معافی هو سکتی تهی . دوزخ میں جلنے کے سوائے چارہ هی کیا رہ جاتا .

حمیدہ میرے چهرے سے میرے دل کا حال تاڑ جاتی اور وہ الطاف کو ایک سکنڈ کے لئے چهاتی سے چپکا

यह कहते कहते हमीदा की आंखों में आंसू भर गये, टपाटप ज़मीन पर गिरने लगे, हिचकियां बंध गईं और आगे बोलना बंद हो गया.

यह देख अशफ़ाक़ ने उसे संभाला, बोले, "फिर अलताफ़ को कौन बचाता ? इसी को तो कहते हैं ख़ुदा की क़ुदरत. सारा बहलापा भुला दिया, इतना ही नहीं, तुम उस वक़्त मेरी बीवी कहां रह गई थीं, तुम हमेशा मुझसे डरती रहीं, मैं हमेशा तुम्हें दबाता रहा और डराता रहा. पर उस दिन तो तुम्हें देखकर मेरी रूह कांप गई. उस दिन तुम्हारी शक्ल कैसी थी, मुझे ख़ूब याद है. अगर कोई तस्वीर बनाने वाला मेरी कही हुई बातों के मुताबिक़ तुम्हारी उस वक़्त की तस्वीर बना दे तो, ईमान से कहता हूँ, वह दुर्गा से मिलती जुलती हो. तुम्हें उसे देख कर डर लगने लगे. रामकिशन, मुझे बुत-परस्त न समझना. मैं तुम्हारे देवी देवताओं को नहीं मानता, न भूत प्रेत में एतक़ाद रखता हूं. मैं तो एक वाक़्या बता रहा हूं. आप मानना चाहें मानलें, दुर्गा देवी हमीदा बेगम में आ गई थीं, यह मैं मानने के लिये तैयार नहीं."

रामकिशन बोले, "तो आप फिर वाक़ये का क्या हल समझे हुए हैं ?"

'यही, कि जब किसी औरत में कोई बड़ा काम करने की ख़्वाहिश हद से ज़्यादा बढ़ जाती है, तब उसका दिल-दिमाग़ हर तरह उसके जिस्म की हकूमत अपने हाथ में ले लेता है. वह उस जिस्म को ऐसी ही शक्ल दे देता है जो कामयाबी के लिये उस वक़्त ज़रूरी होती है. क्या आपने कभी बिल्ली को नहीं देखा ? वह जब घिर जाती है तो किस तरह फूल कर फुटबाल की शक्ल अख़्तियार कर लेती है. उस वक़्त वह फुटबाल की तरह ज़बर्दस्त से ज़बर्दस्त थाप खाने के लिये तैयार होती है. उस थाप की चोट बरदाश्त करने के लिये उसका जिस्म काफ़ी मज़बूत होता है, जो मामूली हालत में नहीं होता. बस उस वक़्त वही हाल हमीदा का था."

जब अलताफ़ या छुन्नु हमीदा की गोद में दूध पी रहा था तब हमीदा दुर्गा नहीं थी, मामूली हमीदा भी नहीं थी, बांझ होते हुए भी सच्चे मानों में, मां हमीदा थी.

छुन्नु की मां पर वार करते वक़्त मैं शैतान था. अलताफ़ की मां हमीदा से बातें करते वक़्त मैं एक कट्टर मुसलमान था. उसके दूध की जांच करते वक़्त मैं एक शक्की इंसान था. जांच सही निकलने पर मैं अशफ़ाक़ था. बच्चे को गले लगाते वक़्त मैं कुंवारी मां हमीदा की तरह कुंवारा बाप अशफ़ाक़ था."

रामकिशन बोल उठे, "तब ही तो तुम को अलताफ़ से इतनी मोहब्बत है."

یہ کہتے کہتے حمیدہ کی آنکھوں میں آنسو بھر گئے، ٹپا ٹپ زمین پر گرنے لگے، ہچکیاں بندھ گئیں اور آگے بولنا بند ہو گیا۔

یہ دیکھ اشفاق نے اُسے سنبھالا، بولے، " پھر الطاف کو کون بچاتا ؟ اِسی کو تو کہتے ہیں خدا کی قدرت ۔ سارا بہلاپا بھلا دیا، اِتنا ہی نہیں، تم اُس وقت میری بیوی کہاں رہ گئی تھیں، تم ہمیشہ مجھ سے ڈرتی رہیں، میں ہمیشہ تمہیں دباتا رہا اور ڈراتا رہا ۔ پر اُس دن تو تمہیں دیکھکر میری روح کانپ گئی ۔ اُس دن تمہاری شکل کیسی تھی، مجھے خوب یاد ہے ۔ اگر کوئی تصویر بنانے والا میری کہی ہوئی باتوں کے مطابق تمہاری اُس وقت کی تصویر بنا دے تو، ایمان سے کہتا ہوں، وہ درگا سے ملتی جلتی ہو۔ تمہیں اُسے دیکھکر ڈر لگنے لگے ۔ رام کشن، مجھے بت پرست نہ سمجھنا ۔ میں تمہارے دیوی دیوتاؤں کو نہیں مانتا، نہ بھوت پریت میں اعتقاد رکھتا ہوں ۔ میں تو ایک واقعہ بتا رہا ہوں ۔ آپ ماننا چاہیں مان لیں، درگا دیوی حمیدہ بیگم میں آ گئیں تھیں، یہ میں ماننے کے لئے تیار نہیں ۔"

رام کشن بولے، " تو آپ پھر اس واقعہ کا کیا حل سمجھے ہوئے ہیں ؟"

" یہی، کہ جب کسی عورت میں بڑا کام کرنے کی خواہش حد سے زیادہ بڑھ جاتی ہے، تب اس کا دل دماغ ہر طرح اُس کے جسم کی حکومت اپنے ہاتھ میں لے لیتا ہے ۔ وہ اُس جسم کو ایسی ہی شکل دے دیتا ہے جو کامیابی کے لئے اُس وقت ضروری ہوتی ہے ۔ کیا آپ نے کبھی بلی کو نہیں دیکھا ؟ جب وہ گھر جاتی ہے تو کس طرح پھول کر فٹ بال کی شکل اختیار کر لیتی ہے ۔ اُسوقت وہ فٹ بال کی طرح زبردست سے زبردست تھاپ کھانے کے لئے تیار ہوتی ہے۔ اُس تھاپ کی چوٹ برداشت کرنے کے لئے اس کا جسم کافی مضبوط ہوتا ہے، جو معمولی حالت میں نہیں ہوتا ۔ بس اُسوقت وہی حال حمیدہ کا تھا۔"

جب الطاف یا چھنو حمیدہ کی گود میں دودھ پی رہا تھا تب حمیدہ درگا نہیں تھی، معمولی حمیدہ بھی نہیں تھی، بانجھ ہوتے ہوئے بھی سچے معنوں میں، ماں حمیدہ تھی ۔

چھنو کی ماں پر وار کرتے وقت میں شیطان تھا ۔ الطاف کی ماں حمیدہ سے باتیں کرتے وقت میں ایک کٹر مسلمان تھا ۔ اُس کے دودھ کی جانچ کرتے وقت میں ایک شکی اِنسان تھا ۔ جانچ صحیح نکلنے پر میں اشفاق تھا ۔ بچے کو گلے لگاتے وقت میں کنواری ماں حمیدہ کی طرح کنوارا باپ اشفاق تھا ۔"

رام کشن بول اُٹھے، " تبھی تو تم کو الطاف سے اِتنی محبت ہے ۔"

हरकतें करती, मेरे अन्दर वही हरकतें आपी आप होने लगतीं. क्या पूछते हो लाल जी, तुम मानो या न मानो जब जब मेरी मौजूदगी में उसको कै आई मैं भी उबकने लगी. मैं नक़ल नहीं करती थी, उबकाई मेरे अन्दर से आती थी. एकाध बार तो ऐसा भी हुआ कि उसकी तरह उबकाई आ कर हलक़ में से मेरे पेट का सब खाया पीया निकल पड़ा.

एक दो बार तो सुशीला ने यही समझा कि मैं उसकी नक़ल कर रही हूँ, खिल्ली उड़ा रही हूँ, पर जब मुझे सचमुच उल्टी हो गई तब उसने मेरे साथ हमदर्दी शुरू कर दी. एक बार वह यही समझ बैठी कि उसी की तरह मैं भी गर्भवती हूँ. वह एक तजरबेकार बुढ़िया दाई ले आई. वह पूरे विश्वास के साथ तो नहीं, कुछ शक के साथ यह कहने लगी, हां कभी कभी ऐसा होता है कि गर्भ के बाहरी चिह्न बिल्कुल नहीं मालूम होते और हमल तो होता ही है. हो सकता है यही बात हो. मैं यह सुनकर हंस पड़ी और लाल जी, सच कहती हूं, बाहर से ही हंसी थी, अन्दर से तो मेरे मन ने यही मान लिया था कि मैं भी गर्भवती हूँ.

धीरे धीरे सुशीला की बाहरी अलामतें उस पर, मुझ पर और सब पर ज़ाहिर होने लगीं. रस्मों-रिवाज के मुताबिक उसके संस्कार शुरू हो गये. उसके संस्कार होते थे आनन्द मुझे आता था. उसे आता होगा, उसकी वह जाने.

सुशीला के जच्चा बनने के दिन आ पहुँचे. जब जब उसे कुछ तकलीफ़ होती, तब तब मुझे भी होती. बच्चा घर पर ही जनाया गया. जिस, रात को यह मेरा अलताफ़, नहीं नहीं, सुशीला का मुन्नू पैदा हुआ उस रात शाम से ही मैं सुशीला के पास थी. बच्चा जनने में जिस जिस तरह की हरकतें सुशीला ने कीं उस उस तरह की सब हरकतें मेरे अन्दर मेरे मन के इशारे पर हो रही थीं. एक बार तो दाई की निगाह मेरे चेहरे पर पड़ी तो वह हंस कर बोल पड़ी—ख़ूब, यह बच्चा आप जन रही हैं या सुशीला. मैं शरमा गई, फिर भी मुस्करा कर टाल गई. अब कहिये लाल जी, आप की तसल्ली हुई ?

रामकिशन बोले, "तसल्ली तो हो गई, पर है अनोखी बात."

"क्या ख़ाक अनोखी है. जहां इतना हुआ वहां इतना क्यों न हुआ कि जब सुशीला की लाश पड़ी तड़प रही थी, तब मैं क्यों न उसी तरह तड़पी. जब वह बेहोश हुई, तब मैं क्यों बेहोश न हुई ? जब उसकी रूह उसको छोड़ कर चली गई तो मेरी रूह मुझ को छोड़ कर क्यों न चली गई ? अब आप मेरा बहनापा क्या हुआ, मेरा दिल कैसे बचा गया ?"

حرکتیں کرتی' میرے اندر وہی حرکتیں آپو آپ آنے لگتیں. کیا پوچھتے ہو لال جی' تم مانو یا نہ مانو جب جب میری موجودگی میں اسکو قے آئی میں بھی اُبکنے لگی . میں نقل نہیں کرتی تھی' اُبکائی میرے اندر سے آتی تھی . ایک آدھ بار تو ایسا بھی ہوا کہ اُسی کی طرح اُبکائی آ کر حلق میں سے میرے پیٹ کا سب کھایا پیا نکل پڑا .

ایک دو بار تو سوشیلا نے یہی سمجھا کہ میں اُس کی نقل کر رہی ہوں' کھلی اُڑا رہی ہوں' پر جب مجھے سچ مچ اُلٹی ہو گئی تب اُس نے میرے ساتھ ہمدردی شروع کر دی . ایک بار وہ یہی سمجھ بیٹھی کہ اُسی کی طرح میں بھی گربھوتی ہوں . وہ ایک تجربے کار بڑھیا دائی لے آئی. وہ پورے وشواس کے ساتھ تو نہیں' کچھ شک کے ساتھ یہ کہنے لگی' ہاں کبھی کبھی ایسا ہوتا ہے کہ گربھ کے باہری چِنھ بالکل نہیں معلوم ہوتے اور حمل تو ہوتا ہی ہے . ہو سکتا ہے' یہی بات ہو . میں یہ بات سن کر ہنس پڑی اور' لال جی' سچ کہتی ہوں' باہر سے ہی ہنسی تھی' اندر سے تو میرے من نے یہی مان لیا تھا کہ میں بھی گربھوتی ہوں .

دھیرے دھیرے سوشیلا کی باہری علامتیں اُس پر' مجھ پر اور سب پر ظاہر ہونے لگیں . رسم و رواج کے مطابق اُس کے سنسکار شروع ہوگئے . اُس کے سنسکار ہوتے تھے' آنند مجھے آتا تھا . اُسے آتا ہوگا' اُسکی وہ جانے .

سوشیلا کے زچہ بننے کے دن آ پہونچے . جب جب اُسے کچھ تکلیف ہوتی' تب تب مجھے بھی ہوتی . بچہ گھر پر ہی جنایا گیا' جس رات کو میرا یہ الطاف' نہیں' نہیں' سوشیلا کا منّو پیدا ہوا اُس رات شام سے ہی میں سوشیلا کے پاس تھی . بچہ جننے میں جس جس طرح کی حرکتیں سوشیلا نے کیں اُس اُس طرح کی سب حرکتیں میرے اندر میرے من کے اشارے پر ہو رہی تھیں. ایک بار تو دائی کی نگاہ میرے چہرے پر پڑی تو وہ ہنس کر بول پڑی—خوب' یہ بچہ آپ جن رہی ہیں یا سوشیلا. میں شرما گئی' پھر بھی مسکرا کر ٹال گئی . اب کہئے لال جی آپ کی تسلی ہوئی ؟

رام کشن بولے' " تسلی تو ہو گئی' پر ہے انوکھی بات ."

" کیا خاک انوکھی ہے . جہاں اِتنا ہوا وہاں اِتنا کیوں نہ ہوا کہ جب سوشیلا کی لاش پڑی تڑپ رہی تھی' تب میں کیوں نہ اُسی طرح تڑپی. جب وہ بیہوش ہوئی تب میں کیوں بیہوش نہ ہوئی ؟ جب اُسکی روح اُسکو چھوڑ کر چلی گئی تو میری روح مجھکو چھوڑ کر کیوں نہ چلی گئی؟ اُسوقت میرا بہناپا کیا ہوا' میرا دل کیسے بکھرا گیا ؟"

"वह क्या कहां रहे हैं, पहेलियां बुका रहे हैं. कहते हैं गर्भवती सुशीला हुई और उसका अनुभव तुम्हें हुआ. भला यह भी कोई कहने की बात है. कोई इस पर कैसे एतबार कर ले."

"तो न कीजिये, बात सच है.'

"सच ही सही, पर उसके मुंह से तो सुनूं जो कहता है सच है. ऐसी बात जिस पर आसानी से विश्वास न किया जा सके, दूसरे से सुनो तो, भाभी जी, मन पर भारी पड़ती है."

"तो यों कहिये, आप मुझसे सुनना चाहते हैं."

"जी हां, इसलिये तो आप को तकलीफ़ दी गई."

"लाला जी, अगर कभी तुम सुशीला और मुझको एक जगह बैठ कर बातें करते देख लेते तब तुम्हें इस बात पर एतबार करने में दिक़्क़त न होती. इन धर्मों ने तो हमें दो बनाये रखने में कसर न रखी थी. पर हम दोनों इतनी ढीठ थीं कि धर्म के दायरे में किसी तरह आ कर न दीं. फिर भी किसी ने न सुशीला को अधर्मी कहा न मुझे. ज़रा क़िस्मत की ख़ूबी को देखिये कि हम दोनों की शादी चौदह चौदह बरस की उम्र में हुई और पच्चीस बरस की उम्र तक हम दोनों से ख़ुदा औलाद देने में बराबर एकसा नाराज़ रहा. आप क्या पूछते हैं, हम दोनों जब जब मिल कर बैठतीं तब तब हमारे पास औलाद के सिवाय बात करने के लिये और कोई मज़मून ही न होता. हम दोनों ने औलाद की ख़ातिर क्या कुछ नहीं किया, ईश्वर की मिन्नतें मांगी, फ़कीरों के तावीज़ बांधे, ख़ैरातें की, हकीमों के हाथ लुटे, पर नतीजा कुछ न हुआ. मोहल्ले भर में हम दोनों काफ़ी बदनाम थे, बुरे मानों में नहीं, सिर्फ़ इन मानों में कि हम दोनों सूरत हराम हैं यानी ख़ूबसूरत काफ़ी, पर, हैं ऐसी बेलें जिनमें फल नहीं लगता. यह बदनामी हम पर कोई असर न करती. हम दोनों चिकना घड़ा बन गईं. ख़ूब ख़ुश रहतीं, गातीं, नाचतीं, हंसतीं, खेलतीं. इस से मोहल्ले की औरतें हम से चिढ़तीं. वह जितनी चिढ़तीं उतनी हम दोनों और ख़ुश रहतीं.

आख़िर जब हम दोनों ख़ुदा से ले कर हकीमों तक सब से थक गईं और यह सोच कर सब्र कर के बैठ गईं कि हम मां बनने के लिये पैदा ही नहीं हुईं तब अचानक ख़ुदा ने एक दिन सुशीला की सुन ली, और क्या पूछते हो लाला जी, वह दिन निकलने से पहले, मेरे पास आ पहुँची, बोली—मैं गर्भवती हूँ. बस, जो जो वह अपना अनुभव सुनाती वह वह सब मुझे अनुभव होने लगता. ऐसा क्यों हुआ, इसकी खोज लगायें आप लोग. मैं तो वह कह रही हूँ जो मुझ पर बीती. बस लाला जी, नौ महीने तक यही हाल रहा. सुशीला रोज़ मेरे यहां आती, मैं उसके यहां जाती. वह पांव भारी होने की वजह से जिस तरह की

"کیا کہہ رہے ہیں' پہیلیاں بجھا رہے ہیں. کہتے ہیں گربھوتی سوشیلا ہوئی اور اُس کا انوبھو تمہیں ہوا. بھلا یہ بھی کوئی کہنے کی بات ہے، کوئی اِس پر کیسے اعتبار کر لے."

" تو نہ کیجئے' بات سچ ہے."

" سچ ہی سہی' پر اُس کے منہ سے تو سنوں جو کہتا ہے سچ ہے. ایسی بات جس پر آسانی سے وشواس نہ کیا جا سکے' دوسرے سے سنو تو' بھابھی جی' من پر بھاری پڑتی ہے."

" تو یوں کہئے' آپ مجھ سے سننا چاہتے ہیں."

" جی ہاں' اس لئے تو آپ کو تکلیف دی گئی ہے."

" لالہ جی' اگر کبھی تم سوشیلا اور مجھکو ایک جگہ بیٹھکر باتیں کرتے دیکھ لیتے تب تمہیں اِس بات پر اعتبار کرنے میں دقت نہ ہوتی. اِن دھرموں نے تو ہمیں دو بنائے رکھنے میں کسر نہ رکھی تھی. پر ہم دونوں اِتنی ڈھیٹھ تھیں کہ دھرم کے دائرے میں کسی طرح آ کر نہ دیں. پھر بھی کسی نے سوشیلا کو ادھرمی کہا نہ مجھے. ذرا قسمت کی خوبی کو دیکھئے کہ ہم دونوں کی شادی چودہ چودہ برس کی عمر میں ہوئی اور پچیس برس کی عمر تک ہم دونوں سے خدا اولاد دینے میں برابر ایک سا ناراض رہا. آپ کیا پوچھتے ہیں' ہم دونوں جب جب مل کر بیٹھتی تب تب ہمارے پاس اولاد کے سوائے بات کرنے کے لئے اور کوئی مضمون ہی نہ ہوتا. ہم دونوں نے اولاد کی خاطر کیا کچھ نہیں کیا' ایشور کی منتیں مانگیں' فقیروں کے تعویذ باندھے' خیراتیں کیں' حکیموں کے ہاتھ لٹے' پر نتیجہ کچھ نہ ہوا. محلے بھر میں ہم دونوں کافی بدنام تھے' برے معنوں میں نہیں' صرف اِن معنوں میں کہ ہم دونوں صورت حرام ہیں یعنی خوبصورت کافی' پر ہیں ایسی بیلیں جن میں پھل نہیں لگتا. یہ بدنامی ہم پر کوئی اثر نہیں کرتی. ہم دونوں چکنا گھڑا بن گئیں. خوب خوش رہتیں' گاتیں' ناچتیں' ہنستیں' کھیلتیں. اس سے محلے کی عورتیں ہم سے چڑھتیں. وہ جتنی چڑھتیں اُتنی ہم دونوں اور خوش رہتیں.

آخر جب ہم دونوں خدا سے لے کر حکیموں تک سب سے تھک گئیں اور یہ سوچ کر صبر کر کے بیٹھ گئیں کہ ہم ماں بننے کے لئے پیدا ہی نہیں ہوئیں تب اچانک خدا نے ایک دن سوشیلا کی سن لی' اور کیا پوچھتے ہو لال جی وہ' دن نکلنے سے پہلے' میرے پاس آ پہونچی' بولی — میں گربھوتی ہوں. بس' جو جو وہ اپنا انوبھو سناتی وہ وہ سب مجھے انوبھو ہونے لگتا. ایسا کیوں ہوا' اِسکی کھوج لگائیں آپ لوگ. میں تو وہ کہہ رہی ہوں جو مجھ پر بیتی. بس لال جی' نو مہینے تک یہی حال رہا. سوشیلا روز میرے یہاں آتی' میں اُس کے یہاں جاتی، وہ پاؤں بھاری ہونے کی وجہ سے جس طرح کی

तुम्हारा बेटा है, बेटा तो है ही, इसे सांप कहते हो."

भाई रामकिशन, हमीदा के यह फ़िक़रे इतने दिलसोज़ी और मोहब्बत से भरे थे, कुछ इस ढंग से अदा किये गये थे कि उन फ़िक़रों के अंदर का गुस्सा मोहब्बत में बदल गया था. उनका दिल पर वही असर हुआ जो होना चाहिये था या जो हमीदा पैदा करना चाहती थी. यही तो वह अलताफ़ है.

रामकिशन चौंक कर बोले, "तो यह अलताफ़ तुम्हारा लड़का नहीं?"

"मेरा नहीं तो और किसका."

"तुम तो कह रहे हो, कि यह हरकिशन का लड़का छुन्नु है."

"छुन्नु तो वह छै महीने रहा. साढ़े बीस बरस से तो वह अलताफ़ है. मेरा नहीं है तो और किस का है. मेरी घर वाली का इसने दूध पिया और फिर भी तुम कहते रहोगे कि हरकिशन का है. हरकिशन के लड़के के लिये बांझ हमीदा के दूध उतर सकता है बांझ के दूध उतरने की बात तुमने कभी सुनी है?"

"सुनी तो नहीं है."

"तुमने सुनी नहीं पर मैंने आंखों देखी है. जभी तो मैंने उसी वक़्त हमीदा के दूध को अंगुली से छू कर देखा, अपनी तसल्ली की, अपना शैतानपन फेंका और फ़रिश्ता बन कर फ़रिश्ता सीरत बच्चे को अपने गले से लगाया. उसे पुचकारता था, पर कहीं जी भर पाता था. हमीदा उसको मुझसे छीन कर न ले गई होती तो मैं उसे पुचकारते पुचकारते पागल हो गया होता और फरिश्ता बने बने, पुचकारते पुचकारते उसकी जान ले ली होती, और बे सोचे समझे शैतान बन बैठा होता."

रामकिशन बोले, "अशफ़ाक़, यह तुम कह क्या रहे हो? क्या अलताफ़ हमीदा की कोख में नहीं रहा?"

"दिल में रहा तो क्या कोख में नहीं रहा? तुम से कहा तो हमीदा और सुशीला दो तन एक जान थीं. जब सुशीला गर्भवती हुई तब हमीदा को ऐसा मालूम हुआ कि वह हामिला है. सुशीला से ज़ियादा तो हमीदा बच्चे की भूखी थी, हमीदा का देखने के लिये पेट कभी नहीं बढ़ा, पर सुशीला की तरह वह भी अपना पेट बढ़ा हुआ समझा करती थी. यह बात मैं बढ़ा कर नहीं कह रहा, कहो तो हमीदा को बुलाऊं?"

रामकिशन बोले, "ज़रूर."

हमीदा बुला ली गई, जैसे ही वह आ कर बैठी, रामकिशन बोले, "आपने अशफ़ाक़ की बातें सुनी."

"तो इन्होंने आज आप से सब बातें कह डालीं?"

تمہارا بیٹا ہے' میرا تو ہے ہی' اسے سانپ کہتے ہو ."

بھائی رام کشن' حمیدہ کے یہ فقرے اتنے دل سوزی اور محبت سے بھرے تھے' کچھ اس ڈھنگ سے ادا کئے گئے تھے کہ اُن فقروں کے اندر کا غصہ محبت میں بدل گیا تھا: اُن کا دل پر وہی اثر ہوا جو ہونا چاہئے تھا یا جو حمیدہ پیدا کرنا چاہتی تھی . یہی تو وہ الطاف ہے .

رام کشن چونک کر بولے' " تو یہ الطاف تمہارا لڑکا نہیں؟"

" میرا نہیں تو اور کس کا ."

" تم تو کہہ رہے ہو' کہ یہ ہرکشن کا لڑکا چھنو ہے ؟"

"چھنو تو وہ چھ مہینے رہا . ساڑھے بیس برس سے تو وہ الطاف ہے . میرا نہیں ہے تو اور کس کا ہے . میری گھر والی کا اس نے دودھ پیا اور پھر بھی تم کہتے رہوگے کہ ہرکشن کا ہے . ہرکشن کے لڑکے کے لئے بانجھ حمیدہ کے دودھ اتر سکتا ہے . بانجھ کے دودھ اترنے کی بات تم نے کبھی سنی ہے ؟"

" سنی تو نہیں ہے ."

" تم نے سنی نہیں پر میں نے آنکھوں دیکھی ہے . جبھی تو میں نے اسی وقت حمیدہ کے دودھ کو انگلی سے چھو کر دیکھا' اپنی تسلی کی' اپنا شیطان پن پھینکا اور فرشتہ بن کر فرشتہ سیرت بچے کو اپنے گلے سے لگایا . اسے پچکارتا تھا' پر کہیں جی بھر پاتا تھا . حمیدہ اسکو مجھ سے چھین کر نہ لے گئی ہوتی تو میں اسے پچکارتے پچکارتے پاگل ہو گیا ہوتا اور فرشتہ بنے بنے پچکارتے پچکارتے اسکی جان لے لی ہوتی' اور بے سوچے سمجھے شیطان بن بیٹھا ہوتا ."

رام کشن بولے' " اشفاق' یہ تم کیا کہہ رہے ہو؟ کیا الطاف حمیدہ کی کوکھ میں نہیں رہا ؟"

" دل میں رہا تو کیا کوکھ میں نہیں رہا ؟ تم سے کہا تو حمیدہ اور سوشیلا دو تن ایک جان تھیں . جب سوشیلا گربھوتی ہوئی تب حمیدہ کو ایسا معلوم ہوا کہ وہ حاملہ ہے . سوشیلا سے زیادہ تو حمیدہ بچے کی بھوکی تھی' حمیدہ کا دیکھنے کے لئے پیٹ کبھی نہیں بڑھا' پر سوشیلا کی طرح وہ بھی اپنا پیٹ بڑھا ہوا سمجھا کرتی تھی . یہ بات میں بڑھا کر نہیں کہہ رہا' کہو تو حمیدہ کو بلاؤں ؟"

رام کشن بولے' " ضرور ."

حمیدہ بلا لی گئی' جیسے ہی وہ آکر بیٹھی' رام کشن بولے' " آپ نے اشفاق کی باتیں سنیں ؟"

" تو انہوں نے آج آپ سے سب باتیں کہہ ڈالیں ؟"

भाई रामकिशन, आज मेरी आंखों में आंसू हैं. उस वक़्त मेरी आंख से आग बरसती थी. हर हिन्दू मर्द औरत मुझे सांप मालूम होता था, हर बच्चा सांप का बच्चा. और फिर वह वक़्त आ गया कि मैं अचानक पड़ोसी हरकिशन के घर में जा पहुंचा, जहां सुशीला मुंह खोले अपने छै महीने के बच्चे को दूध पिला रही थी. वह इतनी ख़ूबसूरत थी कि किसी भी जवान की तबियत पर क़ाबू पा सकती थी, उसका दिल हिला सकती थी. अगर उसके हाथ में तलवार हो तो निगाह के एक तीर से उसकी मुट्ठी ढीली करके उसके हाथ से तलवार गिरा सकती थी. पर मेरी नज़र में तो वह कितनी ही चिकनी चुपड़ी क्यों न हो, उस वक़्त सांपन दिखाई दे रही थी. उसका घूंघट खींचना था और मेरी तलवार का उसके बायें कंधे पर पड़ना था. वह चीख़ भी न पाई कि मेरे हाथ में उसके बच्चे का हाथ था. इतने में न जाने कहां से, वह हमीदा आ कूदी. मैंने बच्चे को पटका और हमीदा की तरफ़ लपका.

हमीदा के सिर न जाने क्या भूत सवार था, वह बिलकुल न डरी और देवी का सा रूप लेकर बोली, "मैं तुम्हे इस बच्चे को न मारने दूंगी."

भाई रामकिशन यह बेअदबी से भरा "तुम्हे" मुझे उस वक़्त एक शान से भरा शहज़ादी का शब्द मालूम हुआ. मैं हमीदा और बच्चे को छोड़ कर सुशीला के पति हरकिशन की तरफ़ दौड़ा पर उसे न पा सका.

हमीदा बच्चे को लेकर घर पहुंच गई. मैं पहुंचा तो क्या देखता हूं, हमीदा उसी तरह उस बच्चे को दूध पिला रही है जिस तरह सुशीला पिला रही थी. और बच्चा उसी तरह चुकुर चुकुर दूध पी रहा था, मानों हमीदा का दूध उतर रहा हो और वह मां की गोद में हो. हमीदा के अब तक कोई बच्चा न हुआ था. हमीदा बच्चे को तरसती थी. भाई रामकिशन, मैंने हमीदा को कभी कुछ कहा तो नहीं पर हमीदा से ज़ियादा बच्चे के लिये मैं तरसता था. औलाद की ख़ातिर न जाने मैंने कितनी दुआयें मांगी, कितनी रातें तीन बजे उठ नमाज़ें पढ़ीं. पर उस वक़्त तो मेरी बच्चे की ख़्वाहिश भी इतनी दब गई थी कि उसका भी पता न था कि वह मेरे अंदर है भी. मैं हमीदा से बोला, "क्यों अक़्ल मारी गई है, सांप के बच्चे को पालती है?"

उस वक़्त हमीदा बोली थी, "अक़्ल तुम्हारी मारी गई है या मेरी. तुम्हें आदमी का बच्चा सांप का बच्चा दिखाई दे रहा है. सांप के बच्चे की ख़ातिर ख़ुदा ने क्या कभी किसी औरत की छाती से दूध उतारा है. देखते नहीं हो, इसकी ख़ातिर मेरी छाती से दूध उतरने लगा है. यह

بھائی رام کشن، آج میری آنکھوں میں آنسو ہیں۔ اُس وقت تو میری آنکھ سے آگ برستی تھی۔ ہر ہندو مرد عورت مجھے سانپ معلوم ہوتا تھا، ہر بچہ سانپ کا بچہ۔ پھر پھر وہ وقت آ گیا کہ میں اچانک پڑوسی ہرکشن کے گھر میں جا پہونچا، جہاں سوشیلا منہ کھولے اپنے چھ مہینے کے بچے کو دودھ پلا رہی تھی۔ وہ اتنی خوبصورت تھی کہ کسی بھی جوان کی طبیعت پر قابو پا سکتی تھی، اُسکا دل ہلا سکتی تھی۔ اگر اُسکے ہاتھ میں تلوار ہو تو نگاہ کے ایک تیر سے اُسکی مٹھی ڈھیلی کر کے اُس کے ہاتھ سے تلوار گرا سکتی تھی۔ پر میری نظر میں تو وہ کتنی ہی چکنی چپڑی کیوں نہ ہو، اُس وقت سانپن دکھائی دے رہی تھی۔ اُسکا گھونگھٹ کھینچنا تھا اور میری تلوار کا اُسکے بائیں کندھے پر پڑنا تھا۔ وہ چیخ بھی نہ پائی کہ میرے ہاتھ میں اُسکے بچے کا ہاتھ تھا۔ اتنے میں نہ جانے، کہاں سے، یہ حمیدہ آ کودی۔ میں نے بچے کو پٹکا اور حمیدہ کی طرف لپکا۔

حمیدہ کے سر نہ جانے کیا بھوت سوار تھا، وہ بالکل نہ ڈری اور دیوی کا سا روپ لے کر بولی، "میں تجھے اِس بچے کو نہ مارنے دونگی۔"

بھائی رام کشن یہ بے ادبی سے بھرا "تجھے" مجھے اُس وقت ایک شان سے بھرا شہزادی کا شبد معلوم ہوا۔ میں حمیدہ اور بچے کو چھوڑ کر سوشیلا کے پتی ہرکشن کی طرف دوڑا پر اُسے نہ پا سکا۔

حمیدہ بچے کو لے کر گھر پہونچ گئی۔ میں پہونچا تو کیا دیکھتا ہوں، حمیدہ اُسی طرح اُس بچے کو دودھ پلا رہی ہے جس طرح سوشیلا پلا رہی تھی۔ اور بچہ اُسی طرح چکر چکر دودھ پی رہا تھا، مانو حمیدہ کا دودھ اُتر رہا ہو اور وہ ماں کی گود میں ہو۔ حمیدہ کے اب تک کوئی بچہ نہ ہوا تھا۔ حمیدہ بچے کو ترستی تھی۔ بھائی رام کشن، میں نے حمیدہ کو کبھی کچھ کہا تو نہیں پر حمیدہ سے زیادہ بچے کے لئے میں ترستا تھا۔ اولاد کی خاطر نہ جانے میں نے کتنی دعائیں مانگیں، کتنی راتیں تین بجے اُٹھ نمازیں پڑھیں۔ پر اُس وقت تو میری بچے کی خواہش بھی اتنی دب گئی تھی کہ اُسکا بھی پتہ نہ تھا کہ وہ میرے اندر ہے بھی۔ میں حمیدہ سے بولا، "کیوں عقل ماری گئی ہے، سانپ کے بچے کو پالتی ہے؟"

اُس وقت حمیدہ بولی تھی، "عقل تمہاری ماری گئی ہے یا میری۔ تمہیں آدمی کا بچہ سانپ کا بچہ دکھائی دے رہا ہے۔ سانپ کے بچے کی خاطر خدا نے کیا کبھی کسی عورت کی چھاتی سے دودھ اتارا ہے۔ دیکھتے نہیں ہو، اِسکی خاطر میری چھاتی سے دودھ اُترنے لگا ہے۔ یہ

"मैं अब मैं बात क्या छेड़ूं. मेरा सवाल आपके पास मौजूद है, जवाब दीजिये."

"है तो दर्द भरी बात, पर, आप पूछते ही हैं तो सुनिये" :

जब कोहाट में हिन्दू मुसलमान दंगा हुआ तब अपने एक पड़ोसी थे, हरकिशन. वह रहने वाले थे शाहजहांपुर के. छै महीने से कोहाट आये हुए थे. एक बैंक के मैनेजर थे. दो महीने तक तो उनसे दुआ सलाम तक न हुई उसके बाद जो मोहब्बत बढ़ी तो दोनों घर मिल कर एक हो गये. उनकी औरत सुशीला और हमीदा तो इतनी हिलमिल गई कि दो सगी बहनें भी क्या घुले मिलेंगी...हरकिशन उम्र में मुझसे छोटे थे. सुशीला पर्दा करती थी. मैंने उस नेकबख्त का कभी चेहरा नहीं देखा. उसके बारे में जो कुछ मैंने जाना, वह सब हमीदा से जाना. जिसका निचोड़ बस इतना ही समझ लीजिये कि सुशीला में सीता देवी ने जन्म लिया था.

हरकिशन जी से मेरी दोस्ती बढ़ी तो, पर उस हद तक कभी न पहुँच पाई जिस हद तक सुशीला के साथ हमीदा का बहनापा पहुंचा. फिर भी हरकिशन और हम अच्छे दोस्त थे.

बुरा हो उन मुल्लाओं का जिन्होंने हम सब मुसलमानों का दिमाग़ फेर दिया. मैं भी न बच पाया. पर हमीदा पर कोई,असर न हुआ. और एक वह दिन आ गया कि मेरे बहके दिमाग़ में शैतान ने अड्डा जमा दिया. जैसे ही मार काट शुरू हुई मैंने हमीदा को बताया कि मैं अपने पड़ोसियों को एक न एक दिन क़त्ल कर दूँगा. हमीदा चौंकी, बड़ी शान के साथ झिड़कती हुई बोली, "तुम समझते हो, मेरे रहते तुम ऐसा कर सकते हो?"

मेरे सिर पर तो शैतान सवार था, मैं दुगनी आवाज़ में बोला, "तू होती कौन है?"

हमीदा उसी तरह तन कर बोली, "मैं होती कौन हूं, बताऊं?"

खुदा जाने मेरी अक़्ल, मेरी समझ, मेरी सलाहियत, मेरा दीन मुझसे कौन छीन ले गया कि मैं उस हमीदा से, जिससे मैंने कभी सख्त अलफ़ाज़ी न की थी, जिसे मैं घर की शान समझता था, जिसकी जगह मेरी आंखों और मेरे दिल में थी, उससे कह बैठा, "तू बतायेगी, हरामज़ादी."

हमीदा जवाब में कुछ न बोली. निगाहें नीची कर लीं. जिसका मतलब मैं यह समझा, मुझे उस बात की इजाज़त है जो मैं करना चाहता हूं. भाई रामकिशन, यह भी अच्छा ही हुआ कि हमीदा चुप हो गई, अगर वह आगे कुछ बोलती, तो अजब नहीं, मैं उसका सिर तन से जुदा कर देता.

میں بات کیا چھیڑوں۔ میرا سوال آپ کے [پاس] موجود ہے' جواب دیجئے۔"

"ہے تو درد بھری بات' پر' آپ پوچھتے ہی ہیں تو سنئے":

جب کوہاٹ میں ہندو مسلمان دنگا ہوا تب اپنے ایک پڑوسی تھے' ہرکشن۔ وہ رہنے والے تھے شاہجہانپور کے۔ چھ مہینے سے کوہاٹ آئے ہوئے تھے۔ ایک بینک کے منیجر تھے۔ دو مہینے تک تو اُن سے دعا سلام تک نہ ہوئی۔ اُس کے بعد جو محبت بڑھی تو دونوں گھر مل کر ایک ہوگئے۔ اُن کی عورت سوشیلا اور حمیدہ تو اِتنی ہل مل گئیں کہ دو سگی بہنیں بھی کیا گھلے ملینگی... ہرکشن عمر میں مجھ سے چھوٹے تھے۔ سوشیلا پردہ کرتی تھی۔ میں نے اُس نیک بخت کا کبھی چہرہ نہیں دیکھا۔ اُس کے بارے میں جو کچھ میں نے جانا' وہ سب حمیدہ سے جانا۔ جس کا نچوڑ بس اِتنا ہی سمجھ لیجئے کہ سوشیلا میں سیتادیوی نے جنم لیا تھا۔

ہرکشن جی سے میری دوستی بڑھی تو' پر اُس حد تک کبھی نہ پہونچ پائی جس حد تک سوشیلا کے ساتھ حمیدہ کا بہناپا پہونچا۔ پھر بھی ہرکشن اور ہم اچھے دوست تھے۔

برا ہو اُن ملاؤں کا جنھوں نے ہم سب مسلمانوں کا دماغ پھیر دیا۔ میں بھی نہ بچ پایا۔ پر حمیدہ پر کوئی اثر نہ ہوا۔ اور ایک وہ دن آگیا کہ میرے بہکے دماغ میں شیطان نے اڈا جما دیا۔ جیسے ہی مار کاٹ شروع ہوئی میں نے حمیدہ کو بتایا کہ میں اپنے پڑوسیوں کو ایک نہ ایک دن قتل کر دونگا۔ حمیدہ چونکی' بڑی شان کے ساتھ جھڑکتی ہوئی بولی' "تم سمجھتے ہو' میرے رہتے تم ایسا کرسکتے ہو؟"

میرے سر پر تو شیطان سوار تھا' میں دگنی آواز میں بولا' "تو ہوتی کون ہے؟"

حمیدہ اسی طرح تن کر بولی' "میں ہوتی کون ہوں' بتاؤں؟"

خدا جانے میری عقل' میری سمجھ' میری صلاحیت' میرا دین مجھ سے کون چھین لے گیا کہ میں اُس حمیدہ سے' جس سے میں نے کبھی سخت الفاظی نہ کی تھی' جسے میں گھر کی شان سمجھتا تھا' جسکی جگہ میری آنکھوں اور میرے دل میں تھی' اُس سے کہہ بیٹھا' "تو بتائیگی' حرامزادی۔"

حمیدہ جواب میں کچھ نہ بولی۔ نگاہیں نیچی کرلیں۔ جس کا مطلب میں یہ سمجھا' مجھے اُس بات کی اجازت ہے جو میں کرنا چاہتا ہوں۔ بھائی رامکشن' یہ بھی اچھا ہی ہوا کہ حمیدہ چپ ہوگئی' اگر وہ آگے کچھ بولتی' تو عجب نہیں' میں اُس کا سر تن سے جدا کر دیتا۔

घरों में यह है भी ठीक कि बड़ा लड़का ही घर का काम काज करता है, छोटा कुछ नहीं करता. फिर भी प्यार छोटे को मिलता है. हां बड़े को आदर सत्कार ज़रूर मिलता है. पर इस घर में......"

हमीदा बीच में ही, बात काट कर बोली, "दोनों बड़े को मिलते हैं, यही न तुम कहना चाहते हो. मैंने तो यही सुन रखा है "काम सब को प्यारा है, चाम किसी को नहीं. यानी प्यार भी काम को मिलता है."

रामकिशन जी ने जब यह देखा कि वह हमीदा के सामने इसहाक़ की वकालत पूरी पूरी नहीं कर सकते तो उन्होंने रुख बदला, बोले, "भाभी जी आप का कहना बजा है, हां, यह तो कहिये, कल शबेरात है, हलवा तो खिलाइयेगा न ?"

हमीदा बोली, "मुंह भर."

"नहीं, भाभी जी, पेट भर."

अशफ़ाक़ बीच में बोल पड़े, "कंजूस क्यों बनती हो, थाल भर. कुछ यह अकेले ही तो खाने वाले न होंगे."

हमीदा बोली, "मुंह भर से मेरा यही मतलब था. औरतें क्यों कंजूस होने लगीं, वह कौन कमा कर लाती हैं. औरतें कंजूस हों तो एक भी बच्चा न पल पाये."

अब इसहाक़ को मौक़ा मिला, वह बोल पड़ा, "अम्मी, तुम जिस प्यार के साथ अलताफ़ भाई को खिलाती हो, उस प्यार से मुझे कब खिलाती हो ?"

हमीदा बिगड़ कर बोली, "चल रहने दे, अहसान फ़रामोश कहीं का ! हां, प्यार तुझे कम मिलता है और मिलता रहेगा, पर तुझे खाना देते मेरा हाथ कभी नहीं रुका."

इसहाक़ बोला, "हाथ न रुका न सही दिल तो रुका है."

"बड़ा आया है दिल का पढ़ने वाला. दिल पढ़ना जानता तो क्या आज तू इतना ही निकम्मा होता."

इसहाक़ आगे कुछ न बोला, और भी कुछ न बोले. खाना ख़त्म हो गया. अलताफ़ और इसहाक़ बाहर चल दिये.

(2)

"भाई रामकिशन, अब कहो तुम क्या कहते हो ?"

"क्या मतलब."

"अरे भाई, तुम दस्तरख़ान पर जो बात छेड़ बैठे उसे अब क्यों नहीं पूछते ?"

"अच्छा, अच्छा, इसहाक़ को प्यार करने की बात."

"हां, हां यही."

گھروں میں یہ ہے بھی ٹھیک کہ بڑا لڑکا ہی گھر کا کام کاج کرتا ہے' چھوٹا کچھ نہیں کرتا . پھر بھی پیار چھوٹے کو ملتا ہے. ہاں بڑے کو آدر ستکار ضرور ملتا ہے . پر اس گھر میں..."

حمیدہ بیچ میں ہی' بات کاٹ کر بولی' "دونوں بڑے کو ملتے ہیں' یہی نہ تم کہنا چاہتے ہو . میں نے تو یہی سن رکھا ہے "کام سب کو پیارا ہے' چام کسی کو نہیں. یعنی پیار بھی کام کو ملتا ہے ."

رام‌کشن جی نے جب یہ دیکھا کہ وہ حمیدہ کے سامنے اسحاق کی وکالت پوری پوری نہیں کرسکتے تو انہوں نے رخ بدلا' بولے' "بھابھی جی آپ کا کہنا بجا ہے' ہاں' یہ تو کہئے' کل شب برات ہے' حلوہ تو کھلائیگا نہ ؟"

حمیدہ بولی' "منھ بھر ."

"نہیں' بھابھی جی' پیٹ بھر ."

اشفاق بیچ میں بول پڑے' "کنجوس کیوں بنتی ہو' تھال بھر. کچھ یہ اکیلے ہی تو کھانے والے نہ ہونگے ."

حمیدہ بولی' منھ بھر سے میرا یہی مطلب تھا . عورتیں کیوں کنجوس ہونے لگیں' وہ کون کما کر لاتی ہیں . عورتیں کنجوس ہوں تو ایک بھی بچہ نہ پل پائے ."

اب اسحاق کو موقعہ ملا' وہ بول پڑا' "امی' تم جس پیار کے ساتھ الطاف بھائی کو کھلاتی ہو' اس پیار سے مجھے کب کھلاتی ہو ؟"

حمیدہ بگڑ کر بولی' "چل رہنے دے' احسان فراموش کہیں کا ! ہاں' پیار تجھے کم ملتا ہے اور ملتا رہیگا' پر تجھے کھانا دیتے میرا ہاتھ کبھی نہیں رکا ."

اسحاق بولا' "ہاتھ رکا نہ سہی دل تو رکا ہے ."

"بڑا آیا ہے دل کا پڑھنے والا . دل پڑھنا جانتا تو کیا آج تو اتنا ہی نکما ہوتا ."

اسحاق آگے کچھ نہ بولا' اور بھی کچھ نہ بولے . کھانا ختم ہوگیا . الطاف اور اسحاق باہر چل دئے .

(2)

"بھائی رام‌کشن' اب کہو تم کیا کہتے ہو ؟"

"کیا مطلب ."

"ارے بھائی' تم دسترخوان پر جو بات چھیڑ بیٹھے اسے اب کیوں نہیں پوچھتے ؟"

"اچھا' اچھا' اسحاق کو پیار کرنے کی بات ."

"ہاں' ہاں' یہی ."

नहीं सध सकता? वह अलताफ़ से पांच बरस छोटा भी तो है. कहां इक्कीस बरस का जवान, कहां सोलह का अल्हड़."

हमीदा झट बोल पड़ी, "आप के यहां तो सोलह बरस के अभिमन्यु ने चक्र व्यूह तोड़ा था. इस इसहाक़ से तो तिनका भी नहीं टूटता. सोलह बरस की उम्र कोई कम उम्र होती है? पंडित दीनानाथ जी तो कल संस्कृत की एक कहावत सुना कर कह रहे थे, सोलह बरस का पुत्र मित्र के समान होता है."

इतने में इसहाक़ खुद बोल पड़ा, "अम्मी, मुझे वह संस्कृत की कहावत याद है, "प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्र मित्र समाचरेत."

हमीदा तिनक कर बोल बैठी, "संस्कृत रटने के लिये पढ़ता है, कुछ करता धरता भी है?"

मां के बरताव से रामकिशन जी ताड़ गये और समझ गये कि मां बेटे में नहीं बनती. होगी कोई बात, पर, उस बात का पता तो लगना ही चाहिये. हमीदा तो क्या बता कर देगी, अशफ़ाक़ से ही अलहदगी में पूछूंगा. ऐसा तय करके रामकिशन चुप हो गये.

हमीदा कब मानने वाली थी, बोली, "देख ली आपने अपने छोटे भतीजे की क़ाबलियत, उठकर आपके लिये कुर्सी न ला सका. संस्कृत के श्लोक रट रखे हैं, उनको पढ़ कर सुना दिया."

रामकिशन चुप रहे.

हमीदा फिर बोली, "लाल जी, आज तो आप कुछ बोलते ही नहीं, क्या मैंने आपके छोटे भतीजे पर कोई ज़ोर का वार कर दिया. यह है भी आपका लाडला. मां बाप का लाड नहीं मिलता तो चचा का ही सही. अपने मां बाप की इज़्ज़त न करे न सही, जो लाड लड़ाते हैं उनकी तो इज़्ज़त करे."

जब हमीदा की इस बात पर भी रामकिशन अपने होंठ सीये बैठे रहे, तब अशफ़ाक़ साहब बोल पड़े, "अरे भई, छोड़ो इस क़िस्से को, कोई और बात चलने दो, तुम भी तो इसहाक़ के पीछे ऐसे पड़ गई मानो वह कुछ करता ही नहीं. अभी उसकी उम्र ही क्या है और फिर जब वह देखता है, घर में अलताफ़ भाई सब काम कर लेते हैं तो और भी बेफ़िक्र हो जाता है. अलताफ़ की मां, अगर इसहाक़ घर में अकेला होता तो क्या अलताफ़ से कम फ़रमाबरदार होता, या अलताफ़ से कम तेज़ तर्रार होता?"

अब रामकिशन जी बोले, "भाई साहब, कुछ भी कहिये, मैं तो घर घर में यही देख रहा हूं कि मां बाप छोटे को बड़े से ज़ियादा प्यार करते हैं. और अस्सी फ़ीसदी

نہیں سدھ سکتا؟ وہ الطاف سے پانچ برس چھوٹا بھی تو ہے . کہاں اکیس برس کا جوان، کہاں سولہ کا الہڑ ."

حمیدہ جھٹ بول پڑی، "آپ کے یہاں تو سولہ برس کے ابھیمنیو نے چکر ویوہ توڑا تھا . اِس اِسحاق سے تو تنکا بھی نہیں ٹوٹتا. سولہ برس کی عمر کوئی کم عمر ہوتی ہے؟ پنڈت دینا ناتھ جی تو کل سنسکرت کی ایک کہاوت سنا کر کہہ رہے تھے، سولہ برس کا پتر متر کے سمان ہوتا ہے."

اِتنے میں اِسحاق خود بول پڑا "امی، مجھے وہ سنسکرت کی کہاوت یاد ہے، "پراپتے شوڑشے ورشے پتر متر سماچریت."

حمیدہ تنک کر بول بیٹھی، "سنسکرت رٹنے کے لئے پڑھتا ہے، کچھ کرتا دھرتا بھی ہے ؟"

ماں کے برتاؤ سے رام‌کشن جی تاڑ گئے اور سمجھ گئے کہ ماں بیٹے میں نہیں بنتی . ہوگی کوئی بات، پر، اُس بات کا پتہ تو لگنا ہی چاہئے. حمیدہ تو کیا بتا کر دیگی، اشفاق سے ہی علیحدگی میں پوچھونگا . ایسا طے کرکے رام‌کشن چپ ہوگئے .

حمیدہ کب ماننے والی تھی، بولی، "دیکھ لی آپ نے اپنے چھوٹے بھتیجے کی قابلیت، اٹھکر آپ کے لئے کرسی نہ لاسکا. سنسکرت کے اشلوک رٹ رکھے ہیں، اُن کو پڑھکر سنا دیا ."

رام‌کشن چپ رہے .

حمیدہ پھر بولی، "لال جی، آج تو آپ کچھ بولتے ہی نہیں، کیا میں نے آپ کے چھوٹے بھتیجے پر کوئی زور کا وار کردیا. یہ ہے بھی آپ کا لاڈلا . ماں باپ کا لاڈ نہیں ملتا تو چچا کا ہی سہی. اپنے ماں باپ کی عزت نہ کرے نہ سہی، جو لاڈ لڑاتے ہیں اُنکی تو عزت کرے ."

جب حمیدہ کی اِس بات پر بھی رام‌کشن اپنے ہونٹ سئے بیٹھے رہے، تب اشفاق صاحب بول پڑے "ارے بھئی، چھوڑو اِس قصے کو، کوئی اور بات چلنے دو، تم بھی تو اِسحاق کے پیچھے ایسے پڑ گئیں مانو وہ کچھ کرتا ہی نہیں. ابھی اُسکی عمر ہی کیا ہے اور پھر جب وہ دیکھتا ہے، گھر میں الطاف بھائی سب کام کرلیتے ہیں تو اور بھی بےفکر ہو جاتا ہے. الطاف کی ماں، اگر اِسحاق گھر میں اکیلا ہوتا تو کیا الطاف سے کم فرمانبردار ہوتا، یا الطاف سے کم تیز طرار ہوتا؟"

اب رام‌کشن جی بولے، "بھائی صاحب، کچھ بھی کہئے، میں تو گھر گھر میں یہی دیکھ رہا ہوں کہ ماں باپ چھوٹے کو بڑے سے زیادہ پیار کرتے ہیں . اور اسی فیصدی

दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है. हथियारों की शक्ति और साइंस की शक्ति भी इसके सामने कोई चीज़ नहीं. आदमी को अपनी रोटी पर क़ाबू हो, और सब को ठीक ठीक रोटी मिल सके तो दुनिया स्वर्ग है. इसमें ख़राबी हो तो दुनिया नरक है.

छांदोग्य उपनिषद में लिखा है कि :—

"आदमी का आहार शुद्ध हो तो उसका मन भी शुद्ध और साफ़ रहता है. उसकी याददाश्त ठीक रहती है, और वह अपनी सब मुश्किलों को हल कर लेता है, उसकी आत्मा संतुष्ट रहती है, और वह अंधकार से ज्योति की तरफ़, अंधेरे से रोशनी की तरफ़ बढ़ता रहता है."

دنیا کی سب سے بڑی شکتی ہے۔ ہتھیاروں کی شکتی اور سائنس کی شکتی بھی اس کے سامنے کوئی چیز نہیں۔ آدمی کو اپنی روٹی پر قابو ہو، اور سب کو ٹھیک ٹھیک روٹی مل سکے تو دنیا سورگ ہے۔ اس میں خرابی ہو تو دنیا نرک ہے۔

چھاندوگیہ اپنشد میں لکھا ہے کہ :—

"آدمی کا آہار شدھ ہو تو اس کا من بھی شدھ اور صاف رہتا ہے۔ اسکی یادداشت ٹھیک رہتی ہے، اور وہ اپنی سب مشکلوں کو حل کر لیتا ہے، اسکی آتما سنتشٹ رہتی ہے، اور وہ اندھکار سے جیوتی کی طرف، اندھیرے سے روشنی کی طرف بڑھتا رہتا ہے۔"

कहानी

पांव पड़े की जीत

अशफ़ाक़ और हमीदा मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे. उनका बड़ा लड़का, अलताफ़, मां के पास बैठा था, छोटा लड़का, इसहाक़, अपने बाप के पास. इतने में, रामकिशन जी आ पहुंचे. बड़ा लड़का रामकिशन जी के लिये कुर्सी लाने को लपका. उसके मा बाप के मुंह से निकले फ़िक़रे के पूरे होते होते कुर्सी आ गई और रामकिशन जी उस पर बैठ गये.

जो फ़िक़रा हमीदा और अशफ़ाक़ के मुंह से निकला था वह था, "इसहाक़, उठो, अपने चचा के लिये कुर्सी लाओ, तुम क्या उठोगे ? तुम एकदम निकम्मे हो !"

रामकिशन, एक दो दिन से नहीं, बरसों से यह देखते आ रहे थे कि अशफ़ाक़ और हमीदा अपने छोटे बच्चे को इतना प्यार नहीं करते जितना बड़े को. आज की बात से उनके सब्र का प्याला भर गया. कुर्सी पर बैठते ही वह बोले, "माफ़ कीजिये, मैं आप से यह पूछना चाहता हूं कि आप जितना अलताफ़ को प्यार करते हैं उतना इसहाक़ को क्यों नहीं करते ?"

दोनों एक साथ बोल पड़े, "दुनिया मतलब की है, मतलब की."

रामकिशन जी से न रहा गया, वह बोले, "मतलब की ही सही, पर ऐसा कौनसा मतलब है कि जो इसहाक़ से

کہانی

پاؤں پڑے کی جیت

اشفاق اور حمیدہ میز پر بیٹھے کھانا کھا رہے تھے۔ ان کا بڑا لڑکا، الطاف، ماں کے پاس بیٹھا تھا، چھوٹا لڑکا، اسحاق، اپنے باپ کے پاس۔ اتنے میں، رام کشن جی آ پہونچے۔ بڑا لڑکا رام کشن جی کے لئے کرسی لانے کو لپکا۔ اس کے ماں باپ کے منھ سے نکلے فقرے کے پورے ہوتے ہوتے کرسی آ گئی اور رام کشن جی اس پر بیٹھ گئے۔

جو فقرہ حمیدہ اور اشفاق کے منھ سے نکلا تھا وہ تھا، "اسحاق، اٹھو، اپنے چچا کے لئے کرسی لاؤ، تم کیا اٹھوگے؟ تم ایک دم نکمے ہو!"

رام کشن، ایک دو دن سے نہیں، برسوں سے یہ دیکھتے آ رہے تھے کہ اشفاق اور حمیدہ اپنے چھوٹے بچے کو اتنا پیار نہیں کرتے جتنا بڑے کو. آجکی بات سے ان کے صبر کا پیالا بھر گیا۔ کرسی پر بیٹھتے ہی وہ بولے، "معاف کیجئے، میں آپ سے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ آپ جتنا الطاف کو پیار کرتے ہیں اتنا اسحاق کو کیوں نہیں کرتے؟"

دونوں ایک ساتھ بول پڑے، "دنیا مطلب کی ہے، مطلب کی۔"

رام کشن جی سے نہ رہا گیا، وہ بولے، "مطلب کی ہی سہی، پر ایسا کون سا مطلب ہے کہ جو اسحاق سے

शब्दों में छिपे होते हैं, शब्दों के जरिये वह उन्हें दूसरों तक पहुँचाता है, इसलिए जो शब्दों का ग़लत इस्तेमाल करता है वह सबमें ज़हर फैलाता है, इसलिये बुद्धिमान आदमी को चाहिये कि अपनी ज़बान को पूरी तरह क़ाबू में रखे. अगर किसी पर शासन करना हो हुक्म देना हो तो भी मीठे और नरम शब्दों में ही देना चाहिये. सत्य को वही पा सकता है जिसका मन और वचन शुद्ध हैं और उसके क़ाबू में हैं. तुम्हें कोई दुख भी पहुँचाये तब भी किसी का दिल न दुखाओ. किसी की दुश्मनी से कोई काम न करो, घमण्ड की कोई बात मुंह से न निकालो. कोई बात ऐसी न कहो जो समाज में फूट डाले, जिससे लोग तुमसे दुखी हों."

एक और जगह लिखा है :—

सत्यं ब्रुयात् प्रियं ब्रुयात,
न ब्रुयात सत्यम प्रियम्
प्रियञ्च नान्ऋतं ब्रुयात
एष धर्मः सनातनः

यानी—सच बोले, प्यारा बोले, जो सच प्यारा न हो वह न बोले, और जो प्यारी बात सच न हो वह न बोले, यही सनातन धर्म है.

एक मशहूर कहावत है :—

अगर तू भूक से एक लुक़मा (कौर) कम खावे, तो तू ही लुक़मान यानी सबसे बड़ा बुद्धिमान है.

ईश्वर को अरबी में रज़्ज़ाक़ कहा गया है जिसके मानी हैं रिज़्क़ यानी रोज़ी देने वाला. ईसा दुआ मांगा करते थे—'ऐ ईश्वर! हमें रोज़ का खाना दे." इसमें शरीर के लिये खाना और आत्मा के लिये खाना दोनों शामिल हैं. वैदिक ऋषि ईश्वर को अन्नपति कह कर पुकारा करते थे और ईश्वर से ऐसे अन्न यानी ख़ुराक की प्रार्थना करते थे जिससे शरीर और मन दोनों तन्दुरुस्त रहें. वेद के अन्दर अन्न को ब्रह्म भी कहा गया है. इसलिये अन्न और भोजन बड़ी पाक ज़िम्मेदारियां हैं. अन्न का ग़लत इस्तेमाल सब दुखों का कारन है. अन्न का ठीक इस्तेमाल सब सुखों का देने वाला है.

राजनीति में अक्सर ठीक शब्दों के चुनने पर ही युद्ध या शांति, दुनिया की बरबादी या सुख समृद्धि निर्भर होती है.

दुनिया के नब्बे फ़ी सदी दुखों, रोगों और युद्धों का कारन ज़बान और काम वासना का ग़लत इस्तेमाल होता है. इन दोनों में भी ज़बान का ग़लत इस्तेमाल आदमी की सबसे ज़्यादा मुसीबतों का कारन होता है. अहंकार और ख़ुदी की सारी बुराइयां इन्हीं से पैदा होती हैं. रोटी

دوں میں چھپے ہوتے ہیں' شبدوں کے ذریعہ وہ
ہیں دوسروں تک پہونچاتا ہے' اس لئے جو
دوں کا غلط اِستعمال کرتا ہے وہ سب میں زہر
یلاتا ہے' اِس لئے بدھیمان آدمی کو چاہئے کہ اپنی زبان
پوری طرح قابو میں رکھے . اگر کسی پر شاسن کرنا ہو
کم دینا ہو تو بھی میٹھے اور نرم شبدوں میں ہی دینا
ہئے . ستیہ کو وہی پا سکتا ہے جس کا من اور بچن
دھ ہیں اور اُس کے قابو میں ہیں . تمھیں کوئی
کھ بھی پہونچاوے تب بھی کسی کا دل نہ دکھاؤ' کسی
دشمنی سے کوئی کام نہ کرو' گھمنڈ کی کوئی بات
نہ سے نکالو . کوئی بات ایسی نہ کہو جو سماج میں
ٹ ڈالے' جس سے لوگ تم سے دکھی ہوں ."

ایک اور جگہ لکھا ہے :—

ستیم بروپات پریم بروپات'
نہ بروپات ستیم پریم
پرنیچ ناننطم بروپات
ایش دھرماہ سناتنہ

یعنی—سچ بولے' پیارا بولے' جو سچ پیارا نہ ہو وہ
بولے' اور جو پیاری بات سچ نہ ہو وہ نہ بولے' یہی
ناتن دھرم ہے .

ایک مشہور کہاوت ہے :—

اگر تو بھوک سے ایک لقمہ (کور) کم کھاوے' تو تو ہی
مان یعنی سب سے بڑا بدھیمان ہے .

ایشور کو عربی میں رزاق کہا گیا ہے جس کے معنی
ں رزق یعنی روزی دینے والا . عیسیٰ دعا مانگا کرتے تھے—
ے ایشور! ہمیں روز کا کھانا دے ." اِس میں شریر کے
ے کھانا اور آتما کے لئے کھانا دونوں شامل ہیں . ویدک
ی ایشور کو ان پتی کہہ کر پکارا کرتے تھے اور ایشور سے ایسے
یعنی خوراک کی پرارتھنا کرتے تھے جس سے شریر اور
ن دونوں تندرست رہیں . وید کے اندر ان کو برھم بھی
ا گیا ہے . اس لئے ان اور بھوجن بڑی پاک ذمہ واریاں
ں . ان کا غلط استعمال سب دکھوں کا کارن ہے . ان
ٹھیک اِستعمال سب سکھوں کا دینے والا ہے .

راج نیتی میں اکثر ٹھیک شبدوں کے چننے پر ہی یدھ
شانتی' دنیا کی بربادی یا سکھ سمردھی نربھر ہوتی
.

دنیا کے نوے فی صدی دکھوں' روگوں اور یدھوں کا
ن زبان اور کام واسنا کا غلط اِستعمال ہوتا ہے. ان دونوں
ی بھی زبان کا غلط اِستعمال آدمی کی سب سے
دہ مصیبتوں کا کارن ہوتا ہے . اہنکار اور خودی کی
ری برائیاں انہیں سے پیدا ہوتی ہیں . روٹی

वर्जयित्वा तु रसनं,
तन्निरन्नस्य वर्द्धते ॥
तावज्जितेन्द्रियो न स्याद्,
विजितान्येन्द्रियाः प्रमान् ।
न जयेत् रसनं यावत्,
जितं सर्वं जिते रसे ॥

यानी—विचारवान आदमी जब अपनी इन्द्रियों को उनकी खुराक देना बंद कर देता है तो जल्दी से इन्द्रियों को जीत लेता है, पर इन्द्रिय सुख में रस बना रहता है, बल्कि खुराक न मिलने से रस और बढ़ता है. बाक़ी सब इन्द्रियों को जीत लेने पर भी मनुष्य उस समय तक जितेन्द्रिय नहीं कहला सकता जब तक अपनी जिह्वा यानी ज़बान को न जीत ले. जब आदमी ने अपनी ज़बान को जीत लिया तो सब कुछ जीत लिया.

यही बात गीता में भी कृष्ण ने कही है और यह भी कहा है कि इन्द्रिय सुख के अंदर रस तब जा कर मिटता है जब आदमी सबके अंदर रमी हुई आत्मा को साक्षात् कर लेता है.

मोहम्मद साहब से एक बार पूछा गया कि सब नेकियों से बढ़ कर नेकी क्या है. मोहम्मद साहब ने अपनी ज़बान पर उंगली रख कर कहा कि—"इसे अपने बस में रखो, लोग अपनी ज़बानों से जो बुराइयों का बोझ अपने ऊपर लाद लेते हैं वह बोझ ही उन्हें जहन्नुम की आग में ढकेल देता है."

पारसी धर्म के संस्थापक ज़रथुस्थ ने कहा है कि :—

'ऐ अहुर मज़्द तुम उस बहादुर को रोशनी देते हो और सब अच्छी चीज़ें देते हो जो धर्म युद्ध में वीरता दिखाता है, सदा सच सोचता है, सच सुनता है, और सच बोलता है, जो आत्मा को जानता है, बुद्धिमान है, अपनी ज़बान को क़ाबू में रखता है और मीठे प्यारे शब्दों में सच्ची बात समझा कर कहता है." (गाथा – 31-19)

एक और जगह ज़रथुस्थ ने कहा है कि :—

"जो लोग देखते हुए भी अंधे हैं और अपनी बेलगाम ज़बानों से बुरे शब्द निकाल कर चारों तरफ़ अनुदारता, धृष्टता, कलह और नफ़रत फैलाते हैं. वे ही इस धरती पर शैतान हैं, और लोगों में एक दूसरे से दुश्मनी फैलाते हैं" (गाथा 49 4)

मनुस्मृति में लिखा है कि :—

"अधिक भोजन करने से आदमी की तन्दुरुस्ती बिगड़ती है, उमर घटती है, और वह स्वर्ग से दूर पड़ जाता है, उसका पुन्य नष्ट होता है, दुनिया में उसकी इज़्ज़त घटती है इसलिये आदमी को अधिक भोजन कभी नहीं करना चाहिये. आदमी के सब विचार और भाव

ورجیتوا تو رسنم
تن رنسیہ وردھتے
تاوجیتہ اندریو نسیاد
وجیتانیہ اندریاہ پرمان
نہ جئیت رسنم یاوت
جتم سروم جتے رسے .

یعنی—وچاروان آدمی جب اپنی اندریوں کو اُن کی خوراک دینا بند کردیتا ہے تو جلدی سے اِندریوں کو جیت لیتا ہے' پر اِندریہ سکھ میں رس بنا رہتا ہے' بلکہ خوراک نہ ملنے سے رس اور بڑھتا ہے . باقی سب اِندریوں کو جیت لینے پر بھی منوشیہ اُس سمے تک جتیندریہ نہیں کہلا سکتا جب تک اپنی جِہوا یعنی زبان کو نہ جیت لے. جب آدمی نے اپنی زبان کو جیت لیا تو سب کچھ جیت لیا .

یہی بات گیتا میں شری کرشن نے کہی ہے اور یہ بھی کہا ہے کہ اِندریہ سکھ کے اندر رس تب جاکر مٹتا ہے جب آدمی سب کے اندر رمی ہوئی آتما کو ساکشات کر لیتا ہے .

محمد صاحب سے ایک بار پوچھا گیا کہ سب نیکیوں سے بڑھکر نیکی کیا ہے . محمد صاحب نے اپنی زبان پر اُنگلی رکھکر کہا کہ—"اِسے اپنے بس میں رکھو' لوگ اپنی زبانوں سے جو برائیوں کا بوجھ اپنے اُوپر لاد لیتے ہیں وہ بوجھ اُنہیں جہنم کی آگ میں ڈھکیل دیتا ہے."

پارسی دھرم کے سنستھاپک زرتھستھ نے کہا ہے کہ:—

"اے اہر مزد تم اُس بہادر کو روشنی دیتے ہو اور سب اچھی چیزیں دیتے ہو جو دھرم یدھ میں ویرتا دکھاتا ہے' سدا سچ سوچتا ہے' سچ سنتا ہے' اور سچ بولتا ہے' جو آتما کو جانتا ہے' بدھی مان ہے' اپنی زبان کو قابو میں رکھتا ہے اور میٹھے پیارے شبدوں میں سچی بات سمجھاکر کہتا ہے." (گاتھا-19-31)

ایک اور جگہ زرتھستھ نے کہا ہے کہ :—

" جو لوگ دیکھتے ہوئے بھی اندھے ہیں اور اپنی بے لگام زبانوں سے برے شبد نکال کر چاروں طرف انوُدارتا' دھرشٹتا' کلہ اور نفرت پھیلاتے ہیں' وہ ہی اِس دھرتی پر شیطان ہیں' اور لوگوں میں ایک دوسرے سے دشمنی پھیلاتے ہیں." (گاتھا 4-49)

منوسمرتی میں لکھا ہے کہ :—

" ادھک بھوجن کرنے سے آدمی کی تندرستی بگڑتی ہے' عمر گھٹتی ہے' اور وہ سورگ سے دور پڑ جاتا ہے' اُس کا پنیہ نشٹ ہوتا ہے' دنیا میں اُسکی عزت گھٹتی ہے' اس لئے آدمی کو ادھک بھوجن کبھی نہیں کرنا چاہئے . آدمی کے سب وچار اور بھاؤ

5 जुलाई, सन '53 नम्बर 1

न आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
ा हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

दुनिया के विद्यार्थियों से !

(चरन सरन 'नाज़')

आकाश पर छा रहा है धुआँ
धरती पे वह कोहे आतश फशाँ
गई चाँदनी खो गई कह कशाँ
ी आँच से खेत जलने लगे
ी बालियां खुश्क होने लगी
माँओं के आंचल कफ़न बन गये
फूल से लाल कुम्हला गये
टम के पुर खौफ़ सैलाब में
बह गये
मन्दर की छाती पे नासूर बन कर
आयें जिस तरह वीरां जज़ायर
तरह धरती के दफ़्तर खुले हैं
भयानक समन्दर के ऊपर
ाथियो !
ों को इन साज़िशों के लिये
विज्ञान की कोई मत खोज दो
दूक के साज़ के वास्ते
होंटों का मत कोई संगीत दो
के वास्ते इनको अपनी कलाएं न दो
से कह दो कि हम मदरसों में कभी
नफ़रत की तालीम होने न देंगे
म आदमी हैं।
से कह दो कि बंदूक के बोझ से
मज़बूत कंधों को झुकने न देंगे
म ज़ीस्त की इरतक़ा के लिये पढ़ रहे हैं
ज़ीस्त के जिस्म पर मौत के डंक चुभने न देंगे
ाइयो !
दुनिया के विद्यार्थी एक हैं
इन्हें कोई ... दो

جلد 15 جولائی، سن '53 نمبر 1

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

دنیا کے ودیارتھیوں سے !

(چرن سرن 'ناز')

نیلے آکاش پر چھا ... دھواں
پھوٹا دھرتی پہ وہ کوہ آتش فشاں
بجھ گئی چاندنی کھو گئی کہ کشاں
جنگ کی آنچ سے کھیت جلنے لگے
فصلوں کی بالیاں خشک ہونے لگیں
پھر ماؤں کے آنچل کفن بن گئے
گود میں پھول سے لال کمہلا گئے
اور ایٹم کے پر خوف سیلاب میں
مدرسے بہ گئے
اور سمندر کی چھاتی پہ ناسور بن کر
ابھر آئیں جس طرح ویران جزائر
اسی طرح دھرتی کے دفتر کھلے ہیں
لہو کے بھیانک سمندر کے اوپر
میرے ساتھیو
جنگ بازوں کو ان سازشوں کے لئے
اب وگیان کی کوئی مت کھوج دو
توپ بندوق کے ساز کے واسطے
اب ہونٹوں کا مت کوئی سنگیت دو
جنگ کے واسطے ان کو اپنی کلائیں نہ دو
ان سے کہ دو کہ ہم مدرسوں میں کبھی
بغض و نفرت کی تعلیم ہونے نہ دینگے
کہ ہم آدمی ہیں
ان سے کہ دو کہ بندوق کے بوجھ سے
اپنے مضبوط کندھوں کو جھکنے نہ دینگے
کہ ہم زیست کی ارتقا کے لئے پڑھ رہے ہیں
کبھی زیست کے جسم پر موت کے ڈنک چبھنے نہ دینگے
میرے بھائیو
ساری دنیا کے ودیارتھی ایک ہیں
ایک ہوکر انہیں کوئی سہوگ سمجھ دو

"नया हिन्द"   " نیا ہند "

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

ی کلچر سوسائٹی

का

माहवारी परचा

ہواری پرچا

जुलाई 1953 جولائی

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने .

میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ ... دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر

सोसाइटी, इलाहाबाद

سوسائٹی الہ آباد